श्री० चन्द्रराज भण्डारी "विशारद" (बैठे हुए), श्री० भ्रमरलाल सोनी (बाईं ओर)
श्री० कृष्णलाल गुप्त (दाहिनी ओर)

EDITED & PUBLISHED

by

C. R. Bhandari

B. L. Soni

K. L. Gupta

Proprietors.

Commercial Book Publishing House

BHANPURA (INDORE)

सम्पादक और प्रकाशक—

श्री० चन्द्रराज भण्डारी

श्री० भ्रमरलाल सोनी

श्री० कृष्णलाल गुप्त

संचालक—

कॉमर्शियल बुक पब्लिशिंग हाउस

भानपुरा

Printed by

J. N. Tiwari

BANIK PRESS,

1, Sirkar Lane. Calcutta.

मुद्रक—

जगदीशनारायण तिवारी

वणिक् प्रेस, कलकत्ता

Blocks by

J. P. Dikshit

IDEAL HALFTONE CO, CALCUTTA.

ब्लाक मेकर—

जगन्नाथप्रसाद दीक्षित

आइडियल हाफ़टोन कम्पनी

कलकत्ता
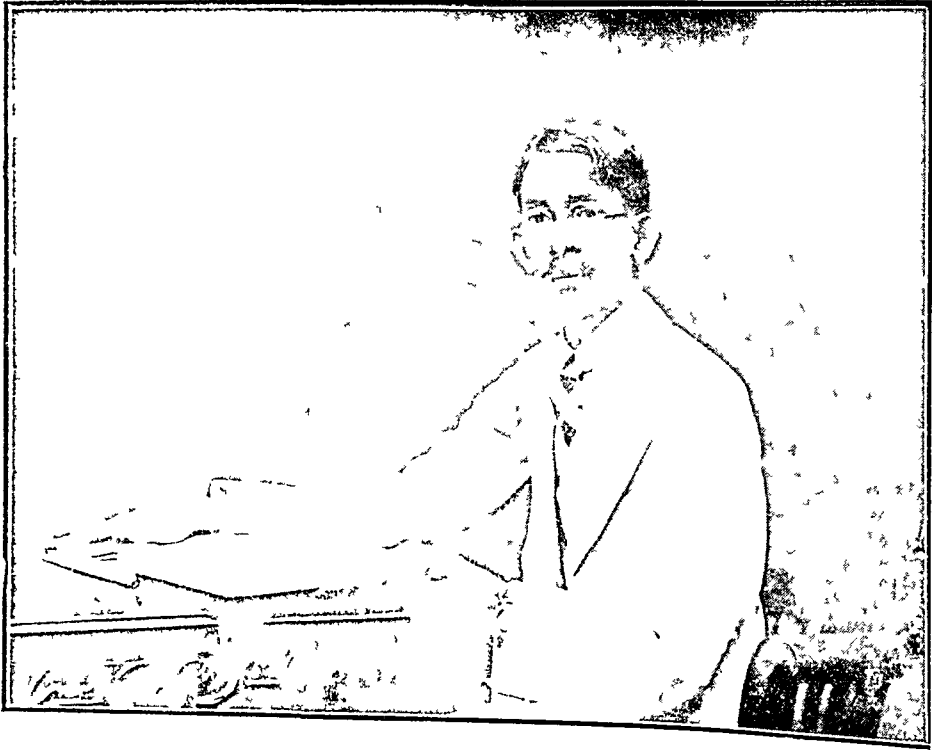
श्रीयुत मोहनलाल बड़जात्य।

History of Indian Trade

Written by

M, L, Barjatya

भारतका व्यापारिक इतिहास

लेखक—

श्रीयुत मोहनलाल बड़जातिया

PATRONISED BY

Babu Ghanshyamdasji Birla M. L A. Pilani,
Rai Bahadur Sir Seth Hukamchandji K. T. Indore,
Rai Bahadur Sir Besheswardasji Daga Bikaner,
Raja Bahadur Seth Banshilalji Pitti Bombay,
Diwan Bahadur Seth Keshari Singhji Kotah,
Hon. Seth Govinddasji M. L. A. Jabbalpore.
Kunwar Hiralalji Kashaliwal Indore,
Babu Beniprasadji Dalmia Bombay,
Seth Bherondanji Sethia Bikaner,
Seth Kasturchandji Kothari Bikaner,
Babu Bhanwarlalji Rampuria Bikaner,
Rai Bahadur Seth Poonamchand Karmchand Kotawala,
Seth Ramnarainji Ruiya Bombay,
Seth Shiochand Raiji Jhunjhunuwala Bombay,
Kunwar Laxminarainji Tikamani Bombay,
Seth Foolchandji Tikamani Calcutta,
Messrs. Pohumull Brothers Bombay,
Banijyabhushan Seth Lalchandji Sethi Jhalrapatan,
Kunwar Bhagchandji Soni Ajmer,
Kunwar Shoobhakaranji Surana Churu,
Kunwar Roopchandji Nahata Chhapar,
Seth Chhaganlalji Godhawat Chhotisadri,
Seth Bherondanji Chopra Gangashahar,
Seth Rameshwardasji Sodani Bombay,
Seth Hazarimal Sardarmal Churu.

हमारे माननीय सहायक ।

श्रीमान् बाबू घनश्यामदासजी बिड़ला एम० एल० ए०, पिलानी
,, राय बहादुर सर सेठ हुकुमचन्दजी के० टी०, इन्दौर
,, राय बहादुर सर विश्वेश्वरदासजी डागा, के० टी० बीकानेर
,, राजा बहादुर सेठ बंशीलालजी पित्ती, बम्बई
,, दीवान बहादुर सेठ केशरीसिंहजी, कोटा
,, ऑनरेबल सेठ गोविन्ददासजी मालपाणी एम० एल० ए०
,, कुंवर हीरालालजी काशलीवाल, इन्दौर
,, बाबू वेणीप्रसादजी डालमियां, बम्बई
,, वाणिज्य भूषण सेठ लालचन्दजी सेठी, झालरापाटन,
,, कुंवर भागचन्दजी सोनी, अजमेर
,, सेठ भैंरुदानजी सेठिया, बीकानेर
,, सेठ कस्तूरचन्दजी, कोठारी, (सदासुख गंभीरचन्द) बीकानेर
,, बाबू भंवरलालजी रामपुरिया, बीकानेर
,, सेठ रामनारायणजी रुइया, बम्बई
,, राय बहादुर सेठ पूनमचन्द करमचन्द, कोटा वाला
,, सेठ शिवचन्दरायजी झूंझनूवाला, बम्बई
,, कुंवर लक्ष्मीनारायणजी टिकमाणी, बम्बई
,, सेठ फूलचन्दजी टिकमाणी, कलकत्ता
,, मेसर्स पोहमल ब्रदर्स, बम्बई
,, कुंवर शुभकरणजी सुराना, चूरु
,, कुंवर रूपचन्दजी नाहटा, छापर
,, सेठ छगनलालजी गोधावत छोटीसादड़ी
,, सेठ भैरोंदानजी चोपड़ा, गंगाशहर
,, सेठ रामेश्वरदासजी सोढ़ानी, बम्बई
,, सेठ हजारीमलजी सरदारमलजी कोठारी, चूरू

मूल्य ३०) रुपया.
PRICE Rs. 30/-

उपहार
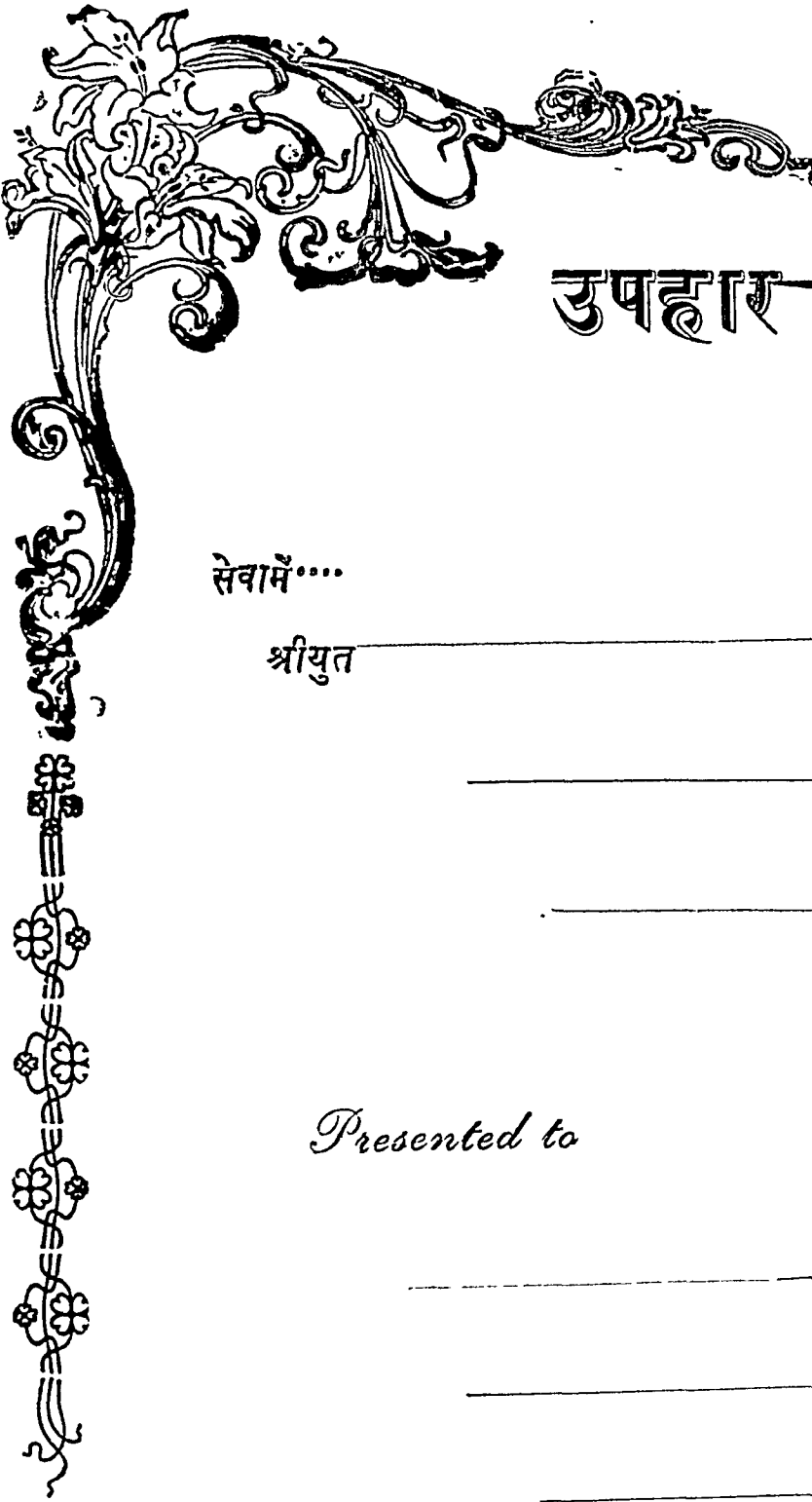
सेवामें....

श्रीयुत

Presented to

प्रकाशकोंका निवेदन

आज हम बड़ी प्रसन्नताके साथ इस बृहद् और भव्य ग्रन्थको लेकर पाठकोंकी सेवामें उपस्थित होते हैं। और इस शुभ कार्य्यके सफलता पूर्वक सम्पादन होनेके उपलक्षमें हार्दिक बधाई देते हैं।

आजसे ठीक नौमास पूर्व—जिस समय हम लोगोंके हृदयमें इस महत् कल्पनाका जन्म हुआ था, हमारे पास इस कार्य्यकी पूर्तिके कोई साधन न थे। न पैसा था, न मैटर था और न कोई दूसरे साधन। हमने अपनी इस कल्पनाको सुव्यवस्थित रूपसे एक कागजपर छपाकर करीब १२०० बड़े २ व्यापारियोंकी सेवामें इस बातका अनुमान करनेके लिए भेजा कि इसमें व्यापारी—समुदाय कितना उत्साह प्रदार्शित करता है। मगर इन बारह सौ पत्रोंमेंसे हमारे पास पूरे बारह पत्रोंका उत्तर भी नहीं आया। यही एक बात हमलोगोंको निराश करनेके लिए पर्याप्त थी। मगर फिर भी हमलोगोंने अपने प्रयत्न को नहीं छोड़ा, और निश्चित किया कि तमाम प्रतिष्ठित व्यापारियोंके घर २ घूमकर उनका परिचय और फोटो इकट्ठे किये जांय, और किसी प्रकार इस बृहत् ग्रन्थको अवश्य निकाला जाय। उससमय हमलोगोंने हिसाब लगाकर देख लिया कि इस महत् कार्य्यको सम्पन्न करनेके लिये सफर-खर्च समेत कमसे कम बीस हजार और अधिकसे अधिक पच्चीस हजार रुपयेकी आवश्यकता है। मगर उस समय तो हमारे पास पूरे पच्चीस रुपये भी न थे। था केवल, अपना साहस, आत्म विश्वास, और व्यापारियों द्वारा उत्साह-प्रदान की आशाका सहारा!

हमारा भ्रमण

इसी महत् आशाके बलपर केवल १७) सत्तरह रुपयेकी पूंजीको लेकर हमलोगोंने अपनी यात्रा प्रारम्भ की। सबसे पहले हमलोग अपने चिर परिचित इन्दौर शहरमें गये। कार्य्य-का बिलकुल प्रारम्भ था, व्यापारियोंको आकर्षित करनेकी कोई सामग्री पास न थी—ऐसी स्थितिमें कार्य्यको चालू करनेमें कितनी कठिनाई पड़ती है इसका अनुमान केवल भुक्त भोगी ही कर सकते हैं—आठ दिनतक लगातार घूमते रहनेपर भी हमें सफलताका कोई चिह्न दृष्टिगोचर नहीं हुआ। खर्चमें केवल तीन रुपये बच गये थे और वह समय दिखलाई देने लग गया था जिसमें हमारी सब आशाओंपर पानी फिरकर यह कल्पना गर्भ हीमें नष्ट हो जाती। मगर इसी समय इन्दौरके प्रसिद्ध सेठ सर हुकुमचन्दजीके पुत्र कुंवर हीरालालजी—जिनका नाम इस ग्रन्थके

प्रारम्भमें लेना हम अपना कर्त्तव्य समझते हैं—से हमारी भेंट हुई, हमने उन्हें अपनी कल्पना बतलाई, उन्होंने हमें उत्साहित किया, अपने फोटो भी दिये, कुछ आर्डर भी दिये, तथा अपने परिचित व्यापारियोंके नामपर कुछ परिचय-पत्र भी देनेकी कृपा की।

हमारी मुरझाई आशा खिल उठी, हमारा उत्साह प्रफुल्लित हो गया। हमारा साहस चमक गया। हमने एक वार फ़िर जोरोंसे कार्य्य आरम्भ कर दिया। इस वार इन्दौर के प्रायः सभी व्यापारियोंने हमें उत्साहित किया—जिनमें श्रीयुत भँवरलालजी सेठीका नाम विशेष उल्लेखनीय है—और तीन ही दिनके अन्दर हमें अपनी स्थिति जमती हुई दिखलाई देने लगी।

इन्दौरका कार्य्य समाप्त करते ही हमलोगोंने अपने भ्रमणकी गतिको बढ़ाया। कड़ाकेकी सर्दी पड़ती थी, मगर हमें उसकी कोई चिन्ता न थी। रोज हमारे बिस्तर खुलते थे और रोज बन्धते थे। इसी प्रकार खण्डवेसे लेकर अजमेरतक की लाईनको हमने करीब एक महीनेमें पार किया। इस एक महीनेमें हमें अधिकतर धर्मशालाओंमें ठहरना पड़ा। मगर सेण्ट्रल इण्डियामें सब जगह धर्मशालाएं नहीं हैं इस लिये कभी २ हमलोगोंको कड़ाकेकी सर्दीमें भी खुली जगहोंमें ठहरना पड़ता था। कहीं खानेको पूरी मिल जाती थी और कहीं केवल चना-चवेना खाकर दिन निकालना पड़ता था। मगर इन सब कष्टोंकी ओर हमें ध्यान न था। हमारा उत्साह हमें एक अप्रतिहत गतिसे खींचे लिये जा रहा था। व्यापारी आलम हमारे कार्य्यसे पूर्ण सहानुभूति बतलाकर उस उत्साहके वेगको बढ़ा रहा था।

धीरे २ सेण्ट्रल इण्डियासे निकलकर हमलोगोंने राजपूतानेमें प्रवेश किया। यहांके अनुभव हमें दूसरी ही प्रकारके हुए। यहांकी ऊंची २ भव्य इमारतों और लक्ष्मीके अतुल प्रतापको देखकर हमलोग चकित हो गये। मगर फिर भी हमारी कठिनाइयोंका अन्त नहीं हुआ। जयपुर और अजमेरमें तो कोई कठिनाई नहीं हुई। मगर आगे जब हम जोधपूर और बीकानेर स्टेटमें घुसे तब हमें अपनी कठिनाइयोंका अन्दाज हुआ। यहांपर धर्मशालाओंकी कमी न थी—मारवाड़के उदार और दानी सज्जनोंकी कृपासे यहां प्रायः सभी स्थानोंपर आवश्यकतासे अधिक धर्मशालाएं बनी हुई हैं—मगर खाने पीनेकी यहां हमें बहुत तकलीफ उठानी पड़ी। कभी २ चार २ पांच २ दिनों-तक हमें केवल पन्द्रह २ दिनके बासी पेठों और सेवपर निर्वाह करना पड़ा। इन रद्दी वस्तुओंको खाकर हमें लम्बे २ बालूके मैदान (स्टेशनसे गांवतक) पैदल पार करना पड़े। फल यह हुआ कि हमारे स्वास्थ्य पर धक्का पहुंचने लगा और हमारे एक साथी बीमार होकर घर चले गये। कष्ट थे—कठिनाइयां थीं, मगर सफलता भी हमें वैसी ही मिल रही थी। राजपूतानेके लक्ष्मी-पति धन कुबेरोंने हमारे उत्साहको खूब बढ़ाया। जयपुर, साम्भर, लाडनूं, सुजानगढ़, रतनगढ़, बीकानेर, चूरू, राजगढ़, पिलानी इत्यादि स्थानोंमें हमें आशातीत सफलता हुई। इस सफलतासे हमें निश्चय हो गया कि अब हमारा ग्रन्थ कुशलपूर्वक निकल जायगा।

राजपूतानेसे निकलकर हमलोगोंने परम रमणीक बम्बई शहरमें प्रवेश किया। इस शहरकी रमणीकता, इसके समुद्रतटकी सुन्दरता और तरह २ के मनोमुग्धकारी दृश्य देखकर हमलोगोंकी तबियत मुग्ध हो गई। यहांपर हमें खाने, पीने और ठहरनेकी कठिनाइयां नहीं उठानी पड़ीं फिर भी हमारी कठिनाइयाँ यहां कम न थीं। प्रतिदिन हमें करीब १०० मंजिल चढ़ना और उतरना पड़ता था। यहांके मारवाड़ी व्यापारियोंने हमें सबसे अधिक उत्साहित किया, मुलतानियोंने तथा गुजरातियोंने भी अच्छा उत्साह दिखलाया। पारसी, खोजा और बोहरा व्यापारियोंसे हमें उत्साह नहीं मिला, और यही कारण है कि अत्यन्त चेष्टा करनेपर भी हम उनके परिचय जैसे चाहिये वैसे इकट्ठे न कर सके।

यह हमारे भ्रमण का सांक्षिप्त वृत्तान्त है। इस भ्रमणमें हमें और कौन २ से विशेष अनुभव हुए? प्रत्येक स्थानके सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक जीवनमें, तथा रीति रिवाज़ों-में क्या २ विशेषताएं हमने देखीं, इनसब बातोंका वर्णन विस्तारके भयसे हमने यहां देना उचित न समझा। हो सका तो सामयिक पत्रोंके द्वारा इन सब बातोंका वर्णन हम पाठकोंके पास पहुंचाने की चेष्टा करेंगे।

ग्रन्थकी अपूर्णता

यद्यपि इस ग्रन्थको सुन्दर और सर्वांगपूर्ण बनानेमें हमने अपनी चेष्टामें कोई कसर बाकी नहीं रक्खी है। फिर भी हमें भली प्रकार अनुभव हो रहा है कि यह ग्रन्थ जैसी हमारी कल्पना थी वैसा सुन्दर नहीं हो सका है। इसका मुख्य कारण यह है कि हमने हमारे ग्राहकोंसे १५ जूनको ग्रन्थ प्रकाशित करनेका वादा कर लिया था। इतना बड़ा कार्य, करने वाले केवल तीन मनुष्य और समय केवल छः मास! ऐसी स्थितिमें इसका सर्वांग पूर्ण होना कैसे सम्भव हो सकता था? १५ जून तो हमें बम्बईमें ही समाप्त हो गई। तबतक न तो पुस्तकका एक फार्म ही छप सका था और न चित्रोंका एक ब्लाक ही बन सका था। इधर ग्राहकोंके हमारे पास तड़ातड उपालम्भके पत्र आने लगे। फल यह हुआ कि हमें बहुतसा कार्य अधूरा छोड़कर छपाईका काम शुरू करना पड़ा। सेण्ट्रल इण्डियामें, भोपाल, सिहोर, प्रतापगढ़ इत्यादि कुछ महत्वके स्थान छूटगये। इसी प्रकार बम्बईमें भी पारसी, खोजा, बोहरा भाटिया इत्यादि व्यापारियोंका परिचय जल्दीके मारे हम जैसा चाहिये वैसा एकत्रित न कर सके। हमारा यह भी विचार था कि प्रत्येक व्यापारका वर्णन करते समय उसके सम्बन्धके कुछ फोटो भी दिये जांय। इसके अनुसार हमने कॉटन मिलोंके भीतर और बाहरी दृश्य, मोती निकालनेवाले गोताखोरोंके कुछ चित्र तथा इसी प्रकारको रेशम वगैरहके दूसरे फोटोभी एकत्रित किये थे कुछ करना बाकी थे मगर समयाभावसे ये सब पड़े रह गये। इस प्रकार हमारी कल्पनाके अनुसार यह ग्रंथ कई दृष्टियोंसे अपूर्ण रह गया। जिसके लिए हम पाठकोंसे क्षमा चाहते हैं। यदि कभी इसके दूसरे संस्करणका अवसर आया तो ये सब अपूर्णताएं पूरी कर दीजांयगी।

प्रेस सम्बन्धी भूलें

समयकी इसी भयंकर कमीके कारण हम इस ग्रन्थकी फेअर कापी भी नहीं करा सके थे। फल यह हुआ कि हमें रोज रात २ भर जगकर कापी तैय्यार करना पड़ती थी और दिन २ भर प्रूफ देखना पड़ता था। दिन भरमें चार घण्टे भी पूरे हमें आरामके लिए नहीं मिलते थे। परिणाम यह हुआ कि इसकी कापीमें तथा प्रूफमें अत्यन्त चेष्टा करनेपर भी हम भूलोंसे इसकी रक्षा न कर सके। जिससे कहीं २ पर इस ग्रन्थमें बड़ी भद्दी भूलें रह गई हैं जिनके लिये हम पाठकोंसे अत्यन्त विनय पूर्ण भावसे क्षमा चाहते हैं और आशा करते हैं कि वे उन्हें सुधारकर पढ़ेंगे। यदि किसी माननीय व्यापारी सज्जनको अपने परिचयमें कोई भूल दिखलाई दे तो वे हमारी असमर्थता को पहचानकर उदारता पूर्वक क्षमा प्रदान करनेकी कृपा करें। और हमें सूचित कर दें ताकि अगले संस्करणमें उसे ठीक कर दी जाय।

इस वृहद कार्य्यको सर्वाङ्ग पूर्ण सम्पन्न करनेकी हम लोगोंमें शक्ति न थी हम तो केवल इसके निमित्त मात्र थे। इस ग्रन्थको प्रकाशित करनेका तमाम श्रेय उन व्यापारी महानुभावोंको है जिन्होंने हमें हजारों रुपयेकी लागतका यह ग्रंथ प्रकाशित करनेके योग्य बना दिया। हम उन सब महानुभावोंके प्रति हार्दिक आभार प्रदर्शन करते है। ऊपर कुंवर हीरालाल जी और श्रीयुत भंवरलाल जीका नाम तो हम लिख ही चुके हैं, इनके अतिरिक्त उज्जैनके श्रीयुत तनसुखलालजी पाण्ड्या, अजमेरके श्रीयुत कानमल जी लोढा, नीमचके श्रीयुत नथमलजी चोरडिया, बीकानेरके श्रीयुत — भैरूंदानजी सेठिया और चूरूके श्रीयुत शुभकरण जी सुराणा इत्यादि सज्जनोंके नाम विशेष उल्लेख-नीय हैं, जिन्होंने हमें कई परिचय पत्र देकर हमारे मार्गको सुलभ कर दिया। श्रीयुत मोहनलाल जी बड़जात्याने इस ग्रन्थके प्रारम्भमें भारतका व्यापारिक इतिहास नामक निबन्ध लिख देनेकी कृपा की है इसके लिए हम उनके भी अत्यन्त आभारी हैं। बम्बईके श्रीयुत कृष्णकुमारजी मिश्रने भी इस ग्रन्थके प्रणयनमें हमें बहुत सहायता प्रदान की है जिसके लिए उनके प्रति आभार प्रदर्शन करना भी हम अपना कर्त्तव्य समझते हैं। इसके अतिरिक्त "मुम्बईने व्यापारिक अनुभव" "मुम्बईनी गली कुंचिओ" "मुम्बईना महाशयो" भारतकी साम्पत्तिक अवस्था" "ग्वालियर स्टेट डायरेक्टरी" मारवाड़ राज्यका इतिहास" "भारतके देशीराज्य" आदि ग्रन्थोंसे भी इस ग्रन्थमें सहायता मिली है अतः इनके लेखकोंके प्रति भी हम हार्दिक आभार प्रदर्शन करते हैं।

इस ग्रन्थके दूसरे भागमें कलकत्ते, और बंगालके व्यापारियोंका परिचय रहेगा। हमें आशा है कि उसे हम इससे भी अधिक सुन्दर और सर्वाङ्गपूर्ण बनानेकी चेष्टा करेंगे।

विनीत

भानपुरा इन्दौर
श्रावणी अमावस्या
१९८५

संचालक—
कमर्शियल बुक, पब्लिशिंग हाऊस

विषय-सूची

बम्बई—विभाग

मध्यभारत-विभाग

राजपूताना—विभाग

भारतके व्यापारका इतिहास

HISTORY OF INDIAN TRADE

भारतका व्यापारिक इतिहास

'भारतवर्षके व्यापारियोंका परिचय' नामक इस विशाल ग्रंथके आदिमें भारतके व्यापारका परिचय देना आवश्यक है। जहाँ व्यापारियोंका परिचय है, वहां व्यापारका परिचय पहले आना चाहिए। इतिहासका लिखना एक साधारण बात नहीं और सो भी मुझ जैसे लेखकके लिए यह काम और भी कठिन है। जिस पर भी और सब बातोंका यथा—प्राचीन वा अर्वाचीन शासकोंका परिचय, युद्ध लड़ाई विद्रोहका वर्णन, सामायिक, धार्मिक या राजनैतिक परस्थिति--का इतिहास लिखना और बात है। यह सब आज कल हमारी स्कूलोंमें छोटेसे लेकर बड़े दर्जेतक पढ़ाया भी जाता है इसके अतिरिक्त प्राचीन अर्वाचीन शासकों, विजेताओं, राजाओं, बादशाहों आदिके चित्र और चरित्र भी मिल जाते हैं पर हमारा व्यापारिक इतिहास और व्यापारियोंका परिचय मिलना कठिन है। इस लिए इस विषयको सुसम्बद्ध रूपमें जुटा देना इस ग्रंथके प्रकाशकोंका एक महत्वपूर्ण कार्य है। देशके व्यापारियोंका यह परिचय आज ही नहीं पर जब तक व्यापार रहेगा--चाहे वह आजसे अच्छा हो या बुरा, उन्नत हो या अवनत, उसका अस्तित्व रहना अनिवार्य है—तब तक यह ग्रन्थ भी व्यापारियोंके गौरव और महत्वकी सामग्रीके रूपमें रहेगा।

व्यापार क्या है—यह बताना कठिन है, क्योंकि आज इसके महत्वको हम भारतवासी भूल गये हैं हमारा व्यापारिक ज्ञान विदेशियों द्वारा हरण कर लिया गया। यह बात नहीं है कि भारतवासी

भारतका व्यापारिक इतिहास

'भारतवर्षके व्यापारियोंका परिचय' नामक इस विशाल ग्रंथके आदिमें भारतके व्यापारका परिचय देना आवश्यक है। जहाँ व्यापारियोंका परिचय है, वहां व्यापारका परिचय पहले आना चाहिए। इतिहासका लिखना एक साधारण बात नहीं और सो भी मुझ जैसे लेखकके लिए यह काम और भी कठिन है। जिस पर भी और सब बातोंका यथा—प्राचीन वा अर्वाचीन शासकोंका परिचय, युद्ध लड़ाई विद्रोहका वर्णन, सामायिक, धार्मिक या राजनैतिक परस्थिति--का इतिहास लिखना और बात है। यह सब आज कल हमारी स्कूलोंमें छोटेसे लेकर बड़े दर्जेतक पढ़ाया भी जाता है इसके अतिरिक्त प्राचीन अर्वाचीन शासकों, विजेताओं,राजाओं,बादशाहों आदिके चित्र और चरित्र भी मिल जाते हैं पर हमारा व्यापारिक इतिहास और व्यापारियोंका परिचय मिलना कठिन है। इस लिए इस विषयको सुसम्बद्ध रूपमें जुटा देना इस ग्रंथके प्रकाशकोंका एक महत्वपूर्ण कार्य है। देशके व्यापारियोंका यह परिचय आज ही नहीं पर जब तक व्यापार रहेगा--चाहे वह आजसे अच्छा हो या बुरा, उन्नत हो या अवनत, उसका अस्तित्व रहना अनिवार्य है—तब तक यह ग्रन्थ भी व्यापारियोंके गौरव और महत्वकी सामग्रीके रूपमें रहेगा।

व्यापार क्या है—यह बताना कठिन है, क्योंकि आज इसके महत्वको हम भारतवासी भूल गये हैं हमारा व्यापारिक ज्ञान विदेशियों द्वारा हरण कर लिया गया। यह बात नहीं है कि भारतवासी इसका महत्व जानते ही नहीं थ—नहीं,भारत व्यापारके महत्वसे भलीभांति परिचित था और उसके इस महत्वने ही विदेशियोंकी आँखें--उनका ध्यान-इसकी ओर खींची। इसी व्यापारने उन्हें सात समुद्र पारसे यहां बुलाया। वे भारतकी उन्नतावस्था-समृद्धावस्था-देखकर इसके महत्वको समझ गये-समझे ही नहीं पर इस महत्वपूर्ण कार्यकी प्राप्तिमें लग भी गये और आज उसीके बल या यों कहा जाय कि उसकी रक्षा या उसे अपने अधिकारमें बनाये रखनेके लिए ही भारतपर राज्याधिकार कर रहे हैं।

भारतकी वह लक्ष्मी, वह धन वैभव, वह समृद्धावस्था किसके बल पर थी ! यहां क्या धनकी नदी वहती थी, या वह यहांके पहाड़ोंमें होता था अथवा क्या उसकी खेती होती थी ! वह केवल था 'व्यापार' के बल पर। इसी लिए निस्वार्थी ऋषि-महर्षियोंने इस धनका मूल मंत्र 'व्यापारे बसते लक्ष्मी' कह दिया। भारत सन्तान इस मूल मंत्रको भुला गई और इसी लिए एक दिन जो संसार में सवसे अधिक वैभव शाली था वही भारत आज सबसे अधिक निर्धन और दरिद्री बन रहा है, जीर्णशीर्ण कलेवर हो रहा है और धनशालिता तो दूर पर भर पेट रोटीके भी लाले पड़े रहे हैं। लक्ष्मीके भंडार इस भारतने लक्ष्मीको नहीं भुलाया, लक्ष्मी इससे नहीं रूठी, वह यहांसे भाग नहीं गई, पर यों कहना चाहिए कि इस भारतने लक्ष्मीके भंडार व्यापारको भुलाया, उससे व्यापार रूठ गया और वह सात समुद्र पार चला गया। इसीसे भारतकी आज यह दशा है।

व्यापार लक्ष्मीका निवास भंडार है, और लक्ष्मी देवी भारतसे विदा ले गई, इससे स्वतः यही निष्कर्ष निकलता है कि व्यापार यहांसे चला गया। इसलिए यदि भारतकी दुःख दरिद्रावस्था की आलोचना और उसके सुधारका प्रयत्न करना है तो उसके व्यापारकी आलोचना, उसका विचार विमर्ष और उसमें सुधार करनेकी पूर्ण आवश्यकता है। आज, व्यापार लक्ष्मीका भंडार है केवल यह मानकर समयकी स्थिति गतिको साचे समझे बिना काम करनेसे नहीं चलेगा, क्योंकि आज सब कुछ परस्थिति बदल गई है। व्यापार यहांसे चला गया—यह ठीक, पर जो कुछ रहा वह भी विदेशियोंके हस्तगत है। पूर्वकालमें हमारे ग्रामों या नगरोंमें हमारी छोटीसे लेकर बड़ी आवश्यकता तककी पूर्त्तिके स्थानीय साधन विद्यमान थे किसीके परमुखापेक्षी होनेकी आवश्यकता न थी; उदर भरनेके लिए अन्न ही नहीं पर घी दूध दहीका भी यहां भंडार था, लज्जा और शीतोष्ण निवारण करनेके लिए वस्त्रोंकी-सो भी ऐसे बढ़िया कि जिनपर विदेशी मोहित थे-यहां पर समुचित प्राप्ति थी। अपने अपने ग्राम और नगरमें नित्य व्यवहार्य वस्तुओंकी प्राप्तिमें कोई कठिनाई न थी और यहांके निवासी खा पीकर बड़े सुखसे दिन व्यतीत करते थे। व्यापार भी था तो लक्ष्मी भी उपस्थित थी और इसी लिए 'व्यापारे बसते लक्ष्मी' का मंत्र बन गया। व्यापार भी उस समय आज कलकी तरहका न था कि जिसमें पद पद पर हानिकी आशंका अधिक और मुनाफेकी सम्भावना कम। उस समय भी बाहरसे माल आता था और यहांसे जाता भी था पर इस यन्त्र कला और मशीनरीका उस समय उदय नहीं हुआ था और आज कलकी तरह विदेशी पदार्थोंसे भारतीय बाज़ार पाटे नहीं जाते थे और न लाने लेजानेवाले पदार्थोंमें हानिका ही इस तरह भय रहता था। आज अभी पहलेके ऊँचे दामोंके खरीद किये हुए मालका आकर खपना तो दूर रहा पर उसके पहुचनेके पूर्व ही आगेके आवदानी मालके भावका तार मंदा आ आजाता है और एकदम दाम घट जाते हैं, एवं बाजारमें रेल पेल मच जाती है। इसी प्रकार मशीनके उद्योगके बलपर पदार्थोंका नि-

र्माण दिन प्रति दिन बढ़ता ही जाता है और इनके बनाने वाले देश इसी चिंता व प्रयत्नमें लगे हैं कि किस तरहसे अपने यहांके पदार्थोंको अधिकसे अधिक परिमाणमें भारतमें खपा सकें। उस समय न रेल थी न जहाज और न तार ही, पर तौ भी सुखशांति और समृद्धिका साम्राज्य था, पेट भर खानेको मिल जाता था। अन्न दूध घी से गृहस्थोंके घर भरे रहते थे और केवल यही पदार्थ नहीं पर आवश्यकीय सब सामग्री उपलब्ध थी। आज वहीं ये पदार्थ व्यापारके द्रव्य बन गये हैं। जिस भारतका कलाकौशल, कृषि शिल्पादि समस्त संसारको चकित करता था वही भारत आज विदेशी पदार्थोंपर मोहित और आश्रित हो रहा है। जो भारत एक दिन विद्या बुद्धि और शिल्पचातुरीका केन्द्र था वहां पर अब ये बातें मानों रही हो नहीं, तभी तो ये सब सीखनेके लिए भारतवासियोंको योरप जाना आवश्यक हो रहा है। जहां अपने आप सब कुछ करके सुखशान्तिसे जीवन निर्वाह कर लिया जाता था वहां अब औरोंसे मिले बिना, नौकरी चाकरीकी खोज और अहर्निशि दौड़ धूप किये बिना गुजर ही नहीं हो सकता। नवीन वाष्पीय यन्त्रोंके आविष्कार और विदेशियोंके संघर्षने भारतके प्राचीन वाणिज्य व्यवसाय, कलाकौशल, उद्योग धंधेको मटिया मेट कर दिया। अभी इस पर भी उन विदेशोंकी आशातृप्ति या भूखशान्ति हो गई हो सो बात नहीं है पर यन्त्रकलाके निरन्तर बढ़ते जानेके कारण उन देशोंकी भूख और भी बढ़ती जा रही है और वे उद्योगी देश संसारके समस्त वाणिज्य और धनको हड़पना चाहते हैं।

आज ऊपरी दृष्टिसे देखनेपर भारतमें भी व्यापारका जोरशोर बड़ा भारी दिखलाई देता है, देशके इस छोरसे उस छोरतक जान पड़ता है कि बड़ा भारी व्यापार हो रहा है, कलकत्ता, बम्बई: और करांचीके बन्दरगाह विदेशोंके लाये हुए एवं विदेशोंको ले जानेवाले मालसे लदे हुए दिखलाई पड़ते हैं। इसी भांति देशमें मिल कारखानों तथा दूसरे उद्योग की भी बढ़वारी जान पड़ती है,पर यह सब देखकर भ्रममें आना बड़ी गलती होगी और इस बातके लिए थोड़ी सूक्ष्म दृष्टिसे विचार करनेकी आवश्यकता पड़ेगी यदि विदेशोंके मुकाबलेमें देखा जाय तो भारतका जो कुछ और जिस तरहका भी व्यापार आज है वह उसकी जनसंख्याके परिमाणमें बहुत कम है एवं वह भी मुख्यतया विदेशोंके लाभ और उनके ही परिपालनके लिए है न कि भारतके कुछ हित या समृद्धिके लिए। यहांके निर्यात किये हुए पदार्थों से विदेशोंका काम चलता है और यहांके आयातसे उन विदेशोंके उद्योग धंधे पलते हैं अर्थात् वहांके बने हुए पदार्थ हमारे आयातके रूपमें हमें ठूसे जाते हैं। आज भारतमें रेल, तार, जहाज आदि जो हैं वे सब भी मुख्यतया उस विदेशी व्यापारके साधन उत्तेजनाके अर्थ हैं न कि भारतके किसी लाभके लिए। यह नहीं कि केवल विदेशों हीमें उद्योग या यंत्र प्रयोग बढ़ा हो, भारतमें भी उद्योग या कल-कारखानोंकी वृद्धि हुई है पर देशके दुर्भाग्य और उन विदेशोंकी रीति-नीति या प्रतिद्वन्द्विताके कारण या तो यहांके इन उद्योग धन्धोंकी दशा शोचनीय है या अधिकतर इनमें विदेशी पूंजी लगती है

जिससे जो लाभ होता है वह भारतवासियोंको नहीं पर पूंजी लगानेवाले उन विदेशी पूंजी पतियोंको मिलता है इस तरहसे यहांके उद्योग धन्धे या कल कारखानोंमें जो मुनाफा रहता है वह भी मुख्यतया उन विदेशियोंकी ही जेबोंमें जाता है और इस भांति विदेशी माल या विदेशी पूंजी भारतीय कला और उद्योगके मुख्य नाशकारी साधन हो रहे हैं !

आज भारत चाहे जितना दीन दरिद्री हो, पर प्राचीन कालमें वह इतना धनी था कि उसके जोड़का संसारमें शायद ही कोई दूसरा देशहो। अलेकज़ंडरसे लेकर कितने विदेशी न जाने कितना धन लूट पाटकर यहांसे ले गये। जब महम्मद गोरी यहांसे लूटकर लौटा तो उस लुटे हुए धनका कुछ परिमाण नहींबंध सका। अकेले नगरकोटकी लूटसे उसे ७ लाख स्वर्ण दीनार, ७००मन सोने चांदीके पाट, २०० मन खालिस सोनेकी ईंटें, २००० मन बिना ढली हुई चांदी और २० मन जवाहिरात जिनमें मोती, मूङ्गा, हीरा पन्ना आदि कई प्रकारके रत्न थे, हाथ लगे। इसी प्रकार न जाने कितने हमले हुए और विदशी यहांसे कितना द्रव्य भरकर ले गये। नादिरशाहकी लूटका अनुमान ९ अरब रुपयेसे अधिकका किया जाता है। इसी भांति मुहम्मद बिनकासिमने मुलतान विजय किया तो उसे केवल एक मन्दिरसे १३२०० मन सोनेके बराबर धन मिला। सुलतान महमूदने भीमनगरके एक मंदिरको लूटा तो उस धन दौलत और रत्न भण्डारका लादकर ले जाना ही उसके लिये कठिन हो गया। जितने ऊंट मिले उन सब पर लादकर वह ले गया। चांदी और सोनेका वजन ७००,४०० मन हुआ और जब गज़नीमें पहुंचकर उसने उस लूटे हुए द्रब्यको खोला तो उसे देखकर उसके दरबारी दंग रह गए, वह सब माल इतना था कि उन विचारोंने देखा तो क्या कभी सुना तक भी नहीं था। कन्नौजमें वहांके वैभवको देखकर महमूदके मुंहसे निकल गया कि ओहो ! यह तो स्वर्ग ही है। उस स्वर्ग भूमि भारतका आज यह क्या हुआ ! जिसकी सभ्यता, उच्चता संस्कृति आदिका ढिंढोरा चारों ओर था वही ऐसा गिरा, ऐसा निसत्व हुआ कि आज उसके जोड़का गया बीता अन्य कोई नहीं है। अफीमची चीनके साथ भी उसकी तुलना नहीं की जा सकती। यह सब क्या हुआ ? वह लक्ष्मी कहां चली गई ? कहना होगा कि जहां व्यापार गया वहींपर गई और इसीके कारण भारतकी आज यह दशा है। कहा भी हैः—

दारिद्र्यात् ह्रियमेति ही परिगतः सत्वात् परिभ्रश्यते,
निःसत्व परिभूयते परिभवान्निर्वेद मा पद्यते।
निर्विण्णः शुचिमेति शोक निहितो बुद्ध्या परित्यज्यते,
निर्बुद्धयाः क्षय मेत्य हो निधनता सर्वापदा मास्पदम् ॥

कवि दुखके साथ कहता है कि दारिद्र्य सब आपदाओंका घर है। इस बातका प्रमाण भारतकी वर्तमान दशा है। सब बातोंको दारिद्रने ढंक दिया। ऐसी हालतमें अन्य सब गुण कर भी क्या सकते थे, उन्हें भी भारतसे विदा लेनी पड़ी। आज शक्ति, बल, सत्ता, साहस, आत्माभिमान, आत्म गौरव

आदि सब गुण न जाने कहां चले गये। कहां है वह बल और आदर ? आज विदेशोंमें आदरकी बात तो दूर रही पर घरकी घरमें बुरी दशा है। बाहर जो अपमान निरादर होता है उसकी बात छोड़ देने-पर भी अपने यहांकी दशाका मिलान एक साहब और भारतीयके मान, इज्जत, आदरके भेदसे भली-भांति हो जाता है। यहां यह शंका हो सकती है कि एक दारिद्र्य अवगुणके होनेसे ऐसी दशा क्यों हुई या एक अवगुणके होनेसे अन्य सब गुणोंका क्या हुआ ? एक अवगुण होनेसे अन्य गुणोंको भागनेकी क्या आवश्यकता आपड़ी और इस तरह एक अवगुणका इतना प्रभाव भी कैसे चल सका ? महाकवि कालिदासने कहा है:—

"एकोहि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः" कि अनेक गुणोंमें दोष इस तरह छिप जाता है जैसे चन्द्रमाकी मनोहर उज्वल कान्तिमें उसका कलङ्क। हो सकता है, अन्य किसी अवगुणके लिये यह बात हो सके कि वह अन्य गुणोंमें अपना प्रभाव न बता सके और स्वयं ही उन गुणोंके बीच छिप जाय, पर दारिद्र्यका दोष ऐसा वैसा साधारण अवगुण नहीं कि वह छिप जाय या अपना प्रबल प्रभाव दिखाये बिना रह जाय। इसलिए एक अन्य कविने क्या ही अच्छा कहा है:—

"एकोहि दोषो गुण सन्निपाते निमञ्जतीन्दोः इतियोवभाषे।
नूनं न दृष्टः कविनापि तेन दारिद्र्य दोषो गुणराशि नाशीः ॥

वह कहता है कि गुणोंके समुदायमें एक दोष छिप जाता है ऐसा जिस कविने कहा उसने यह बात नहीं देखी या विचारी कि दारिद्र्य सब गुणोंका-गुणोंके ढेर पुंजका-नाश कर देता है। सत्य है प्रत्यक्ष प्रमाणित बात है। तभी तो दारिद्र यके प्रति पक्षी—धनमें यह गुण है कि सब गुण उसमें आ जाते हैं, जहां वह है वहां सब गुणोंका निवास है। जिस भांति दारिद्र्यमें सब दोष आ जाते हैं उसी भांति धनमें सब गुण आजाते हैं। आ किस तरह जाते, धन उन्हें बुलाने नहीं जाता है। वे सब स्वयं चले आते हैं आते ही नहीं पर आश्रय ले लेते हैं। तभी कहा है"सर्वे गुणा काञ्चनमाश्रयन्ति" इसलिए यदि भारतको अपने दुर्दिन भगाने हैं पहली सी बात बनानी है तो लक्ष्मीका आह्वान एवं उसके भंडार व्यापारका आश्रय लेना चाहिए। यही एक ऐसा साधन है जो गई हुई लक्ष्मीको फिरसे ला सकता है। मनु महाराजने लिखा है:—

व्यापार राजाकी आयका प्रधान मार्ग है, इससे राज्यका सम्मान बढ़ता है, देशके व्यापारी वर्गको उद्यमकी प्राप्ति होती है और कला-कौशलकी उन्नति होती है। यह देशकी आवश्यकताओंकी पूर्ति और काम धन्धेकी जुगाड़का साधन है, इससे शत्रु भयभीत रहते हैं और राज्यके लिए यह परकोटेका काम देता है। इससे नाविकोंका पालन होता है युद्धकालमें बड़ी भारी सहायता मिलती है और संक्षेपमें बात यह है कि यह लक्ष्मीका निवास है।

मनु महाराजने व्यापारकी महिमाका वर्णन करते हुए उसके सब अङ्गोंका वर्णन कर दिया है।

भारतीय व्यापारियोंका परिचय

जबतक ये बातें उसमें नहीं होती तबतक हम उसे हमारा व्यापार कैसे कहें एवं वह लक्ष्मीका निवास कैसे हो सकता है। आज भारतका व्यापार हमारा व्यापार नहीं है,वह विदेशी राजाकी आयका प्रधान मार्ग है, विदेशी व्यापारीवर्गके लिए उद्यमकी प्राप्ति और कला कौशलकी उन्नतिका साधन है। व्यापारके साथ देशके उद्योग धंधेकी, कला कौशलकी, सामुद्रिक वेड़ेकी और उसके धन वैभवकी वढ़वारी होनी चाहिए। जबतक ये बातें नहीं तबतक हमारा व्यापार नहीं है, यही कहना उपयुक्त होगा एवं कहना पड़ेगा कि आज भारत व्यापारहीन, कला कौशल और उद्यमहीन हो रहा है, यह सब विदेशी शासकों की कृपाका फल है। उनके गत एक शताब्दिके शासनने भारतको सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और व्यापारिक सब परिस्थितियोंमें गिरा दिया। इन सब बातोंमें सिरमौर रहनेवाले भारतकी प्राचीन कालमें व्यापारिक दशा कैसी थी यह सबसे पहले विचारणीय है।

भारतका पूर्वकालीन व्यापार

भारतमें धनकी नदी बहती थी, माल खजानेका यहां ढेर था, इस धनके भंडार-सागरमेंसे न जाने कितने विदेशी कितना माल भर भरकर लेगए। भारतकी ऐसी स्मृद्धि निश्चय ही व्यापारके कारण थी। व्यापारके बिना लक्ष्मी कहांसे आती और लक्ष्मी थी यही वात भारतमें व्यापारकी उन्नतावस्थाका पक्का प्रमाण है। जिस भांति भारत लक्ष्मीका निवासस्थान था उसी भांति वह व्यापारका भी केन्द्र था। ई० सन्से ६-७ सौ वर्ष पहले भारतका व्यापार इटली, यूनान, मिश्र, फोनीसिया, अरव, सीरिया पारस, चीन और मलाया आदि देशोंके साथ होता था। वहुत प्राचीन काल अर्थात् मनुमहाराज के समयमें यहां जहाज बनाये जाते थे और उनसे समुद्रयात्रा की जाती थी इस वातका वणन मिलता है। भारतवासियोंके हाथमें व्यापारकी डोर थी इसका मिश्रके ग्रन्थोंमें विस्तारपूर्वक वर्णन मिलता है; जिनमें यह भी लिखा है कि भारतीय पोत समुद्रोंमें विचरते थे। जो कुछ प्राचीन प्रमाण मिलते हैं उनसे यह भली भांति सिद्ध होजाता है कि भारतका भीतरी एवं विदेशी व्यापार निश्चयहीं २५०० वर्षसे लेकर सम्भवतया ४०००वर्ष पूर्वतक अच्छी तरह चलता था। यद्यपि अंगरेज सरकारके शासनमें आजकल जिस भांति व्यापारिक आँकड़े मिल जाते हैं, वैसे प्राचीन कालमें नहीं मिलते तथापि प्राचीन वर्णनसे आजकलके और पहलेके व्यापारिक ढंगका पता भलीभांति चल जाता है। मिस्टर डेनियल (Mr. Daniell) ने अपनी पुस्तकमें लिखा है कि भारत उन्हीं पदार्थोंको वाहर भेजता था जो उसके यहां अधिक होते थे और वे पाश्चात्य एशिया, ईजिप्ट और योरपमें भारी दामोंमें विकते थे ये पदार्थ भारतके सिवा और कहींसे प्राप्तही न हो सकते थे। यह थी भारतीय पदार्थोंकी महिमा। इसी भांति वुद्ध-कालीन भारतके विषयमें राइसडेविडने (Rhys David) लिखा है कि रेशम, मलमल, वढ़िया कपड़े, अस्त्र शस्त्र, जरी बूंटीकी कामदानियां और कमलें, सुगंधित पदार्थ,

और जड़ी बूटियां, हाथी दांत और उसके बने पदार्थ, जवाहिरात और सोना चांदीके व्यापारके मुख्य पदार्थ थे। भारत उस समय अपने यहांसे बने हुए माल (Manufactures) को बाहर भेजता था और उसके आयातमें चीनसे रेशम और रेशमी पदार्थ, सीलोनसे मोती और पश्चिमी पड़ोसी देशोंसे अन्य जवाहिरात तथा काच बाना, और चीनसे चीनी मिट्टीके पदार्थ आते थे पर वे बहुत थोड़े होते थे और उनका ऐसा कोई महत्व नहीं था। प्राचीन कालमें भारतको अपने उद्योगके लिए बाहरसे कचा माल मंगाना नहीं पड़ता था। (चीनसे थोड़े रेशमके सिवा) सब कच्चा माल यहीं प्राप्त होजाता था। मुख्यतया रुई एक ऐसा पदार्थ है जिससे कपड़े बनानेकी कारीगरी बड़ी महत्वपूर्ण थी और जिसकी प्रशंसा मेगस्थनीज़ने चंद्रगुप्त मौर्य (३२१ से २६७ ई० पूर्व) के कालमें इन शब्दोंमें लिखी है:—"यहां एक वृक्षके ऊन लगती है जो भेड़का ऊनसे नर्म और सुन्दर होती है" निश्चय ही यह पदार्थ रुई था। इसी भांति नीलसे बने रङ्ग भी उल्लेखनीय है। रुईसे कपड़ा बनाने और रंगनेकी भांति रंगका भी यहां प्रधान उद्योग था। हाथी दांत यहांके निर्यातका मुख्य पदार्थ था, इसी भांति डा० मुकरजी लिखते हैं कि कस्तूरी भी यहां से बाहर भेजी जाती थी। हाथी यहांसे स्थल मार्गसे बाहर भेजे जाते थे और पक्षियोंमें यहांके मयूर पक्षी मुख्य उल्लेखनीय है जिसे अलेकजेंडरके समीपवर्त्ती कालमें मिश्रवाले बहुत पसन्द करते थे।

कपड़ेके बाद भारतीय बने हुए पदार्थोंके निर्यातमें मुख्यतया लोहा और फौलादके बने पदार्थ भी बहुत महत्व रखते हैं। भारतवासी लोहेके पदार्थ बनानेमें बड़े कुशल थे इस बातके प्रमाणके लिए विशेष परिश्रमकी आवश्यकता नहीं, क्योंकि हिरोडोटसनने लिखा है कि पारसके राजा जेरजास (Parsian King xerxes)की सेनाके भारतीय सैनिक ऐसे धनुषबाण लिये हुए थे जिनमें लोहा जड़ा था। मौर्यकालमें लोहकार जातिका उल्लेख भलीभांति मिलता हैं। मौर्य शासनके उदय कालसे कमसे कम५ शताब्दी पूर्वका वर्वन करते हुए केम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इंडिया नामक पुस्तकमें लिखा है कि धातुके पदार्थ बनानेवाले कच्ची धातुको भट्टियोंमें गलाते थे और उससे घरेलू पदार्थ बरतन आदि बनाते थे। यह भलीभांति सिद्ध है कि मौर्यकालमें लोहेके उद्योगकी काफी उन्नति हो चुकी थी। ६०० वर्ष बाद तो इस काममें और भी निपुणता आ गई थी। दिल्ली और धारमें आज जो लोह-स्तम्भ खड़े हैं वे इसके पूर्ण प्रमाण हैं। इस तरहकी कारीगरीका उदय एक दिनमें होना सम्भव नहीं और यह निश्चय ही शताब्दियों पूर्वसे चले आए हुए उद्योगके विकासका फल होना चाहिये। इस प्रकार यह अनुमान कर लेना अनुचित नहीं होगा कि भारतमें ईसाके कई शताब्दी पूर्व सब तरहके अस्त्रशस्त्र और जिरहबख्तर बनते थे। लोहेके पदार्थ बनानेके लिए यहां कच्चा लोहा काफी परिमाण-में होता था और इसीलिए यहांकी आवश्यकतापूर्त्तिके बाद लोहेके बने पदार्थोंका निर्यात बाहर किया जाता था।

लोहेके बाद लकड़ीका शिल्प आता है। पूर्वकालमें भारतमें जहाज बनते थे, इससे लकड़ीका शिल्प यहां विद्यमान था—यह बात सिद्ध हो जाती है। मुकुरजीने अपनी पुस्तकमें लिखा है कि भारतमें दो हजार वर्ष पूर्व एक हजार या पन्द्रह सौ टन तककी भरतीके जहाज बनाये जाते थे। क्योंकि जहाजोंकी निर्माण कला एक राष्ट्रीय आवश्यकता समझी जाती थी इसलिए उस जमानेमें जहाजोंके बनानेके कारबारपर राजाका अधिकार रहता था। मेगास्थनीजने लिखा है कि "अस्त्र शस्त्र और जहाजोंके बनानेवाले शिल्पी लोग राज्यसे वेतन पाते हैं और वे लोग केवल राज्यका काम करते हैं"। चन्दन और सागवानकी लकड़ी भी यहांसे बाहर भेजी जाती थी।

अन्य धातुएं यथा पीतल, टीन और शीशा यहाँ बाहरसे आता था। सोना प्राचीन कालमें यहाँसे निर्यात होता था। इस विषयमें मि० कैनेडी (Mr. Kennedy.) ने लिखा है कि सोना इंदु नदीसे दूर पर्वतोंमें मिलता था और वह धूलिके रूपमें बाहर भेजा जाता था। कुछ मत यह भी है कि सोना और चाँदीका यहां आयात होता था। भारतके निर्यात किये हुए पदार्थोंके मूल्य स्वरूप रोम और उसके प्रान्तोंसे स्वर्णका आयात इतना भारी होता था कि जिसे देखते हुए स्वर्णको भारतीय ऊपज न मानना भी कठिन हो जाता है। लेकिन साथ ही यह बात है कि महमूद गजनी आदि लुटेरे भारतसे जो अमित धनराशि, स्वर्णके आभूषण और सिल्लियां आदि लूटकर ले गये, वह सब क्या केवल भेजे हुए मालके मूल्यमें बाहरसे मिले हुए स्वर्णसे संग्रहित हो जाना सम्भव था। इसलिए भारतमें सोनेकी स्थानीय प्राप्ति मान लेना भी असंगत नहीं जान पड़ता। इसके अतिरिक्त माइसोरकी सोनेकी खानोंकी वर्तमान खुदाईमें इस बातके चिह्न मिलते हैं कि यहाँ पहले खुदाई हुई थी और सोना निकाला गया था।

भारत अन्य देशोंके साथ जवाहरातका कारबार प्राचीन कालसे करता रहा है। इसमें मोती मुख्य थे। रत्नोंका व्यवहार यहाँ बहुत भारी था। यहां मोती, मूंगा, गोमेद, पिरोजा आदि रत्नोंका आधिक्य था एवं अन्य मूल्यवान रत्न भी आवश्यकताकी पूर्तिके बाद यहांसे बाहर भेजे जाते थे।

कच्चे मालमें मुख्य व्यापारिक पदार्थ मसाले, जड़ी बूटियां, मिर्च, दालचीनी, इलायची, लौंग, जायफल, सुपारी, कपूर, अफीम, कस्तूरी और पुष्पसार तेल आदि थे। पुष्पसार और तेल बने हुए पदार्थोंकी गणनामें भी आ सकते हैं जिनकी रोममें बड़ी मांग रहती थी। मसाले आदि पदार्थ सम्भव है पूर्णतया यहांकी ऊपज न भी रहे हों। और यहाँ जिस समयका वर्णन है उसके बादसे जावा और सुमात्रासे ये पदार्थ योरपको भारी परिमाणमें जा रहे हैं। इसलिए सम्भव है कि मसालेकी चीजोंका भारतमें आयात और यहाँसे निर्यात दोनों ही होते रहे हों। निश्चय ही इन चीजोंका निर्यात अधिक था क्योंकि सम्भवतया जावा और सुमात्रासे जो यहां आयात होता था उसका भी यहांसे पाश्चात्य पड़ोसी देशोंको निर्यात कर दिया जाता था।

इस भांति ई० १००० बर्षतक भारतके प्राचीन व्यापारपर दृष्टि डालनेसे यह निष्कर्ष निकलता है कि उसके निर्यातका अधिकांश भाग बेना हुआ या पक्कामाल होता था। कच्चा माल भी जाता था मगर बहुत कम खाद्य पदार्थोंमें मुख्यतया मसाले आदिका निर्यात होता था। मालके मूल्य पर भी विचार करनेसे यही मानना पड़ेगा कि आयातसे निर्यात अधिक होता था। जिसमें मुख्य भाग सब तरहके कपड़ेका था। प्राचीनकालमें भारत पश्चिमसे जो स्वर्णमुद्रा और धन खींचता था वह मूल्यवान निर्यातकी अधिकताके मूल्य स्वरूप नहीं तो और क्या था। प्लाइनी (pliny) ने प्राकृतिक इतिहास (Natural History) में लिखा है कि "ऐसा कोई वर्ष नहीं था जब भारत रोम साम्राज्यसे १ करोड़ सेसटर्स नहीं खींच लेता था। यह द्रव्य आजकी विनिमय की दरसे १० लाख पौंड या १½ करोड़ रुपयेके बराबर होगा। यद्यपि आज शताब्दियों के बीतजाने पर भी यहांके आयातसे निर्यातकी तादाद अधिक होती है पर आजमें और उस दिनमें बड़ा अन्तर है। जो भारत अपने खानेके लिए खाद्य पदार्थोंका और उद्योगके लिए कच्चे पदार्थों-का अपने यहीं उपयोगकर न केवल अपनी आवश्यकताकी ही पूर्त्ति करता था बल्कि अपना बना हुआ पक्का माल विदेशोंको भी भेजता था वही भारत आज अपनी आवश्यकताओंके लिए विदेशों पर आश्रित है। प्राचीन कालमें भारत अपने यहां आयात किये हुए पदार्थोंका मूल्य यहांके बने हुए पदार्थोंको निर्यात कर चुका देता था एवं अपने निर्यातकी अधिकताके मूल्य स्वरूप बाहरसे धन खींचता था, वहीं आज उसके निर्यातकी अधिकताका बाकी मूल्य उसके विदेशी शासकोंके पास पर्दे ही पर्देमें चला जाता है जिसकी कुछ खबर नहीं पड़ती। आज उसके निर्यातका आधिक्य इस बातसे और भी बुरा है कि वह मुख्यतया कच्चे माल और खाद्य पदार्थोंका समुदाय है। वही पदार्थ यदि देशमें रहें और उनसे माल तयार किया जाय तो वह यहीं खप जाय और उसे विदेशी माल खरीदना न पड़े।

आजकी व्यापारिक वस्तुओंका २००० वर्ष पूर्वके पदार्थोंके साथ मिलान करनेपर और भी कई बातोंका अन्तर मालूम पड़ेगा। वर्त्तमानमें निर्यात किये जानेवाले पदार्थोंका यथा, चाय, पाट और गेहूंका उस समयके निर्यातमें कहीं भी वर्णन नहीं मिलता। उस समय चाय भारतमें न तो पैदा ही होती थी और न जिन देशोंके साथ भारतका व्यापार था वहां इसकी आवश्यकता ही थी। इसी भांति पाटसे यद्यपि यहांवाले उस समय अभिज्ञ थे और इसकी खेती भी होती थी पर उस समय इसका आजके सदृश व्यापारिक महत्व नहीं था। उस समय यहांसे रंग और रंगके पदार्थोंका जो निर्यात होता था वे भी आजके निर्यातमेंसे बिलकुल अदृश्य हो गये हैं। आज हमारे आयातमें मुख्य भाग कपड़ा, लोह लकड़की चीजें और तमाखू आदि का होता है, इन सब पदार्थोंकी पहले हमें बाहरसे मंगानेकी कोई आवश्यकता ही नहीं होती थी।

हमारे उस प्राचीन व्यापारकी एक और महत्वपूर्ण बात यह थी कि उस समय यहां बाहरसे आयात किये हुए पदार्थोंको फिरसे निर्यात कर देनेका भी बहुत बड़ा व्यापार चलता था। उदाहरणार्थ; सीलोनसे मोती, तिब्बत और बर्मासे सोना, भारतीय टापुओंसे मसाले, इंडुके आगेके देशोंसे घोड़े, चीनसे रेशम और चीनी मिट्टीके पदार्थ यहां मंगाये जाकर पश्चिमी देशोंको फिर निर्यात किये जाते थे और इससे बीचका मुनाफा अच्छा मिल जाता था। यह काम भारतको या तो इन दोनों तरहके (वस्तुओंको बनानेवाले और खपाने वाले) देशोंके बीच होनेके कारण मिलता था या यहांके व्यापारियों और समुद्रवाहकोंके उद्यम और युक्तिके बल पर। कुछ भी हो, यह काम चन्द्रगुप्त और अशोक एवं अकबर और शाहजहांके समयमें चलता था तो विक्टोरिया, एडवर्ड या आज सम्राट जार्जके समयमें भी भारतके लिए मौजूद है और जबतक भारत इसे अपनी गफ़लत और बेपरवाहीसे न खोदे कौन इसे नष्ट कर सकता है?

इस तरहका व्यापार बिना अपने जहाजी बेड़ेके कैसे सम्भव हो सकता था। इसलिए यह निश्चय है कि प्राचीन आर्यकालमें एक हजार वर्ष पूर्व या उससे पहलेसे लेकर आजके दो सौ वर्ष पहले तक भारत दुनियाके व्यापारके बहन वाहनमें अच्छा भाग रखता था और उसके जहाजों में माल भरकर लाया और ले जाया जाता था। उन जहाजोंको भारतीय कारीगर यहीं की लकड़ी से बनाते थे और भारतीय केवट उन्हें दूर देशोंमें खेकर ले जाते थे। प्राचीन जहाजी कलाका वर्णन डा० मुकरजीकी पुस्तकमें बहुत अच्छा मिलता हैं जिसमें प्राचीन कालीन भारतीय नौ शिल्पका वर्णन बड़े विस्तारपूर्वक किया गया है।

व्यापार कुशल हुए बिना यह सब व्यापार किस तरह चलना सम्भव है और इस लिए यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि उस समय यहांके व्यापारी लोग व्यापारिक रीति नीति और परिचर्यासे भली भांति भिज्ञ थे। व्यापारकी मंडी स्वरूप यहां बड़े बड़े नगर भी थे जहांके बज़ारोंमें व्यापारिक पदार्थ मुख्यतया मिला करते थे। इसी भाँति कई हिस्सेदारोंसे (Partners) मिल कर व्यापार करनेकी रीतिसे भी यहांके व्यापारी परिचित थे। एक व्यापारी जत्थेमें चाहे वह स्थल मार्गसे भ्रमण करे या जलमार्गसे, कई व्यापारी एक साथ मिल कर निकल पड़ते थे और सबके ऊपर बेडेका स्वामी नियत रहता था।

जब भारतमें व्यापार इतना बढ़ा चढ़ा था तो मुद्रा प्रणालीका होना भी आवश्यक था। बौद्ध ग्रन्थोंमें मुद्रा और उसके विभागका समुचित वर्णन मिलता है। कार्षापण, निष्क और सुवर्ण ये सब सोनेके सिक्कोंके नाम थे और काँसा और तांबेके छोटे सिक्के कांस, पाद और कनिष्कके नामसे चलते थे तथा बहुत सूक्ष्म लेन देनके लिए कौड़ियोंका व्यवहार प्रचलित था। बौद्ध ग्रन्थोंमें वर्णित 'शेठी' लोग निश्चय ही रुपये पैसेका लेन देन करते थे और वे

अपने व्यापारमें रुपया लगानेके अतिरिक्त उधार भी देते थे। व्याज सम्बन्धी नियमोंका वर्णन बौद्ध शास्त्रों, मनुस्मृति एवं चाणक्य नीतिमें भलीभांति मिलता है। इन नियमोंसे प्रमाणित होता है कि उस समय उधार देना एक जाना हुआ काम था।

इस तरहकी व्यापारिक उन्नतिके जमानेमें व्यापारके प्रति राजाका भी सद्सम्बन्ध होना आवश्यक था। राजा व्यापारिक वस्तुओंपर कर एकत्र करता था और नाप एवं तौलपर जांच पड़ताल रखता था। चाणक्यके अर्थशास्त्रमें जो—मौर्य साम्राज्यके संस्थापकके समयमें रचा गया था—इस तरहके करों और लगानोंका वर्णन भलीभांति मिलता है। आयात और निर्यात पर लगनेवाले व्यापारिक करका भी इस ग्रन्थमें उल्लेख आया है। मनु महाराजने भी लिखा है:—

"खरीद और विक्रीके भावोंका अच्छी तरह विचार कर एवं लाने और ले जानेके खर्चको ध्यानमें रखकर राजाको व्यापारिक कर वसूल करना चाहिये।"

"भलीभांति सोच समझकर राजाको अपने राज्यमें कर और लगान लगाना चाहिए जिससे राज्यको और पैदा करनेवालेको अपना उचित और न्यायपूर्ण भाग्य मिल सके।"

"जिस भांति गायका बच्चा और मधुमक्खी थोड़ा थोड़ा भोजन संग्रह करते हैं उसी भांति राजाको भी अपने प्रजाजनोंसे स्वल्प कर लेना चाहिए।"

इस भाँति भारतकी प्राचीन व्यापारिक उन्नतिके प्रमाण समुचित रूपमें मिलते हैं।

मुसलमानी कालमें भारतीय व्यापार

(सन् ई० ११०० से १७०० तक)

इस समयके व्यापारका वर्णन करनेके पूर्व यह कहना आवश्यक है, कि देशमें राजनैतिक अशांति रहनेके कारण इस समयमें व्यापारने कोई ऐसी उन्नति नहीं की, जो शांतिके समय हो सकती थी। मुगल सम्राटोंके पूर्व दिल्लीके सम्राटोंका शासन कभी भी सुव्यवस्थित नहीं था। दक्षिण प्रान्तकी स्थिति उत्तर जैसी बुरी न थी। तथापि विन्ध्याचलके दक्षिण प्रान्तोंमें हिन्दू मुसलमानोंका झगड़ा कोई अनजानी बात न थी अर्थात् वहां भी यह पारस्परिक कलह किसी न किसी रूपमें अवश्य विद्यमान था। मुसलमानी काल एवं प्राचीन समयमें जो व्यापारके मुख्य पदार्थ थे, उनमें मालावारका व्यापार चीन और पश्चिम देशोंके साथ अच्छा चलता था। मसालेके पदार्थ यथा मिर्च, लौंग, जायफल, इलायची, जवाहिरात, मोती, हीरा, माणक, पिरोजा आदि; रूईके सब तरहके कपड़े, ऊनी शाल, दुशाले, गलीचे; चीनीमिट्टी और कांचके पदार्थ; भारतीय शिल्प द्रव्य और पशु—मुख्यतया घोड़े—भारतके आयात और निर्यात व्यापारके मुख्य पदार्थ थे, जो भारतके दक्षिणी बंदरोंसे होता था। आगरासे लाहौर होते हुए काबुल और वहांसे मध्य तथा पूर्वी एशिया; मुलतानसे कंधार और वहांसे पारस और पश्चिमी एशिया तथा योरपके साथ होनेवाले व्यापारके भी ये मुख्य पदार्थ

थे। तत्कालीन राजकीय परिस्थितिके कारण व्यापारका उन्नतावस्थापर पहुंचना कठिन था, तब भी भारतीय व्यापारका परिमाण और मूल्य काफी बड़ा होता था।

इस समयके व्यापारका क्रमबद्ध इतिहास मिलना कठिन है, तब भी "अकबरकी मृत्यु समय भारत" (India at the death of Akbar) नामक पुस्तकमें मि०मोरलेंड (Mr. Moreland) ने बहुत कुछ वर्णन लिखा है यथा "देशमें आवश्यकीय खाद्य पदार्थ होते थे सिर्फ फल, मसाले और नशीले पदार्थोंका बाहरसे आयात होता था। कपड़ा भी सब यहां होता था। सिर्फ रेशम और मखमल वाहरसे आता था"।

धातुको छोड़कर अन्य खनिज पदार्थोंमें नमक और हीरा ये दो मुख्य पदार्थ थे। नमकके उत्पत्ति स्थान प्राय वही थे, जो आज हैं। यथा, सांभरकी झील, पंजावकी खानें और समुद्री किनारे। कोहिनूर नामक विख्यात हीरेके उद्गम स्थान गोलकुण्डाकी खानोंमें हीरा निकालनेका उद्योग मुसलमानी कालमें भी उसी भांति जारी था जैसा पूर्ववर्णित हिन्दू कालमें था। फ्रेञ्च यात्री टेवरनियरने (Tavernier)—जो भारतमें १८ वीं शताब्दीमें आया था—अनुमान लगाया है कि दक्षिणकी हीरेकी खानोंमें ६०००० और छोटा नागपुरकी खानोंमें ८००० मनुष्य काम करते थे। बहुमूल्य रत्नोंके व्यापारमें मोतीका भी उल्लेख करना उचित है। शाहजहांके मयूर सिंहासनमें मोतीकी जो अनुपम जड़ाई थी, उसे जाने दीजिये। १५ वीं शताब्दिमें अब्दुलरजाक नामक यात्रीने विजयनगर देखा, उसने राजाकी पोशाकके विषयमें लिखा है कि "राजाकी पोशाक जैतून साटनकी बनी हुई थी और वह गलेमें मोतियों का एक ऐसा हार पहने था कि जिसके मूल्यको कूंतना एक कुशल जौहरीके लिये भी कठिन था"। इसी भांति इसी नरेशके सिंहासनके विषयमें यह यात्री लिखता है कि :—"सुन्दर रत्नोंसे जड़ा हुआ सोनेका सिंहासन विशाल आकारका था और ऐसी अद्वितीय कारीगरीसे बना हुआ था, जैसा दुनियाके किसी अन्य राज्यमें नहीं देखा। सिंहासनपर जैतून साटनकी एक मसनद रखी हुई थी जिसके चारों ओर बहुत कीमती मोतियोंकी तीन श्रेणियां जड़ी हुई थीं।

इसी भांति अन्य रत्नोंकी जाति, उनके व्यवहार और मूल्यके विषयमें भी उस समय यहां समुचित जानकारी थी। आईन अकबरीमें रत्नभंडार शीर्षकमें अबुलफजलने लिखा है कि "रत्नोंका मूल्य लिखना व्यर्थ है क्योंकि इसे सब जानते हैं। पर बादशाहके अधिकारमें जो रत्न आये हैं वे इस भावके हैं :--

माणक	११	टंक	२०	रती	मूल्य	रु०	१००,०००
हीरा	५॥	"	४	"	"	"	१००,०००
पन्ना	१७॥	"	३	"	"	"	५२,०००
नीलम	४	"	७॥	"	"	"	५०,०००
मोती	५	"	"	"	"	"	५०,०००

इससे यह भली भांति सिद्ध है कि यहां इन पदार्थोंका व्यापार चलता था। जो रत्न यहां न होते थे उनका भी बाहरसे आयात होकर बहुत भारी व्यापार होता था।

खनिज पदार्थोंके बाद लकड़ीके सब तरहके पदार्थोंका व्यापार उल्लेखनीय था यहांके बनाये हुए जहाज काफी बड़े होते थे जबतक अंग्रेजी राज्यने British Navigation Law द्वारा जहाज बनानेका भारतीय उद्योग नष्ट नहीं किया तबतक जहाज बनानेका काम भी यहांपर मुख्य था। मि० मोरलैंडने लिखा है कि पुर्तगाल वालोंके व्यापारको छोड़कर भारतीय समुद्रोंमें व्यापारिक आवागमन भारतीय जहाजोंमें होता था, जो भिन्न भिन्न बंदरोंमें बनाये जाते थे। यह कहना नहीं पड़ेगा कि जिन छोटी नावोंमें बंगालसे लेकर सिंधतकका सरहदी व्यापार होता था, वे भी भारतमें ही बनती थीं। "पन्द्रहवीं शताब्दिमें भारत" India in the XVCentury नामक पुस्तकमें योरूपीय यात्री निकोला कोन्ती (Nicola conti) ने उस समयके व्यापारियोंका वर्णन करते हुए लिखा है कि "वे बहुत धनी हैं इतने बड़े धनी कि उनमेंसे कईके पास ४० तक जहाज हैं, उन सबमें व्यापार होता है इनमेंसे प्रत्येक जहाजका मूल्य करीब १५००० स्वर्ण मुद्रा होगा"। इस भांति उस समयके इतने मूल्यवान जहाजोंके आकारका अनुमान भली भांति लगाया जा सकता है। इन सब बातोंसे यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय व्यापारी जहाजोंमें केवल व्यापार ही नहीं करते थे, पर उनके वे जहाज बनते भी यहीं थे।

खाद्य पदार्थोंका वर्णन करते समय कहना पड़ेगा कि मुसलमानी कालमें खाद्य पदार्थोंका कोई व्यापार नहीं था। जहाजके यात्रियोंके लिये थोड़ा अन्न भले ही व्यापारका विषय रहा हो, पर इसका अधिक महत्व नहीं था।

पशुओंमें घोड़ोंका व्यापार उल्लेख योग्य है। यद्यपि घोड़े इराक, रूम तुर्किस्तान, तिब्बत और अरबसे आते थे तथापि यह बात नहीं है कि भारतमें अच्छे घोड़ोंकी पैदावारीका बिलकुल अभाव था। अबुलफज़लने कई स्थानोंके घोड़ोंका उल्लेख किया है जिनमें कच्छ प्रान्तका उल्लेख करते हुए लिखा है कि यहां अरबी घोड़ोंके सदृश बढ़ियां घोड़े होते है। उसने लिखा है कि पंजाबमें इराकी घोड़ोंके सदृश; घोड़े होते हैं और पट्टी ठिबेतपुर, बेजबाड़ा, आगरा, मेवाड़ और अजमेरके सूबेमें भी अच्छे घोड़े होते हैं। अलबेरूनी नामक प्राचीन लेखकने लिखा है कि "जमालुद्दीन इब्राहीमके साथ यह सौदा हो चुका था कि १४०० बढ़ियां अरबी घोड़े और १०००० कालिफ, ल्हासा, बहराइन आदि स्थानोंके घोड़े प्रति वर्ष भेजे जायँ"। इसमें एक घोड़ेका मूल्य २२० दीनार लिखा है। अकबरके समय एक दीनारका मूल्य ३० रुपयेका था और इस हिसाबसे यह सौदा ७, ५२, ४००० रुपयाका होता है। इसी बातका ३०० वर्ष बाद उल्लेख करते हुए वासफ Wassaf ने लिखा है कि इन बाहरसे मंगाये हुए घोड़ोका मूल्य कर की बचतमें से चुकाया जाता था न कि राज्यके कोषसे। १० से १५ वीं शताब्दि-

तक यह व्यापार बड़े जोरोंपर था । राजाके अतिरिक्त सर्वसाधारणकी लेन देनको छोड़कर इस व्यापारके परिमाण और मूल्यका अनुमान लगाना कठिन ही है। उल्लिखित ७ करोड़का अङ्क केवल एक राज्यसे संबध रखता है। इस भाँति उत्तर और दक्षिण सब मिलाकर औसत १ लाख घोड़ोंका आयात प्रति वर्ष माना जाय और एक घोड़ेका औसत मूल्य १००० रुपया रखा जाय तो कमसे कम १० करोड़ रुपयेका यह व्यापार हो जाता है । घोड़ोंके आयात की ही तरह सम्भव है हाथियोंका निर्यात भी होता रहा हो पर इसका विशेष उल्लेख नहीं मिलता है। यह बात हो सकती है कि हाथी खुश्की रास्तेसे भेजे जाते हों और घोड़ोंके आयातके सामने उनके निर्यातका अधिक महत्व न रहा हो। भार ढोनेमें ऊँटोंका व्यवहार आज तक हो रहा है पर उस समयके विदेशी व्यापारमें ऊँटोंका भाग कितना था यह निश्चयरूपसे नहीं कहा जा सकता। कृषि-सम्बन्धी अन्य पशु यद्यपि भारतमें भारवहनके काममें आते थे पर उनका विशेष उपयोग कृषिके काममें ही होता था। स्थानीय आवश्यकता एवं भारतीय जनताके धार्मिक प्रतिवंधने इनके निर्यातमें विलकुल रोक डाल रखी थी। इन पशुओंको बाहरसे मंगानेकी यहां आवश्यकता भी न थी और न पड़ोसी देशोंमें ये अधिक होते ही थे इसलिये इनका आयात भी नहीं होता था।

भारतके बने हुए मुख्य पदार्थ कपड़ेका वर्णन करनेके पूर्व चीनीके लिये यह कह देना आवश्यक है कि मुसलमानी कालमें इसका भी थोड़ा बहुत व्यापार चलता था और इसी भाँति तेल लेप और सुगन्धित द्रव्य भी विदेशी व्यापारके पदार्थ थे। ये सब पदार्थ यहाँकी उपजसे (कच्चे माल) तैयार होते थे। चीनीका व्यापार मुख्यतया स्थानीय था और बंगाल, लाहौर तथा अहमदाबाद इसके केन्द्र थे। तेलका व्यापार विदेशोंसे भी चलता था यद्यपि यह कहना कठिन है कि यहांके बने हुए पदार्थका कितना भाग बाहर भेज दिया जाता था। नील और नीलसे बने अन्य रंग भारतके मुख्य पदार्थ थे और यहांसे इनका बहुत भारी निर्यात होता था । कागज़के लिये मि० मोरलेंड कहते हैं कि "यह अनुमान किया जा सकता है कि उत्तरी भारतमें कई स्थानोंमें कागज़ हाथ से बनाया जाता था और जिसका बनाना अभीतक बंद नहीं हुआ है"।

भारतीय व्यापारमें मुख्य उल्लेखनीय पदार्थ यहांका बना कपड़ा है, जिसमें सब तरहका कपड़ा समझना चाहिये। योरपीय लेखक बारबोसा औरबारथीमा (Barbosa & varthema) मेंसे बारबोसाने लिखा है कि रेशमी कपड़ा गुजरातसे अफ्रीका और वरमाको जाता था इसी भाँति वारथीमाने लिखा है कि गुजरातसे पारस, टारतरी, टरकी, सिरिया,बारबरी,अरब, और इथियोपियाको रेशमी और सूती माल भेजा जाता था। अबुलफ़जलने लिखा है कि अकबर भोजनकी अपेक्षा कपड़ेका अधिक प्रेमी था। उसका वस्त्र-भण्डार बहुत विशाल था और उसके निजके व्यवहारके लिये प्रति वर्ष १००० पोशाकें बनाई जाती थीं। इसके अतिरिक्त इनाममें देनेकी और

दरबारमें आनेवाले मनुष्योंको पदके अनुसार बांटी जानेवाली पोशाकें अलग हैं। इससे यह सिद्ध है कि उस समय कपड़ेका खर्च काफी था एवं बादशाह और अमीर उमरावों द्वारा इस उद्योगमें समुचित सहायता मिलती थी।

तत्कालीन व्यापारी और यात्रियोंके लिखे हुए वर्णनसे यह सिद्ध होता है कि उस समय भारतमें रेशमका उद्योग अच्छा चलता था और उससे स्थानीय आवश्यकताकी पूर्ति एवं निर्यात दोनों काम होते थे। इससे यह नहीं समझना चाहिये कि रेशमी मालका कुछ भी आयात नहीं होता था। कच्चा रेशम बाहरसे आता था और सम्भव है कि थोड़ा बहुत रेशमी कपड़ा भी आता रहा हो। टेवरनियरके आधारपर मि० मोर बंगालमें २५ लाख रतल रेशमकी पैदावार लिखते हैं और यह भी कहते हैं कि यह पदार्थ ५ लाख रतलसे अधिक बाहरसे नहीं आता था। इसलिये आयात एवं यहांकी उपज दोनों मिलाकर ३० लाख रतल कच्चे रेशमकी यहां खपत होती थी। कुछ भी हो भारतसे रेशमी मालका निर्यात होना एक ऐतिहासिक बात है।

ऊनी कपड़ा यहां अधिक बनता था या नहीं, यह सन्देहजनक है। उस समय ऊनी कपड़ेका व्यवहार यहां अधिक नहीं था। शाल-दुशाले (खालिस ऊनी एवं रेशमी मिले हुए) अकबरके समयमें बहुत बढ़िया बनते थे। दरियां और गलीचे आगरा और लाहोरमें बनते थे एवं पारससे भी आते थे। शाल-दुशालोंके विषयमें अबुलफ़जलने लिखा है कि "बादशाहकी देखरेखके कारण काश्मीरमें शाल-दुशालेका काम उन्नतावस्थामें है और लाहोरमें इसके १०० से ऊपर कारखाने होंगे।"

सूती कपड़ा भी जो भारतका प्रधान उद्योग था—व्यापारका एक मुख्य पदार्थ था। पायरर्ड (Pyrard)ने लिखा है कि "गुडहोप अन्तरीप (Cape of good Hope) से लेकर चीनतकके नर-नारी सिरसे पैरतक भारतीय कपड़ा पहने हैं"। मि० मोरलेंडने भी लिखा है कि "यहांका कपड़ा स्थानीय आवश्यकताकी पूर्ति कर देनेके बाद अरब और उससे आगे तथा पूर्वी टापुओंको एवं एशियाके कई भाग और अफ्रीकाके पूर्वी भागको भी भेजा जाता था।"

इस भांति मुसलमानी कालमें भारतीय उद्योगका वर्णन मिलता है पर तत्कालीन भारतके आयात नर्यात व्यापारके अङ्क बताना किसी प्रकार सम्भव नहीं। योरोपीय यात्री और व्यापारियोंने यहां आना आरम्भ किया उस समयके बादसे वर्णन फिर भी विशदरूपसे मिलता है तथापि ७०० वर्षके इस कालका जो दिग्दर्शन यहां किया गया है उस समयके व्यापारिक अङ्कके जाननेका कोई साधन नहीं है। कुछ भी हो, पर यह भलीभांति सिद्ध है कि उस समय भी भारतीय व्यापार बढ़ा-चढ़ा था। इस बातके प्रमाणके लिये कौंटी (conti) का यह लिखना--कि भारतीय व्यापारी अपने जहाजोंमें व्यापार करते थे। इसमेंसे एक जहाजका मूल्य करीब १५००० मोहरें तक होता था और एक-एक व्यापारीके ऐसे ४० तक जहाज होते थे—काफी प्रमाण है; एवं विजयनगरके धनवैभवपर भी यह कहा

जा सकता है कि वह बिना व्यापारके कहांसे आ सकता था। यह सब होनेपर भी १७ वीं शताब्दिमें सूरतके बंदरोंमें लगे हुए जहाजोंको देखकर अंग्रेज लेखक टैरी और फ्रायरकी लिखी हुई बातोंका उल्लेख करना यहां अनुचित नहीं होगा। जैसा इन लेखकोंने लिखा है उसके अनुसार यदि अकेले सूरतमें एक सौ जहाज नदीमें पड़े पाये जाते थे जो सब भारतीय थे (इस संख्यामें बाहर अर्थात् अरब, तुर्की और योरपके कोई जहाज गर्भित नहीं थे) तो इस हालतमें मध्य-कालीन भारतके लाहोरी बंदर, कैंबे, भड़ूंच, चौल, गोआ, मंगलोर, भटकल, कालीकट, नागा-पट्टम, मसूली पटम, मदरास, हुगली, सतगांव आदि बंदरोंका यदि विचार किया जाय तो यह कहना कुछ अत्युक्ति नहीं होगी कि उस समय समुद्री यात्रा करनेके योग्य १००० हजारसे अधिक जहाज यहां रहे होंगे। यदि भार वहनकी शक्ति प्रति जहाज ५०० टनकी मानी जाय और प्रत्येक जहाज वर्षमें एक यात्रा भी करता हो तो प्रति वर्ष ५ लाख टनसे कमका व्यापार नहीं होना चाहिए विदेशी जहाजोंको भी—जिनमें अरबी जहाज मुख्य थे -यदि इस गणनामें शामिल किया जाय तो निश्चय ही इससे दुगुना व्यापार मानना पड़ेगा।

प्राचीन कालमें भारतमें सोना चाँदी निकलता भी था पर जिस समयका यहां वर्णन हो रहा है उस समय वे पदार्थ यहां नहीं होते थे, बाहरसे आते थे। ये, भारतमें उसके व्यापारके मूल्य स्वरूप आते थे और इसके द्वारा चाँदी सोनेकी अमित राशिजो यहाँ संग्रहीत थी उससे अनुमान लग जाता है कि यहांका व्यापार कितना बड़ा रहा होगा। महमूद गज़नवीकी बात जाने दीजिए जो भारतसे हजारों मन सोना लूट कर ले गया। यहां अकबरके समयके इतिहास लेखक फ़रिश्ताकी लिखी हुई बातका उल्लेख किया जाता है, उसने लिखा है कि दक्षिणको जीत कर जब मलिक कफूर अलाउद्दीन खिलजीके पास लौटा तो उसने अपने स्वामीको ३१२ हाथी २०००० घोड़े और ५०००० मन सोना, रत्न और मोतियों आदिसे भरी हुई संदूकें भेट कीं। इसमेंसे केवल सोनेके मूल्यका अनुमान मि० सिवेल (Mr. sewell) ने अपनी पुस्तक (A forgotten empire) में लगाते हुए लिखा है कि "१, ५६, ७२,००० रतल सोना ८५ शिलिंग प्रति औंसके हिसाबसे १०६, २६,९६,००० पौंडके मूल्यका रहा होगा" यह एक विजयके बाद एक सेनापति द्वारा दी हुई भेट की बात है। इसी भांति दक्षिणके वैभवकी बातका पक्का प्रमाण काफूरके हमलेके १०० वर्ष पीछे अब्दुररजाक नामक अरबी यात्री द्वारा लिखे हुए वर्णनमें मिलता है। उसने लिखा है कि "एक दिन संध्या समय राजाने तुच्छ व्यक्ति (अब्दुर रजाक) को बुलाया, वहां मैंने देखा कि महलकी छत और दीवालें सोनेके पत्तरसे मढी हुई हैं और उनमें रत्न जड़े हुए हैं। इन पत्तरोंकी मोटाई तलवारकी पीठकी मोटाई जैसी थी और इनमें सोनेकी कीलें जड़ी हुई थीं। राजाका विशाल सिंहासन भी सोनेका बना था"। इसी भांति पोज़ (Poes) नामक पुर्तगीज़ यात्री द्वारा लिखे हुए वर्णनको उद्धृत

करते हुए सीवेल [Sewell] ने एक सौ वर्ष बादके विजय नगर दरबारकी एक और वैसी ही आश्चर्य जनक बात लिखी है। "दक्षिणके मुसलमानों द्वारा तालीकोटके युद्धमें हार जाने पर विजय नगरके शासकोंने कुछ ही घंटोंमें महल खाली कर दिये और जो कुछ धन सम्पत्ति वे ले सके उन्होंने भर ली। यह सब माल करीब १० करोड़ स्टेरलिंगके मूल्यका होगा, इसमें स्वर्ण पदार्थ और रत्नादिक थे, यह माल उन्होंने ५५० हाथियों पर लाद लिया और साथमें रत्न सिंहासन और राज्यके निशान आदि भी ले गये और नगर छोड़ कर चले गये।"

नादिरशाह या अहमद दुर्रानी आदिके हमलोंकी बात तो अभी अलग है लेकिन ऊपर जो कुछ वर्णन किया गया है उससे यह भली भाँति सिद्ध होता है कि भारतमें जो हजारों मन सोना चाँदी था वह बिना व्यापारके नहीं आ सकता था। व्यापार भी ऐसा नहीं कि जिसमें किसीको सताया जाय अथवा अनुचित या अन्यायपूर्ण लगान आदि लगाकर किया जाय। उस समयका जो व्यापार था वह केवल भारतीय उद्योगके बल पर था। उस समयकी सरकार आयात और निर्यात पर पक्षपात रहित कर लेती थी और जो कर किसी तरह भारी जान पड़ता वह छोड़ भी दिया जाता था। अबुल फ़जलने अकबरके विषयमें लिखा है :—

"बादशाहने बंदरों पर लगने वाली चुंगीको जो एक साधारण राज्यकी सफरी आयके बराबर बैठती थी मुआफ कर दी है। अब आयात और निर्यात पर बहुत सूक्ष्म कर लिया जाता है जो २॥ प्रतिशतसे अधिक नहीं होता है। यह व्यापारियोंको इतना हलका जान पड़ता है मानों उन्हें कुछ लगता ही नहीं।" यह बात नहीं कि केवल अकबरने ही इस तरहकी उदारताका व्यवहार किया हो, १०० वर्ष या उससे अधिक पहले विजयनगर राज्यके द्वारा भी कालीकटके विदेशी आयात पर इसी तरहका सूक्ष्म कर लिया जाता था। अब्दुलरजाकने लिखा है कि "कालीकट एक बिलकुल निरापद और सुरक्षित बन्दर है जहां कई नगर और देशोंके व्यापारी आकर जुटते हैं। राज्यका इतना अच्छा प्रबन्ध और सुव्यवस्था है कि बड़े बड़े व्यापारी अपने जहाजोंमें जो माल भर कर लाते हैं उसे यहां खाली करके बज़ारोंमें लाकर निर्भयता पूर्वक संचय कर देते हैं और चाहे जितने समय तक बिना किसी प्रकारकी देख रेख या चौकीदारीमें सौंपे पड़ा रहने देते हैं। चुंगीघरके अधिकारी लोग इसकी रक्षा और चौकीदारी करते हैं। यदि माल वहां बिक जाता है तो २॥ प्रतिशत कर ले लिया जाता है और यदि नहीं बिके तो कुछ नही लिया जाता है।"

यहां एक बात और लिख देनेकी है कि सरकारी कर और चुंगी वसूल करते समय इस बातका पूर्ण ध्यान रखा जाता था कि किस भांति व्यापारको सहायता पहुंच सके और किसी तरहकी उसकी क्षति न हो। इसके अतिरिक्त और भी कई प्रकारके सुधार हो चुके थे। मुद्रा प्रणालीमें उचित उन्नति हो चुकी थी और इस विषयमें कोई असुविधा न थी। लाने और ले जानेके साधन यद्यपि

वर्त्तमान रेलके जमानेके सदृश न थे फिर भी उस समय सड़कोंके होनेका ऐतिहासिक प्रमाण मिलता है। इंदस और पंजाब तथा उसी भांति गंगा और बंगालके जलमार्ग द्वारा आवागमन पर विचार करने पर सड़कों या रेलकी कमी अखरने जैसी बात नहीं रहती। मुसलमानी कालमें डाक प्रणालीका चालू हो जाना भी व्यापारके लिए एक अच्छी बात थी और मुगलकालमें यह काम बहुत उन्नति को पहुंच चुका था। हरकारे लोग पत्रोंको घुड़सवारोंसे भी अधिक तेज़ीके साथ पहुंचाते थे। इसका प्रबन्ध इस भांति था कि प्रति छ मीलकी दूरी पर चोकियां बनी हुई थीं जिनमें हरकारे तयार बैठे रहते थे। जब एक हरकारा चौकी पर पहुंचता तो वह अपने डाकके थैलेको जमीन पर रख देता (क्योंकि हरकारेके हाथमें थैला देना अशुभ समझा जाता था) वहां दूसरा हरकारा नियत रहता था वह डाकके थैलेको उठा लेता और आगे जाकर दे देता। इसी भांति मुगल राज्यके अधिकांश भागमें पत्र भेजे जाते थे। सदर रास्तोंकी पहचान दोनों ओर लगे हुए वृक्षोंसे होती थी और जहां वृक्ष नहीं होते वहां प्रति ५०० कदम पर एक पत्थरकी टेकरी रहती थी, जिसे समीपस्थ गांव वाले चूनेसे पोतकर सफेद कर रखते थे ताकि अँधेरीरातमें भी वह दिखाई दे और राहगीर राह न भटक जाय।

इस भांति मुसलमानी कालकी ६-७ शताब्दियोंमें भारतकी व्यापारिक स्थिति संतोष जनक और लाभदायक थी।

अठारहवीं उन्नीसवीं शताब्दीमें भारतीय व्यापार

(योरोपीय व्यापारी दलोंका अगमन)

इस समयका वर्णन भारतकी व्यापारिक या औद्योगिक परस्थितिके विचारसे काले अक्षरोंमें लिखने लायक है। इस कालमें प्राचीन कालकी सुख, समृद्धि, धन वैभव, उद्योग कला, शिल्प चातुरीने बिदा लेली—बिदा क्या ली; विदेशियों द्वारा ये सब बातें नष्ट कर दी गईं। जो भारत उद्योग और कला कौशलके लिए संसारका सिरमौर था, उसी भारतकी कारीगरीका अंत इस कालमें किया गया। केवल अंत ही नहीं पर उसे विदेशोंके बने माल पर आश्रित बना दिया गया। यह इतिहास बड़ा रौद्र और हृदय द्रावक है। भारतके पूर्व इतिहासमें विदेशियोंने कई हमले किए, बहुत लूट मार मचाई और वे लोग यहांसे अपार धन राशि लूट कर ले गये पर यहां जिस समयका दिग्दर्शन किया जायगा उसकालमें जो काम—भारतका अनिष्ट-उसे उद्योग कला और कौशल हीन बना कर किया गया वैसा वास्तवमें समझा जाय तो भयंकरसे भयंकर हमला करनेवाले भारतके किसी शत्रुने भी नहीं किया।

भारतीय उद्योग कमीशन Indian Industril Commission ने अपनी रिपोर्ट इन

शब्दोंसे प्रारंभकी है "जब वर्तमान उद्योग प्रणाली और यंत्र कलाके उद्यम स्थान पाश्चात्य योरपमें जंगली लोग बसते थे, भारत अपने धन, शिल्प चातुरी और कारीगरीके लिए जगत् विख्यात था। थोड़े दिनोंकी बात है कि उसके इन गुणोंके कारण पाश्चात्य देशोंके यात्री और व्यापारियोंने यहाँ पहले पहल पदार्पण किया उस समयकी भारतीय कला भी योरपकी किसी उन्नततम जातिके लोगों से कम न थी"। भारतमें रुईसे सूत कातने और उस सूतसे कपड़ा बुननेका उद्योग कितना प्राचीन एवं घर गृहस्थीका एक साधारण काम था इस बातका प्रमाण वेदोंमें आये हुए इन वाक्योंसे भली भांति मिल जाता है "चिंता मुझे सूतके तागेकी तरह खा रही है, रात और दिन ये दो जुलाई हैं जो बेजा बुन रहे हैं"। इन दृष्टान्तोंसे यह भली भांति सिद्ध हो जाता है कि उस समय भारतमें कपड़ा बुना जाता था। मिश्र वासी मृतदेहोंको भारतकी मलमलोंमें लपेटते थे एवं अपनी पेटियों-को भारतसे मिले हुए हाथी दाँत, स्वर्ण और चन्दनसे सजाते थे। यूनानमे ढाकेकी मलमलें गांगे-तिक कहलाती थीं।

लोहेके उद्योगकी भी यही बात है। इसकी चीजें केवल यहांकी आवश्यकताकी पूर्ति ही नहीं करती थीं, पर बाहर विदेशोंको भी भेजी जाती थीं। दिल्लीके समीपस्थ लोहेका स्तम्भ जो कमसे कम १५०० वर्ष पुराना है पूर्व कालीन लोहेकी गढ़ाईके उद्यमका पूर्ण परिचायक है। इसी भांति रेशमी सूती कपड़ा, शाल दुशाले, हाथी दांतके पदार्थ और अस्त्र शस्त्रके बनानेमें प्राचीन भारत बहुत निपुण था। उसके यहांकी पैदावार और तैयारकी हुई चीजें केवल भारतवासियोंकी आवश्यकता और ऐश आरामकी ही पूर्ति नहीं करती थीं प्रत्युत विदेशोंके बाजार भी इनसे पटे रहते थे। अकबरके समयमें भारतीय कला और शिल्प सुरक्षित थे। एक अंग्रेज अफ़सर मि० डबल्यू० एच० मोरलेंडने इस बातको माना है कि उन दिनों भारतमें रेशमका उद्योग बहुत बढ़ा चढ़ा था और करीब ३० लाख रतल रेशम कपड़ा बनानेमें लगजाता था। वे यह भी लिखते हैं कि भारतका रेशमी सूती कपड़ा पारस, टर्की, सीरिया बारबरी और अरबको भेजा जाता था। भारतकी बढ़िया मलमलों, छींटों, एवं कामदानीके थानोंके व्यापार हीने १८ वीं शताब्दिमें ईस्ट इंडिया कम्पनीको ११७ प्रति शत मुनाफा बांटनेमें समर्थ किया और उसके १०० पौंडके शेअर ५०० पौंडतक बिक सके। उस समय योरपीय व्यापारियोंमें भारतके कच्चे मालके लिये नहीं पर उसके पक्के बने माल और कारीगरीकी चीजोंके लिए प्रतिद्वंदिता मची थी। विदेशी व्यापारियोंके कारण भारतीय पदार्थ एमस्टरडम लंदन, पेरिस आदि नगरोंके बाजारोंमें भी चलने लगे और इन्हीं पदार्थोंके लिए जो वहां सभी मुनाफा देते थे विदेशियोंने भारतका पता लगाया। इस तरह योरपके व्यापारियोंके कारण यहांके व्यापार और कारीगरीमें कुछ समय तक लाभ पहुंचा। सन १८१७ में सर हेनरी काटन ने लिखा कि १०० वर्ष पहले ढाकाका व्यापार अनुमान १ करोड़ रुपयाका था और वहांकी आबदी २

लाखकी थी, लेकिन यह बात अधिक काल तक नहीं रही। इसके ५० वर्षके भीतर ही एक बड़ा उलट फेर होगया। सन १८१७ में ढाकासे वहांके बने पदार्थोंका निर्यात एक दम बन्द हो गया। कातने और बुननेका काम जो भारतका प्रधान शिल्प और उद्योग था और जिससे हजारों व्यक्ति पलते थे वह सब नष्ट होगया। जिसके व्यापारका आवागमन समतौल था और यहाँकी जनता कृषि और उद्योगके कामोंमें हिसावसे विभाजित थी वहां अब भारतको अकेले कृषिकी शरण लेकर कृषि प्रधानं देश बनना पड़ा। १८ वीं शताब्दिके अन्त और १९ वीं की आदिमें ब्रिटेन आदि विदेशोंमें यंत्र कलाके आविष्कारने पदार्थोंके बनाये जानेमें एक भारी उलटफेर पैदाकर दिया। वहां पर यंत्रोंसे काम होने लगा जिसने पहले पहल भारतके कपड़ेके उद्‌योगको ही नष्ट किया। केवल यंत्र कलाके बलपर भी ग्रेट ब्रिटेन कुछ नहीं कर सकता था; इससे भी भारतके उद्‌योगको कुछ धक्का नहीं पहुंच सकता था और न इससे यहांका काम ही नष्ट हो सकता था; पर इसके उद्योग को नष्ट करनेके लिये और भी कई उपाय काममें लाये गये जिनका थोड़ासा वर्णन यहां किया जायगा जो बड़ा हृदय द्रावक है।

भारतमें व्यापार करनेके लिए पुर्त्तगीज, फ्रैंच, डच, और अँग्रेज आदि कई जातियां आई पर अँग्रेजोंको छोड़कर यहां और किसीको सफलता नहीं मिली। अँग्रेज भारतके व्यापारके बलपर केवल लक्ष्मीके ही नहीं पर राज लक्ष्मीके भी स्वामी बन गये। यहां भारतमें इन विदेशी जातियोंके आने पर उनके आपसी झगड़े टंटे और लड़ाईके वर्णनसे यहां कुछ सम्बन्ध नहीं है,केवल ईस्ट इंडिया कम्पनीने यहांके व्यापारको हथियाकर अन्तमें उसको किस तरह नष्ट किया यह ध्यान देने योग्य बात है।

यह कहनेकी आवश्यकता नहीं है कि ईस्ट इण्डिया कम्पनीको भारतीय पदार्थोंका मोह ही भारतमें लाया। पहले पहल उसने किस प्रकार ये पदार्थ सबसे अधिक परिमाणमें उसे उपलब्ध हो सकें, इसके लिए सब तरहके उपाय काममें लिये और फिर अन्तमें इनके यहां बनने किम्बा बाहर जानेकी ही इति श्री करके चैन लिया।

सूती कपड़ेके साथ साथ बङ्गालमें रेशमका उद्योग भी उन्नतावस्थामें था। १८वीं शताब्दीके आरंभमें बंगालमें रेशमका उद्योग चमक उठा। रेशमी मालका बाहर भेजना इतना लाभदायक था कि ईस्ट इण्डिया कंपनीने इस कामपर अपना एकाधिपत्य स्थिर करनेके लिए प्रबल प्रयत्न किया। उस समय योरोपियन कंपनियों—यथा डच, अंग्रेज फरांसिसी और कुछ कुछ पुर्तगीज—के बीच इस व्यापारके लिए बड़ी स्पर्द्धा चलती थी। चीनका रेशम न तो बङ्गालके सदृश बढ़िया होता था और न वहां वह इतने परिमाणमें मिल ही सकता था। चीनकी अपेक्षा भारतसे इसका निर्यात बहुत अधिक होता था और इंग्लैंड एवं अन्य योरपीय देशोंमें वह बिकता भी ऊंचे दामोंमें था। सन्—

१७११से १७६०तकके इंग्लैण्डको भारत और चीनके निर्यात अंक इस बातके साक्षी हैं कि उस समय ईष्ट इण्डिया कम्पनीका भारतीय व्यापार कितना बढ़ गया था।

	कच्चा रेशम		रेशमी कपड़ा
सन्	बङ्गाल रतल	चीन रतल	बङ्गाल थान
१७११-२०	५,५३,४६७	५१,३२१	२,४६,३७५
१७२१—३०	८,०६,०३०	५८,४०६	५,११,१३६
१७३१-४०	१३,६५,११७	७३,७६३	६,६८,०१०
१७४१-५०	८,४२ ८३४	७५,३०१	३,२२,६१७
१७५१-६०	४,३७,७२७	९०,२८५	३,९१,१०५

सन् १७१० तक इंग्लैण्डमें चीनसे बिलकुल रेशम नहीं जाता था। उसके पश्चात् यद्यपि यह पदार्थ चीनसे भी जाने लगा पर उसकी तादाद बहुत कम थी। सन् १७५० तक चीनके निर्यातकी अपेक्षा भारतका निर्यात ९ गुनेसे १६ गुना अधिक था। इसके पश्चात् एंग्लोफ्रेञ्च युद्ध और बंगालके नवाबोंके साथके युद्धने इस व्यापारमें बड़ा उलट फेर कर दिया। इन घटनाओंसे १७५१ और१७६०के बीच भारतका निर्यात ८,४२०००से घटकर ४,३८००० रतल रह गया और चीनका निर्यात ७५,३०२ रतलसे बढ़कर ९०२८५ रतल हो गया। इस प्रकार इन दस वर्षोंमें शासन सम्बन्धी गड़बड़, भीतरी जुल्म, और लड़ाई झगड़ोंके कारण बंगालके रेशमके व्यापारको बड़ी क्षति उठानी पड़ी। इन कारणोंसे रेशमी कपड़ोंके निर्यातमें भी बहुत घट बढ़ हुई। फिर भी सन् १७११से २० तक जहाँ २,४६,३७,५ थानका निर्यात हुआ था वहाँ सन् १७३१से ४०तक ६९८०१० थानका निर्यात हुआ। सन् १७४०के पश्चात् मराठोंकी लूटमार, तथा नवाबोंके साथ अंग्रेजोंके युद्धके कारण यद्यपि इस संख्यामें क्षति हुई फिर भी सन् १७४०से ५० तक ३२२,६१७ और सन् १७५०से ६० तक ३९११०५ थान यहांसे निर्यात हुए। अर्थात् सन् १७११-२०तकके अङ्कोंसे यह संख्या डेढ़ीसे अधिक बनी रही।

टेबरनियर यात्रीके वर्णनमें इस कालके रेशमके उद्योगका बड़ा मजेदार वर्णन मिलता है। उसने लिखा है कि "बंगालके अकेले कासिमबाजारमें प्रतिवर्ष २२००० गांठें रेशमकी तैय्यार होती हैं। इनमेंसे ६,७ हजार गांठें जापान या हालैण्डके लिए ले ली जाती हैं और इससे भी अधिक लेनेकी कोशिश होती है पर मुगलराज्यके व्यापारी इन्हें लेने नहीं देते हैं। क्योंकि ये लोग भी डच लोगोंके बराबर गांठें खरीद लेते हैं और शेष जो गांठें बचती हैं वे यहींपर माल तैयार करनेके लिए रख ली जाती हैं। यह सब माल गुजरातमें लाया जाता है जिसमेंसे अधिकांश अहमदाबाद और सूरतमें आता है और वहां उसके तरह २के कपड़े बनाए जाते हैं। जैसे—

सोनेके कामका रेशमी कपड़ा
सोने और चांदीके कामका रेशमी कपड़ा } सूरत
खालिस रेशमके गलीचे

सुनहरी और रुपहरी धारियोंकी साटन बिना धारियोंका साफ ताफ़ता कई रंगोंका फूलदार पटड़ा जो कि बहुत मुलायम रेशमका होता है।	अहमदाबाद

इन कपड़ोंका दाम दससे चालीस रुपया प्रति थान तक होता है। इस काममें डच कम्पनियां रुपया लगाती हैं और बहुत लाभ उठाती हैं। वे अपने किसी आदमीको निजी ढङ्गसे यह व्यापार नहीं करने देतीं। ये सब चीजें यहांसे तैयार करवाके फ़िलिपाईन, जावा, सुमात्रा इत्यादि देशोंको भेज दी जाती हैं।

कच्चे रेशमके सम्बन्धमें यह बात ध्यानमें रखने योग्य है कि पैलेस्टाइनके रेशमको छोड़कर—जिसे एलेपो (Aleppo) और त्रिपाली (Triprli) के व्यापारी भी कठिनाईसे थोड़ासा प्राप्त कर सकते हैं—दूसरा रेशम सफेद नहीं होता है। कासिमबाजारका रेशम भी पारस और सिसलीके कच्चे रेशमकी तरह पीला होता है मगर कासिमबाजारके कारीगर इसे सफेद करनेकी कला जानते हैं। इस कलाके द्वारा ये लोग इस रेशमको पैलेस्टाइनके रेशमके सदृश सफेद बना देते हैं।

डच लोग बङ्गालमें खरीदे हुए रेशम और इसके पदार्थोंको नहर द्वारा—जो कासिमबाजारसे जाकर गङ्गामें मिली है—लेजाते हैं और वहांसे फिर हुगली ले जाकर अपने जहाजोंमें लाद लेते हैं।

सन् १७६९ में ईस्ट इंडिया कम्पनीके डायरेक्टरोंने बंगालमें कच्चे रेशमकी पैदावारको बढ़ाना, और कपड़ा बुननेके कामको नष्ट कर देना चाहा। उन्होंने आज्ञा निकाली कि रेशमी सूत बनानेवाले जुलाहे केवल कम्पनीकी फैक्टरियों ही में काम करें। वे बाहरका कोई काम न कर सकेंगे। यदि कम्पनीकी इस आज्ञाके विरुद्ध वे दूसरी जगह कार्य्य करेंगे तो उन्हें कड़ा दण्ड दिया जायगा। (१७—३—१७६९)। इस प्रकारकी बलात्कार पूर्ण आज्ञाओंसे रेशमी और सूती कपड़े बुननेका काम घट चला। जिसका परिणाम यह हुआ कि यहांसे जो पदार्थ दुनियाके भिन्न २ बाजारोंको भेजे जाते थे वे ही यहांपर बाहरसे दिन प्रतिदिन अधिक २ मंगाये जाने लगे। इस प्रकार भारतीय उद्योग और व्यापारका परदा एकदम बदल गया।

नीचे दिये हुए अङ्कोंसे पता चल जायगा कि सन् १७९३के कानूनके पश्चात् भारतमें इंग्लैण्डके बने हुए मालका आयात किस प्रकार बढ़ा।

सन्	मालकी कीमत (पौंडोंमें)	सन्	मालकी कीमत (पौण्डोंमें)
१७९४	२५६	१८०४	२५४३६
१७९५	७१७	१८०५	३१९४३
१७९६	११२	१८०६	४८५२५
१७९७	२५०१	१८०७	४६५४९
१७९८	४४३६	१८०८	६९८४१
१७९९	७३१७	१८०९	११८४०८
१८००	१९५७५	१८१०	७४६९५
१८०१	२१२००	१८११	११४६४९
१८०२	१६१९१	१८१२	१०७३०६
१८०३	२७८७६	१८१३	१०८८२४

कम्पनीने मुख्य २ स्थानोंमें अपने एजंट नियत कर रक्खे थे। जिनका काम रेशम एकत्र करना था। जो एजंट जितना ही अधिक रेशम जुटाता था वह उतनाही अधिक कारगुजार समझा जाता था। ये एजंट, लोगोंको पेशगी रुपया दे देते थे और रुपया लेनेवालेको पक्के इकरारमें बांध लेते थे। कम्पनीका उद्देश्य बंगालके भीतरी व्यापारको हथिया लेनेका था। और इसके लिए बेचारे गरीब कारीगरोंपर सब तरहके जोर जुलम किये जाते थे। कम्पनीके इस प्रकार एकाधिपत्य धारण कर लेनेपर डच और फ्रेञ्च कम्पनियां शिकायत करने लगीं और इनके आपसमें झगड़ा होने लगा, इसपर इनके बीच यह तय हुआ कि जुलाहे आपसमें बांट लिये जांय। इससे यह बात प्रकट होती है कि वे लोग जुलाहोंको अपनी अधिकृत सम्पत्तिकी तरह समझते थे।

सन १७५७ में सिराजुद्दौलाकी हार होनेके पाश्चात् तो अंग्रेज एक प्रकारसे बङ्गालके स्वामी बन गये। जो जोर जुल्म इनके द्वारा पहले किये जाते थे अब उससे भी अधिक किये जाने लगे। इससे वेचारे कारीगर और जुलाहे बहुत तंग आ गये। ये जो कुछ भी पदार्थ बनाते थे उनपर कंपनीका अधिकार रहता था। कम्पनीके कर्मचारी ही इस बातका निर्णय करते थे कि प्रत्येक कारीगरको कितना माल तैयार करना पड़ेगा और उसे कितना मूल्य दिया जायगा। मुगल शासनके समयमें एवं नवाब अलीवर्दी खांके समयमें जुलाहे लोग अपना काम अपनी इच्छापूर्वक करते थे, उनपर किसी प्रकारका जोर जुल्म न था। मि० वोल्टने लिखा है कि नवाबके जमानेमें एक सज्जनने एक दिन अपने घरपर ८०० थान जुलाहोंसे बुने हुए खरीदे। सिराजुद्दौलाके समय से कंपनीका जोर-जुल्म अधिक होने लगा और इसी सज्जनके आंखों देखी बात है कि जङ्गलबरी जिलेके ७०० घरके जुलाहे अपने २ घरोंको छोड़कर भाग गये। क्योंकि इसके बाद कम्पनीके नौकरोंके सिवा—जिनसे न्यायकी आशा करना व्यर्थ था—कोई ऐसा नवाब ही नहीं रहा, जिसके पास फारयाद की जाती।

कम्पनीके इस एकाधिपत्यके कारण कारीगरों पर दिन प्रति दिन जोर जुल्म बढ़ने लगे। यहां तक कि यदि कोई जुलाहा अपने मालको किसी दूसरेके हाथ बेचता हुआ देखा जाता, या कोई दलाल ऐसे मामलेंमें बीच बिचाव करता हुआ पाया जाता तो कम्पनीके नौकर उसे पकड़ कर कैद कर लेते थे और उसपर जुर्माना किया जाता था। कभी २ ऐसे लोग कोड़ोंसे पीटे जाते थे। जो जुलाहे कम्पनीके साथ किये हुए इकरारनामोंको पूरा करनेमें असमर्थ रह जाते, उनके घरोंमें से माल निकाल कर नीलाम कर दिया जाता और उस रकमसे कम्पनी अपने घाटेको पूरा करती थी। रेशम बटनेवालों—जो नगदा कहलाते थे—के प्रति भी ऐसा ही कठोर व्यवहार किया जाता था। ऐसे भी कई उदाहरण मिलते हैं जिनमें इन रेशम बटनेवालोंने केवल इसी लिये, कि हमें रेशम बटनेके लिये बाध्य न किया जायगा, अपने हाथोंके अंगूठे काट डाले थे।

इन जुलाहोंको जबर्दस्ती पेशगी रुपये दे दिया जाता था। एकवार पेशगी रुपया ले लेनेपर जुलाहा फिर किसी प्रकार छुटकारा नहीं पा सकता था। यदि माल देनेमें देरी होती तो या तो उसके घरपर चपड़ासी बैठा दिया जाता—जिसकी -) रोजके हिसाबसे तलब लगा दी जाती थी-या उसे अदालतमें बुलाया जाता था। इस प्रकार गांवके तमाम जुलाहों पर कम्पनीका ऐकाधिपत्य था। सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि कि जुलाहोंपर कम्पनीकी यह सत्ता कानूनसे भी अनुमोदनीय करार दी गई थीं। उस कानूनका भाव यह था कि " जिस जुलाहेने कम्पनीसे पेशगी रुपया लिया है वह किसी भी दशामें कम्पनीके सिवा किसी दूसरे यूरोपियन या भारतीय व्यापारीको अपना बनाया हुआ माल न बेच सकेगा और न किसी दूसरेके लिये बना ही सकेगा। यदि निश्चित अवधिके अन्दर वह माल न दे सकेगा तो कम्पनीके अधिकारी उसके मकान पर चपरासी बैठा सकेंगे और यदि वह दूसरोंके हाथ माल बेचेगा तो उसपर अदालतमें मामला चलाया जावेगा। इसके अतिरिक्त यदि कोई जुलाहा एकसे अधिक तांत (Loom) रक्खेगा, तो उसके ऊपर कपड़ेके मूल्यका ३५ प्रतिशत दण्ड किया जायगा।

इस तरहके व्यवहारका वर्णन हैनरी गौंगर (Henry ganger) ने अपने जेल जीवनके वर्णन-में किया है। उसने लिखा है कि एक ग्रामके सूत कातनेवालेने मुझसे पेशगी रुपया लिया। मेरे और उस जुलाहेके बीच कण्ट्राक्ट हो जानेके पश्चात् कम्पनीके दो नौकर उस गांवमें आये। एक अपने हाथमें रुपयोंकी थैली लिये हुए था और दूसरा एक ऐसी किताब लिये हुए था जिसमें रुपये पाने-वालोंके नाम लिखे जाते थे। उन जुलाहोंका यह कहना—कि हमने दूसरेसे रुपये ले लिये हैं—बिलकुल व्यर्थ हुआ। जिस किसीने रुपया लेनेसे इन्कार किया उनके घरोंमें जबर्दस्ती रुपया फेंक दिया गया और उसका नाम लिख लिया गया। इस प्रकार की सत्ताके बलपर कम्पनीका एजंटमें मेरे ही घरपर मेरे कारीगरों और मेरे माल असबाबको बलात्कार छीन लेता है। इतना ही नहीं यदि मेरा

रुपया वापिस मिलनेके लिए मैं अदालतमें नालिश करूं, तो न्यायाधीश मुझे डिग्री देनेके पूर्व इस बातकी जांच करेगा कि उस जुलाहेमें कम्पनीका रुपया तो पावना नहीं है। यदि ऐसा है तो पहले डिग्री उस एजण्टको मिलती है और मेरे लिये इसके सिवा कोई चारा नहीं रह जाता कि अपने रुपयोंके लिये रो बैठूं।

इस प्रकारके कानून बन जानेपर उनका दुरुपयोग होना भी स्वाभाविक ही है। इन कानूनोंके बलपर कम्पनीके नौकर मनमाना अत्याचार करते थे। इस प्रकारके अत्याचारोंका वर्णन सरजेंट ब्रेगो (Sergent Brego) के २६ मई सन् १७६२ के पत्रमें मिलता है। उसमें लिखा है कि कम्पनीका गुमास्ता चाहे जिसे अपना माल खरीदने और उसका माल उसके हाथ बेचनेके लिये दबा सकता था, और किसी प्रकारकी आनाकानी करनेपर उसे कैद कर लेना या उसे कोड़ोंसे पिटवाना उसके हाथमें था। इसी प्रकारके अत्याचारोंके कारण यह स्थान (बाकरगंज) जो एक बहुत सम्पत्तिशाली स्थान था, आज उजाड़ हो रहा है और प्रतिदिन वहांके रहनेवाले भगकर कहीं और आरामकी जगह खोजनेको चले जा रहे हैं। जहांके बाजारोंमें धूम मच रही थी वहां आज कुछ नहीं है। कम्पनीके चपरासी गरीब जनताको सता रहे हैं। यदि वहांका जमींदार इस अत्याचारके प्रति कुछ मनाई करता है तो उसके प्रति भी दुर्व्यवहार किया जाता है।

जब उद्योगपर किसी प्रकारका अनुचित दबाव या बन्धन डाला जाता है तो उसका उन्नत होना तो दूर, वह नष्ट हुए बिना नहीं रहता। इन कानून कायदोंका एक परिणाम यह हुआ कि कम्पनीने या कम्पनीके नौकरोंने भारतीय कारीगरोंपर जितने अत्याचार किये, उतने ही या उससे भी अधिक अन्य यूरोपीय व्यापारियोंने उन्हें तंग किया।

सुजात मुताखरीन नामक प्रसिद्ध पुस्तकका लेखक उस समयके न्यायका बड़ा ही हृदय द्रावक वर्णन करते हुए लिखता है कि इस दुर्व्यवहारकी वजहसे जनता तंग आ गई है और भूखों मर रही है एवं ईश्वरसे प्रार्थना करती है कि हे ईश्वर! तू तेरे दुःखी भक्तोंकी सहायता कर और उन्हें इन अत्याचारोंसे किसी भांति छुड़ा।

एडमण्ड बर्क नामक प्रसिद्ध न्यायकर्त्ता भी कम्पनीके नौकरोंके द्वारा भारतीय कारीगरोंपर किये गये अत्याचारोंकी बातें सुनकर कांप उठा और १५ फरवरी सन् १७८८ को हाउस आफ लार्डसके सामने वारनहेस्टिंग्ज़को दोषी ठहराते हुए, उसने कम्पनीके नौकरोंके अत्याचारका ऐसा मर्मभेदी वर्णन किया कि जिसे सुनकर वहांके सब सदस्य कांप उठे। उसने कहा कि कम्पनीके नौकर उन कारीगरोंकी उंगलियोंको रस्सीसे खूब खींचकर बांधते हैं, यहांतक कि उनके दोनों हाथोंका मांस निकल पड़ता है, फिर उन उंगलियोंके बीच लकड़ीकी या लोहेकी कीलें इस तरह ठोकते हैं कि वे असहाय, गरीब और ईमानदार हाथ एकदम नष्ट और बेकार हो जाते है।

इधर तो भारतमें यह भयङ्कर दृश्य अभिनीत हो रहा था। उधर इंगलैंडमें भारतके बने हुए मालकी रोकके लिए जबर्दस्त प्रयत्न किया जा रहा था। यद्यपि सन् १६६० से ही भारतके एक थान-'केलिको' पर ६ पेनीसे लेकर ३ शिलिंग तक चुंगी लगने लग गई थी तथापि वहांके बाजारोंमें भारतीय मालकी इतनी अधिक खपत थी कि इतनी चुंगीके रहते हुए भी ईस्ट इण्डिया कम्पनीका व्यापार चमक उठा, जिससे भारतमें माल इकट्ठा करनेके लिये कम्पनीको उपरोक्त उपाय काममें लाना पड़ते थे। मगर भारतीय मालकी इस गहरी खपतके कारण वहांके सूती रेशमी तथा ऊनी कपड़ोंका उद्योग पनपने नहीं पाता था। इसलिये भारतके मालसे वहांके उद्योगकी रक्षा करनेके लिये बड़े-बड़े प्रयत्न किये गये। ड्यूटी भी बहुत बढ़ा दी गई पर इतनी असुविधाओंके होनेपर भी भारतीय मालकी खपत न रुकी और पहननेवाले एक गज मलमलका दाम ३० शि० देकर भी उसे पहनने लगे। यह देखकर इंगलैंडके कारीगरोंने बड़ा शोर मचाया और हाउस आफ कामन्समें यह प्रश्न लाया गया। यहांपर भारतीय मालके व्यापारियोंकी वह प्रार्थना, जो भारतीय मालकी आमद न रोकनेके पक्षमें थी खारिज कर दी गई। लेकिन हाउस आफ लार्ड्समें भारतीय रेशम और छपे हुए केलिकोको पहननेकी मनाईका कानून दो बार गिरा दिया गया। क्योंकि कई बड़े २ आदमियों और स्त्रियोंने हाउस आफ कामन्सके द्वारा किये गये इस प्रस्तावके विरुद्ध बहुत बड़ा भाग लिया था।

सन् १७०१ में ८२६, १०१ थान मलमलके और १,१५,५०४ थान रेशमके भारतसे इंगलैंडमें आयात हुए। इस भारी आयातके कारण लण्डनके कारीगरोंने बहुत उग्र रूप धारण किया। यहां तक कि ईस्ट इण्डिया कम्पनीके गोदामपर उन्होंने हमला कर दिया और इस काममें वे सफल भी हुए, पर अन्तमें सरकार द्वारा दबा दिये गये और यह कानून बना दिया गया कि जो वहां बंगालका सूती रेशमी कपड़ा हो वह जब तक वापिस निर्यात न हो तबतक चुंगी घरके नियत किये हुए गोदाममें वह रखा जाय, ताकि उसे न कोई पहने न कोई व्यवहारमें लावे और यदि किसीके पास इनमेंसे कोई पदार्थ मिले तो उसपर २०० पौण्ड जुर्माना किया जाय।

इन सब घटनाओंसे कम्पनी बड़े विचारमें पड़ गई। वह लोगोंको यह जानने देना नहीं चाहती थी कि वह भारतीय व्यापारको छोड़ना चाहती है। इसके लिये भी उसे दिखावटी रूप रखना पड़ता था। इन सब कारणोंसे कम्पनीको बड़ी हानि उठानी पड़ रही थी। क्योंकि उसके पास जहाजोंपर भरकर ले जानेके लिये बहुत कम सामान था। इसलिये या तो उन जहाजोंको खाली लौटकर जाना पड़ता था या चीनीके बर्त्तन तथा ऐसे ही दूसरे पदार्थोंको भरकर ले जाना पड़ता था, जिनसे कोई लाभ न था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि रेशम और छपी हुई केलिकोके पूर्ण प्रतिबन्ध, और मलमल तथा सफेद केलिकोपर लगायी हुई भारी चुंगीने इंगलैंडके कपड़ा बुनने और रंगनेके कारबारको बहुत उत्तेजन दिया। भारतकी बनी हुई सफ़ेद मलमलको रंगनेका एवं केलिकोपर छपाई

करनेका कारबार वहाँपर इतना बढ़ गया कि पारलियामेंटको सन् १७१२ में तीन आने प्रति गज और सन् १७३४ में छः आने प्रतिगज चुंगी लगानी पड़ी।

यह सब होनेपर भी—संरक्षण नीतिको इसप्रकार काममें लानेपर भी—भारतकी छपी केलिको का व्यवहार कम नहीं पड़ा, और इंगलैंडके रेशम तथा उसके व्यापारको हानि पहुंचना बन्द न हुई। यह देखकर सन् १७१९ में पारलियामेंटमें फिरसे यह प्रश्न उठाया गया। कम्पनीने इस कानूनका बहुत विरोध किया। उसने कहा कि "कम्पनीके व्यापारसे इंगलैंडको बहुत लाभ पहुंचा है, एवं उससे ऊनी कपड़ा बनानेके उद्योगको बहुत सहायता मिली है, इस कानूनसे व्यापारको बहुत हानि पहुंचेगी। जहाजी शक्तिको इससे बड़ा धक्का पहुंचेगा और भारतमें उसकी स्थिति कमजोर हो जायगी। भारतीय नरेशोंकी दृष्टिसे अंगरेज गिर जायंगे और दूसरी यूरोपीय जातियोंको भारतका सर्व व्यापार एवं शक्ति अपने हाथमें करनेका मौका मिल जायगा। सबसे अधिक महत्वपूर्ण हानि इस कानूनसे यह होगी कि भारतीय नरेश अपने राज्योंमें इंगलैंडके बने हुए मालको आना बन्द कर देंगे।" कम्पनीके द्वारा इतना जबर्दस्त विरोध होनेपर भी सन् १७२० में इंगलैंडके रेशमी और ऊनी व्यापारकी रक्षा करनेके लिये एक कानून पास हो ही गया। इस कानूनके द्वारा भारतके छपे हुए और रंगे हुए रेशम और केलिकोका व्यवहार पूर्णतया मना किया गया और उसके पहननेवाले पर ५ पौण्ड और बेचनेवाले पर २५ पौण्ड जुर्माना रक्खा गया। इस कानूनसे भारतके रंगे हुए तथा छपे हुए मालका आयात बहुत कुछ घट गया, फिर भी इसके व्यवहारकी शिकायतें बहुत समय तक होती रहीं।

इन सब उपायोंने अन्तमें इंगलैंडके बाजारसे भारतीय कपड़ेका नाम उठा दिया। और बीस ही वर्षमें अर्थात् सन् १७४० में इंगलैंड इतना कपडा बनाने लग गया जो वहांकी आवश्यकताकी पूर्ति करके बाहर भी जाने लगा।

नीचे दिये हुए अंकोंसे इंगलैंडके इस कपडेके उद्योगका पता भली भांति चल जाता है।

सन्	रुईका आयात	कपड़ेका निर्यात
१६९७	१९७६३५९ रतल	५,९१५ पौंडे
१७०१	१९८५८६८ ,,	२३२५३ ,,
१७१०	७,१५००८ ,,	५६९८ ,,
१७२०	१९,७२,६०५ ,,	१६२०० ,,
१७३०	१५,४५,४७२ ,,	१३,५२४ ,,
१७४१	१९,७६,०३१ ,,	२०,७०९ ,,
१७५१	२९,७६,६१० ,,	४५९८६ ,,

इस भांति सन् १६६० से लेकर १७५७ तक ग्रेटब्रिटेनकी व्यापारिक नीति बाहरी मालकी आमदको बन्द करनेकी रही और किसी मालकी आमदपर पूर्ण मनाई एवं किसीकी आमदपर भारी कर लगाकर अपने यहांके उद्योगकी बढ़वारीके मार्गपर यह कटिबद्ध रहा। ये सब बातें

मशीनरीके आविष्कार और उसके प्रारम्भके पहलेकी हैं। इसके पश्चात् पाश्चात्य देशोंमें मशीनरी का आविष्कार हो जा नेपर तो भारतका व्यापार और भी आपदापन्न हो गया और कुछ ही वर्षोंमें भारतके उद्योग धन्धोंका प्राचीन आधिपत्य इस प्रकार नष्ट हो गया कि जहां वह दूसरे देशोंके बाजारोंको अपने मालसे पटा हुआ रखता था, वहां अब इसके बाजार दूसरे देशोंके मालसे पटे रहने लगे।

इंगलैंडको भारतके व्यापारसे बहुत अधिक लाभ था। वहांके सरकारी खजानेमें चुंगीके द्वारा जो रकम आती थी वह सोने और चांदीके रूपमें बाहर जानेवाली रकमसे अधिक ही बैठती थी। यहांकी सरकारको कम्पनीके व्यापारपर लगाये हुए करसे जो आमदनी बैठती थी वह कम्पनी द्वारा बाहर भेजी जानेवाली रकमके बराबर और कभी कभी उससे अधिक बैठती थी। इसके प्रमाणके लिये सन् १७५० से १७६० तकके चुंगीके अङ्कोंका मिलान निर्यात किये हुए सोने चांदीके अङ्कोंके साथ करना चाहिये।

सन्	कम्पनी द्वारा लीगई चुंगीकी रकम पौण्ड	निर्यात सोनेचांदीकी रकम पौण्ड
१७५१	८,८७,८५६	८,०६,२५२
१७५२	९,२७,२१५	९,३६,१८५
१७५३	८,६८,२०२	८,३३,३६४
१७५४	९,०४,७५१	९,४४,२५६
१७५५	९,३८,५४३	६,६८,८९३
१७५६	८,९०,१३२	६,२०३७८
१७५७	९,५०,६६०	७,६५००८
१७५८	७,७०,०२२	४,५६,२५२
१७५९	१०,२८,६२२	१,७२,६०४

इससे प्रकट है कि इन दस वर्षोंमें इंगलैंडने जहां ६३ लाख पौण्ड बाहर भेजे वहां उसे चालीस लाखसे अधिक पौण्ड तो चुंगीके रूपमें प्राप्त हो गया। पूर्वीय देशोंके साथ होनेवाले व्यापारसे इंगलैंडको कितना लाभ था यह ऊपरके अङ्कोंसे स्पष्ट है। १८ वीं शताब्दीके मध्यमें इंगलैंडका पूर्वीय व्यापार इतना लाभप्रद था कि एक प्रकारसे यह माल उसे मुफ्तमें ही मिल जाता था। क्योंकि जितनी रकम कम्पनी वहांसे बाहर भेजती थी उतनीके करीब वह उसे चुंगीके रूपमें वापस भी दे देती थी। इस मालको फिर दूसरे देशोंमें निर्यात कर देनेसे लाखों पौण्ड और मिल जाते थे। इसके अतिरिक्त जहाजी व्यवसायसे भी बहुत अधिक द्रव्य मिलता था। इसी भांति जो अंगरेज कम्पनीकी नौकरीमें थे वे भी अपने देशमें भारतसे बहुतसा द्रव्य लाते थे। इस भांति इंगलैण्डके जहाजवाले, बैंकोंवाले, कारीगर, पूंजीपति इत्यादि सब लोग इस लाभदायक व्यापारसे मालामाल हो रहे थे।

भारतीय कपड़ेका प्रतिबन्ध होते ही इंग्लैण्डका घरू उद्योग स्थिर, परिष्कृत और उन्नत होने लगा। विलियम उडने लिखा है कि ज्यों ही भारतीय रेशम आदिकी मनाईका कानून पास हुआ त्योंही इंग्लैण्डके कपड़ा बुननेवालोंमें—जो उदास चित्त बैठे हुए थे—नवीन जीवन और नवीन उत्साहका संचार हो गया और केवल बुननेवालोंही को नहीं पर व्यापारियोंको भी उससे लाभ हुआ।

इंग्लैण्डके बढ़ते हुए कपड़ेके उद्योगका विषमय प्रभाव भारतमें सन् १७६० तक मालूम नहीं हुआ। उस समयतक भारत कपड़ा बुनने और लाने लेजानेके उद्योगका केन्द्र था। उस समय भी यहां सैकड़ों प्रकारका कपड़ा बनता था। मगर मशीनोंके आविष्कार और प्रचारके कारण, एवं भारतवर्षमें फ्रान्सीसी तथा डच लोगोंके राजकीय और व्यापारिक क्षेत्रमें पिछड़ जानेसे यूरोपमें भारतीय पदार्थोंका आयात एकदम घट गया, यहांतक कि थोड़े ही दिनोंमें वह बिलकुल बन्द हो गया। जिससे भारतका कातने, बुनने और रंगनेका उद्योग नष्ट हो गया।

उन्नीसवीं शताब्दीमें भारतके विदेशी व्यापारने दूसरा ही रूप धारण कर लिया। नीचे सन् १८३४ से १८५८ तकके आयात और निर्यातके अङ्क दिये जाते हैं, जिनसे व्यापारके इस बदले हुए रूपका भलीभांति पता लग जायगा :—

सन्	कुल आयात (पौण्ड)	कुल निर्यात (पौण्ड)
१८३४-३५	६१,५४,१२६	८१,८८१६१
१८३६	६२,२८,३१२	१,१२,१४,६०४
१८३७	७५,७३,१५७	१३५,०४,११७
१८३८	७६.७२,५७२	१,१५,८३,४३६
१८३९	८२,५१,५९६	१,२१,२२,६७५
१८४०	७७,७६.५०१	१,१३,३३,२६८
१८४१	१,०२,०२,१९३	१,३८,२२,०९०
१८४२	९६,२९,९००	१,४३,४०,२९३
१८४३	१,१०,४६,८९४	१,३७,६७,६२१
१८४४	१,३६,१२,४०५	१,७९,९९,५५३
१८४५	१,४५,०६,५३७	१,७६,९७,०५२
१८४६	१,१८,३६,५८६	१,७८,४४,७०२
१८४७	१,०५,७१,००८	१,६०,९६,३०७
१८४८	१,२५,४९,३०७	१,४७,३८,४३५
१८५७	२,८६०,८२८४	२६,५९१८७७
१८५८	३,१०,९३,०६५	२,८२७८,४७४

व्यापारके इन बढ़ते हुए अङ्कोंसे भारतके धनवैभवकी बढ़ती मान लेना, बड़ी भ्रम मूलक कल्पना होगी। गदरके दो तीन वर्षोंको छोड़कर बाकी सब सालोंमें आयातकी अपेक्षा निर्यात अधिक रहा है। पर इससे यह समझ लेना कि निर्यात आयातसे जितना अधिक हुआ उतना ही रुपया भारतको मिल गया गलत फहमी होगी। ऊपर हम लिख आये हैं कि इंग्लैण्डके प्रति-बन्धक कानूनसे, तथा मशीनरीके आविष्कारसे भारतीय बने हुए पदार्थोंका निर्यात एकदम घट गया था, फिर निर्यातके अङ्कोंमें यह वृद्धि कैसे हो गई ? यह प्रश्न उपस्थित हो जाता है। बात यह है कि भारतसे पक्के मालकी रफ्तनीके बन्द होनेके साथ ही—यहांके उद्योग धंधोंके नष्ट हो जानेसे—कच्चे मालकी रफ्तनी प्रारम्भ हो गई। जिससे रफ्तनीके अङ्कोंकी यह संख्या घटनेके बदले बढ़ती ही गई। इसी प्रकार विलायतके बने हुए मालकी आमद बढ़नेसे यहांके आयातके अङ्कोंमें भी वृद्धि हो गई। यह वृद्धि यहीं खतम नहीं हुई, आगेके वर्षोंमें दिन २ बढ़ती ही गई, और अबतक बढ़ती जा रही है। पर इस वृद्धिसे भारतके वैभव और समृद्धिकी वृद्धिसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। इस बातकी आलोचना हम आगे—वर्त्तमान व्यापार विभागमें—करनेका प्रयत्न करते हैं।

वर्त्तमान व्यापार

ऊपर लिखे हुए इतिहाससे इस बातका सहज ही पता लग जाता है कि यद्यपि करीब हजार डेढ़ हजार वर्षोंसे भारतकी शस्य श्यामला भूमि विदेशी आक्रमणकारियोंकी क्रीड़ा भूमि बन रही थी और महम्मद गजनवी, चंगेज, तैमूर, तथा नादिरशाहके समान कई विदेशी लुटेरोंने यहांकी सम्पत्तिको दोनों हाथोंसे लूटा, लोगोंको कत्ल किया, राजनैतिक और सामाजिक अशांति मचानेमें कोई कोर कसर न रक्खी, फिर भी उन लोगोंके द्वारा केवल देशकी ऊपरी सम्पत्तिका ही नाश हुआ। देशके आन्तरिक जीवनमें, व्यापारिक जीवनको सुरक्षित रखनेवाले औद्योगिक साधनोंमें, उनसे नुक-सान न पहुंचा और यही कारण है कि जीवनके मूल तत्वोंके नष्ट न होनेकी वजहसे देशने इन लुटेरोंकी लूटसे होनेवाले घावोंको थोड़े ही समयमें भर लिया। मगर यूरोपीय व्यापारियोंने—उसमें भी खासकर ईस्ट इण्डिया कम्पनीने—इस नीतिसे काम न लिया। उसने केवल भारतकी सम्पत्तिको अपने देशमें ले जाकर भर ही न दिया, प्रत्युत् अपने देशके औद्योगिक जीवनकी वृद्धिके लिये, उसने इस देशके औद्योगिक जीवनके मूल तत्वोंको ही नष्ट कर दिया। यह हानि इतनी जबर्दस्त हुई जिसकी सानी इतिहासके पृष्ठोंमें शायद ही कहीं मिलती हो। इसकी वजहसे देशके व्यापारमें एक बड़ा ही विचित्र उलट फेर हुआ। जहां इस देशके द्वारा विदेशोंको करोड़ों रुपयोंका माल जाता था, वहां उससे दूना चौगुना माल विदेशोंसे यहां आने लगा। दुनियाके उद्योग धन्धोंके इतिहासमें ऐसी कायापलटका अद्भुत उदाहरण खोजनेपर भी कहीं न मिलेगा।

यहां यह लिख देना आवश्यक होगा कि ईस्ट इण्डिया कम्पनीने व्यापारलक्ष्मीके साथ धीरे २ यहांकी राज्य-लक्ष्मीको भी हथियाना प्रारम्भ किया और जब राज्यलक्ष्मी उसके हाथमें चली गई तब उसने व्यापारपर एकाधिपत्य रखना उचित न समझा। उसने यहांके व्यापारके द्वारको सबके लिए खोल दिया। परिणाम यह हुआ कि भिन्न २ देशोंके विदेशी व्यापारियोंने यहां आकर व्यापारमें अत्यन्त ऊंचा स्थान प्राप्त कर लिया। तबसे इस देशका विदेशी व्यापार आयात और निर्यात दोनों बराबर बढ़ता ही चला जा रहा है। इस बातके स्पष्टी करणके लिये नीचे सन् १८६४ से लेकर अभी तकके व्यापारिक अङ्क दिये जाते हैं।

सन्	आयात	निर्यात
१८६४ से ६६ तक	३१,७० लाख	५५,८६ लाख
१८६९ से ७४ तक	३३,०४ लाख	५६,२५ लाख
१८७४ से ७६ तक	३८,३६ लाख	६०,३२ लाख
१८७६ से ८४ तक	५०,१६ लाख	७६,०८ लाख
१८७४ से ८९ तक	६१,५१ लाख	८८,६४ लाख
१८८६ से ९४ तक	७०,९८ लाख	१०,४६६ लाख
१८६४ से ६६ तक	७३,६७ लाख	१०,७५३ लाख
१८६६ से १६०४ तक	८४,६८ लाख	१,५४,६२ लाख
१६०४-५ में	१०,४४१ लाख	१,५७,७२ लाख
१६१०—११ में	१३,३७० लाख	२०६,६६ लाख
१६१५-१६ में	१,३८,१६ लाख	१,६९,५६ लाख
१६२०-२१ में	३,४७,५७ लाख	२,६७,७६ लाख
१९२५-२६ में	२३,६०० लाख	३८,६,८२ लाख
१९२६-२७ में	२४,०६१ लाख	३११०४ लाख

इन अङ्कोंसे पता चलता है कि इन वर्षोंमें भारतका आयात और निर्यातका व्यापार करोड़ोंसे अरबोंका हो गया। अनुमानसे २ अरबका आयात और इसी भांति करीब ३ अरबका निर्यात भारत-से प्रति वर्ष विदेशोंको हो रहा है। इस विदेशी व्यापारपर पहले पहल विदेशियोंका पूरा अधिकार था और यद्यपि अब कुछ भारतीय व्यापारियोंने यहांके एक्सपोर्ट इम्पोर्टमें अच्छा हाथ बटाया है फिर भी अभी तक इसका अधिकांश भाग विदेशी व्यापारियोंहीके हाथमें है।

इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि इन पचास साठ वर्षोंमें हमारे यहांके विदेशी व्यापारके अङ्क बहुत बढ़ गये हैं। मगर इस व्यापारमें कई बुराइयां ऐसी हैं जिनकी वजहसे हमें इस व्यापारसे लाभ के बदले हानि उठानी पड़ती है। उनमेंसे एक प्रधान बुराई यह है कि यहांपर इम्पोर्ट होनेवाले मालमें अधिकतर कच्चा माल और खाद्य पदार्थ रहता है।

भारतके इम्पोर्टसे एक्सपोर्टकी संख्या अधिक है सो भी दो चार करोड़ नहीं पूरा एक अरब रुपया। इसमेंसे बहुत सी रकम तो ब्रिटिश सरकारके होम चार्जमें चली जाती है। बहुत सी विदेशी कम्पनियोंकी यहांपर लगाई हुई पूंजीपर मुनाफा, जहाज किराया, वीमा खर्च आदि कई तरहसे विदेशमें चली जाती है। मतलव यह कि भारतको यह बची हुई रकम भी सुरक्षित रूपमें वापस नहीं मिलती।

भारतका विदेशी व्यापार एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट मिलाकर करीव ५-६ अरव रुपयेका होता है। यह व्यापार किस प्रकारका हैं और उससे देशका कितना हिताहित सम्पन्न हो सकता है इस बातका विवेचन करनेके पूर्व यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि ५-६ अरव रुपयेका यह वढ़ा हुआ व्यापार भी इस देशकी लम्बाई चौड़ाई और आवादीकी दृष्टिसे दूसरे देशोंकी अपेक्षा वहुत कम है। इसके लिये दुनियाके प्रधान २ व्यापारिक देशोंके व्यापारसे इसके व्यापारका मिलान करना अनुचित न होगा।

सन् १९२१—२२

देश	आबादी	कुल व्यापार पौण्ड	जन संख्याके प्रति मनुष्यके पीछे पड़नेवाले अंक
ग्रेटब्रिटेन	४,७३,०७६०१	१,७२,८० लाख	८६ पौण्ड
अमेरिका	१०,५७,१०,६२०	२००,८० लाख	१९ "
जर्मनी	६,५९,२५,९९३	१०,७०० लाख	१६ "
जापान	५,९९,६१,१४०	२२,६० "	३ "
फ्रांस	३,९२,०६,७६६	४५,०० "	१४ "
भारत	३१,९०,७५,१३२	३४६० "	१-१-८ पेंस

इस प्रकार जहां ब्रिटेनका व्यापार ८६ पौण्ड, अमेरिकाका १९ पौण्ड, जर्मनीका १६ पौण्ड, फ्रांसका १४ पौण्ड प्रति मनुष्य पड़ता है वहां भारतका व्यापार प्रति मनुष्य केवल एक पौण्ड एक शिलिंग तीन पेन्स पड़ता है। इस लेखेमें ब्रिटेन सबसे ऊंचा है और उसके पश्चात् अमेरिकाका और जर्मनीका नम्बर है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि ब्रिटेन अमेरिका या जर्मनीसे धनमें ऊंचा है। व्यापारिक अङ्क देशकी भीतरी आर्थिक स्थितिके पूर्ण परिचायक नहीं माने जा सकते। इसके लिये उपजाऊ शक्ति, आयात निर्यात व्यापारके ढङ्ग और प्रति मनुष्यकी औसत आमदनी आदि कई बातोंकी जांचकी आवश्यकता होती है और उन सबपर विचार करनेसे आज दुनियामें सबसे अधिक धनिक अमेरिका है और सबसे अधिक निर्धन भारतवर्ष। इस समय यह देश किसी भी बातमें अन्य देशोंसे मिलान करने लायक नहीं है।

अब भारतके अरबों रुपयोंके एक्सपोर्ट व्यापारपर ध्यान देना आवश्यक है। देखना होगा कि वह बाहरी देशोंसे किन २ वस्तुओंका इम्पोर्ट करता है और उनके बदलेमें अपने यहांकी किन २ वस्तुओंको एक्सपोर्ट करता हैं। साधारण दृष्टिसे देखनेपर उसके इम्पोर्टमें, कपड़ा, मशीनरी, लोह लक्कड़की चीजें आदि वस्तुएं ही प्रधान हैं और उसके यहांसे एक्सपोर्ट होनेवाली चीजोंमें रुई, गल्ला, तिलहन, चाय, पाट, चमड़ा आदि कच्चा सामान ही अधिक रहता है।

भारतका आयात व्यापार

सन् १९२६-२७ में भारतमें २, ४०, ९१०००००) रुपयेका आयात हुआ। यह स्मरण रखना चाहिए कि सन् १९१५-१६ में यह संख्या केवल १,३८,१६००,००० की थी। आयातके इन अङ्कोंके बढ़नेसे भारतका कोई हित नहीं है। इसमें उन्हीं देशोंका विशेष हित है जो भारतके बाजारोंको अपने मालसे अधिकाधिक पाटते जाते हैं और यहांकी सम्पत्तिको खींचकर ले जा रहे हैं। आयातके इन अङ्कोंमें भिन्न २ देशोंका साझा इस प्रकार है:—

१९२६-२७

ग्रेटब्रिटेन	१,१०,५३,८५०००
जापान	१६,४७,२४०००
जर्मनी	१६,९०,७२०००
जावा	१४,२२,२८०००
अमेरिका	१८,२३,८१०००
बेलजियम	६,८००,८०००

इस अङ्कोंसे प्रकट हैं कि भारतके आयात व्यापारमें प्रधान हाथ ग्रेटब्रिटेनका है। कुल आयातमें अनुमानतः ५० प्रतिशत ग्रेटब्रिटेनसे आता है।

भारतके आयातमें मुख्य २ पदार्थोंका विवरण इस भांति है।

सन् १९२६-२७

मालका नाम	रुपया	मालका नाम	रुपया
रुई और रुईके बने पदार्थ	६५,०४,७४,०००	धातु (टीन, पीतल, तांबा, शीशा एल्यूमिनियम आदि)	७०,६३,५०००
कपड़ा	१९,१६,५००००	खाद्य पदार्थ (यथा बिस्कुट, बारली जमा हुआ दूध आदि)	५,५०,४९०००
चीनी	१६,७२,८९०००	विविध धातुओंकी बनी चीजें	५,०६,६२०००
लोहा और फौलाद	१४,५९,५००००	रेशम (कोरा और कपड़ा)	४,५९,७१०००
खनिज तैल	८०९,११०००	ऊन (कोरा और कपड़ा)	४,४६,३६०००
सवारियां (गाड़ी साइकिल मोटर, लोरी, बस, ट्राम आदि)	६,३९,९३०००		

मालका नाम	रुपया	मालका नाम	रुपया
यन्त्र आदि	४०,११,८००००	विलास सामग्री	१,१३,४१०००
रेलवे सामग्री	३,२६,२४०००	रत्न मोती आदि	१,०६,६९०००
शराब	३,५२,८६०००	अन्न, दाल, आटा आदि	९१,६९०००
मसाले	३,१२,२९०००	मिट्टीके पदार्थ	८२,८२००००
कागज	३०८,२००००	स्टेशनरी	८१,९६०००
सिगरेट	२,५६,११०००	दियासलाई	७५,०९०००
कांचकी चीजें	२,५२,८८०००	चाय	१,२९,५७०००
रसायन पदार्थ	२,४४,४५०००	खिलौने खेलके पदार्थ	६२,११०००
रंग	२,१३,२३०००	जूते	५७,१३०००
रबर (कच्चा, पक्का)	२,१०,३६०००	लवेण्डर तैल आदि	५७०२०००
औषधियां	२०६६००००	छपी हुई पुस्तकें	५६,६००००
सिले हुए कपडे	१,७७,८७०००	छाते और उनका सामान	५२,५७०००
फल और वनस्पति	१,६१,७६०००	घड़ियां	२५,६६०००
साबुन	२,५२,४१०००	भारत सरकारके लिये	
वार्निशके पदार्थ	१,४४,२३०००	स्टोअरका समान	६,५९,७६०००
नमक	१,२६,२००००	इत्यादि।	
मकान सम्बन्धी पदार्थ	२,२३,९१०००		

उपरोक्त अङ्कोंको ध्यान पूर्वक देखनेसे पता लग जाता है कि भारतके आयात व्यापारमें सबसे मुख्य भाग कपड़े का है। अर्थात् समस्त आयातका एक चौथाईसे भी अधिक आयात कपड़े का होता है। इस कपड़े में करीब ४६ करोड़ रुपयेका कपड़ा तो अकेले ग्रेट ब्रिटेनहीसे आयात हुआ।

कपड़े की इतनी बड़ी आयातका यह कारण नहीं है कि यहांपर रुई या दूसरे रेशेदार द्रव्य पैदा न होते हों। अथवा यहांपर मजदूरोंकी कमी हो। रुई यहांपर इतनी पैदा होती है जितनी संसारमें अमेरिकाको छोड़कर किसी दूसरे देशमें नहीं होती। लाखों मन रुई यहांसे प्रति वर्ष विदेशों-को निर्यात होती है। मजदूरोंकी भी यहांपर कमी नहीं है। ऐसी स्थितिमें यहांपर कपड़े की आव-श्यकताको दूसरे देशवाले पूरी करें यह भारतके लिये अत्यन्त दुर्भाग्यकी बात है। जिन देशोंमें कच्चा माल पैदा नहीं होता है, जहांपर मजदूरोंकी कमी है ऐसे देश यदि दूसरे देशोंसे मालका आयात करें तो एक हद तक उचित भी है। पर भारत सरीखा देश जहां पदार्थ निर्माणके सब कुछ साधन विद्यमान हैं एवं मालकी खपतके लिये भी जहां विशाल क्षेत्र तैयार है। अपने तनोबदनको

ढकनेके लिये दूसरे देशोंका मुहताज रहे, यह उसके लिये कितनी लज्जाजनक परिस्थिति है। यदि यह देश अपने व्यापारको सम्हाल ले—सुधार ले—अपने आवश्यकीय पदार्थोंको यहां बनाना प्रारम्भ करके बाहरसे पक्का माल मंगानेकी प्रणालीको बन्द करदे, तो उन देशोंके कल कारखानोंको चलना कठिन हो जाय जो आज इसकी सम्पतिपर मौज उड़ा रहे हैं।

सच पूछा जाय तो कल कारखाने प्रधान इन देशोंकी स्थिति इस समय बड़ी ही नाजुक हो रही है। यन्त्र कलाके प्रचारसे वहां माल तो बेशुमार तैयार होता है, मगर उस मालका खरीददार ढूंढनेकी चिन्ता उन्हें बेतरह व्यग्र कर रही है। बात यह है कि संसारमें पदार्थोंकी आवश्यकता की वृद्धि उस परिमाणसे नहीं हो रही, जिस परिमाणमें यन्त्रकलाके बलसे उनके निर्माणमें हो रही है। निर्माण और खपतकी इस असमानतासे निर्माण करनेवाले देशोंमें बड़ी गहरी व्यापारिक प्रतिद्वन्द्विता मच रही है। गत महायुद्धका भी मूल कारण प्रायः यही प्रतिद्वन्दता थी और भविष्यमें भी जब तक इग्लैंड, फ्रांस जर्मनी या अन्य पाश्चात्य देश अपने यहां ऐसे पदार्थ तैयार करते रहेंगे जिनको वे अपने यहां न खपा सकें और जिनकी खपतके लिये भारतके समान असहाय देशोंकी--जो कि उन पदार्थोंको लेनेसे अपनी असमझ, कमजोरी, या शताब्दियोंकी गुलामीमें पड़े रहनेकी आदतसे इन्कार नहीं कर सकता है। आवश्यकता बनी रहेगी तब तक अन्तर्राष्ट्रीय कलहके मिटनेकी या भविष्यमें भारी युद्ध होनेकी आशंका नहीं मिट सकती। भविष्यमें जो युद्ध होगा वह इसी बातपर—इसी झगड़ेकी जड़पर होगा। उसके तात्कालिक कारण चाहें जो हों,पर उसका वास्तविक कारण वर्तमान समयकी व्यापारिक बुराई ही होगी। आज जो देश बड़े उन्नत, स्मृद्धिशाली और व्यापारिक उन्नतिके केन्द्र बने हुए हैं वे वास्तवमें—यदि सच्ची निगाहसे देखा जाय—तो इस समय बड़ी आपत्तिके बीचमें गतिविधि कर रहे हैं। किस दिन उनकी व्यापारिक गतिविधि नष्ट हो जायगी, इस बातका भय उन्हें प्रतिक्षण लगा रहता है।

भारतको इस बातकी आवश्यकता नहीं है कि वह दूसरे देशोंकी तरह अपने यहांके बने हुए मालको अन्य देशोंके बाजारोंमें पाट दे। उसके लिये केवल इसी बातकी आवश्यकता है कि वह अपने यहां उत्पन्न हुए कच्चे मालको अपने यहां ही पदार्थ निर्माणमें लगा ले—उससे अपनी आवश्यकताके पदार्थ यहीं तैयार कर ले। जिस दिन भारत अपनी आवश्यकताकी पूर्तिके लिये विदेशोंका आश्रित नहीं रहेगा—जिस दिन वह व्यापारिक जगतमें दूसरोंका मुहताज न रहेगा—उसी दिन उसका सौभाग्य सूर्य्य उदय हो जायगा और उसकी गुलामीकी बेड़ियोंके कटनेके दिन नजदीक आ जायंगे। भारतको अपने बनाये हुए पदार्थोंके लिये किसी भी विदेशी खरीददार या विदेशी बाजारको खोजनेकी आवश्यकता नहीं है। उसे अन्तर्राष्ट्रीय जीवनमें उन उद्यमी देशोंसे प्रतिद्वन्दता करनेकी भी कोई आवश्यकता नहीं हैं। उसे केवल अपने घरू कारबारपर अपने निजके

बाजारोंपर अपना सत्व स्थापित करनेकी आवश्यकता है। मगर इस साधारण कामको करनेमें भी वह बेपरवाही, उदासीनता और कमज़ोरी बतला रहा है, यही सबसे बड़े खेदकी बात है। केवल इसी एक बातमें यदि भारत सम्हल जाय तो उसकी मुंह मांगी मुराद पूरी होनेमें विलम्ब न लगे।

कपड़े के आयातमें ग्रेटब्रिटेनसे दूसरा नम्बर जापानका है। जिसने दस करोड़ रुपयेका कपड़ा सन् २६-२७ में भेजा। रुई कुल ५,०३,३२००० की आई, इसमें मुख्य भाग अमेरिकाका रहा, जिसने २,११ लाखकी रुई भेजी। बाकी रुईके पदार्थ जो ६५ करोड़के आये उनमें ६,६२ लाख रुपयेका सूत आया। इस पदार्थमें ग्रेट ब्रिटेनका भाग ४१ प्रति शत और जापानका ५४ प्रति शत रहा, सन् १९१५-१६में इस मालमें ग्रेटब्रिटेनका भाग ९१प्रतिशत और जापानका२ प्रतिशत था। इस संख्यासे बढाते २ जापानने कितना भाग बढ़ा लिया, यह ध्यान देनेकी बात हैं। कुल सूत ४९० लाख रतल आया और प्रति पौण्डका औसत मूल्य १।-)॥ रहा। यही सन् १९२५-२६ में ७,७७ लाख रुपयेका ५२० लाख रतल आया था जिससे प्रति पौण्डका औसत मूल्य १॥) पड़ा था। भारतीय मिलोंने ८०,७१ लाख रतल सूत काता और यह सन्तोषकी बात है कि वे दिन प्रति दिन इस कार्यमें उन्नति करती जा रहीं हैं। इन दिनोंमें जो आयात घटा, वह अधिकतर एक नम्बरसे लेकर २० नम्बर तकके सूतमें था। इस क्वालिटीके सूतको भारतीय मिलोंने ७१० लाख रतल अधिक काता। नम्बर ३१ से लेकर ४० तकके कोरे, धुले और रंगीन सूतके बनानेमें भी भारतीय मिलोंने उन्नति की। ४० नम्बरसे ऊपरका सूत आयात भी अधिक हुआ और यहां बना भी अधिक।

सूत जो मोटे महीनके नामसे कम और अधिक नम्बरोंसे बोधित होता है, उसकी जातियां इस भांति हैं :—

(१) कोरा (२) धुलाई, (३) रंगीन और (४) रेशमी चमकवाला (Mercerised) इनमेंसे कोरे और रंगीन सूतके आयातमें कमी हुई,पर धुलाई और मर्सराइजके आयातमें ८,और ४६ सैकड़ाकी वृद्धि हुई। इसीप्रकार कपड़े में,कोरा कपड़ा (बिना धुला हुआ)—जिसमें लट्ठा, मलमल नैनसुख, धोती आदि पदार्थ सम्मिलित हैं—१९,६२ लाखका आयात हुआ, धुलाहुआ कपड़ा जिसमें धोई हुई मलमल, नैनसुख, लंकलाट इत्यादि सम्मिलित हैं—१७१३ लाख रुपयेका आया। रङ्गीन कपड़ा भी १७२२ लाख रुपयेका आयात हुआ। धुले हुए कपड़ेमें ग्रेटबिटेनका भाग ९६ प्रतिशत रहा। कोरे और रङ्गीन कपड़ेमें उसका भाग सन् १९२५-२६में ७९ और ७३ प्रति शत था। मगर १९२६-२७में घटकर वह ७८ और ७१ प्रतिशत रहगया। इस मालमें इन दिनों जापानने अधिक उन्नति की। गंजी मौजा आदि भी इस कपड़ेमें सम्मिलित है। यह माल कुल १४७ लाख रुपयेका आया जिसमें १,१७ लाख रुपयेका आयात जापानसे हुआ।

भारतवर्षमें विलायती कपड़ेका इम्पोर्ट करनेमें कलकत्ता सबसे अग्रगण्य है और उसके पश्चात् इस मालके आयातमें बम्बईका नम्बर है।

पश्चात्य देशोंके व्यापारकी इस सफलताके तथा भारतके व्यापारके इसप्रकार नष्ट होजानेके अन्तर्गममें तीन कारण मूलभूत तत्व हैं। इनमेंसे पहला और प्रधान कारण अठारहवीं शताव्दीके आरम्भमें इङ्गलैण्डके अन्दर यंत्रकलाका आविष्कार होना है। दूसरा कारण ब्रिटेनकी वह व्यापार-संरक्षण नीति हैं जिसके द्वारा उसने अपने बाजारोंमें पटे रहनेवाले भारतीय मालका कानूनन बहिष्कार कर दिया और तीसरा कारण मालको इधर उधर लाने लेजानेके सुविधा पूर्ण साधनोंका उत्पन्न होजाना है। इन तीनों बातोंने भारतके उद्योगको गिरानेमें और इङ्गलैण्डके उद्योगको बढ़ानेमें बहुत अधिक सहायताकी। खासकर यंत्रकलाके आविष्कारने जिसमें कातनेकी, बुननेकी और जहाजी सभी कलाएं सम्मिलित हैं। यहांके व्यापारको बहुतही धक्का पहुंचाया। इसप्रकार इन सब बातोंने भारतके शताब्दियों पुराने उद्योग धन्धोंको मटियामेट कर दिया और इन्हीं बातोंके बलपर इंगलैंड, अमेरिका आदि देश इसी एक शताव्दीमें उन्नतिके शिखरपर पहुंच गये। जो बात एक स्थानपर महा भयङ्कर और जीवन नाशकारी सावित हुई,उसीने दूसरी जगह मृतसंजीवनीका काम किया। इसीके बलपर जो इंगलैण्ड मुश्किलसे दस लाख पौण्ड रूई अपने यहां खपा सकता था सन् १८५०में ६६४० लाख रतल रुई खपानेमें समर्थ हुआ। इधर इन्हीं कारणोंसे जो भारत अपने कपड़ोंसे विदेशोंके बाजारोंको पटा हुआ रखता था उन्नीसवीं शताव्दीमें इङ्गलैण्डका बहुत बड़ा खरीददार बनगया।

चीन और जापान भी कुछ समयतक इङ्गलैण्डके कपड़ेको खरीददार रहे। मगर उन्होंने बहुत शीघ्र अपने व्यापारको सह्माल लिया और वहांसे कपड़ा मंगाना कम करदिया। नीचेके अङ्कोंसे पता चलेगा कि सन् १८७७से १९२७ तक इङ्गलैण्डसे भारत, चीन और जापानको किस भांति कपड़ेका निर्यात हुआ ?

	कपड़ा हजारगज			सूत हजार रतल		
सन्	भारत	चीन	जापान	भारत	चीन	जापान
१८७७	१,३०,९९,३५	३६,७३,३०,	२७१५०	३६०३०,	१७९६२	१५१०५
१८८७	१८,११,१६४	५,५२,७४२,	६५४०३	४,८८५२	११८८२,	२३४७२
१८९७	१७,५४,८३०	४,४५,१८२,	९४०५६	४७६९६	११२४६,	२३१४२
१९०७	२४,५४,२३३	५,५३,२७३,	१२१२४०	३१०११	४२०९८	२११२

को भी प्रगति मिलती जायगी। और वह धीरे २ इस देशमें इतना विस्ताररूप धारण कर सकेगा कि जिससे फिर विदेशी पदार्थोंके लिए यहां कुछ गुंजाईशही न रहे।

उपरोक्त अङ्कोंसे इस बातका पता चलनेमें देर नहीं लगती जापान और चीनमें इन वर्षोंमें इंग्लैण्डका व्यापार कितना गिरगया है। इसका प्रधान कारण यह है कि जापानने इन थोड़ेसे दिनोंमें कपड़ेके उद्योगमें बहुत अधिक उन्नति की है। सूतका निर्यात तो जापानको एक दम बन्द है। चीनको भी उसकी तादाद एक तिहाईके करीब रह गई है।

यह बात नहीं है कि भारतवष इस विषयमें बिलकुल ही चुप बैठा है, हर्षकी बात है कि उसने भी इस विषयमें अपनी आंखें खोली हैं। यद्यपि राजनैतिक गुलामी, तथा और दूसरे अनेक कारणोंकी वजहसे इन देशोंके मुकाबिलेमें उसकी गति विधि बहुत ही कम है फिर भी इसमें सन्देह नहीं कि उसके यहां इंग्लैण्डसे आयात होनेवाले पक्के पदार्थोंकी तादाद घटी है। और यहां भी इस कालमें धड़ाधड़ सैकड़ों मिलें खुली हैं तथा उनसे निकलने वाले कपड़े और सूतकी तादादमें भी दिनोंदिन वृद्धि होती जारही है।

नीचे दिये हुए भारतीय मिलोंके सूत और कपड़ेके अङ्कोंसे यह बात स्पष्ट हो जायगी कि यहां इस काममें किस प्रकार उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है।

सन्	रुईकी गांठे खर्पीं, (गांठें)	सूत बना, (गांठें)	कपड़ा बना (गज)
१९००	१४,५,३,३५२	१२,८४,५५८	३२,९४,२३,३९७
१९०५	१८,७९,२४४	१४,४५,९५३	५४,९५,२९,०६५
१९१०	१९३५,०१०	१५,६८,४१०	९६,३८,९९,४८२
१९१५	२१,०२,६३२	१६,२९ ९६१	११३,५७,०७,९५२
१९२०	१९,५२,३१८	१५,८९,४००	१६३,९७,७९,२२७
१९२२	२२,०३,५४०	१७,३०,७८२	१७३,१५,७३,२९६
१९२५-२६	२१,२००००	६८,६४,२७०००रतल	१९५,४४,६३०००
१९२६-२७	अंक उपलब्ध नहीं	८०,७१,१६००० ,,	२२५,८७,१५०००

इस भांति महायुद्धके पूर्व जहां भारतीय मिलें १ अरब गज कपड़ा तैयार करतीं थीं उसके स्थानमें अब २ अरब गजसे भी अधिक कपड़ा बनाने लगीं हैं। इसी प्रकार महायुद्धके पूर्व यहांपर इंग्लैण्डसे जहां २ अरब ५६ करोड़ गज कपड़ा आयात हुआ था वहां १९२६-२७ में केवल १४६ करोड़ गज कपड़ा आया। सूतमें हमारी मिलोंने ८० करोड़ रतल सूत तैयार किया और बाहरसे आयात हुआ ५ करोड़ रतल।

यहांपर यह देखना भी आवश्यक होगा कि इन्हीं वर्षोंमें जापानने अपने सूत और कपड़ेके उद्योगमें कितनी प्रगति की, नीचेके अङ्कोंसे यह बात भी ज्ञात हो जायगी।

(जापान)

सन्	रुई खपी (गांठे)	सूत बना (गांठें)	कपड़ा बना (गज)
१६०३	६,७५,६०८	८०,१७,३७	७,६७०२२१३
१६२०	२१,३०,७९०	१८,१६,६७६	७६,२०,३७,३६०

कहनेका मतलब यह कि जापानके मुकाबिलेमें चाहे भारतकी गति विधि कम हो, फिर भी भारतमें सूत और कपड़ेका उद्योग बढ़ रहा है। यद्यपि चारों ओरकी प्रतिद्वन्द्वताके कारण यहांके मिलोंकी दशा जैसी चाहिये वैसी सन्तोष जनक नहीं है तथापि भारतीय जनताकी रुचिमें ज्यों २ सुधार होता जायगा त्यों २ इस उद्योगको भी प्रगति मिलती जायगी और वह धीरे २ इस देशमें इतना विस्ताररूप धारण कर सकेगा कि जिससे फिर विदेशी पदार्थोंके लिए यहां कुछ गुंजाइशही न रहे।

यह बात कुछ अंशोंमें सत्य है कि भारतीय मिलें अधिकतर मोटा कपड़ा बनाती हैं और विदेशी मालकी सी तड़क भड़क यहांके मालमें नहीं आती। इस कमजोरीकी वजहसे यहांके बने हुए कपड़ेका प्रचार जितना होना चाहिये उस तादादमें नहीं होरहा है। फिर भी यदि जनता अपने वास्तविक हिताहितको पहचानले, वह यदि इस बातको अनुभव करने लगजाय कि तड़क भड़क युक्त न होनेपर भी इस देशका बना कपड़ा खरीदनेसे हमारा पैसा हमारेही पास रहेगा और उससे देशके उद्योग और व्यापारमें तथा मजदूरोंकी स्थितिमें सुधार होगा, तो फिर यह प्रश्न उतना महत्वपूर्ण नहीं रह सकता। फिर यह बात भी नहीं हैं कि हमारी मिलें बारीक और बढ़ियां वस्त्र तैय्यारही नहीं कर सकतीं। यदि जनता उन्हें अपनी आवश्यकता बतलाये और उनके उद्योगको प्रोत्साहन दे तो यहां भी बढ़िया कपड़ा तैयार होसकता है। गत पांच सात वर्षोंके अन्दरही भारतकी मिलोंने बहुतसे अच्छे २ डिजाइन तैयार करके बतलाये हैं। यही मिलें उत्साह पानेपर और भी बढ़िया माल तैयार कर सकती हैं। जब संसारमें मशीनरीका नाम भी नहीं सुना गया था, उस समय भी जो देश केवल हाथोंकी कारीगरीसे, मशीनरीसे भी बढ़िया माल तैयार करता था वह देश मशीनरीके युगमें विदेशोंके सदृश पदार्थ तैय्यार करले, यह क्या असम्भव है?

भारतमें सूत तथा कपड़ेकी मिलोंका उदय गत शताब्दीके उत्तरार्द्धमें हुआ। सबसे पहले सन् १८५४में बम्बईके अन्दर बाम्बे स्पिनिंग एण्ड वीविंग कम्पनी खुली। दूसरी मिल माणेकजी नसरवानजी पेटिटने और तीसरी उनके पुत्र सर दिनशा पेटिटने सन् १८६०में खोली। अमेरिकाके युद्ध और चीनको होनेवाले सूतके निर्यातने इस कार्य्यमें बड़ी सहायता पहुंचाई। जिससे लोग

कपड़े के उद्योगमें खुले दिलसे पूंजी लगाने लगे। सन् १८६५ तक बम्बईमें १० मिलें खुलगईं। जिनमें २५००० स्पेण्डिल्स और ३४०० लूम्स चलने लगे। सूतकी मशीनरी कपड़ोंके संचोंकी अपेक्षा अधिक होनेसे यहां सूत अधिक तैयार होता था यह सूत चीनको निर्यात करदिया जाता था। सन् १८७० और ७५के बीच १७ नई मिलें और खुलगईं, जिससे स्पेण्डिल्सकी संख्या बढ़कर साढ़े सात लाख और लुम्सकी आठ हजार होगई। यद्यपि अभीतक जापानके साथ प्रतियोगिता प्रारम्भ नहीं हुई थी फिर भी लङ्काशायर वगैरहकी वजहसे यहांका उद्योग निरापद नहीं था। सन् १८७८में लार्ड लिटनके शासनकालमें चुंगीका निर्माण तथा लङ्काशायरवालोंकी इच्छासे और भी चुंगीमें वृद्धि कियाजाना भारतके व्यापारिक इतिहासज्ञोंसे छिपा हुआ नहीं है। इसके अतिरिक्त सरकारकी करैंसी पॉलिसीने भी सूतके व्यापारको बड़ा धक्का पहुंचाया। इससे चांदी की करैंसीवाले देशोंमें, उनमें भी खासकर चीनके साथ होनेवाले विनियमके सम्बन्धमें बड़ी गड़बड़ उत्पन्न होगई जिससे बम्बईका सूतका व्यापार एकदम मटियामेट होगया और चीनका बाजार भारतके लिए बन्द होगया। जापानने इस सुअवसरसे लाभ उठानेमें बिलकुल बिलम्ब न किया और सन् १८८४ में भारतके हाथसे छूटे हुए चीनके बाजारको हथिया लेनेके लिए प्रबल प्रयत्न किया। भारतीय मालके साथ प्रतियोगिता करनेके लिए उसने स्वयं चीनमें अपनी मिलें खोलना प्रारम्भ किया। उसका यह उद्योग सन् १९११ से प्रारम्भ हुआ इस वर्ष नगाई नाटीने चीनमें मिल खोली। धीरे २ यह उद्योग बढ़ता गया। यहांतक कि आज जापान की भिन्न भिन्न १५ कम्पनियोंने चीनके शंघाई, मंचूरिया, हैंको आदि स्थानोंमें १३ लाख स्पेण्डिल्सके कारखाने खोल रक्खे हैं।

जापानने भारतके इस कारबार भी गिरती हुई दशासे बहुत लाभ उठाया। वह इसमें निरन्तर उन्नति करता ही गया। इसकी प्रतियोगितामें भारतीय मिलोंको बहुत हानि उठाना पड़ी। पर सन् १९०४ में स्वदेशी आन्दोलनके कारण यहांका कारोबार फिर चमक उठा। इस आन्दोलन की वजहसे विदेशी कपड़ेके स्थानमें देशी कपड़ेकी मांग बढ़ी, और लोगोंने मिलोंमें वुनने वाले करघोंकी तादाद बढाकर यहांके सूतसे यहीं कपड़ा वुनना प्रारम्भ किया। लेकिन यह अवस्था भी अधिक समय तक न रही और सन् १९१७ तक फिर यहांका कारोबार खराब अवस्थामें रहा मगर यूरोपीय महायुद्धके प्रारम्भ होते ही यहांपर विदेशोंसे कपड़ा आना बन्द हो गया और भारतीय मिलोंको अपनी उन्नति करनेका सुवर्ण सुअवसर प्राप्त हुआ। इन दिनों भारतमें मिल-इण्डस्ट्रीज़ की खूब वृद्धि हुई सन् १९१४ में ६७ लाख तकुओं और एक लाख करघोंकी २७१ मिलें भरातमें थीं उनकी संख्या वढ़कर सन् १९२४ में ३३७ हो गई जिनमें ८५ लाख तकुए और १॥ लाख करवे हो गये।

भारतवर्षमें जितनी रुई पैदा होती है उसमेंसे दो तिहाई विदेशोंका भेज दी जाती है और शेष यहांकी मिलोंमें खप जाती हैं। इस देशमें रुई, सूत एवं कपड़ेकी मिलोंके कारबारका मुख्य स्थान बम्बई हैं। इस प्रान्तमें दो सौसे अधिक मिलें हैं। इन मिलोंमेंसे अधिकांश बम्बई शहर और अहदाबादमें हैं। यहांकी मिलें भारतमें तैय्यार होनेवाले समूचे सूतका ७० प्रति सैकड़ा और कपड़ेका ७६ प्रति सैकड़ा भाग तैयार करतीं हैं। १६२१ की मर्दुम शुमारीसे यह भी पता चलता है कि भारतमें करीब २० लाख करघे भी चलते हैं जो मुख्यतया मिलके कते हुए सूतका कपड़ा बनाते हैं। यद्यपि हाथकी कताईका काम भी यहाँ बहुत होता है।

भारतमें मिलों, तकुओं और करघोंकी संख्या चाहे अधिक हो पर उनमेंसे पैदा होने वाले सूतकी औसत जापानमें पैदा होनेवाले सूतकी औसतसे बहुत कम होती है। इस बातके वास्तविक ज्ञानके लिए दोनों देशोंकी पैदावार पर ध्यान देना उचित है। सन् १६२४ में जापानमें २३२ मिलें चलतीं थीं इनमें ५० लाख तकुए और ६४००० करघे थे. इन मिलोंके द्वारा जापानने सूतकी २० लाख गांठे तैयारकी थी। जो भारतके ८५ लाख तकुओंसे बनाई हुई सूतकी गांठोंसे करीब पांच लाख अधिक हैं। इसी भांति ६४००० करघोंसे जापान प्रतिवर्ष एक अरब गजसे भी अधिक कपड़ा तैयार करता हैं जब कि भारत उससे ढाई गुने करघोंके होते हुए भी केवल दो अरब गज कपड़ा तैयार करता है। बाहरी मांगके कारण जापान की मिलें रात दिन २० घण्टे प्रतिदिनके हिसाबसे चलती हैं। चीन और भारतका पारस्परिक व्यापार टूट जानेसे चीनके बाजारोंपर जापानका अधिकार सा हो गया है और चीनको उसका निर्यात ४०,५०, गुना अधिक बढ़ गया है। चीनकी तो बात दूर, स्वयं भारतमें जापानी सूतका आयात सन् १६१४-१५ के अङ्कसे बत्तीस गुना अधिक हो गया है, तथा कपड़ेका आयात १ करोड़ ६० लाख गजसे बढ़कर २२ करोड़ गजतक पहुंच गया है। भारतकी देशी मिलें कपड़ेकी मांगका आधा भाग पूरा करती हैं उनसे जो कुछ कपड़ा निकलता है वह यहीं खप जाता है। कुछ थोड़ासा भाग बाहर निर्यात होता है। मतलब यह कि अभी इस देशमें कपड़ के उद्योगके लिए बहुत कुछ स्थान है।

भारतमें प्रति वर्ष पचास, साठ लाख गांठें रुईकी तैय्यार होती हैं उनमेंसे पचीस, तीस लाख गांठें निर्यात होती हैं। यदि यहांकी पैदा हुई सब रुई यहीं रहे, तो कितना लाभ हो सकता है। यहां इस बातका विचार अवश्य उत्पन्न होता है कि यदि रुईका एक्सपोर्ट होना यहांसे बन्द हो जाय तो क्या भारतकी मिलें उस सब रुई को उपयोगमें ले सकतीं हैं? मिलोंकी कमजोर पैदावारका विवरण ऊपर दिया जा चुका है। उसके आधारपर यह मान लेना अनुचित न होगा कि जो मिलें अभी विद्यमान हैं उन्हींमें पैदावार बढ़ा दी जाय तो, इस समयकी अपेक्षा

बहुत अधिक रुई उनमें खप सकती है। यदि यहांकी मिलोंके तकुए और सांचे पूर्ण शक्तिके साथ चलाये जाँय तो उनसे सांचोंकी वृद्धि कियेके बिनाही कमसे कम आजकी पैदावारसे एक तिहाई पैदावार और बढ़ाई जा सकती है। इसके पश्चात् यदि इन मिलोंकी पूंजीमें भी कुछ वृद्धि की जाय, तो उस हालतमें यह मानना अनुचित न होगा कि यहांकी पैदा हुई रुई यहीं खपने लग जायगी। दूसरे शब्दों यों कह सकते हैं, कि यहांके कपड़ेकी आवश्यकता यहीं पूरी होनेका शुभ अवसर आ जायगा। इस काममें पूंजीकी वृद्धि अनुमानतः १५ करोड़ रुपया मानी जा सकती है। क्योंकि १९२२ की सरकारी रिपोर्टके अनुसार भारतमें कपड़ेकी मिलोंमें लगनेवाली पूंजीकी तादाद ३८ करोड़ रुपया है। इसका एक तिहाई या अधिकसे अधिक पन्द्रह करोड़ रुपया इस पूंजीमें और बढ़ा दिया जाय, तो उससे इतना कपड़ा बनना कठिन नहीं है, जिसकी तादाद बाहरके पचास साठ करोड़ रुपयोंके कपड़ेके बराबर हो, इस सब रकमको बचत न भी कहें तो भी यहांपर होनेवाले आयात पर जो जहाज भाड़ा दिया जाता है, कमसे कम उसकी बचत मान लेना तो बिलकुल अनुचित न होगा। इस प्रकार इस उद्योगकी वृद्धिके साथ ही साथ यहांपर मजदूरीकी आवश्यकता भी बढ़ेगी और जिससे देशकी जनताको काम मिलेगा। यह सब देशकी स्मृद्धिके लिए अथवा कमसे कम कपड़ेके उद्योग की रक्षा लिये तो वाञ्छनीय है। मगर अभी तो स्थिति ही विपरीत हो रही है। अभी तो मिलोंकी जो कुछ परिस्थिति है वही आशा जनक नहीं है उनकी वृद्धिकी बात तो दूर रही।

भारतीय मिलोंमें मोटा सूत तैय्यार होता है और इसका कारण भारतीय रुईके रेशेका लम्बा न होना, हो सकता है। इस कारणको दूर करनेके लिए दो पथ हैं। पहला तो यह कि भारत विदेशोंसे रुई मंगाकर उससे बढ़िया और बारीक सूत तैय्यार करे। दूसरा पथ यह हो सकता है कि यहांके निवासी कपड़ेकी तड़क भड़क पर ध्यान न देकर, देशी उद्योगकी उन्नतिके लिए देशी वस्त्रोंको धारण करनेका उत्कृष्ट ध्येय सम्मुख रखें। पहले पथका अवलम्बन करते समय इस बातको अवश्य ध्यानमें रखना उचित है कि उस स्थितिमें भारतको कच्चे माल (रुई) के लिए विदेशोंकी आयात पर अवलम्बित रहना पड़ेगा। कभी कभी युद्धके छिड़ जानेपर, या कोई दूसरा अन्तर्राष्ट्रीय झंझट पड़ जानेपर इस प्रकारके आयातका एकदम बन्द हो जाना भी सम्भव है। ऐसी स्थितिमें वह इस प्रश्नको कैसे हल करेगा। कुछ भी हो पर यहांकी आवश्यकता पूर्तिके लिए यहीं पर कपड़ा तैयार करनेका उद्देश्य पवित्र और न्याय सङ्गत है। सरकारको भी टैरिफ पॉलिसीमें परिवर्तनके लिए इसी उद्देश्यसे कहा जाता है कि किसी प्रकार भारतीय उद्योगकी रक्षा हो। इस कामके लिए विदेशी माल की आयात पर यदि भारी ड्यूटी भी लगाना पड़े तो कुछ अनुचित न होगा। इसी भांति देशके उद्योगके लिये

यहांकी पैदा हुई रुईको यहींपर रखनेके लिये यह भी आवश्यक है कि रुईके निर्यात पर भी भारी ड्यूटी लगा दी जाय। लेकिन दुःख है कि भारतमें सरकारी करका नियंत्रण भारतके उद्योगकी अभिवृद्धिकी बातको बहुत कम ध्यानमें रखकर किया जाता है।

एक और दूसरा कारण इस देशके उद्योगकी वृद्धि न होनेका यह है कि इस देशके लोग पुरानी परिपाटीपर चलना ही अधिक पसन्द करते हैं। समय और जरूरतके अनुसार वे अपनी परिपाटीमें फेर नहीं करते। उधर विदेशवाले इस कार्य्यमें बड़े चतुर हैं। वे प्रति वर्ष सैकड़ों प्रकारके रंगबिरंगे नये २ नमूने बनाकर यहां भेजते हैं। इतना ही नहीं वे यहांकी जनताकी अभिरुचिका सूक्ष्म अध्ययनकर, यहांकी आवश्यकताओंकी जांच भी करते रहते हैं। इसके लिए उन्होंने कई चतुर एजण्ट् और दलाल नियत कर रक्खे हैं। किस प्रकारसे उनका माल यहांपर अधिकसे अधिक खपे, इस उद्योगके लिये वे जी तोड़कर परिश्रम करते हैं। अपने मालको भेजने और पैक करनेका ढंग उनका कितना व्यवस्थित और बढ़िया रहता है यह बतलानेकी आवश्यकता नहीं। मालका ही नहीं उनका नमूनोंको (Sampling) सजानेका ढंग भी इतना बढ़िया है कि उसे देखकर उनके अध्यवसायकी प्रशंसा किये बिना नहीं रहा जाता। भारतवासी अभी इन बातोंमें बहुत पीछे हैं। नमूने सजाकर भेजने की बात पर तो यहांके लोग ध्यान ही नहीं देते। यदि वे भेजेंगे भी तो इतने भद्दे ढङ्गसे कि एक रुपये वाला कपड़ा चार आनेका दिखलाई दे। मालको पैक करने और सजानेके ढङ्गपर भी यहांके लोग उतना ध्यान नहीं देते जितना विदेशी देते हैं। इस बातका पता एक देशी मिलके धोती जोड़ेकी घड़ी, उसपर लगाई छाप और उसके टिकटको देखनेपर भली प्रकार चल जायगा। विदेशोंसे एक पेटी या गांठ मंगानेपर वे लोग कपड़ेके प्रत्येक टिकटपर मंगाने वालेका नाम छाप देंगे, और उस स्थानपर वह कहेगा उस नम्बरका मार्का उसपर लगादेंगे पर भारतके मिलोंवाले ऐसा नहीं करेंगे। इसके अतिरिक्त वे लोग यहांकी जनताकी रूचि परखनेके लिये सात समुद्र पारसे यहां आते हैं, अपने एजण्टोंको भेजते हैं या इस कामके लिए ऊंची तनखाहोंपर यहीं एजण्ट नियत करते हैं। इन सब बातोंकी ओर यहांके मिल चलाने वाले, या कपड़ेका प्रचार करने वाले, कभी ध्यान भी देते हैं। मालकी जातिको उन्नत करने या सुधारनेकी बात तो दूर रही पर उसको भेजने या सजानेके परिष्कृत ढङ्गको भी देशी मिलवाले उपयोगमें नहीं लाते। इस प्रकारके कार्य्योंमें द्रव्य खर्च करना वे आवश्यक नहीं समझते जब कि विदेशी लोग नमूनेकी कापियोंको सजाने तथा सुन्दर बनानेमें ही न मालूम कितना द्रव्य खर्च कर डालते हैं। क्या वे लोग यह द्रव्य अपने घरसे खर्च करते हैं? नहीं वह सब उसी व्यापारमें से वापिस दूने चौगुने रूपमें निकल आता है। बम्बई और अहमदाबादके मिल वालोंका गुजरात या आसपास की आवश्यकताओंपर ही अधिक ध्यान रहेगा, वे शायद बंगालकी

जनताको किन वस्तुओंकी आवश्यकता है इस बात पर विचार करनेका कष्ट न उठायंगे। मगर विलायत की मिल वाले भारतवर्ष के प्रत्येक प्रान्तकी आवश्यकतासे वाकिफ रहनेकी चेष्टा करेंगे और प्रति चालानमें, मालके वेल बूटों, किनारियों, कोरों तथा दूसरी बातोंमें कुछ न कुछ नवीन परिवर्तन अवश्य ही कर देंगे और इसी झूंठी चमक दमकमें भारतवासियोंको डालकर उनकी जेबसे बहुत आसानीसे पैसा निकलवा लेंगे। यदि हम लोग अपने उद्योगमें सफलता और नव जीवनका संचार करना चाहें, तो यह सब रीति, नीति, और प्रणाली सुधरे हुए रूपमें हमें भी स्वीकार करनी पड़ेगी और उसके अनुसार चलना हमारे लिये लाभास्पद ही नहीं पर उद्योगकी उन्नति और सफलताके लिये आवश्यक और अनिवार्य्य होगा।

ऊनी कपड़ा

ऊन और ऊनी कपड़ोंका आयात सन् १९२६-२७ में ४४६ लाख रूपयेका हुआ। कच्चा ऊन बत्तीस लाख रुपयेका पचास लाख रतल आया। इसमेंसे १०॥ लाख ग्रेटब्रिटेनसे, बीस लाख तीस हजार रतल पारससे और तीन लाख पैंसठ हजार रतल आस्ट्रेलियासे आयात हुआ।

ऊनी कपड़ा २७७ लाखरुपयेका १५५ लाख गज़ आयात हुआ। यही सन् १९२५-२६ में २९२ लाख रुपयेका १४५ लाख गज आया था। इससे पता चलता है कि यद्यपि आयात मालमें ६ सैकड़ा वृद्धि हुई है पर मूल्यमें पांच सैकड़ा कमी हो गई है। इसकी आयात की वृद्धिका पता इस बातसे लग जाता है कि सन् १९२३-२४ में इसका आयात केवल ७१ लाख गज हुआ था। ग्रेट ब्रिटेनने १४२ लाख रुपयेका ६० लाख गज माल भेजा और वही १९२५-२६ में १५० लाख रुपयेका ५० लाख गज माल भेजा था। इस काममें जर्मनी, फ्रान्स और इटालीका भाग भी अच्छा रहा। इन्होंने क्रमशः दस लाख, बीस लाख, और साढ़े तीस लाख गज माल भेजा। जापानने १९२५-२६ में २० लाख गज माल भेजा था मगर इस वर्ष दस लाख गज भेजा इसी भांति वेलजियमका भाग भी दस लाख गजसे घटकर सात लाख गज रह गया। ऊनी दरी और गलीचोंका आयात सन् १९२५-२६ में १०४०००० रतल हुआ था वही इस साल १०,६०००० रतल हुआ।

रेशम और रेशमी पदार्थ

इस मध्यमें भारतसे ४,६० लाख रुपया निकल गया। कच्चे रेशमकी आयातमें ३५ प्रति सैकड़ा वृद्धि हुई अर्थात् १३२५००० रतलसे बढ़कर इसका आयात १७८३००० रतल होगया और मूल्य भी ८४ लाखसे बढ़कर ११४ लाख रुपया होगया। चीन और हांगकांगने इस काममें करीब २ सब भाग लेलिया। उन्होंने १७३८०००

रतल कच्चा रेशम यहां भेजा। जापानसे इसका आयात १५००० रतलसे बढ़कर २०००० रतल होगया। स्यामसे इसका आयात घट गया। रेशमी सूत—जिसका आयात घटकर सन् १९२५-२६ में ५९१००० रतल रह गया था-का आयात बढ़कर १२१७००० रतल होगया। इसका मूल्य भी ३५ लाख रुपयेसे बढ़कर ६३ लाख रुपया होगया। इसमें इटालीने २१ लाख रुपये ३६०००० रतल, स्विट्जरलैण्डने पांच लाख रुपयेके ७०००० रतलसे बढ़कर १३ लाख रुपयेका १,८१००० रतल और जापानने ७॥ लाख रुपयेका १,६२००० रतल माल भेजा।

रेशमी कपड़ा

रेशमी कपड़ेका आयात २१२ लाख रुपयेके १६० लाख गजसे बढ़कर २४३ लाख रुपयेके १६० लाख गजका हुआ। इसमेंसे अनुमानतया ६८ प्रति सैकड़ा रेशमी कपड़ा चीन और जापानसे आया। जापानने ११८ लाख रुपयेका ६५ लाख गज और चीन तथा हांगकांगने ११५॥ लाख रुपयेका ६० लाख गज कपड़ा भेजा। दूसरे पदार्थोंसे मिश्रित रेशमी कपड़ा ३१ लाख रुपयेका २१ लाख गज आया। जिसमेंसे जापानने ८,३७००० गज, जर्मनीने ४०२००० गज और इटलीने २३५००० गज कपड़ा भेजा।

नकली रेशम

भारतमें इसकी मांग उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। ऊपरी चमक-दमकसे लुभानेवाला भारत इसमें भी काफ़ी रुपया खर्च करने लग गया है। नकली रेशमके सूतके गत पाँच वर्षोंके आयात अङ्कोंसे इस बातका पता चलता है कि भारतमें इसकी खपत किस प्रकार बढ़ती जा रही है।

सन्	रतल	रुपया
१९२२-२३	२,२५०००	१३,४००००
१९२३-२४	४,०६०००	१९,५५०००
१९२४-२५	११,७१०००	४२,४००००
१९२५-२६	२६,७१०००	७४,७२०००
१९६६-२७	५७,७६०००	१,०२,६४०००

ध्यान देने योग्य बात है कि सन १९२२-२३ में जहां नकली रेशमका सूत १३॥ लाख रुपयेके करीब आया था वहीं सन् १९२६-२७ में एक करोड़ रुपयेके करीब आया। पांच वर्षके भीतर इस पदार्थके आयातमें सात गुना वृद्धि हुई और उसके परिमाणमें २६ गुना। इससे यह भी पता लग जाता है कि यह पदार्थ पांच ही वर्षमें कितना सस्ता होगया। सन् १९२५-२६ की तुलनामें इस पदार्थके आयातमें ११६ प्रति सैकड़ा वृद्धि हुई मगर व्यय में केवल ३७ प्रति सैकड़ा। इस

पदार्थके भेजनेवालोंमें इटली ही सबसे प्रधान है। उसने १९२४–२५ में ३,९२,६८८ रतल और १९२६-२७ में ३८,४३१७९ रतल यह पदार्थ भेजा। ग्रेटब्रिटेनका भाग इसमें कुछ गिर गया अर्थात् वहांसे ७,६१००० रतलकी जगह ३,५५००० रतल यह माल आया। नैदरलैण्डका भाग भी इस पदार्थके सम्बन्धमें दूना होगया और जर्मनीने भी १९२५-२६ के १,५७००० रतलसे बढ़कर सन् २६-२७ में २,३२००० रतल माल भेजा। इसके आयातमें इटलीका ६७ सैकड़ा और ग्रेटब्रिटेनका ११ प्रति सैकड़ा भाग रहा। इटलीने इस कारबारके मूल्यमें ९० प्रति सैकड़ाकी वृद्धि की, अर्थात् उसने ३४ लाखकी जगह ६४ लाखका माल भारतके लिये निर्यात किया। इधर ग्रेट ब्रिटेनको इस कारबारमें ४१ सैकड़ा कमी हुई, उसने २४ लाखकी जगह केवल १४ लाखका माल भारतके लिये निर्यात किया।

नकली रेशमका कपड़ा

सूती और नकली रेशमके बने हुए कपड़ेके आयातमें भी खूब वृद्धि हुई। १५० लाख गजसे बढ़कर ४२० लाख गज कपड़ेका आयात हुआ। इस व्यवसायमें ग्रेट ब्रिटेनका नम्बर सबसे पहला रहा। उसने ६५ लाख गजसे बढ़कर १६० लाख गज कपड़ा भेजा। इटलीका नम्बर इस कारबारमें दूसरा रहा। उसने १४० लाख गज कपड़ा भेजा। स्विट्जरलैंडने २३ लाख गजसे बढ़कर ६७ लाख गज और जरमनी तथा बेलजियमने क्रमशः २४८७००० गज और ६,८०००० गज कपड़ा भेजा। सूती और नकली रेशमके बने हुए कुल कपड़ेका आयात ३०६ लाख रुपयेका हुआ। जिसमें ग्रेट ब्रिटेनने १,१७ लाख, इटलीने ८१ लाख और स्विट्जर लैंडने अनुमानतः ५६ लाख रुपया पाया।

चीनीका व्यवसाय

कपड़ेके आयातके पश्चात् भारतमें आयात होनेवाले पदार्थोंमें चीनीका दूसरा नम्बर है। सन् १९२६-२७ में इसका आयात ८,२६६०० टनका हुआ। सन् १९२५-२६ के आयातकी अपेक्षा यह संख्या १३ प्रति शत अधिक है इसके मूल्य स्वरूप भारतको १६,१६ लाख रुपया चुकाना पड़ा। इस व्यवसायमें जावाका भाग सबसे अधिक है इसने १४ करोड़ रुपयेके मूल्यकी ६ लाख टन चीनी इस देशमें भेजी। इसके अतिरिक्त जर्मनीने ४९००० टन, हंगरीने २६००० टन और जेकोस्लोवेकियाने २९००० टन चीनीका भारतको निर्यात किया। जिस भांति कपड़ेके आयातमें बंगाल प्रमुख है उसी प्रकार चीनीके आयातमें भी उसका नम्बर पहला है। उपरोक्त संख्यामेंसे बंगालमें तीन लाख टन, करांचीमें १,३६,२०० टन, बम्बईमें ८९६०० टन, मद्रासमें ४१,१०० टन, और बरमामें ३७,३०० टन चीनीका आयात हुआ। आयातके सब पदार्थोंकी लिस्टमें चीनीका नम्बर सन् १९२६-२७ में दूसरा था मगर वही गत वर्ष तीसरा हो गया। कुछ भी हो, खाद्य पदार्थोंमें तो यही एक ऐसा पदार्थ है जो इतने परिमाणमें आयात होता है।

विदेशी चीनीकी इस प्रतिद्वन्दता और उसके इस भारी आयातकी वजहसे देशी चीनीके व्यवसायको बहुत अधिक धक्का पहुंचता है। विदेशी चीनी किस प्रकारकी अशुद्ध प्रणालियोंसे तैयार होती है, तथा स्वाद और गुणकी दृष्टिसे वह कैसी है इन बातोंपर यहांकी जनता विचार नहीं करती वह केवल उसकी चमक दमक और सस्तेपनको देखकर चाव पूर्वक खरीदती है और इसी भ्रममें वह करोड़ों रुपया विदेशोंको फेंक देती है।

भारतमें चीनीके उद्योगके लिये क्षेत्रकी कमी नहीं है। सन् १९२६-२७ में इस देशमें २६ लाख एकड़ भूमिमें गन्नेकी खेती हुई और उसकी फसलसे ३२ लाख टन कच्ची चीनी (गुड़) तैयार हुई। भारत इस कच्ची चीनीके बनानेमें दुनियामें प्रधान है। गन्नेकी खेती भी यहांसबसे अधिक जमीनमें होती है मगर उसकी उपज दूसरे देशोंकी औसत उपजसे कम होती है। यहांकी उपज कूबासे एक तिहाई जापानके मुकाबिलेमें एक चतुर्थांश और हवाईके मुकाविलेमें एक सप्तमांश होती है। एक दिन था जब भारतका चीनीका उद्योग भी अन्य उद्योगोंकी तरह उन्नतावस्थामें था। लेकिन आज जावा और मारिशसकी प्रतियोगिताके कारण वह पिछड़ गया है। अधिक दूर जानेकी आवश्यकता नहीं सन् १८९० में यहांके आयातमें किसी भी विदेशी चीनीका पता न था। वहीं सन् १९२६-२७ में १९ करोड़की चीनी आई है।

आयातकी तरह यहांसे चीनीका थोड़ा बहुत निर्यात भी होता है। सन १९२५-२६ में यहांसे १६४०० टन चीनी बाहर भेजी गई थी। पर यही सन २६-२७ में केवल १२००० टन भेजी गई। इसमें भारतीय चीनी ६२७ टन थी जिसमें ४२८ टन गुड़ था। यहांसे चीनी खरीदनेवाले देशोंमें अरब, पारस, पूर्वी अफ्रिका आदि देश हैं।

दुनियामें चीनीकी उपज आवश्यकतासे अधिक होती हैं। यूरोपमें सन् १९२७-२८ में अनुमान किया जाता है कि पूर्व वर्षकी अपेक्षा इसकी कृषिमें १४ सैंकड़ा वृद्धि होगी। इसी प्रकार जावामें भी चीनीकी पैदावार पहलेकी अपेक्षा ३ लाख टन अधिक बढ़नेकी आशा है। भारतमें चीनीके आयातके अङ्कोंको देखकर यह बड़ा आश्चर्य होता है कि दुनियाके किसी भी देशसे यहां इसकी कृषि कम न होनेपर भी, यहांपर इसके आयातकी आवश्यकता होती है। यदि गन्नेकी कृषिमें सुधार हो जाय और चीनीके कारखाने आधुनिक उन्नत ढंगपर खोले जांय, तो चीनीकी पैदावार का इतना बढ़ जाना असम्भव नहीं है जिससे यहांकी आवश्यकताकी यहीं पूर्ति हो जाय। चीनीके इतने बड़े आयातका कारण यहांपर गन्नेकी खेतीका वैज्ञानिक ढङ्गसे न होना है। नहीं तो २६ लाख एकडमें कृषि होनेपर भी इस देशको ८ लाख टन चीनी बाहरसे मंगाना पड़े यह सम्भव नहीं हो सकता। यदि इसी जमीनमें वैज्ञानिक ढङ्गसे खेती की जाय तो इस पैदावारका ड्योढ़ी दूनी हो जाना कठिन नहीं है। कोइमटूरकी सरकारी प्रयोगशालाके द्वारा खेतीके लिये अच्छी जातिका गन्ना

तैयार किया गया है। इन गन्नोंको बानेसे कृषक अपनी पैदावारकी औसतको बहुत बढ़ा सकता है। उत्तर विहार और संयुक्त प्रान्तके पूर्वी भागमें जहां चीनीके कारखाने अधिक हैं इन गन्नोंका प्रचार करनेसे अधिक गन्नेकी प्राप्ति होने लगी है। इसकी वजहसे इन दोनों प्रान्तोंके कारखानोंने गत वर्ष जहां ३७५००० मन चीनी बनाई थी वहां इस वर्ष १२५०००० मन चीनी तैयार की है। ब्रिटिश भारतमें सरकारी कृषि विभाग द्वारा दिये हुए गन्नेकी पैदावार १७२००० एकड़में हुई अनुमान की जाती है।

कुछ भी हो, अभी तक तो भारतमें गन्नेकी पैदावार इतनी कम होती है कि चीनीपर भारी आयात कर (४।। रुपया प्रति हण्डरवेट और २५ सैकड़ा भिन्न २ जातियोंपर) होनेपर भी इसका इतना भारी आयात होता है। यह भारी आयात तभी बन्द हो सकता है जब यहांकी गन्नेकी पैदावारमें वृद्धि की जाय और चीनी बनानेके अच्छे कारखाने खोले जांय।

लोहा और फौलाद

इसका आयात सन १९२६-२७ में १६७५००००० रुपयेका हुआ। पर यदि धातु और उसके बने हुए पदार्थोंका एक ही विभाग मानकर उसमें १४ करोडके मिलके कल पुर्जे, ३ करोडकी रेलवेकी सामग्री ५ करोडकी विविध धातुओंकी बनी चीजें, ४ करोडके यन्त्रादिक, ६ करोडकी मोटरें, साई-किल आदि सवारियां और सात करोडकी अन्य धातु भी इसमें सम्मिलित कर दी जाय तो यह सम्पूर्ण आयात ५६ करोड़का हो जाता है।

जिस प्रकार भारतवर्षमें कपड़ेका शिल्प प्राचीन कालमें बहुत उन्नतिपर था इसी प्रकार लोहेके शिल्पका पता भी यहां कई शताब्दियोंसे लगता है। इसका वर्णन पहले भली प्रकार किया जा चुका है और जिस प्रकार यन्त्रकलाके आविष्कारने पाश्चात्य देशोंमें कपड़ेके उद्योगमें एक नया युग पैदा कर दिया, उसी प्रकार इस धातुके पदार्थों और यन्त्रों आदिके आविष्कारमें भी उन्होंने बाजी मार ली और आज इन सब पदार्थोंके लिये भारतको प्रतिवर्ष करोड़ों रुपया उन्हें देना पड़ता है। भारतवर्षमें भी यंत्रोंका उपयोग होता है पर ये सब यंत्र और कल पुर्जे यहां बाहरसे आते हैं। इन यंत्रोंको बनानेके कारखाने इंग्लैडमें बर्मिंग्हाम और शेफिल्डमें, स्कॉटलैण्डमें ग्लासगोके अन्दर, बेल्जियममें लीएम और घेंटमें एवं हालैण्ड, अमेरिका आदि देशोंमें बहुत हैं। वहांकी लोहा आदि धातुओंको गलानेकी ऊंची २ विशाल भट्ठियोंको देखकर बड़ा आश्चर्य होता है। ऐसे बड़े २ यंत्र हथोड़ेसे ठोक पीटकर नहीं बनाये जाते यह उन बड़े २ कारखानोंकी ही शक्ति है जो ऐसे आश्चर्य्यजनक कलपुर्जे बनाते हैं। न जाने भारतमें बड़े २ यंत्र और कल पुर्जे बनानेके कारखाने कब खुलेंगे, अभी तो साधारण सुई और पेंचसे लेकर सब तरहके यंत्र विदेशोंसे आते हैं।

यह बात नहीं है कि भारतमें लोहा न होता हो—या यहां लोहेकी खानें न हों। भारतके कई स्थानोंमें लोहेकी बड़ी २ खानें हैं। मध्यप्रान्त, सिंहभूम, उड़ीसा, मैसूर आदिके समान लोहेकी विशाल खदानें यहांपर मौजूद हैं। खुशीकी बात है कि अब यहांके लोगोंका ध्यान भी इस उद्योगके चलानेकी ओर गया है और देशमें दूसरे कारखानोंकी तरह लोहेके कारखाने भी खुले हैं तथा खुल रहे हैं।

लोहे और फौलादके उद्योगमें नवीन योरोपीय प्रणाली को भारतमें प्रचलित करनेका प्रथम श्रेय मि० जे० एम० हीथको है, जिन्होंने दक्षिण आरकट प्रान्तमें सबसे पूर्व इस कार्य्यका श्रीगणेश किया। पर यह प्रयत्न, तथा इसके बादमें किये गये और भी कुछ प्रयत्न असफल रहे। इसके पश्चात् सन् १८७५ में बंगाल आयर्न एण्ड स्टील कम्पनीने उस समयके अनुसार सबसे अधिक सुधरी हुई प्रणालीके आधारपर कार्य्य प्रारम्भ किया और १०, १५ वर्ष तक कुछ मुनाफा न रहनेपर भी कामको प्रारम्भ रक्खा। अभी हालहीमें यह कारखाना बढ़ा दिया गया है और इसमें कई प्रकारके सुधार भी कर दिये गये हैं। इससे न केवल ढलाई और गलाईके कार्य्यमें ही उन्नति हुई है प्रत्युत पदार्थ की जातिमें भी बहुत कुछ उन्नति और सुधार हुआ है। इस कम्पनीका कारखाना आसन सोलसे थोड़ी दूर ईस्ट इण्डियन रेलवेके स्टेशन बाराकरमें बना हुआ है।

भद्रावती आयन वर्क्स— यह कारखाना मैसूर रियासतमें बना हुआ है। इसका उद्देश्य मैसूर राज्यमें मिलनेवाले लोहेको उपयोगमें लेनेका हैं। यह सन् १९२२ से चलने लगा है। इस कारखानेमें एक भट्टी ऐसी निर्माण की गई हैं जिसमें ६० टन लोहा प्रतिदिन तैयार हो सकता है। आवश्यकता पड़नेपर थोड़े फेरफारसे यह भट्टी १०० टन लोहा प्रतिदिन तैयार करनेके लायक बनाई जा सकती है। इस कारखानेकी एक विशेषता यह है कि यह लकड़ीसे चलाया जाता है। इस ढङ्गका यह कारखाना सबसे पहला है। लकड़ीसे पहले कोयला बनाया जाता है और फिर लोहा साफ करनेका मसाला, और कच्चा लोहा भट्टीपर लाये जाते हैं। यह बात मानी गई है कि इस ढङ्गसे काम करनेवाला दुनिया भरमें यह सबसे पहला कारखाना है।

टाटा आयर्न एण्ड स्टील वर्क्स—यद्यपि वर्तमान उद्योगके पूर्व कालमें प्रवेश करनेका श्रेय बंगाल आयर्न कम्पनीको है तथापि कहना पड़ेगा कि इस देशके लोहे और फौलादके उद्योगमें विशेष उन्नति करनेका श्रेय ताता आँयर्न एण्ड स्टील कम्पनीको है जिसने लोहे और फौलादकी सबसे अधिक उन्नत मशीनरी बनाई। इस कम्पनीका मुख्य उद्देश्य जितना सम्भव हो सके उतना बढ़िया जातिका लोहा और फौलाद तैय्यार करनेका है। इसकी स्थापना सन् १९०७ में हुई. और सन १९०८ में साक्चीमें---जिसका नाम पीछे जाकर जमशेदपुर पड गया---इस कारखानेका बनना

शुरू हो गया। सन १९११ के दिसम्बर मासमें सबसे पहले लोहा तैयार हुआ और सन् १९१३ में फौलादके कामका श्रीगणेश हुआ। पहले पहल पैदावार बहुत कम होती थी लेकिन अगले दस वर्षोंमें अच्छी उन्नति हुई और सन १९२१-२२ में इस कम्पनीने २७०००० टन लोहा और १८२००० टन फौलाद तैयार किया। भारतके लोहे और फौलादके उद्योगके इतिहासमें इस कम्पनीका नाम स्वर्णाक्षरोंमें लिखने काबिल है। जमशेदपुरका उदय एक आश्चर्यजनक बात है। जहां २० वर्षों पहले कुछ भी नहीं था वहां आज हजारोंकी आबादी बस रही है। यह चहल पहल टाटा आँयर्न वर्क्सके कारण है, जहांपर कच्ची धातुसे बाजारमें जाने लायक पदार्थ बनाये जाते हैं। पर विदेशी प्रतिद्वन्दता के कारण यह उद्योग भी निरापद नहीं रहा, और सन १९२४ में इसके संरक्षणके लिये भारत सरकारने स्टील इण्डस्ट्री ऐक्ट नामक कानून बनाया। इसकी अवधि सन १९२७ तक थी और वह अवधि ३१ मार्च सन १९२७ को शेष होती थी पर पहिलेहीसे उस कानूनमें यह बात आ गई थी कि अवधिके पूर्ण होनेपर फिर जांच करके इस बातका निर्णय किया जायगा कि इस कानूनकी अवधि और भी आगे बढ़ानेकी आवश्यकता है! या नहीं इसके अनुसार फिर जांच हुई, और इस रिपोर्टके साथ २ यह संरक्षण विधान कमसे कम सात वर्ष और चालू रखनेके लिए सरकारसे सिफारिश की गई। इस सिफारिशमें कहागया कि सरकारी सहायताका नियम तोड़ दिया जाय और कस्टम ड्यूटीके द्वारा इसका रक्षण किया जाय। बोर्डने अपनी रिपोर्ट सहित लगाई जानेवाली कस्टम ड्यूटीका वर्णन पेश कर दिया और यह भी अनुमोदन किया कि यह ड्यूटी सन् १९३३-३४के पहले जबतक फिरसे जांच न होजाय, न घटाई जाय। यह बिल पास हुआ और सन् १९२७की पहली अप्रैलसे जारी हुआ।

यद्यपि यहांपर लोहेके कारखानोंके खुलनेके पश्चात् विलायती लोहेका आयात कुछ कम होगया है—सन् १९२६-२७में उसके आयातका परिमाण पांच प्रति सैकड़ा कम होगया, अर्थात् ८७१००० टनसे घटकर ८३८००० टन रहगया इसीप्रकार उसका मूल्य भी १८०,३ लाखकी जगह १६,७५ लाख रहगया, उसमें भी ७ प्रति सैकड़ा संख्या कम होगई—फिर भी यहांपर अभी इसका बहुत अधिक आयात होता है। इसका अनुमान नीचेके विवरणसे भली प्रकार होजायगा।

सन् १९२६-२७के आयातमें ४३ सैकड़ा भाग गैलवेनाइज्ड चद्दरोंका रहा। ये कुल मिलाकर ७,१७ लाख रुपयेकी आई जिनमें ६,४१ लाख रुपयेकी अकेले ग्रेट ब्रिटेनने भेजी। शेष अमेरिका बेलजियम, जर्मनी इत्यादि देशोंने भेजी। टीनकी चद्दरें गत वर्ष १०५ लाख रुपयेकी आई थीं मगर इस वर्ष केवल ७७ लाख रुपयेकी आई। इस कमीका मुख्य कारण भारतमें इनकी पैदावारका बढ़ जाना है। जहां सन् १९२२ में ८००० टन चद्दरें बनी थीं वहां सन् १९२५ में ३०००० टन और १९२६में ३५००० टन बनीं। उपरोक्त चद्दरोंके आयातमें ४०००००० लाखका आयात ग्रेट-

ब्रिटेनसे और करीब ३७००००० लाखका अमेरिकासे हुआ। अन्य सब तरहकी चद्दरें ८४॥ लाख की आयात हुईं। जिसमें बेलजियमने अड़तीस लाख, ग्रेटब्रिटेनने अट्ठाईस लाख और जर्मनीने ग्यारह लाखकी भेजी। बिना ढले हुए फौलादके पाट १४८½ लाख रुपयेके आये। जिसमें बेलजियम ने ८४लाख रुपयेके और ग्रेटब्रिटेनने १३ लाख रुपयेके भेजे। शेष आयात दूसरे स्थानोंसे हुआ।

लोहेके खम्भे, गार्डर और पुल सम्बन्धी सामानके आयातमें भी कुछ कमी हुई। यह सब सामान गत वर्ष १२२ लाख रुपये के आये थे मगर इस साल इनका आयात ८९लाख रुपयेका हुआ। इन पदार्थोंको भी बेलजियम और इंगलैंडने क्रमसे ४० और ३२ लाख रुपयेकी तादाद में भेजा।

घड़े हुए नल,पाईप आदि सामानके आयातकी तादाद पहलेसे बढ़गई। जहां सन् १९२५–२६में ये पदार्थ ८४ लाखके आये थे वहां इस वर्ष इनका आयात ९१लाख रुपयेका हुआ। इस आयातमें इंगलैण्डका ४० लाखका और जर्मनीका २५। लाखका भाग रहा।

चटखनी, कड़ी, कुन्दे आदि इमारती सामानका आयात करीब ८५½ लाख रुपएका हुआ। इसमें बेलजियमका भाग बहुत बढ़गया तथा ब्रिटेनके आयातकी संख्या बहुत घटगई। इसी प्रकार खूंटियां इत्यादि वस्तुओंका आयात छियालीस लाखसे बढ़कर बावन लाख रुपयेका हुआ। इस कार्य्यमें ग्रेटब्रिटेन और बेलजियम दोनोंने उन्नतिकी। लोहेके तार और जञ्जीरें इत्यादि कुल २५। लाख रुपयेकी आईं इनमें १९॥ लाखकी अकेले ग्रेटब्रिटेनसे आयात हुईं।

लोहा—खालिस लोहा आजकल बहुत कम आता है। सवा तीन लाख रुपयेके २८९५ टनसे घटकर इसका आयात दो लाख साठ हजार रुपयेके १६, २७ टनका हुआ। खालिस लोहेकी पैदावारमें भारतने अच्छी तरक्की की है। सन् १९२५-२६में यहांपर ८,७५००० टन लोहा हुआ था मगर वही सन् १९२६-२७में ९,५७००० टन हुआ।

लोहे और फौलादके आयातमें जिसमें इनसे बने हुए सब प्रकारके पदार्थ और खालिस लोहे तथा फौलादका आयात गर्भित है मुख्य २ देशोंका आयात भाग इस प्रकार है।

ग्रेटब्रिटेन	४०,६००० टन,	४८·१ प्रति सैकड़ा
जर्मनी	७८००० टन,	९·३ ,,
बेलजियम	२,५७००० टन,	३०·४ ,,
फ्रांस	३३००० टन	३·९ ,,
अमेरिका	२९००० टन	३·४ ,,
अन्यदेश	४१००० टन	४·९ ,,
	८,४५०००	

अभीतक तो जितना लोहा और फौलाद भारतमें उत्पन्न होता है उससे कुछ ही कम परिमाणमें विदेशोंसे आता है। अर्थात् भारतमें जहां ८,९५००० टन यह पदार्थ उत्पन्न हुआ, वहां ८४५००० टन बाहरसे भी आया। लेकिन अब स्टीलके उद्योगके संरक्षणके लिए सन् १९२७का स्टील इण्डस्ट्री प्रोटेक्शन एक्ट सन् १९२७की पहली अप्रैलसे प्रारम्भ हुआ है देखना चाहिए उसका इस देशके उद्योगपर क्या प्रभाव पड़ता है ?

अन्य धातुएं

लोहा, फौलाद और उसके पदार्थोंको छोड़कर अन्य धातुओंका आयात ७०६ लाख रुपयेका हुआ। एल्यूमिनियम ९५ लाख रुपयेका आया। इसमेंसे अमेरिकासे ३६००० हण्डरवेट ३५ लाख रूपयेका आया। इङ्गलैंड और जर्मनीमें इसकी मांग बहुत कम होनेसे इसका मूल्य बहुत सस्ता होगया।

पीतलका आयात ५,२४००० हण्डरवेटसे बढ़कर ५,२१००० हण्डरवेटका हुआ पर मूल्य २६२ लाख रुपयेसे घटकर २५६ लाख रुपया रहगया। जर्मनीने ११४ लाख रुपयेका पीतलका सामान भेजा और ग्रेटब्रिटेनने ६०½ लाखका। चद्दर, नल और तार इत्यादिका आयात ४२ लाख रुपयेका हुआ। बिना घड़े हुए पीतलका आयात भी ९ लाखसे घटकर छः लाख रुपयेका रह गया।

ताम्बेका आयात १८३ लाख रुपयेसे घटकर १५३ लाख रुपयेका हुआ। ग्रेटब्रिटेनसे घड़े हुए और बिना घड़े हुए ताम्बेका आयात बहुत कम हुआ इसीसे आयातकी संख्या घट गई। जर्मनीसे घड़े हुए पदार्थ १,५०००० हण्डरवेटसे बढ़कर १,६५००० हण्डरवेट आये पर मूल्यके सस्ते होजानेकी वजहसे मूल्य ८४¾ लाखसे घटकर ७७½ लाख रहगया।

शीशा—१२७५००० रुपयेका आया। घड़े हुए पत्तर और नल पांचलाख रुपयेके आये। गत वर्ष भी ये इतने ही आये थे। चायकी पेटियोंमें दिये जाने वाले पत्तरोंका आयात ७½ लाखकी जगह पांच लाख रुपयेका हुआ।

टिन—यह धातु ९८ लाख रुपयेकी ५२००० हण्डरवेट आई। इसका मुख्य आयात स्टेट सेटलमेण्ट्ससे हुआ जहांसे ९३¼ लाख रुपयेका टिन आया।

रांगा—यह धातु ४६¼ लाख रुपयेकी आई जिसमें घड़े हुए पदार्थ ३७¼ लाख रुपयेके ७००० टन और बिना घड़े हुए १८०० टन आये

जर्मन सिलवर और निकलको मिलाकर इनका आयात १४½ लाख रुपयेका हुआ। इसमें मुख्य भाग जर्मनीका है। जहांसे आठ लाख रुपयेका आया। शेषमें ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया और इटाली इन तीनों देशोंसे दो २ लाख रुपयेका आया।

पारा—६½ लाख रुपयेका २२५ हजार रतल आयात हुआ। इसमेंसे ५⅔ लाख रुपयेका २०५००० रतल इटलीसे और २१००० रुपयेका ८००० रतल ग्रेट ब्रिटेनसे आयात हुआ।

मिलके पदार्थ और मशीनरी

भारतमें आनेवाली मशीनरीके आयातका मुख्य २ विवरण इस भाँति हैः—

बिजली सम्बन्धी मशीन	२२९ लाख रुपया
एंजिन	१९८ " "
रुईकी मशीनरी	१७१ " "
खान सम्बन्धी	९८ " "
सीने और बुननेकी	८८ " "
मशीनरीके लिए पट्टे	८१ " "
पाटकी मशीनरी	३५ " "
बायलर	६३ " "
धातु सम्बन्ध मशीनरी (मुख्यतया औजार)	३७ " "
तेल निकालने और साफ़ करनेकी	३३ लाख "
चावल और आटेकी	२८ " "
चायकी	२६ " "
टाईप राईटर और उसके पदार्थ	२४ " "
छापेके प्रेस	१५ " "
बर्फ जमानेकी	१२ " "
लकड़ी चीरनेकी	९ " "
कागजकी मिल	७ " "
चीनीकी	६ " "
ऊनकी	४ " "

मशीनरीका आयात तत्सम्बन्धी अन्य उद्योगोंकी दशाका सूचक है। सन १९२६-२७ में तैल निकालने और साफ़ करनेकी, चावल और आटेकी, कागजकी और बिजलीकी मशीनरीके आयातमें वृद्धि हुई है। तथा रुई और पाटकी मिल मशीनरी, एंजिन, बायलर,खान सम्बन्धी मशीनरी और चीनीकी मशीनरीके आयातमें कमी हुई है। रुई, पाट, ऊन आदि सब प्रकारकी मशीनरी २५१⅓ लाख रू० की आई जिसमें ग्रेट ब्रिटेनने २४० लाख रू० की भेजी। बिजलीकी मशीनें

२२९½ लाखकी आई जिसमें ग्रेट ब्रिटेनने १४६ लाखकी अमेरिकाने २३ लाखकी और जर्मनीने ११ लाखकी भेजी। एञ्जिन १६८ लाख रुपयेके आये जिनमें तैलसे चलनेवाले और उनके पदार्थ ११५ लाखके और भाफसे चलनेवाले ७८ लाखके आए। वायलर ६३ लाखके आये, ये सब करीब २ ग्रेट ब्रिटेनसे आयात हुए। सीनेकी मशीनें सन १९२५-२६ में ७०८०० आई थीं वह १९२६-२७ में ७१,५०० आई, इनमें ७१ प्रति सैंकड़ा भाग अमेरिकाका और २६ सैंकड़ा भाग जर्मनीका रहा। टाइप राईटरकी मशीनें भी १६ लाख रुपयेकी १०९४७ से बढ़कर २२ लाख रुपयेकी १३७६० आई इनमें भी मुख्य भाग अमेरिकाका रहा।

मिलके पदार्थ, मशीनरीके पट्टे और छापेकी मशीनोंके आयातमें मुख्य २ देशोंके आयातका भाग इस प्रकार रहा—

ग्रेट ब्रिटेन	११,३८ लाख रुपया	७७·९ प्रतिशत
अमेरिका	१,५३ " "	१०·५ "
जर्मनी	१,०३ " "	७·१ "
बेलजियम	२५ " "	१·७ "
अन्य देश	४१ " "	२·८ "

रेलवे सामग्री

रेलवे सामग्रीका आयात ३,२६ लाख रुपयेका हुआ, यदि इस संख्यामें सरकार द्वारा आयात किये हुए मालकी २,८३ लाखकी संख्या भी मिलादीजाय तो कुल आयात ६०८ लाख रुपयेका हो जाता है। इसके आयातमें ग्रेट ब्रिटेनका भाग, जो सन् १९२५-२६ में ७९·२ प्रतिशत था वह घटकर १९२६-२७ में ६१·१ प्रतिशत रह गया। ग्रेट ब्रिटेनके सिवा इस वर्ष बेलजियमसे १७·४ प्रतिशत, जर्मनीसे ६·९ प्रतिशत, आस्ट्रेलियासे ४·८ प्रतिशत और अमेरिकासे ३·६ प्रतिशत मालका आयात हुआ।

मोटर गाडियां

भारतवर्षमें मोटर गाड़ियोंका आयात दिन प्रति दिन बढ़ता ही जा रहा है। इनके दाम यद्यपि पहिलेकी अपेक्षा कम हो गये हैं पर इनका व्यवहार तथा प्रचार पहलेसे बहुत अधिक बढ़ गया है। सरकारने भी १ मार्च सन् १९२७ से इन पर कस्टम ड्यूटी ३० सैकड़ासे घटाकर २० सैंकड़ा और ट्यूब टायरपर १५ सैंकड़ा करदी है। भारतमें अच्छी सड़कोंकी कमी, और पुलोंपर बोझा ले जानेका प्रतिबन्ध, ये दोनों कारण अभी मोटर द्वारा आवागमनके प्रचारमें बाधक हो रहे हैं। तब भी इनका आयात बढ़ रहा है। १९२५-२६ में जहां १२७५७ गाड़ियां आईं थी वहां १९२६-२७ में १३१६७ आईं। उनका मूल्य भी २८२ लाखकी जगह २९४ लाख देना पड़ा। इस आयातमें अमेरिका और

कनाडाका हाथ प्रधान है। अङ्गरेजी गाड़ियां भी अब अधिक व्यवहारमें आने लगीं हैं। इस वर्ष अंग्रेजी मोटरका औसत मूल्य ३१,५६ रुपया, अमेरिकनका २२०८ रुपया और कैनाडाकी मोटरका औसत १५६८ रुपया रहा। गत वर्ष यही संख्याएं क्रमसे ३८३६, २२८५, और १५१८ रही थीं। ग्रेट ब्रिटेनमें जहां सन १६२५ में १,३३,५०० मोटरें बनी थीं वहां उसने सन १६२६ में १,५८,६६६ मोटरें बनाईं। ग्रेट ब्रिटेनसे ८०॥ लाख रुपयेकी २५४६ मोटरें, कैनाडासे ७० लाखकी ४४७६ मोटरें और अमेरिकासे ८६ लाखकी ४०३६ मोटरें आईं। इटली और फ्रांससे क्रमशः १४१६, और ६०७ मोटरें आयात हुईं। इनके समूचे आयातमें कैनेडाने ३५ प्रति सैकड़ा, अमेरिकाने ३० प्रति सैकड़ा, ग्रेट ब्रिटेनने १६ प्रति सैकड़ा और इटालीने ११ प्रति सैकड़ा मोटरें भेजीं। इन मोटरोंमें बंगालमें ३२ सैकडा, बम्बईमें २७ सैकडा, सिंध और मद्रासमें १४ सैकडा और बर्मामें १३ सैकडा मोटरें आईं।

मोटर साईकिल्स

इनका आयात भी ११ प्रति सैकड़ा बढा सन १६२५-२६ में जहां ये १६२६ आई थीं वहां २६-२७ में १८०३ आईं। जिनका मूल्य ६,८३००० की जगह १०,४७००० चुकाना पड़ा। ग्रेट ब्रिटेनमें इनके बनानेवाले दाम घटानेके प्रबल प्रयत्नमें लगे हुए हैं। इसीलिये ग्रेट ब्रिटेनसे इनका आयात बढ़ रहा है। वहांसे इस साल १६६५ मोटर साइकलें आईं। अर्थात इस काममें ग्रेटब्रिटेनका भाग ६२ प्रति सैकड़ा रहा।

मोटर लॉरीज

स्टेशनोंके आस पासके गांवोंमें जहां रेल नहीं है वहां पर यात्राके समय आने जानेके लिये मोटर-बसोंका उपयोग दिन प्रति दिन बढ़ रहा है। इसके फल स्वरूप मोटरबस, वानें और मोटर लॉरियों-का आयात बढ़ा है। सन १६२४-२५ में जहां ये ३६ लाखकी २१६२ आईं थी वहां सन १९२५-२६ में ८८ लाखकी ४८४० और सन २६-२७ में १२० लाखकी ६३४३ आईं। इनमेंसे खाली एञ्जिन १३ लाख रुपयेके ५३४५ आये। इससे यह प्रकट है कि भारतमें इनपर बॉड़ियाँ बनानेका काम बढ़ रहा है। इनमेंसे कई एञ्जिन तो सवारीकी बसोंके लिये आये जिनपर यहीं बॉड़ियां बैठाई गईं। इन एञ्जिनोंके आयातमें कैनाडा और अमेरिकाका भाग मुख्य है ग्रेट ब्रिटेनके एञ्जिन महंगे पड़नेकी वजहसे कम आते हैं। इन तीनों देशोंके एञ्जिनोंका औसत मूल्य ध्यान देने योग्य है। सन १६२६-२७में एक अङ्गरेजी एञ्जिनका औसत मूल्य ४१६८ रुपये रहा जब कि अमेरिकन एञ्जिनका २०५० रु० और कैनाडाके एञ्जिनका औसत मूल्य १३५५ रुपया प्रति एंजिन रहा। सन १६२६ में कैनेडाने मोटरबसें, वानें और लॉरियां ४८ लाखके मूल्यकी २३२२ भेजीं, अमेरिकाने ४६ लाख रुपयेकी २३२२ भेजीं जब कि ग्रेट ब्रिटेनने १६ लाख रुपये मूल्यकी केवल ३४१ भेजीं।

रबरके पदार्थ

गत वर्ष कच्चे रबरके दाम बहुत गिर गए इसलिए इसके आयातके मूल्यमें भी बहुत कमी हो गई। लेकिन यह बात प्रकट है कि भारतमें मोटर गाड़ियोंके अधिक व्यवहारके कारण इनके सब तरहके ट्यूब,टायरोंके आयातकी संख्यामें वृद्धि ही रही। मूल्य सस्ता हो जानेके कारण चाहे दामोंमें घटी रही हो। मोटर टायर ११८ लाख रुपयेके ३, १०,५५१ आये। इनमें ४२ लाख रु० के ग्रेट-ब्रिटेनसे, २३ लाखके अमेरिकासे, २६ लाखके फ्रान्ससे और १७ लाख कैनेडासे आयात हुए। मोटर साइकलके टायरोंमें ६४ प्रति सैकड़ा अर्थात् १० लाख रुपयेके ग्रेट ब्रिटेनसे आए। साइकलके टायरोंमें ग्रेट ब्रिटेनका भाग ४२ सैकड़ा और फ्रांसका ४६ सैकड़ा रहा। मोटर ट्यूब ग्रेट ब्रिटेनसे ११ लाखके फ्रान्ससे ६ लाखके और अमेरिकासे ३ लाखके आए। रबरके ठोस टायर ग्रेट ब्रिटेनसे ५॥ लाखके आयात हुए।

विविध धातुकी बनी हुई चीजें

इनका आयात ५०७ लाख रुपयेका हुआ, इनमें मुख्यतया नीचे लिखे अनुसार पदार्थ सन् १९२६-२७ में आये।

कृषि सम्बधी पदार्थ	१७ लाख रुपया	कलईदार लोहेके बर्तन	४० लाख रुपया
मकान सम्बन्धी पदार्थ	३४ लाख रुपया	घरेलू पदार्थ	१० लाख ,,
अन्य सामान तथा औजार	७१ लाख रुपया	चूल्हे सम्बन्धी पदार्थ	९ लाख ,,
धातुके लैम्प	८० लाख रुपया	गैसके मैन्थल	६ लाख ,,

धातुके लैम्प मुख्यतया जर्मनीसे आये जिसने ६२ सैकड़ा अर्थात् ३९५६००० लैम्प भेजे, अमेरिकाका भाग इस व्यापारमें २७ सैकड़ा रहा जहांसे १७,४१००० लैम्प आये। कृषि सम्बन्धी पदार्थोंमें मुख्य भाग ग्रेटब्रिटेनका रहा जिसने १४ लाख रुपयेका सामान भेजा। अन्य सामान और औजार ७१ लाखके आये जिनमें ग्रेट ब्रिटेनसे ४३३ लाख रुपयेके आये। कलईदार लोहेके बर्तनोंमें १६ लाखके जापानसे और १० लाखके जर्मनीसे आये।

इन कुल पदार्थोंमें ग्रेट ब्रिटेनका भाग ३६ जर्मनीका ३१ अमेरिकाका १४ और जापान तथा अन्य देशोंका १३ प्रति सैकड़ा रहा।

खनिज तैल

इसमें कैरोसिन, पैटरोल, और लुब्रीकेटिंग तैल मुख्य है। इसके अतिरिक्त व्हाइट ऑइल भी आता है जिसकी अन्य सब तैलोंमें गणना होती है। इस तैलमें किसी प्रकार रंग या गंध नहीं होती। यह तैल मुख्यतया जर्मनीसे आता है। सन् १९२६-२७ के समूचे आयातमें ३५

सैकड़ा कैरोसिन, ४६ सैकड़ा पैट्रोल, और १३ सैकड़ा भाग लुब्रीकेटिंग ऑइलका रहा। इस वर्ष कैरोसिन आॅइल कुल मिलाकर ४२६¾ लाख रुपयेका ६४० लाख गैलन आया।

इंधनके काममें आनेवाला तैल—रेल, जहाज और कल कारखानोंमें इसका व्यवहार बढ़ जानेसे इसका आयात १,६६ लाख रुपयेका ६०५ लाख गैलन हुआ। पारससे यह सबसे अधिक अर्थात् ६६० लाख गैलन आया। बोरनियों और स्टेटसेटलमेंटसे मिलाकर २४० लाख गैलन आया।

कल पुर्जोंमें लगानेका तैल—जूट मिलोंके लिए बंगालमें यह तैल १४० लाख गैलन ५२ लाख रुपयेका आया। इसमेंसे बोरनियोसे ८० लाख गैलन और अमेरिकासे ६0 लाख गैलन आया।

मोटर स्प्रिट—विदेशी मोटर स्प्रिटका आयात बहुत कम अर्थात् कुल ३८०० गैलनका हुआ। भारतमें पैंटरोलकी मांग वरमा और भारतके अन्य स्थानोंसे पूरी हो जाती है। पैंटरोल और अन्य मोटर स्प्रिटका आयात बरमासे ३६० लाख गैलनका हुआ।

बने हुए खाद्य पदार्थ

इनका आयात ५५० लाख रुपयेका हुआ। भारतमें यद्यपि शुद्ध और पवित्र खाद्य पदार्थोंकी कमी नहीं है पर नवीन सभ्यताके इस जमानेमें डब्बे और बोतलोंमें बन्द किये हुए बिसकुट, कैक, चाकलेट, जमे हुए दूध, यहांतक कि घासफूसके बने हुए बनस्पति घी नामक पदार्थमें करोड़ों रुपये बाहर जाते हैं। रोटी, बाटी, मिठाई आदि बनानेमें इस वेजिटेबिल ऑइलका प्रचार भारतमें बहुत बढ़ रहा है। यह देशका दुर्भाग्य है कि उसके पवित्र और बलदायक पदार्थोंका स्थान ये घास फूसकी चीजें ग्रहण कर रहीं है। इस पदार्थका मुख्य आयात नैदरलैण्डसे होता है। जहांसे १,२७ लाखका यह व्हिजीटेबल प्रोडक्ट आया। इससे भी अधिक आश्चर्यप्रद बात यह है कि डिब्बोंमें बन्द होकर विलायती जौ (Harly) का आटा भी यहां लाखों रुपयेका आता है। साबूदाना और उसका आटा ५१ लाख रुपयेका और जमा हुआ दूध ७५¾ लाख रुपयेका आया। ४९ लाख रुपयेकी बिस्कुट और डबल रोटियाँ आई। मुरब्बा और आचार भी आस्ट्रेलियासे तीन लाख रुपयेके आये।

मादक पदार्थ

ये पदार्थ ३५३ लाख रुपयेके आये। सन् १९२५-२६ में जहां ७५ लाख गैलन इनका आयात हुआ था वहां सन् २६-२७ में ६३ लाख गैलन हुआ। सिन्धको छोड़कर अन्य सब बन्दरोंमें इनके आयातकी वृद्धि रही। बंगालका आयात सबसे अधिक अर्थात् १८,६२००० गैलन और बम्बईका उससे कम अर्थात १६,४१००० गैलन रहा। मगर मूल्यमें बंगालकी एक करोड़

रुपया देना पड़ा और बम्बईको एक करोड़ पांचलाख देना पड़ा । इससे मालूम होता है कि बम्बईमें बढ़िया शराबकी खपत अधिक है। बरमा और मदरासमें क्रमश: ५० लाख और २० लाख का आयात हुआ। इन पदार्थोंमें ग्रेट ब्रिटेनसे मुख्यतया व्हिस्की और फ्रान्ससे ब्रांडी आती है। शैंपेन आदि बढ़िया वाईन भी फ्रांससे आती है । उपरोक्त आयातमें ग्रेट ब्रिटेनका १३६ लाखका और फ्रांसका ५१ लाख रुपयेका भाग रहा।

कागज और पुट्ठा

ये वस्तुऐं ३०८ लाख रुपयेकी आईं, छापने का कागज एक करोड रुपये का तीस हजार टन आया । ५९ लाख रुपयोंका समाचार पत्रोंका कागज आया। इस काम में नारवे और जर्मनीका भाग बढ़ा तथा ग्रेटब्रिटेनका भाग घटा। लिखनेका कागज और लिफाफे ५६ लाख रुपयेके आये जिसमें ३० लाखके अकेले ग्रेटब्रिटेनसे और शेष दूसरे देशोंसे आयत हुए। पेकिंगका कागज ४० लाख रुपयेका आया। स्वीडेन और नैदर लैण्डसे इसका आयत बढ़ा और ग्रेटब्रिटेनसे घटा। पुरानी रद्दीका आयात ३८ लाख रुपयेका हुआ। इसमें मुख्य भाग ग्रेटब्रिटेनका रहा। भाव सस्ता कर देनेके कारण अमेरिकासे भी इस वस्तुका आयात बढ़ा। मोटे कागज़ और पुट्ठेका आयात ३०॥ लाखका हुआ।

सन् १९२६ में भारतमें ९ कागज़ मिलें थी। जिन्होंने ३२१४४ टन कागज़ बनाया।

रसायन पदार्थ

इनका आयात २४४ लाख रुपयेका हुआ। इनमें मुख्य भाग सोड़ाका रहा जो १०५ लाख रुपयेका आया। इसके आयातमें मुख्य भाग ग्रेटब्रिटेनका रहा। सोडियम कारबोनेट ५८ लाख रुपयेका आया जिसमेंसे ५३ लाखका ग्रेटब्रिटेनने भेजा। कास्टिक सोडा और सोडियम कारबोनेट क्रमसे १८ लाख और ९ लाख रुपयेके आये। तिजाब ६॥ लाखका, फिटकिरी ३ लाख रुपयेकी, अमोनिया और नमक ८ लाख रुपयेका, गन्धक १६ लाख रुपयेका, धोनेके मसाले ८ लाख रुपयेके आयात हुए। ग्लैसरिन, पोटासियम क्लोरेट और जिंकब्रोमाइड आदिके आयातमें भी वृद्धि हुई।

जड़ीबूटियां और औषधियें

इनका आयात २०६॥ लाख रुपयेका हुआ। कपूर २८ लाख रुपयेका आया, जिसमें २८ सैंकड़ा भाग जापानका रहा बाकी चीन हांगकांग और जर्मनीसे आया। कुनैनका आयात १२००० रतल, और सिकोनाकी छालका २०५००० रतल हुआ। पेटेण्ट औषधियें २७ लाख रुपयेकी आईं, जिनमें ग्रेटब्रिटेनने १५ लाखकी, अमेरिकाने ३ लाखकी और जर्मनीने ५ लाखकी भेजीं। कोकेन ५५१ औंस, और मारफ़िया १०९० औंस आया। अफ़ीम और मारफ़ियाकी चीजोंका आयात ६०००० का हुआ।

नमक

यद्यपि विदेशी नमकका आयात सन् १९२५-२६ से परिमाणमें घटगया पर भावकी तेजीके कारण इसके मूल्यमें बढती रही। अर्थात् जहां १९२५-२६ में ५,६०००० टनका मूल्य १०४ लाख रुपया देना पड़ा था वहां २६-२७ में ५,४२००० टनका मूल्य १२६ लाख रुपया चुकाना पड़ा। यह पदार्थ मुख्यतया बंगालमें और उससे कम बरमामें आता है जहांके लोग महीन—पिसा हुआ—नमक अधिक पसन्द करते हैं।

औजारयंत्र आदि

इनका आयात ४०१ लाख रुपयेका हुआ। इसमें बिजलीके पदार्थ टेलिग्राफ़ और टेलीफोन की चीजें भी सम्मिलित हैं। बिजलीके चीजोंमें मुख्य हाथ ग्रेटब्रिटेनका है। जहांकी चीजें नेदर-लैण्ड और अमेरिकाके साथ प्रतिद्वन्द्वता होते हुए भी अच्छी बिकतीं हैं। ग्रेटब्रिटेनसे बिजलीकी चीजोंका—जैसे लैम्प बैटरी आदिका—आयात १७० लाखका, अमेरिकासे ३३ लाखका, नेदरलैण्डसे १० लाखका, और जर्मनीसे २२ लाखका हुआ।

वाद्ययंत्र

वाद्ययंत्र, सिनेमाकी फिल्म और फोटोकी चीजोंका आयात इस वर्ष बढ़ा। इस मदमें ग्रेट-ब्रिटेनने २५१ लाख रुपयेका, अमेरिकाने ५६ लाख रुपयेका, नेदरलैण्डने १० लाख रुपयेका, इटलीने ८ लाख रुपयेका, और जापानने ४ लाखका माल भेजा।

मसाले

ये ३१२ लाख रुपयेके आये। इनमें काली मिर्च १६ लाख रुपयेकी आई। सुपारी मुख्यतया स्टेटसेटलमेंटसे आती है जिसका आयात २५० लाख रुपयोंका हुआ। लौंग ३४ लाख रुपयोंका मुख्यतया केपकालोनी, जंजीबार आदिसे आया।

सिगरेट

भारतमें सिगरेटका आयात २ करोड़ ५६ लाख रुपयेका हुआ। इसमें करीब ४१½ लाख रुपयेकी कच्ची तमाखू आई। जिससे यहां सिगरेट बनाई गई। भारतीय तमाखूके संरक्षणके लिये विदेशी तमाखू पर १) रतलसे बढ़ाकर इम्पोर्ट ड्यूटी १॥) रतल मार्च सन् १९२७से करदी गई।

इस काममें प्रधान हाथ ग्रेट ब्रिटेनका है। यहांसे १४३ लाखका आयात होता है। इजिप्टसे आयात कुछ कमी हुई, पर अमेरिकाका आयात बढ़ा, सिगार और चुरटका आयात १९ लाख रुपयेका हुआ।

कांच और कांचकी वस्तुएं

इनका आयात २५३ लाख रुपयोंका हुआ। जापान इस काममें उन्नति करता जा रहा है। उसने जेकोस्लोवेकियाको इस काममें पीछे रखदिया है जहांसे ६३ लाख रुपयेका आयात हुआ। जापानसे ६६½ लाख, जर्मनीसे ५२ लाख, और बेलजियमसे २७ लाखका आयात हुआ। ग्रेटब्रिटेनसे भी २५½ लाख रुपयेका माल आया।

चूड़ियां ९५ लाख रुपयेकी आईं। जिसमें जेकोस्लोवेकियासे ५१ लाख और जापानसे २१ लाखकी आईं। भूठे दाने और मोती ३१ लाखके आये। बोतलें और शीशियां ३८ लाखकी आईं, जिसमें जर्मनीसे १६ लाखकी, जापानसे १२ लाखकी और ग्रेटब्रिटेनसे ६½ लाखकी आई। लैम्पकी चिमनियां और कांचके सामान जो मुख्यतया जर्मनी और अमेरिकासे आते हैं। १४लाख रुपयेके आए। कांचकी टट्टियां ३१½ लाख रुपयेकी २५० लाखवर्गफूट आईं।

रंग

रंग २१३ लाख रुपयोंका आया। इस काममें मुख्य हाथ जर्मनीका है। जहांसे अलीजरीन रंग १८ लाखका और अनीलीन ८४ लाखका आया। ग्रेटब्रिटेनसे यह माल क्रमशः ६ और ७ लाख रुपैयेका आया। शेष मुख्य आयात अमेरिका बेलजियम और स्वीटज़रलैंड से हुआ।

जवाहिरात और मोती

इनका आयात १,०७ लाखका हुआ। जिसमें हीरा ५८ लाख रुपयेका आया। जवाहिरातका आयात बेलजियमसे ३७ लाखका हुआ। ग्रेटब्रिटेनसे १२ लाख तथा नेदरलैंडसे ८लाखका मोतीका आयात ३४½ लाख रुपैयेका हुआ। मोती मुख्यतया बहरीन टापू और मिस्कटसे आते हैं। यहांसे ये ३० लाख रुपयेके आये।

दियासलाई

दियासलाई भारतमें ७'१ लाख रुपयेकी आई। विदेशी माचिसका आयात क्रमशः घट रहा है। इसका कारण भारतमें होनेवाले उद्योगका प्रचार है। मुख्य घटी बम्बई और बंगालके आयातमें हुई है। सन् १९२५के अंतमें भारतमें दियासलाईके ३४ कारखानें थे। जिनमेंसे कई मुख्य कारखाने स्वीडिश और जापानी कम्पनियों द्वारा चलाये जाते हैं। सेफ्टी माचिसका आयात ५५ लाख रुपयेका हुआ जिसमें स्वीडनका ६६ सैकड़ा और जापानका २२ सैकड़ा भाग रहा। जापानी दियासलाईका आयात घटा तथा स्वीडनका बढ़ा है। स्वीडनसे ६१ लाख रुपैयेकी और जापानसे सिर्फ १०½ लाख रुपयेकी सबप्रकारकी माचिस यहां आई। जेकोस्लेवेकिया और नारवेसे भी थोड़ीसी माचिस आई।

कोयला

विदेशी कोयलेका आयात ३१ ला० रुपयेका हुआ। ग्रेटब्रिटेनमें कोयलेकी हड़तालके कारण वहांका आयात कम हुआ। सन् १९२५, २६में ३९२००० टन कोयला आया था। इस साल १४२००० टन आया। अर्थात् ६७ सैकड़ा कमी हुई और मूल्य ८८ लाखसे घटकर ३१ लाख रह गया। दक्षिणी अफ्रीकाका कोयला जो गत वर्षोंमें बम्बईमें अधिक आता रहा है वह अन्य देशोंने लेलिया। इसलिये नेटालसे यहां आयात घटकर ११४००० टनसे ८६००० टन रह गया। गत वर्ष ग्रेटब्रिटेनसे ९७००० टन आया था उसके स्थानमें इस वर्ष केवल १३००० टन आया। इतना कम आनेका कारण ग्रेटब्रिटेनमें कोयलेकी हड़ताल है।

इस प्रकार भारतके आयातका वर्णन हुआ, पर इससे यह नहीं समझना चाहिये कि यह सब पदार्थोंके आयातका वर्णन हो चुका हो। नहीं अभी छोटी बड़ी बीसों वस्तुएं ऐसी हैं जो भारतमें लाखों करोड़ोंके मूल्यकी आती हैं। जैसे मिट्टीके पदार्थ, पहननेके कपड़े, जूते; घड़ी घंटे, छाते और छातेके सामान, स्टेशनरी, साबुन, तेल, लेव्हेण्डर, वार्निशकी चीजें आदि २, इनका वर्णन कहांतक किया जाय। यहां केवल यही कहना पड़ता है कि यह भारतका दुर्दिन है जो उसके बाजार विदेशी वस्तुओंसे इस तरह पाटे जाते हैं।

आगे अब हम भारतके निर्यात व्यापारका वर्णन करते हैं। इससे पाठकोंको विदित हो जायगा कि किस तरह भारतके मालका निर्यात होता है।

—:-o-:—

निर्यात व्यापार

भारतका एक्सपोर्ट इम्पोर्टकी अपेक्षा अधिक है। देशको इम्पोर्टके लिये मूल्य चुकाना पड़ता है और एक्सपोर्टके लिए उसे मूल्य मिलता है। भारतका एक्सपोर्ट अधिक है इससे यह नहीं समझना चाहिये कि उसे अपने इम्पोर्टका मूल चुकाकर एक्सपोर्टकी अधिकताके स्वरूप कुछ मिल जाता है या बच जाता है, नहीं उसके एक्सपोर्टकी अधिकता होम चार्जेस आदिके रूपमें चली जाती है यह पहले लिखा जा चुका है। यह भी पहले लिख दिया है कि उसके एक्सपोर्टका मुख्य भाग कच्चे पदार्थ और खाद्य द्रव्योंका होता है। उसके एक्सपोर्टसे या तो विदेशोंको भोजन अर्थात् खाद्य पदार्थों-की प्राप्ति होती है या उन विदेशोंको अपने उद्योगके लिये कच्चे पदार्थोंकी प्राप्ति। इस भांति भारतके एक्सपोर्टसे उन विदेशोंके खाद्य और उद्योगके लिये कच्चे पदार्थोंकी पूर्ति होती है। इसका विस्तार पूर्वक हाल इस प्रकार है। भारतका इम्पोर्ट और एक्सपोर्ट दोनों व्यापार किस कदर बने हैं पहले यह देखिये—

	युद्धके पहलेका औसत	युद्धके समय औसत	सन २५-२६	सन २६—२७
इम्पोर्ट	रु० १,४५,८४,७२०००	रु० १,४७,८०,१६०००	रु० २,२६,१७,५७०००	रु० २,३१,३१५८०००
एक्सपोर्ट	रु. २,१६,४६७३०००	रु. २,१५,६६,७००:००	रु. ३७४८८४२१०००	रु. ३,०१,४३१६०००

सन् १९२६-२७ में ३,०१ करोड़ रुपयेका निर्यात हुआ उसमें मुख्य पदार्थोंका विवरण इस भांति है—

(१) खाद्य पदार्थ,	
धान्य पदार्थ और आटा	रु० ३६,२४,६०,०००
चाय	,, २६,०३,७८,०००
मिर्च मसाला फल और मछली	,, ३,२१,२३,०००
अफीम	,, २,११,८५,०००
काफी	,, १,३२,६३,०००
तमाखू	,, १,०४,१५,०००
(२) कच्चे पदार्थ,	
रुई	,, ५६,१४,१९,०००
पाट	,, २६,७८,०४,०००
तेलहन	,, १६,०८,७७,०००
चमड़ा	,, ७,१७,५५,०००
खल, मोम खाद पदार्थ	,, ५,६२,७६,०००
गोंद राल लाख	,, ५,६१,५१,०००
ऊन	,, ३,६३,१४,०००
रबड़	,, २,६०,१४,०००
धातु	,, २,४६,७०,०००
लकड़ी काठ	,, १,६०,१३,०००
धातुके अतिरिक्त अन्य खनिज पदार्थ पत्थर आदि	१,११,००,०००
घास चारा भूसी	,, १,०६,२५,०००
कोयला	,, ८०,६२,०००
(३) बने हुए पदार्थ	
पाटके पदार्थ हैसियन चट्टी आदि	,, ५३,१८,०६,०००
सूत और कपड़ा	,, १०,७४,८६,०००
चमड़ा (कमाया हुआ)	,, ७,५०,०२,०००

धातुके पदार्थ	४,७४,१६,०००
रसायनिक पदार्थ जड़ी बूटी और औषधियां	२,६५,८२,०००
रंग	१,२४,१५,०००
ऊनी सूत और कपड़ा	७५,१४,०००
(४) डाकसे निर्यात	२,४६,६६,०००

सन् १९२६-२७ के एक्सपोर्टमें भिन्न भिन्न विदेशोंका भाग इस भाँति रहा:—

ग्रेट ब्रिटेन	रु० ६६,५२,००,०००
जापान	„ ४१,२७,००,०००
अमेरिका	„ ३६,४१,००,०००
जर्मनी	„ २०,४३,००,०००
सीलोन	„ १४,८६,००,०००
फ्रान्स	„ १३,९७,००,०००
इटली	„ ११,५४,००,०००
चीन	„ ११,३१,००,०००
बेलजियम	„ ८,८३,००,०००

जिस भांति भारतके आयात व्यापारमें मुख भाग ग्रेट ब्रिटेनका है अर्थात् वह सबसे अधिक माल यहां भेजता है उसी भांति ग्रेट ब्रिटेनको यहांसे जाता भी सबसे अधिक है।

पाट और पाटके बने पदार्थ

भारतके एक्सपोर्टमें पाटका सबसे अधिक भाग है। सन १९२६-२७ में पाट और उसके बने पदार्थ दोनों मिलाकर ७९९६ लाखका निर्यात हुआ। सन १९२५-२६ से इनका निर्यात वजनके परिमाणमें अर्थात १४,५८,००० टनसे बढ़कर १५,६८,००० का हुआ पर मूल्यमें सस्ते दामोंके कारण बहुत घटी रही अर्थात् ९७ करोड़से घटकर ८० करोड़ रुपया ही रह गया। कच्चे पाटका भाग ३३ सैकड़ा और बने हुए मालका ६७ सैकड़ा रहा। नीचे सन १९१३-१४ और गत तीन वर्षोंके निर्यातका व्योरा दिया जाता है:—

	१९१३-१४	१९२४-२५	१९२५-२६	१९२६-२७
पाट (टन)	७,६८,०००	६,९६,०००	६,४७,०००	७,०८,०००
बोरे (संख्या लाख)	३६,९०	४२,५०	४२,५०	४४,९०
कपड़ा(गज लाख)	१,०६,१०	१,४५,६०	१,४६,१०	१५०३०

सन १९२६-२७ में कच्चे पाटकी ३६,६४,००० गांठे भेजी गईं जिनमेंसे ग्रेट ब्रिटेनने ६,६८००० गांठें लीं। सन १९२५-२६ में ग्रेट ब्रिटेनने ९,७७,००० गांठें ली थीं अर्थात् १९२५-२७में पूर्व वर्षसे एक सैकड़ेकी घटी रही पर मालके दामोंमें सस्ते भावके कारण बहुत घटी रही, अर्थात् सन १९२५-२६ में ग्रेट ब्रिटेनको १०,५७ लाख रुपया देना पड़ा था, वही सन् १९२६-२७ में ६,१४ लाख रुपया ही देना पड़ा। यह बात ध्यान देने योग्य है कि वर्षके पहले ६ महीनोंमें जब ग्रेटब्रिटेन-में कोयलेकी हड़ताल रही तब तक उसने केवल ६५,१०० गांठें लीं और बाकी शेष ६ महिनोंमें। इस काममें जर्मनी सबसे प्रमुख रहा क्योंकि उसने ७,४० लाख रुपयेकी १०,२५००० गांठें लीं। अमेरिकाको ५,९६ ००० फ्रांसको ५०४००० इटलीको २७५००० बेलजियमको २४८००० स्पेनको १८७००० नेदरलैंडको ७२००० और जापानको ५१००० गांठें भेजी गईं।

नीचे कच्चे पाटके निर्यात और स्थानीय मिलोंकी खपतका ब्यौरा दिया जाता है—

	युद्धके पूर्वका औसत	१९२५-२६ (गांठें)	१९२६-२७
ग्रेट ब्रिटेन	१६,६१,०००	६,७७,०००	६,६८,०००
जर्मनी	६,२०,०००	८,१०,०००	१०,२५,०००
बाकी यूरप	१०,६५,०००	१२,१०,०००	१२,६१,०००
अमेरिका	५,४६,०००	५,११,०००	५,९६,०००
अन्य देश	२६,०००	१,१६,०००	१,१४,०००
कुल निर्यात	४२,८१,०००	३६,२४,०००	३९,६४,०००
भारतकी मिलोंमें खपा	४१,५०,०००	५४,६७,०००	५५,२७,०००

इन अङ्कोंसे पाटके नियात और उसकी स्थानीय खपतका पता चल जाता है।

बोरे—

बोरोंका निर्यात सन् १९२६-२७ में ४४,६० लाखका हुआ जिसका मूल्य २४¾ करोड़ रू० मिला। सबसे अधिक बोरे आस्ट्रेलियाने लिये जो ८,६० लाखका खरीददार रहा। ग्रेट ब्रिटेनने ३,९० लाख, अमेरिकाने २,८० लाख, जावाने २,७० लाख, जापानने २५० लाख और हांगकांगने १६० लाख बोरे लिये।

चटी कपड़ा

सन् १९२६-२७ में इसका निर्यात गत वर्षके १४६१० लाख गजसे बढ़कर १५०३० लाख गजका हुआ, पर मूल्य ३२ करोड़की जगह २८ करोड़ रुपया मिला।

इसके निर्यातमें अमेरिकाका सबसे अधिक भाग रहा जिसने ६५ सैकड़ा अर्थात ६७,५० लाख गज माल लिया। ग्रेटब्रिटेनने ५ करोड़ गज, आरजेनटाइनने ३१ करोड़, केनाडाने ६ करोड़, चीन और हांगकांगने १॥ करोड़, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंडने ३ करोड़, और दक्षिणी अफ्रिकाने ४० लाख गज माल लिया।

पाटका इतिहास

आज जिस पाटके व्यवसायकी भारतमें इतनी धूम है और जो यहांके निर्यातमें सबसे प्रमुख स्थान धारण करता है उसका १५० वर्ष पहले आजकलके सदृश उपयोग करना कोई नहीं जानता था। इसका व्यापारिक महत्व गत शताब्दिके पूर्वार्द्ध में प्रगट हुआ। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इसका जूट नाम संस्कृत शब्द "झट" अर्थात् तारसे पड़ा। योंतो भारतमें अंग्रेजोंके आगमनके पहलेहीसे कई पदार्थ तार बनानेके काममें आते थे पर अठारहवीं शताब्दिके अंतमें ईस्ट इंडिया कंपनीके अफसरोंको जहाजोंके रस्से बनानेके लिए किसी पदार्थकी आवश्यकता हुई। इसी समय सिवपुर बोटेनिक गारडनके संस्थापक और डायरेक्टरने जूटको इस योग्य समझा और सन् १७९५ में इसकी एक गांठ इँग्लैण्ड भेजी गई। उसने डायरेक्टरोंकी समितिको जो पत्र लिखा उसमें इस तागेको जूट बोलकर लिखा। सरकारी कागज़ातमें जूट नाम आनेका यही सबसे पहला अवसर था। इसके बाद कई पारसलें परीक्षार्थ भेजी गईं और सन् १८२० के लगभग एबिंगडनके कारीगर इससे दरी बनानेके लायक तार निकालनेमें समर्थ हुए। सन् १८२२में डंडी (Dundee) में जूटका एक छोटा सा चालान पहुँचा पर वहांके कारीगर इससे तागा नहीं निकाल सके, इसलिए वह ४-५ वर्षतक तो पड़ा रहा और इसके बाद इसकी फर्श अर्थात् दरियां बना ली गईं। उस समय वहां यह निश्चय हुआ कि इस पदार्थके लिए ख़ास तरहके यंत्रोंकी आवश्यकता है। इस बातका प्रयत्न चालू रहा। सन् १८२८ में कच्चे जूटका यहांसे कुल १८ टनका चलान हुआ। कलकत्ताके चूंगी विभागमें जूट शब्द भिन्न मदमें आनेका यही सबसे प्रथम अवसर था। सन् १८३२ तक वास्तविक सफलता न हुई पर इस समय व्हेल मछलीके तेलसे इसको नर्म बनाकर काम लिया गया। पहले जूटमें अन्य पदार्थ यथा फ्लैक्स और टो (Flax and tow) मिलाये गये पर सन १८३५में खालिस जूटका सूत कातकर बेचा गया। सन् १८३७ में डंडी नगरमें जूटका दाम १८३२ से दुगुना हो गया। सन् १८३७ में डच सरकारने काफी भरनेके लिए डंडीमें जूटके बहुतसे बोरे खरीद किये। इस प्रकार डंडीमें जूटके कारबारकी नींव जमी और यह पदार्थ व्यापारिक दृष्टिसे एक महत्वकी वस्तु गिना जाने लगा।

पाटकी खेती

इसकी खेतीका ठेका मानों बंगाल और आसामने ले रखा है, गंगा और ब्रह्मपुत्रकी तलाईमें खासकर इसकी खेती होती है। थोड़ीसी खेती बिहार उड़ीसामें भी होती है। जूटकी फसलका ९० सैकड़ा मध्य बंगाल और आसाममें होता है और इसलिए जूटसे पदार्थ बनानेवाले स्थानोंको कच्चे मालकी प्राप्तिके लिए यहींपर निर्भर रहना पड़ता है। इसकी थोड़ीसी पैदावार मदरास और बंबईके इलाकोंमें भी होती है जिसे बिमालीपटम जूट कहते हैं। खोज करनेपर इस बातका पता चलता है कि मलाबार जिलेमें और उस तरफकी नदियोंकी तराईमें भी जूटकी खेतीके लायक जमीन है लेकिन अच्छी जाति और गहरी उपजकी बातके अतिरिक्त बंगालके सदृश मजूरी सस्ती न होनेके कारण वहांपर समुचित खेती असम्भव सिद्ध हो चुकी है। अन्य देशोंने भी इसकी खेतीका प्रयत्न किया और वह अभीतक जारी भी है पर किसीको सफलता नहीं मिली। चीन और फारमूसाके प्रान्तोंमें इसकी खेतीमें कुछ सफलता हुई है पर वहांकी पैदावार बंगालसे तभी मुकाबिला कर सकती है जब दाम बहुत तेज हों। इसके अतिरिक्त वहांका जूट बंगालके सदृश बढ़िया भी नहीं होता।

इसके पौधेको चिकनी जमीन बालू मिली हुई चिकनी मट्टी जिसमें जड़ आसानीसे पैठजाय बड़ी उपयोगी रहती है। बंगाल और आसामकी भूमि इसकी खेतीके लिए बड़े मजेकी है क्योंकि नदियोंकी बही हुई रेतकी भूमिके कारण कृषकको विना अधिक खादके खेती करनेकी सुविधा रहती है। यह ऊँची और सूखी जमीनमें एवं तर और नीची जमीनमें अच्छा बढ़ता है। लेकिन पिछली दशामें जूट अच्छा नहीं होता क्योंकि पौधेका नीचेका हिस्सा बहुत डूब जाता है। इसकी फसलको बढ़नेमें गर्मी बहुत सहायता पहुंचाती है। इसको थोड़े समय पहले और फिर उसके बादमें गहरी वर्षाकी भी आवश्यकता होती है। पौधा एकबार लग जानेपर विशेष लक्ष्य रखनेकी आवश्यकता नहीं रहती और वह १० १२ फुटतक लंबा बढ़ता है। यह मार्चसे लेकर मई महीनेतक बोया जाता है और फसल जुलाईसे अक्टूबरतक उतरती है। सितंबरसे दिसंबरतक इसका बाजार रहता है। कितनी भूमिमें इसकी बोअनी हुई इस बातका सरकारी एस्टीमेट प्रतिवर्ष जुलाई महीनेमें प्रगट हो जाता है और भूमिकी गणना एवं फसलके अनुमानका अंतिम लेखा सितंबर महिनेमें निकल जाता है। इसकी खेती २५३० लाख एकड़ भूमिमें होती है जिसपर २०-३० लाख किसान अपनी जीविकाके लिए निर्भर रहते हैं। वार्षिक पैदावारकी औसत एक एकड़ पीछे अनुमान १५ मन जूट (रेशे) की बैठती है।

इसके लिए बोनेके समय—अप्रैल मई महीनोंमें—थोड़ी थोड़ी वर्षाका होना बड़ा लाभदायक होता है। वास्तवमें इसकी फसलकी पैदावार उचित जल वायुपर बहुत निर्भर करती है। जब इसका

पौधा १० फुट ऊँचा हो जाता है तब काट लिया जाता हैं और उसकी गांठे बांध ली जाती हैं। पश्चात ये गांठें पानीमें समूची डुबो दी जाती हैं और उनपर मिट्टीके ढेले रख दिये जाते हैं जिससे गांठें पानीमें समुचित डूबी रहें। इस प्रकार दोसे तीन सप्ताहतक गांठे पानीमें पड़ी रहती हैं। इससे उसका रेशा नर्म पड़ जाता है और सुविधासे अलग कर लिया जाता हैं। इस प्रणालीके किये जानेमें गांठोंपर दृष्टि रखनी पड़ती है कि वे आवश्यतासे अधिक पानीमें न रहें क्योंकि ऐसा होनेसे रेशा कमज़ोर पड़ जाता है। रेशेको अलग करनेकी कई विधियां हैं पर अधिकतर कृषक कमरतक पानीमें खड़ा हो जाता है और हाथमें एक गुच्छा पकड़कर जड़के भागको जोरसे हिलाता है जिससे रेशा ढीला पड़ जाता है। रेशा अलग कर लेनेपर वह धोकर धूपमें सुखाया जाता है। तब यह बाजारमें जाने योग्य हो जाता है।

सन् १८७४ में इसकी खेतीका अनुमान पैदावारके हिसाबसे ८½ लाख एकड़ भूमिका था। वही बढ़ते बढ़ते सन १९१२-१३ का पंचवर्षीय औसत ३१½ लाख एकड़ हो गया। युद्धके पूर्व सन् १९१३-१४ में इसकी खेती ३३,५२,२०० एकड़ भूमिमें हुई। इसके बाद इसकी खेतीमें कमी कर दी गई जिसके कई आर्थिक कारण हैं। महायुद्धके समयमें जूटके बने हुए पदार्थोंके दाम कच्चे मालसे बेहिसाब ऊँचे रहे और उस समय चांवलका भाव बहुत तेज रहा। इसलिए जूट बोये जाने वाली उस भूमिमें—जिसमें चांवल बोया जा सकता था—कृषकोंने जूटको बंदकर चांवलकी खेती करना आरम्भ कर दिया।

पाटके दाम

पाटकी बढ़ती हुई मांगका पता इसके बढ़े हुए भावोंसे चल जाता है। सन १८५१ में ४०० रतलकी एक गांठका दाम १४½ रुपया था वही सन १९०६ में ५७½ रुपया हो गया। सन १९०७ में भाव घटकर ५०¾ रुपया हो गया था। सन १९०८ तथा १९०९ में ३९ और ३२½ रु० गांठ ही रह गया था। सन १९१२ में थोकमालका दाम औसत ५४⅛ के और सन १९१३ में ७१ रु० रहा यहाँतक कि सन १९१४ के अप्रेल महीनेमें भाव ८९⅞ अर्थात सन १८८०-८४ के भावोंसे तिगुना हो गया। युद्धकी घोषणा होनेपर भाव केवल ऊँचे रुक ही नहीं गया प्रत्युत वह नीचे गिर गया। सन् १९१३ के महंगे दामों एवं कृषिकी सुविधाजनक स्थितिके कारण दूसरे साल अर्थात सन् १९१४ में बड़ीभारी फसल हुई। उस वर्ष साधारण वर्षकी खपतकी अपेक्षा २० लाख गांठें अधिक हुईं। ऐसी भारी पैदावारके कारण भाव घटे बिना नहीं रहता और फिर उधर इस मालके प्रधान खरीददार जर्मनी और आस्ट्रेलियाके बाजार ही इसके लिए बंद हो गये। अन्य देशोंको मुख्यतया ग्रेटब्रिटेनको भी इसके निर्यातमें बाधा पहुँची और इन सब कारणोंसे सन १९१४ के दिसंबरमें भाव ३१ रुपया गांठ ही रह गया। मार्च १९१५ में दाम ४१ रुपया हो गया पर इससे कृषकोंको कुछ सहारा नहीं मिला।

क्योंकि मईमें भाव घट कर फिर ३७ रुपया हो गया। जब अन्तिम रिपोर्टमें यह बात प्रगट हुई कि खेती एक तिहाई कम की गई है तो भाव चढ़ा और सन् १९१९ के मार्चमें ५९ रुपया हो गया। १९१६ से लेकर १९२० तक दामोंमें बहुत घट बढ़ रही। सन् १९१७ के अगस्तमें भाव नीचेसे नीचे ३५ रुपया हो गया था जो सन् १९१९ के अगस्तमें ९५ रुपये तक हो गया।

मालकी बिक्री

कृषकसे लेकर शिपरतक जूटका लेन देन बीचमें बहुतोंके हाथसे निकलता है। जब माल तैयार हो जाता है कृषक उसे एक व्यापारीको बेच देता हैं। वह व्यापारी अपने आढ़तियाके लिए खरीद करता है—जिससे उसे इस काममें लगानेके लिए रकम मिलती है—और माल खरीदकर कलकत्तेमें अपने आढतिये भेज देता है। आढतिया उस मालको चाहे तो किसी बाहर भेजने वाली फर्म Exporting Firm या किसी मील या किसी बेलर या उनके किसी दलालके हाथ बेच देता है। पाटका प्रधान स्थान नरायन गंज है। माल देहातसे नदी रेल या सड़ककी राहसे चितागोंग या कलकत्ता भेज दिया जाता है। देहातसे यह कच्ची गांठोंमें बंधकर आता है इसके साफ करने या गांठ बांधनेमें रुईकी तरह इसमें माल नहीं छीजता। कलकत्तेके प्रेसोंमें इसकी पक्की गांठें बांधी जाती हैं और तब विदेशोंको चलान दे दिया जाता है। यहां दलालोंकी बड़ी बड़ी कम्पनियां हैं जिनमें मुख्यतयः अंग्रेज हैं हां, उनके नीचे मातहत दलाल under Broker हिन्दुस्तानी भी हैं। एक गांठका बंधान मोल या चलानके लिहाज़से ४०० रतलका समझा जाता है यद्यपि विदेशोंको भाव C. I. F. एक टन पर दिया जाता है। मालकी चमक और लम्बाई पर घटिया बढिया पन समझा जाता है। कई मिलें नर्म रेशा पसंद करती हैं और कई कड़ा। यद्यपि इसके कई नाम बोले जाते हैं—यथा उत्तरी, देसवाल, देशीइनेज आदि—पर व्यापारीका मारका मुख्य समझा जाता है और नारायणगंजकी पैदावारका माल नरायण गंजी और सिराजगंज का सिराजगंजी कहलाता है। सबसे घटिया माल टालका (Rejection) बोलकर बेचा जाता है और टुकड़े (Cuttings) पौधेके कड़े और लकड़ीदार भागको कहते हैं।

जूट भारतवर्षका एक मुख्य पदार्थ है। कलकत्तासे जितना माल निर्यात होता है उसमें ५० प्रतिशत भाग कच्चे जूट और उसके बने हुए मालका रहता है अर्थात् इसका निर्यात भारतके समूचे निर्यातका एक चतुर्थांश भाग ले लेता है। सन् १९२२-२३ में जूट और उससे बने हुए मालका निर्यात ६२ करोड़ रुपयेका, सन् १९२४-२५ में ८१ करोड़का सन् १९२५-२६ में ९७ करोड़का और सन् १९२६-२७ में ८० करोड़ रुपयेका हुआ। इस निर्यातमें ९९॥ सैकड़ा भाग बंगालका रहता है, इस लिहाजसे यदि यह कहा जाय कि जूट और उसके पदार्थोंका निर्यात अकेला बंगाल करता है तो कुछ अनुचित नहीं होगा। इस व्यापारसे

सरकारको जो लाभ होता है उसपर विचार करें तो कहना होगा कि जूट और उसके बने मालकी एक्सपोर्ट ड्यूटीका औसत गत तीन वर्षोंमें ३॥ करोड़ रुपया बैठा। अन्य पदार्थोंकी एक्सपोर्ट ड्यूटी २ करोड़ रुपये बैठी, इस हिसाबसे कहना होगा कि गत तीन वर्षोंमें अकेले जूट व्यवसायने समूची एक्सपोर्ट ड्यूटीका ६५ सैकड़ा भाग सरकारको दिया।

जूट मिलें

बहुत पहलेसे बंगालमें जूट काता और बुना जाता था पर गत शताब्दिके आरम्भ तक इसका व्यवहार देशके भीतर ही परिसीमित था। यहांके बने हुए बोरोंके बहुत सस्ते होनेके कारण बाहरी लोगोंका ध्यान इधर आकर्षित होने लगा। हाथके बने हुए बोरोंका कारवार यहांपर कल कारखाने न खुले तबतक चलता रहा। डंडीमें कलसे काता हुआ सूत सन् १८३५ में बिकने लग गया पर भारतमें इससे २० वर्ष बाद सूत कातनेकी मिल बैठाई गई। सन् १८५३ में जार्ज आकलैंड नामक सीलोनका एक काफीका व्यापारी कलकत्ता आया और सन् १८५४ में वह डंडी गया। वहां उसने जूट व्यवसायको देखा और फिर यहां आकर अपने साथ लाई हुई मशीनरीसे उसने सन् १८५५ में सीरामपुरके पास सबसे पहली एक जूट कातनेकी मिल बैठाई। ८ टन प्रति दिन सूत कातने वाली इस मिलसे कलकत्तामें जूट मिलका श्रीगणेश हुआ। इस सूतसे चट्टी बनानेके लिए जार्ज आकलेण्डने हाथ कर्घे बनाये। यन्त्र द्वारा चलनेवाले कर्घों (Looms)की स्थापनाका श्रेय बोर्नियो कंपनी (Borneo Co.) को है जिसकी एजंट जार्ज हेंडरसन कम्पनी थी। इस बोर्नियो जूट कम्पनी लिमिटेड नामक मिलकी रजिस्ट्री इंग्लेंडमें हुई। १९२ कर्घोंकी इस मिलकी स्थापना सन् १८५९ में हुई। इसमें कातना और बुनना दोनों काम मशीनसे होने लगे। इस मिलको बड़ी सफलता मिली, पांच वर्षमें कारखाना दुगुना हो गया यहांतक कि सन् १८७२ में बुननेके ५१२ साँचे हो गये और तब इसका नाम बारानगर जूट फेक्टरी कम्पनी लिमिटेड रखा गया।

जूट मिल एसोसिएशनकी स्थापना

बोरनियो कम्पनीके बाद सन् १८६२ में गौरीपुर और सिराजगंज मिल्स और सन् १८६६ में इण्डिया मिल्स नामकी मिलें बनीं। सन् १८६९ से १८७३ तक इन मिलोंने अपने कर्घे ९५० से बढ़ाकर १२५० कर लिए। इनकी बढ़तीको देखकर सन् १८७२ में पांच और नई कम्पनियोंकी स्थापना हुई जिनमें दो की रजिस्ट्री स्काटलेंडमें हुई। दो वर्षमें ८ नई मिलें बन गईं। जिनमें ३५०० कर्घे हो गये जो आवश्यकतासे अधिक जान पड़े। इस कारण कमरहट्टी कम्पनीके सिवाय जो सन् १८७७ में बनी थी सन् १८८२ तक और कोई नई मिल नहीं

बनी। इस समय कुल कर्घोंकी संख्या ५१५० थी जो अगले तीन वर्षोंमें ६७०० हो गई। इस समय फिर मालकी पैदावार आवश्यकतासे अधिक जान पड़ी और इसी समस्याको हल करनेके लिए इण्डियन जूट मिल एसोसिएशनकी स्थापना हुई। पहली साधारण सभा १० नवंबर सन् १८८४ को मि० जे० जे० केपविकके सभापतित्वमें हुई उस समयसे यह एसोशियेशन सामयिक व्यापारिक परिस्थितियोंको हल करनेका बड़ा भारी काम करती रही है। सन् १८८५ से लेकर १८९५ तक कोई नई मिल नहीं बनी पर पुरानी मिलोंमें ही कर्घोंकी संख्या ९७०१ तक पहुँच गई जिनमें ३११७ चट्टी कपड़ेके थे और ६५८४ बोरोंके।

वर्तमान शताब्दिमें जूटके उद्योगकी उन्नति

सन् १८४५ तक ६७०१ कर्घे थे इसी समय मिलोंमें बिजलीकी रोशनी लग गई जिससे मिलें रातको भी चलने लगीं। इसके बाद जो उन्नति हुई वह ध्यान देने योग्य है क्योंकि पांच ही वर्षोंमें और कई नई मिलें बन गईं और इस शताब्दिके आरम्भमें कर्घोंकी संख्या १५२१३ पर पहुंच गई। अगले चार वर्ष तक समय अच्छा नहीं रहा पर सन् १९१०में ६ मिलें और बनीं। उनसे कर्घोंकी संख्या ३१७५५ हो गई। १९१०से लेकर महायुद्धके आरम्भ तक तीन नई मिलें बनीं पर पुरानीमें ही कर्घोंकी बढ़तीके कारण सब १९१५में कर्घोंकी संख्या ३८३५४ होगई। युद्धके समय ६ नई मिलें बनीं और युद्धकी समाप्ति तक ६ और बन गईं। इनमेंसे दो मिलें मारवाड़ी व्यापारियोंने बनाईं यहींसे जूटके व्यवसायमें भारतीय प्रबन्धका सूत्रपात हुआ। सन् १९२५में दो अमेरिकन मिलें खुलीं जिनको मिलाकर हुगली नदीपर अमेरिकन मिलें तीन होगईं। इसके बाद कोई नई मिल नहीं बनी है। क्योंकि यह बात प्रत्यक्ष अनुभवमें आ चुकी है कि पहलेही आवश्यकतासे अधिक मिलें मौजूद हैं और उनसे बना हुआ माल दुनियाकी खपतसे अधिक है। ऐसी स्थितिमें मिलोंने कमती समय काम करना तै किया जिससे सन् १९२१ के अप्रैल माससे मिलें कम समय चलने लगीं और वह नियम अभी तक जारी हैं। इस समय मिलें ५४ घंटे प्रति सप्ताहके हिसावसे चलती हैं। ऐसा होनेपर भी कई मिलोंने कर्घे बढ़ाये और सन् १९२१में ६००० कर्घे बढ़ गये यद्यपि मिलें कम समय चलने लगीं पर कर्घेके बढ़तीके कारण परस्थिति विशेष नहीं सुधरी इसलिए यह नियम भी पास किया गया कि जो कुछ कर्घोंका आर्डर दे दिया गया है उसके अलावा और कर्घे न बढ़ाये जायं।

यह भारतमें जूट उद्योगकी आश्चर्यजनक उन्नतिका वर्णन हुआ। कहना नहीं होगा कि आज देशमें जैसी अच्छी दशा इस उद्योगकी है वैसी अन्य किसीकी नहीं। आज भारतमें कुल ९० मिलें हैं जिनमेंसे ८६ मिलें बंगालमें हैं। ये सब मिलें हुगली नदीके किनारेपर बनी हुई हैं जिनमें अनुमान ३,४०,००० मजदूर काम करते हैं इनमें कुल कर्घोंकी संख्या ४६, ७८०

है और तकुओंकी १०,५३,८२१ । बाकी चार मिलें मदरासमें हैं जिनमें ५६५ कर्घे हैं और एक मिल संयुक्त प्रान्तमें है। जिस भाँति जूटकी पैदावारका ठेका बङ्गालने ले रखा है उसी भांति इसके उद्योगमें भी प्रधान हाथ या कहा जाय कि लगभग समचा हाथ बंगालका है। हुगलीके किनारे दूर तक ये मिलें चली गई हैं। और स्वयं मिलोंकी दशा अच्छी होनेके कारण इनमें काम करनेवाले मजदूरोंकी भी दशा अच्छी है और उन्हें भारतवर्षकी अन्य किसी भी कामकी मिलोंके मजदूरोंसे मजूरी अधिक ही मिलती है। मिलोंका पूर्व इतिहास सन्तोषप्रद ही नहीं पर बहुत समृद्धि पूर्ण रहा है। सन् १९१४ में कच्चे पाटके दाम बहुत चढ़ गये। कलकत्तामें भाव ८२ रुपये गाँठ और लंदनमें ३६ पौंड प्रति टनका दाम होगया। जब युद्ध आरम्भ हुआ कलकत्तामें भाव ५०-५५ रुपया और लन्दनमें २७½ पौंड ही रह गया। इसपर भी जब फसलकी आनुमानिक रिपोर्ट निकली और उसमें बड़ी भारी फसलकी बड़ी बात प्रगट हुई तो दाम बुरी तरह घट गये और उस समय मिलोंने यह समझकर कि युद्धमें उनके बनाये हुए मालकी बड़ी मांग रहेगी कच्चा माल खूब मन्दे दामोंमें भर पेट खरीद किया। इधर कच्चा माल सस्ते दामोंमें मिलना और बनाया हुआ माल हाथों हाथ ऊंचे दामोंमें बिक जाना इससे और अधिक क्या बात हो सकती थी। जूटके बने पदार्थोंका निर्यात सन् १९१४-१५ में १७३ लाख पौंडका हुआ वही सन् १९१६-१७ में २८० लाख पौंड, सन् १७-१८ में २९० लाख पौंड और सन् १८१८-१९ में ३५० लाख पौंडका हुआ। युद्ध काल जूट उद्योगके लिए स्वर्ण युग होगया जिसमें मिलोंने आश्चर्यजनक उन्नति की एवं अपार वैभव और समृद्धि पैदा की।

एक्सपोर्ट ड्यूटी

सरकारको जूट और उसके पदार्थोंके निर्यातसे एक्सपोर्ट ड्यूटी अर्थात प्रति वर्ष ३ करोड़ रुपयासे अधिक ही बैठती है यह पहले लिखा जा चुका है। सन १९१६ की पहली मार्चसे भारत सरकारने कच्चे पाटपर (टुकड़ोंको छोड़कर) ४०० रतलकी प्रति गाँठ पर २¼ रु० अर्थात मूल्यके लिहाजसे अनुमान ५ रु० सैकड़ा एक्सपोर्ट ड्यूटी लगाया। टुकड़ोंपर ड्यूटी दस आना प्रति गांठ नियत की गई इसी भांति हैसियनपर १६ रुपया प्रति टन और बोरोंपर १० प्रति टनकी ड्यूटी लगाई गई। सन् १९१७ की पहली मार्चसे यही ड्यूटी डबल कर दीगई और कच्चे पाटकी ४½ रुपया टुकड़ोंकी १¼ रुपया प्रतिगांठ, हैसियनपर ३२ रु० और बोरोंपर २० रुपया प्रति टन हो गया। यह ड्यूटी विमलीपटम जूटपर लागू नहीं पड़ती।

रुई

भारतके निर्यातमें रुईका निर्यात प्रधान स्थान धारण करता है। यद्यपि सन् १९२५-२६ में

६४६६ लाख रुपयेकी ४१,७३,००० गांठोंका निर्यात हुआ था। सन् १९२६-२७ में यहां फसलकी खराबी और अमेरिकामें भारी पैदावार एवं अमेरिकन रुईके सस्ती होनेके कारण यहांसे केवल ५८६० लाख रुपयेकी ३१८८००० गांठें बाहर भेजी गईं। सन् १९२६-२७ में रुईके निर्यातमें भारतके समूचे निर्यातका १९ सैकड़ा भाग रहा जो १९२५-२६ में २५ सैकड़ा और १९२४-२५ में २४ सैकड़ा रहता था। भारतीय रुईका सबसे बड़ा खरीददार जापान है। उसने सन् १९२५-२६ में ४७½ करोड़ रुपयेकी २०,८४,००० गांठे ली थी वही सन् १९२६-२७ में ३४½ करोड़की १८,४२,००० गांठें लीं। चीनको ३,९१,००० गांठें गईं। इटलीने ३,०५,०००, जर्मनीने १,४५,००० बेलजियमने १,५६,००० फ्रांसने १,२३,००० और स्पेनने ५४,००० गांठें लीं। ग्रेटब्रिटेनको निर्यातमें बहुत घटी हुई। सन् १९२५-२६ में उसने २,२५००० गाठें ली थी पर सन् १९२६-२७ में केवल ८७,००० गांठें लीं।

जिस भांति पाटके निर्यातमें बंगाल प्रधान है उसी भांति रुईके निर्यातमें बम्बई प्रधान है। रुईके समूचे निर्यातका ६६ सैकड़ा भाग बम्बईसे, २६ सैकड़ा करांचीसे और ५ सैंकड़ा मदरासले माल बाहर भेजा गया। सन्१९२६-२७ में रुईकी पैदावारका अनुमान ५० लाख गांठका था और अमेरिकाकी फसल सन् १९२६में १,८६,१८००० अथवा ४०० रतलकी २३२७२००० गांठोंका अन्दाजा किया गया था। इस भांति अमेरिकामें भारतसे अनुमानतः चौगुनी रुई पैदा होती है। सबसे बढ़िया रुई मिश्रकी होती है जहांकी फसल सन् १९२६ में १९½ लाख गांठोंकी कूती गई थी। मिश्रकी रुईसे दूसरे नम्बरमें अमेरिकाकी रुई होती हैं और तीसरे नंबरमें भारतकी। भारतीय रुईकी अनुमान २० लाख गांठे यहां भारतकी मिलोंमें खपजाती हैं। इससे यह नहीं समझना चाहिए कि भारतमें रुई यहां की आवश्यकतासे अधिक होती है, क्योंकि भारतमें विदेशी कपड़ा ५०-६० करोड़ रुपयेका बाहरसे आता है। जबतक इसतरह विदेशी कपड़ा आता रहेगा तबतक यहांकी रुईका बाहर जाना रुईकी अधिकता कैसे कही जासकती है। एक बात अवश्य है कि ५०-६० करोड़की जो रुई बाहर जाती है उसे यदि भारतहीमें रखकर कपड़ा बनाया जाय तो वह बहुत अधिक मूल्यका—कमसे कम १ अरब रुपये का—हो जायगा और यहांकी कपड़ेकी आवश्यकता जो कपड़े के आयातसे प्रगट होती है अनुमान ५०-६० करोड़ रुपयेकी है इस हिसाबसे ५०-६० करोड़ रुपयेका कपड़ा अधिक बन जायगा। इसमें क्या हर्ज है, यहांकी आवश्यकतासे अधिक जो कपड़ा बचे वह फिर बाहर भेज दिया जाय। देशके लिए यह निश्चय ही लाभप्रद होगा कि कच्चे मालके स्थानमें तैयारी भेजा जाय। जब रुई जिससे कपड़ा बनता है यहां मौजूद है तब फिर क्यों तो वह बाहर भेजी जाय और क्यों बाहरसे कपड़ा मंगाया जाय। क्यों न यहांकी रुई यहीं रहे और उससे कपड़ा बना लिया जाय जिससे बाहरसे न मंगाना

पड़े। यदि यहांकी आवश्यकताकी पूर्त्तिके बाद कपड़ा बच जाय तो कपड़ा ही बाहर भेज दिया जाय। यह बात देशके लिए अधिक हितकारक होगी न कि यह कि कच्चा माल बाहर भेजकर विदेशी बने हुए पदार्थ लिये जायं।

भारतमें रुई करीब करीब सब जगह होती है और प्रान्तके लिहाजसे उसकी कई जातियां बोली जाती हैं। बंबई नगर रूईका प्रधान बाजार है और देशकी रुईकी पैदावारका अधिक भाग यहीं आता है। यहांसे फिर चाहे उसका निर्यात हो जाता है या वह यहींकी मिलोंमें लग जाती है। कहना नहीं होगा कि भारतीय रुईकी मिलोंका अधिक भाग भी यहीं बंबई और बंबई प्रांतमें विद्यमान है। इसलिए बंबई रुईके व्यापारका केन्द्र है। बंबई प्रान्तमें भिन्न २ स्थानोंकी ऊपजके भिन्न २ नाम हैं यथा (१) उत्तर गुजरात, और उससे जुड़े हुए बड़ौदाराज्यके स्थान और काठियावाड़के अधिक भागमें जो रुई होती है उसे 'धोलेरा' कहते हैं। (२) दक्षिण गुजरात जिसमें भड़ूंच और सुरतके जिले और बड़ोदाका नवसारी जिला आ जाता है यहां भारतकी सबसे बढ़िया कहलाने वाली 'भड़ूंच' रुई होती है। (३) इसी तरह खानदेश, नासिक, अहमदनगर शोलापुर और हैदराबादके बीजापुर जिलेकी रुई "खानदेश' रुई कहलाती है। (४) धारवाड़ वेलगाँव कोल्हापुर और सांगली रियासतोंमें होनेवाली रुईको "कुम्पटा धारवाड़" कहते हैं और इसी भांति (५) सिंध, नवाबशाह, थार पारकर और हैदराबाद जिलेकी रुई "सिंध" रूई कहलाती है।

मध्य भारत और मालवाकी रुई उमरा कहलाती है और इस तरह बंबईके बाजारमें सब तरहकी रुईके अलग अलग भाव होते हैं और इसका बड़ा भारी व्यापार चलता है। सबसे बढ़िया भड़ूंच कहलानेवाली रुई होती है जिसका रेशा अन्य सब रुईसे लम्बा होता है और इसी लिए इसका दाम भी सबसे तेज रहता है। भारतमें रुईकी यद्यपि खासा पैदावार होती है लेकिन यहांकी रुई उतनी बढ़िया नहीं होती। इसी लिए यहांके कृषकोंका कहिए या यहांकी मिलोंका हित इसीमें है कि यहांपर ऐसी रुई पैदा हो जिसे संसारका कोई भी सूत कातनेवाला पसन्द कर ले। इसी लिए यहांका कृषि विभाग इस बातकी पूर्ण चेष्टामें है और इस ओर बहुत कुछ उद्यम भी किया गया है कि किस तरह ऊपज बढ़े एवं पैदावार बढ़िया जाति की हो इसके लिए चेष्टा हुई है और हो रही है और इस काममें सफलता भी मिली है। सन् १९२५-२६ में ३० लाख एकड़से अधिक भूमिमें बढ़िया रुई बोई गई जो रुई बोई जानेवाली समूची भूमिका १२ सैकड़ा भाग है। इसमेंसे तीन चतुर्थांश भाग पंजाब बंबई और मदरासका रहा, जहां भारतकी लम्बे रेशे वाली रुई मुख्यतया होती है।

भिन्न भिन्न बंदरोंमें रुईके भाव और तोलकी भिन्न २ प्रणालियां हैं। बंबईमें ७८४ रतलकी एक खंडी पर भाव होता है करांचीमें ८४ रतलके मनपर और कलकत्तामें ४० सेरके मन पर भाव

होता है। निर्यातके लिए ग्रेट ब्रिटेनको भाव C. I. F. प्रति रतल बोला जाता है। बंबईसे निर्यात ३६२ से ५०० रतल तककी गांठोंका होता है करांचीसे ४०० रतल की गांठ, कलकत्तासे ३६२ रतल की गांठ और मद्रासससे ४०० से ५०० रतल तक की गांठ होती है।

सन १९२३ के कानून (Indian Cotton cess act XIV of 1923) के अनुसार भारतमें उत्पन्न होने वाली रुई पर दो आना प्रति गांठ (४०० रतल) पर या खुली रुई पर दो पैसा प्रति एक सौ रतल पर चुंगी लगाई गई है। इस चुंगीसे जो आय होती है वह इंडियन सेंट्रल कॉटन कमिटीके हाथमें सौंप दी जाती है और उससे इंडियन कॉटन कमिटीकी बताई हुई बातोंके अनुसार कार्य किया जाता है। इससे रुईकी कृषिमें सुधार और अनुसन्धानादिक कार्य किये जाते हैं। इस विषयमें इन्दौरकी संस्था भी अच्छा काम कर रही है। कमेटी अन्य प्रान्तोंको भी इस कार्यमें आर्थिक सहायता देती है। यदि वे इस विषयकी विशेष खोज और कीड़ोंके बचाव या रुईके दाग आदिकी खोजमें हाथ डालें। मद्रास, सिंध और खानदेशमें भी यह काम आरंभ करनेका निश्चय किया गया है। इंडियन सेंट्रल कमिटीने बाहरसे आई हुई सब अमेरिकन रुईको हाइड्रोसियानिक एसिडगेससे धूँनी देनेकी प्रणाली स्थिर करनेमें सफलता पाई है जिससे अमेरिका के बोलवीविल (Boll weevil) नामक कीड़ेके यहां भारतमें प्रवेश करनेका भय न रहे।

रुईका बना माल

यद्यपि भारतमें विदेशी कपड़ा प्रति वर्ष ५०-६० करोड़ रुपयेका बाहरसे आता है तथापि यहांसे सूत और कपड़ेका थोड़ासा निर्यात भी होता है। यहांकी मिलोंकी दशा सन्तोषजनक नहीं है। कपड़ेकी काफी खपत होने पर भी यहांके सूत और कपड़ेके उद्योगकी दशा अच्छी न होनेके कारण इसकी जांचके लिए सरकारने टेरिफ बोर्ड नियत किया। बोर्डने अपनी रिपोर्ट प्रकाशित कर दी और सरकारने भी आँसू पोंछनेकी चेष्टा की। कई तरहकी मिल स्टोर सामग्री और मशीनरी पर सरकारने आयात कर हटा दिया और बाहरसे आनेवाली सूते पर आयात कर लगा दिया। इस प्रकार दो एक बातेंकी गई हैं पर इनसे भारतके इस उद्योगमें कितनी सहायता पहुंचती है यह सन्दिग्ध है। इसके उद्योगियोंकी शिकायतें अभी मिटी नहीं हैं और न जाने देशके इस बड़े भारी उद्योगकी दशा कब सन्तोषजनक होगी।

सूतका निर्यात सन् १९२५-२७ में ३,०६ लाख रुपयेका हुआ। इस रकमका ४१५ लाख रतल सूत बाहर भेजा गया, जिसमेंसे चीनने १०३½ लाख रुपयेका १,६० लाख रतल माल लिया। सीकिया, फारस और एडनने क्रमशः ३६ लाख ४४ लाख और ३८ लाख रतल सूत लिया। मिश्रने ५० लाख और स्यामने १६ लाख रतल माल लिया।

कपड़ा—इसका निर्यात सन् १६२६-२७ में ३३ लाख रुपयेका हुआ। सन् १६२६-२७ में भारतकी मिलोंने गत वर्षसे १६ सैकड़ा कपड़ा अधिक बनाया और बनाये हुए कुल मालका ८ सैकड़ा भाग निर्यात हुआ। इसमेंसे मेसेपोटामियाने ३,८३ लाख गज, फारसने ३७८ लाख गज, सीलोनने २,१७ लाख गज, और स्टेटसेटलमेंटने २५४ लाख गज कपड़ा लिया। एडनको ६५ लाख, अरबको ७५ लाख, पूर्वी अफ्रिकाको ३६० लाख, मारीशसको२३ लाख: और मिश्रको ३४ लाख गज कपड़ेका निर्यात हुआ।

भारतमें अनुमान ३०० मिलें चलती हैं जिनमें १½ लाख कर्घे और ८०-६० लाख तकुये होंगे इनमें अनुमान ४ लाख मजूर काम करते हैं। नीचे यहांकी मिलोंकी पैदावार और बाहरसे आये हुए कपड़ेका लेखा दिया जाता है।

	सन् १६१३-१४	सन् १६२४-२५	सन् १६२५-२६	सन् १६२६-२७
		लाख गज		
भारतकी मिलोंने बनाया	१,१६,४०	१,९७,००	१,९५,४०	२,२५,८०
विदेशोंसे आया	३,१६,७०	१,८२,३०	१,५६३०	१,७८७०
कुल जोड़	४,३६,१०	३,७६,३०	३,५१,७०	४,०४.५०
अब इसमेंसे जो कपड़ा निर्यात हुआ वह बाद देदिया जाय: —				
निर्यात भारतीय	८,६२	१८,१५	१६,४८	१६,७४
,, विदेशी	६,२१	५,४३	३,५४	२,९१
कुल जोड़	१५,१३	२३,५८	२०,०२	२२,६५
बाकी कपड़ा जो यहां लगा	४२०,६७	३,५५,७२	३,३१,६८	३.८१८५

इस भांति जबतक यहांकी खपतका आधेसे कुछ ही कम कपड़ा विदेशोंसे आता है तबतक देशमें कपड़ेका उद्योग समुचित और सम्पन्नावस्थामें हैं यह कैसे कहा जासकता है। न जाने कबतक भारत यों करोड़ों रुपयोंका अरबों गज कपड़ा विदेशोंसे मंगाता रहेगा और कब वह दिन आयेगा जब यहांकी आवश्यकताके अनुसार यहीं बना लिया जायगा। जिस दिन यहांकी पूर्त्ति यहींके कपड़ेसे होगी उस दिन भारतसे होनेवाला वास्तविक निर्यात कहा जायगा। अभी तो भारतके व्यापारमें कपड़ेके आयातकी प्रबलता जारी ही है।

धान और आटा—पहले लिखा जाचुका है कि भारतके निर्यातमें अधिक भाग कच्चे पदार्थ और खाद्य द्रव्योंका रहता है। सन् १६२६-२७ में इन पदार्थोंका निर्यात ३६,२५ लाख रुपये मूल्यके ५४,२६,००० टनका हुआ। युद्धके पहलेके औसतसे इस वर्षके निर्यातमें परिमाणके लिहाजसे ४५ सैंकडा घटी हुई और सन् १६२५-२६ से परिमाणमें २१ सैकड़ा और मूल्यमें १८ सैकड़ा घटी हुई। सन् १६२५-२६ में ४८ करोड़ रुपये मूल्यके ३० लाख टनका निर्यात हुआ। यह घटी सब पदार्थोंमें

हुई। चांवल इस वर्ष ५,१४,००० टन अर्थात् २० सैकड़ा कम भेजा गया इसी भांति गेहूं ३६००० टन अर्थात १७ सैकड़ा कम भेजा गया। जौ सन् १९२५-२६ में जहां ४२००० टन भेजा गया था वहां इस वर्ष केवल १६०० टन बाहर गया। दाल दलियेकी चीजें चना मटर आदिका निर्यात १,१८,००० टन हुआ अर्थात इसमें भी २१,००० टनकी घटी हुई। नीचे गत तीन वर्षोंके एवं युद्धके पहलेके पंच वर्षीय औसतका व्यौरा दिया जाता है:—

	युद्धके पूर्व औसत	सन् १९२४ २५	१९२५ २६	१९२६ २७
		हज़ार टन—		
चांवल	२,४४०	२,३०१	२,५८५	२,०५८
गेहूं	१,३०८	१,११२	२१२	१७६
गेहूंका आटा	५१	७८	६७	५९
दाल दलियेकी चीजें	२९१	२८६	१३६	११८
जौ	२२७	४४६	४२	२
जवार और बाजरा	४१	५	१४	१५
मकई और अन्य धान्य	४६	२६	४	१
कुल जोड़ हज़ार टन	४५०१	४२६०	३०६३	२४२६
कुल मूल्य लाख रुपया	२५,८१	६५०६	४८,०३,	३९२५

इन पदार्थोंमें मुख्य निर्यात चांवलका है जिसका सन् १९२६-२७ में ८५ सैकड़ा, गेहूंका १० सैकड़ा और दाल दलियाका ५ सैकड़ा भाग रहा।

चांवल—इसका ३३,२० लाख रुपयेका निर्यात हुआ। चांवलके निर्यातमें वरमा मुख्य है जहांसे ८७ सैकड़ा और बंगाल तथा मदराससे ५-५ सैकड़ा मालका निर्यात हुआ। सबसे अधिक माल सीलोनको गया जिसने ३,६६०००, टन लिया। स्ट्रेटसेटलमेंटको २,०४ ००० जर्मनीको १,९४,००० चीन और हांगकांगको १८८००० मिश्रको १८२,००० ग्रेटब्रिटेनको ७७,०८० और नेदरलेंडको ७४,००० टन चांवल भेजा गया।

पहले चांवल छिलका सहित रहता हैं जिसे धान कहते हैं। कृषक इस छिलके सहित चाँवल या धानको किसी स्थानीय व्यापारी या मिलके आदमीके हाथ बेच देता है। चांवलकी फसल नवम्बरके अन्तमें उतरती है और माल जनवरी महीनेमें बाजारमें आता है। मिलें अपनी नावें रखती हैं और मालके खरीददारोंको रुपया अगाऊ देकर उनके द्वारा माल खरीद करवाती है। व्यापारी धान खरीदकर मिलोंमें ले आते हैं और वहां उसका नाप होता है। धान इतने जल्दी नाप लिया जाता हैं कि नावें माल एक ही दिनमें उतार वापिस चली जा सकती है। नावमेंसे जब माल खाली किया जाता है तो उसकी कूछ छावड़ियां

भरकर तोल ली जाती है और उनका जितना वजन उतरता है वही प्रति छाबड़ीका वजन माना जाकर सब मालकी छाबड़ियां भरकर गिनती करके समूचे मालका वजन निकाल लिया जाता है। तब फिर चांवल की मिलोंमें यन्त्र द्वारा धानसे छिलका अलगकर चांवल निकाल लिया जाता हैं। इसके बाद चांवल और छिलका अलग कर लिया जाता है। चांवलकी कनी होजाती है वह भी अलग कर ली जाती है और फिर चांवल अलग बोरोंमें भर लिए जाते हैं और कनी अलग भर ली जाती हैं। बढ़िया चांवलपर जिसका अधिकतर यूरोपको चलान किया जाता है बेलनों द्वारा पालिस भी दी जाती है ये बेलन लकड़ीके होते हैं और उनपर भेड़का चमड़ा मढ़ा रहता है।

यह कहनेकी आवश्यकता नहीं है कि बाहर जो निर्यात होता है वह सबसे अच्छे मालका ही होता है। उदाहरणार्थ यहां गरम पानीमें उबालकर जो चांवल निकाला जाता है जिसे उस्ना चांवल कहते हैं और जो सबसे घटिया होता है उसका निर्यात नहीं होता है पर वह देशवासियोंके ही काम आता है। अथवा भारतीय मजदूरोंके लिए सीलोन और मलाया स्टेट्सको भेजा जाता है। इस उस्ना चांवलकी विधि इस प्रकार है। पहले धान पानीमें भिगो दिया जाता है और ४० से लेकर ८० घन्टे तक पानीमें रखा जाता है फिर गरम पानीमें २० से ४० मिनिट तक उबाला जाता हैं। उबालनेके बाद फिर वह फैलाया जाकर धूपमें सुखाया जाता है और फिर छिलके अलग किये जाते हैं। यह काम छोटी छोटी मिलोंवाले करते हैं और चांवलको इस भांति सुखानेके लिए बहुत जगहकी जरूरत रहती है यद्यपि मशीन द्वारा भी अब सुखाया जाने लगा है। इस घटिया चांवलसे गरीब जनता अपना पेट पालती हैं। बरमामें चांवलकी मिलें अनुमान ५०० मद्रासमें तीन सोसे अधिक और बंगालमें सो सवासो होगी। रंगूनकी एक अच्छी मिल दिनभरमें ४६ रतलकी ३०००० टोकरियां तक निकाल सकती हैं। पाजूनडंगकी सबसे बड़ी मिल दिनभरमें ७०० टन चावल निकाल सकती हैं। मौसमके ३ महिनोंमें मिलें दिनरात चलती हैं और इनमें चांवलका छिलकाही जलाया जाता है जिससे मिल चलानेके लिए किसी अन्य पदार्थकी आवश्यकता नहीं होती। वर्मामें ३०० से अधिक मिलें ऐसी हैं जिनमें २० या अधिक मजदूर काम करते हैं। बरमा की मिलें प्रति वर्ष ६० लाख टन चांवल तैयार करती हैं और जितना चांवल उन्हें तैयार करनेको मिलता है उससे अधिक तैयार करनेकी वे शक्ति रखती हैं।

सरकारने चांवलके निर्यातपर ३ आना प्रति मन एक्सपोर्ट ड्यूटी लगा रक्खी है जिससे प्रति-वर्ष १ करोड़ रुपयासे अधिक ही मिल जाता है। सन् १९२२-२३में १०८ लाख, सन् १९२३-२४में १,१८ लाख और सन् १९२४-२५में १,२३ लाख रुपया सरकारको ड्यूटीका मिल गया। सन् १९१८में भारत सरकारने यह नियम बनाया कि बरमासे यूरपको चांवलका निर्यात रॉयलकमीशनके सिवा अन्य किसीको नहीं करने दिया जाय और इसीलिए बरमामें एक कमिश्नर तैनात किया गया। इसी वर्ष वर्षाकी कमी रह जानेसे नवम्बर महीनेमें भारतके खाद्य पदार्थोंके

लिये एक कमिश्नर (food stuffo commissioner) नियत किया गया और चावलके कमिश्नर-का दर्जा उसके नीचे कर दिया गया। इस प्रतिबंधक प्रणाली (control scheme)का ध्येय यही था कि किस देशको कितना माल भेजा जाय इसका निर्णय सरकारके हाथमें रहे और जो चलान जावे उसके लिए सरकारसे लाइसंस लेना पड़े। ये लाइसंस तभी दिये जाते थे जब यह बात सिद्ध कर दी जाती थी कि बाहर जानेवाले चलानके लिए नियत किये हुए भावसे ऊंचा दाम नहीं दिया गया है। धानकी तेजीके कारण १९१९के मई महीनेमें सरकारको भी भावकी लिमिट बढ़ा देना पड़ी और फिर १९२०के जनवरीमें जब इस कानूनके पर्देमें सुधार हुआ तो दाम और भी बढ़ाने पड़े १९२०के अन्ततक प्रतिबंध चलता रहा पर उस समय चावलके लिए भारतीय मांगके एकदम घट जानेपर इस विषयमें फिरसे विचार करना आवश्यक हुआ। सन् १९२१में चावलके लिए रोकटोक उठा दी गई और निर्यात खुलाकर दिया गया। पर हां इस कामके लिये लाइसंस प्राप्त करना जरूरी रखा गया और यदि भाव अधिक ऊंचा चला जाय तो फिरसे प्रतिबंध कर दिया जायगा यह बात भी खुली रक्खी गई। सन्१९२१के दिसम्बरमें बरमासे चावलके निर्यातपर और सन् १९२२-की १ अप्रैलको भारतसे चावलके निर्यातपर सब तरहकी रोकटोक उठा दी गई। इस कंट्रोलसे ९ करोड़ रुपयेकी बचत रही जो रकम बरमा सरकारको वहांके प्रान्तीय सुधारके लिए सौंप दी गई।

गेहूं

गेहूं दुनियाकी सम्पूर्ण पैदावारका एक दसवां भाग भारतमें पैदा होता है और यद्यपि इसका व्यवहार भारतमें थोडा बहुत सब जगह होता है तथापि यह पंजाबका एक मुख्य पदार्थ है। सन्-१९२६-२७में इसका निर्यात २,७१ लाख रुपयेका हुआ। यह निर्यात घटता जा रहा है। इसका एक प्रधान कारण विदेशोंमें गेहूंकी पैदावारका बढ़ जाना है। सन् १९२४-२५में यहांसे ११,१२००० टनका निर्यात हुआ था वही सन् १९२५-२६में २,१२,००० टनका रह गया और उससे फिर घटकर सन् १९२६-२७में १,७६,००० टनका रह गया। सन् १९२६-२७में भारतमें गेहूंकी कुल पैदावार ८९३ लाख टनकी बैठी। सबसे अधिक गेहूं—अर्थात् १,५१००० टन—ग्रेट ब्रिटेनको भेजा गया। फ्रांसको १३,४०० टन बेलजियमको ५४०० टन इटलीको ९५० टन, अरबको १७०० टन और दक्षिण-अफ्रिकाको ३००० टन गेहूं भेजा गया। गेहूंका मुख्य निर्यात करांचीसे होता है जहांसे ९६ सैकड़ा और बम्बईसे ३ सैकड़ा माल गया। ४०,३७६ टन गेहूंका आयात भी हुआ जिसमें मुख्यतया आस्ट्रेलियासे आया। सन् १९२५-२६में ३५,४२० टन गेहूं आया था। भारतमें गेहूंका आयात बढ रहा है सन् १९२४-२५में केवल ४१९८ टन गेहूं आया था। गेहूंका आयात गत तीन वर्षोंमें किस प्रकार बढा है यह बात इन अंकोंसे स्पष्ट हो जाती है। न जाने भारतके भाग्यमें क्या बदा है कि जो धन-धान्यका भण्डार था वहीं अन्य पदार्थोंके साथ अन्न धान्यके भी आयातका मौका आने लगा है।

भारतमें सब जगह गेहूंका भाव सेरपर होता है। करांचीमें इसका व्यापार ६५६ रतलकी खंडी पर किया जाता है और मालका चलान बोरोंमें प्रति बोरा २ हंडरवेटके हिसाबसे भरकर किया जाता है। बम्बईमें खण्डी ७५६ रतलकी होती है। बम्बईसे बोरोंमें चलान दिया जाता है और प्रति बोरेमें १८२ रतलसे लेकर २२४ रतलतक गेहूं भरा जाता है। ग्रेट ब्रिटेनको साधारणतया ४९२ रतलके एक क्वार्टरपर भाव दिया जाता है। एक समय भारतीय गेहूंकी कुड़ा कचरा मिला हुआ होनेके कारण बड़ी बदनामी थी लेकिन सन् १९०७से इस बातमें बहुत सुधार हो गया है। यहांपर गेहूंको खरीदके लिए लंदन कार्नट्रेड एसोसियेशनके कंट्राक्ट किये जाते हैं जिनमें यह शर्त रहती है कि गेहूंमें २ सैकड़ा अन्य धान यथा जो मिले हो सकते हैं पर धूल बिलकुल नहीं होगा।

महायुद्धकी घोषणा होते ही संसार भरमें गेहूंका भाव ऊंचा हो गया और इसका असर भारतके गेहूंके बजारपर भी पड़ा। सन् १९१४में भारत सरकारने प्रान्तीय सरकारोंके लिये आज्ञा निकाली कि अपने प्रान्तोंमें जहां २ गेहूंका संचय हो इसकी जांच की जाय और आवश्यकता पड़े तो वह गेहूं ले लिया जाय। इससे भी गेहूंका भाव ऊंचे जानेसे नहीं रुका और तब सरकारने गेहूं और गेहूंके आटेका निर्यात दिसम्बर १९१४से १९१५तक १ लाख टनसे अधिक न हो ऐसी मनाई कर दी। तब भी भाव ऊपर चढ़ा और १९१५के फरवरी महीनेमें अगस्त जुलाईसे भाव ड्योढ़ा हो गया। सन् १९१५के अप्रैल महीनेमें सरकारने भारतसे अन्य किसीके द्वारा गेहुंका निर्यात बंद कर देनेकी ठान ली और यह काम अपने हाथमें लेनेका विचार कर लिया। उस समय गेहूंके लिये एक कमिश्नर(Wheat Commissioner)की नियुक्ति की गई और इस तरहसे सरकारने गेहूंपर अपना अधिकार (कंट्रोल) आरम्भ किया तो जो पहले गेहूंका निर्यात करनेवाले फर्म थे उन्हें कमीशन देकर अपने लिए गेहूं खरीद करनेके लिए एजंट बना लिया। गेहूंका दाम सरकार नियत करती थी और उसका ध्यान भाव घटानेकी ओर ही अधिक रहता था। इस भांति सन् १९१५के अप्रैलसे १९१६के मई तक सरकारके खाते ५¾ लाख टनसे भी अधिक गेहूंकी खरीद हुई जिसमेंसे ४,५८,०५७ टन करांची ४०८७० बंबई और २९६०६ टनका कलकत्तासे निर्यात हुआ।

सन् १९१६ के मई महीनेसे सरकारने गेहूं कमिश्नरकी आज्ञा लेकर गेहूंका निर्यात प्राइवेट फर्मोंके लिये फिर खोल दिया। लेकिन यह बात अक्टूबर महीनेतक रही और फिर सरकारने गेहूंका कन्ट्रोल अपने हाथमें लिया और रायल कमीशन सन् १९१७ के फरवरी तक स्वयं खरीद करती रही। इसके बाद गेहूं कमिश्नरको गेहूंकी खरीदके लिये फिरसे पूर्ण सत्ता दी गई। सन् १९१७ की फसल और वर्षोंकी अपेक्षा बहुत अच्छी हुई और सन् १९१७-१८ में १४॥ लाख टन गेहूंका निर्यात हुआ। इस वर्ष गेहूं कमिश्नरने रायल कमीशनके खाते १५,७८,३४६ टनकी खरीद की।

यद्यपि सन् १६१८ के अक्टूबर महीनेमें रायल कमीशनके खाते गेहूं की खरीद करना बन्द कर दिया गया था तौभी अगले वर्ष कमीशनकी तर्फसे ३,३१,४६४ टनका निर्यात हुआ।

सन् १६१८-१६ में वर्षाकी कमीके कारण पंजाबकी फसलमें अधिक हानि न हुई पर तौभी भारतमें अन्नका भाव बहुत मंहगा हो गया और इसलिये रायल कमीशनने कुछ समय पहले जो बहुतसा आस्ट्रेलियाका गेहुं खरीद रखा था उसमेंसे थोड़ा भारत सरकारने ले लिया। सन् १६१६ के मार्चसे जून तक ४ महीनोंमें यहांपर १६८००० टन आस्ट्रेलियाका गेहुं आया। सन् १६२० में फसल यहां अच्छी हुई और सरकारने ४ लाख टन गेहूं निर्यात करनेकी आज्ञा दे दी पर उस वर्ष करांचीसे केवल २२६००० टनका निर्यात हो सका। अगली साल फिर मानसूनकी खराबीके कारण फसलको धक्का पहुंचा और केवल ८०००० टनका निर्यात हुआ लेकिन आस्ट्रेलिया और अमेरिकासे ४॥ लाख टन गेहूं का आयात हुआ। सन् १६२१-२२में फसल बहुत अच्छी हुई और गेहूंकी पैदावार ९८ लाख टनकी कूंती गई। इस वर्ष निर्यात सम्बन्धी सब तरहकी रुकावटें दूर कर दी गईं और तब २२०००० टनका निर्यात हुआ।

गेहूंका आटा—

सन् १६२६-२७ में इसका निर्यात १३२ लाख रुपयेका हुआ। गत वर्ष १५६ लाख रुपयेका ६७२०० टनका निर्यात हुआ था उसकी जगह इस वर्ष ५८६०० टन बाहर गया। इसमेंसे मिश्रको १५८००, अरबको ८६००, मेसोपोटामियाको २२०० ऐडनके राज्यको ७१००, फारसको ३७०० और सिलोनको ४००० टन भेजा गया। भारतमें आटा पीसनेकी मिलें भी बड़े बड़े शहरोंमें हैं जिनमें मैदा आटा और सूजी इस भांति तीन तरहका माल निकाला जाता है पर निर्यात मुख्यतया आटेका ही होता है।

अन्य खाद्य पदार्थ—

सब प्रकारके अन्य खाद्य पदार्थोंका निर्यात २०२ लाख रुपये मूल्यके १३६००० टनका हुआ। इनमें जौ, जवार, बाजरी और चनाका निर्यात मुख्य है। जौका निर्यात यद्यपि सन् १६२५-२६ में ४२४०० टनका हुआ था सन् १६२६-२७ में केवल १६०० टनका हुआ जिसमेंसे १२०० टन अरबने लिया। जवार और बाजरीका १५३०० टन और चनेका १४००० टनका निर्यात हुआ।

चाय—

सन् १६२६-२७ में चायका निर्यात २६०४ लाख रुपयेका हुआ। सन् १६२६ में ७४०००० एकड़की खेतीमें ३६३० लाख रतलकी पैदावार हुई। चायकी खेतीमें आसाम प्रधान है जहां समूची पैदावारका ६२ सैकड़ा भाग पैदा हुआ। ३४९० लाख रतलका निर्यात हुआ, जिसमें २६ करोड़ रतल ग्रेटब्रिटेनने ले ली। चायके निर्यातमें कलकत्ता प्रधान है जहांसे समूचे निर्यातका ६६ सैकड़ा निर्यात हुआ। चटगांवसे २२ सैकड़ा और मदराससे १२ सैकड़ा माल भेजा गया।

सन् १९२६-२७ में समुद्री मार्गसे ६७ लाख रुपयेकी ७½ लाख रतल चायका आयात भी हुआ पहले सौ रतल चायपर १॥) रुपया निर्यात ड्यूटी लगती थी वह सरकारने एक मार्च सन् १९२७ से उठा दी है।

दुनियांमें चायकी मांग अनुमानतः ७२ करोड रतलकी होती है जिसमें ४० से ५० सैकड़े की पूर्ति भारतके निर्यातसे होती है। चाय चीन और सीलोनमें भी बहुत होती है पर दुनियांमें इसकी सबसे अधिक पैदावार भारतमें ही होती है। भारतमें चायकी खपत बहुत कम होती है और इसकी पैदावारका ९० प्रति शत भाग बाहर भेज दिया जाता है। भारतमें चायकी कृषि थोड़े ही समयसे होने लगी है। १८ वीं शताब्दिके उत्तरार्द्ध में ईस्ट इण्डिया कम्पनी इसका व्यापार चीनके साथ करती थी। सन १७८१ में ईस्ट इंडिया कम्पनीने चीनसे २ करोड़ रतल चाय भेजी और इसके अगले साल यह राय हुई कि इसकी खेतीके लिए भी भारतमें प्रयत्न किया जाय जिससे चीनमें यदि इसकी प्राप्तिमें कुछ बाधा उपस्थित हो तो कुछ क्षति न उठाना पड़े। सन् १८३४ तक इस विषयमें विशेष कुछ नहीं किया गया पर इस वर्ष तत्कालीन गवर्नर जेनरल लार्ड विलियम बेंटिकने-जिन्हें यह मालूम नहीं था कि चायका पौधा आसाममें पहलेहीसे मौजूद है—चायके बीज और इसकी खेतीके जानकार लानेके लिये यहांसे चीनको अफसर भेजे। आसाममें सरकारी खेतीसे जो चाय पैदा हुई वह पहले पहल सन् १८३८ में इंगलैंड भेजी गई। सन १८५२ के पूर्व यह बात प्रसिद्ध न हो सकी कि लण्डनमें चीनकी चायके साथ भारतीय चाय मुकाबला कर सकती है। इसके बाद इस काममें इतनी सफलता हुई कि सन् १८६५ में सरकारने अपना हाथ इस काम से उठा लिया। सन् १८६८ में इसका ८० लाख टनका निर्यात हुआ। भारतमें चायकी मुख्य पैदावार आसाममें होती है जहां चायके बगीचोंमें इसकी खेती होती है। अनुमानतः ७-८ लाख मजदूर चायकी खेतीपर काम करते हैं। इसकी खेती और चायके बगीचोंका काम विदेशी कम्पनियोंके हाथमें अधिक है और भारतीय मजदूरोंके साथ उनके मालिकोंके व्यवहारके लिए बहुत कुछ शिकायत रहती है। मुख्य बगीचोंके लिये चायकी फेक्टरियां भी हैं जहां चाय बिक्रीके लायक बनाई जाती है। चायकी पत्ती तोड़ लेनेपर उसे तैयार करनेके लिये बहुत कुछ काम करना पड़ता है वह सब चायकी फेक्टरियोंमें किया जाता है।

तिलहन—

सन १९२६-२७ में सब तरहके तिलहनका निर्यात १९०९ लाख रुपयेका हुआ। इसमें अलसी, तिल्ली, मूंगफली, अण्डी आदि सब पदार्थ आगये। ये सब पदार्थ यहांसे कच्चे रूपमें ही निर्यात कर दिए जाते हैं, यद्यपि बैलों द्वारा चलनेवाली घानियोंमें तेल निकालनेकी विधि यहां बहुत प्राचीन कालसे प्रचलित है एवं अब तो तेल निकालनेकी मिलें भी जगह जगह बन गई हैं। तेलके पदार्थोंके एक्सपोर्टके विषयमें फिसकल कमीशनकी रिपोर्टका कुछ भाग यहां उद्धृत किया जाता है—

तिलहनके विषयमें हम समझते हैं कि इन पदार्थोंका एक्सपोर्ट रोकना देशके लिए हितकारक नहीं होगा। तिलहनकी पैदावार यहाँकी खपतसे अधिक होती है और समस्त तैल पदार्थोंसे यदि तैल निकाला जाय, तो वह यहां खप नहीं सकता। तेलको यहांसे भर कर एक्सपोर्ट करनेमें बहुत कठिनाइयां हैं और तेलका लाभदायक एक्सपोर्ट होना कठिन है।

चमड़ा—

कच्चा और कमाया हुआ दोनों तरहके चमड़ेका निर्यात १४६८ लाख रुपयेका हुआ। इसमेंसे अधिक भाग ग्रेटब्रिटेनको गया। भारतमें चमड़ा काफी होता है और यहां इसकी को कमी नहीं है जिसके कारण चमड़ा या चमड़ेके पदार्थ बाहरसे मंगाना पड़े। किन्तु बाहरी चकचकके कारण अभी बाहरसे तैयारी चमड़ा और उसकी चीजें भारी परिमाणमें आती है। युद्धके पूर्व यहांका चमड़ेका व्यापार जर्मन कम्पनियोंके हाथमें था पर इधर चमड़ेको कमानेमें यहां कुछ उन्नति की गई है। इसीलिए अनुमानतः आधा निर्यात कमाये हुए चमड़ेका होता है।

सन् १९१९ के सितम्बर महीनेसे कच्चे चमड़के निर्यातपर १५ सैकड़ा ड्यूटी लगाई गई जिसमें जो माल ग्रेटब्रिटेन या उसके अधिकृत किसी देशको जाता है उसपर दस सैकड़ा फिरती मिल जाती थी। १९२३ की एक मार्चसे यह ड्यूटी पांच सैकड़ा कर दी गई और इसमें किसी तरहका भेद भाव नहीं रखा गया माल चाहे जहां भेजा जाय ड्यूटी सबपर समान पांच सैकड़ा कर दी गई। सन् १९२७ के फाइनेंस बिलमें लेजिस्लेटिव असेम्बली समक्ष कच्चे चमड़ेकी निर्यात ड्यूटी उठा देनीकी बात रखी गई पर असेम्बलीने इस प्रस्तावको पास नहीं किया। इससे कच्चे चमड़के एक्सपोर्टर भले ही असन्तुष्ट रहे हों पर इसके उठा देनेसे भारतमें चमड़ेको कमानेके उद्योगमें जो धक्का लगता वह बच गया।

धातु—

सब प्रकारकी धातुका निर्यात ४८४ लाख रुपयेका हुआ। इसमें लोहा, फौलाद, शीशा आदि सब धातुएं आ गईं। ग्रेट ब्रिटेनमें कोयलेकी हड़तालके कारण वहांके लोहेके उद्योगको बहुत क्षति पहुंची और इसी लिए ग्रेटब्रिटेनको भारतसे होनेवाले निर्यातमें गत वर्षकी अपेक्षा घटी रही। इधर भारतसे ये धातुएं इतने परिमाणमें जाती हैं और उधर इनके बने हुए पदार्थ यन्त्र मशीनरी आदि करोड़ों रुपये मूल्यके यहां आते हैं।

लाख

इसका निर्यात सन् १९२६-२७ में ५,४७ लाख रुपयेका हुआ। जापान फारमूसा और पूर्वी अफ्रिकामें लाखकी पैदावारके लिये बहुत प्रयत्न किया गया पर सफलता न हुई। यह थोड़ीसी

श्याम और इण्डोचाइनामें भी होती है पर वह भारतकी पैदावारका केवल २।। सैकड़ा भाग होता है। इसलिए इस पदार्थपर भारतका मानों एकाधिपत्य है। युद्धके समय सरकारको इसकी बड़ी मांग रही। ग्रेटब्रिटेनको इसकी वार्षिक आवश्यकता ५०,००० हंडरवेटकी हुई और तब यहां कलकत्तेके लाखके चलान देनेवालोंसे सरकारने ठेका कर लिया। उस समय लाखके निर्यातके लिए मनाई करदी गई और सरकार लाइसंस इस शर्तपर देती थी कि पहले उसे उसकी आवश्यकतानुसार उसके द्वारा निर्धारित जातिपर ४२ रु० प्रति मनके हिसाब काफी माल दिया जाय। युद्धकी समाप्तिके बाद सरकारने यह कंट्रोल उठा दिया। इसकी मांग अमेरिकामें भी बहुत रहती है। जहां यह ग्रामोफोनकी चूड़ी, वारनिश, लिथोंकी स्याही और बिजलीके पदार्थोंमें काम आती है. उद्योगी विदेशवाले इसका प्रतियोगी पदार्थ खोजनेकी बहुत चेष्टामें है पर अभीतक ऐसा कोई पदार्थ नहीं मिल सका जिससे लाख या चपडीका काम चल सके।

ऊन(कच्चा)

सन् १९२६-२७में कच्चे ऊनका निर्यात ३,६३ लाख रुपये मूल्यके ४।। करोड़ रतलका हुआ। इसका निर्यात मुख्यतया ग्रेटब्रिटेनको होता है जिसने ४,०५ लाख रतल ऊन लिया। कच्चे ऊनका निर्यात पहले पहल सन् १८३४से आरम्भ हुआ जब ७०,००० रतल माल भेजा गया। सन् १८३६में १२ लाख रतल भेजा गया और सन् १८७२में २४० लाख रतलका निर्यात हुआ। महायुद्धके समय सैनिक आवश्यकताके लिए ऊनी कपड़ेका कंट्राक्ट सरकारने भारतीय मिलोंके साथ किया तब यहांकी मिलोंको ऊनकी प्राप्तिमें सुगमता रहे इसलिए कच्चे ऊनके निर्यातमें सरकार द्वारा रुकावट डाली गई।

भारतमें भी ऊनी कपड़ा—यथा काश्मीरमें पट्टो और पशमीना आदि—बहुत बढ़िया बनता है। यहांसे कम्बल और गलीचोंका निर्यात भी होता है सन् १८२६-२७में इनका निर्यात ७१½ लाख रुपयेका हुआ जिसमेंसे ३७ लाखका ग्रेटब्रिटेनको हुआ। ये चीजें अमेरिकाको २६ लाख रुपयेकी भेजी गई।

रबड (कच्चा)

२,६० लाख रुपयेका २,३० लाख रतल रबड़ बाहर भेजा गया। ग्रेटब्रिटेनको १ करोड़ रतल और अमेरिकाको २३ लाख रतल भेजा गया। यद्यपि कच्चा रबड़ यहांसे इतना बाहर जाता है फिर भी यहांपर रबड़के पदार्थ—यथा मुख्यतया मोटरोंके ट्यूबटायर आदि—का आयात भारी परिमाणमें होता है।

खल (*Oilcakes*)

इसका निर्यात २,५३ लाख रुपयेका हुआ। इसके मुख्य खरीददार ग्रेट ब्रिटेन, सीलोन और जर्मनी रहे।

तमाखू

(कच्चा माल) युद्धके पूर्व यहांसे तमाखूका एक्सपोर्ट प्रतिवर्ष २३ लाख रुपयेका औसत था। सन् १९२६-२७ में इसका निर्यात ९७ लाख रुपयेका हुआ। इधर तमाखू भेजनेमें भारतने कदम बढ़ाया तो उधर बाहरसे धुआं उड़ानेकी चीजें सिगरेट आदि मंगानेमें भी कुछ कमी न रखी। युद्धके पूर्व ७१लाख रुपयेकी सिगरेट आदि आई तो सन् १९२६-२७ में कलेजा जलानेके साथही साथ इन पदार्थोंके लिये देशका २½ करोड़से भी अधिक रुपया बाहर भेज दिया। यह बात इम्पोर्ट विषयमें लिखी जाचुकी है।

भारतीय व्यापारके इस छोटेसे इतिहाससे यह स्पष्ट प्रगट होजाता है कि पहले व्यापारकी क्या दशा थी और वह किस तरहका था। उसके बलपर यहां सब कुछ था, धनकी नदी बहती थी और उद्योग एवं कलाकौशलकी बढ़वारी थी। आज यहांका व्यापार जो भी और जैसा भी हो यह स्पष्ट है कि यहांपर उद्योग धंधेकी कमी है, कला-कौशलकी हीनता है और जो कुछ उद्योग धंधा है उसकी दशा भी संतोषजनक नहीं। हां यहांके व्यापारसे यह बात अलबत्ता है कि उससे विदेशोंका काम और उनका भरण पोषण चलता है। यहांके व्यापार, और उद्योग धंधोंसे विदेशियोंके मौजमजे और गुलछर्रे उड़ते हैं चाहे भारतवासी भूखे पेटही रहें और उन्हें पेट भर खानेको भी चाहें न मिले।

भारतके व्यापारमें चाहे यहांसे जानेवाले मालको समझिए चाहें यहां आनेवालेको लीजिए सबका मूल विदेशी बाजारोंकी इच्छा और खेल पर निर्भर करता है। हमारे यहांके बाजार विदेशी बाजारोंके आधारपर चलते हैं और सौदेके स्थानोंमें जानेपर यही सुनाई देता है "आज विलायत क्या आई ?" अथवा "अमेरिकाका क्या तार आया" ? यदि विलायतकी या अमेरिकाकी खबर तेज आती है तो यहां तेजी आ जाती है और मन्दे की खबर आनेपर यहां भी मन्दी हो जाती है। तात्पर्य यह है कि हमारा व्यापार, जैसे विदेशी नचावें, नाचता रहता है।

इसी भांति यहांके व्यापारसे विदेशी जहाज तार बीमा कम्पनियां एवं बैंक लाभ उठाते हैं क्योंकि ये सब कारबार भी मुख्यतया विदेशी कम्पनियोंके ही हाथमें है। इस भांति जिस व्यापारसे भारतमें उद्योग धन्धेकी, कला-कौशलकी बढ़वारी न हो और न ऊपरी अन्य कारबार—यथा जहाज, बीमा और बैकिंग आदि—ही भारतवासियोंके हाथमें आवें, तबतक अभी भारतीय व्यापारकी उन्नति कैसे कही जा सकती है। इस लिये भारतके व्यापारकी उन्नतिके लिए इन सब बातोंकी ओर समुचित ध्यान देनेकी पूर्ण आवश्यकता है।*

मोहनलाल बड़जात्या

नोट :—भारतके इस छोटेसे इतिहास लिखनेमें मैंने अंग्रेजीकी कई पुस्तकोंसे यथा "Trade Tarrif & Trans port in India" "Wealth of India" Review of the trade of India" आदिसे एवं हिन्दीकी सुविख्यात मासिक पत्रिका "सरस्वती" "माधुरी" और "सुधा" में प्रकाशित मेरे व्यापार विषयक लेखोंसे विशेष सहायता ली गई है। लेखक।

बम्बई-विभाग

BOMBAY-CITY.

पूर्वकालीन परिचय

भारतके प्राचीन इतिहासकी भांति बम्बई द्वीपका प्राचीन इतिहास भी आज उपलब्ध नहीं है। असंख्य शताब्दि-समूहने इसपर भी अभेद्य अन्धकारका पर्दा डाल रक्खा है, जो पुरातत्त्ववेत्ताओंकी एक मात्र सम्पत्ति, ऐतिहासिक प्रमाणके प्रसंगवश मिल जानेपर कभी-कभी आंशिक रूपसे उठ जाता है और अन्धकाराच्छादित इतिहास के पृष्ठोंपर सहसा क्षणिक प्रकाश की झलक दौड़ आती है। परिणाम यह होता है कि नवीन आशाएं बलवती हो उठती हैं। ऐसे कई अवसर आये हैं, जब इस द्वीपपुञ्जके प्राचीन इतिहासपर प्रकाश अवश्य पड़ा है, फिर भी अभी तक इसका शृङ्खलाबद्ध इतिहास लेखबद्ध नहीं हो पाया है

इस द्वीपपुंजके प्राचीन इतिहासकी खोजमें लगे हुए व्यक्तियोंसे यदि यह पूछा जाय कि यह द्वीप समूह कहांसे निकल आया; तो एक सामान्य व्यक्तिकी दृष्टिमें ऐसा प्रश्न पूछना ही धृष्टता समझी जायगी परन्तु बात वास्तवमें ऐसी नहीं है। जहां कहीं भी इतिहासको अपने वास्तविक स्वरूपके निर्णय करनेका बल मिला है वहां अन्य प्रमाणोंकी अपेक्षा भूगर्भ-विद्या-मण्डित तर्कका ही उसे आश्रय लेना पड़ा है। अतः यह मानना ही पड़ेगा कि भूगर्भ विद्याका इतिहासकी छानबीनसे अत्यन्त निकट तम सम्बन्ध है।

भूगर्भ विद्याके सिद्धांतानुसार यदि इस भूखण्डकी परीक्षाकी जाय, तो यही सिद्ध होगा कि यह सुविस्तृत भूभाग कुछ काल पूर्व कमसे कम सात विभागोंमें अवश्य विभाजित था। इतना ही क्यों सन् १८८५ के बंबई टाईम्समें उद्धृत डा० लीथ की *खोजके आधार पर यह भी सिद्ध होता है कि कुछ शताब्दी पूर्व यह द्वीपपुंज भारतके प्रधान भूभागका एक अंग था और उसीसे मिला हुआ था। परन्तु ज्यों-ज्यों समय व्यतीत होता गया त्यों त्यों प्रकृतिके स्वाभाविक गुणानुसार भूपृष्टके ऊंचे-नीचेपनमें अधिक परिवर्तन हो गया और एक समय ऐसा भी आया, जब यह उससे अलग हो गया; तथा इसने अपना स्वतन्त्र अस्तित्व स्थापित कर लिया। इस द्वीप समूह की भूमि स्वयं इस बातका प्रमाण दे रही है कि उसने रत्नागर सागरके आतंककारी थपेड़ोंसे भारतके पश्चिमीय तटकी जहां रक्षाकी है, वहां परिवर्तन प्रवर्तक अनिष्टकारी भूचालोंका स्वयं अनुभव किया है। सिउरीसे वर्ली तकके भूभागकी परीक्षा भूगर्भवेत्ताओंकी दृष्टिसे यदि की जाय तो पता चलेगा कि भूगर्भकी छिपी हुई अनन्त ज्वालाने अपना प्रकोप उसे अवश्य दिखाया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि इस प्रांतकी समुद्र तटवर्त्ती भूमि जहां ऊंची नीची हो इसकी सीमा बनी है वहां स्वयं इस द्वीप समूहके समीपकी समथल भूमि अगाध समुद्रके गर्भमें निमग्न हो गयी है।

---

* वर्लीमें खोदते समय मेंढ़कोंकी हड्डियां मिलीं और १९ वीं शताब्दीके अन्तमें जब वर्तमान प्रिन्सेस डाक नामक बन्दर-की खुदाई हो रही थी उस समय ३२ फीट नीचे जलचर और एक दबा हुआ जंगल मिला। इस जंगलमें खैर आदिके वृक्ष थे जो बम्बईके समीपवर्त्ती जंगलोंमें अधिक संख्यामें पाये जाते हैं। अतः सिद्ध है कि कोई समय ऐसा भी था जब यह जंगल भूमि पर थे।

अतः उपरोक्त विवेचनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि यह द्वीपपुञ्ज अभी कुछ वर्ष पूर्व जलराशिसे प्रकट नहीं हुआ वरन् यह बहुत ही प्राचीन भूखण्ड है। इसका आकार प्रकार अंग्रेजी भाषाके (H) अक्षरके समान था और सात छोटे २ द्वीपोंका यह एक द्वीपपुञ्ज था, जो आज एक भूभागका स्वरूप ग्रहण कर १२ लाखके जन समाजको आश्रय दे रहा है।

ईस्वी सन् से पूर्वका इतिहास इस बातका कोई भी विश्वासोत्पादक प्रमाण नहीं देता कि इस द्वीप पुञ्जका स्वतन्त्र रूपसे कोई भी राजनैतिक अस्तित्व था, परन्तु भारतके पौराणिक युगमें यह द्वीपपुञ्ज 'अपरान्तक' प्रदेशमें माना जाता था।

अशोकके समयमें इस द्वीपपुञ्जके समीपवर्त्ती सोपार (ophir) कल्याण तथा सिम्मुला (chenl) की चर्चा दूर देशोंमें पुरानी हो चुकी थी। * वहांके व्यवसायी संसारके अन्य भूखण्डोंकी यात्रा करते थे। इसी प्रकार मिश्र, फिनीशिया तथा बैबिलोनियांके व्यवसायी यदि अन्य स्थलोंको जाते समय इस द्वीपपुञ्जमें कुछ कालके लिये ठहर गये हों, तो कोई आश्चर्य्य नहीं।

अशोकके बाद शतकरणी अथवा शतवाहनका दौड़-दौड़ा यहाँ रहा। डा० भण्डारकरके मतानुसार यह समय लगभग १५० ई० का है। इसी प्रकार इस द्वीपपुञ्जके समीपके थाना नामक स्थानके प्राचीन कागजोंके आधारपर कहा जा सकता है कि पार्थिन बादशाहके समय दूर देशोंसे लोग व्यवसाय करनेके लिये यहां आया करते थे। अतः इन प्रमाणोंसे यही सिद्ध होता है कि इस द्वीपपुञ्जके अस्तित्वका पता पूर्वकालमें भी संसारको था। परन्तु यह भी इसीके साथ सिद्ध होता है कि चाहे मिश्र, मलाका, चीनकी यात्रा करते हुए यूनानी, अरब तथा फारसवालोंने भले ही इस द्वीपपुञ्जमें क्षणिक विश्राम किया हो, पर किसीने भी यहां अपना अड्डा जमानेकी कल्पना कभी नहीं की।

बस्तीका आरम्भ

इस द्वीपपुञ्जमें बस्ती किस प्रकार आरम्भ हुई, इसकी विवेचना यदि इतिहासकारोंकी दृष्टिसे की जाय, तो पता चलेगा कि इस द्वीपपुञ्जके आदि निवासी जल-मार्गसे नहीं, वरन् स्थलके मार्गसे यहां आये और छोटे-छोटे झोंपड़े डालकर रहने लगे। यह युग सन् ईस्वीसे पूर्वकालका है। यहाँ जिन लोगोंने सबसे प्रथम प्रवेश किया, वे भारतके प्रधान भूभागसे आये और अपनेको कुलिस या कोली कहते थे। इनका रंग काला था और ये मछली मारकर ही कालक्षेप करते थे। कुलिस अथवा कोली शब्दकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें पुरातत्ववेत्ताओंका मत है कि इन शब्दोंका सम्बन्ध भी अनार्य भाषाओंसे है। सम्भवतः ये शब्द द्राविड़ समुदायकी भाषाके हैं। चाहे जो हो; परन्तु ये लोग आज भी अपना अस्तित्व अक्षुण बनाये हुए हैं।

प्रारम्भमें इन लोगोंने इस द्वीपपुञ्जका कौन सा भाग अपने निवासके लिये उपयुक्त माना, यह कहना कठिन है। परन्तु इस नगरके कितने ही वर्तमान नामोंसे इतना तो अवश्य ही अनुमान हो जाता है कि किसी युगमें यहांके आदिम निवासियोंके झोंपड़े इसीके आसपास रहे होंगे। वर्तमान 'कोलावा' स्थान पूर्वका कोल-भाटसा प्रतीत

* कठियावाड़के गिरिनार और अफगानिस्थानकी शाह बाजगढ़ीवाले अशोकके स्तम्भोंमें इस द्वीप पुंजकी चर्चा है देखिये Inscriptions of Ashoka vol II Page 24

होता है। भटका अर्थ प्रायः रियासतसे मिलता जुलता है, इस प्रकार कोल-भटका यदि कोई अर्थ हो सकता है तो यही है, कि कोलियोंकी रियासत। अतः ऐसा अनुमान होता है कि वर्त्तमान कोलावाके समीप ही इस द्वीप-पुञ्जके दो दक्षिणी द्वीपोंमें ही प्रथम कहीं पर बस्ती बसाना आरम्भ हुआ होगा।

बस्तीके तीसरे स्थानका पता वर्त्तमान माँडवी मुहल्लेकी कोलीबाड़ी अथवा डोंगरी कोलीवाड़ेके कितने ही जर्जरित घर अब भी दे रहे हैं। इस स्थानसे आजकल समुद्र दूर है, पर यह भी युगके परिवर्तनकारी स्वरूपकीही एक कला मात्र है। कोलियोंके झोंपड़े इस बीसवी शताब्दीके ईंट रोड़ेमें दब गये हैं अवश्य, पर माण्डवीकी 'दरिया स्थान' नामक एक गली आज भी समुद्र-तटकी स्मृति दिला रही है।

इसी प्रकार वर्त्तमानका 'कैवेल' स्थान (जिसमें आजकल धोबी तलाव भी सम्मिलित है) भी किसी छिपे हुए इतिहासकी स्मृति दिलाता है। पुरातत्ववेत्ताओंका मत है कि 'कैवेल' शब्द 'कोल-बार' शब्दसे ही बिगड़ कर बना है। अतः कोलबार अर्थात् कोलियोंके झोंपड़ेसे भी यही सिद्ध होता है कि सम्भवतः कालबादेवी रोड, पुरानी हनुमान गली आदिके विस्तृत भागपर भी किसी समय कोलियोंके झोंपड़े रहे होंगे।

इस द्वीपपुञ्जमें टेकरियोंकी कमी नहीं थी। टेकरियों पर भी बस्ती बसी हुई थी जो टेकरी परके गाँव कहाते थे, जैसा कि वर्त्तमानका गिरगांव सूचित करता है। यह गांव भी गिरि अर्थात् टेकरी पर ही बसा हुआ था। कैवेलसे गिरगांव जाते हुए जो मूंगभट्ट लेनी पड़ती है वह भी यही सूचित करती है कि मूंगा नामके किसी कोलीकी यहां जागीर सी थी। भट्टका अर्थ जागीर होती है।

इस द्वीपपुञ्जके चौथे द्वीपमें भी कोली ही रहते थे जैसा कि वर्त्तमानके मझगांव और और धुरुपदेव मन्दिर से सिद्ध होता है। मझगांवमें भी कोली-बाड़ी है। कोली आरम्भसे ही मछली मारकर जीवन निर्वाह करते आये हैं, परन्तु इस गांववालोंने अपना व्यवसाय भी मछली मारना ही रक्खा। अतः इनके झोंपड़ोंके समूहका नाम ही मच्छ-गांव पड़ गया।

इस द्वीप पुञ्जके आदि निवासियोंके सम्बन्धमें किये गये उपरोक्त विवेचनसे यह बात निश्चिय हो जाती है कि अशोकके बाद जब शतकरणी राजवंशके हाथमें इस द्वीपका शासन भार गया, तब भी इस द्वीपमें कोली ही रहते थे। जिस युगमें दूर देशोंसे व्यवसायी आकर थानेके पासका स्थान अपने विश्रामके लिये निश्चित करते थे उस समय भी कोली ही इस द्वीपपुञ्जमें बसे हुए थे।

यह तो निश्चित ही है कि इस द्वीप पुंजके आदि निवासी कोली थे। ये लोग अनार्य परिवारके हैं। इनकी भाषा, इनका भेप और इनके भाव सभीमें अनार्य सभ्यताकी झलक आज भी मिलती है। ये लोग भारतके प्रधान भूभागसे स्थल मार्ग द्वारा इस द्वीप पुञ्जमें गये, परन्तु इनकी आमदरफ्त बराबर जारी रही। पासके समुद्रतटवर्ती भूभाग परके प्रभावसे सदा ये लोग प्रभावित पाये गये हैं। कोकन प्रदेशके शासनके साथ ही इस द्वीपपुंजका भी शासन सूत्र गुंथा हुआ था। जैसे-जैसे शासन परिवर्तन इस प्रान्तमें हुए, वैसे-वैसे परिवर्तनका प्रमाण इस द्वीप पुञ्जके आदि निवासियोंमें भी पाया जाता है। सम्भवतः एक युग यहां ऐसा भी आया होगा, जब यहां मौर्य शासन रहा होगा। क्योंकि किसी युगमें यहांके कोली अपने नामके पीछे 'मोरे शब्द जोड़ते

थे। इसके उपरान्त ऐसा भी समय यहां अवश्य आया होगा, जब यहां पर 'चालुक्य' राज परिवारका शासन रहा हो। क्योंकि कोली लोगोंके नामके पीछे 'चोलके' शब्द भी जुड़ा हुआ पाया जाता है।

इस द्वीपपुञ्जकी मलाबार पहाड़ीका इतिहास भी यही बताता है कि कोकन प्रदेशका सम्बन्ध इस द्वीप-पुञ्जसे रहा है। बालकेश्वरकी सेवा करनेके लिये दूरसे लोग यहां आते थे और वह युग सन् ९६७ ई० से १२९२ ई० के बीचका है। यद्यपि आज वह प्राचीन शिवमन्दिर नहीं है, पर चौपाटीसे मलबार पहाड़ीपर चढ़ते हुए 'लेडीज़ जिमखाना' के पासका 'सिरी रोड' नामक मार्ग पूर्वकालकी पवित्र स्मृति दिलाही देता है। 'सिरी' शब्द 'सीढ़ी' का सूचक है। यह वही पुराना मार्ग है जिससे होकर सिलहरा राजवंशी भक्तमण्डलीके साथ श्री बालकेश्वरजीका दर्शन करने जाया करते थे। यह प्राचीन मन्दिर भी भारतके अनेक मन्दिरोंके समान समयकी भीषण चोटोंसे आज मिट्टीमें मिल गया है।

कोकन प्रदेशपरसे अनार्य-शासनकी जड़ उखड़ी और इस द्वीपपुञ्जपर आर्यसभ्यताका सूर्य चमका। कोकन प्रदेशमें आर्यसभ्यता-मण्डित शासनकी आधारशिला रखनेका श्रेय मुख्यतया देवगिरिके शासकोंको है। डा० फ्लीट० सी० आई० ई० के मतानुसार देवगिरिके नरेश इतिहासप्रसिद्ध रामदेवका अच्युत नायक नामक एक प्रधान, षष्टी द्वीप (वर्तमान साल्सेट) पर सन् १२७२ ई० के लगभग राज्य करता था। उस समय समस्त कोकन प्रदेश देवगिरिके शासनके अन्तर्गत था। परन्तु दिल्लीके यवन शासक अलाउद्दीन खिलजीने देवगिरि पर जब विजय प्राप्त की तो राजवंशकी रक्षाके उद्देश्यसे रामदेवने अपने द्वितीय पुत्र भीमदेवको राजगुरु भरद्वाज गोत्री पुरुषोत्तम पंथ कवले तथा अन्य ११ सामन्तोंके साथ जलमार्गसे कोकन प्रदेश भेज दिया। पर मार्गमें ही महाराज भीमदेव परनेटा, बर्डी, संजान, दमन तथा शिरगांवके किलोंपर अधिकार कर माहिम (बम्बई) आ पहुंचे। यह स्थान निर्जन तो अवश्य था, परन्तु इसके प्राकृतिक सौन्दर्यसे रीझकर वे यहां पर ठहर गये। आपने अपने लिये यहां पर राज मन्दिर बनवाये और साथवालोंके लिये योग्य स्थान निर्माण कराये। आपने शासन प्रबन्धकी सुविधाके लिये अपने राज्यको १२ तालुकोंमें विभाजित कर दिया। तथा अपने राजगुरुको मलाड़ प्रांत सूर्य ग्रहणके अवसरपर दानकर दिया। *महाराजने इस द्वीप पुञ्जका नाम महिकावती (माहिम) रक्खा।

इस दान पत्रमें प्राप्त अधिकारोंका उपभोग राजगुरुके वंशज जो पटैल कहाते हैं, बाजीरावके समय तक करते रहे हैं। क्योंकि बाजीराव पेशवाने इन लोगोंके अधिकारके सम्बन्धमें :एक पत्र बम्बईके अंग्रेज गवर्नरको लिखा था। जिसके उत्तरमें यहांके गवर्नर ज़ानहोर्नने ६ मार्च सन् १७३४ को एक पत्र लिखा था।

राज परिवार और राज कर्मचारियोंके वंशजोंकी बस्तीका विस्तार भी क्रमशः हो चला। पूर्वकी कोल नामक अनार्य जातिको आर्य सन्तानके समीप बैठ सभ्य बननेका सुअवसर मिला। राजसत्ताने अपन

---

* Vaidys ac uut appendix के पृष्ठ ८ पर लिखा हुआ है कि उक्त दानपत्र आज भी मलाड़ (बम्बईका उपनगर) में राजगुरुके वंशजोंके पास है। उस पर लिखा हुआ है कि 'शाके १२२० के माघमासमें महाराजाधिराज बिम्बशाहने गोविन्द मितकरीकी बिधवा चंगूनावाईसे मलाड़ प्रांतको सरदेसाई और सरदेश पाण्डेका वतन २४ हजार रायल्स Rayals दे मोल लिया और एक वर्षके बाद राजगुरु पुरुषोत्तम पंथ कवलेको दान कर दिया।

सभ्यताका प्रसार किया और महाराजके साथ आये हुए राजपरिवारने प्रचार कार्यमें जीवन फूंक दिया। आर्य परिवारने अपनी अपनी वंशपरम्पराके अनुसार हिन्दू संस्कृतिका बीज वपन किया। यह सब हो ही रहा था, कि सन् १३०३ ई० (शाके १२२५) में महाराज भीमदेवका स्वर्गवास हुआ और सन् १३१८ में दिल्लीके यवन शासक मुबारकने महिकावती (माहिम) पर आक्रमण कर दिया, परन्तु हिन्दू शासनका अन्त सन् १३४८ ई० के बाद हुआ और उसके पश्चात यहां पर गुजरातके मुसलमानोंका राज्य स्थापित हुआ। पर उन्होंने भी अधिक समय तक शासन नहीं किया और सन् १५३४ की वसई वाली सन्धिके अनुसार यह द्वीपपुञ्ज पुर्तगालवालोंके हाथ आया और सन् १६६२ में यह दहेजके रूपमें अंग्रेजोंको मिला।*

आजकी बम्बईके आकारको देखकर यह अनुभव कर लेना चाहिये कि ईस्ट इण्डिया कम्पनीको अपनी कितनी शक्ति व्ययकर इस स्वरूपको संवारना पड़ा होगा। बम्बई गजेटियरके मतानुसार कहा जायगा कि—

'बम्बई द्वीप मझगांव, सिउरी, पटेल, तथा वर्ली सन्धिके अनुसार मिलाये गये। माहिम, शिव, धरनी, और बदला बलात् लिये गये; तथा कुलावा वहांके महाजनोंकी शर्तें पूरी कर खरीदा गया।

इस प्रकार वर्तमान बम्बई बनी।

इस द्वीपपुंजके शैशव कालीन इतिहास पर एक दृष्टि डालते ही कहना पड़ेगा, कि यहांकी रंगभूमिपर कितनेही पात्रोंने समय २ पर यहां आकर अपना २ कौशल दिखाया है कालकी कालिखमें अलख होते हुए भी उनके कार्योंकी स्मृतिके एक मात्र आधार चिह्न आज भी अनुभवमें आते हैं। असभ्य कोली जातिने आकर इस द्वीपपुञ्जमें झोंपड़े खड़े किये और मछली मार कालक्षेप भी कर डाला। मलखेद राजवंशने यहां सिक्केका प्रचार किया। सिलहरा राजवंशने मन्दिर निर्माण कराये और देवगिरिके शासकोंने राजव्यवस्था की आधारशिला रक्खी, जिससे यहां कला-कौशल और उद्योग-धन्धाका सूत्रपात हुआ। अतः स्पष्ट ही है कि इस हिन्दू कालीन युगमें ही इसके वास्तविक स्वरूपका निर्माण हुआ, परन्तु इसी बीच इस्लामकी बांग सुनाई दी और देखते देखते द्वीपपुञ्ज निकुञ्ज पक्षान्धताकी वन्हिसे भस्मी भूत हो भूमिमें मिल गया।

नाम करण

इस द्वीपपुंजका नाम बम्बई कैसे पड़ा, इस सम्बन्धमें पूरा मतभेद है। पौराणिक युगमें जहां यह द्वीपपुंज 'अपरान्तक' प्रदेशके अन्तर्गत माना जाता था वहां महाराज भीमदेवके समयमें 'महिकावती' के नामसे सम्बोधित हो यह अपनी प्रतिष्ठा प्रस्थापित करनेका सूत्रपात करता है। परन्तु पुर्तगालवालोंके पुराने कागजोंमें 'बाम्बेम' के नामसे इसका सम्बोधन होता है। इसी आधारको लेकर लोग कहते हैं कि पुर्तगालवालोंने ही इसे बम्बई कहना आरम्भ किया होगा। परन्तु यह युक्ति-युक्त नहीं प्रतीत होता और यही कारण है कि पुरातत्ववेत्ता इस

---

*आजकी बम्बईके आकारको देखकर यह अनुभव कर लेना बहुत आसान है कि ईष्ट ईण्डिया कम्पनीको अपनी कितनी शक्ति व्ययकर इसके स्वरूपको संवारना पड़ा होगा। बम्बई गजेटियरके मतानुसार कहा जायगा कि—बम्बई द्वीपमें मझगांव, सिउरी, पटेल तथा वर्ली सन्धिके अनुसार मिलाये गये। माहिम, शिव, धरनी और बदला बलात् लिये गये; तथा कुलावा बवांके महाजनोंकी शर्तें पूरी कर खरीदा गजा। इस प्रकार बर्तमान बम्बई बनी।

प्रमाणको कोई महत्व नहीं देते। पुर्तगालकी भाषामें Buon बों का अर्थ अच्छा होता हैं और Bahia बहियाका अर्थ बन्दरगाह होता है अर्थात Buonbahia बाँवहियाके अर्थ अच्छे बन्दरगाहके होते हैं। इस एक बात पर ही लोग अधिक जोर देते हैं कि एक अच्छा बन्दरगाह समझ उन्होंने ही इसे बम्बई कहना आरम्भ किया होगा। पर यदि ऐसी ही बात होती तो पुर्तगालवालोंके कागजोंमें भी इसी अर्थके आधारपर इस द्वीपपुंजका नाम Buonbahia लिखा रहता परन्तु वहां तो यह शब्द ही नहीं है। उनके कागजोंमें Buonbahia के स्थानपर इस द्वीपपुंजको Bombaim लिखा जाता था ऐसी दशामें यह युक्ति ठीक नहीं है। दूसरी युक्ति यह है कि दिल्लीके यवन नरेश मुबारकने माहिम और साल्सेर पर अधिकार कर इसका नाम अपने नामपर रख दिया। परन्तु इसका भी कोई लिखित प्रमाण नहीं मिलता कि मुबारक बादशाहने अपनी विजय स्मृति चिरस्थायी रखनेके लिये कोई ऐसा कार्य किया था यदि ऐसा होता तो मुबारकके नामके पीछे इसे मुम्बई न कहकर मुबारकपुर या मुबारकाबाद कहा जाता। अतः यह युक्ति भी उचित नहीं जचती, तीसरी बात यह कही जाती है कि इस नामका सम्बन्ध मुम्बादेवीसे ही है। परन्तु यह मुम्बा शब्द ही कहांसे आया, क्या किसी कोलीका नाम था जिसने यह मन्दिर बनवाया। बात यह भी ऐसी नहीं है। हां यदि कोई बात युक्तियुक्त है तो यह कि महा-अम्बा उस आराध्य शक्तिका सम्बोधन था जिसे इस द्वीपके आदि निवासी पूजते थे। महा अम्बा शिवप्रिया अथवा भवानी सब एक शक्ति विशेषके नाम हैं और ये समय २ पर अम्बा, अम्बिका, महाअम्बाके नामसे संबोधितकी जाती हैं। रह गयी आई शब्दकी वह भी स्पष्ट ही है। महाराष्ट्र भाषामें मां शब्दके लिये आईका प्रयोग प्रचलित है। अतः यह युक्तियुक्त है कि यहांके आदि निवासी जो निर्विवाद हिन्दू थे, उन्होंने ही अपनी आराध्यशक्तिके नामपर इस द्वीपपुञ्जको माम्बई अर्थात् मुम्बईका नाम दिया है।

द्वीप पुंजसे नगर

इस द्वीप पुंजके क्रमागत विकासके इतिहासकी एक एक पंक्ति व्यवसायकी स्थापना, आरम्भ और उन्नतिके इतिहासकी मूर्तिमान प्रतिमा है। द्वीपपुंजके विभिन्न टापुओंको एकमें सम्मिलित कर वस्तीके लिये तैयार करानेके उपक्रमकी ओर यदि ध्यान से देखा जाय, तो यह स्पष्ट हो जायगा कि इस कार्यको इच्छित स्वरूप देनेमें व्यवसायी कम्पनियोंने ही प्रधान भाग लिया था। उनके भगीरथ प्रयत्नका ही यह सुपरिणाम है कि आज यहां यह सुविस्तृत नगर हम देख रहे हैं। अतः इस द्वीपपुंजके इतिहासके इस पृष्ट पर भी एक सरसरी दृष्टि डाल देना उचित होगा।

इस द्वीपपुंजको वस्तीके योग्य बनानेमें अगाध समुद्रके गर्भसे भूमि निकाली गयी है। इस प्रकारके आयोजनकी कल्पना सबसे प्रथम श्रीयुत सिमाऊ वोथेलो Simao Botelho नामक एक पुर्तगीज़ महाजन के मस्तिष्कमें उत्पन्न हुई। उन्होंने पुर्तगाल नरेशका ध्यान इस ओर आकृष्ट किया। पुर्तगाल वालोंके हाथसे जब यह द्वीपपुंज अंग्रेजोंके हाथमें आया, तो ईस्ट इण्यिा कम्पनीके बोर्डके डायरेक्टरोंने पूर्वकी आयोजनाको जारी रखनेके पक्षमें अपने बम्बई वाले प्रतिनिधिको आदेश दिया। ईस्ट इण्डिया कम्पनीने सूचना निकालकर जमीन पूरने वालोंका उत्साह बढ़ाया और नाम मात्रका किराया लेकर निकाली हुई भूमिको निकालनेवालोंके अधीन कर उन्हें और भी प्रोत्साहित किया। परन्तु फिर भी इच्छित सफलता न मिल सकी। ब्रिटिश प्रबन्धकी एक शताब्दी व्यतीत हो गयी, पर वैयक्तिक प्रयत्नसे इच्छित फलका रसास्वादन न मिल सका।

ईस्ट इण्डिया कम्पनीने इस द्वीपपुंजका प्रबन्ध भार ले सबसे प्रथम आत्मरक्षार्थ एक दुर्ग निर्माण करनेका निश्चय किया और समुद्र पूरकर जलसे स्थलकी रचना करनेका आयोजन भी आरम्भ कर दिया। कम्पनीकी कल्पनामें यह बात इसलिये आयी, कि वह भूमि पूरकर नमक बनानेका कार्य करना चाहती थी और इसी उद्देश्य से यह कार्य भी अविलम्ब आरम्भ हो गया। सबसे प्रथम महालक्ष्मी और वर्लीके बीचसे जलराशि निकालकर भूमिकी रचना करनेका कार्य हाथमें लिया गया। इसके बाद द्वीपके मध्य भागमें समुद्र पूरने का कार्य आरम्भ हुआ, इस प्रकार आरम्भ होनेवाले कार्यने प्रारम्भमें बालशक्तिसे ही उन्नति करनी प्रारम्भ की, परन्तु कुछ काल व्यतीत हो जानेके बाद इस ओर लोगोंका ध्यान अधिक उत्साहसे जाने लगा और फल यह हुआ, कि व्यक्तिगत उद्योगके स्थानमें सामूहिक शक्तिसे काम आरम्भ हुआ। बम्बई टाइम्सके ता० ६ फरवरी सन् १८३६ वाले अंकसे ज्ञात होता है कि सन् १८३६-३७ के बीच कोई सुदृढ़ कम्पनी संगठित की गयी थी, जो कुलाबाकी ओर जोरोंका काम कर रही थी। सन् १८४४ की रेलवे कमेटी रिपोर्टसे पता चलता है कि वाड़ी बन्दर और चिंच बन्दरके बीचकी भूमि भी जलराशिके गर्भसे निकल चुकी थी। इसी प्रकार बम्बई क्वार्टरली रिव्ह्यू नामक मासिक पत्रका भी यही मत है, कि सन् १८५५ ई० तक द्वीपका अधिकांश भाग पूरा जा चुका था। इतना होते हुए भी इस कार्यका भार उठाने वाली कम्पनियोंके पास आर्थिक सामर्थ्य पर्याप्त न होनेसे इच्छित लाभ और मनचाही सफलता अभी तक न मिली थी; पर इसी समय अमेरिकन सिविल वार नामक घरेलू युद्धके छिड़ते ही इस द्वीप पुंजकी परिस्थितिने पलटा खाया और कितनी ही कम्पनियां बन गयीं।

इस युद्धके छिड़ते ही बम्बई नगरको स्वर्ण सुअवसर मिला। इंग्लैण्डके लंकाशायर केन्द्रमें रूईका भयंकर अकाल पड़ा जिससे यहांका बाजार नवजीवनसे उत्फुल्लित हो उठा। यहांके व्यवसाय कुसुमकी मुकुलित कलिका प्रफुल्लित हो निज सौरभसे संसारको मंत्र मग्ध करने लगी। पलक मारते यथेष्ट पूंजीकी प्रकट प्रतिमा अपने प्रकाश पुंजसे नवस्फूर्तिका संचार करने लग । कितनी ही नयी कम्पनियोंका जन्म हुआ और उन्होंने समुद्रको पूर कर भूमि निकालनेका उद्योग हाथमें लिया। इस कार्यमें यहांकी प्रबन्ध व्यवस्थाने सहायता दे उनके उत्साहको और भी पुष्ट कर दिया। इस द्वीपपुंजके पूर्वीय पार्श्व पर मोदी खाड़ी, एलफिन्स्टन, मझगांव, टांक बंदर तथा फ्रेयररोड़ और पश्चिमीय पार्श्व पर कुलाबासे मालबार पहाड़ी तककी भूमि समुद्रके गर्भसे निकाल कर वस्ती बसानेके योग्य बना दी गयी।

मोदी खाड़ीवाला क्षेत्र कर्नाक बन्दरसे टकसाल घरतक माना जाता है। इस क्षेत्रके पूरनेका कार्य, प्रथममें यहांका प्रबन्ध भार वहन करनेवाली सरकारने आरम्भ किया था, परन्तु कुछ समय बाद एक दूसरी व्यवसायी कम्पनीने यह कार्य अपने हाथमें लिया और उसे पूरा कर डाला। इसी पूरी हुई भूमिपर जी० आई० पी० रेलवेका प्रधान रेलवे स्टेशन जो बोरी बन्दरके नामसे सुप्रख्यात है, बना हुआ है। इस कम्पनीने लगभग ३० लाखकी पूंजी व्यय कर ८३ एकड़ भूमि तैयार की थी। एलफिन्स्टोन क्षेत्रके पूरनेका काम एक दूसरी कम्पनीके हाथमें था। इसने १४½ लाख व्ययकर ३८६ एकड़ भूमि निकालनेकी व्यवस्था की, परन्तु इसके शेयर-का भाव गिर जानेसे यह कम्पनी अधिक समय तक कार्य न कर सकी और अन्तमें टूट गयी। इधर यहांकी सर-

कार और म्यूनिसिपल कार्पोरेशनने भी समुद्र गर्भसे भूमि निकालनेमें प्रशंसनीय कार्य किया है। यहांके म्यूनिसिपल कार्पोरेशनने नगरके कितने ही तालाबोंको पूरकर समतल भूमि बना दिया है। तारदेवसे परैल तककी भूमि को मिलें स्थापन करने योग्य बनानेका श्रेय यहांके म्यूनिसिपल कार्पोरेशनको ही है। इस कार्पोरेशनके स्वास्थ्य विभागने भी लगभग ८६ एकड़ भूमिको समुद्रसे निकाल बस्ती बसानेके योग्य बनाया है। इसी प्रकार यहां पोर्टट्रस्ट नामक बन्दर प्रबन्ध विभागने भी समुद्र पूर कर भूमि निकालनेके कार्यमें अनुकरणीय उद्योग किया है। इस विभागने सन् १८७३ ई० से इस कार्यको अपने हाथमें लिया। और सन् १८९७ ई० तक कितने ही छोटे २ पर मन-मोहक बंदर बना डाले। इनमेंसे सिवरी बंदर तथा फ्रेयर स्टेटका कार्य सबसे अधिक आदरणीय है। इस विभागने सन् १८७९ में एलफिन्स्टोन स्टेट, सन् १८८८ ई० में अपोलो बंदर, सन् १८९० ई० कुलाबा बंदर, सन् १८९२ ई० कस्टम बंदर, सन् १८९४-९५ में टांक बंदर तथा सन् १९०४-५ में मझगांव बन्दर बनवा कर अपने नामको सार्थक किया। इसी प्रकार नगरके सिटी इम्प्रूवमेन्ट ट्रस्ट नामक नगर सुधार विभागने सन् १९०६ में कुलाबाकी ओर समुद्र पूरनेका अच्छा कार्य किया है।

अमेरिकन सिविल वारके समय समुद्र पूरनेके कार्यको यहांकी सात सुदृढ़ कम्पनियां कर रही थीं। इनकी सम्मिलित पूंजी अनुमानतया ८०३४ करोड़की होगी, परन्तु युद्धके प्रचण्ड रूप धारण करने पर सन् १८६४-६५के बीच यह पूंजी अनुमानतया १७०५६ करोड़की हो गयी थी। इन कम्पनियोंमेंसे कुछके नाम इस प्रकार हैं। *

नाम कम्पनी	वसूल पूंजी	नाम कम्पनीके महाजनका
(१) बैंक बे कम्पनी	१०४ लाख	एशियाटिक बैंक
(२) पोर्ट केनिङ्ग कम्पनी	६६ लाख	ओल्ड फाइनैनशियल
(३) मझगांव रेक्लेमेशन कम्पनी	८० लाख	अलायन्स बैंक
(४) कोलाबा लैण्ड कम्पनी	१४० लाख	सेन्ट्रल बैंक
(५) फ्रेयर लैण्ड कम्पनी	८० लाख	सिटी बैंक
(६) बाम्बे एण्ड ट्राम्बे रिक्लेमेशन कम्पनी	१० लाख	प्रेसीडेन्सी बैंक

इस प्रकार बम्बईमें दरिया पूरकर एकके बाद एक नवीन स्थान निकालनेका काम जारी रहा, लेकिन व्यवसायके अधिक बढ़नेसे म्युनिसिपैलेटीको और भी विशेष जमीनकी आवश्यकता प्रतीत हुई। फलतः म्युनिसिपैलेटीने चौपाटीसे लगाकर लाइट हाउस तक समुद्रको पूरनेकी नवीन योजनाकी; तथा डेवलपमेण्टलोन द्वारा करोड़ों रुपयोंकी सम्पत्ति भी एकत्रित की, एवं सर चिमनलाल सीतलवड़की देखरेखमें एक डेवलपमेंट बोर्डकी स्थापना की।

* देखिये A financial chapter in the History of Bombay city नामक ग्रन्थ।

समुद्रके तूफानको कम करनेके लिये तथा व्यवसायकी सहूलियतके लिये नवीन जमीन तैयार करनेके लिये समुद्रके बीचमें एक सोलेह फुटकी दीवाल बांधी जा रही है, इस दीवालको पूर्व तथा पश्चिम दोनों ओरसे बांधनेका काम जारी है। इस दीवालके बनवानेमें करीब १२ लाख ५० हजार टन पत्थर और १०८५७४० घन फीट कीचड़ और सिमेंटकी आवश्यकता होगी। यह दीवाल बहुत वैज्ञानिक ढंगसे अत्यन्त व्यय पूर्वक बनवायी जा रही है।

इतना अधिक पत्थर आसानीसे मिलना अत्यन्त कठिन है इसकी सुविधाके लिये म्युनिसिपैलेटीने कांदीवलीके समीप एक टेकरीको तोड़ना आरंभ किया है और वहाँका टूटा हुआ पत्थर वैगनों द्वारा समुद्र तक पहुंचाया जाता है। उपरोक्त दीवाल जब कुलाबासे मरीन लाइन तक पूरी हो जायगी तब इसके बीचका हिस्सा ट्रेफर नामकी एक मशीन द्वारा हारबरके तलमेंसे कीचड़ निकालकर भरा जायगा। इस बीचके स्थानको भरनेके लिये पचीस करोड़ घनगज कीचड़की आवश्यकता होगी। इस कीचड़को १००० टन कीचड़ प्रति दिन ले जानेवाली २ ट्रेनें यदि सालमें ३०० दिन काम करें तो इतना स्थान ४१ वर्षमें भरा जा सकता है, परन्तु ट्रेफर नामकी मशीन द्वारा ७० क्यूबिक गज गहराईमेंसे २००० फुट कीचड़ निकाल कर १० हजार फुट दूर ले जाया जा सकता है। यह मशीन दिनमें १५ घंटा काम करके ३० हजार टन कीचड़ निकाल सकती है।

इस प्रकार इस काममें सन् १९२३ तक करीब ३ अरब से भी अधिक रुपयोंकी सम्पत्ति व्यय हो चुकी है। इस व्ययसे अभी करीब तिहाई काम हो चुका है। अनुमान है कि इतनी जमीनको भरनेके लिये ७ अरब २ करोड़ ४३ लाख रुपया व्यय होगा। इसके द्वारा ११४५ एकड़ नयी जमीन निकल आयेगी, वह जमीन नीचे लिखे अनुसार काममें लाई जायगी। २३७ एकड़ रास्तेके काममें, १८७ एकड़ मैदानमें, २६७ एकड़ मिलिटरीके काममें, तथा ४५४ एकड़ जमीन बिल्डिंग बनानेके काममें लायी जायगी।

इस प्रकार इस स्थान की विपुलता होनेके बाद पशुओंके तबेले कसाईखाने फेक्टरियां मिल्स वगैरह बम्बई-से दूर लगानेकी योजना भी यह विभाग कर रहा है।

म्यूनिसिपल कार्पोरेशन

द्वीपपुंजसे सुविस्तृत जनाकीर्ण नगरकी रचनाका इतिहास व्यवसायके विकासका ही प्रतिबिम्ब है। नगरके रूपमें यहाँके सुप्रबन्धमें भारतीयोंको भी सेवा करनेका अवसर मिला है। जिस सामूहिक शक्तिके द्वारा लोग अपने घरका प्रबन्ध कर अपने सामीप्य जनोंकी सेवा कर सकते हैं उसे म्यूनिसिपैलिटी अथवा स्वायत्व शासनकी प्रतिमा कहते हैं। यहांके म्यूनिसिपल कार्पोरेशनके वर्तमान स्वरूपका निर्माण पूर्वकालकी प्राकृतिक व्यवस्था-को आधार मानकर ही किया गया है, सुव्यवस्थाकी दृष्टिसे यहांके म्यूनिसिपल कार्पोरेशनको छोटे २ वार्डोंमें विभाजित किया गया है। इन वार्डोंकी रचना पूर्व-कालीन प्राकृतिक विभागोंके आश्रयको लेकर की गयी है।

ईस्ट इण्डिया कम्पनीके प्रबन्धके आरम्भ कालमें इस द्वीपपुञ्जको बम्बई नगरके नामसे जब जब सम्बो-धित किया गया है तब तब उसका भाव बम्बई और माहिमकी संयुक्त बस्तीसे लिया गया है। बम्बई नगरसे दो स्थानोंके सम्मिलित स्वरूपका बोध होता था, जिनमेंसे एकको बम्बई और दूसरेको माहिम कहते थे।

* सन् १७२७ ई०में यह द्वीपपुंज उपरोक्त दो प्रधान विभागोंमें विभाजित था और इसीमें मझगांव, वर्ली, परेल, बदला, नावगांव, माटुंगा, धरावी तथा कोलाबा नामक आठ गांव भी माने जाते थे।

टाइम्स आफ इण्डियाके सन् १८६४ ई०के एक अङ्कसे ज्ञात होता है कि यहांकी उस समयकी सरकारने इस नगरकी सीमा निश्चित की थी, और सीमाके स्वरूपको स्थिरकर उसके अन्तर्गत कोलाबा, किला, मांडवी, भोलेश्वर, ब्रीच कैनडी, मलबार पहाड़ी, कमांठीपुरा, मझगांव टेकरी, चिञ्चपोकली, वर्ली, जंगल माहिम तथा माटुंगा को माना था।

सन् १८६५ ई०में Act II के आदेशानुसार म्यूनिसिपल कार्पोरेशनका जन्म हुआ। म्यूनिसिपल कमिश्नर नियुक्त किया गया और प्रबन्ध होने लगा। परन्तु कमिश्नरके सम्मुख सबसे कठिन कार्य नगरको छोटे २ वार्डोंमें विभाजित करनेका था। कमिश्नरने वाध्य होकर पूर्वके विभाजित वार्डोंका आधार ले वार्डोंकी इस प्रकार रचना की:—

(१) कोलाबा, (२) किला, (३) माण्डवी, (४) भोलेश्वर, (५) उमरखण्डी, (६) गिरगांम, (७) कमाठीपुरा (८) मलबार पहाड़ी (९) मझगांव, (१०) माहिम और (११) परेल।

परन्तु यह व्यवस्था अधिक दिन टिक न सकी और सन् १८७२ई०में इन वार्डोंमें फेरफार किया गया और छोटे २ सेक्शन बनाये गये जो इस प्रकार थे।

'ए' वार्ड:—कुलावा, किला और स्प्लैनेड।

'बी' वार्ड:—क्राफर्ड मार्केट, माण्डवी, चकला, उमरखण्डी, और डोंगरी।

'सी' वार्ड:—धोबी तलाव, फानुसवाड़ी, भोलेश्वर, खारा तलाव, कुम्हारवाड़ा, गिरगांम खेतवाड़ी।

'डी' वार्ड:—चौपाटी, वालकेश्वर, और महालक्ष्मी।

'ई' वार्ड:—मझगांव, तारवाड़ी; कमाठीपुरा, परेल और सिउरी।

'एफ' वार्ड:—शिव, माहिम और वर्ली।

इस प्रकारका प्रबन्ध होते हुए भी परिवर्तन होता ही गया और परिणाम यह हुआ कि आजकल ७ म्यूनिसिपल वार्ड हैं जो A, B, C, D, E, आदि नामोंसे व्यवहारमें लाये जाते हैं।

पुलिस

नगरमें शान्ति बनाये रखने और नागरिकोंको उनके कार्यमें सहायता पहुंचानेके लिये यहां पुलिसके हाथमें बहुतसा प्रबन्ध रक्खा गया है। यहाँकी पुलिस कमिश्नरकी देखरेखमें एक गुप्तचर पुलिस विभाग भी सुसंगठित किया गया है जो अपनी कार्यदक्षतासे यहांके नागरिकोंको उनके सभी कार्योंमें अच्छा सहयोग देता है। इस नगरमें पुलिसने अपने प्रबन्धको सुखमय बनानेकी दृष्टिसे विभिन्न भागोंमें वार्ड स्थापित कर रक्खे हैं। ये वार्ड इस प्रकार हैं:—

* देखिये Bombay Gazetteer Vol. XXXVI Part III Page 525.

'ए' वार्ड:—कोलावा, किला (उत्तर] किला (दक्षिण) स्प्लैनेड और डाकयार्ड ।

'बी' वार्ड :—माराडवी, चकला, उमरखाड़ी, डांगरी जनरल, ड्यूटी ।

'सी' वार्ड—बाजार, धोबी तलाब, भोलेश्वर और खारा तलाब।

'डी' वार्ड:—मम्फगांव, तारवाड़ी, कमाठीपुरा, नवीनागबाड़ा, भायखाला ।

'एफ' वार्ड:—परेल और मांटुगा ।

"जी" वार्ड: – माहिम और वर्ली ।

इसके अतिरिक्त बंदरकी सुव्यवस्थाके लिये रक्खी गयी बंदर पुलिस, प्रिन्स और विक्टोरिया डाक, सी आई. डी. विभागकी पुलिस, रिजर्व घोड़सवार, तथा सिनेटरी पुलिस सबके मिलाकर नगरमें ३२ थाने हैं।

यहां आग तथा अन्य प्रकारकी आकस्मिक दुर्घटनाओंमें जनताकी सेवा करनेके लिये स्वतन्त्र रूपसे व्यवस्था की गयी है।

आगसे बचाव

आग लगनेके समय नगरकी सुव्यवस्था करनेके लिये यहांके म्यूनिसिपल कार्पोरेशनने स्थान २ पर 'फायर ब्रिगेडके अड्डे बना रक्खे हैं और सड़कोंपर थोड़ी २ दूरीसे आग लगनेके सम्बन्धमें भयसूचक घण्टीकी व्यवस्था भी कर रक्खी है, जिससे आग लगते ही सड़कपर लगी हुई भय सूचक घण्टी द्वारा पासके 'फायर ब्रिगेडको बातकी बातमें सूचना भेज दी जाती है और वह आकर परिस्थिति संभाल लेते हैं।

'फायर ब्रिगेड" कहां है यह नीचेकी सूचीसे ज्ञात होगा।

फायरब्रिगेडके अड्डे—(१) भायकाला (२) हेइन्सरोड (भाई खाला) (३) ग्वालिया टैंक (४) चींच पोकली (५) बाबूला टैंक (६) किला (हार्नबीरोड) (७) कोलाबा (८) भोलेश्वर (९) मलबार हिल (१०) डेलाइल रोड (११) माहिम (१२) नई गांव (१३) मम्फगांव।

यह विभाग अन्य आकस्मिक दुर्घटनाओंके समय भी अपना कर्तव्य पालन कर कष्टपीड़ितोंकी सहायता करता है।

बम्बईका व्यवसायिक विकास

प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थोंमें विदेशवालोंने बम्बईको थानातटका एक छोटा सा बन्दर माना है। उस समय भारतके इस समुद्री तटपर थाना ही सबसे अधिक प्रभावशाली स्थान था अतः दूर देशोंके व्यवसायी जहाज ले थानाका बाजार करने आते थे और कभी २ क्षणिक विश्राम करनेके लिये इस बंदरके तटपर लंगर डाल देते थे । इसके अतिरिक्त इस बंदरका और कोई उपयोग किसीने भी नहीं लिखा। शताब्दियां व्यतीत हो गयीं, पर इसके भाग्यचक्रने पलटा न खाया। यहांतक कि १७वीं शताब्दीके अन्ततक लोगोंकी यही धारणा थी कि लाख चेष्टा करनेपर भी यह बंदर व्यवसायकी सुविधाके लिये कभी उपयुक्त नहीं हो सकता। यही कारण था कि इस द्वीपपुंजके व्यवसायने कभी उन्नतिकी कल्पना भी नहीं की। सबसे पहले ईस्टइण्डियाकम्पनीके प्रबन्धमें आकर इसने अपने स्वरूपको पहिचाननेकी चेष्टा करनेके लिये आंखें खोलीं।

सन् १६७०ई० में यहां शराब, तम्बाकू अफीम, नारियल, और उसकी जटा रस्सियोंका ही केवल व्यापार होता था। परन्तु इसीके बादसे इसके भाग्यचक्रने पलटा खाया और ईस्टइण्डियाकम्पनीके मस्तिष्कमें अपने कारखानेको सूरतसे बम्बई उठा लानेकी बात जमी। सन् १६८७ ई० में ईस्टइण्डिया कम्पनीने अपना आफिस सूरतसे बम्बई उठा लानेका निश्चय कर लिया। इसी समय इस नगरमें व्यवसायकी आधारशिला रक्खी गई। फिर भी आरम्भमें इसकी उन्नतिको मनचेती सफलता न मिल सकी। इसका कारण था तत्कालीन राजनैतिक अशान्ति।

भारतका राजनैतिक वातावरण उस समय क्षुब्ध हो उठा था। जीवन प्रभातकी नव स्फुर्तिदायिनी शक्तिसे प्रभावित हो महाराष्ट्रसेना अपनी धुनमें आगे बढ़ती जाती थी, और जीवन सन्ध्याकी अन्तिम लालीसे लोहित वर्ण हो राजपूत शौर्य छटपटाकर दृढ़ता पकड़नेका भगीरथ प्रयत्न करनेमें तल्लीन था। यवन सत्ता अपनी आत्ममर्यादाकी रक्षा करनेमें अपने आपको असमर्थ पाती थी। पुर्तगीज मानवताके मंदिरको मिट्टीमें मिला मन चेते माया जाल-का प्रसार कर धर्मका डिम डिम पीट रहे थे। ऐसी परिस्थितिमें उलझ ईस्टइण्डिया कम्पनी तटस्थ रूपसे अपनी आत्मरक्षाकी समस्या सुलझानेमें व्यग्र थी। अतः अशान्तिमें व्यवसाय कैसा और व्यवसायका प्रसार तथा उसकी उन्नतिकी कल्पनाका अस्तित्व ही क्या! इस नगरकी व्यवसाय सम्बन्धी अवस्था भी पूर्ववत् हो रही। इसी बीच लंदनकी कम्पनी और भारतकी कम्पनीमें भी तू तू, मैं मैं की ठनी और व्यवसायका सुखद स्वरूप भी कल्पनाकी दौड़से ओझल होगया। यह अवस्था सन् १६९० और १७१० ई०के बीचमें रही। अन्तमें लन्दन और भारतकी कम्पनियोंमें समझौता हो गया और ईस्टइण्डिया कम्पनीको घरेलू अशान्तिसे छुट्टी मिली। उधर मराठों और राजपूतोंके कार्यक्षेत्रका केन्द्र इस समुद्री तटसे दूर हानेके कारण कम्पनीके व्यवसायपर प्रभाव डालनेमें शक्ति क्षीण सा होता जाता था। अतः निकटवर्ती प्रदेशपर यदि कोई शक्ति अशान्तिकी आशंकाकी ओर ध्यान खींचनेमें समर्थ थी, तो महाराष्ट्र और पुर्तगालवालोंकी तनातनी। लेकिन इसकी भी अवधि समाप्त हो चली। पद्मान्ध पुर्तगीज लिप्साकी लोहित लपटोंमें विदग्ध हो शक्तिहीन हो गये।

उस समय अंग्रेजोंके हाथमें तराजू था, तलवारका दम वे कभी नहीं भरते थे। कर फैलाने वाले करवालके कब्जेको कब पकड़ने लगे। अतः उन्होंने नीतिसे काम लिया। हिन्दू शौर्यके बालअरुणकी क्रमशः उत्तप्त होनेवाली प्रखर किरणोंका सामना कर भस्मीभूत हो जाना उन्हें इष्ट न था, अतः अंग्रेजोंने अवसर मिलते ही सबसे प्रथम बाजीरावसे मैत्री करनेकी चेष्टा की। इसके प्रमाणके लिये दूर न जाना होगा। सन् १७४२ ई० में बाजी-रावके पुत्रका विवाह हुआ था। इस अवसरपर बम्बईके गवर्नरने जो सामान मैत्रीके भावसे उन्हें नजर किया था, वह इस प्रकार है।

६ शाल, २०) रु० प्रति शाल	१२०) रु०
१ सोनेकी जंजीर	१५०) रु०
१ साड़ी	४०) रु०
४ सुवर्ण मुद्रा (नज़र)	७५) रु०
उपरोक्त सामान ले जानेवालेका पारिश्रमिक	५०) रु०
जोड़	३६०) रु०

इस प्रकार सबसे मेल जोल बढ़ाकर कम्पनीने किसी प्रकार अपना काम चलाया, एक बार शान्ति स्थापित होतेही इस नगरका व्यवसाय उन्नतिकी ओर बढ़ा और पासके नगरोंको भी विदित हो गया, कि कम्पनीने अपना प्रधान कार्यालय सूरतसे उठाकर बम्बईमें लाकर रक्खा है। फिर क्या था व्यवसायियोंको अवसर मिला और उन्होंने वहां जाकर बसनेकी इच्छा प्रकट की। कम्पनीकी ओरसे पूर्ण आश्वासन मिलनेपर सन् १७५३ ई० में औरंगाबाद और पूनासे आकर कुछ महाजन बसे, और अपनी दुकानें खोलीं। सन् १७७० में कम्पनीने यहांसे चीन रूई भेजना आरम्भ किया।

देशका राजनैतिक वातावरण शान्त हो गया, घरेलू अशान्तिने कम्पनीका पीछा छोड़ा, समीपके नगरोंसे महाजन तथा इतर व्यवसायी नगरमें आकर बस गये, कम्पनीका प्रधान कार्यालय भी यहीं उठ आया, परन्तु फिर भी नगरके व्यवसायने किसी प्रकारकी उल्लेखनीय उन्नति नहीं कर दिखायी। इसका भी कारण था। ईस्ट-इण्डिया कम्पनी किसीको स्वतंत्र रूपसे इस नगरमें व्यवसाय करनेकी आज्ञा नहीं देती थी। व्यवसायका द्वार बंद था। व्यवसाय करनेके इच्छुकोंको कम्पनीसे व्यवसाय करनेके लिये लैसेन्स लेना पड़ता था। मिलबर्न नामक लेखकके मतानुसार ईस्ट इन्डिया कम्पनीकी सद्भावना तथा सहानुभूति उपार्जितकर कुछ इनी गिनी योरोपियन कम्पनियाँ चलतू व्यवसाय कर रही थीं। उन कम्पनियोंके नाम ये हैं:—

(१) ब्रूस फासेट एण्ड को०
(२) फारवेस एण्ड को०
(३) शोटन एण्ड को०
(४) जान लेकी
(५) एस व्यूफर्ट
(६) बैंकर सन्स एण्ड को०
(७) जान मिर्चल एण्ड को०
(८) बूलर एण्ड को०
(९) आर० मैकलीन एण्ड को०

इनके अतिरिक्त सब कारोबार कम्पनीकी देखरेखमें होता था। कम्पनीके निजके जहाज थे। इन जहाजोंके कमान्डर तथा कम्पनीके अन्य कर्मचारी अपने जहाजोंपर पारसी लोगोंको कम्पनीका एजेन्ट नियुक्त करते थे। ये एजेण्ट सभी प्रकारके उत्तरदायी माने जाते थे। उस समयका बड़ेसे बड़ा जहाज रूईकी ४ हजार गांठ लाद सकता था। जहाजसे जानेवाले उतरनेवाले और गुदाममें पड़े रहनेवाले मालका बीमा करनेवाली केवल एक ही बीमा कम्पनी थी। इस बीमा कम्पनीका नाम बाम्बे इन्स्यूरेन्स सोसाइटी था और यह २० लाख रुपयेकी पूंजीसे स्थापित की गयी थी।

सूरतके व्यवसायपर दोहरी शनि दृष्टि पड़ रही थी, एक ओर तो कम्पनीकी एकतंत्री व्यवसाय जनित स्वार्थ नीति और दूसरी ओर मुगल सत्ताका दुर्लक्ष्य। अतः वहांके व्यवसायको मरणासन्न धक्का लगा, फल यह हुआ, कि बम्बईको अवसर मिला। इस सुअवसरसे यहांके व्यवसायकी वृद्धि हुई। सन् १८०२ ई० से सन् १८०६ के बीच २४ ला० पौण्डके मूल्यका सामान विदेशसे आया और १९ ला० २८ हजार पौण्डके मूल्यका यहांसे विदेश गया। इसमेंसे भी केवल चीनको सन् १८०५ ई० में ६४,७३,६३९) रु० की रूई गयी। परन्तु सन् १८१३ ई० में इस शहरमें क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ और यहांके व्यवसायके भाग्यचक्रने अनुकूल पलटा खाया।

सन् १८१३ ई० में लंदनकी पार्लमेन्टमें लार्ड मेलबेली बिल पास हो गया। अभीतक जहां कम्पनीके हाथमें व्यवसाय करनेकी स्वेच्छाचारी एकतंत्री सत्ता थी और जिसके कारण व्यवसाय करनेवालोंको व्यवसाय करनेके लिये लैसेन्सकी आवश्यकता पड़ती थी, वहां व्यवसायका द्वार सभीके लिये मुक्त रूपसे खुल गया। व्यवसाय परसे कम्पनीका प्रतिबन्ध उठ गया। इस बिलके स्वीकृत हो जानेपर कम्पनीके हाथकी सारी शक्ति निकल गयी, केवल यदि कुछ शेष रह गया तो चीनसे व्यवसाय करनेका विशेष अधिकार। यह अधिकार भी २० वर्षकी अवधि तक ही रहा। प्रतिबन्धके उठते ही लिवरपुल और ग्लासगोके महाजनों और व्यवसायियोंकी घुड़दौड़ मच गयी। फिर क्या था, इस द्वीपपुंजका व्यवसाय भी नव आशापल्लवसे चमक उठा। सन् १८०१ ई० में जहां इस बंदरसे ३ करोड़ पौण्ड वजनमें रूई इंग्लैण्ड गयी थी, वहां सन् १८१६ ई० में ९ करोड़ पौण्ड रूई इंग्लैण्ड गयी।

यदि इस सुदिनको देखनेके लिये राल्फ फिच और जान न्यूवरी जीवित होते तो वे आज फूले न समाते।*

सन् १८२५ में बम्बईका निर्यात छलांग मारकर बढ़ गया। सन् १८३२ ई० में अमेरिकाके महाजनोंकी सट्टेबाजीके कारण अमेरिकन रूईका भाव ऊंचा चला गया अतः भारतकी रूईको इंग्लैण्डके कारखानोंमें घुस पड़नेका सुअवसर हाथ लगा। सन् १८३५-३६ ई० में १० लाख गांठ रूई इग्लैण्ड पहुंची। बम्बईके व्यवसायकी उन्नतिका इससे अधिक प्रामाणिक प्रमाण और क्या होगा, कि व्यवसायकी वृद्धिके कारण ही सन् १८३६ ई०में बाम्बे चेम्बर ऑफ कामर्स नामक व्यवसायी मण्डलकी स्थापना हुई। महाजनी लेनदेनकी पुरानी परम्परागत प्रथाको तोड़ सन् १८४० ई०में ज्वाइण्ट स्टाक बैंककी पद्धति पर बैंक आफ बाम्बेकी स्थापना की गई। इस बैंककी देखा देखी सन् १८४४ ई० में ओरियण्टल बैंकिङ्ग कार्पोरेशनने भी अपनी एक शाखा इस नगरमें खोली। और सन् १८६० तक कमर्शियल बैंक, चार्टर्ड, मर्केण्टाइल, आगरा एण्ड यूनाइटेड सर्विस, सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया इत्यादि बैंक भी इस नगरमें स्थापित हो गये।

निर्यातकी वृद्धिके साथ साथ आयातकी वृद्धि भी हुई, इंग्लैण्डसे माल आना जोरोंसे आरम्भ हो गया, अतः नगरके व्यवसायियोंने यहां भी मिलें खोलनी आरम्भ कर दीं। सन् १८६० ई० तक लगभग ८ मिलें यहांपर खुल गयीं। व्यवसायकी बढ़ती हुई लहरको लक्ष्यकर एक पत्रने उस समय लिखा था कि बम्बई कारखानोंका केन्द्र बनेगा※।

सन् १८६० ई० में जी० आई० पी० रेलवेने थानातक रेलवे लाइन खोलकर नगरके व्यवसायको समयोचित प्रोत्साहन दिया। सन् १८६९ ई० में स्वेजकी नहर खुली और इसके खुलते ही यूरोपका प्रवेश द्वार पूर्ण रूपेण खुल गया। नगरके व्यवसायको इस घटनाने सबसे अधिक जीवन दान दिया।

३० मार्च सन् १८६६ ई० के टाइम्ससे पता चलता है, कि सरकारने बम्बईके समुद्रतटवर्ती व्यवसाय तथा

---

*ये दोनों साहसी वीर स्थल मार्गसे सन १५७३ ई०में भारत आये थे। इन लोगोंका उद्देश्य व्यवसाय मार्गको स्थापित करनेका था परन्तु भारतके रसीले सफलोंके रसास्वादनका अनुभव इन्हें न हुआ।

※Bombay has long been the liverpool of the east and she is now become the manchester also (7th july 1860)

नदियोंके मार्गसे होनेवाले व्यवसायकी वृद्धिके लिये बाम्बे कॉस्ट एण्ड रिवर स्टीम नेवीगेशन कम्पनियोंकी व्यवस्था कर दी।

सन् १८६५ में इस नगरसे करांची और फारसकी खाड़ीके मार्गसे समुद्री तारकी व्यवस्था हुई। इससे भी नगरके व्यवसायको बल मिला।

इसी बीच अमेरिकन युद्धके छिड़ जानेसे भारतको स्वर्ण सुअवसर हाथ लगा, और बातकी बातमें यहांके बुद्धिमान व्यापारियोंकी जेबें गरम हो उठीं। सन् १८६४ के अन्तमें ३१ बैंकें, १६ अर्थ संस्थाएं, ८ लैण्ड कम्पनीज, १६ प्रेस कम्पनीज, २० इन्स्यूरेंस कम्पनियां और ६२ ज्वाइन्ट-स्टॉक कम्पनियां खुल गयीं। स्मरण रहे कि सन् १८५५ ई० में एक भी ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनी यहां न थी हां केवल दस बीमा कम्पनियां थीं। इस समय इतना ऐश्वर्य हो गया कि लोग मदान्ध हो गये; परन्तु सन् १८६५ ई० के बसन्त ऋतुमें यह युद्ध समाप्त हुआ। इस युद्धके समाप्त होते ही बम्बईका बाजार एकदम आपत्ति ग्रस्त होगया। उसे भीषण शिथिलताने आ दबोचा। कम्पनियां टूट चली, कमर्शियल बैंकें दरवाजा बंदकर बैठ गयीं, हजारों बड़े २ व्यवसायी दिवालिये करार दिये गये। यहां तक कि उस समयके सबसे प्रतिष्ठित और प्रभावशाली व्यवसायी दानवीर प्रेमचन्द रायचन्द तथा आर० जमशेदजी जीजी भाई भी नादार करार दिये गये।※

इसी कड़कड़ाहटके बीच यहांकी सरकारी बैंक भी चूर-चूर होकर धराशायी हो गई। इस वर्षके अगस्त मासके टाइम्ससे पता चलता है कि लोगोंको देना तो कई गुना अधिक था, परन्तु उनके मकान और जमीन नीलामकरके भी कुल चार करोड़ रुपये वसूल किये गये। इससे नगरकी बढ़ती हुई उन्नति को भारी धक्का पहुंचा।

सन् १८६७ ई० में कुछ शान्ति हुई। सन १८६८ में पुनः सरकारी बैंक खुली। सन १८७०—७२ के बीच यहांका निर्यात २४ करोड़का और आयात १२ करोड़का था। वही सन् १८८०—८२ ई० में बढ़कर २७ करोड़ और १७ करोड़का हो गया। यही निर्यात् सन् १८८५-८७ में २७ करोड़से बढ़कर ३३ करोड़ हो गया और सन् १८९०-९२ में ३३ से ३६ करोड़ हो गया। इसी प्रकार आयात भी जहां १७ करोड़ था, वहां सन् १८८५-८७ में २२ करोड़ और सन् १८६०-६२ में २२ करोड़से बढ़कर २७ करोड़ हो गया।

यह है यहांके व्यवसायका संक्षिप्त इतिहास। इसी व्यवसायके बलपर मछली मार कर पेट भरनेवालोका द्वीपसमूह आज सब प्रकार फूला-फला और हरा भरा हो लहलहा रहा है।

पूंजीपति—बम्बईमें सभी प्रकारके लोगोंकी आबादी है। अतः भाटिया, जैन, मारवाड़ी, बनियां खोजा, मेमन, बोहरा, पारसी, तथा यहूदी आदि सभी जातियोंके लोग यहां पूंजीपति हैं। यहां गुजरातवालों और दक्षिणवालोंमें ब्राह्मण तथा सोनार अधिक धनवान हैं। इसके अतिरिक्त अरबी और मुलतानी भी बड़े २ महाजन और सर्राफ हैं।

※ S, M Edwardes I. C, S writes "By the end of 1864 the whole community, from the highest English official to the lowest native broker, became utferly demoralised.

[The pice of Bombay page 272]

भाटिया:—कपड़ेके व्यवसायी, जमींदार और मिल मालिक हैं।

जैन (गुजरात) :—सर्राफ, महाजन, जौहरी, तथा कमीशन एजेन्ट हैं।

„ (कच्छ) :—अनाजके व्यापारी औररुईके दलाल ।

मारवाड़ी महाजन,: — रूई, चांदी, सोनाका सट्टा तथा व्यापार करनेवाले ।

बनियांमहाजन:—रुई, चांदी, सोनाका सट्टा और व्यापार करनेवाले ।

खोजा:— जागीरदार, मिलमालिक, जेनरलमर्चेन्ट कंट्राक्टर, एक्सपोर्ट इम्पोर्ट डीलर।

बोहरा मेमन:—जागीरदार, कंट्राक्टर, स्टेशनरी और जेनरल मर्चेन्ट ।

पारसी:—मिल आँनर्स कॉटन मर्चेण्टस् एक्सपोर्ट इम्पोर्ट डीलर तथा और भी सभी प्रकारका व्यवसाय करते हैं।

योरोपियन:—एक्सपोर्ट इम्पोर्ट डीलर ।

बम्बईके व्यवसायिक स्थल एवं बाजार

१ फोर्ट [हार्नबीरोड]—यह बस्ती बहुत सुंदर एवं साफ है। यहाँकी भव्य एवं आलीशान इमारतें, स्थान २ पर दर्शनीय दृश्य वास्तवमें दर्शकोंके हृदयको मंत्र मुग्ध कर देती हैं।यह स्थान क्राफर्ड मार्केटसे आरंभ होकर अपोलो बंदरतक माना जाता है। इस स्थानमें बड़ी २ ऑफिसें, बैंक्स, इन्स्युरंस कम्पनीज़, मिल ऑफिस बड़े २ स्टोर्स,वाच कम्पनीज,मिशनरी मर्चेन्टस आदि बम्बईके बड़े से बड़े देशी एवं विदेशी व्यापारी और कम्पनियोंकी आफिसें इस स्थानपर हैं। भारतके साथ विदेशी वाणिज्यका सम्बन्ध रखनेवाली पेढ़ियां इसी स्थानपर है। यों तो इस विशाल बाज़ारका एक एक स्थान दर्शनीय है, पर उनमें खास खास स्थान बोरीबंदर, जनरलपोस्ट ऑफिस, जनरल टेलिग्राफ ऑफिस, म्युजियम, कालाघोड़ा व्हाइट हे लेडला फार्म, हाईकोर्ट, क्वीन विक्टोरिया स्टेच्यू,ताजमहलहोटल,शेअर बाजार,गेट ऑफ इण्डिया (भारत द्वार) आदि विशेष दर्शनीय हैं इस बाजारकी चारकोल ऑइलसे बनी हुई स्वच्छ और चमकती हुई सड़कें भव्य मालूम होती है संध्या समय स्थान २ पर पानीके फव्वारे छोड़े जाते हैं। दिनभरके परिश्रमके बाद संध्या समय एक बार इधर भ्रमण कर लेनेसे सारा परिश्रम हलका मालूम होने लगता है।

२ धोबी तालाव—यह स्थान एक तालाबको पाटकर बनाया गया है। यहां स्मालकाज कोर्ट, एलफ़िन्स्टन हाईस्कूल, सेंटजेवियर हाईस्कूल, आदि हैं, तथा इनके सामने एक विशाल मैदान फुटवाल, क्रिकेट मेच आदि खेलनेके लिये बना है। वर्षाऋतुमें सुदूर लम्बी दूबपर दौड़नेसे बड़ा आनंद प्राप्त होता हैं।

३ क्राफर्ड मार्केट—फल, फूल, शाक भाजी तथा खुराकी सामानका बहुत बड़ा मार्केट है । इसके अतिरिक्त हजारों गाड़ियां सब प्रकारके फल बाहरसे यहां लाती है। और फिर यहांसे सारे शहरके व्यापारी खरीद ले जाते हैं। इसके आस पास फल और खुराकी सामानका व्यापार करनेवाली बड़ी दुकानें हैं । इसके अतिरिक्त यहां सब प्रकारके पक्षी और झाड़ वगैरा भी मिलते हैं।

४ बेलार्ड स्टेट—यहां बड़ी २ देशी तथा विदेशी कम्पनियोंकी ऑफिसें हैं। विलायतके लिये डाक लेकर पी०

म्युनिसिपल ऑफिस, बम्बई
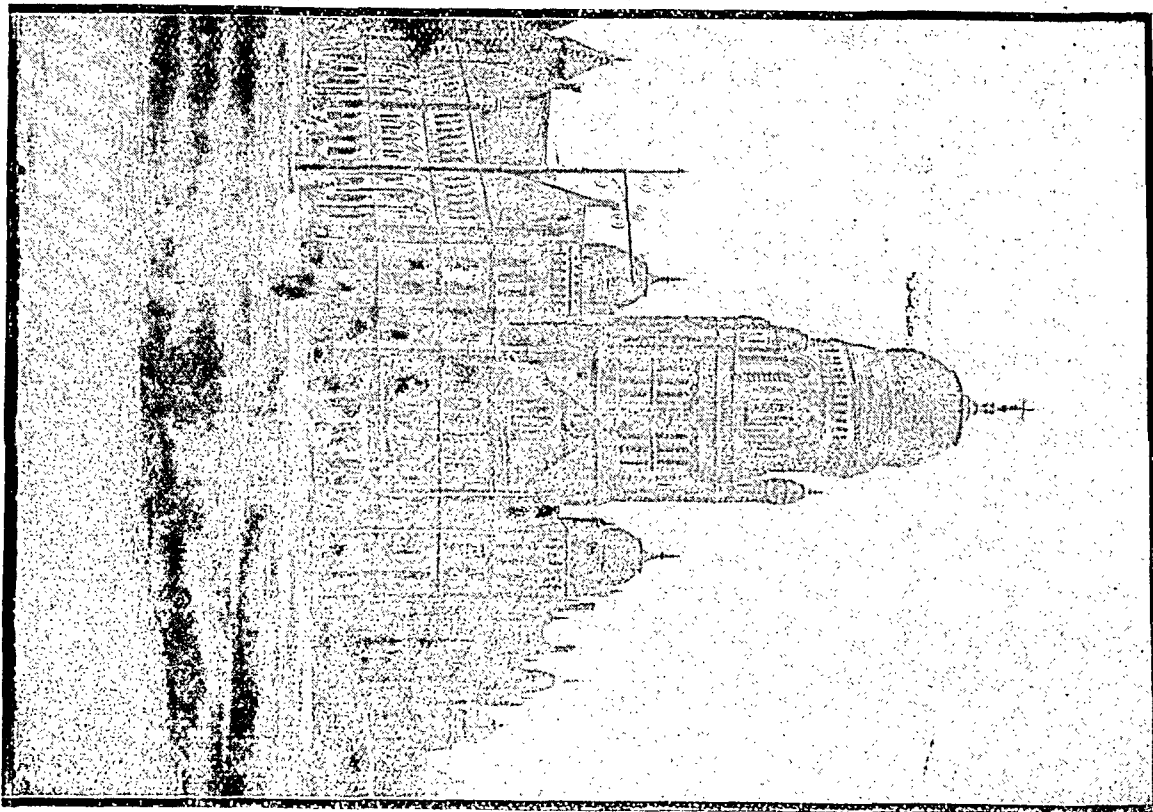
हार्नबी रोड (फोर्ट) बम्बई

एण्ड० ओ० कम्पनीका जहाज़ यहींसे प्रति शनिवारको रवाना होता है, तथा पेसेंजर जहाज भी यहींसे छूटते हैं। भारतकी एक मात्र जहाजी कम्पनी सिंधिया स्टीमनेवीगेशन कम्पनीका ऑफिस भी सुदामा हाउसमें यहींपर है। यहां पोर्ट ट्रस्टका ऑफिस, इम्पीरियल बैंक आदि कई दर्शनीय इमारते हैं।

५ एल्फिस्टन सर्कल—पहिले यहां रूईका बाजार लगता था, जो अब वर्तमानमें शिवरीमें ले जाया गया है। इस बाजारमें टाउनहाल तथा ऑफिसें हैं।

६ कालबादेवी रोड—यहां हारमोनियमबाजे इत्यादि सब प्रकारके वाद्य यंत्रोंका दुकानें साइकिलके व्यापारी तथा बड़ी २ मारवाड़ी एवं गुजराती सराफी पेढ़ियें हैं। देशी ढंगसे हुंडी चिट्ठीका व्यापार करनेवाली पेढ़ियाँ इस बाजारमें हैं। प्रतिदिन संध्या समय करोड़ों रुपयोंकी हुंडीका भुगतान इस बाजारमें होता है। अलसीका पाटिया (जहां अलसी और गेहूँके वायदेका बिजिनेस होता है) भी इसी बाजारमें है।

७ शेखमेमन स्ट्रीट—इस सड़कके छोटे २ हिस्सोंके कई नाम हैं।

१—मारवाड़ी बाजार—यहां रूईके वायदेका बड़ा भारी बिजिनेस होता है। रूईका कच्चा और पक्का दोनों पाटिये यहींपर हैं। इस बाजारमें रूईका काम करनेवाले व्यापारियों और सराफोंकी पेढ़िये हैं। दिनके १२ बजेसे रात्रिके १२ बजेतक यहां भयंकर भीड़ एवं चहल-पहल रहती है। इसके अतिरिक्त यहां बनारसी साड़ी, दुपट्टा तथा काश्मीरी शालका व्यापार करनेवाली पंजाबी पेढ़ियां तथा जर्मन सिलवरके बर्तनोंकी दुकानें हैं।

सराफ और मोती बाजार—इस बाजारमें चांदी सोनेके हाजर मालका एवं वायदेका बिजिनेस करनेवाली कई पेढ़िये हैं। कई लाखकी लागतसे बनीहुई बुलियन एक्सचेंज़ बिल्डिंग जिसमें चांदी तथा सोनेका बिजिनेस होता है, इस बाजारमें हैं। इसके अतिरिक्त सेंट्रलबैंक, और इण्डिया बैंककी शाखाएं भी यहांपर हैं। लखमीदास मार्केट, मूलजी जेठा मार्केट, चांदी सोनेके जेवरों तथा जौहरियोंकी दुकानें, केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट, अम्बर तथा वरासके व्यापारी और मंगलदास मारकीट भी इसी रोडपर हैं।

८ जौहरी बाजार—यहां हीरा, पन्ना, माणक, मोती, आदि जवाहिरातका व्यापार करनेवाले जौहरियोंकी पेढ़ियां हैं। संध्यासमय ४ बजे खड़े २ सौदा करते हुए एवं नगोंकी परीक्षा करते हुए जौहरियोंकी भीड़ लगी रहती है। जरा-जरासी पुड़ियामें लाखों रुपयोंके नग इसी बाजारमें दृष्टिगोचर होते हैं। प्रसिद्ध मुम्बादेवीका मंदिर एवं तालाब भी इसी बाजारमें है।

९ तांबाकांटा—यहां तांबा पीतलकी चद्दरें एवं सूतके व्यापारियोंकी पेढ़ियें हैं।

१० पायधुनी—यहां औषधि बेचनेवाले अत्तारोंकी दुकानें हैं।

११ अब्दुलरहमान स्ट्रीट—इस रास्तेपर स्टेशनरी, कटलरी, हथियार तथा कांचका सामान थोक और परचून बेचनेवाली बड़ी २ दुकानें हैं।

१२ नागदेवीस्ट्रीट—इस रास्तेपर माचिसके व्यापारी जीन एवं मील सम्बन्धी छोटी २ मशीनरीके व्यापारी और हार्डवेरके व्यापारियोंकी पेढ़ियां हैं।

१३ प्रिंसेसष्ट्रीट—यहां केमिस्ट और ड्रगिस्टकी बड़ी २ दुकानें हैं। देवकरण मेनशन नामक एक विशाल दर्शनीय बिल्डिंग यहांपर है।

१४ सुतारचाल—यहां सोना चांदीके दागीनेवाले और कागज़के व्यापारियोंकी पेढ़ियां हैं।

१५ लुहारचाल—यहां कांचका सामान बेंचनेवाले व्यापारियोंकी फर्म्स हैं।

१६ मिरजा स्ट्रीट——पेपर स्टेशनरी तथा कांचके व्यापारियोंकी पेढ़ियां हैं।

१७—मूलजी जेठा मारकीट—(न्यूपीस गुड्स बाजार कम्पनी लिमिटेड) इसको मूलजी जेठा कम्पनीके मालिक स्वर्गीय सेठ सुंदरदास मूलजी जेठाने ६ लाखकी लागतसे बनवाया था। इस बाजारमें गांवठी तथा विलायती कपड़ेका व्यापार करनेवाली सैकड़ों पेढियां हैं। इस विशाल बाजारमें भयंकर जन वृष्टिके समय भी एक बूंद पानी नहीं पड़ सकता। इसकी अनुमानतः ३ लाख रुपया साल किरायाकी आमद है। बम्बईकी कापड़ मारकीटमें यह सबसे बड़ा मारकीट है। मारकीटके भीतर प्रवेश करनेपर अपने २ मालके खरीदने और बेचनेमें व्यस्त व्यापारियोंकी कार्य दक्षता बड़ी ही भली मालूम होती है।

१८-विट्ठलवाड़ी—इसमें कपड़ेकी गांठें बांधनेके संचोंकी दुकानें हैं।

१९—भुलेश्वर—यह बम्बईका एक खास धार्मिक स्थान है। श्रीवल्लभ संप्रदायका प्रसिद्ध बालकृष्णलालजीका मंदिर, भुलेश्वर महादेवका मन्दिर, पंचमुखी हनुमानका मंदिर, लालबाबाका मंदिर आदि पचीसों मंदिर हैं, जिनके दर्शनोंके लिये सैकड़ों स्त्री और पुरुष सायं एवं प्रातः उमड़े हुए नजर आते हैं। इस जगह गाड़ी, घोड़ा, मोटर आदिकी विचित्र धमाल रहती है। यहां भुलेश्वर बंबाखाना भुलेश्वर फलका मारकीट, गंधीकी दुकानें, परचूरन किरियानाके व्यापारी, मिठाईके व्यापारी तथा नाटक वगैराकी फेंसी ड्रेस चेहरे आदिके व्यापारियोंकी दुकानें हैं, इसके अतिरिक्त स्त्रियोपयोगी शृंगारकी वस्तुएं एवं फेंसी वस्त्र यहां अच्छी मात्रामें मिलते हैं।

२०—गुलालवाड़ी—यहां तिजोरीके व्यापारियोंकी दुकानें हैं।

२१—जकरिया मस्जिद—यहां चायनीज और जापानीज सिल्कका व्यापार करनेवाली अच्छी २ दुकानें हैं, तथा इसके आसपासके बाजारोंमें विलायती कटपीस (थोक वपरचूटन) बेचनेवाली कई दुकाने हैं।

२२—दाना बंदर—यहाँ अनाजके बड़े २ गोडाउन हैं तथा गल्लेका व्यवसाय करनेवाले बड़े २ मुकादमोंकी पेढ़ियां हैं।

२३—क़रनाक बंदर—नामक टीनकी नलियों एवं चद्दरोंका बड़ा भारी जत्था है।

२४—माण्डवी—इसमें कई बाजार हैं जिनमें सब प्रकारका थोक किराना, रंग, रद्दी, केशर, बारदान, शक्कर, जीरा, घी, आदि वस्तुओंका थोक व्यापार करनेवाली बड़ी २ पेढ़ियां हैं। व्यापारिकवर्गके लिये यह बाजार बहुत ही आवश्यकीय है। यहाँ माल लदी हुई बैल गाड़ियोंकी विचित्र भीड़ रहती है।

२५—क्वीन्स रोड—इस रोडके एक ओर बी० बी० सी० आई० रेल तथा दूसरी ओर मोटर कम्पनियां हैं। प्रातः ऑफिसके समय तथा सन्ध्या समय यहांपर आने-जानेवाली मोटरोंकी रफ्तार दर्शनीय होती है।

एक ओरसे दूसरी ओर जाना कठिन मालूम होता है। एक स्थान पर ५ मिनिट खड़े रहकर आने और जानेवाली मोटरोंकी संख्या गिनी जाय, तो ५०० मोटरें हमारी दृष्टिके सामने गुजर जावेंगी। बम्बईका सोनापुर स्मशानघाट भी इसी सड़कके एक किनारे है।

२५—गिरगांव—सब प्रकारके स्टोर्स एवं माल बेचनेवालोंकी दुकानें हैं।

२६—फारसरोड-गोलपीठा—यहां कई नाटक एवं सिनेमा कम्पनियाँ हैं। बम्बईके मवालियोंका यह खास स्थान है। इस स्थानपर जोखम लेकर जानेमें बड़ी जोखम है।

२७—नल बाजार-भिंडीबाजारः—यहां सब प्रकारकी सस्ती वस्तुएं विकती हैं। नलबाजारका मारकीट यहीं पर है। यहां चोर बाजारके नामसे चार पांच गलियां हैं, जहां बहुत बड़ी तादादमें पुराने लोहेके सामान, तरह तरहके बढ़िया फरनीचर, हायफ्रीके सामान, पुराने कोट, कम्बल, कटलरी आदि आदि सब प्रकारके सामान पुराने और नये सभी प्रकारके बिकते हैं। सन्ध्या समय ठसाठस भरे हुए बाजारमें जेबकट और मवालियोंसे विशेष सावधान रहना चाहिये।

२८—ग्रांटरोडः—यहां मुत्तफर्रिक फर्म्स, होटल तथा नाटक-सिनेमा कम्पनियां है। इसके अतिरिक्त लेमिंगटनरोड चर्नीरोड आदि बहुत बाजार हैं। पर वे खास व्यापारिक बाजार न होनेसे उनका परिचय यहां देना व्यर्थ है।

२९—पुराना दारूखाना—यहां सब प्रकारका भारी पुराना लोहका सामान बहुत बड़ी तादादमें मिलता है।

बम्बई नगरकी बस्ती

यह शहर समुद्रके किनारेपर बहुत सुन्दर स्थानपर बसा हुआ है। इसके तीन ओर समुद्र अपनी प्रचंड तरंगोंसे लहरा रहा है। कुछ समय पूर्व यहांके रास्ते व सड़कें बड़ी तंग और संकुचित हालतमें थीं। मगर गवर्नमेंटका एक प्रिय और कृपापूर्ण स्थान होनेसे यहांकी गवर्नमेण्टका ध्यान बहुत शीघ्र इस ओर गया और सन् १८०६ में यहांके गवर्नरने एक विज्ञप्ति निकालकर आज्ञा दी, कि परेलरोड और गिरगांवरोड नामक सड़कें बढ़ाकर ६० फीट चौड़ी कर दी जांय और शेखमेमन स्ट्रीट और डोंगरी स्ट्रीटकी सड़कें बढ़ाकर ४० फीट चौड़ी कर दी जांय। इसके पश्चात सन् १८१२ में तीसरे आर्डिनेन्स और रेजोल्युशनके मुताबिक किले की सड़कोंमें सुधार हुआ। नगरमें भी सड़कें चौड़ी करनेका कार्य जोरोंसे होने लगा। सन १८३८ में ग्रांटरोडका उद्घाटन हुआ। सन् १८५० में हार्नवी रोड बना और सन् १८६०, ७० के बीच नगरमें ३५ बड़े बड़े राज मार्ग बनकर तैयार हो गये। पहले इन सब सड़कोंका काम म्युनिसिपल कारपोरेशनके हाथोंमें था, परन्तु सन् १८९८ में जब सिटी इम्प्रूवमेण्ट-ट्रस्ट नामक नगर सुधार विभाग स्थापित हुआ, तभीसे यह कार्य इस विभागके हाथमें है। यहांकी सड़कोंमें धीरे धीरे लगातार सुधार होता गया और आज वे सब इतनी सुन्दर और विशाल अवस्थामें हैं कि देखकर तबियत प्रसन्न हो जाती है। प्रायः सभी सड़कें अलकतरेसे पाट दी गयी हैं जो इस समय आईनेकी तरह चमकती हैं। इन सड़कोंपर प्रायः दिनमें दो बार छिड़काव होता है। पहले यह छिड़काव समुद्रके पानीसे होता था पर वैज्ञानिक दृष्टिसे यह अस्वास्थ्यकर सिद्ध होनेकी वजहसे अब मीठे पानी का छिड़काव होता है।

कहनेका मतलब यह है कि बम्बईकी विशाल २ इमारतोंके बीचमें यह चौड़े सुन्दर और सजे हुए राजमार्ग बहुत ही सुन्दर मालूम होते हैं। और बाहरी दृष्टिसे देखनेपर बम्बई एक इन्द्रपुरीकी तरह मालूम होती है।

मगर यह सब अमीरोंकी कहानियां हैं। इस मायाजालके पीछे गरीबीका जो दर्दनाक दृश्य बम्बई शहरमें अभिनीत होता है उसको देखकर हृदय बड़ा दुःखित हो जाता है। इस १२ लाखकी विशाल जन संख्या पूर्ण बस्तीमें केवल ३४८०८ रहनेके मकान हैं। जिनमेंसे दो तिहाईके करीब ऐसे हैं जिनमें केवल एक २ कमरा है ऐसा अंदाज लगाया जाता है कि जहां बस्तीकी गहराई है, वहांपर एक एकड़ जमीनके पीछे लगभग ७५० मनुष्योंके रहनेकी औसत पड़ती है। इस बातकी जांच करके शहरकी सोशियल सर्विस लीगने "मुम्बईनी गली कुच्चियों" नामक एक पुस्तक प्रकाशित की है। उसके अन्दर एक स्थान पर लिखा हुआ है कि बहुतसी चालें (बड़ा मकान जिसमें बहुतसे परिवार एक साथ निवास करते हैं) ऐसी देखनेमें आती हैं जहां भीतर और बाहर कीचड़ और कचरा भरा हुआ रहता है। एक स्थान पर पांच सौ मनुष्योंके लिये केवल दो जगह कपड़े धोनेके लिये बनी हुई हैं जहांपर २ फीट गंदा पानी हमेशा भरा रहता है।

जून सन् १९२२ को लोअर परेलकी म्युनिसिपल चालके लिये एक्जीक्युटिव्ह आफिसरके पास अर्जियां गयी थीं। उनमें एक जगह पर लिखा हुआ है कि ४० किरायेके कमरोंके पीछे केवल एक टट्टी और एक धोनेकी जगह बनी हुई है। दूसरी सात टट्टियां इतनी गन्दी हैं कि वहांपर एक मिनट भी खड़ा रहना असह्य मालूम होता है। यहां तक कि कई दफे इस गंदगीकी वजहसे डाक्टरोंने उस चालमें बीमार मनुष्योंको देखनेके लिये आनेसे भी इनकार कर दिया।

इस नारकीय स्थितिके अन्दर बम्बईकी अधिकांश गरीब जन संख्या अपने संकटमय जीवनको व्यतीत कर रही है। उनके यहां जन्म पाये हुए हजार बालकोंमें से लगभग ४४१ बच्चे जन्मके कुछ ही समय पश्चात् मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

हर्ष इतना ही है कि यहांके म्युनिसिपल कारपोरेशन और इम्प्रूवमेण्ट ट्रस्टका ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ है और वे इनमें सुधार करनेकी चेष्टा कर रहे हैं।

बम्बईका सामाजिक जीवन

बम्बई नगरमें हिन्दुस्थानकी प्रायः सभी जातियोंके तथा सभी भाषाभाषी लोग कमोवेश तादादमें पाये जाते हैं। फिर भी यहांपर प्रधानतया पारसी, भाटिया, गुजराती, मारवाड़ी, खोजा, पञ्जाबी, मुल्तानी, बोहरा इत्यादि जातियोंकी बस्ती विशेष रूपसे पायी जाती हैं।

पारसी—बम्बई नगरकी जातियोंमें सबसे आगे बढ़ी हुई और सुधारके ऊँचे शिखरपर पहुंची हुई यहांकी पारसी जाति है। जिस प्रकार यह जाति अपने अतुल धन और आश्चर्यकारी व्यापारी प्रतिभाकी वजहसे संसारमें प्रख्यात है उसी प्रकार अपने सुधरे हुए सामाजिक जीवनमें भी यह जाति भारतवर्षमें अपना सानी नहीं रखती। केवल भारतवर्षमें ही क्यों, दुनिया भरमें सामाजिक दृष्टिसे आगे बढ़ी हुई सभी

जातियोंमें इसका स्थान ऊँचा है। पारसी समाज की सबसे बड़ी विशेषता उसके अंदर पाया जाने वाला स्त्री स्वातंत्र्य है। इस समाजकी सभी स्त्रियां ऊँची शिक्षासे शिक्षित और सुधरे हुए विचारोंकी होतीहैं। उनका गार्हस्थ-जीवन, दाम्पत्य-जीवन तथा मातृ-जीवन सभी उच्च कोटिके हैं। किसी प्रकारका परदा न होते हुए भी उनका चरित्र बड़ा उज्ज्वल है और शुद्ध आबहवामें अपने पति पुत्र और स्नेही व्यक्तियोंके साथ स्वच्छन्दता पूर्वक घूमते रहनेसे उनका स्वास्थ्य भी उच्च कोटिका रहता है। इस समाजके जीवनने सारे बम्बई शहरके ऊपर अपना एक अच्छा और वांछनीय प्रभाव डाला है।

भाटिया—बम्बईका भाटिया समाज एक धार्मिक समाज है। परंपरासे चले आये हुए धार्मिक विश्वासोंपर इस समाजकी अटल श्रद्धा है। यह समाज अपने धार्मिक विश्वासोंके नामपर लाखों रुपया उदारतापूर्वक खर्च कर देता है। इस समाजके व्यक्ति बड़े सरल सात्विक और व्यापार-कुशल होते हैं। इस समाज में स्त्री-स्वाधीनताकी भावनाएँ पारसी समाजकी तरह उदार नहीं हैं। बालविवाह इत्यादि कुरीतियां भी इस समाजमें काफी तौरपर पायी जाती हैं। फिर भी यह समाज परदेकी गंदी, वीभत्स और स्वास्थ्य का नाश करनेवाली भीषण प्रथासे मुक्त है। गुजराती समाजकी स्त्रियां परदेका बंधन न होनेकी वजहसे स्वच्छन्द वायुमंडलमें टहल सकती हैं।

दक्षिणी—बम्बईका दक्षिणी समाज एक सुधरा हुआ सुशिक्षित और उन्नत विचारोंका समाज है। यद्यपि इस समाजने व्यापारिक जगतमें अधिक ख्याति प्राप्त नहीं की है पर अपने विचारोंकी गंभीरता एवं अपनी राजनैतिक प्रौढ़ताके लिये यह भारतवर्षमें प्रसिद्ध हैं। इस समाजमें भी स्त्रियोंकी शिक्षा—दिक्षा की ओर काफी ध्यान दिया जाता है। परदा, बाल विवाह आदि भयङ्कर सामाजिक कुरीतियोंसे यह समाज मुक्त है।

मारवाड़ी—मारवाड़ी समाज अपने व्यापार कौशल और अपनी उद्यमशीलताके लिये संसारमें प्रसिद्ध है। हिन्दुस्थानका शायद ही कोई नगर, शहर, कस्बा ऐसा होगा, जहां मारवाड़ी जातिने पहुंचकर अपने व्यापारका सिक्का न जमाया हो। मगर खेदके साथ लिखना पड़ता है कि इस जातिकी व्यापारिक विशेषता और उदार प्रवृत्तियां जितनी बढ़ी हुई हैं उतने ही इसके सामाजिक रिवाज पिछड़े हुए हैं। यदि आज इस जातिके लिए विदेश यात्राके द्वार खुले हुए होते तो क्या आश्चर्य है कि कलकत्ता आदि स्थानोंकी तरह लन्दन और न्यूयार्कके बाजारोंमें भी इस जातिका व्यापार चमकता हुआ नजर आता। केवल विदेश यात्रा ही क्यों बालविवाह, वृद्धविवाह; अनमेल विवाह परदा आदि भयङ्करसे भयङ्कर सामाजिक कुरीतियोंने इस जातिको जर्जर कर रखा है। परदेकी प्रथाकी वजहसे इस जातिकी नारियां पालके आमोंकी तरह पीली, दुर्बल, अस्वस्थ और कमजोर संतानोंकी माताएँ हो रही हैं। बाल और अनमेल विवाहकी वजहसे मारवाड़ी संतानें दुर्बल और सत्व-हीन होती हैं। जब इतनी बुरी सामाजिक अवस्थामें भी यह जाति व्यापारके इतने ऊंचे शिखरपर बैठी हुई है तब यदि ये कुरीतियां निकल जाय तो यह जाति और भी कितनी उन्नत हो जायगी उसकी कल्पना भी आनन्द दायक हैं।

हर्ष है कि मारवाड़ी समाजका ध्यान इस ओर जाने लगा है और भविष्यके सुदूर पर्देपर प्रकाशकी चमकती हुई उज्ज्वल रेखा दिखाई देने लगी है।

बोहरा—यह समाज भारतवर्षके सभी समाजोंमें संगठन शक्तिके अन्दर बहुत बढ़ा हुआ है। इस समाजका कोई व्यक्ति अपनी असमर्थताके कारण भूखों नहीं मरता और न अपनी पेट पूजाके लिये वह किसी दूसरी जातिवालेके यहां नौकरी ही करता है। व्यापारिक कुशलतामें भी यह जाति भारतवर्षमें अपना अच्छा स्थान रखती है। फिर भी सामाजिक दृष्टिसे इसमें परदे आदिकी कुप्रथाका काफी जोर है।

साधारण दृष्टिसे देखा जाय तो बम्बईका सामाजिक जीवन भारतके दूसरे शहरोंसे बहुत सुधरा हुआ और समुन्नत है। खासकर परदेकी नाशकारी प्रथाका प्रचार न होनेकी वजहसे स्त्रियोंकी शिक्षा, स्वास्थ्य और उनके गार्हस्थ्य जीवनका यहांपर बड़ा सुन्दर रूप नजर आता है। यहांपर स्त्रियोंकी शिक्षाके लिये कई स्कूल तथा ऊंची शिक्षा देनेवाले हाईस्कूल और कालेज भी बने हुए हैं। जिनमें प्रतिवर्ष सैकड़ों स्त्रियां शिक्षा प्राप्तकर गार्हस्थ्य जीवनमें प्रवेश करती हैं। संध्या समय हिंगिंग गार्डन, चौपाटी तथा अपोलो बन्दरपर जाकर देखनेसे स्त्री-स्वाधीनता और शिक्षाका रमणीय परिणाम तथा दाम्पत्य जीवनका सुमधुर स्वरूप देखनेको मिलता है। इन स्थानोंपर सैकड़ों शिक्षा सम्पन्न दम्पति घूमने आते हैं और जीवनका लाभ और सुमधुर आनन्द लेते हैं। इस गुलाम देशमें भी स्वाधीनताके संसर्गसे बनेहुए इन स्वर्गीय दृश्योंको देखकर मन प्रसन्न हो जाता है।

इसी प्रकार और २ जातियोंका सामाजिक जीवन भी भिन्न२ प्रकारका है मगर स्थानाभावसे हम उन सबका परिचय देनेमें असमर्थ हैं।

बम्बईके कसाई खाने और पशुओंकी करुणाजनक स्थिति

बम्बईमें दूध देनेवाले पशुओंकी दशा बड़ी शोचनीय हैं। यहांपर दूधका व्यापार करनेवाले लोगोंके तबेले बने हुए हैं। तबेलेवाले बाहर गावोंसे अच्छे दूध देने वाले पशुओंको खरीदकर लाते हैं, और उन्हें तबेलोंमें रखते हैं। इस प्रकार इस शहरमें १०६ तबेले, तथा इसके आसपासके दूसरे स्थानोंमें १५१ तबेले बने हुए हैं। इस प्रकार इन तबेलोंमें लगभग ३६००० पशु रहते हैं जिनके छः हजार मन दूधसे बम्बई शहरके निवासी लाभ उठाते हैं। इन जानवरोंके लिये तबेलेवालोंको प्रति दिन प्रति ढोर करीब १॥, २ रुपया खर्च पड़ता है।

यह खर्च जबतक ढोरके दूधसे निकलता है अर्थात् जबतक वह ढोर कमसे कम पांच सेर दूध प्रति दिन देता है तबतक ये लोग उसे रखते हैं और जब दूधका औसत कम हो जाता है, अर्थात् वह ढोर पाँच सेरसे च्यार सेर या तीन सेर दूधपर आ जाता है तब खर्च पूरा न पड़ सकनेकी वजहसे वे लोग लाचार होकर इन हृष्ट-पुष्ट ढोरोंको कसाइयोंके हाथमें बेच देते हैं।

यह तो बड़े ढोरोंकी हालत हुई। बच्चोंकी हालत इनसे भी ज्यादा दर्दनाक और करुणाप्रद है। तबेले वाले समझ लेते हैं कि ये ढोर हमेशा तो हमारे पास रहेंगे ही नहीं; इसलिए उनके बच्चोंकी ओरसे प्रायः वे निर्मम रहते हैं। इसके अतिरिक्त बच्चोंके पालनेमें उन्हें दूधकी भी क्षति होती है, और उनके खूंटेका भी अलग किराया

देना पड़ता है । इनसे वे उनकी कुछ भी फिक्र नहीं लेते, और इस प्रकार ये भूख और प्याससे मारे हुए छोटे २ मासूम बच्चे सूर्य्यकी कड़कड़ाती धूपमें तड़फ २ कर मर जाते हैं। कई ट्रामों और दूसरी गाड़ियोंसे कुचल जाते हैं । महालक्ष्मी नामक स्थानमें प्रति दिन बारह बजेके करीब इस प्रकारके बहुतसे मरे हुए बच्चे म्युनिसिपैलिटीके खटारों पर लदते हुए दिखलाई पड़ते हैं।

इस प्रकार बम्बई शहरमें बड़े हृष्ट पुष्ट और दुधारू ढोर केवल थोड़ेसे घाटेके निमित्त कतल कर दिये जाते हैं। यह कतल बांदरा और बरलाके कसाईखानोंमें होती है। बान्दराके कसाई-खानेमें गाय, भैंस और बैल मिलाकर लगभग २०० जानवर रोज काटे जाते हैं, जिनमें अधिकांश पशु जवान, दुधारू और प्रथम श्रेणीके होते हैं।

इस कसाईखानेकी फर्शपर बलात्कार पशुओंको ले जाया जाता है। वहांपर जाते ही खूनके बहते हुए फव्वारों, कटे हुए धड़ों और मस्तकोंको देखकर ये निर्बोध पशु एकदम चमक उठते हैं और अत्यन्त भयभीत होकर करुण स्वरमें रोते हैं, चिल्लाते हैं, जीवन रक्षाके लिए वहांसे भागनेका प्रयत्न करते हैं, फिर बलात्कार वे वहां लाये जाते हैं, और आखिरी दूध निकालनेके लिये अत्यन्त निर्दयता पूर्वक लाठियोंसे मारे जाते हैं। जिससे उनके सब अङ्ग ढीले हो जाते हैं मारते २ जब वे मृतकवत् हो जाते हैं उस समय उनका आखिरी दूध निकाला जाता है, और फिर मशीनोंसे वे काट दिये जाते हैं।

इस प्रकार हजारों हृष्ट पुष्ट पशु मनुष्यकी रसना वृत्तिपर निर्दयता पूर्वक बलिदान कर दिये जाते हैं। जिस शहरमें धर्म प्राण भाटिया जैन और मारवाड़ीजातियां अतुल धनके साथ बास करती हैं। उसमें इस प्रकारके नारकीय काण्डोंको देखकर आश्चर्य होता है। धार्मिक दृष्टिको छोड़कर आर्थिक दृष्टिसे भी इस प्रश्नपर विचार किया जाय, तो यह प्रश्न कम महत्वपूर्ण नहीं है। गवर्नमेन्टका यह प्रधान कर्तव्य है कि जिन नारकीय काण्डोंसे देशकी सम्पत्ति का इस प्रकार शीघ्र गतिसे ह्रास होता हो उन्हें रोकनेका प्रयत्न करे और कमसे कम इस प्रकारके हृष्ट पुष्ट और उत्पादक प्राणियोंकी हत्याको रोकनेकी ओर ध्यान दे। यहांके जैन समाजका ध्यान आज इस ओर गया है, मगर इस दिशामें और भी बहुत अधिक ध्यान देनेकी आवश्यकता है।

बम्बईके व्यापारिक साधन

जहाजी व्यापार—वर्तमान युगमें व्यापारकी उन्नतिका सर्व प्रधान साधन जहाजी विद्याही है। जिस देशका शीपिंग व्यवहार जितना ही अधिक सुव्यवस्थित होगा, वह देश उतना ही समुन्नत माना जायगा। जिस देशको पक्के मालका एक्सपोर्ट तथा कच्चे मालका इम्पोर्ट करनेकी सब जहाजी सहूलियतें प्राप्त है, वही देश आज संसारमें अपना सिर ऊँचा कर सकता है। आज इस व्यवसायमें अमेरिका, इंग्लैण्ड, जापान, फ्रांस, जर्मनी आदि २ देश वायु वेगसे अपनी उन्नति कर रहे हैं, दिन प्रतिदिन नयी २ खोज एवं सुधार हो रहे हैं। लेकिन

इस ओर जब आज हम अपनी परिस्थितिको देखते हैं तो हमें भारी निराशा होती है, वर्तमानमें हमारे देशमें मालको एक्सपोर्ट इम्पोर्ट करनेवाली, डाकको लादनेवाली, और पेसेञ्जरोंको ले जानेवाली जितनी भी जहाजी कम्पनियां हैं प्रायः सभी विदेशी हैं। हां, एक समय ऐसा भी था जब हमारे देशमें भी इस व्यवसायका इतना उत्थान था कि हम अपने यहांके बने हुए जहाजोंपर माल लादकर इंग्लैण्ड वगैरह देशोंमें भेजते थे और विदेशोंमें हमारे जहाज टिकाऊ एवं मजबूत प्रतीत हो चुके थे। लोग बड़ी चाहसे उन्हें खरीदते थे। लेकिन ज्यों ज्यों अंग्रेजी आधिपत्य हमारे देशमें जड़ पाता गया, त्यों त्यों हम इस व्यवसायको भूलते गये एवं इस बातकी चेष्टाएं की गईं जिससे हम इस व्यवसायको सर्वथा भूल जांय।

प्रसन्नताका विषय है कि इधर कुछ वर्षोंसे हममें जागृतिके चिन्ह दृष्टिगोचर होने लगे हैं। बम्बईके प्रतिष्ठित मिल मालिक सेठ नरोत्तम मुरारजी जे० पी० और कई सज्जन इस विषयमें भारतीयोंका पैर आगे बढ़ानेके लिए बहुत अधिक प्रयत्न कर रहे हैं। आप लोगोंके परिश्रमसे सन् १९२६ से गवर्नमेंटने डफरिन ट्रेनिंग शिप नामक जहाजी विद्या सिखलानेका एक स्कूल स्थापित किया है। यह शिक्षा समुद्रमें डफरिन नामक जहाजपर ही दी जाती है। इस विद्याके सिखलानेके लिए करोड़ोंकी लागतसे डफरिन नामक एक स्पेशल जहाज बनवाया गया है, इसमें प्रति वर्ष ३० भारतीय छात्रोंको जिनकी वय १६ वर्षसे अधिक न हो, जहाजी शिक्षा देनेके लिए भरती किया जाता है। यहांका ३ वर्षका कोर्स है। यहां शिक्षा प्राप्त करनेके बाद ३ वर्ष दूसरे जहाजमें काम करनेपर यहांका छात्र जहाजी आफिसरका पद पा सकता है। गवर्नमेंट द्वारा भारतीयोंको इस प्रकारकी शिक्षा देनेका यह प्रथम ही स्कूल है। वर्तमानमें इस जहाजमें २९ छात्र हैं। महीनेके प्रथम रविवारको गेट आफ इण्डियासे २ बजे एक नौका उन छात्रोंसे भेंट करनेवाले मनुष्योंकोले जाती है। एवं जहाजपर सब छात्रोंसे भेंट कराकर वापस छोड़ जाती है, यह प्रबंध डफरिन जहाजकी ओरसे ही है। इसीप्रकार महीनेके अंतिम रविवारको सब छात्र शहरमें आ सकते हैं। इसमें ब्राह्मण, पंजाबी, क्रिश्चियन, गुजराती, दक्षिणी आदि सभी तरहके छात्र हैं।

हम ऊपर कह आये हैं कि हमारा विदेशोंके साथ जितना व्यवसायिक सम्बन्ध है उन सबके लिये हमें विलायती जहाजी कम्पनियोंकी शरण लेनी पड़ती है वर्तमानमें कुछ नीचे लिखी हुई प्रसिद्ध कम्पनियां विदेशोंके साथ भारतका व्यवसायिक सम्बन्ध जोड़नेका काम करती हैं दूसरे देशोंके पक्के मालको भारतमें लाती हैं, तथा यहाँका कच्चा माल लादकर सात समुद्र पार पहुंचा देती हैं।

(१) पी० एण्ड० ओ० स्टीम नेवीगेशन कम्पनी—यहांसे अदन, इजिप्ट माल्टा जिब्राल्टर होती हुई इंग्लैण्ड जाती है। यह जहाज प्रति शनिवारको यहांसे मेल स्टीमर तथा पेसेंजर लेकर नियम पूर्वक

रवाना होता है। इस कम्पनीके पूर्व सन् १८२५में सबसे पहिले बम्बईसे योरोपकी यात्रा भाफसे चलनेवाले जहाजपर की गई, इस यात्रामें ११३ दिन लगे। सन् १८३८ में मासिक डाक भेजनेका प्रबंध किया। यह डाक इण्डियन नेवीके क्रूजरपर मासकी पहिली तारीखको रवाना होकर स्वेज नहर तक स्टीमर पर ही जाती थी, वहां ब्रिटिश एजेंट उपस्थित रहते थे, क्रूजर उनको डाक सौंपकर और उनसे इङ्गलैण्डकी डाक ले वापस भारतके लिये रवाना हो जाता था। इंगलिश एजण्ट आई हुई डाकको कारवोंपर लादकर भूमध्यसागरकी ओर चल देते, रास्तेमें मिश्रकी राजधानी कैरो, तथा मिश्रके एकमात्र महत्त्वपूर्ण बंदर सिकंदरियामें विश्राम करते हुए समुद्रतटपर पहुंचते। वहांपर इंग्लिश जहाज डाककी प्रतीक्षामें खड़े रहते थे,वे अपनी डाक इन्हें सौंप भारतकी डाक लेकर माल्टा, मार्सेलीज तथा पेरिस होते हुए २६ दिनमें इङ्गलैंडपहुंचते। इतना प्रबंध होते हुए भी वर्षाऋतुके लिये कोई सुप्रबंध नहीं था। बम्बई टाइम्सके ५ सितम्बर सन् १८५३ के अंकसे पता चलता है कि डाकके कुप्रबंधपर असंतोष प्रगट करनेके लिये यहांके नागरिकोंने टाउनहालमें एक सार्वजनिक सभा कर प्रबंध की ओर संकेत करते हुए सरकारकी कड़ी आलोचना की थी।

परिणाम यह हुआ कि गवर्नमेंटने पी० एण्ड ० ओ० कम्पनीको भारत और इङ्गलैंडके बीच डाक लाने और ले जानेका कंट्राक्ट सन् १८५५में दे दिया यह कंट्राक्ट मासमें एकबार डाक ले जानेका था। इतनेपर भी जनता का आंदोलन शांत न हुआ। तब सन् १८६७में फिर पी० एण्ड० ओ० कम्पनीसे साप्ताहिक डाकका कंट्राक्ट किया गया। जहां पहिले २८ दिनमें डाक पहुंचती थी वहाँ २६ दिनमें ही डाक पहुंचने लगी। इस समय सारी अंग्रेजी डाकके लाने और ले जानेका केन्द्र बम्बई नियत किया गया। सन् १८६९में स्वेजनहर बनी और धीरे धीरे डाककी व्यवस्थाएं सोची जाने लगीं। सन् १८८० में पी० एण्ड० ओ कम्पनीने एक नवीन कंट्राक्ट किया जिससे २६ दिनमें पहुंचाई जानेवाली डाक १७½ दिनमें पहुंचने लगी। बादमें १७½ दिनसे १६½ दिनोंमें डाक पहुंचानेकी व्यवस्था की गई और फिर अन्तमें सन् १८९८में १६½ दिनकी अवधिको कमकर १३½ दिनमें भारतसे इङ्गलैंड डाक पहुंचानेका नया करारनामा किया गया। यह सुप्रबंध आजतक भली प्रकार चल रहा है। इसप्रकार नियत मितीपर डाक पहुंचानेके लिए भारतसरकार, पी० एण्ड० ओ० कम्पनीको ३ लाख ३० हजार पौंडसे अधिककी आर्थिक सहायता हर साल देती है।

इस प्रकार भारतके डाक विभागके सुप्रबंधसे इस कम्पनीका बहुत सम्बन्ध है। सन् १८६८ के नियमके अनुसार जहाजपर ही डाक छांटकर भिन्न २ झोलोंमें बंदकर रक्खी जाती है। जहाजके बंदरपर पहुंचते ही सब झोले रेलवेके डब्बेमें लाद दिये जाते हैं। जहाजके बंदरपर पहुंचनेके कुछ घंटे बाद ही स्पेशल इम्पीरियल मेल नामक डाकगाड़ी डाक एवं दूर देशोंसे आये हुए यात्रियोंको लेकर भारतके विभिन्न शहरोंके लिये रवाना हो जाती है।

(२) ओसाका मरकंटाइल स्टीम शीपिंग कम्पनी—भारतसे प्रति पन्द्रहवें दिन अमेरिका तथा आस्ट्रे-
लियाके लिये रवाना होती हैं।

(३) इटालियन मेल स्टीम नेवीगेशन कम्पनी—भारत और इटलीके बीच मेल तथा सवारी लेजाने वाली कम्पनी है।

(४) जापान मेल स्टीमशीपिंग कम्पनी लिमिटेड—बम्बई से जापानके लिये सफर करती है प्रति पंद्रहवें दिन रवाना होकर कोलम्बो, सिंगापुर, हाँगकांग, संघाई, कोबी तक जाती हैं।

(५) लाइड ट्रस्टिनो—बम्बईसे पेरिस लंदन, वेनिस आदि स्थानोंके लिये रवाना होती है।

इसके अतिरिक्त बाम्बे स्टीमनेवीगेशन कम्पनी, बाम्बे परशिया स्टीमनेविगेशन कम्पनी आदि कई जहाजी कम्पनियां हैं।

सिंधिया स्टीम नेवीगेशन कम्पनी लिमिटेड—इस जहाजी कम्पनीके शेयर होल्डर सब भारतीय हैं, इस प्रकारकी भारतीय कम्पनियोंके प्रति भारतको गर्व है।यह सेठ नरोत्तम मुरारजी(मालिक मेसर्स मुरारजी गोकुल दास एण्ड कम्पनी) के परिश्रमसे स्थापित की गई है। इसकी रजिष्ट्री २७ मार्च सन् १६१६में हुई है। इस कम्पनीका वर्तमान अथराइजड केपीटल १करोड़ ५० लाख है जिसमेंसे वसूल ८६८३५७५) हुए है।

मैनेजिंग एजेंट—मेसर्स नरोत्तम मुरारजी एण्ड कम्पनी सुदामा हाऊस बेलार्ड स्टेट

डायरेक्टर्स—

सेठ नरोत्तम मुरारजी जे० पी० (चेयरमैन)

ओनरेबल सर दिनशावाचा

सेठ वालचंद हीराचंद सी० आई० ई०

सेठ लालजी नारायणजी

मि० एच० पी० मोदी

मि० एच० डी० नानावटी

वर्तमानमें इस कम्पनीके पास १० बड़ी स्टीमर है जो ४००० टनसे लगाकर ८७०० टन तक वजनके हैं।

हेड ऑफिस—बम्बई सुदामा हाऊस बेलार्ड स्टेट

ब्रांचेज—कलकत्ता (क्लाइव ष्ट्रीट) (२) रंगून (३) अकयाब (४) मोलमीन (५) करांची (६) कालीकट इसके अतिरिक्त भारतीय किनारोंपर इसकी ३० बंदरोंपर एजंसियां हैं।

सार्विस—वर्मासे कोलम्बो, कलकत्ता ?.करांची सर्विस, वर्मासे कलकत्ता, वर्मासे इण्डिया। यह कम्पनी भारतीय किनारोंपर एक स्थानसे दूसरे स्थानपर माल पहुंचानेका व्यापार करती है।

इस कम्पनीके जलबाला नामक जहाजका उद्घाटन आनरेबल मि० बी० जे० पटेलके हाथोंसे ग्लासगोमें हुआ था। इस कम्पनीमें भारतीय विद्यार्थियोंको इञ्जिनियरिङ्ग तथा नेवीगेशनकी शिक्षा देनेका भी प्रबन्ध है, वर्तमानमें यह फर्म अच्छे रूपसे लाभ उठाते हुए काम कर रही है। करीब १०, १२ लाख रुपया प्रति वर्ष इस कंपनीको मुनाफेका बच जाता है।

बम्बईसे दूसरे देशोंको लगनेवाला जहाजी किराया

	पहिलादर्जा रु०	दूसरा दर्जा रुपये
स्वेज् नहर	४६५)	३३०)
लीवरपूल	७०४)	४६२)
लण्डन	८०६)	४८६)
माल्टा	६१६)	४१३)

यहांसे विदेश जानेके लिये पासपोर्टकी आवश्यकता होती है। बिना पासपोर्ट प्राप्त किये कोई व्यक्ति जहाजकी यात्रा नहीं कर सकता।

गोदियां— भिन्न २ माल लादने व लानेवाले जहाज अलग २ गोदियोंपर अपने लंगर डालते हैं। इन गोदियोंकी सुव्यवस्थाके लिए बाम्बे पोर्ट ट्रस्टने बहुत अग्रगण्य रूपसे भाग लिया है। जहाजोंपरसे माल उतारने व लादनेका कुल काम मशीनों द्वारा ही होता है, गोदियोंपर जो माल आता व जाता था, वह रेलवे स्टेशनोंसे खटारों या लॉरियोंमें भरकर गोदीतक पहुंचाया जाता था, इस भंयकर कष्टको दूर करनेके लिये पोर्टट्रस्टके सदस्योंने सन् १८६४ में पोर्टट्रस्ट रेलवे लाइन खोलनेका निश्चय किया जिसके द्वारा सीधे जहाजसे माल लेजाया जाय और जहाज तक पहुंचा दिया जाय। फलतः १६०० ईस्वीमें जी० आई० पी० के कुर्ला स्टेशनसे तथा बी०बी० सी० आई के माहीमके पाससे पोर्टट्रस्ट लाइनके बनाने का निश्चय होगया। अब भारतके विभिन्न प्रांतोंका माल बिना शहरमें प्रवेश किये ही सीधा बन्दरपर पहुंच जाता है, तथा बन्दरसे उतरनेवाला माल जहाजसे उतारकर रेलमें भर दिया जाता है और भारतके विभिन्न प्रान्तोंमें पहुंचा दिया जाता है। यों तो यहां करीब ३५ गोदियां हैं। पर उनमेंसे प्रधान २ बन्दर इस प्रकार हैं (१) सासुन डाक (२) बेलार्डपीयर (३) विक्टोरिया डाक (४) प्रिंसेसडाक (५) मोदी बंदर (६) मजगांव बन्दर (७) डाकयार्ड (८) अपोलो बंदर (६) अलेक्मेण्ड्राडाक आदि इन सब स्थानों पर भिन्न २ माल उतरता है।

रेलवे—भारतमें रेलवे लाइन चलानेका सूत्रपात १८४३ ई० में हुआ और बम्बईके समीप थाना नामक गांवतक रेलवे लाईन बनानेका निश्चय किया गया एवं लाइन बनाई गई। प्रारंभमें

यह रेलवे करीब प्रति घन्टा १० मीलकी चालसे दौड़ती थी, तथा सवारी बैठानेके सिवाय माल नहीं लादती थी इस रेलवेका नाम बाम्बे ग्रेटईस्टर्न रेलवे रक्खा गया था सन् १८४५ की १९ अप्रेलको टाउन हालमें एक सभा हुई थी जिसमें बम्बईके नागरिकोंने रेलवेकी इस योजनाको सफल बनाने वाले व्यक्तियोंकी धन्यवाद दिया था।

जी० आई० पी०—इसी बीचमें उपरोक्त उद्द शोंको लेकर इङ्गलैंडमें एक ज्वाइण्टस्टाक कम्पनी स्थापित हुई उसकी स्वीकृत पूञ्जी २९०६०६०८४) रु० की थी । इस कम्पनीका नाम ग्रेटइण्डियन पेनिनशुला रेलवे कम्पनी रक्खा गया। इस कम्पनीके अनुरोधसे बम्बईमें भी सन् १८४५के जुलाई मासमें एक प्रभावशाली कमेटीका स्थापन किया गया। लंदनसे एक रेलवे लाइनके विशेषज्ञ भारत आये तथा कुछ कालतक वे यहांकी परिस्थिति एवं प्रदेशकी छानबीन करते रहे, सन् १८४९ की पहिली अगस्तको जी० आई० पी० की रजिस्ट्री करवाई गई, तथा उक्त कम्पनीके डायरेक्टरोंने ईस्टइण्डिया कम्पनीसे रेलवे लाइन चलानेका.कंट्राक्ट लिया सन् १८५३ में बम्बई और थानाके बीच रेलवे लाइन बनकर तैयार होगई, तथा इसी वर्ष बम्बई और थानेके बीच पहली गाड़ी १६ अप्रेलको बड़े समारोहके साथ दौड़ी। इस खुशीके उपलक्षमें उस दिन सब स्थानोंपर छुट्टियां मनाई गई और समाचार पत्रोंने अपने विशेषांक निकाले ।*

इसके बाद रेलवे लाइनका विस्तार आरम्भ हुआ। सन् १८७० ई० में रेलवे कम्पनीने पुनः ईटइण्डिया कम्पनीके डायरेक्टरोंसे नवीन कंट्राक्ट लिया और करारनामेंपर सन् १८७० ई० की ३० नवम्बरको हस्ताक्षर किये । इसी वर्ष बम्बई और कलकत्तेके बीच रेलवे लाइन तैयार हुई और रेलगाड़ी दोनों नगरों के बीच दौड़ने लगी। सन् १८७१ ई० में बम्बई और मद्रासके बीचकी लाइन तैयार हो गयी और रेलगाड़िया दौड़ना आरम्भ होगयी। रेलवे लाइन बनाने और गाड़ियां तैयार करनेमें लगनेवाले मालको तैयार करनेके लिये रेलवे कम्पनीने सन् १८७९ ई. में बम्बईके परैल नामक स्थानमेंअपना निजका एक कारखाना खोला।

ज्यों २ रेलवे लाइनका विस्तार हुआ, त्यों २ कम्पनीकी आयमें भारी वृद्धि हुई। कंपनीके कंट्राक्टकी शर्त्तोंमें अन्य शर्तोंके साथ एक यह भी शर्त थी कि निश्चित अवधिके बाद यदि शासन प्रबन्ध संचालिनी सत्ता रेलवे कम्पनीके तमाम कारोबारको खरीदना चाहेगी, तो उचित मूल्य देनेपर वह खरीद सकेगी। इस प्रधान शर्त्तके आधारपर अन्तिम अवधिके समाप्त होजानेपर जो नया

---

*बम्बई टाइम्सने सन् १८५३ ई० की १६ वीं अप्रेलको रेलवे लाइनके खुलनेके सम्बन्धमें यों लिखा थाः—

The 16th april 1853 will hereafter stand as a red-letter day on the Calendar. The opening of the first railway ever constructed in India forms one of the most important events in the annals of the east.

Bombay Times.

करारनामा कंट्राक्टका हुआ था वह भी सन् १६०० ई० की १ ली जुलाईको समाप्त हो गया और शर्तोंके अनुसार भारत सचिवने रेलवेकम्पनीको खरीद लिया। भारत सचिवको ३,४८,५६,२१७ पौण्डकी रकम कम्पनीको सम्पूर्ण सम्पत्तिके मूल्यके स्वरूपमें देनी पड़ी है। इस रकमके चुकानेकी अवधि ४८ वर्ष ४८ घन्टेकी है अतः इस अवधिमें रुपया चुका दिया जायगा परन्तु रुपया चुकाने तक रेलवेका प्रबन्ध भार रेलवे कम्पनीके हाथमें ही रहेगा।

अभी थोड़े ही समय पूर्व इस लाइनने बिजलीकी गाड़ी भी आरंभ की है। इस ट्रेनमें एंजिन कोयला भाफ वगैरःकी आवश्यकता नहीं पड़ती। बिजलीकी शक्तिसे ही बड़ी द्रुत गतिसे यह गाड़ी दौड़ती है। फिलहाल बम्बईके लोकल व्यवहारमें ही इस लाइनका उपयोग सवारी ले जानेका किया जाता है। पर कम्पनीकी इच्छा है कि इस लाइनकी उत्तरोत्तर वृद्धि की जाय। इस लाइनका प्रधान ऑफिस बोरीबंदर है। जो एशियाभरमें सबसे सुंदर स्टेशन माना जाता है। इस लाइनकी लोकल ट्रेनें विक्टोरिया टर्मिनस (बोरीबंदर) से कल्याणतक करीब ६०।७० की संख्यामें दौड़ती हैं। इसके अतिरिक्त रेलवे कम्पनीने अपना गुड्स ऑफिस वाड़ी बंदरपर रक्खा है। व्यापारियोंकी सुविधाओंके लिये स्टेशनोंके अतिरिक्त पायधुनी ताजमहल होटल; आर्मीनेवी स्टोर्स इत्यादि स्थानोंपर भी पार्सल एवं टिकिट ऑफिसका प्रबंध है।

बी० बी० एण्ड सी० आई०—बम्बई बड़ोदा एण्ड सेन्ट्रल इण्डिया रेलवे कम्पनीकी स्थापना सन् १८५५ ई० के जुलाई मासमें इंग्लैण्डके अन्तर्गत हुई थी। इसकी स्वीकृत पूंजी आरंभमें ११,६८,७४,५४५) रु० की थी। इस रेलवेकम्पनीने ईस्ट इण्डिया कम्पनीसे सूरत, अहमदाबाद और बड़ोदेके बीच रेलवे लाइन तैयार करनेका कंट्राक्ट सन् १८५५ ई० की २१ नवम्बरको लिया। और कुछ वर्ष बाद जब उक्त रेलवे लाइन बनकर तैयार हो गयी तो कम्पनीने पुनः सन् १८५९ ई० की २ री फरवरीको ईस्ट इण्डिया कम्पनीसे सूरतसे बम्बईतक लाइन लानेका कंट्राक्ट लिया। इस प्रकार बी० बी० एण्ड० सी० आई० रेलवेने बम्बई और बड़ोदेके बीच रेलगाड़ियाँ जारी कर दीं। रेलवे कम्पनी और भारत सरकारके बीच जो कंट्राक्ट हुआ था उसकी शर्तके अनुसार एक बार तो २५ वर्षमें और दूसरी बार ५० वर्षमें कंट्राक्टकी अवधि समाप्त होनेका समय रक्खा गया था। इस अवधिके समाप्त होनेपर सन् १६०५ में सरकारने २० लाख पाउण्ड देकर कम्पनी खरीद ली। और एक नवीन कम्पनीको कायम करनेके लिये निम्नाशयकी शर्तोंपर रेलवेको कंट्राक्ट दे दिया।

२० लाख पौण्ड जो बिक्रीका मिला है वही नवीन कम्पनीकी पूंजी रहे। इस पूंजीपर कम्पनी ३ प्रतिशत वार्षिक व्याज ले सकती है। इस कंट्राक्टकी अवधि २५ वर्षकी रहेगी और इसके बाद ५ वर्षमें नयी प्रबन्ध-व्यवस्था की जायगी।

इस रेलवेका प्रधान स्टेशन कुलावा है। बम्बई शहरके लोकल व्यवहारके लिये इस कम्पनीकी

कुलावासे बरारतक करीब ९० लोकल ट्रेनें दौड़ती हैं। इस कम्पनीने भी जी० आई० पी० की तरह अपने लोकल व्यवहारमें बिजलीकी गाड़ीका आरंभ किया है। इस कम्पनीका गुड्स ऑफिस करनाक बंदरपर है। तथा रेलवे स्टेशनके अतिरिक्त टिकिट और पार्सलके लिये कालबादेवी, क्राफर्ड मार्केट, ताजमहल होटल, तथा आर्सनेवी स्ट्रीटपर प्रबंध किया है।

सन् १८८५ की पहिली जनवरीको जी० आई० पी० और बी० बी० सी० आई० का कोचिंग और गुड्स स्टॉक परस्पर परिवर्तन किया जाने लगा। इससे एक दूसरेकी लाइनके डब्बे दोनों लाइनोंपर आने जाने लगे, जिससे व्यवसायमें बहुत सहूलियतें पैदा हो गईं।

पोस्टऑफिस

इस्ट इण्डिया कम्पनीके समय भारतमें डाककी कोई सुव्यवस्था नहीं थी। सन् १६६१ ईस्वीके लगभग ईस्ट इण्डिया कम्पनीके पास जो पत्र आते थे वे उन व्यापारी जहाजोंके द्वारा आते थे जो समय २ पर उधर होकर निकल जाते थे। इन जहाजोंमें लंदन होकर जानेवाले जहाज़ बहुत कम मिलते थे। इसी प्रकार भारतके भीतरी भागमें पत्रोंके पहुंचानेका कोई प्रबंध नहीं था। इसलिये १८८८ में ईस्टइण्डिया कम्पनीके डायरेक्टरोंने यहां पोस्टका व्यवहार जारी करनेके लिये विचार किया। परदेशी और विदेशी डाककी नियमित व्यवस्थाका परिचय सन् १८८७ से श्रृंखलाबद्ध मिलता है। उस समय प्रतिवर्ष ३० नवम्बरको क्रूजर जहाज कलकत्तेसे डाक लेकर मद्रास और बम्बई होता हुआ स्वेज् नहरतक अपने एजेंटके पास पहुँच आता था। सन् १८८७ में बम्बईमें पोस्टमास्टरकी नियुक्ति हुई। प्रांतकी डाक व्यवस्थाके लिये मि० चार्ल्स एल्फिस्टनकी देख-रेखमें बम्बई-का जनरल पोस्ट ऑफिस खोला गया। सन् १७९८ में मासिक रूपमें विलायत डाक भेजनेका प्रबंध किया गया।

यह प्रबंध ईस्टइण्डिया कम्पनीका निजका था। बम्बईके टाइम्स ऑफ इण्डियाके अक्टोबर सन् १८५४ के अंकसे पता चलता है, कि उस समय अपने प्राइवेट पत्र भेजनेवाले व्यक्तिको सेक्रेटरी टू दि गवर्नमेंटको एक पत्र लिखना पड़ता था, तथा साथमें भेजा जानेवाला पत्र भी भेजना पड़ता था। पत्रमें भेजने वालेका परिचय एवं हस्ताक्षरकी आवश्यकता होती थी, इस प्रकार ४ इंच लम्बे २ इंच चौड़े तथा ¼ तोला वजनके पत्रकी १०), आधा तोला की १५) तथा १ तोलाकी २०) रुपया फीस देनी पड़ती थी। पता चला है कि उन्नीसवीं शताब्दीमें मेहरवानदास पोस्टवाला नामक, एक पारसी सज्जनने एक स्थानसे दूसरे स्थानपर डाक भेजनेका अपना प्राइवेट प्रबंध कर रक्खा था, और ये प्रतिपत्र १ पैसा लेकर पत्र भी पहुँचा देता था। १८२५ में थैलेकी प्रथाका जन्म हुआ एवं बम्बई और पूनेके बीच बेंतकी पिटारीमें कुलीके सिरपर डाक पहुँचाई जाती थी। सन् १८४६ में रजिष्टर्ड पत्रोंकी व्यवस्था की गई और १८५४ में छापे कागजोंपरसे।) फीस उठाकर
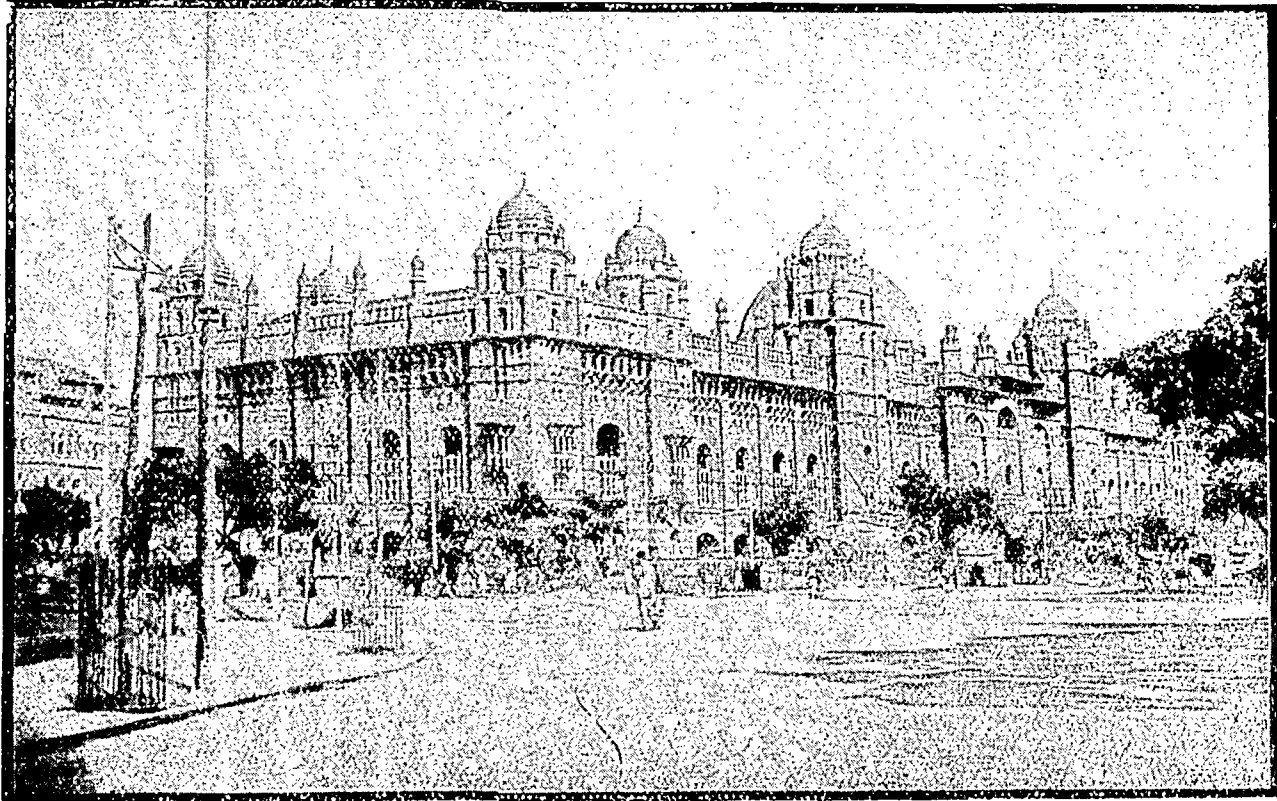
जनरल पोस्ट ऑफिस, बम्बई
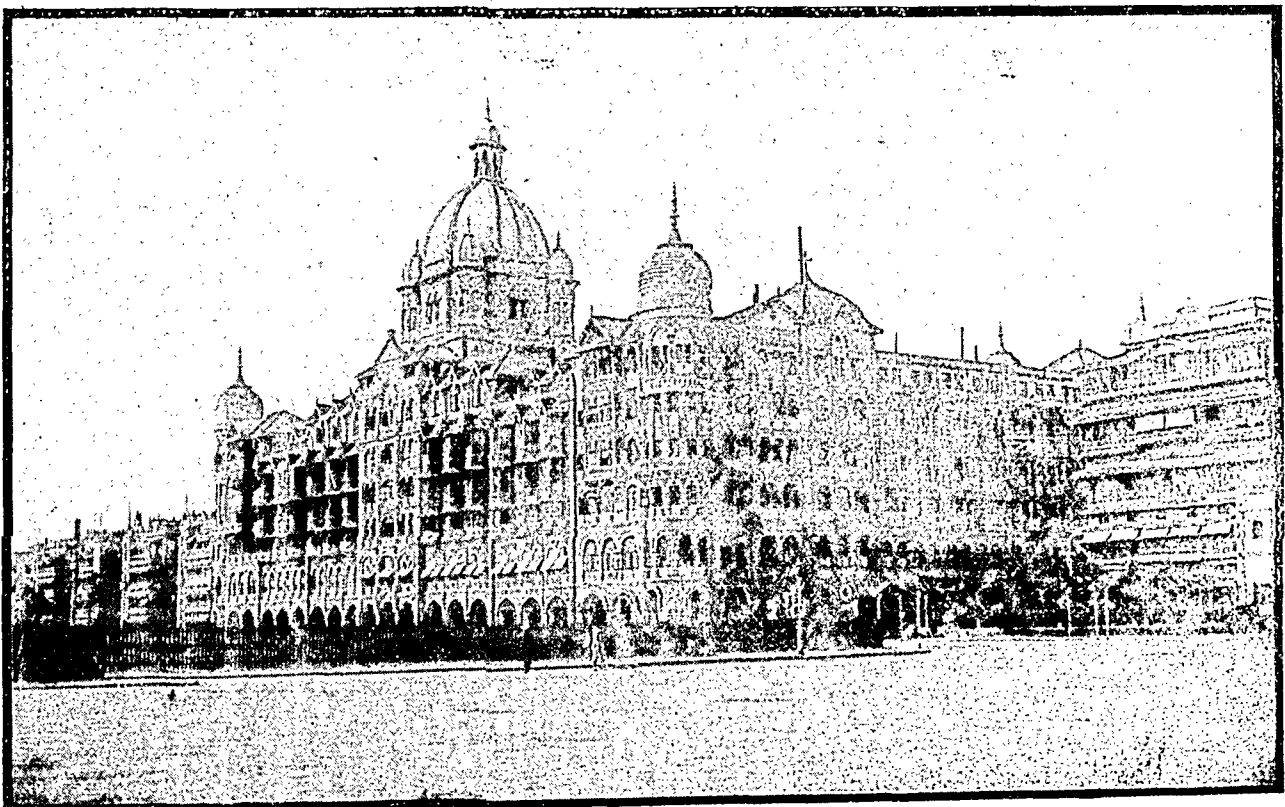
एक आना कर दिया गया। १८८० से बम्बईमें वी० पी० और मनीआर्डरकी प्रथा जारी हुई। सन् १८८१।८२ में यहां पोस्टकार्ड प्रचलित हुए। १८८२ में ही पोस्टल सेविंगबैंककी स्थापना और १८९८ में बीमा भेजनेकी प्रथा प्रचलित की गई।

वर्तमान बम्बई नगरमें ३६ पोस्ट ऑफिस हैं। कुछ पोस्टऑफिसमें केवल डाक ली जाती है बांटी नहीं जाती और कई डाकखानोंमें डाक ली भी जाती है और बांटी भी जाती हैं। कई पोस्ट ऑफिस ऐसे हैं जिनमें दिनमें १३ बार डाक निकाली जाती है। नगरमें ७ डाकखाने ऐसे हैं जिनके साथ तार ऑफिस भी है। इसके अतिरिक्त भिन्न २ स्थानोंपर लगे हुए नगरमें करीब ३३७ लेटर बक्स हैं। नगरके क्षेत्रफल और डाक विभागकी तुलना की जाय,तो प्रत्येक २ वर्गमीलके क्षेत्रमें ३ पोस्ट ऑफीस तथा ३० लेटरबॉक्सका औसत आता है।

सन् १८८८ से यहांके जनरल पो० ऑ० में घंटे-घंटेमें डाक बांटा जाना आरंभ हुआ। ब्रिटेनके लिये यहांसे प्रति शुक्रवारको मध्याह्नके १ बजे डाक रवाना की जाती है

तार

सन् १८४९ में ईस्टइण्डिया कम्पनीने डा० ग्रीनको तारकी प्रथा जारी करनेका भार सौंपा। आपने सिक्रेयेटेड भवनसे परेल गवर्नमेंट हाऊसके बीच बिजलीके तारसे बातचीत करनेकी व्यवस्था की। इस बातके लिये बम्बई सरकारने ७४२१) की सहायता आपको दी। सन् १८५४ में थानातक तार की लाइन बनी और १८५५ में बम्बई और मद्रासके बीच तारसे बातचीत करना आरंभ हो गया।

चेम्बर आफ कामर्सकी १८५४ की रिपोर्टसे पता चलता है कि उस समय गवर्नर जनरलने सपरिषद तारके नियम तैयार किये वे इस प्रकार हैं।

एक शब्दसे सोलह शब्दतक १) सत्रहसे चौबीसतक १॥)

पचीससे बत्तीसतक २) तैंतीससे अड़तालीस तक ४॥)

सन् १८५९ में तारकी चार लाइने और खोली गई और सन् १८६४ की १५ मईसे बम्बईका योरोपसे तार सम्बन्ध स्थापित हुआ।

वर्तमानमें इस विद्याने आशातीत उन्नति कर दिखाई है। इस समय नगरके प्रधान तार घरके अलावा ८ स्वतंत्र तारघर और हैं और ६ तारघर पोस्टके साथ जुड़े हैं नगरके सभी तार ऑफिसोंका सम्बन्ध नगरके बड़े सेंट्रल टेलीग्राफ ऑफिससे है। सेन्ट्रल टेलिग्राफ औफिस फ्लोराफाउण्टनपर है।

टेलीफोन—सन् १८८०।८१ के नवम्बर मासमें भारत सरकारने यहांके चेम्बर ऑफ कामर्ससे टेलीफोन स्थापित करनेके लिये पत्र व्यवहार किया। चेम्बरने सरकारको परामर्श दिया कि टेलीफोनका काम स्वयं सरकार हाथमें न ले, प्रत्युत किसी व्यवसायी कम्पनीके जिम्मे यह काम कर दिया जाय। सन् १८८१ में टेलीफोन कम्पनीको आज्ञा भी मिली पर वह काम न कर सकी। तब सन् १८८२ में बाम्बे टेलीफोन कम्पनीकी स्थापना हुई, और

उसने १८८३ की ३० वीं जून तक नगरमें १४४ टेलीफोनकी चौकी स्थापित की। सन् १९०६ में कम्पनीने स्थानीय हार्नवी रोडपर अपना बड़ा ऑफिस खोला। धीरे २ टेलीफोनका इतना प्रचार हुआ कि आज बम्बईमें एक एक मकानमें टेलीफोन पाये जाते हैं। टेलीफोन कम्पनीने बम्बईसे बाहर टेलीफोन भेजनेको भी योजना की है।

ट्राम—बम्बई म्युनिसिपैलेटीने ट्राम लाइन लानेकी सूचना भारत और विलायतके पत्रोंमें प्रकाशित-की और स्टियर्नस एण्ड किटेज नामक कम्पनीको सन् १८७३ में ठेका दिया गया। यह कम्पनी घोड़ेकी ट्राम दौड़ाती थी इसके पास करीब ९०० घोड़े थे सन् १९०५ में दि बाम्बे इलैक्ट्रिक सप्लाई एण्ड ट्रामवे कंपनी की रजिष्ट्री कराई गई, इसकी पूंजी १६ लाख ५० हजार पौंडकी थी पुरानी ट्राम कंपनीका सब कार्य भार लेकर इसने सन् १९०७ के मई मासमें बिजलीकी ट्राम गाड़ी आरंभ की। पुरानी कंपनीकी १७½ मीलकी लाइन पर कमी किराया न बढ़ानेका दोनों कंपनियोंके बीचमें ठहराव हुआ। इस नवीन कंपनी और म्युनिसिपल कार्पोरेशनमें यह शर्त हुई कि यह करार नामा४२ वर्ष तक जायज माना जायगा, बाद यदि कार्पोरेशन चाहे तो कंपनीके कारो-बारका मूल्य और ४० लाख रुपया अधिक देकर उसे खरीद सकता हैं। ५६ वर्षके बाद मूल्यके सिवाय ३० लाख रुपये नामके (good wil अधिक देने होंगे)। और यदि ६३ वर्षके बाद म्युनिसिपैलेटी खरीदना चाहे तो उसे कंपनीके कारोबारके मूल्यके अलावा और कुछ नहीं देना होगा। यह ट्राम्वे कंपनी, पुरानी कंपनीकी लाइनका किराया यहांकी म्युनिसिपैलेटीको ३ हजार रुपये प्रति मील देती है। बंबईमें साधारण ट्रामका भाड़ा एक आना है, कुछ दूरवर्ती स्थानोंका डेढ आना है। यहां ट्रामकी बहुत सुव्यवस्था है साधारण वर्गको इससे बहुत लाभ पहुंचता है।

मोटर—यहां मोटरका प्रचार १९०० ईस्वीके बाद ही हुआ है बंबईकी सड़कोंपर सर्वप्रथम १९०१ में मोटर देखी गयी। तथा १९०५ की ८ फरवरीको म्युनिसिपल कमिश्नरने पहिला लेसंस दिया, उसी वर्षमें २६४ मोटरें यहां आईं। वर्तमानमें अनुमानतया किरायेकी मोटरोंको छोड़ कर १५।१६ हजार मोटर केवल घरू व्यवहारके लिये हैं।

सवारी गाड़ी—समय २ पर यहांकी गाड़ियोंमें कई परिवर्तन हुए, सन् १८८२ में विक्टोरियाका प्रचार हुआ। वर्तमानमें चार पहियेकी विक्टोरिया जो अधिकतर किरायेसे दौडती हैं उनका संख्या यहां करीब ३ हजारके है। यहां की म्युनिसिपैलेटी विक्टोरियासे ६३) और बैल गाड़ीसे १५) वार्षिक टेक्स लेती है, इसके अतिरिक्त ३ मासका चार पहियेकी गाड़ीका ५) और दो पहियेवालीका ३) है।

लेसंस—सन् १८६३ के बाम्बे एक्टके अनुसार बिना लेसंसके कोई सवारी यहां नहीं चल सकती।

खटारा और मोटर लारी—एक स्थानसे दूसरे स्थान पर माल पहुंचानेके लिये खटारा तथा मोटर लॉरी विशेष काममें लाई जाती हैं।

बम्बईके दर्शनीय स्थान

म्युजियम—इस विशाल इमारतके ४ हिस्सोंमें संसारकी भिन्न २दर्शनीय तथा विचित्र वस्तुओंका अनुपम संग्रह है। भिन्न २ देशोंके सामुद्रिक, जंगली एवं दूसरी प्रकारके मृत पशुओंका यहां बहुत बड़ा संग्रह है, इसके अतिरिक्त ऐतिहासिकचित्र, पुरानी प्रस्तर कारीगरी, चाइनीज़ कारीगरी, शिल्पकला आदिका संग्रह दर्शकोंके चित्तको विशेष प्रसन्न करता है।

विक्टोरिया टार्मिनस—(बोरी बंदर) जी० आई० पी० रेलवेका प्रधान स्टेशन है। केवल भारतमें ही नहीं, सारे एशिया भरमें यह स्टेशन सबसे सुन्दर बना हुआ है। जी०आई०पी०रेलवे यहींसे आरम्भहोती है, इसकी बड़ी विशाल इमारत है।

जनरल पोस्टऑफ़िस—बम्बई शहरका हेड़ पोस्टऑफिस है। यहांसे प्रति शुक्रवारको विलायतके लिये डाक रवाना की जाती है। यह स्थान बोरीबंदर स्टेशनके पास ही है।

ताजमहल होटल—यह भव्य एवं सुन्दर इमारत गेट ऑफ इण्डियाके ठीक सामने स्थित है। यह बम्बईकी सबसे अधिक लागतकी बिल्डिंग विदेशी यात्री, तथा अन्य प्रतिष्ठित रईसोंके एवं राजामहाराजाओंके ठहरनेके लिये बनवाई गई है। हिन्दुस्थानके होटलोंमें यह सबसे प्रथम है।

टकसाल—टाउनहालके पास है इस मकानमें सिक्के ढालनेका काम होता है, यहां ७॥ लाख सिक्के रोज ढाले जाते हैं।

एलिफेंटाकी गुफाएं—यह स्थान प्रसिद्ध ऐतिहासिक एवं धार्मिक सामग्रियोंसे परिपूर्ण है। भारतीय पुरानी कारीगरीका अत्यन्त प्रतिष्ठित और दर्शनीय स्थान है।

अपोलो बन्दर—(गेट आफ इण्डिया) समुद्रके किनारेपर बना हुआ यह पत्थरका विशाल और दर्शनीय दरवाजा है। वायसराय आदि उच्च आफिसर एवं बृटिश राज्य कुटुम्बके व्यक्ति विलायतके जहाजसे सर्व प्रथम यहीं उतरते हैं। इसके सम्मुख ही ताजमहल होटलकी रमणीय बिल्डिङ्ग जगमगाती हुई दृष्टिगोचर होती है। संध्या समय इस स्थानका दृश्य बड़ा मनोहारी होता है। यहां सध्या समय बम्बईके ऊँचे दर्जेके गृहस्थ वायुसेवनके लिये अपनी २ मोटरोंमें बैठकर आते हैं। यहींसे समुद्रके किनारे २ एक सड़क चौपाटी तक गई है। समुद्र की सैर करनेके लिये यहां बहुतसी नावें प्रस्तुत रहती हैं।

हाईकोर्ट—यह बम्बईकी सबसे बड़ी कोर्ट है। इसकी पत्थरकी बनी हुई बड़ी आलीशान इमारत है

यहांके कुएँका जल शहरमें बहुत उत्तम माना जाता है। श्रीमन्त लोग इसके जलका उपयोग करते हैं।

क्राफर्ड मार्केट—यह बम्बईका सबसे बड़ा मार्केट है। यहां हजारों रुपयोंके फल प्रतिदिन बाहरसे आते हैं और यहींसे सारे शहरमें फैलते हैं। इसके अतिरिक्त सब प्रकारके शाक, भाजी, खुराकी सामान, होयजरी, कटलरी, एवं जीवित पक्षी, तोता मैना आदिके बेचनेकी भी बहुत सी दुकाने इस मारकीटमें हैं। प्रातःकाल यहां सैकड़ों गाडीकी तादादमें लगा हुआ फलोंका ढेर नेत्रोंको विचित्र आनन्द प्रदान करता है।

मुम्बादेवी—शहरके बीचोंबीच दुर्गा (शक्ति)का यह प्रसिद्ध मंदिर है। बम्बईमें आनेवाले धार्मिक व्यक्ति इस स्थानका दर्शन करना अपना कर्तव्य समझते हैं। यहां मुम्बादेवीका एक तालाब भी है।

चौपाटी—समुद्रकी सतहसे लगाहुआ तीनचार फर्लाङ्गकायह स्थान संध्यासमय वायु सेवनके लिये आये हुए हजारों मनुष्योंसे ठसाठस भरा रहता है। यहां समुद्रके हिलोरोंका आनन्द विशेष दर्शनीय होता है। लोकमान्य तिलकका शांतिस्थल भी यहींपर है।

विक्टोरिया गार्डन—म्युनिसिपैलेटीकी ओरसे बनाया हुआ यह विशाल सुन्दर गार्डन है।

कुलाबाकी बत्ती—समुद्रके मध्य ९ लाखकी लागतसे तैयार की हुई यह बत्ती कुलाबासे थोड़ी दूरपर है। सुदूरदेशोंसे आनेवाले जहाजोंके मार्ग प्रदर्शकका काम यह बत्ती करती है इसका प्रकाश करीब १८ मील दूरतक पहुंचता है।

मलाबार हिल—इस पहाड़ीपर बम्बईके श्रीमंतोंके बंगले एवं निवासस्थान है। यहीं गवर्नमेंट हाऊस भी है।

राजाबाई टावर—बम्बईके प्रसिद्ध व्यापारी क्रांतिकारी पुरुष सेठ प्रेमचन्द रायचन्दने अपनी मातुश्रीके नामपर यह सुंदर टावर बनवाया है।

टाउनहाल—म्युनिसिपैलेटीकी ओरसे बना हुआ यह विशाल हाल है। यहां हमेशा बड़ी २ सभा सोसाइटियां हुआ करती हैं।

माथेरान—बम्बईसे ५४ मीलकी दूरीपर समुद्रकी सतहसे २५०० फुट ऊंची भव्य एवं कई रमणीय छोटी २ पहाड़ियां हैं। गर्मीके दिनोंमें बम्बईके श्रीमंत यहां वायु सेवनार्थ आते हैं। यहां कई श्रीमंतोंके बंगले बने हुए हैं। यहां सब छोटी मोटी करीब १५ टेकरियां हैं और इनमें करीब ११ पानीके झरने हैं। यहांके छोटे २ पर्वतीय रास्ते, तरह तरहके प्राकृतिक दृश्य एवं शीतल मंद सुगंध वायु कोलाहल पूर्ण बम्बई नगरीसे घबराये हुए व्यक्तियोंको बहुत अधिक शांति प्रदान करती हैं।
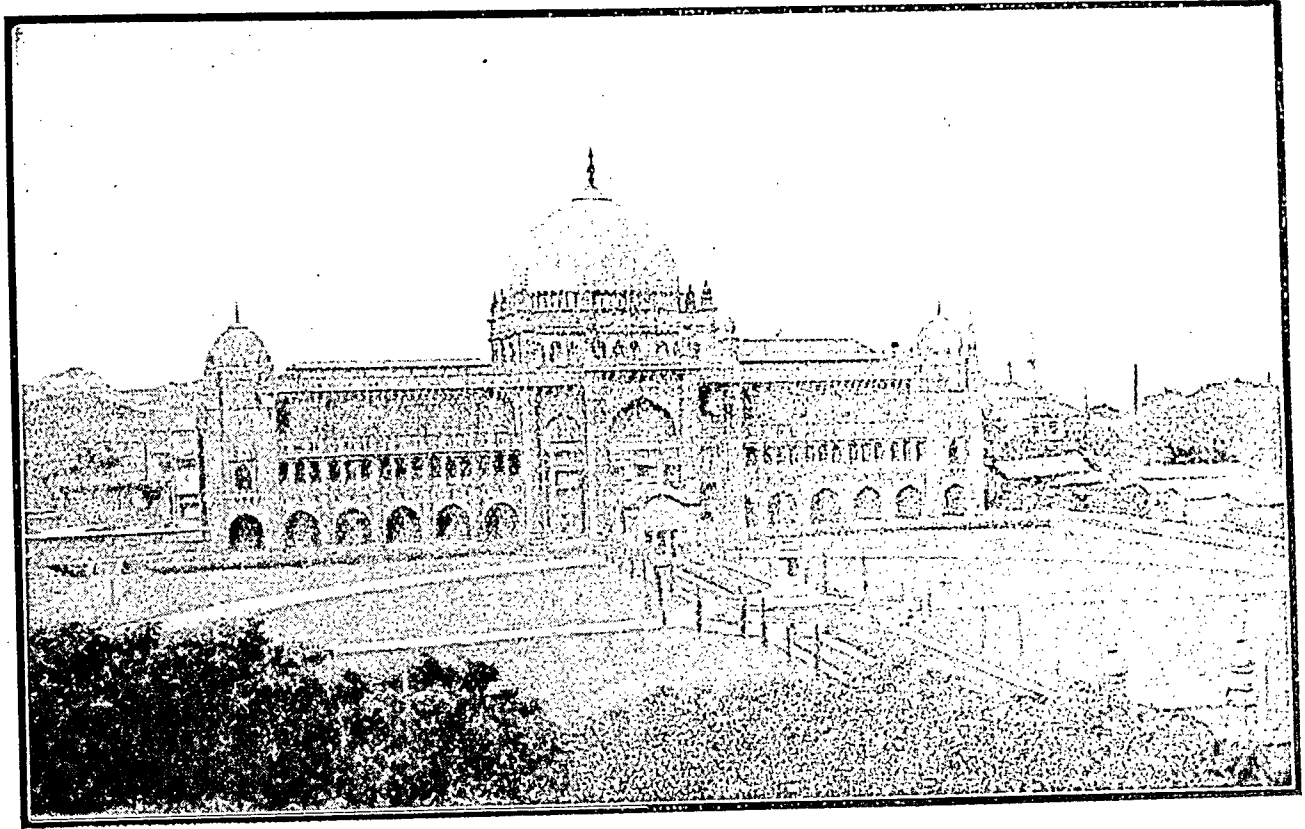
म्यूज़ियम (अजायब घर) बम्बई
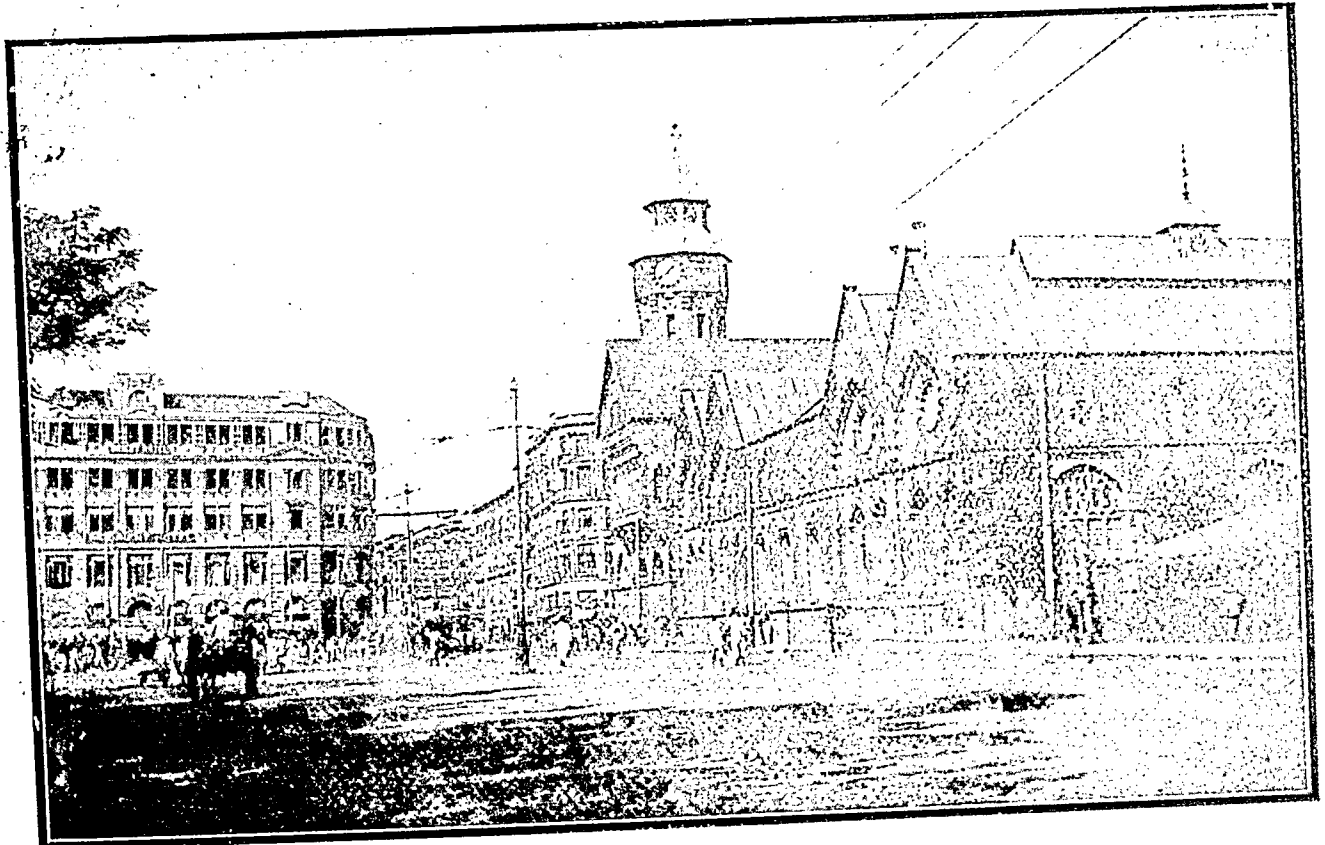
क्राफर्ड मार्केट, बम्बई

चेम्बर्स एण्ड एसोसिएशन्स

बाम्बे चेम्बर आफ कॉमर्स—इस चेम्बरकी स्थापना बम्बई शहरमें सन् १८३६ में हुई। इसका मुख्य उद्देश अपने मालपर कस्टम हाऊससे स्पेशल सुविधाएं प्राप्त करनेका है। इसका संचालन ९ व्यक्ति मिलकर करते हैं। इनमेंसे एक सभापति, एक उपसभापति तथा सात मेम्बर हैं। इसमें खास २ जानेवाले तथा आनेवाले मालकी प्रति सप्ताह २ बार रिपोर्ट प्रकाशित होती है। कपड़ा तथा सूतकी गति विधिकी रिपोर्ट यहांसे प्रतिमास प्रकाशित होती है। इस चेम्बरकी विशेषता यह है कि इसमें व्यापारियोंके झगड़ोंको सुलझानेके लिये एक कमेटी बनी हुई है। इस चेम्बरके द्वारा १ मेम्बर स्टेटकौंसिलमें तथा २ मेम्बर बाम्बे लेजिस्लेटिव कौंसिलमें नामांकित किये जाते हैं। इसी प्रकार बाम्बे कार्पोरेशन और इम्प्रूवमेंट ट्रस्टमें एक २ और पोर्ट ट्रस्टमें पांच मेम्बर चुनकर भेजे जाते हैं। इस चेम्बरमें दो प्रकारके मेम्बर रहते हैं। चेम्बर मेम्बर्स और असोसियेटेड मेम्बर्स, इसके अतिरिक्त दूसरे प्रकारके और भी अनियमित मेम्बर्स होते हैं। सन् १९२४में इसमें कुल मिलाकर १४४ मेम्बर थे। जिनमें१६मेम्बर बैंकिंग संस्थाओंके,६ मेम्बर जहाजी एजंसियों और कम्पनियोंके, ३ मेम्बर सालीसीटरके, ३ मेम्बर रेलवे कंपनियोंके,६ मेम्बर इंजिनियर तथा कंट्राक्टरके और बाकीके मेम्बर जनरल मरकें-टाईलसके थे।

दी इंडियन मरचेंट्स चेम्बर एण्ड ब्यूरो—इस इण्डियन मरचेंट्स चेम्बर एण्ड ब्यूरोकी स्थापना सन् १९०७में हुई। प्रारंभमें इसके १०१ सभासद थे इसका उद्देश प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपसे भारत निर्मित तथा और दूसरी व्यापारिक वस्तुओंके व्यापार तथा इसमें दिलचस्पी लेने वालोंका समुचित प्रबंध करना है। यह संस्था देशके आर्थिक लाभोंकी रक्षाके लिये मज-बूतीके साथ प्रयत्न करती है। इस चेम्बरमें बम्बईकी ११ प्रतिष्ठित २ व्यापारिक संस्थाएं (Association) शामिल हैं। जो कि भारतीय व्यापारमें दिलचस्पी लेनेवालोंकी प्रतिनिधि हैं। इस चेम्बरको अधिकार है कि यह बाम्बे लेजिस्लेटिव कौंसिल तथा भारतीय लेजिस्लेटिव एसेम्बलीमें अपना एक २ प्रतिनिधि भेज सके। साथ ही बाम्बे पोर्ट ट्रस्टमें ५ प्रतिनिधि तथा बाम्बे म्युनिसिपल कारपोरेशनमें भी एक प्रतिनिधि नामांकित करनेका इसे अधिकार है। इसका कार्य सुन्दर और नियमित रूपसे होता है। यहांसे हर तीसरे माह "एङ्गलो गुजरात जरनल"के नामसे पत्र निकलता है। इसमें व्यापारिक तथा व्यापारसे सम्बध रखनेवाले समाचार रहते हैं।

बाम्बे मिल ओनर्स एसोसियेशन—मिल मालिकोंकी यह संस्था सन् १८७५ में स्थापित हुई। इसके स्थापति करनेका उद्देश भारतमेंमिल-मालिकोंके स्वार्थोंकी तथा स्टीम, वाटर और

बिजलीकी शक्तिका उपयोग करनेवालोंके स्वार्थोंकी रक्षा करना है। साथ ही जन समुदाय और इसके उपयोग करनेवालोंमें परस्पर बहुत अच्छा सम्बंध स्थापित करना भी है। इसके मेम्बर भारतीय हैं। इसका संचालन २० व्यक्तियोंके हाथमें है। इन्हीं व्यक्तियोंमें प्रेसिडेण्ट तथा वाईस प्रेसिडेण्ट भी शामिल हैं। यह एसोसियेशन लेजिस्लेटिव एसेम्बलीके लिये एक प्रतिनिधि अहमदाबाद मिल ऑनर्स एसोसियेशनके साथ क्रमशः भेज सकती है। साथ ही बाम्बे गवर्नरकी लेजिस्लेटिव कौंसिल बाम्बे पोर्टट्रस्ट बोर्ड, सिटी इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट, बाम्बे म्युनिसिपल कारपोरेशन तथा इंडियन सेंट्रल काटन कमेटीमें भी अपना प्रतिनिधि भेज सकती है। यह संस्था अपने मेम्बरोंके द्वारा उपयोगमें आनेवाले (रजिस्टर्ड नम्बरों) ट्रेडमार्कोंकी एक लिस्ट रखती है।

इस प्रकारके ट्रेडमार्कोंके रजिस्ट्रेशन स्पेशल नियमों द्वारा रजिस्टर्ड होते हैं, आपसमें ट्रेडमार्कके सम्बन्धमें होनेवाले झगड़े सुलझनेके लिये इसमें पेश होते हैं।

जनवरी सन् १९२४में इस एसोसियेशनके कुल ९४ मेम्बर थे। जिसमें एक सिल्क मिलकी तरफसे, २ फ्लावर मिलसे, ६ जिनिंग और प्रेसिंग फेक्टरीजसे, २ रंगने तथा धोनेके कारखानोंसे, और शेष काटन स्पीनिंग एण्ड विविंग मिलसकी ओरसे थे।

यह एसोसियेशन हरसाल एक स्टेटमेंट इस आशयका निकालती है कि भारतमें कितने काटन स्पिनिंग विविंग मिल्स काम करते हैं। उनकी पूंजी कितनी है, तथा उनमें कितने २ लूम्स और स्पिंडल्स हैं। उनमें कितने २ व्यक्ति कार्य करते हैं। उनमें कितनी रुई खर्चहोती है, आदि आदि, यह एसोसियेशन इसकी भी जांच रखती है कि बाम्बेसे कितना कपड़ा तथा सूत बाहर गया तथा बाहरसे कितना २ बम्बईमें आया।

४ बाम्बे नेटिव्ह पीस गुड्स मर्चेण्टस एसोशिएशन—इस संस्थाका स्थापन सन् १८८२ में सेठ दामोदर गोकुल दास मास्तरके हाथोंसे हुआ। इस संस्थाका प्रधान उद्देश व्यापारियोंके भीतर एकता स्थापितकर बम्बईके कपड़ेके व्यवसायको उत्तेजन देना एवं उसके लाभोंकी रक्षाके लिये प्रयत्न करना है। कपड़ेके व्यवसाय सम्बन्धी सबप्रकारके झगड़े यहीं निपटानेका प्रयत्न किया जाता है। इस संस्थाकी मैनेजिंग कमेटीके ४५ मेम्बर हैं। एवं इसके कुल १६३ मेम्बर हैं इस संस्थाका प्रमुख पदसन् १८९६ से ऑनरेबल सर मनमोहनदास रामजी सुशोभित करते हैं। आप बम्बईकी प्रतिष्ठित व्यापारिक संस्थाओंके सफल कार्यवाहक महानुभाव हैं। इस संस्थाके उपप्रमुख सेठ देवीदास माधवजी ठाकरसी हैं। इस मंडलकी ओरसे एक औषधालय और लायब्रेरी भी है औषधालयमें अंग्रेजी दवा लेनेवाले व्यक्तियोंकी औसत प्रति दिन ७९ और देशी दवालेनेवालोंकी ३४ आती है। इस मंडलका ऑफ़िस मूलजी जेठा मारकीट पर है।

दि हिन्दुस्तानी नेटिव्ह मरचेंट एसोसिएशन—इस एसोसिएशनका स्थापन सेठ ताराचन्द जुहारमलके मुनीम जगन्नाथजीके हाथोंसे संवत १९५४ में हुआ था। इस मंडलीके सदस्य कपड़ा, किराना,गल्ला, शक्कर तांवा पीतल सूत, चांदी तथा सोनेका, आढतका तथा सराफीका काम करनेवाले व्यापारी ही अधिक हैं। यह संस्था अपने मेम्बरोंमें पड़े हुए व्यापार सम्बन्धी सब प्रकारके झगड़ोंको निपटाती है। इस संस्थाकी ओरसे इण्डियन चेम्बरमें एक प्रतिनिधि भेजा जाता है। इस संस्थामें सन् १९२६ में ७० आढ़तियोंके २३ हजार रुपयोंके झगड़े आये उनमेंसे ५० झगड़े निपटाये गये। बाहरसे आई हुई हुण्डी न सिकरनेपर यदि वापस जाय तो उसकी निकराई सिकराई प्राप्त करनेके लिये इस संस्थाकी मुहर की आवश्यकता होती है। इस प्रकार इस चेम्बर द्वारा सन् १९२६ की दिवालीसे १९२७ की दिवाली तक ९२ लाख रुपयोंकी १४६०१ हुण्डियां वापस गईं। उनमेंसे ५२७२ पीछी दिखानेसे सिकर गई। इस संस्थाकी ओरसे एक मारवाड़ी व्यापारी स्कूल नामक हिन्दीका स्कूल चलता है जिसमें दस बारह हजार रुपया प्रति वर्ष यह संस्था खर्च करती है। इसके अतिरिक्त इस संस्थाने ३० हजार रुपया तिलक स्वराज फण्डमें तथा २१ हजार रुपया गुजरात जल प्रलयके समय दान दिये हैं। इस संस्थाके वर्तमान प्रमुख सेठ आनन्दराम मंगतू राम तथा उपप्रमुख गोरखराम गणपत राय है। इस संस्थामें ३५३ मेम्बर हैं। जिनमें फतेपुरके १०१ बीकानेरके ११ माहेश्वरी समाजके ५४ बड़ी मारवाड़के ७४ इन्दौरके २५ बखारके ४२ पंजाबी १८ सरावगी ९ तथा जनरल १७ हैं।

मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स—इस संस्थाकी स्थापना सन् १९१५ में बम्बईके मशहूर सेठ रामनारायणजी रुइया, तत्कालीन माधोसिंह छगनलाल फर्मके पार्टनर नीमच निवासी श्रीयुत नथमलजी चोरड़िया चम्पालाल रामस्वरूप फार्मके मुनीम श्रीयुत मिश्री लालजी; और गुलाब राय केदारमलके मुनीम श्रीयुत जयनारायणजीके प्रयत्नसे हुई। तबसे यह चैम्बर बराबर अपनी उन्नति करती जारही है। इस चेम्बरका मुख्य उद्देश्य हुण्डी चिट्ठी सम्बन्धी झगड़ोंको निपटाना तथा और भी दूसरे व्यापारिक झगड़ोंको सुलझाना है। गम्भीर व्यापार नीतिके प्रश्नोंपर भी यह चेम्बर अपनी विचारपूर्ण राय प्रकाशित करती रहती है। इस समय इसके प्रेसिडेण्ट मामराज रामभगतकी मशहूर फर्मके मालिक श्रीयुत बेणी प्रसादजी डालमिया है। इसके इस समय करीब २५० मेम्बर हैं।

नेटिव्ह शेअर्स एण्ड स्टाक ब्रोकर्स एसोसियेशन—

आनरेरी पेट्रन—आरदेशर होरमसजी मादन

प्रेसिडेंट—के० आर० पी० श्राफ, जे० पी

वाइस प्रेसिडेंट (१) राजेन्द्र सोम नारायण जे० पी०

„ „ (२) अमृतलालजी कालीदास

उद्देश्य—शेयर तथा स्टाक सम्बन्धी सभी बातोंकी सुविधा करना। ऑफिस—दलाल स्ट्रीट फ़ोर्ट।

ईस्ट इण्डिया कॉटन एसोशियेसन—

ऑफिस—ताज बिल्डिंग फ़ोर्ट

प्रेसिडेंट—सर पुरुषोत्तमदास ठाकुर दास के० टी०

वाइसप्रेसिडेंट—(१) हरीदास माधवजी जे० पी०

(२) के० एच० मेकार्मेक

सेक्रेटरी—डी० मेहता बी० ए०

उद्देश्य—रुईके व्यवसाय सम्बन्धी बातोंकी सहूलियत करना तथा भारतीय रुईके व्यवसायकी उन्नति करना, यह संस्था रुईके व्यवसाइयोंकी सबसे बड़ी संस्था है।

मिल ऑनर्स एसोशियेसन—

स्थापन १८७५ ऑफिस—सोराव हाऊस हार्नवी रोड।

सभापति—एच० पी० मोदी

उपसभापति—एफ़ स्टोन ओ० बी० ई०।

मिल और फेक्टरीज़के व्यवसायके हितोंकी रक्षा करना तथा वृद्धि करना। बम्बईके सभी प्रतिष्ठित मिल ऑनर्सकी यह संस्था है।

बाम्बे सराफ एसोशियेसन—

प्रेसिडेंट—मनीलाल गोकुल भाई जे० पी०

वाइस प्रेसिडेंट - खटाऊ भाई मुरारजी

ट्रेझरर—गोकुल भाई मूलचन्द

उद्देश्य—हुंडी चिट्ठीके आपसी व्यापारिक झगड़े निपटाना तथा हुंडी चिट्ठी सम्बन्धी व्यवहारमें आनेवाली अडचनोंको दूर करना। ऑफिस-सराफ बाजार, खाराकुआं। बम्बईके सराफी (बेंकर्स) व्यवसायकरनेवाले व्यापारियोंकी एसोसिएसन है। इसकी ओरसे व्यापारिक ग्रन्थोंकी एक लायब्रेरी भी है।

बाम्बे स्टॉक एक्सचेंज लिमिटेड—

डायरेक्टर्सः

श्री फाजल भाई इब्राहिम भाई (चेयरमेन)

श्री रामेश्वरदासजी बिड़ला

श्री गोविंदलाल,शिवलाल, मोतीलाल.

श्री लक्ष्मणदासजी डागा

श्री सर लल्लूभाई सांवलदास

श्री छोटालाल बीजी

ग्रेन मर्चेंट एसोसिएशन—

उद्देश्य—गल्ला तथा तिलहनके व्यापार का उत्थान करना, इस व्यवसायका आपसी झगड़ा निपटाना, तथा इन व्यवसायोंकी कई प्रकारकी सूचनाएं व्यवसाई-समाजको देना।

प्रेसिडेंट—श्री वेलजी लखमसी बी० ए० एल० एल० बी०

वाइस प्रेसिडेंट—पुरुषोत्तम हीरजी

सेक्रेटरी—उत्तमराम अम्बाराम

ऑ० सेक्रेटरी—नाथू कुँवरजी

इण्डियन सेण्ट्रल कॉटन कमिटी—

उद्देश्य—कॉटनके व्यवसाइयोंमें सहयोगका संगठन करना, रुईके व्यवसायकी उन्नति करना, तथा मार्गकी कठिनाइयोंको दूर करनेकी चेष्टा करना।

प्रेसिडेंट—डाक्टर क्लासटन सी० आई० ई०

उपरोक्त संस्थाओंके अतिरिक्त बम्बईमें निम्नलिखित व्यापारिक संस्थाएं और हैं।

बुलियन मर्चेण्ट्स एसोसिएशन—यह सोने और चांदीके व्यापारियोंका एसोसिएशन है।

दी सीड्स एण्ड व्हीट्स मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे कॉटन मर्चेंट्स एसोसिएशन

दी मुकादम एसोसिएशन

दी क्लॉथ मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी जापानीज़ क्लॉथ मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी मेमन खोजा एसोसिएशन

दी बाम्बे डायमंड मर्चेण्टस् एसोसिएशन

इम्पोर्ट एण्ड एक्सपोर्ट मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे कॉटन ब्रोकर्स एसोसिएशन

दी मिल स्टोअर्स मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी महाराष्ट्र चेम्बर ऑफ कामर्स फिनिक्स बिल्डिंग वेलार्ड स्टेट फोर्ट

दी बाम्बे कॉपर एण्ड ब्रास नेटिव मर्चेण्ट्स एसोसिएशन पायधुनी ताम्बा-काटा

दी बाम्बे पेपर एण्ड स्टेशनरी मर्चेण्ट्स एसोसिएशन

दी बाम्बे राइस मर्चेंट्स एसोसिएशन (न्यू राइस मार्केट, करनाक बन्दर)

दी शुगर मर्चेंट्स एसोसिएशन (शुगर मार्केट, मांडवी)

फेक्ट्रीज़ एण्ड इंडस्ट्रीज़

बम्बईकी कपड़ेकी मिलें

आधुनिक युगके समुन्नत व्यवसायी केन्द्रोंमें बम्बईका स्थान वहुत ऊंचा है। बम्बई भारतमें व्यवसायका प्रधान केन्द्रस्थल है। इसके वर्तमान प्रतिभा-सम्पन्न स्वरूपको बनानेमें यहांके नागरिकोंने वहुत बड़ा भाग लिया है। अतः उसके स्वरूपका विवेचन करते समय जहां कला-कौशलके औद्योगिक तत्त्वकी मीमान्साकी जायगी वहां व्यवसाय कुशल नागरिकोंके आर्थिक सामर्थ्य-जनित प्रोत्साहनकी चर्चा करना भी अनिवार्य्य ही है। जो बम्बई नगर आजसे कुछ समय पूर्व एक छोटासा मछुओंका गाँव था वही आज अपने औद्योगिक सामर्थ्यके बल पर १२ लाख प्रजाजनोंको आश्रय प्रदान कर रहा है। बम्बईके औद्योगिक विकासमें प्रधान स्थान यहांकी मिलोंका है। अतः इस स्थानपर हम उन मिलोंका कुछ वर्णन कर देना आवश्यक समझते हैं।

मिलोंका इतिहास और क्रमागत विकास

बम्बईमें मिलके उद्योगकी स्थापना करनेका विचार सबसे प्रथम सन् १८५१ में श्रीयुत कावसजी नानाभाई दावर नामक एक पारसी व्यवसायीके मस्तिष्कमें उठा। आप सूत कातनेका कारखाना खोलनेके उद्योगमें लगे परन्तु भारतमें ऐसे कारखाने न होनेके कारण आपको नैतिक सहानुभूति भी प्राप्त न हो सकी। अतः आपने ओल्डहम (इंग्लैंड) की मेसर्स प्लेट ब्रादर्स एण्ड को० लिमिटेडसे इस विषयका पत्र व्यवहार करना आरम्भ कर दिया। इन गोरे व्यवसाइयोंने अपनी योजनगंधा बुद्धिसे भावी स्वरूपका विवेचन कर कारखाना खोलनेके लिये सहानुभूति सूचक परामर्श दिया और इस प्रकार एक होनहार पारसी व्यवसायीके मस्तिष्कमें आई हुई कल्पनाने ब्रिटिश मशीनरीके सहयोगसे कार्यका स्वरूप ग्रहण किया। फलतः सन् १८५४ के फरवारी मासकी २२ वीं तारीखको शुक्रवारके दिन बाम्बे स्पिनिंग एण्ड वीविंग कम्पनीके नामसे २०००० स्पेंडल्सकी शक्तिका एक बड़ा कारखाना खोला गया। इस प्रकार बम्बईमें मिलोंकी स्थापनाका सूत्रपात प्रारंभ हुआ और सन् १८५४ से सन् १९२७ तक ६७ मिलें खुल गईं। इनमेंसे ४५ मिलोंने लिक्विडेशनमें जा नवीन नाम धारण कर पुनः कार्य प्रारंभ कर दिया। १२ मिलें जलकर नष्ट हो गईं और १६ मिलोंने अपनी एजेंसियां दूसरोंको दे दीं। अब केवल २५ ही ऐसी मिलें हैं जो अपनी परंपराकी रक्षा करते हुए प्राचीन नामसे काम कर ही हैं।

मिल व्यवसायमें एजेंसी प्रथाका जन्म

मिलोंके प्रबन्ध-संचालनकी एजेंसीका जन्म सन् १८६० में हुआ था और तबसे यह प्रथा बराबर कार्य करती जा रही है। सबसे प्रथम कुछ व्यवसाईयोंका एक संचालक मण्डल बनाया गया था

इसके सदस्य श्रीयुत डब्ल्यू० एफ० हंटर, (२) पी० स्कावेल (३) मानिकजी पेटिट (४) बेहरामजी जी.जी भाई (५) इलियस डेविड सासून (६) बरजीवनदास माधवदास तथा अर्देसर खुरसेतजी दादी थे। इसके प्रथम प्रमुख श्रीयुत कर्सेलजी एन० कामा तथा जनरल मैनेजर श्रीयुत मखनजी फ्रामजी नियुक्त किये गये। यंत्र संचालन कलामें निपुण मि० डब्ल्यू बाऊन लंकाशायरवाले इसका प्रबन्ध देखते थे। तबसे यह कार्य निरंतर चल रहा है।

मिल व्यवसायके प्रधान प्रवर्तक

जिन सज्जनोंने बम्बईके उद्योग धन्धों और मिल व्यवसायको जीवन-दान देनेमें सहयोग दिया है, जिन्होंने अपने तन, मन, धनसे इस कार्यको उत्तेजन देनेका भगीरथ प्रयत्न किया है उनके नाम बम्बईके व्यवसायिक इतिहासमें स्वर्गाक्षरोंमें लिखने योग्य हैं। इन महानुभावोंमें श्रीयुत कावसजी दावर, (२) माणिकजी पेटिट (३) मेरवानजी पाँडया (४) सर दीनशा पेटिट (५) नसरवानजी पेटिट (६) वाँमनजी वाडिया (७) धर्मसी पूंजाभाई (८) जमशेदजी टाटा (९) तापीदास ब्रजदास (१०) केशवजी नाईक (११) खटाऊ मक्खनजी (१२) सर मङ्गलदास नाथूभाई (१३) जेम्स ग्रीव्स (१४) सर जार्ज काटन (१५) मोरारजी गोकुलदास (१६) मंचेरजी बन्नाजी (१७) मूलजी जेठा तथा (१८) थैकरसी मलजीका नाम विशेष उल्लेखनीय है।

जापानी प्रतियोगिताका प्रारम्भ

हम ऊपर लिख आये हैं कि सन् १८५४ में सबसे पहले बम्बईमें कपड़ेकी मिलोंका प्रारंभ हुआ, तबसे सन् १८९५ तक बराबर इस कार्यकी अभिवृद्धि होती रही। पर इसके बाद इसकी उन्नतिमें कुछ शिथिलता आगई। जिसकी वजहसे कई मिलोंको अपना कार्य बन्द कर देना पड़ा। इस शिथिलताका प्रधान कारण एक ओरसे प्लेग और रोगका प्रचार था और दूसरी ओर इन मिलोंकी प्रतियोगितामें जापानका उतर पड़ना था। इस कालमें जापानके अन्दर नवीन जीवन और प्रबल उत्साहके साथ कई नये नये कारखाने खोले गये। इस प्रकार वायु-वेग से प्रबल उत्साहके साथ काम करनेवाले देशकी प्रतियोगितामें यहांकी मिलोंको बहुत धक्का पहुंचा। जापानने अपने सूतके साथ भारतीय सूतकी प्रतियोगिता करनेके लिये चीनका बाजार उपयुक्त समझा। इस प्रतियोगिताके फल-स्वरूप जो धक्का भारतको पहुंचा उसका सबसे अधिक प्रभाव बम्बईकी मिलों पर गिरा। जिसकी वजहसे यहांकी कई मिलें फेल होगईं और कई मिलें लिक्विडेशनमें जाकर पीछे नवीन रूपमें प्रगट हुईं।

बम्बईकी मिलोंका परिचय

स्वदेशी मिल्स कम्पनी लिमिटेड

(१) (इस कम्पनीमें बाम्बे युनाइटेडमिल्स भी सम्मिलित है यह मिल सबसे पहले सन् १८६० में कुर्ला मिल्सके नामसे स्थापित हुई थी। सन् १८६५ में सेठ धरमसी

पूंजाभाईने इसका सर्वाधिकार खरीद लिया था उस समयसे इसका नाम धरमसी पूंजाभाई मिल्स होगया। सन् १८८६ में यह मिल बन्द होगई और फिर सन् १८८७ में स्वदेशी मिल्सके नामसे प्रारंभ हुई। इस कम्पनीने सन् १६२५ में ताता मिल्सलिमिटेडसे बाम्बे युनाइटेड मिल खरीद लिया। जो अभी भी इसमें शामिल है इसका टे० न० २६०४१ है। इस मिलकी स्वीकृत पूंजी २० लाख रुपयोंकी है। और इसका प्रत्येक शेअर १००) का है।

इस कंपनीके हाथमें २ मिलें हैं। (१) कुर्लामें तथा (२) गिरगांवमें। कुर्ला मिलमें ५६०८४ स्पेंडलूस तथा १५४२ लूम्स (करघे) हैं। इसमें ३५५३ आदमी काम करते हैं। यहां पर ४ नंबरसे ३० नंबर तकका सूत निकलता है। इसका टेलीफोन नं० ८७०१६ है।

(२) गिरगांव वाले मिलमें ४५१२८ स्पेंडलूस और ११८७ लूम्स हैं। इसमें २१७० आदमी काम करते हैं। इसमें विशेषतया ८½ नंबरका मोटा सूत तैय्यार होता है। इस कंपनीके डायरेक्टरोंमें सर डी० जे० ताता, आर० डी० ताता; नरोत्तम मुरारजी, जे० डी० गांधी, एस० डी० सकलतवाला सम्मिलित हैं। इसकी एजेंसी ताता एण्ड सन्स लिमिटेडके पास है। इसका रजिस्टर्ड आफिस २४ ब्रुस स्ट्रीट फोर्टमें है तथा तारका पता "स्वदेशी" 'Swadeshi' है। टेलीफोन नं २१४५२ है।

स्टेंडर्ड मिल्स कम्पनी लिमिटेड

सन् १८६० में बालादीन नामसे एक मिलकी स्थापना हुई थी। उसी मिलका यह नवीन रूपान्तर है। यह रूपान्तर सन् १८६१ में हुआ। इस कंपनीका मिल प्रभादेवी रोडपर है। मिलका टे० नं० ४०८८६ है, इसमें सभी प्रकारके ४४५३६ स्पेडलूस तथा ११७६ लूम्स हैं। इसमें २२७८ मजदूर काम करते हैं। इसमें ६½ से लेकर १० नंबर तकका सूत, और कोरा, धुलाहुआ तथा रंगीन कपड़ा तैय्यार होता है। इसका मूलधन १२०००००) है। इसके डायरेक्टर्स सर डी० जे० ताता, आर० डी० ताता, मफतलाल गागल भाई, एस० डी० सकलतवाला, प्राणसुखलाल मुफललाल और एन० बी० सकलतवाला सी० आई० ई० हैं। इसकी एजेंसी ताता सन्स लिमिटेडके पास है। इसका रजिस्टर्ड आफिस २४ ब्रुस-स्ट्रीटफोर्टमें है। तारका पता 'तस्तन-देवी है। ("Tastandevi") टेलीफोन नं २६०४१ है।

ताता मिल्स कम्पनी लिमिटेड

(३) इसकी स्थापना सन् १६१३ में हुई। इसकी स्वीकृत पूंजी १००००००) एक करोडकी है। जो ११००० प्रिफ्रेन्स शेअर और ६००० साधारण शेअरोंमें विभाजित कर दी गई है। इसका कारखाना दादरमें है। इस कारखानेमें ६३२४८ स्पेडलूस तथा १८०० लूम्स हैं। इसमें ४२०० मजदूर काम करते हैं।

इसमें मोटा सूत, सादा, रंगीन, कोरा तथा धुला हुआ कपड़ा तैयार होता है। इसके डायरेक्टर्स—सर डी० जे० ताता, लल्लूभाई सांवलदास मेहता, सी० आई० ई०, आर० डी० ताता०, नरोत्तम मुरारजी जे०पी०, एस०डी० सकलतवाला, जे०ए०डी० नवरोजी और एन० बी० सकलतवाला हैं। इसकी एजेंसी ताता सन्सके पास है। इसका आफिस २४ ब्रुस स्ट्रीट फोर्टमें हैं। इसका तारका पता—"ताता-मिल" (Tata mill) तथा टे० नं, २६०४१ है।

उपरोक्त चारों मिलोंकी व्यवस्था (स्टेंडर्ड,स्वदेशी नं० १ स्वदेशी नं० २ ताता मिल) ताता सन्स कम्पनी लिमिटेड करती हैं।

दी बाम्बे डाइङ्ग एण्ड मैन्यूफैक्चरिङ्ग कम्पनी लिमिटेड

इस कंपनीके अन्तर्गत (१) बाम्बे डाईवर्क्स जिसकी स्थापना सन् १८७६ में हुईथी (२) टैक्सटाइल मिल्स जो सन् १८९६ में खुला था तथा (३)स्प्रिङ्ग मिल्स जिसका जन्म सन् १९०८में हुआ था, ये तीनों मिलें भी सम्मिलित हैं। इस कंपनीकी स्वीकृत पूंजी चौसठ लाख रुपयेकी है जो २५६०० साधारण शेअरोंमें विभक्तकी गई हैं। इस कंपनीके डाइरेक्टर्स (१) श्रीयुत एन० एन० वाड़िया सी. आई. ई. (२) डबल्यूरीड (३) सर-जमशेदजी जीजीभाई सी० आई० ई० बैरोनेट (४) एन० पी सकलतवाला सी० आइ० ई० (५) लेस्लीब्लएट (६) वी० ए० ग्रन्थम (७) बोमनजी आदेसरजी तथा (८)डी० एफ० बाटलीवाला हैं। इसका रजिस्टर्ड ऑफिस होम स्ट्रीट फोर्ट बंबईमें है। तथा तारका पता (Dying) हैं। इसकीएजेन्सी नवरोजजी वाड़िया एण्ड सन्सके पास है।

(१) इस कंपनीके अन्तर्गत जो तीन मिलें हैं उनमें से पहली बाम्बे डाइवर्क्स कैडेल रोड माहिममें हैं इसका टेली फोन नं० ४०८५९ हैं।

(२) दूसरी टैक्सटाइल मिल्स एलफिन्स्टन रोड पर हैं। इसका टेली फोन नं० ४०९२३ है। इस मिलमें सब मिलाकर ७०४४८ स्पेण्डिल्स और १६६४ लूम्स हैं। इस मिलमे ३३८६ आदमी काम करते हैं। और २ नंबरसे लगाकर ३६ नंबर तकका सूत तथा कोरा, धुला और रंगीन कपड़ा तैयार होता हैं।

(३) स्प्रिङ्ग मिल-यह मिल नये गांव रोड दादर पर हैं। इसका टेलीफोन नं० ४०९९९ हैं। इसमें १०९८४८ स्पेंडिल्स तथा ३११६ लूम्स हैं। इस मिलमें ५०६८ मनुष्य काम करते है। यहांपर ८॥ से लेकर ४० नम्बर तकका सूत तैयार होता है तथा कोरा, धुला और रंगीन कपड़ा निकलता है। उपरोक्त तीनों मिलें मेसर्स नवरोजजी नसरवानजी वाड़ियाके अधिकारमें है।

दीमानेकजी पेटिट मैन्यूफैक्चरिंग को० लिमिटेड

(१) इस कम्पनीमें दीमानेकजी पेटिट मिल्स लिमिटेड (२) दी दीनशा पेटिट मिल्स लिमिटेड,तथा (३) दीबोमनजी पेटिट मिल्स लिमिटेड, सम्मिलित हैं। इस कम्पनीकी स्वीकृत पूंजी ४० लाख ५० हजार रुपया है जो ४०५० साधारण शेअर्समें विभाजित है। इसका रजिस्टर्ड ऑफिस ३५६ हार्नबी रोड, फोर्टमें है। तारका पता (Dinpetit) तथा टेलीफोन नं० २००७५ है। इसके डायरेक्टर्स निम्नाङ्कित सज्जन हैं—

(१) सरदिनशा एम० पेटिट बैरोनेट।
(२) दादा भाई मेरवानजी जीजी भाई।
(३) मानेकजी कावसजी पेटिट।
(४) जहांगीर बोमनजी पेटिट।
(५) बैरामजी जीजी भाई।

इसकी एजेन्सी डी० एम० पेटिटसन्स एण्ड कम्पनीके पास है। इस कम्पनीके द्वारा सञ्चालित तीन मिलोंका परिचय इस प्रकार है।

(१) मानेकजी पेटिट मिल्स—इसकी स्थापना सन् १८६० में हुई थी यह बम्बईकी प्रमुख प्राचीन तथा अपने पूर्व नामसे जीवित रहने वाली मिलोंमें एक प्रधान मिल है। यह मिल तारदेवमें बनी हुई है। इसका टेलीफोन नम्बर ४१८१८ है। इस मिलमें सब प्रकारके ६८९९६ स्पेण्डिल्स तथा २३७६ लूम्स हैं। इसमें ४६०० मजदूर काम करते हैं। इस मिलमें ४ से ३० नम्बर तकका सूत काता जाता है तथा कोरा रंगीन और धुला हुआ कपड़ा तैय्यार होता है। इस मिलमें कातने और बुननेकी कलामें निपुण भारतीय व्यक्ति ही काम करते हैं।

(२) दिनशा पेटिट मिल्स—इसकी स्थापना सन् १८७४ में रायल मिल्सके नामसे हुई थी। १८८० में यह दिनशा पेटिट मिल्सके नामसे काम करने लगी। यह लालबाग परेलमें हैं तथा इसका टलीफोन नं० ४०८५३ है। इस मिलमें ४२२९६ स्पेण्डिल्स तथा २४०० लूम्स हैं। इसमें काम करनेवाले व्यक्तियोंकी संख्या २४३६ है। यहां ४ से लेकर ३२ नं० तकका सूत तथा कोरा, धुला, रंगीन सब तरहका कपड़ा तैय्यार होता है।

(३) बोमनजी पेटिट मिल्स—इसकी स्थापना सन् १८८२ में गार्डन मिल्सके नामसे हुई थी। सन् १८८२ में इसे वर्त्तमान नाम मिला। यह महालक्ष्मीपर बना हुआ है। तथा इसका टेलीफोन नं० ४०८८४ है। इसमें सब प्रकारके ४२३६८ स्पेण्डिल्स और १२६३ लूम्स हैं। काम करनेवाले मजदूरोंकी संख्या २११६ है यहांपर ६ से २६ नं० तकका सूत तथा सभी प्रकारका कोरा धुला, रंगीन माल तैय्यार होता है।

करीम भाई मिल्स लिमिटेड

इस कम्पनीमें दो मिल्स सम्मिलित हैं। (१) करीम भाई मिल्स (२) मोहम्मद भाई मिल्स। करीम भाई मिल्सकी स्थापना सन् १८८९ में हुई थी, और मोहम्मद भाई मिल्सकी स्थापना १८९९ में हुई थी। इस कम्पनीकी स्वीकृत पूंजी २४ लाख रुपयेकी है। जो ८८०० साधारण शेअर्समें विभाजित की गई है। इस कम्पनीका रजिस्टर्ड आँफिस १२।१४ आउट्रम रोड फोर्ट बम्बईमें है। इसका तारका पता (milloffice) है। तथा टेलीफोन नं० २१२९७ है। इसके डायरेक्टर निम्नाङ्कित सज्जन हैं।

(१) सर सासुन डेविड बैरोनेट।
(२) कर्सेतजी जमशेदजी वाड़िया।
(३) सर करीमभाई इब्राहीम बैरोनेट।
(४) सर जमशेदजी जीजी भाई बैरोनेट।
(५) एफ० ई० दीनशा।
(६) सरफजलभाई करीम भाई के० टी०।

इसकी एजेन्सी करीम भाई इब्राहीम एण्ड सन्सके पास है। इस कम्पनीके द्वारा जिन दो मिलोंका प्रबन्ध होता है उनका विवरण इस प्रकार है—

करीम भाई मिल्स—यह डिलाइल रोडपर बना हुआ है। इसका टेलीफोन नं० ४०८७२ है। इस मिलमें सब प्रकारके ८९८०४ स्पेण्डिल्स और १०५० लूम्स हैं। इस मिलमें ६ से ३४ नम्बरतकका सूत काता जाता है। तथा कोरा, रंगीन, धुला सब प्रकार कपड़ा तैय्यार होता है। ऊपर जिस मोहम्मद भाई मिलका विवरण आया है, वह भी इसीमें सम्मिलित हैं।

फ़ाजल भाई मिल्स लिमिटेड

इस मिलकी स्थापना सन् १९०५ में हुई थी। इसका रजिस्टर्ड आँफिस १२-१४ आउट्रम रोड फोर्टमें है। इसका तारका पता—(milloffice) है। तथा टेलीफोन नं० २१२९० है। इसके डायरेक्टर निम्नाङ्कित सज्जन हैं।

(म) जमशेदजी अर्देशिरजी वाड़िया।
(२) सर सासुन डेविड बैरोनेट के० सी० एस० आई०
(३) सर करीम भाई इब्राहिम बैरोनेट।

(४) सर जमशेदजी जीजीभाई बैरोनेट के० सी० एस० आई०

(५) एफ० ई० दीनशा।

(६) कर्सेतजी जे० ए० वाड़िया।

(७) सर फ़जल भाई करीम भाई के० टी० सी० बी० ई०

इसकी एजन्सी करीम भाई इब्राहीम एण्ड सन्स लिमिटेडके पास है। इसकी स्वीकृत पूंजी २४ लाख रुपयेकी है। जो ८००० साधारण शेअरोंमें विभक्त की गई है। यह मिल डिलाइल रोडपर है। इसका टेलीफोन नं० ४०९५७ है। इस मिलमें ५२२५६ स्पेण्डिल्स और १६७६ लूम्स हैं। इसमें २५६० मजदूर काम करते हैं। इस मिलमें १० से ३४ नम्बर तकका सूत काता जाता है तथा कोरा धुला और रंगीन कपड़ा तैय्यार होता है।

इब्राहीम भाई पवानी मिल्स कम्पनी लिमिटेड

इस मिलकी स्थापना सन् १९२१ में हुई। इसका रजिस्टर्ड ऑफिस १२।१४ आउट्रम रोड फोर्टमें है। टेलीग्राफिक एड्रेस millоffice और टेलीफोन नं० २१२९७ है। फजलभाई मिल्स कम्पनीके डायरेक्टर्स ही इसके भी डाइरेक्टर हैं। इनके नामऊपर दिये हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी बीस लाखकी है जो८०००शेअरोंमें विभक्त है। यह मिल डिलाइल रोडपर है इसका टेलीफोन नं० ४१०२१ है। इसमें ५७८८० स्पेण्डिल्स और १०५४ लूम्स हैं। इस मिलमें ५ से३२ नं०तकका सूत काता जाता है। तथा कोरा,धुला और रंगीन कपड़ा तैय्यार होता है।

प्रीमयम मिल्स लिमिटेड

इस मिलकी स्थापना सन् १९२१ में हुई। इसका रजिस्टर्ड ऑफिस, टेलिग्राफिक एड्रेस, इत्यादि वही है जो ऊपरकीदो मिलोंके हैं। इसके डायरेक्टर्स निम्नाङ्कित सज्जन हैं—

(१) सर सासुन डेविड बैरोनेट।

(२) सर जमशेदजी जीजी भाई बैरोनेट।

(३) जमशेदजी अर्देसरजी वाड़िया।

(४) एफ० ई० दीनशा।

(५) सर करीमभाई इब्राहीम बैरोनेट।

(६) सर फजलभाई करीमभाई के० टी०।

इसकी एजन्सी करीमभाई इब्राहीम एण्ड सन्स लिमिटेडके हाथमें है। इसकी स्वीकृत पूजी २० लाखकी है।जो बीस हजार साधारण शेअर्समें विभक्त है। इसका मिल फ़ग्यूसन रोडपर है। जहांका टेलीफोन नं०४१५५६है। इस मिलमें १५२६० स्पेण्डिल्स,और ४७३ लूम्स हैं। इस मिलमें १०से३४ नंबरतकका सूत कतता है। तथा कोरा,धुला,रंगीन कपड़ा बनाया जाता है।

पर्ल मिल्स लिमिटेड --इस मिलकी स्थापना १९१३में हुई। इसका रजिस्टर्ड ऑफिस, तारका पता और डायरेक्टर्स वही हैं जो उपरवाली मिलोंके हैं। इसकी एजन्सी करीम भाई इब्राहिम एण्ड सन्सके पास है। इसकी स्वीकृत पूंजी २५लाखकी है जो १० हजार साधारण शेअरोंमें विभक्त है। पर्ल मिलका कारखाना डिलाइड रोडपर है। वहांका टेलीफोन नं० ४०४४६ है। इस मीलमें ४९३५६ स्पेण्डिल्स तथा १७६० लूम्स हैं। इसमें १२ से ३० नम्बर तकका सूत तथा कोरा रंगीन और सफेद कपड़ा तैयार होता है।

क्रीसेंट मिल्स लिमिटेड—इस मिलकी स्थापना सन् १८९३में दामोदर मिलके नामसे हुई थी सन् १९१५ में यही मिल क्रीसेण्ट मिलके नामसे प्रसिद्ध हुई। इसका तारका पता, रजिस्टर्ड ऑफिस और डायरेक्टर्स ऊपरकी मिलोंके अनुसार ही है। इसकी एजेन्सी भी सर करीमभाई इब्राहिम एण्ड सन्सके पास है। इसकी स्वीकृत पूंजी १५ लाखकी है। जो १५ हजार साधारण शेअरोंमें बांटी हुई है। यह मिल फर्ग्यूसन रोडपर बना हुआ है वहांका टेलीफोन नं० ४०-३१६ है। इस मिलमें सभी प्रकारके कुल ४४६८८ स्पेंडिल्स और १०५४ लूम्स हैं। यहाँ १० से ३४ नम्बर तकका सूत निकलता है और कपड़ा ऊपरकी मिलोंकी तरह ही बनता है।

कस्तूरचन्द मिल्स कम्पनी लिमिटेड

इस कम्पनीके अन्तर्गत २ मिलें शामिल हैं। पहला इम्पीरियल मिल और दूसरा कस्तूरचंद मिल। इम्पीरियल मिलकी स्थापना सन् १८८२ में हुई थी। सन् १९१५ में इसका जीर्णोद्धार करवाकर यह कस्तूरचन्द मिलमें मिला लिया गया। कस्तूरचन्द मिलकी स्थापना सन् १९१४ में हुई थी। इसका रजिस्टर्ड ऑफिस १२।१४ आउट्रम रोड फोर्टमें है। तारका पता "Milloffice" है। तथा टेलीफोन नं० २१२९७ है। इसके डायरेक्टर्स निम्नलिखित हैं:--

(१) सर फजल भाई करीमभाई के० टी
(२) अर्देशर जमशेदजी वाड़िया
(३) सर करीम भाई इब्राहीम बेरोनेट
(४) हाजी गुलाम महम्मद आजम
(५) एफ० ई० दीनशा
(६) ऑ० सर फीरोज शेठना ओ० बी० ई०
(७) कीकाभाई प्रेमचन्द

इसकी एजेन्सी करीम भाई इब्राहीम एन्ड सन्सके पास है। इसकी स्वीकृत पूंजी ४८ लाख रुपया है जो ३६०० साधारण शेअरमें विभाजित की गयी है। इन दोनों मिलोंमें

मिलाकर ८१९३४ स्पिंडल्स और ९१३ लूम्स हैं। इसमें भी ऊपरकी मिलों ही की तरह कपड़ा तैयार होता है।

मथुरादास मिल्स लिमिटेडः—इस मिलकी स्थापना सन् १८८३ में क्वीन्स मिल्सके नामसे हुई। सन् १९१३ में यह किङ्गजार्ज मिल्सके नामसे प्रसिद्ध हुई। उसके पश्चात् इसका जीर्णोद्धार होनेपर इसका नाम मथुरादास मिल्स हुआ। इसके डाइरेक्टर्स प्रायः वही लोग हैं जो कस्तूरचन्द मिलके हैं। केवल कीका भाई प्रेमचन्दकी जगह इसके डायरेक्टरोंमें जमशेदजी वाड़ियाका नाम है।

इस मिलकी स्वीकृत पूंजी २४ लाखकी है। जो ४८०० साधारण शेअरोंमें विभक्त कर दी गई है। यह मिल डिलाइलरोड पर बना हुआ है। जहांका टेलीफोन नं० ४०८५१ है। इस मिलमें ४३५९६ स्पेण्डिल्स और ९०७ लूम्स हैं। इसमें २४६५ मजदूर काम करते हैं। यहां पर भी रंगीन, सफेद, कोरा और धुला हुआ कपड़ा बनता है।

माधवराव सिन्धिया मिल्स लिमिटेड—इस मिलकी स्थापना सन् १८८९ में सन मिलके नाम से हुई थी। सन् १९१७ में जीर्णोद्धार होनेपर इसका नाम बदलकर माधवराव सिंधिया मिल्स कर दिया गया। इसका आफिस आऊट्रम रोड फोर्ट में है। इसके तारका पता मिलआफिस (milloffice) है। तथा टेलीफोन नं० २१२९७ है। इसके डायरेक्टर्स (१) सर सासुन डेविड बेरोनेट (२) जमशेदजी अर्देसर बाड़िया (३) करीमभाई इब्राहिम बेरोनेट (४) एफ० ई० दीनशा (५) ऑ० सर फिरोज सेठना (६) अर्देसर जमशेदजी वाडिया आर (७) सर फजल भाई करीम भाई के० टी० हैं।

इसकी एजन्सी करीम भाई इब्राहिम एन्ड सन्स लिमिटेडके पास है। इसकी स्वीकृत पूञ्जी ३८ लाख है जो २० हजार प्रिफेरेन्स तथा १८ हजार साधारण शेअरोंमें विभक्त है। इसका कारखाना लोअर परेलमें है। इसका टेलीफोन नं० ४०११० है। इस मिलमें ४४३२० स्पिंडल्स तथा ६०४ लूम्स हैं। इसमें २३१० मजदूर काम करते हैं। यहां सब प्रकारका कपड़ा तैयार होता है।

ब्रैडबरी मिल्स लिमिटेडः—इसकी स्थापना सन् १८८३ में रिपन मिलके नामसे हुई थी इसी मिलका नाम बदलकर सन् १९१४ में ब्रैडबरी मिल हो गया। इसका रजिस्टर्ड ऑफिस १२।१४ आउट्रम रोड (फोर्ट) में है। तारका पता-मिल आफिस (Milloffice) और टेलीफोन नं० २१२९७ है इसके डाइरेक्टर करीब २ उपरोक्त मिलवाले ही हैं। सिर्फ आर० बी० जीजी भाई और बैरामजी जीजी भाई विशेष हैं।

इसकी एजेन्सी करीम भाई इब्राहिम एण्ड सन्स लिमिटेड के पास है। स्वीकृत पूंजी २५ लाखकी है। जो ६ हजार प्रिफरेन्स तथा ४ हजार साधारण शेअरोंमें विभक्त कर दी गयी है इसका कारखाना रिपन रोडपर है जिसका टेलीफोन नं० ४०८४१ है। इस मिलमें

३५८८४ स्पिंडल्स और ६६२ करघे हैं। तथा इसमें १९४१ मजदूर कार्य करते हैं। यहाँ नं४ से नं० १२ तकका सूत काता जाता है। इस मिलमें सभी प्रकारका कपड़ा तैयार होता है।

मुरारजी गोकुलदास स्पिनिंग एण्ड विविङ्ग कम्पनी लिमिटेडः—इसकी स्थापना सन् १८७२ में सेठ मुरारीजीके हाथोंसे हुई। इसकी स्वीकृत पूञ्जी ११५०००० है। जो ११५० शेअरोंमें विभक्त की गयी है। इस मिलमें ८४००० स्पेंडल्स तथा १६०० लूम्स हैं। इसमें ४२०७ मजदूर काम करते हैं। इसके डाइरेक्टर सेठ नरोत्तम मुरारजी (२) ऑ०सेठ रतनसी धरमसी मुरारजी (३) एफ० ई० दीनशा (४) त्रीकमदास धरमसी मुरारजी (५) अम्बालाल साराभाई (६) ए० जे० रायमंड (७) शाँतिकुमार नरोत्तम मुरारजी हैं। इसकी एजन्सी मेसर्स मुरारजी गोकुलदासके पास है। इसमें खाकी कपड़ा, ड्रील, शर्टिंग कोटिंग आदि २ सभी प्रकारके कपड़े बनाये जाते हैं।

एलायन्स कॉटन मेन्युफेक्चरिंग कं० लिमिटेड—इसका मिल तारदेवमें है। लूम्स ५९२ स्पिंडल २८११६ और केपिटल ७ लाख है। इसकी एजंट मोरार भाई बृजभूषण दास एण्ड कम्पनी हैं।

अपोलो मिल्स लिमिटेड—मिल डेलिस्ले रोड में हैं। इसमें लूम्स ८९६ और स्पिंडल्स ३६६५४ हैं। केपिटल २५ लाख है और इसके मैनेजिग एजंट इ० डी० सासुन एण्ड कम्पनी है। ऑफिसका पता—डगल रोड बेलार्ड स्टेट है।

डेविड मिल्स कम्पनी लिमिटेड—मिल करोल रोड परेलमें है लूम्स ११३० और स्पेंडल्स ८२६२६ हैं। केपिटल २२ लाख और एजंट ई० डी० सासुन एण्ड कम्पनी लिमिटेड है।

ई० डी० सासुन युनाइटेडड कं० लिमिटेड—मिल ग्रूप देव रोडपर है। इसमें लूमस ८०० और स्पेंडल्स ३७१२० है। एजंट ई० डी० सासुन एण्ड कम्पनी है।

जेकोब सासुन मिल – मिल सुपारी बाग रोडपर है इसमें २२८१ लूमस और १००८,२ स्पेंडल्स हैं। एजंट ई० डी० सासुन कम्पनी लिमिटेड है।

रेचल सासुन मिल—चिंच पोकली रोड, लूम्स २०२० हैं। इसके एजंट है ई० डी० सासुन कम्पनी लिमिटेड।

ई० डी० सासुन मिल—ग्रूप रोड, लूमस ८४१ स्पेंडल्स ६००२६ एजंट ई० डी० सासुन एण्ड कम्पनी लिमिटेड। ऊपरकी चार मिलें और मेंचेस्टर मिल, टर्की रेड डेईवर्क्स नामकी ६ मिलोंकी सम्मिलित पूञ्जी ६ करोड़ है। इन सब मिलोंकी एजंट इ० डी० सासुन एण्ड कम्पनी लिमिटेड है।

इण्डियन मेन्युफैक्चरिंग कं० लि०—इसका मिल रिपन रोड में है। इसमें लूमस ९६० और स्पिंडल्स ४१३२८ हैं। केपिटल ६ लाखका है। एजंट दामोदर थैकरसी मूलजी एण्ड कम्पनी १६ अपोलो स्ट्रीट फोर्ट हैं।

जमशेद मेन्यूफेक्चरिंग:कम्पनी लिमिटेड—मिल फरग्यूसन रोडपर है। एजंट होरमसजी अरदेशर एण्ड संस हार्नबीरोड। लूम्स ४६४ और स्पेंडलूस ३१३०० हैं।

वेस्टर्न इण्डिया स्पीनिंग एण्ड मेन्युफेक्चरिंग कं० लि०—एजंट थैकरसी मूलजी संस एण्ड कम्पनी १६ अपोलो स्ट्रीट फोर्ट है। इसमें स्पिंडल्स ४१७६० और लूम्स ६७७ हैं, केपिटल १२ लाख है।

माधवजी धरमसी मेन्युफेक्चरिङ्ग कम्पनी लि०—पूञ्जी २०२३७५० है। स्पेंडिल्स ३७८१२ और लूम्स ६०३ हैं। एजण्ट—गोकुलदास माधवजी संस एण्ड कम्पनी होर्नबीरोड है।

गुविलि मिल्स लिमिटेड:—न्यूशिवरी रोड—लूम्स ४५२ स्पिण्डल्स ३६२५२ केपिटल १५ लाख, एजंट मंगलदास मेहता एण्ड कम्पनी १२३ एस्प्लेनेड रोड फोर्ट है।

वाम्बे काटन मेन्युफेक्चारिंग कम्पनी लिमिटेड:—मिल काला चौकीरोड, केपिटल २२४०७७०, स्पिण्डल्स ३३६४८ और लूम्स ७६५ है। एजण्ट-होरमसजी संस ऐण्ड कम्पनी हार्नबी रोड फोर्ट है।

जेम्स मेन्युफेक्चरिङ्ग कम्पनी लि०—मिल फरग्यूसन रोड पर है। एजण्ट बालजी शामजी एण्ड कम्पनी ४ दलाल स्ट्रीट फोर्ट है। केपिटल १२ लाख, लूम्स ८७४ और स्पिण्डल्स ३०५७० है।

विक्टोरिया मिल्स लिमिटेड:—गाम देवीरोड, एजण्ट मगनलाल मेहता एण्ड कंपनी १२३ एस्प्लेनेड रोड फोर्ट है। पूञ्जी ८ लाख, लूम्स २७ हजार और स्पिण्डल्स ५५६ हैं।

डायमंड स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स कं लिमिटेड—परेलपर है। एजंट गुलाबचन्द ऐण्ड कम्पनी १६ अपोलो स्ट्रीट फोर्ट है। पूञ्जी ३९१७६१८) है लूम्स ३४५५२ और स्पिंडल्स ७५८ हैं।

किलाचंद मिल कं० लि०—एजंट किलाचन्द देवचन्द एण्ड कम्पनी लि० ५५ अपोलो स्ट्रीट फोर्ट है, पूंजी ४०३३४४५) है।

न्यु केसरे हिन्द मिल—चिंच पोकली, एजंट वसनजी मनजी एण्ड कम्पनी एलिफंस्टन सर्कल, पूंजी ६ लाख स्पिंडल्स ४०६४४ और लूम्स ११०४ हैं।

खटाऊ मकनजी स्पीनिंग एण्ड वीविंग कम्पनी लि०—भायखला एजंट खटाऊ मकनजी एण्ड कम्पनी लक्ष्मी विल्डिंग ४२ बेलार्ड पेअर फोर्ट, पूंजी २९६५००० स्पेंडल्स ६२८४४ और लूम्स १५१२ हैं।

असु बीरजी मिल्स लिमिटेड—लोअर परेल एजन्ट एच० एफ० कोमिसरी एन्ड कम्पनी। पूंजी ४१६७८२०) स्पिंडल्स ३६२०८ लूम्स ६०० हैं।

फिनिक्स मिल लिमिटेड—फरग्यूसनरोड, एजंट रामनारायण हरनन्दराय एन्ड सन्स १४३ एस्प्लेनेड-रोड फोर्ट, पूंजी ८ लाख, स्पिण्डल्स ५२५०० लूम्स ६६६ हैं।

बिड़ला मिल्स लिमिटेड नं० १—एलिफंस्टन रोड, एजंट एलन रहीमतुल्ला एन्ड कम्पनी चर्चगेट स्ट्रीट फोर्ट, स्पिण्डल्स १६०८६ लूम्स ३२०।

बिड़ला मिल्स लिमिटेड नं २—सिवरीरोड परेल, एजंट एलन रहीम तुल्ला एण्ड कम्पनी चर्चगेट फोर्ट स्पिंडल्स २५५६२ लूम्स ४००-दोनों मिलोंकी मिश्रित पूंजी ६०६८००।

कुरला स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल—कुरला, एजंट कावसजी जहांगीर एण्ड कम्पनी लिमिटेड, लूम्स ७१६, स्पिंडल्स २७६४०, पूंजी १३ लाख, ऑफिस चर्चगेट स्ट्रीट फोर्ट।

मून मिल्स लिमिटेड—शिवरीन्यूरोड, लूम्स ७५६ स्पिंडल्स ३४४१४ पूंजी २५०००० एजण्ट पी० ए० होरमसजी एण्ड कम्पनी ७० फ़ारवसस्ट्रीट फ़ोर्ट।

एम्पायर एडवर्ड स्पिनिंग एण्ड मेन्यूफ़ेक्चरिंग कम्पनी लिमिटेड—रेरोड मजगांव,लूम्स१३६३ स्पिंडल्स ४६-४५२, पूंजी १५ लाख ए० बी० डी० पेटिट ए० सन कम्पनी ७।११ एलफिंस्टन सरकल फोर्ट।

सेंचुरी स्पीनिंग एण्ड मेन्यूफेक्चरिंग कम्पनी लिमिटेड—एलिफंस्टनरोड, २६६६ लूम्स स्पिण्डल्स १०४-६८० पूंजी १८५०००० एजंट सी० एन बाडिया एण्ड कम्पनी।

क्राउनस्पीनिंग एण्ड मेन्यूफेक्चरिंग कं० लि०—परेल, लूम्स ६६८ स्पेण्डल ४१७६८ पूंजी ८ लाख एजण्ट पुरुषोत्तम विट्ठलदास एण्ड कंपनी १९ अपोलो स्ट्रीट फ़ोर्ट।

प्लेनेट मिल्स लिमिटेड—फार्ग्यूसन रोड लूम्स ६३० स्पिण्डल्स ३५८६ एजेंट तिलोकचंद कल्यानमल एण्डको कालवादेवी कल्याण भवन, पूंजी १६ लाख।

सिंप्लेक्स मिल्स कं० लिमिटेड—भायखला, स्पिण्डिल्स ३७२०८ लूम्स १२३० पूंजी २२ लाख ५० हजार, एजण्ट एलन ब्रदर्स एण्ड कं० (इण्डिया) लि० हार्नबीरोड।

ग्लोवमेन्युफेक्चरिंग कं० लि—लूम्स ७४४ स्पिण्डल्स २६१०४, पूंजी १० लाख एजण्ट टर्नर मरीसन एण्ड कं० लि १६ बैंक स्ट्रीट फोर्ट।

कोहिनूर मिल्स कं० लि—दादर, पूंजी ११ लाख, २९११४ स्पेंडल्स ७४४ लूम्स, एजंट किलिक निक्सन एण्ड कम्पनी लि० होम स्ट्रीट फ़ोर्ट।

गोल्ड मोहर मिल्स कं० लि०—दादर—लूम्स १०४० स्पिंडल्स ४२४७२ पूंजी २० लाख, एजण्ट जेम्स फिनले कं० लिमिटेड फोर्ट।

फिनले मिल्स लिमिटेड—परेल, लूम्स ८१२, स्पिण्डल्स ४६१७२ पूंजी २१ लाख, एजण्ट जेम्सफिनले एण्ड कंम्पनी लि० फोर्ट

इसके अतिरिक्त और भी कई मिलें हैं सब मिला कर इनकी संख्या करीब ८० है। पर उन सबका परिचय स्थानाभावसे यहां देनेमें हम असमर्थ हैं।

रेशम के कारखाने

(१) सासून एण्ड अलायन्स सिल्क मिल्स कंपनी लिमिटेड—इसका रजिस्टर्ड ऑफिस ३ फारबेस स्ट्रीट फोर्टमें है। इसका कारखाना विक्टोरिया रोड मझगांवमें है। इसमें २८५ लूम्स तथा ६५२० स्पेंडल्स हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १० लाखकी है। इसमें ६६७ आदमी काम करते हैं। इसके मैनेजिंग एजंट डेविड सासून एण्ड कंपनी लिमिटेड है। और डायरेक्टर निम्न लिखित सज्जन हैं।

(१) एच० एच० स्कायर
(२) सिडने ब्रुड डब्ल्यू
(३) एच० टेम्बल
(४) ईश्वरदास लक्ष्मीदास
(५) एफ. आर. वाड़िया
(६) रणछोड़दास बी० मेहरा

(२) छाइ सिल्क मिल्स कंपनी लिमिटेड—इसका रजिस्टर्ड आफिस २०७ हार्नबी रोड फोर्ट बम्बईमें है और कारखाना सुपारी बाग रोड परेलमें है। इसमें सन् १६२५ में ३८० आदमी काम करते थे।

ऊनके कारखाने

(१) बाम्बे ऊलन मेन्यूफेक्चरिंग कंपनी लिमिटेड—इसका आफिस ईवर्ट हाउस, टेमिरंड लेन फोर्टमें हैं इसका कारखाना दादरमें हैं। यहाँ पर ऊनी माल तयार होता है। इसके मैनेजिंग एजण्ट एंग्लोश्याम कारपोरेशन लिमिटेड है। तारका पता—ईवर्ट (Ewart) है। इसमें सन् १६२५ में ६६१ आदमी काम करते थे।

(२) वाड़िया ऊलन मिल (हांगकांग मिल लिमिटेड)—इसका ऑफिस उडबी रोड फोर्टमें है। कारखाना चिंचपोकली पर है। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोडकी है। जिसमेंसे ८७ लाखकी पूंजी वसूल हो चुकी है। इसमें २२० लूमस औरकी १०५०० स्पिंडल हैं। इनके अतिरिक्त ४८०० सूत बनानेके स्पिंडल हैं। और २८८० ऊन कातने वाले स्पिंडल है। इसके एजंट हुसैन भाई पिलानी वाड़िया एण्डको है।

(३) रेमंड ऊलन मिल्स लिमिटेड—इसका आफिस ई० डी० सासुन बिल्डिङ्ग डूगल रोड बेलार्ड स्टेट पर है। इसका मिल थाना (बम्बई) में है। इसकी स्वीकृत पूंजी ५० लाखकी है। इसमें सन् १६२५ में ६०० आदमी काम करते थे। इसकी भारत और इंग्लडकी एजंट ई० डी० सासुन एण्ड कंपनी लिमिटेडके पास है। इस कंपनीका

बम्बईका पता पो०बा० नंबर १६८ है। और विलायतका पता ७३ विंटवर्थ स्ट्रीट मैंचेस्टर है। इसके अतिरिक्त बम्बई इण्डियन ऊलन मील कंपनी लिमिटेड और धरमसी मुरारजी ऊलन मील ये दो मिलें और है।

लोहेके कारखाने

(१) गहगनजी० ओ० एण्ड कंपनी—इस कंपनीका कारखाना जेकोब सरकलमें है। यहां पर लोहा गलाया जाता है और ढलाईका काम होता है। यह कम्पनी इंजनियरिङ्गसे सम्बन्ध रखने वाला सामान तैय्यार करती है।

(२) सी० डी केरावाला एण्ड कंपनी—इस कंपनीका कारखाना चिंचपोकली परेलमें है। यहां लोहा तथा पीतलकी ढलाईका काम होता है, इसके मालिक हैं मि० सी० डी० केरा वाला। तारका पता है "मशनिरी" machnery।

(३) कारोनेशन आयर्न वर्कस—इसका कारखाना गिल्डर स्ट्रीट लेमिंगटन रोड पर है। यहां पर लोहे की ढलाईका काम होता है। इस कम्पनीमें मि० गफूर मेहर अली, मि० जाफर मेहर अली आदि व्यक्ति भागीदार हैं।

(४) एम्प्रेस आयर्न एण्ड ब्रास वर्कस—इसका कारखाना परेलमें है। यहां पर लोहा और पीतलकी ढलाईका काम होता है। इसके मालिक हैं बरजोरजी पेस्तनजी एण्ड सन्स।

(५) गार्लिक एण्डको—इस कंपनीका कारखाना जेकोब सरकल पर है। इस कम्पनीमें इंजनियरिङ्ग तथा लोहेकी ढलाईका काम होता है। इसकी एक ब्रेंच ऑफिस मस्कती मार्केट अहमदाबादमें है। इसके पास नीचे लिखे विदेशी कारखानोंकी एजंसियां हैं।

(१) श्येंग्स एण्ड को लिमिटेड सेनेटरी इन्जिनियर ग्लासगो।
(२) सी. एफ. विल्सन एण्ड को ऑइल एन्जिन मेकर एबर्डीन।
(३) ब्रिज एण्ड आयर्न वर्क शिकागो।
(४) स्टेंडर्ड मेटल विंडोस कम्पनी ब्राम्बीज

इस कम्पनीका तारका पता गार्लिक (Garlik) हैं।

(६) मार्शलेंड प्राइस एण्डकम्पनी लिमिटेड—इसका कारखाना मजगांवमें हैं। तथा ऑफिस फिनिक्स बिल्डिङ्ग वेलार्ड स्टेट पर है। इसकी स्वीकृत पूंजी १० लाखकी है। यह पूंजी १००) प्रति शेअरके हिसाबसे वसूल करली गई है। इसके निम्न लिखित डायरेक्टर हैं।

(१) सर लल्लूभाई सामलदास कैटी, सी० आई० ई०
(२ माधवजी डी० ठाकरसी
(३) एच० पी० गिब्स
(४) बालचंद हीराचंद

(५) एन० बी० सकलतवाला

(६) जे० डी० गांधी

रिचर्डसन एण्ड क्रूडस—इसका कारखाना भायकलामें है, इसके यहाँ मकान बनानेका ठेका तथा लोहा और पीतल गलानेका व ढालनेका काम होता है। यह कम्पनी धातु और हार्डवेअरकी व्यापारी हैं। इसका तारका पता, "आयर्न वर्क्स" है।

एलकाक ऐश डाउन एण्डको लि०—इसके कारखाने मझगांव और कर्नाक बन्दरपर हैं। इनके यहां सभी प्रकारका जहाजी तथा इमारती काम होता है और सभी प्रकारकी मरम्मतका काम भी यह लोग करते हैं। इनके तारका पता रिपेयर्स 'Repairs' है।

सीमेन्ट कम्पनी

पोर बन्दर स्टोन कम्पनी लि०—इसका आफिस २०३—५ हार्नबी रोड पर है। तारका पता 'लाइटस्टोन" है इसके कारखाने पोर बन्दरमें और बम्बईमें है।

इण्डिया सीमेन्ट कम्पनी लि०—इसका आफिस बाम्बे हाउस ब्रूस स्ट्रीट पर है। कारखाना पोरबन्दरमें हैं, इसकी स्वीकृत पूंजी ६० लाख है जिसमेंसे ३६७७१५० रु० शेअर बेंचकर वसूल किये गये हैं। इसके एजंट टाटा सन्स लि० है। तारका पता है "टाटासीमेन्ट"।

रंग और वार्निश

पायोनियर इण्डियन पेण्ट एण्ड आईल वर्क्स लि० इसका कारखाना भाईकलामें है। यहां पर सब प्रकारके ऑइल, पेन्ट वार्निश और दूसरे तेल तैयार होते हैं। इसका ऑफिस ११ लवलेन भाईकलामें है।

चांवलका मिल

श्री अन्नपूर्णा राइस मिल—कालबादेवीमें हैं।

पेपर मिल

गिरगांव पेपर मिल्स—इसका कारखाना गिरगाममें है। और आफिस ७७—७९ अपोलो स्ट्रीटमें हैं।

खपड़ा नालिया कारखाना

भारत फ्लोरिङ्ग टाइल्स कम्पनी—आफिस मोरारभाई बिल्डिङ्ग अपोलो स्ट्रीटमें है। इसके प्रधान पार्टनर है खान बहादुर नसरवानजी मेहता।

लकड़ीका कारखाना

मेसर्स टिम्बर एण्ड ट्रेडिङ्ग को० लि०—इसका नाम सन् १९२२के पूर्व मेसर्स कर्री एण्ड जर्रह को० लि० था। इसका भारतमें प्रधान आफिस बम्बईके हार्नबी रोडपर यार्क बिल्डिङ्गमें है। इसकी एजेण्ट और डीपो भारतमें इस प्रकार हैं।

कलकत्ता—एजेन्सी गीलैण्डर्स अर्ब्यूथनाट एण्डको, डीपो—खिदरपूर पर है।

मद्रास—डीपो बोचपर है।

करांची—एजेन्ट मैकीनान मैकेन्जी एण्डको, डीपो मैक्लाड रोड पर है। भारतमें इसकी सभी ऑफिसोंका तारका पता है जिर्रा jarrah.

चमड़ेके कारखाने

वेस्टर्न इण्डिया आर्मी बूट एण्ड इक्वीपमेन्ट फेक्टरी—इसका कारखाना बम्बई नगरसे थोड़ी दूर उपनगर धरावी (Dharavi) जि० शिवमें है और आफिस तारदेव बम्बई नं० ७ में है।

हाजी नूर मुहम्मद एण्ड हाजी इस्माइलका कारखाना—२०, क्रूज बैंक्ररोड भाईखलामें है यहांपर चमड़ा और खाल पकाकर कमाई जाती है। इसके मालिक हाजी नूर मोहम्मद, हाजी-लाल मोहम्मद, हाजी ईसा तथा हाजी उस्मान हैं। इनके लंदनवाले आफिसका पता एच० ईसा एण्ड को० ५६ बर्माण्डसे स्ट्रीट लन्दन S. E. I. है।

कॉटन प्रेस

१—चन्दारामजी प्रेस - कोलाल, मालिक मूलजी हरीदास ।

२—कोलावा प्रेस कम्पनी लि०—इसका आफिस स्प्लैनेड रोड फोर्टमें है और इसकी फैक्टरियां आगरा, बांदा, कोपबल (Kopbal) हुबली, गड़ग, काजगांवमें है।

३—फार्बेस प्रेस एण्ड मैन्यूफेक्चरिंग कम्पनी लि०—इसका आफिस फार्बेस बिल्डिङ्ग होम स्ट्रीटमें है। इसमें स्वीकृत पूंजी १० लाखकी लगी हुई है। इसके पार्टनर्समें प्रधान फार्बेस एण्ड फार्बेस कैम्पबेल एन्ड को० लि० हैं।

४—फोर्ट प्रेस कम्पनी लि०—इसका आफिस कोलाबा रोड बम्बई नं० ५ में है। इसमें २ लाख ८५ हजार-की पूंजी लगी हुई है जो ४७५)रु०प्रति शेयरके हिसाबसे छः सौ शेयर बेचकर इकट्ठी की गयी है। इसके डायरेक्टरोंमें सेठ करसनदास टी० रावजी जे० पी०, (चेयरमैन) मानेक शाह, एन० पोचखानवाला, (सालीसीटर) जमशेदजी ए० एच० चिन्मय, पेस्तमजी शापुरजी नारियलवाला तथा मगनलाल डी० खखर जे० पी० हैं। इसके सिक्रेटरी हैं जमियतराम जगजीवन कपाडिया।

५—मद्रास यूनाइटेड प्रेस कम्पनी लि०—इस्माइल बिल्डिङ्ग हार्नबी रोडपर इसका आफिस है। इसकी जीनिंग तथा प्रेसिंग फेक्टरीज़ बम्बईके अतिरिक्त गुन्टकाल, कोइम्बटोर, तीरूपुर, तथा डिन्डिगलमें हैं। इसमें स्वीकृत पूंजी १५ लाख की है जिसमेंसे ६ लाख ८० हजार वसूल करके लग चुका है। इसके डायरेक्टरोंमें सेठ शान्तिदास आशकरण जे० पी० चेयर मैन हैं तथा पाठक सन्स एन्ड कम्पनी इसकी मैंनेजिंग ऐजेन्ट है इसका तारका पता है "वेस्टर्न" (Western)

६—मनगढ़ मैन्यू फैक्चरिंग कम्पनी लि०—की जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी चलती हैं। इसका आफिस ४७ मेडोलस्ट्रीट में है इसमें स्वीकृत पूंजी ३ लाख ५० हजार की लगी हुई है जो २५०) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे १ हजार ४ सौ शेयर बेंचकर वसूल कर ली गयी है। इसके डायरेक्टरोंमें निम्नाङ्कित व्यक्ति है :—

सेठ मेघजी लक्ष्मीदास (चेयरमैन)

„ मगनलाल दलपतराम खखर

„ प्रागजी ईबजी

„ गिरधरलाल हरीलाल मेहता

„ नारायणदास गोकुलदास

इसकी एजेन्सी नेनसी शिवजी ए० को० के पास है।

७—न्य प्रिन्स आफ वेल्स प्रेस को० लि०—इसके द्वारा कॉटन जिनिङ्ग, प्रेसिङ्ग फैक्टरी तथा आइल मिल चल रहे हैं। इसका आफिस फार्बस बिल्डिंग होम स्ट्रीटपर है। इसकी फैक्टरी बम्बईके अतिरिक्त बरसी, बीजापुर, बुढ़ानपुर,हुबली,खांवगांव, डोडैंइचा, मलकापुर,धूलिया मूर्तिजापुर, तथा पुलगांवमें हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ३ लाख है जो ५००) रु०प्रति शेयरसे ६ सौ शेअरों में विभाजित हैं। इस पूंजीमेंसे ५९५ शेयर बेचकर २ लाख ९७ हजार ५००की रकम वसूल की गयी है। इसके सेक्रेटरी तथा ट्रेझरर्स फार्बस एन्ड को० लि० है।

८—फार्बस केम्बल वेस्टर्न इन्डिया काटन को० लि०—इसका आफिस ओरियन्टल बिल्डिङ्ग हार्नबी रोडपर है डायरेक्टर हैं जी० ई० डी० लैंगली, जी० वायगिस, एम० एन० पौच खानवाला, ए० एच० रोडेश। इसकी मेनेजिंग ऐजेन्सी लैंग्ली एन्ड कम्पनीके पास है और तारका पता है लैंगलेट (Langlet)।

मिल-ऑनर्स

MILL-OWNERS.

मिल ऑनर्स
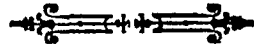
सर ई० डी सासून एण्डको लिमिटेड

इस समय इस फर्मके चेअरमेन सर विक्टर सासून थर्ड बैरेनोट हैं। आपका जन्म सन् १८८१ में हुआ। आपकी शिक्षा केम्ब्रिजके ट्रिनीटी कालेजमें हुई। आप ई० डी०सासून एण्ड को० के सिनियर हिस्सेदार हैं, जोकि भारतवर्षमें सबसे ज्यादा स्पिंडलस् और लूम्सकी मैंनेजिङ्ग एजंट है। सासून महोदयने गत युरोपीय महायुद्धके समय सन् १९१४—१८ तक केप्टनशिप की थी। उसमें आप जख्मी भी हुए थे। अपने पिताजी सर ई० डी० सासूनकी मृत्युके पश्चात् आप सन् १९२४ में बेरोनेटकी गद्दीपर बैठे। इस समय आप एडवर्ड सासून एण्ड० को लि० के चेअरमैन हैं। आप व्यापार और उद्योग धन्धे सम्बन्धी विषयोंमें बड़ी दिलचस्पी रखते हैं तथा आर्थिक जगतमें प्रभाव पैदा करनेवाले महत्वपूण प्रश्नोंमें अग्रगण्य पार्ट लेते हैं। आप बम्बईकी मिल ऑनर्स एसोसियेशनकी ओरसे सन् १९२० और २६ में लेजिस्लेटिव्ह कौन्सिलके मेम्बर चुने गये थे। आप कई मिलोंके मैंनिजिंग एजंट तथा मालिक हैं। जिनका परिचय पहले दिया जा चुका है।

सर कावसजी जहांगीर रेडीमनी

इस फर्मके संस्थापक बम्बईके प्रसिद्ध परोपकारी गृहस्थ सर कावसजी जहांगीर थे। आपका जन्म सन् १८२४ में बडौदा राज्यके नवसारी ग्राममें हुआ, १५ वर्षकी आयुमें आप मेसर्स डेंकन गीपकी कम्पनीमें नौकर हुए, पश्चात् और कई भिन्न २ कम्पनियोंमें आपने सर्विस की, कुछ समय तक सर्विस करनेके बाद आपने दो यूरोपियन फर्मोंकी दलाली करना प्रारम्भ किया और उसके पश्चात् आपने चीनके साथ स्वतन्त्र व्यापार शुरू कर दिया जिसमें आपको बहुत लाभ हुआ।

आप बड़े दानी और उदार सज्जन थे सबसे पहिले आपने २ हजार पौंड इंग्लैंडकी लंदन फीवर अस्पतालमें दिये, उसके पश्चात् आपने सूरतमें सर कावसजी जहाँगीर हास्पिटल, सर कावसजी जहांगीर युनिवर्सिटी हाल, पूनेमें इन्जिनियरिंग कालेज, डिस्ट्रेंजर्स होमफ्रेंड सोसाइटी, सर कावसजी

जहांगीर आई-हास्पिटल, (आंखका दवाखाना) एल्फिस्टन कालेजका मकान, तथा सिन्ध हैदराबादमें पागलों का हास्पीटल और बगीचा इत्यादि सार्वजनिक संस्थाएं निर्माण की। बम्बईके दानवीरोंमें आपका नाम बहुत ऊँचा था। आपकी योग्यता और दानवीरतासे प्रसन्न होकर सरकारने आपको जे० पी० की उपाधिसे सम्मानित किया है। इसके बाद सन् १८६० में आप इनकमटैक्स डिपार्टमेन्टके कमिश्नर नियुक्त हुए। सन् १८७१ में आपको सी० एस० आई० और १८७२ में सर नाइटका अलकाब प्राप्त हुआ। १८७८ में आपका स्वर्गवास हुआ आपके कोई पुत्र न होनेकी वजहसे आपने अपने बड़े भाईके पुत्र जहांगीरजीको गोद लिया।

सर कावसजी जहांगीर बेरोनेट जे० पी०

आपका प्रथम नाम जहांगीरजी था। आप सर कावसजीके (प्रथमके) बड़े भाई हीरजी जहांगीरके बड़े पुत्र सेठ जीवनजीके पुत्र थे। आपका जन्म सन् १८५२ में हुआ। आपकी शिक्षा एल्फिंस्टन कालेजमें हुई। आपने अपनी पत्नी श्रीमती धनबाईके साथ कई बार विलायत यात्रा की। सन् १८६४ में जब आप चौथी वक्त लन्दन गये थे तब श्रीमती विक्टोरिया महारानीने अपने हाथोंसे आपको सरनाइटके प्रसिद्ध खिताबका चांद प्रदान किया। उस समय आपने इम्पीरियल इन्स्टीट्यूटकी संस्थामें रेडीमनीहाल बन्धानेके लिये २ लाख रुपये प्रदान किये उसके पश्चात सन १९१२ में बम्बईके साइन्स कालेजमें ८ लाख रुपये दान किये। आपकी दानवीरतासे प्रसन्न होकर गव्हर्नमेंटने आपको वेरो नेटका अत्यन्त सम्मान पूर्ण खिताब प्रदान किया। सर कावसजी जहांगीर रेडीमनी एक अत्यन्त सम्माननीय गृहस्थ, म्युनिसिपल कारपोरेटर, लेजिस्लेटिव्ह एसेम्बलीके मेम्बर, प्रसिद्ध मिल मालिक, और पारसी पंचायतके सम्माननीय ट्रस्टी रहे हैं गवर्नमेन्टने सन् १९१८ सालके लिये आपको बम्बईके शरीफका नामांकित पद प्रदान किया था। टाटा आयरन स्टील एण्ड कम्पनी, हाइड्रोइलेक्ट्रिक पावर सप्लाई कम्पनी, जुबिली मिल आदिके समान व्यापारिक उद्योग धन्धोंके उद्देशोंके साथ आपकी बहुत सहानुभूति रही।

जहांगीर सर कावसजी [जूनियर]

आपका जन्म सन् १८७८ में हुआ। आपने केम्ब्रिजके सेण्ट जेम्सकालेजमें शिक्षा प्राप्त कर एम० ए० की पदवी प्राप्त की। बम्बईके पब्लिक-जीवनमें आपका बुद्धिमता पूर्ण हाथ रहा है। आपने स्थानीय म्युनिसिपल कार्पोरेशनकी सन् १८९४ से सन् १९२१ तक बहुत अच्छी सेवायें की हैं। आप इसकी कमेटीके सन् १९१४-१५ में चेअरमेन रहे और सन १९१९—१९२०में आप इसके सभापति रहे हैं, आपने युद्धके समयमें गवर्नमेंटकी बहुत सेवाएं की थीं। इसके बदलेमें गवर्नमेंटने आपको सन् १९१८ में ओ० बी० ई० तथा सन १९२० में सी० आई० ई० की पदवीसे विभूषित किया है। आपने

स्व० सेठ सर करीम भाई इब्राहीम (प्रथम बैरोनेट)
बम्बई
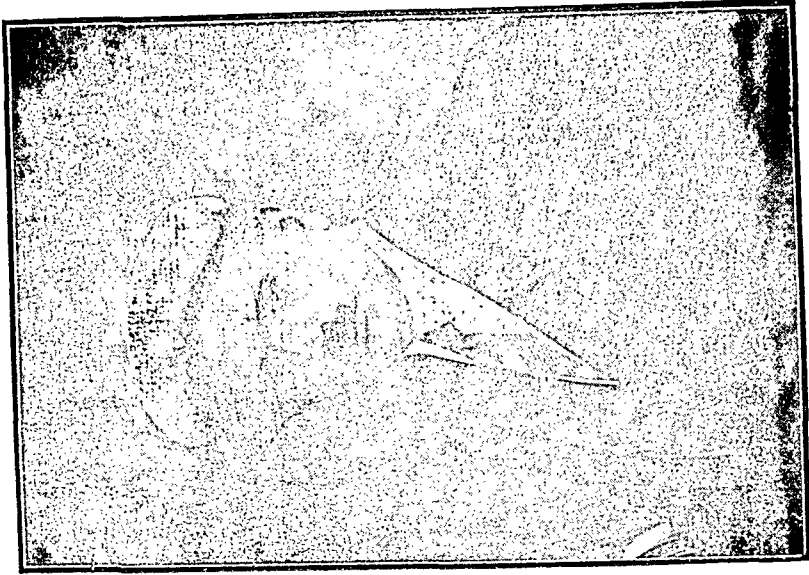
सर फाजल भाई करीम भाई, बम्बई
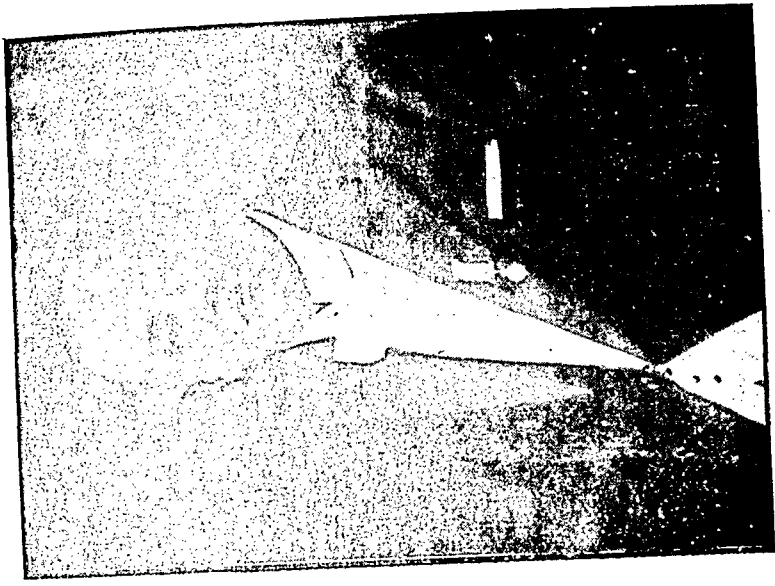
सेठ महम्मद भाई करीम भाई (द्वितीय बैरोनेट)
बम्त्रई

एकजिक्यूटिव्ह कौंसिलकी मेम्बरी भी बड़ी योग्यता और बुद्धिमानीके साथ की थी। आपको सन् १९२७ में के० सी० एस० आई० की पदवी मिली। यह फर्म कई मिलोंकी मैनेजिंग एजण्ट है।

करीम भाई इब्राहिम एण्ड सन्स

भारतके कपड़ेके व्यवसायी और मिल मालिकोंमें सेठ करीम भाई इब्राहिमका स्थान बहुत ऊँचा है। इस फर्मकी स्थापना सेठ करीमभाई इब्राहिमने १६ वर्षकी आयुमें की थी। आपके पिताका नाम सेठ इब्राहिम भाई पवानी था। वे अफ्रिकाके जंजीबार नामक बन्दर और बम्बईके बीच निजकी नावोंमें माल लादकर लाते और व्यवसाय करते थे। सन् १८५५ में सेठ इब्राहिम भाई पबानीका देहावसान होगया। अपने पिताके देहावसानके पश्चात् सर करीम भाईने उस व्यवसायको छोड़कर सुधरे हुए तरीकेसे पूर्वीय देशोंके साथ व्यापार करना आरम्भ किया, एवं आपने १६ वर्षकी उम्रमें ही स्वयं पूर्वीय देशोंकी यात्रा की। उस समय सुदूर चीन आदि देशोंके साथ भारत अच्छा व्यवसाय होता था। इसलिये सेठ करीम भाईने इस ओर अपनी पूर्ण शक्ति लगानेका निश्चय किया। कुछ समय पश्चात् आपने अपने पिताश्रीके नामसे सन् १८५७ में हांगकांगके अंदर एक फर्म खोली। इसके बाद आपने शंघाई, कोबी और सिंगापुरमें भी अपनी फर्मे स्थापितकी, एवं कलकत्तेमें भी अपने नामसे एक शाखा खोली। सेठ करीम भाईने अपनी व्यवसायिक योग्यताके बलपर व्यापारको खूब तरक्की दी और थोड़े ही समयमें यह फर्म पूर्वीय देशोंसे व्यवसाय करनेवाली फर्मोंमें बहुत ऊँची मानी जाने लगी। उस समय यह फर्म अफीम, रूई, सूत, रेशम, चाय आदि वस्तुओंका व्यवसाय करती थी।

बहुत समय तक सर करीमभाई स्वयं सब प्रबन्ध देखते रहे पश्चात् आपने अपने सुपुत्र मोहम्मद भाई तथा फजलभाईको भी सन् १८८१ से साथ ले लिये कुछ समय बाद आपके तीसरे पुत्र हुसेन भाई भी एक हिस्सेदारके रूपमें फर्ममें काम करने लगे और अन्तमें सर करीमभाईके शेष चारों पुत्र सेठ अहमदभाई,सेठ रहीमतुल्ला भाई,सेठ हबीब, भाई और सेठ इस्माइल भाई भी फर्मके हिस्सेदार बनाये गये और अन्तमें फर्मका सारा कारोबार इन्हीं सब भाइयोंके हाथमें आया। सर करीमभाईने अपने देहावसानके समय अपनी फैमिलीका बहुत सुप्रबन्ध कर दिया था।

सर करीमभाईने पूर्वीय देशोंके साथ व्यापार करते हुए देशी उद्योग धन्धेकी ओर भी खूब ध्यान दिया। पुराने प्रिन्स आफ वेल्स मिलकी मैनेजिङ्ग एजेंसी जब आपने अपने हाथोंमें ली, तबसे आपने रूईके व्यापारको विशेष बढ़ाया। आपने सन् १८८८ में करीम भाई इब्राहिम मिल्स कं० लि० की स्थापना की। इस मिलने इतनी अधिक उन्नतिकी, कि उसकी आमदसे मोहम्मद भाई मिल नामक एक मिल और खोली गयी। इसके बाद सर करीमभाईने इब्राहिमभाई पवानी मिल्स

कं० लि० नामक एक मिल और खोली। तत्पश्चात् आपने दामोदर लक्ष्मीदास मिलकी एजेंसी ली। कुछ समय बाद आपने इस मिलकी सम्पत्ति बढ़ाई और इसका नाम बदलकर क्रिसेंट मिल कं० लि० रक्खा।

सर करीमभाईने सन् १९०५ में फजलभाई मिल्स कं० लिमिटेडकी स्थापनाकी, एवं सन् १९१२ में पर्ल मिलको जन्म दिया। इन्दौरकी मालवा युनाइटेड मिल भी आपहीके हाथोंमें है।

आपने इतने अधिक मिल खोले कि उनके कपड़ेकी धुलाई व रंगाईकी सुव्यवस्थाके लिये करीमभाई डाइंग एण्ड क्लीनिंग मिल नामक एक स्वतन्त्र मिल आपको स्थापित करना पड़ा। भारतसे जो रद्दी रूई विलायत जाती है उसका मोटा कपड़ा और सस्ते कम्मल आदि बनते हैं उस रुईका प्रयोग करनेके लिये आपने प्रीमियर मिल कम्पनी लिमिटेड नामसे विशेष कारखाना खोला। वर्तमानमें आपकी फर्म करीब १३।१४ मिलोंकी एजेण्ट है। जिनके नाम इस प्रकार हैं, करीमभाई मिल (महम्मद-भाई मिल सहित) फाजल भाई मिल, पर्लमिल, पबानी मिल, क्रिसेंट मिल, इन्दौर मालवामिल, इण्डियन क्लीनिंग मिल, प्रीमियर मिल, कस्तूरचन्द मिल, इम्पीरियल मिल, ब्रेडबरी मिल, मथुरा दास मिल, माधौराव सिंधिया मिल, सीलोनमिल, उस्मान शाहीमिल (हैदराबाद) है। (इन सब मिलोंका परिचय ऊपर दिया जा चुका है।) इन सब मिलोंके मेनेजमेंटमें इसफर्मकी करीब ३ करोड़-की सम्पति लगी हुई है। इस उद्योगकी सफलतामें इस कार्यके सुप्रबन्धक निरीक्षक मि० एम० एम० फकीराका बहुत बड़ा हाथ था।

यह खानदान खास कच्छ-मांडवीका रईस है खोजा समाजमें यह कुटुम्ब बहुत अग्रगण्य है। कच्छकी स्टेटको छोड़कर भारतकी शायदही किसी देशी रियासतको इतना बड़ा व्यवसायी कुटुम्ब पैदा करनेका गर्व होगा। यह फर्म भारतके मशहूर रुई और कपड़ेके व्यवसाइयोंमेंसे एक है।

सर करीमभाई (प्रथम बैरोनेट) ने अपने ८४ वर्षके लम्बे जीवनमें भारतीय उद्योग धन्धोंको जो उन्नति दी है, वह इतिहासके पन्नोंमें अमिट है। इसप्रकार परम गौरवमय जीवन व्यतीत करते हुए आपका देहावसान २६ सितम्बर सन् १९२४ ईस्वीको हुआ। आपने बारह तेरह लाखका दान अपने जीवनमें किया है। जिसमेंसे ढाई लाख रुपया एक आर्कनेजके लिये दिया है। कच्छमांडवीमें आपका एक गर्ल स्कूल, एक दवाखाना और एक धर्मशाला है। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक (१) सर फाजलभाई करीमभाई (२) सेठ हबीबभाई करीमभाई (३) सेठ इस्माइलभाई करीमभाई (४) सेठ करीमभाई हुसैनअलीभाई तीसरे बैरोनेट (५) अहमदभाई सर फाजलभाई और (६) इब्राहिमभाई गुलाम हुसेन हैं।

इस फर्मकी नीचे लिखे स्थानोंपर कपड़ेकी दुकानें तथा एजेंसिया हैं।

(१) मेसर्स करीमभाई इब्राहिम एण्डसन्स—(शेखमेमनस्ट्रीट-बम्बई) (T. a. Setaran)

इस फर्मपर १२ मीलोंका बना हुआ करीब ४।५ करोड़का माल प्रतिवर्ष बेंचा जाता है।

स्व० जमशेदजी नसरवानजी ताता

सर विक्टर सासुन

स्व०सर दोराबजी जमशेदजी ताता नाइट, जे०पी०,

सर कावसजी जहांगीर रेडीमनी एम०ए०,जे०पी०,ओ०बी०ई०

(२) दिल्ली—मेसर्स करीम भाई इब्राहीम (T. A. mill office)
(३) इन्दौर—मे० करीम भाई इब्राहीम (T. A. creson)
(४) कलकत्ता—एजंट सुन्दरमल परशुराम (T. A. Sitapal)
(५) अमृतसर—एजेंट नीकाराम परमानन्द (T.A mill office)
(६) कानपुर—एजेंट-गनेशनारायण पन्नालाल (T. A Durgaji)

इसका हेड ऑफिस- १२ ।१४ आउट्रम रोडफोर्ट, बम्बई है।

डेविड सर सासून बैरोनेट

आपका जन्म सन् १८४८ में हुआ। आप जेविश जातिके सज्जन थे। बम्बईके जेविश समाजमें आप बड़े उन्नतिशील तथा कुशल व्यापारी हुए हैं। बंबई प्रेसिडेन्सीके उद्योग धंधे और व्यापारकी तरक्कीमें आप एक स्वतंत्र व्यक्तिकी हैसियतसे सम्मानित हुए थे। बम्बईकी म्युनिसिपल कार्पोरेशनके आप करीब २० वर्ष तक अग्रगण्य मेम्बर तथा सन् १९२१, २२ में उसके सफल सभापति रहे थे। इंडिया बैंक आदि और भी कई व्यापारिक संस्थाओं तथा प्रजा-हितमें आपका अच्छा हाथ रहा है। आप कई संस्थाओंके डायरेक्टर तथा प्रेसिडेन्ट रहे हैं। इसके अतिरिक्त सन् १९०५ में आप मिल-आनर्स एसोसिएशनके सभापति, बांबे इम्प्रूवमेण्ट ट्रस्टके मेम्बर और बंबई लेजिस्लेटिव्ह कौंसिलके मेम्बर रहे हैं। भारत सरकार गवर्नर जनरलकी कौंसिलके भी आप मेम्बर रहे हैं। आपको सन् १९०५ में भारत सरकारने नाइट (Knight) की पदवीसे सम्मानित किया। साथ ही सन् १९२२ में आप के० सी० एस० आई भी हो गये। आपको सन् १९०१ में बेरोनेटका खिताब भी मिल गया। कहनेका मतलब यह है कि आपका व्यापारमें तथा गवर्नमेंटमें बहुत अच्छा सम्मान रहा है। आप कई मिलोंके डायरेक्टर तथा मैनेजिंग एजेंट हैं। जिनका परिचय प्रथम दिया जा चुका है।

ताता सन्स लिमिटेड

भारतके आधुनिक औद्योगिक विकासमें, कलाकौशलकी उन्नतिमें तथा मिल व्यवसायके इतिहासमें ताता परिवारका बहुत ऊंचा स्थान है। श्रीयुत जमशेदजी नसरवानजी ताताका नाम भारतके व्यवसायिक इतिहासमें प्रकाशमान नक्षत्रकी तरह चमक रहा है। आपने हिन्दुस्थानकी कला और कारीगरीमें, उद्योग और आर्थिक उन्नतिमें एक नया जीवन फूंक दिया था। आपका जन्म सन् १८३९ में बड़ौदा राज्यके नौसारी नामक ग्राममें हुआ था। आपके पिता एक बहुत साधारण स्थितिके पारसी पुरोहित थे। श्रीयुत जमशेदजीकी शिक्षा बम्बईके एलफिन्स्टन कॉलेजमें

हुई । १९ वर्षकी अवस्थामें आपने कॉलेज छोड़ दिया और उसके कुछ समय पश्चात् सन् १८५६ में आप काम सीखनेके लिये हांगकांग चले गये। यहांपर आपको कई प्रकारके व्यापारिक अनुभव हुए।

सन् १८६१ में अमेरिकाके उत्तरी और दक्षिणी सूबोंमें युद्ध प्रारम्भ हुआ। जिससे अमेरिकासे इंग्लैड रूईका आना बिलकुल बन्द होगया इस वजहसे लङ्काशायरके कपड़े के कारखानोंको बड़ा धक्का पहुंचा। यह देख भारतके व्यवसाय कुशल पारसियोंने इस अवसरसे लाभ उठानेका पूरा २ निश्चय किया। प्रसिद्ध पारसी प्रेमचन्द रायचन्द्र इसके नेता बने। इस समय रूईके व्यापारमें इन लोगोंको करीब ५१ करोड़ रुपया प्राप्त हुआ। श्रीयुत जमशेदजीको भी इस अवसरपर बहुत लाभ हुआ, मगर सन १८६५ में एकाएक युद्धके बन्द हो जानेसे बम्बईके व्यवसायिक जगतमें एक बड़ा-भारी अनिष्टकारी परिवर्त्तन हुआ। पहली जुलाई सन् १८६५ ई० का दिन बम्बईके इतिहासमें अभागयका दिन समझा जाता है। उस दिन बम्बईकी कई प्रतिष्टित फर्म्सका पलड़ा बैठ गया। अमीर गरीब हो गये, गरीब भिखारी बन गये और भिखारी भूखों मरने लगे। इस घटना चक्रमें ताता परिवारको भी बहुत हानि उठानी पड़ी, मगर जमशेदजी ताता बड़े हिम्मत बहादुर और व्यवहार कुशल व्यक्ति थे। आपने इस भयंकर दुर्दिनमें भी अपने साहसको न छोड़ा और इंग्लैंडका कारोबार बन्द करके भारतका व्यवसाय चलाते रहे। इसी बीच थोड़े दिनोंके बाद अबीसीनियांकी लड़ाई शुरू हुई, उस समय जो अंग्रेजी पलटन बम्बईसे भेजी गई थी उसकी रसदका ठेका आपने लिया था उसमें आपको बड़ा मुनाफा हुआ और आपका व्यवसाय फिर सम्हल गया। जिस रूईके रोजगारने बम्बईको धक्का दिया था उसीको आपने फिरसे सम्हाला और बवम्ईमें चिंचपोकली नामक ऑईल मिलके कारखानेको खरीदकर उसे एलेक्झण्ड्रा स्पिनिंग एण्ड विविंग नाम देकर चलाया। आपने सन् १८७१ में ताता एण्डको नामक एक व्यवसायिक कम्पनीकी स्थापनाकी और लंदन, हांगकाग, शंघाई, याकोहामा, कोबी, पेकिंग,पेरिस, न्यूयार्क आदि संसारके कितनेही व्यवसाई केन्द्रोंमें उसकी शाखाएं खोलीं। इसके पश्चात् विलायतके कई नये अनुभवोंके साथ आपने नागपुरमें सेंट्रल इंडियन स्पिनिंग एण्ड विविंग कम्पनी खोलकर १ जनवरी सन् १८७७ के दिन प्रसिद्ध एम्प्रेस मिलकी स्थापना की। इस मिलमें आपको आशातीत सफलता हुई। सन् १९१३ के अन्ततक इस कम्पनीने २९३४५००७) रु० मुनाफेमें बांटे।

सन् १८८७ में आपने लिक्विडेटरसे कुरलाके धर्मसी मिलसको खरीद लिया और उसमें कई नये यंत्र लगाकर इसे चलाया। इसने भी प्रांतकी उन्नतिशील मिलोंमें नाम पाया। ताता महोदयने एक और महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने बारीक सूत कातनेका लिये सबसे पहले मिश्रके कपासकी खेती करानेका इस देशमें उद्योग किया और महीन माल तैयार करवाया।

उपरोक्त घटनाएं ताताके जीवनकी प्रस्तावना मात्र हैं। इस महा पुरुषके जीवन-नाटकके तीन अत्यन्त महत्वपूर्ण और मनोरञ्जक अंक और हैं। (१) लोहेका कारखाना (२) बिजलीघर और (३) रिसर्च इन्स्टीट्यूट। ताता महोदयका बहुत दिनोंसे विचार था कि इस देशमें बड़े स्केलपर लोहेका कारखाना खोला जाय। बहुत तहकीकात और जांच करनेके पश्चात् पता चला कि मयूर-भंजमें बहुत लोहा निकलनेकी संभावना है। इसपर आपने सब जगह पत्र व्यवहार प्रारंभ किया। उत्तरमें मयूर-भंज रियासतने सहायता देनेका वचन दिया, बङ्गाल नागपुर रेलवेने किराया कम करनेका वायदा किया। भारत सरकारने प्रतिवर्ष २० हजार टन माल खरीदनेकी जिम्मेदारी ली। सन् १९०७ ई० में २३१०००००) की पूंजीसे टाटा आयर्न एण्ड स्टील कम्पनी स्थापित हुई, मगर खेद है कि आप अपने जीवनमें इस कम्पनीको न देख सके। क्योंकि इसकी स्थापनाके पूर्व ही सन् १९०३ में आपका देहान्त हो गया था। सन्तोषकी बात है कि आपके पश्चात् आपके सुयोग्य पुत्रोंने इस कार्य्यको बहुत सफलताके साथ चलाया। यह कारखाना सारे भारतवर्षमें एकही है। जापान, स्काटलैण्ड, इटली, फिलीपाइन आदि देश और हिन्दुस्थानकी रेलवे कम्पनियां इस कारखानेका माल बड़ी प्रसन्नतासे खरीदती हैं। यह इस देशके लिए कम गौरवकी बात नहीं है।

ताता महोदयके जीवनका दूसरा महत्वपूर्ण काम उनके द्वारा चलाया हुआ ताता इलेक्ट्रिक वर्क्स है। आपने देखा कि पश्चिमीय घाटमें बहुत अधिक बरसात होती है और बरसातका वह सब पानी बहकर अरब समुद्रके खारे पानीमें मिल जाता है। कोई उसका उपयोग लेनेवाला नहीं है। प्रकृतिकी इस वृहत् शक्तिका उपयोग करनेके लिए मिस्टर ताताने प्रसिद्ध इञ्जीनियर मि० डेविड गासलिंगसे परामर्श किया। कई वर्षोंतक आप इस विषयमें विचार करते रहे। अन्तमें सन् १८९७ में आपने इस कार्य्यको करनेका निश्चय कर लिया। मगर सन् १९०४ में आपका देहान्त हो जानेसे इसे भी आप कार्य्यरूपमें न देख सके। आपके पश्चात् आपके पुत्रोंने सन् १९११ में इस कार-खानेकी इमारतकी नींव डाली और सन् १९१५ में इस बृहत् कार्य्यका आरम्भ कई करोड़की पूंजीसे प्रारम्भ हो गया। पानी इकट्ठा करनेका इतना बड़ा कारोबार शायद दुनियामें दूसरा नहीं है। इस कारखानेमें पीपेसे इतना पानी निकलता है जितना टैम्स नदीमें सात महीनेमें बहता है। इस कार-खानेसे निकलनेवाली बिजलीकी शक्तिके द्वारा बम्बईकी कई मिलें चल रही हैं। इसके सिवाय पीनेके पानीके अतिरिक्त इस कारखानेके पानीसे तीस चालीस हजार एकड़ जमीन सींची जा सकती है। इस कारखानेसे लगभग एक लाख बीस हजार घोड़ोंकी शक्तिकी (Horse power) बिजली पैदा होती है। जिसमेंसे ५०००० घोड़ोंकी पावरसे बम्बई की ३७ मिलें चलती हैं।

ताता महोदयका ध्यान देशके सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर भी बहुत रहा। आपने भारतीय नवयुवकोंको व्यवसायिक रसायन शास्त्रकी उत्तम शिक्षा देने तथा विज्ञानकी सहायतासे भारतके

प्राकृतिक वैभवका उपयोग करने और भारतके व्यवसायकी वृद्धिके मार्गकी बाधाएं दूर करनेके लिये बंगलोर (मैसूर) में एक रिसर्च इन्स्टीट्यूट कायम किया। इस इन्स्टीट्यूटमें ब्रिटिश गवर्नमेंट तथा मैसूरके महाराजने भी बड़ी सहानुभूति तथा सहायता प्रदान की थी।

इस भारतीय औद्योगिक उन्नतिके विधाता कर्मवीर पुरुषका देहावसान सन् १६०४ के मई मासमें हो गया। भारतके कच्चे मालसे व्यवहारकी वस्तुएं बनाने तथा यहांके प्राकृतिक भण्डार से वास्तविक लाभ उठानेका जितना कार्य्य आपने किया उतना किसी दूसरे भारतीयने नहीं किया।

स्व० आर०डी० ताताः—आप यहांकी ताता एण्ड सन्स को० लिमिटेडके भागीदार तथा जीवित कार्य कर्त्ता रहे। आपही प्रथम भारतीय थे जिन्होंने जापानकी मिलोंमें भारतीय रूईका प्रचार करवाया। जमशेदजी ताता द्वारा आरंभ की गयी योजनाओंमें आपने सर दोराबजी ताताको पूर्ण सहायता दी।

सर दोराबजी जमशेदजी ताता नाइटः—आप जमशेदजी ताताके पुत्र थे। आपने अपने पिताजीके जीवन-कालमें ही उनके कार्योंमें भाग लेने लग गये थे। आपने फर्मकी सुव्यवस्था और मिलोंका सञ्चालन बड़ी सफलताके साथ किया। यह आपकी प्रखर बुद्धि और विद्वताका ही परिणाम था कि ताता महोदयकी मृत्युके पश्चात् भी उनके द्वारा आरम्भ किये हुए ताता आयर्न एण्ड स्टील कम्पनी, ताता हाइड्रो-इलेक्ट्रिक पावर सप्लाई कम्पनी तथा रिसर्च इन्स्टिट्यूटके समान भारी २ काम इतनी सफलताके साथ सम्पन्न हुए।

सर रतनजी जमशेदजी ताताः—आपका जन्म १८७१ में हुआ। आप जमशेदजीके द्वितीय पुत्र थे। आप ताता सन्स एण्ड को० के हिस्सेदार थे तथा अपने भ्राता दोराबजी ताताको उनके काममें सहायता प्रदान करते थे। आपका स्वर्गवास १९१८ में हुआ।

इस समय यह कम्पनी कई मिलोंकी एजेण्ट है जिनका परिचय पहले दिया जा चुका है। इसकी शाखाएं लन्दन, पेरिस, न्यूयार्क, रंगून, कलकत्ता, कोबी, शङ्घाई आदि स्थानोंमें हैं।

डी० एम० पेटिट एण्ड सन्स

(१) मानेकजी नसरवानजी—इस कम्पनीके संस्थापक श्रीयुत मानेकजी नसरवानजी पेटिट हैं। आपका नाम बंबईके मिल व्यवसायके जन्मदाताओंमें बहुत अग्रगण्य है। आपका जन्म सन् १८०२ में हुआ। १८ वर्षकी आयुसे ही आपने व्यवसायमें हाथ डाल दिया। सन् १८५८ में आपने ओरियण्टल मिलकी स्थापनाकी और उसे भली प्रकार चलाया। कुलाबालैण्ड कम्पनी और कुलाबा प्रेस कंपनीके भी आप प्रवर्तक थे। आपके पास दो हजार टन वजनका एक जहाज भी था जो भारत और चीनके बीच माल ढोता था।

(२) सर दीनशा मानेकजी पेटिट—(प्रथम बेरोनेट) आप स्व० मानेकजी नसरवानजीके पुत्र थे। आपका जन्म संवत् १८२३ में हुआ था। बंबईके मिल व्यवसायको बढ़ानेमें आपने बहुत अच्छा भाग लिया। आपने सन् १८६० में माणेकजी पेटिट मिलकी स्थापनाकी, इसके पश्चात् दिनशा पेटिट मिल्स, फ्रामजी पेटिट मिल्स, विक्टोरिया मिल्स तथा गार्डन मिलोंकी स्थापना की। आपने बम्बईके प्रसिद्ध कला-कौशलकी शिक्षा देनेवाले विद्यालयकी स्थापनामें बड़ा भाग लिया, और उसकी इमारतके लिए तीन लाख रुपये दान किये। आप बंबई बैंकके डायरेक्टर, बाम्बे चेम्बर आफ कौमर्सके सदस्य, और मिल औनर्स एसोसिएशनके करीब चौदह वर्ष तक प्रेसिडेन्ट रहे। बंबई विश्वविद्यालयके फेलो तथा वाईसरायकी कौन्सिलके भी आप मेंबर बनाए गये। सन् १८८७ में आपको सरकी उपाधि प्राप्त हुई और सन् १८९० में बैरोनेटके सम्माननीय पदसे आप सम्मानित किये गये। आपका स्वर्गवास सन् १९०१ में हुआ।

(३) सर दिनशा मानेकजी (द्वितीय बैरोनेट)—आप प्रथम बैरोनेटके पौत्र हैं। आपके पिता श्री फ्रामजी दिनशा पेटिटका स्वर्गवास आपके पितामहकी उपस्थितिमें हो गया था। इस कारण आप ही आपने पितामहकी मृत्युके पश्चात् द्वितीय बैरोनेट हुए। आप मानेकजी पेटिट तथा फ्रामजी पेटिट मिलके डायरेक्टर हैं।

(४) धूनजी भाई फ्रामजी पेटिट—आप सर दिनशा मानेकजी पेटिट प्रथम बैरोनेटके प्रपौत्र हैं। आप एम्परर एडवर्ड मिलके मैनेजिंग डायरेक्टर और एजेंट हैं।

(५) बोमनजी दिनशा पेटिट-पेटिट समुदायके मिलोंकी एजेंसीसे आपका ३० वर्ष तक सामीप्य सम्बन्ध रहा। आप बांबे बैंक और मिल औनर्स एसोसिएशनके सभापति भी रहे थे। आपने पारसियोंके लिए अस्पताल खोलनेके लिए सात लाख रुपयेका दान दिया था। आपका जन्म १८५६ में और देहान्त १९१५ में हुआ।

(६) जहांगीर बोमनजी पेटिट --आप मानेकजी पेटिट तथा फ्रामजी पेटिट मिल्स कंपनीके एजेंएट तथा डायरेक्टर हैं। आप सन्१९१५-१६ में मिल औनर्स एसोसिएशनके, १९-२० में इण्डियन मर्चेण्ट चेम्बरके, १९१८ में इण्डियन इण्डस्ट्रियल कान्फरेंसके तथा बांबे टैक्स टाइल एण्ड इञ्जीनियरिङ्ग एसोसिएशनके प्रेसिडेण्ट रहे हैं। वर्त्तमानमें आप इण्डियन एकानमिक सोसायटी, टैरिफ रिफार्म लीग तथा लैण्ड लार्ड एसोसिएशनके प्रेसिडेण्ट है। बंबईके मशहूर पत्र इण्डियन डेलीमेलके आप जन्म-दाता हैं।

(७) कावसजी होर्मुसजी पेटिट—आपका जन्म सन् १८६३ में हुआ। सन् १९१८ में आपने बी० ए० पास किया। तत्पश्चात् बोमनजी पेटिट मिलमें आपने कार्य्यारंभ किया। पश्चात् आप विलायत गये और वहां कपड़े बुननेकी कलाका विशेष रूपसे अध्ययन किया।

वहांसे १९२४ में आप वापिस लौट आये, और दिनशा मानेकजी पेटिट एण्ड सन्स कंपनीमें काम करने लगे। आजकल आप स्वयं अपनी देख-रेखमें मिलोंका संचालन कर रहे हैं। पेटिट परिवारमें आप बड़े होनहार व्यक्ति मालूम होते हैं।

डी० एम० पेटिट एण्ड सन्स कंपनी, मानेकजी पेटिट मिल्स, दीनशा पेटिट मिल्स और बंमनजी पेटिट मिलसकी संचालक है। इन मिलोंका परिचय पहले दिया जा चुका है।

नवरोजी नसरवानजी वाडिया एण्ड सन्स

१—नवरोजी नसरवानजी वाड़िया सी० आई० ई०—उपरोक्त फर्मके आप जन्मदाता हैं। आपका जन्म सन् १८४६ में हुआ। आप बम्बईके मिल व्यवसायकी उन्नतिपर लानेवाले सुफल व्यवसायी थे। सन् १८७० में आप बम्बईकी एम्प्रेस मिलसके तथा सन् १८७३ में मानेकजी पेटिट मिल्सके मैनेजर हुए। सन १८७८ में आपने नवरोजी वाड़िया एण्ड सन्स नामक स्वतन्त्र कम्पनीकी स्थापना की। यन्त्रकलामें आप बड़े प्रवीण थे। आपने नेशनल मिल, नाड़ियाद मिल, इ० डी० सासुन मिल, डेविड सासुन मिल, करीमभाई मिल, वाड़िया मिल, आदि कई मिलोंके डिजाइन तैयार करवाये। सन् १८८४ में आपने मानेकजी पेटिट मिलके लिए बहुत बड़ा यन्त्र बनवाया। सन् १८८० में आपने विलियम रोड़के साथ माहिममे एक रंगका कारखाना खोला। आपने टैक्सटाइल और सेंचुरी मिलका भी आयोजन किया था।

(२) सी० एन० बाड़िया—आप नवरोजी नसरवानजीके पुत्र हैं। सेंचुरी मिलके आप एजण्ट तथा बाड़िया एण्ड को० के आप हिस्सेदार हैं। बम्बईकी मिल मालिकोंकी सभाके आप एक जीवित कार्य्यकर्ता हैं। आप सन् १९१८ में इसके प्रमुख रहे थे। इस संस्थाकी ओरसे आप सन १९२४ से २६ तक बम्बई कौंसिलके निर्वाचित सदस्य रहे।

(३) सर नैस बाड़िया के० बी० ई०, सी० आई० ई०, एस० आइ० एम० ई०—आप नवरोजी नसरवानजी बाड़ियाके द्वितीय पुत्र हैं। आप एक अत्यन्त सफल मिल व्यवसायी हैं। सन १९२५ में आप मिल आनर्स एसोसियेशनके प्रोसिडेण्ट रह चुके हैं। आप मजदूरोंके हित और स्वास्थ्यकी ओर अत्यन्त दयापूर्ण दृष्टि रखनेवाले मिल ऑनर हैं। आपने अपने पिताकी स्मृतिमें १६ लाख रुपयेका दान दे मिलोंमें काम करनेवाली स्त्रियोंके लिए एक सूतिकागृह बनवाया है।

यह फर्म बाम्बे डाइंग, स्प्रिंग और टैक्सटाइल इन तीन मिलोंकी संचालक है। इन मिलोंका परिचय ऊपर दिया जा चुका है। इसके अतिरिक्त विलायतके चार मशहूर कारखानोंकी एजेंसियां भी इसके पास है।

सर दिनशा माणेकजी पेटिट (द्वितीय बैरोनेट)

श्रीमान् एन० एन० वाड़िया

ऑ० सर फिरोज सेठना के० टी०

सर शापुरजी बरजोरजी भरौंचा के० टी०

ऑनरेवल सर फ़िरोज सेठना के० टी०

सर फिरोज सेठना एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनका सम्बन्ध कई प्रकारके आन्दोलनोंसे रहा है आपने वहुतसे विभागोंमें बहुत ही बहु मूल्य सेवाएं की हैं। आपका जन्म स० १८६६ ईस्वीमें हुआ था। आप व्यवसायी कुलके एक विख्यात व्यक्ति हैं। आपने अपने जीवनको बीमा कम्पनियों, बैंकों, रूईकी मिलोंकी कम्पनियों, तथा ज्वाइण्ट स्टॉक (joint stock) के कामोंमें लगाया है। आप इण्डियन मर्चैन्ट्स चेम्बरके सभापति, और सेन्ट्रल वैंक आफ इण्डियाके चेयर-मैन थे। आप वम्बईकी पुरानी प्रदर्शिनी, जो हिज मेजेस्टी बादशाहके भारत भ्रमणके समय १९११ में की गई थी, मन्त्री थे। आप बम्बई पोर्टट्रस्ट और सिटी इम्प्रूवमेन्ट ट्रस्टके भी सदस्य थे। इसके अतिरिक्त आपका म्युनिसपेलिटीके शासनसे भी गहरा सम्बन्ध रहा है। आप १९०७ से कौरपोरेशनके सदस्य हैं और १९११ में स्टैन्डिङ्ग कमिटीके चेयरमैन एवं १९१५ में उसके सभापति रह चुके हैं। आप वहुतसे सार्वजनिक चन्दोंके अवैतनिक कोषाध्यक्ष थे। प्रिन्स ऑफ वेल्सके स्वागत एवं ड्यूक ऑफ कनाटके स्वागतके लिये जो चन्दे एकत्र किये गये थे उसके आप ही कोषाध्यक्ष थे। चील्डरन लीगका भी फन्ड आपके ही पास रखा गया था। लड़ाईके समयमें, की गई सेवाओंके सम्बन्धमें विशेष परिचय दिखलानेके लिये कमान्डर-इन चीफने बम्बई प्रेसिडेन्सी से १० व्यक्तियोंका नाम उल्लेख किया था जिनमें बम्बई शहरसे केवल आपका ही नाम था। आप स्कीन कमेटीके भी सदस्य थे। आप भारत सरकारकी ओरसे दक्षिण अफ्रिकामें प्रतिनिधि बनाकर १९२६ में भेजे गए थे। १९१६ में आप बम्बई लेजिस्लेटिव कौन्सिलमें वहांकी सरकार द्वारा निर्वाचित किए गये। इसके पश्चात् १९२१ से ही आप कौन्सिल ऑफ स्टेटके निर्वाचित सदस्य रहे हैं। १९१५ में आपने आनरकी, तथा सन् १९२६ में नाइट हुडकी उपाधि पाई।

सर सापुरजी बरजोरजी भरोचा

सर सापुरज़ी बरजोरजी भरोंचा नाइट जे० पी० उन महानुभावोंमेंसे हैं जो साधारण स्थितिसे निकल कर अपने पैरोंके बल उच्चस्थितिमें प्रवेश करते हैं। जिस समय आपका जन्म हुआ था उस समय आपके पिताकी आर्थिक स्थिति बहुत साधारण थी इस कारण आप ऊंचे दर्जेकी शिक्षा प्राप्त न कर सके और छोटी उम्रमें ही आपको व्यापारके अन्दर प्रवेश करना पड़ा। कुछ समय पश्चात् सूरतके एक प्रसिद्ध जैन गृहस्थ सेठ तलकचन्द मानकचन्दके साथ आपका हिस्सा हो गया और बम्बईमें आपने तलकचन्द एण्ड सापुरजीके नामसे एक फर्म स्थापित की। यह फर्म बम्बईकी एक प्रतिष्ठित फर्म गिनी जाती है और बम्बईकी बैंकों, मिलों तथा रुई और सूतके व्यापारियोंके साथ वृहत रूपमें व्यापारिक सम्बन्ध रखनेके लिये प्रसिद्ध है सन १८६६ से सर सापूरजीने मिल

उद्योगका आरंभ किया और धीरे २ उन्नति करते हुए बहुत सम्पत्ति उपार्जनकी। आप एक बड़े सफल व्यापारी, मिल मालिक, अर्थ शास्त्रज्ञ और शेअर बाजारके प्रधान व्यक्तिके रूपमें प्रसिद्ध हैं। गवर्नमेंटने आपको जे० पी० की पदवी, सन् १६१६ के लिये बम्बईके शरीफका पद तथा सन् १६१२ में सर नाइटका सम्माननीय पद प्रदान किया है।

एच० एम० मेहता एण्डको लिमिटेड

इस कम्पनीकी स्थापना सन् १८६६ में स्वयं श्रीयुत होर्मसजी एम० मेहताने पन्द्रह हजारकी पूंजीसे की थी। अपनी योग्यता और अनुभवसे आप इसका कार्य्य सफलता पूर्वक चलाते रहे। कुछ समयके पश्चात् अहमदाबादके व्यवसायी श्रीयुत एम० जी० पारीखसे आपका परिचय हो गया। आप एच० एम० मेहता एण्ड को० में हिस्सेदारके रूपमें शामिल होगये और अपने अनुभवसे श्रीयुत मेहताको पूर्ण सहयोग देने लगे। व्यवसायके इन कुशल सञ्चालकोंकी देखरेखमें इस फर्मने बहुत उन्नति की। इस फ़र्मके डिवीडेण्ड शेयर होल्डरोंको २५ प्रतिशत वार्षिक मुनाफा मिला। व्यवसायके आरम्भ होनेके कुछ ही समय पीछे इस कम्पनीने बम्बईकी विक्टोरिया कॉटन मिलको १६००० पौण्डमें खरीद लिया। इस मिलमें इतनी सफलता मिली कि इसकी बिल्डिंगमें लगा हुआ मूलधन पहले ही वर्षमें वसूल हो गया। इसके पश्चात् इस कम्पनीने सर कावसजी जहांगीर रेडीमनीसे जुबिली काटन मिलको खरीद लिया।

एम० जी० पारीख-सन् १८६०में आप एच० एम० मेहता कम्पनीमें सम्मिलित हुए। आप बड़े कुशाग्र बुद्धि और व्यापार कुशल थे। आपकी ही कुशाग्र बुद्धिका यह फल है कि आर्योदय स्पिनिंग एण्ड बीविंग कम्पनी स्थापित हुई और राजनगर स्पिनिंग एण्ड बीविंग कम्पनी असफल होते २ बच गई। अमदाबादके व्यवसायियोंमें आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है।

यह कम्पनी जार्ज सैक्शन, लङ्काशायर एण्ड कार्निश, पी० आर० जैक्शन एण्डको०, मेसर्स कौकिंग एण्ड को. मेसर्स बेएटले जेक्शन विलसन एण्ड को०, ए० डी० ब्रादर्स एण्ड को०, जेलिस्टर एण्ड को० इत्यादि कम्पनियोंकी प्रतिनिधि है।

रूईके प्रधान व्यवसायी तथा इम्पोर्टरकी हैसियतसे इस कम्पनीने यूरोप तथा अमेरिकाके संयुक्त बाजारमें अपनी अच्छी प्रतिष्ठा कायम कर रक्खी है।

इस कंपनीका प्रधान आफिस १२३ स्प्लेनेड रोड पर है और इसकी शाखाएं मैन्चेस्टर, ग्लासगो तथा अहमदाबादमें है। इसकी एजन्सियां भारत तथा यूरोपमें कई स्थानोंपर हैं।

यह कंपनी, फिनिथलाइफ इन्स्युरेंस कंपनी लि० (२) जुबिली काटन मिल्स बम्बई (३) राजा गोकुल दास मिल्स लि० जबलपुर (४) ब्रिटिश इण्डिया जनरल इन्स्युरेंस कंपनी लि० तथा (५) टी० आर० ग्रेड कम्पनी लि० की मैनेजिंग एजन्ट है।

अब्दुला भाई जुम्माभाई लालजी कम्पनी

उपरोक्त कम्पनीका प्रधान ऑफिस २४२ सैम्यूएल स्ट्रीट बम्बईमें है। इस कम्पनीकी स्थापना श्रीयुत लालजी सुमरने अरब देशके मकाला नामक नगरमें सन् १८२६ के लगभग की थी। कुछ समयके पश्चात् आप अदनमें व्यवसाय करनेके लिए आमन्त्रित किये गये। वहां जानेपर उस बन्दरके व्यापार पर आपका बहुत अच्छा प्रभाव जम गया। मगर आपकी आकांक्षाएं बहुत महत् और बलवान थीं। इसलिए आप अपने व्यापारका विस्तार करनेके लिये और नवीन क्षेत्रकी खोजमें निकले और बम्बई आकर आपने अपनी कम्पनीकी स्थापना की। यह समय लगभग १८५६ का था। यहांसे भी आगे आपकी दृष्टि सुदूर पूर्वीय देशोंपर गई और आपने अपने पुत्र श्रीयुत अब्दुल्ला भाईको चीन भेजकर वहां भी अपनी शाखा खुलवाई। यहांपर इस कम्पनीका व्यवसाय खूब ही चमका। कुछ समयमें सेठ लालजीकी मृत्यु हो गई। मगर आपके पश्चात् भी आपके सुयोग्य पुत्रोंने इस फर्मके कार्य्यको बखूबी सम्हाला। उस समय इस कम्पनीका कारोबार हाजी लालजी सुमरके नामसे होता था। इस कम्पनीके व्यवसायकी इतनी उन्नति हुई, कि उसने निजके व्यवसायके लिये स्टीमर खड़े करनेका निश्चय किया। फलतः पांच जहाज खरीदे गये। इन जहाजोंसे बम्बई, बरावल, कच्छ, मांडवी, करांची, रत्नागिरि, गोआ और कोचीनके बीच व्यवसाय होने लगा। इस विभागका कार्य संचालन लालजी सुमरके छोटे पुत्र श्रीयुत जुम्माभाई लालजीके हाथमें था। आपका स्वर्गवास सन् १८८६ में हो गया। आपकी मृत्युके बाद कम्पनीके भागीदारोंने पांचों जहाज बेंच डालनेका निश्चय किया। सन् १८६० ई० में दो हिस्सेदारोंने कम्पनीसे अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया। सबसे बड़े पुत्र हाजी भाई लालजीने अलग स्वतन्त्र रूपसे अपना व्यवसाय आरंभ कर दिया; पर श्रीयुत अब्दुल्लाभाईने अपने भतीजे श्रीयुत फाजल भाई जुम्माभाईके साथ संयुक्त रूपसे पुराना व्यवसाय जारी रक्खा और अब्दुल्ला भाई जुम्मा भाई लालजीके नामसे कारबार करने लगे।

इस कम्पनीने सुआकिन तथा अफगान युद्धके समय सैनिकोंको आवश्यक वस्तुएं पहुंचाने का ठेका लिया और बड़ी दक्षतापूर्वक स्टोअरका सामान सप्लाई किया। इससे प्रसन्न होकर इस कम्पनीको दक्षिण अफ्रिकाके युद्ध और सुमाली लैंडकी चढ़ाइयोंके समय फिर स्टोअर सप्लाईका ठेका दिया गया। गत यूरोपीय महासमरके समय भी इस कम्पनीके हाथमें सेनाके स्टोर अच्छा ठेका था। धीरे२ कंपनीने कलकत्ते और चटगांवमें भी अपनी शाखाएं खोलीं। इस फर्मकी अदनमें भी एक शाखा है। इस कंपनीको सरकारने सन् १६०८ में ठेकेपर १ हजार एकड़ नमक तैयार की जानेवाली जमीन दे दी। वहांपर इस कंपनीका एक नमकका कारखाना बना है। प्रारंभमें यहाँ २५ हजार टन नमक तैयार होता था और वर्तमानमें वहां ७० हजार टन प्रति वर्ष नमककी पैदावारी की ओसत आती है।

यहांका नमक कलकत्ता, चटगांव, सिंगापुर और रंगून को भेजा जाता है। इस कंपनीने जहाजोंमें कोयला लादनेके लिये एक गोदी भी बनवाई है।

बम्बई फर्मके व्यवसायकी वृद्धि चुकंदर और जावाकी शक्करके व्यवसायसे हुई। इस कंपनी के वर्तमान मालिक हैं (१) अब्दुला भाई लालजी (२) फजल भाई जुम्मा भाई लालजी (३) इस्माइल भाई ए० लालजी (४) नासर भाई ए० लालजी (५) हुसेन भाई ए० लालजी (६) जाफर भाई ए० लालजी

इस फर्मकी शाखाएं, कलकत्ता, चटगांव, अदन, बरबेरा आदि कई प्रसिद्ध बन्दरोंमें हैं। यह फर्म जनरल मर्चेंट, गवर्नमेंट कंट्राक्टर, मिल एण्ड इंश्युरेन्स एजेंटका काम करती है। इस कंपनीके तारके पते 'Prim,' security 'Veteran' है।

भाटिया और गुजराती मिल ऑनर्स

मेसर्स खटाऊ मकनजी एण्ड कम्पनी

इस प्रतिष्ठित एवं प्रतापी फर्मकी, स्थापना सेठ खटाऊ मकनजीने की। आपका जन्म कच्छ प्रान्तके टेरा नामक स्थानमें हुआ था। आप बाल्यावस्थासे ही बम्बईमें आगये। एवं अपने मामा सेठ द्वारिकादास बसनजीकी प्रसिद्ध फर्म जीवराज बालू कम्पनीमें कार्य करने लगे। अल्पवयमें ही आपने अपनी व्यवसायिक दूरदर्शिताका परिचय दिया, व थोड़े ही समय पश्चात् आप उस कम्पनीके भागीदार बनाये गये। इस कम्पनीने अपना व्यवसाय कुमटामें खोला। कुछ समय बाद बम्बई दूकानका सारा प्रबंध आपके हाथमें आ गया।

अमेरिकाकी सिविल वारके (गृहयुद्ध) छिड़ते ही तरुण वय सेठ खटाऊको अपने व्यवसाय सम्बन्धी विशेष गुणोंके प्रगट करनेका सुअवसर प्राप्त हुआ। अमेरिकाके बंदरोंका बंद होना था, कि इग्लैंडके लंकाशायर नामक केन्द्रमें रूईका भयंकर अकाल पड़ गया। कितने ही कारखाने बंद हो गये। बाकी कारखानोंके चलानेके लिये भारतसे आनेवाली रूईपर निर्भर रहना पड़ा। फल यह हुआ कि भारतमें भी रुईका बाजार बहुत ऊँचा हो गया। जोरकी सट्टेबाजीने बाजारमें अपना अच्छा दबदबा जमा दिया। सेठ खटाऊ मकनजी उन दूरदर्शी नवयुवकोंमेंसे थे, जिन्होंने इस प्रकार सट्टेबाजीकी अनिष्टकारी आमदसे दूर रहनेमें ही नीतिमत्ता समझी। फल यह हुआ कि यहांके व्यापारिक समाजमें आपकी प्रतिष्ठा दिनोंदिन अधिकाधिक होने लगी, एवं अपने समयके आप माननीय व्यवसायी समझे जाने लगे। आपका देहावसान सन १८७६ में हुआ।

आपके देहावसानके पश्चात् व्यवसायका संचालन-भार आपके छोटे भाई सेठ जयराज मकनजीने उठाया।

स्व० सर दीनशा मानिकजी पेटिट जे० पी० बेरोनेट
(मिल उद्योगके पिता)

स्व० सेठ मूलजी जेठाभाई बम्बई
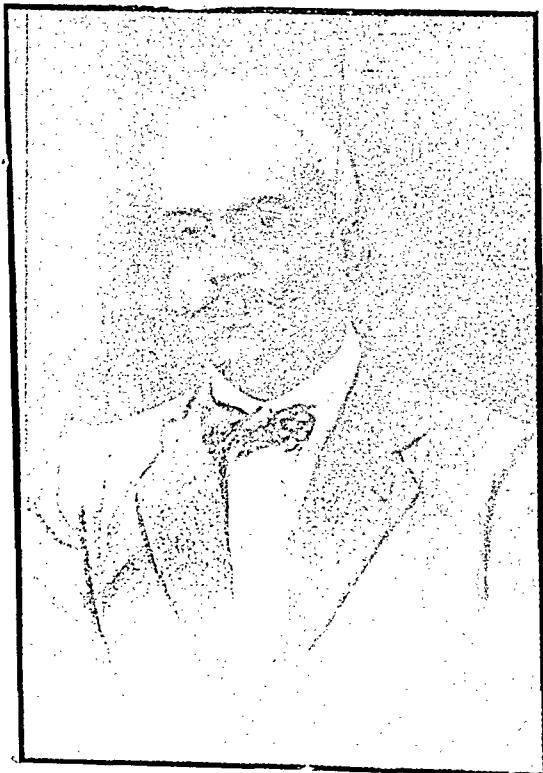
सेठ मथुरादास गोकुलदास जे० पी० बम्बई

सेठ मूलराज खटाऊ मकनजी जे० पी० बम्बई

सेठ गोवर्द्धनदासजी खटाउ—सेठ मकनजीके पुत्र सेठ गोवर्द्धनदासजी खटाऊ, अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करनेके बाद केवल १७ वर्षकी आयुसे ही व्यापारिक कामोंमें भाग लेने लगे। आप अपने काका सेठ जयराज मकनजीकी मौजूदगीमें ही खटाऊ मकनजी स्पीनिङ्ग एण्ड वीविङ्ग मिल्स कम्पनी लिमिटेड और बाम्बे युनाइटेड स्पीनिङ्ग एण्ड वीविङ्ग कम्पनी लिमिटेडका कार्य संचालन करने लगे। उपरोक्त खटाऊ मकनजी मिल, आपके पिता श्री सेठ खटाऊने सन् १८७४ में स्थापित की थी।

सेठ मकनजी खटाऊ मोतीका व्यापार भी करते थे, एतदर्थ सेठ गोवर्द्धनदास खटाऊने भी उस व्यापारकी ओर लक्ष दिया। कुछ दिनोंतक आप इस व्यापारको अपने व्यक्तिगत नामसे चलाते रहे। पश्चात् सन् १९०८ में आपने एक संघ बनाकर उसका नाम मेसर्स खटाऊ मकनजी सन्स एण्ड को० रक्खा, और मोतीके व्यापारको खूब बढ़ाया। इस फर्मपर विक्रीके हेतु विदेश भेजनेके लिये मोती आते थे। आपने अपने एजेंट लंदन और पेरिसमें नियत कर रक्खे थे, जो वहां आपके संकेतानुसार मोतीका व्यापार बड़ी सावधानीसे करते थे। आपने इस व्यापारमें अच्छी ख्याति प्राप्त की। एक समय ऐसा भी था, जब बम्बईका मोतीका व्यापार आपकी मुट्ठीमें था, पर आपने सन् १९१० में इस फर्मको बंद कर दिया, तथा पुनः अपने व्यक्तिगत नामसे यह व्यापार करने लगे।

सेठ गोवर्द्धनदासजी सन् १८९०में स्थानीय म्युनिसिपल कारपोरेशनके सदस्य निर्वाचित हुए थे। आप कितनी ही मिलोंके प्रबंधकर्ता व कितनी ही कम्पनियोंके डायरेक्टर भी थे, आपने अपने छोटे भाई सेठ मूलराज खटाऊके साथ शिक्षा प्रचारार्थ १ लाख रुपयोंका दान दिया था, जिसकी व्याजकी आमदनीसे आज भी गोकुलदास तेजपाल हाईस्कूलमें शिक्षा प्राप्त करनेवाले, भाटिया विद्यार्थियोंके भरण-पोषणका कार्य होता है। आपने थानेमें बाल-राजेश्वरका एक विशाल मन्दिर निर्माण कराया, आपके गुणोंसे प्रसन्न होकर गवर्नमेंटने आपको जे० पी० की पदवीसे सम्मानित किया था।

सन् १९१३ में आपने अपने पुत्र सेठ तुलसीदासजी एवं अपने जामात्र सेठ नरोत्तम मुरारजीके साथ योरोपकी यात्रा की। अपने भोजनादिके प्रबंधके लिये आप यहांसे रसोइया, भट, ब्राह्मण आदि साथ लेते गये थे। लेकिन तौभी वहांसे लौटनेपर भाटिया समाजके कट्टर लोगोंने आपसे सामाजिक संबन्ध विच्छेद कर लिया। मगर इससे कोई प्रभावात्मक कार्य नहीं हुआ, बरन् कई व्यक्तियोंने' 'कच्छी तथा हलाई समस्त भाटिया महाजन" नामक सामाजिक संस्थासे अलग होकर "बंबई भाटिया महाजन" नामक एक नवीन सामाजिक संस्थाको जन्म दिया, उसी दिन इसके पांच सौ सदस्य हो गये। इसके प्रथम सभापति राय बहादुर सेठ वसनजी खेमजी नियुक्त किये गये। आपने

योरोपमें सेठ गोवर्द्धनदास खटाऊने जिस प्रकार शुद्ध धार्मिक आचार-विचारकी रक्षा की थी, उसपर संतोष प्रगट किया।

योरोपमें रहकर सेठ गोवर्द्धनदासजीने अपनी फर्मकी ओरसे लन्दन और पेरिसमें खटाऊ सन्स कम्पनीके नामसे अफिस खोली।

सेठ गोवर्द्धन दासजी ओरियन्टल गवर्नमेंट सेक्योरिटी लाइफ इन्स्यूरेंस कम्पनी लि० के २३ वर्षतक, बम्बई टेलीफोन कम्पनी लि० के २५ वर्ष तक, डायरेक्टर तथा १२॥ वर्ष तक, चेयर मैन रहे। इसके अतिरिक्त खटाऊ मकनजी स्पी० वी० कं० लि०, मोरारजी गोकुलदास मि० कं०लिमिटेड, और प्रेसिडेंसी मिल्स कम्पनी लिमिटेडके भी आप चेयर मेन रहे। जबसे बाम्बे युनाईटेड स्पीनिंग एण्ड वीविंग कम्पनी लिमिटेड, तथा बैंक ऑफ इण्डिया लिमिटेड स्थापित हुई, तबसे आप उनके डायरेक्टर रहे। इस प्रकार अत्यंत प्रतिष्ठा सम्पन्न जीवन व्यतीत करते हुए आपका देहावसान सन् १९१६ के नवम्बर मास में ५१ वर्षकी आयुमें हुआ।

सेठ गोवर्द्धन दासजी अपनी मौजूदगीमें खटाऊ मकनजी मिलका काम देखते थे, एवं बाम्बे युनाइटेड मिलका संचालन सेठ मूलराजजी करते थे। आपके देहावसान होजानेके बाद कुछ समय तक आपके दोनों पुत्र सेठ मूलराजजीके साथ कार्य करते रहे, वर्तमानमें सेठ गोवर्द्धनदासजीके दोनों पुत्र सेठ भीकमदासजी तथा सेठ तुलसी दासजी अपना स्वतंत्र व्यापार अलग २ करते हैं आर इस समय मेसर्स खटाऊ मकनजी एण्ड कम्पनीका कुल काम सेठ मूलराज खटाऊके जिम्मे है। उक्त फर्मके मालिक इस समय आप ही हैं।

सेठ मूलराजजी—खटाऊ मकनजी स्पीनिङ्ग एण्ड वीविङ्ग कम्पनी लिमिटेड भायखलाका कार्य साञ्चलन आपही करते हैं इसके अतिरिक्त आप सी० मेकडानल्ड कम्पनी और कटनी सीमेंट इण्डस्ट्रियल कम्पनीके मैनेजिङ्ग एजेंट हैं। आप प्रेट्रियाटिक इंश्योरेंस फायर एण्ड मरीन कंपनी लिमिटेड तथा पर्ल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेडके चीफ् रिप्रजेंटेटिव्ह (प्रतिनिधि) हैं। युनाइटेड सीमेंट कंपनी ऑफ बाम्बेके आप भागीदार हैं।

सेठ मूलराजजी बड़े व्यवसाय दक्ष पुरुष हैं जब आप जापान, अमेरिका, यूरोप आदि देशोंकी यात्रा करके वापस लौटे, तो वहांसे आते ही १५ दिनके भीतर आपने बाम्बे युनाइटेड मिल, टाटा कम्पनीको १ करोड़ ५१ लाख में बेंच डाली। यह कम्पनी केवल १५ लाखके केपिटलसे स्थापित हुई थी, इसे आपने इतनी उन्नतिपर पहुंचाया, कि १ करोड़ ५१ लाख रुपये शेअर होल्डरोंमें बाँटकर अपने देशी शेअर होल्डरोंको निहाल कर दिया, एवं मिलोंके इतिहासमें यह बात चिरस्मरणीय कर दी।

व्यवसाय कुशलताके साथ २ धार्मिक कार्योंकी ओर भी आपकी अच्छी रुचि है, शिक्षाकी वृद्धि एवं समाज सेवाकी आपके दिलोंमें अच्छी लगन रहती है। (१) आप सर जगदीशचन्द्र बोसके रिसर्च इन्स्टिट्यूटमें १४ हजार रुपये वार्षिक नियमित रूपसे देते हैं। (२) सेठ खटाऊ मकनजी फ्री डिस्पेन्सरी एण्ड भाटिया मेटर्निटी एण्ड नर्सरी होम (प्रसूतिकागृह) बाजार कोटमें आप हर साल २५ हजार रुपया देते हैं। इसकी कुल देख रेख आप ही के हाथोंमें है। इस संस्थाके खर्चके लिये आपने अपनी एक बिल्डिङ्ग भी ट्रस्टके सिपुर्द कर दी है। उक्त संस्था बहुत ही उत्तमरूपसे कार्य कर रही है। (३) आपने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयमें इंजिनियरिंग क्लासका खर्च चलानेके लिये १ लाख रुपयोंका दान पं० मदनमोहन मालवीयजीको दिया है, उक्त रकमका व्याज इस क्लासके खर्चमें दिया जाता है। इसके अतिरिक्त स्थानीय वनिता विश्राम, सर्वेंट ऑफ इण्डिया सोसाइटी बम्बई, स्पेशल सर्विस लीग पूना एवं भारतकी कई गोशालाओं आदि अनेक संस्थाओंको प्रचुर धन दान करके समय-समय पर सहायता किया करते हैं। इसके अलावा अपनी जातिके अनाथ स्त्री तथा पुरुषोंके भोजन प्रबन्धनार्थ प्रतिमास नियमित रूपसे सहायता करते रहते हैं। मतलब यह कि लोकोपकारार्थ आपने कई प्रकारके स्थाई दान किये हैं।

सेठ मूलराजजीके ५ पुत्र हैं जिनके नाम श्री मुरारजी, श्री धरमसीजी, श्री लक्ष्मीदासजी। श्री चन्द्रकान्तजी और श्री ललित कुमारजी हैं। इनमेंसे सेठ मुरारजी, धरमसीजी एवं श्री लक्ष्मी दासजी, भिन्न २ कार्योंमें सेठ साहबके साथ व्यापारमें सहयोग देते हैं

मेसर्स मथुरादास गोकुलदास

सेठ मथुरादास गोकुलदासका जन्म सम्वत् १९२७ में हुआ। आप बम्बईके एक बहुत बड़े एवं प्रतिष्ठित मिल मालिक हैं। आपके पूर्वज कच्छ कोठाराके निवासी थे। सबसे प्रथम आपके प्रपितामह सेठधरमसीजी बम्बई आये थे। आपको धीरे २ अपने उद्योग तथा व्यापारमें सफलतामिलती गई और आगे जाकर आपके पौत्र सेठ गोकुलदासजीने मिल व्यवसायके अन्दर हाथ डाला। उसमें आपको बड़ी सफलता मिली। सेठ मथुरादासजी जे० पी० आपही के पुत्र हैं। आप भी अपने पूर्वजों द्वारा चलाये हुये रुईके व्यवसायमें जुट गये और वही व्यवसाय अब भी कर रहे हैं। आपने अपनी कार्य कुशलता और बुद्धिमानीसे अपने कार्यको इतना बढ़ाया कि इस समय आप बम्बईके एक प्रथम श्रेणीके रुईके व्यापारी तथा मिल एजन्ट माने जाते हैं। आपकी एजंसीके नीचे इस समय कई मिलें चल रही हैं। इसके अतिरिक्त कई दूसरी मिलों तथा कम्पनियोंके भी आप डायरेक्टर है। संक्षिप्तमें यों कह सकते हैं कि बम्बईके प्रथम श्रेणीके मिल मालिकोंमें सेठ मथुरादास भी एक हैं। सेठ मथुरादासके ५ पुत्र हैं। जिनमेंसे सबसे बड़े पुत्र सेठ पुरुषोत्तमदास हैं। आप अपना अभ्यास पूरा करके

अपने पिताको व्यापारमें सहायता प्रदान करते हैं। तथा आप एक प्रसिद्ध चित्रकार भी है। आपके चित्र बीसवीं सदीमें निकला करते हैं।

ऑ० सर मनमोहन दास रामजी के० टी०

बम्बई शहरमें विरलाही कोई ऐसा व्यक्ति निकलेगा जो कि आपसे परिचित न हो। औनरेबल सर मनमोहन दास रामजीका जन्म सन् १८५७ ईस्वीमें बम्बई नगरमें हुआ, प्रारंभिक शिक्षा समाप्तकर व्यापारिक क्षेत्रमें प्रवेश करते ही ईश्वर प्रदत्त दैवी गुणोंने आप की ख्याति व्यवसायिक समाजमें फैला दी। थोड़े ही समयमें आपने अपनेको चतुर मिलमालिक एवं कुशल व्यवसायी सिद्ध किया। फल यह हुआ कि व्यवसायी संस्थाओंने आपको अपनी ओर आमंत्रित किया, एक एक करके आप सभी बड़ी बड़ी व्यापारिक संस्थाओंमें सम्मिलित हुए। आप बम्बईकी बड़ीसे बड़ी व्यापारिक संस्था इण्डियन मर्चेंट चेम्बरके स्थापकोंमें हैं एवं उसके १९०७ से १९१३ तक और १९२४में सभापतिका स्थान सुशोभित कर चुके हैं। इसके अतिरिक्त मिल ओनर्स एसोसियेशन इण्डियन चेम्बर ऑफ कामर्स, पीस गुड्स मर्चेन्ट्स एसोसियेशन, आदि कई व्यापारिक संस्थाओंके आप प्रधान कार्यकर्त्ता, अथवा जीवन स्वरूप हैं। बम्बईके कापड़ बाजारकी मंडलीके आप सन् १८९६से सभापति हैं, इससे आपकी लोक प्रियताका पता लगता है।

आप भारतीय औद्योगिक उत्कर्षके कट्टर पक्षपाती हैं। भारतीय व्यवसाइयों एवं कारीगरोंकी ओरसे उनके हितके विरोधियोंसे आपने अच्छी लड़ाई की है। आपको भारत सरकारने सर नाइटकी पदवीसे सम्मानित किया है। आप कौंसिल आफ स्टेटके करीब १५ वर्षोंसे मेम्बर हैं।

आपका जीवनकाल औद्योगिक दृष्टिसे बड़ा आदर्श रहा है। सरकार द्वारा नियोजित कितनी ही कमेटियोंमें आपने लोकोपकारी योजनाओंका सूत्रपात कराया है। आप प्राचीन विचारोंके कट्टर सनातनधर्मी सज्जन हैं।

आप कैसरे हिन्द हिन्दुस्तान और इण्डियन मेन्युफेक्चरिंग नामक मिलोंके डायरेक्टर और मैनेजिङ्ग एजंटोंके भागीदार हैं।

इस समय आपके तीन पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमसे श्री नारायण दास, श्री कृष्णदास, और श्री भगवानदास है।

मूलजीजेठा मारकीटमें आपकी कपड़ेकी दुकान है।

मेसर्स मुरारजी गोकुलदास एण्ड कम्पनी

इस प्रतिष्ठित फर्मके स्थापक सेठ मुरारजी गोकुलदास सी० आई० ई हैं। आपका जन्म सन् १८३४ में हुआ था। आपके कुटुम्बका आदि निवास स्थान पोरबंदर है। आपके पिताश्रीका नाम सेठ

औ० सर मनमोहनदास रामजी के० टी० बम्बई

औ० (स्व०) सेठ मुरारजी गोकुलदास, सी० आई० ई० बम्बई

सेठ धरमसी मुरारजी गोकुलदास, बम्बई

सेठ नरोत्तम मुरारजी गोकुलदास जे० पी० बम्बई

गोकुलदासजी तथा पितामहका नाम सेठ जीवणजी था। सेठ जीवणजी, रवजी गोविंदजीके नामसे पोरबंदरमें संवत् १८७० में व्यवसाय करते थे। संवत् १८७३के करीब इस खानदानको बहुत व्यापारिक नुकसान लगा। फलतः सेठ गोकुलदासजी संवत् १८७४में बम्बई आये और बादमें आपने अपने पिता सेठ जीवणजी और अपने भाईको भी यहां बुलिया। आप यहां खांडकी दलाली और कपड़ेका व्यवसाय करते थे।

मुरारजी सेठको अपने पिताश्रीके द्वारा धार्मिक एवं व्यवहारिक शिक्षा अच्छी मिली थी। आपने अपने पिताश्रीके साथ तीर्थक्षेत्रों और नगरोंका बहुत पर्यटन किया था इसलिये १२ वर्षकी अल्पवयसे ही आपको व्यवसायिक हिताहितका ज्ञान हो गया था। संवत् १९०४से आप अपने काकाके साथ व्यवसायमें सहयोग देने लगे। उस समय आपको उनकी ओरसे केवल ४५१) प्रति वर्ष मिलता था। थोड़े ही समयमें मुरारजी सेठका कई बड़ी२ अंग्रेजी कम्पनियोंसे परिचय होगया एवं उन कम्पनियोंने आपको अपने यहां आनेके लिये आमंत्रित किया। जवाहरात और कपड़ेके व्यवसायमें आपकी दृष्टि बहुत थी। विलायती कपड़ेकी माल आनेके पूर्व ही आप बहुत बड़ी खरीदी कर लेते थे। आपके इस साहसको देख व्यापारी चकित रहते थे। इस प्रकार संवत् १९१६में वाटसन वोगले एण्ड कम्पनीके साथ आप हिस्सेदारके रूपमें शरीक हुए। १९वीं शताब्दीमें विलायती कपड़ेके व्यवसाइयोंमें मुरारजी सेठका बड़ा नाम था। सन् १८७१से आपने मिलोंके स्थापनका काम करना आरंभ किया। उस समय सोलापुरमें अकाल बहुत पड़ता था इसलिये अकाल पीड़ितोंको मज़दूरी देने और मिल उद्योगकी वृद्धिके लिये सन् १८७४में आपने सोलापुर स्पीनिङ्ग वी० कं० लि० के नामसे ५ लाखकी पुंजीसे सूत कातने और कपड़ा बुननेका कारखाना खोला। प्रारंभके २५ वर्षके इतिहासमें यह मिल सर्व श्रेष्ठ मानी जाती थी। पीछेसे इस मिलकी पूंजी बढ़ाकर ८ लाख कर दी गयी। इस समय मिलमें १११३६० स्पेंड्ल्स और २१७२ लूम्स हैं। यह मिल १६ हजार गांठ माल हर साल तैयार करती है। इसके अतिरिक्त यह फर्म बम्बईके मुरारजी गोकुलदास स्पी० वि० मिलकी भी मैंनेजिंग एजंट है। इस मिलमें ८४ हजार स्पेंडल और १६०० लूम है। इसकी स्थापना १८७२ में सेठ मुरारजी गोकुलदासके हाथोंसे हुई इसकी केपिटल ११ लाख ५० हजारकी है यह मिल प्रति वर्ष १५ हजार गांठ माल तैयार करती है।

इस प्रकार १६ वीं शताब्दीमें भारतीय उद्योग धंधोंकी उन्नतिकी चिंता रखनेवाले इन महानुभावका देहावसान सन् १८८० में ४६ वर्षकी वयमें हुआ। गवर्नमेंटने आपको जे०पी० और सी०आई० ई० की पदवीसे सम्मानित किया था। आपको होमियोपैथी चिकित्सासे बड़ा प्रेम था। आपके बड़े पुत्र सेठ धरमसीजीका देहावसान सन् १९१२ में होगया।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ नरोत्तम मुरारजी जे०पी०(२)ऑनरेबल सेठ रतनसी धरमसी मुरारजी, (३) सेठ त्रिकमदास धरमसी मुरारजी एवं (४) सेठ शांतिकुमार नरोत्तम मुरारजी हैं। सेठ नरोत्तम मुरारजी जे० पी० से बम्बईका शिक्षित समाज भली प्रकार परिचित है। बम्बईके व्यवसायिक भवनके आप स्तंभ-स्वरूप हैं। भारतीय उद्योग धंधोंकी उन्नतिके लिये आपके हृदयमें गहरी लगन है। आपहीके परिश्रमसे सिंधिया स्टीम नेवीगेशन कम्पनी नामक एकमात्र बड़ी भारतीय जहाजी कम्पनी स्थापित हुई है वर्तमानमें उसके मैंनेजिंग एजंट आपही हैं। *भारतीय युवकोंको जहाजी विद्या सिखानेके लिये गवर्नमेंट द्वारा १९२६में खोले गये 'डफरिन' नामक जहाजके लिए आपने अनवरत परिश्रम उठाया है। आप टाटाके हाइड्रो, स्टील, टाटा मिल आदि कारखानोंके डायरेक्टर हैं। १९११ में आपको सरकारने शरीफके पदसे सन्मानित किया है। सन् १९१२ के देहली दरबार (कोरोनेशन दरबार) की कमिटीपर आप सक्रेटरी निर्वाचित हुए थे। आपने १९१३में विलायत यात्रा की, एवं अभी भी सन् १९२८की जिनेवाकी ११ वीं लेवर कान्फ्रेन्समें गवर्नमेंट ऑफ इण्डियाके प्रतिनिधि होकर गये हुए हैं। आप कई मिलस एवं ईन्स्यूरेंस कम्पनीज़के डायरेक्टर हैं। आपने बम्बईका प्रसिद्ध मुरारजी गोकुलदास मारकीट सन् १९०८में बंधवाया है। आपके सुपुत्र सेठ शांतिकुमार नरोत्तम मुरारजी बहुत होनहार नवयुवक हैं। आपको देशी वस्त्रोंसे विशेष प्रेम है।

इस फर्मका व्यवसाइक परिचय इसप्रकार है।

(१) मुरारजी गोकुलदास एण्ड कम्पनी सुदामा हाउस बेलार्ड स्टेट फोर्ट बम्बई

(२) नरोत्तम मुरारजी एण्डको, ८५ग्रेस चर्च स्ट्रीट, लंदन ई सी. ३ एक्सपोर्टर, इंपोर्टर।

(३) आपके दोनों मिलोंकी क्लाथशाप, मुरारजी गोकुलदास मारकीट कालबादेवी पर है इसके अतिरिक्त ऑ०धरमजी, मुरारजीका धरमसी मुरारजी केमिकल वर्क्स भी है।

मेसर्स मूलजी जेठाभाई कम्पनी

इस मशहूर फर्मका आरम्भ सेठ मूलजीजेठाभाईके हाथोंसे सन् १८३४ ईस्वीमें हुआ। प्रारम्भमें इस फर्मने बहुत छोटे रूपमें व्यापार करना आरंभ किया था। उस समय सेठ मूलजी भाई नारियलका तेल, (कोकोनेट ऑइल) नारियलकी रस्सियां (क्वायर रोपस) व मलाबार प्रान्तमें पैदा होने वाली वस्तुओंका व्यापार करते थे। आप बड़े व्यापारिक ढंगके ज्ञाता एवं चतुर पुरुष थे। थोड़े ही समयमें आपका व्यापार खूब चल निकला, जिसकी वजहसे आपको कामपर और आदमी बढ़ाने पड़े। २० वर्षतक इसी प्रकार लगातार आप व्यापार करते रहे। बादमें आपने मूलजीजेठा कम्पनीके नामसे एक कम्पनी स्थापित की। इस फर्मका सब माल कोचीनमें इकट्ठा किया जाता था, एवं डोंगियोंके द्वारा करांची और बम्बई भेजा जाता था।

* इसका परिचय बम्बईके प्रारम्भिक विभागमें दिया जा चुका है।

आपने खोपरेके तेलमें शुद्धता लानेके लिये खास प्रबन्ध किया था, इसका परिणाम यह हुआ कि आपको कई बड़ी २ कम्पनियोंके कंट्राक्ट मिल गये, जिनमें ग्रेट इण्डियन पेनिनशुला रेलवे व बाम्बे पोर्ट ऑफ ट्रस्टके कण्ट्राक्ट मुख्य थे।

सेठ मूलजी भाईके पुत्र सेठ सुन्दरदासजी ज्योंही वयस्क हुए त्योंही अपने पिताजीके साथ व्यापार करने लगे। आपके हाथोंसे कम्पनीकी बहुत अधिक तरक्की हुई, सबसे पहले अमेरिकन सिविल वार छिड़नेके समय आपके मस्तिष्कमें यह बात आई, कि लंकाशायर रुई भेजी जाय, तद्नुसार आपने ६ जहाज रुईके भरकर केप ऑफ गुड होपके रास्तेसे लंकाशायर भेजे। आपके जहाज मर्सेकी खाड़ीमें पहुंचे थे, कि अमेरिकन सिविलवार (गृहयुद्ध) छिड़ गया। फलतः अमेरिकाके बन्दर बन्द होगये और लंकाशायरमें रुईका अकाल पड़गया, ऐसे समयमें आपका माल वहां पहुंचा। उस समय आपको अपने मालका मूल्य सोनेके बराबर मिला। उस समय सारा व्यापारी समाज मिलोंके शेअरोंपर टूट रहा था। पर सेठ सुन्दरदासजी इतने दूरदर्शी थे कि सट्टेबाजीमें न आकर शांत रहे व आपने उस व्यापारमें हाथ नहीं डाला। सेठ सुन्दरदासजीकी मेधा शक्ति बड़ी तीव्र थी। सन् १८७० से आपने ज्वाइण्ट स्टॉक कम्पनीके रूपमें व्यापार करना आरम्भ किया।

सबसे प्रथम आपने ३ लाख ५० हजारकी पूंजीसे दि न्यू ईष्टइण्डिया प्रेस कम्पनी लिमिटेड स्थापितकी। इसके बाद आपने ७ लाख ५० हजारकी पूंजीसे खानदेश स्पीनिंग एण्ड बीविंग कम्पनी स्थापित की। इसके अतिरिक्त १ लाखकी पूंजीसे सिंध एण्ड पंजाब काटन प्रेस कम्पनी लिमिटेड एवं ५ लाख पूंजीसे मद्रास स्पीनिंग बीविंग मिल कम्पनी लिमिटेड और ८ लाखकी पूंजीसे सुन्दरदास स्पीनिंग वीविंग मिल्स कम्पनी स्थापित की। और अन्तमें ६ लाखकी लागतसे न्यू पीस गुड़सबाजार कम्पनी लि० जो मूलजीजेठा मारकीटके नामसे मशहूर है स्थापित की। इन सब कम्पनियोंकी मेनेजिङ्ग एजेण्ट, सेक्रेटरी, और ट्रेजरर मूलजीजेठा कम्पनी थी।

सन् १९०५ में भयंकर आग लग जानेके कारण सुन्दरदास स्पीनिङ्ग वीविङ्ग मिल बरबाद हो गया, और वह कम्पनी लिक्विडेशनमें चली गई। सिंध पंजाब कम्पनी भी ५ लाख रूपये शेअर्स होल्डरोंको अदा करनेके बाद स्वेच्छासे लिक्विडेशनमें चली गई।

खानदेश स्पीनिङ्ग बीविग कम्पनी जलगांव, न्यूईष्टइण्डिया कम्पनी व न्यूपीस गुड़सबाजारके मेनेजिङ्ग एजेंटस अब भी आप हैं।

श्रीयुत सुन्दरदासजीकी अल्पवयमें ही सन् १८७५ के जनवरी मासमें ३६ वर्षकी अवस्थामें खेद जनक मृत्यु हो गई। आपका चिर विछोह सहन करनेके लिये आपके वृद्ध पिता श्री सेठ मूलजी भाई और आपके दो पुत्र श्री धरमसी जी एवं गोवर्द्धनदासजी विद्यमान थे। आपके दोनों पुत्र नाबा-

लिग थे इसलिये व्यापारका सारा भार वृद्ध पिता श्री सेठ मूलजीभाईकोही उठाना पड़ा। उस समय सेठ मूलजीके भतीजे सेठ बल्लभदासजीने कार्य संचालनमें हाथ बढ़ाया और श्रीधरमसीजीके वालिग होकर कार्य भार गृहण करनेतक आपने व्यापारकी देख भालकी। कुछ समय बाद श्री गोवर्द्धनदासजीने भी व्यापारमें सहयोग लेना आरम्भ किया, जिससे व्यापारमें फिर उन्नति होने लगी। इसी बीचमें सन् १८८९ में सेठ मूलजी भाईका स्वर्गवास हो गया। तथा इस घटनाके १० वर्ष बाद सेठ धरमसी भाईका भी स्वर्गवास हो गया। इस समय सारा कारवार सेठ गोवर्द्धनदासजी ही सम्हालते थे। सन् १९०२ में सेठ गोवर्द्धन दासजीका भी देहान्त हो गया। उस समय आप दोनों भाइयोंके एक एक नावालिग पुत्र विद्यमान थे। सन् १९०८ ईस्वीमें आपकी सम्पतिका बँटवारा हो गया। तथा सेठ धरमसीजीके पुत्र कृष्णदास मूलजी जेठाके हिस्सेमें मद्रास स्पीनिङ्ग एण्ड विविंग कम्पनी लि० आई, उसे आपने अपने नामसे चलाया और गोवर्द्धन दासजीके पुत्र सेठ चतुर्भुजजीने मूलजी जेठा कम्पनीका काम अपने हाथमें लिया।

खानदेश स्पीनिंग एण्ड वीविंग कम्पनी लि० जिसकी रजिष्ट्री सन् १८७३ में हुई थी, इसके मिल जलगांवमें सात एकड़ भूमिपर बने हुए हैं। इस मिलमें आरंभमें १३ हजार स्पिंडल्स और २५० लूम्स थे। परन्तु वर्तमानमें २० हजार स्पिंडल्स तथा ४२५ लूम्स हैं। इस कंम्पनीका आरंभ पहिले ५ लाखकी पूंजीसे हुआ था पर पीछेसे बढ़ाकर ७लाख ५० हजारकी कर दी गई, मिलमें लगभग ३५० खांडी रुईकी खपत हैं, इसमेंसे अधिकांश सूतका कपड़ा बुना जाता हैं, तथा शेषांश सूत बाजारमें बिकता हैं मिलमें धुलाई व रंगाईके स्वतंत्र कारखाने हैं।

सन् १८७४ में जिस न्यू इण्डिया प्रेस कंपनी लिमिटेडकी रजिष्ट्रीकी गई थी, इसकेमेनेजिङ्ग एजंट भी आप ही हैं। उस समय इस कंपनीकी ओरसे बरार प्रान्तके मूर्त्तिपूजापुर एवं जलगांवमें कॉटन प्रेस खोले गये थे, परन्तु तबसे व्यापारने अब अधिक उन्नतिकी हैं और आज मूर्त्तिजापुर, नगर देवला, नेरी (पर्व खानदेश) सांकली (पूर्व खानदेश) में इस कंपनीकी जीनिङ्गकी फेक्टरियाँ तथा कारंजा, अकोला, वासिम, वरसी (सोलापुर) और करमला (सोलापुर) में प्रेसिंग फेक्टरियाँ चल रही हैं।

मूलजी जेठा कम्पनीकी ओरसे कपासकी खरीदी तथा वेचवालीका अच्छा व्यापार होता है। कम्पनीने अपना एक एजेंट यूरोपमें भेजकर वहाँके विभिन्न देशोंमें अपना व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित कराया है।

सेठ चतुर्भुजजी, न्यूपीस गुड्स बाजार कम्पनी लि० के मेनेजिङ्ग एजेंट हैं। इस बाजारसे लगभग ३ लाख रुपये वार्षिक किराया वसूल होता है। इसके अतिरिक्त मूलजी जेठा कम्पनीकी बम्बई नगरमें एवं बाहर बहुत अधिक स्थायी सम्पत्ति है।

बाम्बे डाइंग स्पीनिंग एण्ड वींविंग कम्पनी द्वारा तैयार किया गया माल बेंचने के लिये मेसर्स चतुर्भुज एण्ड कम्पनीकी स्थापना की गई है।

मेसर्स लालजी नारायणजी

सेठ लालजी नारायणजी भाटिया जातिके सज्जन हैं। आप अपने समाजमें जिस प्रकार एक अग्रगण्य एवं विचारवान अगुआ समझे जाते हैं,उसी प्रकार बम्बईके व्यापारिक समाजमें भी आप बड़े प्रतिष्ठित एवं व्यवसाय कुशल नेता माने जाते हैं। आपका जन्म सन १८५८में हुआ। आपने अपने व्यवसायी जीवनके प्रभात कालसे ही अपनी अनोखी सूझका परिचय दिया। फल यह हुआ कि थोड़े ही समयमें आप यहांकी कितनीही व्यापारिक संस्थाओंके सदस्य और कितनी ही संस्थाओंके प्रमुख बनाए गए। यहांकी प्रतिष्ठित फर्म मूलजी जेठा कम्पनीके सीनियर मैनेजरके रूपमें आप समस्त फर्मका कार्य संचालन करते हैं। आप एक सफल मिल मालिक एवं सिद्ध हस्त व्यापारी हैं। आप समयकी प्रगतिके अनुसार राजनैतिक क्षेत्रमें भी भाग लेते हैं। यही कारण है कि यहांकी प्रतिष्ठित व्यवसायी संस्थाने आपको अपना प्रतिनिधि बना बम्बई कौंसिलमें भेजा है, आप भारतीय व्यवसाय और उसकी अर्थवृद्धिके लिये सदैव संकोच रहित होकर सरकारसे भिड़ते हैं। आप यहांकी मिल ऑनर्स एसोसिएशन एवं इन्डियन मर्चेंट चेम्बर नामक प्रसिद्ध व्यापारिक संस्थाओंके जीवित कार्यकर्ता एवं सदस्य हैं। आप इन्डियन मर्चेण्ट चेम्बरके सन् १९२१ और सन् १९२६ में प्रसिडेंट भी रहे हैं। आप स्थानीय स्वान मिल, तथा गोल्ड मुहर मिलके डायरेक्टर तथा यहांकी अन्य कितनी ही ज्वाइंट स्टॉक कम्पनियोंके डायरेक्टर हैं, आप लालजी नारायणजी कम्पनीके मालिक हैं। मूलजी जेठा मारकीट चौकमें आपकी कपड़ेकी दुकान है। आपका आफिस ईवर्ट हाऊसमें है।

इनके अतिरिक्त बम्बईमें और भी कई बड़े २ प्रतिष्ठित मिल मालिक हैं। पर चेष्टा करनेपर भी हम उनका परिचय न प्राप्त कर सके इसका हमें खेद है। वैसे तो कई मिल मालिकों और एजेंटोंकी नामावली हम पीछे मिलोंके परिचयमें दे चुके हैं।

तैयार हो रहा है !

शीघ्रही प्रकाशित होगा !!

भारतीय व्यापारियोंका परिचय

[दूसरा भाग]

यू० पी० और पञ्जाबके प्रतिष्ठित व्यापारियोंका चमकता हुआ एलबम, १००० तस्वीरों का अपूर्व बायस्कोप, व्यापार साहित्यकी अद्भुत सामग्री, संसारकी तमाम भाषाओंमें एकही ग्रन्थ, भावी सन्तानोंके लिये अद्भुत स्मृति उपहार ।

बहुत ही शीघ्रः—

कृपा करके यू० पी० और पञ्जाबके व्यापारी अपने फोटो, अपना जीवन चरित्र, अपना व्यापारिक परिचय और अपनी दुकानों तथा सार्वजनिक कार्य्योंका विवरण भेजनेकी कृपा करें ।

कामर्शियल बुक पब्लिशिंग हाउस भानपुरा (इन्दौर)

बैंकर्स

BANKERS.

बैंकिंग-बिजीनेस

(सराफी व्यापार)

पारस्परिक व्यापारिक सुविधाके लिए, बाजारके नियमके अनुसार व्याज लेकर, साख (credit) पर, अथवा जमीन, जेवर, मकान, मिल्कीयत, प्रामेसरीनोट, इत्यादि पर रुपया देने लेनेका जो व्यवसाय होता है, अथवा एक स्थानसे दूसरे स्थानपर रुपया भिजवाने या मंगवानेके लिए, हुण्डी चिट्ठी या एक्सचेंज बिलका जो व्यवहार चलता है उसे अंग्रेजीमें बैंकिंग बिजीनेस और हिन्दी भाषामें सराफी-व्यापार कहते हैं।

किसी भी व्यापार प्रधान देशके लिये, बैंकिंगका बिजीनेस उतना ही आवश्यक है जितना किसी युद्ध प्रधान देशके लिए बारूद, गोला या शस्त्रास्त्रकी सामग्री आवश्यक है। सच बात तो यह है कि बिना बैंकिङ्ग-व्यवसायके विकसित हुए किसी देश अथवा शहरकी व्यापारिक उन्नति हो ही नहीं सकती। जो देश प्राचीन कालमें व्यवसाय प्रधान रहे हैं, उन देशोंमें बैंकिंग बिजीनेसका अस्तित्व भी अवश्य पाया जाता है। हमारे देशमें भी पूर्वकालमें सराफी व्यवसाय काफी तादादमें प्रचलित था। उस समय चीन, जावा, सुमात्रा, ईरान, इत्यादि देशोंसे यहांके बने हुए मालका एक्सपोर्ट (निर्यात) और वहांके मालका इम्पोर्ट (आयात) होता था। इस आने जाने वाले मालकी भुगतावन लिए इन देशोंके बीचमें हुण्डीका व्यवहार प्रचलित था। कौटिल्यके अर्थशास्त्र, शुक्रनीति तथा और भी प्राचीन अर्थशास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थोंमें इस व्यवसायके सम्बन्धका विवरण पाया जाता है।

फिर भी यह निश्चित है कि वर्तमान युगमें इस व्यापारका रूप जितना प्रामाणिक और विकसित होगया है उतना पूर्वकालमें नहीं था। इस युगके बैंकिंग व्यवसायका उन्नत स्वरूप आधुनिक बैंकोंमें दिखलाई देता है।

बैंक—एक या एकसे अधिक व्यक्तियोंकी सम्मिलित पूंजीसे स्थापितकी हुई जो संस्था एक निश्चित स्थानपर अपना आफिस खोलकर उचित व्याजपर लोगोंके सिक्के जमा रखती है और उन्हीं सिक्कोंको कुछ अधिक व्याज लेकर दूसरे व्यापारियोंको उनकी साखपर, या उनकी किसी स्थावर, जङ्गम सम्पतिपर कर्ज देती हैं ऐसी संस्थाको बैंक कहते हैं इस प्रकारकी बैंक देशी तथा परदेशी हुण्डियोंको भी अपनी उचित फीस लेकर खरीदती तथा बेचती है। और बैंकोंके शेअर, गवर्नमेन्ट

पेपर, डीवीडेण्ट वारण्ट, इत्यदिको बटाकर उनको अपने ग्राहकोंके खातेमें जमा करती हैं और यदि उन्हें आवश्यकता हो तो उनके लिए खरीद भी देती हैं। इस प्रकार की बैंकें संसारमें स्थान २पर खुल गई हैं। भारतवर्षमें भी कई बैंकें काम करती हैं, जिनका परिचय आगे दिया जायगा।

इन बैंकोंकी वजहसे, अथवा इस प्रकारके बैंकिंग व्यवसायसे व्यापार करनेवालोंको अत्यन्त सुविधाएं होती हैं: उनके मार्गकी बहुतसी कठिनाइयां नष्ट हो जाती हैं। इस व्यवसायके द्वारा उनका बहुतसा खर्च बच जाता है। उदाहरणार्थ एक व्यापारी यहांपर खपनेवाला माल बाहरसे मंगाता है, और दूसरा व्यापारी अपना माल यहांसे बाहरी देशोंको भेजता है। यदि बैंकिङ्ग व्यवसाय न हो तो पहले व्यापारीको भी मंगाये हुए मालका रुपया मनीआर्डरसे वहांकी कम्पनीको भेजना पड़ता, और दूसरे व्यापारीको भी अपने भेजे हुए मालका रुपया वहांसे मंगवाना पड़ता। इस प्रकार करोड़ों रुपयोंके एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट होनेवाले सामान पर केवल मनीआर्डरका खर्च ही कितना लगता, यह बतलानेकी आवश्यकता नहीं। मगर बैंकिग व्यवसायके प्रचलित होनेपर यह सब कठिनाई और खर्च एकदम बचगया है। आप अपना माल जापान, अमेरिका, इंग्लैण्ड कहीं भी भेज दीजिए और जिस व्यक्तिको माल भेजा है उसपर एक हुण्डी लिखकर किसी दलालको दे दीजिये। बस वह दलाल जाकर आपकी हुण्डी उस व्यापारीको बेच देगा जिसके यहां उस देशसे मालका इम्पोर्ट होता है वह व्यापारी आपकी हुण्डीके रुपये आपको चुकाकर, उसे अपने आढतियेके पास भेजदेगा, और वह आढतिया आपके आढतियेसे अपने रुपये मंगवा लेगा। हिसाब साफ हुआ, न आपको तकलीफ हुई न आपके आढतियेको। हां, इतनी बात अवश्य है कि यदि बाजारमें हुण्डीकी आमदसे खप अधिक हुई तब तो आपको बाजार भावसे कुछ पैसे अधिक मिल जायंगे, और यदि खपतसे आमद अधिक हुई तो कुछ पैसे बट्टेके कट जाएंगे। बैंक भी इस प्रकारकी हुण्डियां उनकी फीस लेकर लेते बेचते रहते हैं जिससे इस कार्य्यमें और भी सुविधा हो जाती है।

बिल आफ एक्सचेंज परदेशी हुण्डी—

जिन देशोंमें एक ही प्रकारके सिक्के प्रचलित रहते हैं उन देशोंके बीच जिन पुर्जोंके द्वारा देन लेनका व्यवहार होता है उन्हें परदेशी हुण्डी कहते हैं। मगर जिन देशोंमें भिन्न २ प्रकारके सिक्के प्रचलित हैं उन देशोंके बीच लिखे जानेवाले इस प्रकारके कागजोंको बिल आफ एक्सचेंज कहते हैं। इन बिलोंमें और परदेशी हुण्डियोंमें कुछ अन्तर होता है। ये बिल बैंकोंके द्वारा ही आते जाते हैं। बाहरी देशोंके जो व्यापारी यहांपर माल भेजते हैं वे मालको रवानाकर यहांके व्यापारी (माल मंगानेवाले) के नामकी हुण्डी या बिल, उस मालकी रसीदके साथ यहांके बैंक पर भेज देते हैं। यह बैंक बिल आते ही उसपर यहांके व्यापारीकी सही ले लेता है। इस सहीके होजानेपर वह व्यापारी उस बिलमें लिखी हुई निश्चित अवधिके भीतर उस बिलका रुपया भरदेनेके लिए बाध्य हो जाता है।

और वह रसीद उसे देदी जाती है। इस रसीदको दिखाकर वह जहाजपरसे अपना माल ले आता है। इस बिलपर सही होजानेके पश्चात्, जबतक उसकी मुद्दत पूरी नहीं होती, तब तक वह नोटोंकी तरह भिन्न २ व्यापारियोंके पास आता जाता रहता है और मुद्दत पूरी होनेपर वह उस व्यापारीके पास आ जाता है जिसे रुपया देकर वह व्यापारी लेलेता है।

इस प्रकार दुनियाके सब देशोंके बीच बिल आफ एक्सचेंजके द्वारा लेनदेनका काम चलता है लेकिन इस प्रकारके व्यवहारमें बड़ी सावधानी रखनेकी आवश्यकता पड़ती है साधारणतया ऐसा होता है कि जिस देशसे माल आता है उसी देशसे सीधा बिल आफ एक्सचेञ्जका व्यवहार करनेमें सुभीता होती है। मगर कभी २ ऐसा होता है कि सीधे उस देशके सिक्केके भावमें रुपया भरनेसे भाव अधिक पड़ता है, मगर यदि वही रुपया दूसरे देशके सिक्केके द्वारा भरा जाय तो उसमें भाव सस्ता पड़ता है। उदाहरणार्थ हमें फ्रान्स देशके फ्रांक नामक सिक्केमें मूल्य चुकाना है। अब कल्पना कीजिए कि हमारे देशके एक रुपयेके बदलेमें ६ फ्राङ्क मिलते हैं, मगर इंग्लेण्डके एक पौण्डके बदलेमें ८६ फ्राङ्क मिलते हैं, इधर हमारे देशमें एक पौण्ड तेरह रुपयेमें मिलता है। यदि हम रुपयोंके द्वारा वहांका बिल चुकावेंग तो तेरह रुपयोंके बदले केवल ७८ फ्राङ्कका बिल चुकेगा, मगर उन्हीं तेरह रुपयोंसे एक पाउण्ड लेकर उसके द्वारा हम वह बिल चुकाएंगे तो ८६ फ्राङ्कका बिल चुक जायगा। इसी प्रकारका अन्तर और २ देशोंके सिक्कोंमें भी कभी २ रहा करता है। जो व्यापारी सब देशोंके सिक्कोंपर दृष्टि रखकर इस प्रकारके बिल चुकाता है उसे कभी २ बड़ा लाभ हो जाता है। इस प्रकारके एक्सचेञ्ज सम्बन्धी कार्य्योंमें इस प्रकारका कार्य्य करनेवाले बैंकों तथा दलालोंके द्वारा हुण्डीका कार्य्य करवाना विशेष अच्छा है।

परदेशी हुण्डीके भेद

इस प्रकारकी परदेशी हुण्डियां तीन प्रकारकी होती हैं। (१) डी० टी० (तुरन्त सिकरनेवाली) (२) टी० टी० (तारके द्वारा भेजी जानेवाली (३) साइबिल (मुद्दती) यह हुण्डी लिखी हु मुद्दत और प्रेसके दिनोंकी मियाद पूरी हुए पश्चात् सिकरती है। (४) बिल आफ कलेक्शन, वह कह लाता है जो मालके डाक्यूमेण्टके साथ उसकी कीमतका बिल बनाकर दिया जाता है। इस प्रकारके बिलका रुपया वहांसे वसूल हो जानेपर मिलता है।

देशी हुण्डी

देशी हुण्डी चार प्रकारकी होती है। (१) शाहजोग हुण्डी (२) नामजोग हुण्डी (३) धणीजोग हुण्डी और (४) फरमानकी हुण्डी। इन सब प्रकारकी हुण्डियोंका परिचय प्रायः सब व्यापारी जानते हैं अतः इनका यहांपर विस्तारपूर्वक वर्णन करना व्यर्थ है। फिर भी जो सज्जन इस विषयका विशेष ज्ञान प्राप्त करना चाहें उन्हें मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स, और बम्बई सराफ़ एसोसियेशनकी नियमावली मंगाकर पढ़ना चाहिए।

बैंकोंका इतिहास

बम्बईके इतिहासमें सबसे प्रथम बैंकका यदि परिचय कभी मिलता है तो वह सन् १७२० ई० में ही। इसके पूर्व बैंक नामकी कोई वस्तु भी न थी और न उसके स्वरूपकी किसी प्रकारकी कल्पना ही की गयी थी। सन् १७२० ई० के दिसम्बर मासमें ईस्ट इण्डिया कम्पनी और नगरकी साधारण प्रजाके लाभकी दृष्टिसे एक बैंककी स्थापना की गयी। ईस्ट इण्डिया कंपनीने अपनी रोकड़से १ लाखकी रक़म निकाल कर बैंकको प्रारम्भिक पूंजीके रूपमें दी और इस प्रकार 'बैंक आफ बाम्बे" नामके प्रथम बैंकका जन्म हुआ। इस बैंककी सुव्यवस्थाका प्रबन्ध भार बम्बई सरकारके हाथमें दिया गया। बैंकमें १००) रु० की रक़म जमा करने वालेको बैंक एक दुगानी दैनिक व्याज देती थी। यदि बैंक किसीको ऋण देती तो वह ९ प्रतिशत व्याजके अतिरिक्त एक प्रति शत व्याज बैंकके सुप्रबन्ध संचालनके लिये लेती। इस प्रकार १० प्रतिशत व्याज पर बैंक रुपये कर्ज देती थी। लगभग २४ वर्ष तक इसी प्रकार बराबर काम होता गया परन्तु बैंकने कोई उल्लेखनीय उन्नति नहीं की। फल यह हुआ कि इस प्रयोगसे लोग उदासीन हो चले और प्रबन्धमें भी शिथिलता आ गयी। सन् १७४४ ई० के लगभग १००३१३) रु० बैंक की रक़ममेंसे उधार खातेमें निकल चुके थे। इस रक़ममेंसे केवल ४२९००) रु० की रकम ही वसूल हो पायी। सरकारने लाख चेष्टा की परन्तु उदासीनता दूर न हुई और अन्तमें सन् १७९८ में इस बैंकने अपनी जीवन लीला समाप्त की। इस प्रकार प्रथम बैंककी समाप्ति हुई।

यहांके सराफ—इस १८ वीं शताब्दीमें बैंकने फिर जोर मारा, परन्तु उसे सफलता प्राप्त न हुई। १९ वीं शताब्दीमें इतिहाससे पता चलता है कि इस नगरमें लगभग १०० हिन्दू महाजन सराफी का व्यवसाय खूब जोरोंसे करते थे। १८ वीं शताब्दीमें भी यहाँके हिन्दू महाजनोंका व्यवसाय अच्छी उन्नत अवस्थामें था। जिस समय 'बैंक आफ बाम्बे' नामक बैंक की स्थापना हुई थी उस समय भी ये लोग बाजारमें अच्छी प्रतिष्ठासे देखे जाते थे।* इनके पास पर्याप्त पूंजी थी अतः इनकी हुण्डीकी प्रतिष्ठा समस्त भारतमें थी। सन् १८०२ ई० में सेठ पेस्तमजी बोमनजीने सरकारको आर्थिक सहायता दी। इसी प्रकार स्थानीयबाजार गेट स्ट्रीटके निवासी आत्माराम भूखनने भी सरकारको मुक्तहस्तसे आर्थिक सहायता प्रदान की। उस समय इस पीढ़ीकी ख्याति काका पारख की पीढ़ीके नामसे थी।

सेविङ्ग बैंक - इस परिस्थितिमें सरकार चुप बैठ न सकती थी। सन् १८३५ ई० में उसने एक

* इस समयके महाजनोंमें वंशीलाल अबीरचन्द का नाम सबसे अधिक उल्लेखनीय है। यों तो कितने ही महाजनोंने समय समयपर सरकारको आर्थिक सहायता दी है परन्तु इन्होंने भारतीय विप्लवके समय भी बंगाल सरकार को पर्याप्त आर्थिक सहायता दी थी।

सेविंग बैंककी भी स्थापना की। ज्यों २ यह द्वीप पुंज उन्नति करता गया त्यों २ यहांका व्यवसाय वाणिज्य भी उन्नति कर अपना वृद्धि और पुष्टि करता गया। इस उन्नति शील युगमें पूंजीकी व्यवस्थाकी और सभीकी दृष्टि गयी और बैंककी आवश्यकता सभीको समान रूपसे खटकने लगी। फल यह हुआ कि सन् १८४० ई० में पुनः बैंककी स्थापना हुई। इसका नाम भी बैंक आफ बाम्बे रक्खा गया। इसने ५२, २५ , ०००) रु० की पूंजी से कार्यारम्भ किया। इस प्रकार सन् १८४० ई० से पुनः इस ओर कार्य होना आरम्भ हुआ और बढ़ते २ इतना बढ़ा कि आज यहां बैंकोंकी भरमार हो पड़ी है। इस बैंकने उन्नतिकी ओर दृढ़तासे पैर उठाये और कुछ ही समयमें अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली। इसकी देखा देखी सन् १८४४ ई० में ओरियन्टल बैंकिग कार्पोरेशनने भी अपनी एक शाखा यहां खोली। सन् १८६० ई० तक कमर्शियल बैंक, चार्टर्ड बैंक, सेन्ट्रल बैंक आफ वेस्टर्न इण्डिया, चार्टर्ड मर्केन्टाइल, और आगरा एण्ड यूनाइटेड सरविस नामक कितनी ही बैंकें खुल गयीं। इसी बीच अमेरिकन सिविल वार नामक घरेलू युद्ध अमेरिकामें छिड़ गया और अमेरिकन रुईका अकाल पड़ गया। अतः लंकाशायर (इंग्लैण्ड) के कारखाने भारतकी रुईके आश्रित हो गये। जिससे भारतका व्यवसाय चमक उठा इस कालमें यहांपर सब मिलाकर लगभग ३१ बैंके बम्बईमें स्थापित हो चुकी थीं।

इस प्रकार बैंकोंका यहां जन्म हुआ और वाल्यकाल व्यतीत कर बैंकोंने युवावस्थामें पदार्पण किया। इस समय निम्न लिखित बैंकें यहांपर अधिक प्रतिष्ठित मानी जाती हैं। अतः उनका संक्षिप्त परिचय हम यहां दे रहे हैं :—

बैङ्कर्स

इलाहाबाद बैङ्क

यह बैङ्क सन् १८६५ ईस्वीमें स्थापित हुआ था। इसकी इमारत बम्बईमें इलाहाबाद बैङ्क बिल्डिङ्गके नामसे विख्यात है। यह एपैलो स्ट्रीटमें है। आजकल यह बैङ्क पी० एण्ड० ओ० बैङ्किङ्ग कारपोरेशन लिमिटेडमें सम्मिलित कर दिया गया है। इसका निश्चित मूलधन ४०,००,००० है। वसूल मूलधन ३५,५०,००० और रिजर्व फण्ड ४४,५०,००० है। इसका हेड आफिस कलकत्तामें है। इसकी मुख्य २ शाखायें —बम्बई, इलाहाबाद, कानपुर, दिल्ली, लखनऊ, लाहोर, रावलपिन्डी, नागपुर और पटना में है।

ईम्पारियल बैङ्क औफ इण्डिया

बङ्गाल बैङ्क, मद्रास बैङ्क, और बम्बई बैङ्क, इन तीनों बैङ्कोंके मिश्रणसे सन् १९२१ के जनवरी मासमें इस बैङ्कका जन्म हुआ। इसका मुख्य उद्देश्य सोनेकी अमानतको सुरक्षित रखना है। इस बैङ्ककी लगभग १२५ शाखाएं सारे भारतमें भारतीय गवर्नमेन्टसे किये हुए करारके अनुसार, भिन्न २ शहरों, बन्दरों, और व्यापारिक केन्द्रोंमें स्थापित की गई हैं। जिनमेंसे मुख्य २ के नाम इस प्रकार हैं—बम्बई, इलाहाबाद, कलकत्ता, मद्रास, आगरा, धनबाद, अजमेर, इन्दौर, उज्जैन, खण्डवा, जैपुर, अमृतसर, बङ्गलोर, बनारस, कालिकट, ढाका, दार्जिलिङ्ग, ग्वालियर, जमशेदपुर, जोधपुर, जबलपुर, लाहोर, लखनऊ, लुधियाना, मदुरा, माण्डले, मछलीपट्टम, नागपुर, नासिक, रङ्गून, रावलपिण्डि, शिलाङ्ग, शिमला, सूरत, श्रीनगर इत्यादि।

यह बैङ्क सरकारी खजानेको भी सम्हालता है और आवश्यकताके समय सरकारको उचित व्याजपर रुपया भी देता है।

इसका निश्चित मूलधन,	११,२५००,०००
वसूल मूलधन, ३० जून १९२७ तक	५,६२,५०,०००
रिजर्व फण्ड,	५,०७,००,०००
शेअर होल्डरोंपर	५,६२,५०,०००

इसका लन्दन आफिस— २२ ओल्ड ब्रांड स्ट्रीट इ० सी० २ पर है।

इम्पीरियल बैङ्क ऑफ परसिया

यह १८८९ में राजकीय चार्टर द्वारा स्थापित हुआ था। इसका वसूल मूलधन, ६५,००००० पौण्ड है। रिजर्व फण्ड ५२०,०००, पौण्ड है। मालिकोंके पास १००,००० पौण्ड हैं। इसकी मशहूर शाखाएं परसिया, सुलताना बाद, इराक, मेसोपोटामिया, बगदाद तथा बम्बईमें हैं।

इंडिया बैङ्क लिमिटेड

बैङ्क ऑफ इण्डियाका जन्म सन् १६०६ ईस्वीमें हुआ था। इसकी स्थापना सर सैसून डेवीड बैरोनेटके उद्योगसे हुई थी। आपने इसकी सफलताके लिये आजीवन प्रयत्न किया। यहां तक कि अपने जीवनके अन्तिम दिनोंमें भी इन्होंने इसके लिये कठिनसे कठिन परिश्रम किया। इसका पूर्व सञ्चालक मण्डल सभी जातियोंके प्रतिनिधियोंसे बना हुआ था। इसमें सर सैसून डेविड, सर फ्रेडरिक क्रौफ्ट, सर कावसजी जहांगीर, मि० आर० डी० टाटा, मि० गोवर्धन दास खटाऊ, सर लालूभाई सामलदास सी० आई० ई०, मि० खेतसी खेसी, से० रामनारायन हरनन्द राय रुइया, मि० जे० एच० दानी, मि० नूरदीन और सर इब्राहीम रहीम तुल्ला सी० आई०ई० थे इनके अतिरिक्त मि० ए० पी० स्ट्रीङ्गफेलो इसके मैनेजर बनाए गए। इन्होंने बैङ्ककी सफलताके लिये बहुत ही उद्योग किया। इसकी रजिस्ट्री १८८२ के कम्पनी एक्ट ६ के अनुसार हुई थी।

इसका वसूल मूलधन २००,००,०००,
रिजर्व फन्ड ७६,००,०००

इसके तारका पता "स्ट्रीजेन्ट" बम्बई है फो० न० २००१०, पो० बॉ० २३८ है।
इसकी मुख्य शाखाएँ— बम्बई कलकत्ता अहमदाबाद में।
इसका बम्बईका पता—ओरियेन्टल बिल्डिंग् स्प्रेनेड रोड है,

इस्टर्न बैंक लिमिटेड

इसका सम्बन्ध इङ्गलैन्डसे है। इसका निश्चित मूलधन २,०००००० पौण्ड है जो २,००००० हिस्सोंमें विभक्त किया गया है। वसूल धन १,०००,००० पौ० है और रिजर्व फन्ड ४,००,००० पौण्ड है। इसका हेड आफिस लन्डनमें हैं और इसका पता क्रासवी स्कायर बीशोप्सगेट लन्दन ई० सी० है। इसकी मशहूर शाखाएं—आमरा, बगदाद, कलकत्ता, बम्बई, करांची, कोलम्बो, मद्रास और बसरतमें है। इसका बम्बईका पता चर्चगेट ह्रार्नबीरोड है, तारका पता "इस्टराइट" फो० नं० २००५३ और पो० बो० नं० २१६ है।

इन्डस्ट्रियल बैंङ्क ऑफ वेस्टर्न इन्डिया लिमिटेड

इसका बम्बईका पता रेडीमनी मैनशन चर्चगेट स्ट्रीट फोर्ट है।

करांची बैङ्क लिमिटेड

बम्बईमें इसका ब्रैंच ऑफिस है। इसका पता इक्जामिनर प्रेस विल्डिंग मेडोस्ट्रीट फोर्ट है। इसकी शाखाएँ हैदराबाद, और लरकाममें हैं।

'कौम्पेटोइर नेशनल डिसकाऊंटेड पेरिस

यह बैंक फ्रांसवालोंका है और इसका सम्बन्ध भी वहींसे है। इसका मूलधन २५,०००० ०००, फ्रैंक हैं जो कुल अदा हो चुका है। इसका हेड आँफिस पेरिसमें है और उसका पता १४ रूबर्गरी पेरिस है। बम्बईमें इसका दफ्तर २४ ब्रूसस्ट्रीटमें है। फोन नं० ४५ है। इसकी शाखाएं लन्दन मैन्चेस्टर लीवरपूल, सीडनी (आस्ट्रेलिया) बंबई और एलेकजैंड्रिया है।

ग्रीनले एण्ड कम्पनी लि०

इस कंपनीका भी सम्बन्ध इङ्गलैण्डसे है। अब यह नेशनल प्रॉविन्शियल बैंक लिमिटेडमें सम्मिलित कर ली गयी है। इसका पता निकलरोड वेलार्ड स्ट्रीट है। इसका हेड आफिस लन्दनमें ५४ पारलियामेन्ट एस० डब्ल्यू, आई० है। इसकी शाखाएं बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, लाहौर, पेशावरमें है। तारका पता ग्रीन्डले। फो० न० २२२१२ और पो० बा० नं० ६३ है।

चार्टर्ड बैंङ्क ऑफ इण्डिया, आस्ट्रेलिया एण्ड चीन

इसका दफ्तर बंबईमें एसप्लेनेड रोडमें है और इसका हेड आफिस ३८ विशोप्स गेट लन्दन ई० सी० २ है। इसका जन्म १८५३ में हुआ था। ६००००० हिस्सेदारोंके हिस्से इस बैंकमें हैं। हर एक हिस्सा५ पौ०का था इस प्रकार इस बैङ्कका कुल धन ३,००००० पौ० है, इसका रिजर्व फण्ड ४,००००० पौ० है। इसकी मशहूर शाखाएं बम्बई, अमृतसर, कलकत्ता, कानपुर, दिल्ली, मद्रास, हांगकांग, न्यूयार्क, पेकिंग, पेशावर, रंगून, सिंगापुर, टोकियो, कैण्टन, और शंघाई हैं।

तितम्बी बैंक

यह एक जापानी बैङ्क है, इसका हेड ऑफिस तैपेततेवारमें (फारमोसा) है। इसका बंबईका आफिस स्टैन्डर्डबिल्डिंग हॉर्नबी रोड फोर्ट है। इसकी मशहूर शाखाएं जपानमें टोकियो, ओसाका इत्यादि, चीनमें शंघाई, केन्टन, इत्यादि। जावामें भी इसकी शाखा हैं। इनके अतिरिक्त लन्दन, न्यूयार्क, हांगकांग, सिंगापुर, बम्बई और कलकत्तामें भी इसकी शाखाएं हैं।

नेशनल बैङ्क आफ इण्डिया

यह बैंक जरूरत पड़नेपर ब्रिटिश, इस्ट अफ्रिका और उजन्डाकी सरकारको रुपया देता है। यह बंबईमें एसप्लेनेड रोडपर है। लन्दनका इसका पता ७६ विशौप्सगेट लन्दन ई० सी० २ है। इसकी मशहूर शाखाएं बंबई, कलकत्ता, करांची, रंगून माण्डले, कोलंबो, और मोम्बासा है।

इसका स्वीकृत धन ४,०००,००० पौ० वसूल धन, २,०००,००० पौ० और रिजर्व फण्ड २,६००,००० पौ० है।

नेशनल टिली बेङ्क आफ न्यूयार्क

इसका बंबईका पता १२-१४ चर्चगेट स्ट्रीट बंबई है। इसका हेड आँफिस ५५ बालस्ट्रीट न्यूयार्क है। इसकी अविभाजित और बचत पूंजी १, ४३,७७६,६४५ है। इसकी हिन्दुस्तानकी शाखाएं बंबई, कलकत्ता और रंगूनमें हैं।

बड़ोदा बैंक लिमिटेड

बड़ोदाका बैंक वहांके महाराजाके कर्मचारियोंके द्वारा नियन्त्रित किया जाता है। इसकी लोगोंमें बहुत ही ज्यादा साख है। इसका प्रबन्ध दो कर्मचारियों द्वारा किया जाता है। मि० सी० ई० रेन्डल इसके अध्यक्ष हैं और इनके सहकारी मि० सी० जी० कौलिंग्स हैं। सर विठ्ठलदास थैकरसी और सर लालू भाई सामलदासके कारण इसकी विशेष ख्याति हो गई। इस बैंककी आर्थिक स्थिति नीचे दी जाती है।

वसूल धन	६००००००
उधार धन	३००००००
रिजर्व फण्ड	२२,५००००

हेड आफिस — मन्डावी, बड़ोदा
बंबई „ हार्नवी रोड

मुख्य शाखाएं :—बंबई, अहमदाबाद, सूरत, पाटन, भावनगर, द्वारका इत्यादि।

बैंको नेसिबोनल अल्ट्रा मैलो

इस बैंकका जन्म १८६४ ईस्वीमें हुआ था। यह पोर्चुगालवालोंका बैंक है। इसका हेड आँफिस लिस्बनमें है। इसका वसूल मूल धन ५०,०००, ००० रु० है और रिजर्व फन्ड ४२, ०००, ०००, रु०इसका बंबई दफ्तर स्प्लेनेड रोड पर है।

"बम्बई मर्चेंट्स बैङ्क

इसका पता ७६ एपोलो स्ट्री० फ़ोर्ट० है। इसका निश्चित मूल धन १००, ००, ०००, रिजर्व फन्ड ३,० ३, २४० है।

मर्कण्टाइल बैङ्क ऑफ इंडिया लिमिटेड

बम्बईका पता नं० ५२-५४ एसप्लेनेड रोड है। इसका हेड आफिस १५ ग्रेस चर्चस्ट्रीट लन्दन है। इसकी शाखाएं बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, कोलंबो; हांगकांग मद्रास, न्यूयार्क, रंगून, शिमला, और अन्य स्थानोंपर हैं।

मोरवी बैंक लिमिटेड

इसकी पूंजी १५,०००, ०० रु० है। यह एक बम्बईके साधारण बैंकोंमेंसे है, इसका पता वेस्टर्न बिल्डिंग स्प्लेनेड रोड फोर्ट बम्बई है। इसकी भारतमें और कोई शाखा नहीं है।

लायड्स बैंक

इसका सम्बन्ध इङ्गलैंडसे है। बम्बईका इसका पता चौकसी बिल्डिङ्ग हॉर्नबी रोड बम्बई है। इसका निश्चित मूलधन ७४, ०००,००० पौं है। रिजर्व फण्ड २० ००० ००० पौंड जमा किया हुआ धन २५३ ३४ ४० पौं है। इसकी शाखाएँ कलकत्ता, बंबई, करांची, रंगून, दिल्ली, शिमला, श्रीनगर इत्यादि स्थानों में हैं।

सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया लि०

इस बैङ्ककी सफलताका श्रेय सर फिरोज शाह मेहताको दिया जा सकता है, यह उन्हींके कठोर परिश्रमका फल है कि इसकी इतनी उन्नति हो पाई। इन्होंने जितना परिश्रम राजनीतिमें किया उससे कम व्यवसायिक धन्धोंकी ओर नहीं किया। इस बैंकके यही चेयरमैन थे। इनके बाद सर फिरोज सेठनाके उत्तरदायित्वमें यह बैंक आ गया। इन्होंने इस बैंककी केवल पुरानी साखको ही नहीं रखा बल्कि इसकी बहुत ज्यादा उन्नति की। टाटा इन्डसट्रियल बैंकके इसमें मिल जानेसे इसकी आर्थिक स्थिति बहुत ही ज्यादा बढ़ गई है और इसी कारण इसकी बहुतसी शाखाएं इस प्रेसिडेन्सीके बाहर बहुत बड़े २ एवं मामूली शहरोंमें खुल गई हैं। यद्यपि इस बैंकका जन्म केवल पारसी पूंजीसे हुआ था और इसका सञ्चालन भी उन्हीं लोगोंके उद्योग एवं साहससे हुआ तथापि हिन्दुस्थानी बैंकोंमें इसकी सबसे अधिक साख है। इसके प्रबन्धक एस० एन० पोखनवाला हैं। इनके सुप्रबन्धसे भी बैंककी बहुत कुछ उन्नति हुई है। इसका दफ्तर स्प्लेनेड रोड फोर्ट बम्बई है। इसके तारका पता "सरटेन" "Certain" है। फोन नं० २२०६५।

चन्दे द्वारा प्राप्त धन—	३,३६००००००
वसूल धन—	१ ६८०००००
रिजर्व फन्ड —	१ ००००००

इसकी मुख्य २ शाखाएं निम्न लिखित हैं :—

बम्बई, मद्रास, रंगून, करांची, कलकत्ता, अमृतसर, कानपुर, दिल्ली, लखनऊ, लाहौर, आसनसोल, अहमदाबाद, इत्यादि हैं।

इसकी विदेशी शाखाएँ—लन्दन, बर्लिन, न्यूयार्क।

हांग कौङ्ग एण्ड संघाई कारपोरेशन

इसका सम्बन्ध हौंग कौंगसे है और यहींपर इसका हेड आफिस है। बम्बईमें इसका

दफ्तर ४८ चर्च गेट स्ट्रीट फोर्टहै। इसकी निश्चित पूंजी ५०००००००० पौ०, वसूल पूंजी २०,०००००० रिजर्भ फण्ड ६००००००० पौ० और चांदीका रिजर्व फण्ड १३, ५००००० और संस्था पक्षोंके पास Reserve liablity of proportion २००००००० पौं० है। इसकी शाखाएं बहुत देशोंमें हैं। बम्बई, कलकत्ता, हॉन्को, हाँङ्कौङ्ग, कैन्टन, बम्बई, कलकत्ता, कोलम्बो, लन्दन, निऊयार्क, पेकिङ्ग, रंगून, टोकियो और भिन्न २ स्थानोंमें हैं।

इन बैंकोंके अतिरिक्त निम्न लिखित बैंकूस और हैं :—

पंजाब नेशनल बैंक—ग्रीन स्ट्रीट फोर्ट
यूनियन बैंक आफ इंडिया अपोलो स्ट्रीट
बैंक आफ टेवान हार्नबी रोड फोर्ट
बंबई जनरल कोआपरेटिव्ह बैंक अपोलो स्ट्रीट फोर्ट
थामस कुक एण्ड सन हार्नबी रोड
एम्पायर बैंक हार्नबी रोड
इंटर नेशनल बैंकिंग कारपोरेशन चर्चगेट स्ट्रीट
किंग किंग एण्ड कंपनी हार्नबी रोड
नेशनल बैंक आफ साउथ आफ्रिका हार्नबी रोड
नेदर लैंड्स इंडिया कामर्शियल बैंक हार्नबी रोड
नेशनल फिनासिंग एण्ड कमीशन कार्पोरेशन अपोलो स्ट्रीट
सोमीटोमो बैंक चर्चगेट स्ट्रीट।
योकोहामा स्पेशी बैंक हार्नबी रोड।

मेसर्स ओंकारजी कस्तूरचन्द

इस फर्मका हेड ऑफिस इन्दौर है। इसकी बम्बईकी फर्मका पता—राजमहल, भूलेश्वर है। यहां श्रीयुत मुनीम ओच्छवलालजी काम करते हैं। इस फर्मका पूरा परिचय चित्रों सहित इन्दौर (सेंट्रल इंडिया) में दिया गया है।

मेसर्स खुशालचंद गोपालदास

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ जमनादासजी हैं। आप माहेश्वरी (मालपाणी गौत्र) जातिके सज्जन हैं।

इस खानदानका मूल निवास जैसलमेरमें हैं, पर बहुत समयसे जबलपुरमें रहनेके कारण जबलपुर वालोंके नामसे यह कुटुम्ब विशेष प्रख्यात है।

इस फर्मका हेड ऑफिस जबलपुरमें है। बम्बईमें इसे स्थापित हुए ७५ वर्ष हुए। राजा गोकुल दासजीके हाथों इस फर्मके व्यवसायको विशेष उत्तेजन मिला। राजा गोकुलदासजी और सेठ गोपाल दासजी दोनों भाई २ थे। पहिले आप दोनों भाइयोंका शामिल व्यवसाय सेवाराम खुशालचन्दके नामसे होता था, पर आगे जाकर दोनों अलग अलग हो गये, और यह फर्म दीवान बहादुर सेठ वल्लभ रायजीके हिस्सेमें आई। आप माहेश्वरी समाजमें बड़े प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति माने जाते थे। आपका देहावसान हुए तीन चार वर्ष हुए। इस समय इस फर्मके मालिक सेठ जमना दासजी मालपाणी एम० एल० ए० हैं। आप बड़े शिक्षित एवं सुधरे विचारोंके सज्जन हैं। आप ऑल इंडिया लेजिस्लेटिव्ह असेम्बली (वाइसरायकी कौंसिल) के मेम्बर निर्वाचित किये गये है। वर्तमानमें आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दी० बा० सेठ बल्लभरायजी (खुशालचन्द गोपालदास) बम्बई

सेठ रुकमानन्दजी (गणपतराय रुकमानन्द) बम्ब

सेठ जमनादासजी मालपाणी M.L.A. (खु० गो० बंबई)

सेठ राधाकृष्णजी (गणपतराय रुकमानन्द) ब

१ जबलपुर (हेडऑफिस) मेसर्स वल्लभदास मन्नूलाल कन्हैयालाल	यहां बैङ्किंग,हुंडी चिट्ठी और जमींदारीका काम होता है। यहांपर इस फर्मकी एक पॉटेरी फेक्टरी है, और चांदा जिलामें लाल पैठ कॉलेरीके नामसे एक कोयलेकी खान है। इसके अतिरिक्त जबलपुरमें खुशालचन्द गोपालदास और वल्लभदास मन्नूलालके नामसे २ शाखाएं और हैं। सी० पी० में इस फर्मकी बहुतसी जमींदारी है।
२ कलकत्ता—मेसर्स गोपालदास वल्लभदास ७० बड़तल्ला स्ट्रीट	यहां बैङ्किंग और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।
३ नागपूर—मेसर्स खुशालचन्द गोपालदास	यहां भी बैङ्किंग और आढ़तका काम होता है।
४ बम्बई—मेसर्स खुशालचन्द गोपालदास गोपाल भवन भुलेश्वर T. A. Sambhau	यहां हुंडी चिट्ठी, सराफी और आढ़तका काम होता है।
५ हिंगनघाट (C. P.) मेसर्स खुशालचन्द गोपालदास T.A-Sambhau	यहां आपकी जमीदारी और जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरी हैं।
६ कांटोला (C. P.) मेसर्स खुशालचन्द गोपाल दास	जीन-प्रेस फेक्टरी है और सराफी व्यवसाय होता है।
७ हरदा (C. P.) मेसर्स वल्लभदास मन्नूलाल T,A Diwan	जीनिङ्ग फेक्टरी है तथा रूई और जमींदारीका काम होता है।
८ होशंगाबाद—मेसर्स वल्लभदास कन्हैयालाल	जमींदारी तथा बैङ्किंग (सराफी) व्यापार होता है।
९ भोपाल—मेसर्स गोपालदास वल्लभदास T. A. Laxmi	जमींदारी और आढ़तका काम होता है।
१० सागर—मेसर्स गोपालदास वल्लभदास T.fl Gopal	कमीशन एजंसी तथा जमीदारीका काम होता है।
११ मिरजापुर—मेसर्स खुशालचन्द गोपाल दास	कमीशन तथा जमीदारीका काम होता है।
१२) इटावा—मेसर्स मन्नूलाल कन्हैयालाल	यहां आपकी एक जीनिंग फेक्टरी है तथा हुंडी चिट्ठी, आढ़त और रूईका व्यापार होता है।

———

मेसर्स गणेशदास सोभागमल

इस फर्म के मालिकोंका मूल निवास स्थान कोटा (राजपूताना) है। आपकी फर्म की कई ब्रांचेस हैं। बम्बई ब्रांचका पता—मुंबादेवी, बम्बई है। यहां सराफीका व्यवसाय होता है। आपका विशेष परिचय कोटा (राजपूताना) में दिया गया है।

मेसर्स गणपतराय रुक्मानंद बागला

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री सेठ रुक्मानंदजी बागला तथा सेठ राधाकिशनजी बागला हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास-स्थान चूरू (बीकानेर) में है।

इस फर्मका हेड ऑफिस कलकत्ता है। बम्बईमें इस फर्मको स्थापित हुए करीब १२ वर्ष हुए। इस फर्मकी स्थापना सेठ राधाकिशनजी बागलाने की। आप सेठ गनपतरायजी बागलाके पुत्र हैं। आपके हाथोंसे इस फर्मकी विशेष तरक्की भी हुई।

इस फर्मकी ओरसे बनारसमें एक श्रीसत्यनारायणजीका मंदिर बाँसके फाटकके पास बना हुआ है। इसमें एक अन्नक्षेत्र तथा एक संस्कृत पाठशाला भी स्थापित है। इसके अतिरिक्त चूरूमें आपका एक बागला औषधालय भी बना हुआ है। आपने गत वर्ष २१ मकान मय १ सालके खाद्य-द्रव्योंके ऐसे ब्राह्मणोंको दान दिये हैं, जो बहुत गरीब थे तथा जिनके रहने आदिका कोई प्रबंध नहीं था। आपने एक हजार बीघा जमीन बीकानेर स्टेटसे खरीदकर गौओंके चरनेके लिये छुड़वा दी है। ऐसा कहा जाता है कि इन दोनों महानुभावोंने एक बहुत बड़ी रकम परोपकारी संस्थाओंको खोलनेके लिये निकाली है। अभी आपने मोघाके एक मशहूर डाक्टरको चूरू बुलाकर ४०० मनुष्योंकी आँखोंका इलाज अपने व्ययसे करवाया, जिससे बहुतसे लोगोंको लाभ हुआ था।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) हेड आफिस कलकत्ता—स्ट्रेंड रोड मेसर्स मोतीलाल राधाकिशन T. A. Bagla	इस फर्मपर टिम्बरका (इमारती लकड़ी) बहुत बडा विजनैस होता है। कलकत्तेके मशहूर टिम्बरके व्यापारियोंमें इस फर्मका स्थान बहुत ऊँचा है।
(२) मोलमीन—(वर्मा) एच० रुक्मानंद लोअरमेन रोड T. A. Rukamanand.	यहांपर आपकी एक टिम्बरकी फेक्टरी तथा एक चांवलकीफेक्टरी है। यहांपर आपका एक बहुत विशाल बगीचा है। इसमें यूरोपियन, मारवाड़ी, भाटिया बर्मीज़ आदि सब जातियोंके लिये वायु सेवन और आरामके लिये अलग २ सुविधाएं रक्खी गई हैं। यहांपर आपके ५ हाथी हैं जिनसे लकड़ी ढोनेका काम लिया जाता है।

श्री० सेठ केदारमलजी (मे० गुलाबराय केदारमल) बम्बई

कुंवर कीर्तिकृष्णजी S/o सेठ केदारमलजी
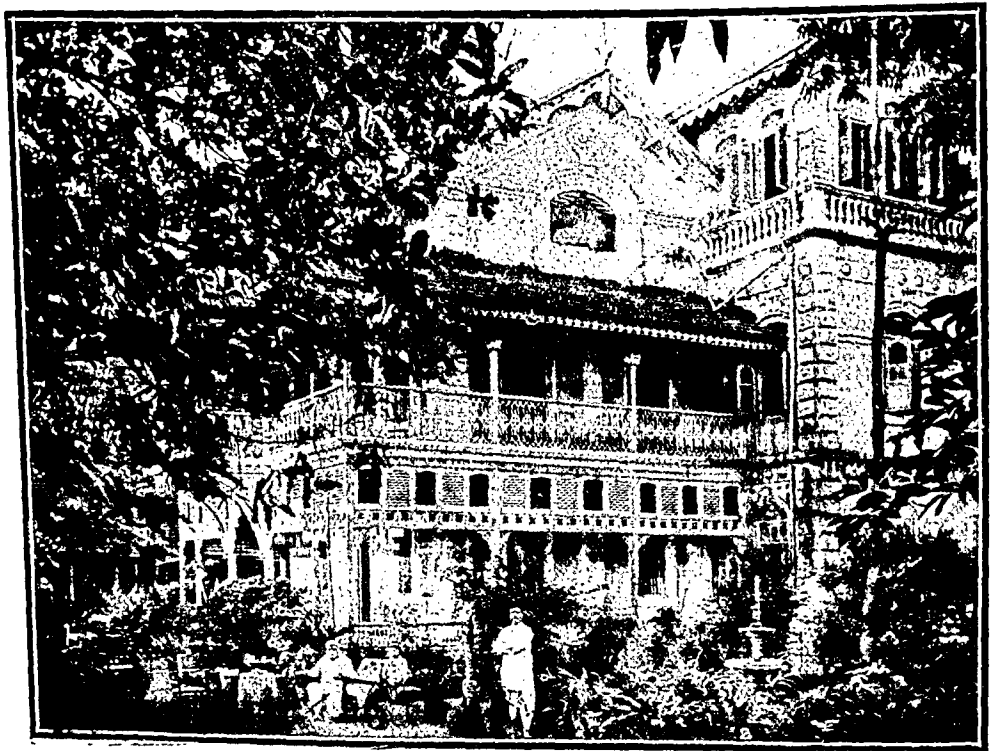
(३) बम्बई मेसर्स गणपतराय रुक्मानन्द ३२५ कालबादेवी रोड—इस फर्म पर टिम्बरका व्यापार होता है तथा बैंङ्किग और हुंडी चिट्ठीका काम भी होता है।

(४) रंगून—मेसर्स राधाकिशन नागरमल मुगल स्ट्रीट—इस फर्मपर टिम्बरका बहुत बड़ा व्यापार होता है इसके सिवाय बैंङ्किग, हुंडी चिट्ठीका भी काम होता है। यहांपर श्रीयुत नागरमल-जी काम करते हैं जो आपके पार्टनर हैं।

मेसर्स गाढ़मल गुमानमल

इस फर्मके मालिक प्रसिद्ध लोढ़ा परिवारके हैं। आपका मूल निवास स्थान अजमेरमें है अतएव आपका परिचय अजमेरमें दिया जायगा। यहां इस फर्मपर बैंकिंग और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

मेसर्स गुलाबराय केदारमल

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ केदारमलजी हैं। आप अग्रवाल जातिके बिन्दल गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मण्डावा (जयपुर) में हैं।

इस फर्मको बम्बईमें स्थापित हुए करीब ६० वर्ष हुए। इसकी स्थापना सेठ गुलाबरायजीने की। आपका स्वर्गवास संवत् १९३६ में हुआ। आपके पश्चात् आपके पौत्र केदारमलजीने इस फर्मके कामको सम्हाला। क्योंकि सेठ गुलाबरायजीके पुत्र सेठ भूरामलजीका देहावसान पहिलेही हो गया था। सेठ केदारमलजीका जन्म संवत् १९२१ में हुआ।

आपकी ओरसे मण्डावेमें अंग्रेजी विद्यालय, संस्कृत पाठशाला तथा एक औषधालय चल रहा है। बम्बईमें आपका एक आयुर्वेदिक विशुद्ध औषधालय भी चल रहा है। अग्रवाल समाजमें आपका अच्छा सम्मान है। आपकी यहां ११ बड़ी बड़ी बिल्डिंग्स बनी हुई हैं।

सेठ केदारमलजी पहिले यूनियन बैङ्कके डायरेक्टर थे। तथा वर्तमानमें आप सनातन धर्मा-वलम्बीय अग्रवाल सभाके सभापति हैं।

इस समय आपके एक पुत्र हैं, जिनका नाम कुं० कीर्त्तिकृष्ण है। इनके जन्मके समय आपने २ लाख रुपये दान किये थे।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है —

(१) बम्बई—गुलाबराय केदारमल कालबादेवी T. A. Yellowrose—इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी, बैंकिंग, गल्ला, कपड़ा, रूई, आदिका काम होता है। कमीशन एजंसीका कार्य भी यह फर्म करती है।

मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ बजरंगदासजी और सेठ फूलचंदजी हैं। आप अग्रवाल जातिके तायल गौत्रीय टिकमाणी सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान राजगढ़में (बीकानेर) है। इस फर्मका हेड ऑफिस कलकत्तेमें है। इसके पूर्व इस फर्मपर गोपीराम भगतराम नाम पड़ता था। कलकत्तेमें इस नामसे यह फर्म ५३ वर्ष पूर्व स्थापित हुई थी। इस फर्मकी स्थापना सेठ शंकरदासजीके ही सामने हुई थी। सेठ शंकरदासजी संवत् १८८८ में कलकत्ता आये। आपका स्वर्गवास संवत् १९३४ में हुआ। आपके सामने ही आपके पुत्र श्रीगोपीरामजी, श्रीभगतरामजी और श्री बजरंगलालजी

दुकानके कामको सम्हालते थे। सेठ गोपीरामजी तथा सेठ भगतरामजी संवत् १९२३ में व्यापार करनेके लिये कलकत्ता आये। यहां आकर आपने दलालीका कार्य शुरू किया। पश्चात् संवत् १९३१ में फर्मकी स्थापना की। संवत् १९७२ में सेठ गोपीरामजी तथा बजरंगलालजी से सेठ भगतरामजी अलग हो गये। सेठ गोपीरामजीका देहावसान संवत् १९७३ में काशीजीमें जन्माष्टमीको हुआ। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ फूलचन्दजी, तथा सेठ बजरंगलालजीके पुत्र सेठ रामचन्द्रजी इस फर्मके कार्यका संचालन करने लगे। लेकिन सेठ रामचन्द्रजीका देहावसान संवत् १९७८ में २६ वर्षकी आयुमें ही हो गया। वर्तमानमें इस फर्मका सारा भार सेठ फूलचन्दजी टिकमाणी सम्हालते हैं। आपने इस फर्मकी अच्छी तरक्की की। कलकत्तेके मारवाड़ी समाजमें आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है।

तीनों भाई सेठ गोपीरामजी, सेठ भगतरामजी एवम् सेठ बजरंगदासजीके द्वारा जो सार्वजनिक कार्य हुए हैं उनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है - बनारसके संस्कृत टिकमाणी कालेजमें जो सेठ गोपीरामजीके स्मारक स्वरूप बनाया है, करीब ३ लाख रुपैयोंकी सम्पत्ति लगी है। इस समय इसका सारा कारभार सेठ फूलचन्दजी सम्हालते हैं। राजगढ़के एक मन्दिरमें आपकी ओरसे करीब ८००००) की लागत लगी है। आपकी ओरसे बहुतसी गोचर भूमि छुड़वाई गई है। राजगढ़में आपकी ओरसे २ धर्मशालाएं तथा ६ कुएं भी बने हुए हैं। आप तीनोंही भाईयोंकी ओरसे राजगढ़ पींजरापोलमें २१ हजार रुपैया दिया गया है। आपकी ओरसे एक घंटाघर भी राजगढ़ में बना हुआ है। इसके अतिरिक्त सेठ फूलचन्दजीने प्रायवेट रूपसे २५ हजार रुपैया और पिंजरापोलमें दिया है।

कलकत्तेमें झगड़ा कोठीके नामसे आपकी एक सुन्दर कोठी २६।३ आर्मेनियन स्ट्रीटमें बनी हुई है। जिसका फोटो इस पुस्तकमें दिया गया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—हे० आ०—मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र २६।३ आर्मेनियम स्ट्रीट T. A. Tikamani—
इस फर्म पर बारदान तथा हैसियनका व्यापार होता है। बारदानकी कई अच्छी २ कंपनियोंसे आपका व्यापारिक संबन्ध है। पेरिसकी प्रसिद्ध कपड़ेकी कंपनी कान एण्ड कानके आप मुत्सद्दी हैं। बंगालके अन्तर्गत बान्सडेढ़ामें 'गड़रिया कुलयारी' नामसे आपकी एक कोयलेकी खान है।

बम्बई—मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र टिकमाणी बिल्डिङ्ग कालबादेवी रोड, T. A. Tikamani—
यहां हुंडी चिट्ठी, रूई, गल्ला, तिलहन आदिका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त सब प्रकारकी आढ़तका काम भी यहां होता है। इस फर्मको मुनीम गंगारामजीने संवत् १९४६ में स्थापित किया था। बम्बईके मारवाड़ी समाजमें आपका अच्छा सम्मान था। आप मारवाड़ी चेम्बर आफ् कामर्सके ऑनरेरी सेक्रेटरी भी रहे थे।

शिकोहाबाद—मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र, T. A. Tikamani—यहां आपकी एक जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है। यहां काटनका व्यापार तथा आढ़तका भी काम होता है।

कानपुर—मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र, T. A. Tikamani—यहां बैंकिङ्ग तथा हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

स्व० सेठ गोपीरामजी टिकमाणी (गोपीराम रामचन्द्र)

श्री० सेठ बजरंगदासजी (गोपीराम रामचन्द्र)

श्री० सेठ फूलचन्दजी टिकमाणी (गोपीराम रामचन्द्र)

स्व० सेठ रामचन्द्रजी टिकमाणी (गोपीराम रामचन्द्र)

५ फिरोजाबाद—मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र T. A. Tikamani.	यहांपर कमीशन सम्बन्धी काम होता है।
६ सिरसागंज—(मैनपुरी)मेसर्स गोपी राम रामचन्द्र T. A. Tikmani.	यहांपर गल्ले तथा रुईका प्रधान व्यापार होता है।
७ मेनपुरी—मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र	यह फर्म रूई तथा गल्ला खरीदकर शिकोहाबाद भेजती है।
८ राजगढ़ [बीकानेर] मेसर्स गोपीराम बजरंगदास	यहां आपका खास मकान है तथा जागीरदारों और तालुके-दारोंसे लेनदेन होता है।

मेसर्स चेनीराम जेसराज

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ सीतारामजीके पुत्र श्री घनश्यामदासजी हैं। आप अभी नाबालिग हैं। आप अग्रवाल जातिके हैं।

इस खानदानका मूल निवासस्थान विसाऊ (जयपुर स्टेट) में है। इस दुकानको यहांपर स्थापित हुए करीब ७० वर्ष हुए। पहिले पहिल इस फर्मको सेठ नाथूरामजीने स्थापित किया। आपके बाद क्रमशः सेठ रामनारायणजी, सेठ किशनदयालजी तथा सेठ सीतारामजीने इस फर्मका संचालन किया। सेठ सीतारामजीने इस फर्मको विशेष उत्तेजन दिया। आपने जनतामें अच्छी प्रसिद्धि पाई। इस फर्मकी ओरसे बम्बई ठाकुर द्वारमें हिन्दू गृहस्थोंके ठहरने और व्याह शादीके कार्योंके लिये बाड़ी बनवाई हुई है। आपकी ओरसे बम्बईमें सीताराम पोद्दार बालिका-विद्यालय, मारवाड़ी औषधालय, मारवाड़ी सम्मेलन तथा विसाऊमें, विसाऊ कन्या पाठशाला, लायब्रेरी, डिस्पेंसरी तथा एक लड़कोंका स्कूल चल रहा है। आपका स्वर्गवास संवत् १९७८ में हुआ।

सेठ सीताराम, यूनियन बैंकके डायरेक्टर थे तथा इसकी स्थापना भी आपने ही की थी। इसके अतिरिक्त आप एडवांस मिल तथा आर० डी० ताता कम्पनीके डायरेक्टर थे।

इस फर्मका संबन्ध टाटाकी मिलोंसे बहुत पूर्वसे—ही सेठ नसरवानजी टाटाके समयसे है। सेठ नाथूरामजी उनके साथ भागीदारीमें चीनके साथ अफीमका व्यापार करते थे। इस प्रकारकी व्यापारिक हिस्सेदारीका सम्बन्ध सेठ किशनदयालजीके देहावसानके पश्चात्तक जारी रहा।

इस समय इस फर्मकी नीचे लिखे-स्थानोंपर दुकानें हैं।

१ बम्बई—मेसर्स चेनीराम जेसराज, कालबादेवी रोड T. A. Swarga,	यहां टाटा संसकी इंप्रेस मिल नागपुर, टाटामिल बम्बई स्वदेशी मिल नं० १ तथा २ बंबई, एडवांस मिल अहमदाबाद इत्यादि मिलोंकी भारतभरमें कपड़ा बेचनेकी सोल एजन्सी है। इसके अतिरिक्त यहांपर बैंकिङ्ग एक्सपोर्ट, इम्पोर्ट तथा काटनका बिजिनेस भी होता है।

२ अमृतसर—मेसर्स रामनारायण किशनदयाल।	यहां टाटा संसकी मिलोंका कपड़ा बेचा जाता है।
३ कानपुर ,,	
४ जबलपुर ,,	
५ देहली मे० नाथराम रामनारायण	यहां आपकी एक पोद्दार जीनिंग फैकरी है।
६ उज्जैन ,,	कपड़ेका व्यापार होता है।
७ मुजफ्फरपुर ,,	
८ गुलहट्टी बालाघाट ,,	यहां आपकी एक मेगनीज (फौलाद)की खान है।
९ बम्बई—नाथूराम रामनारायण धर्मराज गली मूलजी जेठा मारकीट	यहां सिका बंध कपड़ेकी गांठोंका व्यापार होता है।
१० बम्बई—नाथूराम रामनारायण चम्पागली, मूलजी जेठा मारकीट	यहांपर खुदरा कपड़ेका व्यापार होता है।
११ बम्बई—चेनीराम जेसराज यार्क बिल्डिंग फोर्ट	यहां एक्सपोर्ट-इम्पोर्टका काम होता है।
१२ बम्बई—मे० चेनीराम जेसराज टाटा बिल्डिंग फोर्ट	यहां टाटा संसकी एजन्सीका काम होता है।

मेसर्स जुहारमल मूलचन्द सोनी

इस प्रतिष्ठित फर्मका हेड ऑफिस अजमेर है। बंबईकी फर्मका पता—अजसीका पाटिया, कालवादेवी रोड है। तथा आफिसका पता—जुहारपैलेस, कालवादेवी है। यह पैलेस आपहीका है। आपका विशेष परिचय चित्रों सहित अजमेरमें दिया गया है। बंबईमें आपकी फर्मपर बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी तथा एक्सपोर्ट इम्पोर्टका काम होता है।

मेसर्स तिलोकचंद कल्याणमल

इस फर्मके मालिकोंका निवास-स्थान इन्दौरमें है। यहांकी फर्मका पता कल्याण भवन, कालवादेवी रोड है। यह फर्म यहांके प्रेनेट मिलकी एजंट है। इसका विशेष परिचय इन्दौर (सेंट्रल-इंडिया) में चित्रोंसहित दिया गया है।

मेसर्स ताराचंद घनश्यामदास

इस मशहूर फर्मका स्थापन सेठ भगवतीरामजीके हाथोंसे हुआ था उस समय आपका कुटुम्ब चूरूमें रहता था। महाराज सीकरके बहुत आग्रहसे सेठ चतुर्भुजजी (भगवती रामजीके पुत्र) चूरू छोड़कर रामगढ़में निवास करने लग गये। उस समय रामगढ़के स्थानपर नोसा नामक एक गांव था, वहां इन्होंने ही सर्व प्रथम अपनी दो हवेलियां बनवाईं।

सेठ चतुर्भुजजीने प्रथम भटिंडामें अपनी दूकान स्थापित की और वहांसे ३ बारकी मुसाफिरीमें बहुत सम्पत्ति उपार्जित की। धीरे २ इस कुटुम्बने अपने व्यापारको मालवा, मेवाड़, और

स्व० सेठ रामनारायणजी पोद्दार (चेनीराम जेसराज) बम्बई

स्व० सेठ किशनदयालजी पोद्दार (चेनीराम जेसराज

स्व०सेठ सीतारामजी पोद्दार (चेनीराम जेसराज) बम्बई

श्री०घनश्यामदासजी पोद्दार (चेनीराम जेसराज)

बम्बई तक बढाया। सेठ चतुभुजजीके पश्चात् उनके पौत्र सेठ ताराचन्द्रजीके पुत्र सेठ घुरसामलजी एवं हरसामलजीने इस फर्मके व्यापारको और भी विशेष उत्तेजन दिया। उस समय मालवा, बम्बई और मारवाड़ आदि स्थानोंमें इस फर्मकी सैकड़ों शाखाएं थीं। सुदूर चीन देशमें भी इस फर्मकी शाखा स्थापित की गई थी। उस समय दोनों भाई रामगढ़ में ही रहकर सब दुकानोंका संचालन करते थे।

सेठ घुरसामलजीने मथुरामें राधागोविन्ददेवजीका मन्दिर बनवाया, और उसके स्थाई प्रबंधके हेतु बहुतसा गहना और जमीदारी खरीदकर मन्दिरको भेंट किया। इसके अतिरिक्त आपने रामगढ़में बद्रीनारायणजीका मन्दिर, धर्मशालाएं, कुएं और तालाब बनवाये। आपका देहावसान संवत् १९२५ में हुआ। आपने इस कुटुंबमें अच्छी ख्याति प्राप्त की थी।

सेठ घुरसामलजीके पश्चात् उनके पुत्र सेठ घनश्यामदासजी व्यवसायिक कार्य देखते रहे, इन्होंने भी काशी, मथुरा, प्रयाग आदि स्थानोंपर क्षेत्र (सदावर्त) एवं पाठशालाएं जारी कीं। आपका स्वर्गवास संवत् १९४० में हुआ।

सेठ घनश्यामदासजीके पांच पुत्रोंमेंसे (१) सेठ जयनारायणजी (२) सेठ लक्ष्मीनारायणजी और (३) सेठ राधाकृष्णजीका देहावसान हो गया है। आपके चौथे पुत्र सेठ केशवदेवजी वर्तमानमें अपना सब व्यापारिक भार अपने पुत्रोंपर छोड़कर हरिद्वार निवास कर रहे हैं। सेठ जयनारायणजीका देहावसान, अपने पिताश्री के देहावसानके ५ दिन पूर्वही हो गया था। इन पांचों भाइयोंकी धार्मिक कार्योंकी ओर विशेष रुचि रही है। सेठ लक्ष्मीनारायणजीने मथुरामें बरसाना और नन्दगांवके बीच प्रेम निकुंज नामक स्थानमें श्री राधागोविन्दचन्द्रदेवजीका मन्दिर बनवाया और वहां बहुत अधिक मूल्यके आभूषण भेंटकर सदावर्त, गौशाला, क्षेत्र, और संस्कृत पाठशाला स्थापित की जो अबतक चल रही हैं। आपने अपने जीवनमें मन्दिरों एवं धार्मिक संस्थाओंमें करीब ५ लाख रुपयोंकी संपत्ति दान की है। आपका देहावसान संवत् १९४८ में हो गया। सेठ राधाकृष्णजी अन्तिम समयमें चित्रकूटमें निवास करने लग गये थे और वहीं आपका संवत् १९७६ में देहावसान हुआ। सेठ केशवदेवजी तथा सेठ राधाकृष्णजीने इस फर्मके वर्तमान व्यापारको अच्छा बढ़ाया। बर्मा आइल कम्पनीकी भारतभरकी एजेंसी आपहीने स्थापित की और उसके प्रबंधके लिये कलकत्ता, बम्बई, मद्रास एवं करांचीमें दुकानें स्थापित कीं। आप दोनों भाइयोंका व्यवसाय अभीतक शामिल ही चला आ रहा है। इस समय सेठ केशवदेवजी सब व्यापारिक कार्य अपने पुत्रोंपर छोड़कर हरिद्वार निवास कर रहें हैं। सेठ मुरलीधरजीने अपनी २१ वर्षकी आयुमें स्त्रीके देहावसान हो जानेपर भी द्वितीय विवाह नहीं किया। तथा इस समय सांसारिक कार्योंसे विरक्त होकर आप गङ्गा तटपर निवास करते हैं।

वर्तमानमें इस फ़र्मके मालिक सेठ केशवदेवजी और उनके पुत्र कुंवर श्रीनिवासजी एवं कुंवर बालकृष्णलालजी पोद्दार, एवं स्वर्गीय सेठ राधाकृष्णजीके पुत्र सेठ रघुनाथ प्रसादजी, सेठ जानकी प्रसादजी, सेठ लक्ष्मण प्रसादजी और सेठ हनुमान प्रसादजी हैं।

कुंवर श्रीनिवासजी तथा कुंवर बालकृष्णलालजी दोनों सज्जन बड़े समाजसेवी एवं सुधरे हुए विचारोंके हैं। आप अग्रवाल जातिके हैं। इस समाजकी उन्नतिमें आप अच्छी दिलचस्पी लेते रहते हैं। हालहीमें बम्बईमें जो अग्रवाल महासभा हुई थी, उसकी स्वागतकारिणीके सभापति कुँवर बालकृष्ण लालजी थे।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

फर्म	विवरण
१ बम्बई-मेसर्स ताराचन्द घनश्यामदास मारवाड़ी बाजार T. A. seth, poddar	इस फर्मपर हुंडी, चिट्ठी, और बैंकिंगका व्यापार होता है तथा यहां वर्माआइल कंपनीकी भारतभरकी सोल एजंसी हैं। इस कंपनीका भारतभरमें जितना तेल खपता है वह सब इसी फर्मके द्वारा सप्लाई होता है। भारतके प्रायः सभीबड़े २ रेलवे स्टेशनोंपर इस फर्मकी शाखाएं तथा एजन्सियां कायम हैं।
२ कलकत्ता—मेसर्स ताराचंद घनश्यामदास T. A. Poddar १८ मलिकस्ट्रीट	इस फर्म पर बैंकिंग हुण्डी चिट्ठी और बर्मा कम्पनीकी सोल एजन्सीका काम होता है।
३ मद्रास--मेसर्स ताराचंद घनश्यामदास T. A. Poddar	"
४ करांची -मेसर्स ताराचन्द घनश्यामदास T. A. Poddar	"

मेसर्स नैनसुखदास शिवनारायण

इस फर्मके मालिक श्रीजयनारायणजी डागा बीकानेर रहते हैं। वहीं आपका हेड ऑफिस है। यहांकी फर्मका पता—केदार भवन, कालबादेवी रोड है। यहां बैंकिंग हुंडीचिट्ठी तथा कमीशन एजंसीका काम होता है। इस फर्मका संचालन मुनीम जगन्नाथ प्रसादजी पुरोहित करते हैं। इस फर्मका विशेष हाल बीकानेर (राजपूताना) में चित्रों सहित दिया गया है।

राजा बहादुर वंशीलाल मोतीलाल

इस सुप्रसिद्ध फर्मके वर्तमान मालिक राजा बहादुर सेठ वंशीलालजी हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान नागोर में (मारवाड़) है।

सर्व प्रथम इस फर्मके पूर्व पुरुष सेठ शिवदत्तरायजी तथा उनके पुत्र सेठ जेसीरामजीने लगभग संवत् १८३१ में, नागोरसे आकर जिला बीड़ (निजाम हैदराबाद) के जोगी पैठ नामक

राजा बहादुर सेठ बंशीलालजी (बंशीलाल मोतीलाल)

श्री० कुंवर बालकृष्णलालजी पोद्दार (ताराचन्द घनश्यामदास)

श्री० कुंवर पन्नालालजी पित्ती (बंशीलाल मोतीलाल)

श्री० कुंवर गोवर्द्धनलालजी पित्ती (बंशीलाल मोतीलाल)

स्थानमें दुकान की। कुछ समय पश्चात् हैदराबादमें भी आपकी दुकान स्थापित हो गई। उस समय इस फर्मपर शिवदत्तराम जेसीरामके नामसे व्यापार चलता था। संवत् १८८० में आपने बंबई, कलकत्ता, इन्दौर इत्यादि भारतके भिन्न २ प्रान्तोंमें अपने व्यापारको बढ़ाया और दुकानें कायम कीं। उसी समय मुगलाई प्रान्तके एलारड़ी, बिचकुंडा, उमरावती, खामगांव आदि स्थानों-में दुकानें स्थापित की गईं। उस समय इन सब फर्मोंपर खास व्यापार अफीम, गल्ला, सराफी और रुईका होता था। सेठ शिवदत्तरायजीका देहावसान संवत् १९०० के करीब हुआ। थोड़े ही समयमें इस फर्मका इतना व्यापार फैल गया कि जहां २ आपकी फर्में थी वहां २ के आप प्रतिष्ठित व्यापारी माने जाने लगे। उस समय बरार प्रांतकी सब तहसील इस फर्मपर ही आती थी, एवं इसके द्वारा सरकारको दी जाती थी। सेठ जेसीरामजीके पश्चात् इस फर्मके कामको उनके पुत्र सेठ शिव-नारायणजीने सम्हाला।

सेठ जेसीरामजीके भतीजे सेठ शिवलालजी एवं उनके पौत्र सेठ किशनलालजी (सेठ शिव-नारायणजीके पुत्र) जो उस समय इस फर्मके मालिक थे, अलग २ हो गये। सेठ किशनलालजी-ने अपनी फर्म शिवदत्तराय जेसीराम, एवं सेठ शिवलालजीने शिवदत्तराय लक्ष्मीरामके नामसे स्थापित की। प्रधान स्थानपर यह दुकानें संवत् १९०७ के बैसाख द्वितीय सुदी ६ के दिन एवं दिसावरोंमें संवत् १९०९ की फागुन बदी ९ के दिन अलग २ हुईं। (सेठ किशनलालजीका देहावसान संवत् १९११ में हुआ। आपके पश्चात् आपकी फर्मका काम आपके पुत्र सेठ मोहनलालजी एवं सेठ मदन-लालजी (मोहनलालजीके पुत्र) ने सम्हाला—मोहनलालजीका देहावसान संवत् १९६२ में एवं मदन लालजीका १९७२ में हुआ।)

इस मशहूर फर्मके मालिक सेठ शिवलालजीके यहां सेठ मोतीलालजी साहब संवत् १९०२ मे नागौरसे गोद आये।

सेठ शिवलालजीकी दानधर्मकी ओर विशेष रुचि थी। आपने मद्रास प्रान्तमें श्री रंगजी, श्री वल्लभजी आदि स्थानोंमें धर्मशालाएं बनवाईं, एवं सदाव्रत जारी किये। नागोरमें आपने सदाव्रत जारी किया। पुष्करमें आपने एक धर्मशाला बनवाई। सेठ शिवलालजीका निजाम सरकार बहुत सम्मान करते थे। सम्वत् १९१४ (सन् १८५७) के भारत व्यापी गदरमें इन्होंने सरकारकी अच्छी सेवा की, इसके लिये आपको कई अच्छे प्रशंसा पत्र प्राप्त हुए थे, एवं सरकारने आपको रसिडेंसीमें जमीन देकर सम्मानित किया था। आपका देहावसान संवत् १९१९ में हुआ।

आपके पुत्र राजा बहादुर सेठ मोतीलालजीका जन्म संवत् १८९६में नागोरमें हुआ था। आपने इस फर्मके कार्यका अच्छा संचालन किया। आपने बम्बईमें अपने बैङ्किग कार्यको बढ़ाया, एवं बम्बई तथा पूनेमें दो मिलें खरीदीं। इसके अतिरिक्त आपने स्थाई सम्पत्ति भी अच्छी एकत्रितकी। आपको एवं आपके पुत्र सेठ बंशीलालजी (वर्तमान मालिक) को संवत १९५५ में निजाम सरकारने राजा बहादुरकी उपाधिसे सम्मानित किया।

रा० बा० सेठ मोतीलालजीके पश्चात इस फर्मके वर्तमान मालिक राजा बहादुर सेठ बंशीलालजी हैं। आपका जन्म संवत् १९१८ की चैत सुदी १२ को जहाजपुर (मेवाड़) में हुआ, एवं आप संवत् १९२४ के अगहन मासमें हैदराबादकी मशहूर फर्मके मालिक राजा बहादुर सेठ मोतीलालजीके यहाँ गोद लाये गये। सेठ बंशीलालजी १८ वर्षकी आयुसे ही व्यवसाय एवं राज दरबारका कार्य करने लगे। प्रारम्भमें करीब १५ वर्षोंतक आपने तालुकेदारीका सरकारी काम किया था। वर्तमानमें आप हरिद्वारमें एक अच्छी धर्मशाला बनवा रहे हैं जिसकी जमीन ५१०००) में ली गई है। आपने २ साल पूर्व करीब ५० हजार रुपया लगाकर श्री विष्णुयज्ञ किया था। उसमें श्रीमद् भागवत, एवं वाल्मिकी रामायणके १०८ पारायण कराये थे। रा० बा० सेठ बन्शीलालजीका हैदराबाद राज्यमें अच्छा सम्मान है। निजाम सरकारके सम्मुख आपको कुरसी मिलती है। इसके अतिरिक्त वहांके रईस एवं जगीरदार भी आपका अच्छा सम्मान करते हैं।

इस फर्मकी बम्बई, अजमेर, हैदराबाद आदि स्थानोंपर अच्छी स्थाई सम्पत्ति है।

वर्तमानमें इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ राजा बहादुर मोतीलाल बन्शीलाल रेसिडेंसी बाजार हैदराबाद [दक्षिण]	इस फर्मपर बैङ्किग, हुन्डी चिट्ठी, स्टेटमार्गेज एवं जवाहरातका व्यापार होता है।
२ राजाबहादुर मोतीलाल बन्शीलाल बेगम बाजार हैदराबाद	यहां भी उपरोक्त व्यापार होता है।
३ राजा बहादुर बन्शीलाल मोतीलाल कालबादेवी रोड बम्बई	यहां भी उपरोक्त व्यापार होता है।

इस समय आपके तीन बड़े पुत्र श्री सेठ गोविन्दलालजी, श्री सेठ मुकुन्दलालजी, एवं सेठ नारायणलालजी अपना अलग २ व्यापार कर रहे हैं। एवं आपके दो छोटे पुत्र श्री पन्नालालजी एवं श्री गोवर्द्धनलालजी आपके साथ हैं।

मेसर्स बन्सीलाल अबीरचन्द

इस मशहूर फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बीकानेर है। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। बम्बईमें आपकी फर्मका पता मारवाड़ी बाजार, शेखमेमन स्ट्रीट है। यहां बैङ्किग तथा हुन्डी चिट्ठीका व्यवसाय होता है। यहींपर आपकी एक कम्पनी है जिसपर रुई आदिका विलायत एक्सपोर्ट होता है और कई वस्तुएं विलायतसे यहां आती हैं। आपका विशेष परिचय बीकानेर (राजपूताना) में चित्रों सहित दिया गया है। यहांका तारका पता Raibansi. है।
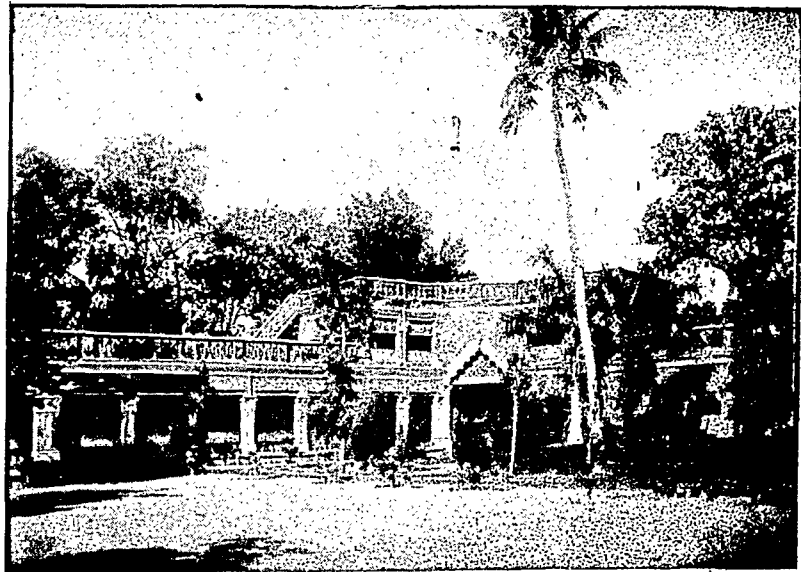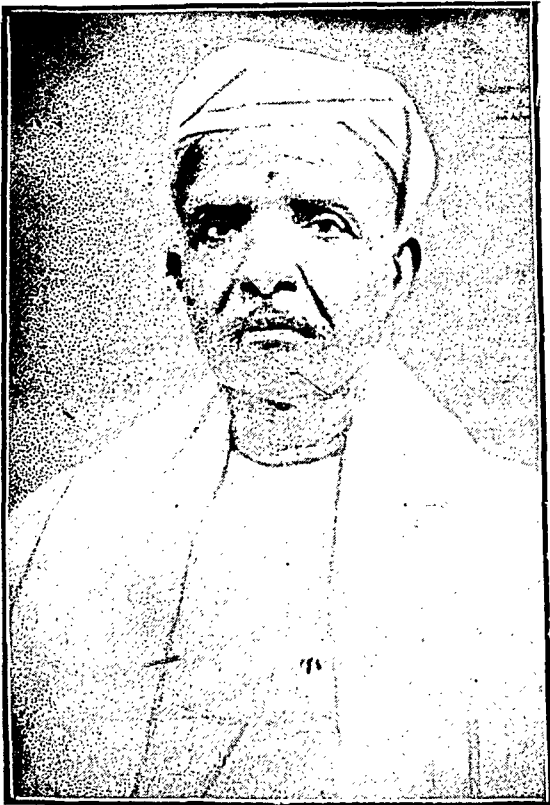
इस दुकानके संचालक मुनीम श्रीयुत लक्ष्मणदासजी डागा हैं। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। आप मारवाड़ी जातिके अग्रगण्य सज्जनोंमेंसे हैं। मारवाड़ी चेम्बर ऑफ कामर्सके पूर्व जो पंच सराफ एसोसिएसन नामक संस्था थी उसके संस्थापक आपही थे। इसके अतिरिक्त मारवाड़ी चेम्बरके मूल संस्थापकोंमेंसे भी आप एक प्रधान व्यक्ति हैं। पहले आप इसके वाइस चेअरमेन भी रहे हैं। बुलियन मर्चेण्ट एसोसिएशनके स्थापकोंमें भी आपका नाम अग्रगण्य है। इस समय आप उसके वाइस चेअरमेन हैं। मारवाड़ी विद्यालय और मारवाड़ी सम्मेलनके भी आप सभापति रह चुके हैं। वर्तमानमें यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, यूनिवर्सल फायर इन्स्युरेन्स कम्पनी, मॉडल मिल नागपुर, बरारमिल बड़नेरा, औरङ्गाबाद मिल और बुलियन मर्चेंट एसोसिएशन, मारवाड़ी चम्बर आफ कामर्स, बाम्बे स्टाक एक्सचेंज इत्यादि संस्थाओंके आप डाइरेक्टर हैं। बाम्बे पंसेञ्जर रिलिफ एसोसिएशनके आप वाइस चेअरमेन हैं। मतलब यह कि बम्बईमें आप बड़े प्रतिष्ठित और प्रभावशाली व्यक्ति हैं।

मेसर्स बच्छराज जमनालाल बजाज

इस फर्मके वर्तमान मालिक भारत प्रसिद्ध देशभक्त त्यागमूर्त्ति से० जमनालालजी बजाज हैं। इस समय सेठ जमनालालजीका कुछ भी परिचय लिखना सूर्य्यको दीपक दिखाना है। आपके नामसे आज भारतका बच्चा २ परिचित है। आपके त्यागमय जीवनसे भारत-भूमिका एक २ रज: कण गौरवान्वित हो रहा है।

सेठ जमनालालजी उन महापुरुषोंमेंसे हैं जिन्होंने एक साधारण स्थितिमें जन्म लेकर, अपनी कर्मवीरतासे लाखों रुपयेकी दौलत उपार्जन की और फिर बड़ी उदारताके साथ उसे अपनी जातिके लिए और अपने देशके लिए अर्पण कर रहे हैं।

आपका जन्म सीकरके समीपवर्त्ती एक छोटेसे गांवमें श्रीकनीरामजी बजाजके यहां हुआ था। श्रीयुत कनीरामजी बहुतही साधारण स्थितिके पुरुष थे। जब आप पांच वर्षके हुए तब आप वर्धाके सेठ बच्छराजजीके पुत्र स्व० रामधनजीके नामपर दत्तक लाए गए। सेठ बच्छराजजी बड़े प्रतिष्ठित, धनाढ्य और बुद्धिमान व्यक्ति थे। आप रायबहादुर, आनरेरी मजिस्ट्रेट और म्यूनिसिपल मेम्बर थे। इस खानदानमें आजानेपर श्रीयुत जमनालालजीको अपना विकास करनेका अच्छा मौका मिला। उचित अवसर मिलनेके कारण आपकी प्रतिभा धीरे २ चमकती गई। गवर्नमेण्टमें, तथा व्यापारिक समाजमें आपने अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली। सन् १९०८ में सी० पी० की गवर्नमेन्टने आपको आनरेरी मजिस्ट्रेट और सन् १९१८ में भारत गवर्नमेन्टने आपको रायबहादुरकी सम्माननीय उपाधिसे विभूषित किया, मगर ईश्वरने आपको इन मोहक इन्द्रजालोंमें फंसनेके लिए पैदा नहीं किया था। कुदरत

आपसे देश सेवाका महान कार्य्य करवाना चाहती थी। समाज सेवा और देश सेवाकी भावनाएं बीज रूपमें तो आपके अन्दर विद्यमान थी ही, सौभाग्यसे उनको विकसित करनेके लिए आपको बहुत ऊंचे दर्जेकी सोसायटी भी मिल गई, जिससे आपके अन्तर्गत समाज सेवाकी भावनाएँ प्रबल रूपसे जागृत हो उठीं। सबसे पहले आपका ध्यान अग्रवाल समाजकी उन्नतिकी ओर गया। जिसके फलस्वरूप आपने सन् १९१२ में वर्धाके अन्तर्गत मारवाड़ी हाई स्कूल खोला। तथा कुछ समय पश्चात एक कन्या पाठशालाकी भी स्थापना की।

सन् १९१५ में बम्बईके सुप्रसिद्ध मारवाड़ी विद्यालयकी नींव पड़ी। इस संस्थाकी स्थापनामें आपका खासभाग था। इसके पश्चात संम्वत् १९७६ में आपने अपने मित्रों सहित दीर्घ प्रयत्नके साथ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी अग्रवाल सभाका संगठन किया, जो आपके जीवनकी एक महत्त्वपूर्ण घटना है।

मगर आपका ध्येय यहींतक परिमित न था जातिकी सीमासे निकालकर कुदरत आपको देशके विशाल क्षेत्रमें लाना चाहती थी, और इसी कारण वह आपके जीवनकी घटनाओंको बदलती गई। सन् १९१५ में आपका महात्मा गांधीके साथ परिचय हुआ। यह परिचय दिन २ दृढ़ होता गया। कुछ समय पश्चात् महात्मा गान्धीका देश व्यापी आन्दोलन जारी हुआ। इस आन्दोलनमें आपने तन, मन, धनसे पार्ट लिया। सन् १९२१ में आपने अपना राय बहादुरीका खिताब लौटा दिया। और मोटी खादीके वस्त्र धारण कर आपने असहयोगका झण्डा पकड़ लिया। असहयोग के आन्दोलनमें आपका बहुत अधिक भाग रहा। जिस दिन भारतकी राजनीतिके इतिहासमें असह योगका अध्याय लिखा जायगा, उस अध्यायमें उसके प्रधान प्रवर्तकोंके साथ सेठ जमनालालजी वजाजका नाम भी स्वर्णाक्षरोंमें लिखा जायगा।

तभीसे सेठ जमनालालजी बजाज देशभक्तिके रंगमें मतवाले होगये हैं। आज भी इस शिथिलताके युगमें भी-सेठ जमनालालजी सिरसे पैर तक खादीके वस्त्र धारण किये हुऐ स्थान २ पर भ्रमणकर आत्म विस्मृत लोगोंको उत्साहप्रवर्तक सन्देश देते फिरते हैं। इस त्यागी वीरको इस वेषमें देखकर सचमुच आत्मा पुलकित हो जाती है, और हृदयमें एक उन्नत गौरवका अनुभव होता है।

जिस समय श्रीयुत सेठ वच्छराजजीका स्वर्गवास हुआ था, उस समय आप केवल पांच छः लाखकी स्थावर और जंगम सम्पत्तिके उत्तराधिकारी हुऐ थे, मगर आपने अपनी प्रतिभा और सच्चाईके बलपर इस कार्यको इतना अधिक बढ़ा लिया कि गत पन्द्रहवर्षोंमें आप इस सम्पतिमेंसे करीब ११ लाख रुपया तो दानही कर चुके हैं। आपका व्यापारिक ज्ञान बहुतही उच्चकोटिका है। बम्बईके प्रतिष्ठित धनी मानी समाजमें आपकी बहुतही अच्छी प्रतिष्ठा है। जिस समय आप बम्बईके व्यापारिक क्षेत्रमें थे, उस समय कई व्यापारी कम्पनियोंके डाइरेक्टर थे। आपहीने टाटाके साथ मिल
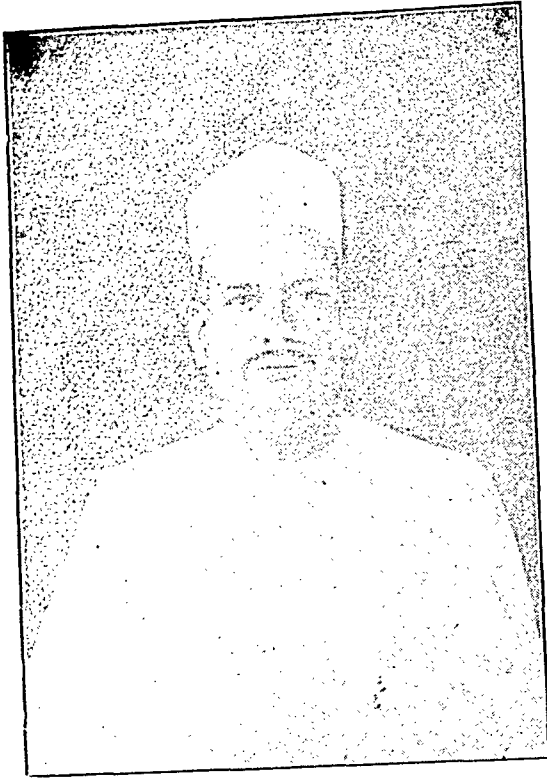
त्यागमूर्त्ति सेठ जमनालालजी बजाज

स्व० सेठ भगवानदास बागला रायबहादुर

स्व० सेठ महादेवप्रसादजी बागला

सेठ मदनगोपालजी बागला

इण्डिया इन्स्यूरंस कम्पनीकी स्थापना की थी, अब भी आप उसके डायरेक्टर हैं। बम्बईके शेयर बाजारके संस्थापकोंमें आप भी एक खास व्यक्ति थे। सर इब्राहीम रहीमतुल्लाके बाद आप इसके चेअरमैन भी रहे थे। मतलब यह कि आपका व्यापारिक जीवन भी बड़ा गौरवपूर्ण रहा है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

बम्बई—बच्छराज जमनालाल कालवा देवी रोड	इस फर्मपर बैंकिङ्ग, हुंडी चिट्ठी और कॉटनका व्यवसाय होता है।
वर्धा-बच्छराज जमनालाल	यहां हुंडी चिट्ठी और कपासका व्यापार होता है।

मेसर्स भगवानदास बागला रायबहादुर

इस समय इस फर्मके मालिक श्री मदनगोपालजी बागला हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान चूरूमें (बीकानेर) है।

इस फर्मका हेड ऑफिस रंगून (बरमा) में है। बम्बईमें इस फर्मको स्थापित हुए करीब ६० वर्ष हुए। इस फर्मकी स्थापना सबसे पहिले रा० ब० भगवानदासजी बागलाने की। आपको भारत गवर्नमेंटने रायबहादुरकी पदवी प्रदान की थी। आप बड़े योग्य एवं चतुर व्यक्ति थे। आपका देहावसान संवत् १९५२में हुआ। आपके पश्चात् आपकी धर्मपत्नी इस कार्यको सम्हालती रही, क्योंकि भगवानदासजीके पुत्र महादेव प्रसादजी छोटी वयहीमें गुज़र गये थे, तथा उनके पुत्र श्री मदन गोपालजी नाबालिग थे। मदनगोपालजीने होशियार होनेपर इस फर्मके कामको सम्हाला, तथा इस समय आपही इस फर्मका संचालन करते हैं।

इस फर्मकी ओरसे रंगून, मुकामाघाट, रामेश्वर, चूरू आदि स्थानोंपर धर्मशालाएं बनी हुई हैं रंगून, चूरू माण्डले आदि स्थानोंपर मन्दिर तथा अन्य कई स्थानोंपर तालाब एवं कुएं बने हुए हैं। कलकत्तेमें हरिसनरोडपर आपका रा० ब० भगवानदास ागला हॉस्पिटल नामसे एक अस्पताल भी चल रहा है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ रंगून -रा० ब० भगवानदास बागला मुगलस्ट्रीट T. A. Bahadur	टिम्बर एण्ड राइस मरचेंट तथा लैण्डलॉर्डसका काम होता है।
२ मांडले-रा० ब० भगवानदास बागला मारवाड़ी बाजार T. A. Bahadur	यहां आपकी एक टिम्बरकी और एक राइस फैक्टरी है तथा बैंङ्किगका व्यापार होता हैं।

३ मोलमीन (बरमा) रा० ब० भगवानदास बागला T. A. Bahadur.	यहांपर भी आपकी एक टिम्बर और एक राइस फेक्टरी है तथा बेङ्किग बिजिनेस होता है
४ मामू (बरमा) रा० ब० भगवान दास बागला	यहां जमीदारी तथा बैङ्किग बिजनेस होता है।
५ कलकत्ता—रा० ब० भगवानदासबागला स्ट्रेंड रोड नीमतल्ला स्ट्रीट T. A. Kayora	टिम्बर मर्चेंट, बेङ्किग वर्क तथा जायदादका काम होता है,यह फर्म गव्हर्नमेंट रेलवे कंट्राक्टर है।
६ बम्बई—मेसर्स भगवान दास बागला रा० ब०—कालबादेवी रोड T. A. Sarvabhom	इस फर्मपर बेङ्किग, टिम्बर तथा राइस एवं कमीशन एजेंसीका काम होता है।
७ चूरू—मेसर्स जेतरूप भगवान दास	यहां आपका खास निवास स्थान है।

मेसर्स मामराज रामभगत

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ हरकिशनदासजी, सेठ मंगलचन्दजी, सेठ दुलीचन्दजी, सेठ बेणी प्रसादजी, सेठ जुहारमलजी, सेठ फूलचन्दजी और सेठ केशवदेवजी हैं। आप अग्रवाल जातिके डालमियां गोत्रके सज्जन हैं। इस खानदानका मूल निवास स्थान चिड़ावा (जयपुर-स्टेट) में है। इस फर्मको यहांपर स्थापित हुए ५० वर्षसे ऊपर हुए। सबसे पहले यहांपर इसकी स्थापना सेठ मामराजजीने की। शुरु २ में आपने अपनी दुकानपर मालवेसे आनेवाली अफ़ीमका व्यवसाय शुरु किया। उस समय आपकी मालवेमें भी कई स्थानोंपर दुकानें स्थापित थीं। इस व्यापारमें आपको अच्छी सफलता और सम्पत्ति प्राप्त हुई। श्रीयुत मामराजजीके पश्चात् उनके चचेरे भाई रामभगतजी और शिवमुखरायजीने स फर्मके कार्यको वहुत उत्तेजन दिया। सेठ शिवमुखरायजी बड़े साहसी एवम् प्रतिभाशाली व्यक्ति थे।

इस समय इस फर्ममें श्रीयुत मामराजजी, श्रीयुत रामभगतजी और श्रीयुत वालकिशन दासजी के वंशज शरीक हैं। सेठ शिवमुखरायजीके वंशज अलग हो गये हैं। इस खानदानकी दान-धर्म और सार्वजनिक कार्योंकी ओर भी अच्छी रुचि रही है। आपकी ओरसे चिड़ावेमें एक धर्मार्थ अस्पताल चल रहा है। चिडावेकी १० हजारकी बस्तीमें एक मात्र यही अस्पताल है। इस अस्पतालमें रोगियोंके ठहरने एवम् भोजनकी भी व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त चिड़ावेमें आपकी ओरसे एक कन्या पाठशाला, एक संस्कृत पाठशाला, एक प्रारंभिक हिन्दी-पाठशाला और सदाव्रत आदि सार्वजनिक संस्थाएं चल रही हैं। हालहीमें वहांपर आपने गेस्ट-हाऊसके ढंगपर एक धर्मशाला भी बनवाई है। बद्रीनारायणके रास्तेपर लक्ष्मण-झूलेके पास आपने स्वर्गाश्रम नामक एक बड़ा रमणीय स्थान बना रक्खा है। यहांपर बानप्रस्थ लोगोंके रहनेकी, और सदाव्रतकी

सेठ हरिकृष्णदासजी डालमियां (मामराज रामभगत)

श्री दुलिचन्दजी डालमियां (मामराज रामभगत)

श्री बेणीप्रसादजी डालमियां (मामराज रामभगत)

व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त बनारस, बुलानालापर आपकी ओरसे एक बड़ी विशाल और सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है। हिंगोली और नारनोलमें भी आपकी एक २ धर्मशाला बनी हुई है। इसके अतिरिक्त तिलक-स्वराज्य-फंड, अग्रवाल जातीय कोष, मारवाड़ी विद्यालय कलकत्ता, तथा विशुद्धानन्द अस्पताल कलकत्तामें भी आपने अच्छी आर्थिक सहायता पहुंचाई है।

इस समय दुकानके संचालकोंमें सेठ रामभगतजीके पुत्र सेठ हरकिशनदासजी सबसे बड़े हैं। आप बड़ी शांत-प्रकृतिके पुरुष हैं। सेठ मंगलचन्दजी, सेठ दुलीचंदजी और सेठ बेणी प्रसादजी, सेठ मामराजजीके पौत्र हैं। आप तीनों ही बड़े योग्य और सज्जन हैं। श्रीयुत दुलीचंदजी के हाथोंसे इस फर्मके अन्दर कई नये २ कार्यों की तरक्की हुई है। आप बड़े उदार, उत्साही एवम् व्यापार निपुण पुरुष हैं। श्रीयुत वेणीप्रसादजी डालमियां भी बड़े उत्साही, नवयुगके नवीन विचारोंके पोषक और सच्चे कार्यकर्ता हैं। आप इस समय मारवाड़ी चेम्बर आफ कॉमर्सके प्रेसीडेन्ट तथा ईस्ट इण्डिया कॉटन एसोसिएशन और सेन्ट्रल बैङ्क आफ़ इंडियाके डायरेक्टर हैं। गतवर्ष अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी अग्रवाल महासभाके आप सेक्रटरी रह चुके हैं। इसी प्रकारके और भी सार्वजनिक कार्योंकी ओर आपका बहुत प्रेम है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

हेड-आफिस, बम्बई—मेसर्स मामराज रामभगत, मुम्बादेवी T.A.dalmiya — इस फर्मपर रुई और गल्लेका प्रधान व्यवसाय होता है। बैंकिंग और कमीशन एजंसीका कामभी यह फर्म करती है। इस समय इस फर्मका काम निम्नाङ्कित विभागोंके द्वारा होता है।

बम्बई—मेसर्स हुकुमचन्द रामभगत — इस विभागमें रुईका जत्था और कमीशन एजंसीका कार्य होता है। इसके अधीन बम्बई प्रान्तमें कई स्थानोंपर शाखाएं है। खामगांव और चांदामें २ जीनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी भी इसकी ओरसे चल रही है। इसी फर्मकी एक शाखा जापान-कोबी बन्दरमें है। यहांसे जापान तथा यूरोपके दूसरे देशोंको रूईका एक्सपोर्ट होता है इस दुकानमें इन्दौरके सेठ सर हुकुमचन्दजीका साझा है।

बम्बई—मेसर्स ममराज बसन्तलाल — इस फर्मपर गल्लेकी बखारका व्यापार होता है। गल्लेकी कमीशन एजंसीका काम भी यह फर्म करती है यह फर्म चीनके कियाँगवान नामक प्रसिद्ध शक्करके चीनी व्यवसायीकी बम्बईमें सोल ग्यारंटर है।

इसके अतिरिक्त कलकत्ता, कानपुर, करांची आदि मुख्य २ भारतीय व्यापारी केन्द्रोंमें भी आपकी फर्म्स खुली हुई हैं। इन चारों फर्मों के अधीन यू० पी०, पंजाब, बरार और निजाम हैदराबादके भिन्न २ स्थानोंमें आपकी लगभग ४० शाखाएं भिन्न २ नामोंसे चल रही हैं।

कॉटन मिल्स

१ अहमदाबाद—न्यू स्वदेशी मिल्स लिमिटेड	इस मिलमें २५०००० स्पेण्डिल्स और ७०० लूम्स हैं इसमें आपका और शिवनारायणजी नेमाणीका साझा है।
२ अकोला—अकोला काटन मिल्स लिमिटेड	यह मिल पहले हुकुमचन्द डालमियां मिल्सके नामसे चलती थी। इसमें २३००० स्पेंडिल्स और ४५० लूम्स हैं। इसके साथ एक जिनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी भी है।

फेक्टरिज

हुकुमचन्द रामभगतके नामसे जो कारखाने हैं उनके अतिरिक्त हिंगोली (निज़ाम), सेलू (निजाम), पानीपत (पंजाब) कानपुर, मोरानीपुर और कुलपहाड़, :इन स्थानोंपर आपकी जीनिंग तथा प्रेसिंग फेक्टरियाँ चल रही हैं।

आईल मिल्स

हरपालपुरमें आपकी एक आईल मिल चल रही है।

इन्दौरके सरसेठ हुकुमचन्दजी और बम्बईके सेठ ताराचन्द घनश्यामदाससे इस फर्मका बहुत पुराने समयसे व्यापारिक सम्बन्ध चला आया है। हुकुमचन्द रामभगतके नामसे जितना काम चलता है, उन सबमें सेठ हुकुमचन्दजीका व आपका साझा है। इसके अतिरिक्त करांची डिस्ट्री-क्ट्स, बर्मा आईल कंपनीका कुछ काम आपके और ताराचन्द घनश्यामदासके साझेमें चल रहा है।

मेसर्स मेघजी गिरधरलाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री छगनलालजी गोधावत हैं। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं।

इस फर्मकी स्थापना छोटी सादड़ीमें हुई। वहां यह फर्म बहुत पुरानी है। बम्बईमें इस फर्मकी स्थापना संवत् १९७८ में हुई। इस फर्मके मूल संस्थापक सेठ मेघजी हैं तथा इसकी विशेष तरक्की सेठ मेघजीके पौत्र सेठ नाथूलालजीके हाथोंसे हुई। आप बड़े योग्य, दानी तथा व्यापारदक्ष पुरुष थे। आपने छोटी सादड़ीमें श्री श्वेताम्बर साधुमार्गीय नाथूलाल गोधावत जैन आश्रम नामक एक आश्रमकी स्थापना की। इस आश्रमके स्थायी प्रबन्धके हेतु आपने सवालाख रुपयोंका दान कर रक्खा है। सेठ नाथूलालजीका स्वर्गवास संवत् १९७६ की ज्येष्ठ वदी १० को हुआ। आपके पुत्र श्री हीरालालजीका देहान्त आपकी मौजूदगीहीमें हो चुका था। अब इस समय सेठ नाथूलालजीके पौत्र श्रीयुत् छगनलालजी इस फर्मका संचालन करते हैं, युवावस्थामेंही
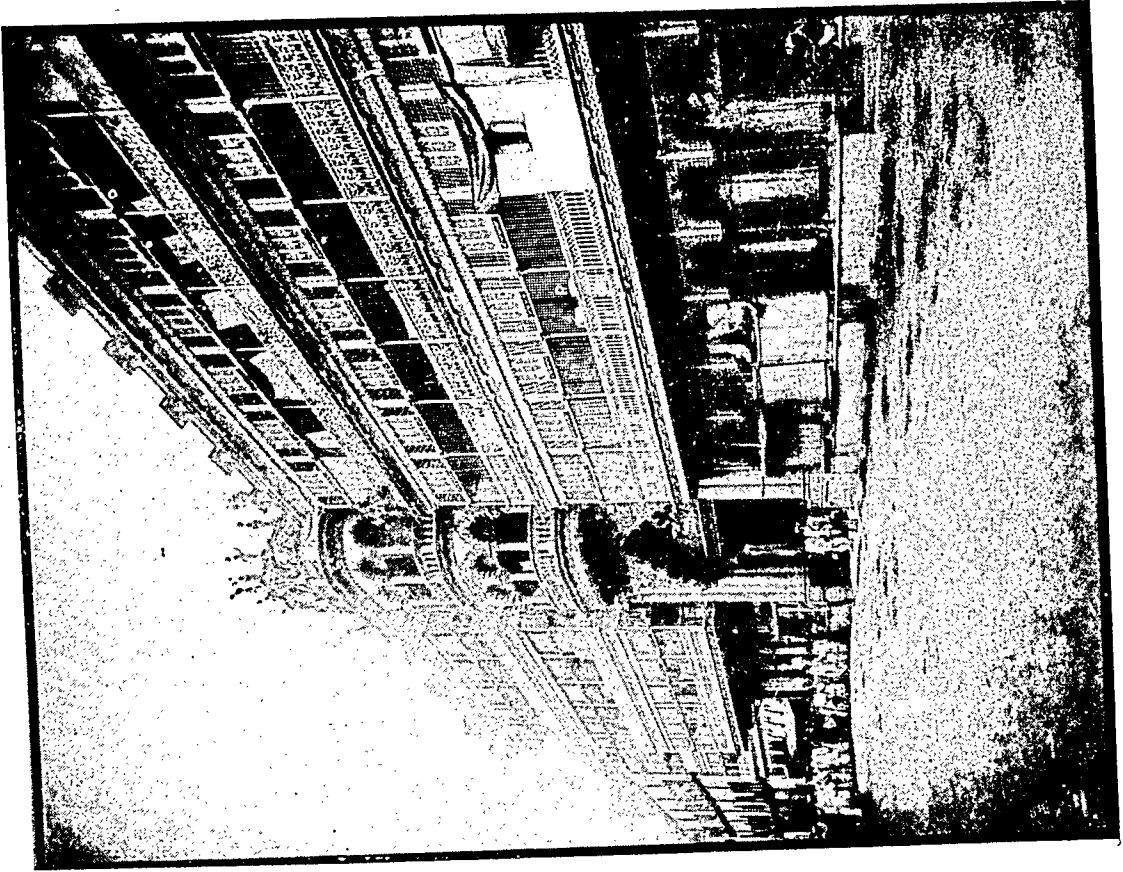
झगड़ाकोठी (टिकमाणी बन्धु) कलकत्ता
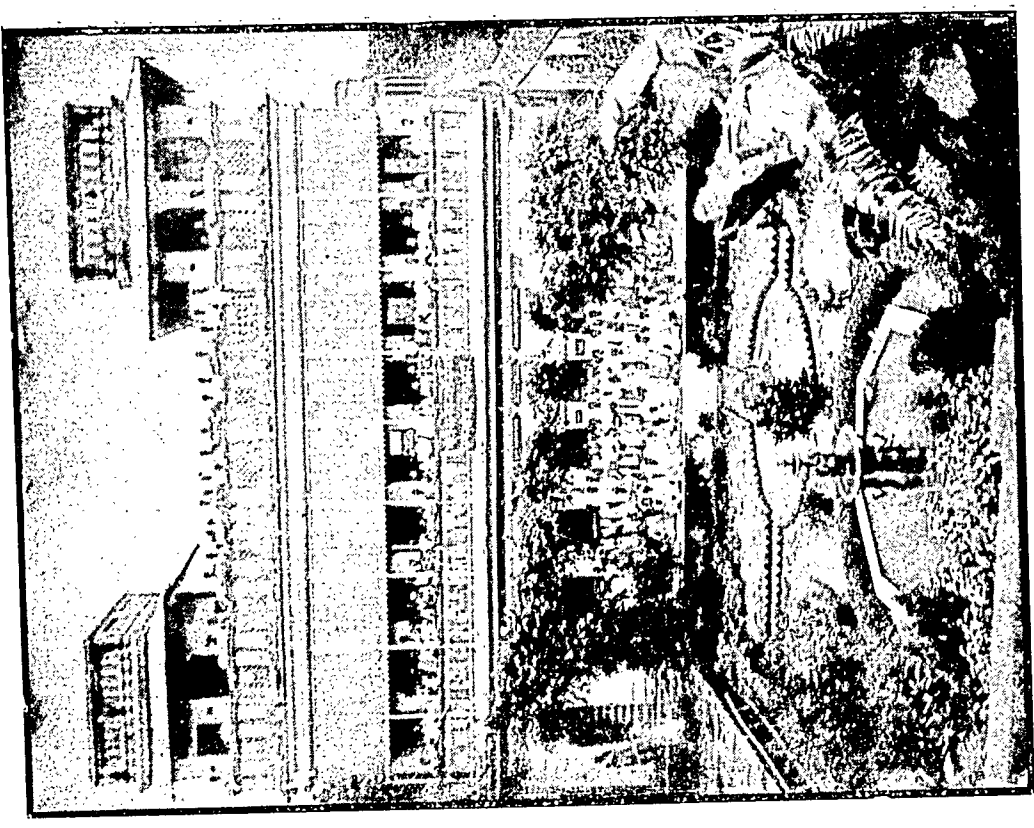
टिकमाणी संस्कृत कॉलेज, बनारस

सेठ भगतरामजी (शिवप्रताप रामनारायण) बम्बई

सेठ शिवप्रतापजी (शिवप्रताप रामनारायण) बंबई

सेठ रामनारायणजी (शिवप्रताप रामनारायण) बम्बई,

कुंवर रामेश्वरदासजी S/o (सेठ शिवप्रतापजी)

आपने अपनी फर्मके कार्यको उत्तमतासे सम्भाला है। आपका विशेष परिचय तथा फोटो छोटी सादड़ीमें दिया है। स्थानकवासी समाजमें आप समाज-सुधारके बहुतसे काम करते रहते हैं।

वर्तमानमें आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

१	हेड ऑफिस—छोटी सादड़ी-मेघजी गिरधरलाल गोधावत	इस फर्मपर बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी तथा लेन-देनका काम होता है। पहिले इस दुकानपर अफीमका बहुत बड़ा व्यापार होता था।
२	बम्बई—मेसर्स मेघजी गिरधरलाल पारसी गली धनजी स्ट्रीट T. A. Lantarn	इस फर्मपर कॉटन, सराफी, बैंकिंग तथा सब प्रकारकी कमीशन एजंसीका अच्छे स्केलपर व्यापार होता है।

मेसर्स शिवनारायण बलदेवदास बिड़ला

इस मशहूर फर्मके मालिकोंका निवासमें स्थान पिलानी (जयपुर-राज्य) है। अतएव आपका पूरा परिचय चित्रों सहित वहां दिया गया है।

यहां इस फर्मका पता—मारवाड़ी बाजार, बम्बई है। यहांपर बैंकिंग, हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

आफ़िसका पता—बिड़ला ब्रदर्स, युसुफ़ बिल्डिङ्ग चर्चगेट स्ट्रीट है यहां काटन और एक्सपोर्ट तथा इम्पोर्टका काम होता है।

मेसर्स शिवप्रताप रामनारायण

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान राजगढ़ (बीकानेर स्टेट) में हैं तथा इस फर्मका हेड ऑफिस कलकत्तामें है। कलकत्तेमें यह फर्म करीब ६०—७० वर्षोंसे चालू है। इस फर्मपर पहिले कलकत्तेमें गोपीराम भगतरामके नामसे व्यापार होता था। संवत् १९७२ में आपके भाई अलग २ हो गये। अब इस समय कलकत्तेमें भगतराम शिवप्रतापके नामसे व्यापार होता है। बम्बईमें इस फर्मको स्थापित हुए ३ वर्ष हुए। इस फर्मको विशेष तरक्की सेठ शिवप्रतापजीने दी। आपने बनारसमें टिकमाणी संस्कृत कॉलेज स्थापित किया। उसमें आपके खानदानकी ओरसे करीब ३ लाख रुपयोंकी सम्पत्ति लगी है। राजगढ़में आपकी ओरसे एक सत्यनारायणजीका मन्दिर—जिसमें ८० हजारकी लागत लगी है—बना है, तथा वहींपर आपकी २ धर्मशालाएं एवं ६ बड़े बड़े कुएं बने हैं।

आपने कोली (जिला हिसार) नामक गांव जो आपकी जागीरीका था एक ट्रस्टके जिम्मे कर उसकी आमदनीसे राजगढ़की धर्मशाला, सदाव्रत एवं स्कूल आदि संस्थाओंके सञ्चालनका स्थाई प्रबन्ध कर दिया है। राजगढ़में आपकी १ पाठशाला भी चल रही

है। सेठ भगवतीरामजी इस समय वृद्धावस्थाके कारण काशी-निवास कर रहे हैं। आपने अभी
अभी २ मास पूर्व अपनी जागीरका मेहलसरा (जिला हिसार) नामक ग्राम भी राजगढ़की संस्थाओं-
के प्रबन्धके लिये ट्रस्टके सुपुर्द किया है। इसके अतिरिक्त इस खानदानने राजगढ़ पिञ्जरा-
पोलमें २५ हजार रुपयोंकी सम्पत्ति दी हैं, तथा ५ हजार रुपया विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालयमें
सेठ भगवतीरामजी टिकमाणीके नामसे स्कालरशिप देनेके लिये दिये हैं।

इस समय इस फर्मका सञ्चालन सेठ शिवप्रतापजी, सेठ रामनारायणजी एवं लक्ष्मीनारायणजी
करते हैं। श्री लक्ष्मीनारायणजी टिकमाणी गत वर्ष अग्रवाल महासभाके सहायक मंत्री रह चुके
हैं। आप शिक्षित सज्जन हैं। तथा अग्रवाल समाजके अच्छे कार्यकर्ता हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१	कलकत्ता—मेसर्स भगतराम शिवप्रताप २६।३ आरमेनियन स्ट्रीट	यहां हुंडी चिट्ठी, गल्ला तथा हेशियनका व्यापार होता है।
२	बम्बई—मेसर्स शिवप्रताप रामनारायण बादामका झाड़ कालवा देवी रोड T. A. Anandmaya	यहां रुई, सोना, चांदी तथा कपड़ेकी कमीशन एजंसीका काम होता है।
३	कानपुर—मेसर्स भगतराम रामनारायण नयागंज	यहां बारदान, गल्ला तथा आढ़तका काम होता है।
४	हिसार—मेसर्स भगतराम रामनारायण	यहां रुई, गल्ला तथा आढ़तका काम होता है।
५	हांसी [पंजाब] मेसर्स भगतराम रामनारायण	यहां आपकी १ जीनिङ्ग और १ प्रेसिङ्ग फैक्टरी है, तथा रुई, गल्लेका व्यापार होता है।
६	सरगोधा (पंजाब) मेसर्स भगतराम शिवप्रताप	यहां रुई गल्लेकी आढ़तका काम होता है।
७	उकाड़ा (पंजाब) मेसर्स भगतराम शिवप्रताप	रुई, गल्लेकी आढ़तका काम होता है।
८	राजगढ़ (बीकानेर स्टेट) मेसर्स शंकरदास भगतराम	यहां आपका खास निवास स्थान है, तथा गल्ला, किराना आदिका व्यापार होता है।

मेसर्स सनेहीराम जुहारमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान चिड़ावामें (शेखावाटी) है। इस फर्मको यहां
स्थापित हुए करीब १५ वर्ष हुए। कलकत्तेमें यह फर्म करीब ४० वर्षोंसे काम कर रही है। इस
फर्मके मालिक अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको बम्बईमें सेठ शिवचन्द्रायजीने स्थापित

श्रीलक्ष्मीनारायणजी (शिवप्रताप रामनारायण) बम्बई

श्री धनराजजी S/o सेठ रामनारायणजी

श्री तेजपालजी S/o सेठ रामनारायणजी

कुंवर लाला S/o श्री लक्ष्मीनारायणजी

श्री० सेठ रामकुमारजी (सनेहीराम जुहारमल) बम्बई

श्री० सेठ श्रीरामजी (सनेहीराम जुहारमल) बम्बई
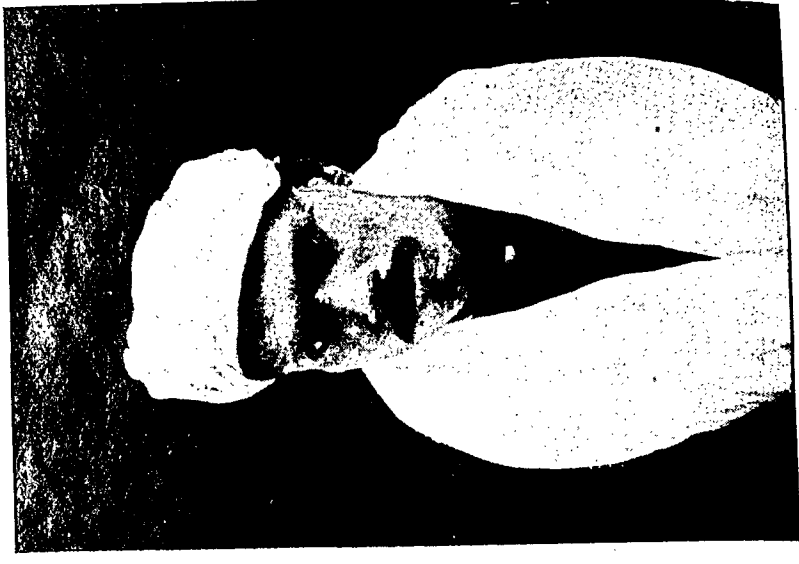
श्री०सेठ शिवचन्दरायजी (सनेहीराम जुहारमल) बम्बई

किया। आपके पिताजी सेठ रामेश्वरदासजी अभी विद्यमान हैं। इस फर्मको विशेष उत्तेजन सेठ शिवचन्दरायजीने दिया। कलकत्ता तथा बम्बईमें इस फर्मकी अच्छी साख एवं प्रतिष्ठा है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री सेठ रामकुंवारजी, सेठ श्रीरामजी, सेठ मुरलीधरजी सेठ शिवचन्द रायजी एवं सेठ सदारामजी हैं।

सेठ शिवचंदरामजी ईष्टइण्डिया कॉटन एसोसिएशनके डायरेक्टर हैं। अभी २ आपहीके परिश्रमसे सनातनधर्मावलम्बीय मारवाड़ी अग्रवाल पञ्चायत स्थापित हुई है।

वर्तमानमें आपके व्यवसायका परिचय इस प्रकार है :—

१ कलकत्ता—मेसर्स सनेहीराम जुहारमल बड़तल्ला स्ट्रीट बड़ाबजार	यहां हुंडी, चिट्ठी, रुई, हेशियन तथा चीनीका घरू एवं आढ़त का काम होता है।
२ बम्बई—मेसर्स सनेहीराम जुहारमल लक्ष्मी बिल्डिंग कालबादेवी	यहां हुंडी चिट्ठी, रुई, गल्ला, सराफी तथा कमीशन एजंसीका काम होता है। इसके अतिरिक्त इस फर्मके अन्डरमें शिवरीके पास एक न्यू आॅइल मिल है।
३ कानपुर—मेसर्स सनेहीराम जुहारमल नयागंज	यहां हुंडी, चिट्ठी, सराफी तथा मिलोंको रुई सप्लाईका काम होता है।
४ उमरावती (बरार) मेसर्स मन्नालाल शिवनारायण	यहां हुंडी, चिट्ठी तथा रुईका व्यापार होता है।
५ खाँमगांव [बरार]—मेसर्स मन्ना-लाल शिवनारायण	यहाँ भी हुण्डी चिट्ठी और रुईका व्यापार होता है।
६ अमृतसर—मेसर्स सनेहीराम जुहारमल	यहां रुई तथा गल्लेका व्यापार होता है।
७ अकोला -मसर्स विशनदयाल चिन्ताराम	इसफर्ममें आपका साझा है, तथा रुईका व्यवसाय होता है।
लक्ष्मीगंज- [पटियाला] मेसर्स गनेशनारायण ओंकारमल	इसमें गनेशनारायण ओंकारमलका तथा आपका साझा है। इस नामका यहाँ एक शुगर मिल है।
९ बनोसा (बरार) १० तिरपुर (बरार)	यहाँ आपकी एक एक जीन है।
११ करांची—मेसर्स बसन्तलाल रामकुँवार सराई रोड़	यहां गल्ला तथा रुईका व्यापार होता है।

बम्बईमें आपका चार और फर्मोंपर व्यवसाय होता है। जिनके नाम नीचे दिये जाते हैं।

(१) टुथशान एण्ड को० लिमिटेड—

(२) शिवचन्दराय सूरजमल—

(३) सनेहीराम जुहारमल एण्ड को०—

(४) अनोपचन्द मगनीराम—इसमें आपका साझा है।

इसके अतिरिक्त आपकी १०। १५ दुकानें पंजाब प्रांतमें हैं जो रुईके दिनोंमें खरीदीका काम करती हैं। इसफ़र्मके द्वारा कोबी (जापान) तथा यूरोपमें भी रुईका एक्सपोर्ट होता है तथा जापानसे इस फर्मपर डायरेक्ट कपड़ेका इम्पोर्ट होता है।

ओजो बोरिन कम्पनी नामक जापानी फर्मका बम्बईका काम भी यही फर्म करती है।

मेसर्स सदासुख गम्भीरचन्द

इस फर्मका हेड ऑफ़िस कलकत्ता है। इसके मालिकोंका निवास स्थान बीकानेर है। आप माहेश्वरी सज्जन हैं। आपका पूरा परिचय चित्रों सहित अन्यत्र दिया गया है इस फर्मकी बम्बई ब्रांचका पता—कालवादेवी रोड है। यहां बैंकिग तथा हुण्डी चिट्ठीका काम। होता है।

मेसर्स हरनन्दराय रामनारायण रुइया

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ रामनारायणजी रुइया हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान रामगढ़ (जयपुर-स्टेट) में है।

सेठ रामनारायणजीको बम्बई आये करीब ४५ वर्ष हुए, इसफर्मकी स्थापना आपके पिता सेठ हरनन्दरायजीनेकी थी। पहिले यह फर्म खेतसीदास हरनन्दरायके नामसे व्यवसाय करती थी। सेठ रामनारायणजीके हाथोंसे इस फर्मके व्यवसायको विशेष उतेजन मिला आपने सासुन जे०डे विड बेरोनेटकी दलालीमें बहुत सम्पत्ति उपार्जित की।

सेठ रामनारायणजी रुइया बड़े योग्य और व्यापारदक्ष पुरुष हैं। अग्रवाल समाजमें आपक अच्छा सम्मान है। आप बम्बई बैंक्क आफ इण्डिया, न्यूइन्डिया इश्युरंस कम्पनी, इंडस्ट्रियल कारपोरेशनके डायरेक्टर हैं। मारवाड़ी चेम्बर ऑफ कामर्सके कई वर्षोंतक आप सभापति रह चु हैं। बम्बईके प्रसिद्ध मारवाड़ी विद्यालय हाईस्कूलके स्थापकोंमें आपका नाम बहुत अग्रगण्य है। औ वर्तमानमें आप उसके सभापति हैं। इसके स्थापनमें आपने बहुत अधिक रकम दान की है। मार वाड़ी अग्रवाल महासभाके दूसरे अधिवेशनके समय आप स्वागतकारिणी समितिके सभापति थे एवं उस समय आपने उसमें १ लाख रुपयोंका चन्दा दिया था। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय आपने १ लाख रुपयोंकी रकम प्रदान की है। आपके इस समय चार पुत्र हैं, जिनके नाम श्री रा निवासजी, श्री मदनमोहनजी, श्रीराधाकृष्णजी एवं श्री सुशीलकुमार हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

स्व० सेठ हरनन्दरायजी रुइया (हरनन्दराय सूरजमल)
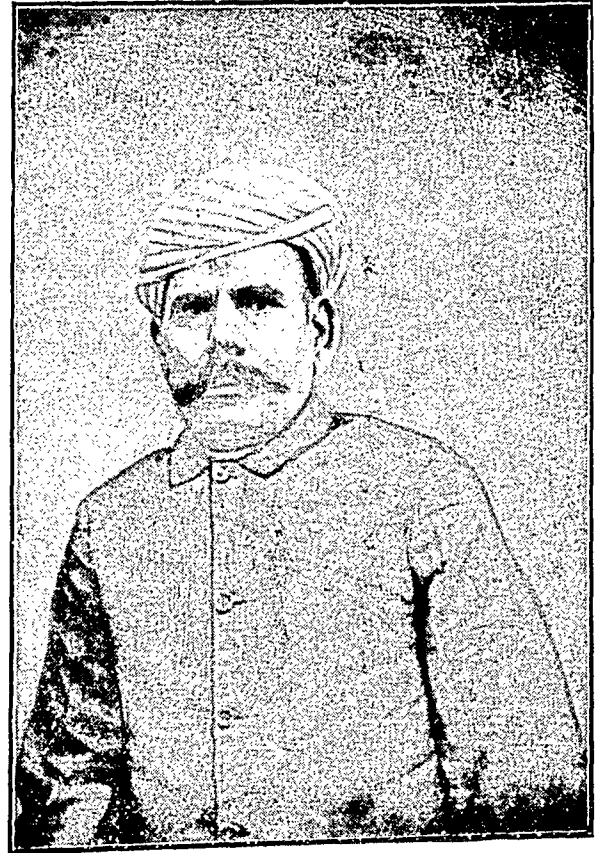
श्री० सेठ रामनारायणजी रुइया (हरनन्दराय रामनारायण)

श्री० सेठ सूरजमलजी रुइया (हरनन्दराय सूरजमल)

कुंवर रामनिवासजी रुइया (हरनन्दराय रामनारायण)

१ मेसर्स हरनन्दराय रामनारायण कालबादेवी रोड़-बम्बई २ मेसर्स रामनारायण हरनन्दराय एण्डसन्स १४३ एस्प्लेनेड रोडफोर्ट	यहांपर बैंङ्कि हुण्डी चिट्ठी तथा रुईका व्यवसाय होता है यह फर्म यहांके फिनिक्स मिलकी मैनेजिंग एजंट तथा ट्रेझरर है। यहां फिनिक्स मिलका ऑफिस है।

मेसर्स हरनंदराय सूरजमल रुइया

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ सूरजमलजी हैं आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपका निवास स्थान रामगढ़ है। इस नामसे यह फर्म संवत १८५३ से व्यापार करती है। पहिले इस फर्मपर खेतसीदास हरनंदरायके नामसे व्यापार होता था। इस फर्मके व्यवसायको सेठ सूरजमलजीने विशेष तरक्की दी। आपके पिता सेठ हरनंदरायजीका देहावसान हुए करीब १७।१८ वर्ष हो गये हैं।

सेठ सूरजमलजीने बनारस हिन्दू विश्व विद्यालयमें ५० हजार रुपया तथा अग्रवाल महासभामें ५० हजार रुपया प्रदान किया है। इसके अतिरिक्त स्थानीय मारवाड़ी विद्यालयमें भी अपने अच्छी रकम दी है आपकी ओरसे कनखल (हरिद्वार) में एक धर्मशाला बनी हुई है; और वहांपर सदावर्त जारी है। अभीतक उस स्थानपर आप करीब ३॥ लाख रुपया व्ययकर चुके हैं इसके अतिरिक्त आपके बड़े भ्राता सेठ रामनारायणजी तथा आपके साझेमें रामगढ़में एक वोर्डिंग हाउस व एक विद्यालय चल रहा है। जिसमें २० विद्यार्थी भोजन एवं शिक्षा पाते हैं। आपका वहां एक आयुर्वेदिक औषधालय भी चल रहा है। रामगढ़ (गोपलाना-जोड़ा) में आपकी १ धर्मशाला बनी हुई है तथा वहां सदाव्रतका प्रबंध है।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स हरनंदराय सूरजमल बदाम काझाड़ कालबादेवीरोड T·A Chhuhara	इस फर्मपर हुंडी चिठ्ठी तथा रुईके जत्थेका व्यापार होता है तथा यहांसे जापानको रुई भेजी जाती है।
२ कोबी—(जापान) मेसर्स हरनंदराय सूरजमल T. A.Surajmal	यहां कॉटनका व्यवसाय होता है। तथा आपका रुईका जत्था है।
३ बनोसा (दरियापुर-बरार) मेसर्स हरनंदराय सूरजमल	यहां आपकी दो जीनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी है तथा रुईका व्यापार होता है।
४ चानोर (बरार) मेसर्स हरनंदराय सूरजमल	यहां भी आपकी १ जीनिंग फेक्टरी है, तथा रुईका व्यापार होता है।

मुलतानी बैंकर्स एण्ड कमीशन एजंट्स

मेसर्स तीरथदास लुणींदाराम
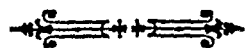
इस फर्मके मालिक शिकारपुर (सिंध) के निवासी अरोड़ा क्षत्रिय (मिंडा) जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको बम्बईमें करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ लुणींदारामजीने स्थापित किया था, तथा आरंभसे ही यह फर्म इसी नामसे व्यापार कर रही है। आपके पश्चात् सेठ सेवारामजीने इस फर्मके कामको सम्हाला और उनके बाद सेठ हीरानंदजी व प्रेमचन्दजीने इस फर्मके व्यापारको विशेष रूपसे बढ़ाया।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ प्रेमचन्दजीके पुत्र सेठ भोजराजजी हैं; इस फर्मकी ओरसे शिकारपुरमें एक हीरानंद आई हास्पिटल चालू है। यहां आंखका इलाज व सब तरहके ऑपरेशनका अच्छा प्रबंध है। दो मासके लिये दो तीन अमेरिकन डाक्टर भी इलाज करनेके लिये बुलाये जाते हैं। इस हास्पिटलमें बीमारोंके रहने व भोजन आदिका भी प्रबंध है।

आपकी ओरसे शिकारपुरमें स्टेशनके पास १ मुसाफिरखाना और श्री द्वारिकानाथजीमें एक धर्मशाला बनी हुई है। फिलहाल सेठ हीरानंदजीके नामसे एक जनाना अस्पताल बननेवाला है। जेसलमेरमें इस फर्मकी ओरसे एक कुंआ बनवाया है जिसमें करीब २५ हजार रुपयोंकी लागत लगी है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ शिकारपुर-मेसर्स तीरथदास द्वारकादास	यहां इस फर्मका हेडऑफिस है।
२ बम्बई—मेसर्स तीरथदास लुनिंदाराम-बार भाई मोहल्ला मस्कती बिल्डिंग नागदेवी स्ट्रीट पो० नं० ३ T. A. Joti swarup	यहां बेङ्किंग, तथा बेङ्कोंके साथ हुंडी चिट्ठीका व्यापार व कमीशन-का काम होता है यह फर्म मेसर्स ग्लेंडर्स, अरब्यूनाट एण्ड कम्पनी की जामनगर तथा बम्बईके वास्ते शूगरकी ग्यारेंटेड ब्रोकर

स्व० हीराचन्द लूनिंदाराम (तीरथदास लुनिंदाराम) बम्बई

स्व० प्रेमचन्द सेवाराम (तीरथदास लनिंदाराम) बंबई

सेठ भोजराज प्रेमचन्द (तीरथदास लुणिंदाराम) बम्बई

सेठ द्वारकादास ज्ञानचन्द (नन्दराम द्वारकादास) बम्बई

३ लाहोर—मेसस तीरथदास लुधींदा राम शालमीगेट T. A. Joti swarup ४ मुलतान—मेसर्स तीरथ दास लुधिंदाराम चौकबाजार T. A. Jotiswarup ५ मांट गोमरी (पंजाब) तीरथ दास लुधिंदाराम T. A. Jotiswarup ६ अमृतसर—तीरथदास लुधींदा राम गुरु बाजार T. A. Jotiswarup ७ भटिंडा—तीरथदास लुधींदा राम T. A. Jotiswarup ८ करांची—तीरथ दास लुधींदाराम बम्बई बाजार T. A. Jotiswarup ९ लायलपुर—लुधींदाराम सेवाराम T. A. Jotiswarup १०. सरगोधा—लुधींदाराम सेवाराम T. A. Jotiswarup	इन सब फर्मों पर मेसर्स टोयो मेनका कैसा (जापानी फर्म) वालकट ब्रदर्स तथा स्ट्रासेस एण्डको० इन कम्पनियोंके लिए गेहूं, रुई आदि माल खरीदने तथा नाणा सप्लाई करनेका काम होता है। इसके अतिरिक्त हुण्डी चिट्ठी व कमीशन एजन्सीका काम भी इन दुकानोंपर होता है।

इस फर्मकी काटन तथा शीड़ वीटके सीजनमें पंजाब, सिंध तथा यू० पी०में करीब ६० टैम्परी ब्रांचेज खुल जाया करती हैं।

मेसर्स नंदराम द्वारकादास

इस फर्मके वर्तमान मालिक रायसाहब सेठ द्वारकादास ज्ञानचंद हैं, आपका मूल निवास स्थान शिकारपुरमें (सिंध) है। आप अरोडा क्षत्रिय (जेसिंग) जातिके सज्जन हैं। आपकी फर्म बम्बईमें करीब १६।२० वर्षोंसे व मलाबारमें ५० वर्षोंसे व्यापार कर रही है। सेठ द्वारिकादासजीको ५।६ वर्ष पूर्व गवर्नमेंटने रायसाहबकी पदवी दी है। आप शिकारपुरमें ऑनरेरी मजिस्ट्रेट तथा हिन्दू पंचायतके सभापति हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ शिकारपुर—नन्दरामदास ज्ञानचंददास २ बम्बई—मेसर्स नन्दरामदास द्वारकादास लक्ष्मी बिल्डिंग बारभाई मोहल्ला पो० नं० ३ T. A. shining	यहाँ हुंडी चिट्ठी तथा कमीशनका काम होता है। " "

३ कालीकट [मलाबार] नन्दराम द्वारकादास गुजराती स्ट्रीट T. A. satnarain	यहां हुंडी चिट्ठी तथा कमीशन एजंसी का काम होता है।
४ कोयमबटूर—मेसर्स नन्दराम दास द्वारकानाथ कोभटी स्ट्रीट T. A. Dwarikanath	" " "

मेसर्स नंदरामदास आत्माराम

शिकारपुरके राय साहब सेठ आत्माराम पेसूमल ऑनरेरी मजिस्ट्रेट वर्तमानमें इस फर्मके मालिक हैं। आप अरोड़ा क्षत्रिय जातिके सज्जन हैं। आपको गवर्नमेंटने सन् १९१५ में राय साहबकी पदवी दी थी, आप शिकारपुरमें म्युनिसिपल कमिश्नर भी हैं।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार हैं

१ शिकारपुर—मेसर्स पेसूमल किशनदास	यहां हेड ऑफिस है।
२ बम्बई—मेसर्स नन्दरामदास आत्माराम नागदेवी स्ट्रीट T. A. Vashati	यहां बैङ्किग वर्क होता है।
३ इरोड (मडालने नन्दराम आत्माराम T. A. Banker ४ कालीकट (मलाबार) नन्दराम दास आत्माराम T. A. Bajaj	" "

मेसर्स नंदरामदास हीरानन्द

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ रीझामलजी और कन्हैयालालजी हैं इनका खास निवास स्थान शिकारपुर (सिंध) में है। आप अरोड़ा जातिके हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ शिकारपुर—मेसर्स नन्दराम दास हीरानन्द	यहां हेड ऑफिस हैं।
२ बम्बई—मेसर्स नन्दरामदास हीरानन्द पोमल विल्डिङ्ग जकरिया मस्जिद T.A. Getmalani	यहां बेङ्किग सोना चांदी व कमीशनका काम होता है।

३ कोयम्बटूर—मेसर्स नन्दरामदास हीरानन्द वेसियाल स्ट्रीट T. A. Bajaj	यहां बैंकिंग तथा हुंडी चिट्ठीका काम होता है।
४ बङ्गलोर—मेसर्स नन्दराम दास हीरानन्द T.A.Shining	,, ,,

मेसर्स बेगराज टहलराम

इस फर्मको सम्वत् १९७०में सेठ बेगराजजीने स्थापित किया। आप खास निवासी शिकारपुर (सिंध) के हैं। अरोड़ा क्षत्रिय आपकी जाति है।

वर्तमानमें इस फर्मका संचालन सेठ मूलचंद बेगराजके पुत्र सेठ टहलरामजी, मोहनदासजी, आदि भाई करते हैं। शिकारपुरका काम सेठ हरीरामजी देखते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ शिकारपुर—बेगराज राधाकिशन दास	यहाँ हेड ऑफिस है।
२ बम्बई—मेसर्स बेगराज टहलराम भारभाई मोहल्ला—T.A.Compromise	इन सब फर्मोंपर बेंकिंग हुंडी चिट्ठीका काम होता है।
३ मद्रास—मोहनदास दयालदास साहुकार सेठ T. A. Compromise	
४ वेलोर (मद्रास) मोहनदास दयाल दास	
५ कनानोर (मलाबार) मोहनदास दयाल दास T.A,Jesingh	
६ मदुरा (मद्रास) मोहनदास दयाल दास	
७ कांजीवरम् (,,) मोहनदास दयाल दास	
८ पंडरोटी (,,] मोहनदास दयाल दास	
९ कोलम्बो [सिलोन] मोहनदास दयाल दास सी स्ट्रीट	

मेसर्स मंगूमल लुनिंदासिंह

इस फर्मके मालिक सेठ लुनिंदासिंह, सेठ सतरामसिंहजीके पुत्र अरोडा क्षत्रिय जातिके सज्जन हैं। आपका कुटुम्ब बम्बईमें १०० वर्षों से बैङ्किग व्यवसाय कर रहा है। वर्तमानमें आपकी फर्मको इस नामसे स्थापित हुए १०।१२ वर्ष हो गये हैं। इस कुटुम्बकी ओरसे शिकारपुरमें एक मुसाफिर खाना बना है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) शिकारपुर—मेसर्स सतरामसिंह लुनिंदासिंह	यहां इस फर्मका हेड ऑफिस है।
(२) बम्बई-मेसर्स मंगूमल लूनिंदासिंह बारभाई मोहल्ला नं०३ T.A. Amritdhara	यहां बैङ्किग हुंडी चिट्ठी तथा सराफीका काम होता है।
(३) मद्रास—मेसर्स मंगूमल लूनिंदासिंह साहुकार पैठ T.A.Getmalani	यहां बैङ्किग हुंडी चिट्ठी तथा कमीशन एजेंसीका कार्य्य होता है।
(४) बंगलोर-सिटी—मेसर्स मंगूमल लूनिंदासिंह छुंडा पैठ T.A. Pursotam	यहां हुंडी चिट्ठी तथा बैङ्किग विजिनेस होता है।
(५) रंगून—मेसर्स मंगूमल लूनिंदासिंह T.A. Satguru	यहां राइस शिपमेंट व राइसपर रुपया देना तथा वैङ्किग विजिनेस होता है।

मेसर्स मंगूमल जेसासिंह

इस फर्मके मालिक शिकारपुरके निवासी अरोड़ा क्षत्रिय जातिके हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब एक शताब्दि हुई है।

इसके प्रधान पुरुष सेठ सतरामसिंहजीके चार पुत्र सेठ लुनिंदासिंहजी, सेठ जेसासिंहजी, सेठ नारायणसिंहजी और सेठ चैलासिंहजी हुए। कुछ वर्षों पूर्व चारों भाई अलग अलग हो गये और आप लोगोंने सेठ मंगूमलजी (पितामह) के नामसे अपनी २ स्वतंत्र पेढ़ियें स्थापित कीं। इस फर्मके संचालक सेठ जेसासिंहजी थे। आपका देहावसान इसी साल संवत् १९८५ के बैशाखमें हो गया है। इस समय इस फर्मके मालिक सेठ जेसासिंहजीके ४ पुत्र सेठ हासासिंहजी, सेठ आत्मासिंहजी, सेठ रामसिंहजी और सेठ चतुर्भुज दासजी हैं। आपके यहां बहुत पुराने समयसे बैङ्किग विजिनेस होता है।

स्व० सेठ सतरामसिंह मंगूमल (मंगूमल जेसासिंह)

सेठ लुणिन्दासिंह सतरामसिंह (मंगूमल लुणिन्दासिंह)

स्व० सेठ जेसासिंह सतरामसिंह (मंगूमल जेसासिंह)

सेठ नारायणसिंह सतरामसिंह (मंगूमल हरगोविन्दसिंह)

सेठ हासासिंह जेसासिंह (मंगूमल जेसासिंह) बम्बई

से० आत्मासिंह जेसासिंह (मंगूमल जेसासिंह) बम

सेठ रामसिंह जेसासिंह (मंगूमल जेसासिंह) बम्बई

से० चतुर्भुजदास जेसासिंह (मंगूमल जेसासिंह) बम्बई

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) शिकारपुर—मेसर्स मंगूमल जेसासिंह	यहाँ इस फर्मका हेड ऑफिस है।
(२) बम्बई—मेसर्स मंगूमल जेसासिंह नागदेवी स्ट्रीट मस्कती बिल्डिंग T. A. Bajaj	यहां बैङ्किग हुंडी चिट्ठी तथा आढ़तका काम होता है।
(३) मद्रास-मेसर्स मंगूमल जेसासिंह साहुकार पैठ	बैङ्किग, आढ़त और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।
(४) बंगलोर सिटी-मेसर्स मंगूमल जेसासिंह दूंडा पैठ T.A. Satguroo	बैङ्किग आढ़त और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।
(५) त्रिचनापल्ली-मेसर्स मंगूमल जेसासिंह T.A, satnam	बैङ्किग आढ़त और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।
(६) रंगून—मंगूमल जेसासिंह मुगल स्ट्रीट	यहां राइस शिपमेंट राइसपर रुपया देना तथा बैङ्किग और आढ़तका काम होता है।

मेसर्स मंगूमल हरगोविंदसिंह

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ सतरामसिंहजीके तृतीय पुत्र सेठ नारायण सिंहजी हैं। आप शिकारपुर (सिंध) के निवासी अरोड़ा क्षत्रिय जातिके सज्जन हैं। आपके कुटुम्बकी चारों फर्म बम्बईके मुलतानी बैङ्करोंमें बहुत प्रतिष्ठित एवं पुरानी मानी जाती हैं। इस समय सेठ नारायणसिंहजी-के एक पुत्र सेठ हरगोविंद सिंहजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

[१] शिकारपुर-मेसर्स सतरामसिंह नारायण सिंह	यहां इस फर्मका हेड ऑफिस है।
[२] बम्बई-मेसर्स मंगूमल हरगोविन्दसिंह लक्ष्मी बिल्डिंग बारभाई मोहल्ला-पो० नं० ३ T, A. Narsingh	यहां बैङ्किग हुंडी चिट्ठी और कमीशनका काम होता है।
(३) मद्रास-मेसर्स मंगूमल हरगोविंदसिंह साहुकार पैठ T.A. Satkartar	” ”
(४] कोलम्बो-मेसर्स मंगूमल हरगोविंदसिंह सी स्ट्रीट T.A. Gurunanak	” ”

(५) त्रिचनापल्ली-मेसर्स मंगूमल हरगोबिंदसिंह किंगबाजार T.A. Hargobjnd	यहां बैंकिंग हुंडी चिट्ठीका काम होता है।
(६) बंगलोर-मेसर्स मंगूमल हरगोविंदसिंह डुडपेठ T.A. Omnarayan	”
(७) रंगून—मेसर्स मंगूमल हरगोविंदसिंह मरचेंट स्ट्रीट T. A. Om Satanam	यहां बैङ्किग हुण्डी चिट्ठी कमीशन तथा राइसका काम होता है।

मेसर्स मंगूमल चेलासिंह

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ चैलासिंह सतरामसिंह अरोड़ा क्षत्रिय जातिके सज्जन हैं। आपकी वय अभी ५२।५३ वर्ष की है। आपके खानदानकी ओरसे शिकारपुरमें एक मुसाफिर खाना बना हुआ है। सेठ चैलासिंहजीके दो पुत्र हैं जिनके नाम सेठ ईसरसिंह और लक्ष्मणदासजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ शिकारपुर—मेसर्स सतरामसिंह चेलासिंह	यहां हेड आफिस है।
२ बम्बई—मंगूमल चेलासिंह बारभाई मोहल्ला नागदेवी स्ट्रीट पो० नं० ३ T. A- Satguroo	यहां बैङ्किग हुंडी चिट्ठी और आढतका काम होता है।
३ मद्रास-मेसर्स मंगूमल चेलासिंह साहुकार पेठ T. A. Satguroo	” ” ”
४ बांगलोर-मेसर्स मंगूमल चेलासिंह डुडापेठ T. A. Parmatama	” ” ”
५ कालीकट [मालावार] मेसर्स मंगूमल चेलासिंह गुजराती स्ट्रीट	” ” ”

से० चेलासिंह सतरामसिंह (मंगूमल चेलासिंह) बम्बई

से० ईसरदास चेलासिंह (मंगूमल चेलासिंह) बम्बई

से० हरगोविन्दसिंह नारायणसिंह (मंगूमल हरगोविन्दसिंह) बम्बई

लक्ष्मणदास चेलासिंह (मंगूमल चेलासिंह) बम्बई
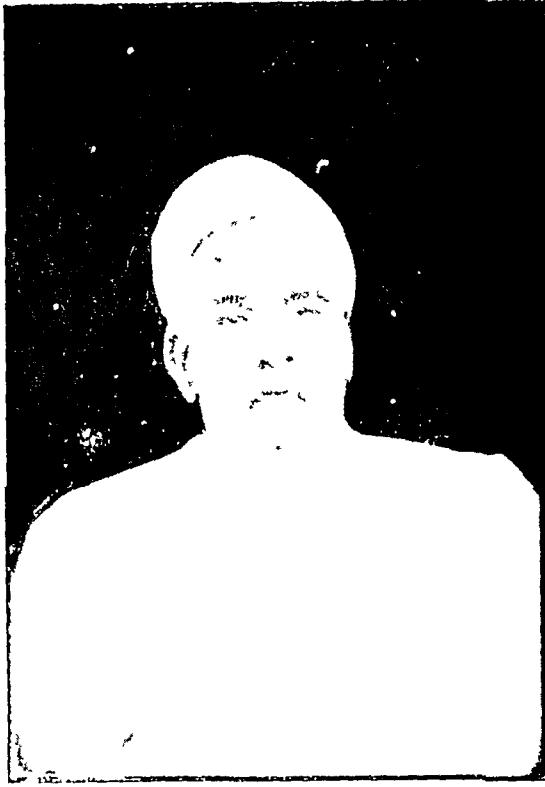
सेठ टहलरामजी (वेगराज टहलराम) बम्बई

सेठ मूलचन्दजी (किशनचन्द बूंटामल) ब

सेठ दीपचन्द खूबचन्द (खूबचन्द दीपचन्द) बम्बई

सेठ हरनामदासजी (जवाहरसिंह हरनामदास) ब

मेसर्स खूबचंद दीपचंद *

इस फर्मको १० वर्ष पहिले सेठ दीपचंदजीने स्थापित किया था। इस समय इस फर्मके मालिक सेठ खूबचंदजीके पुत्र चेतनदासजी, दीपचंदजी और थावरदासजी हैं। आप शिकारपुर (सिंध) के निवासी बधवा जातिके सज्जन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ शिकारपुर—मेसर्स खूबचंद चेतनदास	यहां आपका हेड ऑफिस है।
२ बम्बई—मेसर्स खूबचंद दीपचंद ७० नागदेवी स्ट्रीट T.A.Deepa	बैङ्किंग और कमीशनका काम होता है।
३ सेलम [मद्रास] मेसर्स खूबचंद दीपचंद	बैङ्किंग और कमीशनका होता है।

पंजाबी बैङ्कर्स एण्ड कमीशन एजंट

मेसर्स किशनचंद बूंटामल

इस फर्मके मालिक डि० अटकके निवासी हैं। आप खुखरायन सेठी जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको बम्बईमें सेठ किशनचंद बूंटामलने सन् १९२४में स्थापित किया था, इस फर्मके वर्किंग पार्टनर सेठ मूलचंदजी, हरीचंदजी, सेठ किशनचंदजी, सेठ परमानन्दजी, सेठ दुरानाशाहजी और सेठ देहराशाहजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१—पेशावर—मेसर्स अमीरचंद लखमीचंद अन्दर-शहर T. A. bansriwala	यह हेड ऑफिस है। इसका स्थापन सन् १८८० में हुआ। यहां बैंकिग हुंडी चिट्ठी, शक्कर और जमींदारीका काम होता है। यह फर्म गवर्नमेंट ट्रेझरर और इम्पीरियल बैंककी ट्रेझरर है।
२ करांची—किशनचंद बूंटामल, बम्बई बाजार T. A. mormukat	बैंकिंग और कमीशन एजंसीका काम होता है।
३ रावलपिंडी—मेसर्स मूलचंद मेहरचंद	" " "
४ होती (पंजाब) मेसर्स दुनीचंद हरीचंद ख्वाजागंज	बेङ्कर्स कमीशन एजंट और जमींदार।
५ होती (पंजाब) मेसर्स हरीचंद किशनचंद ख्वाजागंज	कमीशनका काम होता है।

---

* इस फर्मका परिचय देरीसे मिला, अतएव यथा स्थान नहीं छाप सके।

६ परखोडेरी मंडी (फ्रांटियर) डि० पेशावर हरीचंद किशनचंद	यह गुड़, अनाजकी मंडी है। यहां आपका कमीशनका काम होता है।
७ दराई—(फ्रांटियर) अमीरचंद लखमीचंद	यहां पर कमीशनका काम होता है।
कोहाट—(फ्रांटियर) बूटामल परमानन्द T. A. Bhagat	बेङ्कर्स कमीशन एजंट और शुगर मरचेंट।
९ बम्बई—मेसर्स किशनचंद बूटामल T. A. Brijwasi	बैंङ्किग और कमीशनका काम होता है।

मेसर्स जव्हारसिंह हरनामदास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान पुरुखा जिला शाहपुर (पंजाब) है। आप अरोड़-वंशी जातिके सज्जन हैं। वर्तमानमें आपका निवास सरगोधामें (पंजाब) है। इस फर्मकी स्थापना सेठ हरनामदासजीने सन् १९२५ में की थी। इनके अतिरिक्त ज्यादा कारबार करने वाले आपके बड़े भाई लधाशाहजी हैं। आपने सरगोधामें एक बहुत बड़ा कुआं बनवाया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ सरगोधा (पंजाब) हेड आफिस T. A. minocha	मेसर्स जवाहरसिंह हरनामदास यहां हुंडी चिट्ठी आढ़त व बैंकिंग बिजिनेस होता है।
२ खिलांवाली मंडी (पंजाब) जवाहरसिंह हरनामदास T. A. minocha	उपरोक्त व्यापार होता है।
३ मियांचन मंडी (पंजाब) T. A. minocha	यहां आपकी कॉटन जीन और प्रेस फेक्टरी है।
४ चक झूमरा मंडी (पंजाब) हरनामदास गोपालदास	आढ़त और बैंकिंग व्यापार होता है।
५ बम्बई-धनजी स्ट्रीट मेसर्स जव्हार सिंह हरनामदास T. A. Dhanwantary	यहां कॉटन, गेहूं, असली सोना, चान्दीकी आढ़त बैंकिंग बिजिनेस होता है।

सेठ ज्वालादासजी (धनपनमल दीवानचन्द) बम्बई
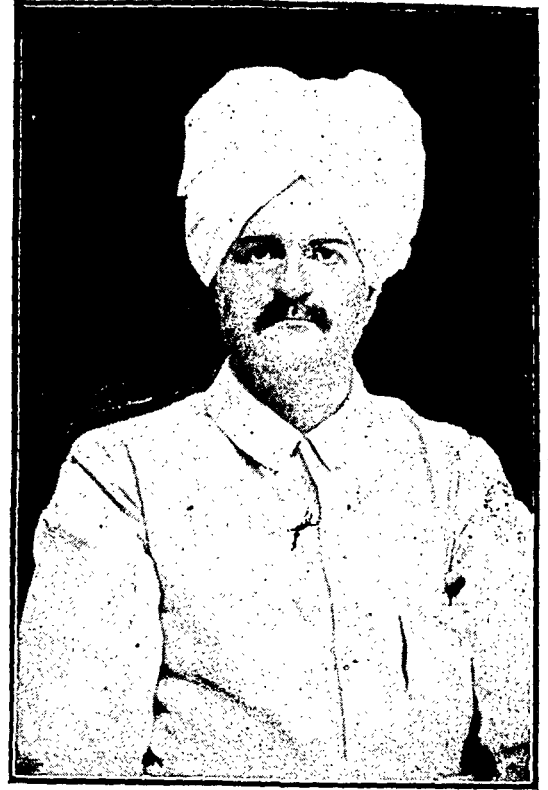
ला० बैंकामलजी (राय नागरमल गोपीमल) बम्बई

सेठ दीवानचन्दजी (धनपतमल दीवानचन्द) बम्बई

सेठ निरंजनदासजी (राय नागरमल गोपीमल) बम्बई

मेसर्स धनपतमल दीवानचंद

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ ज्वालादासजी तथा उनके छोटे भाई सेठ दीवानचंदजी हैं। इस फर्मको आपने लायलपुरमें करीब ३० वर्ष पूर्व स्थापित किया। आपका मूल निवास स्थान लायलपुर (पंजाब) है। इस फर्मकी विशेष तरक्की भी आप दोनों भाइयोंके हाथोंसे हुई।

आपकी ओरसे लायलपुरमें एक धनपत-हाईस्कूल चल रहा है। तथा आपने अपनी माता के नामसे लायलपुरमें स्त्रियोंके लिये एक अस्पताल खोल रक्खा है।

आपकी नीचे लिखे स्थानोंपर दुकानें हैं—

दुकान	विवरण
१ लायलपुर (पंजाब) मेसर्स धनपतमल दीवानचंद T.A.Dhanpat	यहां इस फर्मका हेड आफिस है तथा हुंडी चिट्ठी और आढ़त का काम होता है।
२ लाला ज्वालादास दीवानचंद लायलपुर पंजाब T·ABirmani ३ धनपतमल दीवानचंद जेड़ावाला लायलपुर (पंजाब) T.A.Dhanpat ४ लायलपुर धनपतमल दीवानचंद-गीदड़वाला (पंजाब) T.A- Dhanpat ५ धनपतमल ज्वालादास-आरफवाला लायलपुर (पंजाब	यहां आपकी एक २ जीनिंग फैक्टरी व प्रेसिंग फैक्टरी है। तथा रुईका व्यापार होता है। आइल मिल भी जीनिंग फैक्टरीके साथ है।
६ दीवानचंद जीवनलाल लायलपुर [पंजाब]	आपकी यहां एक आइल फेक्टरी तथा फ्लोअर मिल है।
७ करांची—धनपतमल दीवानचंद बंदररोड T. A. Dhanpat	यहांपर हुंडी चिट्ठी तथा आढ़तका काम होता है।
८ बम्बई—धनपतमल दीवानचंद पायधुनी T. A.Dhanpat	इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी तथा आढ़तका काम होता है।
९ अकालगढ़ [पंजाब] धनपतमल दीवानचंद	यहां आपकी राइस मिल है।
१० महंड विलोचन [पंजाब]	यहां आपकी जीनिंग फेक्टरी है।

इसके अतिरिक्त रामनारायण सत्यपालके नामसे, लाहौर, झरिया, कलकत्ता, रानीगंज, तथा लायलपुरमें कोलका व्यापार होता है। कलकत्तेका तारका पता फेथ (Fath) तथा अन्य स्थानोंपर (Fortune) है।

मेसर्स राय नागरमल गोपीमल

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास स्थान फीरोजपुर है। इस फर्मको बम्बईमें ३० वर्ष पूर्व लाला वेङ्कामल जी ने स्थापित किया था। इस समय इस फर्मके मालिक लाला वेङ्कामल जी के पुत्र लाला-निरञ्जनदास जी ए० एम० एस० टी० बी० एस० सी० हैं। आप बहुत शिक्षित एवं सज्जन महानुभाव हैं। यह फर्म यहांकी पंजाबी फर्मोंमें बहुत पुरानी एवं प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ कैथल—मेसर्स बेंकामल निरंजन दास डि० करनाल [पंजाब] T. A. Pawan	(हेड आफिस) यहां आपकी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है और कॉटन बिजिनेस होता है।
२ मथुरा—मसर्स बेंकामल निरंजन दास T.A.Pawan	यहांपर आपके पंजाबी कारखानेका नाम जीन प्रेस फेक्टरी है। तथा कॉटन बिजिनेस होता है।
३ पटोकी [पंजाब] „ „—	जीन प्रेस फेक्टरी तथा काटन बिजिनेस होता है
४ मोगा [पंजाब] T. A. Amrit	„ „ „
५ फीरोजपुर सिटी—पंजाब। राय नागरमल गोपीमल बड़ाबाजार T. A. Pawan	यह फर्म करीब १००वर्षोंकी पुरानी है। यहां बेङ्किंग व हुंडी चिट्ठीका बिजिनेस होता है।
६ बम्बई—रायनागर मल गोपीमल भरोंचा बिल्डिंग—कालबादेवी	यहां बैंङ्किग, आढ़त व रुईका व्यापार होता है।

इस फर्मकी ओरसे राय नागरमल गोपीमलके नामसे फीरोजपुरमें एक बहुत बड़ी सराय बनी हुई है और फीरोजपुरमें आपका लाला हरभगवानदास मेमो हाई स्कूल नामसे एक स्कूल चलता है। आपकी ओरसे लाहोरके डी० ए० बी० कॉलेजमें कई इमारतें बनी हुई हैं। कहनेका तात्पर्य यह है कि इस खानदानके मालिकोंका शिक्षाकी उन्नतिकी ओर विशेष लक्ष रहा है। पंजाबमें यह खानदान मशहूर रुईका व्यापारी माना जाता है; एवं बहुत प्रतिष्ठाकी नजरोंसे देखा जाता है।

मेसर्स भगवानदास माधौराम

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान अमृतसर (पंजाब) है। आप खत्री जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको यहां सेठ भगवानदासजीने करीब २० वर्ष पूर्व स्थापित किया था। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ माधौरामजी व आपके पुत्र सेठ नरोतमदासजी है। नरोत्तमदासजी शिक्षित सज्जन हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) अमृतसर—मेसर्स भगवानदास माधौराम, गुरू बाजार T A Sarswati—यहां बेङ्किग व चांदी सोनेका व्यापार होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स भगवानदास माधौराम, माधौराम बिल्डिंग कालबादेवी—T A "Surajbansi यहां भी बैंङ्किग बिजिनेस व चांदी सोनेका व्यापार होता है।

कॉटन मर्चेण्ट्स एण्ड ब्रोकर्स

COTTON MERCHANTS & BROKERS.

कॉटन मर्चेंट्स

रुईका इतिहास

भारतमें सूत कातने और कपड़ा बुननेकी कलाका आरम्भ कबसे हुआ; यह निश्चित् रूपसे नहीं कहा जा सकता, परन्तु एक बात जो निश्चित् रूपसे कही जा सकती है वह यह है कि इस कलाके आधार भूत सिद्धान्तोंकी चर्चा स्वयं वेदोंमें आयी है; अतः इस कलाका जन्म यहां सहस्रों वर्ष पूर्व हुआ होगा, यह मानना असङ्गत न होगा। यद्यपि पाश्चात्य विद्वानोंके मतके आधारसे भारतकी परम्परा गत परिधान प्रथापर पक्षपात जनित प्रभाव पड़ता है, फिर भी इसमें तो सन्देह नहीं कि जहां गिनी नामक देशसे लाकर सूती कपड़ोंका प्रथम प्रचार लन्दनमें सन् १५९० ई०में किया गया वहां भारतमें कम-से-कम आजसे तीन हजार वर्ष पहिलेसे सूती कपड़ोंका प्रचार था।

मि० हेनरी ली एफ०एल०एसने अपने The vegetable lamb of Tartary नामक ग्रन्थमें लिखा है कि बहमा (Bahamas)के लोगोंने कोलम्बसको प्रथम बार सूत दिखाया और कोलम्बसने अपने जीवनमें पहिली बार क्यूबाके लोगोंको सूती कपड़े पहिने हुये देखा। इससे सिद्ध होता है कि ब्रिटेनवालोंने कोलम्बसकी यात्राके बाद ही सूतका वर्णन सुना। परन्तु भारतवासी हजरत ईसा-के सैकड़ों वर्ष पूर्वसे इसका व्यवहार करते आये हैं। सिकन्दर बादशाहकी चढ़ाईके विवरणमें रुई-की चर्चा बराबर मिलती है। अतः भारतमें इसके व्यवहारकी प्रथाका पाया जाना कुछ नया नहीं है। इसका व्यवसाय भी यहां बहुत पुराना नहीं, तो पुराना अवश्य ही है।

पुराने कागजोंके आधारपर मानना पड़ेगा कि १८ वीं शताब्दीके आरम्भमें यहांसे रूई विदेश नहीं भेजी जाती थी। बम्बईकी भौगोलिक विशेषताने उसे इस व्यवसायका प्रधान केन्द्र बननेमें सबसे अधिक सहायता प्रदान की है। भारतके कपास उत्पन्न करनेवाले केन्द्रोंके समीप होनेके कारण भी उसे अच्छा अवसर मिला है। बम्बईका बन्दर भी सब प्रकारसे जहाजी कार्यके लिये उपयुक्त है। इन सब कारणोंसे यह स्थान बहुत शीघ्र रुईके व्यवसायका प्रधान केन्द्र बन गया और ज्यों २ समय बीतता गया, त्यों २ उन्नति ही करता गया। यहांतक कि आज समस्त एशियामें यही एक प्रधान बाजार है जहां सबसे अधिक रुईका व्यवसाय होता है।

सन् १७८३ ई०के पूर्व पता नहीं लगता कि कभी यहाँसे रुई विदेश गयी थी या नहीं, परन्तु उस वर्ष ईस्टइण्डिया कम्पनीने ११४१३३ पौंड वजनके परिमाणमें रुई इङ्गलैंड भेजी। सन् १७९० ई० में कारखानेवालोंके कहनेपर ईस्टइण्डिया कम्पनीके डायरेक्टरोंने ४२२,२०७ पौंड वजनकी गाँठ रुईकी मंगाई, परन्तु सट्टेने प्रतिकूल परिस्थिति कर दी।

सन् १८२५से बम्बईमें रुईका व्यवसाय अच्छा चला। संयुक्त राज्य अमेरिकाके महाजनोंकी सट्टेबाजीसे अमेरिकन रुईका भाव चढ़ गया और भारतकी रुईको इंग्लैण्डके कारखानोंमें प्रवेश करनेका अवसर मिला। सन् १८३२में भी बहुत सी रुई भारतसे इंग्लैण्ड गयी। मतलब यह कि इस ओर बम्बईको अवसर मिलता ही गया और रुईके व्यवसायकी उन्नति होती गयी। अमेरिकन युद्धके समय बम्बईको सबसे बढ़िया स्वर्ण सुअवसर मिला और यहां रुईका व्यवसाय बहुत बढ़ गया। उस समय रुईके निर्यातका औसत २१५८२८४७ पौंड वार्षिक था। इसी बीच युद्धके एकाएक बन्द हो जानेसे यहाँके व्यापारमें कुछ सुस्ती आयी; परन्तु १८९०के बादसे आजतक वह बराबर उन्नति ही करता जा रहा है।

इस द्वीप पुंजके शैशवकालीन इतिहासके आधारपर पता चलता है कि प्रारम्भमें यहां रुईका बाजार वर्तमान टाउनहालके सामने भरता था, परन्तु रुईके कारण होनेवाली गड़बड़ीसे किलेके नागरिकों को बचानेके उद्देश्यसे सन् १८४४ ई०में रुईका बाजार यहांसे उठाकर कुलावामें लगाया गया। उस समय कुलाबाके चारों ओर खुला विस्तृत मैदान था और समुद्रतटवर्ती गांवोंसे छोटी २ डोंगियोंपर जो माल आता था, वह सरलता पूर्वक बाजारमें उतारा जा सकता था और बिक्री हो जानेके बाद बिना कठिनाईके जहाजोंपर लादा भी जा सकता था। यही कारण था कि वह स्थान रुईके बाजारके लिये उपयुक्त समझा गया। उस समय यह पता नहीं था कि रेलवे लाइनका विस्तार होते ही यहांके बाजार को भर देनेवाली तमाम रूई रेलवेसे आवेगी और समुद्रसे दूर रेलवेके माल—स्टेशनपर उतारी जायगी और वैसी दशामें वर्तमान कुलाबेसे भी यह बाजार उठाना पड़ेगा।

उन्नति होते देर नहीं लगती। एक समय वह भी आया, जब कठिनाईने भयङ्कर रूप धारण किया और वर्तमान कॉटनग्रीन (शिवरी)के बनवानेकी आवश्यकताने रुईसे सम्बन्ध रखनेवाले व्यापारियोंको बाध्य कर दिया। बहुत शीघ्र समुद्र पाटकर ५७१ एकड़ भूमिका विस्तृत मैदान तैयार हुआ और इस मैदानपर वर्तमान कॉटनग्रीन नामक रुईका अड्डा बनाया गया। आजकल यहींपर रुईका व्यापार होता है।

कॉटनग्रीन शिवरी

इस नवीन अड्डे के बनानेमें १ करोड़ ६३ लाख रु० खर्च हुए हैं। इसमें सब मिलाकर १७८ रुईके गोदाम हैं जो रुईका व्यवसाय करनेवाली बड़ी २ कम्पनियोंने किरायेपर ले रक्खे हैं। इनमें से प्रत्येक गोदाममें यदि १८ गांठें ऊपर नीचे रखी जायं तो ७५०० गांठे आ सकती हैं।

इसका उद्‌घाटन सन् १९२५ ई०के दिसम्बर मासमें हुआ था। इसीमें बाजारका मुख्य केन्द्र बाजार भवन (Exchange Bulding) भी है। यह भवन १८ लाख रुपये लगाकर बनवाया गया है इस विशाल भवनमें १२० दुकानें खरीदनेवालों और ८० बेचनेवालोंके लिये बनायी गयी है। यहां सौदा करनेके लिये अलग कमरे भी बने हैं

व्यवसाय मन्दिरका प्रधान कमरा पूर्वीय देशोंमें अपनो शानका अद्वितीय है। यह अमेरिकाके न्यूयार्क और ब्रिटेनके लिवरपुलके बाजारके आधारको लेकर बनाया गया है।

रुईके व्यापारका संक्षिप्त परिचय

अफीमका व्यापार नष्ट होनेके पश्चात् भारतमें यदि कोई व्यापार प्रधान रूपमें जीवित रहा है तो वह रुई और जूटका व्यापार है। इन दोनों व्यापारोंके मुख्य केन्द्रस्थान भारतमें क्रमशः बम्बई और कलकत्ता हैं।

प्रकृतिकी अखण्ड कृपासे भारतवर्षमें बहुत प्राचीन कालसे रुईकी ऊपज प्रचुरतासे होती है। कुछ समय पूर्व तो बाहरी देशोंमें भारतकी रुई प्रथम श्रेणीकी समझी जाती थी। इससे २५० नम्बर तकका बारीक और बढ़िया सूत तैयार होता था, पर जबसे यूरोपमें विज्ञानने अपनी उन्नति करना प्रारम्भ की और अमेरिकामें कृषि-विज्ञानके सम्बन्धमें नये २ प्रयोग होने प्रारम्भ हुए तबसे इन देशोंने प्रारब्ध और इन्द्र देवताके आसरे जीवित रहनेवाले भारतवर्षसे बाजी मार ली।

इस समय सारे संसारमें पांच मनके करीब वजनकी ढाई करोड़ रुईकी गाँठें तैयार होती हैं जिनमेंसे डेढ़ करोड़ औसतकी गांठें अकेले युनाइटेड स्टेट्स आफ अमेरिकामें पैदा होती हैं। भारतवर्ष में औसत पचास लाख गांठे तैयार होती हैं। और शेष पचास लाखमें मिश्र, चीन आदि दुनियांके तमाम दूसरे देश सम्मिलित हैं। रुईकी उत्तमतामें पहला नम्बर मिश्रका, दूसरा अमेरिकाका और तीसरा भारतवर्षका है। मिश्रकी रुईके तारकी लम्बाई १.५२ बैठती है जबकि भारतीय रुईके तारकी लम्बाई केवल १ बैठती है।

भारतवर्षमें कई प्रकारकी क्वालिटीकी रुई पैदा होती है। जैसे (१) सुपर फाइन (२) फाइन (३) फुलीगुड (४) गुड (५) फुलीगुडफेअर (६) गुडफेअर (७) फेअर इत्यादि। इनमेंसे भड़ौंच तथा ऊमराकी रुई सुपर फाइन और फाइन क्वालिटीकी होती है। खानदेशमें अधिकतर फुलीगुड क्वालिटी-

का कपास पैदा होता है। इसी प्रकार राजपूताना, सिन्ध पंजाब इत्यादिका माल फुलीगुड और फाइन क्वालिटीका आता है।

भारतवर्षमें जितनी रुई उत्पन्न होती है उसमेंसे यहाँकी आवश्यकताके अनुसार (मिल तथा दूसरे कामोंके लिये) रखकर शेष विदेशोंको चढ़ा दी जाती हैं। सन् १६२१-२२में ५३३८०२ टन रुई यहांसे विदेश गई थी। यह सब रुई अधिकांशमें बम्बईके बन्दरोंसे ही चढाई जाती है।

बम्बईमें रुईके व्यापारका मुख्य स्थान ग्रीन काटन मार्केट (सिवरी) है। यहांके गोदामोंमें (जिनका परिचय पहले दिया जा चुका है।) बम्बईकी तमाम कम्पनियां, व्यापारी और वैंकें अपना २ माल रखती हैं। रुईके काम करनेवाले सभी व्यापारी अपना और अपने आढ़तियोंका माल यहांपर उतारते हैं। यहांके व्यापारी अपने आढ़तियोंको उनके मालपर ८० प्रति सैकड़ा रकम पहले दे देते हैं और शेष रकम माल बिकनेपर दी जाती है। जो रकम पहिले दी जाती है, उसपर बारह आनाका व्याज लिया जाता है। कभी कभी ऐसा भी होता है कि मालका भाव अस्सी टकेसे भी नीचे गिरता चला जाता है, उस समय यहांके व्यापारी मालवालेके पाससे नुकसानीका रुपया (तारण) मंगा सकते हैं और यदि वे नहीं भेजें तो उनकी बिना इजाजतके माल बेच देनेका अधिकार रखते हैं। इसके लिये ये व्यापारी दैनिक या साप्ताहिक रिपोर्टोंके द्वारा अपने ग्राहकोंको रुईकी रुखसे वाकिफ करते रहते हैं। इन रिपोर्टोंमें न्यूयार्क, लिवरपुल इत्यादि विदेशी बाजारोंकी गतिविधिके समाचार, हाजिर माल और वायदेके भाव, बाजारकी तेजी मन्दीकी रुख, हुण्डीके भावकी खबर इत्यादि बातोंका उल्लेख रहता है।

इस प्रकारकी रिपोर्टें यहांके सिवरी बाजारसे, मारवाड़ी बाजारसे, ईस्टइण्डिया कॉटन एसोसिएशनसे, पटेल ब्रदर्सके यहांसे तथा और भी एक-दो अंग्रेजी कम्पनियोंके यहांसे निकलती रहती हैं।

यहांपर बिकनेवाली रुईपर बारह आना सैकड़ा आढ़त, दो आने गांठ मुकादमी बीमा और रेलवे बीमाचार्ज, यदि किसी मिलको माल बेचा गया हो तो आठ आना सैकड़ा मिलकी दलाली, मिलकी मुकादमी और नमूना प्रति गांठ आठ आना और धर्मादेका सवा आना प्रतिखण्डी (२८ मन) खर्च लगता है।

बम्बईमें दो प्रकारके रुईके व्यवसाय होते हैं। (१) हाजरका और (२) वायदेका। हाजरका व्यापार शिवरीमें होता है। यहां भारतीय मिलों, जापानी और लिवरपुलकी कम्पनियों और ऑफिसोंकी खरीदीपर ही बाजारकी मजबूती और घटा-बढ़ी रहती है। यहां रुईका बड़ा भारी दर्शनीय जत्था है। सन्ध्या समय वायदेका बाजार बन्द हो जानेपर ५ बजेके करीब इस बाजारमें दर्शनीय चहल-पहल रहती है। रुईके जत्थेदारोंकी संस्था मुकादम एसोसिएशन, हाजर रुईके व्यापार सम्बन्धी सब प्रकारका प्रबंध करती है। ईस्टइण्डिया कॉटन एसोसिएशन भी इस व्यवसायके लिये सब प्रकारका सुप्रबन्ध करती है।

वायदेका सौदा—भरोंच, ऊमरा और बङ्गाल ये तीन प्रकारके सौदे यहां विशेष प्रचलित हैं। इनमें भी विशेष प्रधानता भरोंचके सौदेकी है। अप्रैल मई और अगस्त सितम्बर इस प्रकार यहां पर दो भरोंचके सौदे होते हैं। वायदेका सौदा उस लेन देनको कहते हैं जिसमें माल तुरन्त नहीं देना पड़ता। जिस मितीका वायदा होता है, उस मितीपर माल देनेके इकरारसे व्यापारी परस्पर सौदा करते हैं।

पक्का वायदा—भरोंच, बङ्गाल और ऊमराके सौदे करनेवाले व्यापारीको २० हजार रुपया क्लीअरिंग हाऊसमें जमाकर कार्ड प्राप्त करना पड़ता है। बिना कार्डके किसी व्यक्तिके नामका सौदा बाजारमें नहीं हो सकता। भरोंचका सौदा जबतक अप्रैल मईमें खतम नहीं होता, तब तक व्यापारियोंकी लेवा बेचीं हुआ करती है और लाखों रुपयोंके नफा नुकसानका हिसाब हर १५ वें दिन हुआ करता है। इस प्रकारके सौदोंके भुगतान आदिको निपटानेके लिये क्लीअरिंगहाऊस नामकी संस्था स्थापित है। ये सौदे १२ से ५ बजे तक मारवाड़ी बाजारमें पक्के पाटियेपर और सन्ध्या समय शिवरीमें होते हैं। इन बाजारोंके भावोंकी उथल-पुथल और रुखके हजारों रुपयोंके तार प्रतिदिन बम्बईसे भारतके कोने २ में भेजे जाते हैं। बाहरके व्यापारी बड़ी उत्कंठासे राह देखा करते हैं। यहां यह लिख देना आवश्यकीय है कि बम्बई और भारतका बाजार न्यूयार्क और लिवर पुलके बाजारोंपर ही सर्वथा निर्भर रहता है। आज न्यूयार्कमें पानी अच्छा बरसा, बोहनी अच्छी हुई, फ्यूचर नरम आये, बस फिर हमारे यहांके बाजारको भी नीचेकी गति पकड़नी होगी, चाहे यहां रुईके पौधे सूख ही रहे हों। हमारे देशकी पैदावारीकी बाहुल्यता एवं न्यूनताका बाजारपर विशेष असर नहीं पड़ता। दुनियामें रुई पैदा करनेवाले देशोंमें सबसे प्रधान नम्बर अमेरिका का है। अमेरिकाने इस व्यवसायमें आश्चर्यजनक उन्नति कर दिखाई है। वहाँ बोअनी आरम्भ होनेके १ मास प्रथमसे ही व्यापारी इस विषयमें अपने २ मस्तिष्क लगाने लगते हैं। अमेरिकन सरकार भी बड़ी छानवीनके साथ खोजकर हर पंद्रहवें दिन हवा, पाकका अन्दाज, जीनिंग, खपत आदिके आंकड़ोंकी रिपोर्ट निकालती है और इन्हीं रिपोर्टोंके आधारपर बड़ी तेजीके साथ बाजारोंमें घटा-बढ़ी हुआ करती है। इस अठवाड़ियेमें अमेरिकामें पानी काफी बरसा, वायु अनुकूल चल रही है, बस अमेरिकाकी रुखपर सारी दुनियाके लोग बेच रहे हैं। दूसरे अठवाड़ियेमें ही पानी बन्द हो गया गरम हवाएं चलने लगीं, कपासके पौधोंमें बोलवीलजीवोंका उपद्रव शुरू होगया, बस फिर क्या है, एकदम बाजारकी रुख परिवर्तित होती है सब मन्दीवाले खरीदनेके लिये घबरा उठते हैं और बाजार तेजी की ओर

जोरोंसे बढ़ने लगता है। इस प्रकारकी १५।१६ रिपोर्टें अमेरिकन गवर्नमेंट प्रतिवर्ष प्रकाशित करती है और प्रत्येक रिपोर्ट अपनी पहिली रिपोर्टसे विचित्र और चौंकानेवाली होती हैं। न्यूयार्कमें १०॥ बजे खुलनेवाले बाजारका तार हमारे पास रातके ८।६ बजे पहुंचता है और उस समयसे न्यूयार्क बाजारके बन्द होनेतक तारोंका तांता बम्बईमें बराबर रातको १२ से २ बजेतक लगा रहता है। प्रति रातको हजारों रुपयोंके तार बम्बईमें आते हैं। प्रातःकाल अमेरिकाके क्लोजिंग फ्यूचर जाननेके लिये रुईका काम करनेवाला सारा आलम बड़ा उत्सुक हो उठता है। बम्बईमें रुईका भाव १ खण्डीपर रहता है और न्यूयार्कके सौदे एक रतल रूई पर होते हैं। यदि आज ५० पाइंट बाजार मंदा आया,तो अमेरिकाकी एक रतल रूईपर)॥ पैसा कम होगया। (१०० पांइंट=१ सेंट, १०० सेंट=१ डालर, १ डालर करीब ३=)। पक्के सौदेके अतिरिक्त रुईसे सम्बन्ध रखनेवाले और भी कई प्रकारके सौदे यहांपर होते हैं। जिनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार हैं।

गली, तेजी-मंदी (अथवा जोटा)—प्रत्येक वायदेपर निश्चित भाव चढ़ने और उतरनेके बाद जो नफा नुकसान देना पड़ता है वह गली जोटा या तेजी-मंदी कहा जाता है।

कच्ची खंडी—रुईके वायदेका कच्चा सौदा भी पक्के सौदेपर ही सर्वथा निर्भर रहता है। इसमें और पक्के सौदेमें इतना फरक है कि पक्का सौदा लम्बी मुद्दत तक रहता है। उसमें सौदा किये हुए मालको हाजिर रूपमें देनेका इकरार भी होता है। इसके विरुद्ध इस कच्ची खंडीमें प्रति शनिवारको कुलावाके भावपर भाव कट जाता है और उसपर सोमवारको नफा नुकसान पेमेंट हो जाता हैं।

फ्यूचरका धंधा—अमेरिकामें होनेवाली घट बढ़के तार जो यहां आते हैं उन्हींपर यहां रातको फ्यूचरका धंधा होता है। इसका भुगतान प्रति दूसरे दिन संध्या समय हो जाया करता है। इसका काम संध्या समय ४ बजे लिवरपुलका तार आनेसे लेकर रातके १२ बजे अमेरिकाके क्लोजिङ्ग फ्यूचर आजानेतक जारी रहता है।

आंक फरक (या जुआर)—अमेरिकाके फ्यूचरोंपर यह भयंकर नाशकारी धंधा जारी हुआ है। गवर्नमेंटका अंकुश होते हुए भी इस धंधेका इतना अधिक प्रचार है, कि प्रत्येक मामूलीसे मामूली मजदूर तथा शहरके लाखों आदमी झूठी मृगतृष्णामें पड़कर फना हो जाते हैं।

मेसर्स अमरसी दामोदर

इस फर्मको सेठ अमरसी दामोदरने करीब ६० वर्ष पूर्व स्थापित किया था। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ हरीदास माधवदास, सेठ मनमोहनदास माधवदास, और सेठ नंदलाल माधवदास हैं। यह फर्म आरम्भसेही रुईके एक्सपोर्ट इम्पोर्ट और कमीशनका काम करती है। इस फर्मका व्यवसायिक सन्बन्ध पूर्वीय देशोंके साथ विशेष है। सेठ हरीदास माधवजी ईस्टइण्डिया कॉटन एसोसिएशनके वाइस प्रेसिडेंट हैं। आपको रुईके व्यवसायका २५ वर्षोंसे अनुभव है। आपके २ छोटे भाई व्यापारके लिये यूरोप अमेरिका चीन आदि देशोंमें भ्रमण कर चुके हैं।

इस फर्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

[१] बम्बई-मेसर्स अमरसी दामोदर भुलेश्वर T. A. Mayoralpy } यहां कॉटनका काम होता है।

[२] बम्बई—माधवदास अमरसी एण्ड कम्पनी एसप्लेनेड रोड फोर्ट T. A. Warhber } रुईके एक्सपोर्ट इम्पोर्टका व्यवसाय होता है।

[३] बम्बई—अमरसी एण्ड सन्स वेलार्ड स्टेट फोर्ट T. A. Amersins } रुईके एक्सपोर्ट और इम्पोर्टका काम होता है।

इसके अतिरिक्त कपासकी सीजनमें तथा बाहरी प्रान्तोंमें भी आपकी खरीदी होती है। अकोलाकी मूलराज खटाऊ जीनिंग तथा प्रेसिंग फैक्टरीमें भी आपका साझा है।

मेसर्स नारायणदास राजाराम एण्ड को०

इस कम्पनीका ऑफिस नवसारी चेम्बर आउट्रमरोड फोर्टमें है। इसके तारका पता वर्दी (Worthy) बम्बई है और टेलीफोन नं० २०१०६ है। इसकी शाखाएं कमपला (Kampala) यूगैण्डा जिनजा (jinja) यूगैण्डा पालेज (Palaj) दन्तोई, आगरा, सूरत तथा दरियापुरमें हैं। यह कम्पनी स्थानीय ईस्टइण्डिया कॉटन एसोसिएशन, इण्डियन मर्चेन्ट्स चेम्बर तथा चेम्बर आफ कामर्स

नामक प्रसिद्ध व्यवसायी संस्थाओंकी सदस्य हैं। इसके यहां कपास और रुईका काम होता है। यह तैयार और वायदे दोनों प्रकारके सौदेका व्यवसाय करती है। यह भारतकी सभी प्रकारकी रुई तथा पूर्व अफरिकाकी रुईका व्यवसाय करती है। इसके सिवाय भारत तथा पूर्व अफरीकाकी रुईको इङ्गलैंण्ड, फ्रान्स, जर्मनी, इटली, स्पेन आदि दूर देशोंको थोकबन्द स्वयं भेजती है। इसकी रुईकी खरीद पूर्व अफ्रिकाके बाजारोंमें भी होती है। इस कम्पनीका स्थान भारतकी प्रतिष्ठित व्यवसायी कम्पनियोंमें माना जाता है। इस कम्पनीकी इतनी उन्नति में इसके मालिकोंकी व्यवसाय सिद्ध बुद्धि तथा उनकी व्यवसाय कुशलतत्परताका सबसे अधिक हाथ है। उन्हींके लोकप्रिय व्यवहारके कारण यह कम्पनी आज अपने गौरवको अक्षुण्ण बनाये हुए हैं। इस कम्पनीके मालिकोंमें स पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास के. टी. सी. आई. ई. सी. बी. ई. एम. एल. ए., बरजीवनदास मोतीलाल बी. ए. तथा रमनलाल गोकुलदास सरैया बी. ए. बी. एस. सी. हैं।

सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास के०टी०, सी० आई ई० सी० बी० ई० बम्बईके अग्रगण्य तथा प्रतिष्ठत नागरिक एवं सफल व्यवसायी हैं। आपने केवल बम्बई नगरके ही व्यवसाय एवं औ द्यौगिक स्वरूपको सम्मुज्वल बनानेमें अनुकरणीय भाग नहीं लिया, बरन् समस्त भारतके व्यवसायक बढ़ाने तथा भारतीय कला कौशल एवं उद्योग धन्धोंकी उन्नतिमें आदर्श कार्यकर दिखाया है। इस ना आप केवल बम्बईके ही नहीं, बरन् समस्त भारतके एक प्रभावशाली नेता हैं। आपका जन्म स १८७९ ई० में हुआ था। आपने बम्बई नगरमें ही शिक्षा पाई। स्थानीय एलफिन्स्टन कालेज ग्रेज्यूएट हो, आपने व्यवसायी क्षेत्रमें पदार्पण किया और थोड़े समयमें ही नारायणदास राजारा कम्पनीके प्रधान हिस्सेदार हो गये। यहांके प्रभावशाली व्यवसायी संघ इण्डियन मर्चेन्ट्स चेम्ब के आप संस्थापकोंमेंसे हैं। आप सन् १९२४ तथा २६ में इस संस्थाके प्रमुख रहे; तथा इन्ह वर्षोंमें इस संस्थाकी ओरसे आप लेजिस्लेटिव असेम्बलीके सदस्य भी रहे। आपने केन्द्रीय सरकार असहनीय व्यवसायको कम करानेके लिये भारतीय तथा योरोपियन व्यवसायियोंका एक संयु शिष्ट मण्डल स्थापित कर इस सम्बन्धमें सन् १९२२ में वायसरायसे भेंट की। आप यहाँ कॉटन एक्सचेंज तथा कॉटन ऐसोसिएशनके कुशल एवं जीवित कार्यकर्ता हैं, तथा यहाँकी ईस्ट इण्डिया कॉटन एसोसिएशनके आजकल आप प्रमुख हैं। आप रुईमें अन्य वस्तुओंकी मिलावट कट्टर विरोधी हैं। विदेश भेजनेमें अधिक सुविधा उत्पन्न करानेके हेतु आपने कपासकी विशु उन्नतिके लिये अटूट परिश्रम किया है। आपके ही उद्योगसे सन् १९२२ में भारत सरकारने कॉट ट्रान्सपोर्ट ऐक्ट नामक कानूनकी रचनाकी। आप इण्डियन सेन्ट्रल कॉटन कमेटीके सीनियर सदस्य र हैं तथा इन्दौरकी प्लान्ट रिसर्च इन्स्टीट्यूट नामक कपासके पौधोंके सम्बन्धकी खोज करनेवाल संस्थाके संचालक मण्डलके सदस्य हैं। बम्बईकी प्रान्तीय कौन्सिलमें योरोपीय युद्धके पूर्व आ

पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास के०टी०(नारायणदास राजाराम),बम्बई, सेठ मेघजी भाई थोबण जे०पी०(गील एंड को०),बंबई
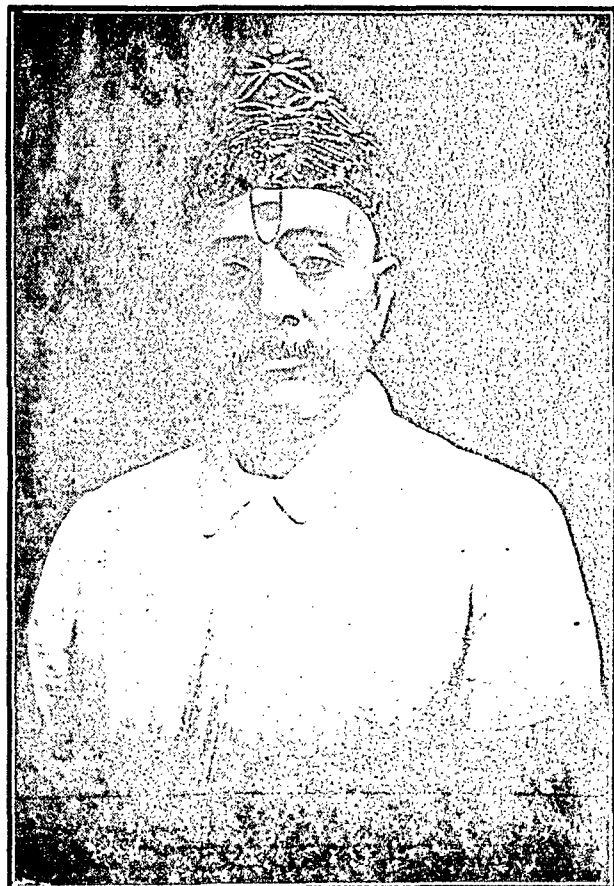
सेठ मोतीलाल मूलजी भाई बम्बई

सेठ जेठाभाई देवजी बम्बई

सदस्य थे। उस समय कौन्सिलमें आप ही एक ऐसे सदस्य थे जिन्होंने बम्बईमें आनेवाली रुईकी प्रत्येक गांठपर १) रु० नगद कर लिये जानेका विरोध किया था। आपने नगरके आयात और निर्यातपर कर लगानेके सिद्धान्तकी तीखी तथा जोरदार आलोचना की थी। सन् १९२०में आपने इण्डियन रेलवे कमेटी, सन् १९२२ में इंचकेप कमेटी तथा सन् १९२३ में ऐट ले कमेटीमें सदस्य रहकर भारत हित रक्षणके लिये अच्छी चेष्टा की। आप इम्पीरियल बैंकके लोकलबोर्डके सदस्य हैं। इसके प्रमुख होनेके नाते आप इम्पीरियल बैंकके गवर्नर भी हैं। आप यहांकी लगभग ३० बैंकों, ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनियों तथा इन्स्यूरेंस कम्पनियोंके सदस्य तथा डायरेक्टर भी हैं। सन् १९१४ से आप बम्बई पोर्ट ट्रस्टके ट्रस्टी हैं। तथा सन् १९२७ में इण्डियन चेम्बर आफ कामर्सके फिडरेशनके उप-प्रमुख नियुक्त किये गये थे। सन १९२६ में आपने रायल करेंसी कमीशनमें एक भारतीय सदस्यके रूपमें काम किया और भारतकी वास्तविक स्वार्थकी दृष्टिसे उसके स्वत्वके लिये अपना विरुद्ध मत निडर भावसे व्यक्त कर १६ पेंसकी हुण्डीकी दरके लिये देश व्यापी आन्दोलन खड़ाकर यहांकी प्रान्तीय कौन्सिलमें सन् १९१६ में सरकारी मनोनीत सदस्यके रूपसे काम किया। आप सन् १९२० में यहांके शरीफ भी रहे। सन १९११-१२ के अकालके समय प्रपीडितोंको सहाय पहुंचानेमें प्रधान भाग लेनेके कारण सरकारने आपको कैसरे-हिन्दका स्वर्णपदक प्रदान किया। योरोपीय युद्धके सम्बन्धमें चलाये गये वार रिलीफ फण्डमें काम करनेके उपलक्षमें सरकारने आपको एम० बी० ई० की उपाधि दी। इसी प्रकार अकाल प्रपीड़ितोंको सहाय पहुचानेका आपने सन १९१८-१९ में कार्य किया और सरकारने आपकी सेवाको सी० आई० ई० की प्रतिष्ठासे अलंकृत किया। सन १९२३ में आप सरके सम्मानसे सम्मानित किये गये। इस समय आप इण्डियन मर्चेन्ट्स चेम्बरकी ओरसे केन्द्रीय सरकारकी लेजिस्लेटिव एसेम्बलीके सदस्य हैं।

आप यहांके बालकेश्वर पहाड़के मलाबार कैसल रिजरोडपर रहते हैं और आपके आफिसका पता नारायणदास राजाराम कम्पनी है।

सेठ मेघजी भाई थोवण जे० पी०

सेठ मेघजी भाईका मूल निवास स्थान कच्छ (भुज) है। आप ओसवाल जैन स्थानकवासी कच्छी गुर्जर सज्जन हैं। आपके पिता श्री सेठ थोवण भाईकी आर्थिक परिस्थिति बहुत साधारण थी। प्रारंभिक गुजराती शिक्षा प्राप्त करनेके बाद सेठ मेघजी भाई ११ वर्षकी अवस्थामें बम्बई आये। दो तीन वर्षतक मामूली उम्मेदवारीका काम करनेके बाद आप अपने बड़े भाईके साथ गील कम्पनीमें रुईकी दलाली कमीशन एवं मुकादमीके व्यवसायमें भागीदारके रूपमें काम करने लगे उस समय

गील साहब भी मुफस्सिल कम्पनीमें काम करते थे। आपके भाइयोंने उन्हें उस कामसे छुड़ाकर रूईका व्यापार सिखाया, तथा उस समयसे पचास वर्ष हुए आप सब भागीदारके रूपमें काम करते हैं आपका व्यापार दिनोंदिन तरक्की करता गया। आप मद्रासकी चार पांच तथा बम्बईकी तीन चार मिलोंको रुई सप्लाई करते हैं तथा यहांसे लिवरपुलमें भी रुईका एक्सपोर्ट करते हैं।

सेठ मेघजी भाई ओसवाल समाजमें बहुत प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति हैं। आपको गवर्नमेन्टने सन १९२१ में जे० पी० की उपाधि दी है। महियर राज्यमें हरसाल होनेवाले हजारों जीवोंका बध आपहीके परिश्रमसे बन्द हुआ था। इस कार्यके लिये आपने एवं सेठ शान्तिदास आसकरण शाह दोनों सज्जनोंने १५००१) देकर महियरमें एक अस्पताल बनवा दिया है तथा भविष्यमें इस प्रकारकी जीव हिंसा न होने देनेके लिये उक्त स्टेटसे परवाना लिखा लिया है। कच्छ मांडवीमें आपने एक स्वजाति सहायक फण्ड और एक जैन संस्कृत पाठशाला स्थापित की है। आपकी ओरसे मांडवी हाई स्कूलमें जैन विद्यार्थियोंके लिये फोर्थ क्लाससे मैट्रिक तक स्कॉलरशिपका भी प्रबन्ध है। इसप्रकार आपने अभीतक करीब ३॥ लाख रुपयोंका दान किया है। बम्बई स्थानवासी जैन सकल संघके आप २२। २३ वर्षोंसे सभापति हैं, स्था० जै० कॉन्फ्रेंसके मलकापुर अधिवेशनके समय आप प्रमुख तथा बम्बई अधिवेशनके समय आप स्वागत कारिणीके प्रमुख रह चुके हैं।

सेठ मेघजीभाईके एक पुत्र हैं जिनका नाम सेठ वीरचन्द भाई है। आप भी व्यवसायमें सहयोग लेते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

१ मेसर्स गील एण्ड कम्पनी बेलार्ड पियर फोर्ट बम्बई T, A. Gillco	इस कम्पनीके द्वारा मिलोंको रुई सप्लाई करने तथा एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट बिजिनेस होता है, इसमें आपका साझा है।
२ मेसर्स गीलएण्ड कम्पनी—करांची	यहां भी उपरोक्त काम होता हैं इस कम्पनीमें आपका कई दिनोंसे साझा हैं।

मेसर्स शान्तिदास आशकरण शाह जे० पी०

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ शांतिदास आशकरण शाह जे० पी० हैं। आप कच्छ मांडवीके निवासी कच्छी जैन ओसवाल (स्थानकवासी) सज्जन हैं।

सेठ शांतिदासजीके पिताश्री सम्वत् १९२२ में बंबई आये थे प्रारम्भमें आप निकल कंपनीकी दलालीका काम करते थे। उस समय रुईके व्यवसायमें आपने अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। अंतिम अवस्थामें आप अपने वतनमें निवास करने लग गये थे और वहीं आपका देहावसान संवत् १९५५ में हुआ।

सेठ शांतिदासजी संवत् १९६७ में बंबई आये। यहां आरम्भमें आपने भाटिया समाजके प्रतिष्ठित व्यक्ति रा० ब० सेठ बसन खेमजीके हाथके नीचे व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त की।

श्री० सेठ शांतिदास आसकरण शाह जे० पी० बम्बई

सेठ रवीलाल शांतिदास शाह (शांति भुवन) बम्बई

सेठ वीरचन्द भाई मेघजी भाई बम्बई
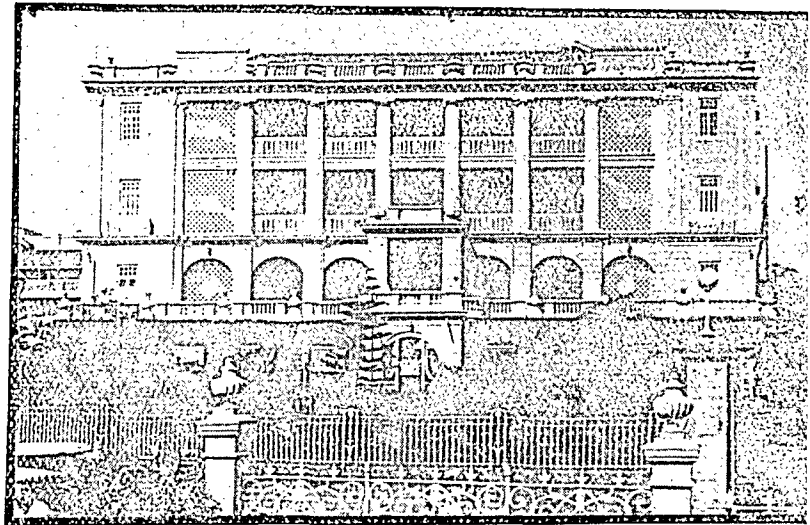
शांतिनिवास नेपियंसी रोड (शांतिदास आसकरण शाह) बम्बई

पश्चात कुछ समय गील कंपनीमें काम करते हुए आपने बहुत अधिक सम्पत्ति प्राप्त की। उस समय कुलाबाके प्रतिष्ठित व्यापारियोंमें आपकी गिनती थी।

संवत् १९७४ में सेठ शांतिदासजीने इस कंपनीसे अलग होकर अपना स्वतन्त्र व्यवसाय स्थापित किया। इस समय आप चांदी सोना रुई और शेअरका बहुत बड़े स्केलपर व्यवसाय करते हैं।

सेठ शांतिदासजी, देशभक्त गोखले द्वारा संस्थापित डेकन एज्यूकेशन सोसाइटी और हिन्दू-जीम खानाके पेट्रन हैं। आप जैन एसोसिएशन आफ इण्डियाके प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त आप कई प्रतिष्ठित जैन संस्थाओंके सहायक हैं। आपके एवं सेठ मेघजी भाई थोबणके परिश्रम से महियर स्टेटमें हर साल हजारों जीवोंका होनेवाला बध बंद हुआ है। उस कार्य्यके लिये आप दोनोंने १५००१ देकर महियर स्टेटमें एक अस्पताल बनवा दिया है। मांडवीमें विद्यार्थियोंके शिक्षण-के लिये आपकी ओर स्कालरशिपका भी प्रबंध है।

संवत् १९६८ के अकालके समय १५००१) अपने वहांकी पिञ्जरापोलको दान दिये थे। एवं उस समय हमेशा १०० आदमियोंको भोजन (खीचड़ी) देनेकी व्यवस्था भी आपने करवाई थी। इसी प्रकार १९७७।७८ में अहमदनगरमें दुष्कालके समय १००० मनुष्योंको प्रतिदिन भोजन देनेका प्रबंध आपकी ओरसे किया गया था। आपने ५० हजार रुपया मालवीयजीको हिन्दू युनिवर्सिटीके लिये दिये हैं।

सेठ शांतिदासजीके प्रति जनताका विशेष प्रेम है। आप सन् १९२० में गिरगांव इलाकेकी ओरसे म्युनिसिपैलेटी मेम्बर निर्वाचित हुए थे। सन १९८८ में आपको गवर्नमेंटने जे० पी० की उपाधि दी है। यूरोपीय महासमरके समय आपने एक वर्षमें करीब २॥ लाख रुपयोंके लोन खरीदे थे। प्रिन्स आफ वेल्सके भारत आगमनके समय आप पूवर फीडिंग कमिटीके प्रेसिडेण्ट थे। उस समय आपने उसमें २५०००) भी दिये थे।

इस समय आप न्यू ग्रेट मिल, कोहिनूरमिल, मॉडल मिल नागपुर, ज्युपिटल जनरल इंश्युरेन्स कंपनीके डायरेक्टर और मद्रास युनाइटेड प्रेसके प्रेसिडेंट हैं। आपका कई राजा महाराजाओंसे अच्छा परिचय है। इस समय आप विलायत यात्राके लिये गये हुए हैं।

आप बम्बईके गेगनपेन्ट एण्ड वार्निस कंपनी नामक रंगके कारखानेमें एलन ब्रदर्सके साथ भागीदार हैं।

आपका निवासस्थान है नेपियंसी रोड, शांति-निवास टे० नं० ४०२८८ है।

इस समय आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम सेठ रवीलालजी है। आप भी अपने पिताश्री के साथ व्यवसायमें भाग लेते हैं। वर्त्तमानमें आपकी उम्र २७ वर्षकी है।

अर्जुन खीमजी एण्ड को०—इस कंपनीका बंबई आफिसका पता डोंगरी स्ट्रीट मांडवी है। यह स्थानीय ईस्ट इण्डिया कॉटन एसोसिएशन की सदस्य है। इसका मुख्य टे० फ़ो० नं० २४२५३ है। इसके एक्सपोर्ट आफ़िसका टेलीफोन नं० २५७३८ है। इसके रूईका गोदाम न्यू कॉटन डिपो सिवरीमें है। गोदामका टे०नं०४१०४२,इस कंपनीकी स्थापना सन् १८८५ ई०में हुई। यह कंपनी पुरानी और प्रतिष्ठित है। इसकी शाखाएं खामगांव,कारंजा, धारवाल हुबली, अमलनेर धूलिया, बनोसा, डिग्रस, जलगांव, दरियापुर और मलकापुरमें है। इसके एजंट—बार्सिलोना, घेंट, राटर्डम, मिलन, एम्सटर्डम, शङ्घाई, ज्यूरिक आदि शहरोंमें फैले हुए हैं। इसके तारके पते—कबुलधू, चिदनचंद, और आनन्द (कारंजा) है इसके यहां बेंटलीके ५ वें और ६ वें ए० बी० सी० एडीशन ३८ वें मेयरके कोडसे काम होता है। इसके अतिरिक्त प्रायवेट कोडका भी उपयोग होता है।

यहां पूर्वीय भारत,ऊमरा, बरार, खानदेश,गुजराती सुरती आदि २ क्वालिटीके रूईका व्यवसाय होता है। यह कंपनी ब्रिटिश, अमेरिका, जापान, चीन आदि देशोंको रूई भेजती है।

इसके डायरेक्टर्स हैं:— (१) सेठ अर्जुन खीमजी, (२) सेठ देवजी खीमजी (३) सेठ भवनजी अर्जुनजी, (४) सेठ भानजी देवजी, (५) सेठ मेंघजी चतुर्भुज, (६) सेठ मेघजी रायसी (७) सेठ पद्मसी तेजपाल।

असुर वीरजी कंपनी—इसका आफिस ३२० मिंटरोड फोर्टमें है। इसकी स्थापना सन् १८८५ ई०में हुई। इसका तारका पता सन् (Sun) है तथा टे० नं० २०१३८ है। इस कंपनीके मालिक सेठ खीमजी असुर वीरजी हैं। यह कंपनी सभी प्रकारकी भारतीय रूईका व्यवसाय और एक्सपोर्ट करती है।

काकालदास उम्मेदचन्द—इसका हेड आफिस अहमदाबादमें है। बम्बई ऑफिसका पता सूरती मोहल्ला २ टांकीमें है। इसके तारका पता सेन्सेशन है।

कुंवरजी पिताम्बर एन्ड को०—इसका आफिस ६४ चकलास्ट्रीट, पायधुनीमें है। यह कंपनी स्थानीय ईस्टइन्डिया काटन एसोसियेशनकी सदस्य है। यहांसे विदेशोंमें रूई भेजी जाती है इसका एक आफिस कोबी (जापान)में भी है। इसका गोदाम न्यू काटन डिपो सिवरीमें है। यहाँका टे० नं० ४१६३५ है।

किलाचन्द देवचन्द एण्ड को—इसका आफिस ५५ अपोलोस्ट्रीट, फोर्टमें है। तारका पता सीड्स है। कोड ए० बी० सी० ५,६ वेल्टलेज प्रायव्हेट है। इसका टेलीफोन नं० २१८८५ है। इसका

सेठ आनन्दीलालजी पोद्दार, बम्बई

सेठ रामगोपालजी (रामगोपाल जगन्नाथ), बम्बई

सेठ हेमराजजी (आनन्दीलाल हेमराज), बम्बई
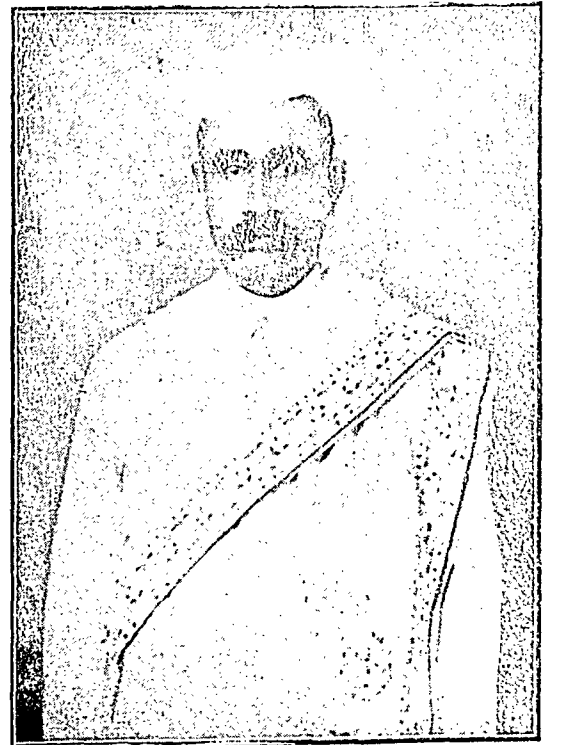
सेठ रामजीमलजी (रामजीमल बाबूलाल), बम्बई

न्यू काटन डिपो सिवरीका टेलीफोन नं ४०५७३ है। इसके हिस्सेदार किलाचन्द देवचन्द, नंदीलाल किलाचन्द और तुलसीदास किलाचन्द हैं।

केशवदास गोकुलदास एण्ड को०—इसका आफिस १८ चर्चग्रेट स्ट्रीटमें हैं।

खीमजी विश्राम एण्ड को०—इसका आफ़िस इस्माईल बिल्डिङ्ग, हार्नबीरोड, फोर्टमें है। यह कम्पनी सन् १८८५में स्थापित हुई थी। इसकी शाखाएं ५४ कम्बरलेंड स्ट्रीट मैनचेस्टर, इबिल चेम्बर्स फाजा करलीस्ट्रीट लिवरपुल और करांचीमें हैं। इसका तारका पता मगनोलिया है। टेलीफोन नं० २४८४० हैं। तथा न्यू कॉटन डिपो सिवरीके टेलीफोनका नम्बर ४०४४४ है। इसके यहां कोड ए० बी० सी० ५ वेस्टलेका उपयोग होता है। इसके हिस्सेदार भूसूनजी जीवनदास, काकूजीवनदास, जमनादास रामदास, वीरजी नंदाजी, हरगोविन्ददास रामनभाई, त्रिभुवनदास और हरिजीवनदास हैं। यह कंपनी अपना माल यूरोप, अमेरिका आदि देशोंमें भेजती है।

गोकुलदास एण्ड को०—इसका आफिस १४ हम्मामस्ट्रीटमें है। इसकी शाखाएं कोबी और एन्टवर्पमें हैं इसका तारका पता "हीरो" है। इसमें ए० बी० सी० प्रायवेटकी ५ व ६कोडका उपयोग होता है। इस कंपनीका टेलीफोन नं२२१६३ है। सिवरीका टे०नं० ४०४७५ है। यह कंपनी अपना माल इंग्लैन्ड, जापान आदि स्थानोंमें भेजती है। इसमें वल्लभदास गोकुलदास दोसा, जमुनादास गोकुलदास दोसा, और लक्ष्मीदास गोकुलदास दोसा भागीदार हैं।

गोवर्धन एण्ड सन्स—इसका ऑफिस डोंगरीस्ट्रीटमें है। इसका टेलीफोनका नम्बर है २४१२९ हैं।

बाखूभाई अम्बालाल एण्ड को—इस कम्पनीकाआफिस ४९ अपोलोस्ट्रीट फोर्टमें है। यहांका तारका पता एक्सटेन्शन (Extension) तथा टे० नं० २२४६७ है। यह कम्पनी बेंटलीके ए० बी० सी०के ६वें संस्करणके कोडका उपयोग करती है, तथा प्रायवेट कोडका व्यवहार भी होता है। इस कंपनीकी लंदन एजेन्सीका पता बाखूभाई एण्ड अम्बालाल ५३ न्यू ब्रांडस्ट्रीट लन्दन ई०सी० २ है। इस कम्पनीके बड़े मालिक हैं सेठ अम्बालाल दोसा भाई। यह कम्पनी अफ्रिकासे रुई यहां मंगवाती है और यहांसे विलायत भेजती हैं।

भाईदासकरसनदास एण्ड को०—इसका आफिस ७।१० एलाफिन्स्टन सरकल, फोर्ट बम्बईमें है। इसका टेलीफोन नं० २०५७३ है। इसका गोदाम न्यू कॉटन डिपो शिवरीमें है। गोदामका टे० नं० ४०५५४ है। इसका कालवादेवीरोड ३६३।६५ पर रुईकी दलालीका काम होता है। इस ऑफिसका टे०नं०।२४८३५ है। इस कंपनीकी स्थापना सन्१९०५ई०में हुई थी। इसकी शाखाएं करांची, भड़ौंच, यवतमाल और सांगलीमें है। इसके सेलिंग एजेंट थेट, हावरे, ब्रीमेन, बार्सिलोना, मिलन, बियाना, एनचेट और लिवरपुलमें है; इसका तारका पता केपिटल

(Capital) है। इस कम्पनीके मालिक सेठ भाईदास नानालाल और किरसनदास हरिकिशनदास हैं। यह कम्पनी भारतकी प्रायः सभी प्रकारकी रुईका व्यवसाय करती हैं। इसका व्यापार प्रायः प्रतिवर्ष ७५ हजार गाँठोंका होता है।

लक्ष्मीचन्द पदमजी एण्डको०-कालवादेवीरोड,इसका पो०बॉ० नं० २००७ है। इसके सञ्चालक लक्ष्मीचंद मानकचंद जोशी इत्यादि हैं। तारका पता पोपुली है। टेलीफोन नं० २०१८७ (ऑफिसका) है। और मारवाड़ी बाजारका २१२६६ है।

शामजी हेमराजजी एण्डको०—रेडीमनीमैनशनचर्चगेट स्ट्रीटमें है। तारका पता नरपाणी, टेलीफोन नं० २५१२८ है। इसके मालिक शामजी हेमराज हैं। ये रूईके व्यापारी हैं।

शीतल बाद (जे० सी०) लि०—११३ एसप्लेनेड रोड फोर्टमें हैं। टेलीफोन नं० २१०४६ है। ये कमीशन एजेन्ट हैं।

हरनन्दराय सूरजमल - इस फर्मका ऑफिस २५३ कालबादेवी रोडपर है। इसका टे० नं २११४६ है। इसके मालिक हैं सेठ सूरजमलजी। इस फर्मकी एक ब्रांच कोबीमें भी है। यह सब प्रकारकी रूईका व्यवसाय करती है। इस फर्मका विशेष परिचय बैंकरोंमें दिया जा चुका है।

हीरजी नेनसी एण्डको०—इस कम्पनीका ऑफिस पोटिट बिल्डिंग ७।११ एलफिन्स्टनरोड, (रक्का सरकल) में है। इसका स्थापन सन् १८६५ ई० में हुआ था। इसकी शाखाएं चावल (ईस्ट खानदेश), और गादाग (धारवाड़) में हैं। इसका तारका पता—रिप्लेनिश है।यहां बेंटले, मेयर्स तथा प्रायवेटके ए बी सी ५ ६ एडिशनका कोड़ उपयोग होता है। इसका टे० नं० २१११४ है। शिवरी न्यूकाटनडिपोका टे० नं ४२१५० है तथा जवरी बाजार और रेसिडेन्सीका टे० नम्बर क्रमशः २३६६१ और ४१३७३ हैं। इसके भागीदार सेठ पदमसी हीरजी नेनसी और थेकरसी हीरजी नेनसी हैं। इस कम्पनीके द्वारा हर किस्म की रूई फ्रान्स, इटली, बेलजियम, स्पेन, हालैंड, इङ्गलैंड, आष्ट्रिया, जर्मनी, जापान, स्विट्जरलैंड और शंघाई जाती है।

पारसी तथा खोजा काटन एक्सपोर्टर्स

आदमजी हाजी दाऊद एण्ड को०—इसका हेड आफिस ६२ मुगल स्ट्रीटमें है। बम्बई ऑफिसका पता—भन्डारी स्ट्रीट है। कलकत्तामें भी इसकी एक ब्रांच है। यहांके तारका पता—गनीवाला, बम्बई है। इनके यहां बेन्टलीका ए०बी० सी० ५ वां संस्करणका कोड उपयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त ब्रुमहाल और प्रायवेट भी व्यवहार किया जाता है।

करीमभाई एण्ड को० लिमिटेड—इसका हेड आफ़िस नं० १२।१४ आउट्रम रोड, फोर्टमें है। इसकी शाखाएं—कलकत्ता, हांगकांग, शंघाई, कोबी तथा ओसाका (जापान) में हैं। इसका

तारका पता—स्टार (Star) है, टेलीफोनका नम्बर २००३६ है । इसके लंदन और मैनचेस्टरके प्रतिनिधियोंके नाम क्रमशः जान इलियट एण्ड सन्स, ब्रह्मालेन हाउस ई० सी० ४ तथा जेम्स ग्रीव्ज एण्ड को० हैं ।

कर्सेतजी बोमनजी एण्ड को०—इसका ऑफ़िस बैंक स्ट्रीट, फोर्टमें है। इसकी स्थापना सन् १८२८ में हुई थी। यह कंपनी स्थानीय ईस्ट इंडिया कॉटन एसोसिएशनकी सदस्य है। इसके एजेंट हैं कावसजी पालनजी एण्ड को० । इसका व्यवसाय हांगकांग, शंघाई, कोबी और ओसाकामें होता है । इसके मालिक सेठ बी० सी० सेठना, पी० पी० सेठना, बी० सी० पी० सेठना, और सी० पी० सेठना हैं । इस कंपनीमें भारतके पूर्व्वीय भागकी रूईका व्यवसाय होता है । इसका टे० नं० २०६३९ है ।

कयानी (के० एच०) एण्ड को०—इसका आफ़िस ७।११ एलफिंस्टन सर्कल फोर्टमें है । यह कंपनी अपना माल यूरप, चीन, जापान आदि देशोंमें भेजती है । इसका टे० फो० २३३०६ है । इसके यहां बेंटलेका ए० बी० सी० ५,६ का कोड़ उपयोग होता है ।

टाटा (आर० डी०) एण्ड को०—इसका आफ़िस बम्बई हाउस नं० २४ ब्रूसस्ट्रीट, फोर्टमें है । इसका स्थापन सन् १८७०में हुआ है। इसकी शाखाएं शंघाई, ओसाका, रंगून, लिवरपुल और यार्कमें है । इसका तारका पता "फ्रैटरनीटी" है । इस कंपनीमें बेंटले, सेवर्स वेस्टर्न यूनियन और प्रायव्हेट ए० बी० सी० ए० आई० का कोड़ उपयोग होता है। इसके संचालक आर० डी० ताता हैं। इसके डायरेक्टर बी० एफ० मदन, एन० डी० टाटा, बी० ए० बिलीमोरिया, और बी० जी० पोद्दार हैं। इसके सेक्रेटरी एम० डी० दाजी हैं ।

नरामान मानिकजी पौधेवाला—इनका आफिस ७८ बाजारगेट स्ट्रीटमें है। यहांका टेलीफोन नं० २३२६६ है ।

पटेल कॉटन एण्ड को० लि०—इस कंपनीका पता गुलिस्तां (gulestan) है, नेपियर रोड फोर्टमें है । इसका पो० बा० नं० ६६९ है । इसमें वेल्टलेमेअर ४०, ५० कोड़का उपयोग होता है। इसके संचालक ए० जी० रेमन्ड और पेस्तनजी डी० पटेल हैं। इसका न्यूकॉटन डिपो शिवरीके टेलीफोनका नम्बर ४०५७१ है । इस कंपनी द्वारा यूरोप और जापानमें माल सप्लाय होता है ।

पवारी (वाल्टर) एण्ड को०—इसका आफ़िस १६ बैंक स्ट्रीट, फोर्टमें है । यह अपना माल यूरोपमें भेजती है । इसका टे० नं० २१२११ है । इसका तारका पता—फौलियेज है ।

फतहअली एण्ड सन्स—इसका आफ़िस १६ बैंक स्ट्रीट, फोर्टमें है। यह कंपनी सन् १८८० में स्थापित हुई थी। इसकी शाखा कोबी (जापान) में है। इसका तारका पता—'फतेह-

अली' है। इसमें बेंटलेका ए० बी० सी० ५,६ का कोड़ उपयोग होता है। इसका नं० २०१२४ है। इसका व्यापारिक संबंध चीन और जापानसे है। इसके अन्त अहमद एन० फतेह अली, रसींस एन० फतेह अली० आशद एन० फतेह अली, अ एन० फतेहअली और आदनन् एन० फतेह अली पार्टनर हैं।

बाम्बे कॉटन कम्पनी—इसका आफ़िस हार्नबी-बिल्डिंग हार्नबीरोड, फोर्टमें है। इसका टे० २३११० है। इस कंपनीका एक छोटा आफिस रायबहादुर बन्सीलाल अबीरचंदकी को पर मारवाड़ी बाजारमें है। इस कंपनीका स्थापन संवत् १६१५ है। इसका एक एजेंट कर्सेतजी बोमनजी एण्ड को० कोबीमें है। इसका तारका पता—स्कायर (esquire) है। इस कंपनीमें सिंध, उमरा, भरोच, अमेरिकन आदि रूईका व्यवसाय होता है। यह कंपनी अपना माल यूरोप, जापान आदि देशोंमें भेजती है। इसके पार्टनर फिरोजशाह सोराबजी गजपर और फ़ाजलभाई इब्राहिम एण्ड को० लिमिटेड हैं।

खोजा मिठाभाई नत्थू—इसका ऑफ़िस हनुमानबिल्डिंग तांबा कांटा, पायधुनीमें है। इसका टेलीफोन नं० २०५६८ और २३०६१ है।

सैसून डेविड एण्ड को० लि०—५६ फ़ॉर्वस स्ट्रीट, पो बॉ १६७। इसका हेड ऑफिस लन्दनमें है। इसकी शाखायें मैञ्चेस्टर, बम्बई, कलकत्ता, करांची, हांगकाङ्ग, संघाई, बगदाद, बसरा, और हैंकोमें हैं। टेलीफोन नं० २००२५ है।

सेसून ई० डी० एण्ड को० लि०—डगौलरोड बेलार्ड स्टेट पो० बॉ १६८, शाखायें लन्दन, माञ्चेस्टर, कलकत्ता, हाङ्गकाङ्ग करांची, बगदादमें हैं। तारका पता "एलियस" और टेलीफोन नं० २६५११ हैं। कोड भारकोनी ए, बी,सी, ५, ६ वेस्टलेज है।

सोरावजी फ्रामजी एण्ड को०—७ एलफिन्स्टन सर्कल फोर्टमें है। यह सन् १८६६में स्थापित हुई थी। इसके एजेन्ट लन्दन, हेमवर्ग, पेरिस और जिनोवा इत्यादिमें हैं। तारका पता 'ह्यूमीलिटी' है कोड ए. बी. सी ५ प्राइवेट,टेलीफोन नं० ४१३८१ हैं। इसके मालिक आर, एस फ्रामजी हैं।

मेहता एच० एम० एण्ड को०—१२३ एसप्लेनेड रोड फ्रोर्टमें है। इस फ़र्मकी स्थापना सन् १८८६ हुई। इसका तारका पता "मलवरी" है। कोड यूज्ड ए० बी० सी० पांचवां एडिशन इसका आफिस टेलीफ़ोन नं २० ३५४, और २३५२१ हैं। और न्यूकॉटन डिपो सिवरी गोदामका टेलीफ़ोन नम्बर ४०७११ है। इसका माल लिवरपूल और यूरोपके अ प्रान्तोंमें जाता है।

हबीब एण्ड सन्स—इस कम्पनीका ऑफ़िस हनुमान बिल्डिंग तांबा कांटा पायधुनीमें है।

हाजीभाई लालजी—(जे० एन० एण्डको०)—इस कम्पनीका ऑफिस ३१४ हार्नवी रोड फ़ोर्ट में है। यूरोपमें इसका सम्बन्ध ल्यूक थॉमसन एण्डको० लिमिटेड १३८ लीडनशाल स्ट्रीट लन्दन इ० सी० ३से है इसका तारका पता "हैण्डसम" है। इस कम्पनीमें वेस्टलेके ए०बी०सी०कोडका उपयोग हाता है। इसका टेलीफ़ोन नं० २०३४२ है। सेम्यूएल स्ट्रीट में इसका टेलीफोन नं० २०५८३ है। इसके सञ्चालक ऑ०महम्मद हाजीभाई, बी हाजी भाई, और सुलतान भाई हाजी भाई हैं।

विदेशी एक्सपोर्टर्स

एवार्ट लैथम एण्ड को०—यह डेमरिल्ड लेन (बम्बई) में है इसका पो० बॉ० नं०७० है। इसकी करांची बैंकाक और सिङ्गापुरमें भी शाखाएं हैं। पत्र व्यवहार लन्दनके नीचे लिखे पतेके अनुसार होता है। एगलो श्याम कौरपोरेशन लि०—५ से० हेलेन पैलेस विशोप वोट ई० सी० ३ टेलीफोन न०२००५ है।

इटालियन काटन को० लि०—मैकमिलन बिल्डिङ्ग हॉर्नवी रोड फोर्टमें है। इसका टेलीफ़ोन न० २२६२९ है।

जापान ट्रेडिंग एण्ड मैन्यूफैक्चरिङ्ग को० लि०—२४ एलफिन्स्टन सर्कल फोर्टमें है। इसका पो० बा० नं० ४०५ है। यह सन १८९२में स्थापित हुई थी। इसका हेड आफिस ओसाका (जापान) है। इसके प्रतिनिधि रेलवेपुरा पोस्ट अहमदाबादमें हैं। तारका पता "वौबिन वर्क"। कोड वेस्टर्न यूनियन ए०बी० सी० ५ वेन्टलेज प्राइवेट है। इसका हर किस्मका माल जापानमें जाता है टेलीफोन नं० २२५७५ है। टी० ओगाया, केओगावा, और कैसुडा इसके सञ्चालक हैं।

गारीओ लिमिटेड—अहमदाबाद हाउस वीटेट रोड वेलार्ड स्टेटमें हैं। तारका पता सीसरो, ट्रेकार्नी वेनेरसी, सीसेमो है। कोड—ए० बी० सी० ५ वेन्टले स्ट्रीट वेस्टर्न यूनियन है। टेली-फोन २१०९०, २१०९१, २१२४६ है। इसका मैनेजिंग डाइरेक्टर डा० जी० गौरियो हैं।

गोशो कावूशीकी-केशा—अलवर्ट ब्रीज हौर्नबीरोड फोर्टमें है। इसका हेड आफिस ओसाका जापान है। टेलीफोन २१०८४, ४१५५५ (न्यू कॉटन डीपो शिवरी) ४१२७८ (गौडाउन, कॉटन डीपो शिवरी है।

ग्रहम (डब्लू० ए०) एण्ड को०—कारनाक बन्दरमें है। पो० बा० नं० ९० है। इसके एजंट ग्लासगो, लिवरपूल, मैञ्चेस्टर, लन्दन, ओपोर्टो, मास्को, कलकत्ता, करांची और रंगून है। इसका टेलीफोन नं० २२५८५ है।

मारवाड़ी काटन मर्चेण्ट्स एन्ड ब्रोकर्स

मेसर्स आनन्दीलाल पोद्दार एण्ड कम्पनी

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ आनन्दीलालजी पोद्दार हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान नवलगढ़ (जयपुर) है। करीब ३० वर्ष पूर्व आप बिलकुल साधारण स्थितिमें बम्बई आये थे ; मगर आपने अपने कार्यको बढ़ाया और क्रमशः उन्नति करते २ बहुत सम्पति एवं प्रतिष्ठा प्राप्तकी। इस नामसे आपको व्यापार करते हुए करीब ८ वर्ष होगये हैं। असहयोग आन्दोलनके समय तिलक स्वराज फण्डमें आपने २ लाख रुपयोंका चन्दा दिया था। इन रुपयोंसे नवलगढ़में शेखावाटी ब्रह्मचर्य्याश्रम नामक संस्था चल रही है इस संस्थाके लिये उक्त रकमको बढ़ाकर ३॥ लाख रुपयोंकी कर दी है। यह संस्था गुरुकुलके ढंगसे चल रही है, इसमें अभी ६० विद्यार्थी विद्याध्यन करते हैं। इसके अतिरिक्त बम्बईके समीपवर्त्ती शाँताक्रूज़में आनन्दीलाल पोद्दार विद्यालय नामक आपका एक हाई स्कूल चल रहा है। इस विद्यालयमें मराठी गुजराती तथा हिन्दी तीनों भाषाओंके साथ मैट्रिक तक पढ़ाई होती है। इसमें २० क्लासें हैं। इसका मकान आप बनवा रहे हैं। मंडी भवानी गंज (झालावाड़ स्टेट) में भी आपने एक स्कूलके मकानका आरंभ कर दिया है। यह स्कूल भी आपहीके नामसे चलेगा। बम्बईके मारवाड़ी विद्यालयसे आपका घनिष्ट सम्बन्ध है। आप उसके आजीवन ट्रस्टी हैं, तथा इस समय उप सभापतिका कार्य करते हैं।

अग्रवाल महासभाके छठे अधिवेशनके समय कानपुरमें आप सभापति रह चुके हैं और वर्तमानमें अग्रवाल जातीय कोषके सभापति भी आपही हैं। इसके अतिरिक्त आप बाम्बे कॉटन ब्रोकर्स एसोसिएशन, तथा बाम्बे शीड्स एण्ड व्हीट एसोशिएशनके बरसोंसे सभापति हैं। ईस्ट-इण्डिया कॉटन एसोशिएशनके आप डायरेक्टर हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स आनन्दीलाल पोद्दार कम्पनी राजमहल भुलेश्वर (T. A. Anpoddar) इस-फर्मपर बैंकिंग तथा काटनका बिजिनेस होता है। जापानकी पुरानी फर्म मेसर्स मित सुई भुसान केसा के रुई विभागकी फर्म' टोयो मेनका केसाके आप हाउस ब्रोकर हैं। बम्बईकी टोयो पोद्दार नामक काटनमिलमें उक्त जापानी कम्पनीके साथ आपका साझा है। इस

मिलमें ३४ हजार स्पेंडिल तथा ८५० लूमस हैं। यह मिल जापानी सिस्टमपर काम कर रही है।

२ बम्बई—मेसर्स रामकिशनदास रामदेव राजमहल—भुलेश्वर इसफर्मपर कपड़ेका थोक व्यापार तथा आढ़तका काम होता हैं।

(३) भवानीगंज—मेसर्स आनन्दीलाल पोद्दार—यहांपर आपकी १ जीनिंग व १ प्रेसिङ्ग फेक्टरी है तथा काटन बिजिनेस एवं कमीशन एजंसीका काम होता है। आपकी फर्मके द्वारा मन्डीको उन्नतिमें विशेष लाभ पहुंचा है।

मेसर्स आनन्दीलाल हेमराज एण्ड कम्पनी

इस फर्ममें सेठ हेमराज आनन्दीलाल (नवलगढ़ निवासी) और सेठ ओंकारमल साधूराम (खाटू जयपुर स्टेट) दो भागीदार हैं। इस फर्मको सम्वत् १८५३ में सेठ आनन्दोलालजी खंडेलवालने स्थापित किया और सेठ हेमराजजीने इसे विशेष तरकी पर पहुंचाया

सेठ हेमराजजीकी तरफसे नवलगढ़ स्टेशनपर एक धर्मशाला तथा नवलगढ़में एक कुंआ बना हुआ है। इसके खर्चके स्थाई प्रबन्धके लिये आपने १०१ बीघा जमीन नवलगढ़में तथा २० शेअर नागपुर मिलके खरीद कर दे रक्खे हैं।

आपने सेठ कीलाचन्द देवचंदके स्मारकमें पारस्परिक प्रेमवृद्धिके लिये एक टॉवर सेठ कीलाचन्दजीका पाटन-गुजरातमें बनवाया है, जिसका प्रबन्ध गायकवाड़ सरकारके हाथोंमें दे दिया गया है।

इसके अतिरिक्त बम्बई फानूसवाडीके प्रतिवाद भयङ्कर मठके-श्रीव्यंकटेश भगवानके मन्दिरमें तथा तिलकस्वराज्य फण्ड आदि कार्योंमें भी सहायता दी है।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

बम्बई—मेसर्स आनन्दीलाल हेमराज एण्ड को० मारवाड़ी बाजार इस फर्मपर रूईके वायदेका काम तथा अलसी गेहूं, चान्दी, सोना, अरंडा, सींगदाना, कपासिया आदिका व्यापार होता है। यह फर्म कमीशन एजेंट्स बेङ्कर्स व ब्रोकर्स है। इसके अतिरिक्त रुईके प्रसिद्ध व्यापारी मेसर्स कीलाचन्द देवचन्दकी रूई व सीड्सकी दलालीका कामकाज इसफर्मके द्वारा होता है। तथा मेसर्स बालकट ब्रदर्स (प्रसिद्ध यूरोपियन फर्म)की, रूई व सीड्सकी तयारी तथा वायदाकी दलालीका काम भी इसी फर्मके द्वारा होता है।

मेसर्स गुरुमुखराय सुखानन्द

इसफर्मके वर्तमान मालिक सेठ सुखानन्दजी हैं। आप अग्रवाल जातिके (गर्ग गौत्री) जैन धर्मावलम्बी हैं। आपका आदि निवासस्थान फतहपुर (सीकर स्टेट) में है। बम्बईमें इस फर्मकी स्थापना ६० । ७० वर्ष पहिले सेठ गुरुमुखरायजीके हाथोंसे हुई थी। तथा इस फर्मको विशेष तरक्की सेठ सुखानन्दजीके हाथोंसे प्राप्त हुई। आपने संवत् १९५६ में जब शेखावाटी प्रान्तमें दुर्भिक्ष पड़ाथा तब रुपयेका सोलह सेर अनाजका भाव बान्धकर जनताको बहुत लाभ पहुंचाया था। फतहपुरमें आपने गुरुमुखराय जैन स्कूल खोल रक्खा है। आप श्रीशिखरजीकी रक्षार्थ तीर्थक्षेत्र कमेटीमें अभीतक करीब ३० हजार रुपया दे चुके हैं। बम्बईके माधौबागमें आप की एक विशाल तथा प्रसिद्ध धर्मशाला है,जिसमें हमेशा सैकड़ों मुसाफिर विश्रान्ति पाते हैं। इसमें करीब ५ लाख रुपयोंकी लागत लगी है। एक धर्मशाला आपने श्रीमन्दार गिरिमें जैन यात्रियोंके सुभीतेके लिये करीब तीस हजार रुपयोंकी लागतसे खोली है। इसके अतिरिक्त आप एक विशाल मन्दिर बनवानेका आयोजन कर रहे हैं जिसके लिये आपने अनेक स्थानोंके भव्य मन्दिरोंकी इमारतोंकेफोटो मंगवाये हैं।

आपका मैसूरके महाराज तथा सीकरनरेशसे भी परिचय है। वर्तमान सीकरनरेशके पिता महाराज माधौसिंहजीको आपने अपनी धर्मशालाका दरवाजा खोलनेके लिये आमन्त्रित किया था। उस खुशीके उपलक्षमें महाराज सीकरने अपने राज्यमें दशहरेके दिन भैंसा मरवाना बन्द करनेकी आज्ञा जारी की थी। इसके पूर्व एक बार महाराज सीकर यहां और आये थे, उस समय आपने जैन समाजकी ओरसे महाराजको मानपत्र दिया था। इस उपलक्षमें महाराज सीकरने अपने राज्यमें दशलक्षिणी पर्वमें तथा अष्टमी चतुर्दशीको जीवहिंसा बिलकुल बन्द करवानेकी आज्ञा दी थी।

वर्तमानमें आपकी दूकान मारवाड़ी बाजारमें है। (T.A. Clondy) इस फर्मपर हुण्डी, चिट्ठी, रूई, अलसी, गेहूं, चांदी, सोना, तथा सराफी बिजिनेस एवं कमीशन एजंसीका काम होता है।

मेसर्सगोरखराम साधूराम

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्तेमें हैं। बम्बईकी फर्मका पता कालबादेवी रोड बम्बई हैं। यहाँपर रूई और बैंकिंगका बहुत बड़ा व्यापार होता है। इस फर्मका विस्तृत परिचय अन्यत्र दिया गया है।

मेसर्स चम्पालाल रामस्वरूप

इस फर्मके संचालक व्यावरके निवासी हैं। व्यावरमें यह फर्म एडवर्ड मिलकी मैनेजिंग एजेंट है। बम्बईकी शाखाका पता लक्ष्मी बिल्डिंग कालबादेवी रोड है। यहां बैंकिंग, ऊन और

स्व० सेठ गुरुमुखरायजी, बम्बई
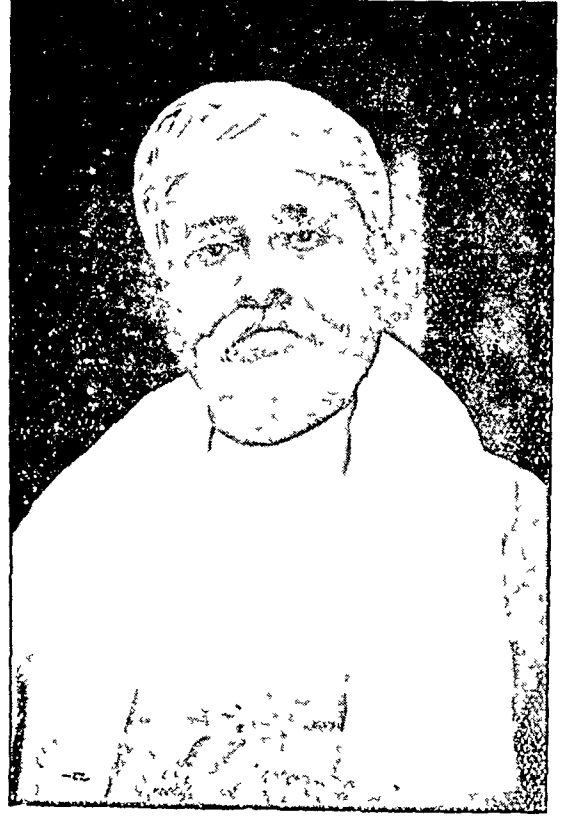
श्री सेठ सुखानन्दजी, बम्बई
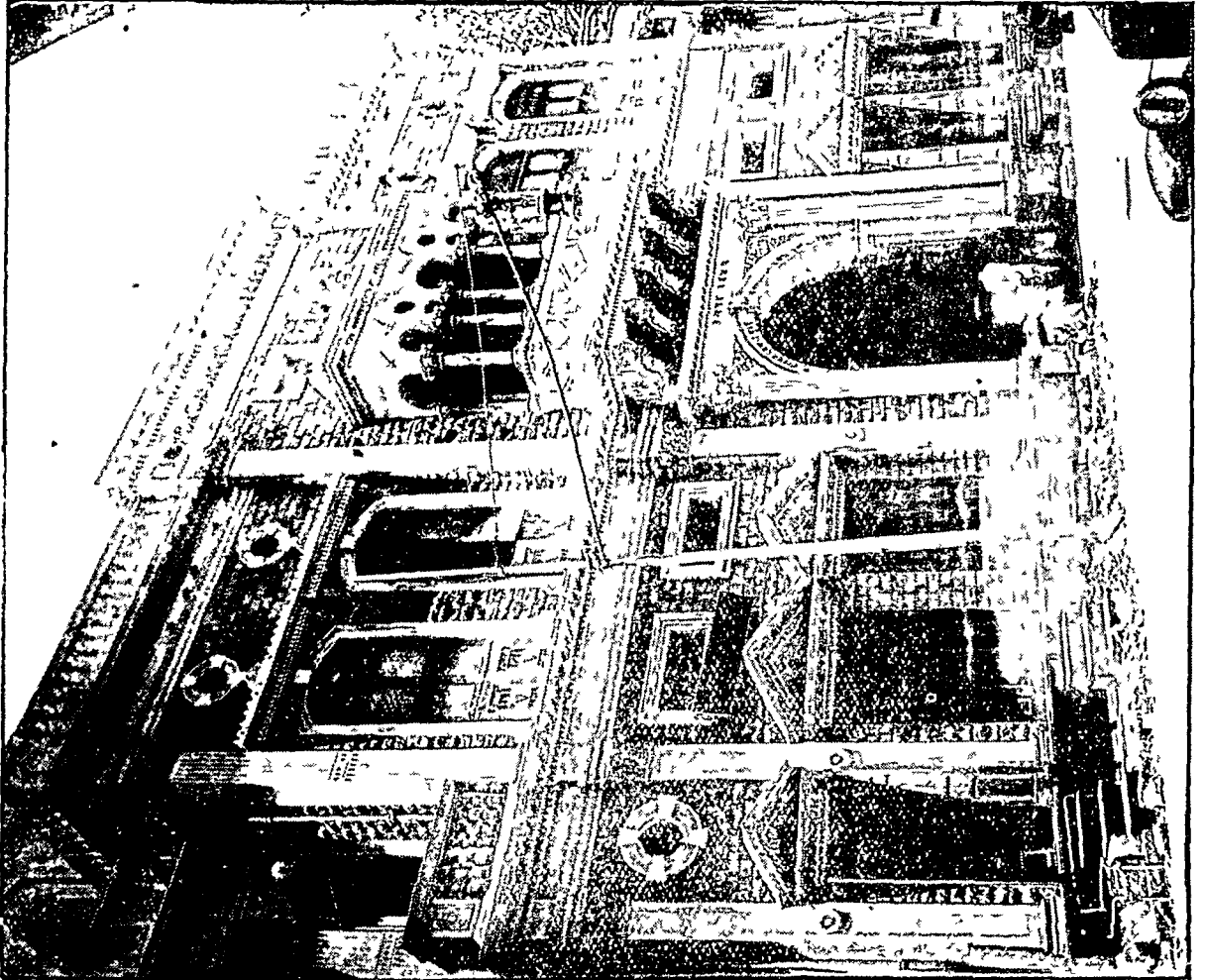
सुखानन्द धर्मशाला, बम्बई

रूईका व्यवसाय होता है। कमीशनका काम भी यह फर्म करती है। इसका विशेष परिचय ब्याव (राजपूताना) में दिया गया है।

मेसर्स दौलतमल कुन्दनमल

इस फर्मके मालिक बूंदीके निवासी हैं। बम्बई दुकानका पता कालबादेवी, दौलत बिल्डिंगमें हैं। यहांपर बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी, रूई और ऊनका व्यवसाय होता है। कमीशनका काम भी यह फर्म करती है। इसका विशेष परिचय बूंदीमें दिया गया है।

मेसर्स फूलचंद मोहनलाल

इस फर्मके मालिक हाथरस (यू० पी०) निवासी मारवाड़ी अग्रवाल जातिके सज्जन हैं।

इस फर्मको बम्बईमें स्थापित हुए करीब २५ वर्ष हुए। यह फर्म कलकत्तेमें ८५ वर्षोंसे एवं कानपुरमें करीब ८० वर्षोंसे व्यापार कर रही है। सेठ फूलचंदजीके द्वारा यह फर्म विशेष तरक्कीपर पहुंची। आपका देहावसान संवत् १९५९ में हो गया।

इस फर्मकी ओरसे हाथरसमें फूलचंद एंग्लो संस्कृत हाईस्कूल चल रहा है, जिसमें करीब ४०० विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं तथा वहां आपकी चिरंजीलाल बागला डिसपेन्सरी भी चल रही है। इसके अतिरिक्त कर्णवास, रुद्र प्रयाग आदि स्थानोंपर आपकी धर्मशालाएं बनी हैं एवं अन्नक्षेत्र चल रहे हैं।

सेठ फूलचंदजीके पश्चात् इस फर्मका काम सेठ शिवमुखरायजीने सम्हाला। वर्तमानमें इस दुकानका संचालन रा० ब० सेठ चिरंजीलालजी और आपके भतीजे सेठ प्यारेलालजी (शिवमुखरायजी के पुत्र) करते है। रा० ब० चिरंजीलालजी हाथरसमें ऑनरेरी मजिस्ट्रेट और वहांके डिस्ट्रिक्टबोर्ड एवं म्युनिसिपैलेटीके चेयरमैन हैं। सेठ प्यारेलालजी बम्बई फर्मका काम सम्हालते हैं। बम्बई, हाथरस, कलकत्ता, बुलन्दशहर आदि स्थानोंपर इस फर्मकी स्थाई सम्पत्ति है।

वर्तमानमें इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) हाथरस—(हेडआफिस) मेसर्स मटरूमल शिवमुखराय—इस फर्मपर सराफी जमींदारी और रुई, गल्ला, सूत आदिकी आढ़तका काम होता है। इसके अतिरिक्त हाथरसमें २।३ दूकानें भिन्न २ नामोंसे और हैं जिनपर आढ़त, गल्ला, किराना, दाल आदिका व्यवसाय होता है। यहां आपके अधिकारमें फूलचंद बागला जीनिङ्ग प्रेसिंग फेक्टरी और यू० पी० इञ्जिनियरिंग वर्क नामका धातुका कारखाना है।

(२) बम्बई—मेसर्स फूलचंद मोहनलाल कालबादेवी रोड—यहाँ सराफी, रुई गल्लाका घरू और आढ़तका व्यवसाय होता है।

(३) कलकत्ता—मेसर्स हरनंदराय फूलचंद बड़तल्ला स्ट्रीट, बड़ा बाजार—इस फर्मपर हुंडी, चिट्ठी तथा कमीशन और नीलका काम होता है। यह फर्म करीब २ करोड़ रुपयोंका प्रति वर्ष कपड़ा खरीदती है। यह बाम्बे कम्पनी लिमिटेडकी बेनियन है।

(४) कानपुर—मेसर्स फूलचंद मोहनलाल नयागंज—सराफी, रुई गल्लेकी आढ़त और जमींदारीका काम होता है।

(५) हरदुआगंज—(अलीगढ़) मोहनलाल चिरंजीलाल—यहां इस फर्मकी एक जीनिंग फेक्टरी है और रुई गल्लेका व्यापार होता है।

(६) कासगंज—प्यारेलाल सुबोधचन्द—आढ़त, रुईका व्यापार होता है और दाल फेक्टरी है।

(७) उत्तरीपुरा (कानपुर) प्यारेलाल सुबोधचंद्र—कपड़ा और गल्लेका व्यापार होता है।

(८) हिसार—चिरंजीलाल प्यारेलाल—कमीशनका काम होता है।

कॉटनकी सीज़नमें पंजाबमें इस फर्मकी कई टेम्परेरी ब्रेंचेज़ खुल जाया करती हैं।

मेसर्स बसंतलाल गोरखराम

इस फर्मके मालिक चिड़ावा (जयपुर-राज्य)के निवासी अग्रवाल वैश्य जातिके हैं। इस फर्मको बम्बईमे स्थापित हुए करीब ३५वर्ष हुए। इसकी स्थापना सेठ बसंतलालजीनेकी। आप तीन भाई हैं। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन सेठ बसंतलालजी, सेठ गोरखरामजी, सेठ द्वारका दासजी एवं सेठ बनारसीलालजी करते हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—(हेडआफिस) मेसर्स बसंतलाल गोरखराम-मारवाड़ी बाजार, तारका पता-सेकसरिया, कॉटन और ग्रेनका व्यापार तथा कमीशन एजेन्सीका काम होता है। शेअर बाजारमें आपका ऑफिस है। आपका शिवरीमें रुईका तथा बंदरपर शीड्सका गोडाउन है।

(२) दतिया—मेसर्स द्वारकादास बनारसीलाल—यहांपर आपकी एक जीनिङ्ग व एक प्रेसिङ्ग फेक्टरी है।

(३) झांसी—मेसर्स द्वारकादास बनारसीलाल—यहांपर सराफी तथा आढ़तका व्यापार होता है।

(४) करांची—मेसर्स बसंतलाल गोरखराम,सराय रोड,यहांपर बैङ्किंग तथा आढ़तका काम होता है।

(५) उझियानी (बदायूं) मेसर्स बसंतलाल द्वारकादास—यहांपर सराफी तथा आढ़तका काम होता है।

मेसर्स रामजीमल बाबूलाल

इस फर्मके संचालक हाथरसके रहनेवाले हैं। आप अग्रवाल (वैश्य) जातिके हैं। इस फर्मको करीब १५ वर्ष पूर्व सेठ रामजीमलजीने स्थापित किया था, तथा श्रीबाबूलालजीने इसे विशेष उत्तेजन पहुंचाया। सेठ रामजीमलजीकी वय वर्तमानमें ५० वर्ष की है हाथरसमें यह फर्म बहुत पुरानी मानी जाती है।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मेसर्स रामजीमल बाबूलाल, हाथरस—यहां गल्ला व रुईका घरू व्यापार एवं आढ़तका काम होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स रामजीमल बाबूलाल अलसीका पाटिया—इस फर्मपर रुई एवं अलसी गेहूं चांदी सोनाके हाजर तथा वायदेका व्यापार होता है।

(३) कानपुर—मेसर्स बाबूलाल हरीशंकर—यहाँ हुंडी चिठ्ठी तथा कमीशनका व्यापार होता है।

मेसर्स रामगोपाल जगन्नाथ

इस फर्मके सञ्चालक नवलगढ़ (शेखावाटी)के निवासी खंडेलवाल जातिके (वैष्णव) हैं। इस फर्मको करीब ४० वर्ष पूर्व सेठ रामगोपालजीने स्थापित किया, तथा इसे विशेष उत्तेजन सेठ भूरामलजीके द्वारा मिला। इस फर्मका प्रधान व्यापार रुईका है।

आपकी ओरसे नवलगढ़के पास एक शाकम्बरी माताका मन्दिर करीब ६०।७० हजारकी लागतसे बनवाया हुआ है सेठ भूरामलजी कलकत्तेमें खंडेलवाल महासभाके सभापति भी रहे हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ मेसर्स रामगोपाल जगन्नाथ बम्बई अलसी का पाटिया	रुई, अलसी, गेंहू, तथा चांदी सोनाके हाजर तथा वायदेका व्यापार होता है।
२ धूलिया [खानदेश] मेसर्स—राम गोपाल जगन्नाथ	यहाँ आपकी १ जीनिंग प्रेसिङ्ग फेक्टरी है।
३ मालेगांव (खानदेश) मेसर्स राम-गोपाल जगन्नाथ	यहां आपकी जीन फेक्टरी है तथा रुईका व्यापार होता है।
४ नेर, पो० धूलिया, [खानदेश] मेसर्स—रामगोपाल जगन्नाथ	यहां आपकी १ जीनिङ्ग फेक्टरी है और रुईका व्यापार होता है।

मेसर्स शालिगराम नारायणदास

इस फर्मके मालिक पोकरन (जोधपुर) के निवासी हैं। इस फर्मका स्थापन करीब १२५ वर्ष पूर्व हुआ था। इसके वर्तमान मालिक राय साहब सेठ नारायणदासजी राठी हैं। आपके पूर्वज सेठ

सालिगरामजीने पोकरनमें वल्लभ सम्प्रदायका एक मन्दिर स्थापित किया है, तथा धर्मशालाएं, कुंए, सदाव्रत आदि जारी किये हैं। सेठ सालिगरामजीके पुत्र सेठ फतेलालजी माहेश्वरी समाजमें अच्छे प्रतिष्ठा-सम्पन्न व्यक्ति हो गये हैं। आपने नागपुर अधिवेशनके समय माहेश्वरी महासभाके सभापतिका पद सुशोभित किया था। आपने कई धर्मशालाओंका जीर्णोद्धार करवाया, कुएं खुदवाये, तथा विद्यालयों एवं संस्थाओंको सहायताएं दीं। आपने एक बड़ी रकमका धर्मादे फंडका ट्रस्ट कर रक्खा है, आपकी ओरसे एक सदाव्रत चालू है। तथा नाशिकमें एक बड़ी धर्मशाल आपने बनवाई है। आपने करीब १॥ लाख रुपयोंकी सम्पत्ति एक विद्यालय स्थापित करनेके लिये दान की है। आपका देहावसान हुए करीब १८ वर्ष हो गये हैं।

सेठ फतेलालजीके भतीजे सेठ नारायण दासजीको गवर्नमेन्टने सन् १९२५ में रायसाहबकी पदवी दी है। आप उमरावतीमें आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। आपने पोकरनमें एक अस्पतालकी स्थापना की है।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ अमरावती-मेसर्स शिवलाल शालिगराम T. A. Diamond	यहां आपकी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है और जमींदारी बैंङ्किग व काटनका बिजिनेस होता।
२ बम्बई—मेसर्स शालिगराम नारायणदास एण्ड कंपनी अलसी का पाटिया T. A: Rainfall	बेङ्किग कमीशन एजेसी तथा काटन विजिनेस होता है। रुईका जत्था, कॉटनका एक्सपोर्ट तथा कॉटन विजिनेस होता
३ शिवगांव [वरार] मेसर्स श्रीराम शालिगराम	जमीदारी-बैंङ्किग तथा कॉटन कमीशनका काम होता है। यहां आप की २ जीनिङ्ग व एक प्रेसिंग फेक्टरी है।
४तिलहा (वरार) मेसर्स श्रीराम शालिगराम	बैंङ्किग व कॉटनका विजिनेस होता।
५ यवतमाल लाभचंद नारायणदास	जमीदारी और बैङ्किग वर्क होता हैं। तथा जीनिङ्ग फेक्टरी है

इसके अतिरिक्त अकोला, खामगांवकी कई जीनिङ्ग प्रेसिङ्ग फेक्टरीजमें आपके भाग हैं। तथा व्यावर कृष्णा मिल्स के आप शेअर होल्डर हैं।

सेठ शिवनारायण नेमाणी जे० पी०

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीमान सेठ शिवनारायणजी नेमाणी जे० पी० हैं। आप अग्रवाल जातिके बांसल गौत्रीय सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान चूड़ी (खेतड़ी-जयपुर) में है। संवत् १९०१ में आपके पिता सेठ बंशीरामजी नेमाणी बम्बई आये। आप पहले पहल जौहरीमल रामजीदासके यहां काम करते थे। बादमें संवत् १९३० से १९४३ ई० तक गोविन्ददास लक्ष्मणदास पारख मथुरावालेके यहां पर काम किया। संवत् १९४३ में आपका शरीरान्त हो गया। आपके पश्चात् संवत् १९४१ में आपके पुत्र श्रीयुत शिवनारायणजी नेमाणी बम्बईमें आये। संवत् १९५० तक आपने हुण्डीकी दलाली की। उसके पश्चात् आपने रूईका व्यापार प्रारम्भ

सेठ शिवनारायणजी नेमाणी जे० पी०, बम्बई

स्व० से० फतेलालजी राठी (शालिगराम नारायणदास), बंबई
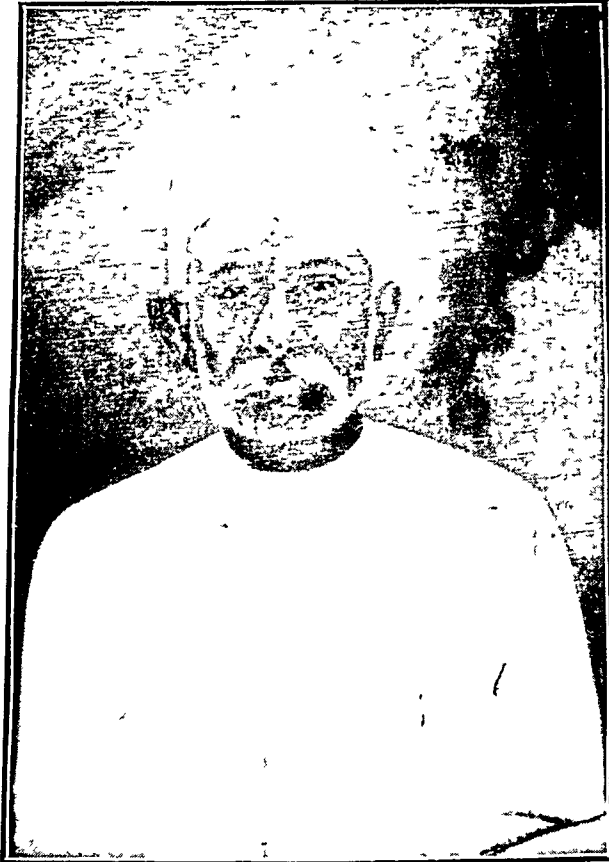
सेठ खेतसीदासजी (समरथराय खेतसीदास), बम्बई

रा० सा० नारायणदासजी राठी (शालिगराम नारायणदास) बंबई

किया। आप इस व्यापारमें इतने चतुर, मेधावी और दक्ष हैं कि इस धन्धेमें १९५० से अब तक आपने करोड़ों रुपयोंकी सम्पत्ति उपार्जन की। इस समय बम्बईके मारवाड़ी समाजमें आप बड़े प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति हैं। रूईके बाजारमें आपकी धाक मानी जाती है। बोलचालमें आपको लोग कॉटनकिंगके नामसे व्यवहृत करते हैं। आप मारवाड़ी अग्रवाल सभाके सातवें अधिवेशनके सभापति रहे हैं। नासिकमें आपकी तरफसे धर्मशाला बनी हुई है। बम्बईमे आपका एक दवाखाना भी बना हुआ है इसके अतिरिक्त आजितगढ़में आपकी तरफ़से एक दवाखाना और गौशाला बनी हुई है।

आपके कार्य्योंसे प्रसन्न होकर बम्बईकी गवर्नमेंटने आपको जे० पी० की उपाधि प्रदान की है।

आपके इस समय एक पुत्र और तीन पौत्र हैं पुत्रका नाम श्रीयुत सूरज मलजी नेमाणी है।

मेसर्स समरथराय खेतसीदास

इस फर्मके मालिक रामगढ़ (सीकर) निवासी अग्रवाल जातिके (बांसल गोत्रीय) सज्जन हैं। पहिले इस फर्मपर फकीरचंद समरथरायके नामसे व्यापार होता था। वर्तमान इस नामसे यह फर्म करीब ५० वर्षोंसे काम कर रही है। यह बहुत पुरानी फर्म है। इसे सेठ खेतसी दासजीने स्थापित किया। आप रामगढ़ हीमें रहते हैं। आपके पुत्र श्री० मोतीलालजी इस समय इस दुकानका संचालन करते हैं।

इस फर्मकी ओरसे नीचे लिखे स्थानोंपर व्यापार होता है।

(१) बम्बई—मेसर्स समरथराय खेतसीदास मारवाड़ी बाजार—हुंडी चिट्ठी, सराफी तथा कपड़ा रूई एवं गल्लेकी कमीशन एजेंसीका काम होता है।

(२) अमृतसर-मेसर्स समरथराय खेतसीदास आलू कटरा—इस फर्मपर विलायतसे डायरेक्ट कपड़ा आता है तथा सराफीका काम होता है।

(३) मन्दसोर—मेसर्स समरथ राय खेतसीदास—यहां आपकी एक जीन फेक्टरी है, तथा रूई व आढ़तका काम होता है।

(४) प्रतापगढ़—(मालवा) मेसर्स समरथराय खेतसीदास—यहां आपकी १ जिनिंग फेक्टरी है। तथा रूई और आढ़तका व्यापार होता है।

(५) नयानगर (व्यावर) मेसर्स रामवख्श खेतसीदास-यहां आपकी १ जीन फेक्टरी है तथा रूईका व्यापार होता है।

(६) विजय नगर (गुलाबपुरा) मेसर्स रामबख्श खेतसीदास—यहां आपकी १ जीन फेक्टरी है, तथा रूईका व्यापार होता है।

(७) रामगढ़ (मारवाड़) —यहां मालिकोंका खास निवास स्थान है।

मेसर्स हरनंदराय फूलचंद

इस फर्मके वर्तमान मालिक लाला रोशनलालजी लाला सागरमलजी तथा लाला होतीलालजी हैं। आपका मूल निवास हाथरसमें (यू० पी०) है। आप अग्रवाल जातिके (बिन्दल गोत्रीय—बागला) सज्जन हैं।

इस फर्मको संवत् १९४४ में सेठ फूलचंदजी साहबने स्थापित किया। इसके पूर्व संवत् १९१८ से आपकी कलकत्तेमें दुकान थी। लाला फूलचंदजीका देहावसान संवत १९२६ में हुआ। आपके बाद आपके पुत्र लाला जयनारायणजीने इस फर्मके कामको सम्हाला और वर्तमानमें आपके तीनों पुत्र इस समय इस फर्मका संचालन करते हैं।

आपकी ओरसे हाथरसमें एक फूलचंद बागला हाई स्कूल चल रहा है। जिसमें करीब ३५०।४०० विद्यार्थी शिक्षा लाभ करते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ स्थानोंपर आपकी धर्मशालाएं मंदिर, एवं सदाव्रत भी चालू हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) हाथरस—मेसर्स फूलचंद रोशनलाल (T. A. Bansi)—यहां आपका हेडऑफिस है। तथा आढ़त और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स हरनंदराय फूलचंद बदामका झाड़ कालबादेवीरोड (T. A sagar)—यहां हुंडी चिट्ठी तथा रूईका घरू और आढ़तका काम होता है।

(३) कानपुर—होतीलाल बागला एण्ड कम्पनी जनरलगंज—(T. A. Ratan)—इस फर्मके द्वारा मिलोंको रूई सप्लाई होती है।

(४) अमृतसर—(पंजाब) मेसर्स फूलचंद रोशनलाल आलू कटरा (T. A Bagla)—यहां हुंडी चिट्ठी कमीशन एजंसी व रूईका व्यापार होता है।

मेसर्स हरमुखराय भागचंद

इस फर्ममें दो पार्टनर हैं। सेठ हरमुखरायजी व सेठ भागचंदजी। सेठ हरमुखरायजीका हेड ऑफिस हाथरस है। आपकी कलकत्ता, हाथरस, यू० पी० आदिमें दूकाने हैं। इस फर्मका प्रधान
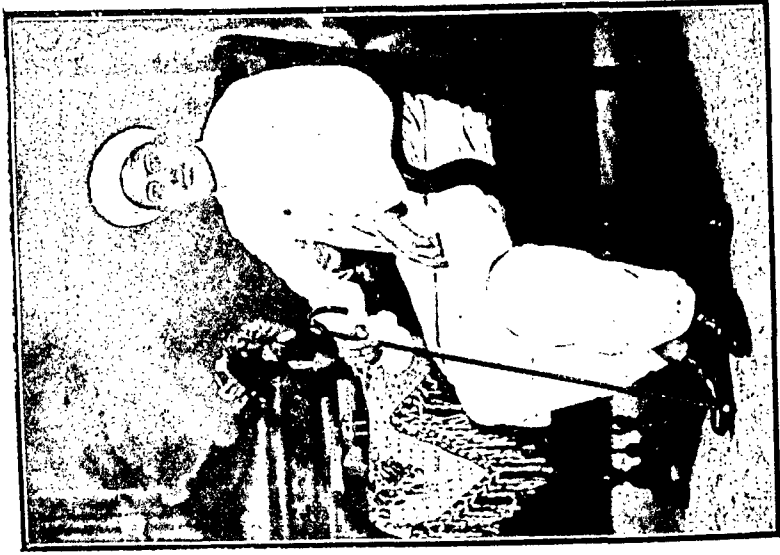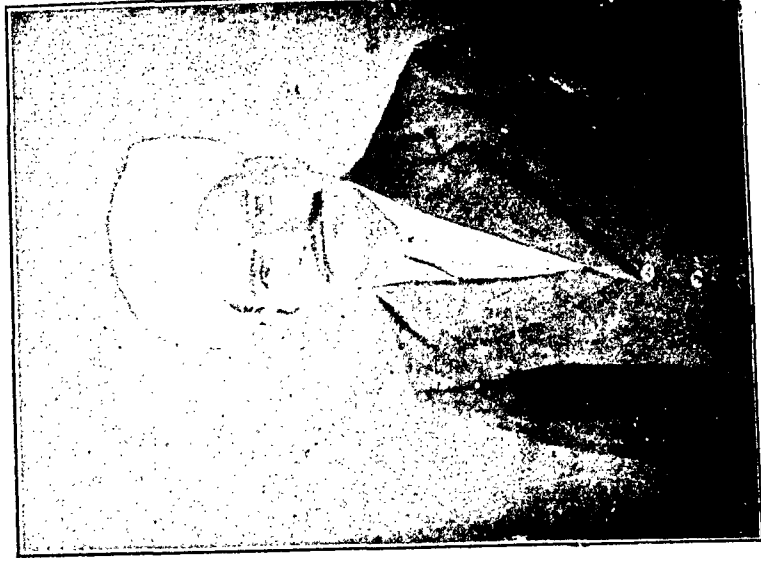
व्यापार रुईका है। सेठ भागचंदजीका सब व्यवसाय सी० पी० में है। बरारमें आपकी कई जीनिङ्ग प्रेसिंग फेक्टरियां हैं।

बम्बईमें यह फर्म कथेड्रल स्ट्रीट, (कालबादेवी रोडके पास) पर है। इस फर्म पर काटन, सराफी और गल्ला तथा आढतका काम होता है।

मेसर्स हीरालाल रामगोपाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ केशवदेवजी हैं। आप फतहपुर (सीकर) के निवासी अग्रवाल जातिके हैं। इस फर्मकी स्थापना ६७ वर्ष पूर्व सेठ होरालालजीने की। आपका देहावसान सं० १९४२ में हुआ। आपके पुत्र सेठ रामगोपालजीने इस फर्मके व्यापारको विशेष उत्तेजन दिया था। आपका देहावसान भी संवत् १९७८ में हो गया।

इस फर्मकी ओरसे देशमें एक संगमरमरकी छत्री और एक मन्दिर बना हुआ है इसके अतिरिक्त आपने ४ लाख ७५ हजारका एक ट्रस्ट किया है। जिससे धार्मिक कृत्योंका प्रबंध बराबर होता रहे। आपकी फतहपुर, मथुरा और ऋषीकेशमें धर्मशालाएं बनी हैं, और सदाव्रत चालू है। हरिद्वारमें भी सदाव्रतका प्रबंध है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स हीरालाल रामगोपाल शेख मेमन स्ट्रीट—T. A. Honar—यहां सराफी और आढ़तका काम होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स रामगोपाल केशवदेव—इस नामसे रुईका जत्थेका व्यापार होता है।

(३) वरधा (C. P.) हीरालाल रामगोपाल—यहां आपकी एक जीनङ्ग प्रेसिंग फेक्टरी है। और रुईका व्यापार होता है। आपका एक: जमींदारीका गाँव भी है। इस फर्मके पास भुसान, जापान, फारबस आदि विदेशी कम्पनियोंको एवं मॉडऊ मिल नागपुरकी रुईकी खरीदीकी एजेंसी रहती है।

(४) नागपूर—हीरालाल रामगोपाल काटन-मार्केट—रुईका व्यापार और उपरोक्त कम्पनियोंकी रुई खरीदनेकी एजेंसी है।

(५) सांवनेर (नागपुर) हीरालाल रामगोपाल—रूईका व्यापार और एजेंसीका काम।

(६) पाण्डुरना (नागपुर)—हीरालाल रामगोपाल— ” ” ”

(७) धामनगांव (बरार) हीरालाल रामगोपाल—जीनिङ्ग प्रेसिंग फेक्टरी है।

(८) चंदोसी (यू० पी०) मे० रामगोपाल हीरालाल और रामगोपाल केशवदेवके नामसे २ दुकानें हैं यहां रूई और गल्लेकी आढत का काम होता है। इसके अतिरिक्त आपकी यहांपर २ जीनिङ्ग और २ प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। ट्रस्टके २ जागिरीके गाँव भी यहांपर हैं।

मेसर्स बेगराज रामस्वरूप एण्ड कम्पनी

इस फर्मको २० वर्ष पूर्व सेठ बेगराजजीने स्थापित किया। आप मायन (रेवाड़ी गुड़गांव) के निवासी सज्जन हैं। इस फर्मके वर्तमान संचालक श्री बेगराजजी गुप्त, रामस्वरुपजी गुप्त और प्यारेलालजी गुप्त हैं। आप तीनों भाई शिक्षित हैं, एवं मारवाड़ी समाजके हरएक कार्योंमें अग्रगण्य रहते हैं। आप मारवाड़ी सम्मेलन, मारवाड़ी वाचनालय, मारवाड़ी चेम्बर आँफ कॉमर्स कॉटनशीड ह्वीट ब्रोकर्स एसोशिएशनके जीवित कार्यकर्ता हैं। श्रीबेगराजजी गुप्त मारवाड़ी चेम्बरके डायरेक्टर और ईस्ट० इण्डिया का० ए० के रिप्रेज़ेटेटिव कमेटीके मेम्बर हैं। बाम्बे काटन ब्रोकर्स एसोशियेशनके स्थापनमें आपने विशेष रूपसे भाग लिया था। श्री० प्यारेलालजी गुप्त स्थानीय मारवाड़ी विद्यालयके मैनेजिङ्ग कमेटीके सदस्य और उपमंत्री हैं। आप यहांके मारवाड़ी वाचनालय (जो बम्बईमें एक मात्र हिन्दी सार्वजनिक बाचनालय है) के मंत्री हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बेगराज रामस्वरूप एण्ड कम्पनी * कालवादेवी बम्बई T, A, sodalabha—यहां कॉटन अलसी, गेहूं कमीशन व दलालीका बिजिनेस होता है।

(२) बेगराम रामस्वरूप—रेवाडी—आढतका काम होता है।

कॉटन मुकादम

मेसर्स जेठाभाई देवजी एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिक काठियावाड़ प्रांतमें जामनगरके पास शाफर नामक स्थानके निवासी भाटिया जातिके हैं। इस फर्मको यहां सेठ जेठाभाई देवजीने संवत् १९६० में स्थापित किया था।

सेठ जेठाभाई देवजीके हाथोंसे इस फर्मकी विशेष तरक्की हुई। इस फर्मकी ओरसे सेठ देवजी वसनजी एग्लोंवर्नाक्यूलर स्कूलके नामसे एक प्राइवेट स्कूल शाफरमें चल रहा है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक (१) सेठ जेठाभाई देवजी, (२) गोकुलदास देवजी, (३) सेठ लक्ष्मीदास देवजी, (४) सेठ नारायणदास जेठाभाई हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ मेसर्स जेठाभाई देवजी शाकगली-मांडवी बम्बई—इस फर्मपर कॉटन व शीड्सका घरूव इनकी मुकादमी तथा आढ़तका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त इस फर्मपर एक्सपोर्टका भी काम होता है।

२ मेसर्स जेठाभाई देवजी एण्ड को० केम्पवेल स्ट्रीट करांची—यहाँ भी कॉटन शीड्सका व्यवसाय एवं एक्सपोर्टका काम होता है।

३ मेसर्स जेठाभाई देवजी एण्ड को० गोंडल-काठियावाड़—यहां आपकी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है तथा कॉटन बिजिनेस होता है।

---

* परिचय देरीसे मिलनेके कारण यथा स्थाननहीं छाप सके—प्रकाशक।

४ मेसर्स जैठाभाई देवजी एण्ड को० मलकवल (पंजाब)—यहां आपकी जीनिंग फेक्टरी है। तथा कॉटन विजिनेस होता है।

मेसर्स धरमसी जेठा एण्ड कंपनी

इस फर्मका स्थापन सन् १८४१ में सेठ धरमसीजीके हाथोंसे हुआ। इस फर्मके मालिक जामनगर (शाफर) के निवासी भाटिया जातिके हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स धरमसी जेठा एण्ड कम्पनी शाकगली—मांडवी } कॉटन मरचेंट और कमीशन एजंसीका काम होता है।

२ अमरावती—धरमसी जेठा कम्पनी काटन मार्केट } कॉटन बिजिनेस होता है।

ठक्कर माधवदास जेठाभाई

इस फर्मकी स्थापना सेठ माधव दासजीने संवत १९४७ में की। आप शाफर जामनगर के निवासी भाटिया जातिके हैं। वर्तमानमें सेठ माधवदासजी ही इस फर्मके मालिक हैं। आपकी ओरसे शाफरमें सेठ माधव दास जेठा भाई ब्राह्मण बोर्डिंग हाऊस चल रहा है। इसमें २६ विद्यार्थियों के भोजन एवं शिक्षणका प्रबंध है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बम्बई—ठक्कर माधव दास जेठा भाई होली चकला—फोर्ट } यहां कॉटन कमीशन.एजंसी और मुकादमीका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त मिलोंका एक्सपोर्टरका काम मुकादमी तरीके से यह फर्म करती है। इस फर्मका शिवरीपर रूईका काम है।

मेसर्स मोतीलाल मूलजी भाई

इस फर्मको ३६वर्ष हुए सेठ मोतीलाल मूलजीभाईने स्थापित किया था,आपका देहावसान संवत् १९९१ में होगया है। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ मणीलाल मोतीलाल भाई हैं। आप राधनपुरके निवासी जैन सज्जन हैं। मणीलालसेठको सन् १९२४ में गव्हर्नमेंटने जे० पी० की उपाधि दी है। आपने १॥ लाखकी लागतसे राधनपुरमें एक फ्री डिसपेंसरी स्थापित की है। तथा वहां २० हजारकी लागतसे एक सदाव्रत की स्थापना की है। २०हजार रुपया आपने स्वजाति फण्डमें दिया है। तथा २० हजार रुपया राधनपुरसे अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करनेके लिये बाहर जानेवाले विद्यार्थियोंको स्कालरशिप देनेके लिये दिये हैं। १० हजारकी लागतसे आपने एक जैन-पाठशाला स्थापित की है। और ४० हजारकी लागतसे आपने एक पालीतानाका संघ निकाला। इसके अतिरिक्त ३० हजार रुपया महावीर बोर्डिंग हाऊसमें और ३७ हजार रुपया पंजाब गुरुकुलमें दान किये हैं।

सेठ मणीलाल भाई बम्बईके महावीर विद्यालय बोर्डिंग हाऊसके एवं एरंडा एण्ड शीड मरचैंट्स एसोसिएशनके ट्रस्टी हैं। इसके अतिरिक्त आप कॉटन ब्रोकर्स एसोशियेसन, बाम्बे सराफ महाजन एसोशिएशनके वाइस प्रेसिडेंट हैं। आप जैन कान्फ्रेन्सके सुजानगढ़में प्रेसिडेंट रह चुके हैं। इसके अतिरिक्त जैन कान्फ्रेंसके जनरल सेक्रेटरीके रूपमें आपने १० वर्ष तक काम किया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई –मोतीलाल मूलजीभाई बांदरावाला माला T. A. mahabir यहां कॉटनका हाजिर और वायदेका तथा चांदी एरंडा और शीडका व्यवसाय होता है।

(२) बीरमगांव-मोतीलाल मूलजीभाई—कॉटनका व्यापार है।

(३) बढ़वाण-मोतीलाल मूलजीभाई—काटनका व्यवसाय होता है।

कॉटनब्रोकर्स (गुजराती)

मेसर्स खीमजी पुंजा एण्ड कम्पनी

इस फर्मको सेठ खीमजीभाईने ३० वर्ष पूर्व स्थापित किया था और इसकी विशेष तरक्की भी आपहीके हाथोंसे हुई। सेठ खीमजीभाईका देहावसान १९८४ में हो गया है। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ गोपालदास पुंजा, सेठ पुरुषोत्तमदास जेठाभाई और सेठ खटाऊ खीमजी हैं। यह फर्म कई व्यापारिक एसोशिएशनकी मेम्बर हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) खीमजी पुंजा एण्ड कम्पनी १३ हमामस्ट्रीट-बम्बई T. A. Gainsure—शेअर और स्टॉककी दलालीका काम होता है।

(२) खीमजी पुंजा एण्ड कम्पनी-मारवाड़ी बाजार बम्बई—यहां रुई और चान्दी सोनेकी दलालीका काम होता हैं। इस फर्मके द्वारा न्यूयार्क वगैरह बाहिरी देशोंसे भी रुईके सौदे दलालीसे होते हैं।

मेसर्स चुन्नीलाल भाईचन्द मेहता

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ चुन्नीलाल भाईचन्द हैं। आप वणिक जैन सज्जन हैं। सेठ चुन्नीलाल भाईको कॉटनका काम करते हुए करीब २० वर्ष हुए। आपके हाथोंसे व्यवसायकी विशेष तरक्की हुई। आप शिक्षित व्यक्ति हैं। आप बुलियन एक्सचेंजके डायरेक्टर हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मेसर्स चुन्नीलाल भाईचन्द मारवाड़ी बाजार—यहां कॉटन सोना चांदी अलसी और गेहूंकी दलाली तथा कमीशनका काम होता है।

मेसर्स बाबूलाल गंगादास

इसफर्मके वर्तमान मालिक बाबू गंगादासजी यहांपर करीब १४ वर्षोंसे रूई व गल्लेका व्यापार करते हैं। इसके पूर्व आप केवल ३०) मासिकपर सर्विस करते थे। इतने थोड़े समयमें आपने रूई बाजारसे अच्छी सम्पत्ति कमाई है।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स बाबूलाल गंगादास मारवाड़ी बाजार—(T. A. Babstearn) इसफर्मपर रूई, गल्ला, और तिलहनके वायदेका काम होता है।

मेसर्स परी मूलचन्द जीवराज

इस फर्मको सेठ मूलचन्द जीवराजने ३० वर्ष पूर्व स्थापित किया था। वर्तमानमें इसके मालिक सेठ मोहनलाल मूलचन्द और केशवलाल मूलचन्द हैं।

लीमड़ीमें आपकी ओरसे मूलचंद जीवराज कन्या-विद्यालय स्थापित है। बनारस हिन्दू विश्व-विद्यालयमें आपने १० हजार रुपये दिये हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

बम्बई-मेसर्स मूलचन्द जीवराज—सिलवर मेन्शन पारसी गली—यहां चाँदी सोना रूई शेअर और कमीशनका काम होता है, इसके अतिरिक्त रमणीकलाल केशवलालके नामसे एरण्डा अलसी, गेहूं, शक्कर और कमीशनका काम होता है।

इसके अतिरिक्त आपकी वढ़वाण शहरमें एक जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी, बोटादमें एकजीनिंग फेक्टरी, तथा वढ़वाण केम्पमें एकजीनिंग फेक्टरी हैं और लीमड़ीमें काँटन बिजिनेस होता है।

मेसर्स रतीलाल एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिक सेठ रतीलाल त्रिभुवनदास ठक्कर हैं। आप सूरत निवासी लोहाना जातिके सज्जन हैं। सेठ रतीलाल भाईने इसफर्मको सन् १८२० में स्थापित किया, तथा इसकी विशेष उन्नति भी आपहीके द्वारा हुई, आप ईस्ट इण्डिया काँटन ब्रोकर्स एसोशिएशनकी रिप्रजेंटेटिव्ह कमेटीके मेम्बर तथा कॉटन ब्रोकर्स एसोशिएशनके आनरेरी सेक्रेटरी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स रतीलाल एण्ड कम्पनी काँटन केबिन—मम्बादेवी-बम्बई T. A. Cabin इस फर्ममें रूईके वायदेका काम बम्बई लिवरपूल तथा न्यूयार्कके बाजारोंसे होता है। इसके अतिरिक्त सोना, चांदी, अलसी, गेहूंका काम भी यह फर्म करती है।

श्रीयुत् विश्वम्भरलाल माहेश्वरी

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीविश्वम्भरलालजी माहेश्वरी हैं। आपका मूल निवास स्थान बगड़ (जयपुर-राज्य) में है। इस फर्मको बम्बईमें स्थापित हुए करीब १२।१३ वर्ष हुए। सेठ विश्वम्भरलालजीके हाथोंसे इस फर्मकी विशेष तरक्की हुई। रूईके सौदेमें आपको अच्छा अनुभव है। खंडी बाजारमें आप अच्छे साहसी व्यापारी माने जाते हैं। आप ईष्ट इण्डिया कॉटन एसो-शियेशनके मेम्बर हैं।

आपकी ओरसे बगड़में एक अपर स्कूल चल रहा है। जिसे आप बहुत शीघ्र मिडिल स्कूल करने वाले हैं। इसका फंड भी आपने अलग कर दिया हैं। इसके अतिरिक्त एक कन्या पाठाशाला भी आपकी ओरसे बगड़में चल रही है। आपकी फर्मका परिचय इस प्रकार हैं।

बम्बई—मेसर्स विश्वम्भरलाल माहेश्वरी मोतीसाकी चाल मारवाड़ी बाजार—यहां रूई अलसीके वायदेका अच्छा काम होता हैं। तथा न्यूमार्क और लिवरपुलके बाजारोंसे डायरेक्ट तार आते हैं।

श्रीयुत विसेसरलाल चिड़ावावाला

इस फर्मके मालिक सेठ विसेसरलालजी टीवड़ेवाले, चिड़ावा (खेतड़ी) के निवासी अग्रवाल जातिके हैं। १५ वर्ष पूर्व आपने इस दुकानको स्थापित किया, एवं रूईके वायदेमें लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति पैदा की।

यह फर्म ईस्ट इण्डिया काटन एसोसिएशन, मारवाड़ी चेम्बर व काटन मरचेंट्स एसोसिएशनकी मेम्बर है। आपकी फर्मका परिचय इस प्रकार है।

बम्बई—विसेसरलाल चिड़ावावाला मोतीसाकी चाल—मारवाड़ी बाजार } यहां खासकर रूईके वायदेका सौदा होता है और अलसी, गेहूं, चांदी सोनाका भी काम होता है। यहां न्यूयार्क आदिसे भावोंके तार आते हैं।

रूईके व्यापारी और ब्रोकर्स

अमूलख अमीचंद एण्ड कम्पनी शेख मेमन स्ट्रीट मरचेंट एण्ड कमीशन एजन्ट
अमृतलाल लक्ष्मीचंद खोखानी शेख मेमन स्ट्रीट ब्रोकर्स एण्ड कमीशन एजंट
अमरसी एण्ड संस सुदामा हाउस वेलार्ड स्टेट मर्चेण्ट
अमीचंद एण्ड कम्पनी शेख मेमन स्ट्रीट मरचेंट
अबूबकर अब्दुल रहमान एण्ड को० शेखमेमन स्ट्रीट, मरचेंट ब्रोकर्स
आदम दाऊजी हाजी एण्ड कं० लि० मन्हारी स्ट्रीट
अमरसी दामोदर भुलेश्वर मरचेंट
अर्जुन खीमजी एण्ड को० डोंगरी स्ट्रीट मरचेंट
असुर वीरजी मिंटरोड फोर्ट मरचेंट
आसाराम मूलचंद मारवाड़ी बाजार ब्रोकर्स
ईश्वरदास एण्ड कम्पनी मारवाड़ी बाजार कमीशन एजेंट
करमचंद जगजीवन एण्डको० कालवादेवी रोड ब्रोकर्स
कयानी के० एच० एण्डको० एलिफस्टन सर्कल फोर्ट मरचेंट
करीम भाई एण्डकं० लि० आउट्रम रोड मरचेंट
कॉटन एजेंट लिमिटेड चर्चगेट स्ट्रीट मरचेंट
किलाचंद देवचंद अपोलो स्ट्रीट मरचेंट
कीकाभाई प्रेमचंद रायचन्द शेअरबाजार
कुँवरजी पीताम्बर एण्डको० चकला स्ट्रीट मरचेंट
केशरीमल अनंदीलाल कालबादेवी मरचेंट
कृष्णप्रसाद को० लिमिटेड कालबादेवी मरचेंट
कृष्णदास वसनजी खेमजी वॉलेस स्ट्रीट मरचेंट
खीमजी विश्राम एन्ड को० हार्नवी रोड मरचेंट
खुशालचंद गोपालदास भुलेश्वर मरचेंट
गजाधर नागरमल मारवाड़ी बाजार ब्रोकर्स
गुलराज चूड़ीवाला केदार भवन कालबादेवीब्रोकर्स
गाढ़मल गुमानमल मम्बादेवी, मरचेंट
गोरखराम साधूराम कालवादेवी मरचेंट
गोपीराम रामचंद्र कालवादेवी मरचेंट
गोकुलभाई दौलतराम ब्रोकर्स
गोरिया लि० वेलार्ड स्टेट मरचेंट
गोकुलदास डोसा एण्ड को० हनुमानगली मरचेंट
गोविंदजी वसनजी एण्ड संस गिरगांव बैंक रोड
गोविन्दजी कानजी चिंचबंदर मरचेंट एण्ड कमीशन एजंट
गुजरात कॉटन कम्पनी हार्नवी रोड मरचेंट
चम्पालाल रामस्वरूप कालवादेवी मरचेंट
चाँदमल घनश्यामदास कालवादेवी मरचेंट
चिमनलाल साराभाई मारवाड़ी बाजार
चुन्नीलाल भाईचंद मारवाड़ी बाजार—ब्रोकर्स
जमना दास अडूकिया कालवा देवी रोड ब्रोकर्स
जमशेदजी आर बखारिया मारवाड़ी बाजार ब्रोकर्स
जगजीवन उजमसी मारवाड़ी बाजार ब्रोकर्स
जवाहर सिंह हरनाम दास पारसीगली मरचेंट
जीवनलाल प्रतापसी शेख मेमन स्ट्रीट ब्रोकर्स
जुहार मल मूलचंद, अलसीका पाटिया मरचेंट,
जुगुलकिशोरघनश्यामलाल मारवाड़ी बाजारमर्चेन्ट
जेठाभाई देवजी मांडवी, मरचेंट एण्ड मुकादम

जेसूजी एण्ड संस हार्नेबी रोड—मर्चेंट
जोगी राम जानकीदास कालबादेवी मर्चेंट, एण्ड कमीशन एजंट
जोतराम केदारनाथ कालबादेवी, मरचेंट एण्ड कमीशन एजंट,
धरमसी जेठा मांडवी, मर्चेंट एण्ड कमीशन एजंट
दुलेराय एण्ड कंपनी अपोलो स्ट्रीट, ब्रोकर्स
द्वारकादास त्रिभुवनदास शेखमेमन स्ट्रीट, ब्रोकर्स
दामजी शिवजी शेख मेमन स्ट्रीट, ब्रोकर्स
देवकरण नानजी मारवाड़ी बाजार, ब्रोकर्स
दुर्गादत्त सांवलका मारवाड़ी बाजार, ब्रोकर्स
देवकरणदास रामकुँवार मारवाड़ी बाजार, मरचेंट
देवसी खेतसी ब्रोकर्स
दौलतराम कुन्दनमल कालबादेवी, मरचेंट एण्ड कमीशन एजंट
देहदास्ती (एम०एच०)१ आसलेन फोर्ट, मरचेन्ट एण्ड कमीशन एजंट
धनपतमल दीवानचंद तॉबाकांटा, मरचेंट
नरसिंहदास जोधराज कालबादेवी, मरचेंट
नवीनचंद दामजी हमाम स्ट्रीट
नैनसुखदास शिवनारायण मरचेंट
पूनमचंद वखतावरमल मम्बादेवी, मरचेंट
मावजी भीमजी मरचेंट
न्यू मुफस्सिल कंपनी हमाम स्ट्रीट फोर्ट
मामराज रामभगत मारवाड़ी बाजार, मरचेंट
मेहता (एच० एम०) एस्प्लेनेडरोड फोर्ट, मरचेंट
रत्तीलाल एण्ड कं० मारवाड़ी बाजार, ब्रोकर्स
रामकुँवार मुरारका ब्रोकर्स मारवाड़ी बाजार
लच्छीराम चूड़ीवाला ब्रोकर्स मारवाड़ी बाज़ार
लक्ष्मीनारायण सरावगी ब्रोकर्स
लक्ष्मीदास भावजी मरचेंट
लक्ष्मीचंद पदमसी कालबादेवी, मरचेंट
लालजी थैकरसी मूलराज खटाऊ हाऊस चिंचबंदर, मरचेंट
लक्ष्मीनारायण बृजमोहन कालबादेवी, ब्रोकर्स
संतलाल विश्वेसर लाल कालबादेवी।
शिवदान अग्रवाला कालबादेवी, ब्रोकर्स
शिवजी पुंजा कोठारी, ब्रोकर्स
सरूपचंद पृथ्वीराज मारवाड़ी बाजार, ब्रोकर्स
हरविलास गंगादत्त कालबादेवी, ब्रोकर्स
हरसुखराय गोपीराम कालबादेवी, मरचेंट
हरमुखराय सुन्दरलाल मारवाड़ी बाजार
हीरजी नेनसी एल्फिन्स्टन सर्कल,
हुकुमचंद राम भगत मारवाड़ी बाजार, मरचेंट
हरगोविंददास अबजी,
हीराचंद बनेचंद कालबादेवी
हरदत्तराय रामप्रताप शेख मेमन स्ट्रीट, कमीशन एजंट एण्ड मरचेंट
हरनंदराय रामनारायण मर्चेंट
हरनंदराय सूरजमल, मरचेंट
हरनंदराय बैजनाथ कालबादेवी मरचेंट

कपड़ेके व्यापारी
CLOTH-MERCHANTS

कपड़ेके व्यापारी

कपड़ेका व्यवसाय—

समय चक्र हमेशा परिवर्तित होता रहता है। उत्थानसे पतन और पतनसे उत्थान यह प्रकृतिका सनातन नियम है। संसारका इतिहास इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। एक समय जिस भारतके बने कपड़ेकी सफाई, बारीकी और मुलामियतको देखकर आजका सभ्य कहलानेवाला संसार दंग रह जाता था आज वही भारत गज गज कपड़ेके लिए विदेशोंका मुंह ताकता रहता है। इतिहाससे पता चलता है कि भारतवर्षमें हजारों वर्ष पहिलेभी बढ़ियासे बढ़िया कपड़ा बुना जाता था और यहांके बुने हुए कपड़ेको विदेशवाले बड़े चावसे खरीदते और पहनते थे। ईसवी सन्के आरम्भमें इतिहासवालोंने लिखा है कि अरबके निवासी यहांसे सादे, रंगीन, सूती मालको खरीदकर लाल सागरकी राहसे यूरोप पहुंचाते थे। रोमके बादशाह अगस्त सीजरके समय रोमकी रानियां भारतीय कपड़ेसे अपनी देहको सजानेमें बड़ा गौरव समझती थीं। इसके पश्चात् मध्यकालीन युगमें भी—जब पोर्तगीज, अंगरेज, फ्रांसीसी और डच कम्पनियां सीधे भारतवर्षसे व्यापार करनेके लिये खुलीं—उस समयभी करोड़ोंकी लागतका सूती माल यूरोप जाता रहा। नीचे लिखे अङ्कोंसे यह बात और स्पष्ट हो जायगी।

सन्	भारतसे विलायतको एक्सपोर्ट हुई गांठे— (ये अङ्क केवल कलकत्ते से गई हुई गांठोंके हैं)
१८०१	६००० से ऊपर
१८०२	१४००० से ऊपर
१८०३	१३००० से ऊपर
१८२६	१००० के भीतर

सन्०	भारतसे अमेरिकाको एक्सपोर्ट हुई गांठे—
१८०१	१३००० से ऊपर
१८२६	केवल ३००

सन्	यहांसे पोर्तगालको एक्सपोर्ट हुई गांठें —
१७६६	करीब १००००
१८२५	१००० से भी कम

इस संख्याके एकदम इस प्रकार घट जानेका मुख्य कारण यह था कि यूरोप और अमेरिकामें भी अब लोग कातने बुननेकी कलासे वाकिफ़ होने लग गये थे। सबसे पहले लगभग आठवीं शताब्दीमें मूर जातिके लोग कपासके पौधेको स्पेन देशमें ले गये। इसके पूर्व उन लोगोंने इस विचित्र वस्तुके दर्शन भी नहीं किये थे। कुछ समय पश्चात् वहांपर हाथ चरखेसे रूईका काता जाना प्रारम्भ हुआ। सन् १७७० में हार ग्रीब्स नामक व्यक्तिने एक ऐसा चरखा तैयार किया जिससे दो सूत एक साथ काते जा सकें। इस चरखेको देखकर वहांके लोगोंका उत्साह और बढ़ा और सन् १७७९ में कॉम्पटन नामक व्यक्तिने "म्यूल" नामक यंत्र तैय्यार किया। इस यंत्रके द्वारा बहुतसे तार एक साथ निकलते थे। इस प्रकार धीरे २ वहांकी यंत्रकलामें उन्नति होने लगी। पर फिर भी भारतवर्षके कपड़े के मुकाबिलेमें वहांपर कपड़ा नहीं बनता था। वहांके नागरिक भारतका कपड़ा पहनना ही विशेष पसन्द करते थे जिससे वहांके जुलाहोंका रोजगार नहीं चलने पाता था। यह देखकर वहांके जुलाहोंने गवर्नमेण्टसे प्रार्थना की, कि भारतसे आनेवाले कपड़ेपर रोक होना, हमारे व्यापारकी तरक्कीसे लिए नितान्त आवश्यक है। फलतः वहांके राजा तीसरे विलियमने सन् १७००में कानून बनाया कि जो स्त्री पुरुष भारतके रेशमी तथा सूती कपड़ोंको बेचेंगे या व्यवहारमें लावेंगे उनपर दो सौ पौण्ड जुर्माना किया जावेगा। इसके अतिरिक्त उन्होंने भारतवर्षसे आनेवाले मालपर कस्टम-ड्यूटी भी बहुत अधिक लगा दी। परिणाम यह हुआ कि यहांसे बाहर जानेवाला माल एकदम रुक गया और ईस्ट इण्डिया कम्पनीके उद्योगसे यहांके उद्योग धंधेंकी भी धीरे २ अवनति होने लगी। उधर भारतीय कपड़ा बन्द हो जानेसे वहांके कपड़े सम्बन्धी उद्योग धंधोंमें एक नवीन जीवन और स्फूर्तिका संचार हो आया। वैज्ञानिकोंके द्वारा नये २ आविष्कार होना शुरू हुए। भाफ़के एञ्जिन अपनी द्रुत गतिसे चलने लगे। तरह २ की नई मशीनें निकाली गईं, जिससे मैन्चेस्टर और लङ्काशायरकी उजाड़ भूमि सैकड़ों धुंआधार कारखानोंसे आबाद हो गई। इधर अठारहवीं शताब्दी से अमेरिकामें रूईकी खेतीका भी प्रारम्भ हो गया। इन सब विचित्र घटनाओंका फल यह हुआ कि कुछ ही दिनोंमें दुनियामें रूईके व्यवसायकी काया ही पलट गई। जहां भारतसे लाखों करोड़ोंका माल बाहर जाता था, वहां अब हरसाल उससे दूना चौगुना और दसगुना माल बाहरसे यहां आता है। दुनियाके उद्योग धंधोंके इतिहासमें काया पलटका ऐसा अद्भुत उदाहरण खोजनेपर भी न मिलेगा। आज यह हालत है कि प्रतिवर्ष करीब ६० करोड़ रुपयेका कपड़ा, भारतवासियोंके बदनको ढकनेके लिए बिलायतसे आता है।

इस प्रकार मशीनोंके चल जानेसे, और विदेशी मालके सस्ता पड़नेसे यहांके बाजारोंपर विलायती कम्पनियोंका अधिकार हो गया, और भारतवर्षके उद्योग धंधोंकी कमर टूट गई। आज भी लाखों जुलाहे इस देशमें कपड़ा बुनते हैं पर उनको अपना पेटपालना भी कठिन हो रहा है।

विलायतकी इस क्रियाके मुकाबिलेमें यहांपरभी प्रतिक्रियाका होना आवश्यक था। जब भारतने विलायतकी इन शीघ्रगामी माशिनरियोंके मुकाबिलेमें अपने उद्योग धंधोंको न पाया तो उसने भी वहांका अनुकरण करना प्रारम्भ किया। फल यह हुआ कि वहांसे मशीनरी मंगवा २ कर यहां भी कॉटन मिल्स खोला जाना प्रारम्भ हुआ। सन् १८५१ में बम्बईमें सबसे पहली सूत बुननेकी मिल खुली और तबसे आजतक सतर पचहत्तर वर्षों में इन मिलोंने अपनी असाधारण उन्नति की है। करोड़ों रुपयेकी पूंजी इस उद्योगमें लगी हुईहै, लाखों आदमी काम करते हैं और करोड़ों पौण्ड कपड़ा प्रतिवर्ष इन मिलोंसे बुना जाता है। इस प्रकार अधिकांशमें विलायती माल और उससे कम इन मिलोंके मालसे भारतवर्षके बाजार पटे रहते हैं। यही भारतके कपड़ेके व्यवसायका परिचय है। हाथ कारीगरी तो यहां करीब २ बरबाद हो चुकी है। गांधीजीके उद्योगसे उसमें नवजीवनका संचार हो रहा है, मगर देशकी आवश्यकताको देखते हुए उसकी तादाद बहुत कम है। इस समय हाथ कारीगरीसे बनाए जानेवाले कपड़ोंमें जयपुरका कसबका काम, यू० पी० का गाढ़ा और तंजेब, महेश्वरकी साड़ियां, बनारसका काशी सिल्क, मध्यप्रदेशके धोती जोड़े, अमृतसरके गलीचे, काश्मीरकी लोइएं, आगरेकी दरियां, ढाका मुर्शिदाबाद और चटगांवकी मलमल, भागलपुरका टसर इत्यादि कपड़ोंका मार्केटमें व्यापार होता है।

बम्बईके कपड़ेके बाजार

भारतवर्षमें कपड़ेके व्यापारके जितने केन्द्र हैं उनमें बम्बई और कलकत्ता सबसे बड़े हैं। विलायतसे उतरा हुआ माल भी सब यहींसे होकर भारतवर्षमें फैलता है और बम्बईकी करीब सौ मिलोंका माल भी यहीं (बम्बई) से बाहर जाता है। यही वजह है कि यहांपर कपड़ेके बड़े २ मार्केट बने हुए हैं और बड़े २ प्रतिष्ठित व्यापारी इस व्यापारको करते हैं। यहांके कपड़ेके बाजारोंका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

(१) मूलजी जेठा मारकीट—यह बम्बईकी सबसे बड़ी मारकीट है। यहां सब प्रकारके देशी और विलायती कपड़ेका थोक तथा परचूरन व्यापार बहुत बड़े स्केलपर होता है। कपड़ेके बड़े २ व्यापारियोंकी दुकानें इस मारकीटमें हैं।

(२) मुरारजी गोकुलदास मारकीट—यह मारकीट कालबादेवीमें बना हुआ है। यहांपर थोक गांठोंका व्यापार होता है।

(३) लक्ष्मीदास मारकीट—यहांपर भी थोक गांठोंका तथा परचूरन कपड़े व्यापार बड़ेस्केलपर होता है

(४) मंगलदास मारकीट—यहां देशी, कटपीस और सब प्रकारका माल थोक और परचूरन बिकता है।

(५) जकरिया मस्जिद और चकला स्ट्रीट—इस बाजारमें विलायती कटपीस और चायना सिल्कके व्यापारी बैठते हैं।

(६) भोलेश्वर—यहाँपर स्त्रियोपयोगी सब तरहके फेन्सी कपड़े और फ़ीतें परचूरन बिकते हैं।

बम्बईके कपड़ेके व्यापारको सुदृढ़ रूपसे चलाने और उसके सम्बन्धमें पड़नेवाले झगड़ोंको निपटाने, तथा नियम बनानेके लिए बाम्बे नेटिव पीसगुड्स मर्चेंट्स एसोसिएशन बहुत अग्रगण्य है। इसके प्रमुख आँनरेबुल सर मनमोहनदास रामजी हैं।

व्यापारिक नियमके अनुसार इन बाजारोंमें गांवठी और विलायती दोनों प्रकारके मालोंपर भिन्न २ रूपमें बटाव (कमीशन) मिलता है। यह बटाव तीन प्रकारका होता है:—

(१) बटाव—यह प्रति सैंकड़ा और कहीं २ प्रति थानके हिसाबसे निश्चित रहता है। इसमें भी बंधी गांठ और खुले मालके बटाव, और पेमेण्टकी मुद्दतके दिनोंकी तादादमें अन्तर रहता है।

(२) शाही—यह भी एक प्रकारका बटाव है। जो पूरी गांठपर मिलता है।

(३) बारदान-यह भी एक प्रकारका बटाव है जो विलायती तथा और भी कई किस्मके मालोंपर मिलता है।

इस बटावकी तादाद तथा इस सम्बन्धकी विशेष जानकारीके लिए बाम्बे नेटिव्हपीस गुड्स एसोसिएशनकी नियमावली मंगाकर देखना चाहिए।

कपड़ेके व्यवसायी

मेसर्स गोकुलदास डुंगरसी जे० पी०

इसफर्मके मालिक खंभालिया (जाम नगर) के निवासी भाटिया जातिके सज्जन हैं।

इसफर्मका स्थापन करीब ५० वर्ष पूर्व सेठ डूंगरसी पुरुषोत्तमके हाथोंसे हुआ था। तथा इसके व्यापारको विशेष तरक्की सेठ रतनसी डूङ्गरसीके हाथोंसे प्राप्त हुई।

इसफर्मके वर्तमान मालिक सेठ गोकुलदास डूंगरसी जे० पी० हैं। आपने भट्ट छगनगोपालजी से व्यापारिक शिक्षा पाई है। इसफर्मपर पहिले वल्लभदास लखमीदासके नामसे व्यापार होता था। सेठ गोकुलदासजीको इसी साल २२ अप्रैलको गवर्नमेंटसे जे० पी० की उपाधि प्राप्त हुई है। आपकी ओरसे सेठ रतनसी डूंगरसीके नामसे गायवाड़ीमें एक औषधालय तथा सेठ लखमीदास मूलजी गोकुलदासके नामसे एक लायब्रेरी स्थापित है।

खम्भालिया (जाम नगर) में सेठ पुरुषोत्तमडूंगरसीके नामसे आपका एक अस्पताल चल रहा है। द्वारकाजीमें और पोरबन्दर स्टेशनके पास आपकी विशाल धर्मशालाएं बनी हुई हैं।
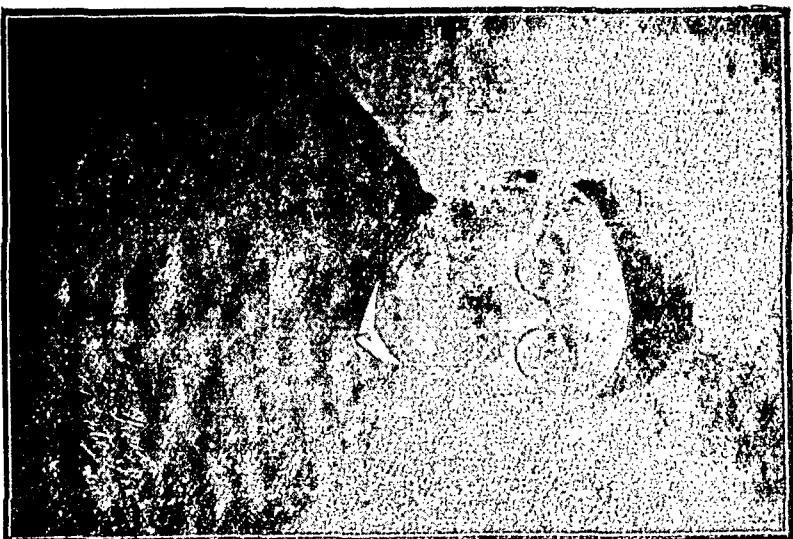
सेठ गोकुलदास डंगरसी जे० पी०

सेठ दामोदर गोविन्दजी बम्बई

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स गोकुलदास डूंगरसी मूलजी जेठा मारकीट चौक T. A. Promsukh इस फर्मपर बाम्बे कॉटन मिलकी २० वर्षसे, जमशेद मिलकी १२ वर्षसे तथा आसर मीलकी ३ वर्षसे एजंसी है। यह फर्म रुबी मिलमें पार्टनर भी हैं।

मेसर्स घेलाभाई दयाल

इस फर्मका स्थापन सेठ घेलाभाई दयालने ६५ वर्ष पूर्व किया तथा सेठ जीवराज दयाल और सेठ घेलाभाई दयालके हाथोंसे इसके व्यवसायकी विशेष उन्नति हुई। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ हरीदास घेलाभाईदयाल और गोकुलदास जीवराजदयाल हैं। सेठ गोकुलदासजी, पीसगुड्स मरचेंट्स एसोसिएशनके आनरेरी सेक्रेटरी हैं। आप (जामनगर) खम्भालियाके निवासी भाटिया जातिके हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई-मेसर्स घेलाभाईदयाल घड़ियालगली मूलजी जेठा मारकीट—इस फर्मपर विलायती, कोरी-जगन्नाथी और मलमलका व्यापार होता है। इस फर्मपर कपड़ेका विलायतसे डायरेक्ट इम्पोर्ट होता है।

मेसर्स दामोदर गोविन्दजी

इस फर्मके मालिक खम्भालिया (जामनगर) के निवासी भाटिया (वैष्णव) जातिके सज्जन हैं। इस को सेठ दामोदरदासजीने संवत् १९६०में स्थापित किया था। इसके पूर्व आप सेठ घेला-दयालके साथ साझेमें कपड़ेका व्यापार करते थे। आपका देहावसान संवत् १९८१में हुआ। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ विठ्ठलदास दामोदर गोविन्द जी और सेठ पदमसी दामोदर गोविंद जी हैं। सेठ विठ्ठलदास जी संवत् १९५५से कपड़ेका व्यापार करते हैं। आपने संवत् १९५६के भयङ्कर दुष्कालके समय बहुत फंड एकत्रित करके जानवरों और गरीबोंकी सहायतामें बहुत परिश्रम उठाया था। आप सन् १९८१से पोर्टट्रस्टके और १९२४से बाम्बे कार्पोरेशनके मेम्बर हैं। आप कपड़ा बाजारके सरवेयर और एम्पायर हैं।

सेठ विट्ठलदास जी कपड़ेके व्यापारियोंकी मंडलीके वाइसप्रेसिडेण्ट रह चुके है। आप इण्डियन मर्चेण्ट चेम्बरकी कमिटीके मेम्बर और सर हरकिशनदास हास्पिटल और उनकी संस्थाओंके ट्रस्टी हैं। भाटिया कान्फ्रेन्सके दूसरे अधिवेशनके आप सभापति भी रह चुके हैं।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

(१) मेसर्स दामोदर गोविन्दजी एण्ड कम्पनी चौक मूलजी जेठा मारकीट बम्बई—इस फर्मपर कोरी जगन्नाथी, मलमल तथा धोये मालका थोक व्यापार होता है। इस फर्मने पहिले ब्रेडवरी मिल, असुर वीरजी मिल, गोल्ड मुहर मिल, खटाऊ मकनजी मिलकी एजेन्सीका काम किया है। इस समय मैनचेस्टर एक्सपोर्टर ग्राहम कम्पनी और रायली ब्रदर्ससे आपका डायरेक्ट सम्बन्ध है।

(२) मथुरादास हरीभाई मू० जे० मारकीट बम्बई—इस फर्ममें आप भागीदार हैं। यहाँ कसुम्बा तथा छपे मालका व्यापार होता है।

मेसर्स धरमसी माधवजी

इस फर्मका स्थापन संवत् १९६४में सेठ धरमसी भाईके हाथोंसे हुआ तथा इसके व्यापारकी तरक्की भी आप ही के हाथोंसे हुई। सेठ धरमसी जी रङ्गीन कपड़ेके व्यापारियोंकी मंडलीके वाइस-प्रेसिडेण्ट और गो-रक्षक मंडलीकी मैनेजिंग कमेटीके मेम्बर हैं। कपड़ेके व्यापारियों और रायली-ब्रदर्सके बीच जो कपड़ेका झगड़ा खड़ा हुआ था, वह आपहीने उठाया था। और उसमें आपको सफलता भी मिली थी।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—धरमसी माधव जी चीकलगली मूलजी जेठा मारकीट—यहाँ रङ्गीन फेंसी, विलायती और मर्सराइज कपड़ेका व्यापार होता है।

(२) बम्बई—त्रीकमदास धरमसी-संचागली मूल जी जेठा मारकीट—यहाँ गांवठी तथा (देशी) रङ्गीन चेकका व्यापार होता है।

मेसर्स माधवजी ठाकरसी एण्ड कम्पनी

इस फर्मका स्थापन सेठ माधव जी ठाकरसीके हाथोंसे ५०।५२ वर्ष पूर्व हुआ था। आपका देहावसान अभी ६ वर्ष पूर्व हो गया है। वर्तमानमें इस फर्मके प्रधान संचालक सेठ देवीदास माधव जी ठाकरसी जे० पी० हैं। आप खास निवासी द्वारिकाके हैं। आप ५० वर्षोंसे रङ्गीन छीटोंका और २० वर्षोंसे गांवठी (देशी) कपड़ोंका व्यवसाय करते हैं। अभी ३ वर्षोंसे मानिक जी पेटिट मिलोंकी सेलिंग एजेन्सीका काम आपके नामसे हुआ है।

सेठ देवीदास जी को करीब २० वर्ष पूर्व भारत सरकारने जे० पी०की उपाधिसे सम्मानित किया था। आप नेटिव्हपीस गुड्स मर्चेण्ट एसोशिएशनके उप प्रमुख हैं। तथा इण्डियन मर्चेंट चेम्बरके

सेठ देवीदास माधवजी थैकरसी जे० पी०

राव साहब सेठ हरजीवन वालजी जे० पी०

सेठ राघवजी पुरुषोत्तम

सेठ सूरजी भाई वल्लभदास (रंगवाले) पृष्ठ नं० २२

उप प्रमुख और प्रमुख तथा बाम्बे पोर्टट्रस्टके ट्रस्टी रह चुके हैं। करीब १५ वर्षोंसे आप आनरेरी प्रेसिडेंसी मजिस्ट्रेट हैं। आप कापड़ बाजारके बड़े आगेवान व्यापारी माने जाते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—माधवजी ठाकरसी एण्ड कम्पनी गोविन्दचौक मूलजी जेठा मारकीट—इस दुकानपर रङ्गीन छींट चेक और सूती कपडेका व्यापार होता है।

(२) बम्बई—देवीदास माधव जी ठाकरसी,चम्पागली मूलजी जेठा मारकीट-इस दुकानपर मानिकजी पेटिट मिल्स कम्पनीकी एजेन्सी है।

(३) बम्बई—माधवजी ठाकरसी कम्पनी फार्बसस्ट्रीट फोर्ट—यहाँ छींट तथा विलायती मालका इम्पोर्ट घरू और कमीशनसे होता है।

मेसर्स भालचन्द्र बलवंत

इस फर्मके मालिक बम्बईके निवासी गौड़ सारस्वत ब्राह्मण जातिके हैं। करीब ३० वर्ष पूर्व इस फर्मको सेठ बलवंतराव रामचन्द्रने स्थापित किया, तथा आपहीके हाथोंसे इस फर्मको विशेष तरक्की मिली। वर्तमानमें इस फर्मके प्रधान कार्यकर्त्ता सेठ भालचन्द्रजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स भालचन्द्र बलवंत, नारायण चौक मूलजी जेठा मारकीट बम्बई—(T. A. Pice goods) यहां सफेद, कोरा तथा विलायती मालका थोक व्यापार और एक्सपोर्ट इम्पोर्टका बिजिनेस होता है।

मेसर्स मुरारजी केशवजी

इस फर्मको सेठ हरीभाई हेमराजने ३२ वर्ष पहिले स्थापित किया था। वर्तमानमें आपके छोटे भाई सेठ केशवजीके पुत्र सेठ तुलसीदास केशवजी और सेठ मुरारजी केशवजी इस फर्मका संचालन करते हैं। सेठ पुरुषोत्तमकेशवजी अपना अलग व्यवसाय करते हैं। मुरारजी सेठ खंभालियाके (जामनगर)निवासी हालाई लुहाना समाजके सज्जन हैं। आप ३२वर्षोंसे देशी मिलोंकी कपड़ेकी एजंसी का काम करते हैं। लुहाना समाजमें मुरारजी सेठ अच्छे प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति माने जाते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मुरारजी एण्ड होरमसजी,चम्पागली मूलजी जेठा मा० —यहां स्वान, फीनले,गोल्ड मुहर फिनिक्स और मून मिलकी कपड़ेकी एजंसी है।

मेसर्स मुरारजी वृन्दावन

इस फर्मका स्थापन २५ वर्ष पूर्व सेठ मुरारजी दामोदरके हाथोंसे हुआ था। आप भाटिया जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवासस्थान खम्भालिया (जामनगर) है।

सेठ मुरारजी अपनी जातिमें बहुत प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते थे। आपने प्रारंभमें सेठ विश्राम धनजीके भागमें व्यापार किया, एवं मुरारजी वृन्दावन नामक फर्म स्थापित की। आपका देहावसान अभी कुछ मास पूर्व होगया है।

वर्तमानमें इस फर्मके भागीदार सेठ वृन्दावन वालजी, सेठ मूलजी वालजी, और सेठ गोकुल दास दामोदरदास हैं।

इस फर्मके मालिक वैष्णव संप्रदायके सज्जन हैं। सेठ वृन्दावन वालजी, श्री गोकुलदासजी महाराजके ऑनरेरी प्राइवेट सेक्रेटरी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स मुरारजी वृन्दावन, चौक मूलजी जेठा मारकीट बम्बई—(T. a. Dominion) इस फर्मका प्रधान व्यापार गांवठी चेक और सूसीका हैं। यह फर्म बड़ी २ मिलोंके देशी कपड़ेका थोक व्यवसाय करती हैं। अभी २ वर्षसे फ्रामजी पेटिट मिलका कमीशनका वर्क भी इस फर्मके द्वारा होता है।

सेठ राघवजी पुरुषोत्तम

राघवजी सेठ लुहाना जातिके कच्छ (तूरना) के निवासी सज्जन हैं। आप ३० वर्षोंसे देशी कपड़ेका व्यापार करते हैं। तथा २३ वर्षोंसे सेठ करीम भाई इब्राहिमके साथ कपड़ेकी सेलिङ्ग ऐजंसीका व्यापार पार्टनरके रूपमें करते हैं। पहिले आप २ वर्षतक पेटिट मिलकी एजंसीमें भी पार्टनर थे। इसके भी पूर्व आप जीवराज बालू और खटाऊ मकनजीकी मिलोंकी सेलिङ्ग एजंसीका काम करते थे। राघवजी सेठ कच्छी लुहाना समाजकी ८।१० संस्थाओंके ट्रस्टी हैं। तिलक स्वराज फंडके ट्रस्टी भी आप रहे थे। उस फण्डमें आपने अपनी ओरसे ४० हजार रुपये भी दिये थे। वर्तमानमें आप सर करीम भाई इब्राहिमकी १३ मिलोंका करीब ४।५ करोड़का माल प्रति वर्ष बचते हैं।

आपका पता राघवजी सेठ c/o करीम भाई इब्राहिम एण्ड संस शेख मेमनष्ट्रीट बम्बई है।

मेसर्स रावसाहब हरजीवन वालजी जे० पी०

इस फर्मके वर्तमान मालिक राव साहब सेठ हरजीवन बालजी जे० पी० हैं। आपका आदि निवास स्थान खंभालिया (जामनगर) है, पर आप बहुत समयसे बम्बईहीमें निवास करते हैं। आप भाटिया सज्जन हैं।

इस फर्मको सेठ हरजीवन वालजीने ३५ वर्ष पूर्व स्थापित किया तथा इसकी विशेष तरक्की भी आपहीके हाथोंसे हुई है। आपको गवर्नमेंटने सन् १९२६में राव साहब तथा सन् १९२७में जे०पी०की पदवीसे सुशोभित किया है। आप बाम्बे नेटिव्ह पीस गुड्स मरचेंट्स एसोशियेशन तथा बाम्बे गौरक्षक मंडलीके सेक्रेटरी हैं। इसके अतिरिक्त आप बाम्बे जीवदया मंडलीके वाइस प्रेसिडेंट तथा इण्डियन चेम्बर ऑफ कामर्सकी कमेटीके मेम्बर हैं। कापड़ बाजारमें आप बड़े आगेवान व्यापारी माने जाते हैं।

गौरक्षाके लिये आपने बहुत परिश्रम उठाया है। आपकी ओरसे खंभालियामें उच्च वर्णके हिन्दुओंके लिये एक आर्फनेज आपके भाई सेठ गोवर्द्धनदास वालजीके नामपर स्थापित है।

सन् १९१८।१९में व्यापारियों और आफिसोंमें एक्सचेंजका जो बड़ा भारी व्यापारिक झगड़ा उपस्थित हुआ था उसके निर्णयमें आपने बहुत अग्रगण्य रूपमें भाग लिया था। उस समय करीब २-२॥ करोड़का फैसला आपके हाथोंसे हुआ था। कापड़ मारकीटकी तरफसे आप एम्पायर और सर वेयर हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मेसर्स हरजीवन वालजी १२ चम्पागली बम्बई—यहां देशी तथा विलायती कम्बलका थोक व्यापार होता है।

(२) मेसर्स एल० हरजीवन मूलजी जेठा मारकीट चौक बम्बई (T, A, Banusvala)—यहां मलमल वगैरह विलायती धोये मालका व्यापार होता है।

(३) मेसर्स हरजीवन गोवर्द्धनदास चम्पागली बम्बई—यहां सब प्रकारके गाँवठी कपड़ेका व्यापार होता है

(४) मेसर्स वल्लभदास सुन्दरदास, मूलजी जेठा मारकीट चौक-बम्बई—यहां शाल, रगस, कोटिंग, तथा सब प्रकारके देशी मालका व्यापार होता हैं।

कपड़ेके व्यवसायमें आप गवर्नमेंट कंट्राक्ट भी लेते हैं।

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स करीम भाई इब्राहिम एण्डसंस शेखमेमनस्ट्रीट
,, कृष्णदास मूलजी जेठा विट्ठलवाड़ी
,, केशवजी रामजी लखमीदास चौक मूलजीजेठा मारकीट
,, गोकुलदास जीवराज दयाल मूलजी जेठा मारकीट
,, गोवर्द्धनदास कल्यानजी गोविन्द चौक ”

मेसर्स चतुर्भुज गोवर्द्धनदास मूलजी जेठा मारकीट
" चतुर्भुज शिवजी मूलजी जेठामारकीट
" जेठाभाई गोविन्दजी "
" जेठाभाई हीरजी मूलजी जेठामारकीट
" जेठाभाई रामदास "
" जेठाभाई बालजी लखमीदास मारकीट ३ री गली
" देवकरणमूलजी गोमुखगली मूलजी जेठा मारकीट
" डी० डी० पटेल मूलजी जेठामारकीट
" दामोदर हरीदास मूलजीजेठामारकीट चीकल गली
" गनेश नारायण औंकारमल मूलजी जेठामारकीट
" प्रागजी वृंदाबन चीखलगली "
" बालजी सुन्दरजी घडियालगली "
" नटवरलाल केशवलाल प्रागराजगली मूलजी जेठा मारकीट
" नाथूराम रामनारायण धर्मराज गली
" वल्लभदास चतुर्भुज शिवजी चौक मू० जे० मा०
" बालजी शामजी कम्पनी चौक मू० जे० मा०
" वंशीधर गोपालदास चौक मू० जे० मा०
" भीमजी द्वारकादास लक्ष्मीदास मारकीट १ गली
" मोतीलाल कानजी चौक मू० जे० मा०
" मनमोहनदास रामजी गोविन्दचौक मू० जे० मा०
" धरमसी माधवजी चीकलगली
" मुरारजी गोकुलदास एण्डकम्पनी मुरारजी गोकुलदास मारकीट
" राव साहब हिम्मतगिरि प्रतापगिरि चम्पागली बम्बई
" बामनश्रीधर आपटे मूलजी जेठामारकीट
" लालजी नारायणजी चौक मू० जे० मा०
" मुरारजी कानजी संचागली मू० जे० मा०
" रघुनाथदास प्रागजी मूलजीजेठामारकीट
" मफतलाल गगलभाई प्रागराजगली मू० जे० मा०
" राघवजी पुरुषोत्तम c/o करीमभाई इब्राहिम एण्ड संस शेखमेमन स्ट्रीट
" हरीदास धनजी मूलजी छीपीचाली
" राघवजी आनन्दजी चीकलगली मू० जे० मा०
" रामदास माधवजी चम्पागली
" बालजी सुन्दरजी घडियलगली मू० जे० मा०
" मुरारजी कानजी मुलजी जेठा मारकीट

से० आनन्दरामजी (आनन्दराम मंगतूराम) बम्बई

से० व्रजमोहनजी (कालूराम व्रजमोहन) बम्बई

सेठ सूरजमलजी (गणेशनारायण ओंकारमल) बम्बई

कुंवर मोतीलालजी (देवकरणदास रामकुमार बम्बई

मेसर्स आनन्दराम मंगतूराम

इस फर्मके मालिक नवलगढ़ (मारवाड़) के निवासी हैं। इस फर्मको यहां सेठ आनंदरामजीने संवत् १९७७ में स्थापित किया। सर्व प्रथम सेठ आनन्दरामजी अकोलेमें संवत् १८५३ तक गल्ला रुई एवं आढ़तका काम करते रहे। पश्चात् करीब १३ वर्षतक कलकत्तेमें सुखदेवदास रामप्रसादके साझेमें आपने रंगलाल मोतीलालके नामसे व्यवसाय किया। बादमें आपने ४ वर्षतक मेसर्स ताराचंद घनश्यामदासके साझेसे व्यवसाय किया। तत्पश्चात् संवत् १९७७ से कलकत्तेमें और बम्बईमें आपने अपनी फर्मे स्थापित की।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालन कर्ता सेठ आनन्दरामजी, आपके पुत्र मंगतूरामजी एवं आपके भतीजे गजाधरजी और पूर्णमलजी हैं। आपकी ओरसे नवलगढ़में श्रीचतुर्भुजजीका मंदिर बना है। उसमें २१ विद्यार्थी रोज भोजन एवं शिक्षा पाते हैं।

वर्तमानमें इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स आनंदराम मंगतूराम बादामका झाड़ कालबादेवी - इस फर्मपर कपड़ेकी आढ़तका व्यापार तथा हुंडी चिट्ठी, सोना, चांदी सूत इत्यादि की कमीशन एजंसीका व्यवसाय होता है।

२ कलकत्ता—मेसर्स आनंदराम गजाधर पांचागली—इस फर्मपर जापान और विलायतसे कपड़ेका इम्पोर्ट होता है।

मेसर्स कालूराम वृजमोहन

इस फर्मके मालिक सेठ वृजमोहनजी फतहपुर (जयपुर) निवासी अग्रवाल जातिके हैं। आपने इस फर्मको बम्बईमें १८ वर्ष पूर्व स्थापित किया था। इस फर्मके व्यवसायकी विशेष तरक्की भी आपहीके हाथोंसे हुई। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार हैं।

१ बम्बई—मेसर्स कालूराम वृजमोहन दूसरा भोईवाड़ा—यहां कपड़ेकी आढ़तका काम होता है।

२ कलकत्ता—मेसर्स कालूराम बृजमोहन १८० मल्लिक कोठी—यहां आढ़त तथा हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

३ कटनी (सी० पी०) मेसर्स कालूराम पूरनमल—यहांपर कपड़ेका व्यवसाय होता है।

४ फतहपुर (जयपुर) कालूराम शिवदेव—यहां आपका खास निवास है, तथा सोने चांदीका व्यापार होता है।

५ बम्बई—पूरनमल रामनिवास मूलजी जेठा मारकीट चम्पागली—यह फर्म रेमंड ऊलन मिलकी कमीशन सोल एजंट है।
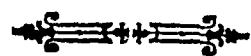
मेसर्स गणेशनारायण ओंकारमल

इस फर्मके मालिक अलसीसर (जयपुर) के निवासी अग्रवाल जातिके (गर्ग-गोत्र) के हैं। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ सूरजमलजी हैं इस फर्मको करीब ८ वर्ष पूर्व बम्बईमें आपहीने स्थापित किया। आप विशेपकर पडरौना (हेड ऑफिस) मेंही रहते हैं।

वर्तमानमें इस-फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ पडरौना (गोरखपुर) मेसर्स देवीदास सूरजमल—यहां कपड़ेका व्यापार और जमींदारीका काम होता है।

२ कलकत्ता—मेसर्स सूरजमल सागरमल, नं० ५ नारायणप्रसाद लेन—यहां आढ़त तथा कपड़ेका व्यवसाय और कपड़ेकी आढ़तका काम होता है।

३ बम्बई—मेसर्स गणेशनारायण ओंकारमल-बादामका झाड़ कालबादेवीरोड (ता० प० अलसीसरका) यहां हुंडी चिट्ठी तथा सब प्रकारकी आढ़त व मिलोंके कपड़ेकी सप्लाईका काम होता है।

४ कानपुर—मेसर्स सूरजमल हरीराम जनरलगंज—यहां गुड़, शक्करकी आढ़त तथा कमीशनका काम होता है।

५ कानपुर—मेसर्स गणेशनारायण मन्नालाल जनरलगंज—यहांपर सर करीमभाई इब्राहिमकी १४ मिलोंके कपड़ेकी कमीशन एजंसी है।

६ कलकत्ता—सूरजमल हरीराम सदासुखका कटला—यहां कपड़ेकी बिक्रीका काम होता है।

७ तमकुहीरोड (गोरखपुर) देवीदत्त सूरजमल—इस दुकानपर केरोसिन तेलकी एजन्सीका और कमीशनका काम होता है।

८ सिरसुआ बाजार (गोरखपुर) सागरमल हरीराम—कमीशन एजंसीका काम होता है।

मेसर्स गोरखराय गणपतराय

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान रामगढ़ मारवाड़में हैं। आप अग्रवाल जातिके हैं। इस फर्मको यहाँ ५५ वर्ष पूर्व सेठ गोरखरामजीने स्थापित किया था। आपका देहावसान हुए करीब ५२।५३ वर्ष हुए। वर्तमानमें इस फर्मका सञ्चालन आपके पौत्र सेठ गनपतरायजी करते हैं। इस फर्मकी विशेष तरक्की आपहीके हाथोंसे हुई।

रायगढ़में आपकी एक धर्मशाला बनी है, एवं एक पाठशाला चल रही है। सेठ गनपतरायजी यहांकी कपड़ा कमेटीके सभापति रह चुके हैं। आपके १ पुत्र हैं जिनका नाम रामगोपालजी है। आप ही यहांकी फर्मका काम करते है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार हैं

बम्बई—मेसर्स :गोरखराय गनपतराय गनपतबिल्डिंग—धनजी स्ट्रीट नं०३—इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी कपड़ेका घरू तथा सब प्रकारकी आढ़तका काम होता है।

मेसर्स चांदमल घनश्यामदास

इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसके हेड ऑफिस अजमेरमें दिया गया है। बम्बई शाखाका पता कालबादेवी रोड है। यहां हुंडी चिट्ठी बैंकिग, रूई और कमीशन एजंसीका काम होता है।

मेसर्स जौहरीमल रामलाल

इस फर्मके मालिक रामगढ़ (शेखावाटी) के निवासी अग्रवाल जातिके (पोद्दार) हैं। इस फर्मका सम्बन्ध सेठ भीमराजजीसे है। आपके समयमें इस फर्मपर मालवेमें अफीमका व्यापार होता था। बीमेका काम भो यह फर्म करती थी। इसके अतिरिक्त यह फर्म अमृतसरके पश्मीना बड़ी तादादमें विलायत भेजती थी।

सेठ भीमराजजीके पुत्र हरदेवदासजीके समयमें उपरोक्त नामसे यह फर्म करीब ४० वर्ष पूर्व मुनीम रामचन्द्रजीने बम्बईमें स्थापित की। अमृतसरमें यह फर्म राजा रणजीतसिंहजीके समयसे स्थापित है।

इस फर्मकी विशेष तरक्की सेठ रामकुँवारजी एवं हनुमानबक्सजीने की। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ रामकुंवारजीके पुत्र नन्दकिशोरजी व हनुमानबक्सजीके पुत्र सेठ जुग्गीलालजी सेठ किशनलालजी तथा सेठ गोविन्दप्रसादजी हैं।

आपका वर्तमान व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स जौहरीमल रामलाल कालबादेवी, भीमराज बिल्डिंग...यहां हुंडी, चिठ्ठी तथा कपड़ेका वरूव आढ़तका काम होता है।

(२ अमृतसर – मेसर्स जौहरीमल रामलाल आलू कटरा—यहां सब प्रकारके कपड़ेका थोक व्यापार तथा आढ़तका काम होता है।

मेसर्स तुलसीराम रामस्वरूप

इस फर्मके मालिक पंजाब (भिवानी) के निवासी अग्रवाल जातिके हैं। इस फर्मको यहां करीब ३० वर्ष पूर्व सेठ तुलसीरामजी व रामस्वरूपजीने स्थापित किया। तुलसीरामजीका देहावसान करीब ८।१० वर्ष पूर्व हो गया है। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन सेठ रामस्वरूपजी तथा श्री मदनलालजी एवं तुलसीरामजीके पुत्र श्री प्रह्लादरायजी करतेहैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स तुलसीराम रामस्वरूप-बादामका झाड़ कालबादेवी नं० २—यहां गेहूं अलसी, रुई, तथा गल्लेका, हाजिर और वायदेका व्यापार व आढ़तका काम होता है।

२ ब्यावर—तुलसीराम रामस्वरूप —यहां सब प्रकारकी आढ़तका काम होता है।

३ भिवानी—बलदेवदास तुलसीराम लाहेड बाजार —यहां आपका निवासस्थान है।

मेसर्स देवकरणदास रामकुंवार

इस फर्मके मालिक नवलगढ़ (मारवाड़) के निवासी हैं। बम्बईमें यह फर्म बहुत पुरानी है। यहां इसे स्थापित हुए करीब १०० वर्षसे अधिक हुए। इस फर्मपर पहिले श्रीराम दौलतरामके नामसे व्यापार होता था। करीब ४१ वर्षसे वर्तमान नामसे यह फर्म काम कर रही है इसे सेठ देवकरणजीने विशेष तरक्की पर पहुंचाया। आपका देहावसान संवत् १९७४ में हुआ आपके पुत्र सेठ रामकुंवारजीका भी देहावसान हो गया है। अब इस समय इस फर्मके मालिक मोतीलालजी हैं। आप अभी नाबालिग हैं। नवलगढ़में इस फर्मकी ओरसे एक धर्मशाला एवं मन्दिर और ब्यावरमें एक धर्मशाला बनी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स देवकरणदास रामकुंवार मारवाड़ीबाजार—यहां हुंडी चिठ्ठी सराफी तथा रुई गल्लेकी आढ़तका काम होता है।

२ कलकत्ता—मेसर्स देवकरणदास रामकुंवार कॉटन स्ट्रीट नं० १३७—यहां सराफी तथा आढ़तका काम होता है।

स्व० सेठ फूलचन्दजी सोढानी (फूलचन्द केदारमल) बंबई

स्व० सेठ केदारमलजी सोढ़ानी (फूलचन्द केदारमल) बंबई

सेठ रामेश्वरदासजी S/o सेठ फूलचन्दजी, बंबई

सेठ हनुमानबख्शजी S/o सेठ फूलचन्दजी, बंबई

३ जयपुर—मेसर्स श्रीराम नारायण जौहरीबाजार-लालकटला—यहां सराफी तथ आढ़तका काम होता है।

४ ब्यावर—देवकरणदास रामकुंवार—यहां आपकी एक जिनिंग तथा प्रेसिंग फेक्टरी है।

५ कलकत्ता (मानभूमि) करमाटान कॉलेरी—श्रीराम कोलकम्पनी—यहां इस फर्मकी १ कोयलेकी खान है।

६ महुवा रोड—(ब्यावर) मेसर्स देवकरणदास रामकुंवार—यहां रुईका व्यापार होता है।

मेसर्स नरसिंहदास जोधराज

इस फर्मके मालिक मूल निवासी भिवानी (हिसार)के हैं आपअग्रवाल जातिके हैं। इस फर्मको सेठ वंशीलालजीने संवत् १८५३ में स्थापित किया, इसकी विशेष तरक्की भी आपही के हाथोंसे हुई। इस समय आप अधिकतर देशहीमें निवास करते हैं। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन आपके छोटे भाई श्री सेठ रामचन्द्रजी बी०.ए० करते हैं। आप शिक्षित सज्जन हैं, तथा अग्रवाल समाजके कार्यों में अच्छा भाग लेते हैं। इसके अतिरिक्त आप मारवाड़ी चेम्बरके डायरेक्टर भी हैं।

श्रीयुत रामचन्द्रजी बी०ए० ने देशव्यापी असहयोगआन्दोलनके समय आच्छा भाग लिया था। उस समय आपने अपना अमूल्यसमय देकर देश सेवा करते हुए १ मासतक जेलयात्रा भी की थी।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स नरसिंहदास जोधराज बादामका झाड़—यहां हुण्डी, चिट्ठी, रुई, अलसी, सोना, चांदी तथा शोराकी आढ़तका काम होता है।

२ करांची—मेसर्स रामप्रताप रामचन्द्र नीयर बोल्टन मार्केट बंदररोड—(T. A. Bansal) यहां हुण्डी चिट्ठी तथा रुई, गल्ला, तिलहन आदि सब प्रकारकी आढ़तका व्यापार होता है।

इस फर्मकी ओरसे भिवानीमें एक धर्मशाला है, तथा मथुरामें एक अन्नक्षेत्र एवं धर्मशाला एवं अन्य क्षेत्र चालू हैं।

मेसर्स फूलचंद केदारमल

इस फर्मके मालिक लक्ष्मणगढ़ (सीकर) निवासी माहेश्वरी (सोढ़ानी गोत्र) के सज्जन हैं। इस फर्मको ३० वर्ष पूर्व सेठ फूलचन्दजी और उनके छोटे भाई सेठ केदारमलजीने स्थापित किया था। आप दोनोंका देहावसान होगया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ फूलचन्दजीके पुत्र सेठ रामेश्वरदासजी एवं हनुमान बख्शजी तथा सेठ केदारमलजीके पुत्र श्री मंगलचन्दजी हैं। लक्ष्मणगढ़में आपका एक मंदिर, एक धर्मशाला, और एक बगीचा बना हुआ है। आपकी ओरसे वहां १ कन्यापाठशाला भी चल रही है जिसमें ८० कन्याएं शिक्षा पाती हैं। लक्ष्मणगढ़के ब्राह्मण विद्यालयके लिए आपने एक मकान दिया है।

इस फर्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स फूलचन्द केदारमल, केदार-भवन कालवादेवी रोड (T. A. Phul Kedar) यहां सराफी,चांदी, सोना, गल्ला,किराना, कपड़ा तथा सब प्रकारकी कमीशन एजंसीका व्यवसाय और चांदी सोना तथा रुईका काम होता है। इस फर्मपर हनुमानवख्श मंगलचन्द के नामसे तिलहन और गेहूंका भी काम होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स फूलचन्द केदारमल, सोढ़ानी हाऊस नं० ३ चितरंजन एवेन्यू रोड (T. A. Fresh) यहां गल्लेका व्यवसाय होता है इसके अतिरिक्त कलकत्तेके केनिंग स्ट्रीटमें आपकी एक ऑफिस हैं उसके द्वारा हैसियनका ऐक्सपोर्ट और चीनीका इम्पोर्ट विजिनेस होता हैं। यहां आपकी २ विल्डिंग्ज़ है।

(३) देहली—मेसर्स रामेश्वरदास मंगलचंद न्यूक्लाथ मारकीट—यहां कपड़ेका थोक व्यापार और सराफी व्यवसाय होता है।

—:※:—

मेसर्स वंशीधर गोपालदास

इस फर्मके मालिक फरुखाबाद (यू० पी०) के निवासी रस्तागी जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको सेठ बंशीधरजीने ५० वर्ष पूर्व स्थापित किया था, तथा इस फर्मके व्यवसायकी वृद्धि सेठ वंशीधर जी और उनके पुत्र सेठ माधोदास जी और गोपालदास जी के हाथोंसे हुई। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ गोपालदासजी एवं उनके पुत्र सेठ हरनारायणजी तथा सेठ गोपालदासजीके भतीजे सेठ रामनायणजी एवं सेठ लक्ष्मीनारायणजी हैं। इस कुटुम्बकी ओरसे बद्रिकाश्रम और प्रयागमें धर्मशालाएं बनी हुई है।

वर्तमानमें इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स वंशीधर गोपालदास मुरारजी गोकुलदास मारकीटके ऊपर कालवादेवीरोड, इस फर्मपर कपड़ेका घरू व आढ़तका व्यापार तथा सब प्रकारकी कमीशन एजेंसीका काम होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स माधवदास गोपालदास मूलजी जेठा मारकीट गोविंदचौक—इस फर्मपर मद्रासके बेङ्किंघम, व कर्नाटक मिल तथा बंगलोर मिलकी एजेन्सी हैं। इसके अतिरिक्त कपड़ेका थोक व परचूनी व्यापार होता है

(३) कानपुर—मेसर्स वंशीधर गोपालदास जनरलगंज—यहां कपड़ेका व्यापार होता है।

(४) फर्रुखावाद—मेसर्स वंशीधर गोपालदास—यहां आपका खासनिवास है, तथा कपडे,का व्यापार होता है।

———

श्री० मंगलचन्दजी (फूलचन्द केदारमल) बम्बई

सेठ मोतीलालजी मूथा (बालमुकुन्द चन्दनमल) बम्बई

मेसर्स ब्रजमोहन सीताराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक लच्छीरामजी हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको आपके पुत्र श्री० ब्रजमोहनजीने स्थापित किया। श्रीयुत ब्रजमोहनजीके २ पुत्र हैं, जिनके नाम क्रमशः सीतारामजी तथा श्रीकृष्णदासजी हैं। वर्तमानमें आप सब सज्जन दुकानके काममें भाग लेते हैं। आपकी फर्म इष्ट इण्डिया काटन एसोसिएशन, मारवाड़ी चेम्बर आफ़ कामर्स और दी ग्रेन एण्ड शीड्स मरचेन्ट एसोसिएशनकी मेम्बर है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) ब्रजमोहन सीताराम १६२।१४ कालबादेवी, बम्बई (T. A. Pooddarbares) यहां सब प्रकार की कमीशन एजंसीका काम होता है। साथ ही वायदेका काम भी होता है।

(२) माणकराम लच्छीराम फतेहपुर—(सीकर) यहां आपका निवास स्थान है। तथा आपकी यहां शानदार इमारत बनी हुई हैं।

मेसर्स बालमुकुन्द चन्दनमल मूथा

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान पीपाड़ (राजपूताना) है। आप ओसवाल स्थानकवासी सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ४० वर्ष हुए होंगे। इसे सेठ बालमुकुन्दजीने स्थापित किया तथा इसकी उन्नति भी आपहीके हाथोंसे हुई। ८ वर्ष पूर्व आपका देहावसान होगया। आप अ० भा० स्थानकवासी कान्फ्रेन्स अजमेरके सभापति रहे थे।

इस समय इस फर्मका संचालन सेठ बालमुकुन्दजीके पुत्र सेठ चन्दनमलजी तथा आपके भतीजे सेठ मोतीलालजी करते हैं। सेठ मोतीलालजी स्था० जै० कान्फ्रेंसके सेक्रेटरी हैं। सितारामें आप आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। सताराकी फर्मको स्थापित हुए करीब १०० वर्ष हो गये हैं। इस समय आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

(१) हेड ऑफ़िस—मुकुन्ददास हजारीमल सतारा — इस फर्म पर हुंडी चिट्ठी तथा कपड़ेका व्यवसाय होता है। कमीशन एजेंसीका काम भी यह फर्म करती है।

(२) सोलापुर—चन्दनमल मोतीलाल सोलापुर — यहां सराफी तथा कपड़ेकी कमीशन एजंसीका काम होता है।

(३) बम्बई—बालमुकुन्दचन्दनमल टिकमानी बिल्डिंग कालबादेवी — इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी तथा सब प्रकारकी कमीशन एजंसीका काम होता है।

मेसर्स भीमाजी मोतीजी

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास स्थान देलदर (रियासत सिरोही) है। इस फर्मको यहांपर स्थापित हुए करीब ५५ वर्ष हुए। इसे यहां सेठ भीमाजीके पुत्र सेठ चन्नाजीने स्थापित किया था। आप पोरवाल (बीसा) जातिके सज्जन हैं।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ चन्नाजीके पुत्र सेठ भभूतमलजी हैं। आपके हाथोंसे इस फर्मको विशेष उत्तेजन मिला। बम्बईकी पाखाड़ पार्टीके सभापतिका काम करते हुए आपको करीब १५ वर्ष हो गये हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स भीमाजी मोतीजी चम्पागली, मूलजी जेठा मारकीटके सामने—इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी तथा आढ़तका काम होता है।

२ बम्बई—मेसर्स भीमाजी भभूतमल सराफ बाजार— यहाँ भी हुंडी चिट्ठी तथा आढ़तका काम होता है।

३ अहमदाबाद—मेसर्स भीमाजी मोतीजी मस्कती मार्केट—यहां हुंडी चिट्ठी तथा आढ़तका व्यापार होता है।

४ अहमदाबाद—मोतीजी भभूतमल मस्कती मार्केट—यहां आपकी एक कपड़ेकी दुकान है।

मेसर्स रघुनाथमल रिधकरण बोहरा

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री रिधकरणजी हैं। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं। आपका, मूल निवास जोधपुर (मारवाड़) है। श्रीयुत रिद्धकरणजी संवत् १८५० में सर्व प्रथम बम्बई आये कुछ समयके पश्चात् आपने यहाँपर दुकान स्थापित की। वर्तमानमें आप दि हिन्दुस्तानी नेटिव्ह मरचेंट्स एसोसिएशनके सेक्रेटरी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—रघुनाथमल रिधकरण विट्ठलवाड़ी, पत्थरका माला—यहां कपड़ा किराना चांदी सोना तथा सब प्रकारकी कमीशन एजंसीका काम होता है।

मेसर्स रामनाथ हनुमंतराम रायबहादुर

इस फर्मके वर्तमान मालिक रावबहादुर सेठ हनुमंतरामजी हैं। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान खाड़ोपा ग्राम (जोधपुर-स्टेट) में है।

इस फर्म का हेड आफिस पूनामें है। बम्बईमें इस फर्मको स्थापित हुए करीब ३० वर्ष हुए। इस फर्मको सेठ हनुमंतरामजीने स्थापित किया। आप सेठ रामनाथजीके पुत्र हैं। आपको

रा० ब० सेठ हनुमंतरामजी (हनुमंतराम राममनाथ) बम्बई
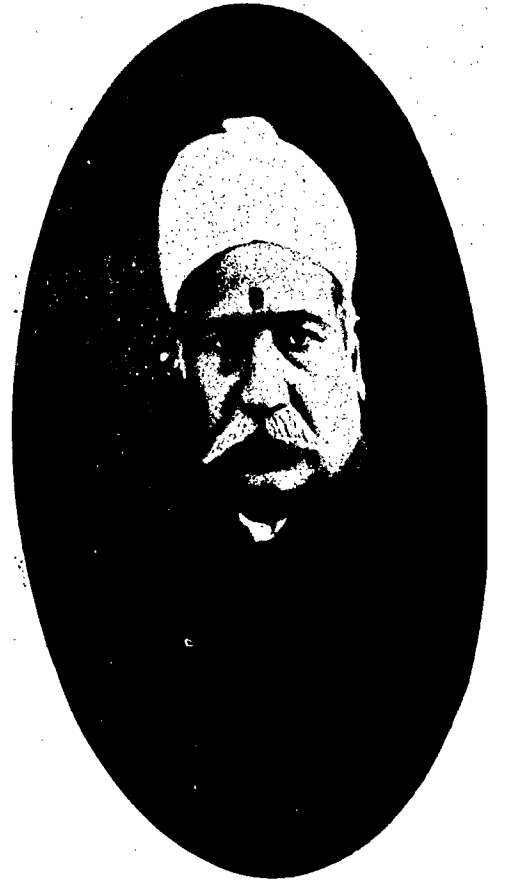
सेठ द्वारकादास नागपाल (पोकरदास

सेठ देवीचंदजी (रायचंद खेमचंद) (पृ० १२३)
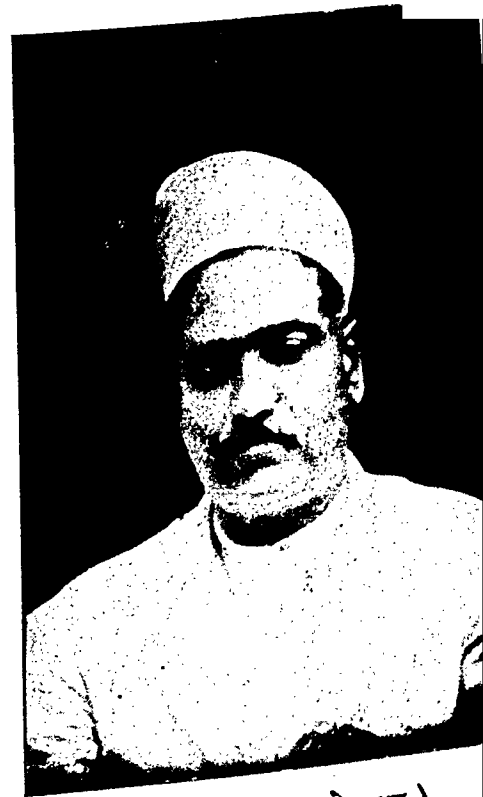
सेठ मेघराजजी (पोकरदास मेघराज)

सन् १९१९ में गवर्नमेंटसे राव बहादुरकी पदवी प्राप्त हुई है। आपक अपने समाजमें अच्छी प्रतिष्ठा है।

आपकी ओरसे पूनामें मारवाड़ी विद्यार्थी बोर्डिंग हाऊस नामक एक बोर्डिंग हाऊस बना हुआ है जिसमें ४० विद्यार्थियोंके रहनेका स्थान है। इसके अतिरिक्त करीब ५० हजारकी लागतकी एक धर्मशाला आपकी ओरसे वृन्दाबनमें बनी हुई है। पूनाके पब्लिक हास्पीटलके चंदेमें आपने ५० हजार रुपया दिये हैं। पूना एवं वृन्दावनमें आपकी ओरसे अन्नक्षेत्र चल रहे हैं। आप तृतीय महाराष्ट्र प्रांतीय माहेश्वरी परिपदके स्वागताध्यक्ष, और छठी बम्बई प्राँतीय माहेश्वरी परिपदके अध्यक्ष रह चुके हैं। पूना रविवार पैठमें आपका एक आयुर्वेदिक धमार्थ औषधालय चल रहा है।

श्रीहनुमंतरामजी सेठ रामनाथजीके यहां दत्तक आये हैं। वर्तमानमें आपके दो पुत्र हैं जिनके नाम श्रीनिवासजी और श्रीवल्लभजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ पूना—(हेड आफिस) मेसर्स ताराचन्द रामनाथ रविवार पैठ-कपड़गंज—यहां यह फर्म करीब १०० वर्षोंसे स्थापित है। इस फर्मपर कपड़ेका व्यापार होता है। आपकी फर्मकी यह विशेषता है कि उसपर विदेशका बुना कपड़ा नहीं बेचा जाता।

२ बम्बई—रामनाथ हनुमन्तराय रा० ब० लक्ष्मी बिल्डिंग कालबादेवी नं० २—इस फर्मपर हुंडी चिठ्ठी तथा सब प्रकारकी आढ़तका व्यापार होता है। आपकी फर्म रुई व किसी प्रकारके वायदेका व्यापार नहीं करती।

३ नागपुर—रामनाथ रामरतन एतवारिया बाजार—यहां भी कपड़ेका व्यापार होता है।

४ कोयम्बतूर—(मद्रास) श्रीनिवास श्रीवल्लभ—यहांपर हैंडलूमका बना देशी कपड़ा बेंचा जाता है।

५ सूरत—बद्रीनारायण भूमरमल छगरिया सेकी—यहांपर देशी कपड़ेका व्यापार होता है।

६ बम्बई—हनुमन्तराम रघुनाथ मूलजी जेठा मार्केट- यहांपर देशी कपड़ेका तथा आढ़तका व्यापार होता है।

७ कहारेड (नागपुर) रामनाथ रामरतन—यहांपर कपड़ेका बिजिनेस होता है।

८ पौणी (नागपुर) मेसर्स रामनाथ राठी—यहांपर भी कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स रामकरणदास खेतान

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री रामकरणदासजीके पुत्र श्रीरामविलासरायजी अग्रवाल जातिके झूंझनूं निवासी हैं। आप फर्मका कार्य अपने पुत्रोंको सोंपकर हरिद्वार निवास करते हैं। यहां इस फर्मको स्थापित हुए करीब २०।२५ वर्ष हुए।

सेठ रामविलासरायजीने इस फर्मको स्थापित की तथा इसको अच्छी उन्नतिपर पहुंचाया। इस फर्मका पहिले रामकरनदास रामविलास नाम पड़ता था।

श्रीयुत रामविलासजीके इस समय ५ पुत्र हैं जिनके नाम श्रीवसन्तलालजी, श्रीमुन्नालालजी, श्रीचिरञ्जीलालजी, श्रीमदनलालजी तथा श्रीयुत लीलाधरजी हैं। बम्बई दुकान सब भाइयोंके शामिलमें हैं, तथा बाकी सब भाइयोंकी अलग २ फर्में है।

आपकी ओरसे झूंझनूमें १ धर्मशाला, २।३ पक्के कुए, एक लक्ष्मीनाथजीका मन्दिर तथा उसमें एक औषधालय, एक पाठशाला व एक पुस्तकालय बना है। हरिद्वारमें आपका एक मकान हैं उसमें एक अन्न क्षेत्र है। इसके अतिरिक्त बद्रीनारायण व काशीमें आपने अन्नक्षेत्र स्थापित कर रक्खे हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ मेसर्स रामकरणदास खेतान २१७ शेखमेमन स्ट्रीट बम्बई—इस फर्मपर कमीशन और सराफीका काम होता है।

इसके अतिरिक्त कानपुरमें चार बस्ती, घुघली चौराचोरी, शिशुआ बाजार (गोरखपुर) आदि स्थनोंमें भी इस कुटुम्बकी दुकाने हैं।

मेसर्स शिवजीराम रामनाथ

इस फर्मका हेड ऑफिस इन्दौर है। इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इन्दौरमें दिया गया है। बम्बई फर्मका पता कसारा चाल पो० नं० २ है। यहां बेंकिंग हुंडी चिट्ठी तथा कमीशनका काम होता है।

मेसर्स रामकिशनदास सागरमल

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत सागरमलजी गर्ग हैं। आप अग्रवाल जातिके सुजानगढ़के निवासी हैं।

बम्बईमें इस फर्मको स्थापित हुए करीब २० साल हो गये। इस फर्मकी स्थापना सबसे पहले सेठ रामकिशनदासजीने की। आपका देहावसान संवत् १९६७ में हो गया। इस समय आपके पुत्र श्रीयुत सागरमलजी इस दुकानका काम सम्हालते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स रामकिशनदास सागरमल कल्याण भुवन ३५४ कालबादेवी—इस दुकानपर कपड़ा, सूत, पक्का रेशम, कच्चा रेशम, आर्टिफिशियल मर्सराइज और गांवठी सूतका व्यापार तथा कमीशन एजंसीका काम होता है।

इस दुकानमें श्रीयुत नथमलजीका साझा है। आप भी सुजानगढ़के रहने वाले हैं।

मेसर्स रायचंद खेमचन्द

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मँडवारिया (सिरोही-राज्य) में है। आप पोरवाल जातिके सज्जन हैं।

इस फर्मको स्थापित हुए करीब ४० वर्ष हुए, इसे सेठ डायाजी ने स्थापित किया। तथा इसकी विशेष तरक्की भी आपहीके हाथोंसे हुई। सेठ डायाजीके पुत्र देवीचंदजी, रायचंदजी व, पौत्र खेमचन्दजी हैं।

आपकी ओरसे मंडवारियामें एक बहुत सुन्दर दर्शनीय मन्दिर बना हुआ है। यह मन्दिर सारा संगमरमरका है आपने इसमें करीब २ लाख रुपये लगाये हैं। मंडवारियामें आपकी एक धर्मशाला व एक विद्याशाला है। मण्डवारियाके मंदिरके पास आपका एक अच्छा बगीचा है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—रायचंद खेमचन्द धनजीस्ट्रीट नं० ३ यहाँ हुंडी चिठ्ठी तथा आढ़तका काम होता है।
(२) बम्बई—डायाजी देवीचंद पारसी गली-मिरजास्ट्रीट यहां इमीटेशन मोतीका व्यापार होता है।
(३) हुबड़ी—(धारवाड़) डायाजी देवीचन्द, यहां सराफ़ीका काम होता है।

मेसर्स राजाराम कालूराम

इस फर्मके मालिक भिवानी (पंजाब) निवासी अग्रवाल जातिके हैं। आपकी इस फर्मको स्थापित हुए करीब १५ वर्ष हुए। इसे श्री कालूरामजीने स्थापित किया है। तथा वर्तमानमें इस फर्मका संचालन श्रीकालूरामजी तथा श्रीमाधोप्रसादजी करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स राजाराम कालूराम, कालवादेवी रोड, यहां कपड़ा तथा किरानेकी आढ़तका काम होता है।
(२) देहली —मेसर्स कालूराम मँगतराम अशर्फी-कटला यहांपर कपड़े की बिक्रीका काम होता है।
(३) भिवानी—कालूराम मँगतराम यहां आढतका काम होता है।
(४) अहमदाबाद—कालूराम राधाकिशन-नया माधोपुरा यहां आढ़तका काम होता है, इसमें कालूरामजीका साझा है।

श्रीमाधोप्रसादजी दि हिन्दुस्तानी नेटिव्ह मर्चेंट्स एसोसिएशनके सेक्रेटरी हैं।

मेसर्स शिवदयालमल बखतावरमल

इस फर्मके मालिक बेरी जिला रोहतक के निवासी अग्रवाल जातिके हैं। इस फर्मको बम्बईमें स्थापित हुए करीब २२ वर्ष हुए। बम्बई दुकानमें शिवदयालमलजी तथा बखतावरमलजी-का साझा है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स शिवदयाल बखतावरमल बादामका झाड़-कालबादेवी, तारका पता—परमात्मा—इस फर्मपर कपड़ा, किराना, चान्दी, सोना, तथा रुईकी आढ़तका काम होता है। तथा वायदाकी अढ़तका काम भी होता है।

शिवदयालमलजीकी फर्म—

(१) बम्बई—शिवदयाल गुलाबराय दानाबंदर-भरोंचा स्ट्रीट (Beriwala) यहां गल्ला तथा तिलहनकी मुकादमीका काम होता है।

(२) व्यावर—चिरंजीलाल रोडमल, यहां गल्ला आढ़त तथा वायदेका काम होता है।

(३) मानसा—आत्माराम परशुराम—यहां गल्ला तथा सब प्रकारकी आढ़तका काम होता है।

(४) दिल्ली—हेतराम गुलाबराय नया बाजार-हुंडी, चिट्ठी तथा गल्ला और कपड़ेकी आढ़तका काम होता है। इस फर्मके मालिक बखतावरमलजी हैं।

पंजाबी कमीशन एजंट

किशनप्रसाद कम्पनी लिमिटेड

इस फर्मको स्थापित हुए करीब १२ साल हुए। यह लिमिटेड कम्पनी है। इस फर्मके बम्बई ब्रांचके मैनेजर लाला किशनप्रसादजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) अम्बाला (हेड ऑफिस) किशनप्रसाद कम्पनी लिमिटेड (Nitanpha)—यहां बैंकिंग एण्ड कमीशन एजंसीका वर्क होता है।

(२) बम्बई—किशनप्रसाद कम्पनी लिमिटेड कालबादेवी (नित नफा) यहां कॉटन और गेहूंका बिजिनेस व कमीशनका वर्क होता है।

(३) करांची—किशनप्रसाद कम्पनी लिमिटेड खोरी बगीचा (नित नफा) यहां कॉटन, गेहूंका बिजिनेस व कमीशनका वर्क होता है।

रायबहादुर दुनीचंद दुर्गादास

इसफर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान अमृतसर (पंजाब) है। आप क्षत्री (पंजाबी) सज्जन हैं। इस फर्मके वर्तमान मालिक लाला दुनीचन्दजी राय बहादुर है। आपहीने इस फर्मको करीब ३० वर्ष पूर्व यहां स्थापित किया था।

राय० ब० सेठ दुनीचंदजी (दुनीचन्द दुर्गादास) बम्बई

सेठ रेमलदास नीकाराम (नीकाराम परमानंद) बम्बई

स्व० लाला दीवानचन्दजी (मुरलीधर मोहनलाल) बम्बई

सेठ दौलतरामजी (दौलतराम मोहनदास) बम्बई

श्री लाला दुनीचन्दजीको सन् १९२० में गवर्नमेन्टने रायबहादुरकी पदवी प्रदानकी है, आप अमृतसरमें सेकण्डक्लास ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। आपके पितामह लाला जिवन्दामलजीका महाराजा रणजीतसिंहजीसे अच्छा स्नेह था।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—रा० ब० दुनीचन्द दुर्गादास चौकसी बाजार, (T. A. Larauja) यहां कपड़ेकी आढ़तका व घरू व्यापार होता है।

(२) अमृतसर—दुनीचन्द विशुनदास आलूवाला कटला, T. A. mehara यहां कपड़ेके एक्सपोर्ट इम्पोर्टका विजिनेस होता है।

मेसर्स नीकाराम परमानंद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान देहराइस्माइलखां है। आप पंजाबी सज्जन हैं। इसफर्मकी स्थापना बम्बईमें सेठ नीकारामजी व परमानन्दजी दोनों भाइयोंने करीब २५वर्ष पूर्वकी थी। इस समय बम्बई फर्मके मैनेजर श्री रामचन्द्रजी परमानन्द जी हैं। वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) देहराइस्माइलखां—टिकायाराम चोखाराम—यहां बैङ्किग व कमीशन एजेंसीका काम होता है।

(२) कलकत्ता—नीकाराम परमानन्द १५६ हरिसन रोड़-यहां भी आढ़त व बैंकिग वर्क होता है।

(३) बम्बई—नीकाराम परमानन्द मस्जिद बन्दररोड बारभाई मोहल्ला नं० ३, T. A. shamsunder आढ़त व सराफीका व्यापार होता है।

(४) अमृतसर—नीकाराम परमानन्द-इस फर्मपर कई मिलोंकी कपड़ेकी एजेंसी है, तथा आढ़तका काम होता है।

(५) देहली-चोखाराम आसानन्द-यहां बैङ्किग व कमीशन एजंसीका काम होता है।

मेसर्स मुरलीधर मोहनलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान अमृतसर है। आप कपूर जातिके सज्जन है। इस-फर्मको यहां स्थापित हुए बहुत अधिक समय हुआ। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ दीवानचन्दजीके पुत्र सेठ दुर्गादासजी, सेठ द्वारकादासजी व सेठ विहारीलालजी हैं। आपकी ओरसे अमृतसरमें दीवानचन्द अस्पताल नामका एक अस्पताल चल रहा है।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) अमृतसर—(हेडऑफिस) हीरालाल दीवानचन्द T. A. Diwanchand-आलू कटला—यहां हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

(२) अमृतसर-हीरालाल दीवानचन्द—यहां इस फर्मका शाल डिपार्टमेन्ट हैं।

(३) अमृतसर- दुर्गादास बिहारीलाल कृष्णामारकीट-यहां कपड़ेका व्यापार होता है।

(४) अमृतसर—दीवानचन्द द्वारकादास आलू कटला-यहां भी कपड़ेका व्यापार होता है।

(५) अमृतसर—हेमराज मनमोहनदास गुरूवाला बाजार—यहां बनारसी साड़ी व दुपट्टाका व्यापार होता है।

(६) अमृतसर—दीवानचन्द एण्ड संस—इस ऑफिसके द्वारा विलायतसे शाल व कपड़ेका एक्सपोर्ट इम्पोर्टका व्यापार होता है।

(७) बम्बई—मुरलीधर मोहनलाल मारवाड़ी बाजार—(तारकापता—पश्मीना) यहां पश्मीना,बनारसी साड़ियों व काश्मीरी शालका बहुत बड़ा बिजिनेस होता हैं।

(८) बम्बई—मुरलीधर मोहनलाल दीवानचन्द बिल्डिंग मारवाड़ी बाजार—T. A Pashmina इस फर्मपर आढ़तका व्यापार होता है।

(९) बनारस—दुर्गादास द्वारकादास नन्दन सावका मोहल्ला—यहां बनारसी साड़ी व दुपट्टेका व्यापार होता है।

मेसर्स गोऊमल डोसामल कम्पनी

इस फर्मके मालिक करांचीके निवासी लुहाना रघुवंशी जातिके हैं। इसफर्मको सेठ गोऊमल जीने स्थापित किया, वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ मूलचन्द दीपचन्द हैं। आपहीके हाथोंसे इस-फर्मके व्यवसायको तरक्की मिली। इसफर्ममें श्री पुरुषोत्तमदास गोकुलदासका पार्ट है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) करांची (हेड ऑफिस) मेसर्स गोऊमल डोसामल कम्पनी—T. A. Ghee, यहां एक्सपोर्ट इम्पोर्टका व्यवसाय और कमीशन एजंसीका काम होता है यह फर्म ३० वर्षोंसे स्थापित है।

(२) बम्बई-मेसर्स गोऊमल डोसामल कम्पनी बारभाई मोहल्ला पो० नं० ३ T A. Ghee यहां एक्सपोर्ट इम्पोर्टका व्यवसाय होता है।

सेठ बन्सीधर गोपालदास, बम्बई
(पृ० नं० १२८)

स्व० सेठ गोऊमल डोसामल, बम्बई

सेठ मूलचन्द दीपचन्द, बम्बई

सेठ पुरुषोत्तमदास गोकुलदास, बम्बई

(३) बेहरिन (परशियन गल्फ) मेसर्स मूलचन्द दीपचन्द कम्पनी T. A, Ghee यहांपर मोती, अनाजका व्यापार और कमीशनका काम होता है।

(४) दुबई (पाराशियन गल्फ) —T. A Ghee यहां भी मोती अनाज और कमीशनका काम होता है।

मेसर्स ठाकुरदास देऊमल

इस फर्मको सेठ ठाकुरदासजीने स्थापित किया था। वर्तमानमें इसफर्मके मालिक सेठ पेरूमल देऊमल, रामचन्द्र, ठाकुरदास, और अगरिभाई हैं। आप लोग शिकारपुरके निवासी रोहेरा जातिके हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) शिकारपुर (हेड ऑफिस) ठाकुरदास देऊमल—कपड़ेका व्यवसाय होता है।

(२) बम्बई-ठाकुरदास देऊमल; आदिभाई मोहल्ला—कपड़ेकी खरीदीका काम होता है।

(३) करांची-ठाकुरदास देऊमल-बम्बई बाजार—कपड़ेका व्यवसाय होता है

मेसर्स तेजभानदास उद्धवदास

इस फर्मके मालिक शिकारपुर (सिंध) के निवासी हैं। इस फर्मपर पहिले तेजभानदास सुंदर दासके नामसे व्यापार होता था।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक श्रीयुत ठारूमल, तेजभानदास तथा उद्धवदासजीके पुत्र है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) शिकारपुर—उद्धवदास ठारूमल-यहां हेड ऑफिस हैं तथा कपड़ेका व्यापार होता है।

(२) बम्बई--तेजभानदास उद्धवदास बाराभाई मोहल्ला पो० नं० ३ (Tejbhan) यहां आपकी फर्मोंपर भेजनेके लिये कपड़ेकी घरू खरीदीका काम होता हैं।

(३) करांची--तेजभानदास ठारूमल बम्बई बाजार T. A. Hanuman यहां कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स दौलतराम मोहनदास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास शिकारपुर (सिंध) है। आप छावड़िया जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए ३० वर्ष हुए और इस नामसे व्यापार करते हुए १० वर्ष हुए। इसे सेठ दौलतरामजीने स्थापित किया तथा इसके वर्तमान मालिक आपही हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ शिकारपुर—मेसर्स दौलतराम मोहनदास (हेड आफिस) यहांपर कपड़ेका व्यापार होता है।
२ बम्बई—मेसर्स दौलतराम मोहनदास बार भाई मोहल्ला पो० नं० ३ (Lalpagari) इस फर्मपर कपड़ेका व्यापार होता है।
३ बम्बई—मूलजी जेठा मारकीट सुन्दर चौक (Lal pagari) यहां कपड़ेका व्यापार होता है।
४ करांची—दौलतराम मोहनदास बम्बई बाजार " " "
५ सक्खर—दौलतराम मोहनदास " "
६ बम्बई—दौलतराम डाइंग एण्ड ब्लीचिंग मिल अपर माहीम मुगल गली पो० नं० ६—इस मिलमें कोरे कपड़ेकी धुलाई और पालिस होती है। इस मिलका माल बाजारमें लाल पगड़ी बाबू टिकिटके नामसे बिकता है, तथा इसका माल पंजाब, अफगानिस्तान, रूस और भारतके कई प्रांतोंमें जाता है।

मेसर्स पोकरदास मेघराज

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान शिकारपुर (सिंध) है। आप नागपाल जातिके सज्जन हैं। यह फर्म सेठ द्वारकादासजीके समयमें स्थापित हुई थी, वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ द्वारकादासजीके पुत्र सेठ मेघराजजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ शिकारपुर—पोकरदास मेघराज हेड ऑफिस (Sinah) यहांपर बैङ्किङ्ग और कपड़ेका व्यापार तथा कमीशनका काम होता है।
२ बम्बई—पोकरदास मेघराज बार भाई मोहल्ला पो० नं० ३, (Red cloth) इस दुकानपर बैङ्किंग, कपड़ेका व्यापार तथा कमीशनका काम होता है।
३ करांची—पोकरदास द्वारकादास गोवर्द्धनदास मारकीट (Swadeshi) यहां स्वदेशी, विलायती तथा जापानी कपड़ेका विजिनेस होता है।
४ करांची—द्वारकादास फतेचंद मूलजी जेठा मारकीट, यहां गांवठी कपड़ेका व्यापार होता है।
५ करांची—पी० द्वारकादास मूलजी जेठा मारकीट (Swadeshi), इस आफिस पर विलायतसे इम्पोर्टका विजिनेस होता है।
६ मेहर (डि० लाड़काना सिंध)—मेसर्स मेघराज लख्खोमल, यहां फेन्सी कपड़ेका व्यापार होता है।

इस फर्मके करांचीके चीफ मैनेजर मि० फतेचंद सोहनदास करारा और बम्बई फर्मके वर्किंग मैनेजर मि० दौलतराम मलचंद करारा तथा नेंवदराम जवरदास बजाज हैं।

मेसर्स बेरामल परशुराम

इस फर्मके मालिक शिकारपुर (सिंध) के निवासी अगूजा जातिके हैं। इस फर्मको बम्बईमें स्थापित हुए करीब २० वर्ष हुए। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ बेरामलजी, परशुरामजी और जुहारमलजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ शिकारपुर—मेसर्स बेरामल परशुराम, यहां कपड़ेका व्यापार होता है।

२ बम्बई—बेरामल परशुराम मूलजी जेठा मारकीट चौक (Ghgharni) यहां गांवठी कपड़ेका व्यापार होता है।

३ करांची—बेरामल केवलराम गोवर्द्धनदास मारकीट, यहां गांवठी कपड़ेका व्यापार होता है।

४ सक्खर—बेरामल जुहारमल " "

कमीशन एजंट्स

आज्ञाराम मोतीलाल, कालबादेवी
अमोलकचंद मेवाराम, कालवादेवी
आसाराम लालावत कसाराचाल
अमूलख अमीचंद कं०, सराफ बाजार
ओंकारलाल मिश्रीलाल, बदामका झाड़, कालबादेवी
उसमान हाजी जूसब फरनीचर बाजार
केवलचंद कानचंद कालबादेवी रोड
कालूराम सीताराम कालवादेवी रोड
काकासिंह जगन्नाथ, मारवाड़ी बाजार
किशनलाल हीरालाल, कालबादेवी रोड
कुंवरजी उमरसी कम्पनी, खारक बाजार
केशरीमल आनन्दीलाल, कालवादेवी
कोडूमल जेठानंद, नागदेवी लेन
खेरातीलाल सुंदरलाल, मोतीबाजार
गोविन्दराम सेखसरिया, कालवादेवी रोड़
गिरधारीलाल बालावक्स, कसाराचाल
गोरधनदास ईश्वरदास, सराफबाजार
गंगाराम आसाराम तांबाकाटा
चंदूलाल रामेश्वरदास, कालवादेवी
चांदमल घनश्यामदास कालवादेवी
चांडूमल वलीराम करनाक बन्दर
चतुरभुज गनेशीराम, कालवादेवी
चतुर्भुज पीरामल शेखमेमन स्ट्रीट
चिरंजीलाल हनुमानप्रसाद कालबादेवी रोड
चौथमल मूलचंद कालवादेवी
छोटेराम जँवर कसाराचाल
जयगोपालदास घनश्यामदास पारसीगली
जगन्नाथ किशनलाल कालबादेवी
जीवनराम मोदी कालबादेवी
जोतराम केदारनाथ सराफबाजार
जोगीराम जानकीप्रसाद कालवादेवी
जूसब मक्का कोलीवाड़ रहित बिल्डिंग
जौहरीमल ज्ञानचन्द बादामका झाड़, कालबादेवी

जौहरीमल दलसुखराय बादामका झाड़
तिलोकचन्द दलसुखराय कालबादेवी
तेजपाल वरदीचंद बादामका झाड़, कालबादेवी
तिलोकचन्द मामराज, मारवाड़ी बाजार
तीरथदास किशनदास बारभाई मोहल्ला
दुर्गादास दीवानचंद कालबादेवी
देवकरणदास रामविलास, मारवाडी बाजार
धरमसी नरसी खांड बाजार
नरसिंहदास मालीराम कालबादेवीरोड
दयाल प्रधान कालबादेवी
नेताराम भोलानाथ, कालबादेवी
नाथूराम जुहारमल सराफ बाजार
नारायणदास मोहता खराकुआं
पूनमचन्द वखतावरमल बम्बादेवी
फूलचंद मोतीलाल, मारवाड़ी बाजार
फतेचंद अन्नराज एण्डकं० सुतारचाल
बद्रीप्रसाद राधारमण कालबादेवी
भगवानदास नेतराम कालबादेवी
भीखमचंद रेखचंद विट्ठलवाड़ी
भानामल गुलजारीलाल कालबादेवी
मन्नालाल भागीरथदास एण्डसंस, सराफबाजार
मुकुन्दचंद बालिया बदामके झाड़के पास
मिचल्ला रमन्ना प्रिंसेस स्ट्रीट
रामदास खेमजी एण्ड कम्पनी हार्नबीरोड अलवर्ट बिल्डिंग
रामचन्द्र ईश्वरदास बारभाई मोहल्ला
रामलाल वच्ची भुलेश्वर
रामगोपाल मुंछाल बादामका झाड़
रणछोड़दास प्रागजी दाणाबंदर
शिवजीराम रामनाथ कसाराचाल
शिवनाथ हरलाल बादामका झाड़
संतलाल विश्वेसरलाल कालबादेवी
सखाराम कृष्ण राय चुरकर कालबादेवी
संतराम गणपत कालबादेवी
हरसुखराय सुंदरलाल शेखमेमन स्ट्रीट
सम्पतकुमार जाजोदिया, कालबादेवी
हरनंदराय घनश्यामदास हनुमान गली
हरविलास गंगादत्त कालबादेवी
हरिकृष्णलालजी मेहरा कालबादेवी
हीराचंद वनेचंद देसाई कालबादेवी रोड
श्रीराम मोहता भुलेश्वर

रेशमके व्यवसायी

रेशमका व्यवसाय

वस्त्र बनानेके जितने रेशेदार पदार्थ हैं उनमें रेशम सबसे मज़बूत, मुलायम, चमकीला और बहुमूल्य होता है। यह रेशम एक खास प्रकारके कीड़ोंकी लारसे उत्पन्न होता है। ये कीड़े पेड़ोंके पत्ते खाकर जीते हैं और एक प्रकारकी लार उगलते रहते हैं जो हवा लगते ही कठिन हो जाती है। इसी लारके सूखनेसे कीड़ेकी देहके चारों तरफ एक प्रकारका वेष्टन बन जाता है। जिसे अंग्रेजीमें ककून (Cacoon) और हिन्दीमें कोष कहते हैं। ये कोष गर्म पानीमें रखकर गलाए जाते हैं। गल जानेपर ६ से २० कोषों तकके रेशोंको मिलाकर उनका सूत तैयार किया जाता है। इसीको अंग्रेजीमें रेलिंग कहते हैं।

रेशम दो प्रकारका होता है एक जंगली रेशम और दूसरा असली रेशम। जंगली रेशम उन कीड़ोंकी लारसे बनता है जो जंगलोंमें रहते हैं और गाछ वृक्षकी पत्तियां खाकर जीते हैं। असली रेशमके कीड़े घरोंमें पाले जाते हैं और तून्त वृक्षकी पत्तियां खाते हैं। भारतवर्षमें जङ्गली रेशमके तीन प्रकारके कीड़े पाये जाते हैं (१) टसर (२) अण्डो (३) और मूंगा। टसरके कीड़े भागलपुर, छोटा नागपुर, उड़ीसा नागपुर, जबलपुर इत्यादि जिलोंके जंगलोंमें पाये जाते हैं। ये आसन, साल, हर्र, सिद्ध आदिके वृक्षोंको खाकर जाते हैं। अण्डीके कीड़े उत्तर बंगाल और आसाममें पाये जाते हैं। ये कीड़े विशेष कर अण्डीके पत्ते खाकर जीते हैं। इनके कोषोंको उबाला नहीं जाता, प्रत्युत रुईकी तरह धुनकर उनका सूत काता जाता है। यह सूत टसर और तून्तके सूतकी अपेक्षा अधिक मजबूत और टिकाऊ होता है। तीसरा मूंगा नामका कीड़ा लाल रंगका होता है। यह नागा पहाड़, सिलहट, कछार, त्रिपुरा और बर्माकी पहाड़ियोंमें पाया जाता है। बंगालमें पुण्ड्रनामक जाति इन कीड़ोंको पालनेका काम करती है। इनका बनाया हुआ रेशम बड़ा बढ़िया और चमकीला होता है। बरहमपुरका मशहूर गरद इसीसे बनता है।

रेशमके इतिहासकी खोज करनेपर पता चलता है कि सबसे पहले चीनवालोंने इस वस्त्रको उपयोगमें लेना प्रारम्भ किया। भारतवर्षके वैदिक और पौराणिक युगमें भी क्षौम, और कौशेय, इन दो नामोंके रेशमी वस्त्रोंका पता चलता है। फिर भी इस बातके प्रमाण मिलते हैं कि असली रेशमके

कीड़े यहांपर भी चीनसे आये। कौटिल्यने अपने अर्थशास्त्रमें रेशमके लिए चीनभूमिज, चीन भट्ट आदि शब्दोंका व्यवहार किया है। जो हो चाहे रेशमके कीड़े चीनसे यहां आये हों, चाहे अति प्राचीन कालसे यहीं पाये जाते हों पर इसमें तो सन्देह नहीं कि इस वस्तुका व्यवहार और व्यवसाय भारतवर्षमें बहुत पुराना हैं। इसवी सन्‌की दूसरी शताब्दीमें यहांका बना हुआ रेशम लाल सागरके रास्तेसे रोम पहुंचता था उसी तरह बैजनटियमके ग्रीक बादशाहोंके दरबारमें भी यहांका रेशम बड़े आदरके साथ व्यवहारमें लिया जाता था। इसके पश्चात् ईसाकी छठी शताब्दीमें कुछ पुराने फकीरोंने इसके कीड़ोंका यूरोपमें प्रचार किया। धीरे २ बारहवीं शताब्दी तक यह व्यापार सिसली, इटाली, फ्रान्स और स्पेनमें फैलकर भारतके व्यापारसे स्पर्द्धा करने लगा। इधर भारतवर्षमें मुसलमान बादशाहोंने रेशमके व्यवसायकी बड़ी उन्नति की। अकबरके शासनकालमें तो यह व्यवसाय अपनी चरमसीमापर पहुंच गया था। भारतयात्री बर्नियरने-जो कि शाहजहांके समय यहां आया था— साटिन, मखमल, मुशजर, कमखाब, इत्यादि तरह २ के रेशमका वर्णन करते हुए लिखा है कि बंगालमें इतना सूती और रेशमीमाल तैयार होता है कि मुगल साम्राज्यकी कौन कहे,आसपासके कुल साम्राज्यों और यूरोप भर तकके लिए वह काफी है। उस समय बंगालका मालदह नामक स्थान रेशमके व्यापारका केन्द्र था। सन् १५७७ में यहांके व्यापारी शेख भीखूने तीन जहाज रेशमी मालके भरकर फारसकी खाड़ीकी राहसे रूसमें भेजे थे। टूवर्नियरनामक यात्रीने अपने भ्रमण वृतान्तमें लिखा है कि उन दिनों कासिम बाजारसे सवामन वजनकी बाईस हजार गांठे प्रति वर्ष विदेश भेजी जातीं थीं।

पर जबसे लण्डनके समीपवर्त्ती स्पाइटलफील्डूसमें रेशमका कपड़ा बनने लगा, और हाथ करघोंकी जगह मशीनरीके करघोंका प्रचार हुआ, एवं योरपके लिए चीन और जापानके बाजार खुल गये तबसे भारतीय रेशमका व्यवसाय पङ्गु हो गया। आजकल तो यह व्यापार करीब नहींके बराबर होगया है कच्चे मालकी रफ्तनीका जितना वजन घटा है उससे कहीं अधिक उसका मूल्य घट गया है। मूल्य तो घटते २ सैकड़ा २९ रह गया है। इसका खास कारण चीन, जापान, इटली, रूस, फ्रान्स इत्यादि देशोंकी प्रतियोगिता है। इधर देशी कीड़ोंमें रोग फैलजानेसे यहांका रेशम भी घटिया और हलके दर्जेका उत्पन्न होने लग गया है।

जब यहांके रेशमका व्यापार पातालमें बैठने लगा तब यह बिलकुल स्वभाविक था कि यहांके बाजारोंपर विदेशी रेशमका अधिकार हो। हुआ भी ऐसाही, यहांके व्यापारके घटते ही विदेशी रेशम की आमदनी यहां बढ़ने लगी। सन् १८७६-७७ में जहां ५८॥ लाखका सब प्रकारका रेशमी माल यहां आया था वहां १८८१-८२ में १३५ लाखका, १९०४-५ में २१२ लाखका और १९१२-१३ में ४७६ लाख रुपयेका माल बाहरसे यहांपर आया। इससे पता चलता है कि यहांके रेशमके व्यापारका कितना पतन होगया है।

सन्तोषकी बात है कि कुछ देशी राज्योंने और बंगालके कृषि विभागने इस व्यापारकी तरक्की के लिए फिरसे ध्यान देना प्रारम्भ किया है। इन देशी राजाओंमें काश्मीर और मैसूरका नाम विशेष उल्लेखनीय है। काश्मीर दरबारने इटालीके दक्ष कीड़े पालनेवालोंको बुलाकर विलायती ढंगपर कीड़े पालनेका काम जारी किया है। काश्मीरमें एक बहुत अच्छा बिजलीसे चलनेवाला रेशमका मिल भी चल रहा है। इसीप्रकार सन् १८९७ में मि० ताताने मैसूरमें एक रेशमका कारखाना खोला, उसमें जापानसे दक्ष कारीगरोंको बुलाकर कीड़े पालनेसे लेकर कपड़ा बुनने तकका प्रबन्ध किया। आजकल मैसूरकी गवर्नमेन्ट इस कारखानेको बड़ी सहायता देरही है। इससे मैसूरके रेशमके व्यवसायको बड़ा लाभ पहुंचा है। इसी प्रकार मुक्तिफौज वाले तथा बंगालकी सिल्क कमेटी भी इस व्यवसायकी तरक्की के लिए काफी प्रयत्न कर रही है। इस समय भी भारत वर्षमें बहुतसे बढ़िया रेशमी कपड़े तैयार होते हैं। इनमेंसे बनारसका काशी सिल्क, अहमदाबादका अतलस और कमरूवाब, जामनगरका अम्बर, साफा और रेशमी पगड़ी, पोर बन्दरकी साड़िएं, पाटनके पटोले, सूरतकी गजी और टसर, मुर्शिदाबाद, मुलतान, पूना, तंजोर इत्यादिके अमरूकपड़े, आजमगढ़, बनारस इलाहाबाद, अमृतसर ठठ्ठा इत्यादि स्थानोंके संगी, गुलबदन और मशरू मशहूर हैं।

रेशमकी कई जातियां होती हैं जिनमें मलाबारी टसर, एरी, युगा, कायककुला, सीम, पंजम कीनखाब, सोसा, चिनाई पीला, शंघाई सफेद, शंघाईपीला ये मुख्य हैं। इन जातियोंमेंसे यहांके बाजारोंमें चलनेवाला लंकीन नम्बर १-२-३-४ वगैरहमें डायमण, बाराफ्तरी, मुर्गा, तोता, बाघ; हिरन, दोहाथी, एम० के०, और गोलटीकिट वगैरह मार्कोंका माल बम्बईके बाजारमें विशेष चलता है।

बम्बईमें रेशमके कपड़ोंके व्यापारियोंका कोई खास बाजार नहीं है। फिर भी चिनाई, जापानी, फ्रांस, वगैरह देशोंका जत्था बन्ध माल रखनेवाले व्यापारी जकरिया मसजिदके पास बैठते हैं। यहांका प्रायः अधिकांश व्यापार मुलतानी व्यापारियोंके हाथमें है। फुटकर रूपसे बेचनेवाले व्यापारी फोर्टमें, मूलजी जेठा मारकीटमें तथा भोलेश्वरमें बैठते हैं। ऊपरोक्त मार्कोंके मालपर ॥) सैकड़ा बटाव और ।) सैकड़ा दलालीका धारा है। विदेशसे आनेवाले मालपर १५) सैकड़ा कस्टम ड्यूटी लगती है।

सिल्क एण्ड क्यूरियो मरचेण्ट्स

मेसर्स ताराचन्द परशुराम

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान सिन्ध (हैदराबाद) है। यह फर्म सम्वत् १९६०में सेठ ताराचन्द जी के द्वारा स्थापित हुई। इसके वर्तमान मालिक भी आप ही हैं।

इस फर्मको लार्ड मिंटो, लार्ड किचनर, कमिश्नर इनचीफ इण्डिया, महाराज काश्मीर, महाराज कोलापुर व बम्बई गवर्नरने अपाइण्टमेंट किया है। सन् १८०३के देहली दरबार एक्जीवीशनमें इस फर्म को फर्स्टक्लास सार्टिफिकेट प्राप्त हुआ है। तथा १६०४ के बम्बई एक्जीवीशनके समय एक गोल्ड मेडेल और १९०७में कलकत्ता एक्जीवीशनके समय २ गोल्ड मेडिल्स प्राप्त हुए हैं। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) हैदराबाद (सिन्ध)—मेसर्स ताराचन्द परशुराम बडाबाजार, यहां आपका हेड आफिस है।

(२) बम्बई—मेसर्स ताराचन्द परशुराम जकरिया मस्जिद पो० नं ०३, यहां जापानी व चायनी रेशमी कपडेका व्यापार होता है।

(३) बम्बई-मेसर्स ताराचन्द परशुराम ६३ मेडोजस्ट्रीट फोर्ट—यहां हीरा, पन्ना, मोती, जवाहरात तथा क्यूरियो सिटीका व्यापार होता है।

(४) बम्बई-मेसर्स ताराचन्द परशुराम करनाक ब्रिज—यहां फरुखाबाद, मिर्जापुर आदिके पीतलकी कारीगरीके बर्तन व क्यूरियो सिटीका व्यापार होता है।

(५) कलकत्ता-मेसर्स ताराचन्द परशुराम ५७ पार्क स्ट्रीट कलकत्ता—यहां हीरा, पन्ना तथा दूसरे जवाहिरात और क्यूरियो सिटीका व्यापार होता है।

(६) कलकत्ता-मेसर्स ताराचन्द परशुराम स्टार्टसरेग मार्केट हीरा, पन्ना और जवाहिरातका व्यापार होता है।

(७) कलकत्ता- मेसर्स ताराचन्द परशुराम लिण्डसे ष्ट्रीट; „ „

(८) योकोहामा (जापान) योमास्टाचौ, मेसर्स ताराचन्द परशुराम' यहांसे जापानी क्लाथ खरीदकर भारतके लिये भेजा जाता है।

सब जगह तारका पता:— (showroom) है।

मेसर्स धन्नामलचेलाराम

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान सिंध (हैदराबाद) है। आप सिंधी सज्जन हैं। इस फर्मको सेठ धन्नामल चेलारामने सन् १८६० में स्थापित किया। इस फर्मकी ब्रांचेज़ यूरोप चायना, अमेरिका, जापान आदि देशोंमें हैं। यहां इस फर्मपर सिल्क, ज्वेलरी और क्यूरियोका बिजिनेस होता है। आपका हेड ऑफिस बम्बई है। जिसका परिचय इस प्रकार है। —

बम्बई—मेसर्स धन्नामल चैलाराम ६३ मेडौज़ष्ट्रीट-फोर्ट (T, A, Allgems) यहां सिल्क ज्वेलरी तथा क्यूरियोका बहुत बड़ा बिजिनेस होता है।

इसके अतिरिक्त आपकी और फर्मे भारतमें-बम्बई, मद्रास, और विदेशमें १ केरो (इजिप्त) २ अलेकजेंड्रिया (इजिप्त) २ पोर्टशेड ४ असाउन ५ लक्सो ६ नेपल्स_७ पालर्मो ८ जिनोवा ६ तनजेर

स्व० सेठ पोहमल खियामल (पोहमल ब्रदर्स) बंबई

स्व० सेठ मूलचन्द खियामल (पोहमल ब्रदर्स) बंबई

स्व० सेठ लेखराज खियामल (पोहमल ब्रदर्स) बंबई

स्व० सेठ सहजराम खियामल (पोहमल ब्रदर्स) बंबई

१० तनरीफ (नॉर्थ अफ्रिका) ११ कटैनिया १२ माल्टा १३ जिब्राल्टर १४ लैसपालमस १५ बालपरैसो १६ मेलीलिया १७ कोलोन १८ पनामा १६ मनीला २० बताव्या २१ केंटान २२ हांगकांग २३ शंघाई २४ योकोहामा १५ कोबी आदि स्थानों पर भी हैं।

मसर्स पोमल ब्रदर्स

इस प्रतिष्ठित फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान—हैदराबाद (सिंध) है। आप सिंधी सज्जन हैं। यह फर्म यहां सन् १८५८ में स्थापित हुई। इस फर्मको सेठ पोमल खियामल एवं आपके ४ भाई सेठ बलीरामजी, सेठ मूलचन्दजी, सेठ लेखरामजी एवंसेठ सहजरामजीने स्थापित किया था। प्रारंभसे ही यह फर्म भारतीय पुरानी कारीगरी एवं पुरानी विचित्र वस्तुओंको चीन, यूरोप, अफ्रिका आदि विदेशोंमें भेजकर उनके विक्रय करनेका व्यवसाय करती है। भारतीय अनुपम वस्तुओंका प्रचार विदेशोंमें करना, एवं भारतीय कारीगरीको उत्तेजन देना ही इस फर्मका काम है। ज्यों ज्यों आपका व्यापार विदेशोंमें ख्याति पाता गया, त्यों-त्यों आप हरेक देशमें अपनी ऑफिसें स्थापित करते रहे, आज दुनियाके कई प्रसिद्ध २ देशोंमें आपकी दुकानें हैं एवं बहुत प्रतिष्ठाके साथ वहां आपका माल खपता है। यह फर्म सिंधवर्कीके नामसे मशहूर है।

इस फर्मकी ओरसे हैदराबाद (सिंध) में सेठ पोमलजीके नामसे एक अस्पताल स्थापित है, तथा वहांपर आपका एक स्कूल भी है। बालकेश्वरपर सेठ नारायणदासजीके नामपर सिंधी सज्जनोंके लिये एक सेनेटोरियम आपकी ओरसे बना हुआ है।

इस समय इस फर्मके मालिक इस फर्मके स्थापनकर्ता पांचो भाइयोंके पांच पुत्र हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं। (१) सेठ नारायणदास पोमल, (२) सेठ लोकूमल सहजराम (३) सेठ पेसूमल मूलचंद (४) सेठ रीझामल बलीराम (५) सेठ किशनचन्द लेखराज। इन पांचों सज्जनोंमेंसे इस फर्मके प्रधान कार्यकर्ता एवं सबमें बड़े सेठ नारायणदासजी हैं। सेठ नारायणदासजी हैदराबादमें ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। तथा सेठ पेसूमलजी हैदराबादमें म्युनिसिपल कमिश्नरीका काम करीब ७ वर्षोंसे कर रहे हैं। सेठ किशनचन्दजी हैदराबाद सनातनधर्म सभाके स्थापक है एवं वर्तमानमें आप उसके प्रेसिडेण्ट भी हैं। आपने उक्त सभाके लिये एक स्थान भी दिया है, तथा बम्बईकी जापानी सिल्क मरचेंट्स एसोसिएशनके आप ६ वर्षोंसे सभापति हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) हैदराबाबाद—(सिंध) मेसर्स पोमल ब्रदर्स तारका पता-पोमल—यहां इस फर्मका हेड आफिस है, तथा यहां आपकी बहुत सी स्थायी सम्पत्ति भी है।

(२) बम्बई—मेसर्स पोमल ब्रदर्स जकरिया मस्जिद पो० नं० ३ तारका पता—पोमल—यहां रेशमी कपड़ेका जापान व चानके साथ बहुत बड़ा व्यापार होता है, तथा रेशमी माल, फ्रांसका

गलीचा, विलायती गलीचा, और जम्फरके आर्डर वी० पी० से व खातेसे सप्लाई होते हैं। इसके अतिरिक्त बेङ्किग विजिनेस भी होता है। इसी नामकी यहां पर आपकी ३ दुकानें हैं।

(३) बम्बई—मेसर्स पोमल ब्रदर्स अपोलो वंदर-तारका पता—पोमल यहां मोतीके हार, हीरेकी अंगूठी तथा सब प्रकारके जवाहरातका व्यापार होता है, इसके अतिरिक्त अरबकी पुरानी हाथकी कारीगरी, एवरी, एण्टिक, ईरानी गलीचा आदि अंग्रेज गृहस्थोंके ऐश आरामकी वस्तुएं भी यहां बहुत बड़ी तादादमें मिलती हैं।

(४) बम्बई—मेसर्स हीरानंद बलीराम करनाक ब्रिज तारका पता —पोमल—यहां जयपुर, मुरादाबाद, बनारस आदि स्थानोंपर बने हुए पीतलकी कारीगरीके वर्तन, मिर्जापुर, जयपुर अहमदाबाद आदि स्थानोंके गलीचे, काश्मीरका टेबल कवर व नमदा तथा काश्मीर सहारनपुर और जयपुरका लकड़ीकी कारीगरीका काम और मद्रासके भरतके कामका माल बहुत बड़ी तादादमें स्टॉकमें रहता है एवं बिकता है, इस फर्मके द्वारा अमेरिका तथा आस्ट्रेलियामें अच्छी तादादमें माल भेजा जाता है, तथा यह फर्म वेमली एक्जीवीशन (इंग्लैंड) को २ वर्षोंसे अच्छी तादादमें माल सप्लाई करती है।

(५) कलकत्ता—मेसर्स पोमल ब्रदर्स ३३ केनिङ्गष्ट्रीट—तारका पता—पोमल—यहां जापानी चीनी रेशमी गलीचा व मुसलाका थोक व्यापार होता है।

(६) देहली—मेसर्स पोमल ब्रदर्स चाँदनी चौक तारका पता—पोमल—उपरोक्त व्यापार होता है।

(७) करांची—मेसर्स पोमल ब्रदर्स बंदररोड—तारका पता—दीपमाला—यहाँ लोहेका इम्पोर्ट तथा गेहूं आदि वस्तुओंके एक्सपोर्ट व कमीशनका काम होता है।

पश्चिमीय देशोंका व्यापार

(८) केरो (इजिप्ट)—मेसर्स पोमल ब्रदर्स (cairo) तारका पता—पोमल—यहाँ भारतकी पुरानी कारीगरी तथा हीरा, पन्ना आदि जवाहरातका व्यापार होता है यहांसे अमेरिकन यात्री बहुतसा माल खरीदते हैं।

(९) लक्सो (इजिप्ट)—मेसर्स पोमल ब्रदर्स तारका पता—पोमल—यहाँ भी यही व्यापार होता है अमेरिकन यात्रियोंके साथ ६ महीना अच्छा व्यापार रहता है।

(१०) अलेकजेंड्रिया (इजिप्ट) मेसर्स पोमल ब्रदर्स—तारका पता—पोमल—भारतीय पुरानी कारीगरी तथा हीरापन्ना जवाहरातका व्यापार होता है।

(११) जिब्रालटर—मेसर्स पोमल ब्रदर्स तारका पता—पोमल—यहाँ भी उक्त व्यापार होता है, यहां आसपास ५।६ शाखाएं और हैं।

(१२) माल्टा (टापू) मेसर्स पोमल ब्रदर्स—तारका पता—पोमल-यहां भी उक्त व्यापार होता है।

(१३) तनरीफ (नार्थ आफ्रिका) मेसर्स पोमल ब्रदर्स, (Teneriffe) तारकापता पोमल—यहां भारतीय कारीगरी तथा हीरा पन्ना और जवाहरातका व्यापार होता है।

(१४) त्रिपोली (इटली)—मेसर्स पोमल ब्रदर्स तारकापता पोमल - यहां भी उक्त व्यापार होता है।

(१५) अलजेर (फ्रांस)—मेसर्स पोमल ब्रदर्स, तारकापता पोमल ,,

पूर्वीय देशोंकी दुकानें

(१६) बताव्या (जावा) मेसर्स पोमल ब्रदर्स (Batavia) तारकापता पोमल—यहां भारतकी पुरानी कारीगरी तथा जवाहरातका व्यापार होता है। आपकी यहां आसपास बेंगाजी, गुलाव्या आदि स्थानोंपर तीन चार दुकाने हैं।

(१७) जावा—मेसर्स, पोमल ब्रदर्स, तारका पता पोमल—यहां भी उक्त व्यापार होता है

(१८) कोलालामपुर (मलायास्टेट)—उपरोक्त व्यापार होता है, तथा यहां पर आपकी रबर की खेती है।

(१९) सेगून (फ्रेंच कालोनी)—यहां रेशमी कपड़ोंका व्यापार होता है।

(२०) मनेला (फिलिपाइंस—अमेरिका) यहां भी रेशमी कपड़ेका व्यापार होता है। इसके आसपास आपकी तीन चार दुकानें हैं।

(२१) हांगकांग—मेसर्स पोमल ब्रदर्स HongKong तारका पता पोमल—इस बंदरके द्वारा चीन और भारतका सब व्यापार विदेशोंके साथ होता है, तथा चीनकी कारीगरीका माल भी इस बंदरसे विदेशोंमें भेजा जाता है।

(२२) केंटन (चीन) (Canton) इस बन्दरपर भी हांगकांगकी तरह काम होता है।

(२३) शंघाई (Shanghai)—(चीन) मेसर्स पोमल ब्रदर्स, तारका पता पोमल चीनसे रेशम खरीद कर यहांके द्वारा बड़ी तादादमें सब ब्रेंचोंको एक्सपोर्ट किया जाता है, इसके अतिरिक्त कमीशनका काम होता है।

(२४) कोबी (जापान) kobe)--एक्सपोर्टका व्यापार होता हैं।

(२५) कोलोन (Colon)—(नार्थ एण्ड साउथ अमेरिकाके सेंटरमें, पनेमा नहरके बाजूमें) मेसर्स पोमल ब्रदर्स, तारकापता पोमल —यहांसे रेशम एक्सपोर्ट होता है।

(२६) बेरा (ईस्ट आफ्रिका) पोर्तुगीज —उपरोक्त व्यापार होता है।

(२७) सेल्सवड़ी (,,)— ,,

(२८) योकोहामा (जापान) मेसर्स पोमल ब्रदर्स, मेसर्स पेसूमल मूलचंद—इन दोनों फर्मों पर रेशमी व सूती माल, जापान की हाथ की कारीगरी व एवरीके मालका व्यापार दुनियाके साथ होता है।

यह इस फर्मका व्यापारिक परिचय हुआ, इस प्रकारकी फर्मोंका परिचय हमारे देशकी कारीगरीके लिये गर्वका विषय है, जिस समय दुनियाके और और देशोंकी निगाहोंमें हमारा यह भारत नीची नजरोंसे देखा जाता है, उस समय इस प्रकारकी फर्में विदेशोंके एक्जीवीशन्समें यहाँका कारीगरीकी वस्तुओंको भेजकर सार्टिफिकेट्स प्राप्त करती हैं व भारतवासियोंका सिर ऊँचा करती हैं।

योकोहामामें जब भयंकर नाशकारी भूकम्पका आगमन हुआ था और उसके कारण सारा योकोहामा नष्ट हो गया था, उस स्थान पर इसी भारतीय फर्मने फिरसे रेशमका व्यापार स्थापित कर जापान गवर्नमेंट द्वारा प्रशंसा प्राप्त की थी।

इसके अतिरिक्त वेमले एक्जीवीशनमें पीतलकी कारीगरीके वर्तन व दूसरे जवाहरातके लिये अमेरिकन यात्रियों द्वारा इस फर्मको अच्छे २ सार्टिफिकेट्स मिले हैं।

इस फर्मकी स्थाई सम्पत्ति जहां २ इसकी शाखाएं प्रायः सभी स्थानों पर बनी हुई है।

इस फर्मके बम्बईके प्रधान काम चलानेवाले सेठ मूरजमल करनमल हैं। आप २८ वर्षोंसे इस फर्म पर प्रधान मैनेजरके रूपमें काम करते हैं।

मेसर्स वासियामल आसूमल एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान सिंध (हैदराबाद) है, आप सिंधी सज्जन हैं, जो बम्बईमें आमतौरसे मुलतानीके नामसे प्रसिद्ध हैं। इस फर्मकी स्थापना लगभग ७५ वर्ष पहिले सेठ वसियामलजीने की।

आरंभसे आजतक इस फर्मका यही उद्देश है, कि हिन्दुस्तानका माल एवं हुनरी सामान विदेशोंमें जाकर बेंचा जाय। इस उद्देशके साथ साथ यह फर्म जापान व चीनके पुराने हुनरी मालका व्यापार भी करने लगी। एवं सिंगापुर जावा, मेनला हाँगकाँगमें इसकी दुकानें स्थापित हुईं। इन स्थानों पर कारीगरीके मालकीविक्री ज्यादा बढ़नेसे वह माल इस फर्मने खुद अपने कारीगरोंसे बनाना शुरू किया। चीन और जापानका माल यूरोपियन यात्री लोगोंमें विशेष विकता था। इसलिये इस फर्मने जापानके आसपास सब देशोंमें अपने आँफिसें खोलीं।

इस भारतीय फर्मने जापानमें ५० वर्ष पूर्व फर्म स्थापित की, तथा वहाँके कारीगरोंको यूरोप व हिन्दुस्थानके नये नये विचार सिखलाकर जापानी मालके नमूने व क्वालिटीमें बहुत फेरफार किया।

जापानी लोगोंकारेशम व दूसरी कारीगरीका हाथका काम बड़ा साफ होता था इसलिये भारतीय मालके आगे उनकी विक्री बहुत अधिक बढ़ी। भारत व जापानका माल अमेरिकन और यूरोपियन यात्री विशेष खरीदते थे। इसलिये ये यात्री जहां २ जाते थे, वहां २ दुनियाके सब देशोंमें सिंधी व्यापारियोंने अपनी फर्में स्थापित कीं।

स्व० सेठ वसियामल आसूमल, बम्बई

स्व० सेठ बन्सीधरजी (बन्सीधर गोपालदास)
(पृ० नं० १२८)

स्व० सेठ गोपालदास आसूदामल (वसियामल आसूमल)

सेठ माधवदासजी (बन्सीधर गोपालदास)
(पृ० नं० १२८)

इस फर्मकी हां २ शाखाएं हैं, वहां २ इसकी स्थाई सम्पत्ति भी बहुत है, जापानके भूकम्पके समय योकोहामाकी प्रतिष्ठित वसियामल बिल्डिंग जिसमें जुदे २ पांच ब्लौक्स थे, गिर गई। वर्तमान में इस फर्मकी नीचे लिखे स्थानोंपर ब्रांचेज हैं।

हेड ऑफिस-बम्बई-मेसर्स वसियामल आसूमल एण्ड को० जकरिया मस्जिद बम्बई नं० ३ चायनीज और जापानीय सिल्क मरचेंट और बेङ्कर्स

ब्रेंचज़ हिन्दुस्थान—(१) करांची (२) अमृतसर (३) सिंध हैदराबाद।

स्टेटसेटिलमेंट—सिंगापुर, पेनांग, ईपो (Singapore, Penang, Ipoh,)

जावा—बताब्या, सोरबाया (Balavia, Sourabaya)

चीन--शंघाई, हांगकांग, कैंटान (Hongkong, Canton Shanghi)

जापान--कोबी, योकोहामा (Kobe, yokohama)

आस्ट्रेलिया---मेलबर्न सिडनी, (melbourne, sydney)

फिलिपाइंस---मनेला (Manilla)

फ्रेंच इण्डोचायना—सेगून (saigon)

सेठ वसियामलजीका देहान्त सन् १९१६ में हुआ। इस समय इस फर्मके प्रधान काम करनेवाले सेठ बाकूमलजी सेठ तोपन दासजी, सेठ ढोलूमलजी, सेठ श्यामदासजी व सेठ गंगारामजी तथा और और कई सज्जन हैं।

सिंध हैदराबाद, अमृतसर, हरिद्वार, बम्बई आदि जगहोंमें आपकी धर्मशालाएं बनी हुई हैं। हैदराबादमें आपका एक बाचनालय तथा फ्री वैद्यक औषधालय भी है।

इस फर्मकी ग्रांटरोड पर बनी हुई वसियामल बिल्डिंग बम्बईकी प्रसिद्ध बड़ी बड़ी इमारतोंमेंसे एक है। इसके अतिरिक्त सेठ वसियामलजीके नामसे गवालियाटैंक, चौपाटी, बाबुलनाथ, कोलाबा, जकरिया मस्जिद आदि स्थानोंमें आपकी अच्छी २ बिल्डिंग्स हैं।

उपरोक्त व्यापारके अलावा यह फर्म बहुत बडा बैंकिंग बिजिनेस एवं पापर्टीका व्यवसाय भी करती हैं। तारका पता सब जगह (T. A. wassiamall) (वसियामल) है।

सिल्क मरचेंट

मेसर्स गोभाई करंजा लिमिटेड

मेसर्स एम० एन० गोभाई एण्ड कम्पनीका व्यापार सन् १८८१ में चीनमें स्थापित हुआ और उस फर्मका व्यापार चीन, जापान, और यूरोपमें सन् १९१९ तक जारी रहा। इसके बाद यह कम्पनी लिमिटेड कम्पनीके रूपमें परिवर्तित हो गई। वर्तमानमें इस फर्मपर करंजा लिमिटेडके

नामसे व्यापार होता है। यह फर्म सिल्क मरचेंट्समें बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है। मस्जिद बंदर रोड बम्बईपर इस फर्मकी ३ शाखाएं हैं। (१) हेड आंफिस (२) जापानी सिल्क ब्रांच और (३) शंघाई सिल्क ब्रांच।

भारतकी अन्यत्र शाखाएं—करांची और अमृतसर हैं।

विदेशी ब्रांच—शंघाई और कोबी।

इन सब फर्मोंपर इसी प्रकारके सामानका एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट होता है तथा सिल्क बिजिनेस होता है।

मेसर्स गागनमल रामचन्द्र

इस फर्मके मालिक हैदराबाद (सिंध) के निवासी भाईबंद जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको सन् १८८४ में सेठ कुंदनमल गागनमलने स्थापित किया और आपहीके हाथोंसे इस फर्मको विशेष उत्तेजना मिली। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ कुंदनमलजीके पुत्र सेठ जीवतरामजी, सेठ खूबचंदजी और सेठ मुरलीधरजी हैं। इस फर्मके प्रधान कार्यकर्ता सेठ जीवनरामजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) हैदराबाद (सिंध)—मेसर्स गागनमल रामचन्द्र (Popularity) यहां इस फर्मका हेड आफिस है।

(२) बम्बई—मेसर्स गागनमल रामचन्द्र जकरिया मस्जिद पो० नं० ३ (T. A. Bharatawasi) यहां जापानीज व चायनीज़ रेशमी कपड़ेका व्यापार तथा कमीशनका काम होता है।

(३) बम्बई—मेसर्स जीततराम कुंदनमल जकरिया मस्जिद—यहां रेशमी हेण्डकरचीफ तथा फेंसी गुड्सका व्यापार होता है।

(४) योकोहामा (जापान) मेसर्स जी० रामचन्द्र कम्पनी यामास्टाचो (T'A. Ramchandra) यहांसे रेशमी माल खरीदकर भारतवर्षके लिये भेजा जाता है।

मेसर्स रीझूमल ब्रदर्स

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान सिंध हैदराबाद है। आप सिंधी सज्जन हैं। इस फर्मको यहां सेठ रीझूमलजीने सन् १९१९ में स्थापित किया।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ रीझूमल दुहिलानामल और आपके छोटे भाई टीकमदास दुहिलानामल तथा आपके पार्टनर सेठ मूलचंद घतनमल हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स रीझूमल ब्रदर्स जकरिया मस्जिद नं० ३ (T.A. whitesilk) यहां आपका जापानी व चायनी रेशमी मालका पीस गुड्स डिपार्टमेंट है।

(२) बम्बई—मेसर्स रीझूमल ब्रदर्स जकरिया मस्जिद नं० ३ (T. A whitesilk) यहां आपका रेशमी हेण्डकरचीफ़का डिपार्टमेंट है।

(३) देहली—मेसर्स रीझूमल ब्रदर्स चांदनी चौक—(T.A. white silk) यहां रेशमी पीसगुड्स तथा हेण्डकरचीफ़ दोनोंका बिजिनेस होता है।

(४) हैदराबाद (सिंध) मेसर्स दुहिलानामल तोलाराम शाही बाजार (T.A, whitesilk) यहां आपका खास निवास स्थान है, तथा सराफी और रेशमका बिजिनेस होता है।

(५) योकोहामा (जापान)—मेसर्स रीझूमल ब्रदर्स यामास्टाचो (T. A. white silk) यहांसे जापानी रेशमी माल खरीदकर भारतवर्षके लिये एक्सपोर्ट किया जाता है।

मेसर्स हीरानंद ताराचंद (मुखी)

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान हैदराबाद (सिंध) है। आप सिंधी जातिके सज्जन हैं। यह खानदान मुखीके नामसे मशहूर है, तथा सिंधी व्यापारियोंमें बहुत मशहूर माना जाता है। इस फ़र्मको १०० वर्ष पूर्व मुखी हीरानंदजीने स्थापित किया था। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक मुखी हरकिशनदास गुरनामल तथा मुखी दयाराम विशनदास हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) हैदराबाद (सिंध)—हीरानंद ताराचंद (T. A Mukhi)—यहां आपका हेड ऑफिस है।

(२) बम्बई मेसर्स हीरानंद ताराचंद जकरिया मस्जिद पो० नं० ३ (T, A, Mukhi,) यहां जापानीज़ तथा चायनीज सिल्कका व्यापार होता है।

(३) बम्बई—मेसर्स हीरानंद ताराचंद करनाक ब्रिज—यहां बैङ्किग व बुलियनका बिजिनेस होता है।

(४) बम्बई—मेसर्स हीरानंद ताराचंद खारक बाजार—यहां खजूर, चावल, खोपरा, छुहारा आदिका व्यापार व कमीशनका काम होता है।

(५) करांची—मेसर्स हीरानंद ताराचंद बंदर रोड T. A. mukhi —बैङ्किग बुलियन और कमीशन एजंसीका काम होता है।

(६) मुलतान (पंजाब)—हीरानंद ताराचंद (T, A, Mukhi) यहां बैंकिंग और बुलियनका व्यवसाय होता है।

(७) सरगोधा (पंजाब) हीरानंद ताराचंद (T,A,Mukhi) बैङ्किंग और बुलियनका काम होता है।

(८) पुलखार (पंजाब)—हीरानंदताराचंद—यहाँ कमीशनका काम होता है।

(९) सिलांवाली मंडी (पंजाब)— हीरानंद ताराचंद ,, ,,

(१०) चींचवतनी मंडी (पंजाब)— हीरानंद ताराचंद ,, ,,

(११) नवादेरा (सिंध)—गुरनामल दयाराम—यहां राइस फेक्टरी है। तथा कमीशनका काम होता है।

(१२) टंडावागा (सिंध)—सुखरामदास हीरानंद—कमीशनका काम होता है।

(१३) बिंदाशहर (सिंध)—सुखरामदास हीरानंद ,, ,,

(१५) वदीना (सिंध)—सुखरामदास हीरानन्द ,, ,,

विदेशी ब्रांचेज्

(१५) पोरसेड —(इजिप्ट) मेसर्स ए० नेचामल—ज्वेलर्स, क्यूरियो, जापानी, चायनीज़ सिल्क मरचेंट्स तथा पुरानी कारीगरीके सामानके व्यापारी।

(१६) इस्माइलया (इजिप्ट) मेसर्स ए० नेचामल—ज्वैलर्स,क्यूरियो,जापानी,चायनीज़ सिल्क मर्चेंट्स।

(१७) बेरूथ—(सीरिया) मेसर्स ए० नेचामल- ,, ,,

(१८) एथेन्स—(ग्रीस) मेसर्स सी० डी० मुखी ,, ,,

(१९] योकोहामा—[जापान] १२६ यामास्टाचो (T, A, Mukhi) मुखी हारानंद ताराचंद, यहांसे जापानीज तथा चायनीज माल भारतके लिये एक्सपोर्ट किया जाता है।

बनारसी व काश्मीरि सिल्क मरचेण्ट

मेसर्स अहमदई-ईसाअली

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बम्बई है। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ८० वर्ष हुए। इसे सेठ ईसाअली जी ने स्थापित किया था।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ अहमदई, ईसाअली हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मेसर्स अहमदई ईसाअली बोटी बन्दरके पास इम्पायर बिल्डिङ्ग बम्बई—यहां कोर, वार्डर, व जरीके कामका व्यवसाय होता है। इसके अतिरिक्त रेशमी कीमती साडियोंकी रङ्गाईका काम होता है। बम्बईके जामली मोहल्लामें आपकी इसी नामसे २ दुकानें और हैं।

मेसर्स सीताराम जयगोपाल

इसफर्मके मालिकोंका मूल निवास अमृतसरमें (पंजाब) है। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब ३० वर्ष हुए। इसफर्मका हेड ऑफ़िस अमृतसर है। इसे यहां बम्बईमें लाला गंगाविशनजीने स्थापित किया था। इसफर्मके वर्तमान मालिक लाला जयगोपालजी हैं। आपके भाई लाला सीताराम-जीका देहावसान होगया है।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

(१) अमृतसर—(हेड ऑफिस) मेसर्स सीताराम जयगोपाल गुरु बाजार, यहां शालका व्यापार होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स सीतारामजयगोपाल मारवाड़ी बाजार, यहां काश्मीरी शाल, बनारसी साड़ी और दुपट्टोंका व्यापार होता है।

(३) बनारस—मेसर्स जयगोपाल लक्ष्मीनारायण कुंजगली, यहां बनारसी साड़ी, दुपट्टा तथा सब प्रकारके बनारसी रेशमी मालका व्यापार होता है।

मुरलीधर मोहनलाल

इस फर्मका परिचय ऊपर कमीशन एजंट्समें दिया गया है। इस फर्मपर काश्मीरी तथा बनारसी रेशमी मालका अच्छा व्यापार होता है।

चायनीज़ और जापानी सिल्क—मरचैंट्स

औंप्रसाद दुर्गादास मसजिद बंदर रोड,

आदम अब्दुल करीम ब्रदर्स मसजिद बंदररोड,

एदलजी फ्रामजी

ए० सी० पटेल कम्पनी हार्नबी रोड, फोर्ट,

के० हासाराम कम्पनी मसज़िद बन्दर रोड,

केशवलाल ब्रजलाल मसज़िद बन्दर रोड,

कपूरचन्द मोहनजी कम्पनी मसजिद बन्दर रोड,

किशनचंद चेलाराम मसज़िद बन्दर रोड,

गुमानमल परशुराम कोलीबाग,

चेलाराम ज्ञानचंद दानाबन्दर,

जेठमल धालामल मसज़िद बन्दर रोड
जगमोहनदास विट्ठलदास ,, ,, ,,
जेमतमल कीमतराय ,, ,, ,,
जमनादास अमरचन्द ,, ,, ,,
जेगोपाल रामकिशन ब्रदर्स ,, ,,
तोलाराम देवजीराम ,, ,,
टी० खेमचंद तेजूमल ,, ,,
देसाई एण्ड को० नाकूदा मोहल्लामांडवी
पेसूमल मूलचंद मसज़िद बंदर रोड
मंचेरजी हीरजी भाई ,, ,,
एल० छबीलदास ,, ,,
लोकूराम सहजराम ,, ,,
रघुनाथदास कन्हैयालाल ,, ,,
आर० एम० तलाटी कम्पनी ,, ,,
सतरामदास किशनचंद ,, ,,
सी० एम० भेसानिया एण्ड कम्पनी बोरीबंदर.फोर्ट
हाजी अहमदहुसेन मसज़िद बंदररोड

ग्रेन मर्चेण्ट्स

GRAIN MERCHANTS

गल्लेका व्यवसाय

संसारमें प्राणिमात्रके लिये सबसे आवश्यकीय और उपयोगी वस्तु उनका खाद्य होता है। बिना खाद्यके कोई भी प्राणी जीवित नहीं रह सकता। प्राणियोंकी जीवन रक्षाके लिए—खाद्य ही मुख्य वस्तु है। जिस देशमें जितनी खाद्य-सामग्री अधिक परिमाणमें पैदा होती है—प्राप्त हो सकती है—वह देश उतना ही समृद्धिशाली एवम सुखो गिना जाता है। प्रकृतिकी अपूर्व कृपासे हमारा भारतवर्ष इस योग्य है कि वह अपनी संतानोंको बखूबी खाद्य-सामग्री प्रदानकर बाहरी देशोंको भी सप्लाई कर सकता है।

संसारके दूसरे देशोंकी अपेक्षा भारतवर्ष विशेषकर कृषि प्रधान देश है। यहांकी आबादी ३१ करोड़की है। अतएव इस छोटेसे स्थानमं यह तो नहीं लिखा जा सकता कि कहां कितने २ और कोन २ खाद्य द्रव्य पैदा होते हैं। पर हां, जितना हो सकता है, पाठकोंकी जानकारीके लिये उसका संक्षिप्त वर्णन किया जाता है।

हमारे भारतवर्षमें खाद्य सामग्रियोंमें पैदा होनेवाली खास २ वस्तुएं गेहूं, चना, चांवल, जौ, बाजरी, ज्वार, मकई, अरहर, मूंग, मोठ, मसूर, इत्यादि हैं।

गेहूं—भारतवर्षके पश्चिमोत्तर प्रान्तमें गेहूं ही विशेषकर खाद्य द्रव्य समझा जाता है। इस कारण पंजाब, संयुक्त प्रदेश, मध्यप्रदेश, मालवा आदि प्रान्तोंमें इसकी बहुत खेती होती है। सारे भारतवर्षमें मिलाकर करीब ३ कराड़ एकड़ जमीनमें गेहूंकी खेती होती है। और यहांसे इंगलैंड, बेलजियम, फ्रांस, मिश्र, और इटली आदि देश गेहूं खरीदते हैं।

यह बात नहीं है कि गेहूं हमारे भारतवर्षमें ही पैदा होते हों, दूसरे बाहरी देशोंमें भी अमेरिका, इंगलैंड, स्काटलैंड, जर्मनी, इटली, रुमानियां, बालकन द्वीपसमूह, स्पेन, आस्ट्रेलिया, हंगरी, टर्की, एशिया आदिमें भी ये पैदा होते हैं, पर हमारे भारतवर्षसे कम।

जांच करनेपर विदित हुआ है कि भारतवर्षमें करीब ८२७ जातियोंके गेहूं पैदा होते हैं। इसपर भी विदेशियोंने अपने वहांके गेहूंका बीज यहांके गेहूंसे अच्छा समझकर मंगवाया और उसकी बोहनी की। लेकिन वह बीज यहांकी जमीनको माफ़गत न हुआ। अतएव विदेशी गेहूंका

बोना यहां बन्द कर दिया गया। अब यहींकी जातियोंमेंसे खास २ जातियोंके सुन्दर और फायदेमंद गेंहू देखकर उनकी खेती बढ़ाई जा रही है।

आजकल उपयोगमें आनेवाले गेहूंकी खास २ जातियां इस प्रकार हैं—सफेद, लाल, पीला, पिस्सी, पंजाबी, मालावी, एकदानियां, लालपिसी, लालिया, लालदेशी,दुधिया, सफेद पिसी, सांभरी आदि ।

भारतवर्षसे बाहर जानेवाले गेहूंकी तादाद करीब ४, ५ लाख टन गिनी जाती है। यह माल खासकर करांची, बम्बई और कलकत्तेके बन्दरोंसे निकास होता है। बाहर भेजे जानेवाले गेहूंकी मुख्य जातियां, साफ्ट व्हाईट, हार्ड व्हाइट, साफ्टरेड, साफ्टयलो, हार्डयलो आदि हैं। इन्हीं जातियोंके भारतीय नाम करीब २ उपर दिये है। विशेष नाम इस लिये नहीं दिये गये कि उनमें बहुत कम अन्तर है।

चांवल - चावलका दूसरा नाम धान भी है। दुनियांमें जो चांवल पैदा होता है उससे प्राय: आधा तो केवल भारतवष और बर्मामें हो होता है। इसमें भी खास स्थान बर्माहीका है। इसके अतिरिक्त बंगाल, मद्रास, बिहार, यू० पी०, मध्यप्रदेश और बम्बईमें भी यह पैदा होता है।

चांवलकी उत्पत्तिका स्थान भी भारतवर्ष ही माना जाता है। विद्वानोंका कथन है कि आजसे करीब ३ हजार वर्ष पहले चांवलकी उत्पत्ति हुई थी। चांवल पहले जंगलोंमें होता था। पीछे धीरे २ वैज्ञानिक रीतिसे इसकी खेती होने लगी और फिर यह भारतवर्षसे दूसरे देशोंमें फैल गया।

इस समय भारतवर्षमें करोब ८ करोड़ एकड़ जमीनमें चॉवल बोया जाता है। इसकी निपज करीब ३ करोड़ टन मानी जाती हैं। भारतवर्षमें खर्चके उपयुक्त चांवल रखकर बाकी चांवल विदेशोंमें भेजा जाता है। इसको लंका, स्टेट सेटिलमेंट जर्मनी और हालैंड विशेष तादादमें खरीदते हैं। इसके अतिरिक्त, अमेरिका, जापान, आस्ट्रेलिया, यूनाईटेडकिंगडम, पूर्वीय अफ्रिका आदि देश भी चांवल खरीदते हैं। इसकी तादाद करीब १३ लाख टन होती है और बम्बई, रंगून, मद्रास, एवम कलकत्ताके बंदरोंसे इसका निकास होता है। भारतवर्षसे पहले चांवल नहीं जाता था बल्कि धान ही विदेशोंमें जाता था पर अब रंगून आदि कई स्थानोमें चांवलकी मिलें होनेसे चांबल ही बाहर जाता है।

भारतीय चांवलकी कई हजार जातियां हैं। कलकत्ता प्रदर्शिनीके समय डा० बोटंने सिर्फ बंगालसे ४८०० जातियां इकट्ठी की थी।

इसके अतिरिक्त चना, जौ, बाजरी, मूंग, मोठ वगैरह भी यहां काफी तादादमें पैदा होता है। पर इनकी निकासी विशेष न होनेसे इनका वर्णन नहीं दिया गया।

तिलहनका व्यवसाय—भारतवर्षके अन्तर्गत कई प्रकारके तिलहन उत्पन्न होते हैं। हर साल यहांसे करोड़ों रुपयोंका तेल, तिलहन और खली विदेश भेजी जाती है। दुनियामें शायद ही कोई ऐसी जगह होगी जहां इतने प्रकारके तिलहन द्रव्य पाये जाते हों। इन एक्सपोर्ट होनेवाले द्रव्योंमें अलसी, तिल, अरण्डी, सरसो और बिनौला हैं। इन सबके व्यापारका विस्तृत परिचय इस ग्रन्थकी भूमिकामें दिया गया है।

बम्बईमें इन सब वस्तुओंका बड़ा मार्केटदाणा बन्दरमें है। यहांपर इन वस्तुओंके बड़े २ गोडऊन्स बने हुए हैं। इस बाजारमें ग्रेनके बहुत बड़े २ और प्रतिष्ठित व्यापारियोंकी फर्में हैं।

बम्बईमें हर एक वस्तुके लिये अलग अलग तौल है। बम्बईका मन अंग्रेजी कार्टरके बराबर होता है। जो बंगाली करीब १४ सेरके होता है। अनाजके तौलोंमें इसी मनसे व्यवहार किया जाता है। परन्तु प्रत्येक वस्तुको खंडीमें मनोंकी संख्याएं भिन्न २ रहती हैं। गेहूं, जौ, बाजरा, जुवार, मक्की, चणा, दालकी किस्मके अनाजोंकी खंडी प्रायः २७ मनकी होती है। कई अनाजोंका भाव २६ तथा २८ मनकी खंडीपर होता है। बाहरसे व्यापारियोंका जो माल बिकनेके लिये आता है उसपर मुकादमी, गोडाउन भाड़ा, खरच आदिके लिये यहांकी ग्रेन मर्चेंट एसोसिएशन नामकी संस्थाने नियम बनाकर सब सुविधाएं कर दी है। हाजिर मालके व्यवसायके अतिरिक्त वायदेका सौदा भी यहां मस्जिद बंदर रोडपर तथा मारवाड़ी बाजारमें अलसीके पाटियेपर होता है।

मेसर्स किलाचंद देवचंद

इस फर्मके मालिक पाटन (गुजरात) के निवासी पोरवार वणिक सज्जन हैं। यह फर्म बम्बईके रुई और ग्रेन एण्ड शीड्सके व्यवसाइयोंमें बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है।

सेठ कीलाचंदजीके पुत्र सेठ छोटालाल कीलाचंदको भारत सरकारने सन् १९१७ में जे० पी० की पदवीसे सुशोभित किया है। आप व्यवसायिक जीवनके प्रारंभमें मेसर्स ई० डी० सासुन और मेसर्स सांडेकी कम्पनीके गुजरातके एजंट निर्वाचित हुए थे। आपके कार्योंसे कम्पनीको हमेशा संतोष रहा। सेठ छोटालाल भाईने रुई और ग्रेनके व्यवसायमें बहुत अधिक सम्पत्ति, मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त की है। सन् १९०५ में पाटनकी अति बृष्टिके समय तथा सन् १९०६ में प्लेगके समय आपने जनताकी बहुत अधिक सहायता की थी। आपने पाटनमें आनंदभुवन फ़ीलायब्रेरीकी स्थापना की है। संवत् १९५६ के भयंकर दुष्कालके समय आपने गरीब जनताको गुप्त सहायता द्वारा बहुत आश्रय पहुँचाया था। बड़ोदा राज्यमें आपका बहुत सम्मान है। वहांकी दीवानी और फौजदारी कोर्टमें गवाही देनेके लिये आपको कोर्टमें हाजिर न होनेका अधिकार गायकवाड़ सरकारने आपको बख्शा है। आप बड़ोदाकी धारा सभाके सभासद भी रह चुके हैं। वर्तमानमें आप कई ज्वाइंट स्टॉक कम्पनियोंके डायरेक्टर हैं। एवं आप बम्बईके प्रतिष्ठित तथा आगेवान व्यापारियोंमें

माने जाते हैं। इस फर्मका ऑफिस ५५ अपोलो स्ट्रीट फोर्टमें है। T.A. sheed है। इस फर्म शिवरीमें कॉटनडेपो हैं। एवं दानाबंदरपर ग्रेनका गोडाउन है। इसके अतिरिक्त बम्बईसे बाहर कई जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। यह फर्म किलाचंद मिल्स कम्पनी लिमिटेडकी मैनेजिंग एजंट है।

मेसर्स नप्पू नेनसी एण्ड कम्पनी

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ वेलजी भाई हैं आप ओसवाल स्थानक वासी संप्रदाय के सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान कच्छ है।

इस फर्मकी स्थापना सेठ नप्पू भाईने करीब ६४ वर्ष पूर्व की थी। आप श्रीमान् नेनसी भाईके पुत्र थे, सेठ नप्पू भाईके बाद इस फर्मके कामको सेठ लखमसी भाईने सह्याला, आपका जन्म संवत् १९०३ में हुआ, आपके हाथोंसे इस फर्मकी खूब उन्नति हुई, आपको गव्हर्नमेन्टने जे० पी० की पदवीसे सम्मानित किया था। आप ग्रेन मर्चेंट्स एसोसिएशनके सभापति थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९७० में हुआ। इस समय इस फर्मके कामको आपके पुत्र श्री सेठ वेलजी भाई संचालित करते हैं। आप बड़े विद्याप्रेमी देश एवं जाति भक्त सज्जन हैं आप बम्बई युनिवर्सिटीकी बी० ए० एल० एल० बी० परीक्षा पास हैं। कुछ समय पूर्व आप बम्बई म्युनिसिपलेटी व बाम्बे पोर्टट्रस्टके सदस्य रह चुके हैं। लेकिन जिस समय सारे देशमें असहयोगकी सात्विक क्रांतिका प्रवाह उठा था उस समय आपने देश भक्तिसे प्रेरित हो इन पदोंको छोड़दिया तथा आप ऑल इण्डिया कांग्रेसकी वर्किंग कमेटीके मेम्बर हो गये। उक्त कमेटीके ट्रेभररका सम्माननीय कार्य भी आप ही करते थे। उसी समय अपने ५० हजार रुपया एक मुश्त तिलक स्वराज फंडमें दान दिया था।

आप बम्बई ग्रेन मर्चेंट्स एसोसिएशनके कई वर्षोंसे सभापतिके पदपर प्रतिष्ठित हैं। इसके अतिरिक्त कच्छी वीसा ओसवाल स्थानकवासी जैन समाज बम्बईके आप प्रेसिडेन्ट हैं व बम्बई स्थानकवासी कान्फ्रेन्सके आप वाइस प्रेसिडेन्ट हैं। इसके अतिरिक्त ऑल इण्डिया स्थानकवासी कान्फ्रेन्सके, मलकापुर अधिवेशनके समय आप ऑनरेरी सेक्रेटरी नियत हुए थे, तथा अब भी उसी पदपर कार्य कर रहे हैं। आपने १५ हजार रुपया कांदाबाड़ी संस्थामें दान दिया है। आप अत्यन्त सरल एवं शांत प्रकृतिके सज्जन हैं। आप शुद्ध खादीका व्यवहार करते हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—(हेड ऑफिस) मेसर्स नप्पू नेनसी दाणाबन्दर-अरगायलरोड (T. A. popat) यहां ग्रेन मर्चेंट तथा कमीशन एजंसीका वर्क होता है।

श्री सेठ छोटालाल कीलाचन्द, बम्बई

स्व० सेठ लखमसीभाई (नप्पूनेनसी) बम्बई

श्री सेठ वेलजी लखमसी (नप्पूनेनसी) बम्बई
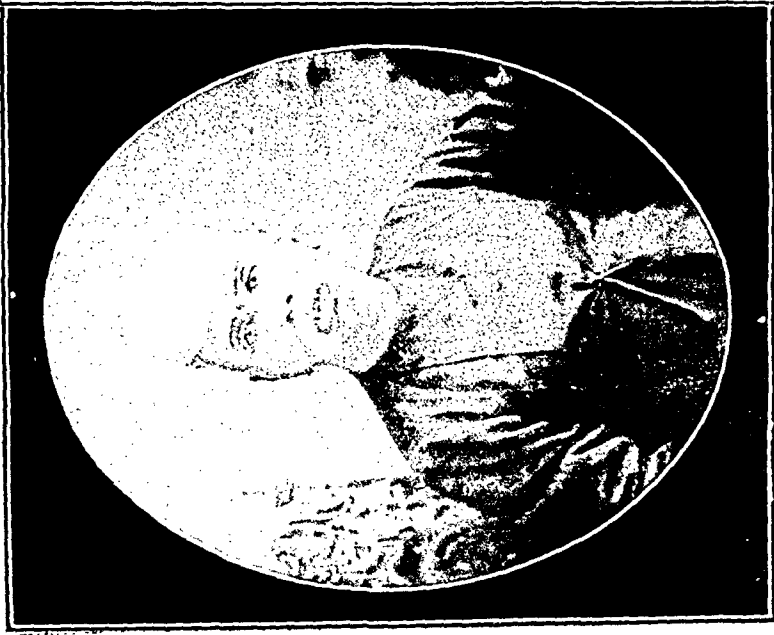
स्व० राजा गोकुलदासजी (सेवाराम गोकुलदास) बम्बई
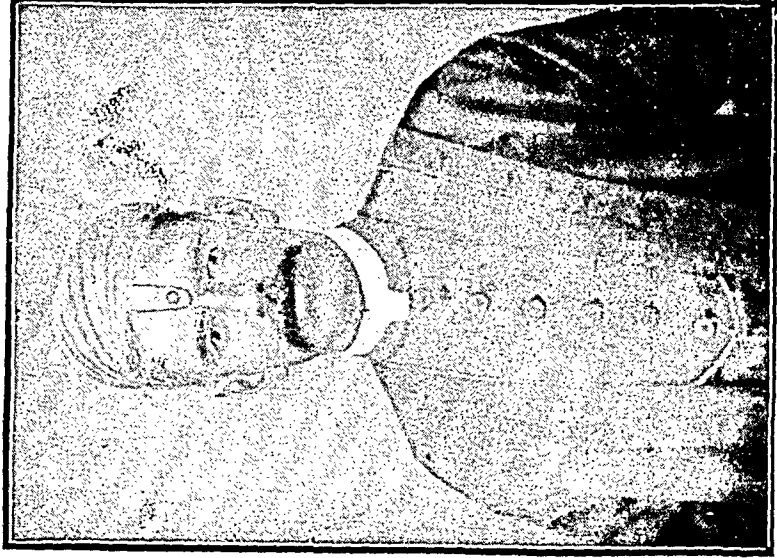
दी० ब० सेठ जीवनदासजी (सेवाराम गोकुलदास) बम्बई
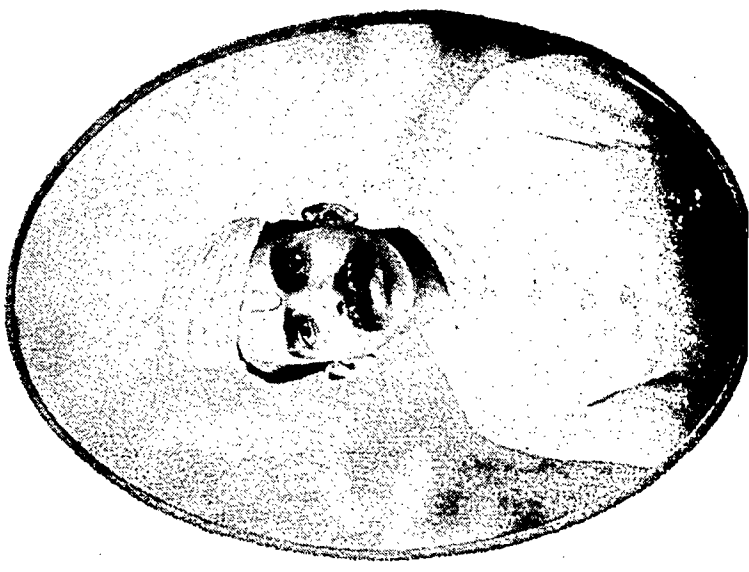
(२) रंगून—मेसर्स वेलजी लखमसी एण्ड कम्पनी मुगलस्ट्रीट, T.A.Prominent यहां चांवलका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

सेठ वेलजी भाईके छोटे भाई श्रीजादवजी हैं। आप दुकानका कार्य सह्मालते हैं। सेठ वेलज भाईके २ पुत्र हैं जिनका नाम श्रीप्रेमजी तथा कल्यानजी हैं। प्रेमजी अभी पढ़ते हैं।

मेसर्स सेवाराम गोकुलदास

इस प्रतिष्ठित फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान जैसलमेर है, पर आप लगभग सवा सौ वर्षसे जबलपुरमें निवास करते हैं, इसीसे जबलपुर वालोंके नामसे विशेष विख्यात हैं। जबलपुरमें आपके महल, गोविन्द भवन नामक कोठी और बगीचा, केवल वहां ही नहीं किन्तु सी० पी० भरमें दर्शनीय समझे जाते हैं। आपका यहां वल्लभ कुल सम्प्रदायका एक बहुत बड़ा मन्दिर है जिसका लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति का पृथक् ट्रस्ट है। इस फर्मके वर्तमान मालिक दीवान बहादुर सेठ जीवन दास जी एवं ऑनरेबिल सेठ गोविन्ददासजी "मेंबर कौंसिल ऑफ़ स्टेट",हैं।

सेठ सेवारामजी जैसलमेरसे जबलपुर आये तथा उनके पौत्र राजा गोकुलदासजीके हाथोंसे इस फर्मकी विशेष तरक्की हुई। राजा गोकुलदासजी एवं सेठ गोपालदासजी दोनों भाई भाई थे। पहिले यह फर्म सेठ सेवाराम खुशालचन्दके नामसे व्यवसाय करती थी। यह फर्म यहां करीब ७५ वर्षोंसे स्थापित थी। संवत् १९६४ से आप दोनों भाइयों की फ़र्में अलग अलग हुईं और तबसे इस फर्मपर 'सेवाराम गोकुलदास' एवं दीवान बहादुर वल्लभदासजीकी फर्मपर "खुशालचन्द गोपालदास" के नामसे व्यवसाय होता है। इस फर्मका हेड ऑफिस जबलपुर है।

यह खान्दान:माहेश्वरी समाजमें बहुत प्रतिष्ठित एवं माननीय समझा जाता है। गवर्नमेंने सेठ गोकुलदासजीको राजाकी उपाधि दी थी और सेठ जीवनदासजी साहबको प्रथम राय बहादुर एवं फिर दीवान बहादुरकी पदवीसे सम्मानित किया है। ऑनरेबिल सेठ गोविन्ददासजी साहब कौंसिल आफ़ स्टेटके मेम्बर हैं। आप बड़े शिक्षित एवं प्रतिष्ठासम्पन्न महानुभाव है। असहयोग आन्दोलनके आरंभसे देशके राजनैतिक आन्दोलनोंमें आपका सदैव हाथ रहा है।

जबलपुरमें प्रायः सभी सार्वजनिक संस्थाओंका निर्माण राजा गोकुलदासजी और उनके खानदानवालोंके हाथों हुआ है। जबलपुरका टाउनहाल, वहांकी स्त्रियोंके लिए "लेडी एल्गिन फ़ीमेल हॉस्पिटल" और "क्रम्प चिल्डरन हॉस्पिटल" नामक बच्चोंका अस्पताल आपहीके खान्दान द्वारा बनवाया गया है। आपहीने जबलपुर वाटर वर्क्सके निर्माणके लिये जबलपुर म्युनिसिपेलिटीको सात लाख रुपया कुछ कम व्याजपर और कुछ विनाव्याज दिये थे। जिसके द्वारा जबलपुरमें वाटर वर्कसका सुप्रबंध आजतक चला आता है। इस रकमकी अदाई लगभग २० वर्षोंमें हुई, अतएव

यदि व्याजका हिसाब लगाया जावे तो एक प्रकारसे आपकी यह कुल रकम वाटर वर्कसके लिये दान समझी जा सकती है। मध्य प्रान्तके अनेक पुराने खान्दानोंको बचानेके लिये भी आपने इसी प्रकारकी अनेक रकमें कम व्याजपर कर्ज दीं थीं। इस कार्यमें आपका लगभग २५ लाख रुपया सदैव लगा रहता था। इस खान्दानकी ओरसे खंडवा स्टेशनके पास "सौभाग्यवती सेठानी पार्वती बाई धर्मशाला" के नामसे एक बहुत उत्तम धर्मशाला बनी हुई है। इस धर्मशालाके निर्म्माणमें लगभग दो लाख रुपया व्यय हुआ है। जवलपुरमें नर्मदा किनारे भृगुक्षेत्र (भेड़ाघाट) नामक तीर्थ स्थानपर आपके द्वारा बनाई हुई एक बड़ी धर्मशाला है जिससे यहां आने जानेवाले यात्रियोंको बड़ा आराम मिलता है। इसके अतिरिक्त गाडरवाड़ा, अजमेर, इटारसी, मथुरा आदि स्थानोंमें भी आपकी धर्मशालाएं है जिनमें लाखों रुपयोंकी लागत लगी है। हालहीमें कुछ वर्ष हुए, जबलपुरमें राष्ट्रीय हिन्दी मन्दिर नामक संस्थाका आपकी खान्दानने ५० हज़ार रुपया देकर निर्म्माण कराया है और गत अप्रैल महीनेमें 'राजकुमारीबाई अनाथालय' भवन निर्म्माणके लिये आपने दस हज़ार रुपया दिये हैं। इस अनाथालयकी नींव महामना मालवीयजीके द्वारा डाली गई है। इसी प्रकार हर एक सार्वजनिक कार्योंमें आपके खानदानवालोंने उदारता पूर्वक अनेक दान दिये हैं। जबलपुर म्युनिसिपेलिटीने राजा गोकुलदासजीके स्मारकके लिये जवलपुर स्टेशन के पास ही एक बहुत अच्छी धर्मशालाका निर्म्माण कराया है। इस धर्मशालाके सामने दीवान बहादुर जीवनदासजीने अपने पिता और माताकी पाषाण मूर्त्तियां स्थापित की हैं।

आपके यहां प्रधानतया जिमींदारीका काम है। मध्य प्रान्तमें आपके सैकड़ों गांव हैं और हजारों एकड जमीनमें आपकी घरू खेती होती है। आपके किसानोंकी संख्या भी हजारों है और इन किसानोंके साथ आपके खानदानका अन्य जिमींदारोंके सदृश व्यवहार न होकर यथार्थमें जैसा व्यवहार जिमींदार और किसानमें होना चाहिये वैसा ही होता है जिसका प्रमाण यह है कि समय समय पर आपने लगभग १५ लाख रुपया अपने ऋणका इन किसानोंपर छोड़ा है।

इसफर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

(१) राजा गोकुलदास जीवनदास गोविन्ददास जबलपुर—यहां आपका हेड आफिस है—

(२) राजा गोकुलदास जीवनदास जबलपुर—इस फ़र्मके तालुक ज़मींदारीका कुल काम है

(३) सेठ सेवाराम जीवनदास जबलपुर—इस फर्मके तालुक आपके जबलपुरके बंगले व मकानातों के किरायेका काम होता है।

(४) सेठ सेवाराम गोविन्दास मिलौनीगंज, जबलपुर—यहां गल्ला व आढ़तका व्यापार होता है।
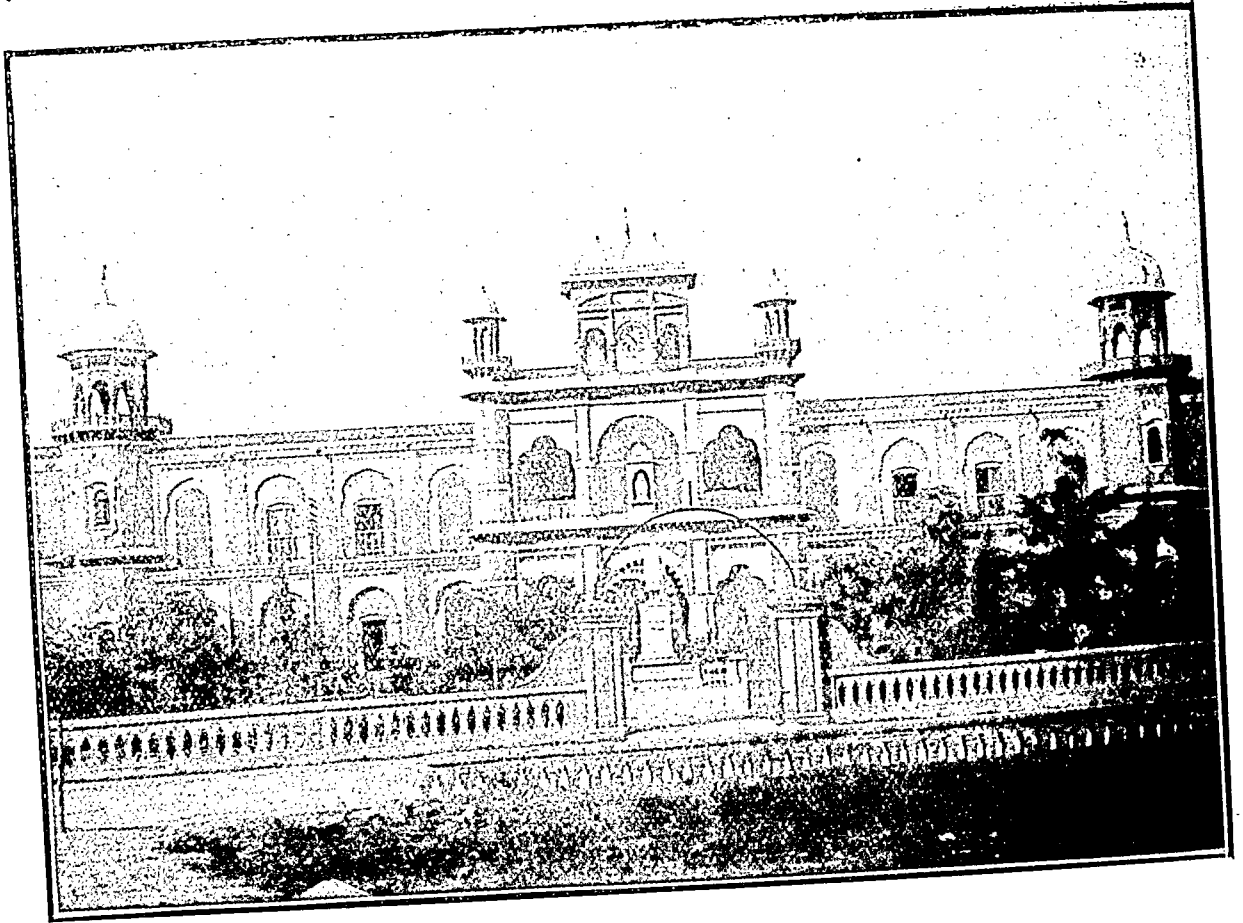
राजा गोकुलदास धर्मशाला जबलपुर
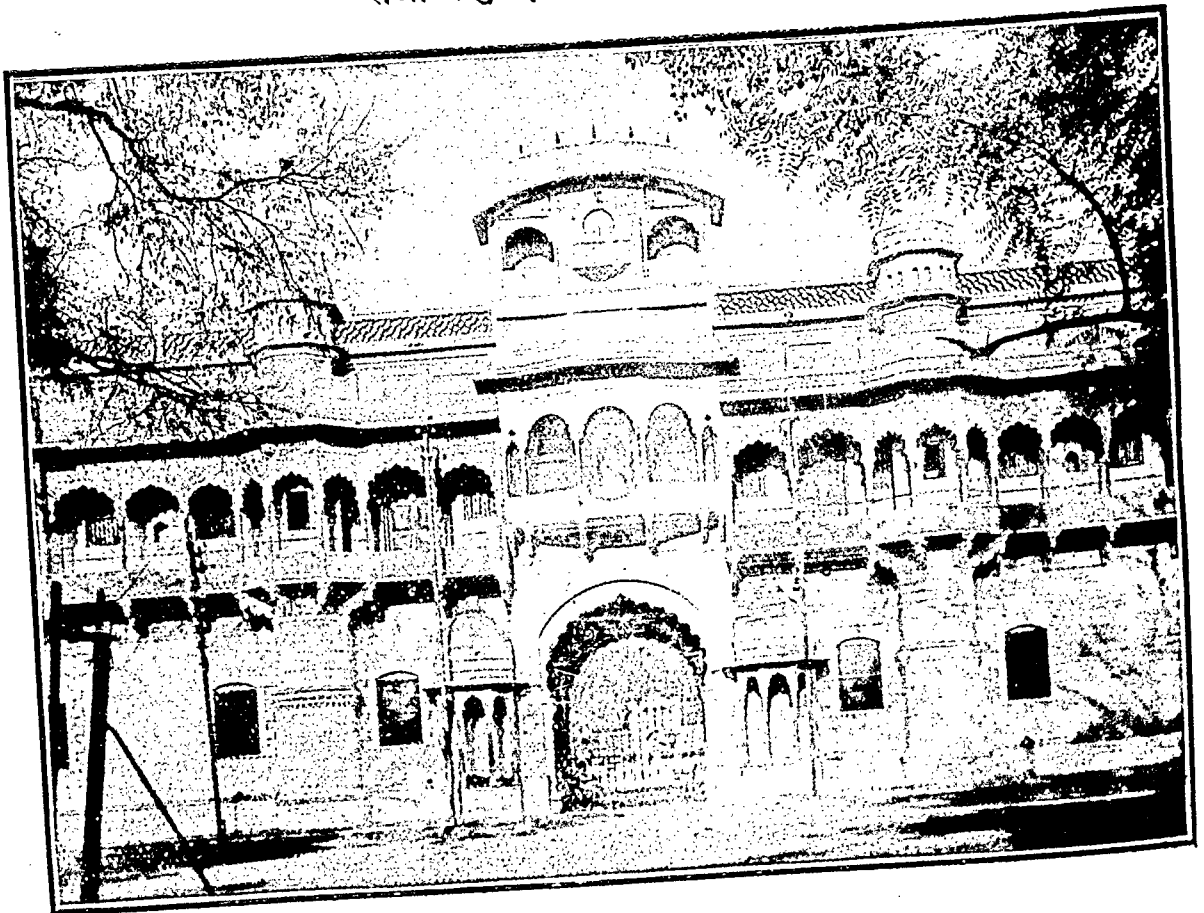
सौ० पार्वतीबाई धर्मशाला खण्डावा

(५) मेसर्स सेवाराम गोकुलदास २०१ हरिसनरोड कलकत्ता—यहां बैंकिग, हुण्डी चिट्ठी तथा आढ़त-
का काम होता है।

(नोट)—पहिले आपका यहां विलायती कपडेका बहुत बड़ा व्यापार था। आप गिलेंडर्स आरबथ
नॉट एन्ड कम्पनीके बेनियन थे। यह कार्य लगभग ३० वर्षतक चलता रहा। असहयोगके
ज़मानेमें विलायती कपड़ेका व्यापार होनेके कारण सेठ गोविन्ददासजीने यह कार्य छोड़
दिया। कलकत्तेमें केवल आपहीकी फ़र्मने सदाके लिये विलायती कपड़ेके व्यापारको
छोड़ा।

(६) मेसर्स सेवाराम गोकुलदास कालवादेवी, बम्बई—यहां बेंकिग, हुण्डी चिट्ठी और रूईका काम
होता है।

(७) मेसर्स सेवाराम गोकुलदास दानाबन्दर, बंबई—यहां गल्लेका व्यापार होता है। आपका यहां
अनाजका गोडाउन है।

(८) राजा सेठ गोकुलदास जीवनदास जौहरी बाजार जैपुर—यहां बैंकिंग व हुण्डी चिट्ठीका काम
होता है। इसके सिवा यहांके जागीरदारोंके साथ लेनदेनका काम भी होता है।

(९) राजा सेठ गोकुलदास जीवनदास मलकापुर—यहां आपकी कॉटन जीन व प्रेस फेक्टरी तथा
आइल फेक्टरी है।

(१०) सेठ रामकिशनदास गोकुलदास बरेली (भोपाल स्टेट)—यहां आपकी जमींदारी है तथा
बेंकिङ्गका काम भी होता है।

(११) राजा सेठ गोकुलदास जीवनदास जैसलमेर—यह आपका आदि निवास स्थान है। यहां
आपका प्राचीन मकान है और यहाँकी दुकानमें बेंकिङ्ग और आढ़तका काम होता
है।

(ग्रेनमर्चेण्ट्स एसोसिएशनकी लिस्टसे)

मेसर्स अब्दुल अजीज़ हाजी तैय्यब
,, अमरसी हरीदास
,, आनन्दजी प्रागजी;
,, इबराहिम आमद
,, उमेदचंद काशीराम
,, ओंकारलाल मिश्रीलाल
,, कालीदास नारायणजी
,, काराभाई रामजी
,, किलाचन्द देवचन्द
,, केसरीमल रतनचन्द
,, केशवजी देवजी
,, खरसेदजी अरदेसरजीदीवेचा एण्ड ब्रादर्स
,, खटाऊ शिवजी
,, खीमजी धनजी,
,, खीमजी लखमीदास
,, खेराज मणसी
,, गंगुभाई डूंगरसी
,, गुरुमुखराय सुखनन्द
,, गोकुलदास मुरारजी
,, गोपालदास परमेश्वरीदास
,, गोविन्दजी मारमल
,, गोपीराम रामचन्द्र
,, गोरधनदास भीमजी
,, गोरधनदास वल्लभदास
,, गंगाराम धारसी
,, घनश्यामलाल एण्ड को०
,, घेलाभाई हंसराज
,, चनाभाई वीरजी
,, चांपसी मारा
,, चुन्नीलाल रामरतन,

मेसर्स चुन्नीलाल अमथालाल
,, चुन्नीलाल अमरजी
,, चन्दूलाल हीराचन्द
,, चन्दूलाल रामेश्वरदास
,, छोटालाल किलाचन्द
,, जमनादास प्रभुदास
,, जमनादास अरजण
,, जयन्तीलाल मूलचन्द
,, जैराम परमानन्द
,, जैराम लालजी
,, जेठाभाई देवजी
,, जैराम हरिदास
,, जवेरचंद देवसी
,, टोकरशीभवानजी
,, डूंगरसी प्रागजी
,, डूंगरसीवीरजी
,, डूंगरसी वेलजी
,, डूगरसी एण्ड सन्स
,, ताया रावजी
,, त्रीकमदास रतनसी
,, त्रिभुवनदास बापूभाई
,, दयालदास छबीलदास
,, देवसीकुरपाल
,, धनजी देवसी
,, धारसीनानजी
,, नवीनचंद सरूपचन्द
,, नवीनचन्द्र दामजी
,, नंदराम नारायणदास
,, नथूभाई कुँवरजी
,, नथूभाई नानजी
,, नारायणजी नरसी
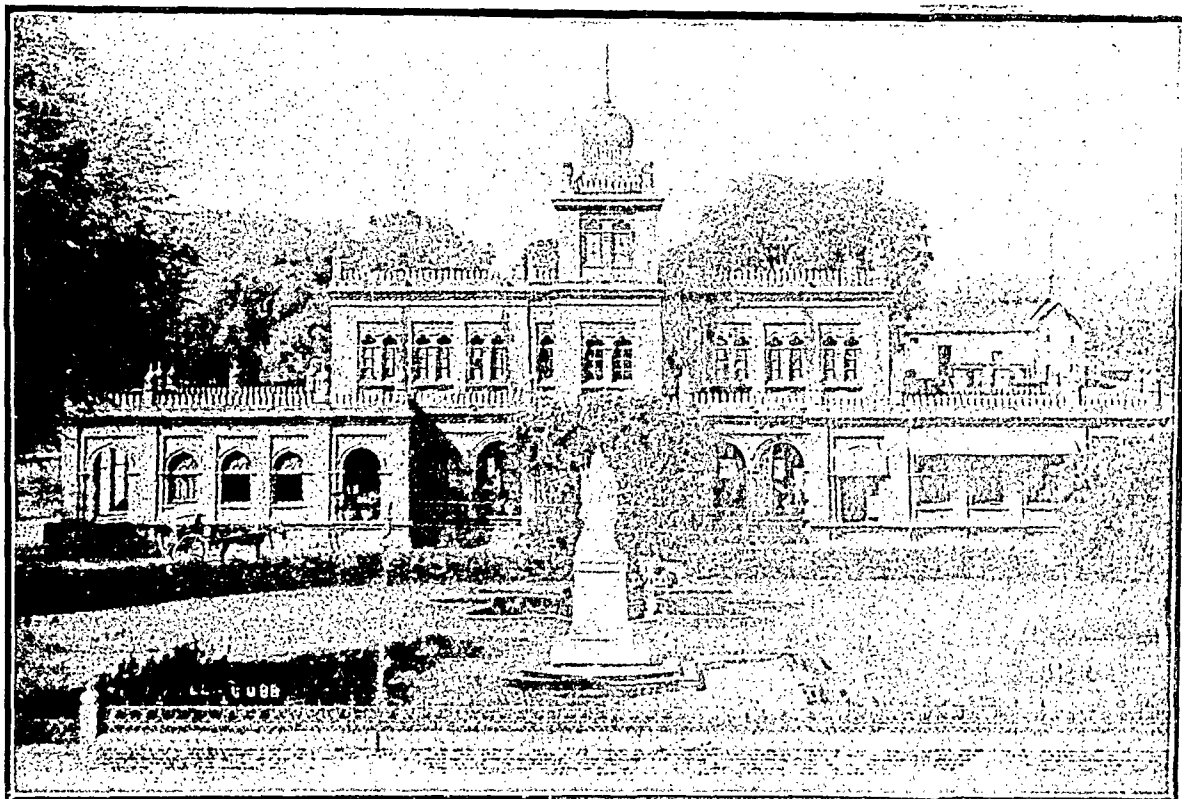
विक्टोरिया टाउन हाल जबलपुर

राजा गोकुलदास ड्राइंग रूम जबलपुर

मेसर्स नारायणजी कल्याणजी
,, नानजी लखमसी (आत बाजार)
,, नोपचन्दमगनीराम
,, परमानन्द जादवजी
,, प्रधान उंकड़ा
,, प्रेमजी हरिदास
,, पोहुमल ब्रदर्स
,, प्रेमजी डोसा
,, फूलचन्द केदारमल
,, भगवानदास मूलजी
,, भगवानदास मुरारजी,
,, भारमल श्रीपाल
,, मगनलाल प्रेमजी
,, मणसी लखमसी
,, मदनजी रतनजी
,, मेघजीचतुर्भुज
,, मोतीभाई पचाण
,, मोमराज वसन्तीलाल
,, मामराज रामभगत
,, मेघजी हरिराम
,, रणछोड़दास प्रागजी
,, रवजी नेणसी
,, रतनसी पूंजा
,, रामजी रवजी
,, रामचन्द्र रामविलास
,, रामजी भोजराज
,, लखमीदास हेमराज
,, लहरचन्द जोइतादास
,, लालजी गणपत
,, लालजी पुनशी
,, लालजी तेजू

मेसर्स वल्लभदास मगनलाल
,, वल्लभजी गोविन्दजी
,, वरुनजी पदमसी
,, बसनजी मेघजी
,, बालजी हीरजी
,, बालजी लीलाधर
,, वीरजी जेठा
,, विट्ठलदास उधवजी
,, वेलजी कानजी
,, वेलजी दामजी
,, वेलजी शामजी
,, वेलजी लखमसी
,, साकरचन्द त्रिकमजी
,, शिवजी भारा
,, शिवजी हीरजी
,, शिवजी राघवजी
,, शिवनारायण बलदेव
,, शिवदयाल गुलाबराय
,, सुन्दरजी लधा
,, सुन्दरलाल गोरधनदास
,, सेवंतीलाल नगीनदास
,, सेवाराम गोकुलदास
,, सेंसमल सुगनचन्द
,, सोमचन्द धारसी
,, हरिदास शिवजी
,, हरिदास प्रेमजी
,, हरसुखदास जोधराज
,, हरजीवन जगजीवन
,, हाथी भाई बुलाखीदास
,, हीरजी गोविन्दजी
,, हीरजी गंगाधर

जवाहिरातका व्यापार

भारतवर्षमें जवाहिरातका व्यापार और उपयोग बहुत प्राचीन कालसे चला आता है। कालिदास इत्यादि कवियोंके काव्योंमें भी इन जवाहिरातोंका वर्णन पाया जाता है। जिस समय यह देश सौभाग्यके शिखरपर मण्डित था उस समय यहांके समृद्धिशाली लोग अपने महलोंके चौक जवाहिरातोंसे जड़ाते थे। यहांके पुराण-साहित्यमें कौस्तुभमणि (हीरा) सूर्य्यमणि (माणिक) चन्द्रमणि (पुखराज) मरकतमणि (पन्ना) इत्यादि नव प्रकारके रत्नोंका वर्णन प्रचुरतासे पाया जाता है। पहले यहांके व्यापारी विदेशोंसे भी जवाहिरातका लेनदेन करते थे, ऐसा कई प्रमाणोंसे ज्ञात होता है।

मुगल कालीन भारतवर्षमें जवाहिरातोंका बहुत प्रचुरतासे उपयोग होता था। मुगल सम्राटों के महलोंकी सौभाग्यशालिनी रमणियां इन जवाहिरातोंसे बनेहुए जेवरोंको बड़े चावसे धारण करती थीं। शाहजहां बादशाहके मुकुटका कोहिनूर हीरा जगत् प्रसिद्ध है, जो कई स्थानोंपर घूमता हुआ अब भारतसम्राटके मुकुटकी शोभा बढ़ारहा है।

इस समय भी भारतवर्षमें जवाहिरातका व्यापार प्रचुरतासे होता है। पर रूई और जूटके व्यापार ही की तरह यह व्यापार भी विदेशाश्रित हो गया है।

इस समय भारतवर्षमें जितने जवाहिरातके बाजार हैं बम्बईका उनमें सबसे पहला नम्बर है। इस शहरमें इस कार्य्यके करनेवाले सैकड़ों बड़े बड़े प्रतिष्ठित व्यापारी निवास करते हैं, जो लाखों रुपयोंका व्यवसाय करते रहते हैं। बाजारके टाइमपर सैकड़ों व्यापारी अपनी सूक्ष्म दृष्टि से जवाहिरातकी परीक्षा करते हुए दिखलाई देते हैं। इनकी इसी सूक्ष्म दृष्टिपर हजारों रुपयेके वारे न्यारे होजाते हैं।

वास्तवमें देखा जाय तो जवाहिरातका व्यापार दृष्टि व नजरका व्यापार है। इस व्यवसायके अन्दर वही व्यापारी विजयी और सफल हो सकता है जिसकी दृष्टि अत्यन्त सूक्ष्म और मालको परखनेवाली हो। क्योंकि यह व्यापार इतना चपल और चक्करदार है कि कभी २ बड़े २ सूक्ष्मदृष्टि अनुभवी और तीक्ष्ण बुद्धिवाले भी इसमें गोता खा जाते हैं। बात यह है कि सोना चांदी या दूसरी वस्तुओंकी परीक्षाके जैसे निश्चित तरीके हैं वैसा कोई निश्चित तरीका जवाहि-

जौहरी

JEWELLERS

जवाहिरातका व्यापार

भारतवर्षमें जवाहिरातका व्यापार और उपयोग बहुत प्राचीन कालसे चला आता है। कालिदास इत्यादि कवियोंके काव्योंमें भी इन जवाहिरातोंका वर्णन पाया जाता है। जिस समय यह देश सौभाग्यके शिखरपर मण्डित था उस समय यहांके समृद्धिशाली लोग अपने महलोंके चौक जवाहिरातोंसे जड़ाते थे। यहांके पुराण-साहित्यमें कौस्तुभमणि (हीरा) सुर्य्यमणि (माणिक) चन्द्रमणि (पुखराज) मरकतमणि (पन्ना) इत्यादि नव प्रकारके रत्नोंका वर्णन प्रचुरतासे पाया जाता है। पहले यहांके व्यापारी विदेशोंसे भी जवाहरातका लेनदेन करते थे, ऐसा कई प्रमाणोंसे ज्ञात होता है।

मुगल कालीन भारतवर्षमें जवाहिरातोंका बहुत प्रचुरतासे उपयोग होता था। मुगल सम्राटोंके महलोंकी सौभाग्यशालिनी रमणियां इन जवाहिरातोंसे बनेहुए जेवरोंको बड़े चावसे धारण करती थीं। शाहजहां बादशाहके मुकुटका कोहिनूर हीरा जगत प्रसिद्ध है जो कई स्थानोंपर घूमता हुआ अब भारतसम्राटके मुकुटकी शोभा बढ़ा रहा है।

इस समय भी भारतवर्षमें जवाहिरातका व्यापार प्रचुरतासे होता है। पर रूई और जूटके व्यापार ही की तरह यह व्यापार भी विदेशाश्रित हो गया है।

इस समय भारतवर्षमें जितने जवाहिरातके बाजार हैं बम्बईका उनमें सबसे पहला नम्बर है। इस शहरमें इस कार्य्यके करनेवाले सैसड़ों बड़े बड़े प्रतिष्ठित व्यापारी निवास करते हैं, जो लाखों रुपयोंका व्यवसाय करते रहते हैं। बाजारके टाइमपर सैकड़ों व्यापारी अपनी सूक्ष्म दृष्टिसे जवाहिरातकी परीक्षा करते हुए दिखलाई देते हैं। इनकी इसी सूक्ष्म दृष्टिपर हजारों रुपयेके वारे न्यारे हो जाते हैं।

वास्तवमें देखा जाय तो जवाहिरातका व्यापार दृष्टि व नजरका व्यापार है। इस व्यवसायके अन्दर वही व्यापारी विजयी और सफल हो सकता है जिसकी दृष्टि अत्यन्त सूक्ष्म और मालको परखनेवाली हो! क्योंकि यह व्यापार इतना चपल और चक्करदार है कि कभी २ बड़े २ सूक्ष्मदृष्टि अनुभवी और तीक्ष्ण बुद्धिवाले भी इसमें गोता खा जाते हैं। बात यह है कि सोना चांदी या दूसरी वस्तुओंकी परीक्षाके जैसे निश्चित तरीके हैं वैसा कोई निश्चित तरीका जवाहि-

रातके सम्बन्धमें नहीं है। आप एक हीरेको लेकर बाजारमें चले जाइये। एक व्यापारीसे उसकी कीमत करवाइये, फिर दूसरेके पास जाइए, इस प्रकार आप दस जगह जाकर उसकी कीमत करवाइये आपको पता चलेगा कि सबकी की हुई कीमतोंमें थोड़ा बहुत अन्तर जरूर रहेगा। कभी २ तो यह अन्तर सैकड़ोंकी तादादमें होजाता है। बात यह है कि किसी भी जवाहिरातकी परीक्षा करते समय उसके रङ्ग, वजन, आब, आकार आदि कई बातों पर ध्यान रखना पड़ता है। इतनी परीक्षा होजाने पर भी उसमें दूब, फुल्लार या छींटें हैं या नहीं इस बातपर निगाह दौड़ाना पड़ती है। यदि माल असल भी हो और उसमें कहीं फुलार या छींटें आजाय तो असल दामसे उसकी कीमत कम होजाती है। मतलब यह कि यह व्यापार बहुत उच्च कोटिका है और इसमें सफलता प्राप्त करनेके लिये सूक्ष्म बुद्धि, तीक्ष्ण दृष्टि, गहरे अनुभव और प्रचुर गम्भीरताकी आवश्यकता है। अब हम यहां प्रधान २ जवाहिरातोंके व्यवसायपर संक्षिप्तमें कुछ प्रकाश डालते हैं।

हीरा—

वैसे तो सभी जवाहिरात बहुमूल्य, सुन्दर और प्रतिभावान होते हैं। पर उन सबमें भी हीरेका स्थान बहुत ऊंचा है। नौ ही प्रकारके रत्नोंमें सबसे प्रथम नम्बर इसका है। इसका मूल्य और इसकी दीप्ति भी औसत दृष्टिसे दूसरे जवाहिरातोंसे अधिक होती है। यह रत्न भारतवर्षके अन्तर्गत मद्रास, निजाम हैदराबाद, मैसूर, इत्यादि स्थानोंमें पाया जाता है तथा भारतके बाहर आस्ट्रेलिया, अमेरिका, फ्रांस, इङ्गलैंड और ब्रीजल प्रान्तमें इसकी खानें पाई जाती हैं। भिन्न २ खानोंके अनुसार हीरेकी जातियां भी कई होती हैं। जिस हीरेमें लाल रंगकी झांई होती है तथा लाल रंगक छींटा लगा हुआ होता है उसे रत्तिया, जिसमें नीली झांई होती है उसे बनसपति, जिसकी आसपासकी कोर, बढ़िया हीरेकी कोरसे कम ओजपूर्ण होती है उसे तरमरी, और जिसमें कुछ स्याह झांई दिखलाती है उसे काकपदी कहते हैं। जिस हीरेमें किसी प्रकारका छींटा न हो, जिसका रङ्ग बिलकुल सफेद और कान्तिपूर्ण हो, तथा जिसका आकार और वजन भी बड़ा हो वह हीरा इनसे विरुद्ध या कम गुणवाले सब हीरोंसे अधिक बहुमूल्य और बढ़ियाँ होता है।

पन्ना

हीरेहीकी तरह पन्ना भी बड़ा बेशकीमती और सुन्दर रत्न हैं इसका रङ्ग नीला होता है। पन्ना अमेरिकाके ब्राझिल प्रान्तमें, ब्रह्मदेशमें और नीले टापूमें पैदा होता है। हीरे हीकी तरह पन्नेकी परीक्षामें भी बड़ी सूक्ष्म दृष्टिकी आवश्यकता होती है। जो पन्ना साफ और समान नीले रङ्गका, भरपूर आबदार और ज्योतिपूर्ण हो, तथा हथेलीपर लेकर देखनेसे जिसमेंसे सूर्य्य या चन्द्रमाके समान किरण या पानीके झरनेकी सी धारा फटती हुई दिखलाई दे तथा जिसकी

झांईसे सारी हथेली माइल नीले रङ्गकी मालूम हो, पानीके गिलासमें रखनेसे जिसके आबसे सारा जल नीला और प्रकाशयुक्त दिखलाई देने लगे वही पन्ना सर्वोत्तम समझा जाता है। नीले टापूमें से निकलनेवाले पन्नोंमें प्रायः ये सब गुण पाये जाते हैं।

माणिक—

जिसप्रकार हीरा अपनी कान्तियुक्त सफेदीसे ओर पन्ना अपनी आकर्षक नील झांईसे जगत्प्रसिद्ध हुआ है उसीप्रकार माणिक अपनी कमाल दर्जेकी लालीसे मनुष्य समाजका प्रियपात्र हुआ है। जिस प्रकार हीरे और पन्ने पश्चिमकी भूमिमें अधिक पाये जाते हैं उसी प्रकार यह लाल रत्न एशियाखण्डमें अधिक तादादमें मिलता है। ब्रह्मदेश, मेवाड़, उदयपुर, काबुल; मद्रास, सिलोन वगैरह स्थानोंमें भिन्न २ जातिके माणिकके पत्थर पाये जाते हैं। जो अपने शुद्ध रूपमें आनेके पश्चात् बड़े २ करोड़पति और भाग्यशाली नर नारियोंकी उंगलियोंकी शोभा बढ़ाते हैं।

मोती—

मोतीका इतिहास इन सबसे विचित्र है। इसकी पैदाइश, इसकी शोभा, इसकी आब इन सब वस्तुओंसे निराली है यह रत्न समुद्रके अन्दर सीप नामके जो जन्तु रहते हैं उनके अन्दरसे निकलता है। कहा जाता है कि स्वाति नक्षत्रके अन्दर सीप जातिके कीडे समुद्रके बाहर अपने २ मुहको खोले रहते हैं उस नक्षत्रमें जो पानीकी बड़ी २ बून्दे पड़ती हैं वे इनके मुंहमें पड़ती हैं; और इनके पेटमें जाकर किसी विचित्र रासायनिक क्रियाके प्रतापसे ज्योंकी त्यों मोतीका रूप धारण कर लेती हैं। जो बून्द जितनी ही मोटी होती है वह मोती भी उतनाही बड़ा और आबदार होता है। पता नहीं इस बातमें कहांतक सत्य है। पर इसमें तो सन्देह नहीं कि असली और सच्चे मोती सीपसे पैदा होते हैं। उचित मौसिमपर मोती निकालनेका व्यापार करनेवाले लोग समुद्रके उन तटोंपर पहुंच जाते हैं जहां सीपें विशेप रूपमें रहती हैं। यहां आकर वे लोग समुद्रके तटपर रहनेवाली जातियोंसे उचित मजदूरी देकर सीपें निकलवाते हैं। और इन सीपोंसे मोती निकालकर उन्हें शुद्ध और आबदार बनाकर बाजारमें भेजते हैं। कुछ दिनोंसे इसी विधिको काममें लाकर जापानने इस प्रकारके नकली मोती बनाना भी प्रारम्भ किया है। वहाँके लोग सीपोंको पालते हैं और उनके मुखमें उसी क्रियासे कृत्रिमता पूर्वक पानीकी बून्दें डालते हैं। इस प्रकारके मोती जब शुरू २ में निकले थे, तब यूरोपके जवाहिरातके बाजारमें खलबली मच गई थी, और लोगोंको असली नकलीकी परीक्षा करना भी कठिन हो गया था। कुछ दिनों पश्चात् इनकी परीक्षा निकल गई, फिर भी अनजान लोगोंको अभीतक इस धोखेमें पड़ जाना असम्भव नहीं है। अस्तु।

वैसे तो मोतीकी उत्पत्ति कई स्थानोंपर होती हैं पर उनमें खासकर ईरानी आखातका बसरेके पाससे निकलनेवाला मोती आबदार, माईल गुलाबी झांई वाला, गोल, पांच छः तहवाला और सफेद

होता है। यह मोती उत्कृष्ट श्रेणीका समझा जाता है। इसके सिवाय परसियन गल्फमें से आनेवाला अरबियन मोती भी बहुत अच्छा समझा जाता है। मस्कतसे निकलनेवाला मोती भी गोल होता है इन मोतियोंको सीलीदाणा कहते हैं। इन मोतियोंके अतिरिक्त अफ्रिकाके "नीमीसारी" जातिके, चीन समुद्रके "मगज" जातिके, सीलोनके "उडन" जातिके, आस्ट्रेलियाके "टाल" जातिके, और जामनगरके किनारेके गामशाई जातिके मोती भी बाजारमें बिकते हैं, मगर ये सब उपरोक्त जातियोंसे हल्के होते हैं।

जो मोती जितना ही सफेद, गुलाबी झांईवाला, गोल, बड़ा और अधिक तहवाला होता है, वह उतना ही कीमती समझा जाता है। इसके अतिरिक्त मोतीके छिद्रसे भी उसकी बहुमूल्यताका बहुत सम्बन्ध है। जिस मोतीका छिद्र छोटा होगा वह मोती बेशकीमती होगा। बड़े छिद्रवाला मोती यदि आबदार और गोल भी हुआ, तो भी उसकी कीमत बारीक छिद्रवाले मोतीसे कम हो जायगी। मोतीका आब बढ़ानेके लिये तथा उसका छिद्र छोटा करनेके लिए अनुभवी लोग कई तरहके प्रयोग करते हैं। आब बढ़ानेके लिए उन्हें एसिडकी बोतलोंमें रक्खा जाता है, और छिद्र छोटा करनेके लिए उनमें एक ऐसा पदार्थ भर दिया जाता है जिससे उनका छिद्र भी छोटा हो जाय और उनका वजन भी बढ़ जाय। मोतीको सुधारनेकी और भी कई तरकीबें हैं जिनके बलपर बांके टेढ़े और कम आबवाले मोतीको भी सुधारकर अनुभवी लोग उसे बढ़िया बना लेते हैं।

उपरोक्त रत्नोंके सिवाय नीलम, पुखराज; गोमेधक, लहसुनिया, ओपाल राजावर्क, पीरोजा, सुलेमानी, गउदन्ती, चकमक इत्यादि कई प्रकारके नग तथा मोतीका चूरा और इमीटेशन नग इत्यादि वस्तुओंका व्यापार भी बम्बईके बाजारमें चलता है। कुछ दिनोंसे माणिककी भी एक नई जाति बाजारमें चालू हुई है। इसका रंग और इसकी लाली कभी २ तो ऐसी देखनेमें आती है कि असल माणिक भी उसके आगे फीका नजर आने लगता है। इसकी कीमत भी असली माणिकसे बहुत सस्ती होती है। अर्थात् एक रुपया रत्तीसे लेकर चार पांच रुपया रत्ती तक यह बिकता है। आजकल बम्बईमें इन नगोंका प्रचार बड़े जोरोंसे हो रहा है।

उपरोक्त रत्नोंका तोल अधिकांशमें रत्तीसे ही होता है, जौहरी लोग आपसमें कैरेटके हिसाबसे लेन देन करते हैं। ये सब तोल यहांके धर्म कांटेपर होता है। इन सब रत्नोंपर भिन्न २ प्रकारके प्रमाणसे बटाव भी मिलता है। जवाहिरात सम्बन्धी झगड़ोंको निपटानेके लिए "दी डायमण्ड-मरचेण्ट्स एसोसियेशन" नामक मण्डल बना हुआ है। जवाहिरातका व्यापार जौहरी बाजार, मोती बाजार और खारा कुआपर होता है, कुछ दुकानें फोर्टमें भी है।

इस प्रकारके कार्य्यमें मालको जाननेवाले, समझनेवाले, और बाजारके अनुभवी आदमीकी सलाह या सहायता लेनेसे किसी प्रकारकी ठगीका डर नहीं रहता है।

सेठ अमृतलाल रायचन्द भाई जौहरी, बम्बई

सेठ अमूलख भाई खूबचन्द जौहरी, बम्बई

सेठ डायालाल माकनजी जौहरी, बम्बई

सेठ नगीनदास लल्लू भाई जौहरी, बम्बई

हीरे और जवाहरातके व्यापारी

मेसर्स अमृतलाल रायचन्द्‌ जौहरी

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ अमृतलाल भाई हैं। आप ओसवाल जातिके श्वे० जैन सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान पालनपुर (गुजरात) है। आपकी फर्मको बम्बईमें व्यवसाय करते करीब २५ वर्ष हुए। इस फर्मकी विशेष तरक्की भी आप ही के हाथोंसे हुई। आपके पिता सेठ राय-चन्द भाईका देहावसान हुए करीब ३५ वर्ष हुए।

सेठ अमृतलाल भाई स्थानकवासी ओसवाल समाजमें बहुत प्रतिष्ठित एवम् आगेवान सज्जन हैं। आप जैन स्थानक वासी संघके ट्रस्टी हैं, तथा सार्वजनिक घाटकोपर जीव-दया-फण्डके ट्रस्टी एवम् ट्रेझरर हैं। आप स्थानकवासी जैन रत्न चिन्तामणी मण्डलके प्रेसिडेण्ट हैं।

इस समय आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—अमृतलाल रायचन्द जवेरी जवेरीबाजार, इस फर्मपर हीरा, मोती, पन्ना तथा सब प्रकारके जवाहरातका काम होता है। खास व्यवसाय हीरे, पन्ने तथा मोतीका है आपकी फर्मपर हीरेका विलायतसे इम्पोर्ट होता है।

मेसर्स अमूलख भाई खूबचन्द जौहरी

इस फर्मके मालिक पालनपुर(गुजरात)के निवासी हैं। इस फर्मको बम्बईमें सेठ अमूलख भाई खूबचन्दने ८० वर्ष पूर्व स्थापित किया था। बम्बईके जौहरी समाजमें यह फर्म पुरानी मानी जाती है सेठ अमूलख भाई पालनपुरके जौहरी समाजमें बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आपके स्मारकमें आपके कुटम्बियों एवं आपके सम्बन्धियोंकी ओरसे एक स्मारक भवन खड़ा किया गया है। आपका देहावसान सम्वत् १९६९की पौष सुदी १४ को हुआ।

वर्तमानमें सेठ अमूलख भाईके पुत्र सेठ केशवलालजी सोभागमल जी, जेसगलालजी और कान्तिकलालजी इस फर्मका संचालन करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स अमूलख भाई खूबचन्द धनजीष्ट्रीट—T.A.Activa इस फर्मपर हीरा,पन्ना मोती, माणिक तथा सब प्रकारके जवाहरातका व्यापार होता है। और विलायतसे हीरा इम्पोर्ट होता है।

(२) करांची—बाम्बे ज्वेलर्स एलिफंस्टनस्ट्रीट-यहाँ हीरेका व्यापार होता है।

मेसर्स अमीचंद बाबू पन्नालाल जौहरी

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू अमीचंदजीके पुत्र बाबू दौलतचंदजी और बाबू सिताबचंदजी हैं। आप जैन बीसा श्रीमाली जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास पाटन (गुजरात) है।

इस फर्मका स्थापन करीब ६० वर्ष पूर्व बाबू पन्नालालजीके पुत्र बाबू अमीचंदजीने किया था। बाबू अमीचंदजीकी धार्मिक कार्योंकी ओर अच्छी रुचि थी। आपने बालकेश्वरपर तीन बत्तीके पास श्री आदिश्वर भगवानका एक सुन्दर जैन मंदिर बनवाया हैं। आप निजाम साहबके खास जौहरी थे। निजाम साहबके साथ जवाहिरात बेचनेका सम्बन्ध आपके कुटुम्बमें आपहीने स्थापित किया था। इसके अतिरिक्त आपने गवालियर, पटियाला, ट्रावनकोर, उदयपुर, रामपुर आदि नरेशोंको भी अच्छा जवाहरात बेचा था। आपका देहावसान ७८ वर्षकी आयुमें सम्वत् १९८४ में हुआ।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

बम्बई—मेसर्स अमीचंद बाबू पन्नालाल जौहरी, बालकेश्वर तीन बत्ती, यहां हीरा तथा सब प्रकारके जवाहिरातोंका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त बैङ्किग और शेअरका व्यापार होता है।

बाबू चुन्नीलाल पन्नालाल जौहरी

बाबू पन्नालालजी जौहरीके ज्येष्ठ पुत्र बाबू चुन्नीलालजीका जन्म संवत् १९०५ में कलकत्तेमें हुआ था। अल्प वयमें ही आपके पिताजीने आपको २ लाख रुपये देकर अलग कर दिया था। आपने अपनी व्यापार एवं व्यवहार कुशलतासे बहुत सम्पत्ति एवं प्रतिष्ठा प्राप्त की। आपने पटियाला भावनगर आदि रजवाड़ोंमें अच्छा जवाहिरात बेंचकर द्रव्य संचय किया था। आपका देहावसान संवत् १९५९ की ज्येष्ठ सुदी १५ को हुआ। मरहूम बाबू साहबके स्मरणार्थ आपकी धर्मपत्नी श्रीमती भीखीबाईने करीब १० जैन ग्रंथोंका प्रकाशन कर जैन जगतमें अच्छा ज्ञान प्रचार किया है। बाबू अमीचंदजीने अपनी मातु श्री रतनबाईके स्मरणार्थ एक उपाश्रय, अपने अल्पवयमें स्वर्गवासी हुए पुत्र माणकलालके नामपर राधनपुरमें एक ज्ञान-मंदिर, और रणुंजमें एक उपाश्रय बनवाया है। इस समय इस फर्मके मालिक बाबू रतनलालजी चुन्नीलालजी जौहरी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

बम्बई—बाबू चुन्नीलाल पन्नालाल जौहरी, बालकेश्वर तीन बत्तीके पास—यहां हीरा मोती तथा सब प्रकारके जवाहरातोंका व्यापार होता है।

बाबू दौलतचन्द अमीचन्द जौहरी, बम्बई

बाबू चुन्नीलाल पन्नालाल जौहरी, बम्बई

बाबू शिखरचन्द अमीचन्द जौहरी, बम्बई

अमीचन्द बाबू पन्नालाल जौहरी, बम्बई

मिस्टर गफूर भाई चुन्नीलाल जवेरी

मिस्टर गफूर भाईको हीरा तथा मोतीका व्यापार करते हुए करीब १८ वर्ष हुए। आपका खास निवास पालनपुर है। आप जैन सज्जन हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मिस्टर गफूर भाई चुन्नीलाल संढहर्स्ट रोड प्रार्थना समाजके पास किलेदार मंजिल, आपके यहाँ हीरा तथा मोतीका व्यापार होता है।

२ बम्बई—चिमनलाल वीरचंद जौहरी बाजार, इस स्थानपर मोतीका व्यापार होता है।

—:—

मेसर्स डाह्यालाल मकनजी जवेरी

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ डाह्यालाल मकनजी भाई तथा सेठ अमृतलाल भाई प्राणजीवनदास हैं। आप श्रीमाल जातिके वैष्णव धर्मावलम्बी सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान मोरवी (काठियावाड़) में है।

इस फर्मकी स्थापना संवत् १९६० में सेठ डाह्यालाल भाईने की। आपहीके हाथोंसे इस फर्मकी तरक्की भी हुई। श्रीयुत अमृतलाल भाई इसके पार्टनर हैं। आप श्रीयुत डाह्या भाईके भतीजे हैं।

इस फर्मको मोरवी, ध्रांगधरा, राजपीपला और देवगढ़ बारिया आदि स्टेटोंने अपाईण्टमेण्ट दिया है।

श्रीयुत डाह्यालाल भाई दी डायमेण्ड मरचेंट्स एसोसियेशनके वाईस प्रेसिडेण्ट हैं। इसके अतिरिक्त आप इंडियन मरचेंट्स एसोसिएशनकी मैनेजिंग कमेटीके मेम्बर हैं। आपको कई अच्छे २ स्थानोंसे सार्टिफिकेट मिले हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

१ बम्बई—मेसर्स डाह्यालाल मकनजी शेखमेमन स्ट्रीट—इस फर्मपर हीरे तथा अन्य प्रकारके जवाहिरातका काम होता है। यहां जवाहिरातके दागिने भी बनाये जाते हैं।

मेसर्स नगीनदास लल्लूभाई एण्ड सन्स

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ डाह्याभाई नगीनदास, लहरचन्द नगीनदास; नाथालाल डाह्याभाई, और कीतिलाल डाह्याभाई हैं। आप वीसा ओसवाल जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान पालनपुर है।

इस फर्मके मूल स्थापक सेठ नगीनदास लल्लूभाई हैं। आपकी फर्मपर ५०वर्षसे हीरेका व्यापार होता चला आया है। अपका स्वर्गवास हुए करीब ७ वर्ष हुए।

सेठ नगीनदास भाईके २ पुत्र हैं (१) सेठ डाह्या भाई (२) सेठ लहरचन्दजी, श्रीयुत लहरचन्द जी डायमण्ड मरचेण्टस् एसोसिएशनके प्रेसिडेण्ट हैं। इसके अतिरिक्त आप पालनपुर जैनमण्डलके भी प्रेसिडेंट हैं। पालनपुर नवाब साहबके आप खास जौहरी हैं। यहाँ जौहरी समाजमें आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

(१) बम्बई मेसर्स नगीनदास लल्लूभाई एण्ड सन्स धनजीस्ट्रीट T.A. Pendent इस फर्मपर खास व्यापार हीरा पन्ना तथा जवाहरातका होता है। यहां थोक और खुदरा दोनों तरहसे हीरा बेचा जाता है।

(२) पालनपुर (गुजरात) मेसर्स नगीनादास लल्लू भाई ज्वेलर्स। इस फर्मपर भी हीरेका व्यापार होता है।

(३) रङ्गून मेसर्स नाथा भाई डाह्यालाल एन्ड को० ज्वेलर्स T. A. Honestyइस फर्मपर भी हीरे तथा दूसरी प्रकारके जवाहरातका काम होता है।

(४) एण्टवर्प (वेलजियम) मेसर्स नगीनदास लल्लूभाई T. A. Dahyabhai यहांपर भी आपकी दुकान है एवम् यहाँसे डायरेक्ट हीरा आपके यहां आता है।

इस फर्मकी ओरसे देशी राजाओंमें बहुत जवाहिरात जाता है। आपके ट्रेव्हलिंग एजंट मिस्टर एम० डब्ल्यू एडवानी राजघरानोंमें घूमते रहते हैं।

मेसर्स नाथालाल गिरधरलाल एण्ड कम्पनी

इस फर्मके वर्त्तमान संचालक सेठ नाथालाल भाई तथा गिरधरलाल जी हैं। आप दोनों पार्टनर हैं। इस फर्मके तीसरे भागीदार श्री रतनचन्द जीका देहावसान हो गया है।

इस फर्मको व्यवसाय करते करीब ३० वर्ष हो गये हैं। सेठ नाथालाल भाईका मूल निवास खंभात है। आप पाटीदार सज्जन हैं। सेठ गिरिधरलाल जी पहिली वार १९००में एवं दूसरी बार १९२४में व्यापारके लिये विलायत जाकर आये हैं। वहांसे आपने अच्छी सम्पति कमाई है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स नाथालाल गिरधरलाल एण्ड कम्पनी कसाराचाल इस फर्मपर हीरा पन्ना-माणिक, आदि सब प्रकारके जवाहरातका व्यापार होता है।

श्री नाथालाल भाईके भतीजे माणिकलाल भाई भी माणिक पन्ना और नीलमका व्यापार करते हैं।

स्व० बाबू पन्नालालजी जौहरी जे० पी०

बाबू जीवनलाल पन्नालाल जौहरी जे० पी० (पूर्णचन्द्र पन्नालाल)

बाबू भगवानदास पन्नालाल जौहरी (पूर्णचन्द्र पन्नालाल)

बाबू मोहनलाल पन्नालाल जौहरी (पूर्णचन्द्र पन्नालाल)

बाबू पूर्णचन्द्र पन्नालाल जौहरी

इस प्रतिष्ठित एवं पुराने जौहरी वंशमें प्रख्यात पुरुष श्रीमान् बाबू पन्नालालजी जौहरी जे० पी० हुए हैं। आपका जन्म संवत् १८८५ की कार्तिक वदी ६ को काशीमें हुआ था। आपका आदि निवास स्थान पाटन (गुजरात) है। आप जैन वीशा श्रीमाली वाणिया सज्जन हैं।

आपका प्रारंभिक जीवन कलकत्तेमें व्यतीत हुआ था, एवं हिन्दी अंग्रेजी भाषाओंका ज्ञान भी आपने वहीं प्राप्त किया था। आपके पिता श्री सेठ पूर्णचन्द्रजी तथा आपके नाना स्वयं जौहरी थे; परंतु पराई दृष्टिके नीचे शिक्षा अच्छी मिलती है इसी सिद्धान्तको ध्यानमें रखकर आपके पिताश्रीने आपको कलकत्तेमें प्रसिद्ध जौहरी बाबू बलदेवदासजीके पास जवाहरातकी शिक्षा प्राप्त करनेके लिये रक्खा था।

आपके जीवनका करीब आधा हिस्सा कलकत्तेकी ओर हुआ इसीसे गुजराती सज्जन होते हुए भी आप बाबूके नामसे विशेष सम्बोधित किये जाते थे।

आपके पिताश्रीका संवत् १६०६ में देहावसान हुआ। तबसे आपने साहसके साथ व्यापारमें भाग लेना प्रारंभ कर दिया।

उस समय वर्मामें बहुत थोड़े मूल्यमें अमूल्य जवाहरात मिलता था बाबू पन्नालालजी तीन गृहस्थोंके साथ संवत् १६११।१२ में दरियाके रास्तेसे वर्मा गये, तथा वहाँसे रंगून और रूबी माइंसकी भी यात्रा आपने की। इस सात मासके सफरमें आपने बहुत अधिक सम्पत्ति उपार्जित की। इसी मुसाफिरीमें आपने वर्माके महाराज "थीओ" से भी मुलाकात की थी। इस प्रकार संवत १६२१ तक आप कलकत्ता, लखनऊ, कानपुर आदि शहरोंमें व्यापार करते रहे और बाद १६२२ में बम्बई आये। तबसे आपका खानदान एक प्रसिद्ध जौहरी कुटुम्बकी तरह बम्बईमें निवास कर रहा है।

बाबू पन्नालालजीने जोधपुर, जयपुर, अलवर, इन्दौर, हैदराबाद त्रावनकोर, भावनगर, जम्बू; (काश्मीर) विजय नगर, उदयपुर, जूनागढ़, झालरापाटन, डुंगरपुर, भोपाल, पटियाला, कच्छ, बढ़वाण, पालीताना, व नैपाल आदि नरेशोंको जवाहरात बेंचकर अच्छी सम्पत्ति प्राप्त की थी।

केवल भारतीय नरेशोंके साथ ही नहीं। वरन् कई यूरोपीय बड़े २ पुरुष, जैसे लार्ड रिपन, एशियाके जार्ज निकोलस, जर्मनीके प्रसिद्ध केसर विलियम, ड्यूक ऑफ कनॉट, आष्ट्रेलियाके एम्परर लार्ड लेंसडाऊन, लार्ड एल्गिन आदि पाश्चात्य राजवंशियोंके साथभी आपका सहयोग हुआ था, तथा इन लोगोंने प्रसन्न होकर समय समयपर आपको प्रशंसा पत्र भी दिये थे। उस समयके प्रिंस ऑफ वेल्स (भावीएडवर्ड) के पास भी आपने अपने जवाहिरात भेजे थे एवं आप स्वयंभी भारतमें इनसे मिले थे।

बाबू साहबने साधारण परिस्थितिसे अपने व्यापारको स्थापितकर बहुत अधिक सम्पत्ति, मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। आप जैन एसोसिएशन ऑफ इण्डियाके प्रधान थे। गवर्नमेंटने बाबू साहबको जे० पी० पदवीसे सम्मानित किया था। जिस समय लार्ड एडिनबरा कलकत्ता आये थे तब बाबूसाहबको बम्बईके प्रतिनिधिकी हैसियतसे उपस्थित रहनेके लिये आमंत्रित किया था।

बाबूसहबकी धार्मिक कार्योंकी ओर भी अच्छी रुचि थी। अपनी मौजूदगीमें आपने करीब दो लाख रुपयोंकी सम्पत्ति दान की थी, एवं आठ लाख रुपये आपके देहावसानके समय विलमें फरमा गये थे। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्ण जीवन व्यतीत करते आपका देहावसान संवत १९५५ की कार्तिक बदी ८ के रोज़ ७० वर्षकी उम्रमें बम्बईमें हुआ था।

बाबू पन्नालालजीके ५ पुत्र हैं जिनके नाम बाबू चुन्नीलालजी, बाबू अमीचंदजी, बाबू जीवन-लालजी, बाबू भगवानदासजी व बाबू मोहनलालजी हैं। इनमें बाबू चुन्नीलालजी तथा बाबू अमी-चंदजीका देहावसान हो गया है।

इस समय इस फर्मके मालिक बाबू जीवनलालजी जे० पी०; बाबू भगवानदासजी एवं बाबू मोहनलालजी हैं।

बाबू जीवनलालजी भी जवाहरातके व्यापारमें दक्षता रखते हैं। बाबू पन्नालालजी द्वारा की गई चेरिटीके आप प्रधान ट्रस्टी हैं। तथा आप तीनों भाइयोंने उस चेरिटीमें १ लाख रुपयोंकी सम्पत्ति और प्रदान की थी।

बाबू जीवनलालजी जैन एसोसिएशन ऑफ इण्डियाके प्रेसिडेंट रह चुके हैं। आपने मुनि महाराज श्रीमोहनलालजी द्वारा स्थापित की हुई जैन सेंट्रल लायब्रेरी लालबागमें भी अच्छी सहा-यता दी है। इसके अतिरिक्त पालीताना, बालाश्रम आदिमें भी आप प्रेसिडेण्टके रूपमें काम करते हैं।

इस फर्मकी ओरसे आप तीनों भाइयोंने मालवीयजीको बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयमें ८००००)अस्सी हजार रुपये आपकी मातुश्री श्रीपार्वती बाईके नामसे दिये हैं। इसके अतिरिक्त गुजरात जल-प्रलयके समय भी आपने उसमें अच्छी सहायता प्रदान की थी। हकीम अजमलखांके तीब्बिया कॉलेज देहलीमें, और तिलक स्वराज फंड आदिमें भी आपने सहायता दी है।

इसी प्रकार बाबू जीवनलालजीके भाई बाबू मोहनलालजी भी हरेक धार्मिक, सार्वजनिक एवं ज्ञाति सम्बन्धी कामोंमें भाग लिया करते हैं। बाबू विजयकुमार भगवानलाल भी फर्मके व्यव-सायमें भाग लेते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बम्बई—मेसर्स पूर्णचन्द्र बाबू पन्नालाल जौहरी निजाम बिल्डिंग कालबादेवी रोड T. A, Jewel store यहां हीरा पन्ना मोती आदि नवरत्नोंका व्यापार होता है। जवाहरातका आपके यहां

सेठ नाथालाल भाई (नाथालाल गिरधरलाल) बम्बई

सेठ माणिकलाल नरोत्तमदास जौहरी, बम्बई

सेठ गिरधरलालजी (नाथालाल गिरधरलाल), बम्बई

स्व० सेठ खचन्द उत्तमचन्द जौहरी, बम्बई

अच्छा संग्रह है। इसके अतिरिक्त इस फर्मपर बैङ्किग, सोना, चांदी तथा शेअर्सका बिजिनेस भी होता है।

मेसर्स परमानंद कुंवरजी जौहरी

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीपरमानंद भाई बी० ए० एल० एल० बी० हैं। आप जैन बीसा श्रीमाली जातिके सज्जन हैं। आपका खास निवास स्थान भावनगर (काठियावाड़) है। इस फर्मका स्थापन परमानंद भाईने करीब ५ वर्ष पूर्व किया था। सेठ परमानंद भाई डायमंड मरचेंट्स एसोशिएशनकी मैनेजिंग कमेटीके सभ्य हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स परमानंद कुँवरजी जौहरी, जौहरी बाजार, T, A, Kalpataru—इस फर्मपर हीरा, पन्ना तथा प्रेशस स्टोनका व्यापार होता है। खासकर आप हीरेका व्यापार करते हैं। आपकी फर्मपर हीरेका विलायतसे इम्पोर्ट होता है।

(२) भावनगर—आनंदजी पुरुषोत्तम—यहां कपड़ेकी थोक विक्रीका व्यापार होता है।

(३) बनारस—मेसर्स चुन्नीलाल कुँवरजी चौक T, A, Kalabattu—यहाँ पक्के कलावत्तूका व्यापार होता है।

(४) बम्बई—मेसर्स चुन्नीलाल कुँवरजी, गुलालवाड़ी—यहां कलावत्तूका व्यापार होता है।

मेसर्स भोगीलाल लहरचंद

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ लहरचंद उभयचन्द व भोगीलाल लहरचंद हैं। सेठ लहरचंद भाई करीब ५०वर्षोंसे हीरेका व्यवसाय करते हैं। आप जैन बीसा श्रीमाल सज्जन हैं आपका मूल निवासस्थान पाटन (गुजरात) है। इस फर्मकी तरक्की सेठ लहरचंद भाईके हाथोंसे हुई।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मेसर्स भोगीलाल लहरचंद चौकसी बाजार बम्बई। T. A. Shashikant.—इस फर्मपर हीरा, पन्ना, मोती आदि नवरत्नोंका व्यापार होता है तथा विलायतसे डायरेक्ट जवाहिरातका इम्पोर्ट होता है।

(२) बाटली वाई कम्पनी फ़ोर्ट—इस फर्मपर मिल, जीन, एवं एग्रीकलचर (खेतीवारी) सम्बंधी मशीनरीका बहुत बड़ा व्यापार व्यापार होता है।

मेसर्स मानिकलाल नरोत्तमदास जवेरी

इस फर्मके मालिकोंका निवास स्थान बड़ोदा (गुजरात) है। इस फर्मको यहाँ करीब २० बर्ष पूर्व सेठ मानिकलालजीने स्थापित किया था। इसके पूर्व बड़ोदेमें आपकी फर्म बहुत समयसे व्यापार कर रही है। आप दस्सा श्रीमाली वैश्य सज्जन हैं।

इस समय इस फर्मका संचालन सेठ मानिकलाल भाई एवं आपके छोटे भाई सेठ छगनलाल भाई करते हैं। सेठ मानिकलालभाई छोटा उदयपुर, धरमपुर तथा बांसदाके महाराजाओंके खास जौहरी हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई-मेसर्स मानिकलाल नरोत्तमदास जवेरी धनजीस्ट्रीट—इस फर्मपर हीरा, मोती तथा सब प्रकारके जवाहरातके तयार दागीनोंका व्यापार होता है। यह फर्म अपना माल विलायत भेजती है तथा वहांसे मंगाती भी है।

(२) बड़ौदा-मेसर्स मानिकलाल नरोत्तमदास जवेरी पानी दरवाजा रोड—यहां भी हीरा मोती, तथा सब प्रकारके तयार जवाहरातके दागीनोंका व्यापार होता है।

मेसर्स मोतीलाल डाह्याभाई एण्ड सन्स

इस फर्मके मालिक बहुत समयसे बम्बईहीमें निवास करते हैं। आप गुजराती वैश्य सज्जन हैं। इस फर्मको करीब ३५ वर्ष पूर्व सेठ मोतीलालभाईने स्थापित किया था तथा इसकी विशेष तरक्की भी आपहीके हाथोंसे हुई है। आपने बम्बईमें सबसे पहिले कच्छ-वर्क (चांदीपर नकाशीका काम) जारी किया। इस प्रकारका आपका बहुतसा माल अमेरिकाके एक्जीवीशनमें भी खपा है तथा वहाँसे आपके कामको सफाई व चतुराईके विषयमें प्रमाण पत्र भी प्राप्त हुआ है।

इस फर्मको गवालियर महाराज स्वर्गीय माधवरावजी सिंधियाने अपाइंटमेन्ट किया है। सेठ मोतीलालभाई गवालियर, इन्दौर, रतलाम तथा जावराके खास जौहरी थे। आप डायमंड मरचेंट्स एसोसिएशनके आजीवन सभापति रहे। बम्बईके जौहरी समाजमें आप बहुत प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आपका देहावसान संवत् १९८४ में हुआ। इस फर्मकी ओरसे सूरत कालेजमें एक लायब्रेरी बनी हुई है।

वर्तमानमें इस फर्मका संचालन सेठ मोतीलालभाईके पुत्र सेठ भगवानदासजी करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स मोतीलाल डाह्याभाई एण्ड सन्स कालबादेवी रोड-रामवाड़ीका नाका—यहां हीरा पन्ना मोती तथा सब प्रकारके जवाहरातके दागीने व सोने चांदीके आर्टिकल्सका व्यापार होता है। इस फर्मका व्यापार सीधा यूरोपके साथ भी बहुत चलता है।
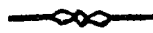
मेसर्स खचन्द उज्जमचन्द जवेरी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान पालनपुर (गुजरात) है। आप बीसा ओसवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको सेठ खचन्दजीने करीब ५० वर्ष पूर्व स्थापित की थी। आप पालनपुर नवाबके खास जौहरी हैं। ओसवाल समाजमें आप अच्छे प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति हो गये हैं। आपका देहावसान चैत्रवदी ९ (गुजराती) सं १९८४ ता० १४-४ २८ को हुआ।

सेठ खचन्दजीके बड़े पुत्र सेठ हीरालालजीका देहावसान हो गया है। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन सेठ सारालाल खचन्द एवं सेठ चिमनलाल हीरालाल करते हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स खचन्द उज्जमचन्द धनजी स्ट्रीट T. A. Eelephant इसफर्मपर हीरा पन्ना माणिक, मोती तथा सब प्रकारके रत्नोंका व्यापार होता है। आपका खास व्यापार हीरा तथा पन्नाका है। आपके यहां विलायतसे हीरेका इम्पोर्ट भी होता है।

(२) रंगून—मेसर्स नाथालाल डाह्याभाई, T. A. Honest यहांपर हीरेका व्यापार होता है।

(३) बम्बई—मेसर्स चिमनलाल डायाभाई एण्ड कम्पनी मम्बादेवीके पास—यहां मोतीका व्यापार होता है।

मेसर्स सूरजमल लल्लूभाई जौहरी

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास स्थान पालनपुर है। यह स्थान भारतवर्षमें हीरेके व्यापारियोंके लिये अभिमानकी वस्तु है। इस फर्मके मालिक ओसवाल समाजके सज्जन हैं।

इस फर्मका स्थापन सन् १८९५ में हुआ। प्रारंभमें यह फर्म बहुत छोटे रूपमें काम करती थी। इस समय यह फर्म प्रतिष्ठित हीरेका व्यवसाय करनेवाली मानी जाती है। इस फर्मने भारत तथा वर्मामें बहुत तरक्की की है। इसफर्मका व्यापार बड़ी तादादमें रंगून, मद्रास, त्रिचनापल्ली, कलकत्ता, बम्बई और काश्मीरमें होता है।

इस समय इस फर्मके कार्यका बहुत बड़ा स्टॉफ़ है। इस फर्मके चार हिस्सेदार हैं जो एक ही कुटम्बके हैं, जिनके नाम ये हैं। (१) सूरजमल लल्लूभाई (आप सबसे पुराने हिस्सेदार हैं,) (२)

हीरालाल हेमराज (३) जेसिंगलाल केशवलाल और (४) कीर्तिलाल मनीलाल । श्रीसूरजमल लल्लूभाई व्यवसायदक्ष व्यक्ति हैं।

आपका बम्बईका निवास स्थान डायमण्ड हाउस बरच्छा गंद्रीरोड है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बम्बई--मेसर्स सूरजमल लल्लूभाई जौहरी कालबादेवीरोड—इस फर्मपर हीरा तथा सब प्रकारके आर्टिकल्सका व्यवसाय होता है।

मेसर्स हेमचन्द मोहनलाल जौहरी

इस फर्मके मालिक पाटन (गुजरात) के निवासी जैन धर्मावलम्बीय सज्जन हैं। आपकी फर्म २५ वर्षोंसे बम्बईमें हीरेका व्यवसाय कर रही है, वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ हेमचन्द्र भाई, सेठ भोगीलाल भाई, सेठ मणिलाल भाई एवं सेठ चन्दुलाल भाई हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स हेमचंद मोहनलाल जौहरी, धनजीस्ट्रीट। यहां हीरे और पन्नेका थाक व्यापार होता है। यह फर्म विलायतसे डायरेक्ट माल मंगाती है। यहां सिर्फ व्यापारियोंके साथही व्यवसाय होता है।

(२) एण्टवर्प (वेलजियम)—मेसर्स हेमचन्द्र मोहनलाल-इस-फर्मके द्वारा भारतके लिये हीरा खरीदकर भेजा जाता है।

मोतीके व्यापारी—

कल्यानचन्द घेलाभाई

इस फर्मके मालिक सूरत निवासी ओसवाल श्वेताम्बर जैन हैं। इस फर्मको यहां करीब ४० वर्ष पूर्व सेठ कस्तूरचन्दजीने स्थापित किया था। इसफर्मके वर्तमान मालिक सेठ प्रेमचन्दजीव केसरीचन्दजी हैं।

आपने बम्बईमें महावीर स्वामीकी प्रतिष्ठामें करीब १० हजार रुपया खर्च किया तथा पालीतानाके ब्रह्मचर्याश्रममें भी आपने १०हजार रुपया दिया। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई मेसर्स कल्यानचन्द घेलाभाई जौहरी बाजार—यहां मोतीका व्यापार होता है। इस फर्मके द्वारा पेरिस मोती भेजे जाते हैं।

सेठ कीर्तिलाल मनीलाल (सूरजमल लल्लूभाई) बम्बई

सेठ हेमचन्द मोहनलाल जौहरी बम्बई

सेठ मोहनलाल हेमचन्द (चिमनलाल मोहनलाल) बम्बई

सेठ चिमनलाल भाई (चिमनलाल मोहनलाल) बंबई

मेसर्स चिमनलाल मोहनलाल जवेरी

इस फर्मको २५ पूर्व सेठ चिमनलाल भाईने स्थापित किया। आपका मूल निवास स्थान अहमदाबाद है। आप जैन सज्जन हैं।

सेठ मोहनलाल हेमचंद भाईकी उम्र इस समय ६० वर्ष की है। सेठ मोहनलालजीके ७ पुत्र हैं जिनमें सेठ मणीभाई और सेठ चिमनभाई व्यापारमें भाग लेते हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ चिमनलालभाई सेठ भाईचंदभाई, तथा सेठ नवलचंद भाई हैं। सेठ नवलचंदभाई तथा सेठ भाईचंद भाईका मूल निवास सूरत है। आप इस फर्ममें पाटनर हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स चिमनलाल मोहनलाल जवेरी शेखमेमनष्ट्रीट-जवेरी बाजार T. A. Droph
यहां खास व्यापार मोतीका होता है। इसके अतिरिक्त हीरा, पन्ना का व्यापार भी होता है।

आपका व्यापारिक सम्बन्ध पेरिससे भी है। पर्लके प्रसिद्ध व्यापारी मेसर्स रोजन थालके साथ यह फर्म मोतीका व्यापार करती है।

मेसर्स नगीनचंद कपूरचंद जवेरी

इस फर्मके मालिक सूरत निवासी वीसा ओसवाल जातिके श्वेताम्बर जैन सज्जन हैं। इस फर्मको सेठ नगीनचंद कपूरचंदने करीब ६२ वर्ष पूर्व स्थापित किया था। आपने सूरतमें एक जीवदया संस्था स्थापित की थी। उसमें इस समय करीब १॥ लाख रुपया जमा है। इसके व्याजसे जीव रक्षाका कार्य होता है। इसके अतिरिक्त आपने श्रीशांतिनाथजीके मन्दिरमें २५०००) का एक मुकुट अर्पण किया है। इस समय आपका बहुत बड़ा कुटुम्ब है। आपके ९ पुत्र हैं, सबसे बड़े श्रीफकीरचचंद नगीनचन्द हैं। आप जीवदयाका कार्य संचालन करते हैं। आपके भाई सेठ गुलाबचन्द नगीनचन्द जौहरी महाजन धर्मकांटेके प्रमुख हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१)—मेसर्स नगीनचन्द कपूरचंद जौहरी, मम्बादेवीके सामने जौहरी बाजार—T. A monner
यहां खास व्यापार मोतीका होता है। इसके अतिरिक्त सब तरहके जवाहरातोंका काम भी होता है।

(२) सूरत—नगीनचंद कपूरचंद, गोपीपुरा सूरत—T. A. Naginchand यहां मोती तथा जवाहिरातका व्यापार होता है।

मेसर्स नेमचंद खीमचंद एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान सूरत है। आप बीसा ओसवाल श्वेताम्बरी सज्जन हैं। सेठ अभयचन्दजीके पिताजीके हाथोंसे इस फर्मका स्थापन हुआ था। सेठ अभयचन्दजीका देहावसान संवत् १९७१ में हुआ। इस समय इस फर्मका संचालन सेठ नेमचन्द अभयचन्द करते हैं। अभी १ मास पूर्व आपको गव्हर्नमेंटने जस्टिस ऑफ दी पीसकी पदवी दी है। आप मोतीके धरम-कांटेके ट्रष्टी हैं। इसके अतिरिक्त आप गुलाबचंद रायचंदके केलवणी (शिक्षा) फण्डके ट्रस्टी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स नेमचन्द अभयचन्द जौहरी बुलियन एक्सचेंजके सामने मोती बाजार, यहां खास मोतीका व्यापार होता है तथा हीरेका भी काम होता है। यह फर्म विलायत भी माल भेजती है।

मेसर्स माणकचंद पानाचंद जौहरी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास सूरत है। आप वैश्य बीसा हूमड जातिके सज्जन हैं। इस वंशमें प्रतिष्ठित व्यक्ति दानवीर जैन कुल भूषण सेठ माणिकचंदजी जैन जे० पी० हुए हैं। आपके पितामहका नाम सेठ गुमानजी व आपके पिताजीका नाम सेठ हीराचंदजी था। आपका जन्म मिती कार्तिक बदी १३ संवत् १९०८ में सूरतमें हुआ था। आप ४ भाई थे। सेठ मोतीचन्दजी, सेठ पानाचन्दजी, सेठ माणकचन्दजी, व सेठ नवलचंदजी।

सेठ माणिकचन्दजी प्रारंभमें बहुत साधारण स्थितिके व्यक्ति थे। प्रारम्भमें आपने केवल १५) मासिकपर सर्विस की थी। संवत् १९२० में आप अपने भाइयोंके साथ बम्बई आये, एवं १७ वर्षकी आयुसे भाइयोंके साथ मोतीका व्यापार आरंभ किया। संवत् १९२५ में आपने माणकचंद पानाचंदके नामकी फर्म स्थापित की। संवत् १९३४ से आपने यूरोपीय देशोंसे मोतीका व्यापार आरंभ किया तथा उससे लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति उपार्जित की एवं बम्बईमें बहुतसी स्थाई मिल्कियत स्थापित की।

व्यापारिक जीवनके साथ २ बाल्यकालहीसे आपकी धर्मकी ओर अधिक रुचि थी। ८ वर्षकी अवस्थासेही आप अपने पिताश्रीके साथ श्री जिनेश्वरजीकी पूजामें शरीक हुआ करते थे। आप अपने समयके एक प्रख्यात धर्मात्मा पुरुष हो गये हैं। आपने कई तीर्थोंकी व्यवस्थामें बहुत सुधार किया। बम्बईमें आपकी ओरसे हीराबाग धर्मशाला नामक एक बहुत प्रसिद्ध धर्मशाला बनी हुई है। सैकड़ों यात्री रोज इस धर्मशालामें विश्राम पाते हैं इसका प्रबंध बहुत अच्छा है। बम्बईमें

सेठ नगीनभाई मंछुभाई जौहरी, बम्बई

स्व० सेठ माणकचन्द पानाचन्द, बम्बई

सेठ नगीनचन्द कपूरचन्द जौहरी, बम्बई

स्व० बाड़ीलालजी (हीरालाल बाड़ीलाल) बम्बई

आपकी ओरसे हीराचंद गुमानजी बोर्डिंग हाउस चल रहा है उसमें करीब ८० हजार रुपये आपने दिये हैं। आपने ४०हजार रुपयोंकी लागतसे अहमदाबादमें सेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगम्बर जैन बोर्डिंग हाउस स्थापित किया तथा कोल्हापुरमें २२ हजार रुपयोंकी लागतसे दिगम्बर जैन बोर्डिंग हाउसका मकान बनवाया, सूरतमें दस हजार रुपयोंकी लागतसे एक चन्दाबाड़ी धर्मशाला बनवाई, सम्मेदशिखर-रक्षा फण्डमें आपने करीब १० हजार रुपये दिये व आपने अपनी जिन्दगीके बीमेके दस हजार रुपये कोल्हापुर दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाके नाम तबदील कर दिये। इस प्रकार आपने अपने जीवनमें करीब ५ लाख रुपयोंका दान किया है।

आपने चौपाटीपर रत्नाकर राज भवन नामक इमारत बनवाई तथा उसमें श्रीचन्दाप्रभु स्वामी-का सुन्दर चैत्यालय बनवाया।

बम्बई दिगम्बर जैन प्रांतिक सभाके स्थापन कर्ता आपही थे तथा सर्व प्रथम उसके सभापतिका आसन आपहीने सुशोभित किया था। भा० दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटीके आप महामंत्री थे। सम्मेद शिखरजीपर भा० दि० जैन महासभाके आप स्थायी सभापति नियत किये गये थे। सहारनपुरकी भा० दि० जैन महासभाके सभापति भी आप रह चुके हैं। आपहीने लाहौरमें दिगम्बर जैन बोर्डिंग हाउसको स्थापित किया था।

आपकी सेवाओं और गुणोंसे प्रसन्न होकर बम्बई सरकारने आपको सन् १९०६ में जे० पी० (जस्टिस आफ दी पीस) की पदवीसे सुशोभित किया था। इसके अतिरिक्त दक्षिण महाराष्ट्रीय जैन सभाने दानवीर, एवं भा० दि० जैन महासभाने आपको जैन कुल भूषण, आदि पदवियोंसे सम्मा-नित किया था।आपने आपने जीवनमें ही आपनी प्रापर्टीका ट्रस्ट किया है जिसका नाम जुबिली बाग ट्रस्ट फण्ड है, इस ट्रस्ट की सब सम्पति धर्मादामें दीगई जिसकी मासिक आय करीब २ हजारके है। इसकी सुव्यवस्थाका सब भार ट्रस्टके अधीन है।

इस समय इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ मोतीचंदजीके पौत्र श्रीरतनचंदजी, सेठ पाना-चंदजीकेपुत्र श्री ठाकुरदासजी। सेठ माणिकचंदजीके पुत्र श्री चिमनलालजी एवं सेठ नवलचंदजीके पुत्र श्रीताराचंदजी हैं। इस समय सारे कुटुम्बमें श्रीताराचंदजी ही प्रधान रूपसे कार्य करते हैं। आप शिक्षित एवं सादगी प्रिय सज्जन हैं। आपकी विधवा बहिन सेठ माणिकचंदजीकी पुत्री मगन बेनके नामसे एक विधवाश्रम चल रहा है। इसके अतिरिक्त आपने १५ हजार रुपयोंकी लागतसे एक दिगम्बर जैन डायरेक्टरी तयार करवाई है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मेसर्स माणकचंद पानाचंद जवेरी मोती बाजार-बम्बई आरबीट—इस फर्मपर खास व्यापार मोतीका है तथा दूसरे प्रकारके जवाहरातका व्यापार भी होता है। विलायतको आपके द्वारा मोतीका एक्सपोर्ट होता है।

मेसर्स साराभाई भोगीलाल जौहरी

इस फर्मके मालिक अहमदाबादके निवासी हैं। इस फर्मको २० वर्ष पूर्व सेठ भोगीलाल भाईने स्थापित किया था। आप ओसवाल जातिके हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) अहमदाबाद—(हेडऑफिस) मेसर्स दौलतचंद जवेरचंद, डोसीवालानी पोल—यहां जवाहरातका व्यापार होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स साराभाई भोगीलाल जौहरी शेखमेमन स्ट्रीट—यहां खास व्यापार मोतीका है एवं इसके अतिरिक्त हीरे तथा जवाहरातका काम भी होता है।

(३) बम्बई—चिमनलाल साराभाई जौहरी हार्नबीरोड नवाब बिल्डिंग—यहां हाजर रुईका व्यापार होता है।

(४) बम्बई—चिमनलाल साराभाई मारवाड़ी बाजार, यहां रुईके वायदेका काम होता है।

(५) अहमदाबाद—चिमनलाल साराभाई डोसीवालानी पोल यहां रूईका व्यवसाय होता है।

मेसर्स हीरालाल वाड़ीलाल

इस फर्मके मालिक पाटन (पालनपुर) के निवासी बीसा ओसवालजैन (साधु मार्गीय) हैं बम्बईमें इस फर्मको सेठ बाड़ीलाल भाईने ४०।४५ वर्ष पूर्व स्थापित किया था। आपका देहावसान संवत् १९७३में हुआ। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ बाड़ीलाल भाईके भतीजे सेठ हीरालालजी हैं। सेठ बाड़ीलाल भाईने पालनपुरमें जीवनलाल त्रिभुवनदासके नामपर २८ हजार की लागतसे एक बाड़ी बनवाई है। सेठ हीरालालजीके पिता सेठ छोटालालजीने ५ हजारकी लागतसे पालनपुरमें एक लायब्रेरी बनवाई है, तथा फीमेल हास्पिटलमें सेठ सरूपचंद त्रिभुवन दासके नामसे १४ हजारकी सहायता दी है। आपका व्यापारिक :परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स हीरालाल वाड़ीलाल जौहरी शेखमेमन स्ट्रीट—यहां खासतौरसे मोतीका व्यापार होता है।

गोल्डस्मिथ

मेसर्स नरोत्तम भाउ जौहरी

इस फर्मकी स्थापना करीब ८० वर्ष पहिले सेठ नरोत्तम भाऊनेकी थी। आप सोनी जातिके भावनगर निवासी सज्जन हैं।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ जमनादास नरोत्तमदास हैं। आपकी फर्मको महाराज भावनगरने अपाइंटमेंट किया है।
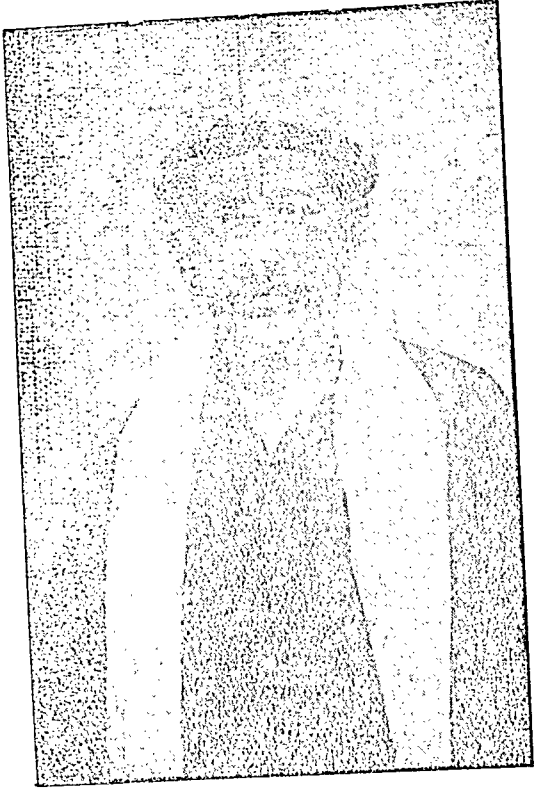
सेठ [illegible] टीकमदास (आसनमल लालचन्द) बम्बई

सेठ गिरधारीदास जेठानन्द बम्बई

सेठ नारायणदास रघुवंशी (गिरधारीदास जेठानन्द) बम्बई

सेठ नरोत्तम भाऊ जवेरी

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मेसर्स नरोत्तम भाऊ जवेरी शेखमेमनस्ट्रीट बम्बई—इस फर्मपर सब प्रकारका चांदी व सोना का खरा दागीना, चांदीके वर्तन, मानपत्र, मेडिल्स, हीरा,मोती माणिक आदि जवाहरातके दागीने हर समय अच्छी तादादमें तैयार रहते हैं, तथा बाहरके आर्डर सप्लाई करनेमें बहुत सावधानी रक्खी जाती है।

(२) मेसर्स नरोत्तम भाऊ जवेरी सुनारचाल—यहां सब प्रकारका चांदीका दागीना मिलता है।

मोतीके मुलतानी व्यापारी

मेसर्स आसनमल लालचंद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान नगरठट्ट (सिंध) है। यह फर्म पहिले जागूमल आसनमल नामसे करीब ४० वर्षों से व्यापार करती थी,वर्तमानमें ३।४ वर्षों से इस फर्मपर इस नामसे व्यापार होता है।

इस फर्मको सेठ जागूमलजी व आपके भानजे आसनमलजीने तरक्की दी। सेठ जागूमल जीका देहावसान १९७०में हुआ।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ लालचंदजीके पुत्र सेठ आसनमलजी, जेठानंदजी तथा श्रीयुत सेठ जागूमलजीके पुत्र सेठ धमनमलजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई मेसर्स आसनमल लालचंद वारभाई मोहल्ला नं०३ T.A.Fertile इस फर्मपर मोतीका व्यापार होता है, तथा कमीशनका काम भी यह फर्म करती है।

(२) छारगा (परशियन गल्फ) मेसर्स आसनमल लालचंद—यहां अनाजका व्यापार तथा मोती का व्यापार होता है। यह फर्म यहां करीब १०० वर्षोंसे व्यापार कर रही है।

(३) दवई—(परशियन गल्फ) यहां कमीशनका व अनाजका काम होता है।

मेसर्स गिरिधारीदास जेठानंद रघुवंशी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान नगरठट्ट (सिंध) है आप रघुवंशी जातिके हैं। इस फर्मको सेठ गिरधारी दासजीने संवत १९८०में स्थापित किया, तथा वर्तमानमें इसके मालिक सेठ गिरिधारीदास जेठानंद तथा आपके छोटे भाई सेठ नारायणदास जेठानंद है।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

(१) नगरठट्ट—(सिंध) मेसर्स गिरिधारीदास जेठानंद T.A. Ragoowansi यहां इसफर्मका हेड आफिस है तथा इसफर्मके यहां राइस और फलावरमिल भी है।

(२ बम्बई—मेसर्स गिरिधारीदास जेठानंद बारभाई मोहल्ला पो०नं३ T.A. Atmarupi यहां बेङ्किंग, व मोतीका व्यापार होता है तथा चावल खांड काफी वगैरहका परशियनगल्फके लिये एक्सपोर्ट होता है।

(३) करांची—मेसर्स गिरधारीदास जेठानंद बम्बई बाजार T.A Atmarnpi यहां अनाज खांड और काफीका एक्सपोर्ट बिजिनेस होता है।

(४) दबई (परशियन गल्फ) मेसर्स नारायणदास जेठानंद T.A. Ragoowansi मोती और अनाजका व्यापार होता है।

मेसर्स दमनमल ईश्वरदास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान नगरठट्ट- (सिन्ध) है। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब ८ वर्ष हुए।

सेठ दमनमल जी के ५ पुत्र हैं जिनके नाम सेठ नरसिंहदासजी, सेठ खुशालदासजी, सेठ टीकमदासजी, सेठ लालचन्दजी व सेठ घनश्यामदासजी हैं। जिनमेंसे नरसिंहदासजी और खुशालदासजीका देहावसान हो गया है। तथा शेष तीनों वर्तमानमें इस फर्मका संचालन करते हैं। आप भाटिया (वैष्णव-पुष्टीमार्गीय) जातिके सज्जन हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स दमनमल ईश्वरदास पोमल बिल्डिंग जकरिया मस्जिद नं०३ (T.A Gulgulab) यहाँ बेङ्किंग कमीशन एजंसी, अनाज तथा मोतीका व्यापार होता है।

(२) दबई-(परशियनगल्फ) दमनमल ईश्वरदास T.A Linghi यहा बैङ्किंग तथा चावल काफ़ी आदिका व्यापार होता है। यहांसे मोती खरीदकर भारतके लिये इम्पोर्ट किये जाते हैं। यह फर्म यहां ३०।३५ वर्षोंसे व्यापार करती है। आपकी आढ़तसे व्यापारी खूब माल खरीदते हैं।

(३) बेरिन (परशियनगल्फ) दमनमल ईश्वरदास (T. A. Lotus) यहां भी उपरोक्त व्यापार होता है।

मेसर्स दामोदरदास केवलराम

इस समय इस फर्मके मालिक सेठ खूबचन्द दामोदरदास एवं आपके तीन भाई है। आपका निवास स्थान नगरठट्ठ (सिंध) है आप भाटिया (वैष्णव-पुष्टीमार्गीय) सज्जन हैं। इस फर्मको सेठ-दामोदरदास जी तथा उनके छोटे भाई केवलराम जी ने संवत् १९६०में स्थापित किया था। आप दोनोंका देहान्त हो गया है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई-मेसर्स दामोदरदास केवलराम ९१ लक्ष्मीबिल्डिंग नागदेवी क्रासलेन T. A. Karma यहां बैङ्किग कमीशन.एजंसी तथा मोतीका व्यापार होता है।

(२) करांची—मेसर्स खूबचन्द दामोदरदास बम्बई बाजार T. A vagh यहां एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट तथा कमीशनका काम होता है।

(३) बैरिन (परशियन गल्फ) नारायणदास मूलजीमल T. A. Narain यहां चावल काफ़ी आदि का काम होता है। यहांपर दामोदरदास परशुरामके नामसे मोतीका व्यापार होता है।

(४) दबई (परशियन गल्फ) लखमीदास सांवलदास, T. A. vagh यहां अनाज चावल और काफी का व्यापार होता है। तथा यहां दामोदरदास परशुरामके नामसे मोतीका व्यापार होता है।

(५) दबई—मोहनलाल मथुरादास यहां भी चावल काफी आदिका व्यापार होता है।

मेसर्स दामोदर हेमनदास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान नगर ठट्ट (सिन्ध) है आप भाटिया जातिके (वैष्णव-पुष्टी मार्गीय) सज्जन हैं। इस फर्मको बम्बईमें स्थापित हुए करीब ५०।६० वर्ष हुए, इसे सेठ दामोदरदासजी ने स्थापित किया तथा इसकी विशेष तरक्की भी आप ही के हाथोंसे हुई वर्तमानमें आपकी आयु करीब ७० वर्षकी है। इस खानदानकी ओरसे नगरठट्टमें एक मंदिर तथा मथुराजी में एक धर्मशाला बनी हुई है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स दामोदर हेमनदास नागदेवीष्ट्रीट नं० ३, यहां बैङ्किग, कमीशन एजंसी व मोतीका व्यापार होता है।

(२) बेरिन—(परशियन गल्फ) मेसर्स दामोदर हेमनदास, यहां चावल काफी शक्कर आदिका व्यापार होता है तथा चैत्रसे कार्त्तिक तक सीजनमें मोती खरीदकर भारतके लिये इम्पोर्ट किये जाते हैं।

मेसर्स मूलचन्द हेमराज

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान-ठट्टा (सिन्ध-कराची) है। आप लुहाना रघुवंशी-जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको करीब ५०वर्ष पहिले सेठ मूलचन्द हेमराजने स्थापित किया था। तथा इसकी विशेष तरक्की सेठ मूलचंदजी, एवं उनके छोटे भाई सतरामदासजीके हाथोंसे हुई। सेठ मूलचन्द

जी चार भाई थे मूलचंदजी २ प्रहलाददास जी ३ सतरामदासजी ४ ईश्वरदास जी । इनमेंसे सेठ मूलचंदजी, प्रहलाददास जी तथा ईश्वरदास जी इन तीनों भाइयोंके पुत्र इस फर्मके मालिक हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

(१) बम्बई नं० ३ मेसर्स मूलचंद हेमराज वारभाई मोहल्ला T.A. Histori इस फर्मपर चांवल काफीतथा शक्करका परशियाके लिये एक्सपोर्ट होता है तथा बैङ्किग व कमीशन एजंसीका वर्क और मोतीका व्यापार होता है ।

(२) बेहरिन (परशियन गल्फ) मेसर्स मूलचंद प्रहलाददास T.A. Totai यहां चावल काफी आदिका व्यापार कमीशन एजंसी तथा मोतीका भारतके लिये इम्पोर्ट होता है।

मोतीकी सीज़नके समय आपकी एक और ब्रेंच चैत्रसे कार्तिकतक यहां खुल जाया करती है इस फर्मपर समुद्रसे निकाले जानेवाले मोतीकी खरीदका व्यापार होता है ।

(३) गेस (परशियन गल्फ)—मेसर्स पुरुषोत्तमदास नारायणदास—यहां चांवल, काफी; खांड एवं मोतीका व्यापार होता है यह फर्म सीज़नके समय रहती है ।

(४) दबई-(परशियन गल्फ) पुरुषोत्तमदास नारायणदास इस नामसे यह फर्म सीज़नके समय मोतीकी खरीदीका काम करती है ।

सिन्ध प्रांतके दरा नामक स्थानमें आपकी द्वारकादास भगवानदास एण्ड कंपनीके नामसे राइस फ्लोअर और पेडी मिल है। आपकी ओरसे सेठ प्रहलाददास हेमराज इस नामसे नगर ठट्ठामें एक बगीचा और तालाव बना हुआ है । सेठ मूलचंद हेमराजके नामसे भी एक बगीचा और कुंआ बना हुआ है । सेठ पुरुषोत्तमदास प्रहलाददासके नामसे आपकी वहांपर खेती है ।

मेसर्स लखमीदास टेकचन्द

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान नगर ठठ्ठ (सिन्ध) है । इस फर्मको बम्बईमें स्थापित हुए करीब ६४ वर्ष हुए । सेठ लक्ष्मीदासजीने इसे यहां स्थापित किया था । आप सेठ टेकचंदजीके पुत्र थे । आपका देहावसान संवत् १९६७में हुआ ।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ लक्ष्मीदासजी के भानजे सेठ तोलाराम जी हैं। सेठ—तोलारामजी, बम्बई निवासी नगरठट्ठके भाटिया तथा लुहाना व्यापारियोंके मंडलके प्रेसिडेण्ट हैं।

सेठ लक्ष्मीदास जी ने नगरठट्ठमें एक श्री रामजीका मंदिर बनवाया है तथा एक मन्दिर और श्री वल्लभाचार्य मतावलम्बी गो-स्वामियोंके ठहरनेके लिए बनवाया है। वहांपर आपका सदाव्रत भी चालू है ओरसे सेठ तोलाराम जी ने सेठ लक्ष्मीदाम जी के पश्चात् उनके

स्व० सेठ लखमीदास टेकचन्द जौहरी बम्बई

सेठ दामोदर हेमनदास जौहरी बम्बई

सेठ तोलारामजी जौहरी (लखमीदास टेकचन्द) बम्बई

सेठ किशनदास नाथामल (लल्लूमल नाथामल) बम्बई

स्व० मूलचन्द हेमराज (मूलचन्द हेमराज) बम्बई

सेठ प्रहलाददास हेमराज (मूलचन्द हेमराज) बम्बई
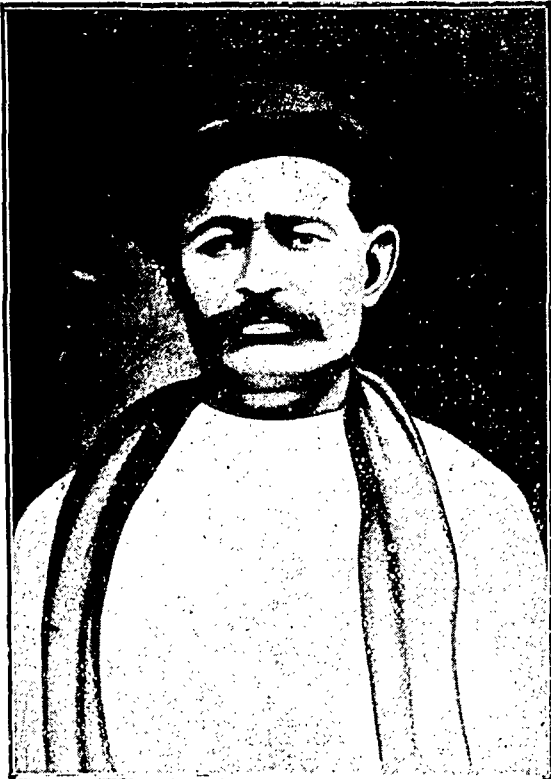
स्व० सेठ ईसरदास हेमराज (मूलचन्द हेमराज बम्बई)

सेठ पुरुषोत्तमदासजी (मूलचन्द हेमराज) बम्बई

नामपर एक अस्पताल स्थापित किया है जो अभीतक म्युनिसिपैलिटीकी स्वाधीनतामें भली प्रकार चल रहा है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई मेसर्स लखमीदास टेकचन्द जौहरी बारभाईमोहल्ला-इस फर्मपर मोतीका विजिनेस होता है तथा विलायत भी मोतीका एक्सपोर्ट यह फर्म करती हैं इसके अतिरिक्त कमीशनका काम भी आपके यहां होता है।

मेसर्स लल्लूमल नाथामल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान नगर ठट्ठ (सिंध) है। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ किशनदासजी हैं। आप भाटिया (वैष्णव-पुष्टिमार्गीय) सज्जन हैं। यह फर्म यहां संवत् १९८४ में स्थापित हुई।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई-मेसर्स लल्लूमल नाथामल मस्जिद बंदररोड (हेड ऑफिस) यहां कमीशन एजंसी तथा मोतीका व्यापार होता है।

(२) बैरिन (परशियन गल्फ) मेसर्स लल्लूमल नाथामल (T.a. krishna) यहां कमीशन एजन्सी अनाज व मोतीका व्यापार होता है।

(३) दुबई (परशियन गल्फ) मेसर्स लल्लूमल नाथामल (T.A. Kisani) —यहां भी कमीशन, अनाज व मोतीका व्यापार होता है।

नगीनचंद मंच्छूभाई *

इस फर्मके मालिक सूरतके निवासी बीसा ओसवाल जैन जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको करीब ५० वर्ष पूर्व सेठ मंच्छू भाईने स्थापित किया। आपके पश्चात् इस फर्मका संचालन सेठ नगीन भाईने ४० वर्षोंतक किया। आपका देहावसान संवत १९७७ में हो गया है।

सेठ नगीनचंद भाईने सूरतमें २५ हजारकी लागतसे एक साहित्य उद्धार फण्डकी स्थापना की है, जिसके द्वारा सस्ते मूल्यमें ग्रन्थ प्रकाशितकर ज्ञान प्रचार किया जाता है। तथा सूरतमें आपने २५ हजारकी लागतसे एक जैन श्वेताम्बर मंदिर बनवाया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ भाईचंद नगीन भाई तथा सेठ पानाचंद चुन्नीलाल हैं। सेठ नगीन भाईके पुत्रोंने उनके स्मरणार्थ ३० हजारकी लागतसे सूरत लाइंसमें एक सेनेटोरियम बनवाया है आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बम्बई—मेसर्स नगीनभाई मंच्छूभाई शेख मेमन स्ट्रीट—इस फर्मपर प्रधानतया मोतीका व्यापार होता है।

---

* इस फर्मका परिचय पृष्ट १८० में छपना चाहिये था। पर भूलसे रह जानेके कारण यहां दिया गया—प्रकाशक—

हीरा पन्ना मोती और जवाहरातके व्यापारी।

अलीभाई अब्बाभाई धनजी स्ट्रीटका नाका
अरदेसर होरमसजी माउंटवाला
कन्हैयालाल ईश्वरलाल एण्ड को० जौहरीबाजार
के० वाडिया एण्ड० को० ग्रांट रोड
कल्याणचंद सोभागचंद विट्ठलवाड़ीका नाका
खैरातीलाल सुन्दरलाल शेखमेमनस्ट्रीट (आपका परिचय जयपूरमें दिया गया गया है।)
गोदड़ भाई डोसूजी जौहरी बाजार (मोती)
गुलाबचंद देवचंद जौहरी बाजार
चिमनलाल छोटालाल जौहरी शेखमेमनस्ट्रीट
चुन्नीलाल उत्तमचंद शाह, जौहरी बाजार
जुगल किशोर नारायणदास कालवादेवी (पन्ना) (आपका परिचय उज्जैनमें दिया गया है)
जीवराज वेचर भाई कोठारी जौहरी बाजार
जीवाभाई मोहकम जौहरीबाजार
डायालाल छगनलाल जौहरी
धन्नामल चैलाराम फोर्ट मेडोज़स्ट्रीट
ताराचंद परशुराम फोर्ट (क्यूरियो मरचेन्ट)
नगीनचंद फूलचन्द जौहरी शेखमेमनस्ट्रीट
पोमल ब्रदर्स करनाकबंदर, अपोलोस्ट्रीट,
फरामरोज सोराबजीखान फोर्ट
विट्ठलदास चतुर्भुज एण्ड कं० जौहरी बाजार
बापूजी बालूजी सरकार जौहरी बाजार
फूलचन्द कानूरचन्द, लखमीदास मारकीटकेपास
मानचन्द चुन्नीभाई सराफ कालवादेवी
मणीलाल अमूलखभाई जौहरी बाजार
मणीलाल रिखबचन्द जौहरी बाजार
मंगलदास मोतीलाल मम्बादेवी
मणीलाल सूरजमल एण्ड को० धनजी स्ट्रीट
रामचन्द्र ब्रदर्स मेडो स्ट्रीट फोर्ट
रामचन्द मोतीचन्द जौहरी बाजार
रूपचन्द घेलाभाई पारसीगली
पी० डुवास एण्ड कं० मेडो स्ट्रीट फोर्ट
लल्लूभाई गुलाबचन्द जौहरी चौकसी बाजार
वाड़ीलाल हीरालाल एण्ड को० जौहरी बाजार
लखमीदासचुन्नीलाल मारवाड़ी बाजार
रेवाशंकर गजजीवन शेखमेमनस्ट्रीट
न्यू पर्ल ट्रेडिंग कम्पनी गनेशवाड़ी
लालभाई कल्याणभाई एण्ड कम्पनी

चांदी सोनेके व्यापारी

BULLION-MERCHANTS

सोने और चांदीका व्यवसाय

सोना खानमेंसे निकलनेवाली धातु है । दूसरी धातुओंकी तरह यह खानोंमेंसे थोकबन्द नहीं निकलता, प्रत्युत् बिखरा २ बहुत ही थोड़ी तादादमें निकलता है। कहीं २ नदियोंकी बालूमें से भी सोनेके परमाणु निकलते हुए देखे जाते हैं ।

दुनियांके अन्दर सबसे अधिक सोना दक्षिण अफ्रिकामें निकलता है । यहांका सोना होता भी बहुत बढ़िया हैं। उसके पश्चात् अमेरिकाके संयुक्त राज्य और अफ्रिकाका नम्बर हैं। भारतवर्ष में बहुत कम सोना निकलता है। दुनियाकी पैदावारकी अपेक्षा यहां ३ प्रतिशतसे भी कम सोना निकलता है। औसत दृष्टिसे यहां प्रति वर्षकी पैदावार छः लाख औंसके लगभग मानी जाती है । इस पैदावारका बहुत अधिक भाग अर्थात् करीब ६४ प्रतिशत तो अकेले मैसूर राज्यकी कोलर गोल्ड फील्ड नामक खदानसे निकलता है। इस खदानसे १९०५ में ६१६७५८ औंस सोना निकाला गया था। मगर उसके बादसे वहांकी तादाद कुछ कम हो गई है। सन् १९१६ में वहां कुल ५५४००० औंस सोना तैयार हुआ था। इन खानोंमें काम करनेके लिये मैसूर दरबारकी ओरसे कावेरी नदीके जलप्रपातसे बिजली तैयार की जाती है, और वहींसे खानोंमें बिजलीकी शक्ति भेजी जाती है। इस कारखानेका काम सन् १९०२ से प्रारम्भ हुआ है और तबसे इसकी बड़ी तरक्की हो गई है। इसकी वजहसे खानोंमें पड़नेवाला खर्च भी बहुत कम हो गया है।

मैसूरके पश्चात् भारतवर्षमें सोना निकालनेवाले प्रांतोंमें निजाम राज्यका नम्बर है। यहां लिंग सागर जिलेके हट्टी नामक स्थानमें सोनेकी खान है। सन् १९१६ में इस खानसे १७६०० औंस सोना निकला था।

खानोंको छोड़ नदियोंकी बालूको धोकर सोना निकालनेकी चाल भी भारतमें कई स्थानोंपर प्रचलित है। बिहारके सिंहभूम और मानभूमि जिलोंमें सुवर्णरेखा और उसकी सहायक नदियोंकी बालू धोनेसे सोना निकलता है। सन् १९१५ सिंहभूमसे करीब ४५० और १९१६ में ८६४ औंस सोना निकाला गया था। बर्माकी इरावत्ती नामक नदीकी बालूमें भी सोना पाया जाता है। सन् १९०२ में इस उद्योगके लिये वहाँ एक कम्पनी खड़ी की गई थी कुछ वर्षों तक इसकी खूब

उन्नति हुई। एक वर्षमें उसने करीब ८४४५ औंस सोना वहांसे निकाला। इस लाभको देखकर कुछ दिनोंतक रंगूनमें इस सोनेके व्यवसायके लिये लोग पागल हो उठे थे, मगर कुछ दिनों पश्चात् उन लोगोंका उत्साह ठण्ढा पड़ गया। १९१५ में सम्पूर्ण वर्मासे केवल ३२०० औंस सोना प्राप्त हुआ।

यद्यपि हिन्दुस्थानमें सोनेकी पैदाइश दुनियाकी औसतसे बहुत कम है, पर यहां उसकी खपत औसतसे बहुत ज्यादा है। इस खपतके कई कारण हैं। पहला कारण तो यह है कि यहां पर स्त्रियोंकी सजावटके लिये सोनेके जेवरोंको बनानेकी चाल बहुत अधिक है। दूसरा कारण यह है कि यहांके लोग अपनी सम्पत्तिके स्थायित्वके लिये उसका सोना खरीद कर रख देते हैं। बहुत सेउसे अपने हृदयकी तसल्लीके लिये जमीनमें गाड़ देते हैं। मि० अरनोल्ड नामक एक अंग्रेज विद्वानने एक पुस्तक लिखी है। उसका नाम "The unused Capital of the Empire है उसमें आपने हिसाब लगाकर लिखा है कि सन् १८६४ से १९१४ तक पचास वर्षोंमें कोई ९७०००००००० नौ सौ सत्तर करोड़ रुपयेका सोना चांदी बाहरसे इस देशमें (रफ्तनी की रकम मुजरा देकर) आया। इसमें से कुछ भागका तो टकसालमें रुपया ढाला गया। कुछ सोनेके जेवर बरतन इत्यादि बनानेमें खर्च हुआ। कुछ अंश व्यवहारमें आनेसे घिस गया, और करीब चालीस लाख पौंड अर्थात् छः करोड़ रुपयेका सोना चांदी ऐसा है जो या तो जमीनमें गाड़ा हुआ है या धनी श्रीमानोंके खजानेकी शोभा बढ़ा रहा है। यह द्रव्य किसी भी उत्पादक कार्य्यमें नहीं लगाया जाता। यदि यही द्रव्य किसी भी उत्पादक कार्य्यमें लगाया जाय, तो इससे कई गुणा धन देशमें उत्पन्न हो जाय।

इन्हीं कारणोंसे भारतवर्षमें सोनेकी खपत बहुत अधिक है। सन् १९२०-२१ में करीब तेईस करोड़ सतावन लाख रुपयेका सोना विदेशोंसे यहां इम्पोर्ट हुआ। यह सब सोना शुद्ध करनेवाली कम्पनीकी सिक्के मोहर लगकर छोटे २ पाटोंके रूपमें विलायतसे यहां आता है। यह सब माल विलायती और चीनी लगड़ी, टकसालका पाटला, गिनी, कुन्दन, चिनाई पन्ने वगैरह कई प्रकारका आता है। लगड़ीका माल नेशनल बैंक, चीनाई लगड़ी, नेटिव यूनियन इत्यादिकी छापका आता है। कई व्यापारी अपनी अपनी स्पेशल छापोंका माल भी रखते हैं, पर बैंकोंकी छापवाली लगड़ियोंके निश्चित टंच निकाले हुए रहते हैं। जिससे इनका माल कसमें चौकस रहता है। इसके अतिरिक्त जिन पाटलोंपर यहांकी टकसालकी निश्चित टंचकी छाप लगी रहती है उनका सोना भी उसी निश्चित टञ्चके अनुसार होता है। जिस पाटले पर कोई छाप नहीं रहती, उसका टञ्च भी निश्चित नहीं रहता। उपरोक्त लगड़ियोंमें नेशनल बैंक की लगड़ियें वज़नमें करीब २६॥-२६॥ तोलेकी या यों कहिए कि ८० तोलेकी तीन रहती हैं। इनका सोना ९९-९० टंचका रहता है पर यह सोना १०० टंचमें ही गिना जाता है। चार्टर बैंक और नेटिव यूनियनकी लगड़ीका सोना

सोना ९९·३१ से ९९.८० टञ्च तकका होता है। चिनाई लगड़ी पुरानी ९८·२० टंचकी और नई ९७.२० से ९७·९० टंच तक की आती है।

लगड़ीकी तरह पाटलेके सोनेका कोई निश्चित टंच नहीं रहता, व्यापारियोंकी आवश्यकताके अनुसार हलकेसे हलके टंचसे लेकर बढिया ९९·९८ टंच तकके पाटले यहांकी टकसाल ढाल देती हैं और जितने टंचका पाटला होता है उतने टञ्चकी उसपर मुहर लगा देती है इसी प्रकार उसका सार्टिफिकेट भी देती हैं। प्रत्येक खरीददारको सोना खरीदते समय इस मुहर और प्रमाणपत्रकी जांच अवश्य कर लेना चाहिये।

इसी प्रकार पहले सोनेके पाने, कुन्दन, गिनी वगैरह भी बाजारमें चलते थे, मगर आज-कल इनका चलन कम हो गया हैं, अतएव इनके सम्बन्धमें कुछ लिखना विशेष आवश्यक नहीं है।

सोनेकी लगड़ी और पाटोंकी तरह चांदीके भी पाट अमेरिका, चीन और यूरोपसे यहाँ आते हैं। सन् १९२२ में करीब सत्रह करोड़ अड़तालीस लाख रुपयेकी चांदी विदेशोंसे यहांपर आई थी। यह सब चांदी प्रायः पाटोंके ही रूपमें आती है। इनमेंसे प्रत्येक पाट साधारणातयः २८०० भर वज़नका होता हैं। ये पाट ९७॥ पेनी और ९७ पेनी ऐसे दो प्रकारके आते हैं ९७॥ पेनीका माल कसमें ९९९ टंचका रहता है, यह माल सबसे श्रेष्ठ माना जाता है। ९७ पेनीका माल उससे हलके दर्जेका समझा जाता है।

बम्बईमें सोने चाँदीका व्यापार खास कर बुलियन एक्सचेञ्ज बिल्डिंग, मम्बादेवी और खाराकुंआके आसपास होता है। यह व्यापार हाजिर और वायदा दोनों प्रकारसे है। हाजिर व्यापारमें भारतवर्षके दूसरे प्रांतोंको आर्डर सप्लाय किया जाता हैं, तथा शहरकी आवश्यकताओंको पूरी की जाती हैं। यह हाजिर व्यापार प्रति वर्ष लाखों करोड़ों रुपयोंका होता है। वायदेके व्यापारमें तेजीमंदीके अनुसार निश्चित मिती पर भुगतान करना पडती हैं। तेजी मंदी की यह रुख अमेरिकाके बाजारों की तेजी मंदी पर निर्भर रहती है।

सोने और चाँदीके व्यापार, और व्यापारियोंकी सुविधाके लिए और उनके झगड़े निपटानेके लिये यहां पर बम्बई बुलियन एक्सचेञ्ज लि० नामक संस्था स्थापित है। इस संस्थाने इस व्यापार के सम्बन्धमें कई नियम निश्चित कर रक्खें हैं। अतएव इस व्यापारसे सम्बन्ध रखनेवाले व्यापारियोंको अपनी सुविधाके लिये इन नियमोंसे अवश्य वाकिफ़ होजाना चाहिये।

सोनेका तोल, तोला, माशा तथा वालसे होता है। बम्बईके बाजारमें एक तोलेके ४० वाल माने जाते हैं। दूसरे देशोंमें कहीं कहीं एक तोलेके ३२ वाल भी माने जाते हैं। चांदीका तौल औंस और तोलेसे होता है।

सोने चांदीके व्यापारी

मेसर्स चिमनराम मोतीलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान मलसीसर (जयपुर) में है। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको बम्बईमें स्थापित हुए करीब २५ वर्ष हुए। इसे सेठ मोतीलालजीने स्थापित किया, और आपहीके द्वारा इस फर्मको अच्छी तरक्की मिली। सेठ मोतीलालजी चांदी बाजारमें अच्छे प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यापारी माने जाते हैं। साधारण बोल-चालमें लोग आपको सिलवर किंगके नामसे व्यवहृत करते हैं। आप बुलियन एक्सचेंजके डायरेक्टर हैं। आपकी अवस्था इस समय ६३ वर्षकी है। आप जयपुरमें अग्रवाल सम्मेलनके सभापति रहे हैं। चांदी बाजारमें आपकी धाक मानी जाती है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

१ बम्बई—मेसर्स चिमनराम मोतीलाल बुलियन एक्सचेञ्ज बिल्डिंग शेख मेमन स्ट्रीट, यहाँ सोने चांदीका इम्पोर्ट बिजिनेस और वायदेका बहुत बड़ा काम होता है।

२ कलकत्ता—मेसर्स चिमनराम मोतीलाल १३२ तुलापट्टी, यहां चांदी सोनेके हाजर तथा वायदेका बिजिनेस होता है।

३ कानपुर—कमलापत मोतीलाल, यहां इस नामसे एक शक्करकी मिल है, उसमें आपका साझा है।

४ अहमदाबाद—मेसर्स चिमनराम मोतीलाल स्टेशनके पास; यहाँ कपड़ेकी आढ़तका व्यापार होता है।

मेसर्स चांडूमल बलीराम मुखी

इस फर्मके मालिकोंका निवास स्थान हैदराबाद (सिंध) है। आप सिंधी सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए यहां ८० वर्ष हुए। इसे मुखी चांडूमलजीने स्थापित किया था। आपके बाद सेठ प्रीतमदासजीने इस फर्मके कामको सम्हाला और वर्तमानमें मुखी प्रीतमदासजीके पुत्र मुखी जेठानंदजी और मुखी गोविंदरामजी इस फर्मके मालिक हैं।

सेठ मोतीलालजी (चिमनराम मोतीलाल) बम्बई

सेठ गोवर्द्धनदासजी (नारायणदास मनोहरदास) बम्बई

सेठ राधाकृष्णजी दम्मानी (बालकिशनदास रामकिशनदास),

सेठ देवकिशनदासजी दम्मानी (बा० राम०)

यह खानदान सिंध प्रांतमें बहुत मशहूर माना जाता है, तथा मुखीके नामसे विशेष प्रसिद्ध है। मुखी जेठानंदजी हैदराबादमें म्युनिसिपल कमिश्नर रह चुके हैं, आप बम्बई कौंसिलके भी ६ वर्षतक मेम्बर रहे हैं। बम्बईके सिंधी व्यापारियोंमें मुखी जेठानंदजीकी अच्छी प्रतिष्ठा है।

इस फर्मकी स्थायी सम्पत्ति बाग़ बगीचा वगैरः करांची, हैदराबाद, सक्खर, फिरोजपुर नबावशाह जिला आदि स्थानोंपर अच्छी तादादमें हैं। मुखी प्रीतमदासजीके नामसे प्रीतमाबाद नामका एक गांव नबावशाह जिलामें बसा है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) हैदराबाद(सिंध)—मेसर्स चांडूमल वलीराम (T,A Bulion)यहां इस फर्मका हेड ऑफिस है।

(२) बम्बई—मेसर्स चांडूमल वलीराम करनाक ब्रिज (T A Mukhi) यहाँ बुलियन, बैंकिंग और कमीशन एजंसीका काम होता है।

(३) करांची—मेसर्स चांडूमल बलीराम (Bullion) यहाँ हाजिर रुई, ग्रेन, चांदी, सोना तथा कमीशनका काम होता है।

(४) फीरोजपुर सिटी-मेसर्स चाँडूमल वलीराम (Mukhi) यहां बैंकिंग, चांदी, सोना तथा कपड़ा और शक्करके कमीशनका काम होता है।

(५) फाजिलका—(Mukhi) वैङ्किग, सोना, चांदी, कमीशन, और शक्करका काम होता है।

(६) अभोर—(Mukhi) बैङ्किग, सोना, चांदी, ग्रेन, कपड़ा शक्कर और कमीशनका काम होता है।

(७) भटिण्डा - मेसर्स चांडूमल वलीराम (Mukhi) बैङ्किग बुलियन मर्चेण्ट व कमीशनका काम होता है।

(८) जेतू—(पंजाब) (Mukhi) बैङ्किग, वुलियन, कमीशन व शक्करका काम होता है।

(९) वदलाटा—(पंजाब) मेसर्स चांडूमल वलीराम ” ”

१०) सटखन—(हैदराबाद) (mukhi) ” ”

मेसर्स नारायणदास मनोहरदास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान सूरत है। आप वाणिया सज्जन हैं। इस फर्मको करीव १२५ वर्ष पहिले सेठ नारायणदासजीने स्थापित किया था। तबसे यह फर्म बराबर तरक्की करती आ रही है। यह फर्म चांदी बाजारमें बहुत पुरानी मानी जाती है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ गोवर्द्धनदासजी हैं। आप सेठ नारायणदासजीकी सातवीं पीढ़ीमें हैं। आप केलवणीके काममें अच्छा भाग लिया करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स नारायणदास मनोहरदास बुलियन एक्चेंज बिल्डिंग शेखमेमन स्ट्रीट यहां चांदी सोनेका इम्पोर्ट बिजिनेस एवं वायदेका काम होता है।

२ बम्बई—मेसर्स नारायणदास मनोहरदास जौहरी बाजार, यहां चांदी सोनेका व्यापार होता है।

मेसर्स बालकिशनदास रामकिशनदास

इस फर्मके मालिक बीकानेरके निवासी माहेश्वरी समाजके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना १०० वर्ष पूर्व बीकानेरमें हुई। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ राधाकृष्णजी दम्माणी एवं सेठ देवकिशनदासजी दम्माणी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स बालकिशनदास रामकिशनदास कालबादेवी रोड, इस फर्मपर बेङ्किग हुंडी चिट्ठी और कमीशनका काम होता है।

२ बम्बई—मेसर्स रामकिशनदास दम्माणी बुलियन मार्केट—इस फर्मपर चांदीके इम्पोर्ट एवं वायदेका बहुत बड़ा व्यवसाय होता है।

—:—

मेसर्स भीखमचंद बालकिशनदास

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री मदनगोपालजी दम्मानी हैं। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान बीकानेर है।

यह फर्म यहांपर करीब १०० वर्षोंसे स्थापित है। पन्तु इस नामसे इस फर्मको व्यवसाय करते करीब ३०।३५ वर्ष हुए। इस फर्मकी स्थापना सेठ बालकिशनदासजीके समयमें हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९५४ में हुआ। आपके दो पुत्र हैं। श्री रामकिशनदासजी व श्री मदनगोपालजी। सम्वत् १९७६ में दोनों भाइयोंका कार्य अलग २ विभक्त हो जानेसे अब इस फर्मका सञ्चालन श्री मदनगोपालजी करते हैं। आप विशेषकर बीकानेरहीमें रहते हैं। आपके दो पुत्र हैं जिनके नाम चिमनलालजी तथा हरगोपालजी हैं।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ हेड ऑफिस—बीकानेर—श्रीकिशनदास बालकिशनदास दम्माणी (Dammani) यहां बेङ्किग वर्क होता है, तथा मालिकोंका निवास स्थान है।

२ बम्बई—मेसर्स भीखमचंद बालकिशनदास बिट्ठलवाड़ी (Dammani) यहां आढ़त तथा हुण्डी चिट्ठी और चांदीका इम्पोर्ट बिजिनेस होता है। आपकी इसी नामसे बुलियन एक्सचेंज हालमें भी दुकान है।

—:*:—

बुलियन मर्चेण्ट्स

सेठ अगरचन्दजी बुलियन एक्सचेंज बिल्डिंग
,, अमुलख अमीचंद बुलियन एक्सचेंज
,, कक्कल भाई जुमखराम बुलियन एक्सचेंज
,, कस्तूरचंद पूनमचंद बुलियन एक्सचेंज
,, कान्तिलाल कल्याणदास बुलियन एक्सचेंज
,, केदारमल सांवलदास बुलियन एक्सचेंज
,, गजानन्दजी बियाणी बुलियन एक्सचेंज
,, गणपतलाल माधवजी बुलियन एक्सचेंज
,, गोविन्दराम नारायणदास बुलियन एक्सचेंज
,, गोरधनदास पुरुषोत्तमदास बुलियन एक्सचेंज
,, गोबिन्ददास भैय्या c/o चांददास दम्माणी
,, चम्पकलाल नगीनदास बुलियन एक्ससेंज
,, चांददास दम्माणी बुलियन एक्सचेंज
,, चिमनराम मोतीलाल बुलियन एक्सचेंज
,, चेतनदास बनेचंद बुलियन एक्सचेंज
,, जगजीवनदास सेवकराम बुलियन एक्सचेंज
,, जमुनादास मथुरादास बक्षी हार्नबी रोड
,, जीवतलाल प्रतापसी बुलियन एक्सचेंज
,, जीवतलाल श्रीकिशन बुलियन एक्सचेंज
,, जीवाभाई केशरीचंद बुलियन एक्सचेंज
,, ठाकरसी पुरुषोत्तम मारवाड़ी बाजार
,, ठाकुरभाई दीपचंद खारा कुंआ
,, दयालदास खुशीराम बुलियन एक्सचेंज
,, द्वारकादास भीमराज बु० ए० बिल्डिंग
,, देवकरण नानजी बुलियन एक्सचेंज
,, नारायणदास केदारनाथ बुलियन एक्सचेंज
,, नारायणदास मनोहरदास बु० ए० बिल्डिंग
,, नारायणदास मणीलाल बु० ए० बिल्डिंग
,, प्रेमसुख गोवर्द्धनदास बु० ए० बिल्डिंग
,, बालाबक्स बिरला बु० ए० बिल्डिंग
,, बिडला ब्रदर्स बु० ए० बिल्डिंग
,, ब्रजमोहनदास बिरला c/o बिरला ब्रदर्स
सेठ भोगीलाल अचरजलाल खारा कुंआ
,, भोगीलाल मोहनलाल जवेरी खारा कुंआ
,, भोलाराम सराफ़ बु० ए० बिल्डिंग
,, भोगीलाल चिमनलाल सराफ़ बाजार
,, भोगीलाल अमृतलाल बु० ए० बिल्डिंग
मेसर्स एम० वी० गांधी एण्ड को० बु० ए०
सेठ मगनलाल मणिकलाल बु० ए० बिल्डिंग
,, मंगलदास मोतीलाल बु० ए० बिल्डिंग
,, माणीलाल चिमनलाल सराफ़ बाजार
,, मनुभाई प्रेमानन्ददास लहारचाल
,, माणेकलाल प्रेमचंद रामचन्द अपोलो स्ट्रीट
,, मोतीलाल वृजभूषणदास श्राफ़ बाजार
,, रतनजी नसरवानजी लाकड़ावाला बु० ए०
,, रामकिशनदास दम्माणी बुलियन एक्सचेंज
,, रामकिशन सीताराम बु० ए० बिल्डिंग
,, रामकिशनदास खत्री बु० ए० बिल्डिंग
,, हरजीवन नागरदास कम्पनी बु० ए०
,, हिम्मतलाल हेमचंद बु० ए० बिल्डिंग

,, रामदयाल सोमाणी बु० ए० बिल्डिंग
,, रामचंद मोतीचंद बु० ए० बिल्डिंग
मेसर्स रिधकरणदास काबरा एण्डको० बु० ए०
सेठ वाड़ीलाल चुन्नीलाल बुलियन एक्सचेंज
,, विट्ठलदास ठाकुरदास बु० ए० बिल्डिंग
,, विट्ठलदास ईश्वरदास पारेख बु० ए० बिल्डिंग
,, विट्ठलदास कसलचंद बु० ए० बिल्डिंग
,, शिवप्रताप बी० जोशी C/O भीखमचंद बाल किशनदास
,, शिवलाल शिवकरण बु० ए० बिल्डिंग
,, शिवप्रताप रामरतनदास बु० ए० बिल्डिंग
,, श्रीवल्लभ पीती बु० ए० बिल्डिंग
,, साकलचंद दामोदरदास बुलियन एक्सचेंज

शेअर- मर्चैंएट्स

SHARE-MERCHANTS

शेअर बाजार

शेअरका व्यवसाय सर्व साधारण व्यक्ति नहीं कर सकता। इस व्यवसायके करनेमें बहुत सम्पत्ति की आवश्यकता होती है। शेअरका शाब्दिक अर्थ है, हिसा—बहुत अधिक लोग मिल, एक निश्चित रकमके द्वारा एक कम्पनी स्थापित करके इस रकमको कइ हिस्सोंमें बांट देते हैं। इन्हीं हिस्सों-को शेअर कहते हैं। इस प्रकारके शेअरोंके भाव कम्पनीकी व्यवसाइक परिस्थितिके अनुसार हमेशा घटा बढ़ा करते हैं। बम्बईके व्यवसाइक जीवनमें शेअर बाजारका इतिहास भी बहुत पुराना है। बम्बईकी दरिया भरनेके लिये खड़ी की जानेवाली कम्पनियोंके शेअरोंकी, शेअर बाजारके राजा सेठ प्रेमचंद रायचंद द्वारा की गई उथल पथलकी बातें आज भी सुनने वालोंको चकित कर देती हैं। सन् १९६३।६५ के आस पास सारा शेअर बाजार सेठ प्रेमचंद रायचन्दके हाथोंमें था। आपके द्वारा स्थापित की हुई एक कम्पनीके शेअर जिसके पहले कालके ५०००) भरे जा चुके थे,का भाव करीब ३६०००) तक चढ़ गया था। इस बाजारके व्यवसायिक समाजने सेठ प्रेमचन्द रायचंदके मान स्वरूप आपका एक स्टेच्यू शेअर बाजारमें बनवाया है।

बम्बई, अहमदाबाद, तथा और स्थानोंकी मिलों तथा और कई ज्वाइंट स्टॉक कम्पनियोंके शेअरोंके सौदे यहांके शेअरबाजारमें लाखोंकी संख्यामें प्रतिदिन होते हैं। इस व्यवसायके करने वाले करीब ७०० दलाल हैं। यह व्यवसाय बहुत सूक्ष्म दृष्टिका है। मिलोंकी परिस्थित कैसी है, हवा पानी एवं ऊपजकी हालत क्या है, बाजारका धोरण क्या है, शेअर बाजारमें बड़ी बड़ी उथल पथल करनेवाले व्यापारियोंकी व्यवसायिक करामाते किस तरफ काम कर रही हैं आदि २ कई बातोंका बड़ी सावधानी पूर्वक ध्यान रखना पड़ता है।

शेअर बाजारके विशाल चौकमें सौदा करते हुए व्यापारियोंकी जमघटका अपूर्व दृश्य होता है, ऐसा मालूम होता है कि सब व्यापारी अपने २ भाग्यका फैसला करनेके एवं एक तिजोरीकी रकम दूसरी तिजोरीमें ले आनेके लिये जी जानसे प्रयत्नकर रहे हैं। शेअर ३ प्रकारके होते हैं। (१) आर्डिनरी (२) डीफर्ड (३) प्रिफेरन्स। इसके अतिरिक्त लोन, पोस्टल सार्टिफिकेट, करंसीनोट आदि कई प्रकारके सौदे इस बाजारमें होते हैं। इसमें व्यवसाय करनेवाले करीब ७०० दलाल हैं। तथा प्रति मास करीब ३।४ करोड़ रुपयोंका भुगतान: करना पड़ता है। इस बाजारमें व्यवसाय

करनेवालोंमें अधिक संख्या गुजराती भाटिया तथा पारसी व्यापारियोंकी है। दि नेटिव्ह शेअर एण्ड स्टॉक ब्रोकर्स एसोशिएशन नामकी संस्था, शेअर बाजारमें आनेवाली कठिनाई, आदिके लिये समुचित प्रबंध करती है। उनके झगड़ोंको निपटाती है। एवं इस विषयके नियम उप नियम बनाती है। इस समय इस संस्थाके सभापति सेठ के० आर० पी० सर्राफ हैं। आप पारसी सज्जन हैं।

शेअर मर्चेण्ट

कोकाभाई प्रेमचंद रायचंद

गरीब पिता माताके घर जन्म लेकर अपने पौरुष और पराक्रमसे करोड़ों रुपयोंकी सम्पत्ति उपार्जित कर उसका सदुपयोग करनेवाले, अपने अनुपम व्यापारिक बुद्धिबल, धैर्य एवं चतुराईके कारण 'शेअर बाजारका राजा' इस प्रतिष्ठित पदसे सम्बोधित किये जानेवाले परम प्रतापी सेठ प्रेमचन्द रायचन्दका जन्म सन् १८३१ के मार्च मासमें सूरतमें हुआ था। सेठ प्रेमचंद रायचन्दने अपने ही हाथोंसे सब कार्य स्थापित कर इतनी मान मर्यादा एवं प्रतिष्ठा प्राप्त की थी।

सेठ प्रेमचंदजीके पिता सेठ रायचन्द दीपचंद सूरतमें मामूली व्यापार और दलालीका काम करते थे, वहाँ व्यवसाय न चलनेसे आप अल्पवयमें सेठ प्रेमचंदजीको भी साथ लेकर बम्बई चले आये, और बम्बईमें आकर आपने रतनचन्द लाला नामके एक दलालके साथ व्यापार करना आरंभ किया। सेठ प्रेमचंदजी अंग्रेजी तथा गुजरातीका अभ्यास करनेके पश्चात् १६ वर्ष की अवस्थामें व्यवसायमें सम्मिलित हुए। लाला रतनचन्दजीका अधिकतर व्यापार बैंकोंके साथ रहता था, उनका अंग्रेजी ज्ञान न होनेसे वे सेठ प्रेमचंदजीको साथ लेजाने लगे। फिर क्या था, सेठ प्रेमचन्दजीको अपने व्यवसाय चातुर्य्यके प्रस्फुटित करनेका अच्छा मौका मिला। थोड़े ही समयमें आपने बैंकोंके मैनेजर एवं व्यापारियोंमें अच्छा परिचय प्राप्त कर लिया और अपना स्वतंत्र व्यापार आरंभ कर दिया। इतनेहीमें लाला रतनचंदका देहान्त होजानेसे उनका भी सब काम काज आप ही को मिलने लगा।

सेठ प्रेमचन्दजीने अपने पिताश्रीके साथ बहुत जोरोंसे व्यापार आरंभ कर दिया और दिन प्रति दिन शेअरके ऊथल पाथलमें व रूई व अफीमके व्यापारमें आप तरक्की करते गये। यूरोपियन व्यापारियोंमें भी आपका परिचय और रुतबा बढ़ने लगा इसी समय अमेरिकामें सिविलवार छिड गया, और रूईमें भयंकर तेजी हो गई, उस समय सेठ प्रेमचंदजीने भारतवर्ष भरमें हरएक स्थान पर अपने आदमी भेजकर रूई खरीद कर यूरोप भेजना आरंभ किया, इसमें आपको बेतौल नफा प्राप्त हुआ।

इन दिनों शेअरका सट्टा व्यापारियोंमें जोरसे फैल रहा था, एक पर एक नई कम्पनियां कायम

हो रही थीं। उस समय सेठ प्रेमचंदजीकी बाजार पर जबर्दस्त धाकथी, कि व्यापारी कहते थे "कि आज तो आ भाव छै पण काले प्रेमचंद सेठ करे सो खरा," इस प्रकार इस व्यवसायमें आप इतने सफल हुए कि देखते २ करोड़ पति बन गये। उस समय सेठ प्रेमचंदजीकी मीठी नजरही किसी व्यापारीको लखपती बनानेमें काफी थी।

सन् १८६३में कुलावासे बालकेश्वर तक दरिया पूरनेके लिये कम्पनी स्थापित करनेके लिये सरकारने प्रेमचंद सेठको परवानगी दी, इस कामके लिये जो अनेक कम्पनियां निकलीं उनमें दि बाम्बे रेकले-मेशन कम्पनी दस दस हजारके शेअरसे प्रेमचंद सेठ की सूचनासे निकली। इन शेअरोंमें पांच हजार रुपयेके पहिले काल भरे ही थे, कि बहुतही शीघ्र शेअरके भाव एकदम बढ़ गये,और बाकी पांच हजारके शेअरके छत्तीस २ हजार रुपये व्यापारियोंको मिले; इस घटनासे कई नई कम्पनियां अपने शेअरोंका भाव बढ़वानेके लिये प्रेमचंद सेठसे प्रार्थना करने लगी। मतलब यह कि सेठ प्रेमचंदजी हिन्दुस्थान हीमें नहीं; पर विलायतमें भी एक बड़े व्यापारी माने जाने लगे। इस प्रकार करीब ३५।४० वर्षों तक आपने बम्बईके नाणा बजार पर काबू रक्खा था।

कालकी गति निराली है,एक समय ऐसा भी आया कि जब शेअरोंका भाव एक दम गिर गया, इधर प्रेमचंद सेठने महंगे भावमें रूई खरीद कर विलायत भेजना आरंभ किया, पर अमेरिकाका युद्ध शांत होजानेसे रूईका भाव भी बहुत गिर गया, इससे प्रेमचंद सेठको बहुत अधिक नुकसानमें आना पड़ा। उस समयकी भीषण परिस्थितिको देख कर लोग आश्चर्य करने लगे।

व्यापारिक चतुराई और नाणाकी उथलपथलके साथ २ सेठ प्रेमचंदजीने परोपकारके कार्योंमें भी बहुत अधिक सम्पत्ति दान की। आपके किये हुए लाखों रुपयोंके स्थायी दान की याद लोग सैकड़ों वर्षोंतक न भूलेंगे। आपने अपने जीवनमें करीब ६० लाखका भारी दान किया था जिसका कुछ परिचय इस प्रकार है।

(१) सवा छः लाख रुपया बम्बई यूनिवर्सिटीमें

(२) सवा चार लाख रुपया, कलकत्ता युनिवर्सिटीमें

(३) पांच लाख रुपया बम्बईमें अपने नामसे स्थापित किये हुए बोर्डिंगमें

(४) अस्सी हजार रुपया प्रेमचन्द रायचन्द ट्रेनिङ्ग कॉलेज अहमदाबादमें

(५) पैंसठ हजार रुपया सूरतकी धर्मशालामें

(६) साठ हजार रुपया फ्रीयर फ्लेचर कन्याशालामें

(७) पचास हजार रुपया स्कॉटिश आर्फनेजमें

(८) चालीस हजार रुपया गिरनार की तलहटीकी धर्मशालामें

(९) पैंतीस हजार रुपया भरोंच की रायचन्द दीपचंद लायब्रेरीमें

(१०) बीस हजार रुपया सूरतकी रायचंद दीपचंद कन्याशालामें

(११) बीस हजार रुपया आनन्द धर्मशालामें

(१२) दस हजार रुपया अलेकजेंड्रा कन्याशालामें

इसके अतिरिक्त जे० एन पेटिट इन्स्टीट्यूशन, रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, दि नेटिव जनरल लायब्रेरी, तथा तारंगा की धर्मशालामें भी आपने अच्छी रकमें दी थीं। गुजरात काठियावाड़के ७६ गाँवोंमें धर्मशाला, कुएं और तालाबोंके जीर्णोद्धारमें करीब ६। लाख रुपये आपने दिये थे। जैन मन्दिरोंके जीर्णोद्धारमें आपने ८।१० लाख रुपया लगाये थे, अपने अच्छे समयमें आप आठ हजार रुपया मासिक धार्मिक एवं परोपकारके काममें व्यय करते थे, और पीछेसे प्रतिमास ३ हजार रुपया व्यय करते थे। ऐसे प्रतिभाशाली एश्वर्यवान एवं दानी महानुभाव की जीवनी पढ़ते हुए हरेक व्यक्तिके मुंहसे यह सहसा निकल पड़ता है कि हे भारत जननी तू हमेशा इसी प्रकारके व्यक्ति पैदा किया कर, जिसमें धर्म, समाज एवं शिक्षाकी रक्षा होती रहे।

आपकी ओरसे बंधाया हुआ आपकी मातश्रीके नामसे राजाबाई टावर बम्बईमें दर्शनीय चीज़ है।

इस प्रकार प्रतिष्ठापूर्ण जीवन व्यतीत करते हुए उक्त प्रभावशाली व्यक्तिका देहावसान सन् १९०६ की ३१ अगस्तको ७६ वर्षकी अवस्थमें हुआ था, आपका स्वर्गवास होनेके शोकमें बम्बईके कई एक बाजारोंमें हड़ताल मनाई गई और शेअर बाजारके राजाके नातेसे आपकी शेअर बाजारमें एक प्रस्तर मूर्ति स्थापितकी गई।

इस समय आपके पुत्र सेठ कीकाभाई फर्मका सञ्चालन करते हैं। इस समय भी आप शेअर और कॉटनके नामाङ्कित व्यापारी हैं। आप कई ज्वाइण्ट स्टॉक कम्पनियोंके डाइरेक्टर हैं।

मेसर्स के० आर० पी० श्राफ

सेठ के० आर० पी० श्राफ महोदय आर० पी० श्राफ एण्ड सन्स फर्मके पार्टनर हैं। आप पारसी सज्जन हैं। वर्तमानमें आप नेटिव्ह शेअर एण्ड स्टाक ब्रोकर्स एसोशिएशनके प्रेसिडेण्ट हैं। आप शेअर बाजारके बहुत प्रतिष्ठित एवं आगेवान व्यापारी माने जाते हैं। आपकी फर्म दलाल स्ट्रीट वाड़िया बिल्डिङ्ग फोर्टमें है। यहां सब प्रकारके शेअर और स्टॉक सिक्यूरिटीज़का अच्छा बिजिनेस होता है।

मेसर्स जीवतलाल प्रतापसी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान राधनपुर (गुजरात) है। आप जैन (श्वेताम्बर मंदिर मार्गी) सज्जन हैं। सेठ जीवतलालजीका प्रारम्भिक जीवन नौकरीसे शुरू हुआ एवं

स्व० सेठ प्रेमचन्द रायचन्द (शेर सट्टाके राजा) बम्बई

सेठ के० आर० पी० श्राफ, बम्बई

सेठ माणिकलाल बेचरदास गांधी, बम्बई

सेठ लालदास मगनलाल जे० पी०, बम्बई

अपने परिश्रमसे आपने संवत् १८६०में फर्म स्थापित की। प्रारम्भमें आपने चांदीकी दलालीका कार्य शुरू किया और तरक्की करते २ आज आप चांदी, सोना, रूई शेअर, एरंडा तथा अलसीके बाजारोंमें प्रतिष्ठित दलाल माने जाते हैं। आप व्यापारमें बड़े उत्साही, साहसी एवं चतुर सज्जन हैं। बाजारके व्यापारिक पेचीदा मामलोंमें व्यापारी लोग आपकी सलाह लिया करते हैं।

सेठ जीवतलाल बुलियन एक्सचेंज, शेअर एण्ड स्टाक एक्सचेंजके डायरेक्टर हैं। अपने समाजमें भी आप अच्छे आगेवान व्यक्ति हैं। आपने तिलक स्वराज्य फण्ड, एवं और देशहितके व सामाजिक कार्य्योंमें अपनी सामर्थ्य अनुसार अच्छी सहायता की है। तथा इस ओर आपका प्रेम है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स जीवतलाल प्रतापसी बुलियन एक्सचेञ्ज हाल—यहां चांदी सोनेके वायदेका तथा इम्पोर्ट विजिनेस होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स जीवतलाल प्रतापसी शेअर बाजार—यहां शेअर और सिक्यूरिटीजका सब प्रकारका व्यापार होता है।

(३) बम्बई—मेसर्स जीवत लाल प्रतापसी मारवाड़ी बाजार—यहां रुईके वायदेका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त आप हाजरका व्यापार भी करते हैं।

(४) अहमदाबाद इण्डियन जिनिङ्ग प्रेसिंग फेक्टरी लिमिटेड नरोड़ा रोड—इसके आप एजंट हैं व यहां कॉटन विजिनेस होता है।

(५) बम्बई—मेसर्स जीवतलाल मनीलाल वड़गादी मॉंडवी—यहां आपके कारखानेका बना हुआ रंग विकता है।

मेसर्स जगजीवन उजमसी

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ जगजीवन उजमसी हैं। आपका मूल निवास स्थान लीमड़ी (कठियावाड़) है। आप स्थानकवासी जैन हैं।

सेठ जगजीवन भाई प्रारंभमें मेसर्स आर० पी० आफ़के—यहां सर्विस करते थे। प्रारंभमें आपकी परिस्थिति बहुत साधारण थी। उसके बाद आप शेअर्सकी दलाली करने लगे। एवं सन् १६१६ में इस फर्मकी स्थापना की। सेठ जगजीवन भाईने थोड़े ही समयमें अपने व्यसायकी अच्छी तरक्की की और वर्तमानमें आप शेअर बाजारके अच्छे दलाल माने जाते हैं। आप सन् १६२५ में शेअर एण्ड स्टॉक ब्रोकर्स एसोशियेशनके डायरेक्टर थे। इसके बाद आपने रुईका व्यापार विशेष बढ़ाया तथा इस समय आप ५०।६० हजार रुईकी गांठोंका पंजाब, बरार, गुजरात खानदेश, काठिया-

वाड़ आदिसे मंगवाकर व्यवसाय करते हैं। आपने लीमड़ीमें एक बाड़ी और भावनगरमें एक म्युजिक हाऊस बनाया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स जगजीवन उजमसी शेअर बाजार फोर्ट यहां शेअर एण्ड स्टॉक ब्रोकर्सका काम होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स जगजीवन उजमसी मारवाड़ी बाजार—यहां कॉटनकी दलालीका काम होता है।

सेठ जगजीवन भाई ईस्ट इण्डिया कॉटन एसोशियेसनके डायरेक्टर तथा म्युनिसिपल कारपोरेशनके मेम्बर हैं।

मेसर्स देवकरण नानजी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान पोरबन्दर है। इसफर्मको ४० वर्ष पूर्व सेठ देव करण नानजीने बम्बईमें स्थापित किया था। आपका जन्म सन् १८५७ में पोर बन्दरमें हुआ था। लगभग सन् १८८८ में आप यहां आये तथा इस फर्मकी स्थापना की। आप बड़े धर्मात्माव्यक्ति थे। संस्कृतभाषासे आपको विशेष प्रेम था।

सेठ देवकरण नानजी बहुत व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आपकी मौजूदगीमें ही आपकी फर्म बहुत अच्छी तरक्की कर चुकी थीं। आपका देहावसान ६५ वर्षकी आयुमें सन् १९२२ में हुआ था।

सेठ देवकरण नानजीने पोरबंदरमें एक संस्कृत पाठशाला स्थापित की। तथा आपने वहीं सदाव्रत की जारी किया और एक धर्मशाला बनवाई। स्वजाति प्रेमसे प्रेरित होकर आपने एक जाति फण्डकी स्थापना की। आपके गुणोंसे प्रसन्न होकर सरकारने आपको जे० पी० की पदवीसे विभूषित किया था।

इस समय इस फर्मके मालिक सेठ देवकरण नानजी के ३ पुत्र हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं।

(१) सेठ चुन्नीलाल देवकरण (२)सेठ प्राणलाल देवकरण (३) सेठ मनू देवकरण। आपकी फर्म बम्बई चेम्बर आफ कामर्स (२) इण्डियन मर्चेण्ट चेम्बर (३) नेटिव्ह शेअर एण्ड ब्रोकर्स एसोसियेशन (४) दि ईस्टइण्डिया काटन एसोसियेशन लिमिटेड (५) दि बाम्बे काटन मरचेंट्स एण्ड मुकादमस एसोसियेशन लिमिटेड (६) दि बाम्बे बुलियन एक्सचेञ्ज लिमिटेड (७) दि बाम्बे श्राफ एसोसियेशन (८) तथा लैंड लार्डस एसोसियेशनकी मेम्बर हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ बम्बई—मेसर्स देवकरण नानजी एण्ड संस १७ एलिफस्टन सरकल नानजी बिल्डिंग फोर्ट, तारका

पता—Seaworthy यहां आपका हेड आफिस है इसमें बैंकिंग और फ्रेण्ड ब्रोकर्सका काम होता है।

२ बंबई—मेसर्स देवकरण नानजी ओल्ड शेअर बाजार—यहां आपके २ आफिस हैं। जिनमें शेअर, स्टाक ब्रोकर्स और गवर्नमेण्ट सेक्यूरिटीका काम होता है।

३ बम्बई—मेसर्स देवकरण नानजी मारवाड़ी बाजार—यहां रूईकी दलाली निजी व्यवसाय होता है।

४ बम्बई—मेसर्स देवकरण नानजी शिवरी—यहां रूईका व्यवसाय होता है।

५ बम्बई—मेसर्स देवकरण नानजी जवेरी बाजार—यहां बुलियन मर्चेण्ट तथा ब्रोकर्सका काम होता है।

मेसर्स भगवानदास हीरलाल गांधी

इस फर्मके मालिक खंभात निवासी लाड़वाणियां बीसा जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको २५ वर्ष पूर्व सेठ माणिकलाल बेचरदास गांधीने स्थापित किया था। आपका देहावसान सन् १९२१ में हो गया है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ भगवानदास हीरालाल और सेठ मङ्गलदास हरीलाल भाई हैं। सेठ भगवानदासजीने सन् १९०८ में विलायतकी हुण्डीकी दलालीका काम आरंभ किया तथा वर्तमानमें आप सब बैङ्कोंके साथ हुण्डीका विजिनेस करते हैं। आपने सन् १९२० में अपनी जातिके लिये मलाड़में एक सेनेटोरियम बनवाया तथा अपनी मातुश्रीके नामसे सन् १९२१ में एक होमियोपैथिक डिस्पेंसरी स्थापित की। आपने सन् १९२७ में बुलियन मार्केटमें अपनी फर्म स्थापित की। आपको शुद्ध देशी वस्त्रोंसे विशेष प्रेम है।

वर्तमानमें इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स एम० बी० गांधी कम्पनी ८० एस्प्लेनेड रोड फोर्ट—यहां फारेन एक्सचेंजका व्यापार होता है।

(२) बम्बई-मेसर्स भगवानदास हीरालाल दलालस्ट्रीट-शेअरबाजार—यहां शेअर और सिक्यूरिटीजका व्यवसाय होता है।

(३) बम्बई-मेसर्स एम० बी० गांधी बुलियन एक्सचेंज हाल शेखमेमन स्ट्रीट—यहां चांदी सोनेका व्यापार तथा इम्पोर्ट बिजिनेस होता है।

(४) मेसर्स भगवानदास हीरालाल गांधी जौहरी बाजार-मम्बादेवी—यहां कॉटन विजिनेस होता है।

मेसर्स मनसुखलाल छगनलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान जूनागढ़ (काठियावाड़) है। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ मनसुखलाल भाई हैं। आप १३ वर्षोंसे शेअरका व्यवसाय करते हैं।

सेठ मनसुखलालभाईकी रुचि एज्यूकेशन और सेनिटेशनके कामोंकी ओर विशेष है। आपने दलितोद्धारमें ५० हजार रुपया दान दिया है तथा सोनगढ़ काठियावाड़में आपने एक सेनेटोरियम बनवाया है। आप नेटिव्ह शेअर एण्ड स्टॉक ब्रोकर्स एसोशिएशनके डायरेक्टर हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बम्बई—मेसर्स मनसुखलाल छगनलाल शेअर बाजार T. A. Relief fund यहां शेअरकी दलाली बिजिनेस होता है।

मेसर्स रायचन्द मोतीचन्द कम्पनी

इस फर्ममें दो पार्टनर हैं। (१) सेठ रणछोड़ भाई रामचन्द हैं। आपका मूल निवास सूरत हैं। (२) सेठ जीवाभाई मोहकम हैं। आपका मूलनिवास पाटन है। आप जैन जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको सेठ रणछोड़भाईने ३० वर्ष पूर्व स्थापित किया था। तथा वर्तमानमें यह फर्म चांदी सोनेके बाजारमें एवं जौहरी समाजमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स रायचन्द मोतीचंद कम्पनी जौहरी बाजार—यहां चांदी सोनेके तैयार दागिने तथा हीरा मोती और सब प्रकारके जवाहरातका व्यापार होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स रायचंद मोतीचंद कम्पनी बुलियन एक्सचेंज बिल्डिंग शेखमेमन स्ट्रीट—इस फर्मपर सोने और चांदीके इम्पोर्टका काम होता है।

(३) बम्बई—मेसर्स लल्लूभाई रणछोड़दास शेअर बाजार—यहां शेअर्सका बिजिनेस होता है।

(४) बम्बई—मेसर्स रायचंद मोतीचन्द कम्पनी शिवरी—यहां आपका रूईका जत्था है।

(५) सूरत—मेसर्स प्रेमचंद नाथाभाई—यहां बैंकिंग व सोने चांदीका व्यापार होता है। आपके दो रंगके कारखाने हैं। यहांके बने रंगोंकी एजंसियां इण्डिया, बरमा, बेरिन आदि जगहोंपर है।

आपके कारखाने (१) करेल बाड़ी ठाकुर द्वार बम्बई तथा (२) माधौबाग (बम्बई) में हैं।

मेसर्स लालदास मगनलाल जे० पी०

इसफर्मके मालिक सेठ लालदासजी जे० पी० हैं। आपका जन्म बम्बईहीमें हुआ है। इसलिये आपका निवास बहुत समयसे यहींपर है। आप गुजराती वणिक सज्जन हैं। सेठ लालदासजीका

प्रारंभिक जीवन नौकरीसे आरंभ हुआ। आपने स्वयं अपने हाथोंसे व्यवसायमें अच्छी सफलता प्राप्त कर मान, सम्पति एवं प्रतिष्ठा प्राप्त की। प्रथम आप रामगोपाल कम्पनीमें कार्य करते थे, फिर आप पी० क्रिस्टल कम्पनीमें शेअर्स तरीके काम करने लगे। उसमें आप २ वर्षतक कार्य करते रहे। इस समयमें आपने अधिक सम्पत्ति प्राप्त की। पश्चात् लालदास दुलारीदास कम्पनीके नामसे आप अपना स्वतन्त्र काम करने लगे। स्वास्थ्यको अस्वस्थताके कारण आपने इस व्यवसाय को छोड़ दिया। वर्तमानमे आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स लालदास भगतलाल १२ ए दलाल स्ट्रीट शेअर बाजार—यहां शेअर एण्ड स्टॉक ब्रोकर्सका बिजिनेस होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स लालदास मगनलाल एण्ड कम्पनी अब्दुल रहमान स्ट्रीट—यहां मिल तथा जीन सम्बन्धी सब सामानका स्टोर है।

——

शेअर मार्केटके व्यवसायी

मेसर्स अमरचंद जवेरचंद
,, अमृतलाल मोहनदास
,, अमृतलाल कालीदास
,, ए० बी० कांगा
,, कांगा एण्ड हीलेल
,, केशवलाल मूलचंद
,, खीमजी पूनजी एण्ड कं०
,, गिरधरलाल एण्ड त्रिभुवनदास
,, चुन्नीलाल वीरचन्द एन्ड संस
,, छगनलाल जवेरी एण्ड को०
,, जीवतलाल प्रतापसी
,, जमनादास खुशालदास
,, जमनादास मथुरादास
,, जे० एस० गज्जर एण्ड संस
,, डूंगरसी एस० जोशी
,, देवकरण नानजी
,, दाराशाव एण्ड को०
,, नारायणदास रामसुख
,, पारख जमनादास मूलचंद
,, पटेल एण्ड रामदत्त
,, प्रेमचन्द रामचन्द एण्ड संस

मेसर्स प्रेमजी नागरदास
,, प्रभूदास जीवनदास
,, पी० एम० मादन
,, भगवानदास जेठा भाई
,, बाटलीवाला एण्ड कम्पनी
,, बी० ए० विलिमोरिया
,, बाडीलाल पूनमचन्द
,, मंगलदास चिमनलाल
,, मंगलदास हुकुमचन्द
,, मनमोहनदास नेमीदास
,, मेहता वकील एण्ड को०
,, मेरवानजी एण्ड संस
,, एम० पी० भरूचा एण्ड संस
,, एम० आर० वेद एण्ड को०
,, एन० व्ही० खांडवाला एण्ड को०
,, राजेन्द्र सोमनारायण जे० पी०
,, लक्ष्मीदास पीताम्बर
,, बसनजी गोरधनदास
,, एस० बी० विलिमोरिया
,, सामलदास प्रभूदास
,, हरजीवनदास मूलजी

नोट—उपरोक्त व्यवसायियोंकी ऑफिसें अधिकतर शेअर बाजारमें ही हैं।

बुकसेलर्स एण्ड पब्लिशर्स

मेसर्स खेमराज श्रीकृष्णदास

इस मशहूर कार्यालयकी स्थापना से० खेमराजजीके हाथोंसे हुई थी। आपका जन्म संवत् १९१३ में चूरूमें हुआ था। आपका खास निवास स्थान चूरू (बीकानेर स्टेट) है।

सेठ श्रीकृष्णदासजीके २ पुत्र थे, सेठ गंगाविष्णुजी एवं सेठ खेमराजजी। चूरूसे प्रथम गंगाविष्णुजी एवं पश्चात् संवत् १९२५ में सेठ खेमराजजी रतलाम आये। उस समय दोनों भाई वहां अफीमका व्यापार एवं पुस्तक विक्रयका कार्य करते थे। वहां आप अत्यंत मामूली हालतमें आये थे। आप दोनों भाई रतलाम करीब ४ वर्ष तक रहे। पश्चात् दो मासके अंतरसे दोनों भाई बम्बई आये। प्रारंभसे ही सेठ खेमराजजीकी पुस्तकोंके व्यापारमें अधिक रुचि थी, इसलिये आप दूसरे प्रेसोंकी छपी हुई पुस्तकें खरीद कर यत्र तत्र फेरी द्वारा बेंचनेका व्यवसाय करने लगे। १ सालके बाद करीब संवत १९३३।३४ में आपने अपना एक छोटासा प्रेस स्थापित किया। दिन प्रति दिन यह कार्यालय इतनी उन्नति करता गया, कि आज भारतके लब्ध प्रतिष्ठित प्रेसोंमें इसकी गिनती है-। इस प्रेसके द्वारा हिन्दी तथा विशेष कर संस्कृत साहित्यकी आशातीत उन्नति हुई है। इस प्रेससे अभीतक करीब २००० ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। इस कार्यालयका स्वतंत्र पोस्ट ऑफिस है। इस कार्यालयके बम्बई व कल्याण दोनों प्रेसोंमें करीब ७०० व्यक्ति प्रतिदिन काम करते हैं तथा श्री वेङ्कटेश्वर प्रेस बम्बईसे बाहर जानेवाली वी० पी० की औसत करीब ९० हजार एवं कल्याणसे जानेवाली वी० पी० की औसत ४२ हजार है।

संवत् १९५० में दोनों भाई अलग २ हो गये तथा श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेसका संचालन सेठ खेमराजजी करने लगे, और सेठ गंगाविष्णुजीने कल्याणमें श्री लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर प्रेस की अलग स्थापना की, सेठ गंगा विष्णुजीका देहावसान संवत १९६० तथा सेठ खेमराजजीका देहावसान संवत १९७७ में हुआ। सेठ गंगाविष्णुजीकी कोई संतान न होनेसे उनकी सारी सम्पत्तिके मालिक सेठ खेमराज जीके वंशज ही हैं। सेठ खेमराजजीकी मौजूदगीमें ही यह प्रेस आशातीत उन्नति कर चुका था। इस प्रेसके ग्रन्थ आज कन्या कुमारीसे लेकर हिमालय तक, शिक्षित एवं अशिक्षित सभी व्यक्तियोंके पास पहुंचते हैं व प्रत्येक घरमें रात दिन बड़े चावसे पढ़े जाते हैं।

वर्तमानमें इस कार्यालयके मालिक सेठ खेमराजजीके पुत्र राव साहब सेठ रंगनाथजी एवं श्री श्रीनिवासजी बजाज हैं।

सेठ रंगनाथजीको जनवरी सन् १९२६ मे गवर्नमेंटसे राव साहबकी उपाधि प्राप्त हुई है।

सेठ श्रीनिवासजी बजाज शिक्षित एवं व्यवस्था-कुशल सज्जन हैं। प्रेसके प्रबन्धमें आपने अच्छी उन्नति की है। आप मारवाड़ी विद्यालयके वाइस प्रेसिडेंट तथा सेक्रेटरी हैं। मारवाड़ी विद्यालयके संचालनमें आप बड़ी तत्परतासे भाग लेते हैं।

आप की ओरसे उज्जैन, नाशिक, हरिद्वार, बालाजी (दक्षिण) भूतपुरी श्रीरंगम आदि स्थानों पर धर्मशालाएं बनी हैं। तथा वहां पर भोजनका भी प्रबन्ध है।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

१ श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस ७ खेतवाड़ी-खम्बाटालेन बम्बई तारका पता—वेंकटेश्वर	यहां आपका विशाल प्रेस है। यहांसे बहुत बड़ी तादादमें पुस्तकें बाहर जाती हैं।
२ लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस कल्यान (बम्बई)	यहां भी आपका बड़ा प्रेस है।
३ श्रीवेंकटेश्वर प्रेस कोलापुर	यहां भी आपके प्रेसकी एक ब्रांच है।
४ मेसर्स खेमराज श्रीकृष्णदास कालवादेवी खेमराज बिल्डिंग	यहां सराफी तथा पुस्तक विक्रयका काम होता है।
५ खेमराज श्रीकृष्णदास बुक डेपो--चौक बनारस	यहां आपके प्रेसकी छपी पुस्तकें बेचनेका डिपो है।
६ खेमराज श्रीकृष्णदास इलाहाबाद	यहां एक फ्लावर मिलके आप लेसी हैं।
७ खेमराज श्रीकृष्णदास लखनऊ	यहां पर आपका फ्लावर मिल है।
८ खेमराज श्रीकृष्णदास जावरा	यहां आपकी १ जीन व १ प्रस फेक्टरीं है। तथा काटन विजिनेस होता है।
९ वर्धा--रंगनाथ श्रीनिवास	यहां भी आपकी जीन-प्रेस फेक्टरी है। और मोटर विजिनेस होता है।
१० पुलगांव--रंगनाथ श्रीनिवास	यहां आपकी जीन-प्रेस फेक्टरी है।
११ धामनगांव—रंगनाथ श्रीनिवास	यहां आपकी जीन फेक्टरी है।

इस प्रेसके द्वारा श्री वेङ्कटेश्वर समाचार नामक एक साप्ताहिक समाचारपत्र करीब ३३।३४ वर्षोंसे निकलता है।

बुकसेलर्स एण्ड पब्लिशर्स

आदरजी कावसजी मास्टर गिरगांव रोड
आर्मीएण्ड नेवी कोआपरेटिव्ह सोसायटी लिमिटेड
ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस निकोल रोड स्प्लेनेडरोड
एंग्लो ओरियण्टल बुकडिपो १३२ कालबादेवी, रोड़
एम्पायर पब्लिशिंग कम्पनी गिरगांव बैंकरोड
इण्डियन पब्लिशिंग कम्पनी लि० कावसजी पटेल स्ट्रीट फोर्ट
इण्डियन बुकडिपो मेडासस्ट्रीट
इण्डियन एन्ड कालोनियल बुक एजन्सी ४५-४६ हार्नबी रोड़
वेस्टर्न प्रिंटिंग वर्क्स फूरे रोड
कान्तिलाल एण्ड को० आर० गिरगांव
किंग एण्ड को० हार्नबीरोड़
के० पी० मिस्त्री कालबादेवीरोड
खेमराज श्रीकृष्णदास कालबादेवी रोड
गंगीवाला पारख एन्ड को० ३१ कान्हेल कालबादेवी
गोपाल नारायण एण्ड को० कालबादेवी रोड
गोविन्द एण्ड को० एस, सेन्डर्स्टरोड़
गार्जियन प्रेस, गिरगांव
ग्रेशम पब्लिशिंग कम्पनी लि० ४६ फोर्टस्ट्रीट
चिराग बुकडिपो चोगा स्ट्रीट फोर्ट
जोशी एण्ड को० कान्देवाड़ी पो० नं० ४
जार्ज कोलेस एन्डको० ४०, ब्रिटिश होटल लेन
जहांगीर बी० करानी सन्स बोरा बाजार स्ट्रीट
टाइम्स ऑफ इण्डिया, टाइम्सबिल्डिङ्ग हार्नबी रोड
ट्रेक्ट एन्ड बुक सोसायटी कालबादेवी०
डी०एस० दत्त एन्ड को० सारस्वत कोआपरेटिव्ह बिल्डिङ्ग ग्रैण्टरोड़
तारापुरवाला सन्स एन्ड को०, १६० किताब महल हार्नबीरोड
त्रिपाठी एन्ड को० (एन० एम०) कालबादेवी रोड
थैकर एन्ड को एस्प्लेनेड रोड
नरेन्द्र बुक डेपो लेडी जमशेदजी रोड दादर
नेशनल पब्लिशिंग कंपनी लि० गिरगांव बैंकरोड़
न्यू लक्ष्मी प्रिन्टिङ्ग प्रेस १८-२० कासी सैय्यदस्ट्रीट
निर्णयसागर प्रिन्टिङ्गप्रेस कालबादेवी;
पापुलर बुक डेपो गुवालिया टैंक रोड
बाम्बे बुकडिपो गिरगांव
ब्रिटिश एण्ड फॉरेन बाइबिल सोसायटी हार्नबी रोड
बरागंभा एण्ड को० सी० एम० १०६ प्रिन्सेस स्ट्रीट
ब्लेकी एण्ड सन्स लिमिटेड फोर्ट स्ट्रीट
बैनेटकालेमन एण्ड को० लि० हार्नबी रोड
वैटरवर्क एण्ड को० लिमिटेड यार्क बिल्डिंग हार्नबी रोड
मैकमिलन एण्ड को० हार्नबी रोड

मार्टिन हैरिस ११६ पारसीबाजार स्ट्रीट फोर्ट
एम० डी० मेहता एण्ड को० ६ बेंकट मोहल्ला कोलभाट लेन
एम० मिस्त्री एण्ड को० २३२ बोरा बाजार
श्रावक भीमसी माणेक पारसी गली
मुन्शी एण्ड सन्स जी० एम० खानबहादुर गिरगांव रोड
मेघजी हीरजी बुकसेलर पायधुनी
यूनाइटेड प्रेस आफ इण्डिया लि० ७४ होमजी स्ट्रीट फोर्ट
राधाभाई आत्माराम सागून कालबादेवी रोड
आर० बनमालीदास एण्ड को० कालबादेवी रोड
रामचंद्र गोविन्द एण्ड सन्स कालबादेवी रोड
रेले एण्ड को० जी० जी० ओ० पो० टैंक रोड
आर० मंगेश एण्ड को० न्यू चिंचवंदर स्ट्रीट
रत्नागर एण्ड को० २७ मैडास स्ट्रीट
लखपति ७५ चिमना बचेर स्ट्रीट
लांगमेन्स ग्रीन एण्ड को० ५३ निकल रोड बेलार्ड स्टेट
व्हीलर एण्ड को० हार्नबी रोड
एस० आई० बी० मिलर कैम्प मैनेजर कैलिज़ डाइरेक्टरी लिमिटेड पो० बॉ० नं ८५८
श्रीधर शिवलाल कालबादेवी
एस० पी० सी० के० प्रेस स्प्लेनेड रोड
स्टेशनरी एण्ड बुक एजन्सी ठाकुर द्वार
स्टुडेण्ट्स प्रिण्टिंग प्रेस गिरगांव
सन शाइन पब्लिशिंग हाऊस इन्जिनियर बिल्डिंग प्रिन्सेस स्ट्रीट
हरिप्रसाद भागीरथ कालबादेवी रोड
हीकेन एण्ड इलियट ग्रेट वेस्टर्न बिल्डिंग बाकर हाऊस लेन फोर्ट
हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय हीराबाग, गिरगांव

—:*:—

रंगका व्यापार
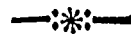
हमारे देशमें रंगका व्यवसाय बहुत पुराने समयसे चला आता है। वैदिक कालसे पीताम्बर, नीलाम्बर आदिका उपयोग होता आता है। रामायण-कालमें रंगाईका काम करनेवालोंको रंगजीव कहा है उस समय कुसुम, मजीठ, लाख, पलास तथा नील विशेष प्रचलित थे। मुसलमानी कालमें भी रंगके व्यावसायकी और उसके पैदाइशकी अच्छी उन्नति थी। पर इधर ४०, ४५ वर्षोंसे हमारे देशका यह व्यवसाय दिनोदिन अवनति करता जारहा है आज तो यह हालत होगई है कि हम लोगोंको पैसे पैसे के रंगके लिये विदेशी मालका मुंह ताकना पड़ता है। विदेशोंमें तरह तरहके कृत्रिम रंगोंका आविष्कार हुआ। तथा उस मालकी चमक दमकके आगे भारतीय माल बाजारमें न ठहर सका। आज करीब २ हजार तरहके रासायनिक रंग तैयार होकर हमारे बाजारोंमें बिकते हैं। इस व्यवसायके नष्ट होनेसे भारतियोंकी बहुत बड़ी जीविका नष्ट होगई।

लड़ाईके पूर्व जर्मनी, दुनियामें खर्च होनेवाले रंगका ८५ प्रतिशत तैयार करता था। पर जब युद्धमें जर्मनीका रंग बन्द हुआ तब दुनियामें रंगकी बड़ी कमी आगई। हमारे यहां २॥-३ आनाके बक्सके तीन तीन रुपये तक दाम चढ़ गये। ऐसा मौका देखकर जापान आदि देश अपने यहां इस मालके तैयार करनेमें जूट गये, फल यह हुआ कि लड़ाईके बाद कई देशोंके रंग भारतमें आने लगे। हमारे देशमें रंगकी आयात कितनी बढ़ी, उसका पता नीचेके कोष्टकसे चलेगा।

सन् १६०३, ४ में	९८ लाख	सन १६१२, १३ में	१५२ लाख
,, १६०७, ८ में	१०४ लाख	,, १६१६ में	११४ लाख
,, १६१०, ११ में	१३४॥ लाख		

विदेशी रंग प्रधानतया तीन प्रकारके होते हैं, १ अनीलीन (अलकतरेसे बना) २ अलीजरीन (मजीठसे बनारंग) ३ कृत्रिम नील।

अलकतरा तथा मजीठसे बने रंग विदेशसे आये—

१८७६, ७७ में ५ लाखके

१६०३, ४ में ८२.७ लाखके

सन् १६१२, १३ में ११२ लाखके

कृत्रिम नीलकी आमद

१८७६ - ७७ में	२.८ करोड़	१६०३ - ४ में	८ करोड़
१६११ - १२ में	१२.२५ करोड़	१६१२ - १३ में	१४.१७ करोड़
१६१३ - १४ में	१७.८६ करोड़		

भारतमें रंग बनानेके नीचे लिखे द्रव्य हैं

(१) नील एक छोटासा पौधा होता है इसके पत्तोंको सड़ाकर रंग तैयार किया जाता है। यूरोपवालोंने सोलहवीं सत्रहवीं शताब्दीमें हमारे यहांसे नील खरीदना आरंभ किया था। पहिले पोर्तगालवाले फिर डच और फिर ईस्ट इण्डिया कम्पनी यहांकी नील खरीदने लगी। इसमें नफा अधिक होनेसे अमेरिकाके उपनिवेशोंमें इसकी खेती भी की जाने लगी। सन् १८६७में जर्मनीने एक ऐसी कृत्रिम नील निकाली, जो बहुत सस्ती पड़ती थी। इसकी प्रतियोगितासे भारतकी नीलका रोजगार किस प्रकार नष्ट हुआ उसका पता नीचेके अंकोंसे चलेगा।

भारतसे नील भेजी गई:—

१८८६-८७ में	३.७ करोड़ रुपयोंकी
१८६६-६७ में	४½ करोड़ रुपयोंकी
१६०३ में	१ करोड़ रुपयोंसे ऊपरकी
१६०६-७ में	७० लाख रुपयोंकी
१६१०-११ में	३५ लाख रुपयोंकी
१६१२-१३में	२२ लाख रुपयोंकी

भारतमें नील बोई गई:—

(१) १८६५में १३ लाख- एकड़में
(२) १६१४ में १४८ हजार ए०में

नीलकी कोठियां थीं

सन् १६०१में ६२३
सन् १९०३में ५३१

(२) कुसुम—इसके फलसे तेल व फूलसे रङ्ग निकलता है, जिन गुणोंके कारण विलायती माल प्रतिष्ठा पा रहा है वे सब गुण इसमें हैं। सन् १८७३-७४में ७॥ लाख रुपयोंका कुसुम बाहर भेजागया था। मगर सन् १६०३-४में यह संख्या ६७॥ हजारकी रह गई।

(३) हल्दी—इसकी पैदावार खासकर मद्रास प्रांतमें और बंगाल बिहार और बम्बईमें भी होती है।

(४) आलू—इसकी पैदावार राजपूताना, मध्यभारत, बरार, सी० पी० और यू० पी० में होती है इसका,लाल रङ्ग अच्छा बनता है।

इसके अतिरिक्त लाख, त्रिपला, कहुआ, सेनकी, बबूलकी छाल आदि कई वृक्षोंसे भी रङ्ग बनाया जाता है।

बम्बईमें रङ्गके व्यापारी कई जगह बैठते हैं, कई रंगवालोंकी फर्में बड़गादी, तथा बेलार्डपेयर बम्बईमें हैं। इसके अतिरिक्त पेन्टिङ्गके रंगवाले व्यापारी दूसरे स्थानोंपर बैठते हैं। रंगोंमें एलीजराईन मालमें, तीनचन्द्र छाप, बाघ छाप,घोड़ा छाप, डी. डी. मार्का, आदि रंग विशेष मशहूर हैं तथा इसी तरह ब्लीच करनेके रंग तथा केमिकलसकी भी कई क्वालिटी आती हैं जिसके व्यापारी प्रिंसेस स्ट्रीट और अपोलो स्ट्रीटमें बैठते हैं।

रंगके व्यापारी
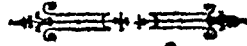
मेसर्स सूरजी भाई वल्लभदास

इस फर्मके मालिक सेठ सूरजी भाई वल्लभदासका मूल निवास स्थान कच्छ है। इस फर्मको आपने १८।२० वर्ष पूर्व स्थापित किया। वर्तमानमें आप अपने व्यवसायका सब भार अपने पार्टनरोंके सिपुर्द कर रिटायरके रूपमें आराम करते हैं। आप संस्कृतके अच्छे ज्ञाता हैं। आपको हिन्दी-भाषा एवं शुद्ध देशीवस्त्रोंसे विशेष प्रेम है। आपने कच्छ कान्फ्रेन्सके समय २० लाख रुपयोंका चंदा एकत्रित करनेमें विशेष भाग लिया था, एवं खुद भी जुदे जुदे धर्मार्थ कार्य्योंमें करीब १। लाख रुपये दिये थे। आप अपनी जातिके ११।१२ खातोंके ट्रष्टी एवं आर्यसमाजकी मेनेजिंग कमेटीके मेम्बर हैं। आपने २ बार विलायत यात्रा की एवं वहां शुद्ध शाकाहारी जीवन विताया।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई मेसर्स सूरजी वल्लभदास एण्ड कम्पनी हार्नवीरोड-फोर्ट—यहां सब प्रकारके रङ्ग, केमिकल काटलयार्न आर्टिफिशल, सिल्क और मिल स्टोर्सका व्यापार होता है।

(२ बम्बई - सूरजी वल्लभदास कलर कम्पनी वड़गादी, यहां रङ्गका थोक व्यापार होता है।

(३) सूरजी वल्लभदास कलर कम्पनी पुरानागंज-कानपुर, यहां भी रंगका व्यवसाय होता है।

(४) सूरजी वल्लभदास कलर कम्पनी अमृतसर, यहां भी रंगका व्यवसाय होता है।

रंग और वार्निसके व्यापारी

अब्दुला समसूद्दीन एण्ड सन्स, शेखमेमन स्ट्रीट

इब्राहिम सुलेमान जी एण्ड सन्स बाजारगेट

ईस्माइल जी करीम भाई एण्ड सन्स फूलगली

कापड़िया ब्रदर्स अब्दुलरहमान स्ट्रीट

कासिमअली बिन्नामपूंजा महमदअली मेन्शन, भिंडी बाजार

घेरा भाई जमशेद जी खामभट्टा, कालवादेवी रोड,

दादजी धाकजी एण्ड को० बूदगली, मांडवी

दास गुप्ता एण्ड सन्स २५ कंकूरगंधीरोड
नेशनल एनी लाइन केमिकल्स कम्पनी
स्टैंडर्ड केमिकल्स कम्पनी ।
विलीमोरिया कोटवाल एण्ड को० बूदगली, मांडवी
हीरालाल एच० ब्रदर्स १ केमेल स्ट्रीट, कालबादेवी
हुसेनअली महम्मदअली एण्ड को० शेखमेमन स्ट्रीट

कच्ची ऊनका व्यापार

भारतवर्षमें कच्ची ऊनके प्रधान उत्पत्ति स्थान सिंध, पंजाब, तथा राजपूताना हैं । इन प्रांतोंमें ऊनकी प्रधान प्रधान मंडियां शिकारपुर, अभोर, फाजिलका, पाली, ब्यावर, केकड़ी और नसीराबाद है । इन मंडियों द्वारा प्रति वर्ष हजारों गांठें ऊन लिवरपूलके मार्केटमें बिकनेको करांची और बम्बईके बंदरोंसे भेजी जाती हैं । भारतमें सबसे बड़ी ऊनकी मंडी फाजिलका (पंजाब) है । दूसरे नम्बरकी मंडी ब्यावर है । ब्यावरसे ऊन साफकर पक्की गांठें बंधाकर करीब २० हजार गांठें प्रतिवर्ष विलायत भेजी जाती हैं । यहां दो हजार मजदूर प्रति दिन ऊन साफ करनेका काम करते हैं । जिस प्रकार फाजिलकाके व्यापारियोंको अपना माल सीधा फाजिलकासे लिवरपूलके लिये बुक कर देनेकी सुविधा है उस प्रकार यहांके व्यापारियोंको नहीं है । यहांके व्यवसाइयोंको बम्बईके द्वारा अपना माल विलायतको भेजना पड़ता है । ऊन भेड़ोंसे सालमें दो बार काटी जाती है । जिन प्रांतोंमें गर्मी विशेष पड़ती है और जहांकी रेतीली भूमि होती है, वहां भेड़ें विशेष मात्रामें पायी जाती हैं । भारतमें सबसे बढ़ियां ऊन बीकानेरकी होती है । यहांकी ऊनी लोई बहुत मजबूत, मुलायम एवं सुन्दर होती है । ऊनकी कई किस्मे हैं जिनमें सफेद, काली, लाल, और मैली खास हैं ।

भारतकी अधिकतर ऊन लिवरपूल जाती है । वहाँ दो दो तीन तीन मासमें एक सेल होता है उसके पूर्व बाहरके व्यापारी सेलमें बिकनेके लिये अपना माल भेज देते हैं । उस सेलमें बिकनेवाले मालका रुपया पौं० शि० पे० के हिसाबसे नूरभाड़ा,(जहाजका भाड़ा) आढ़त, बीमा, ब्याज आदि कई व्यापारिक खर्च बादकर एक्सपोर्ट करनेवाले व्यापारियोंके द्वारा अपने आढ़तियोंको मिलता है ।

इस कच्ची ऊनके गोड़ाऊन यहांकी पिञ्जरापोल (माधोबागके पास) की पहली, दूसरी तथा तीसरी गलीमें है । यहां कई देशी और विदेशी व्यापारियोंके गोडाऊन है । जिनकी आढ़तमें बम्बईके व्यापारी बाहरसे आनेवाले मालको उतारते हैं । यहांके ऊनके व्यवसाइयोंकी संक्षेप सूची नीचे दी जाती है ।

ऊनके जत्थेदार

(१) मेसर्स नरसूमल गोकुलदास नागदेवी स्ट्रीट बम्बई—हेड ऑफिस—शिकारपुर, ब्रांचेंज फाजिलका और ब्यावर। यह फर्म फार्वस केम्बिल एण्ड कम्पनीकी करांची ऑफिसकी शिकारपुर, अभोर, तथा फाजिलकाके लिये तथा बम्बई ऑफिसकी, पाली, ब्यावर, केंकड़ी और नसीराबादके लिये ग्यारंटेड ब्रोकर्स है इसका जत्था पिंजरापोल गलीमें है।

(२) मेसर्स वीरचंद उमरसी, पांजरापोल ३ गली बम्बई T. A. Promotion, यह फर्म कोक्स एण्ड किंग्स कम्पनीकी बम्बईकी ग्यारंटेड ब्रोकर है। तथा लीवरपूलके लिये ऊनका एक्सपोर्ट करनेका व्यापार करती है। जत्था पांजरापोल ३ गलीमें है।

(३) मेसर्स मूलजी उमरसी पांजरापोल (मेनलाइन) बम्बई—यहां इस फर्मका जत्था है और ऊनकी मुकादमी का काम होता है।

(४) कासमअली इब्राहीम डोसा खड़ग डूंगरी

(५) डेविड सासुन एण्ड कम्पनी पांजरापोल

(६) भवानजी हरभगवान पांजरापोल ३ गली

(७) बाम्बे कम्पनी लिमिटेड पांजरापोल गली

(८) रतनसी तुलसीराम पांजरापोल गली

(९) साले महम्मद धरमसी खड़ग डूगरी

(१०) शेरअली नानजी पांजरापोल

(११) मायर नृसिंह एण्ड कम्पनी पांजरापोल

(१२) ग्लेंडर्स आरबुथनॉट कम्पनी

माचिसका व्यापार

माचिसके व्यापारी बड़गादी और नागदेवी स्ट्रीटपर बैठते हैं। यहां स्वीडन स्वीटजरलैंड और जापानसे माचिस आती है. तथा देशी बना हुआ माल भी बिकता है। यह माल सप्ताहमें एकबार रेलवे लेती है। इसी तरह फटाकड़ा आदि दारुखानेका माल भी सप्ताहमें एकबार रेलवेपर चढ़ाया जाता है इसका रेलवेका भाड़ा सब पेशगी ले लिया जाता है। यहांके व्यापारी आर्डर लेकर व्यापारियोंको विलायतसे डायरेक्ट भी माल मंगा देते हैं।

माचिसके व्यापारी

मेसर्स अब्दुलअली इब्राहीम माचिसवाला

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान बम्बई है। आप दाउदी बोहरा जातिके सज्जन हैं इस फर्मको यहां सन् १८८१में सेठ अब्दुलअली भाई और सेठ इब्राहीम भाईने स्थापित किया। आप दोनों सज्जनोंका देहावसान हो गया है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई —मेसर्स अब्दुल अली इब्राहीम माचिस वाला १२१ नागदेवी ष्ट्रीट पो० नं०३—इस फर्मपर सेफरी, सल्फर, फासफोरस और सब तरहकी माचिसका व्यापार होता है। T.A. Diyaslai इस फर्मका कुरलामें एक माचिसका बड़ा भारी कारखाना है। उसमें करीब १३०० मनुष्य रोज काम करते हैं। यहां सब प्रकारकी माचिस तथा दारूखानाका माल तैयार होता है। इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ इस्माइलजी अब्दुलजी, सेठ गुलाम हुसेन इब्राहिम, सेठ तय्यब अली इब्राहिम, सेठ साले भाई इब्राहिम और हीरालाल महासुख हैं।

—o—

वेस्टर्न इण्डिया मेच कम्पनी लि० वेलार्ड स्टेट
वर्मा मेच कम्पनी वेलार्ड स्टेट

ज्वाइंट स्टाक कम्पनियाँ

१६ वीं शताब्दीके आरम्भमें ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनियोंका यहां कहीं नामोनिशान भी न था परन्तु ५० वर्ष बादसे इतिहास मिलता है कि यहाँ ऐसी कम्पनियाँ खोलनेकी व्यवस्था की गयी थी। सन् १८५० ई०में प्रथम बारही ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनियोंकी रजिस्ट्री करानेकी व्यवस्थाका प्रयोग आरम्भ हुआ। सन् १८५०ई०में XLIII Act बना और उसमें ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनियोंकी रजिष्ट्री करनेका अधिकार बम्बई, कलकत्ता, और मद्रासके 'सुप्रीमकोर्ट' नामक प्रधान विचारालयको दिया गया। इस नये कानूनके अनुसार उक्त स्थानोंके सुप्रीमकोर्टोंको रजिष्ट्री करानेवालोंके आवेदन पत्र लेनेका अधिकार होगया। आवेदनपत्रमें निम्नलिखित बातोंका रहना आवश्यक माना गया।

(१) रजिष्ट्री कराई जानेवाली कम्पनीके हिस्सेदारोंका नाम और उनकी संख्या।

(२) कम्पनीका भावी नाम।

(३) प्रान्तके उन मुख्य २ व्यवसायी केन्द्रोंका नाम जिनसे व्यवसाय सम्बन्ध रहनेवाला हो।

(४) पूंजीका परिमाण, उसके आकार प्रकारका विवरण और प्रबन्धके लिये यदि कोई पूंजी अतिरिक्त रक्खी गयी हो तो उसका परिमाण।

(५) कितने हिस्सोंमें पूंजी विभक्त है या होगी।

उपरोक्त बातोंका स्पष्टीकरण करनेवाले आवेदन पत्रपर सुप्रीमकोर्ट रजिष्ट्री करनेकी स्वीकृति देती थी।

सन् १८५७ ई०में उपरोक्त कानूनमें संशोधन हुआ और ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनीके हिस्सेदारोंका दायित्वभार निश्चित रूपसे सीमाबद्ध कर दिया गया। सन् १८६० ई० में कानूनमें पुनः संशोधन हुआ और एक नवीन कानून Act VII पास किया गया। इस नवीन कानूनमें भी सीमाबद्ध दायित्व के सिद्धान्तको ही प्राधान्य दिया गया और ज्वाइन्ट-स्टाक बैंकिंग कम्पनी स्थापित की गयी। सन् १८६६ ई०में पुनः कानून संशोधनकारी X Act पास हुआ। सन् १८८२ ई० में VI Act बना और अधिक समयतक यही व्यवहारमें प्रचलित रहा। सन् १९१३में पुनः संशोधन हुआ और आजतक यही काममें आ रहा है।

सन् १९१३ के इण्डियन कम्पनीज् ऐक्ट ७ के अनुसार रजिस्ट्री द्वारा लिमिटेड कीगयी कुछ कम्पनियां:—

महाजनीकम्पनियां

(१) इन्डस्ट्रियल फाइनेन्स लि० की रजिस्ट्री २८ फरवरी सन् १९२२ ई० को सराफीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २ करोड़ की थी परन्तु कम्पनीने शेअर बेंचकर १७ लाख ८५ हजारकी रक़म कम्पनीकी वसूल पूंजीके रूपमें लगा रक्खी है। इसका आफिस सेन्ट्रल बैंक बिल्डिङ्ग स्प्लैनेड रोड फोर्टमें है।

(२) इनवेस्टमेन्ट ट्रस्ट लि० की रजिस्ट्री २ फरवरी सन् १९२५ ई०में महाजनीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़ की थी परन्तु २ ला० २५ हजारके शेअर बेचकर वसूल पूंजी लगायी गयी है। इसी पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। इसका आफिस वाडिया बिल्डंग दलाल स्ट्रीट फोर्टमें है।

(३) बाम्बे इनवेस्टमेन्ट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ८ अप्रैल सन् १९२१ में महाजनीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़की थी, परन्तु शेअर बेचकर ३४ ला० ५७ हजार ७० रु० की वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। इसका आफिस ३५९ हार्नबी रोड फोर्टमें है।

(४) मिस्लेनियस इन्वेस्टमेन्ट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ८ अप्रैल सन् १९२१ ई०को महाजनीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूञ्जी १ करोड़ की थी परन्तु शेअर बेंचकर ३२ लाख ७२ हजार ७० रु० वसूल किये गये इसी वसूल पूञ्जीसे व्यवसाय चल रहा है। इसका आफिस ३५९ हार्नवी रोड पर है।

(५) प्राबीडेण्ट इन्वेस्टमेण्ट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ४ दिसम्बर सन् १९२६ ई० में महाजनीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ५० लाख की है। इसका आफिस ५४ स्प्लैनेडरोड फोर्टमें है।

(६) मफतलाल छगनलाल भाई एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री २२ दिसम्बर सन् १९२० ई० में महाजनीका व्यवसाय करनेके लिये करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २५ लाख २५ हजार की है। इसका आफिस २६५ हार्नबीरोडपर है।

(७) यूनिवर्सल ट्रेडिंग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री १३ अगस्त सन् १९१८ ई०में महाजनीका व्यवसाय करनेके लिये करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २० लाख थी परन्तु शेअर बेंचकर ९ लाख ६६ हजार २सौ रुपयेकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय होरहा है। इसका आफिस हशमत महल चौपाटीपर है।

(८) सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया लि०की रजिस्ट्री २१दिसम्बर सन् १९११ ई०में महाजनका व्यवसायकरनेके उद्देश्य से करायी गयी थी। इसकी वर्तमान वसूल पूंजी १६७६७२७५ की है।

यह बैंक पूर्ण रुपेण भारतीय बैंक है। इसका समस्त कार्य भारतीयों ही के हाथोंमें है। देशके भिन्न भिन्न केन्द्रोंमें इसकी कितनी ही शाखाएं हैं। इसका आफिस फ्लोरा फाउन्टेनमें है।

(९) बाम्बे बुलियन एक्सचेंजकी रजिस्ट्री २४ जनवरी सन् १९२३ई० में हुई थी। इसकी वसूल पूंजी दस लाखकी है। इसकी इमारत मोती बाजारमें है।

जनरल मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजेन्ट

(१) करीम भाई इब्राहिम एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री १४ दिसम्बर सन् १९१६ ई० में एजेन्सीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़की घोषित की गयी थी, परन्तु शेअर बेंचकर ९३ लाख ७५ हजारकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस करीम भाई हाउस आउट्रम रोड फोर्टमें है।

(२) करीम भाई एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ८ सितम्बर सन् १९१७ ई० में एजेन्सी-का व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी जो २५ लाख की घोषित की गयी थी उसीको वसूल पूञ्जीके रूपमें लगाकर व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस करीमभाई हाऊस आउट्रमरोड फोर्टमें है।

(३) टाटा सन्स लि० की रजिस्ट्री ८ नवम्बर सन् १९१७ ई० में एजेन्सीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २ करोड़ २५ लाख की घोषित की गयी थी, परन्तु शेअर बेंचकर १करोड़ १७ लाख ६४ हजार ५०० रु० की वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस बाम्बे हाऊस ब्रूसरोड फोर्टमें है।

(४) कावसजी जहांगीर एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २९ सितम्बर सन् १९२० ई० को एजेन्सीका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी एक करोड़ दस हजारकी घोषित की गयी थी जो वसूल पूंजीके रूपमें इकट्ठीकर व्यवसायमें लगा दी गयी है। इसका आफिस रेडीमनी बिल्डिङ्ग चर्चगेट स्ट्रीट फोर्टमें है।

(५) सासुन जे० डेविड एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० १६ दिसम्बर सन् १९२२ ई० में कमीशन एजेन्टका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी एक करोड़की घोषित की गयी थी वह वसूल पूञ्जीके रूपमें लगाकर व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस स्प्लेनेड़ रोड फोर्टमें हैं।

(६) आर० डी० टाटा एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २३ दिसम्बर सन् १९१९ में जनरल मर्चेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूञ्जी १ करोड़ ५० लाख १०० रु० की घोषित की गयी थी परन्तु ७५ लाख ६ हजार ३० रु०

शेअर बेचकर वसूल पूंजी इकट्ठी की गयी और उसीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस बाम्बे हाऊस ब्रूस रोड फोर्टमें है।

(७) किलाचंद देवचन्द एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ७ नवम्बर सन् १६१६ में करायी गयी थी। इनके यहां जनरल मर्चेण्टके रूपमें व्यवसाय होता है, इसकी स्वीकृत पूंजी ३० लाख की घोषित की गयी, वह सब वसूल पूंजीके रूपमें इकट्ठी कर उसीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस इलाहाबाद बैंक बिल्डिंग ६३ अपोलो स्ट्रीट फोर्टमें है।

(८) गोविन्दजी माधवजी एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० १६ दिसम्बर सन् १९१८ में जनरल मर्चेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसने १ लाख ७० हजारकी वसूल पूंजी व्यवसायमें लगा रक्खी है। इसका आफिस २ रेमपार्ट रो फोर्टमें है।

(६) खानदेश श्रीकृष्ण ट्रेडिङ्ग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ३ दिसम्बर सन् १९१६ ई० में जनरल मर्चेंण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसने १ लाख ५० हजारकी वसूल पूंजी इस व्यवसायमें लगा रक्खी है। इसका आफिस ६ काकड़वाड़ीका नाका गिरगांव बेक रोडपर है।

(१०) विट्ठलदास दामोदर थेकरसी एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २ सितंबर सन् १६२१ ई० में जनरल मर्चेंटके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़की घोपित की गयी थी परन्तु शेअर बेंचकर ७५ लाखकी वसूल पूंजी इकट्ठी कर व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस १६ अपोलो स्ट्रीट फोर्टमें है।

(११) जापान इम्पोटर्स लि० की रजिस्ट्री ता० ८ सितंबर सन् १६१४ में कमीशन एजेन्टका व्यवसाय करनेके लिये करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ लाखकी घोषित की गयी थी। वह शेअर बेचकर इकट्ठी की गयी और वसूल पूंजीके रूपमें लगाकर उसीसे व्यवसाय किया जा रहा है इसका आफिस बैंक स्ट्रीट फोर्टमें है।

(१२) वेल एण्ड कंपनी लि० की रजिस्ट्री ता० १ जनवरी सन् १६२१ ई०में कमीशन एजेन्टका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २ लाख ५० हजार घोषित की गयी थी, परन्तु शेअर बेचकर १ लाख २५ हजारकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस गोकुलदास तेजपाल अस्पतालके सामने कार्नाक रोडपर है।

(१३) डेविड एण्ड कंपनी लि० की रजिस्ट्री ता० १७ जनवरी सन् १६२२ ई० में कमीशन एजेन्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ५ लाखकी घोषित की गयी थी वही वसूल पूंजीके रूपमें लगाकर व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस १०७ स्प्लेनेड रोड फोर्टमें है।

(१४)आमेराड्स (इण्डिया) लि० की रजिस्ट्री ता० १७ फरवरी सन् १६२२ ई० में कमीशन एजेण्टके रूपमें व्यवसायके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १५ लाखकी घोषित की गयी थी, परन्तु ७ लाख ५८ हजार ५५० की वसूल पूंजीसे ही व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस २० बैंक स्ट्रीट फोर्टमें है।

(१५) गैनन डङ्कर ली एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता०११ मार्च सन् १६२४ ई०में कमीशन एजेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके लिये करायी गयी थी। इसने ४ लाखकी स्वीकृत पूंजी वसूल पूंजीके रूपमें लगा रक्खी है। इसीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस चार्टर्ड बैंक बिल्डिङ्ग स्प्लैनेड रोड फोर्टमें है।

(१६) बालमर एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २२ दिसम्बर सन् १६२२ ई० में कमीशन एजेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ५ लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु १ लाखको वसूल पूंजीसे ही व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस फिनिक्स बिल्डिङ्ग स्प्रौट रोड बैलार्ड स्टेट फोर्टमें है।

(१७) कपिलराम लि० की रजिस्ट्री ता० १० सितम्बर सन १९२६ ई० में कमीशन एजेण्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसमें ३ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस नवसारी चैम्बर आउट्रम रोड फोर्टमें है।

एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट

(१) एस० बैरिस्टर एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ३ जनवरी सन् १६२० ई०में इम्पोर्ट और एक्सपोर्ट व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ३ लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु १ लाख २५ हजारकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा हैं। इसका आफिस नवसारी बिल्डिङ्ग हार्नबी रोडपर है। *

(२) पुरुषोत्तम मथुरादास एण्ड कंपनी लि० की रजिस्ट्री ८ मार्च सन् १६२३ ई० में एक्सपोर्ट और इम्पोर्टका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी १० लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है इसका आफिस ८० काजी सैय्यद स्ट्रीटमें है। ‡

---

*इसके यहां गैस और बिजलीकी बत्तियों तथा सभी प्रकारका शीशेके वर्तन (झाड़-फानूस) का सामान मिलता है।

‡ इसके यहांसे हर्रा विदेश भेजा जाता है।

सिनेमा फिल्म कम्पनी

(१) कोहिनूर फिल्मस लि० की रजिस्ट्री ता० ४ सितंबर सन् १९२६ ई० में फिल्म तैयार करानेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी २ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। इसका स्टूडियो और आफिस कोहिनूर रोड दादरपर है।

(२) बेग्स लि० की रजिस्ट्री ११ जनवरी सन् १९२७ ई०में फिल्मका व्यवसाय करनेके उद्देश्य से करायी गयी थी। इसमें २ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस १३९ बेहराम महल कालवादेवी रोडपर है।

रुई

(१) ग्रीवस काटन एण्ड कम्पनी लि० को रजिस्ट्री २१ मार्च १९२२ ई० में रुईका व्यवसाय जनरल मर्चेन्टके रूपमें करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ७० लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु ५० लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस फार्बेस स्ट्रीट फोर्टमें है।

(२) वेस्टर्न इण्डिया काटन कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता० ४ अप्रैल सन् १९१८ई० में रुईका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसमें ५ लाखकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। इसका आफिस औरियन्टल बिल्डिङ्ग हार्नबी रोड फोर्टमें है।

(३) यूगैण्डा काटन ट्रेडिङ्ग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ७ जनवरी सन् १९२२ई० में रुईका व्यवसाय करने तथा विदेशसे कना-कताया सूत मंगानेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १० लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु ५ लाखकी वसूल पूंजीसे ही आजकल व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस ६५ अपोलो स्ट्रीट फोर्टमें है।

(४) पटेल काटन कंपनी लि० की रजिस्ट्री ता० १६ जुलाई सन् १९२५ ई० में रुईका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी २५ लाखकी स्वीकृत पूंजी वसूल पूंजीके रूपमें लगी हुई है। इसका आफिस गुलिस्तान हाऊस नैपियर रोडपर है।

(५) काटन एजेंसी लि० की रजिस्ट्री ता० २६ सितम्बर सन् १९२३ ई०में रुईका व्यवसाय करने के उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसके व्यवसायमें १० लाखकी वसूल पूंजी लगी हुई है। इसका आफिस ११।१३ चर्चगेट स्ट्रीट फोर्टमें है।

(६) यूनियन कॉटन कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ३ जनवरी सन् १९२७ ई० को रुई का व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे ८ लाखकी स्वीकृत पूंजीसे करायी गयी थी। इसका आफिस यूसुफ बिल्डिङ्ग चर्चगेट स्ट्रीट फोर्टमें हैं।

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

(१) डा० एच० एल० बाटली वाला सन्स एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० १ अक्तूबर सन् १९१४ ई० में केमिस्ट और ड्रगिस्टके रूपमें दवाइयोंका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे एक लाखकी पूंजी लगाकर करायी गयी थी। इसका आफिस ३४१ वर्ली, क्लीव लैन्ड हिल पर है।

(२) टाटा एलिक्ट्रो केमिकल कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ८ दिसम्बर सन् १९१९ ई० में केमिस्ट और ड्रगिस्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २५ लाखकी घोषित की गयी थी, पर अभी तक ५ लाख ३१ हजारकी वसूल पूंजी व्यवसायमें लगायी गयी है। इसका आफिस बाम्बे हाऊस ब्रूसरोड फोर्टमें है।

(३) ऐलेन लिवरसीज (इंडिया) लि० की रजिस्ट्री ता० ६ नवम्बर सन् १९२५ ई० में केमिस्ट एन्ड ड्रगिस्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसमें तीनलाख साठ हजारकी स्वीकृत पूंजी लगी हुई है। इसका आफिस १६ बैंक स्ट्रीट फोर्टमें है।

(४) करसनदास तेजपाल एन्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० १३ अगस्त सन् १९२६ ईस्वीमें केमिस्ट एन्ड ड्रगिस्टके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्य करायी गयी थी। इसमें एक लाख की स्वीकृत पूंजी लगाकर व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस यूसुफ बिल्डिङ्ग स्प्लैनेड रोड फोर्टमें है।

कन्ट्राक्टर एण्ड इञ्जिनियर्स

(१) टर्नर होयर एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २२ मार्च सन् १९१९ को कन्ट्राक्टर तथा इञ्जिनियरके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १६लाख की घोषित की गयी थी परन्तु १० लाख २सौ की वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस सुपारीबाग परैलमें है।

(२) टाटा इञ्जिनियरिङ्ग कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता० २६ जून सन् १९१९ई०में कण्ट्राक्टर और इञ्जिनियरके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी दस लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु २ लाख ५२ हजारकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस बाम्बे हाऊस ब्रूसरोड फोर्टमें है।

(३) मासन बर्नान एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २० अक्तूबर सन् १९१९ में कण्ट्राक्टर और इञ्जिनियरके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे १ लाख ७५ हजारकी पूंजीसे करायी गयी थी। इसका आफिस साउटर स्ट्रीट अगरीपाढ़ा जेकबसरकलमें हैं।

(४) यूनाइटेड इञ्जिनियरिङ्ग एण्ड बिल्डिङ्ग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २७ फरवरी सन् १९२२ ई०में कन्ट्राक्टर और इञ्जिनियरके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १३ लाखकी घोषित की गयी थी, परन्तु १ लाख ५० हजारकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय होरहा है। इसका आफिस फार्बेस स्ट्रीट फोर्टमें है।

(५) जे० सी० गैमॉन लि०की रजिस्ट्री ता० १५जून सन् १९२२ ई०में कन्ट्राक्टर और इञ्जि-नियरके रूपमें व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे १५ लाखकी स्वीकृत पूंजीसे करायी गयी थी। इसका आफिस ५ मर्जवान रोड फोर्टमें है।

(६)मैकूवेथ ब्रदर्स लि०की रजिस्ट्री ता० १ दिसम्बर सन् १९१५ ई०में मकान बनानेका कन्ट्राक्ट लेने तथा अन्य प्रकारका कन्ट्राक्ट और इञ्जिनियरिङ्गका काम करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी इसकी स्वीकृत पूंजी ९ लाखकी घोषित की गयी थी, परन्तु ५ लाख ४० हजारकी वसूल पूंजीसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस कोडक हाउस हार्नवीरोड फोर्टमें है।

बिलायती शराब

(१) फिप्सन एण्ड कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता० १९ जनवरी सन् १९२०ई में करायी गयी थी। ये विलायती शराबके बड़े व्यापारी हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ३० लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु २० लाखकी वसूल रकमसे व्यवसाय किया जा रहा है। इसका आफिस ६ अपोलो स्ट्रीट फोर्टमें है।

(२) हर्बर्ट सन् एन्ड कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता० २६ फरवरी सन् १९२३ ई० में करायी गयी थी। इनके यहां विलायती शराबका व्यवसाय होता है। इसमें ३ लाखकीपूंजी लगी हुई है इसका आफिस एलफिन्स्टन सरकल फोर्टमें है।

चाय

(१) ऐम्बर टिप्स टी कम्पनी लि०की रजिस्ट्री तारीख ३ दिसम्बर सन् १९२५ ई० में चायकी खेती और उसका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूञ्जी एक लाखकी है। इसकी आफिस खड़े पारसीके पास भाईखलामें है।

दियासलाईके व्यवसायी

(१) वेस्टर्न इण्डिया मैच कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता० ७ सितम्बर सन् १९२३ ई०में दिया-सलाईका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ७५ लाखकी घोषित की गयी थी, परन्तु ४७ लाख ८ सौ की वसूल पूञ्जीसे व्यवसाय हो रहा है। इसका आफिस वाल्कान हाऊस निकोलरोड वैलार्ड स्टेटमें है।

(२) वर्मामैच कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता० ८ मई सन् १९२५ ई० में दियासलाईका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी, इसकी स्वीकृत पूंजी १० लाखकी घोषित की गयी थी, पर ७ लाख ३० हजार ५ सौ की वसूल रकमसे काम हो रहा है। इसका आफिस बालकान हाऊस निकोल रोड वैलार्ड स्टेटमें है।

खेतीके औजार

(१) लिमये ब्रदर्स लि०की रजिस्ट्री १७ सितम्बर सन् १९२१ में करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ३ लाखकी घोषित की गयी थी। इनके यहां विदेशसे खेतीके औजार मंगाकर बेचनेका व्यवसाय होता है। इसका आफिस ६९।७१ अपोलो स्ट्रीट फोर्टमें है।

नमक

(१) अरबी साल्ट वर्क्स लि० की रजिस्ट्री ता० १० सितम्बर सन् १९२६ ई० में नमक बनाने और उसका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १० लाख की है। इसका आफिस नवसारी चैम्बर आउट्मरोड फोर्टमें है।

चमड़ा

(१) ओरियन्ट लेदर कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता० ११ फरवरी सन् १९२७ ई० में चमड़ा और उसका सामान तैयार करवानेका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करवायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ५ लाखकी है। इसका आफिस २८ आगा हसन विल्डिङ्ग मिर्जाअली स्ट्रीटमें है।

मोती

(१) चोकसी पर्ल सेन्डीकेट लि०की रजिस्ट्री ता० १७ अप्रैल सन् १९२२ ई०में करायी गयी थी इसकी स्वीकृत पूंजी ५ लाखकी घोषित की गयी है। इनके यहां मोती और जवाहिरातका व्यवसाय होता है। इसका आफिस ४२० जवेरी बाजारमें है।

(२) ओरियन्ट पर्ल ट्रेडिङ्ग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री तारीख १८ अगस्त सन् १९२२ को करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ४लाखकी घोषित की गयी है। इनके यहां मोती और जवाहिरातका काम होता है। इसका आफिस ४०६ जवेरी बाजारमें है।

(३) बाम्बे बहरेन पर्ल ट्रेडिङ्ग कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता० ११ दिसम्बर सन् १९२५ ई० में करायी गयी थी। इस की स्वीकृत पूंजी १० लाखकी घोषित की गयी थी। इसके यहां मोतीका व्यवसाय होता है। इसका आफिस टाइमूस विल्डिङ्ग हार्नबीरोडपर है।

उपहारमें देने योग्य बहुमूल्य वस्तुएं

(१) ज्वैलर्स लि०की रजिस्ट्री ता० १ दिसम्बर सन् १९२० ई० में करायी गयी थी, इसके व्यवसायमें ६ लाख ५३ हजार १ सौ की वसूल पंजी लगी हुई है। इनके यहाँ चाँदी सोनेके वर्तन

शील्ड, मेडल, घड़ी तथा विशेष अवसरोंमें उपहार देने योग्य सभी प्रकारकी मूल्यवान वस्तुओं तथा जवाहिरातका काम होता है। इसका आफिस यूसुफ विल्डिङ्ग चर्चगेट स्ट्रीट फोर्टमें है।

वाद्य यंत्र

(१) रोज एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २४ जून सन् १९२२ ई० में ५ लाख की स्वीकृत पूंजी घोषित कर करायी गयी थी। इसके यहां सभी प्रकारके बाजे मिलते हैं। यह कम्पनी स्वयं बाजे तैयार भी कराती है। इसका आफिस रैम्पर्ट रोड फोर्टमें है।

(२) विलोफोन कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० १७ मार्च सन् १९२० ई० में करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ ला० ५० हजारकी घोपित की गयी थी। इसके यहां ग्रामोफोन और उनका सभी प्रकारका सामान मिलता है। इसका आफिस फोर्टमें है।

(३) वाम्बे रेडियो कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० २ दिसम्बर सन् १९२६ ई० को बेतारके तार द्वारा समाचार भेजने तथा उनके उतारने योग्य स्थल तैयार करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी १ लाख है। इसने रेडियोके द्वारा दूर देशोंमें होने वाले गाने और बजाने का सुरीला राग घर बैठे सुन सकनेकी पूरी व्यवस्था की है। इसका आफिस मैरीन लाइन्स क्वीन्स रोडपर है।

बेतारका तार

(१) इन्डियन ब्राड कास्टिङ्ग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० १ जून सन् १९२६ ई० को करायी गयी थी। इसका उद्देश्य जन साधारणके लाभार्थ बेतारके तार द्वारा सभी विषयोंका समाचार भेजना है। इसकी स्वीकृत पूंजी १५ लाख की है। इसकी सफलतासे व्यवसायको बहुत अधिक लाभ होनेकी आशा है। इसका आफिस ३४।३८ अपोलो बन्दर रोड फोर्टमें है।

मोटर कम्पनी

(१) फोर्ड:मोटर कम्पनी आफ इण्डिया लि०की रजिस्ट्री ता० ३१ जुलाई सन् १९२६ ई० को करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २५ लाखकी घोषित की गयी है। इनके यहां मोटर तथा साइकलमें लगनेवाला सभी प्रकारका सामान और उनके पुर्जे मिलते हैं। ये मोटर और साइकलका व्यवसाय करते हैं। इसका आफिस कामर्स हाउस करीमभाईरोड बैलार्ड स्टेट फोर्टमें है।

(२) जेनरल कार्पोरेशन लि०की रजिस्ट्री ता० ४ अगस्त सन् १९२६ ई०में ३ लाखकी स्वीकृत पूंजी घोपित कर करायी गयी थी। इनके यहां मोटर, साइकल और उनके सामानका व्यवसाय होता है। इसका आफिस रणछोड़ भवन लेमिङ्गटनरोडपर है।

(३) आटोमोबाइल कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता० २६ मार्च सन् १९१२ ई०में मोटर तथा

उसका सामान एवं उसके कल पुर्जे बेचनेका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ३ लाखकी घोषित की गयी है। इसका आफिस ५-१२ कीन्सरोडपर है।

(४) ए०हाईलैंड लि०की रजिस्ट्री ता० २ फरवरी सन् १९१७ ई०में करायी गयी थी। यह मोटर और मोटरके सामानका सभी प्रकारका व्यवसाय करती हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ३० लाखकी घोषित की गयी थी। इसका आफिस फ्रेंच पुल और स्यूजेसरोडके नाकेपर है।

मोटर टायर और रबरका सामान

(१) डनलोप रबर कम्पनी (इण्डिया) लि०की रजिस्ट्री ता० १९ अगस्त सन् १९२६ ई०को करायी गयी थी। इसके यहां मोटरमें लगनेवाला सभी प्रकारका रबरका सामान मिलता है। इसकी स्वीकृत पूंजी ५०लाखकी घोषित की गई थी। इसका आफिस डनलोप हाउस अपोलो बन्दर फोर्टमें है।

बिजलीके कारखाने

(१) टाटा-हाइड्रो-इलेक्ट्रिक पावर सप्लाई कम्पनी लि० की रजिस्ट्री ता० ७ नवम्बर सन् १९१० ई०में हुई थी। इस समय इसकी वसूल पूंजी २ करोड़ ६६ लाख २७ हजार २ सौ की है।

(२) आन्ध्रवैली पावर सप्लाइ कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता० ३० अगस्त सन् १९२६ ई०में हुई थी। इस समय इसकी वसूल पूंजी २ करोड़ ८ लाख ८८ हजार ८५०रु०की है।

(३) टाटा पावर कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता० १८ सितम्बर सन् १९१९ ई०में करायी गयी थी। इस समय इसकी वसूल पूंजी ३ करोड़ ४१ ला० ७८ हजार ४२६ रु० की है।

उपरोक्त तीनों कम्पनियां अपने कारखानेमें बिजली तैयारकर कल कारखानोंको देती है। इनके आफिस बाम्बे हाउसब्रूसरोड़ फोर्टमें हैं।

टाइपराइटर

(१) रेमिङ्गटन टाइप राइटर कम्पनी (बम्बई) लि०की रजिस्ट्री ता० १६ दिसम्बर सन् १९२१ ई०में करायी गयी थी। इनके टाइपराइटर संसार विख्यात हैं। इनका आफिस यूसुफ बिल्डिंग चर्चगेट स्ट्रीटमें है। इसकी स्वीकृत पूंजी ६ लाख की है।

संगमरमर

(१) पेट्रो मिचेली पेलोग्रिनी लि०की रजिस्ट्री ता० १३ अप्रैल सन् १९१६ ई० को १ लाखकी स्वीकृत पूंजीसे करायी गयी थी। यह कंपनी संगमरमर तैयार करती है और विदेशसे भी मंगाती है। इनका आफिस २२ असिस्टनरोड अपोलो बंदरपर है।

कच्चे खनिज पदार्थ

(१) माइनिंग सिन्डीकेट लि०की रजिस्ट्री ता० ३ फरवरी सन् १९२७में करायी गयी थी यह सभी प्रकारके कच्चे खनिज पदार्थका व्यवसाय करती हैं। इसका आफिस फिनिक्स बिल्डिङ्ग बैलार्डस्टेट फोर्ट में है।

छापखाने और समाचार पत्र

( ) नेशनल न्यूज पेपर्स इण्डिया कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता० ८ अप्रैल सन् १९२६ ई० में करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ३ लाखकी घोषित की गयी है। यह कम्पनी अंग्रेजी भाषामें एक जोरदार दैनिक पत्र निकालती है। पत्रका नाम इण्डियन नेशनल हेराल्ड हैं और उसका सम्पादन श्रीयुत बी० जे० हार्नीमैन महोदय करते हैं। इसका आफिस दलाल स्ट्रीटमें है।

(२) बाम्बे क्रानिकल कम्पनी लि०की रजिस्ट्री नवम्बर सन १९२६ ई०में हुई थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २ लाखकी घोषित की गयी है। इससे बाम्बे क्रानिकल नामका एक दैनिक पत्र अंग्रेजी भाषामें प्रकाशित होता हैं। इसका पता मेडोज स्ट्रीट फोर्ट है।

(३) बेनेट कोलमैन एण्ड कम्पनी लि०की रजिस्ट्री ता २९ नवम्बर सन् १९१३ई० में हुई थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ४० लाखकी घोषित की गयी थी परन्तु शेयर बेंचकर ३५ लाख २ हजार चार सौ की रकम इकट्ठाकर वसूल पूंजीसे व्यवसाय हो रहा है। इसके यहांसे टाइम्स आफ इण्डिया दैनिक सचित्र साप्ताहिक टाइम्स और इवनिङ्ग न्यूज दैनिक ये तीन पत्र प्रकाशित होते हैं। इसका आफिस टाइम्स बिल्डिंग हार्नबी रोडपर है।

(४) फ्री प्रेस आफ इन्डिया लि०की रजिस्टी ता० १ अप्रैल सन् १९२६ ई०में हुई थी। यह समाचार पत्रोंको संसारके समाचार संग्रहकर यथा समय देनेका व्यवसाय करती है। इसकी स्वीकृत पूंजी १ ला०की है। इसका आफिस दलालस्ट्रीट फोर्टमें है।

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

बम्बईकी कुछ भारतीय कम्पनियोंका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है:—

(१) धरमसी मोरारजी केमिकल कम्पनी लि० की वसूल पूंजी३६ लाख ९५ हजार ६२५ रु० की है।

(२) कार्बन प्राउक्स लि०की वसूल पूंजी ४ लाख ९७ हजार २५० रु० की है।

नमक

(३) हाजी भाई अदन साल्ट वर्क्स लि०की रजिस्ट्री ता० २० मार्च सन् १९२३ ई० को करायी गयी थी। इसकी वसूल पूंजी १० ला० ३० हजार ७५० रु० की है।

(१) ओगले ग्लास वर्क्स लि०की रजिस्ट्री ता० २० दिसम्बर सन् १९२३ ई० को करायी गई थी। इसकी वसूल पूंजी ४ लाख ४४ हजार ६३५ रु० की है।

कृषियंत्र

(१) किर्लोस्कर बन्धु लि०—की रजिस्ट्री ता० १२ जनवरी सन् १९२० ई० को करायी गयी थी। इसकी वसूल पूंजी १२ लाख ६२ हजार रुपयों की है।

औषधालय

श्री मारवाड़ी आयुर्वेदीय औषधालय

यह औषधालय संवत् १९७० में स्व० सेठ सीतारामजी पोद्दार (मालिक फर्म चेनीराम जेसराज) और सेठ शिवनारायण सूरजमल नेमानी द्वारा खोला गया। इसमें आयुर्वेदीय और एलोप्येथिक दोनों विभाग खोले गये, पर रिपोर्टों से ज्ञात हुआ कि जनताने आयुर्वेदिक सेही विशेष लाभ उठाया, फलतः दूसरा विभाग बन्द कर दिया गया। एलोप्येथिक विभागके बन्द करदेनेपर आयुर्वेदिक विभागका खर्च बढ़ा दिया गया। इस औषधालयसे आजतक ८१०००० रोगियोंने लाभ उठाया है। १० हजार कष्टसाध्य रोगियोंने अपने रोग मिटजानेके उपलक्षमें प्रशंसा पत्र दिये हैं। इस औषधालयमें निहायत गरीबोंके लिये पथ्यादिका भी प्रबन्ध है।

इस औषधालयकी विशेष ख्याति और उन्नतिका कारण वैद्यराज पं० हनुमानप्रसादजी जोशी थे। आप सीकर (जयपुर) के निवासी थे। आपका जन्म संवत १९५४ में हुआ। आप आयुर्वेद मार्तंड पं० यादवजी त्रीकमजी आचार्यके प्रधान शिष्य थे। आप वैद्यकके विशारद, वैद्यशास्त्री और संस्कृत साहित्याचार्य थे। हिन्दीके आप सिद्ध हस्त लेखक और कवि थे। इसके अतिरिक्त आपने अपनी हिन्दी आयुर्वेदिक ग्रंथ मालासे कई वैद्यक विषयके ग्रंथ निकाले आपने अपने पिताजीके नामसे नंदकिशोर सस्ती पुस्तक माला स्थापित की थी। उपरोक्त ग्रंथमालासे भी कई ग्रन्थ प्रकाशित किये गये थे। आपने अपने छोटेसे जीवनमें हिन्दी भाषा और आयुर्वेद की अच्छी सेवा की थी आपका देहावसान संवत १९८० में हुआ।

वर्तमानमें इस औषधालयका सञ्चालन पं० गजानन शर्मा वैद्य भिषग्वर करते हैं। आपकी अनुपम चिकित्सा पद्धत्तिके कारण औषधालयमें रोगियोंकी संख्या १५०-२०० तक प्रति दिन रहती है। इस औषधालयमें छुआछूतका विचार नहीं किया जाता।

जनताको शीघ्र फलप्रद, आयुर्वेदोक्त औषधि सुलभतासे मिल सके, इस उद्देशसे उक्त वैद्य महोदयने कालवादेवी रोडपर, कल्पतरु फार्मसी नामक अपना एक औषधालय भी खोला है।
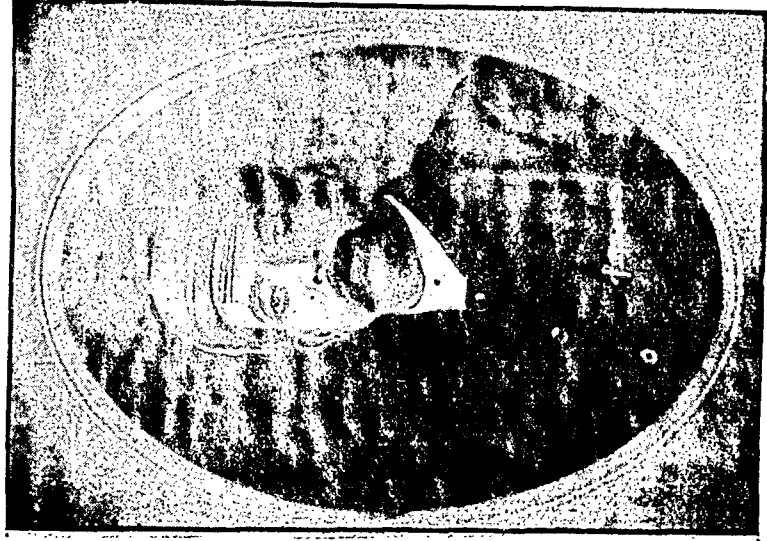
वैद्य हरिशङ्कर लाधाराम बम्बई

पं०गजाननजी शर्मा वैद्य बम्बई

स्व० पं० हनुमान प्रसादजी वैद्य बम्बई

हरिहर फार्मसी

इस औषधालयके मालिक वैद्य हरिशङ्कर लाधाराम हैं। आपने इसकी स्थापना सन् १९१२ में की। यों तो वैद्यजीका खास निवास कठियावाड़ है पर जनतामें आप अहमदावालेके नामसे विशेष परिचित हैं। आप मुत्राशयके रोगोंके, खास वैद्य हैं। इसके अतिरिक्त पांडुरोग और एनी· मियांके भी आप चिकित्सक हैं। आपको इन रोगोंका ४० वर्षोंका अनुभव हैं। आपको कई देशी रईस और अंग्रेजोंसे प्रशंसा पत्र मिले हैं। इस समय आपके ३ औषधालय चल रहे हैं। (१) हरीहर फार्मसी, हीरामहल कालबादेवीरोड–(२) वैद्य हरीशङ्कर लाधाराम, माणक चौक अहमदाबाद (३) वैद्यहरीशङ्कर लाधाराम चउटाना पुलके बाजूमें सूरत। अहमदाबादका औषधालय सन् १९०३ में स्थापित हुआ था। अभीतक करीब ३ लाख रोगियोंको आराम आपने किया है।

पब्लिक संस्थाएं

ऐनथ्रापालोजिकल सोसाइटी—(स्थापित सन् १८८६ ई०) इस सोसाइटीका कार्यालय स्थानीय टाऊनहालमें है। यह संस्था भारतमें बसनेवाली विभिन्न जातियोंके शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक विकासकी तात्विक खोज करनेके काममें लगी हुई है। यह संस्था संसारकी अन्य ऐसी ही संस्थाओंसे पत्र व्यवहार कर विचार विनिमयका कार्य भी करती रहती है। इसकी वैठकें मासिक होती हैं और उनमें उपरोक्त खोज सम्बन्धी निबन्ध पढ़े जाते हैं और तत्सम्बन्धी वाद विवाद भी होता है। इस संस्थाका सदस्य शुल्क १०) रुपया वार्षिक है।

रायल एशियाटिक सोसाइटी (बम्बईवाली शाखा)। यह संस्था सन् १८०४ ई० में बाम्बे लिटरेरी सोसाइटीके नामसे स्थापित हुई थी। परन्तु ब्रिटेनकी रायल एशियाटिक सोसाइटीसे सम्बन्ध हो जानेके कारण यह उक्त सोसाइटीकी शाखाके रूपमें बदल गयी। इसका सदस्य शुल्क ५०) वार्षिक है।

बाम्बे नेचरल हिस्ट्री सोसाइटी फोर्ट—इस संस्थाकी स्थापना सन् १८८३ ई० में भूगर्भ विद्याकी व्यवहारिक खोजमें सदस्योंके अनुभवपर विचार करने और पशुओंके सम्बन्धमें ऐतिहासिक खोज करनेके लिये हुई थी। इस संस्थाके पास एक बहुमूल्य पुस्तकालय प्राचीन और अर्वाचीन पुस्तकोंका है और कितने ही प्रकारके मृत पक्षियों, कीडे मकोड़ों, सांपों और अण्डोंका भी प्रशंस-नीय संग्रह है।

सासुन मेकैनिक इन्स्टीट्यूट फोर्ट—इसकी स्थापना सन् १८४७ ई० में हुई थी पर इसका वर्तमान नाम संस्कार सन् १८७० ई० में हुआ। यह संस्था वैज्ञानिक विषयोंकी अध्ययन सम्बन्धी सुविधाओंके लिये स्थापित की गयी थी। इसके पास वैज्ञानिक विषयकी पुस्तकोंका अच्छा संग्रह है। यहां विदेशी पत्रोंका भी अच्छा संग्रह है।

सर दिनशा मानेकजी पेटिट जिमनैस्टिक इन्स्टीट्यूट—यह व्यायामशाला भारतीय और योरोपियन विद्यार्थियोंकी शारीरिक उन्नतिके लिये खोली गयी है यहां व्यायाम सम्बन्धी ज्ञान संवर्द्धनके लिये शिक्षा भी दी जाता है और व्यायामके लिये स्वतन्त्र भी प्रबन्ध है इस व्यायामशालाका प्रबन्ध भार भारतीय और योरोपियन शिक्षकोंके योग्य हाथोंमें है।

बाम्बे सैनीटरी ऐसोसियेशन प्रिन्सेस स्ट्रीट—इस संस्थाकी स्थापना, नगरमें फैलनेवाली गन्दगीसे स्वास्थ्य सम्बर्धनकारी उपचारों द्वारा नागरिकोंकी रक्षा करनेके उद्देश्यसे हुई थी। यह संस्था, सिनेमा, भाषण, पुस्तकों, एवं हस्तपत्रों द्वारा स्वास्थ्य सम्बन्धी विज्ञानका प्रसार कर लोगोंमें सफाईका अभ्यास डालनेकी चेष्टा करती है। इस संस्थाकी ओरसे ऐसी शिक्षा देनेके लिये रात्रि पाठशालायें भी खुलीं हैं और नियमित रूपसे परीक्षाएं भी ली जाती हैं तथा प्रमाण पत्र भी दिये जाते हैं। यह भी समाज सेवा कार्य करनेका अनुकरणीय ढंग हैं। इसका कार्यालय अपने निजके भवनमें ही है वहांपर सार्वजनिक स्वास्थ्य सम्बंधी मूल्यवान पुस्तकों और यन्त्रोंका संग्रह है। इसकी ओरसे समाज सेवाका कार्य करनेके लिये दीन और अनाथ स्त्रियोंको बच्चा होनेके समय सहायता दी जाती है। उनके लिये एक रुग्णालय भी है जहां प्रसवके समय जाकर वे लाभ उठा सकतीं है। वहां उनके लिये सब प्रकारकी सुविधा है। और जबतक वे स्वस्थ नहीं हो जावें तबतक यहां निसंकोच रह सकती हैं।

जमशेदजी नसरवानजी पेटिट इन्स्टीट्यूट हार्नबीरोड—इस पुस्तकालयकी स्थापना सन् १८५६ ई० में दि फोर्ट इम्प्रूवमेन्ट लायब्रेरीके नामसे हुई थी। परन्तु श्री दीनबाई नसरवानजीने २॥ लाखका भवन इसे दे दिया और सन् १८९८ से वर्तमान नाम रखा गया। यहां पुस्तकोंका बहुत बड़ा संग्रह है।

सोशल सर्विस लीग—स्थानीय सर्वेन्ट आफ इण्डिया सोसाइटीके कार्यालयमें सैण्डहर्स्ट रोड गिरगांवपर इस संस्थाका आफिस है। इसकी स्थापना सन् १९११ ई० में समाज सेवाके उद्देश्यसे हुई थी। समाजके सम्मुख उपस्थित होनेवाले प्रत्येक प्रश्नका तात्विक रीतिसे अध्ययन व मननकर जन साधारणमें उसकी चर्चा चला विचार विनिमय द्वारा किसी विशेष निर्णयपर पहुंच समाजकी सेवामें व्यवहारिक रीतिसे भाग लेना इसका कार्य्य है। इसने वर्तमानमें (१) शिक्षा प्रसार कार्य (२) सफाई और स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्य (३) समाजकी दृष्टिसे पतित माने जानेवालों तथा कष्ट प्रपीड़ितोंकी सहायता (४) दीनहीन रोगियोंकी सेवा सुश्रुषा (५) मिल मजदूरोंके परिवारिक जीवनको सामाजिक उन्नतिकी और बढ़नेके लिये सहायता देना (६) गरीबोंकेबच्चों—राष्ट्रके भावी नागरिकोंको—स्वच्छ वायु सेवनार्थ आने जानेका प्रबन्ध करना और उनकेखेल और व्यायामकी व्यवस्था करना तथा (७) समाजमें आयी हुई खराबियोंका दूर करना इत्यादि कामोंमें गति की है।

इस संस्थाकी ओरसे चलते फिरते पुस्तकालयोंका अच्छा प्रबन्ध है। इस समय संस्थाकी ओरसे १०५ पुस्तकालयके लगभग चल रहे हैं और निर्धनी समाजको उनसे लाभ पहुंचाया जाता है श्रमजीवी वर्गके लिये इसकी ओरसे रात्रिपाठशालाओंका प्रबन्ध है। सामाजिक प्रश्नोंको लेकर सिनेमा द्वारा व्याख्यानोंका प्रवन्ध करना, होली दिवालीपर गाली बकने और जुआ खेलनेकी प्रथाको हटानेके लिये भी यह संस्था सतर्क रहती है इस संस्थाको ओरसे स्पेशल सर्विस क्वार्टरली नामका त्रैमासिक पत्र भी निकलता है।

आर्यन एज्यूकेशनल सोसाइटी—इस संस्थाकी स्थापना सन् १८९७ ई० में नौ तरुण ग्रेजुएटों द्वारा की गयी थी। आरम्भमें इस संस्थाका नाम मराठा एज्यूकेशनल सोसाइटी था। इसका उद्देश्य यह था कि शिक्षाके साथ धर्म तत्वका समावेश कराया जाय और साथ ही भारतीयोंके हाथमें पूर्ण रूपेण सम्पूर्ण व्यवस्था भार दे अल्प व्यय साध्य शिक्षाको घर घर पहुंचाया जाय। इस संस्थाने स्थानीय गिरगांवमें एक हाई स्कूल स्थापित कर अपना कार्य आरम्भ किया। आज इस संस्थाकी ओरसे कितनेही स्कूल कई महल्लोंमें चल रहे हैं। इसका सम्पूर्ण प्रबन्ध भार एक ऐसे बोर्डके हाथमें है कि जिसके सदस्य आजीवन सदस्यके नामसे सम्बोधित होनेवाले तरुण ग्रेजुएट्स हैं। और इनकी सहायता स्थायी शिक्षक करते हैं। आजीवन सदस्य और स्थायी शिक्षक वेही लोग हो सकते हैं जो स्वल्प वेतन ले (२० और २५ क्रमशः) संस्थाकी सेवा करनेके लिये प्रतिज्ञा पत्र लिख देते हैं। इस समय ६ आजीवन सदस्य और १३ स्थायी सदस्य इस संस्थाका कार्य प्रबन्ध चला रहे हैं। सन् १९२४ ई० में जो व्यवस्था समिति ५ वर्षोंके लिये निर्वाचित की गयी थी उसमें निम्नलिखित सज्जन पदाधिकारी हैं।

(१) श्रीयुत मुकुन्दराव रामराव जयकर एम० ए० एल० एल० बी० बार-एटला०, एम० एल, ए० ये दोनों ट्रस्टी हैं।
(२) पद्मनाथ भास्कर शिङ्गने बी० ए० एल० एल बी०
(३) गोपाल कृष्ण देवधर एम० ए० (प्रमुख)
(४) नारायण लक्ष्मण द्यानगुर्दे बी० ए० एल० एल० बी० (मंत्री)

बाम्बे स्टुडेन्टस ब्रदरहुडः—सन् १८८९ ई० में प्रो० एन० जी० वेलिङ्कर एम० ए० ने इस संस्थाकी स्थापना की थी। इसका प्रधान उद्देश्य संस्थाके सदस्योंकी नैतिक एवं मानसिक उन्नति कर उन्हें आदर्श नागरिक बनानेकी चेष्टा करना है। इतना होनेपर भी इ प्रवर्तककी यह कभी भी इच्छा न थी कि यह संस्था किसी विशेष प्रकारका धार्मिक या राजनैतिक आन्दोलनको उत्तेजन दे। इसके वर्तमान पदाधिकारी इस प्रकार हैं।

(१) एम० आर० जयकर एम० ए० एल० एल० बी० (प्रमुख)
(२) बी० एन० मोतीवाला बी० ए० एल० एल० बी० (उप-प्रमुख)

(३) बी० आर० भिन्डे अवैतनिक संयुक्त मन्त्री

(४) एस० पी० कबडी अवैतनिक संयुक्त मन्त्री

(५) वाई० जे० मेहरअली बी० ए०

इसका पता फ्रेञ्च पुल, चौपाटी, गिरगाम है।

बाम्बे यूनिवर्सिटी इन्फरमेशन ब्यूरो—शिक्षा समाप्त करनेकी इच्छासे विदेश जानेवाले विद्यार्थियोंको आवश्यक जानकारी करानेके उद्देश्यसे इस संस्थाकी स्थापना की गयी है। विदेशके विश्वविद्यालयोंकी जानकारीके लिये इसके मंत्रीसे पत्र व्यवहार करना चाहिये। लोगोंको ऐसी संस्थाओंसे अच्छी जानकारी उपलब्ध हो जाती है। इसका कार्यालय यूनिवर्सिटी फोर्ट बाम्बे है।

गोखले एज्यूकेशनल सोसाइटी—यह संस्था, स्व० गोपालकृष्ण गोखलेके समान शिक्षा प्रेमी और देशभक्तकी पवित्र स्मृतिमें सन् १९१८ ई० के फरवरी मासमें स्थापित की गयी थी। इस संस्थाके पास २ लाख ६० हजारसे अधिक की स्थायी सम्पति है। इसके प्रमुख टी० ए० कुलकर्णी और मन्त्री एच० एस० जोगलेकर हैं।

इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ पोलिटिकल एण्ड सोशल साइन्स—समाज शास्त्र और राजनीतिकी व्यवस्थित रूपसे शिक्षा देनेके लिये इस संस्थाकी स्थापना सन् १९१७ ई० में की गयी थी। इस संस्थाकी विशेषताके सम्बंधमें केवल इतनाही लिखना पर्याप्त होगा कि इसकी लायब्रेरीमें पुस्तकोंका बहुत अच्छा संग्रहकीहैं और यहांपर प्रायः भारतीय समाज शास्त्र और राजनीतिका विशेष रूपसे अध्यापन, होता है।

इसके प्रमुख हैं श्रीयुत के० नटराजन और मन्त्री हैं डा० बी० आर० आंबेडकर डी० एस० सी० (लंदन) बार० एट ला०

यङ्ग लेडिज हाई स्कूल—इस संस्थाकी स्थापना सन १८८९ ई० में हुई थी। इसमें प्रायः विवाहित स्त्रियां भरती की जातीं हैं। यहां आरम्भसे मैट्रिक तककी शिक्षा दी जाती है। इसके अतिरिक्त दाम्पत्य जीवन सुखमय बना सरलतया गृहस्थी चलानेके लिये आवश्यक विषयोंकी शिक्षा विशेष रूपसे या मुख्यतया दी जाती है।

इसकी प्रिन्सिपल और हेड मिस्ट्रेस क्रमशः (१) कुमारी सोना बाई० डी० दलाल और (२) कुमारी जेटबाई पी० पवरी एम० ए० हैं।

विक्टोरिया जुबिली टेकनिकल इन्स्टीट्यूटः—इसकी स्थापना सन् १८८७ ई० में हुई थी। इसका सम्पूर्ण प्रबन्ध एक ऐसे बोर्डके हाथ में है जिसे सरकार, म्युनिसिपैलिटी और मिल मालिकोंकी सभाकी ओरसे आर्थिक सहायता मिलती है। इसमें मेकेनिकल और इलेट्रिकल इञ्जिनियरिंगकी पढ़ाईके अतिरिक्त कपड़ा बुनने, रंगसाजी तथा साबुन बनानेके विषयकी भी शिक्षा होती है।

इसकी देख रेखमें लण्डनके सिटी एण्ड गिल्डस आफ लण्डन इन्स्टीट्यूट की भी परीक्षायें ली जाती हैं। इसके प्रिन्सिपल श्रीयुत ए० जे० टर्नर० जे० पी० वी० एस० सी० हैं।

(१) अन–जुमान –इस्लाम बम्बई (स्थापित सन् १८७५ ई० ।) इसका कार्यालय बोरी बन्दर स्टेशनके सामने है। इसकी नगरमें तीन शाखाएं हैं जहां इस्लामी सभ्यता और संस्कारको सुदृढ़ करनेवाले सिद्धान्तोंका प्रचार प्रारम्भिक शिक्षा द्वारा किया जाता है। इसकी ओरसे बोरी बन्दर वाले निजके विशाल भवनमें मैट्रिक तककी शिक्षा देनेके लिये एक स्कूल हैं। दूसरा स्कूल स्थानीय सैण्डहर्स्ट रोडपर उमरखाडी पोस्ट आफिसके सामने है। औरतीसरा नागपाड़ेमें मिडिल स्कूल है। इस संस्थाकी ओरसे पुस्तकालय भी हैं जहां इस्लामी साहित्यका अच्छा संग्रह किया गया है। इनमें एम० एच० मकबा लायब्रेरी और करीमिया लायब्रेरी प्रधान हैं। इस संस्थाको सर आगाखांसे पूरी सहायता मिल रही है।

कालेज आफ इन्टरनेशनल लैंगवेजेस (स्था० १९०९)—इस कालेजमें फ्रेन्च, जर्मन आदि अन्तर्राष्ट्रीय भाषाएं सिखायी जाती हैं। यहांकी शिक्षा पद्धति रोसेन्थालके ढंगकी है और वह लेंगवेजो—फॉन द्वारा दी जाती है। इसका कार्यालय प्रार्थना समाज गिरगामके पास है। इसके प्रिन्सिपल मि० एल० ए० मिन्टो हैं।

बाम्बे एजूकेशनल सोसायटी भाई खाला (स्था० १८१५ ई०)—यह संस्था इग्लैंडकी चर्चके सिद्धान्तानुसार ईसाई सभ्यताकी शिक्षा दीक्षा योरोपियन बच्चोंको देती है। इसके साथ ही उन्हें कला-कौशलकी भी शिक्षा दी जाती है जिससे वे अपनी आजीविकाके प्रश्नको हल कर समाजके लिये भार स्वरूप प्रतीत न हों। इसके प्रधान सहायक प्रन्तके गवर्नर माने जाते हैं।

दावर कालेज आफ कामर्स, लॉ, एकनामिक्स एण्ड बैंकिंग—इसकी स्थापना सन् १८९० ई० में हुई थी। इसका कार्यालय फ्लोराफाउन्टेनके पास किलेमें है। यह कालेज अपने ढंगका भारतमें निराला ही है। भारतीय नरेशोंमें महाराज गायकवाड़, महाराज मैसूर, महाराज ग्वालियर, महाराज पटियाला तथा महाराज झीन्दकी ओरसे इस कालेजमें विशेष प्रकारकी छात्रवृतियां दी जाती हैं। कई देशी राज्य अपनी ओरसे यहां छात्र भेजते हैं जो प्रमाण पत्र प्राप्त कर वहां लौट जाते हैं और आधुनिक परिपाटीपर राज्यका अर्थविभाग चलाते हैं। इस कालेजमें व्यवसाय,कानून, सरकारी अर्थविभागकी नौकरी, बैंक व्यवस्था, ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनियोंके सेक्रेटरी और अकाउण्टैन्टकी परीक्षाओंके लिये छात्र तैयार किये जाते हैं। इनमेंसे कितनीही परीक्षायें भारतमें और शेष इग्लैंडकी शिक्षा समितियोंकी ओरसे बम्बईमें ली जाती हैं। जो परीक्षायें यूरोपमें ही दी जा सकती हैं उनके लिये कालेजमें पाठ्यक्रम पूरा कराके कालेज अपनी देख रेखमें परीक्षार्थीको विदेश भेजता हैं।

इसके प्रिन्सिपल श्री एस० आर० दावर हैं आप भारतमें इस विषयके जाननेवाले अद्वितीय पुरुष माने जाते हैं। इस कालेजने अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की है।

सिडेनहम कालेज आफ कामर्स एण्ड एकनामिक्स—यह कालेज सरकारी है और इसका
भवन बोरी बन्दरके पास हार्नवी रोडपर है। इस कालेजकी स्थापना योरोप और अमेरिकाके समान
उन्नत शिक्षा पद्धतिके अनुसार शिक्षा देनेके लिये की गयी है। दावर कालेजकी भांति ही इसमें भी
विषय क्रम रखा गया है। भारतमें यह एक ही कालेज है जो बी. काम. की परीक्षाके लिये
परीक्षार्थी तैयार करता है। यह कालेज बम्बई विश्वविद्यालयसे सम्बद्ध है।

सर जमशेदजी जीजी भाई स्कूल आफ आर्ट—यह स्कूल भी सिडेनहम कालेजके पास
ही हार्नवी रोडपर है। इसकी स्थापना सन् १८५७ ई० में हुई थी। सरकारने इसका
विशाल भवन बनवाया और अध्यापकोंकी व्यवस्था की, तथा इसके चलानेके लिये सर जमशेद-
जी जीजी भाई प्रथम बैरोनेट एक लाखका दान दिया। इस स्कूलमें चित्रकारीकी शिक्षा दी
जाती है इसकी परीक्षायें विश्वविद्यालयकी ओरसे होती हैं। पाठ्य क्रम ५ वर्षका है।
विषयोंमें ड्राइंग, पेण्टिंग मोडेलिंग, इमारतें बनाना और डिजाइन तैयार करना आदि मुख्य
हैं। इसके साथ ही छोटासा कारखाना है जहां विद्यार्थियोंको कुर्सी मेज अलमारी सादी और
फेन्सी तैयार करने, लकड़ी और पत्थरकी नकाशी, धातुका काम, कमरा सजाना तथा गलीचा बनाने
आदिकी व्यवहारिक शिक्षा दी जाती है। मिट्टीके वर्तन और सभी प्रकारके खिलौने तैयार करने और
चित्रकलाका विशेष रूपसे अध्ययन करनेके लिये इसमें विज्ञान विभाग भी है। भारतीय और
योरोपीय ललित कलाकी मन मोहक वस्तुओंका संग्रहालय भी इसमें है।

ऐकवर्थ लेपर असाइलम—माटुंगा—यह संस्था कोढ़ियोंके लिए सन् १८९० ई. में स्थापित
की गई थी। इसका सम्पूर्ण प्रबन्ध भार यहांकी नगरसंस्था म्युनिसिपल कार्पोरेशनके हाथमें है।
उसकी आर्थिक सहायतासेही सब कार्य चलता है। म्युनिसिपल कमिश्नर ही इसके प्रमुख रहते हैं।

विक्टोरिया मेमोरियल स्कूल फार ब्लाइण्ड—इस स्कूलकी स्थापना सन् १९०२ ई० में अन्धोंके
लिए की गयी थी। यह स्कूल तारदेवमें है। यहांपर गुजराती और मराठी भाषाका लिखना पढ़ना
सिखाया जाता है। इसके साथ संगीत और अन्य कला कौशलकी भी शिक्षा दी जाती है जिनमेंसे
कपड़ा सीने कुर्सी आदि बुनने और फीते बिननेका काम विशेष रूपसे सिखाया जाता है।
इस स्कूलको सरकारकी ओरसे १५००) रु० और स्थानीय नगर संस्थापककी ओरसे २०००) की
आर्थिक सहायता वार्षिक मिलती है।

इसके प्रिन्सिपल—डा० नीलकान्त राय दयाभाई एल० एम० एण्ड एस० (स्वयं अन्धे)
हैं।

इथोनिक फार्मसी—गिरगाम—यह संस्था भी अपने ढंगकी एक ही है। इसके व्यवस्था—
प्रबन्धक मि० एम० जे० गज्जर एम० ए० हैं। यहां पर देशी जड़ी बटियोंसे आधुनिक वैज्ञानिक

पद्धतिके अनुसार औषधियां तैयार करनेकी खोजका कार्य होता है। यह वैज्ञानिक दृष्टिसे बड़े महत्वके विषयका उहापोह कर तात्विक खोजमें लगा है।

बाम्बे वेटेरिनरी कालेज, परेल—यह संस्था भी बम्बई सरकारकी ओरसे चल रही है। इसमें विद्यार्थियोंको पशुपालन और पशु चिकित्साकी शिक्षा दी जाती है। पशुओंकी चिकित्साके लिए बाई सकरबाई दीनशा पेटिट हास्पिटल हैं। इसीकी देख रेखमें यहांके परीक्षार्थियोंको पशु पालन तथा पशुचिकित्सक विषयोंकी व्यवहारिक शिक्षामें विशेष ज्ञान प्रदान करनेका प्रशंसनीय प्रबन्ध भी किया गया है। यहीं पर सरकारी और देशी राज्यों तथा नगर संस्थाओंमें कार्य करनेवाले दायित्व पूर्ण कर्मचारियोंके पदकी भी शिक्षा दी जाती हैं।

बाम्बे इन्स्टीट्यूट फार डेफ एण्ड म्यूट—यह संस्था बहिरे और गूंगे लोगोंकी शिक्षाकी व्यवस्था करती है। इसका स्कूल नेसविटरी मझगांवमें है। इसकी स्थापना सन् १८८५ में हुई थी। यहां सभी जाति—और सभी श्रेणीके गूंगे और बहरे स्त्री पुरुष भर्ती किए जाते हैं। पुरुषोंके लिए छात्रनिवास भी है। शिक्षा मुफ्तमें दी जाती है और मुफ्तमें ही खाने पीनेका भी प्रबन्ध होता है।

टिम्बर मरचेंट्स

अब्दुल लतीफ़ हाजी लतीफ ३६ सेकसरियारोड, भायखला
अहमद उस्मान १०६ लोहारचाल
अहमद सकुर एण्ड को० विक्टोरिया रोड
गणपतराय रुकमानन्द
दलाल एण्ड को० री रोड
दुर्लभदास एण्ड को० रामचन्द बिल्डिंग प्रिन्सेस स्ट्रीट
देसाई ब्रदर्स ठाकुरद्वार रोड
धरसी आस एण्ड को० री रोड, टैंक बन्दर
बृजमोहन बनवारीलाल री रोड
वालेस एण्ड को० वालेस स्ट्रीट
भगवानदास बागला रायबहादुर
श्यामलदास पुरुषोत्तमदास १ ग्वादा नाका कालवा देवी

संगमरमरके व्यापारी

जीजाभाई के० एण्ड सन्स बैंक स्ट्रीट
बम्बई टाईल मार्ट २१ बैंक स्ट्रीट

भोगीलाल सी० एण्ड को० १७ एलिफंस्टन रोड
बालमेर एण्ड को० ११ स्याम स्ट्रीट
वार्डर एण्ड को० २७ हमाम स्ट्रीट
साजन एण्ड को० टेमरिन्ड लेन फोर्ट
सीताराम लक्ष्मण एण्ड सन्स तारदेव

मोटर एण्ड साईकल डिलर्स

अलबर्ट साईकल वर्क्स ६९ बाजार गेट स्ट्रीट
एशियन मोटरकार एण्ड को० सैंडहर्स्ट रोड
एक्सी मैन्युफेक्चरिंग एण्ड को०लि०सैंडहर्स्टरोड
थानवाला एण्ड को० १३२।१३४ कालवा देवी
पटेल एन० डी एन्ड को० ५।६ गामदेवी
पारामाउंट मोटर एण्ड को० हार्नबी रोड
बम्बई मोटर ट्रेडिंग कम्पनी ५८ सैंडहर्स्ट रोड
बम्बई मोटर ट्रेडिंग सर्विस प्रिन्सेस स्ट्रीट
बम्बई मोटरकार एण्ड को० अपोलो बन्दर
रतीलाल एण्ड को० गोल बिल्डिंग फ्रेंच ब्रीज
लेमिंगटन साइकल एण्ड मोटर कम्पनी
सफी ओटो मोबाईल्स सैंडहर्स्ट रोड

मशीनरी-मरचेंट्स

आदम एण्ड बस्तावाला हांगकांग बैंक चर्चगेट
अलफर्ड हारबर्ट लि० अमरचन्द बिल्डिंग
आनन्दराव भाऊ एण्ड को० २५।२६ चर्चगेट
आर्देशिर मादी एंड को १६४ बोहरा बाजार फोर्ट
आर्देशिर रुस्तमजी एन्ड ब्रदर्स अब्दुल रहमान
एन्डरसन गी० डी० एण्ड को० १३४ मेडो स्ट्रीट
एकमी मेन्युफेक्चरिंग कम्पनी स्टीटर रोड
एडवर्ड साईकल एन्ड को० हादी सेठ हाऊस
इण्टर नेशनल प्रोडक्ट्स कारपोरेशन P. B. ६६६
केरावाला एन्ड को० ५ मुजबन रोड
कुरवा एन्ड कजाजी १४२।१४४ अब्दुल स्ट्रीट
ग्रीम्स काटन एन्ड को० फौक्स स्ट्रीट
गुजराती टाईप फाउंडरी गोलवाड़ी गिरगांव
जनरल इन्जिनियरिंग कम्पनी, अपोलो स्ट्रीट
जापान ट्रेडिंग एन्ड मेन्युफेक्चरिंग कम्पनी
डंकन स्टेटन एन्ड को० ५ बैंक स्ट्रीट
दीनशा एन्ड फाहनजी एन्ड ब्रदर्स अपोलो स्ट्रीट
धनजीशा एम० दुरुखनवाला एन्ड को०
नारियलवाला कोपर एन्ड को० ४६ एलफिंस्टन
नौरोसजी वाडिया एन्ड सन्स होम स्ट्रीट
फ्लावर जैन एन्ड को० हार्नवी रोड
फिरोज एच० मोतीभाई एन्ड को०
बाटलीवाला एम० एम० एन्ड को० एल० सरकल
महेन्द्र एन्ड को० कोठारी मेन्शन जी. पी. ओ.
मार्सलैंड प्राइस एन्ड को० लि० नेसवी रोड
एम. एच. दीनशा एन्ड को० ग्रीन स्ट्रीट फोर्ट
रुस्तमजी नौरोजी वापसोला १० फोर्बस्ट्रीट फ़ोर्ट
रचार्डसन एन्ड क्रइस ६३८-६३९ पटेलरोड
विठ्ठल पुरुषोत्तम एंड सन्स अपोलो स्ट्रीट
शा०एन्ड को० घाट कूपर
शोराबजी शापुरजी एन्ड को० एशियन बिल—
डिंग ३ फौल रोड
सेन्ट्रल कामर्शियल एन्ड को० पारसी बाजार
होरमसजी सोराबजी एन्ड को० हम्माम स्ट्रीट

मिल-जीन स्टोअर सप्लायस

आर्देशिर एच० वाडिया एन्ड को० अपोलो ट्रीट
आत्माराम एण्ड को० ८२ नागदेवी क्रास स्ट्रीट
ओकना टेडिंग एन्ड मेन्युफेक्चरिंग कम्पनी
लि० २४ एलफिंस्टन सर्कल फोर्ट
ईश्वरदास जगमोहनदास एन्ड को० अपोल स्ट्रीट
कुंवरजी देसाई एन्ड को० १५४ लोहार चाल
जनरल मिल सप्लाई एन्ड को० १६६ फोर्ट स्ट्रीट
जगमोहन श्यामलदास एन्ड सन्स ११ टेमरिन्ड
लेन, फोर्ट
देवजी हीरजी एन्ड को० नाग देवी क्रास लेन
दीनशा मास्टर एन्ड को० नागदेवी स्ट्रीट
दोसाभाई दोरावजी इंजिनियर अपोलो स्ट्रीट
फिरोजशा एंड को० नागदेवी स्ट्रीट
बेली पेटरसन एन्ड को० लि० मैडो स्ट्रीट फोर्ट
मंगलदास अमीन एन्ड को० ३२ अपोलो स्ट्रीट
एम. एच. दीनशा एण्ड को० ग्रीन स्ट्रीट
मायाशंकर थैकर एन्डको ३ ४६ ए अपोलोस्टीट
लालदास मगनलाल एन्ड को० १०३ मेमनवाला
लूकमानजी कमरुद्दीन डाकर स्ट्रीट उमर खेड़ी
शांतिलाल एंड को० २६ फोर्ट स्ट्रीट
सोरावजी पेस्तनजी किरानी कर्नाक रोड
सेठना कंट्राक्टर एन्ड को० ५६ टेमरिंड लेन
हरमुखलाल एन्ड को० ३३ टेमरिंड लेन फोर्ट
हैदर भाई इस्माईलजी एन्ड को० २०८ नागदेवी
हीरालाल गोकुलदास दलाल एन्ड को०

शक्करके व्यापारी

अजीम हाजी गुलाम अहम्मद काजी सैय्यद स्ट्रीट
उत्तमलाल हरगोविन्द " "
हाजी उस्मान हाजी अहमदगनी हाजी अहमद
मेमनवागरोड
जकरिया हाजी जान महमद नागदेवी स्ट्रीट
दलचाराम नानचन्द काजी सैय्यद स्ट्रीट
दामजी देवसिंह " "
देवशंकर दयाशंकर " "

मथुरादास रौजी काजी सैय्यद स्ट्रीट
मोतीलाल रंगीलादास " "
मोतीलाल हीरालाल " "
लालूभाई हरजीवन " "
हीरालाल गणेश " "

ग्रामो-फोनके व्यापारी

आर्देशीर होरमसजी चर्चगेट स्ट्रीट
पटेल ए० एन्ड को० कालबादेवी रोड
बम्बई फोन एण्ड जनरल एजंसी कालबादेवी रोड
रामचंद्र टी० सी० ब्रदर्स " "
लैमिंगटन साईकल एन्ड ग्रामोमार्ट चर्चगेट
वर्मा जे० एण्ड को० कालबादेवी रोड
वाटसन एण्ड को० " "

वाच-मरचेंट्स

अब्दुल कादिर अहमद अली एण्ड को० अब्दुल रहमान स्ट्रीट
इस्टर्न वाच एण्ड को० हर्नबी रोड
एशियन वाच एण्ड को० बाज़ारगेट स्ट्रीट
कॉमर्शियल वाच एण्ड को० मेडो स्ट्रीट
कारोनेशन वॉच एन्ड को० "
जमशेदजी नौरोजजी एन्ड को० अब्दुल रहमान
मेसानिया एफ. एन ब्रदर्स अब्दुल रहमान स्ट्रीट
रोशन वाच एन्ड को० गिरगांव रोड
वर्ग वाच एन्ड को० किंग्ज बिल्डिंग, हार्नबी रोड
वेस्ट एण्ड वाच एण्ड को० ४६ एप्लेनेड रोड
शापुरजी रुस्तमजी बाजारगेट
स्टैंडर्डवाच एण्ड को० सैंडहर्स्ट रोड
स्वीस वाच वर्क्स ५ लेमिंगटन रोड

कांचके समानके व्यापारी

अब्बास एण्ड को० १२७ अब्दुल रहमान स्ट्रीट
अब्दुल रहीम भाई एण्ड को० " "
अलिमहम्मद बाल एण्ड को० चौक स्ट्रीट
इब्राहिम जेन्सी, एण्डको० भण्डारी एण्ड चौक स्ट्रीट
इस्माईल इब्राहिम ब्रदर्स ११२ चौक स्ट्रीट
इब्राहिम कासिम एण्ड को० चौक स्ट्रीट
पन्नासी साली महमद एण्ड को० चौक स्ट्रीट
बम्बई ग्लास मेन्युफेक्चरिंग को० नेगामरोडदादर
मुलकर एण्ड सन्स
रशीद ए० एण्ड को० चौक स्ट्रीट
लालजी दिवारजी एण्डको० भण्डारी स्ट्रीट, मांडवी
वेस्टर्न इण्डिया ग्लास वर्क्स लि० अपोलो स्ट्रीट

लोहे के व्यापारी

अलबिअन आयरन वर्क्स १ कारपेंटर स्ट्रीट
ओमिय फाउंडरी एण्ड इञ्जिनियरिंग वर्क्स
एम्प्रेस आयरन एण्ड ब्रास वर्क्स कैनाटरोड
केरावाला सी० डी० एण्ड को० कालाचौकी रोड़
जफ्फर भाई दाता भाई आयरन फाउंडरी
जामी एण्ड को आयरन एण्ड ब्रास फाउंडरी,
टाटा आयरन एण्ड स्टील को० लि० हार्नबीरोड
ताराचन्द एण्ड मसासी फॉकलैंड रोड
दीनशा आयरन वर्क्स कैनाट रोड
धनजीशा एम० दारुनखावाला आरथररोड
नानू ब्रास वर्क्स ठाकुरद्वार रोड गिरगांव
नार्थ ब्रुक आयरन एण्ड ब्रास फाउंडरी कुम्हारवाड़
प्राविंशियल आयरन एण्ड ब्रास वर्क्स लैमिंगटन रोड
पाठक एण्ड बालचन्द लि० १५८ फारास रोड
बम्बई कास्ट आयरन ब्रेजिंग कम्पनी डी. लिस्ली रोड, चींचपोकली
महमद अली महमद भाई आयरन वर्क्स रिपन रोड

तिजोरियोंके व्यापारी

लाला कानीलाल एण्ड सन्स अब्दुल रहमानस्ट्रीट
गाडरेज एण्ड बाईस मैन्युफेक्चरिंग को० गैसवर्क्स
गाडरेज एण्ड बाईस मैन्युफेक्चरिंग को० अब्दुल रहमान स्ट्रीट
जोशी एण्डको ग्रेंटरोड
ज्योतिचन्द्र हीराचन्द तिजोरी वाला भण्डारी स्ट्रीट
पायोनीर लॉक वर्क्स कस्टम हाउस
महमद नूर अहमद क़ीकास्ट्रीट
महमद याकूब हाजी इस्माईल कीका स्ट्रीट
भोगीवाला लालूभाई हेमचन्द्र मसजिद बन्दररोड
हीराचन्द मंच्छाराम १३१ गुलालवाड़ी पींजरा-पोल स्ट्रीट

ब्रास फाउण्डर्स

इस्टर्न आयरन एण्ड ब्रास फाउंडरी एण्ड शिपमेंट को० वेलासिस्रो रोड
एम्प्रेस आयरन एण्ड ब्रास वर्क्स कैनाटरोड भायखला
एलकाक्क एशडाऊन एण्ड को० लि० मभगाँव
कासिम विश्राम पूंजा महमदी मेंशनभिंडी बाजार
गहगन जिश्रो एन्ड को० जेकाब सरकल
डिक्सन एण्ड को० एच० आय० लि० मझगांव रोड
बाम्बे फ्लोटिंग वर्क्स शाप लि० मल्लेटरोड बाड़ी
रिचर्डसन् एण्ड क्रूड्स भायखला
स्टेन्डर्ड मेटल वर्क्स आफिस ३२ चर्चगेट

कारपेट डीलर्स

इंडियन कारपेट रग्ज एण्ड टॉईल मेन्यूफेक्चरिंग को० १६७५ कमाठीपुरा स्ट्रीट भायखला
ईसरदास टिलूसिंह ४ बाटरलू मेन्शन अपोलो बंदर
ओरियंटल कारपेट डिपो मेडो स्ट्रीट
ए० एम० नूरभाई एण्ड को० शेखमैमन स्ट्रीट
ताराचन्द परशुराम मेडो स्ट्रीट
धन्नामल चेलाराम ६२।६४ मेडो स्ट्रीट
पोहमल ब्रदर्स अपोलो बन्दर
मुरलीधर संतदास कार्तिकी बिल्डिंग कर्नाक बन्दर
सी० एम० मास्टर एण्ड को० लैंसडोने रोड

सिमेंट-कंपनियां

इंडिया सिमेंट कम्पनी लि०—एजंट ताता संस एण्ड को० २४ ब्रूस स्ट्रीट, फोर्ट
इंडिया हालो कंकेरी को०मेडलरोड, दादर बाम्बे
कान्ति सिमेंट एण्ड इंडस्ट्रीयल को० लि०—एजंट सी० मेक्डानल्ड लक्ष्मी बिल्डिङ्ग बेलार्ड रोड
कोपटी एण्ड को०—एजंट एच० एस०। ग्रीन—स्ट्रीट, फोर्ट
जबलपुर पोर्टलैंड सिमेंट कम्पनी लि०—एजंट, सी० मेक्डनल्ड बेलार्ड रोड
द्वारका सिमेंट कम्पनी लि० रामपार्ट रो
पंजाब पोर्टलैंड सिमेंट कम्पनी लि०—एजंट किल्लोक निक्सन एण्ड को० होम स्ट्रीट
बूंदी पोर्टलैंड सिमेंट को० लि०—एजंट किल्लीक निक्सन एंड को० होम स्ट्रीट
मुरागलिया एण्ड को० एफ् एलिफंस्टिन सर्कल
सी० पी० पोर्टलैंड सिमेंट को० लि०—एजंट शापूर जी पालन जी एंड को ७० मेडो स्ट्रीट
शाहाबाद सिमेंट कम्पनी लि०—एजंट ताता संस लि० नवसारी बिल्डिङ्ग हार्नबीरोड

पेपर मरचेंट्स

अब्दुल हसन कीकाभाई पारसी बाजार
आदम एण्ड बस्तावाला हांगकांग बैंक फोर्ट की
गुण्डालाल नाथूलाल एण्ड को०
गुञ्जावाला एच० ई० ब्रदर्स ३४ मिर्जा स्ट्रीट
कृष्णा पेपर मार्ट २६ मंगलदास रोड
खान भाई जीवाजी ब्रदर्स सैंडहर्स्ट रोड
चौधरी ब्रदर्स एण्ड को० अकबर बिल्डिंग हार्नबी रोड
जान डिक्किन्सन एण्ड को० फोर्ट
पदुमजी डी० एंड को० २५ ऊडबीरोड फोर्ट
बम्बई स्टेशनरी मार्ट पारसी बाजार
बालमेर एण्ड को० ११ हमाम स्ट्रीट
सराफ़अली मैमून जी कस्टम हाउस रोड
सुदामा पेपर मार्ट ११० पारसी बाजार
शीराज एण्ड को० पारसी बाजार

फोटो ग्राफीका सामान बेचने वाले

आर्मि एन्ड नेवी को० आपरेटिव्ह सोसायटी
इमाम एण्ड को० हमाम रोड
कान्टिनेन्टल फोटो स्टोअर्स २५३ हार्नबी रोड
नन्दकर्णकी एण्ड को० करनाक रोड
प्रभाकर ब्रदर्स १०५ एस्प्लेनेड रोड
फोटो स्टोअर्स कालबा देवी
हाटन बूचर लि० ४ क्विन्स रोड

———

मध्य-भारत

CENTRAL-INDIA

इन्दौर

इन्दौरका ऐतिहासिक परिचय

जिस स्थानपर आज इन्दौरकी सुन्दर, रमणीक और ललित बस्ती बसी हुई है, कुछ समय पूर्व, अर्थात् अठारहवीं शताब्दीके अन्ततक यह स्थान उजड़े हुए जङ्गल और छोटी २ बस्तियोंके रूपमें दिखलाई देता था। जो स्थान इस समय जूनी इन्दौरके नामसे प्रसिद्ध है वही हिस्सा उस समय पूरी इन्दौर कहलाता था। मगर कुछही दिनों पश्चात् सन् १८१८ में इस स्थानका भाग्य चमका, और इसके भोगौलिक महत्वको समझकर प्रसिद्ध होलकर वंशने यहांपर अपनी राजधानी स्थापितकी। देवी अहिल्याबाईके पूर्व जो इन्दौर एक छोटेसे गांवके रूपमें दिखलाई देता था वही देवी अहिल्याबाईके समयमें शहरके रूपमें परिवर्त्तित होगया, उसदिनसे आजतक यह शहर बराबर अपनी उन्नति करता चला जारहा है। इन्दौर शहरका इतिहास देवी अहिल्याबाईके जीवनकी शान्त और दीप्तिमान किरणोंसे परिप्लावित है। जिनका नाम संसारके इतिहासमें ध्रुवनत्रक्षकी तरह स्थिर और दैदीप्यमान है। इसशहर उन्नतिमें जहां और भी कई अच्छे २ कारण हैं वहां इसकी भौगोलिक परिस्थिति इस भी की उन्नतिका एक महत्व पूर्ण और प्रधान कारण है। यह शहर मालवेकी सुन्दर और सुजलां, सुफलां भूमि पर बसा हुआ है। नर्मदा,चम्बल,आदिबड़ी २ नदियां,और विन्ध्याचलका रमणीक पहाड़ इसके आसपास आया हुआ है। इसके आसपासकी भूमि बड़ी सरस और उपजाऊ है। इस भूमिमें सभी प्रकारकी फसलें अच्छी उत्पन्न होती हैं यहांके विषयमें यह कहावत प्रसिद्ध है—"मालव धरती गहर गम्भीर,मग मग रोटी पगपग नीर"। इसके अतिरिक्त बम्बई,अहमदाबाद, भडौच,इत्यादि व्यापार के प्रधान २ केन्द्र यहांसे बहुत समीप पड़ते हैं। इन्हीं सब भौगोलिक परिस्थितियों तथा व्यापारके प्रति राजकीय उदारता, इत्यादि कई कारणोंने मिलकर इस शहरकी व्यापारिक उन्नतिमें बहुत सहायता दी है।

इन्दौरका व्यापारिक विकास

जिन लोगोंने इन्दौर शहरकी व्यापारिक उन्नतिपर गम्भीरता पूर्वक विचार किया है वे भली प्रकार जानते हैं कि इस शहरकी आर्थिक और व्यापारिक उन्नतिमें अफीमके व्यवसायका कितना गम्भीर और महत्व पूर्ण हाथ है। जिन दिनों मालव प्रान्तमें अफ़ीमके बोनेपर किसी प्रकारका बन्धन न था, उन दिनों इंदौर न केवल मालवेका ही प्रत्युत सारे भारतका एक प्रधान अफ़ीम-केंद्र हो रहा था। इस राज्यमें अफीम बहुतायतसे पैदा होती थी, इसके आसपासकी सब अफीम यहांपर आती थी और इस कारणसे यहांकी फर्मोंके अतिरिक्त बाहरकी भी बहुतसे व्यापारियोंकी फ़र्मसें यहांपर अफ़ीमका बिजिनेस करनेके लिए खुलगईं थीं। इस व्यवसायके द्वारा इंदौरकी आर्थिक परिस्थितिको गहरालाभ पहुंचा, और कई बड़े २ व्यापारियोंकी फर्म्स यहांपर स्थायी रूपसे जमगइ। एक प्रकारसे यों कहा जा सकता है कि जिस प्रकार अमेरिकन सिविलवारके प्रभावसे बम्बईकी आर्थिक परिस्थितिमें एक प्रकारका युगान्तर होगया, उसी प्रकार कुछ: कम तादादमें अफ़ीमके व्यवसायके प्रभावसे इस शहरकी भी व्यापारिक परिस्थितिमें एक प्रकारका युगान्तर सा हो गया और जिस प्रकार अमेरिकन सिविलवारके एकाएक बन्द हो जानेसे बम्बईकी आर्थिक परिस्थितिको एक आक्रमण कारी धक्का लगा था, उसी प्रकार अफ़ीमके व्यवसायके बन्द होते ही, भारतके तमाम अफीमके व्यापारिक केन्द्रोंको एक प्रबल झटका पहुंचा। यहांतक कि कई केन्द्र स्थान तो हमेशाके लिये व्यापार शून्य होकर मृतकवत् हो गये। इन्दौरकी व्यापारिक परिस्थितिमें भी, इस आक्रमणकारी युगान्तरसे कुछ अन्तर पड़ा, मगर यहांपर कई दूसरी परिस्थितियां ऐसी पैदा हो गईं जिन्होंने यहांकी व्यापारिक प्रगतिको न केवल नष्ट होनेहीसे बचा लिया, प्रत्युत और भी उन्नतिके मार्गमें अग्रसर कर दिया।

बात यह हुई कि भारतमें अफीमके व्यापारके नष्ट होते ही रुई और जूटका व्यापार चमक उठा। इन्दौरके व्यापारियोंने-जिनमें मेसर्स स्वरूपचंद हुकुमचन्द, तिलोकचन्द कल्याणमल, बिनोदीराम बालचन्द इत्यादिके नाम विशेष उल्लेखनीय हैं—इस परिस्थितिको पहचान लिया और अफीमके व्यवसायके हाथसे निकलते ही रुईके व्यापारको पकड़ लिया। स्टेटने भी इस परिस्थितिको उत्तेजन देनेमें बड़ी बुद्धिमानीसे काम लिया। स्टेटमें कपासकी खेतीकी वृद्धि, और स्टेट मिलका उद्घाटन इसी बुद्धिमानीके परिणाम है। दैवयोगसे प्राकृतिक परिस्थिति भी अनुकूल हो गई। जिस भूमिमें अफीम प्रचुरतासे पैदा होती थी, उसमें कपास और भी प्रचुरतासे उत्पन्न होने लगा। यहां तक कि नीमाड़का प्रान्त तो सारे भारतके रुईके प्रधान केन्द्रस्थानोंमें गिना जाने लगा। कपासकी इस गहरी आमदनीको देखकर व्यापारियोंने तड़ाकेसे जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरियां खोलना प्रारंभ किया, इस कार्य्यमें उनको खूब सफलता प्राप्त हुई और इन्दौरके बाजारमें रुईका व्यापार शुरूके

तारेकी तरह चमक उठा। रुईके व्यापारको इस तरह चमकता देख यहाँके बड़े २ व्यापारियोंके दिलमें कपड़ा बुननेकी मिलोंको खोलनेकी इच्छा जागृत हुई।

इस इच्छाके फल स्वरूप सन् १९०९ में व्यापारियोंकी ओरसे सबसे पहले मालवा युनाइटेड मिलका पन्द्रह लाख रुपयोंकी पूंजीसे जन्म हुआ। इसके मैनेजिंग एजन्ट बम्बईके प्रसिद्ध मिल मालिक सर करीम भाई इब्राहिम और डाइरेक्टर सर सेठ स्वरूपचंद हुकुमचंद वगैरह रहे, इस मिलने बहुत अच्छी उन्नति की। जिसके फल स्वरूप सन् १९१५ में सर सेठ हुकुमचंदजीने हुकुमचंद मिलसकी स्थापना की। इसकी स्थापनाके कुछ समय पश्चात् ही प्रसिद्ध युरोपीय महायुद्धका प्रारम्भ हो गया। जिससे इन मिलोंको तरक्की करनेका सुवर्ण सुयोग मिला। सौ सौ रुपयोंके शेअर सात २ सौ रुपयोंमें बिकने लगे। मिल मालिक और शेअर होल्डर हजार पतिसे लखपति और लख पतिसे करोड़ पति होने लगे। फल यह हुआ, कि इस सफलताके कारण इन्दौरमें बहुत शीघ्र कल्याणमल मिल, राजकुमार मिल, भण्डारी मिल इत्यादि छः सात मिल नजर आने लगे। इन्दौरमें रुई और कपड़ेका व्यापार पराकाष्ठापर पहुंच गया।

इधर तो रुईका व्यापार, और मिलोंका उत्थापन इन्दौरकी व्यापारिक स्थितिको उन्नतिकी ओर ले ही जा रहा था, उधर बम्बईमें अमेरिकाके अनुकरणपर वायदेका सौदा होना प्रारम्भ हो गया। थोड़े ही दिनोंमें हाजिरके व्यापारसे भी वायदेका व्यापार बढ़ने लगा। इन्दौरके बाजार पर भी इसका जबरदस्त प्रभाव पड़ा और इन्दौरके बडे २ नामी, गरामी प्रतिष्ठित और धनवान् व्यक्तियोंने इसमें भाग लेना प्रारम्भ कर दिया। फल यह हुआ कि यहांके मार्केटमें सट्टेका व्यापार आशातीत गतिसे बढ़ने लगा, यहां तक कि बम्बईके समान जबर्दस्त कॉटन मार्केटपर भी यहां केबाजार ने अपना प्रभाव डालना प्रारम्भ कर दिया। यहां तक कि कभी २ तो इन्दौरकी खरीदी और बेचवाली-पर बम्बईके बाजारमें घट, बढ़ होने लग जाती थी। खासकर यहांके प्रसिद्ध सेठ सरूपचन्द हुकुमचन्द की धाक सारे भारतके मार्केटपर पड़ने लगी। कुछ समय पश्चात् युद्धके बन्द होजानेसे, एवं सेठ हुकुमचंद, कल्याणमल इत्यादिके सट्टा छोड़ देनेसे यहांके सट्टेके बाजारमें शिथिलता आ गई। फिर भी भारतके कॉटन मार्केट्समें इन्दौरके कॉटन मार्केटका एक खास और प्रभावशाली स्थान है। इसमें कोई सन्देह नहीं।

यह इन्दौरके व्यापारिक इतिहासका संक्षिप्त परिचय है। इससे पता चलता है, कि इन्दौरके व्यापारिक विकासमें यहांकी भौगोलिक, प्राकृतिक और राजनैतिक परिस्थितिका कितना जबर्दस्त हाथ है।

व्यापारिक जातियां—

इस शहरके व्यापारका अधिकांश भाग मारवाड़ी समाजके हाथमें है, यहांके बैंकर्स, मिल

व्यापारियोंका है। मारवाड़ियोंके

ऑनर्स, क्लॉथ मर्चेण्ट्स, इत्यादिमें बहुत बड़ा भाग मारवाड़ी व्यापारियोंका है। इनमें अधिकांश जनरल मर्चेण्ट्स, किरानेके
पश्चात् कच्छी और बोहरा समाजका नम्बर है। इनमें अधिकांश जनरल मर्चेण्ट्स, किरानेके
व्यापारी, लोहका सामान बेचनेवाले इत्यादि हैं।

इन्दौरके व्यापारिक स्थान

(१) काटन-मार्केट—यहां रूईका बहुत बड़ा जत्था है। यहां मौसिमके समय सैकड़ों कपासकी
गाडियां बिकनेके लिये आती हैं। मिलोंकी खरीदी होनेकी वजहसे बाहरके व्यापारी
भी अपना माल यहां विक्रयार्थ भेजते हैं।

(२) सियागंज—इन्दौर स्टेशनके समीप ही यह बाजार महाराजा शिवाजीरावके नामसे बसाया हुआ
है। इस बाजारसे बाहर जानेवाले तथा यहांपर बाहरसे आनेवाले मालपर स्टेटकी तरफसे
किसी प्रकारका कस्टम-महसूल नहीं लिया जाता। इस मंडीमें किराना,लोहा, चद्दर, तमाखू
एल्यूमिनियम तथा जनरल सामानका बहुत बड़ा व्यापार होता है। यहां लाखों रुपयोंका
माल बाहरसे आता, तथा यहांसे बाहर जाता है।

(३) जूना तोपखाना—इस बाजारमें जनरल मरचेंट्स, स्टोअर्स, केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट तथा फेन्सी
क्लाथ मरचेंट्सकी बड़ी सुन्दर तथा सजी हुई दुकानें हैं।

(४) बड़ा सराफा यह बाजार इन्दौर नगरके मध्यमें है यहांपर रूईके वायदेका बहुत बड़ा सौदा
होता है। वायदेके सौदेमें सेंट्रल इण्डियाके सब बाजारोंमें इसका स्थान प्रथम है। यहां
दिन भर बड़ी चहल पहल तथा व्यापारिक गतिविधि होती रहती है। यहां बड़े २
धनिकोंकी दुकाने हैं, तथा बैंकिङ्ग बिजिनेस भी होता है।

(५) छोटा सराफा—यह सोना, चान्दी, और जवाहरातका छोटासा तथा सुन्दर बाजार है। पहले
यहांके बनाए हुए जेवरोंमें मिलावटका बहुत अधिक अंश रहता था, लेकिन कुछ
समय हुआ इन्दौर सरकारने इस पद्धतिमें बहुत कुछ सुधार करनेका कानून बना दिया
है। सोनेचांदीके व्यापारके अतिरिक्त यहांपर शेअरोंका सौदा भी होता है।

(६) न्यू क्लोथ मार्केट—कपड़ेका यह सुन्दर बाजार बड़ी ही व्यवस्थामय पद्धतिपर महाराजा तुको-
जी रावके नामसे बनाया गया है। इस मार्केटमें इन्दौरके प्रायः सभी मिलोंकी तथा
और भी कपड़ेके बडे २ व्यापारियोंकी दुकाने हैं। इस मार्केटमें कपड़ेका बहुत बड़ा
व्यापार होता है। लाखों रुपयोंका कपड़ा यहांपर बाहरसे आता जाता है।

(७) बजाज खाना—यह कपड़ेका पुराना बाजार है। न्यू क्लाथ मार्केटके स्थापित होनेके पहले
कपड़ेके प्रायः सभी बड़े २ व्यापारियोंकी दुकानें यहांपर थीं। अब यद्यपि बहुतसी
दुकानें उस मार्केटमें चली गई हैं, तौभी यहां पर कपड़ेका अच्छा व्यापार होता है।
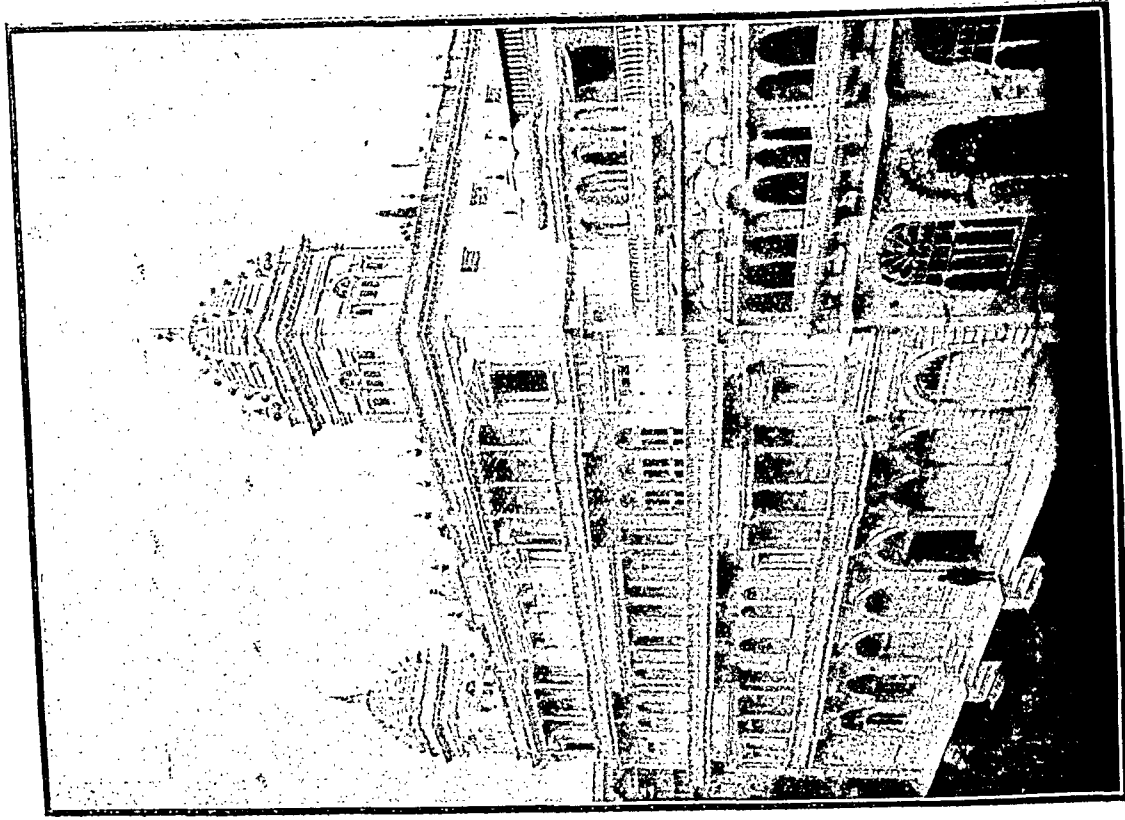
शीशमहल इन्दौर (सर से० हुकुमचन्द)
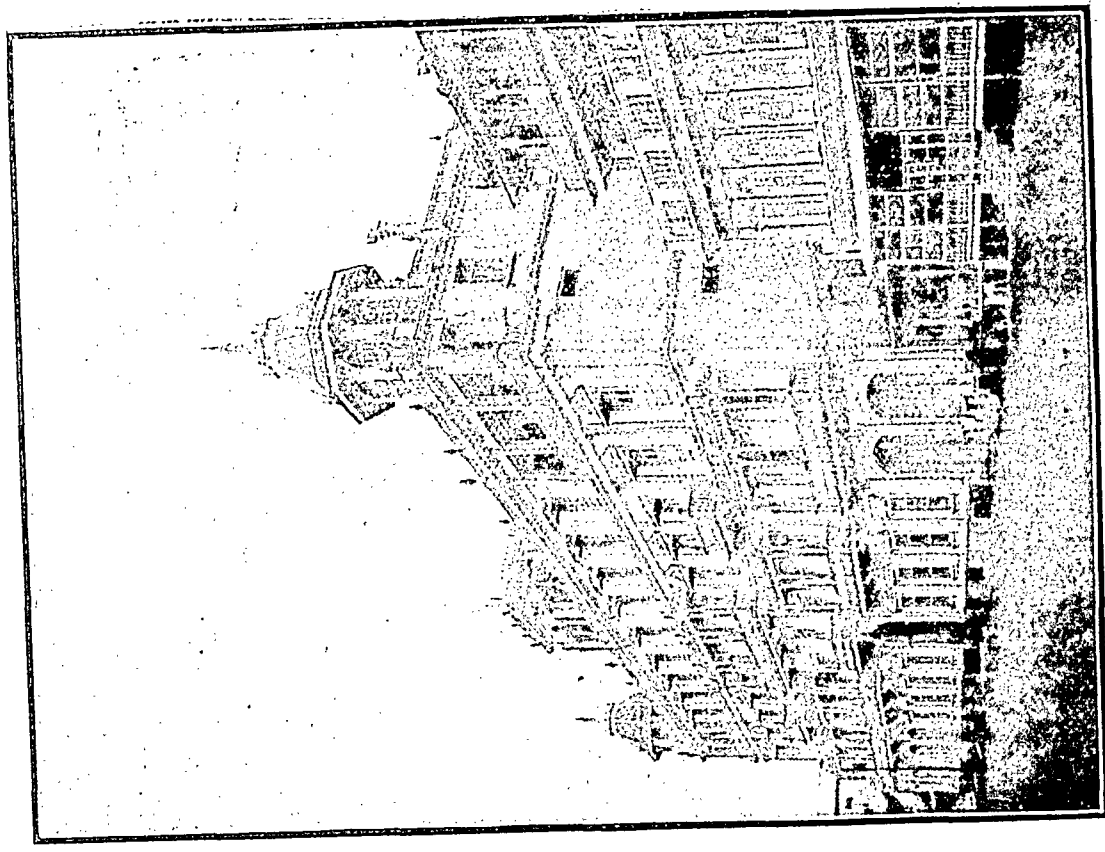
रंगमहल इन्दौर (सर से० हुकुमचन्द)

(८) कसेरा बाजार—यहां पीतलके बर्तन बनते हैं तथा बिकते हैं ।

(९) शीतला माता रोड—यहाँ इन्दौरके बड़े २ और प्रसिद्ध श्रीमंतोंकी भव्य और विशाल दुकानें बनी हुई हैं । जिनपर बैंकिंग काटन, शेअर्स आदिका व्यापार होता है ।

(१०, मल्हार गंज—यह अनाज, घी, तथा तिलहनकी बहुत बड़ी मंडी है । यहांसे लाखों रुपयोंका माल बाहर जाता है ।

इन्दौरके दर्शनीय स्थान

इस शहरमें तथा इसके आसपास कई स्थान बड़े भव्य और दर्शनीय बने हुए हैं जिनका परिचय इस प्रकार है—

(१) महलवाड़ा—(सरकारी महल) यह भव्य महल इन्दौरके ठीक मध्य भागमें बना हुआ है । इसकी गगनचुम्बी इमारत, भीतरके बड़े विशाल और कारीगरीयुक्त कमरे देखने योग्य है । इसके सामने एक अच्छा और चौड़ा मैदान बना हुआ है ।

(२) शीशमहल (सर सेठ हुकुमचंद)—यह भव्य और रमणीक महल इतवारिया बाजारमें बना हुआ हैं । इसकी भव्य और विशाल इमारत तथा इसका सुन्दर डिजाइन केवल इन्दौरमें ही नहीं प्रत्युत सारे भारतमें दर्शनीय वस्तु हैं । इसके भीतर संगमरमर और पच्चीकारीका बड़ा सुन्दर कार्य्य किया हुआ है ।

(३) सर हुकुमचंद जैन मंदिर—उपरोक्त शीशमहलके साथ ही यह मन्दिर बना हुआ है । इस मन्दिरमें कांचकी जड़ाईका काम बहुत बढ़िया किया हुआ है । रातके समय बिजलीके प्रकाशमें मन्दिरके अन्दर जाते ही एक विचित्र प्रकारकी चकाचौंध आंखोंमें उत्पन्न हो जाती है ।

(४) लालबाग पैलेस -ऐसा सुननेमें आता है कि एक्स महाराजा तुकोजी रावने इसे बड़े शौक और चावसे बनाया था । कहा जाता है इस पैलेसमें लाखों रुपयोंका फरनीचर विलायतसे मंगाकर सजाया गया है ।

(५) लाल कोठी—शहरके बाहर तुकोगंजमें बनी हुई सरकारी कोठी है । बड़ी सुन्दर और दर्शनीय है ।

(६) इन्द्र भुवन—(सेठ हुकुमचंद) शहरके बाहर तुकोगंजमें बनी हुई बड़ी रमणीक कोठी है । इसका सुन्दर डिजाइन और इसकी कारीगरी देखने योग्य हैं ।

इसी प्रकार एडवर्डहॉल, मोतीबंगला, सुखनिवास, हवाबंगला, सर सेठ सरूपचंद हुकुमचंदका झंवरी बाग, इत्यादि इमारतें भी देखने योग्य हैं ।

पातल पानी—यहांसे दो स्टेशनोंकी दूरीपर विन्ध्याचलके अञ्चलमें यह बड़ा सुन्दर स्थान है। यहांका प्राकृतिक दृश्य बहुत ही रमणीक है। बरसातके दिनोंमें यहांका दृश्य बड़ा ही अपूर्व और दर्शनीय हो जाता है। यहांपर चोरल नदीका झरना बहुत ऊंचाईसे गिरता है।

कालाकुण्ड—यह स्थानभी पातल पानीके पास ही है। यहां काले पत्थरोंसे घिरा हुआ निर्मल नीरका एक सुन्दर कुण्ड बना हुआ है।

महेश्वर—नर्मदा नदीके तीरपर बसा हुआ एक सुन्दर कस्बा है। यहांपर नर्मदाके किनारे प्रातः स्मरणीय देवी अहिल्या बाईके बनाए हुए घाट बहुत ही दर्शनीय हैं। नर्मदा नदीके अञ्चलमें सहस्रधारा नामक एक बड़ा ही सुन्दर स्थान है जहांकी प्राकृतिक छवि बहुत सुन्दर है। महेश्वरकी साड़ियां बहुत प्रसिद्ध है। यहांसे बम्बई इत्यादि, दूर २ के स्थानोंपर साड़ियां जाती हैं।

राउ—इन्दौरके पास ही एक छोटासा गांव है। इस गांवके पास बड़ा ही विशाल मैदान है यहांकी आबहवा बहुत साफ़ और अच्छी है। यहां क्षय रोगियोंके लिए एक सीनाटोरियम भी बना हुआ है। कुछ समयसे यहांपर मालव विद्यापीठ अर्वाचीन गुरुकुल नामक एक ब्रह्मचर्य्याश्रम भी प्रारम्भ हुआ है।

केदारनाथ—इन्दौर राज्यके रामपुरा नामक ग्रामसे पांच मील दूरीपर एक बहुत सुन्दर प्राकृतिक स्थान बना हुआ है। यह स्थान बड़े ऊंचे २ रमणीक पहाड़ोंके बीचमें है। यहांपर पहाड़ोंसे जल झरता रहता है। यहां पहुंचते ही प्रत्येक मनुष्यकी तबीयतका प्रफुल्लित और पुलकित होना अनिवार्य्य है।

तक्षकेश्वर—इन्दौर राज्यान्तर्गत भानपुरा ग्रामसे करीब सात माईलकी दूरीपर यह स्थान बना हुआ है। बड़े २ ऊंचे पहाड़ोंके बीचमें निर्मल जलका एक विशाल कुण्ड है। जिसमें स्फ़टिक मणिकी तरह पहाड़ोंके झरावका शुद्ध जल झरता रहता है। इस कुण्डसे तक्षकी नामक एक नदी निकलती है। इस स्थानपर औषधि सम्बन्धी जड़ी बूंटिया बहुत अधिक पैदा होती हैं। ऐसी किम्बदन्ती हैं कि आयुर्वेदके पिता महात्मा धन्वन्तरि जड़ी बूंटियोंकी खोजमें अक्सर यहां आया करते थे। एकबार इसी स्थानपर तक्षक सर्पने उनको काटा, जिससे यहीं उनकी मृत्यु हुई, तभीसे यह स्थान तक्षकेश्वरके नामसे प्रसिद्ध हुआ।

धर्मराजेश्वर—इन्दौर राज्यमें चंदवासा नामक ग्रामसे तीन मीलकी दूरीपर पहाड़ोंके बीचमें यह सुन्दर मन्दिर बना हुआ है। इसकी कारीगरी बड़ी अपूर्व और दर्शनीय है। यह विशाल मन्दिर एक ही पत्थरको कोरकर बनाया गया है।

मानिक भवन (विनोदीराम बालचन्द) इन्दौर
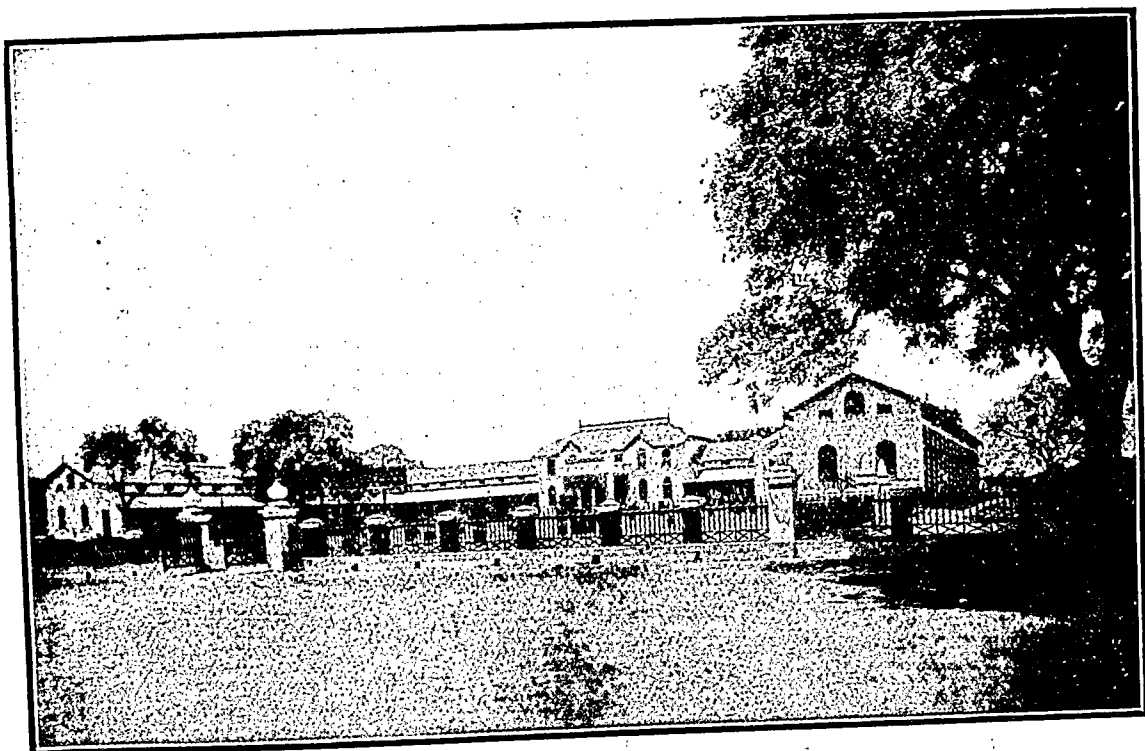
तिलोकचन्द जैन हाइस्कूल (तिलोकचन्द कल्याणमल) इन्दौर

म्युंनीसिपल कार्पोरेशन

शहरकी सफ़ाई और सुव्यवस्थाके लिए यहांपर म्यूनिसिपल कार्पोरेशन स्थापित है। इसके मेम्बर हर तीसरे वर्ष पब्लिकमें से चुने जाते हैं। यह कार्पोरेशन शहरकी सफ़ाई और लोगोंकी स्वास्थ्यरक्षाके लिए व्यवस्था करता है। फिर भी इन्दौरके सामान शहरको जितना साफ होना चाहिए उतना साफ़ वह नहीं दिखलाई देता है। इस शहरकी बसावट बहुत सङ्कीर्ण और घिचपिच है। जिससे साधारण श्रेणीके लोगोंको शुद्ध और साफ़ हवा नसीब नही होती। यहांकी बहुतसी गलियां गन्दी और दूषित वायु युक्त रहतीं हैं। नगरकी सदर सड़कें भी जितनी साफ़ होना चाहिए उतनी साफ़ नहीं हैं। किसी मोटरके पाससे होकर गुजरते ही, उससे उड़नेवाली धूलसे रास्ता चलनेवालोंको परेशानी हो जाती हैं। जब कि जयपुर इत्यादि शहरोंमें, सड़कोंके सुधारकी ओर इतना ध्यान दिया जा रहा है, वैसी हालतमें इन्दौरके समान वढे हुए शहरमें इस प्रकारका सुधार न होना आश्चर्य्य जनक बात है। इन्दौरकी गवर्नमेण्ट, और म्युनिसिपल कार्पोरेशनको शहरकी सफाई और सड़कोंके सुधारकी ओर अवश्य ध्यान देना चाहिए। गर्मीके दिनोंमें इस शहरमें पानीकी भी बड़ी खींच हो जाती है। जिससे कई दफ़े साधारण वर्गको बड़ी तकलीफ़ होती है। राज्यकी ओरसे इस कष्टको दूर करनेका प्रयत्न हो रहा है।

फैक्टरीज और इण्डस्ट्रीज

हम ऊपर लिख आये हैं कि अफ़ीमके व्यवसायके बन्द होते ही, इन्दौरमें रुईका व्यवसाय चमका, जिससे यहांकी फ़ैक्टरीज़ और इण्डस्ट्रीजमें बहुत अधिक तरक्की हुई। इन्दौरकी गवर्नमेण्टने भी यहांके औद्योगिक कार्य्यमें काफ़ी सहायता की। उसने मिल, जीन, प्रेस तथा दूसरी फ़ैक्टरियोंके सम्बन्धमें उदार नीतिसे काम लिया। जिसका परिणाम यह हुआ कि इन्दौर शहर फ़ैक्टरीज़ और इण्डस्ट्रीज़की दृष्टिसे आज सारे मध्य भारतमें प्रथम श्रेणीका हैं। यहांकी फ़ैक्टरीज़का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

कॉटन मिल्स

(१) दी स्टेट मिल्स लिमिटेड—यह सेण्ट्रल इण्डियामें सबसे प्रथम स्थापित होनेवाली मिल है। इसे इन्दौरकी गवर्नमेण्टने खोला था। इस समय यह मिल यहांके सेठ नन्दलालजी भण्डारीके ठेकेमें है।

(२) दी मालवा युनाइटेड मिल्स लिमिटेड—यह मिल यहांके सर सेठ हुकुमचंदजीकी प्रेरणासे सन् १९०९ में पन्द्रह लाख रुपयेकी पूंजीसे प्रारम्भ किया गया। इसके मैनेजिंग एजण्ट बम्बईके प्रसिद्ध मिल मालिक सर करीमभाई इब्राहीम हैं। इस मिलके वर्तमान मैनेजर श्री० नूरमहम्मद हैं।

आप बड़े योग्य और कुशल मैनेजर हैं। इस मिलने अपने जीवनकालमें बहुत अच्छी उन्नति की। इसके शेअरका भाव एक समय सात सौ और आठ सौ तक पहुंचा गया था। इसी मिलके मुनाफेसे इसके अण्डरमें एक मुनाफा मिल और खोल दीगई है।

(३) दी हुकुमचंदमिल्स लिमिटेड—यह मिल सन् १९१४ ई०में पन्द्रह लाखकी पूंजीसे स्थापित हुआ। यह पूंजी सौ २ रुपयेके पन्द्रहहजार शेअरोंमें विभक्त की गई थी। जिस समय इस मिलकी मशीनरीके आर्डर विलायत गये थे उस समय यूरोपके राजनैतिक गगन मण्डलमें युद्धके बादल उमड़ते हुये दिखलाई देने लग गये थे। जिससे मिल मशीनरीके भावमें बहुत कुछ वृद्धि होगई थी। मगर सेठजीने उसकी कुछ चिन्ता न करते हुए मशीनरीका आर्डर दे दिया। जिसका परिणाम यह हुआ कि १९१५ में मिल चलना प्रारम्भ होगई। इधर मिल चलना प्रारम्भ हुआ उधर यूरोपीय महायुद्ध भी प्रारम्भ होगया। फल यह हुआ कि मिलके शेअरोंमें एक दम वृद्धि होगई और सौ २ के शेअर सात २ सौ में बिकने लगे। परिणाम स्वरूप इस मिलके नफ़ेसे इसके अण्डरमें एक मुनाफा मिल और खोली गई। इस मिलसे आज तक एक शेअरके पीछे २३ डिवीडेण्डमें कुल मिलाकर ५२३) मुनाफा और १४६) कमीशन मिल चुका है। इस समय इस मिलमें ११७६ लूम्स और ४०५१२ स्पेण्डिल्स हैं। इसके मैनेजिंग एजन्ट मेसर्स सरूपचन्द हुकुमचंद है।

(४) दी कल्याण मल मिल्स लिमिटेड - इस मिलकी स्थापना रा० ब० स्वर्गीय सेठ कल्याण मलजीके हाथोंसे हुई। इस मिलके मैनेजिंग एजन्ट मेसर्स तिलोकचन्द कल्याणमल है।

(५) दी राज कुमार मिल्स लिमिटेड-इस मिलकी स्थापना सन् १९२२ ई० में बाईस लाखकी पूंजीसे हुई। इसके मैनेजिंग एजन्ट मेसर्स स्वरूपचंद हुकुमचंद हैं। इसमें ५२५ लूम्स और १६६७६ स्पेण्डिल्स हैं।

(६) दी नन्दलाल भण्डारी मिल्स लिमिटेड—यह मिल श्रीयुत नन्दलालजी भण्डारीने ३०००००० की पूंजीसे स्थापित किया है। यह पूजी १०० रुपयेके ३०००० शेअरोंमें विभक्त है। इसके मैनेजिंग एजण्ट मेसर्स पन्नालाल नन्दलाल भण्डारी है। इसके मैनेजर श्री नन्दलालजी भण्डारीके ज्येष्ठ पुत्र श्रीयुत कन्हैयालालजी भण्डारी हैं। आप एक सफल मैनेजर सिद्ध हुए हैं। आपकी व्यवस्थापिका शक्ति और बिजनेस माइण्डकी बड़ी प्रशंसा सुननेमें आती है।

(७) दी स्वदेशी मिल्स लिमिटेड—यह मिल पहले कुछ दिनोंतक चलकर बन्द हो गई थी। अब इसकी फिरसे चलनेकी तैयारी हो रही है।

इन सब मिलोंका कपड़ा बड़ा टिकाऊ मजबूत और बढ़िया होता है। पंजाबकी तरफ यहांका कपड़ा बहुत चढ़ता है। इन मिलोंमें कोरा, धुला, सफेद, रंगीन सभी प्रकारका कपड़ा तैयार होता है।
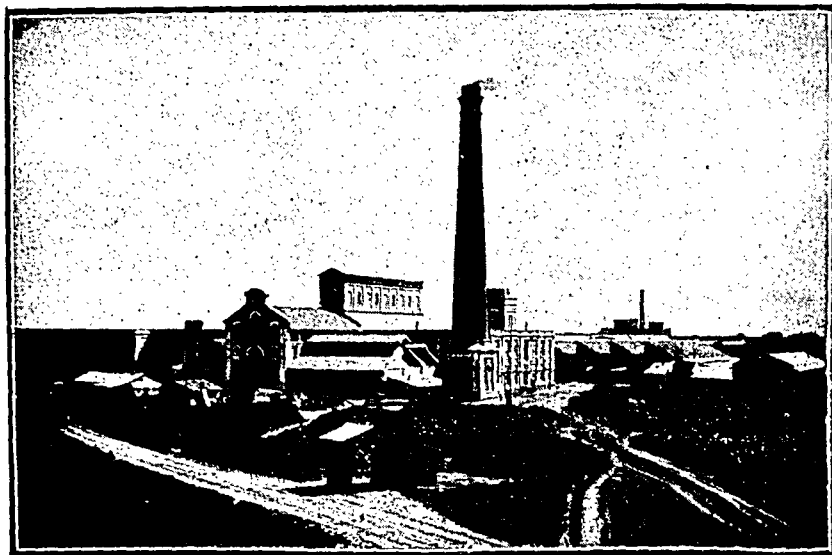
हुकुमचन्द मिल्स नं० १ लिमिटेड इन्दौर
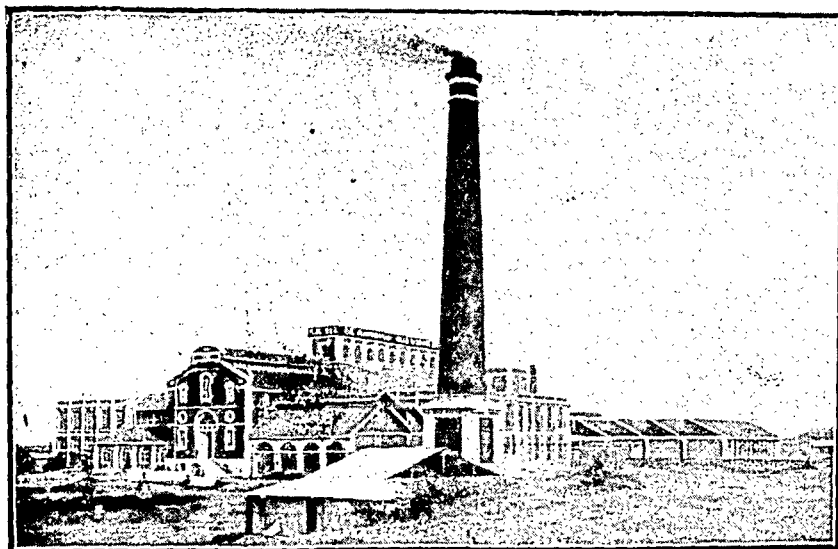
हुकुमचन्द मिल्स नं० २ लिमिटेड इन्दौर

राजकुमार मिल्स लिमिटेड इन्दौर
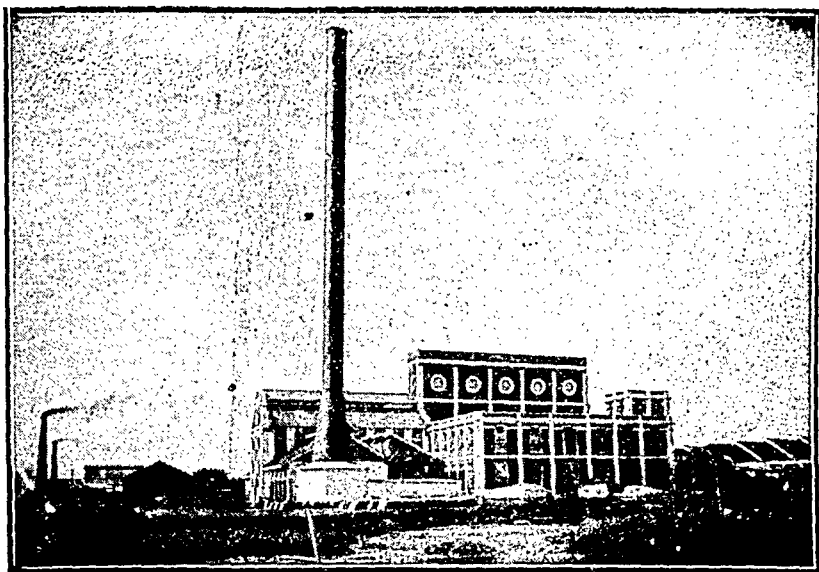
उपरोक्त मिलोंके अतिरिक्त यहां पर करीब दस, ग्यारह जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरियाँ भी चलती हैं। कुछ दिनों पूर्व यहां पर एक ब्रश फैक्टरी भी चलती थी। बीचमें वह बन्द हो गई थी, अब सुननेमें अता है कि वह फिरसे चलनेवाली है।

इन फैक्टरियोंके अतिरिक्त शहरके दूसरे उद्योग धन्धे भी अच्छी उन्नतिपर हैं। इन उद्योग धन्धोंमेंसे सरकारी मिस्त्रीखाना, रेशमका कारखाना, आयर्न एण्ड ब्रास फैक्टरी, ब्रिक फ़ैक्टरी (इंटोंका कारखाना) ; मौजेकी फैक्टरी (महाजन ब्रदर्स) इत्यादि विशेष उल्लेखनीय है। इस शहरमें लकड़ीकी खुदाईका काम, तथा सोने और चांदीके पालिसदार, सादे और नक्काशीदार बर्तनोंके बनानेका काम अच्छा होता है। यहांकी सेण्ट्रल ज़ेलकी दरियां भी बहुत मजबूत और टिकाउ बनती हैं। यहांपर जॉली क्लब नामक एक औद्योगिक संस्था स्थापित है। इस संस्थामें बेंत तथा सुनारी सम्बन्धी काम बहुत अच्छे होते हैं। यहांपर काम सीखनेवाले विद्यार्थियोंको सब प्रकार-की औद्यगिक शिक्षा दी जाती है। इन्दौरके पास ही महेश्वर नामक स्थान है। यहांकी साड़ियां भारत प्रसिद्ध है। पहलेके जमानेमें यहांकी साड़ियां प्रायः सारे दक्षिण प्रान्तमें जाती थीं, अब भी बम्बई आदि स्थानोंमें यहांसे बहुत काफी साड़ियां जाती हैं।

कृषि विभाग

राज्यकी कृषि और किसानोंकी उन्नतिके लिए यहांकी गवर्नमेन्टने यहांपर एक संस्था खोल रक्खी है। यह संस्था प्रसिद्ध कृषिविद्या विशारद मि० हार्वर्डकी अध्यक्षतामें कृषि सम्बन्धी कई नये २ अनुभव प्राप्त करनेकी चेष्टा कर रही है। इसके द्वारा स्टेटके किसानोंकी उन्नतिके लिये उपयोगी साहित्य भी प्रकाशित करनेका आयोजन हो रहा है। हालहीमें इस संस्थाकी ओरसे "किसान" नामक एक छोटे परन्तु सुन्दर और उपयोगी मासिक पत्रका प्रकाशन प्रारम्भ हुआ है।

इन्दौरमें होमियोपैथिक औषधालय

कठिन रोगोंका आश्चर्यकारक इलाज।

आप सर्व सज्जनोंको यह प्रकट करते हुए अत्यन्त हर्ष होता है कि हमने इन्दौरमें सर्वाङ्ग-पूर्ण होमियोपैथिक औषधालयकी स्थापना की है। आप शायद यह जानते होंगे कि कोई सौ सवासौ वर्षके पहले जर्मनी देशके एक महान् डाक्टरने इस चिकित्सा पद्धतिका आविष्कार किया था। इस पद्धतिने अपने इस अल्प जीवनमें सारे संसारमें आश्चर्य्यजनक ख्याति प्राप्त करली है। आज जर्मनी, अमेरिका और युरोप आदि देशोंमें इस चिकित्सा पद्धतिकी विजय पताका उड़ रही है। इस पद्धतिकी विशेषताएं निम्नाङ्कित हैं।

(१) इसकी सब औषधियें बड़ी मीठी और सुस्वादु हैं जिन्हें सब लोग बड़ी रुचिसे सेवन करते हैं। खासकर छोटे छोटे बच्चे जिन्हें कड़वी औषधियोंको लेनेमें बड़ी तकलीफ होती है इसे बड़े आनन्द पूर्वक सेवन करके लाभ उठाते हैं।

(२) अत्यन्त मीठी और थोड़ी मात्रा होनेपर भी ये औषधियां आश्चर्यजनक फायदा दिखलाती हैं। इस चिकित्सामें खर्च भी दूसरी चिकित्साओंकी अपेक्षा कम होता है। इसी वज-हसे अमीर गरीब सब इससे लाभ उठा सकते हैं।

(३) इस चिकित्सामें चीर फाड़की भी बहुत कम आवश्यकता होती है। कई ऐसे रोग जो डाक्टरी इलाजमें बिना चीर फाड़के आराम नहीं हो सकते इस चिकित्सासे आश्चर्यजनक रूपसे आराम होते दिखाई दिये हैं।

(४) स्त्रियों और बच्चोंके रोगोंके लिये तो यदि यह कहा जाय तो तनिक भी अत्युक्ति न होगी कि यह चिकित्सा पद्धति संसारमें एक ही है।

होमियोपैथिक चिकित्साके इतिहासमें कई घटनाएं ऐसी दिखाई देती हैं जिनमें कई भयंकर से भयंकर रोगोंमें केवल एक ही खुराकमें आश्चर्यजनक लाभ होता दिखाई दिया है।

हमने होमियोपैथिक चिकित्साका बाकायदा अध्ययन किया है और हमें इसके आश्चर्य-जनक परिणामोंका अनुभव हुआ है। हम गत चार वर्षोंसे सफलता पूर्वक इसका अनुभव ले रहे हैं। हमारे अनुभवोंका फल हम आप सज्जनोंको प्रत्यक्षमें दिखलाना चाहते हैं। इसके लिये दो मास तक (१ सितम्बर तक) हमने बिलकुल मुफ्तमें होमियोपैथिक औषधियां वितरण करनेका निश्चय किया है। अगर आप कोई कठिन व दुःसाध्य रोगसे पीड़ित हैं, अगर आप दूसरी चि-कित्सा पद्धतियोंसे निराश हो गये हैं, तो आप कृपाकर एक वक्त हमारे औषधालयमें पधारिये बिना कुछ खर्च किये हुए ही इस नवीन पद्धतिके चमत्कारिक इलाजकी परीक्षा कीजिये। जब हम आपको औषधिकी योजना (prescription) और औषधि मुफ्तमें देते हैं तब हमें आशा है कि आप इस मौकेको हाथसे न जाने देंगे और हमारे औषधालयसे लाभ उठावेंगे।

डा० एम० एल० भण्डारी एल० एम० एस० (होमियो)

होमियोपैथिक औषधालय

रामानुजकूटके सामने यशवन्तगञ्ज, इन्दौर।

मिल-ऑनर्स

MILL-OWNERS

कॉटन मिल्स—

अफीमका व्यवसाय बन्द होतेही सेठजीने बड़ी बुद्धिमानीके साथ रूईके व्यापारको पकड़ लिया और इस क्षेत्रमें अपना कमाल दिखाना प्रारम्भ किया। इस व्यापारने आपको भारत भरमें प्रसिद्ध कर दिया। समयकी गतिको पहचानकर तुरन्त आपने कॉटन मिल्स, इण्डस्ट्रीज इत्यादि स्थायी व्यवसायकी तरफ ध्यान दिया और सन् १९०९ में आपने मालवा यूनाइटेड मिलको पन्द्रह लाखकी पूंजीसे जन्म दिया। तथा उसके मैनेजिङ्ग एजण्ट सर करीमभाई इब्राहीमको बना कर उन्हींको मिलका कुलभार सौंप दिया। आप केवल इसके स्थायी डायरेक्टर रहे। यह मिल आजतक बहुत अच्छे रूपमें चल रही हैं और अपने शेअर होल्डरोंको शेअरके मूल्यसे कई गुना मुनाफा बांट चुकी है। इसके पश्चात् आपने सन् १९१४ में दी हुकुमचन्द मिल्स और १९२२में दी राजकुमारमिल्सको प्रारम्भ कर दिया। मिलोंमें होनेवाली आपकी अद्भुत सफलताको देखकर और भी कई लोगोंने आपका अनुकरण करना प्रारम्भ किया, जिसके फलस्वरूप आज इन्दौरमें छः सात मिलें दृष्टिगोचर होरही हैं।

जूटमिल्स—

इन्हीं दिनोंमें जब कि बरार, खानदेश, बम्बई, गुजरातकी तरफ रूईका व्यापार अपनी जोरोंसे उन्नति कर रहा था कलकत्ता और बंगालमें जूटका सितारा चमक रहा था। कलकत्तेमें जूटकी बहुतसी मिलें खुल रही थीं, मगर ये सब मिलें अंग्रेज पूंजीपतियोंकी थीं। लोगोंकी ऐसी भ्रममूलक धारणा हो रही थी कि जूटमिल्समें मारवाड़ियोंको सफलता नहीं मिल सकती और यही कारण था कि कलकत्तेमें अनेक धनकुबेर मारवाड़ियोंके होते हुए भी मारवाड़ियोंकी एक भी मिल न थी। सूक्ष्म दृष्टि सेठ हुकुमचंदजीकी निगाहोंमें यह क्षेत्र भी सूना नहीं था। आपने लोगोंके इस भ्रम-मूलक मिथ्या अपवादको असत्य सिद्ध करनेके लिए अस्सी लाखकी पूंजीसे ही हुकुमचंद जूटमिल्सका प्रारम्भ किया। जिस समय इन्दौरके बाजारमें इस मिलके शेअर विकने आये थे; उस समय सारे बाजारमें धूम मच गई थी। लोग शेअर लेनेको इतने उतावले हो उठे थे, कि सेठजीकी दुकानपर सुबहसे शामतक भीड़ लगी रहती थी। इसका कारण यह था कि इस सफल व्यवसायीके साथ अपना पैसा लगाकर लोग उसका मीठा फल चख चुके थे। फल यह हुआ कि अस्सी लाखकी जगह करीब तीन चार करोड़के शेअरोंकी दरख्वास्तें आई। बड़ी मुश्किलसे पांच शेअरकी दरख्वास्तके पीछे एक शेअर लोगोंको मिला। इस मिलनेभी बहुत तरक्की की। ७॥ वाले शेअरका भाव इस समय २८ हैं प्रति वर्ष अच्छा डिविडेण्ड भी यह मिल बांटती है।

वायदेका व्यवसाय

इधर तो सेठजी मिल और इण्डस्ट्रीजमें अपने सफल हाथोंको लगा रहे थे। उधर हिन्दुस्तानमें अत्यन्त शीघ्र गतिसे बढ़नेवाला रूईके वायदेका व्यवसाय भी आपकी आंखोंसे बाहर न था। आपने
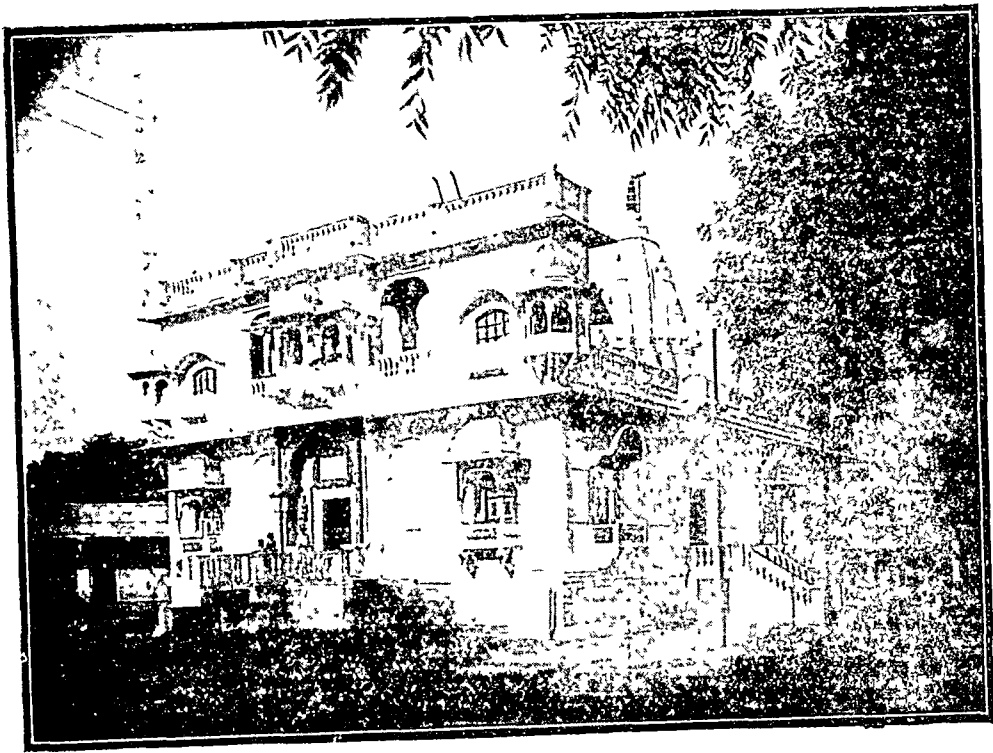
जैन मन्दिर जंवरीबाग इन्दौर (सर से० हुकुमचन्द)
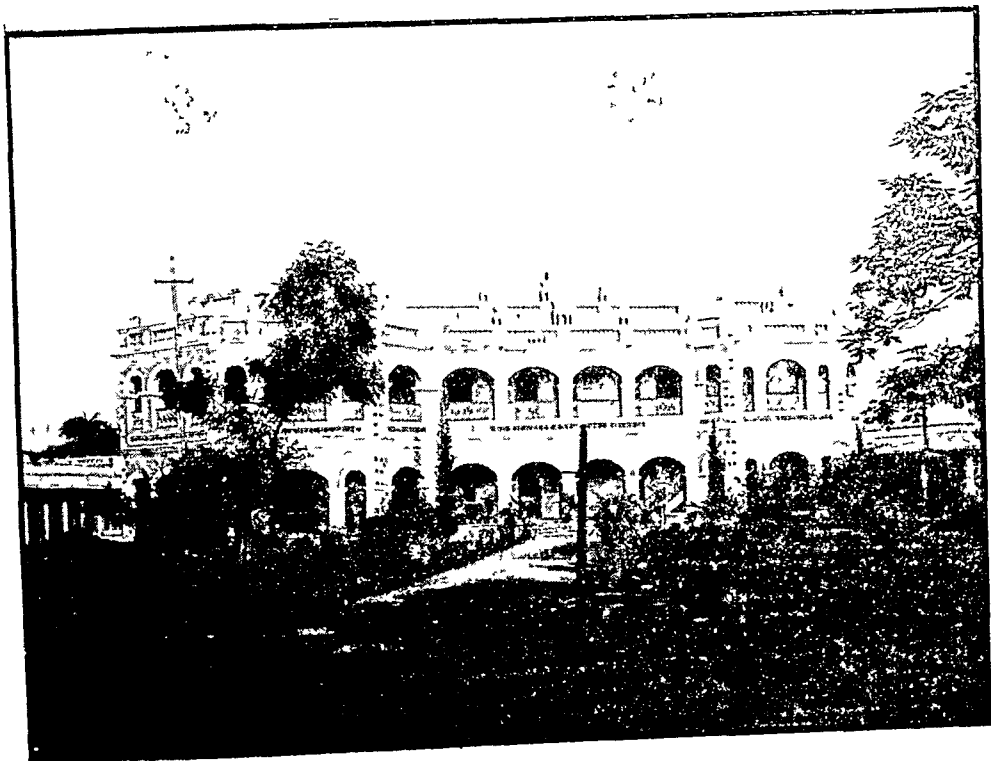
हुकुमचन्द जैन महाविद्यालय जंवरीबाग इन्दौर

इस व्यवसायमें भी हाथ डाला। केवल हाथ ही नहीं डाला, प्रत्युत इस व्यवसायमें अपना कमाल दिखला दिया। जिन दिनों आप वेगगामी गतिसे सट्टा करते थे उन दिनों बम्बई और कलकत्तेके बाजारोंमें आपके नामकी एक जबर्दस्त धाक पैदा होगई थी। बम्बईका टाइम्स आफ इण्डिया आपको "मरचेंण्ट्स प्रिन्स ऑफ़ मालवा" लिखता था। आपने इस व्यवसायमें अपना व्यवसाय कुशल बुद्धिसे कई व्यापारियोंको और कम्पनियोंको शिकस्त दी। आपकी उस समय मार्केट पर इतना प्रभाव होगया था कि कभी २ तो आपकी रुखपर सैकड़ों व्यापारी खरीदी बेचवाली करने लगते थे। आपकी खरीदी बेचवालीसे कभी २ बाजार दस २ बीस २ टका तक ऊपर नीचे होजाया करता था। बम्बईके, गुजराती पत्र कभी कभी २ बाजारकी घटा बढ़ीपर नोट लिखते हुए लिखते थे" आज बजार अमुक भावे खुल्यो हतो पण इन्दौर ना जाणीता खिलाड़ी नीलेवालो थी पांच टका बधीगयो।" मतलब यह कि रुईके इस व्यवसायमें लोगोंको आपके व्यापारिक साहसका बड़ा जबर्दस्त अनुभव हुआ। आपके विषयमें कहा जाता था कि पन्द्रह बीस लाख रुपयेका नफा नुकसान तो आप सिरहाने लेकर सोते हैं।

सट्टेको तिलाञ्जलि

यद्यपि सर सेठ हुकुमचन्दने लाखों करोड़ों रुपयोंका सट्टा किया और एक दिलचस्प आदमीकी तरह इसमें लगे रहे, मगर इस व्यवसायके अन्तिम परिणामसे आप भली प्रकार वाकिफ थे। इसकी बुराइयां आपको भली प्रकार ज्ञात थीं आप हमेशा कहा करते थे, कि यद्यपि मुझे इस व्यापारमें सफलता मिल रही है और दैव मेरे अनुकूल हैं फिर भी मैं जानता हूं कि यह व्यापार कितना क्षण-स्थायी है। मेरे देखते २ हजारों लाखपति और करोड़पति इसमें बरबाद होगये। मतलब यह कि इस प्रकार सट्टेके विरुद्ध विचार पद्धति आपके हृदयमें बराबर बढ़ती रही और अन्तमें सन् १९२५ में आपने सट्टेको एकदम तिलाञ्जलि दे दी। यहांतक कि आपने भाव पूछना तक छोड़ दिया। इस घटनासे लोगोंको बड़ा भारी आश्चर्य हुआ। अब इस समय आपकी दुकानोंपर हाजिर व्यवसाय और मिलोंका कारोबार होता है और सेठ साहब भी सट्टेके अशान्तिमय जीवनसे निकलकर शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

व्यापारिक साहस

सेठ हुकुमचन्दजीका जीवन वास्तवमें व्यापारियोंके लिए अध्ययन करनेकी सामग्री है। आपकी इतनी बड़ी व्यापारिक सफलताके रहस्यपर विचार करनेसे पता चलता है कि इस आशातीत सफलताका मूल कारण सेठजीका बढ़ा हुआ व्यापारिक साहस है। एक व्यापार विशारदका कथन है कि "नफा सम्पत्तिमें नहीं है, नफ़ा व्यापारमें नहीं है, नफ़ा केवल मात्र जोखिममें है। जो

व्यक्ति जितनी ही अधिक जोखिममें पड़नेका साहस रक्खेगा वह उतनीही अधिक सफलता सम्पादित करेगा। जो व्यक्ति पूंजी, और व्यापारके रहते हुए भी जोखिममें पड़नेकी ताकत नहीं रखता वह कभी आशातीत सफलता प्राप्त नहीं कर सकता।" सर सेठ हुकुमचन्दके जीवनमें यही तत्त्व सबसे अधिक काम करता हुआ दिखलाई दे रहा है। आपने व्यापारके प्रारम्भसे ही बड़े २ जोखिम पूर्ण व्यापारिक कामोंमें पड़ना शुरू किया। शुरूमें आपने ४० लाख रुपये अफ़ीमकी पेटियोंके खन्नेके लिए गवर्नमेण्टमें भरे और फिर भीषण यूरोपीय युद्धके समय आपने विलायत मशीनरीका आर्डर दिया, फिर लोक किम्वदन्तीके विरुद्ध कलकत्तेमें जूट मिलकी स्थापना की; और सट्टेमें तो आपने जोखिम उठानेमें हद कर दी, यहांतक कि कभी २ तो करोड़ों रुपयेके नफ़े नुक़सानकी जोखिम पड़ गये। इसी बढ़े हुए व्यापारिक साहसका यह परिणाम है कि आज सर सेठ हुकुमचन्दने सारे भारतके व्यापारिक समाजमें और भविष्यके व्यापारिक इतिहासमें अपना एक खास स्थान प्राप्त कर लिया है

राजकीय सम्मान

केवल व्यापारिक जगत्में ही नहीं इन्दौर गवर्नमेण्ट और भारत गवर्नमेण्टमें भी आपने अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की। भारत गवर्नमेण्टने आपको पहले रायबहादुरके खितावसे और उसके पश्चात् सरनाइटके सम्माननीय पदसे सम्मानित किया। इन्दौर गवर्नमेण्टने भी आपको "राज्यभूषण" का पद प्रदान किया।

सेठजीके महल

सेठ हुकुमचन्दजीको सुन्दर और नये ढङ्ग मकान बनानेका हमेशासे बड़ा चाव रहा है। इन्दौर, बम्बई, कलकत्ता, उज्जैन आदि स्थानोंमें आपकी बड़ी २ आलीशान इमारतें बनी हुई हैं। खासकर इन्दौर तो आपकी इमारतोंसे जगमगा रहा है। सरकारी इमारतोंके सिवाय इन्दौरमें यदि कोई देखने योग्य वस्तु है तो आपकी इमारतें हैं। कई इमारतोंको तो छोटी २ सी त्रुटिके कारण—आपने गिरवा २ कर दुबारा बनवाई है। इन इमारतोंमें शीशमहल, रंगमहल, इन्द्रभुवन आदिके नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इनका परिचय पहले दिया जा चुका हैं।

सार्वजनिक कार्य्य

सेठजीको ज्यों २ व्यापारमें सफलता मिलती गई त्यों २ आपका सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर भी उत्साह बढ़ता गया। आपने सभी लाइनोंमें अपनी उदार दान प्रवृत्तिका परिचय दिया। मुसाफिरोंके आरामके लिए विशाल धर्मशाला बनवाई, विद्यार्थियोंकी शिक्षाके लिए बोर्डिंग हाउस और जैन महाविद्यालयका निर्माण करवाया। स्त्रियोंकी शिक्षाके लिए श्राविकाश्रमकी योजना की। बीमारोंके लिए वृहत् औषधालय खुलवाया, स्त्रियोंके प्रसूति कष्टोंको निवारण करनेके लिए प्रसूति
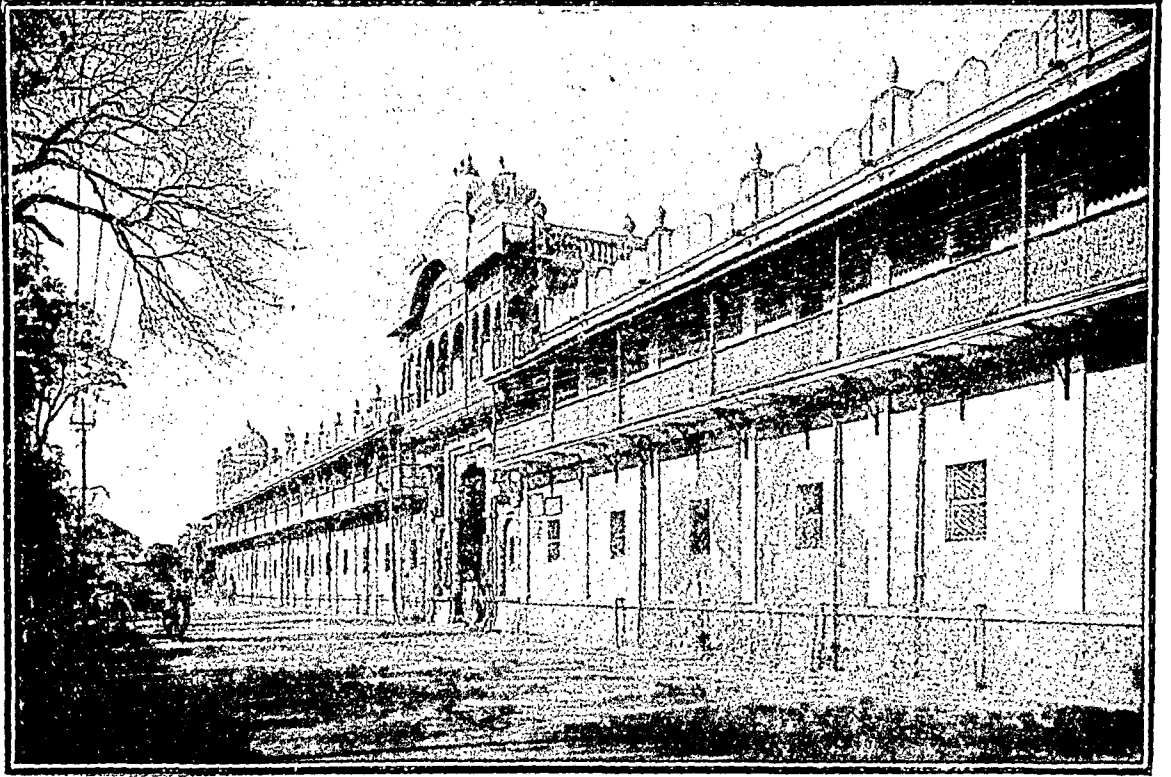
जंवरीबाग धर्मशाला इन्दौर (सर से० हुकुमचन्द)
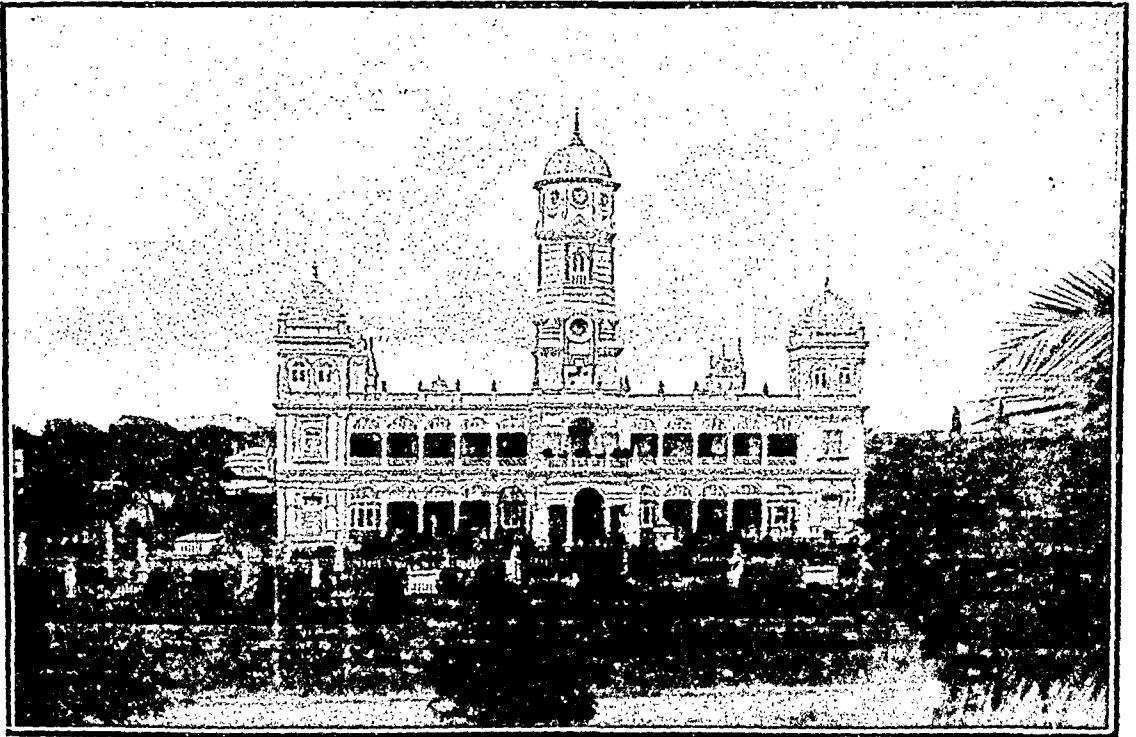
इन्द्रभवन इन्दौर (सर से० हुकुमन्द)
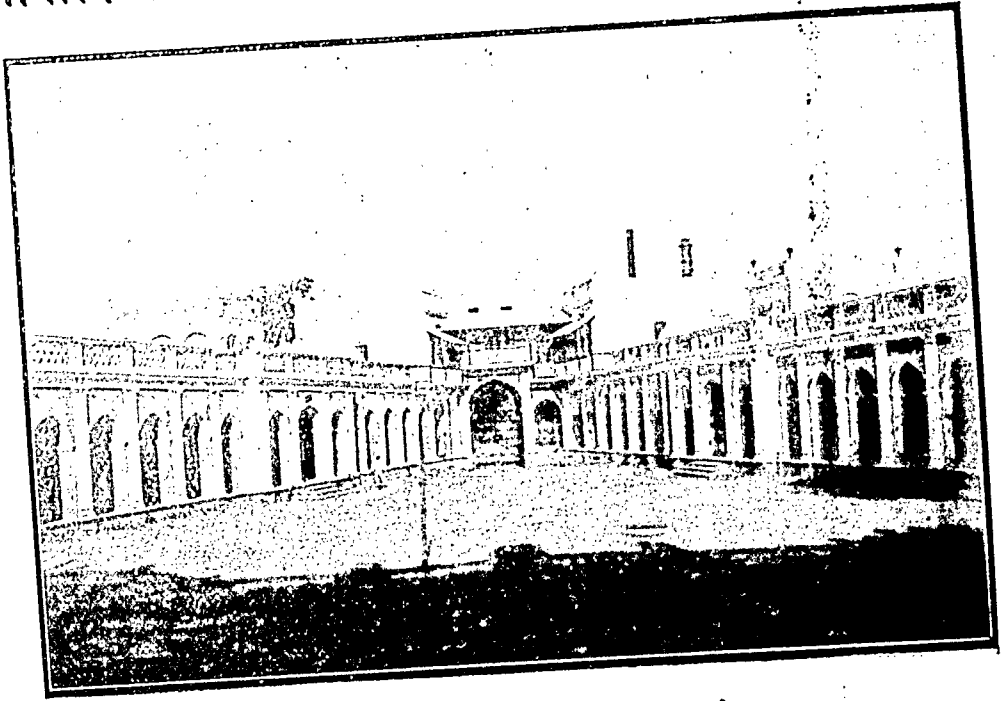
हुकुमचन्द जैन बोर्डिङ्ग हाउस इन्दौर
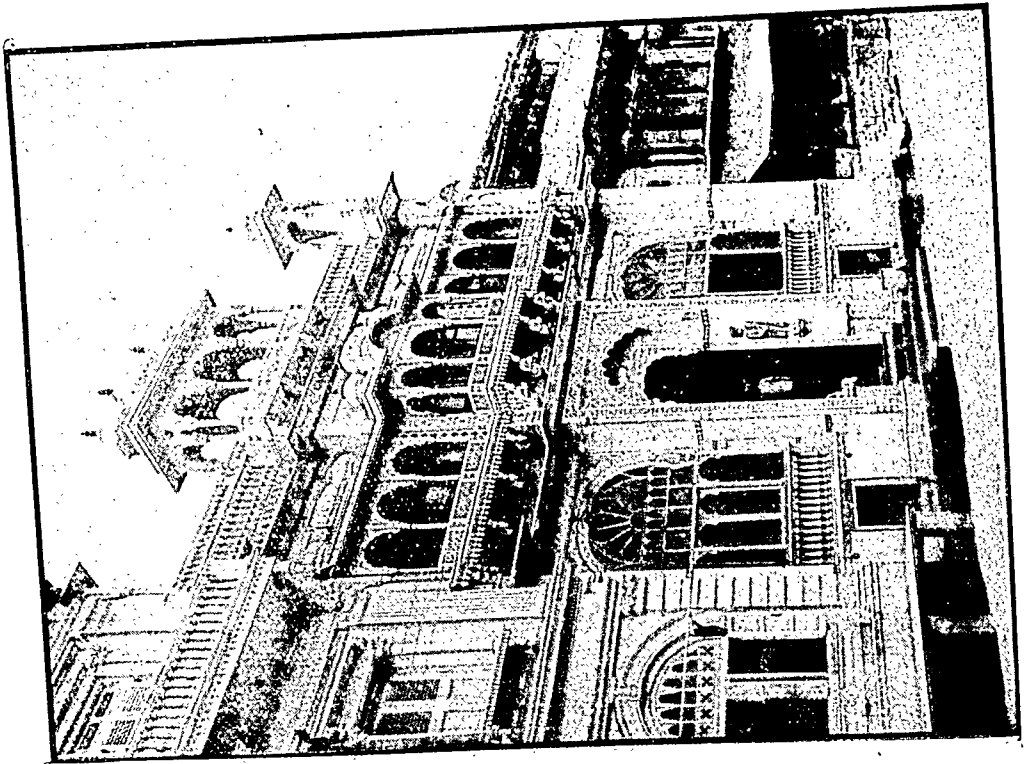
जैन मन्दिर इतवारा इन्दौर (सर सेठ हुकुमचन्द)

गृह की स्थापना की, भक्तोंके लिए दो सुन्दर मन्दिरकी योजनाकीऔर भी कई सार्वजनिक संस्थाओंमें आपने उदारता पूर्वक दान दिया। आपकी सार्वजनिक संस्थाओंका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

जंवरीबाग धर्मशाला—स्टेशनके समीप ही यह सुन्दर और विशाल धर्मशाला बनी हुई हैं। इसके कमरे बड़े, सुन्दर, हवादार और साफ़ हैं। प्रत्येक कमरेमें चारपाईका प्रबन्ध है। इसके अतिरिक्त मुसाफ़िरोंकी सुविधाके लिए यहांपर बर्तन, बिछौना इत्यादिका भी प्रबन्ध है। इस धर्मशालाका प्रबन्ध बहुत सराहनीय है। इसमें करीब डेढ़ लाख रुपया लगत लगी है।

जंवरीबाग जैन मंदिर—धर्मशालामें उतरनेवाले मुसाफ़िरोंके दर्शनकी सुविधाके लिए यह मन्दिर बनाया गया है। इसकी प्रतिष्ठामें करीब एक लाख रुपया खर्च किया गया था।

हुकुमचन्द जैन महाविद्यालय और बोर्डिंग हाऊस—यह महा विद्यालय संवत् १९७० में स्थापित हुआ था। इसमें हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत और जैन धर्मकी पढ़ाई होती है। बोर्डिङ्ग हाऊस में विद्यार्थियोंके रहने और भोजनका भी प्रबन्ध है। इस बोर्डिङ्ग और महाविद्यालयकी नवीन इमारतमें करीब एक लाखसे ऊपर रुपया खर्च हुआ है।

सौ० कंचनबाई श्राविकाश्रम—यह संस्था स्थानीय नरसिंहबाजारमें संवत् १९७१ में स्थापित हुई। इसमें अभीतक सैकड़ों बाइयोंने शिक्षा पाई है। इसमें दूसरी शिक्षाके साथ औद्योगिक शिक्षाका भी प्रबन्ध है। इस आश्रमकी बिल्डिंग तथा ध्रौव्य फण्डमें एक लाख रुपया दिया गया है।

प्रिन्स यशवन्त राव आयुर्वैदिक औषधालय इस औषधालयके पुराने और नये रूपमें सेठ साहब-ने करीब एक लाख चौंतीस हजार रुपया प्रदान किया है। इस औषधालयसे पब्लिकको बड़ा लाभ पहुंचता है

जैन विधवा, असहाय सहायता व भोजनशाला फण्ड—सेठ साहबने श्रीमती सौ० सेठानीसा०के एक कठिन रोगसे छुटकारा पानेके उपलक्ष्यमें एक लाख रुपयेसे यह फण्ड स्थापित किया है।

सौ० कंचनबाई प्रसूति गृह—संवत् १९८१में सौ० कंचनबाईने ५००००की रकमसे इस प्रसूति गृहकी स्थापना की है। इसमें प्रसूतिकष्ट सम्पन्न बाइयोंकी प्रसूति शिक्षित लेडी डाक्टर व दाइयोंसे कराई जाती है।

और भी कई भिन्न २ संस्थाओंमें सेठसाहिब बड़ी उदारता पूर्वक दान करते रहते हैं। अभी तक आप करीब २५ लाख रुपया दान कर चुके हैं। दानके अतिरिक्त आप व्यक्तिगत रूपसे सार्व-जनिक कार्य्योंमें भी बहुत भाग लेते हैं। कई बड़ी २ सभा सोसायटियोंके आप सभापति होचुके हैं। आपकी भाषण शक्ति भी बड़ी प्रबल है। इन्दौरके सार्वजनिक जीवनमें भी आपका अच्छा हाथ रहता है।

कुंवर हीरालालजी

आप सरसेठ हुकुमचन्दजीके ज्येष्ठ पुत्र हैं। आप जयपुरसे सेठ साहबके यहां दत्तक आये हैं। आपका स्वभाव बहुत शांत और गम्भीर है। आपकी उदारता और सादगी बहुत बढ़ी चढ़ी है। करोड़पतिकी सन्तान होते हुए भी आपकी हद्दर्जेकी निराभिमान वृत्ति और उन्नत स्वभावको देखकर बड़ा आश्चर्य्य होता है। धनाढ्य पुरुषोंकी सन्तानोंमें आपका स्वभाव एक अपवाद स्वरूप है यह कहना भी अत्युक्ति पूर्ण न होगा। अभीतक आप राजकुमार मिलके मैनेजरके पदपर काम करते थे। आपके व्यवहारसे वहांका सारा स्टॉफ बड़ा सन्तुष्ट रहता था। हाल हीमें आप स्व० रा० ब० सेठ कल्याणमल जीकी गद्दीके उत्तराधिकारी हुए हैं।

आप पोलो खेलनेमें बड़े प्रवीण हैं। यहाँतक कि भारतके वैश्य समाजमें शायद ही कोई आपके समान कुशल खिलाड़ी होगा। इस खेलमें आपने कई बार कप्स और मेडल्स भी प्राप्त किये हैं। पोलोहीकी तरह टैटपिगिंग नामक खेलमें भी आपने कईबार यूरोपियनोंसे बाजी जीती है। चांदमारी और तैरनेकी कलामें भी आप बड़े निपुण हैं। मतलब यह कि स्वास्थ्य और स्वभाव दोनों ही दृष्टिसे आप बहुत उन्नत हैं। आपके सामाजिक विचार भी बहुत सुधरे हुए हैं।

कुँवर राजकुमारसिंह

आप सेठजीके औरस पुत्र हैं। इस समय मेयोकॉलेज अजमेरमें शिक्षा लाभ कर रहे हैं।

सेठ साहबका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

(१) इन्दौर—मेसर्स स्वरूपचन्द हुकुमचन्द—(T. A. "Sethaji") इस दुकानपर बैंङ्किग, हुण्डी चिट्ठी और रूईका व्यापार होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स स्वरूपचन्द हुकुमचन्द ३० क्लाइव स्ट्रीट (T. A. Kashaliwal) इस दुकानपर बैंङ्किग, हुण्डी चिट्ठी, जूट, और कपड़ेकी एजन्सीका कार्य्य होता है। यहींपर जूट मिलका ऑफिस भी हैं।

(३) बम्बई—मेसर्स स्वरूपचन्द हुकुमचन्द (T. A. Season) यहां बैंङ्किग बिजिनेस होता है।

(४) उज्जैन—मेसर्स स्वरूपचन्द हुकुमचन्द—(T. A. Lucky) यहां भी बैंङ्किग बिजिनेस होता है।

(५) खामगांव—मेसर्स हुकुमचन्द रामभगत (T. A. Season) इस दुकानपर रुई और गल्लेकी आढ़तका काम होता है। इसमें बम्बईके मशहूर व्यवसायी मामराज रामभगतका साझा है।

इन दुकानोंके अतिरिक्त राजकुमार मिल्सकी तथा हुकुमचन्द मिल्सकी इन्दौर, बम्बई और कानपुरमें अलग दुकानें हैं। जिनका परिचय स्थान २ पर दिया जायगा।
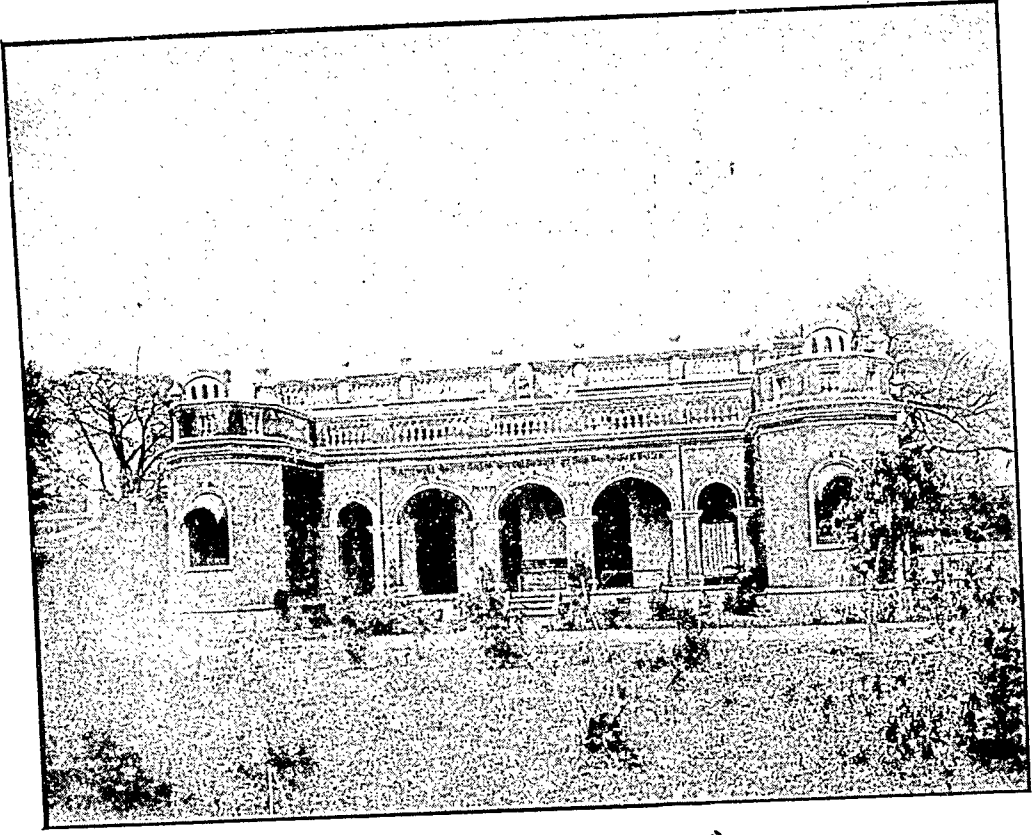
श्रीमती कंचनबाई प्रसूतिगृह इन्दौर
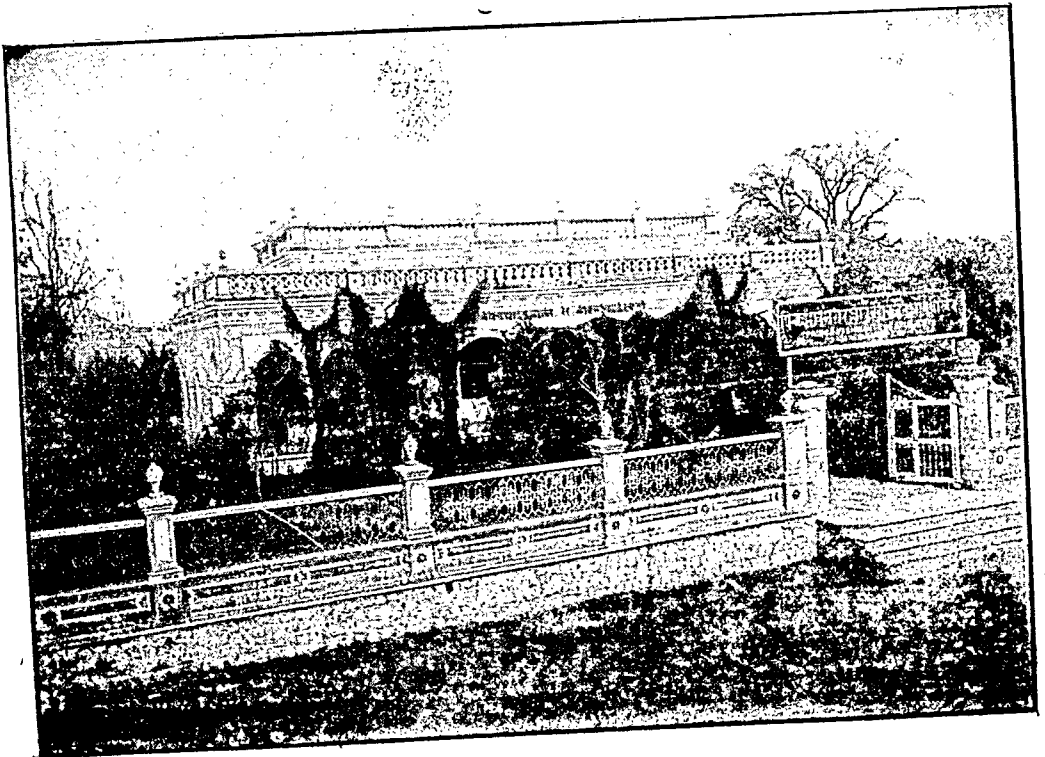
यशवन्तराव औषधालय इन्दौर (स० से० हुकुमचन्द)

स्व० रायबहादुर सेठ कल्याणमलजी इन्दौर

रायबहादुर सेठ कस्तूरचंदजी इन्दौर

अनोपभवन (रा० ब० कस्तूरचन्दजी) इन्दौर

मेसर्स करीम भाई इब्राहिम एण्ड सन्स *

यह प्रतिष्ठित खोजा खान्दान कच्छ मांडवीका रईस है। इस फर्मका हेड ऑफिस बम्बई है। भारतके प्रतिष्ठित मिल मालिक एवं कपड़ेके व्यापारियोंमें इस फर्मका स्थान बहुत ऊंचा है। इस फर्मकी स्थापना सर सेठ करीमभाई इब्राहिम प्रथम बैरोनेटके हाथोंसे हुई थी। सेठ करीम भाईने अपने ८४ वर्षके लम्बे जीवनमें भारतीय उद्योग-धंधोंको आदर्श प्रोत्साहन दिया। आपने अपने जीवनमें कई मिलें स्थापित कीं। वर्तमानमें आपकी फर्म १३।१४ मिलोंकी मैनेजिङ्ग एजंट है। वर्तमान मालिक (१) सर फजल भाई करीम भाई (२) सेठ हवीब भाई करीम भाई (३) सेठ इस्माइल भाई करीम भाई (४) सेठ करीम भाई इब्राहिम तीसरे बैरोनेट (५) सेठ अहमद भाई सर फाजल भाई और (६) इब्राहिम भाई गुलामहुसेन भाई हैं।

आपकी इन्दौरमें करीम भाई इब्राहिम एण्ड सन्सके नामसे कपड़ेकी दुकान है। जिनपर आपके मैनेजमेंटमें चलनेवाली मिलोंके कपड़ेका थोक व्यापार होता है। इन्दौरके प्रसिद्ध मालवा युनाइटेड मिलकी मैनेजिङ्ग एजंटकी यह फर्म है। T. A Creson)

मेसर्स तिलोकचन्द कल्याणमल *

इस प्रतिष्ठित फर्मके संस्थापक श्रीमान् सेठ तिलोकचन्दजी, श्रीसेठ स्वरूपचन्दजीके छोटे भ्राता थे। संवत् १९५८ में ये तीनों फर्मे अलग २ हुईं, और तबसे तिलोकचन्दजीके पुत्र श्रीमान् स्वर्गीय सेठ कल्याणमलजीने इस फर्मके कार्य्यको बढ़ाना प्रारम्भ किया। आपने व्यापारमें बहुत अच्छी प्रगति और प्रतिष्ठा प्राप्त की। एवं कल्याणमल मिल्स लि० के नामसे एक मिलकी भी स्थापना की। इस मिलका कपड़ा बड़ा मज़बूत, टिकाऊ और सुन्दर निकलता है। श्री सेठ कल्याण-मलजीका करीब दो वर्ष पूर्व देहान्त हो गया है। आप बड़े मिलनसार, उदार, और दानवीर सज्जन थे। आपकी उदारता सारे इन्दौरमें प्रसिद्ध थी।

आपने सार्वजनिक कार्य्योंमें भी खूब भाग लिया है। अपने पिताजीकी स्मृतिमें करीब ढाई लाख रुपयोंकी लागतसे एक हाईस्कूल खुलवाया है। जो इस समय भी बड़ी सफ़लताके साथ चल रहा है।इसके अतिरिक्त कल्याण औषधालय, जैन मन्दिर, कल्याण मातेश्वरी कन्या पाठशाला आदि और भी आपकी कई संस्थाएं हैं जिनमें आपने लाखों रुपयोंका दान किया है।

---

* इस फर्मका परिचय विस्तृत रूपसे चित्रों सहित बम्बई विभागमें मिल मालिकोंके पोर्शनमें दिया गया हैं।

* इस फर्मका विस्तृत परिचय लगातार चेष्टा करनेपर भी हमें प्राप्त न हो सका। अतएव हम अत्यन्त खेदके साथ अपनी जानकारीके अनुसार थोड़ासा परिचय दे रहे हैं।

इस समय आपकी गद्दीपर श्री कुं० हीरालालजी प्रतिष्ठित हैं। आपके स्वभावका संक्षिप्त परिचय पहले दिया जा चुका है।

इस समय इस फर्मकी इन्दौर, बम्बई, उज्जैन और मोरेनामें ब्राञ्चेस खुली हुई हैं। जिनपर खासकर बैंकिंग बिजिनेस होता है।

मेसर्स पन्नालाल नन्दलाल भण्डारी

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ नन्दलालजी भण्डारी हैं। आप ओसवाल श्वेताम्बर धर्मावलम्बीय सज्जन हैं। यों तो आपके पूर्वजोंका मूल निवास स्थान सादड़ी (जोधपुर) का था पर आपको मालवा प्रान्तमें बसे बहुत समय हो गया। आजकल आपका निवास स्थान रामपुरा (इन्दौर-स्टेट) है।

इस फर्मकी स्थापना श्री० सेठ नन्दलालजी भण्डारीके ही हाथोंसे हुई। प्रारम्भमें आपने कपड़ेकी दुकान स्थापित की। आपका सरकारी कर्मचारियोंसे अच्छा परिचय था। अतएव आपका माल काफी तादादमें बिक्री होने लगा और आपको अपने व्यवसायमें अच्छी सफलता प्राप्त हुई। कपड़ेके साथ २ आप अफीमका व्यवसाय भी करते थे। उन दिनोंमें इन्दौर का बाजार भारत वर्षमें अफीमके लिये मशहूर था। अतएव कहना न होगा कि आप भी उस समय अफीमके अच्छे व्यापारी हो गये थे। इसके पश्चात् यूरोपीय महाभारतके समय भी आपको कपड़ेमें बहुत अधिक लाभ हुआ।

आपने सन् १९१९ में सेन्ट्रल इंडियामें सर्व प्रथम स्थापित होनेवाले दी स्टेट मिल्स नामक मिलको २० सालके लिये ठेकेपर लिया। उस समय इस मिलमें मोटा कपड़ा निकला था। आपने इसमें करीब ५ लाख रुपया लगाकर बारीक कपड़े बुननेके संचे लगवाये। इससे स्टेट मिलकी उन्नति हुई और उसमें लोकोपयोगी अच्छा कपड़ा निकलने लगा। इसके पश्चात् आपने ६॥ लाख रुपयेकी पूंजीसे क्षिप्रा नदीके तटपर क्षिप्रा नामक ग्राममें एक जिनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी बनवाई।

सन् १९२५ ई० में आपने अपने मैनेजमेंटमें ३० लाखकी पूंजीसे "दी नंदलाल भण्डारी मिल्स लिमिटेड" नामक एक मिलकी स्थापनाकी। यह मिल यहांके अच्छे मिलोंमें समझा जाता है।

आपके इस समय तीन पुत्र हैं। प्रथम श्री० कन्हैयालालजी द्वितीय श्री० मोतीलालजी एवम् तृतीय श्री० सुगनमलजी हैं। इनमेंसे श्री० कन्हैयालालजी भंडारी मिलका, श्री० मोतीलालजी कपड़े की दुकानका एवम श्रीयुत सुगनमलजी स्टेट मिलके कार्यका संचालन कर रहे हैं।

श्री सेठ नन्दलालजी भण्डारी, इन्दौर

श्रीयुत कन्हैयालालजी भण्डारी, इन्दौर

श्रीयुत कन्हैयालालजी भण्डारी शिक्षित, उद्योगी एवम् गंभीर व्यक्ति हैं। आपहीकी वजहसे नन्दलाल भण्डारी मिल और स्टेट मिलका कार्य सुचारु रूपसे चल रहा है। आपकी मैनेजिंग-शिपमें भण्डारी मिलने बहुत तरक्की की है।

श्री० सेठ नन्दलालजीने एक मिडिल स्कूल स्थापित कर रखा है। वर्तमानमें इसका वार्षिक व्यय ४०००) के करीब होता है। आपका विचार निकट भविष्यमें ही इसे हाइस्कूल करनेका है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इन्दौर—मेसर्स पन्नालाल नन्दलाल भण्डारी—यहां रूई, और कपड़ेका व्यापार होता है। यह फर्म यहांकी स्टेट मिल एवम् भण्डारी मिलकी मैनेजिंग एजन्ट है।

इन्दौर—जानकीलाल सुगनमल तोपखाना—यहां कपड़ेका व्यवसाय होता है। खासकर ऊन और रेशमके कपड़का ज्यादा व्यापार होता है। इसमें सेठ जानकीलालजी भैय्याका साझा है।

क्षिप्रा—यहां आपकी जिनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है।

बैंकर्स

मेसर्स ओंकारजी कस्तूरचंद

इस फर्मके वर्तमान मालिक रायबहादुर सेठ कस्तूरचंदजी काशलीवाल हैं। आपका जन्म मरुदेशके कालू नामक गांवमें संवत् १८८४ में हुआ था। आपके पिता सेठ हंसराजजी बहुत साधारण परिस्थितके व्यक्ति थे। आपके बड़े भाई चुन्नीलालजी उस समय खेड़ेमें मामूली व्यवहार कर कठिनाईसे कुटुम्बका खर्च चलाते थे। उस समय सेठ कस्तूरचंदजी अपनी नेत्र-विहीना माताकी सेवामें अहर्निशि तत्पर रहते थे, उन्हींके सुभाशीर्वादके परिणामसे आपको एक परम प्रतिष्ठित गद्दीके स्वामी बननेका सौभाग्य प्राप्त हुआ।

सन् १८९३ में सेठ कस्तूरचंदजी इन्दौरके ख्याति प्राप्त कुटुम्बमें सेठ.ओंकारजीके यहां गोदी लाये गये। उस समय सेठ स्वरूपचंदजी सेठ ओंकारजी और सेठ तिलोकचंदजी तीनों भाइयोंका व्यवसाय शामिल ही होता था तथा यह कुटुम्ब जनतामें "हावले कावले" के नाम से भी सम्बोधित किया जाता था। सन् १९०० में सेठ ओंकारजीका देहावसान हुआ, उस समयसे इस कुटुम्बकी अलग २ तीन फर्में स्थापित हुईं। सेठ कस्तूरचंदजीकी वय उस समय केवल १६ वर्ष की थी, इतनी सी छोटी वयमें ही आप पर अपनी फर्मके अफीम और बैंकिंग व्यवसायका भार आ पड़ा। पर आप उसे बड़ी तत्परता और बुद्धिमानीसे संचालन करते रहे। सन् १९०४ सन् १९०६ और १९११ में आपको क्रमशः पांच; चार व तीन लाखका नुकसान देना पड़ा, इसी बीच आपने सन् १९०८ से १९११ तक अफीम और रवन्नेमें नुकसानसे कई गुनी अधिक रकम पैदा कर ली। उस समय आप अफीम ,जवाहरात, रुई तथा अनाजका विशेष व्यवसाय करते थे। सन् १९१३ में बम्बईकी तिलोकचंद हुकुमचंदके नामकी फर्म जो आप तीनों भाइयोंके साझेमें अफीमकी एजंसीका काम करती थी, उठा दी गई।

अफीमका व्यवसाय जब मालवेमें बंद हो गया तो आपने अपनी सम्पत्ति मिल उद्योग एवं रुईके व्यवसायमें लगाई। स्थानीय हुकुमचंद मिल, कल्याणमल मिल, राजकुमार मिल एवं उज्जैनके विनोद मिलमें आपने बड़े बड़े भाग ले रक्खे हैं। आप इन मिलोंके डायरेक्टर भी हैं।
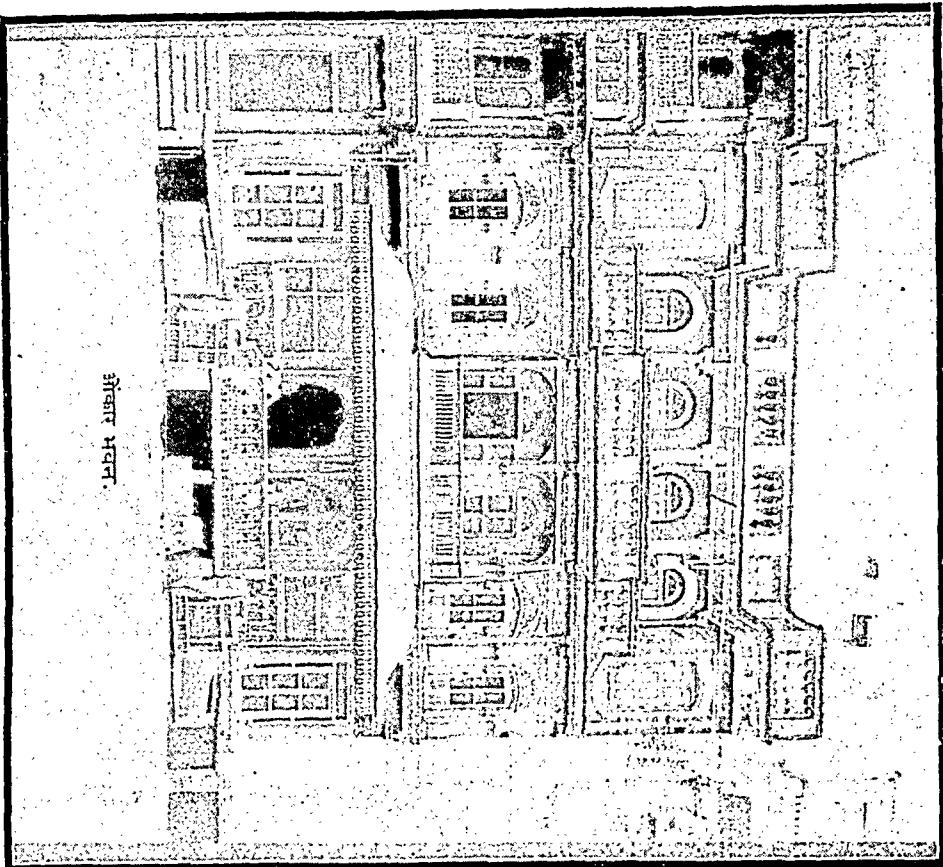
ओंकार भवन (रा० ब० ओंकारजी कस्तूरचन्द) इन्दौर
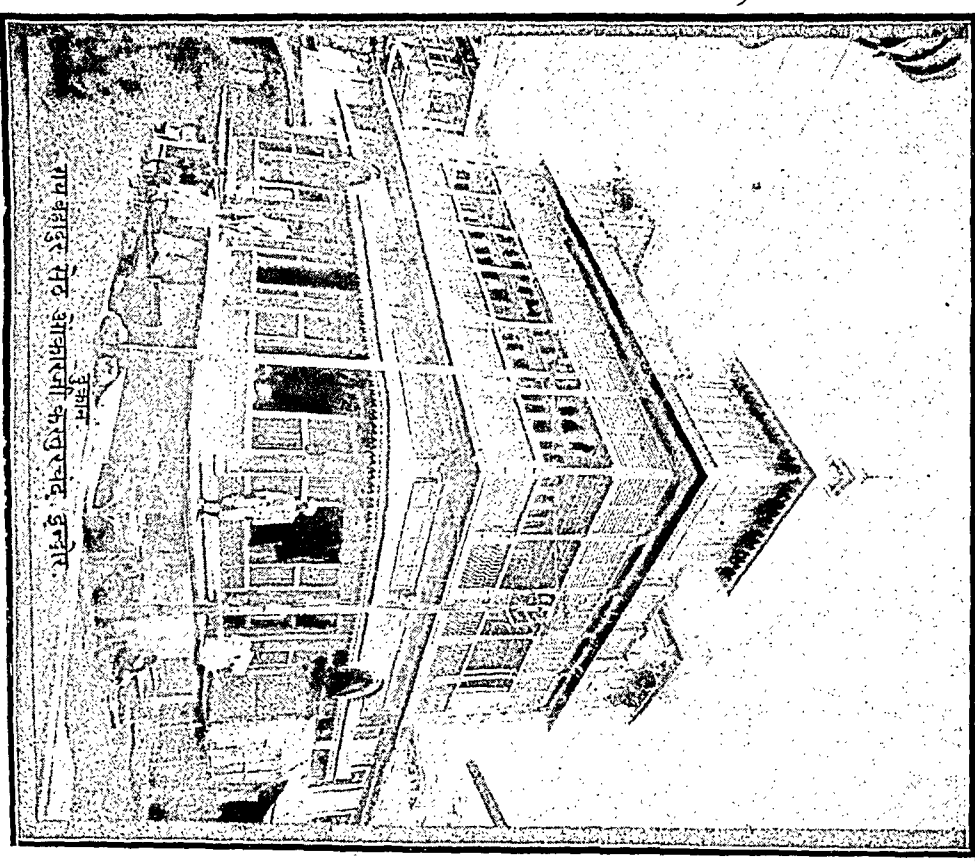
दुकान (रा० ब० ओंकारजी कस्तूरचन्द) इन्दौर
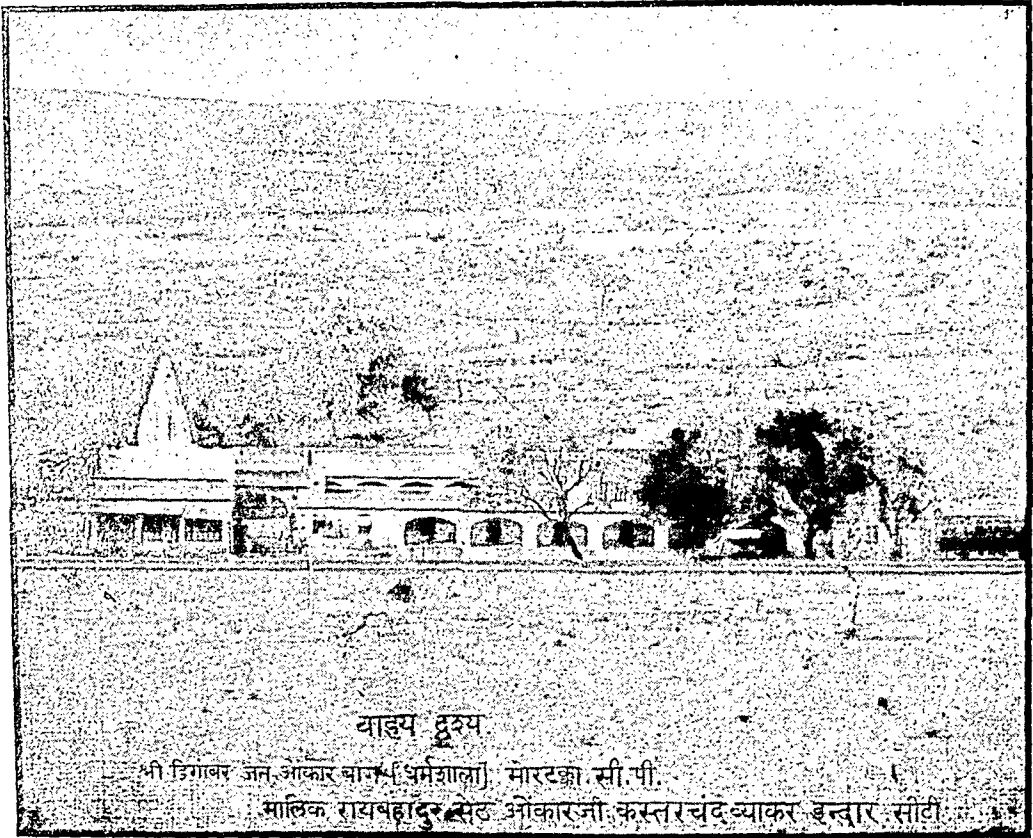
ओंकारबाग धर्मशाला मोरटक्का
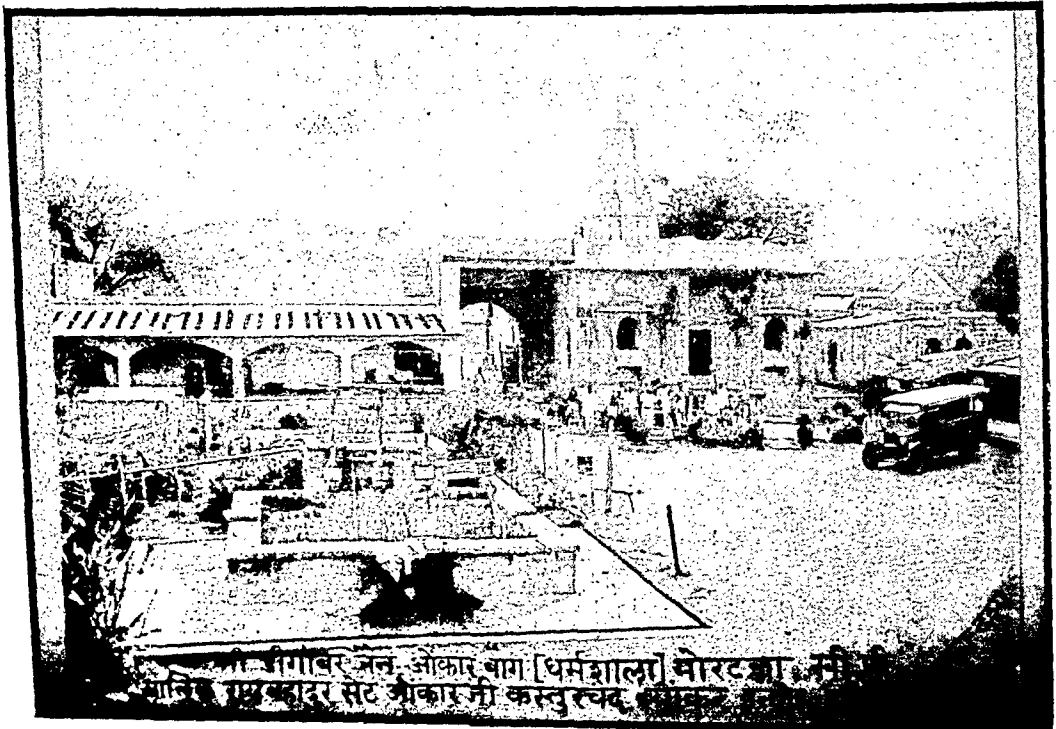
ओंकारबाग धर्मशाला (भीतरी दृश्य) मोरटक्का

सेठ कस्तूरचंदजीको पुस्तक पठन और बागायतसे बड़ा प्रेम है आपने अपने तुकोगंजके सुन्दर अनोप भवनमें एक अच्छी लायब्रेरी स्थापित कर रक्खी है। तुकोगंज, लापरिया भैरों और मंवूरीमें आपके अच्छे बगीचे बने हुए हैं।

सेठ कस्तूरचंदजीका प्रथम विवाह सन् १६०० में सेठ विनोदीराम बालचंदके यहां, दूसरा १९१५ में देहलीके सेठ सोहनलाल प्रभुदासके यहां और तृतीय विवाह सन् १९१६ में रतनलाल गुलाबचंद सिंघी जयपुरवालोंके यहां हुआ।

सेठ कस्तूरचंदजीने अपने मित्र कर्नल सर जेम्स रावर्ट्सके स्मरणार्थ रेसिडेंसी इन्दौरमें करीब १७ हजार की लागतसे रावर्टनरसिंह होम बनवाया। स्थानीय किंग एडवर्ड मेमोरियल हॉस्पिटलमें १ लाख रूपयोंकी लागतसे एक आउट पेशेन्ट वार्ड (वाहरसे आये बीमारोंके लिये) बनवाया। तथा राऊके सेनेटोरियममें एक स्पेशल यूरोपियन वार्ड बनवाया। महाराजा तुकोजीराव हास्पिटलमें भी आपने अपने तीनों भाइयोंके नामसे करीब २५ हजारकी लागतसे महाजन बोर्ड बनवाया। आपके पिता श्री सेठ ओंकारजीके स्मरणार्थ खेडीघाटमें ओंकार वाग नामकी एक भव्य एवं सुन्दर धर्मशाला व जैन मंदिर १ लाख रुपयोंकी लागतसे बनवाया। यहां जैनियोंका सिद्धवरकूट और वैष्णवोंका ओंकारेश्वर तीर्थ होनेसे हजारों यात्री प्रति वर्ष यहां आते हैं। इस स्थान से सेठ साहबको विशेष प्रेम है। प्रति वर्ष आप उक्त धर्मशालामें सम्पत्ति लगाते रहते हैं।

आपने दीतवारिया बाजारमें अपने भाइयोंके साथ डेढ़ लाख रुपयोंकी लागतसे एक दर्शनीय सुन्दर जैन मन्दिर बनवाया है। लार्ड और लेडी रीडिंग जव इन्दौर आये थे; तव इस मंदिरकी सुन्दरता को देखकर बहुत प्रसन्न हुए थे। आपकी ओरसे लेडी ओडवायर कन्या पाठशाला रेसिडेंसीमें एक मेनहॉल भी बना हुआ है। गरीब और अनाथ लोगोंको भोजन एवं वस्त्रके लिये आपकी फर्मके धर्मादे खातेसे प्रति वर्ष ७ हजार रुपयोंका प्रबंध है। सन् १६१०,१४ और २७ में आपने अपने वहुतसे जाति बांधवोंको साथ लेकर तीर्थ यात्रा की और उसमें करीब ५० हजार रुपये व्यय किये। इन्दौरके किङ्गएडवर्ड मेडिकल स्कूलमें मेडिशियंस और मिडवाइफकी परीक्षामें प्रथम श्रेणीमें पास होनेवाले विद्यार्थियोंको आपकी ओरसे स्वर्ण पदक दिये जाते हैं।

सन् १६११ में देहली दरबारमें सेंट्रल इण्डियाकी तरफसे सेठ कस्तूरचन्दजी मेहमान होकर गये थे, वहां राजा महाराजाओंके साथ क्यानव्हांस सिटीके अन्दर स्वतंत्र केम्प बनानेके लिये आपको स्थान मिला था। कई हजारकी लागतसे आपने देहलीमें अपना कैम्प बनवाया था। वहां उस समय सम्राट जार्ज पंचमने स्वर्गीय एडवर्ड सप्तमके अश्वारोही पुतलेकी स्थापना की थी उसमें भी आपने १०००) दिये थे। सन् १६१२ की प्रथम जानवरीके दिन आपको गवर्नमेंटने राय बहादुरकी पदवीसे सम्मानित किया।

आपने ३५०००) की सहायता इन्दौरकी हिन्दी साहित्य समितिको राष्ट्रभाषाकी वृद्धिके लिये दी। एवम् सन् १९१४ में यूरोपीय महासमरके समय हताहत सैनिकोंके रक्षार्थ एक मोटर ७५००) की खरीदकर लार्ड हार्डिंजके द्वारा रण क्षेत्रमें भिजवाई।

आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

(१) इन्दौर—रायबहादुर सेठ ओंकारजी कस्तूरचन्द शीतला माता बाजार—यहां बेङ्किग, साहुकारी, कॉटन तथा हुंडी चिट्ठी और ज़वाहरातका व्यवसाय होता है।

(२) बम्बई— रा० ब० सेठ ओंकारजी कस्तूरचंद राजमहल भुलेश्वर—यहां भी बेङ्किग और हुंडी चिट्ठी और कॉटन का व्यापार होता है।

(३) उज्जैन—रा० ब० सेठ ओंकारजी कस्तूरचंद सराफा—यहां हुंडी चिट्ठी तथा कॉटनका व्यवसाय होता है।

(४) तराना—रा० ब० ओंकारजी कस्तूरचंद—यहां आपकी एक जीनिंग फैक्टरी है तथा रुई गल्ला और साहुकारी व्यवसाय होता है। इस स्थानपर खेती द्वारा हजारों मन गल्ला प्रतिवर्ष आपके यहां पैदा होता है।

मेसर्स परशुराम दुलीचन्द

इस फर्मको यहांपर स्थापित हुए करीब १०० वर्ष हुए। इसके व्यवसायको सेठ दुलीचन्दजी एवं सेठ कनीरामजीने विशेष तरक्की दी। वर्तमानमें इसफर्मके मालिक सेठ कनीरामजीके पुत्र सेठ फतेचन्दजी हैं। आप होल्कर गवर्नमेन्ट द्वारा स्थापित इन्दौर सराफा एसोशिएसनके वाइस प्रेसिडेंट एवं हुकुमचंद मिल तथा राजकुमार मिलके मैनेजिङ्ग डायरेक्टर हैं। आपकी ओरसे दीतवारिया बाजारमें एक अन्नक्षेत्र चालू है। इसके अतिरिक्त बड़वानीमें जिर्णोद्धारके काममें आपने अच्छी सहायता दी है। सेठ फतेचन्दजी समझदार एवं विवेकशील पुरुष हैं। आपकी फर्म सराफा बाजारमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है, वर्तमानमें आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम कुँवर राजमलजी, कुँवर लालचंदजी एवं कुं० माणिकचंदजी है।

आपकी फ़र्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) इन्दौर—मेसर्स परशुराम दुलीचंद छोटा सराफा—यहां बैङ्किग, हुण्डी चिट्ठी तथा जवाहरातका व्यापार होता है।

(२) इन्दौर—मेसर्स पन्नालाल खूबचंद छोटा सराफा—यहां भी सूद, हुंडी, चिट्ठी और जवाहरातका व्यापार होता है।

(३) इन्दौर—मेसर्स राजमल लालचंद छोटा सराफा—यहां चांदीसोनेका व्यापार होताहै।

श्री०सेठ फतेहचन्दजी सेठी (परसराम दुलिचन्द) इन्दौर

श्री०स्व० किशनलालजी भंडारी (बगतराम बछराज) इन्दौर

श्री०राजमलजी सेठी (परसराम दुलिचन्द) इन्दौर

श्री०सेठ मांगीलालजी भंडारी (बगतराम बछराज) इन्दौर

मेसर्स बगतरामजी बच्छराजी

इस फर्मके संस्थापक श्रीमान् सेठ बगतरामजी हैं। आप नागोर (जोधपुर राज्य) निवासी माहेश्वरी समाजके सज्जन हैं। आपके हाथोंसे करीब १०० वर्ष पहिले इस दुकानकी स्थापना नागोरमें हुई थी। पश्चात् आपके पुत्र रामसुखजीने इस दुकानको तरक्की दी। सेठ रामसुखजीके पुत्र बच्छराजजीने इस फर्मके व्यापारको और भी बढ़ाया और उन्होंने कई स्थानोंपर इसकी शाखाएं स्थापित की। हिज हाइनेस महाराजा तुकोजीराव द्वितीयने इस दुकानके मालिकोंको बहुत प्रोत्साहन दिया, तथा इस फर्मके लिये स्पेशल रूपसे आधा महसूल कर दिया। उस समयसे इस दुकानका बहुत मान होने लगा। दरबारमें भी इस फर्मको ऊंची कुर्सी मिलने लगी। इन्दौरके ग्यारह पंचोंमें भी आपको स्थान मिला। बच्छराजजीकी मृत्युके पश्चात् उनकी सहधर्मिणीने कई लाख रुपये दान किये। उनके कोई पुत्र न होनेसे उन्होंने श्रीकिशनलालजीको गोद लिया। पर वे केवल २५ वर्षकी आयुमें ही स्वर्गवासी हो गये थे। इनके भी कोई पुत्र होनेसे इस फर्मपर सेठ मांगीलालजी दत्तक लाये गये। सेठ मांगीलालजी श्रीप्रणामी सम्प्रदायके अनुयायी हैं। आपने एक मंदिर सूरतमें पचास हजारकी लागतका, एक मन्दिर उज्जैनमें एक लाख रुपयेकी लागतका, एक मन्दिर पुष्करमें पांच हजार रुपयेकी लागतका बनवाया। इसके अतिरिक्त आपकी तरफसे हृषीकेशमें (पचास हजार रुपया) और पद्मावतीपुरी (पन्ना) में अन्नक्षेत्र चल रहे हैं। इन अन्नक्षेत्रोंमें साधु सन्त और विद्यार्थी भोजन पाते हैं। इसके अतिरिक्त पद्मावती पुरीमें प्रणामी धर्म प्रबन्ध कमेटी स्थापित हुई है, इसके प्रेसिडेण्ट भी आप ही हैं। इसमें आपने २१०००) दान किये हैं।

आपकी दुकानें नीचे लिखे स्थानोंपर हैं।

(१) इन्दौर—सेठ बगतराम बच्छराज—इस दुकानपर रुई और मिलके शेअरोंका व्यापार होता है।

(२) उज्जैन—श्रीकिशन गोपीनाथ—यह दुकान उज्जैनमें कॉटन कमीशन एजण्टका काम करती है।

(३) इन्दौर कैम्प—किशनलाल मांगीलाल—इस दुकानपर रुईका व्यापार होता है।

(४) खरगोन—किशनलाल मांगीलाल—रुई कपास और मनौतीका व्यापार होता है।

(५) शोलापुर—मांगीलाल भण्डारी—इस दुकानपर मिलके कपड़ोंकी एजन्सीका काम है।

सेठ जुहारमलजी (जमनादास जुहारमल) इन्दौर

सेठ हरविलासजी (रामप्रताप हरविलास) इन्दौर

स्व० सेठ राधाकृष्णजी धूत (शिवजीराम हरनाथ) इन्दौर,

सेठ दाऊलालजी धूत (शिवजीराम हरनाथ) इन्दौर

मेसर्स रामप्रताप हरविलास

इस फर्मके प्रधान संस्थापक सेठ रामप्रतापजीने संवत् १९०१ में फतहपुर (जयपुर) से आकर इन्दौरमें निवास किया। सेठ रामप्रतापजी पर महाराज तुकोजीराव होल्कर द्वितीयका बड़ा विश्वास था। संवत् १९१९ में आपहीके द्वारा राज्यके खजानेसे हुंडी खातेका लेनदेन साहुकारोंसे शुरू हुआ। आप उस समय अफीमका बहुत बड़ा व्यवसाय करते थे। सेठ रामप्रतापजीके परिश्रम एवं मध्यस्थीसे सरकारी खजानेमें अफीमके द्वारा २५ लाख रुपयोंका लाभ हुआ था। उपरोक्त लाभके उपलक्ष्यमें आपने सरकारसे किसी प्रकारकी उजरत या कमीशन नहीं लिया था। जिस समय होल्कर स्टेट रेलवे खोलनेका निश्चय हुआ उस समय बृटिश सरकारको १ करोड़ रुपया देनेके बारेमें आप मध्यस्थ मुकर्रर किये गये थे। सेठ रामप्रतापजी ११ पञ्चोंमें आगेवान थे। सेठसाहबने कई बार महाराजा तुकोजीराव एवं महाराजा शिवाजीरावको अपने घरपर निर्मंत्रित किया था। आपका देहावसान सन् १९२५ हुआ, उस समय आपके पुत्र हरविलासजीकी वय ५१ वर्षकी थी। सेठ रामप्रतापजीको कई बड़े २ आफिसरोंकी ओरसे प्रमाण पत्र मिले हैं। रा० ब० नानकचन्दजी भूतपूर्व मिनिस्टर आपके लिये लिखते हैं कि "मैं अपने ३२ सालके अनुभवसे कह सकता हूं कि मैंने सेठ रामप्रतापजी और उनके पुत्र हरविलासजीको सदैव पूर्ण विश्वासपात्र तथा ईमानदार पाया"। कर्नल सर डेविड बार ५ जून १९२० के पत्रमें आपके लिये लिखते हैं कि "मैं सेठ रामप्रतापजीको सन् १८७० से जानता हूं। सेठ रामप्रताप हरविलासकी फर्म उस समय समस्त मालवा प्रांत तथा बम्बईमें प्रसिद्ध थी। महाराज तुकोजीराव इन्हें बड़ी सम्मानकी दृष्टिसे देखते थे। ईसवी सन् १८९० की आकस्मिक मंदीकी वजहसे मालवाके कई अफीमके बड़े २ व्यापारियोंको बहुत नुकसान पहुंचा, उनमें सेठ रामप्रतापजी बहुत भी अधिक घाटेमें थे।"

इस समय इस फर्मके मालिक स्वर्गीय सेठ हरविलासजीके पुत्र सेठ रामेश्वरदासजी हैं। आप ११ पञ्चोंके सदस्य हैं एवं आपको दरबारमें भी स्थान प्राप्त है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इन्दौर—मेसर्स रामप्रताप हरविलास बड़ा सराफा—यहां बैङ्किग हुंडी चिट्ठी तथा कॉटनका व्यवसाय होता है।

मेसर्स शिवजीराम हरनाथ

इस फर्मके संस्थापक सेठ हरनाथजी धूत डीडवाना (जोधपुरके) निवासी माहेश्वरी जातिके सज्जन थे। संवत् १९११ में सेठ शिवजीशालिगराम तथा, आपकी फर्म अलग २

होगई। उस समय इस फर्मपर प्रधान व्यापार हुंडी, चिट्ठी तथा अफीमका होता था। सेठ हरनाथ-जीने इस व्यवसायमें अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की थी। आपका देहावसान संवत् १९४९ में ७० वर्षकी वयमें हुआ।

सेठ हरनाथजीके यहां सेठ राधाकृष्णजी संवत् १९३२ में गोद लाये गये। आपने मल्हारगंजमें २० हजारकी लागतसे एक छत्र्याली मंदिर बनवाया, तथा इन्दौरके समीप हरदय लाला नामक स्थानपर १० हजारकी लागतसे एक गौशाला स्थापितकी जिसमें इस समय १०० से अधिक गाएं पलती हैं। आपकी ओरसे उज्जैनमें २० वर्षोंसे एक अन्नक्षेत्र चल रहा है। जिसमें १५ आदमी रोज भोजन पाते हैं। इसके अतिरिक्त आपने बारह माथामें एक बारह द्वारी एवं राम बागियामें एक धर्मशाला बनवाई है। इस प्रकार आपने करीब ३ लाख रुपयोंका दान किया है। संवत् १९६६ में श्री दाऊलालजी यहां गोदी लाये गये। श्री दाऊलालजीके गोद लानेके पश्चात् सेठ राधाकृष्णजीके २ पुत्र और हुए, जो अभी शिक्षा पा रहे हैं। श्री दाऊलालजीने अपने बेङ्किंग व्यवसायको उत्तेजन दिया, एवं एक जीनिंग फेक्टरी तथा कपड़े की फर्म और स्थापितकी। आपका व्याह कलकत्तेके प्रसिद्ध माहेश्वरी श्रीमंत मगनीरामजी बांगड़के यहां हुआ। इस समय आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ इन्दौर—मेसर्स शिवजीराम हरनाथ छोटा सराफा—यहां हुंडी चिट्ठी शेअर्स तथा रूईका व्यापार होता है।

२ इन्दौर—दाऊलाल मुरलीधर तुकोजीराव क्लाथ मारकीट—यहां कपडेका व्यवसाय होता है।

३ कालीसिंध—(गवलियर स्टेट) मुरलीधर काटन जीनिंग फेक्टरी—यहां आपकी जीन है तथा रूई गल्ला और आढ़तका व्यापार होता है।

मेसर्स शिवजीराम शालिगराम

इस फर्मका संस्थापन सर्व प्रथम सेठ साबूलसिंहजीने किया। आप १०० वर्ष पूर्व डीडवानासे इन्दौर आये थे। आपके बाद क्रमशः सेठ लक्ष्मीनारायणजी, धनरूपमलजी, शिवजी रामजी, शालिगरामजी जयरामदासजी एवं रामविलासजीने इस फर्मके कार्यको सम्हाला। इस फर्ममें सेठ शिवजीरामजीके ६ भाइयोंका (सेठ हरनाथजीको छोड़कर) साझा था। वे संवत् १९७२ में अलग हुए। इस फर्मके व्यवसायको सेठ रामप्रसादजी, रामकिशनजी और रामकुंवारजीने विशेष उत्तेजन दिया। पहिले इस फर्मपर अफीमका व्यवसाय होता था। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ जयकिशनदासजी हैं। आप सेठ रामविलासजीके यहां गोदी लाये गये हैं। जिस समय स्टेट मिल व्यापारोत्तेजक कम्पनीके हाथोंमें था, उस समय आपका उसमें आधा हिस्सा

स्व०सेठ जयरामदासजी (शिवजीराम शालिगराम) इन्दौर

स्व०सेठ रामबिलासजी (शिवजीराम शालिगराम) इन्दौर

श्रीयुत जयकिशनदासजी धूत (मे० शिवजीराम शालिगराम) इन्दौर

था। आप स्टेट मिलके मैनेजिंग एजण्ट भी रह चुके हैं। सेठ जयकिशनदासजी ११ पञ्चोंकी कमेटीमें निर्वाचित किये गये हैं, एवं आप यहाँ ऑनरेरी मजिस्ट्रेट भी हैं। इस परिवारकी ओरसे उज्जैन सराफामें एक नरसिंह मंदिर बना हुआ है, तथा ओंकारेश्वर मांधातामें ५० वर्षोंसे एक अन्न-क्षेत्र चालू है। इन्दौरमें बियावानीके पास आपकी एक संस्कृत पाठशाला एवं छत्रीबागमें एक अन्न क्षेत्र चालू है। आगरेमें आपने एक लक्ष्मीनारायणजीका मंदिर बनवाया है, इसके अतिरिक्त ऋषीकेश, डीडवाणा, मोरटक्का आदि स्थानोंपर धार्मिक कार्योंमें भी आपने रकम लगाई हैं।

इस समय आपकी नीचे लिखें स्थानोंपर दुकानें हैं।

१ इन्दौर—मेसर्स शिवजीराम शालिगराम छोटा सराफा—इस फ़र्मपर बैंङ्किग और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

२ सिहोर (भोपाल) शिवजीराम शालिगराम—यहां आढ़तका काम होता है।

३ सुनेल (होल्कर स्टेट) शिवजीराम शालिगराम—यहां भी आढ़तका काम होता है।

४ बम्बई—शिवजीराम रामनाथ कसाराचाल—आढ़त और बैंङ्किग व्यवसाय होता है।

मेसर्स शोभाराम गंभीरमल

इस फर्मके मालिक सेठ गंभीरमलजीका जन्म सम्वत् १८९९में हाटपीपल्या(इन्दौरके समीप) में शोभारामजीके घर हुआ। जिस कुलमें आपका जन्म हुआ वह व्यापारमें पहिलेसे ही प्रसिद्ध था। आपके सगे भाई और चचेरे भाई और हैं। आपके सगे भाई सेठ चुन्नीलालजीका स्वर्गवास अभी कुछ समय पूर्वही हुआ है। इनका भी कारोबार अच्छा चल रहा है।

सेठ गंभीरमलजीकी शिक्षा ८ वर्षकी अवस्थामें शुरू हुई। हिन्दीका थोड़ासा ज्ञान प्राप्त करके आप अपने व्यापारमें प्रवृत्त हुए।

व्यापारको बढ़ते हुए देखकर आपने सम्वत् १९३६ में गम्भीरमल चुन्नीलालके नामसे इन्दौरमें दूकान की। आपके यहां अफ़ीमका धन्धा बहुत होता था। सम्वत् १९६५ में जब भारत सरकारने चीनमें अफीम भेजनेका ठेका दिया, उस समय आपने लाखों रुपये खन्नामें लगा दिये, जिसके परिणाम स्वरूप आपने अच्छी रकम कमाई। अब अफ़ीमका काम उठ जानेसे आपके यहां देन लेनका रोजगार होता है। आपके लाखों रुपये इन्दौरकी मिलों और व्यापारियोंमें रहते हैं। सम्वत् १९८० में आप सेठ चुन्नीलालजीसे अलग हो गये और शोभाराम गंभीरमलके नामसे कारोबार करने लगे।

आपकी प्रकृति बहुत ही सरल है और आपका रहन सहन बिलकुल सादा है। आपके दो पुत्र और तीन पुत्रियां हैं।

आपके ज्येष्ठ पुत्र श्रीयुत गेंदालालजी अधिकतर हाटपीपल्यामें रहते हैं। आप वहां ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं, आपका वहां और बागली स्टेटमें अच्छा प्रभाव है। आपके तीन पुत्र व एक पौत्र हैं।

आपके कनिष्ट पुत्र श्रीयुत गुलाबचंदजी टोंग्या हैं। इन्दौरका सब काम काज आपही संभालते हैं। आपको हिन्दीसे बड़ा प्रेम है। आपकी लाइब्रेरीमें अनेक पत्र पत्रिकाएं एवम् पुस्तकोंका संग्रह है।

यों तो आपकी ओरसे कई तरहका धर्मादा होता रहता है, किन्तु विशेष उल्लेखनीय यह है कि आपके पूज्य पिताजीकी स्मृतिमें हाटपीपल्यामे आप व आपके भ्राताकी ओरसे एक गऊ-शाला बनवा दी गई है और उसके खर्चका भी स्थाई प्रबन्धकर दिया गया है। तीर्थोंपर भी आपकी ओरसे कई जगह निवासस्थान बने हुए हैं। हाट पीपल्याके पास चापड़ा आम सड़कके किनारे भी अभी हालमें एक धर्मशाला सौ० फूलीबाई धर्मपत्नी सेठ गंभीरमलजीके नामपर बनाई गई है।

आपने किसी संस्था निर्माणके उद्देश्यसे ५००००) पचास हजार रुपये अलग निकाल दिये हैं, जिससे शीघ्र ही एक उपयोगी संस्थाकी स्थापना होनेकी आशा है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

(१) इन्दौर—मेसर्स शोभाराम गंभीरमल शीतलामाता बाजार—यहां बैङ्किग व सराफी लेनदेनका बहुत बड़ा व्यवसाय होता है।

(२) इन्दौर—गुलाबचंद माणकचन्द तुकोजीराव क्लाथ मारकीट—यहां कपड़ेका अच्छा व्यापार होता है।

(३) हाटपीपल्या—शोभाराम गंभीरमल—लेनदेन और साहुकारी व्यापार होता है।

मेसर्स शोभाराम चुन्नीलाल*

इस फर्मका संचालन श्री चाउलालजी टोंग्या करते हैं। आपके पिता श्री सेठ चुन्नीलालजीका देहावसान होगया है। आपका खास निवास स्थान हाटपीपल्या (इन्दौरके पास) है। इस फर्मपर पहिले अफ़ीमका बहुत बड़ा व्यवसाय होता था। अफ़ीमके खन्नेमें इस फर्मने बहुत अधिक सम्पत्ति कमाई थी। संवत् १९८० में सेठ चुन्नीलालजी तथा सेठ गंभीरमलजीके कुटुम्बी अलग २

*श्रीयुत चाऊलालजीको परिचय भेजनेके लिये कई बार सूचित किया, परन्तु आपका परिचय हमें प्राप्त नहीं हुआ, इसलिये जितना हमें ज्ञात था, उतनाही परिचय छापा जारहा है।

प्रकाशक—

स्व० सेठ चुन्नीलालजी (शोभाराम चुन्नीलाल) इन्दौर

स्व० सेठ गम्भीरमलजी (शोभाराम गंभीरमल) इन्दौर

श्रीयुत चाहूलालजी टोंगिया S/o चुन्नीलालजी, इन्दौर

श्रीयुत गुलाबचन्दजी टोंगिया S/o गम्भीरमलजी, इन्दौर

श्री० सेठ गेंदालालजी (गेंदालाल सूरजमल) इन्दौर

श्री० सूरजमलजी (गेंदालाल सूरजमल) इन्

बिल्डिङ्ग (गेंदालाल सूरजमल) पिपलीबजार, इन्दौर

होगये। तबसे यह फर्म शोभाराम चुन्नीलालके नामसें व्यवसाय करती है। श्रीचाऊलालजी बड़े सुशील, विचारवान एवं सज्जन व्यक्ति हैं। आपकी फर्मपर बैङ्किग तथा साहुकारी लेनदेन बहुत बड़े प्रमाणमें होता है। यह फर्म यहांके धनिक समाजमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

मेसर्स गेंदालाल सूरजमल *

इसफर्मके वर्तमान मालिक सेठ गेंदालालजी बड़जात्या बीजलपुर (इन्दौर) के निवासी सरावगी दिगम्बर जैन जातिके हैं। आपके पिताजी (संवत् १९३६) में स्वर्गवासके (समय केवल २००) छोड़ गये थे। उससे आप खेड़ेमें गल्ले और किरानेका व्यापार करते रहे बादमें संवत् १९६२ में आप इन्दौर आये। यहां आनेपर आपने राज्यभूषण सर सेठ हुकुमचंदजीकी रुई और अफीमकी पेटीकी दलालीका काम आरंभ किया,तथा फिर पीछेसे रूई और शेअरोंके वायदेका घरू सौदा भी करने लगे। इसमें आपने बहुत अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की।

आपने मूलवद्रीकी यात्रामें १९७५ में १२ हजारका दान किया। संवत १९७६ में कुंडलपुरमें एक कमरा बनवाया, एवं गुणावा सिद्धक्षेत्रमें जमीन खरीदकर दान की सम्मेद शिखरजीमें भी आपने तीन कोठरियां बनवानेकी स्वीकृति दी। संवत १९८२में गिरनारमें फर्श जड़वाई, सीढ़ियां बनवाई आदिमें आपने ३००० रु०का दान दिया। आपके चार पुत्र हैं। बड़ेका नाम श्री सूरजमलजी है। सेठ गेंदालालजीने एक बिल्डिंग पीपली बाजारमें करीब १ लाख ३५ हजारकी लागतसे बनवाई है। आपने अपनी सन्तानोंके विवाहोंमें हजारों रुपये व्यय किये हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) इन्दौर-मेसर्स गेंदलाल सूरजमल बड़ासराफा T. A. Barjatia टेलीफोन नं० १३२—इस फर्मपर रुईके वायदेका और शेअरोंका सौदा तथा बैङ्किग और हुंडी चिट्ठीका व्यापार होता है।

(२) सनावद-मेसर्स गेंदालाल सूरजमल—यहां आपकी कॉटन जीनिंग फेक्टरी है तथा रुईका व्यापार होता है।

(३) इन्दौर—सूरजमल बाबूलाल तुकोजीराव क्लाथमारकीट—T. A Gambhir—यहां कल्याणमल मिल्स इन्दौरके कपड़ेकी सोल एजंसी है तथा हुण्डी चिट्ठीका व्यापार होता है।

(४) बम्बई—सूरजमल बाबूलाल गोविन्द गली मूलजीजेठामारकीट T. A. Cloth shop यहां भी इन्दौरके कल्याणमल मिलकी सोल एजंसी है। व हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

---

* आपका परिचय बहुत देरसे मिला, इसलिये यथा स्थान नहीं छाप सके। प्रकाशक—

जौहरी

जौहरी हरकचन्द मोनशी

इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब १५ वर्ष हुए। पहले इस फर्मपर मोनशी अमूलखके नामसे व्यापार होता था। इसे सेठ गोकुलदास हरकचंदने स्थापित किया। आपका निवास स्थान मोरवी (काठियावाड़) है। आप ओसवाल स्थानकवासी जैन सम्प्रदायके माननेवाले हैं।

आपकी फर्मपर जवाहिरातका व्यापार होता है। मालवेके कई राजा महाराजाओंको आप जवाहरात सप्लाय करते हैं। इन्दौरके युवराजकी शादीमें आपकी फर्मसे बहुतसा जवाहिरात सप्लाय हुआ था।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इन्दौर—जोहरी हरकचंद मोनशी, छोटा सराफा—यहां जवाहिरातका व्यापार होता है। यह फर्म आर्डर मिलनेपर जेवर जड़वाकर भी सप्लाय करती है। साथही तैयार माल भी मिलता है।

मोरवी—मोनशी अमूलख—यहां आपकी वर्कशाप है।

कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स बलदेवजी शंकरलाल

इस फर्मको इन्दौरमें स्थापित हुए करीब १०० वर्ष हुए होंगे। इसके स्थापक सेठ बलदेवजी हैं। आप खण्डेलवाल वैश्य जातिके हैं। आपका मूल निवास स्थान खाटू (जयपुर) है। आपके तीन पुत्र थे। जिनकी इस समय अलग २ फर्में चल रही हैं। वर्तमान फर्म आपके पुत्र सेठ शंकरलालजीकी है। आपके हाथोंसे इस फर्मकी अच्छी उन्नति हुई है। इस समय आपके चार पुत्र हैं। (१) सेठ आशारामजी (आप दत्तकलाये गये हैं) (२) सेठ पूनमचन्दजी (३) से० चुन्नीलालजी तथा (४) से० मोतीलालजी हैं। आप चारोंही इस फर्मके मालिक हैं।

आपकी ओरसे अभी अभी एकलाख रुपैया शंकरलाल खण्डेलवाल छात्राश्रम और श्रीमती ज्योतिबाई महिलाश्रम नामक संस्थाओंके लिये दिया गया है। आपने अपने एक अन्न-क्षेत्रको विद्यार्थियोंकी स्कालरशिपमें परिवर्तित कर दिया है। आपने अपने जन्म स्थान खाटूमें एक पाठशाला भी स्थापित कर रखी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इन्दौर—मेसर्स बलदेवजी शंकरलाल गोराकुण्ड —T. A. Rabbawala इस फर्मपर कॉटन बैंकिग तथा शेअरोंका व्यापार होता है।

मेसर्स मुन्नालाल लच्छीराम इन्दौर-केम्प

इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब ७५ वर्ष हुए। इसे सेठ चुन्नीलालजीने स्थापित किया। आपके २ पुत्र थे, सेठ लच्छीरामजी और जगन्नाथजी। सेठ लच्छीरामजीका देहान्त हुए १५ वर्ष होगये। आपने इस फर्मकी अच्छी उन्नति की। वर्तमानके इस फर्मके मालिक जगन्नाथजी, नारायणजी, गोवर्धनजी रामदासजी हैं। सेठ जगन्नाथजी इन्दौरमें अग्रवाल महासभाके अधिवेशनके समय स्वागताध्यक्ष रह चुके हैं। आपकी ओरसे स्मशानपर कुंआ, नल, मकान आदि बने हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) इन्दौर-केम्प—मेसर्स, मुन्नालाल लच्छीराम—यहां हेड़ आफिस है। इस फर्मपर बैंकिग कॉटन और हुण्डी चिट्ठीका काम होता है। यह फर्म यहांके स्वदेशी मिलकी मैंनेजिंग एजंट है तथा यहां आपकी एक जिनिङ्ग और एक प्रेसिंग फेक्टरी भी है। इस पर जगन्नाथ नारायण नाम पड़ता है।

(२) धार – जगनाथ पन्नालाल-यहां कपासका घरू तथा आढ़तका काम होता है। यहां एक जीनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी है।

इसके अतिरिक्त सुसारी, अंजड़, तलवाड़ा, राजपुर, सेंधवा, ओजर, खुरमपुर, निमरनी महेश्वर, भीखनगांव, बलावाड़ा, कांटाफोड, तराना तथा भानपुरामें आपकी जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियां अलग २ नामोंसे चल रही हैं।

मेसर्स रामचन्द्र रामेश्वरदास

इस फर्मको स्थापित हुए करीब ४० वर्ष हुए। इसे सेठ रामेश्वरजीने स्थापित किया। वर्तमानमें

आपही इसके मालिक हैं। आपका निवास स्थान मुकुन्दगढ़ (जयपुर) है। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इन्दौर—रामचन्द्र रामेश्वरदास, बड़ा सराफा —यहाँ रुई और आढ़तका व्यापार होता है।

हरदा—रामेश्वरदास वल्लभदास —यहां आपकी जिनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है। आपके यहां रुई और आढ़तका व्यवसाय होता है।

उज्जैन—रामेश्वरदास वल्लभदास—यहां भी आपकी जिनिंग और प्रेसिङ्ग फेक्टरी है, तथा कपास और आढ़तका काम होता है।

मेसर्स विश्वेसरलाल नन्दलाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ नंदलालजी जालान हैं। आप श्री विश्वेसरलालजीके पुत्र हैं। आप अग्रवाल जातिके (रेवाड़ी निवासी) सज्जन हैं। पहले यह फर्म मथुराकी तरफ बड़ी प्रसिद्ध थी, लेकिन दैवात् फर्मका काम कमजोर रह जानेसे आपको इन्दौर आना पड़ा। यहां आपने अपने मामा सेठ मिर्जामलजी नेवटियाके यहाँ सर्विस की। उस समय उपरोक्त फर्मकी हांग-कांग, शंघाई आदि स्थानोंमें ब्रांचेजूस थीं। संवत् १८७२में आप इस फर्मसे अलग होगये। इस समय आप स्वतन्त्र व्यवसाय करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

बमनियां (इन्दौर राज्य)—यहां आपकी जिनिङ्ग फेक्टरी है।

उदयगढ़ (झाबुआ)—यहां जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है।

अमरगढ़—यहां भी जिनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है।

झाबुआ—यहां जिनिंग फेक्टरी है।

उपरोक्त कारखानोंमें मंदसोरके सेठ नारायणदासजीका साझा है।

सेठ समीरमल अजमेरा इन्दौर केम्प

आपका निवास स्थान रामगढ़ (जयपुर) है। आप सरावगी जातिके वैश्य हैं। आपके कुटुम्बको यहाँ आये करीब ७५ वर्ष हुए। आपके पिताका नाम सेठ अमोलकचन्दजी था। आपका ८ साल पहले शरीरांत होचुका है। वर्तमानमें आप ही मालिक हैं। आपके २ पुत्र हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) इन्दौर-केम्प सेठ समीरमल अजमेरा—यहां काटनका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

श्रीयुत नन्दलालजी हालान, इन्दौर

स्व० सेठ अमोलकचन्दजी अजमेरा, इन्दौर-कैम्प

जौहरी हरकचन्द मोनशी, इन्दौर

श्री० समीरमलजी अजमेरा, इन्दौर-कैम्प

मेसर्स हजारीलाल छगनलाल

इस फर्मके मालिक हजारीलालजी हैं। आप फरुखनगर (दिल्ली) के मूल निवासी हैं। आप जैन धर्मावलम्बीय अग्रवाल सज्जन हैं। ला० हजारीमलजीके तीन भाई और हैं। जिनमें इस समय सिर्फ एक भाई जौहरीलालजो वर्तमान हैं। बाकी स्वर्गवासी हो चुके हैं। ला० जौहरी लालजी यहांकी स्टेटमें एडवोकेट जनरल व लीगल रिमेम्बरंसका कार्य करते हैं। ला० हजारीमलजी इन्दौरके प्रसिद्ध सेठ सरूपचंद हुकुमचंदके यहां कार्य करते हैं। आपका वहां अच्छा सम्मान है। आपके २ पुत्र हैं। ला० छगनलालजी तथा माणकलालजी।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इन्दौर—मेसर्स हजारीलाल छगनलाल, सीतलामाता रोड—यहां रुई, लेन देन तथा बैंकिंग कार्य होता है।

इन्दौर—मेसर्स छगनलाल माणिकलाल, सियागंज—यहां रुई, कपड़ा, गल्ला, शिड्सका व्यापार तथा आढ़तका काम होता है।

इन्दौर—जौहरीलाल छगनलाल—यहां फरसी और पत्थरका व्यापार होता है।

शामगढ़ (इन्दौर)—यहां आपके साझेकी जिनिंग फेक्टरी है। यहां रुई और गल्लेकी आढ़तका काम होता है।

नीमच-केम्प—दौलतराम गुलजारीलाल—यहां अनाज और शिड्सका व्यापार तथा आढ़तका काम होता है।

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स जवरचंद मांगीलाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक जवरचंदजी तथा मांगीलालजी हैं। आप दोनों इस फर्मके हिस्सेदार हैं। आप सरावगी जैन जातिके सज्जन हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इन्दौर—जवरचंद मांगीलाल सियागंज—यहां गल्ला तथा किरानेका व्यापार होता है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

इन्दौर—डालूराम मन्नालाल इमली बाजार—यह इस फर्मकी पुरानी दुकान है। यहां स्टेटके मोदी खानेका काम होता है।

—:—

मेसर्स मंगलजी मूलचंद

इस फर्मके स्थापक सेठ मंगलजी हैं। आपका मूल निवास श्रीमाधोपुर (जयपुर) का है। आपको यहां आये करीब १०० वर्ष व्यतीत हुए होंगे। मंगलजीके पश्चात् इस फर्मके कामको सेठ मूलचंद जीने सम्हाला। आपके हाथोंसे इसकी अच्छी उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९६६में हो गया।

वर्तमानमें सेठ मूलचंदजीके पुत्र सेठ नन्दलालजी इस फर्मके मालिक हैं। आपके सूरजमल नामक एक पुत्र हैं। आपकी ओरसे एक राधाकृष्णजीका मन्दिर बना हुआ है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इन्दौर—मंगलजी मूलचन्द, मल्हारगंज—यहां गल्ला और आसामी लेन-देनका काम होता है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

सुनाला (देपालपुर, इन्दौर) मंगलजी मूलचन्द—यहां भी गल्ला तथा आसामी लेनदेनका कामहोता है।

मेसर्स रामरतन लालचंद

इस फर्मके मालिक मूल निवासी गोविन्दगढ़ (जयपुर) के हैं। आपको यहां आये करीब १०० वर्ष हुए। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना सेठ रामरतनजीने की। पहले यह फर्म बहुत छोटे रूपमें थी। रामरतनजीके पुत्र सेठ लालचंदजीने इस फर्मकी बहुत उन्नति की। आप पर इन्दौर महाराजाकी विशेष कृपा थी। आपको सरकारसे आधा महसूल माफ था। सेठ लालचंदजीका स्वर्गवास संवत् १९७९ में हुआ। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ सीतारामजी ने काम सम्हाला। वर्तमानमें आप ही इस फर्मके मालिक हैं। आपको चौधरीका पद प्राप्त है। आपके एक पुत्र हैं, इनका नाम मिठ्ठूलालजी हैं।

आपकी ओरसे बड़वाहमें एक मन्दिर बना हुआ है। वहां सदाव्रत आदिका भी प्रबंध है। इस फर्मके संचालकोंका स्थानीय ११ पंच भी बड़ा सम्मान करते हैं। भुगतानके रुपये आपकी दुकानपर पहुंचा दिये जाते हैं। यह आपके लिये विशेष रियासत है।

श्रीयुत लालचंदजी चौधरीने मध्यभारत अग्रवाल सभाकी स्थापना की थी। आप उसके आजीवन सभापति रहे। वर्तमानमें सेठ सीतारामजी उसके सभापति हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

इन्दौर—रामरतन लालचंद मल्लारगञ्ज—इस फर्मपर गल्ला और रुईका व्यापार होता है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

इन्दौर-केम्प—लालचंद सीताराम—यहां रूई, कपास की आढ़तका काम होता है।

श्री०सेठ लालचन्दजी(रामरतन लालचन्द) इन्दौर

श्री० रतनलालजी मोदी (जवरचन्द मांगीलाल) इन्दौर

श्री० सेठ नन्दरामजी (मंगलजी मूलचन्द) इन्दौर

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स गोवर्धनदास बलदेवदास

इस फर्मके संस्थापक सेठ गोवर्द्धनदासजी थे। आप आदि निवासी उदयपुरके हैं। वहांसे आपके कुटुम्बको यहां आये करीब १०० वर्ष हुए। आपके पिताका नाम विठ्ठलदासजी था। वे यहाँ मामूली नौकरी करते थे। सेठ विठ्ठलदासजीका देहावसान कम वयमें ही होगया था, उस समय गोवर्धनदासजीकी उम्र सिर्फ १० सालकी थी। इन्होंने अपनी माताके आश्रयमें रहकर कपड़ेकी फेरीका व्यापार शुरू किया और थोड़े ही समयमें गोरधन मोहनके नामसे दूकान स्थापित कर अपने व्यवहार एवं साखको खूब मजबूत किया। बाजारमें आपकी प्रतिष्ठा अच्छी थी। सम्वत् १९६२ में बजाज़ खानेकी भयङ्कर आगके समयमें आपकी दूकानके मालके साथ २ लेन देनकी बहियाँ तक जल गई। पश्चात् आपने फिर नये ढंगसे अपने व्यवसायको जमाया, तथा दूकानका कार्य पूर्ववत् जारी किया। आपका देहावसान ६५ वर्षकी उम्रमें संवत १९८२ में हुआ। इस समय इस फर्मके मालिक सेठ बलदेवदासजी हैं। आप अपने पिताके जमाये हुए रोजगारका भली प्रकार संचालन करते हैं, तथा आपने अपने पिताजीके स्मरणार्थ गोवर्द्धन विलास नामक एक धर्मशाला वैष्णव संप्रदायके लिये बनाई, जिसमें करीब २०, २२ हजार रुपया खर्च हुआ, तथा उसके स्थाई प्रबंधके हेतु एक ट्रस्ट मुकर्रर किया। आपकी दुकानका खास व्यवसाय सब प्रकारके कपड़ेका है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इन्दौर—मेसर्स गोवर्द्धन बलदेवदास बजाजखाना—यहां सब प्रकारके देशी तथा विलायती कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स चतुर्भुज गणेशराम

इस फर्मके मालिक माहेश्वरी जातिके हैं। आपका मूल निवास स्थान फलोदी (मारवाड़) का है। आपके पूर्वजोंको यहां आये करीब ८० वर्ष हुए होंगे। इस फर्मके संस्थापक सेठ चतु-

भुजजी थे। आपने यहां आकर चतुर्भुज भैयाके नामसे दुकान स्थापित की थी। उस समय राजघराने एवं अफसर लोगोंसे आपका व्यापारिक सम्बंध था। संवत् १९३२ में सेठ चतुर्भुजजी का देहान्त हो गया। आपके पश्चात् आपके कामको सह्मालनेवाला कोई न होनेसे व्यापारमें नुकसान हुआ। इस सब नुकसानको आपकी धर्मपत्नीने चुकाया। कुछ समय पश्चात् सेठ गणेशरामजी बीकानेरसे दत्तक आये। यहां आकर आपने उपरोक्त नामसे कपड़ेका व्यवसाय शुरू किया। आपकी आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर थी। आप पीठपर कपड़ा लादकर हाटों व बाजारोंमें फिरकर अपना माल बेचा करते थे। धीरे२ आपने अपने व्यवसायको जमा लिया। कुछ समय पश्चात् आपके भतीजे जानकीलालजी यहां आये। इन्होंने यहां आकर दुकानके काम को ठीक तरहसे संभाला। फिरसे राजघरानों और आफिसरोंके साथ वैसाही व्यापारिक सम्बन्ध हो गया जैसा चतुर्भुज भैयाके साथ पहले था। आपके कोई संतान न होनेसे आपने सेठ लक्ष्मीनारायणजीको दत्तक लिया।

गणेशरामजीने एक दुकान तोपखानेमें जानकीलाल लक्ष्मीनारायणके नामसे खोली। संवत् १९६२ में बजाजखानेमें आग लग जानेके कारण आपको अपनी पहली दुकान भी तोपखानेमें लानी पड़ी। दोनों दुकाने पास २ व्यापार करती रहीं। कुछ समय पश्चात् जानकीलाल लक्ष्मीनारायण वाली दुकान बंद करदी गई। संवत् १९६८ में सेठ जानकीलालजी इस दुकानसे सम्बन्ध छोड़कर अलग हो गये। उन्होंने सेठ नन्दलालजी भंडारीके साझेमें अलाहदा फर्म स्थापित की। संवत् १९७२ में सेठ गणेशरामजी का देहान्त हो गया। आपके पश्चात् इस फर्मके कामको सेठ लक्ष्मीनारायणजीने संभाला। वर्तमानमें आपही इस फर्मके मालिक हैं। आप शिक्षित और मिलनसार सज्जन हैं। आपके विचार सुधरे हुए और उपादेय हैं।

सेठ लक्ष्मीनारायणजीने एक सुन्दर मकान बनवाया। इसकी लागत करीब ७००००) की है। इसका फोटो इस पुस्तकमें दिया गया है। आपका माल विशेषकर राजा महाराजा और आफिसर लोगोंमें बिक्री होता है। आपको इसके लिये कई अच्छे २ सर्टिफिकेट और मेडिल्स मिले हैं। संवत् १९८० में महाराजा इन्दौरने आपको ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट नियुक्त किया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

इन्दौर—चतुर्भुज गणेशराम :तोपखाना—यहां सब प्रकारके बढ़िया विलायती कपड़ेका व्यापार होता है।

इन्दौर—सूरजमल सोभागमल बजाजखाना—यहां भी कपड़ेका व्यापार होता है।
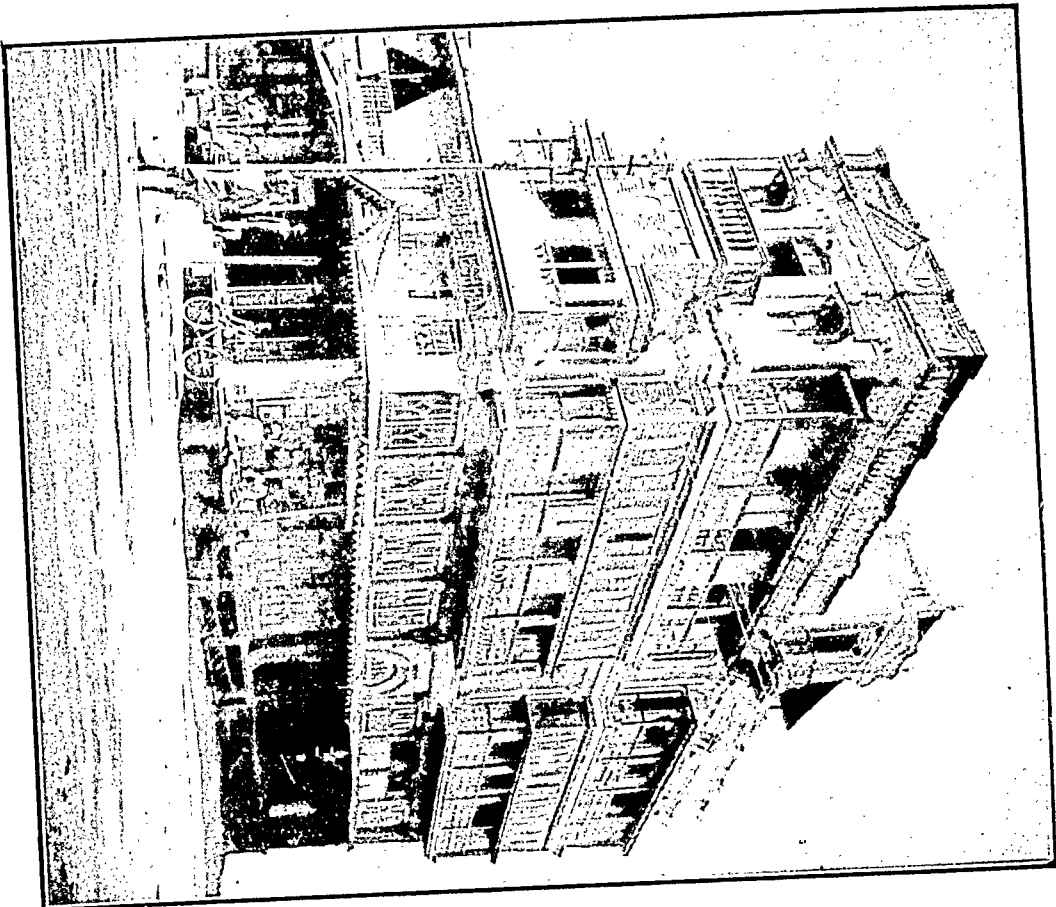
तोपखाना बिल्डिङ्ग (मे० चतुर्भुज गणेशराम) इन्दौर
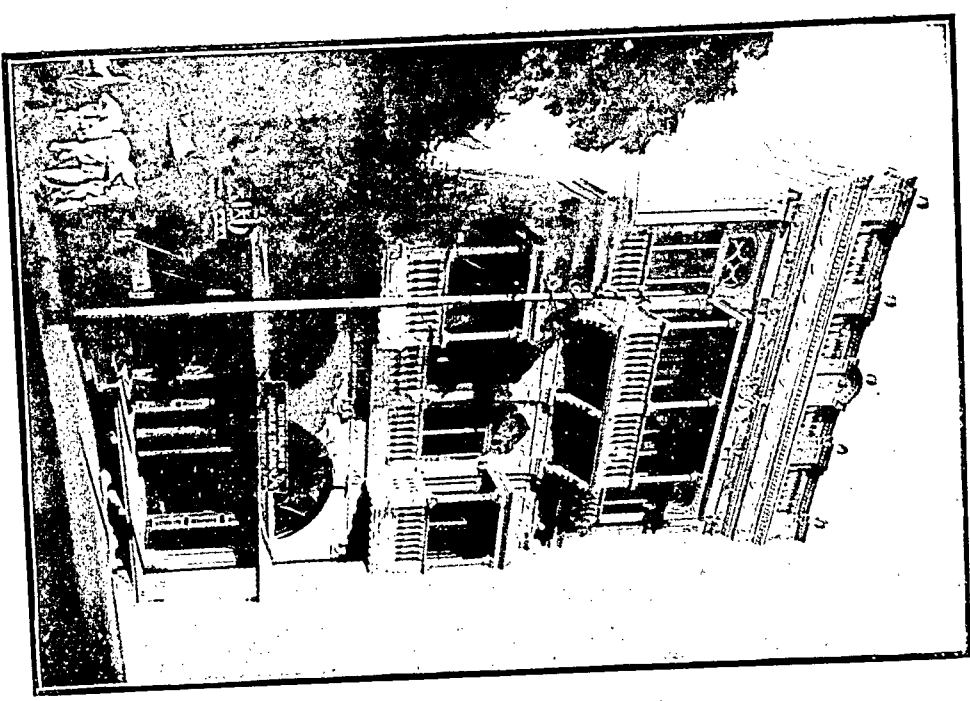
तोपखाना बिल्डिङ्ग (मे० जानकीलाल सुगनमल) इन्दौर

श्री०सेठ लक्ष्मीनारायणजी (चतुर्भुज गनेशराम) इन्दौर

श्री०सेठ जानकीलालजी (जानकीलाल सुगनमल) इन्दौर

श्री०सेठ बलदेवदासजी डोसी (गोवर्द्धन बलदेव) इन्दौर

स्व० सेठ गोवर्द्धनदासजी (गोवर्द्धन बलदेव) इन्दौर

मेसर्स जानकीलाल सुगनमल

इस फर्मके संस्थापक सेठ जानकीलालजी हैं। आप माहेश्वरी जातिके हैं। आपने अपना बाल्यकाल बहुत दीनावस्थामें व्यतीत किया। आपका जन्म संवत् १९३७ की कार्तिक सुदी २ को भोपाल राज्यके बेरछिया ग्राममें हुआ। आपके पिताजीके स्वर्गवासके समय आपकी उम्र सिर्फ ३ वर्षकी थी। ९ वर्षकी उम्रमें आप अपनी माताजीके साथ इन्दौर आये तथा भैया गनेशरामजी (मालिक फर्म चतुर्भुज गनेशराम) के आश्रयमें रहने लगे। विद्याध्ययनके साथ आपकी रुचि व्यापारकी ओर अधिक होने लगी। सर्व प्रथम आपने बड़ौदेमें कपड़ेकी दुकान की। बड़ौदेके महाराज तथा महारानी साहिबाकी आपपर विशेष कृपा थी। व्यवसाय अच्छा चल निकला था, परन्तु प्लेग आदि कारणोंसे आपको वहांसे दूकान उठा देनी पड़ी और इन्दौर आकर जानकीलाल लक्ष्मीनारायणके नामसे कपड़ेकी दूकान स्थापित की। आपके व्यवसाय चातुर्यसे व्यापार खूब चल निकला। कुछ दिनों पश्चात् आप इस दुकानसे अलग होगये। पश्चात् आपने श्री सेठ नंदलालजी भंडारीके साझेमें कपड़े का व्यवसाय शुरू किया। आपकी व्यवसायिक कुशलताके कारण एक्स महाराजा तुकोजीराव तथा महारानी साहिबा आपसे बहुत प्रसन्न रहा करते थे। एजेण्ट टू दी, गवर्नर जनरल मि० बोसांकेट साहबने वायसराय तथा अन्य कई अङ्गरेज अफसरोंसे आपका व्यापारिक संबन्ध कराया। आपकी व्यापारिक सभ्यतासे प्रसन्न होकर प्रमाणपत्र भी (सार्टिफिकेट) दिये। स्टेटके कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री डिपार्टमेण्टकी की ओरसे सन् १९२४में आपने यहांके हैण्डलूमपर बने लुगड़े, साड़ी वगैरह ब्रिटिश इण्डिया एम्पायर एक्जीबिशन आफ लंडनको भेजा। वहांसे भी आपको सार्टिफ़िकेट तथा मेडल मिले। सन् १९२३में आपको स्टेटने म्युनिसिपल कमिश्नर बनाया, तथा दूसरे वर्ष जनताकी ओरसे आप मनोनीत किये गये। सन् १९२७ के दिसम्बरमें इन्दौर सरकारकी ओरसे आप ऑनरेरी मजिस्ट्रेट मुकर्रर किये गये।

यहांपर यह बतला देना आवश्यक है कि आपको अपने पूर्वजोंसे वारसाके तौरपर कुछ भी नहीं मिला था। आजकी स्थितिको आपने स्वयं अपने परिश्रम और अध्यवसायसे पैदा किया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

इन्दौर—मेसर्स जानकीलाल सुगनमल तोपखाना—यहां माहेश्वरी लूगड़ी, बनारसी साड़ियों, कीनखाप, रवन आदि फेन्सी वस्तुओंका व्यापार होता है। यहांसे विलायत भी माल जाता है। इस दुकानमें श्री० नन्दलालजी भण्डारीका साझा है।

मेसर्स पन्नालाल जवरचन्द।

इस फर्मके संस्थापक सेठ जवरचन्दजी हैं। आपका देहावसान संवत् १९७३में ६५ वर्षकी उम्रमें हुआ। आपकी दुकानका खास व्यवसाय मनोती तथा कपड़ेका था। आपकी दूकान पहिले बहुत छोटे रूपमें थी। इस दूकानके कारोबारको सेठ जवरचन्दजीने अपने परिश्रम एवं अध्यवसायसे खूब बढ़ाया। इस समय इस फर्मके मालिक सेठ कस्तूरचन्द जी हैं। आप अपने पिताजीके जमाए हुए व्यवसायको ठीक तौरसे संचालित कर रहे हैं। इस समय आपकी दूकानें नीचे लिखी जगहोंपर हैं।

(१) उज्जैन—पन्नालाल जवरचन्द—यहाँ आढ़त तथा रुईका व्यापार होता है।

(२) सोनकच्छ (ग्वालियर स्टेट) जवरचन्द पन्नालाल यहां आपकी जीनिंग फैक्टरी है, तथा आढ़तका व्यापार होता है।

(३) इन्दौर—पन्नालाल जवरचन्द—इस दूकानपर मिलोंके थोक कपड़ेका तथा और सब प्रकारके कपडेका व्यापार होता है।

मेसर्स रामरतन टीकमदास

इस फर्मके संस्थापक सेठ रामरतनजी हैं। आप माहेश्वरी वैश्य हैं। आप खास निवासी डिडवाना (जोधपुर स्टेट)के हैं। आपकी फर्मको यहां आये करीब १०० वर्ष हुए। सेठ टीकमदासजीने अपने उद्योग और परिश्रमसे इस फर्मको बढ़ाया। पहले यह फर्म बहुत छोटे रूपमें थी, आज इस फर्मका कपड़ेके व्यापारियोंमें बहुत ऊंचा स्थान है। २ वर्षके पहले सेठ टीकमदासजीका देहावसान हो गया। इस समय इस फर्मके संचालक श्री सेठ लक्ष्मीनारायण जी हैं। आपके समयमें इस फर्मके व्यापारने बहुत तरक्की की। आप बहुत उद्योगी अध्यवसायी एवं परिश्रमी हैं। इस समय आपकी दुकानें और भी कई स्थानोंमें चल रही हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—लक्ष्मीनारायण गंगाधर कसेराचाल पोस्ट नं० २ यहां कमीशन एजंसीका काम होता है।

(२) कानपुर—लक्ष्मीनारायण प्रहलाददास जनरलगंज—इस दूकानपर कपड़ा और कमीशनका काम होता है। तारका पता—Loyal है।

(३) इन्दौर—प्रहलाददास मुरलीधर बजाजखाना—इस दूकानपर कपड़ेका काम होता है।

(४) इन्दौर—रामरतन टीकमदास तुकोजीराव क्लाथ मार्केट इंदौर—तारका पता—Pansari इस दुकानपर भी कपड़ेका व्यापार होता है। यहांके बने हुए मिलोंके कपड़ेकी यह फर्म बड़ी दुकानदार है।

आपके दो पुत्र हैं। बड़ेका नाम प्रहलाददास जी और छोटेका नाम मुरलीधर जी हैं।
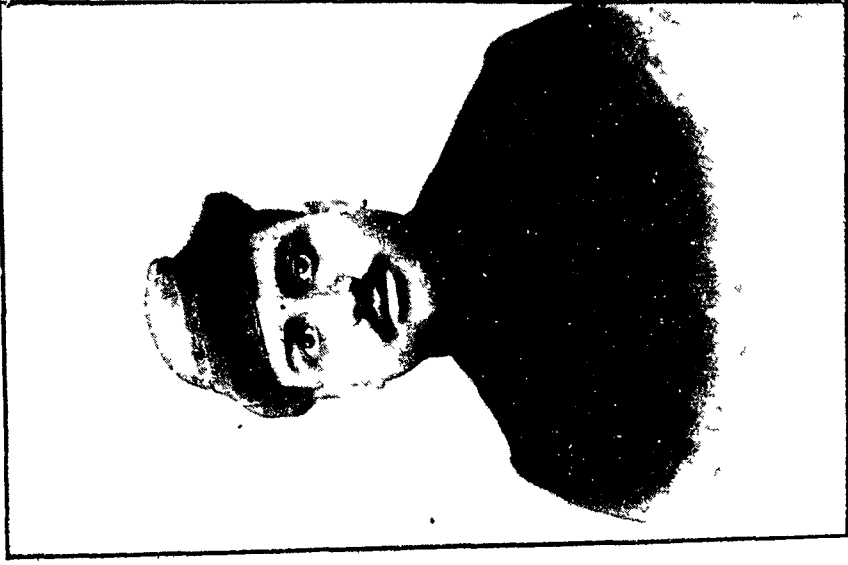
श्री०राधाकृष्णजी मुंछाल(रामगोपाल मुंछाल)इन्दौर
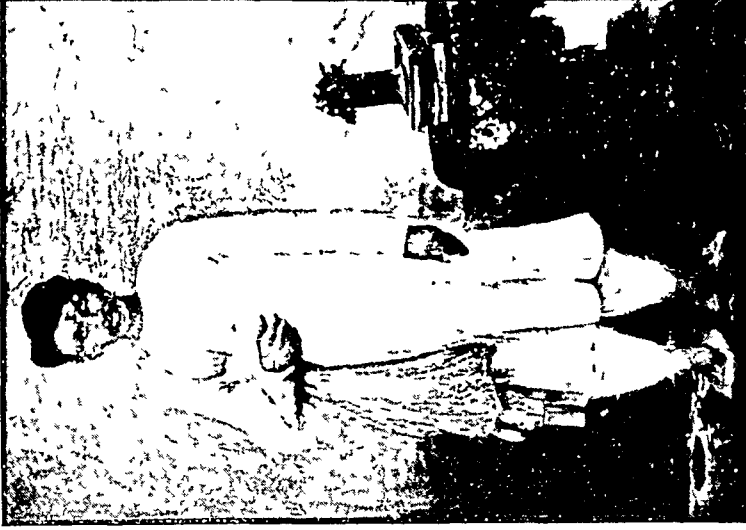
स्व०सेठ टीकमदासजी (रामरतन टीकमदास) इन्दौर
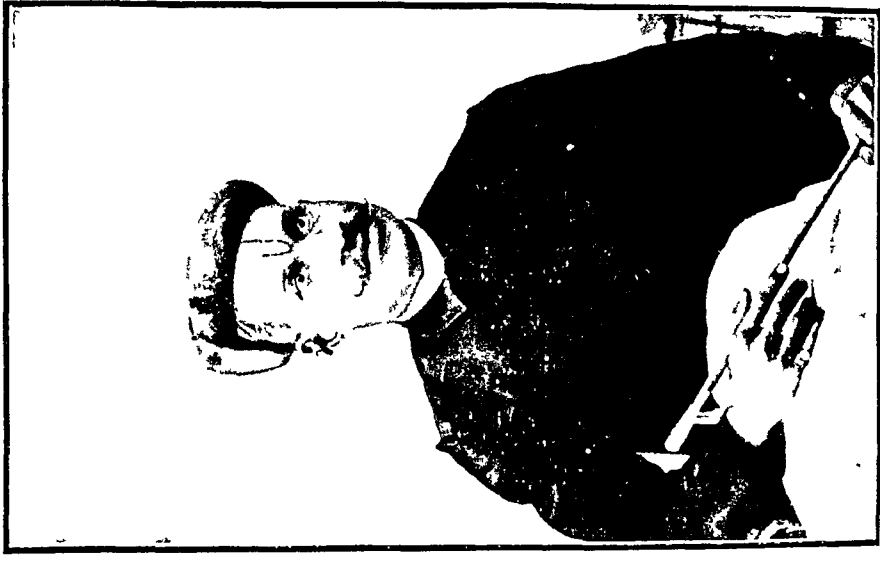
श्री०सेठ हीरालालजी सूतवाले (बालकिशन हीरालाल) इन्दौर

मेसर्स रामगोपाल मुंच्छाल

इस फर्मके मालिक माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। आपका आदि निवास डिडवाना (जोधपुर) का है। आपके पूर्वजोंको यहां आये १०० वर्ष व्यतीत हुए होंगे। इस फर्मको सेठ रामगोपालजीने ही स्थापित किया। आपहीने इस फर्मकी तरक्की भी की। संवत् १९६८में आपका देहावसान हो गया। आपके पश्चात् इस फर्मके संचालनका कार्य आपके भाई सेठ लक्ष्मीचंदजी मुंच्छाल और आपके पुत्र सेठ राधाकृष्ण जी करते हैं। सेठ लक्ष्मीचन्दजीने इस फर्मकी और तरक्की की है। आपने इसकी और भी शाखाएं स्थापित की बाजारमें आपकी फर्मका अच्छा सम्मान है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

इन्दौर—मेसर्स रामगोपाल मुंच्छाल, छोटा सराफा—इस फर्मपर चांदी, सोना तथा जवाहिरातका व्यापार होता है।

इंदौर—मेसर्स लक्ष्मीचंद मुंच्छाल, तुकोजीराव क्लाथमार्केट—यहां कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

इन्दौर—मेसर्स राधाकिशन बालकिशन, क्लाथमार्केट—यहां रंगीन कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

बम्बई—रामगोपाल मुंच्छाल, बदामके झाड़के पास, कालबादेवी रोड (T.A. Kunjbihari)—यहां बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी तथा सब प्रकारकी आढ़तका काम होता है।

——

मेसर्स हीरालाल बालकिशन सूतवाले

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ हीरालालजी हैं। आप बीसा दीसावाल जातिके वल्लभ संप्रदायी सज्जन हैं। आपका यहांके बड़े २ सेठोंमें अच्छा सम्मान है। सरसेठ हुकुमचन्दजी, रा० ब० कस्तूरचंद जी आदि बड़े २ व्यापारियोंके आप आम मुख्तार हैं। सरकारकी ओरसे आप आनरेरी मैजिस्ट्रेट नियुक्त किये गये हैं। आपके पिता जी गुजरातसे यहाँ आए थे। आपने यहां आकर कपडेकी दुकान स्थापित की और उसमें अच्छा लाभ उठाया। आप सूतका व्यापार भी करते थे।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

इन्दौर—मेसर्स हीरालाल बालकिशनदास बजाजखाना—यहां कपड़ा तथा सूतका बड़े परिमाणमें व्यापार होता है।

——

वैद्य और हकीम
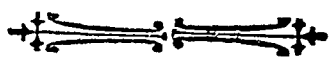
वैद्य ख्यालीराम जी द्विवेदी

आपका मूल निवास स्थान डलमऊ (रायबरेली) का है। आपके पूर्वजोंको यहां आये करीब १०० वर्ष व्यतीत हुए होंगे। आपके खानदानका पुश्तैनी पेशा वैद्यकका है। आपके पिताजी अच्छे वैद्य माने जाते थे। आपका इलाज राजघरानोंमें भी होता था। महाराजा शिवाजीरावने प्रसन्न होकर आपको दस २ हजार रुपया दो बार एवं एक गांव और २०० बीघा जमीन इनाममें दे दी थी इस इनामका कुछ समयतक उपयोग कर आपने कुछ बिशेष कारण से इसे वापस फेर दिया था। इसी प्रकार गायकवाड़ सरकारने भी आपको जागीर इनाममें दी थी। वह भी आपने अपने शिष्यको दे दी। आपका देहावसान संवत् १९६२में हो गया। आपके पश्चात् आपके पुत्र पं० ख्यालीराम जी द्विवेदी हुए। आपने भी वैद्यकमें अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की। इंदौरकी जनतामें आपका अच्छा सम्मान है। राजघराने में भी आपका इलाज होता है। आप बम्बई, इटारसी, अकोला आदि बाहर गांवोंमें भी इलाजके लिये जाया करते हैं।

वैद्य पं० ख्यालीरामजीका सार्वजनिक जीवन भी अच्छा रहा है। आपने इन्फ्लुएञ्जाके समय इन्दौरकी जनता की अच्छी सेवा की थी। आपका पब्लिक जीवन अग्रगण्य रहा है। आप यहां की प्रायः सभी सभा सोसायटियोंमें भाग लेते हैं। आप स्थानीय हिन्दूसभाके सभापति हैं। आपकी देखरेखमें लालबागके आयुर्वेदिक ब्रह्मचर्याश्रमका काम बड़ी उत्तमतासे चल रहा है।

आपकी औषध निर्माण शालामें शास्त्रोक्त रीतिसे औषधियां तैय्यार की जाती हैं। इन्दौरकी जनताके हृदयमें आपकी औषधियोंके प्रति बड़ा विश्वास है। आपको सन्१९२०में दिल्लीके आयुर्वेदिय दशम सम्मेलनके समय स्वर्णपदक और प्रमाण पत्र मिला था। करांचीमें होनेवाली आल इण्डिया वैद्यक, यूनानी एण्ड तिब्बी कान्फ्रेन्ससे भी आपको प्रमाणपत्र और रौप्य पदक प्राप्त हुआ था। सन् १९१८में आलइण्डिया एक्जीबिशन इन्दौरसे भी आपको स्वर्णपदक प्राप्त हुआ हैं। कहनेका मतलब यह है कि आप एक बहुत सफल वैद्य हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार हैः—

वैद्यराज पं० ख्यालीरामजी द्विवेदो, इन्दौर

फार्मसीका उद्घाटन (ख्यालीरामजी) इन्दौर

स्व० हकीम शेख तैय्यब अलीजी, इन्दौर
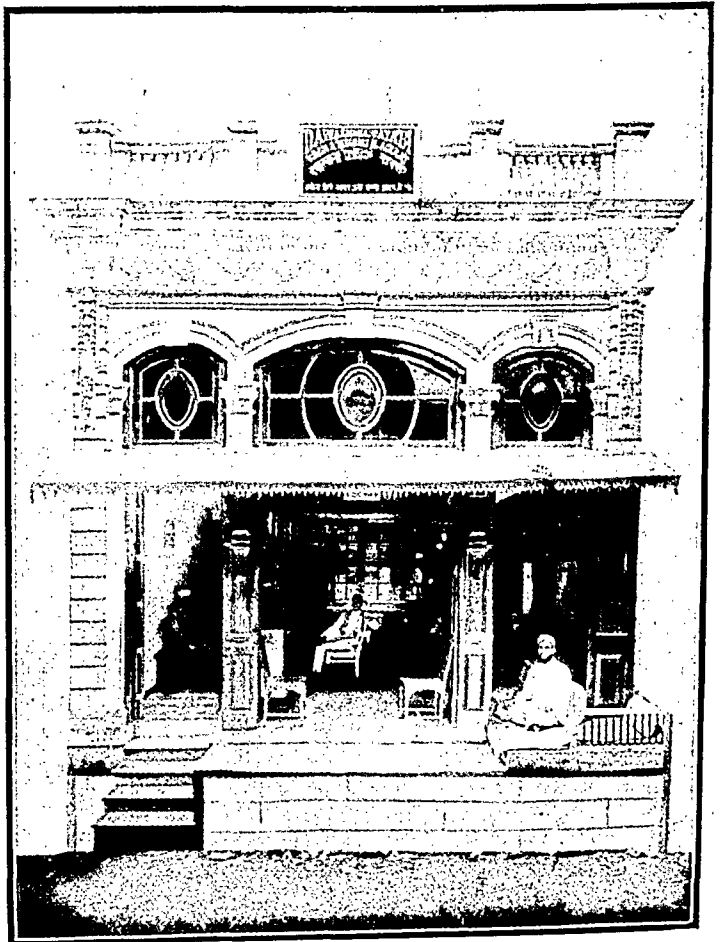
बिल्डिंग हकीम शेख तैय्यबअली मुल्लां आदमजी, इन्दौर

इन्दौर—प्रभाकर औषधालय, दीतवारिया—यहां सब प्रकारके रोगोंका इलाज किया जाता है।

इन्दौर—आयुर्वेदिक औषधि निर्माणशाला, वियावानी—यहां आपकी औषध तैयार करनेकी फ़ार्मसी है।

इन्दौर—वैद्य ख्यालीराम फार्मसी, मारोठिया बाजार—यहां आपकी बनाई हुई औषधियां विक्री होती है।

वैद्य चन्द्रशेखरजी पाठक

यह चिकित्सालय सन् १९०९में स्थापित हुआ। इसमें आयुर्वेदिक व एलोपैथी दोनों प्रसिद्ध चिकित्सा पद्धतियोंके द्वारा निदान व चिकित्सा की जाती है। यही कारण है कि इस चिकित्सालयमें दूसरे चिकित्सालयोंसे निराश होकर लौटे हुए कई संग्रहणी, क्षय आदि कष्टसाध्य रोगोंसे पीड़ित रोगी आराम होते हैं। इस औषधालयमें शास्त्रोक्त व शुद्ध बनी हुई औषधियोंका उपयोग किया जाता है। इस चिकित्सालयमें श्री० वैद्य महादेव चन्द्रशेखर पाठक व डाक्टर बालमुकुन्द चन्द्रशेखर पाठक एल० एम० एफ़० चिकित्सा करते हैं। श्री० वैद्य महादेव चन्द्र-शेखर पाठक इन्दौरके कतिपय चुने हुए विद्वान व अनुभवी वैद्योंमें अपना विशेष स्थान रखते हैं। आप आयुर्वेदके विशेषज्ञ हैं। एकादश वैद्य सम्मेलनमें इन्दौरके वैद्योंमें से सिर्फ आपहीने अपना विद्वता पूर्ण निबन्ध पढ़ा था। जिसकी तारीफ वैद्य सम्मेलनके सुप्रसिद्ध सभापति वैद्य गणनाथसेन व अन्य विद्वान् वैद्योंने मुक्तकंठसे की थी। आप इस समय चिकित्सा विज्ञानके ऊपर एक मौलिक और गवेपणापूर्ण ग्रन्थ लिख रहे हैं। इस ग्रन्थमें चिकित्सा विज्ञानके मूलभूत सिद्धान्तों पर तथा इस सम्बन्धकी चलनेवाली सभी चिकित्सा पद्धतियोंपर तुलनात्मक विवेचन रहेगा।

आपके छोटे भाई डाक्टर बालमुकुन्द पाठक भी बड़े योग्य नवयुवक हैं। आप आंख सम्बन्धी रोगोंके विशेषज्ञ हैं। आप एल० एम० एफ० हैं और इनजेक्शन देनेमें सिद्धस्त हैं।

आपका सार्वजनिक जीवन भी प्रशंसनीय है। इन्दौरमें हालहीमें प्रारम्भ हुई विद्वत् परिषद नामक सस्थाके आप प्रधान कार्य्यकर्त्ता हैं आपका दवाखाना शक्कर बाजारमें है।

तैय्यबी दवाखाना यूनानी

इस दवाखानेकी स्थापना हुए करीब १०० वर्ष हुए होंगे। इसे मुल्लां मूसाभाईने स्थापित किया था। आप पहले मामूली औषधि बेचा करते थे। आपके पश्चात् आपके दो पुत्रों ने इसके कामको बढ़ाया। पहले पुत्र इब्राहिमजीके पश्चात् आपके दूसरे पुत्र हकीम शेख तैय्यब अलीने इसकी बहुत अधिक उन्नति की। आपका इन्दौरके वैद्य और हकीमोंमें अच्छा सम्मान

और नाम था। आप राजघरानेमें भी इलाज करनेके लिये जाया करते थे। आपकी वहां अच्छी प्रतिष्ठा थी। बोहरोंके बड़े मुल्लाजीने आपको शेखियतकी पदवी प्रदान की थी। यह पदवी इन लोगोंमें बहुत बड़ी मानी जाती है। आपका सन् १९१३ ई०में देहावसान होगया।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक हकीम महमदहुसेन व हकीम गुलामअली हैं। आप दोनों भी अपने पिताजीकी तरह हकीमीमें अच्छी योग्यता रखते हैं। आपने सन् १९२४में इन्दौरके बोहरा बाजारमें एक बढ़िया दवाखाना बनवाया है। इसका फोटो इसी ग्रन्थमें दिया गया है। आपके यहां शुद्ध रीतिसे दवाइयां तैय्यार की जाती हैं। यू०पी,सी०पी, गुजरात आदि बाहरी स्थानोंमें भी यह औषधालय प्रसिद्ध है। यहां औषधियां बड़ी सफाईसे रखी जाती हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

इन्दौर—तैय्यबी दवाखाना यूनानी, चौकबाजार—यहां हरप्रकारकी यूनानी दवाइयां मिलती हैं। और इलाज भी किया जाता है। यहांसे बाहर प्रान्तोंमें भी दवाईयोंका थोक निकास होता है।

मैन्युफैक्चरर

मेसर्स सखाराम काशीनाथ महाजन

मि० महाजन उन उद्योगी व्यक्तियोंमेंसे हैं,जो बहुत ही छोटे स्केलसे अपने कार्यको प्रारम्भकर अपने व्यवसाय कौशलसे उसे अच्छा रूप दे देते हैं। शुरू २ में आपकी आर्थिक परिस्थिति बहुत कमजोर थी; केवल एक मामूली क्लर्ककी जगह काम करके आप अपनी जीविका निर्वाह करते थे। मगर उस काममें इनकी तबियत नहीं लगती थी। जिसके फल स्वरूप आपने नौकरी छोड़ दी और हिम्मत करके १५०)में एक मौजेकी मशीन मंगवाई। इस मशीनके कार्यमें आपको सफलता मिल गई और धीरे धीरे इनका कारबार तरक्की करने लगा। यहांतक कि सात वर्षके बादही अर्थात् सन् १९१३में आपके यहां ५० पौण्ड सूतके रोजाना मौजे बनने लगे। सन् १९१७में आपने २० नई मशीनें और मंगवालीं। जिससे आपका काम और भी तेजीसे चलने लगा।

मि० महाजनके यहांके बने हुए मौजे अपनी सुन्दरता और मजबूतीमें बहुत बढ़िया होते हैं इन्दौर शहरके अतिरिक्त बाहरी प्रान्तोंमेंभी इस कम्पनीके मौजोंका बहुत प्रचार है। रियासतकी फौजका आर्डर भी आपही पूरा करते हैं। सन् १९१७में स्त्रियोंके कला कौशलके प्रदर्शनके समय आपको गोल्ड मेडल और सार्टिफिकेट प्राप्त हुआ था। आप अभी और भी अपने

श्रीयुत एस॰ के॰ महाजन, इन्दौर
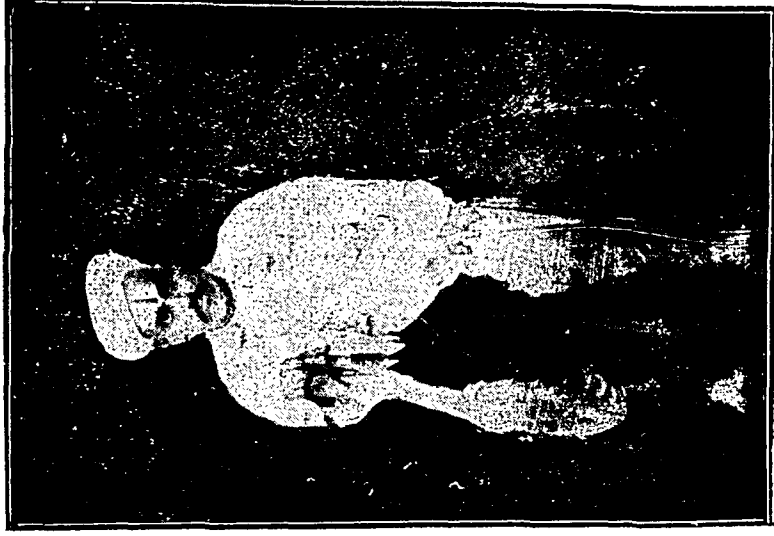
स्व॰ नागरमलजी (नागरमल किशनलाल) इन्दौर

मालमें सफाई और उत्तमता लानेकी कोशिशमें हैं। आपका कथन है कि भारतवर्षमें नीटिङ्गयार्नके अभावमें इस समय विविंगयार्नकाही उपयोग करना पड़ता है। इसलिये माल जैसा चाहिए, वैसा साफ नहीं बन सकता। अतएव आप इस उद्योगमें हैं कि हमारे यहां ही नीटिंगयार्न पैदा किया जा सके, जिससे हम विदेशी मालकी प्रतियोगितामें अपने मालको भी विदेश भेज सकें।

आपके कार्यालयकी एक विशेषता यह है, कि इसमें कई निराश्रित विधवाओं और दूसरी स्त्रियोंको आजीविका मिलती है। मौजे बुननेका काम ऐसा है जिसे स्त्रियां बखूबी कर सकती हैं। मि० महाजनके कार्यालयमें अबतक करीब १०० स्त्रियां औद्योगिक शिक्षा पा चुकी हैं। जिनमें बहुतसी अपने घरपरही स्वतंत्र रूपसे जीविका निर्वाह करती हैं। इस समय इस कारखानेमें ३० स्त्रियां और ३ पुरुष काम करते हैं।

मि० महाजन जनताकी ओरसे निर्वाचित म्यूनिसिपल मेम्बर हैं। आपके कारखानेका पता मेसर्स सखाराम काशीनाथ महाजन नन्दलाल पुरा इन्दौर है।

काटन एण्ड ग्रेन ब्रोकर

नागरमल किशनलाल नारसरिया

इस फर्मके स्थापक सेठ नागरमलजी थे। आपका निवासस्थान रामगढ़ (सीकर) का है। जिस समय ये इन्दौर आये थे, उस समय आपकी मामूली स्थिति थी। यहांतक कि आप पतंग बेंच कर अपना निर्वाह करते थे। धीरे २ आपने रुईकी दलाली शुरू की, और उसमें आपको अच्छा मुनाफा मिला। आपके द्वारा स्टेट मिल, रायली ब्रदर्स आदि कम्पनियां कपास खरीदती थीं। आपका देहावसान संवत् १९८२में होगया। वर्तमानमें आपके २ पुत्र हैं। बड़े श्रीकिशनलालजी हैं। आप अपने पिताजीके कार्यको सुचारु रूपसे चला रहे हैं।
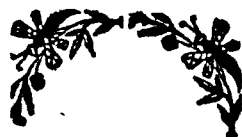
बकर्स एण्ड काटन मरचेंट्स

इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया (इन्दौर ब्रांच) छावनी

इन्दौर बैंक लिमिटेड

मेसर्स ओंकारजी कस्तुरचन्द शीतलामाता रोड
- ,, ओंकारजी चुन्नीलाल बड़ा सराफा
- ,, गेंदालाल सूरजमल ,,
- ,, घमड़सी जुहारमल छोटा सराफा
- ,, जमनादास जुहारमल बड़ा सराफा
- ,, तिलोकचंद कल्याणमल शीतलामाता रोड
- ,, तेजपाल बिरदीचंद बड़ा सराफा
- ,, पन्नालाल नन्दलाल भण्डारी बजाजखाना
- ,, परशराम दुलीचन्द छोटा सराफा
- ,, पदमसी नेनसी बड़ा सराफा
- ,, बिनोदीराम बालचन्द ,,
- ,, बगतराम बछराज शीतलामाता रोड
- ,, मिर्जामल मोतीलाल बड़ा सराफा
- ,, रामप्रताप हरबिलास ,,
- ,, रामचन्द्र रामेश्वर ,,
- ,, शिवजीराम शालिगराम छोटा सराफा
- ,, शिवजीराम हरनाथ ,,
- ,, शोभाराम गम्मीरमल शीतलामाता रोड
- ,, शोभाराम चुन्नीलाल ,, ,,
- ,, स्वरूपचंद हुकुमचन्द ,, ,,
- ,, हुकुमचन्द धनराज शक्कर बाजार

इन्दौर—केम्प

मेसर्स घासीलाल छोगालाल
- ,, छोटालाल छगनलाल

मेसर्स नाथूलाल देवी सहाय
- ,, रामचन्द्र कन्हैयालाल
- ,, मुन्नालाल लच्छीराम
- ,, समीरमल अजमेरा

जवाहरातके व्यापारी

मेसर्स गेंदालाल गणपतलाल छोटा सराफा
- ,, चम्पालाल भगवानदास ,,
- ,, जयचन्द चुन्नीलाल ,,
- ,, जमनालाल कीमती हैदराबादवाला खजूरी बाजार
- ,, टीकमजी मूलचंद शक्करबाजार
- ,, परशुराम दुलीचंद छोटासराफा

चांदी-सोनेके व्यापारी

मेसर्स कुंवरजी रणछोड़दास छोटा सराफा
- ,, गणपतजी गोकुलदास ,,
- ,, नन्दराम नाथूराम ,,
- ,, परशुराम दुलीचंद ,,
- ,, मौजीलाल बूलचंद ,,
- ,, राजमल लालचंद ,,
- ,, रामगोपाल मुंच्छाल ,,
- ,, हरकचंद शांतिदास ,,

चांदीके बर्तन बनानेवाले

मेसर्स नाशिककर ब्रदर्स बड़ा सराफा

डाक्टर वड़नेरे खजुरी बाजार

मेसर्स लालूजी चोथमल खजूरी बाजार

क्लॉथ मरचेन्ट्स एण्ड कमीशन एजंट

दी कल्याणमल मिल्स क्लॉथ शाप तुकोजीराव क्लॉथ मार्केट

मेसर्स कीर्तिलाल रसिकलाल ,, ,,

,, कुन्हेकर एण्ड ब्रदर्स तोपखाना

,, गोवर्द्धन बलदेवदास बजाजखाना

,, गोवर्द्धन लक्ष्मीदास ,,

,, गुलाबचंद माणकचंद तुकोजीराव क्ला० मा०

,, गोवर्द्धन जगन्नाथ ,,

,, गंगाधर चुन्नीलाल ,,

,, चतुर्भुज गणेशराम तोपखाना

,, छत्रकरण प्रह्लाददास बजाजखाना

,, जानकीलाल सुगनमल तोपखाना

दी जनरल स्टोअर्स तोपखाना

मेसर्स जीतमल किशनचंद तुकोजी० क्ला० मार्केट

,, जोखीराम रामनारायण ,,

,, दाऊलाल मुरलीधर ,,

हाजी नूरमहम्मद मूसा बजाजखाना

दी नन्दलाल भंडारी मिल्स क्लॉथ शाप तु० क्ला० मा०

मेसर्स पन्नालाल जवरचन्द तुकोजी० मार्केट

,, फतेहचंद मूलचन्द बजाजखाना

दी बिनोद मिल्स क्लॉथ शाप तुकोजी० क्ला० मार्केट

,, मालवा मिल्स क्लॉथ शाप ,, ,,

मेसर्स मोहरीलाल मुन्नालाल ,, ,,

दी मालवा स्टोअर्स तोपखाना

दी राजकुमार मिल्स क्लॉथ शाप तुकोजी० मार्केट

मेसर्स रामरतन टीकमदास तुकोजी राव क्ला०मा०

,, रामनारायण हरकिशन ,,

,, आर० जी० प्रधान एंड को० तोपखाना

,, लखमीचंद मुंच्छाल तुकोजी० क्ला० मा०

सेठ लक्ष्मीनारायण पसारी ,, ,,

दी शिवाजी वस्त्र भंडार तोपखाना

मेसर्स शिवराम रामबक्ष क्लाथ मार्केट

,, सूरजमल सोभागमल बजाजखाना

,, हीरालाल बालकिशनदास ,,

,, हीरालाल पन्नालाल तुकोजी क्ला० मा०

दी हुकुमचंद मिल्स क्लाथ शाप तुकोजीराव क्लाथ मार्केट

मेसर्स त्रिकमदास अमृतलाल ,, ,,

कटपीस क्लाथ मरचेंट्स

मेसस पन्नालाल मुन्नालाल बड़ा सराफा

,, मिश्रीलाल सरावगी ,,

,, रामेश्वरदास प्रह्लाददास ,,

कपड़ेके व्यापारी [इन्दौर-केम्प]

मेसर्स गेंदालाल सूरजमल

,, छोगालाल रतनलाल

,, सम्पतमल जयकुमार

बर्तनोंके व्यापारी

मेसर्स जयनारायण गिरधारीलाल कसेराबाजार

,, जयकिशन लालचन्द ,,

,, जयनारायण गंगाधर ,,

मेसर्स भोलाराम रामरतन कसेरा बाजार
,, मथुरादास लक्ष्मीनारायण ,,
,, रामकिशन रामानन्द ,,
,, रामरख मथुरादास ,,
,, श्रीकृष्ण रतनलाल ,,

गोटेके व्यापारी

मेसर्स देवीसहाय मथुरालाल बजाजखाना चौक
,, रामनाथ रामकिशोर ,,
,, रामबक्ष सूरजमल ,,

ग्रेन मरचेंट्स एण्ड कमीशन एजंट

मेसर्स जवरचंद मांगीलाल सियागंज
,, मंगलजी मूलचंद मल्हारगंज
,, रामरतन लालचंद ,,
,, शिवबक्ष लादूराम ,,
,, सुन्नालाल मूलचन्द ,,
,, सुन्नालाल पन्नालाल ,,
,, हरदेव जवरचन्द ,,

फुटकर कमीशन एजंट

मेसर्स जयकिशनदास राधाकिशनदास मल्हारगंज
,, ब्रजलाल किशनलाल दितवारिया
,, लक्ष्मीचन्द चुन्नीलाल मल्हारगंज
,, हीरालाल घांसीलाल मल्हारगञ्ज

लोहेके व्यापारी

इसुफअली मुलां महमद अली सियागंज
कमरूद्दीन अब्दुल अली सियागञ्ज
मालूभाई कमरूद्दीन सियागञ्ज
सुलेमान इसुफअली सियागञ्ज

वाच मरचेंट्स

दी ग्रेट इस्टर्न वाच कम्पनी बड़ा सराफा
नानालाल बुलाखीदास बड़ा सराफा
भीखाजी एण्ड को० बड़ा सराफा
दी राईजिंग सन् कम्पनी बड़ा सराफा

जनरल मरचेंट्स

अलीभाई मूसाभाई सियागञ्ज
अब्दुल हुसेन तैय्यबअली सियागञ्ज
ईसमाइल आदम तोपखाना
इलेक्ट्रिक इम्पोरियम तोपखाना
कृष्णराव गोपाल शोंचे कृष्णपुरा
कादर भाई अल्लाबक्ष एन्ड सन्स तोपखाना
गुलाम हुसेन एण्ड सन्स सियागञ्ज
नानालाल बुलाखीदास बड़ा सराफा
मेगनी ए० हुसेन एण्ड को० महारानी रोड
मालवा स्टेशनरी मार्ट तोपखाना
राईजिंग सन् कम्पनी बड़ा सराफा
सूरज एण्ड को० छावनी (स्पोर्ट्स)

फुटकर कम्पनियां

रेमिंगटन टाईप राईटर कम्पनी तोपखाना
सिंगर मेशीन कम्पनी तोपखाना
जनरल इंशुरेन्स कम्पनी तोपखाना

आर्टिस्ट एण्ड फोटोग्राफर

दीनानाथ आर्टिस्ट इन्दौर
फोटो आर्ट स्टुडियो बोम्फांकेट मार्केट
रामचन्द्र राव एण्ड प्रतापराव तोपखाना।

होटल्स एण्ड रिस्टोरेंट्स

इन्दौर होटल तुकोगंज
मालवा होटल तुकोगंज
लक्ष्मी विलास होटल तोपखाना
सरदार गृह बत्ती गली

धर्मशाला

सर सेठ स्वरूप चन्द हुकुमचंदकी नसियां स्टेशनके पास
टीकमजी मूलचन्दकी धर्मशाला ,,

लायब्रेरीज़

अग्रवाल पुस्तकालय दितवारिया
जनरल लायब्रेरी कृष्णपुरा
मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति
श्वेताम्बर जैन लायब्रेरी मोरसली गली

चायके व्यापारी

मेसर्स केरावाला एण्ड को० सियागंज

मिल जिन स्टोअर सप्लायर्स

बोरा बेलजी गिरधर अमरेलीवाला सियागंज
सेठ रतनजी गुस्तादजी सियागंज
आर० बी० ईश्वरदास एण्ड को० महारानी रोड
सी० जवेरलाल एण्ड कम्पनी सियागंज

मोटरकार एण्ड साईकल डीलर्स

गुलाम हुसेन एण्ड सन्स सियागंज
जवेरी मोटर स्टोअर्स सियागंज
एन० सी० अंकलेसरिया एण्ड को०सियागंज
नोशेरवान एण्ड कम्पनी महारानी रोड
ब्रिटिश इण्डिया मोटरकार कम्पनी महारानी रोड

संगमरमरके व्यापारी

ए० साजन कम्पनी महारानी रोड

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

आयुर्वेदीय औषधि निर्माणशाला बियाबानी
श्रीकृष्ण फार्मसी तोपखाना
किशनराव गोपाल शौचे बोम्फांकेट मार्केट
तैय्यबी दवाखाना यूनानी
पापुलर मेडिकल हाल बोम्फांकेट मार्केट

रंगके व्यापारी

मेसर्स शामबाला एण्ड को० महारानी रोड
,, अहमद अली अब्दुल करीम सियागंज

ट्रंक मरचेंट्स

अब्दुल्ला अल्लाबक्ष अजमेरवाला सियागंज
अब्दुल गनी अब्दुल अज़ीज सियागंज
तैय्यब भाई मुल्लाँ कादर भाई सियागंज

उज्जैन

UJJAIN

उज्जैन

ऐतिहासिक महत्व

यह शहर भारतवर्षके उन प्राचीन नगरोंमेंसे एक है, जिनके अखण्ड गौरवका गान भारतीय साहित्यके प्राचीन ग्रन्थोंमें मुक्त कण्ठसे गाया गया है। महाकवि बाणभट्टने अपनी कादम्बरीमें जिस उज्जयिनीका अलङ्कार मय भाषामें वर्णन किया है, तथा दूसरे ग्रन्थकारोंने मुग्ध विस्मयके साथ जिस अवन्तिका नगरीके गुण गान किये हैं, उज्जैन उसीका नवीन रूपान्तर है। यह शहर प्राचीन कालमें मालव-देशकी राजधानी था। परम प्रतापी सम्राट विक्रमादित्यका राजसिंहासन इसी महिमामयी नगरीमें जगमगाया था। महाकवि कालिदासकी लेखनीसे जन्म पाये हुए शकुंतला रघुवंश, और मेघदूतके समान सुन्दर काव्योंकी स्निग्ध किरणें भी इसी नगरीसे प्रकाशित होकर संसारमें फैली थीं।

आजकल क्षिप्रा नदीके तटपर बसा हुआ यह शहर महाराजा सेंधियाकी छत्रछायामें विश्राम पा रहा है। भूतपूर्व महाराजा माधवराव सेंधिया की इस नगरपर पूर्ण कृपा दृष्टि थी। उन्होंने इस नगरको उन्नति देनेमें कोई बात उठा न रखी थी। लाखों रुपये खर्च करके उन्होंने इस नगर-की सभी प्रकारकी स्थितियोंको सुधारनेकी चेष्टा की और यही कारण है कि आज यह नगर भी अपने पड़ोसी इन्दौर नगरकी टक्कर लेना चाहता है। यदि राज्यकी इस नगरपर पूर्ण दृष्टि रही तो निकट भविष्यमें ही यह नगर बहुत उन्नत रूपमें दिखलाई देगा।

धार्मिक महत्व

ऐतिहासिक महत्वकी तरहही यह नगर धार्मिक महत्वमें भी बहुत बढ़ाचढ़ा है। क्षिप्रा नदीके तटपर बसा हुआ होनेकी वजहसे यह हिन्दुओंका तीर्थ स्थान है। बारह वर्षमें यहां सिंहस्थका प्रसिद्ध धार्मिक मेला भरता है। जिस समय यह मेला होता है लाखों मनुष्य इस नगरमें आकर अपनी कट्टर धार्मिक भावनाओंका परिचय देते हैं। इसके अतिरिक्त यहां और कई धार्मिक स्थान हैं। जिनकी वजहसे यह नगर धार्मिक बातोंमें आगे गिना जाता है।

व्यापारिक महत्व

सेन्ट्रल इंडियामें इन्दौरके पश्चात् व्यापारिक महत्वकी दृष्टिसे उज्जैनहीका दूसरा नम्बर है। यहांके व्यापारियोंको व्यापार करनेमें कई सुविधाएं हैं। बम्बई, इन्दौर आदि नगरोंसे व्यापारिक सम्बन्ध होनेके कारण और उनके पास आ जानेसे यहां व्यापार करनेमें बड़ी सुविधा होती है। दूसरा कारण यह है कि यह स्थान मालवेके मध्यमें होनेसे आस पासकी मालवेकी पैदावार यहींसे एक्स-पोर्ट होती है। इससे भी यहां बड़ी व्यापारिक गति विधी रहती है।

उज्जैनका मार्केट सेन्ट्रल इंडियाके कॉटन मार्केटमें पहले नम्बरका है। यहांसे सालाना एक्सपोर्ट होनेवाली काटन बेल्सकी औसत १ लाखके करीब होती है। काटनका बड़ा मार्केट होनेकी वजहसे मोसिमके समय रायली ब्रदर्स, बालकन ब्रदर्स, मिस सुई भुलान केशो आदि कम्पनियां कपास खरीदनेके लिये यहां अपनी शाखाएं खोलती हैं।

काटनही की तरह गल्लेके व्यवसायका भी यह बड़ा मार्केट है। यहींसे आसपासकी पैदावार बम्बई इन्दौर प्रभृति व्यापारिक केन्द्रोंमें एक्सपोर्ट होती है। यह व्यवसाय विशेषकर नयेपुरे होता है।

कपड़ेके व्यवसायमें भी सेंट्रल इण्डियामें उज्जैनका दूसरा नम्बर है। यहां दो कपड़ेकी मिलें होनेकी वजहसे यहांके कपड़ेका व्यवसाय उन्नतिपर है। यहांसे पंजाब, यू० पी०, गवालियर स्टेट प्रभृति स्थानोंमें कपड़ा जाता है।

इसके अतिरिक्त दूसरी वस्तुओंका व्यवसाय भी होता है पर उसका एक्सपोर्ट न होनेसे उल्लेख नहीं किया गया।

उज्जैनके व्यापारिक बाजार

सराफा बाजार—यह यहांका सबसे अच्छा बाजार है। यहां बड़े २ व्यापारियोंको फर्में हैं। इस बाजारमें खासकर रूई, गल्ला तथा वायदेका सौदा होता है। वायदेके सौदेमें यहांका बाजार सेन्ट्रल इण्डियामें दूसरे नम्बरका है।

नयापुरा—यहां खासकर गल्लेका व्यवसाय होता है। यहां गल्लेका काम करनेवाली कई बड़ी २ फर्में हैं। यहांकी फर्मों द्वारा हजारों मन गल्ला बाहर जाता है।

काटन मार्केट—यहां काटनकी खरीद बिक्री होती है। यह सेंट्रल इंडियामें पहला काटन मार्केट है। जिस समय यहां कपासकी गाड़ियां बिक्रीके लिये आती हैं उस समय सैंकड़ों व्यापारियोंकी गति विधी देखने लायक होती है।

जयाजीगंज—यह मंडी अभी बन रही है। यह इन्दौरके सियागंजकी तरह बनेगी। यहां

सभी प्रकारके थोक व्यापारियोंकी फर्में रहेंगी। सरकारने यहां आनेवाले मालपर महसूलमें भी बहुत रियायत कर दी है।

पटनी बाजार—यहां जनरल मरचेंट्सकी दुकानें हैं। इस बाजारमें गोपाल मन्दिर देखने योग्य है। इसी बाजारमें उज्जैनके प्रसिद्ध फूलोंके हार विकते हैं।

जूनापीठा—यहां गल्लेके व्यापारियोंकी फुटकर दुकानें हैं।

चौक—यह अभी ही बना है। उज्जैन जैसे प्राचीन शहरमें यदि कोई नवीनता आई है तो इसी चौकमें। पहले यहां बड़ तंग रास्ते थे। महाराजा साहबने यहांके मकानोंको खरीद कर शहरको सुन्दर बनाने के लिये इसे बनाया है। इस चौकमें सब दुकानें एक नमूनेकी हैं। यहां कपड़ेवाले, जनरल मरचेंट्स, साईकल मर्चेण्ट्स आदिकी दुकाने हैं।

इनके अतिरिक्त, दौलतगंज, गुदड़ी बाजार देवासरोड आदिमें भी फुटकर व्यापारियोंकी दुकान हैं।

उज्जैनके दर्शनीय स्थान

उज्जैन बहुत पुराना शहर है। अतएव यहां कई प्राचीन स्थान दर्शनीय हैं। पाठकोंकी जानकारीके लिये उनमेंसे कुछ नाम यहां दिये जाते हैं। हरसिद्धि देवी, कालका देवी, चौबीस खम्बा, मंगलनाथ, महाराजा भर्तृहरिकी गुफ़ा, सिद्धनाथ, कालभैरों, रानोजी महाराजकी छतरी, महाराजबाड़ा, मौलवी मुगिसउद्दीनका मकबरा, नयामहल, पुराना जलमहल, (कालिया देहपर) और आवज़रवेटरी एवं महंकालेश्वरका मंदिर इत्यादिस्थान यहां विशेष मशहूर हैं।

फेक्ट्रीज एण्ड इण्डस्ट्रीज

दी विनोद मिल्स लिमिटेड

यह मिल सन् १९१२,१३ में स्थापित की गई, और सन् १९१४ में चालू हुई। तबसे अब तक बराबर चल रही है। इसके मैनेजिङ्ग एजण्ट मेसर्स विनोदीराम बालचन्द हैं। इसमें ७५० लूम्स और ३१००० स्पेंडिल्स हैं। रोजाना करीब १२०० मजदूर इसमें कार्य करते हैं। इस मिलमें एक बहुत बड़ा हास्पिटल खुला हुआ है। जिसमें मिल मजदूरों और अन्य कार्य कर्ताओं तथा साधारण पब्लिकको मुफ्तमें औषधि दी जाती है। इस मिलमें डोरिया, साटन, धोती जोड़े और रंगीनमाल अच्छा बनता है।

आनेवाले माल

नाम	वजन		मूल्य
चावल	३००२६ मन	...	...
गुड़	१८८६१,,	...	...
शक्कर	१३६६०२,,	...	...
तेल-मिट्टी	७८७६३ पीपे	...	...
इमारती लकड़ी	६०८३४	...	...
लोहा	...	...	२५६०६२) रु०
तांबा—पीतल	...	...	७४७२२)
कपड़ा	...	...	१२६५२७३)
सूतआदि	२३३८ मन	...	...
इन्दौरी कपड़ा	...	...	४२०५८)
तमाँखू	३३६४ मन	...	...
व्यापारिक सामान	...	...	१३२०६२)
माचीस	...	...	२७८५५)
मोटर साईकल	...	...	४२१४५)
पेट्रोल	...	...	३६०४५)
बिड़ियां	...	...	३३४०८)
साबुन	...	...	१५८६४०)
तेल विदेशी	...	...	३१२६७)
कागज	२०१८ मन	...	...

उपरोक्त संख्या सन् १६२५ की है। इसके पश्चात् इस समय इसमेंसे बहुत सी वस्तुएं ज्यादा आने तथा जाने लग गई हैं।

मिलमें कोई शेअर होल्डर नहीं है। यही खानदान इस मिलका मालिक है। इस फर्मने अपने रुईके व्यवसायको अच्छा बढ़ाया है। मालवाप्रांतमें यह फर्म रुईका बहुत बड़ा व्यवसाय करती है।

व्यवसायिक उन्नतिके साथ दान धर्मके कार्योंकी ओर भी इस कुटुम्बका लक्ष रहा है। आपकी ओरसे उज्जैनमें एक सङ्गमरमरका रमणीय रोजा करीब ३॥ लाख रुपयोंकी लागतसे बना है। इस रोजेमें बड़े मुल्लाजी साहबकी जियारत है, जिससे दूर दूरके बोहरा समाजके यात्री जियारत करने आते हैं। इसके अतिरिक्त आपने यहाँ एक मुसाफिर खाना भी बनवा रक्खा है, तथा साथही उसमें भोजनका भी प्रबन्ध है। मऊमें ६ हजारकी लागतसे बोहरा बीमारोंके ठहरनेके लिये एक सेनेटोरियम भी इस फर्मकी ओरसे बना है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) उज्जैन—मेसर्स महम्मदअली ईसाभाई नयापुरा—इस फर्मपर किराने तथा गल्लेका थोक व्यापार और कमीशनका काम होता है।

(२) इन्दौर—मेसर्स महम्मदअली ईसा भाई सियागंज—इस फर्मपर किरानेका थोक व्यापार होता है, तथा यहाँ वेजिटेबल घी और सोड़ाकी एजंसी है। (T. A. Pulpit)

(३) बम्बई—मेसर्स महम्मदअली ईसाभाई, अब्दुल रहमान स्ट्रीट—यहां आढ़त तथा हुंडी चिट्ठीका काम होता है। (T. A. Pulpit)

(४) उज्जैन – नजरअली मिल—इसका विस्तृत परिचय ऊपर दिया गया है। मिलके साथ २ यहां कपास खरीदीका अच्छा व्यापार होता है। अहमदाबादकी कई मिलें यहांसे माल मंगवाती हैं।

इसके अतिरिक्त इस फर्मकी नीचे लिखे स्थानोंपर जीनिङ्ग और प्रेसिङ्ग फेक्टरियां हैं। इनमेंसे कई कारखाने सेठ लुकमानभाईने सेठ नजरअली भाईके गुजर जानेके बाद खोले हैं।

जीनिंग फेक्टरियां—नजरअली जीनिङ्ग फैक्टरीके नामसे

१—उज्जैन २—आगर (मालवा) ३—शाजापुर (ग्वालियर) ४—सोनकछ (ग्वालियर) ५—भँवरासा (ग्वालियर) ६—बेरछा स्टेशन (जी० आई० पी०) ७-सुजालपुर ८-पचोर ९—नरसिंहगढ़ १०—ब्यावरा (राजगढ़) ११—छापेरा (नरसिंहगढ़) १२— खुजनेर (नरसिंहगढ़) १३—बरोदिया (ग्वालियर) १४—सुसनेर (गवालियर) १५—सोयत (ग्वालियर) १६—बड़ोद (गवालियर) १७—नलखेड़ा (गवालियर) १८—आलोट (देवास) १९—खाचरोद (गवालियर) २०—उन्हेल (गवालियर) २१—बड़नगर २२—भिंड २३—राजोद (इसमें आपका साझा है) २४—महम्मदअली ईसा भाई जीन महत्पुर और २५—जगोटी (होल्कर स्टेट)

प्रेसिंग फेक्टरियां--(नजरअली प्रेसिङ्ग फेक्टरीके नामसे)

१—उज्जेन २—भिंड ३—पचोर (यह प्रेसिंग फेक्टरी अभी तैयार होरही है)

श्रीयुत नाथभैय्या (मेसर्स गोविन्दराम बालमुकुन्द) उज्जैन

श्रीयुत बेंकटलालजी (मेसर्स बलदेव मांगीलाल) उज्जैन

स्व० श्रीयुत कुन्दनलालजी पांड्या उज्जैन

श्रीयुत तनसुखलालजी पांड्या उज्जैन

बैंकर्स एण्ड कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स ओंकारजी कस्तूरचन्द

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री रायबहादुर सेठ कस्तूरचंदजी काशलीवाल हैं। आप सरावगी जैन जातिके सज्जन हैं। इस फर्मका हेड ऑफिस इन्दौर है। अतः इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इन्दौरमें दिया गया है। इस फर्मका पता—सराफा, उज्जैन है। यहांपर हुंडी, चिट्ठी, सराफा, लेनदेन तथा रुईका व्यापार होता है।

—:—

मेसर्स गोविंदराम बालमुकुन्द

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री सरदार नत्थू भैया नेवरी (गवालियर-स्टेट) के निवासी हैं। आपकी गवालियर स्टेटमें कई पीढ़ियोंसे जागीर तथा जमींदारी चली आती है। आप सर्दार श्री आम्रेसाहब स्टेट गवालियरके खजांची हैं। उक्त सरदार साहबकी ओरसे आपको कई गांव जागीरीमें मिले हैं। आप कई कमेटियोंके मेम्बर हैं। सरदार नत्थू भैयाने नेवरीकी पहाड़ीप एक रमणीय मंदिर बनवाया है। आप देवास स्टेटके पोतेदार (खजांची) हैं। इस स्टेटमें आपक अच्छा सम्मान है। देवासमें आपके बाग बगीचे एवं मकानात बने हुए हैं।

आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

(१) उज्जैन—गोविंदराम बालमुकुन्द सराफ़ा—यहां बेङ्किग तथा रुईका व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त आपका देवास और नेवरीमें जीनिंग फ़ेक्टरीज़ और भंवरासामें दुकान है।

मेसर्स गोविन्दराम पूरनमल

इस फ़र्मके मालिक फलोदी मारवाड़)के निवासी माहेश्वरी (डांगरा) वैश्य हैं। इस फ़र्म की स्थापना सर्व प्रथम सेठ हिम्मतरामजीने हैदराबाद (दक्षिण) में की थी। उस समय इस फर्मपर हिम्मतराम अज्ञाराम नाम पड़ता था। सेठ हिम्मतरामजीके बाद उनके पौत्र सेठ गोविंदरामजीने इस फर्मके व्यापारको मालवा और राजपूतानाकी ओर बढ़ाया। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन

सेठ गोविंदरामजीके पुत्र सेठ पूरनमलजी एवं सेठ चम्पालालजी करते हैं। आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

(१) उज्जैन—मेसर्स गोविंदराम पूरनमल सराफा—यहाँ रुई, हुण्डी, चिट्ठी तथा आढ़तका काम होता है।

(२) जावरा—गोविंदराम पूरनमल कोठीबाजार—यहां रुई आढ़त तथा हुंडी चिट्ठीका व्यापार होता है

(३) बारां (कोटा स्टेट) गोविंदराम पूरनमल—यहां आपकी एक जीन है तथा रुई, गल्ला और आढ़त का काम होता है।

मेसर्स गोविंद्राम नाथूराम

इस फर्मके मालिक खास निवासी फ़तहपुर (सीकर) के हैं। इस फ़र्मको सेठ गोविंदरामजीने ८० वर्ष पूर्व स्थापित किया, तथा आपके पुत्र सेठ नाथूरामजीने इसके व्यवसायको तरक्की दी। सेठ नाथूरामजीका देहावसान संवत् १९६२में हुआ। सेठ नाथूरामजीके पुत्र सेठ बरदीचन्दजीने इस फर्मके रुईके व्यवसायको बढ़ाया, एवं २ जीनिंग फेक्टरियां स्थापित की। आपने एक राधाकृष्णका मंदिर एवं एक बगीचा करीब ८० हजार रुपयोंकी लागतसे बनवाया। आपके यहां एक अन्नक्षेत्र भी चल रहा है। सेठ बरदीचन्दजी उज्जैनकी म्यूनिसिपैलेटीके मेम्बर भी रहे थे। आपको कई बार गवालियर दरबारसे सम्मानार्थ सिरोपाव मिले थे। आपका देहावसान संवत् १९७३ में हुआ।

सेठ बरदीचन्दजीके कोई संतान न होनेसे संवत् १९७५में उनके भतीजे श्री गुलजारीलालजी गोद लाये गये। वर्तमानमें इस फर्मका सञ्चालन सेठ गुलजारी लालजी ही करते हैं। आपकी फ़र्म का व्यॉपारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) उज्जैन—मेसर्स गोविंदराम नाथूराम बुधवारिया बाजार-यहां रुई आढ़त तथा हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

(२) उज्जैन—रामचन्द्रबरदीचंद जयाजीगंज—यहां गल्लेका व्यापार तथा आसामी लेनदेनका काम होता है।

(३) उज्जैन—बरदीचंद गुलजारीलाल, देवास आगर रोड, यहां आपकी १ जीनिङ्ग फेक्टरी है तथा रुईका व्यापार होता है।

(४) बड़नगर—गोविंदराम नाथूराम—यहां आपकी १ जीनिंग फेक्टरी है।

(५) बड़नगर—बरदीचन्द गुलजारीलाल—यहाँ रुई, गल्ला और कमीशनका काम होता है।

मेसर्स घासीलाल कल्याणमल गोधा

इस फर्मके संस्थापक सेठ घासीलालजीका जन्म विक्रमी संवत् १९१२ की अगहन सुदी १२ को इन्दौरमें हुआ। संवत् १९२९ से आप मेसर्स पन्नालाल जवरचन्द हाट पीपल्या वालोंके यहां
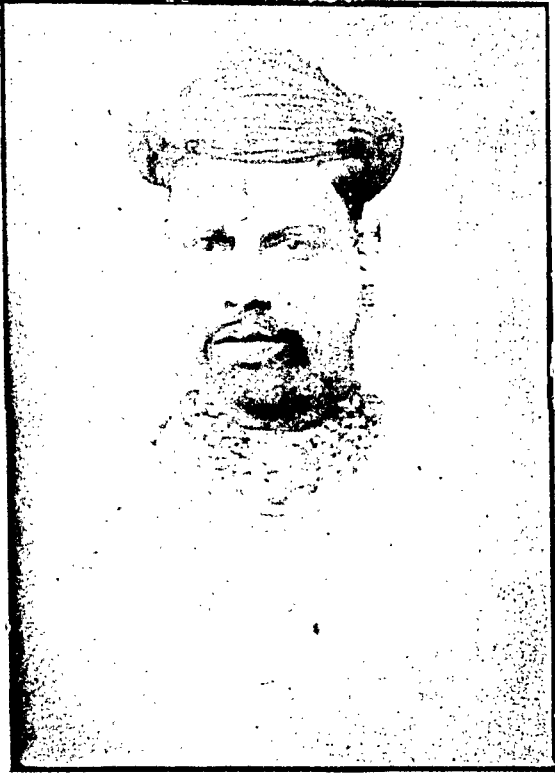
स्व० सेठ वरदीचन्दजी (गोविन्दराम नाथूराम) उज्जैन श्रीसेठ कल्याणमलजी गोधा (घासीलाल कल्याणमल) उज्जैन

सेठ रामस्वरूपजी दानी (रामदान राधाकिशन) उज्जैन

श्रीलक्ष्मीचन्दजी मुणोत, उज्जैन

रोकड़का काम करने लगे। दस बारह वर्ष बाद आप उस फर्मके मुनीम बनाये गये। उस फर्ममें कार्य करते हुए आपने अफीम आदिके व्यापारमें बहुत अधिक सम्पत्ति उपार्जित की। व्यवसायिक रुचिके साथ साथ धार्मिक कार्योंसे भी आपको विशेष स्नेह था। आपने लूणमंडी जैन मन्दिरमें संगमरमरकी वेदी बनवाई, मन्दिरपर शिखर बनाकर कलशारोहण कराया तथा उक्त मन्दिरमें स्वाध्याय आदिकी सुव्यवस्थाके लिये योग्य प्रबन्ध किया। इसी प्रकार गिरनारजीकी तलेटीमें एक जिनमंदिर बनवाकर प्रतिष्ठा की। बड़नगरमें भी आपने एक जिनबिम्बकी प्रतिष्ठा की। इसके अतिरिक्त उज्जैन, तारंगाजी, शत्रुंजय, मक्सी,आदि तीर्थ स्थानोंमें धर्मशालाएं, और कोठरियां बनवाईं। उज्जैनमें आपने एक सार्वजनिक दिगम्बर जैन पवित्र औषधालय, स्थापित किया। जो अभी तक भली प्रकार चल रहा है। इस प्रकार आपने अपने जीवनमें करीब १ लाख रुपयोंका दान किया था।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ कल्याणमलजी हैं। आप सेठ घासीलालजीके यहां गोदी लाये गये हैं। आपका उज्जैनकी कई सार्वजनिक संस्थाओंमें प्रधान हाथ रहता है। राजदरबार तथा पंच पंचायतीमें भी आपका अच्छा सम्मान है। सेठ कल्याणमलजी, परगना बोर्ड, म्युनिसिपैलेटी, मजलिसे आम, डिस्ट्रिक्टबोर्ड तथा साहुकारी बोर्डके मेम्बर रह चुके हैं और अब भी हैं। आपको समय समयपर गवालियर दरबारकी ओरसे पोशाकें एवं सनदें प्राप्त हुई हैं।

आपकी फर्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

उज्जैन—मेसर्स घासीलाल कल्याणमल गोधा, सराफा—यहां हुंडी चिट्ठी सराफी लेन देन तथा रुईका व्यापार होता है। यह फर्म यहां अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

मेसर्स तिलोकचन्द कल्याणमल

इस फर्मका हेड ऑफिस इन्दौरमें है। अतः इसका विशेष परिचय चित्रों सहित उस स्थानपर दिया गया है। इस फर्मके मालिकोंका कुटुम्ब मालव प्रांतमें प्रसिद्ध समृद्धिशाली माना जाता है इस फर्मपर पहिले अफीमका बहुत बड़ा व्यापार होता था। इसके मालिक स्वर्गीय रायबहादुर सेठ कल्याणमलजी विशाल हृदयके महानुभाव थे। आपका नाम सुनते ही हृदयमें आदरणीय भावोंकी जागृति हो उठती है।

आपकी फर्मका पता—सराफा उज्जैन है। यहां हुण्डी, चिट्ठी, सराफी—लेनदेन तथा रुईका व्यापार होता है।

मेसर्स नाथूराम रामनारायण

इस फर्मके मालिक बिसाऊ (जयपुर) के निवासी हैं इस फर्मका हेड आफिस मेसस च्नेनीराम जेसराजके नामसे बम्बईमें है । इसलिये इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्रों सहित बम्बई विभागमें पृष्ठ ४५ में दिया गया है । इस फर्मपर बम्बईमें टाटा संसकी मिलोंके कपड़े की सोल एजेन्सी है । तथा कपड़ा और वेङ्किगका व्यापार होता है ।

उज्जैनमें इस फर्मकी एक पोद्दार जीनिंग फ़ेक्टरी है । और रुईका व्यापार होता है ।

मेसर्स बलदेव मांगीलाल

इस फर्मके मालिक डीडवाणा (जोधपुर) के निवासी माहेश्वरी (बांगड़) सज्जन हैं । इस फर्मकी स्थापना ३५ वर्ष पूर्व सेठ बलदेवजीके हाथोंसे हुई थी । वर्तमानमें इस फर्मका संचालन सेठ वैंकटलालजी करते हैं । आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

(१) उज्जैन—मेसर्स बलदेवजी मांगीलाल सराफा—इस दुकानपर हुण्डी, चिट्ठी लेन-देन तथा रुईका व्यापार और आढ़तका काम होता है ।

(२) सुसनेर—हरनारायण बलदेव—यहां आसामी लेन देन तथा खरीद फरोख्तका काम होता है ।

(३) गरोठ—(होल्कर स्टेट) पूर्णानन्द कम्पनी—यहां इस नामकी जीनिंग फेक्टरीमें आपका साझा है ।

मेसर्स मन्नालाल भागीरथदास ❋

इस फर्मके मालिक रतलामके निवासी ओसवाल (चतुरमुथा) सज्जन हैं । इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब १२ वर्ष हुए । इसमें सेठ छोटमलजीका साझा है । आप बांसनी-मेड़ता (मारवाड़) के रहनेवाले हैं पर आपका कुटुम्ब करीब ६० वर्षोंसे यहीं रहता है ।

श्री छोटमलजी उज्जैनकी म्युनिसिपैनेटी मजलिसेआम एवं साहुकारान वोर्ड के सदस्य हैं । आपका चित्र रतलाममें दिया गया है । आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

(१) उज्जैन—मेसर्स मन्नालाल भागीरथ दास, सराफा—यहां हुण्डी, चिट्ठी, रुई तथा आढतका व्यापार होता है ।

(२) नागदा—मन्नालाल भागीरथदास—यहां आपकी एक जीनिंग फेक्टरी है, तथा रुईका व्यापार होता है ।

❋ इस फर्मका विशेष परिचय और फोटो रतलाममें दिया गया है ।

जुगलकिशोर नारायणदास जौहरी, उज्जैन

फतेचन्दजी पारख (मुनीम सर हुकुमचन्दजी) उज्जैन

करमचन्दजी कोठारी (मुनीम वमड़सी जौहारमल) उज्जैन

श्री० हस्तीमलजी (हस्तीमल चम्पालाल) उज्जैन

मेसर्स रामदान राधाकिशन

इस फर्मके मालिक मेड़ता (मारवाड़) के निवासी हैं। इस फर्मको करीब २० वर्ष पूर्व सेठ रामदानजीने स्थापित किया था। आपका स्वर्गवास सं० १९७९ में हो गया। वर्तमानमें सेठ रामदानजीके पौत्र सेठ रामस्वरूपजी इस फर्मके मालिक हैं। आपका उज्जैनमें एक अन्नक्षेत्र चल रहा है, तथा मेड़तामें आपकी ओरसे राजसभा नामक एक धर्मशाला बनी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) उज्जैन—मेसर्स रामदान राधाकिशन नमकमंडी—यहां रुई, कपास, हुण्डी चिट्ठी तथा आढ़तका व्यापार होता है।

(२) मेड़ता—(मारवाड़) यहां लेन देनका काम होता है।

मेसर्स सरूपचंद हुकुमचंद

इस फर्मके मालिक रायबहादुर राज्यभूषण सर हुकुमचंदजी के० टी० हैं। आप मालव प्रांतके नामाङ्कित व्यापारी हैं। आपकी फर्मका हेड ऑफिस इन्दौर है। अतः आपका सुविस्तृत परिचय अनेक सुन्दर चित्रों सहित इन्दौरमें दिया गया है। उज्जैनमें इस फर्मपर बैङ्किंग, हुण्डी चिट्ठी तथा रूईका व्यवसाय होता है।

इस फर्मके वर्तमान मुनीम श्री फतहचंदजी पारख हैं। आप बीकानेरके आदि निवासी हैं पर १०० सालसे बजरङ्गगढ़ (गवालियर स्टेट) में रहते हैं। आपकी जिमीदारीके २ गांव बजरङ्गगढ़के पास हैं। आपने पहिले मेसर्स रामदेव बलदेवकी दुकानपर, फिर सन् १८७२ से रा० ब० सेठ कल्याणमलजीकी फर्मपर तथा १९७८ से पन्नालाल गनेशदासकी फर्मपर मुनीमात की। एवं वर्तमानमें १९८३ से सर सेठ हुकुमचंदजीकी उज्जैन फर्मका कारबार आप ही सञ्चालन करते हैं। आपको गवालियर सरकारसे दो बार खिलअत व सनद भी प्राप्त हुई है। सम्वत् १९७८ में सिंहस्थ के समय आपने अच्छी सेवा की, इससे खुश होकर ग्वालियर सरकार स्वर्गीय माधवरावजी सिंधियाने आपको अपने हाथोंसे तमगा बख्शा। आप मंडी कमेटी, साहुकारी बोर्ड और परगना बोर्डके मेम्बर हैं।

मेसर्स करमचंद दीपचंद *

इस फर्मके मालिक सेठ करमचंदजी काठारीका जन्म बीकानेरमें सम्वत् १९२१ की भादव सुदी ८ को हुआ था। केवल १३ वर्षकी आयुमें ही आप बीकानेरके सेठ घमड़सी जुहारमलजीकी

---

* आपका परिचय देरीसे मिलनेके कारण यथास्थान नहीं छापा जा सका—प्रकाशक।

बम्बई दुकानपर रोकड़के कामपर नियुक्त कर भेजे गये। बादमें सम्वत् १६४४ में उज्जैन दुकानपर मुनीमीके स्थानपर तबदील किये गये। तथा उसी स्थान पर आजतक आप काम करते हैं।

सेठ करमचंदजीका गवालियर स्टेटमें अच्छा सम्मान है। गवालियर स्टेटके भिन्न २ महकमोंसे आपको करीब १२ सार्टिफिकेट एवं सनदें प्राप्त हुई हैं। राज्यकी ओरसे कई बार आपको पोशाक भी इनायत हुई है। आप शहरमें ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। इसके अतिरिक्त चेम्बर ऑफ कामर्सके प्रेसिडेंट और साहुकारी बोर्डके वाइस प्रेसिडेंट हैं। मंडी कमेटी, मजलिसे आम, ओकाब कमेटी संख्या राजा धर्मशालाके मेम्बर हैं। उज्जैनमें (उंडासा फार्म) पर आपकी जमीदारी है। तथा वहां बगीचा व बंगला अच्छी लागतसे बना है।

आपकी दुकानें उज्जैनमें करमचंद दीपचंदके नामसे इन्दौरमें दीपचंद भँवरलालके नामसे कलकत्तेमें आनन्दमल हरखचंद के नामसे एवं सारंगपुरमें दीपचंद हरखचंदके नामसे है।

मेसर्स हस्तीमल चम्पालाल

इस दुकानके मालिक खास निवासी खाचरोदके हैं। इस फर्मकी स्थापना सेठ भगवतीजीके हाथोंसे हुई। वर्तमानमें इस फर्मके सञ्चालन सेठ भगवतीजीके पौत्र (करमचंदजीके पुत्र) कस्तूरचंद जी, रूपचंदजी, हस्तीमलजी, चम्पालालजी और मिश्रीमलजी हैं। आपकी ओरसे खाचरोदमें बहुत अधिक लागतका एक संगमरमरका मन्दिर बना हुआ है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) खाचरोद—भगवतीजी पन्नालाल—आसामी लेनदेन आढ़त और रूईका काम होता है।

(२) उज्जैन—हस्तीमल चम्पालाल—रूई व आढ़तका काम होता है।

(३) रुनीजा—हस्तीमल चम्पालाल, यहां आपकी जीनिंग फेक्टरी है।

श्री तनसूखलालजी पांड्या "जाति बंधु"

श्री तनसुखलालजीका खास निवास स्थान सुजानगढ़ (बीकानेर) है।आपक पिताजी सेठ कुंदनलालजी पांड्या, मेसर्स विनोदीराम बालचंद नामक मशहूर फर्मपर उज्जैन तथा मालवेकी दूकानोंके मैनेजर थे। लाखों रुपयोंकी घरकी सम्पत्ति होजानेपर भी आपने उक्त फर्मकी नौकरी नहीं छोड़ी। आपका बहुतसे रजवाड़ोंमें भी अच्छा सम्मान था। सेठ कुंदनमलजी बहुत विवेकशील मिलनसार एवं सहृदय पुरुष थे। आपका देहावसान सम्वत १६७२ में हुआ। आपको व्यवसायमें बहुत नुकसान उठाना पड़ा था

श्रीयुत तनसुखलालजी कई कलाओंके ज्ञाता हैं। आपको हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, फारसी अरेबिक, गुजराती, मरहठी, बंगला आदि भाषाओंका ज्ञान है। आपके हस्त द्वारा अङ्कित चित्रोंकी सुन्दरतासे प्रसन्न होकर उज्जैनकी प्रदर्शिनीने सर्वोच्च सार्टिफिकेट और स्वर्णपदक दिया है। श्री तनसुखलालजी कई तरहके वाद्ययंत्रों का बजाना, छंद-रचना एवं ज्योतिषशास्त्रकी भी जानकारी रखते हैं। बंगाल, बिहार तथा राजपूतानाकी कई संस्थाओंके आप सभापति एवं मंत्री रह चुके हैं उपरोक्त संस्थाओंकी ओरसे आपको जाति-बंधुकी पदवी दी गई है। वर्तमानमें आप मालवा प्रांतकी ट्रेझरीके उज्जैनमें ट्रेझरर हैं।

—०—

जौहरी

मेसर्स जुगलकिशोर नारायणदास

सेठ जुगलकिशोरजी जौहरी उन पुरुषोंमेंसे हैं, जो अपनी परिस्थितिको अपने पैरोंपर खड़े रहकर सुधारते हैं। आपके माता-पिताके देहावसानके समय आपकी उम्र केवल १३ वर्षकी थी। इस वयमें आप अपने मामाके यहां रहते थे। मामाकी ओरसे आपको केवल २) मासिक हाथखर्च मिलता था।

प्रारम्भमें आपने व्यवसायके लिये अपने मामाके साथ कलकत्ता, बम्बई, देहली, बनारस आदि का भ्रमण किया। और पश्चत् ७ सालतक बम्बईमें जवाहिरातकी दलाली की। इस प्रकार जवाहरातके व्यवसायमें ५० हजार रुपयोंकी सम्पत्ति पैदाकर आपने अपने मामाके पुत्र मन्नालालजीके साझेमें बम्बईमें फर्म स्थापित की। इस फर्मपर २० वर्षमें आपने करीब १५ लाख रुपयोंकी सम्पत्ति कमाई। इसी बीचमें आपकी फर्मने देवासमें एक श्रीराम मन्दिर बनवाया एवं उसके खर्चके प्रबंधके लिये बम्बईमें श्रीराम बिल्डिंग नामक एक मकान भेंट किया।

सेठ जुगलकिशोरजीने सम्वत् १९६२ में व्यवसायके लिये लंदन और पेरिसकी यात्रा की। उस समय सम्राट् सप्तम एडवर्डसे आपकी मुलाकात हुई थी, वहां आपके लिये टाइम्समें नोट भी छपा था। वहांसे आप अच्छी सम्पत्ति उपार्जित कर लाये। यहां आनेपर आपने अपने भागीदारोंसे अलग होकर स्वतन्त्र फर्म स्थापित की।

व्यवसायिक उन्नतिके साथ सेठ जुगुलकिशोरजीका धार्मिक कार्य्योंकी ओर भी अच्छा लक्ष्य रहा है। आपने ५०हजारकी लागतसे श्री सरव्या राजा प्रसूति गृह नामक संस्था स्थापित की। इस संस्थाका उद्घाटन गवालियर नरेशके हाथोंसे हुआ था। इसके अतिरिक्त गंगा तटपर आपकी एक धर्मशाला बनी हुई है। आपने नागदेमें भी ७ हजारकी लागतसे एक धर्मशाला बनवाई। पोरवाल

समाजकी उन्नतिके प्रति आपके हृदयमें बहुत लगन है। आपहीने पोरवाल महासभा स्थापित की थी। इस समय आपके २ पुत्र हैं। बड़ेका नाम श्रीनारायणदासजी और छोटेका नाम श्रीद्वारिकादासजी है। आप दोनों सज्जन जवाहरातके व्यापारमें अच्छी दक्षता रखते हैं। एवं अब फर्मका काम आप दोनों भाई ही सम्हालते हैं। बम्बई और उज्जैनमें इस फर्मकी स्थाई सम्पत्ति भी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बम्बई—मेसर्स जुगुल किशोर नारायणदास जौहरी कालबादेवी—यहां पन्ना तथा जवाहरातका व्यापार होता है।

(२) उज्जैन—जुगुलकिशोर नारायणदास जौहरी, श्रीकृष्ण भवन--यहां जवाहरातका व्यापार होता है

—:—

क्लॉथ मरचेंट्स

मेसर्स चिंतामन घासीराम

इस फर्मके मालिक आगर (मालवा) के निवासी हैं। इस फर्मकी स्थापना १० वर्ष पूर्व सेठ धूलचंदजीके हाथोंसे हुई। तथा वर्तमानमें आपही इस दुकानके मालिक हैं। सेठ धूलचंदजीके एक पुत्र श्री राजमलजी हैं। आप सुयोग्य शिक्षित एवं विचारवान नवयुवक हैं।

यह फर्म यहांके नजरअली मिलका कपड़ा बेंचनेकी सोल एजंट है। इस फर्मपर कपड़ेका अच्छा व्यवसाय होता है।

इस फर्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

१—उज्जैन—मेसर्स चिंतामन घासीराम सराफा—यहां कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

२—आगर (मालवा) चिंतामन घासीराम—यहां भी कपड़ेका व्यापार होता है।

—:०:—

मेसर्स बृजलाल जमनाधर

इस दुकानके मालिक पिलानी (जयपुर) के निवासी हैं। इसके वर्तमान संचालक सेठ रामगोपालजी हैं। आपके बड़े भाई सेठ ब्रजलालजी गवालियर दुकानका संचालन करते हैं, और दूसरे सेठ जमनाधरजी पिलानीमें रहते हैं।

स्व० सेठ रामलालजी (रामलाल जवाहरलाल) उज्जैन

श्री० राम गोपालजी साबू (व्रजलाल जमनाधर) उज्जैन

श्री० जवाहरलालजी (रामलाल जवाहरलाल) उज्जैन

श्री० घासीरामजी (चिन्तामण घासीराम) उज्जैन

इस फर्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

(१) उज्जैन—मेसर्स वृजलाल जमनाधर सराफा—(T. A. Kailasha) इस फर्मपर जयाजीराव कॉटन मिल ग्वालियर और विरला कॉटन मिल दिल्लीकी एजंसी है। इसके अतिरिक्त देशी और विलायती कपड़ेका थोक व्यापार और हुंडी चिट्ठी तथा कमीशनका काम होता है। उमरेट माचिस फेक्टरीकी सोल एज़ंसी भी इस फर्मपर है।

(२) गवालियर—मेसर्स वृजलाल रामगोपाल- (T. A. Birla) (हेड ऑफिस) यह फर्म यहांके जयाजीराव कॉटन मिलकी सोल एजण्ट है।

(३) कलकत्ता—हरदेवदास वृजलाल नं० ११७ केनिंग स्ट्रीट (T. A. Lakki)यहां केशौराम कॉटन मिलकी वंगालके लिये सोल एज़ंसी है।

(४) अभोर (पंजाव) हरदेवदास जमनाधर—यहां रुई और कपड़ेका व्यापार होता है इस फर्मका संचालन सेठ श्रीनिवासजी करते हैं।

मेसर्स रामलाल जवाहरलाल

इस फर्मके मालिक लाडनू (जोधपुर) के निवासी सरावगी जातिके हैं। इस फर्मका स्थापन संवत १९७३ में सेठ जवाहरलालजीने किया। आपके पिताजी सेठ रामलालजीका जीवन वाल्यावस्थासे ही उज्जैनमें व्यतीत हुआ था। सेठ रामलालजीका जन्म संवत १९१८ में लाडंनूमें हुआ था। आप आरंभिक जीवनसे अंतिम अवस्थातक मालवेकी प्रसिद्ध फर्म मेसर्स विनोदीराम वालचंदके यहाँ प्रथम रोकड़पर और पश्चात् प्रधान मुनीमीके स्थानपर कार्य करते रहे। इसी समयमें आपने अफीममें अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की एवं बदनावरमें दुकान और जीनिङ्ग फेक्टरी स्थापित की। आपका देहावसान संवत १९७४ में हुआ।

इस समय इस फर्मके मालिक सेठ रामलालजीके ३ पुत्र सेठ जवाहरलालजी, श्रीमोहनलालजी और श्री हुकुमचंदजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) उज्जैन—मेसर्स रामलाल जवाहरलाल सराफा—यहां कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

(२) बदनावर (धार स्टेट) नंदराम जवाहरलाल —यहां रुईका व्यवसाय तथा कमीशन एजंसीका काम होता है। इसके अतिरिक्त यहाँ आपकी एक जिनिंग फेक्टरी भी है।

श्रीलक्ष्मीचन्दजी मुणोत

श्रीलक्ष्मीचंदजीके पिता सेठ किशनचंदजी, जबलपुरके राजा गोकुलदासजीकी शिवनी और जबलपुर दुकानपर मुनीमी करते थे। श्रीलक्ष्मीचंदजी, सन् १८६६ से १९१३ तक शिवनीके रजिष्ट्रार ऑफीसमें एवं राजा गोकुलदासजी की परफैक्टपॉटेरी कम्पनी लि० में नौकरी करते रहे। और बादमें उज्जैन आकर १९२६ तक विनोद मिलमें अकाउटेंटकी जगह सर्विस करते रहे। इसी बीचमें आपने कई बीमा कम्पनियोंकी एजसिंया लेकर अपना घरू व्यवसाय करना शुरु करदिया। श्रीलक्ष्मीचंदजी कई संस्थाओंके मेम्बर हैं। आपका खास निवास जोधपुर स्टेटमें रीयां नामक एक गांव है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

श्रीलक्ष्मीचंद मुणोत सराफा उज्जैन—यहाँ फायर, लाइफ, मोटर एक्सीडेंट और मेरिन एंश्युरंसका काम होता है।

बैंकर्स तथा कॉटन मरचेण्टस्

इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया (उज्जैन ब्रांच)

मेसर्स रा० ब० औंकारजी कस्तूरचन्द, सराफा

,, आनंदीलाल सुखानंद सराफा

,, कोआपरेटिव्ह बैंक देवास दरवाजा

,, करमचंद दीपचन्द सराफा

,, गणेशदास किशनाजी सराफा

,, गोविंदराम बालमुकुन्द ,,

,, गंगाविशन पुरुषोत्तम ,,

,, गोविंदराम नाथूराम बुधवारिया

,, गोविंदराम पूरनमल सराफा

,, घमड़सी जुहारमल सराफा

,, घासीलाल कल्याणमल सराफा

,, रायबहादुर तिलोकचंद कल्याणमल

,, नाथूराम रामनारायण

,, नजरअली अलाबख्श (नजरी अली मिल)

,, पन्नालाल गनेशदास

मेसर्स बलदेवजी मांगीलाल सराफा

,, रामदान राधा किशन

,, विनोदीराम बालचंद

,, बलदेवजी मांगीलाल सराफा

,, रा० ब० सरूपचंद हुकुमचंद

,, सोहराबजी फ्रामजी ग्रांड होटल

,, हस्तीमल चम्पालाल सराफा

,, श्रीकृष्ण गोपीनाथ सराफा

विदेशी कम्पनियोंकी एजंसियां

मेसर्स रायली ब्रदर्स निजातपुरा

,, बालकट ब्रादर्स निजातपुरा

,, मुसान कम्पनी (जापान) सराफा

,, फारबस फारवस केम्बिल एण्ड कम्पनी लिमिटेड एजंट—सोहरावजी फ्रामजी

ज्वेलर्स

जुगुल किशोर नारायणदास जौहरी श्रीकृष्ण-भवन

चांदी सोनेके व्यापारी

किशनलाल मौजीलाल
लक्ष्मीनारायण खुरदिया
रामचन्द्र नारायण
रखबचंद मनरूपचंद

कपड़ेके व्यापारी

इब्राहिम इफ्तुल्लाजी सब्जीमंडी
इस्माइलजी काला चौक बाजार
चन्दूलाल जयसिंहभाई सराफा
चिंतामन घासीराम सराफा
जानकीलाल छोगमल गोपाल मंदिरके पास
तय्यब अली मूसभाई सब्जीमंडी
नजर अली मिल क्लॉथ शॉप सराफा
विनोद मील क्लाथ शॉप सराफा
ब्रजलाल जमनाधर सराफा
मोतीलाल मानकलाल
रसूल भाई समूसभाई सब्जीमंडी
रामलाल जवाहरलाल जैन सराफा
शंकरलाल सुन्दरलाल सराफा

किरानाके व्यापारी

मेसर्स महम्मद अली ईसाभाई जियाजीगंज
रजबअली इब्राहिमजी (केरोसिन एजंट) दौलतगंज

समूसभाई अब्दुल अली जियाजीगंज
हुकुमचन्द कल्यानमल ढावरीपीठा
हातिमभाई फिदाहुसेन सब्जीमंडी

बर्तनोंके व्यापारी

अमरचंद कस्तूरचंद पटनी बाजार
ओंकारजी मोतीलाल पटनी बाजार
नंदराम शंकरलाल पटनी बाजार
फिदा हुसेन अब्दुल हुसेन पटनी बाजार
महम्मद हुसैन अब्दुल हुसैन पटनी बाजार
मिश्रीलाल शंकरलाल पटनी बाजार

जनरल मरचेंट

अब्दुल हुसेन पीराखांजी सब्जीमंडी
अलीभाई मुल्ला लुकमानजी पटनी बाजार
करीमभाई पीरखां सब्जीमंडी
मूसाखान अलिफअली सब्जीमंडी

इमारती लकड़ीके व्यापारी

अब्दुल अली लुकमानजी नयापुरा
अब्दुल अली अलीमहम्मद जुम्मामस्जिद
कादर भाई रजब अली ढावरीपीठा

तय्यब अली हसन भाई नयापुरा

हाजी करीम भाई हाजी गुलाम हुसेन

——

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

इनायत हुसेन मुल्लां अब्दुल हुसेन मोदीवाला देवासरोड

महा कालेश्वर आयुर्वेदीय औषधि भांडार देवासरोड

——

वैद्य और डाक्टर्स

डाक्टर खोचे नई पैठ

नागेश्वरजी भागसीवाला

परशुराम मास्टर खाराकुआ

विश्वनाथजी शास्त्री रामजीगली सराफा

——

बीमा एजेण्ट

लक्ष्मीचन्दजी मुणोत सराफा

——

एजंसीज़

इण्डो अमेरिकन आइल कम्पनी-एजेन्सी जैन एण्ड कम्पनी देवास रोड

फोर्ड मोटरकार-एजेन्सी जैन एण्ड कम्पनी देवास रोड

सिंगर मशीन एजेन्सी

——

होटल और धर्मशालाएं

दी ग्रेण्ड होटल स्टेशनके पास

लक्ष्मी विलास होटल

श्री सख्या राजा धर्मशाला स्टेशनके पास (सरकारी)

खण्डवा

KHANDWA

खंडवा *

यह स्थान जी० आई० पी० रेलवे और बी ० बी० सी० आई रेलवेके मालवा संकशनका बड़ा जंकशन है। यह शहर बरार, खानदेश तथा नीमाड़के मध्यमें होनेसे रुईकी बड़ी भारी मण्डी है। सीजनके समयमें यहांपर प्रतिदिन हजारों गाड़ियां कपासकी बिकनेके लिये आती हैं। यहांपर रूईकी मंडी होनेसे कई बड़े २ रुईके व्यापारी निवास करते हैं। यहांका सफेद मालवी गेहूं जो एकदानियाके नामसे प्रसिद्ध है, बहुत अच्छा होता है। यहांसे हजारों थैलो गेहूंकी प्रति वर्ष बाहर चढ़ायी जाती है तथा बम्बईमें स्पेशल खंडवा गेहूंके नामसे बिकती है। यह शहर बसावटमें छोटा होनेपर भी बड़ा रमणीय और सुन्दर है। इसके स्टेशनपर पार्वतीबाई धर्मशालाके नामसे (जिसका फोटो इस पुस्तकमें बम्बईके हिस्सेमें दिया गया है) जबलपुरवाले राजा गोकुलदासजीकी ओरसे एक रमणीय धर्मशाला बनी हुई है। इस शहरमें बहुतसी जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। जिनकी लिस्ट इस प्रकार है।

सेठ राधाकिशन जयकिशन जीन और प्रेस फेक्टरी खण्डवा
भरतपुर प्रेस कम्पनी लि० खंडवा
सेठ यूसुफअली गनीभाई जीनिंग फेक्टरी खंडवा
अकबर मैन्यूफेक्चरिंग एण्ड प्रेस कं० लि० जीनप्रेस फेक्टरी खंडवा
महालक्ष्मी जीनिंग फेक्टरी खंडवा
नीमाड़ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी खंडवा
बद्रीलाल नाथूलाल जीन फेक्टरी खंडवा
युनाइटेड जीन एण्ड प्रेस फेक्टरी खंडवा
खुरशेद मिल जीन फेक्टरी खंडवा
सेठ अब्दुल हुसेन अब्दुल अली जीनिंग फेक्टरी खंडवा
सेठ बैजनाथ श्रीनाथ ओल्डएण्डन्यू जीन प्रेस खंडवा
मरचेंट जीनिंग फेक्टरी नं० १;२ खंडवा
भागचंद कैलाशचन्द जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी खंडवा

---

* खण्डवा सी० पी० में पड़ता है। मगर सेण्ट्रल इण्डियासे इसका विशेष व्यापारिक सम्बन्ध होनेसे इस विभागमें दिया गया है। (प्रकाशक)

इसके अतिरिक्त यहांपर मेसर्स जसरूप बैजनाथका एक इलेक्ट्रिक पावर हाऊस बना हुआ है। जो सारे शहरको बिजली सप्लाय करता है इस शहरके आसपास सनावद, बड़वाह, नीमाडखेडी हरदा, बीड़, आदि स्थानोंमें रुईकी मंडिया तथा कई जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियां है।

बैंकर्स एण्ड कॉटन मरचेंट

मेसर्स जसरूप बैजनाथ

इसफर्मके मालिक बीकानेरके निवासी माहेश्वरी जातिके (बाहिती) सज्जन हैं। सर्वप्रथम इस फर्मकी स्थापना सेठ जसरूपजीके हाथोंसे आसेरगढ़में हुई थी। सेठ जसरूपजीके छोटे भाईका नाम सेठ हसरूपजी था। उस समय इस फर्मपर जसरूप हसरूपके नामसे व्यापार होता था। धीरे २ इस फर्मके व्यापारकी तरक्की हुई और आजसे साठवर्ष पूर्व खंडवेमें इसकी एक ब्रेंच स्थापितकीगई। सेठ जसरूपजीके पुत्र सेठ बैजनाथजीके समयमें आसेर गढ़ और खंडवामें यह फर्म गवर्नमेंट ट्रेझररका काम करती थी। इसी समय इस फर्मके व्यापारने तेजीसे तरक्की पाई।

संवत् १९५७ तक सेठ जसरूपजी और सेठ हसरूपजीका कुटुम्ब साथही व्यापार करता रहा। उसके बाद दोनों भाइयोंकी फर्मे अलग २ हो गई। सेठ जसरूपजीके पुत्र सेठ बैजनाथजी और श्रीनाथजी, जसरूप बैजनाथके नामसे व्यवसाय करने लगे। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ बैज-नाथजीके पुत्र सेठ काशीनाथजी, सेठ चम्पालालजी एवं सेठ अनन्तलालजी हैं। सेठ चम्पालालजी सेठ श्रीनाथजीके यहां दत्तक गये हैं। इनमेंसे सेठ काशीनाथजी खण्डवा, चम्पालालजी हरदा एवं अनन्त-लालजी सनावद दुकानका संचालन करते हैं।

इस फर्मके मालिकोंकी दानधर्म एवं सार्वजनिक कार्योंकी ओर हमेशासे रुचि रही है। आपकी ओरसे ओंकारेश्वर और खंडवेमें धर्मशाला बनी हुई हैं।

वर्तमानमें यह फर्म नीमाड़ तथा नीमावर प्रांतमें बहुत बड़ा रुईका व्यवसाय करती है। इस फर्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

खंडवा—मेसर्स जसरूप बैजनाथ T. A. Jasrup यहां आपकी एक जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है तथा सराफी लेनदेन हुंडी चिट्ठी एवं रुईका व्यवसाय होता है।

इसके अतिरिक्त नीचे लिखे स्थानोंपर आपकी जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियां तथा दुकानें हैं।। इन सब फर्मोंपर प्रधान व्यापार रुईका होता है।

मेसर्स जसरूप बैजनाथके नामसे—सनावद, बड़वाहा, इन्दौर, धार, धामनोद तथा महिदपुररोड

मेसर्स जसरूप श्रीनाथके नामसे— हरदा, कन्नोद, खातेगांव तथा हरसूद
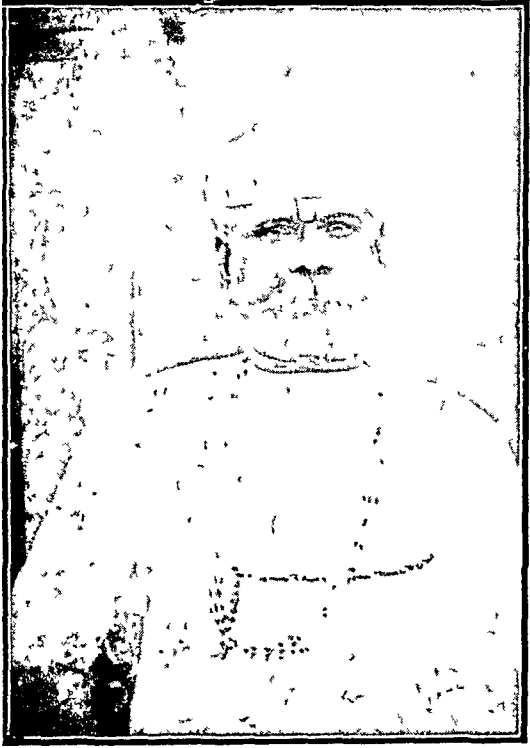
स्व० सेठ श्रीनाथजी (जसरूप बैजनाथ) खंडवा

सेठ काशीरामजी बाहिती (जसरूप बैजनाथ) खंडवा
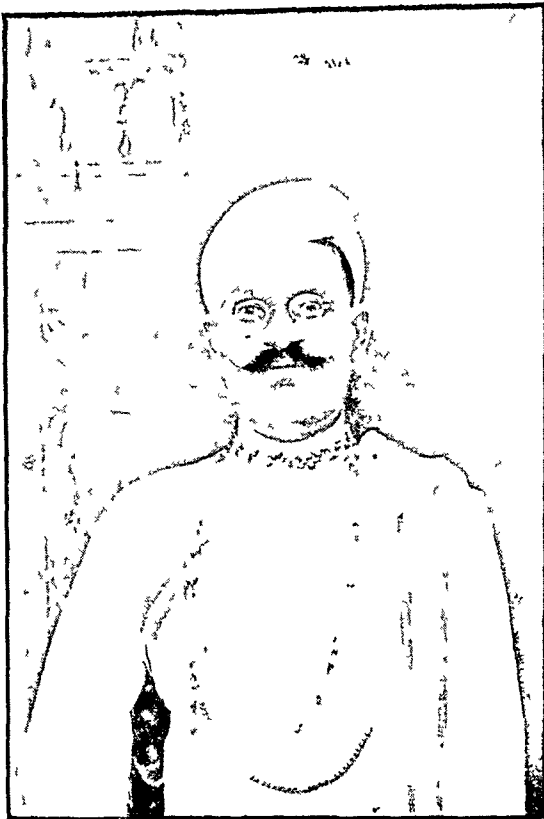
सेठ चम्पालालजी बाहिती (जसरूप बैजनाथ) खंडवा
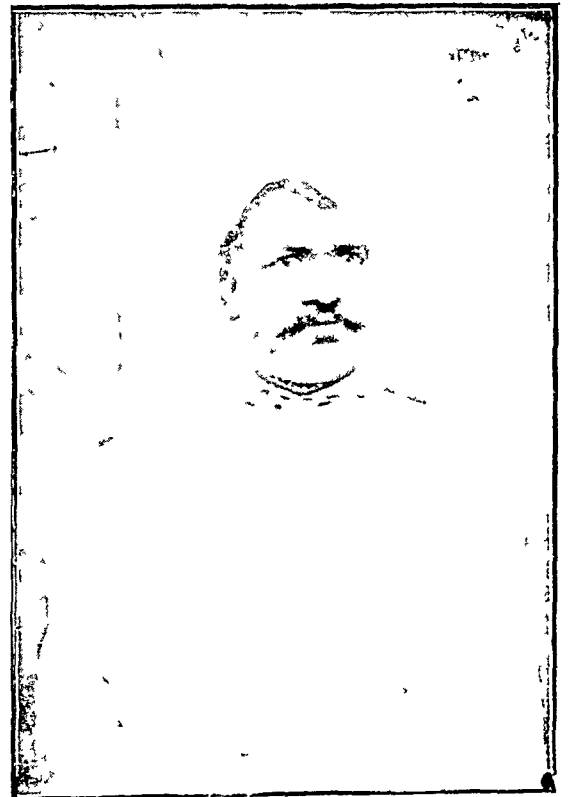
सेठ अनन्तलालजी बाहिती (जसरूप बैजनाथ) खंडवा

श्री स्व० सेठ गोपीकिशनजी बाहिती, खण्डवा

श्री सेठ रणछोड़दासजी बाहिती, खण्डवा

श्री सेठ सुन्दरलालजी बाहिती, खण्डवा

श्री सेठ देवकिशनजी बाहिती, खण्डवा

श्रीनाथ काशीनाथके नामसे—खिड़किया

काशीनाथ चम्पालालके नामसे—नीमार खेड़ी

इसके अतिरिक्त खंडवेके अंतर्गत एक इलेक्ट्रिक पावर हाउस बना हुआ है। आपकी जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियोंका परिचय इस प्रकार है।

जीनिंग फेक्टरी—

(१) खंडवा (२) सनावद (३) वड़वाहा (४) इन्दौर (५) महत्पुररोड (६) हरदा (७) धार (८) धामनोद (९) कन्नोद (१०) खातेगांव (११) हरसूद (१२) खिड़किया और (१३) नीमाड़ खेड़ी

प्रेसिंग फेक्टरियां—

(१) खंडवा (२) सनावद (३) वड़वाहा (४) इन्दौर (५) महिदपुर (६) खिड़किया और (७) नीमाड़ खेड़ी

मेसर्स जयकिशन गोपीकिशन ※

इस फर्म के मालिक सेठ जसरूपजीके छोटे भाई सेठ हसरूपजीके वंशज हैं। संवत् १९५७ में सेठ जसरूपजी और हसरूपजीकी संतानें अलग२ हो गईं। और उस समयसे सेठ हसरूपजीके पुत्र सेठ हरकिशनजी एवं राधाकिशनजी,राधाकिशन जयकिशनके नामसे अपना स्वतन्त्र व्यवसाय करने लगे। सेठ हरकिशनके पुत्रोंमेंसे श्री जयकिशनजी एवं श्रीगोपीकिशनजीका देहावसान हो चुका है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ हरकिशनजीके तीसरे पुत्र सेठ रणछोड़दासजी, एवं सेठ राधाकिशनजीके पुत्र सेठ सुन्दरलालजी तथा स्वर्गीय सेठ गोपीकिशनजीके पुत्र देवकिशनजी बाहिती हैं। यह कुटुम्ब बीकानेरका निवासी है एवं वहां खंडवावाले बाहितीजीके नामसे प्रसिद्ध है। आपकी खंडवा नीमाड़ नीमावर आदि स्थानोंमें कई जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। इस फर्मका हेड ऑफीस खंडवा है।

खंडवा— मेसर्स राधाकिशन, जयकिशन, यहां आपकी जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है तथा बैंकिंग हुंडी चिट्ठी एवं कॉटनका बहुत बड़ा व्यापार होता है। नीमाड़ प्रांतमें यह फर्म रुईके व्यापारीयोंमें बहुत बड़ी मानी जाती है।

※आपकी दुकानोंका पूरा २ परिचय कई बार लिखनेपर भी हमें नहीं मिला इसलिये जितना हमें ज्ञात था उतना छापा जा रहा है। प्रकाशक

स्व० सेठ मुकुन्दरामजी (तनसुखदास मुकुन्दराम) खण्डवा

सेठ कन्हैयालालजी वांसल (नन्दराम बक्षीराम) खण्डवा

श्री० ताराचन्दजी वड़जात्या (तनसुखदास मुकुन्दराम) खण्डवा

श्री० मदनलालजी वांसल (नन्दराम बख्शीराम) खण्डवा

वर्तमानमें इस फर्मका संचालन सेठ मुकुन्दरामजीके पुत्र ताराचन्दजी बड़जात्या B. A. करते हैं। आपने नीमाड़ स्टोर्स लिमिटेडको जन्म दिया। तथा अपने नामसे ताराचन्द थियेटर हॉल नामक एक हॉल बनवाया। संवत् १९८०-८१ में श्री ताराचन्दजीको रुईके व्यापारमें वहुत अधिक नुकसान उठाना पड़ा। उस समय आपने अपनी ईमानदारी एवं सिद्धान्तोंकी रक्षामें किसी प्रकारका अन्तर नहीं आने दिया, एवं अपने लेनेकी ओर दृष्टि न रखकर देनेवालोंको पाई पाईका ऋण अदा किया। वर्तमानमें आप मॉरिस मेमोरियल लायब्रेरी खंडवाके ऑनरेरी सेक्रेटरी हैं। श्रीताराचन्दजी B, A, बड़े ही योग्य एवं सदाचारी नवयुवक हैं।

मेसर्स दीपासा पूनासा

इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ रामासा और सेठ रूपाचन्दसा हैं। आप पोरवाल वैश्य (दिगम्बर जैन) जातिके हैं। इस फर्मका मरचेंट जीनिङ्ग फेक्टरीमें हिस्सा है।

आपका व्यावसायिक परिचय इस प्रकार है।

(१) खंडवा—दीपासा पूनासा—इस दुकानपर आसामी लेनदेन, रुईकी आढ़तका व्यापार और घरू खेती बारीका काम होता है।

(२) खंडवा– दीपासा पूनासा बम्बई बाजार—यहाँ किरानेका व्यापार होता है।

मेसर्स नंदराम बख्शीराम

इस दुकानके मालिक ७५ वर्ष पूर्व आकोदा (मारवाड) से यहाँ आये थे। इस फर्मको इस नामसे खुले ३५ वर्ष हुए हैं। इस दुकानका काम पहिले बहुत बहुत छोटे रूपमें था। इसके व्यापारको सेठ बख्शीरामजीने तरक्की दी। आपका देहावसान संवत् १९८१ में हो गया है। सेठ बख्शीरामजीके भाइयोंमेंसे सेठ कन्हैयालालजीको छोड़कर शेष २ भाई मोतीलालजी और गिरधारी लालजीका देहावसान हो गया है। इस समय इस फर्मके मालिक बख्शीरामजीके पुत्र कालूरामजी नाथूरामजी तथा मुरलीधरजी। तथा कन्हैयालालजीके ४ पुत्र, मोतीलालजीके १ पुत्र और गिरधारी लालजीके १ पुत्र हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) खंडवा—नंदराम बख्शीराम—यहाँ सराफी लेन देन आढ़त तथा रुईका व्यापार होता है।

(२) नीमारखेड़ी (नीमाड़) बख्शीराम गिरधारीलाल—यहां आपकी एक जीनिंग फेक्टरी है, तथा रुई और आढ़तका व्यापार होता है।

(३) बीड (खंडवा) नंदराम बख्शीराम—आढ़त व रुईका व्यापार तथा लेनदेनका काम होता है।

सेठ बूचामल रामबख्श

इस दुकानके स्थापक सेठ बूचामलजी ३५ वर्ष पूर्व हाथरस (यू० पी०) से बहुत ही मामूली हालतमें व्यवसायकी तलाशमें यहां आये थे। आरंभमें आपने यहां एक मिठाईकी दुकानमें साझेसे काम किया। कुछ समय बाद खंडवा स्टेशनपर मिठाईके स्टॉलका कंट्राक्ट ले लिया। यहां आपका कार्य्य जम गया। उस समय आपने अपने दोनों भाई श्रीरामबगसजी एवं ज्योतिप्रसादजीको यहां बुला लिया, और संगठनसे ज्योतिप्रसाद दौलतरामके नामसे काम करना आरंभ कर दिया। कुछ ही समय बाद यह दुकान, जी० आई० पी० रेलवे, बी० एन० आर०, ईस्ट इण्डिया रेलवे, बी० एल० आर और एन० जी० जी० आर० नामक रेलवे कम्पनियोंके मशहूर कंट्राक्टर हो गये। यहांतक कि इस लाइनकी यह फर्म सारे भारतमें पहिली गिनी जाने लगी। इस दुकानका उपरोक्त रेलवे लाइनोंकी सब बड़ी-बड़ी स्टेशनोंपर मिठाई स्टॉलका कंट्राक्ट है।

सन् १९१८ में सेठ बूचामलजी और १९२३ में सेठ ज्योतिप्रसादजीका देहावसान हो गया। वर्तमानमें सेठ बूचामलजीके पुत्र वल्लभदासजी इस दुकानके कारोबारका संचालन करते हैं। आपकी खंडवा दुकानपर कंट्राक्टके अतिरिक्त सराफी लेनदेन तथा रुईका व्यापार होता है। ईश्वरदासजी (ज्योतिप्रसादजीके पुत्र) ने खंडवेके पास पंधाना नामक स्थानपर श्रीवैङ्कटेश्वर प्रेसिंग फेक्टरीके नामसे एक कॉटन प्रेसकी स्थापना की है।

मेसर्स भागचन्द कैलाशचन्द्र

इस फर्मका हेड ऑफिस अजमेर हैं। इस फर्मके वर्तमान मालिक रायबहादुर सेठ टीकमचन्दजी एवं कुँवर भागचन्दजी सोनी हैं। आप सरावगी जातिके हैं। आपकी यहाँपर जीनिङ्ग और प्रेसिंग फेक्टरी है। तथा बेङ्किग हुंडी चिट्ठी रुईका बहुत बड़ा व्यापार होता है। आपका विशेष परिचय चित्रों सहित अजमेरमें दिया गया है।

रायसाहब चम्पालाल हीरालालजी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान खंडवा ही है। यह फर्म खंडवामें बहुत पुरानी है। पहिले यह बहुत छोटे रूपमें थी। इस समय इस फर्मके मालिक श्रीसेठ चम्पालालजी एवं उनके छोटे भ्राता सेठ हीरालालजी हैं। चम्पालालजीके ५ पुत्र हैं, जिनके नाम क्रमशः हुकुमचन्दजी प्रेमचन्दजी, सुखचन्दजी, फकीरचन्दजी एवं कर्मचन्दजी हैं। सेठ हीरालालजी के पुत्रोंका नाम मिलापचन्दजी एवं मूलचन्दजी हैं। इस समय सारे परिवारके लोग खण्डवा ही रहते हैं। इस फर्मकी ओरसे रावर्ट सन् गार्डन नामक एक बगीचा धर्मार्थ बना हुआ है। इसके सिवाय लेडी

राय साहब (हीरालालजी हीरालाल चम्पालाल) खण्डवा

सेठ रामासा (दीपासा पूनासा) खण्डवा

स्व० रामबगसजी अग्रवाल (बूचामल रामबगस) खण्डवा

से० कीकाभाई (अब्दुल हुसेन अब्दुल अली) खण्डवा

श्री० वल्लभदासजी अग्रवाल (बूचामल रामबगस) खण्डवा

से० अब्दुल लतीफ (हाजी इब्राहिम अब्बु) खण्डवा

हास्पिटलमें भी आपने ३०००) चन्दा दिया है। श्रीयुत चम्पालालजी करीब ३६ वर्षतक आनरेरी मजिस्ट्रेट भी रहे हैं। सन् १८९९ तथा १९०० (संवत् १९५६) के भयंकर दुष्कालके समय आपने गरीबोंको बहुत सहायता पहुंचाई। इसके लिये गव्हर्नमेन्टकी ओरसे आपको सार्टिफिकेट मिले हैं। फिलाहल आपकी दूकानें नीचे लिखे स्थानोंपर हैं।

(१) खंडवा—रायसाहब चम्पालाल हीरालाल—इस दूकानपर सराफी लेनदेन, कॉटन बिजिनेस तथा पार्टनर औफ फैक्टरीज़का काम होता है।

(२) खंडवा—यहाँ आढ़तका काम होता है।

(३) बड़वाहा—यहां आपकी एक जीनिङ्ग और एक प्रेसिङ्ग फेक्टरी है

(४) सनावद „ „ „ „

(५) धरगांव—यहाँ एक जनिंग फैक्टरी है।

(६) नांदरा— „ „ „

बोहरा तथा कच्छी व्यापारी

मेसर्स अब्दुलहुसैन अब्दुलअली

इस दूकानके मालिक खास निवासी बुरहानपुरके हैं। खण्डवेमें इस फर्मको आये करीब २५ वर्ष हुए। इस दूकानको सेठ कीका भाई और नजरअलीभाईने बहुत तरक्की दी। इस समय इस दूकानके मालिक आप दोनों सज्जन हैं। आपकी दूकानें नीचे लिखे स्थानोंपर हैं।

(१) खण्डवा—मेसर्स अब्दुलहुसैन अब्दुलअली T.A. mohamadi—इस फर्मकी यहांपर एक जीनिङ्ग और एक प्रेसिंग फैक्टरी है। इसके अतिरिक्त यहांपर रुईका व्यापार तथा कमीशन एजंसीका काम होता है।

(२) भामगढ़ [खण्डवा] अब्दुलहुसैन अब्दुलअली—यहांपर इस फर्मकी एक जीनिङ्ग फैक्टरी है। तथा कॉटन कमीशन एजेन्सी, काश्तकारी और मालगुजारीका काम होता है। यह सबसे पुरानी दुकान है।

(३) सिंगोट [खण्डवा] अब्दुलहुसेन अब्दुलअली—यहांपर भी इस फर्मकी एक जीनिङ्ग फेक्टरी है। तथा भामगढकी तरह सब काम होता है।

मेसर्स हाजी इब्राहिम अब्बू

इस फर्मकी स्थापना सेठ हाजी इब्राहिम अब्बूने ७० वर्ष पूर्वकी थी। आप कोटड़ा-सांगाणी (काठियावाड़) के निवासी थे। पहिले यह दुकान बहुत छोटे रूपमें काम करती थी। खंडवे में ही इसके व्यापारको तरक्की मिली। हाजी इब्राहिम अब्बूके तीन पुत्रोंमेंसे सेठ महम्मद भाई तथा अहमद भाई अपनी अलग २ तिजारत करते हैं तीसरे युसूफ भाईका देहावसान हो गया है।

वर्तमानमें इस दुकानके मालिक सेठ महम्मद भाईके पुत्र (१) सेठ हाजी हवीव, (२) सेठ कामस भाई और (३) सेठ अब्दुल लतीफ हैं। सेठ हाजी हवीवभाई खरगोन दूकानपर रहते हैं।

आपकी नीचे लिखे जगहोंपर दुकानें हैं।

(१) खंडवा—हाजी इब्राहिम अब्बू—T. A. Patel यहां सराफी लेन देन, रूईका व्यापार तथा आढ़तका काम होता है।

(२) खरगोन—हाजीहबीव महम्मद—यहां आपकी २ कॉटन जीनिंग और १ प्रेसिंग फेक्टरी है। इसके अलावा लेन देन, रुईका व्यापार, आढत और कुछ घरू काश्तका काम होता है।

सेठ यूसुफ अली गनीभाई

यह दुकान खास खंडवेकी ही है, इसके वर्तमान मालिक सेठ कमरुद्दीनजी सेठ महम्मद अली सेठ अकबर अली तथा इनके और भाई हैं। इस दुकानके व्यापारको सेठ यूसुफ अलीजीने विशेष तरक्की दी।

वर्तमानमें इस दुकानका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) खंडवा—मेसर्स यूसुफ अली गनी भाई—यहां इस दुकानकी (१) सैफी जीनिंग फेक्टरी तथा (२) दारू गोदाम जीनिंग फेक्टरी नामक दो जीनिंग और वदरु काटन प्रेस नामक एक कॉटन प्रेस फेक्टरी है। आपकी यहां खंडवा आइस फेक्टरी भी है। इसके अलावा आपकी दूकानपर रूईका व्यापार आढ़त, हार्डवेअर, आयर्न मरचेंट आदिका भी व्यापार होता है।

(२) इन्दौर—यूसुफ अली गनीभाई एण्डसन्स, सियागंज—यहांपर स्टेंडर्ड आइल कम्पनीके केरोसिन आइलकी एजंसी है।

(३) बड़वाहा (होल्कर स्टेट) यूसुफ अली गनी भाई एण्ड सन्स—यहां वर्मा आइल कम्पनी की एजन्सी है।

गवालियर

GWALIOR

ग्वालियर

ग्वालियरका ऐतिहासिक परिचय

ग्वालियर भारतके प्राचीन स्थानोंमेंसे एक है। इसका इतिहास बहुत पुराना है। समयकी गति विधिके अनुसार इसके इतिहासमें भी कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। कई राज्य यहां बने और बिगड़ गये, कई सिंहासन इस भूमिपर जमें और अन्तमें उखड़ गये। प्राचीन शिलालेखों, ताम्रपत्रों एवम् दूसरी ऐतिहासिक सामग्रियोंसे विदित होता है कि यह स्थान पहले चौथी और छठवीं शताब्दी-के बीच गुप्त वंशके अधिकारमें रहा। ग्वालियर राज्यके बहुतसे पुराने मन्दिरोंका अन्वेषण करनेसे पता चलता है कि ये मन्दिर आठवीं और चौदहवीं शताब्दीके बीचके बने हुए हैं। सोलहवीं शताब्दीमें यहांके इतिहाससे मालूम होता है कि यहाँ मुसलमानोंका अधिकार रहा। सन् १८५७में गदरके समय ग्वालियरके किलेका बहुत महत्व रहा है। यहीं तांतिया टोपी और नानासाहबकी अन्तिम हार हुई थी।

वर्तमानमें यह किला महाराजा सेंधियाके अधिकारमें है। यहीं महाराजा सेंधियाकी राजधानी है। सेंधिया खान्दान भी अपने समयके इतिहासमें बहुत आगेवान रहा है। इसका संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जाता है।

सिन्धिया वंशका संक्षिप्त इतिहास

जिस प्रकार इन्दौरका इतिहास महाराजा मल्हारराव, देवी अहल्याबाई और महाराजा यशवंत रावके कारनामोंसे दैदीप्यमान हो रहा है उसी प्रकार इस वंशका इतिहास भी महाराजा महादजी सिंधिया, महाराणी बायजाबाई और महाराज माधवराव सिन्धियाके नामोंसे चमचमा रहा है।

महाराजा महादजी सिन्धियाका नाम इतिहासमें बहुत प्रसिद्ध है। देवी बायजाबाईका जीवन बड़ा धार्मिक और पवित्र रहा है। आपका नाम ग्वालियरके इतिहासमें अमर रूपसे अङ्कित है।

महाराजा माधवराव सिन्धियाका नाम वर्तमान राजा महाराजाओंमें बहुत अग्रगण्य है। आपने जबसे राज्य सूत्र अपने हाथमें लिया था, तभीसे आपका ध्यान एक मात्र प्रजाकी उन्नतिकी

ओर रहा था। आपने प्रजाके सुभीते और आरामके लिए बहुत ही अच्छी व्यवस्था की। आपने अपने राज्यमें कई कारखाने स्थापित करवाये। कईयोंके आप पेट्रन रहें। पोस्टल डिपार्टमेंटमें बहुत तरक्की की। टेलीफोन, बेतारके तार आदि भी आपने लगवाये।

प्रजाके लिए आपने कई डिस्पेंसरीज़ नई स्थापित कीं। किसानोंके लिए आबपाशीकी बहुत सुन्दर व्यवस्था की। कई तालाव और कुए इसीलिए बनाए गये। आपने उनके लिए कृषिमें आनेवाले कई यंत्र मंगवाए। इन यन्त्रों द्वारा खेतीके कार्यमें बड़ी सहायता मिलती हैं। सहायता ही नहीं कार्यमें भी बहुत कम समय लगता है। इन यन्त्रोंको स्टेट किसानोंको बहुत सुभीतेके साथ सप्लाय करती है। इन उपायोंसे ग्वालियर स्टेट की कृषिमें भी बहुत उन्नति हुई है। स्टेटमें कापरेटिव्हबैंक, पंचायत बोर्ड आदिकी भी सुन्दर व्यवस्था है।

ग्वालियरके दर्शनीय स्थान

किला, पुरातत्व सम्बन्धी-म्यूजियम (किला), व्यापारिक शोरुम, अजायबघर, सिन्धिया फेमिलीकी छतरियां, जयाजी चौक, जयविलास पैलेस, मोतीमहल, कम्पूकोठी, किङ्ग जार्जपार्क, थिएटरहाल, सिन्धिया रेस कोर्स, महम्मद गौसकी कबर आदि २ हैं।

व्यापारिक महत्व

यों तो गवालियर सेन्ट्रल इंडियाके मुख्य २ शहरोंमें गिने जानेके कारण व्यापारिक दृष्टिसे ठीक ही है, पर इन्दौर, उज्जैन आदि शहरोंके मुकाबलेमें कुछ भी नहीं है। हां, बसावट में यह शहर दूसरे शहरोंकी अपेक्षा चौड़ा सुन्दर और बहुत बड़ा है। यहांका व्यापार विशेषकर सरकारके हाथोंमें है। यहां जितनी भी मशीनरी—कारखाने हैं, उनमें विशेष कारखानोमें सरकारका प्रत्यक्ष एवम् अप्रत्यक्ष हाथ है। तीन शहर मिलकर एक मंडी कहलाती है। याने लश्कर, मुरार और गवालियर। इन तीनों शहरोंके बीचमें G. I. P. रेल्वेका स्टेशन है। तथा गवालियर लाईट रेल्वे इन तीनों शहरके पाससे होकर निकली है। मुरार-लश्कर और गवालियर इन तीनों शहरोंमें आपसमें तीन २ चार २ मिलका फासला है। मिले हुए इन तीनों शहरोंको लश्कर मंडी कहते हैं। यहां गल्लेका अच्छा व्यवसाय होता है। यहांसे हजारों मन गल्ला दिसावरोंमें जाता है। घीकी भी यह बहुत बड़ी मंडी है। इसके अलावा इस स्टेटमें और भी कई व्यापारिक मंडियां हैं तथा इस स्टेटके कई स्थानोंमें कई उपयोगी वस्तुएं पैदा होती हैं। उनमेंसे कुछका वर्णन नीचे किया जाता है।

खानिज-पदार्थ

लाल-पीली मिट्टी (गेरू)—इस स्टेटके मुरार-सिरिजमें यह मिट्टी होती है। यह मिट्टी बहुत अच्छी होती है। सन् १९२१-२२ में करीब ३०००० मन मिट्टी यहांसे बहुत कम खर्चेमें निकली थी।

अभ्रक—व्यापारिक-उपयोगका अभ्रक गंगापुरके पास होता है। यह अभ्रक बहुत अच्छा होता है। लेकिन कम तादाद में। फिर भी यदि इसको ठीक प्रकारसे निकाला जाय तो मुनाफा मिल सकता है। इसके अतिरिक्त कुछ घाटिया क्वालिटीका अभ्रक चिर-खेड़ाके पास बहुत होता है।

एल्युमिनियम—नरवर, ईसागढ़ और भेलसा नामक परगनोंमें एल्युमिनियम धातु विशेष रूपसे पायी जाती है।

हरी मिट्टी—मन्दसोर और भेलसा नामक परगनोंमें यह मिट्टी पायी जाती है। यह दवाइयोंके काममें आती है।

सिमिटके उपयोगकी वस्तु—पोर्टलैंड सिमिटके बनानेकी उपयोगी वस्तुएं विन्ध्याचलकी पर्वतश्रेणीमें जो शिवपुर G. L. R.के पास है, बहुत मिलती हैं। चूनेके पत्थर भी केलारसके पास वाले पर्वतमें पाये जाते हैं। इनका ठेका गवालियर सिमिंट कम्पनीको दिया गया है। इस कम्पनीने बनमोर नामक स्थानमें एक कारखाना बनाया है। इसके अतिरिक्त पोर्टलेंड सिम्टिके बनानेका कोरालीन नामक चूनेका पत्थर तथा विन्ध्याचल-चूना-पत्थर अमझरा और सलवास (नीचम) नामक स्थानोंमें मिलता है।

बिल्डिंग मटेरियल्स—इस रियासतमें मकानातके उपयोगमें आनेवाली सुन्दर वस्तुएं भी बहुत हैं। गवालियरके पास, भंडेर, भेलसाके पास, गवालियर और आंतरीके बीचमें पत्थरकी खानें हैं। इसके अतिरिक्त सबलगढ़से १२ मीलपर नागोद (केलारसके पास) और नीमचके पास बिसलवास नामक स्थानोंपर चूनेका पत्थर निकलता है।

इसके अतिरिक्त सोना, पन्ना, मेगनीज़, गंधक, लोहा और गंधक मिश्रित धातु, टीनस्टोन आदि कई वस्तुएं पैदा होती हैं। इसका विशेष वर्णन प्राप्त करनेके किये गवालियर स्टेटके मिनिज़ और जियालोजी डिपार्टमेंटकी ओरसे कुछ ट्रेक्ट छपे हैं—उनसे विदित हो सकता है।

जंगल-विभाग

यहांका जंगल भी बहुत उपयोगी है। इस जंगलमें बहुतसी वस्तुएं पैदा होती हैं; जसे चिरोंजी, गोंद, मोम, शहद आदि २। इसके अतिरिक्त यहांके कई झाड़ और फूल भी उपयोगी हैं। इनसे कई प्रकारकी वस्तुएं बनती हैं। रंग आदि भी इनसे बनता है। उनमेंसे कुछ झाड़ोंका संक्षिप्त वर्णन नीचे किया जाता है।

सालर—गवालियर स्टेटमें सालरका जंगल बहुत बड़ा है। सारी स्टेटमें करीब ६००, ८०० स्कायर माईलस तक इसका जंगल है। सिर्फ शिवपुर जिलेमें २८० मीलका एक जंगल है। इसके सिवाय ईसागढ़ और नरवर जिलेमें भी बहुतसे सालरके झाड़ हैं।

सालरके झाड़से माचीसकी काड़ियां बहुत अच्छी बनती हैं। इसके सिवाय दूसरे झाड़ों-की लकड़ीसे इसकी लकड़ी जलनेमें अच्छी होती है। इसकी स्टीम भी बहुत तेज होती है।

सालरके झाड़से एक प्रकारका गोंद निकलता है। इस गोंदसे तारपीनका तेल, रोला (Rosin) और गोंद बनता है। इसकी विशेष जांच करनेपर विदित हुआ है कि इसकी औसत नीचे लिखे अनुसार पड़ती है।

तारपीन	७.५७
रोला	५५.५
गोंद	३३·१

खैर—खैरके झाड़ भी गवालियर स्टेटके जंगलोंमें बहुतायतसे पाये जाते हैं। इन झाड़ोंसे कत्था बनाया जाता है। इसके कामका ठेका गायकवाड़ केमिकल कंपनी लि० को दिया गया है। यह कंपनी पोदीनेके फूल, रोशा आदि भी बनाती है। यहांका कत्था बहुत अच्छा और हमेशा बाजारोंमें मिलता है।

करधारी—ये झाड़ भी इस स्टेटके जंगलोंमें बहुत होते हैं। खासकर शिवपुरी और शिवपुर कलांके जंगलोंमें तो ये बहुत ही अधिक हैं। इस झाड़की लकड़ीका कोयला बनाया जाता है इसका कोयला बबूल आदिकी लकड़ीसे बहुत अच्छा होता है। यहांसे आगरा, देहली आदि स्थानोंपर कोयला जाता है। यहांसे ३, ४ लाख मन कोयला बाहर दिसावरोंमें जाता है।

हमलोग करधारी, खैर आदिकी लकड़ीका उपयोग सिर्फ कोयलेहीके बनानेमें करते हैं। बाकी उससे और उपयोगी निकलनेवाली वस्तुओंको खो देते हैं। इससे हमें इन चीजोंसे विशेष लाभ नहीं हो सकता। जर्मन आदि देश इनसे कई प्रकारकी उपयोगी वस्तुएं निकालते हैं। जर्मनी और ग्लासगोमें इन लकड़ियोंकी वस्तुओंका निम्न लिखित अनुभव प्राप्त हुआ हैं।

लकड़ीका नाम	जलभाग	कोयला	एक्टोटेड आफ लाईम	क्रुड उड स्प्रीटम	तारका तेल	तार
खैर	१३%	८२६	५६	१६.५	११.२	७४
सालर	२३%	६७०	३३	३०.०	१०·७	८७
करधारी	१४%	७५८	१०१	३२.५	१४.६	१३०

माचिसके कारखानेमें आने योग्य लकड़ी

हम ऊपर लिख चुके हैं कि सालरकी लकड़ी इस उपयोगमें बहुत अच्छी आती है। इसके अतिरिक्त और भी लकड़ी इसके काममें आती है। उसका वर्णन नीच किया जाता है।

सेमल—यह माचिसके कामकी बहुत अच्छी लकड़ी है।

गुरजन—यह हिन्दुस्थानी लकड़ियोंमें माचीसके काममें आनेवाली सबसे अच्छी लकड़ी है।

पापटी—यह लकड़ी काड़ियें एवं बक्सके भीतरी हिस्सेके बनानेके उपयोगमें आती है।

सेवान— „ „

पूला—यह लकड़ी भी काड़ियोंके बनानेमें आती है। पर इसे गहरे पानीमें डुबाकर रखना पड़ता है। फिर कुछ मुलायम होनेपर काममें आती है। तथा यह १० से १६ घंटेतक गरम पानीमें उबालनेपर भी काममें लायी जा सकती है। यह दूसरे नम्बरकी होती है।

चमरोर—काड़ियें तथा माचीसके बक्सका भीतरी हिस्सा इससे बनाया जाता है।

चिरोंजी—इस कार्यमें इसका साधारण उपयोग होता है।

लाख

गवालियर—स्टेटमें लाख पैदा करनेवाले झाड़ोंमेंसे मुख्य छोला, (पलास, खांखरा) बड़ और पीपल हैं। लाख खासकर ईसागढ़, नरवर और मालवा प्रून्टमें होती है। इन झाड़ोंके अतिरिक्त अरहरके झाड़से भी यह पैदा होती है। पर अरहरसे यह तबही तक निकलती है जब कि वह झाड़ काटा ही गया हो। हां किसी बड़े पत्तेवाले झाड़से छोटे पत्तेवालेकी अपेक्षा दूनी लाख भी मिल सकती है। इसकी बाहर देशोंमें बहुत काफी तादादमें खपत होती है।

रंगाईके काममें आनेवाली वस्तुएं

गवालियर स्टेटमें कई झाड़ ऐसे हैं, जिनमेंसे किसीके पत्ते किसीके फूल, किसीकी छाल, किसीके फल, किसीकी लकड़ी आदि रंगनेके काममें आते हैं। इन चीजोंको एक दूसरेमें मिलाकर उपयोगमें लेनेसे दूसरे प्रकारका रंग बन जाता है। इसी प्रकार और २ भी मिक्श्चर करके उपयोगमें लानेसे कई प्रकारका रंग तैयार हो सकता है। उन झाड़ोंके उपयोगी अंगको हम नीचे बतलाते हैं।

इंगलिश नाम	देशी नाम	उपयोगी अंग
Acacia arabica	बबूल	छाल और फूल
Acacia catechu	खैर	कत्था या लकड़ीका भीतरी हिस्सा
Anogeissus Latifolia	धोंकड़ी, धू	फूल और पत्ते
Bauhinia variegata	कचनार	छाल और फूल
Butea frondosa.	छोला, पलाश, खांखरा	फूल
Cassia fistula	अमलताश	"
Crateva religiosa	बरना	छाल
Mallotus philippinensis,	रोरी	फूल
Morinda tinctoria	आल	फूल
Nyctanthes arbortristis	स्पारी	फूल
Phyllanthus emblica	आंवला	फल
Vitex negundo	समलू; नेगड़	पत्ते
Wrightia tinctoria	दुधी	लकड़ी
Woodfordia floribunda.	धू	फूल
Zizyphus jujuba.	झारबर	जड़
Garuga pinnata.	गूझा	छाल
Adhatoda Vasica	अडूसा	पत्ते

तेल बनानेके उपयोगमें आनेवाली वस्तुएं

महुआकी गुली, चिरोंजी, कुरंज, कुसुम, आंवला, नीम और बेहरा खासकर तेल बनानेके उपयोगमें आते हैं ।ये सब प्रायः गवालियर-स्टेटके जंगलमें पैदा होते हैं। इसके अतिरिक्त सिर्फ अमझरा प्रान्तमें रोशा पैदा होता है। यह एक प्रकारका घास होता है। पर होता है बड़ा सुगंधित। इस रोशेका तेल इस प्रान्तमें बहुत बनता है तथा बाहर गांव भी जाता है। यह दो तरहका होता है। मोतिया और सोपिया। इस स्टेटमें खस भी पैदा होता है। महाराजा गवालियरकी स्कीम थी कि खस, रोशा, लेमन घास आदि सुगंधित वस्तुओंकी खेतीकी जाय और उनसे बढ़िया तेल इत्र इत्यादि केमिकल इंडस्ट्रीजके द्वारा निकाला जाय। इससे बहुत अधिक लाभ हो सकता है। इस प्रकारके सुगन्धित द्रव्य करीब १५० मन रोजाना मिल सकते हैं। यदि कोई धनिक सज्जन इस ओर ध्यान दे तो बहुत लाभ उठा सकता है।

रेशा—तार

कई झाड़ ऐसे हैं जिनका रेशा—तार निकलता है। यदि इन झाड़ोंको उपयोगमें लेकर तार निकाला जाय और उसको बाहरी बाजारोंमें बिक्रीके लिये भेजा जाय, तो बहुत लाभ हो सकता है। बाहरी बाजारोंमें इसकी अच्छी प्रतिष्ठा हो सकती है।

यह रेशा खासकर इस स्टेटमें धूधर, मरोड़फली जंगली भिण्डी, अकावां, छोला अंजन, पूता आदि २ झाड़ोंसे निकलता है।

धूधर, जङ्गली भिण्डी इनका रेशा बहुत अच्छा होता है और इसकी दूसरे देशोंके बाजारोंमें अच्छी कीमत मिल सकती है। मरोड़ फलीके रेशेके लिये इम्पीरियल फारेस्ट इकानमिक्सने शिफारिस की है कि, इण्डस्ट्रीजके लिये इस झाड़का रेशा बहुत सुविधाजनक है। यह यहांके रिझव और दूसरे सब जङ्गलोंमें पायी जाती हैं। इसके अतिरिक्त यह बहुत आसानीसे दूसरे जंगलोंमें भी लगायी जा सकती है।

कागजके उपयोगमें आनेवाली मुलायम वस्तुएँ

नीचे लिखी हुई घास इस कार्यमें आ सकती है और ये गवालियर स्टेटके जङ्गलोंमें काफी तादादमें मिलती है।

भाबर, कांस, सेंठा या मूंज, गन्देर, और परवाई नामक घास इस काममें आती है। इसका अनुभव भी प्राप्त कर लिया गया है। इसके विषयमें एक पेम्फलेट भी छपा है। इसके अतिरिक्त कुछ झाड़ भी जैसी गमहर रेमझा आदि भी कागज़के काममें आते हैं। साथही छोलेके जवान झाड़ याने छोटे २ पौधे भी कोशिश करनेपर इस उपयोगमें आ सकते हैं। यदि कोई इसकी इंडस्ट्री गवालियरमें खोलना चाहे, तो खोल सकता है। उसे ये सब वस्तुएं मिल सकती हैं।

ऊपर लिखा जा चुका है कि भावरका झाड़ इसके उपयोगमें बहुत आता है। वास्तवमें यह बहुत उपयोगी और इस कामके लिये सबसे अच्छी वस्तु हैं। पर यह यहांके जङ्गलमें कम पायी जाती है। हां, चम्बल और उसकी शाखा कलू नदीके पास यह बहुत पायी जाती है। करीब १०० एकड़ जमीनमें इसीका साम्राज्य स्थापित है। भाबरहीकी तरह मोती भी एक प्रकारकी घास होती है। यह भी रानोद ब्लाकमें पायी जाती है। यह भी कागज़के उपयोगमें आ सकती है।
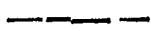
दवाईयोंके उपयोगी झाड़

यों तो गवालियर स्टेटके जङ्गलमें कई प्रकारकी दवाइयें पैदा होती हैं और मिलती भी हैं, पर उनमेंसे खासकर नीचे लिखी हुई दवाइयां बाहर जाती हैं।

अमलताश, दशमूल, शहद, मोम, पित्तपापड़ा, मूसलीसफेद, मूसलीशाह, गोंद, रतनजोत गज-पीपल, हारसिंगार, इन्द्रजो, बन्सीधारा, गुलमुंडी, गोरखमुंडी, कंकोलमिर्च, तेजपान, चितावर कुरंजका बीज आदि २।

गोंद

यहांके जङ्गलोंसे गोंद भी बहुत बड़ी तादादमें पैदा होता है। खासकर खैर और धोंकड़ीका गोंद बहुत मीठा और फायदेमन्द होता है। यही गोंद विशेषकर बाहर जाता है। यहांका गोंद बहुत मशहूर है। गोंदकी खास मण्डी शिवपुरी (गवालियर) स्टेट है।

इसके अतिरिक्त और भी वस्तुएं जैसे चिरोंजी, करेरी, टेन्ट, सांगर, सतावर तेंदू सराफा, बेर आदि भी बहुत होते हैं। यदि कोई सावधानीसे इन्हें प्राप्त कर भारतीय बाजारमें बेचनेका प्रबन्ध करे तो लाभ हो सकता है।

घासके लिये यहांका जंगल बहुत मशहूर है। यहां कोई विशेष खर्च भी नहीं होता है। यदि कोई यहांसे घासका एक्सपोर्ट शुरू करदे, तो हजारों रुपया कमा सकता है। यहां अभी भी स्टेटके तथा दूसरे कामके लिये बहुत बड़े प्रमाणमें ठेकेदारोंके द्वारा घास आता है। जिस किसी आदमीको इसमें दिल चस्पी हो। वह यह व्यापार करना चाहे तो उसे बहुत काफी तादादमें घास मिल सकती है। इस स्टेटमें करीब २६ प्रकारकी घास पैदा होती है। जो भिन्न २ कामोंमें उपयोगी होती है।

फेक्ट्रीज एन्ड इण्डस्ट्रीज

सेंट्रलजेल लश्कर—यह गवालियर स्टेटका सबसे बड़ा कारागार है। इसकी बहुतसी शाखाएं हैं। उनमें भिन्न २ स्थानोंपर भिन्न २ वस्तुएं बनती हैं, जैसे गलीचे दरियां आदि २। इसके अतिरिक्त फर्नीचर, मोटर और दूसरी गाड़ियोंकी रंगाई, गाड़ियोंकी बनवाई, सिलाई केन वर्क्स, बैंतका काम आदि २ भी होता है।

कार्पेट फेक्टरी---यह ऊन व सूतके दोनों प्रकारके गलीचे सुन्दर और अद्वितीय बनाती है। ये यहांसे यूरोप और अमेरिकाको भेजे जाते हैं। नमूना देखकर उनके मुताबिक भी बनाये जा सकते हैं। दरबारहाल, ड्राइंगरूम आदिके लिये बड़े २ गलीचे दरियां और चटाईयां भी यहां बनाई जाती हैं। इस फेक्टरीमें कम्बल भी बहुत अच्छे बनते हैं।

इसके अतिरिक्त यहांकी जेलोंमें खादी, खादी, दोसूती, कमीजका कपड़ा, चद्दरें, टर्किश सिल्क भी टाविल्स झाड़न और ब्लाकेंट भी कई प्रकारके बनते हैं। रंगीन सूत तथा यहांसे प्राप्त हो सकता है।

स्थानीय कल-कारखाने

(१) दी जयाजीराव कॉटन मिल्स लि०गवालियर—यह मिल बिड़ला ब्रदर्सका बनाया हुआ है। इसमें धोतीजोड़ा छींट,लट्ठा,साटन रंगीन कपड़े आदि सबचीजे बनती हैं। स्टेटमें इसी मिलका या उज्जैनके मिलोंका कपड़ा बिकता है। इस मिलका कपड़ा सुन्दर और टिकाऊ होता है।

(२) गवालियर इंजिनियरिंग वर्क्स कम्पू लश्कर—यह सरकारी कारखाना है। इसमें सब प्रकारकी अपटूडेट मशीनरी तैय्यार होती है। यहीं गवालियर लाईट रेलवेका कारखाना है। उसके डिब्बे आदि यहीं बनते हैं। मोटर आदिकी मशीनरीकी मरम्मत भी यहांपर होती है।

(३) गवालियर लेदर फेक्ट्री मुरार-गवालियर—यहां चमड़ेके सब प्रकारके सामान जैसे बेगूज, बूट जूते, टेण्टका काम आदि २ बनते हैं। यहां जितना भी चमड़ा उपयोगमें आता है। करीब २ सब यहां ही तैयार किया जाता है। यहांकी बनी हुई वस्तुएं बाजारमें अपना खास स्थान रखती हैं।

(४) आलिजा दरबार प्रेस लश्कर—यह प्रेस सरकारी है। सेन्ट्रल इण्डियामें यह सबसे बड़ा प्रेस है। यहां प्रिटिंग, ब्लॉक प्रिटिंग, लिथो प्रिटिंग बाईडिण्ग आदिका काम होता है। यहां एक टाईप फाऊंडरी भी है।

(५) गवालियर निब फैक्टरी स्टेशनरोड लश्कर—यहां सब प्रकारकी बढ़ियां पत्तिये बनती हैं।

(६) गवालियर सोप फेक्टरी माधवगंज लश्कर—इस फेक्ट्रीमें सब प्रकारके सुगन्धित तथा कपड़े धोनेके साबन बनाये जाते हैं। यहां बूट पालिश भी तैय्यार होता है।

(७) गोटा फेक्टरी सराफा लश्कर—यहां सब प्रकारका सुनेरी तथा रुपेरी गोटा बनता है। लेस, कलाबत्तू फीते आदि भी यहां बनते हैं। यहांका गोटा बहुत मशहूर है।

(८) मोटर वर्क्स लश्कर—यहां सब प्रकारकी मोटरकी मरम्मतकी जाती है तथा उनपर रंगाई आदिका काम भी होता है।

(९) पत्थर फेक्टरी गवालियर—यहां सब प्रकारके पत्थर तैयार मिलते हैं। जैसे खम्बे,दरवाजे पाट फर्शी आदि २। यदि कोई आर्डर दें तो जैसा व्यापारी चाहे वैसा माल यहां बन सकता है।

(१०) गलीचा फैक्टरी लश्कर—यहां रग,गलीचे, चटाइयां,दरियां आदि २ बहुत सुन्दर और अच्छे बनते हैं। यहांका माल यूरोप अमेरिका आदि देशोंमें जाता है। यह माल मजबूत भी होता है।

(११) केमिकल वर्क्स मुरार, गवालियर—यहां रसायन सम्बन्धी काम होता है। कत्था, तेल, सेंट, इत्र, इत्यादिका काम विशेष होता है।

(१२) इलेक्ट्रिक पावर हाऊस ग्वालियर—यहांसे गवालियर मुरार और लश्कर तीनों जगह विजली सप्लाय होती है। तथा इसकी पावरसे स्थानीय बहुतसे कल कारखाने चलते हैं।

(१३) दी सिविल एण्ड मिलिटरी स्टोअर्स लिमिटेड लश्कर—यह सरकारी संस्था है। यहां देशी एवं विदेशी सभी प्रकारका व्यापार होता है।

(१४) आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी फार्मसी लि० लश्कर—यहां आयुर्वेद एवम् हकीमी सब प्रकारकी रासायनिक एवं काष्टादि दवाइयें मिलती हैं।

इसके अतिरिक्त देशी हितकारी मौजा फेक्टरी, दी जार्ज जयाजी मेटल फेक्टरी लिमिटेड, ग्वालियर सिमिंट कंपनी लि०, पी० बी० प्रेस एण्ड कंपनी लि०, आईस फेक्टरी, फ्लोअर मिल्स सुगन्धित तैल फेक्टरी ग्वालियर उड एण्ड फर्निचर बर्क्स लि०, लाख फेक्टरी, कत्था फेक्टरी, रेशा फेक्टरी, आदि २ कई फेक्टरियां हैं।

जनताकी सुविधाके लिये सरकारने एक बैंक भी खोल रखा है। यहां कुल मिलाकर दो बैंक हैं।

(१) इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड लश्कर ब्रांच

(२) कृष्णराम बलदेव बैंक

यहां बम्बई, कलकत्ता आदि बड़े २ शहरोंकी तरह चेम्बर आफ कामर्स और बोर्ड साहुकारान भी स्थापित है।

यहां हरसाल एक मेला भी लगता है। यह मेला तारीख २० दिसम्बरसे शुरू होकर ता० १० जनवरी तक रहता है। इसमें पशु, कपड़ा, बर्तन आदि सभी वस्तुएं बिकनेके लिये आती हैं। तथा सरकारकी ओरसे कृषि विज्ञानकी उन्नतिके लिये एक खेती बाड़ी सम्बन्धी मशीनों तथा खाद्योंकी प्रदर्शिनी भी होती है।

इसके अतिरिक्त गवालियर स्टेशनके पास एक इंडस्ट्रियल म्यूजियम सरकारकी ओरसे बना हुआ है। वहां ग्वालियर स्टेटकी बनी हुई प्रायः सभी प्रकारकी वस्तुओंकी प्रदर्शिनी है। इस प्रकारकी प्रदर्शिनियोंसे व्यापारमें अच्छी सफलता मिलती है। इसी प्रकार उज्जैन आदि स्थानोंपर रेल्वे स्टेशनोंपर स्टाल्स बने हुए हैं जिनमें सिमिट, चीनी आदिके कामकी वस्तुएं रहती हैं। यह भी प्रचारके सुन्दर साधन हैं।

यहां आनेवाला माल

नाम			मूल्य		वजन
गेहूं	...	...	...	...	३९८३६ मन
चांवल	...	...	...	...	३९०६१ ”
गुड़	...	...	...	...	५१५२ ”
शक्कर	...	...	...	...	१४२७७८ ”
तेल मिट्टीका	...	...	२४८२४ पीपे	...	...
लोहेका सामान	...	...	३१७८१६)	...	...
यार्न	...	...	२३०६५६)	...	...
कपड़ा	...	...	२२६५९७३)	...	...
सिलकी कपड़ा	...	...	१९८५८०)	...	...
मेचिस	...	...	३६०००)	...	...
मोटर, साइकल्स	...	...	१३६८८६)	...	...
चमड़ेका सामान	...	...	१०७१३३)	...	...
बिड़ी-सिगरेट	...	...	१०५१८६)	...	...
तमाखू	...	...	...	...	४५३७ मन

जानेवाला माल

घी	...	...	...	५०६९१ मन
भेड़का चमड़ा	...	७०८४८)	...	
ऊन	...	...	...	१७४६ मन

उपरोक्त वर्णित मालका आमद रफ्त सन् १९२५में हुआ था। इसके अतिरिक्त और भी कई प्रकारका माल यहां आता तथा यहांसे जाता है। जैसे कत्था गोंद आदि।
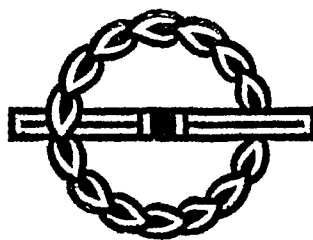
बैंकर्स

मेसर्स नन्दराम नारायणदास

इस फर्मके मालिक देहलीके निवासी हैं। आपको यहां आए करीब १०० वर्ष हुए होंगे। इस फर्मके स्थापक सेठ नन्दराम जी थे। सेठ नन्दरामजीके पांच पुत्र थे। इनमेंसे सेठ बालकिशनजी और सेठ पन्नालालजी ने इस फर्मकी बहुत उन्नति की। आप ठेकेदारीका काम करते थे। स्टेटमें जो बड़े २ मकान और तलाव नदी आदिके बन्धे हैं वे प्रायः आप हीकी ठेकेदारीमें बने हैं। आपका दान धर्मकी ओर भी अच्छा ध्यान था। आपने ग्वालियर स्टेशनपर एक बहुत ही सुन्दर श्रीकृष्ण-धर्मशाला बनवाई है। ग्वालियर दरबार इसे देखकर बहुत प्रसन्न हुए थे। उन्होंने इसीके नमूनेकी एक धर्मशाला उज्जैनमें बनवाई है जो सरव्याराजा धर्मशालाके नामसे प्रसिद्ध है। उपरोक्त श्रीकृष्ण धर्मशालाके बनवानेसे ग्वालियर दरबारने आपको उपकारकका खिताब प्रदान किया था।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ रामजीदासजी और सेठ काशीनाथजी हैं। रामजीदास जी सेठ पन्नालालजीके पुत्र हैं और काशीनाथ जी सेठ बालकिशनजीके पुत्र हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। श्रीयुत रामजीदासजी यहां स्टेटमें ऊंचे पदपर हैं। आपको कई उपाधियां हैं। एवम् यहां की कई सार्वजनिक और सरकारी संस्थाओंके आप मेम्बर हैं। श्रीयुत काशीनाथ जी फर्मके कार्यको संचालित करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

लश्कर—नन्दराम नारायणदास—यहां हुंडी चिट्ठी बैंकिङ्ग और ग्वालियर गवर्नमेण्टकी ठेकेदारीका काम होता हैं। तारका पता Lashakarwala

बम्बई—नन्दराम नारायणदास पायधुनी—यहां अलसी तिलहन, गल्ला आदिकी कमीशन एजंसीका काम होता हैं। तारका पता Lashakarwala

---

मेसर्स पनराज अनराज

इस फर्मके मालिक मूल निवासी नागोर (मारवाड़) के हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए बहुत वर्ष व्यतीत होगये हैं। इस फर्मके स्थापक सेठ पनराजजीके पिता सेठ हंसराजजी थे।

श्रीयुत रामजीदासजी वैश्य (नन्दराम नारायणदास) लश्कर

सेठ रिधराजजी (पनराज अनराज) लश्कर

सेठ फूलचन्दजी (गणेशीलाल फूलचन्द) लश्कर
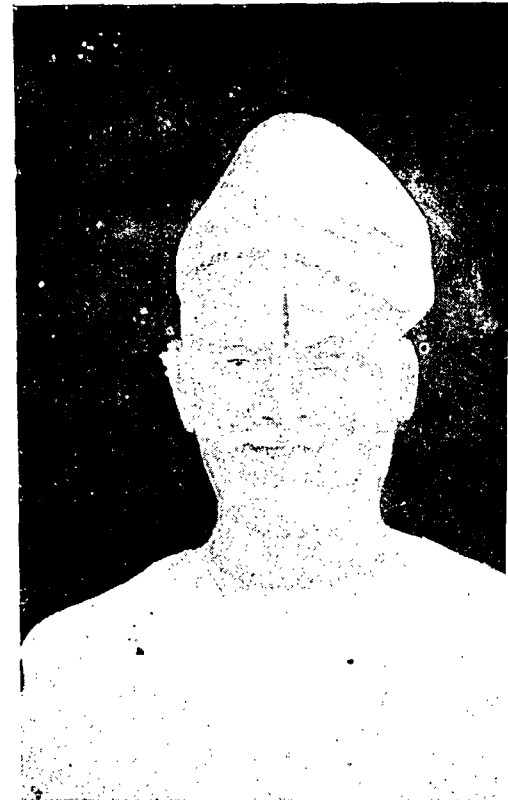
स्व० सेठ मूलचन्दजी (दाऊलाल मूलचन्द) ल

आपके पश्चात् इस फर्मका संचालन क्रमशः सेठ पनराजजी, सेठ अनराजजी, और सेठ रंगराजजीने किया। आप तीनोंने इस फर्मको तरक्की भी दी। आपके पश्चात् सेठ रिधराजजी हुए। वर्तमानमें आपही इस फर्मके मालिक हैं। आप एक समझदार व्यक्ति हैं। स्थानीय गवर्नमेंट एवम् पब्लिकमें आपका अच्छा सम्मान है। ग्वालियर गवर्नमेंटकी ओरसे आपको कईबार इनाम इकराम भी मिले हैं। आप यहांकी चेम्बर आफ कामर्स व बोर्ड साहुकारानके वॉईस प्रेसिडेण्ट हैं।

सेठ रिधराजजीके चार पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः सिद्धराजजी, सम्पतराजजी, सज्जनराज जी एवम् सूरजराजजी हैं। बड़े पुत्र दूकानके काममें भाग लेते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है

लश्कर—मेसर्स पनराज अनराज—यहाँ बैंकिंग हुंडी चिट्ठी तथा सरकारी काम होता है। जमींदारी का काम भी यहां होता है।

शिवपुरी—मेसर्स पनराज अनराज—यहां गल्लेका व्यापार तथा उसकी आढ़तका काम होता है।

इसके अतिरिक्त कोलारस,करेरा,पिछौर,सरदारपुर केण्ट मनावर, बामानेर आदि स्थानोंपर भी आपकी फर्म हैं। वहां सरकारी खजानेका काम होता है। आपकी जमींदारीके भी बहुतसे मौजे हैं।

मेसर्स बिनोदीराम बालचंद

इस फर्मके मालिक झालरापाटन निवासी जैन जातिके सज्जन हैं। आपका पूरा परिचय चित्रों सहित पाटनमें दिया गया है।

इस फर्मपर कपड़ेका थोक व्यापार तथा बैंकिंग बिजिनेस होता है। यहांपर इस फर्मकी एक सुन्दर कोठी माणिकविलासके नामसे स्टेशनके पास बनी हुई है। यह फर्म कोऑपरेटिव्ह सोसाइटीकी ट्रेझरर हैं।

मेसर्स मथुरादास जमनादास

इस फर्मके मालिक मूल निवासी मेडताके हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए बहुत वर्ष होगये। इस फर्मको सेठ मथुरादासजीने स्थापित किया था। उस समय आपकी साधारण स्थिति थी। आपने व्यापारमें अच्छी उन्नति की, और अपनी फर्मको बढ़ाया। आपके पश्चात् सेठ जमनादासजी और सेठ गोकुलदासजी हुए। आपने भी अपनी फर्मका कार्य सुचारु-रूपसे चलाया। वर्तमानमें सेठ बल्लभदासजी इस फर्मके मालिक हैं। आप शिक्षित एवं सज्जन पुरुष हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

लश्कर—मथुरादास जमनादास सराफा, इस फर्मपर बैंकिंग, हुंडी-चिट्ठी और जवाहिरातका व्यापार होता है। पक्की आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

क्लॉथ मरचेंट्स

मेसर्स गणेशीलाल फूलचंद

इस फर्मके वर्तमान सञ्चालक सेठ फूलचंदजी हैं। आप सरावगी जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान तूंगार (जयपुर राज्य) का है। आपके खानदानको यहां बसे करीब ८० वर्ष होगये होंगे। इस फर्मको सेठ गणेशीलालजीने स्थापित की। आपके हाथोंसे इसकी साधारण उन्नति हुई। सेठ गणेशीलालजी सेठ फूलचंदजीके पिता थे। सेठ फूलचन्दजीके हाथोंसे इस फर्मकी अच्छी तरक्की हुई।

सेठ फूलचंदजीका यहांकी सरकारमें अच्छा सम्मान है। दरबारने आपको कई सर्टिफिकेट एवं सोनेके मेडिलस दिये हैं। आप चेम्बर आफ़ कामर्स आदि संस्थाओंके मेम्बर हैं। आपके एक पुत्र हैं। जिनका नाम कुंवर बुद्धमलजी हैं। आप भी इस समय दुकानके कामका संचालन करते हैं। सेठ फूलचंदजीने अपने हाथोंकी कमाईसे लश्करमें एक बहुत सुन्दर धर्मशाला बनवाई है। इसमें सब प्रकारका आराम है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

लश्कर—गणेशीलाल फूलचंद, नयाबाजार—इस दुकानपर कपड़ेका थोक व्यापार होता है। यह दुकान यहांके कपड़ेके व्यवसायियोंमें बहुत बड़ी और प्रतिष्ठित समझी जाती है।

लश्कर—मूलचंद बुद्धमल,—इस फर्मपर जयाजीराव काटन मिलकी गवालियर प्रांतके लिये सोल एजंसी है।

लश्कर—बुद्धमल केसरीमल—यहां कपड़ेकी कमीशन एजंसीका काम होता है।

—०—

मेसर्स दाऊलाल मूलचंद

इस फर्मके मालिक डिडवानाके निवासी हैं। आप माहेश्वरी जातिके हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ८० वर्ष हुए होंगे। इसे सेठ रामप्रतापजीने स्थापित की। जिस समय यह फर्म स्थापित हुई थी, उस समय आपकी साधारण स्थिति थी। धीरे २ व्यापारमें उन्नति होती गई और आज

यह फर्म कपड़ेके अच्छे व्यवसायियोंमें गिनी जाने लगी है। सेठ रामप्रतापजीके पश्चात् सेठ दाऊलालजी और सेठ मूलचंदजीने इस फर्मका संचालन किया। आपके समयमें इस फर्मकी विशेष उन्नति हुई। दरबारमें आपका अच्छा सम्मान था। इस समय सेठ दाऊलालजीके पुत्र सेठ गोपालदासजी एवं सेठ मूलचन्दजीके पुत्र सेठ वंशीधरजी, सेठ गोवर्धनदासजी और सेठ लक्ष्मणदासजी इस फर्मके मालिक हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

लश्कर—दाऊलाल मूलचंद डीडवाना ओली—इस फर्मपर बनारसी, चंदेरी आदि देशी मालका व्यापार होता है।

लश्कर—रामप्रताप बालाबक्ष—इस नामसे आपके यहां हुंडी, चिट्ठीका काम होता है।

चन्देरी—गोपालदास वंशीधर—यहां चन्देरी मालका व्यापार होता है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

—:o:—

मक्खनलाल गिरवरलाल

इस फर्मके मालिक धौलपुर-स्टेटके निवासी हैं। आपको गवालियर स्टेटके मोरेना नामक स्थानमें आये करीब ४५ वर्ष हुए होंगे। वहांसे यहां आये करीब २० वर्ष हुए। इस फर्मको सेठ रघुवरदयालजीने स्थापित किया। श्री मक्खनलालजी आपके पिताजी होते थे। आप तीन भाई हैं, श्रीयुत गिरवरलालजी, श्री रघुवरदयालजी और श्री प्रभुदयालजी। श्रीयुत गिरवरलालजी मोरेना दुकान का सञ्चालन करते हैं। प्रभुदयालजी भी वहीं रहते हैं। और आप गवालियरकी दुकानका संचालन करते हैं। आपके दो पुत्र हैं—श्रीयुत रामस्वरूपजी और रामप्रसादजी। आप दोनों भी दुकानके कामको करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

लश्कर—मक्खनलाल गिरवरलाल, यहां कपड़ेका फुटकर तथा थोक दोनों प्रकारका व्यापार होता है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

मोरेना—मक्खनलाल गिरवरलाल—यहां बैंकिंग हुंडी चिट्ठी और कपड़ेका काम होता है।

करौली—मक्खनलाल गिरवरलाल—यहां कपड़ेका काम होता है।

भेलसा—मक्खनलाल प्यारेलाल—यहां गल्लेकी आढ़तका काम होता है।

जोरा-अलापुर (गवालियर) गिरवरलाल प्यारेलाल—यहां कपड़े तथा गल्लेका व्यापार होता है। आढ़तका काम भी यहां होता है।

मोरेना—गिरवरलाल रघुवरदयाल—यहां कपड़ा तथा सराफीका काम होता है।

मोरेना—प्रभुदयाल माताप्रसाद—यहां कपड़ेका काम होता है।

—:—

मेसर्स हीरालाल कन्हैयालाल

इस फ़र्मको स्थापित हुए करीब ९० वर्ष हुए होंगे। इसके स्थापक सेठ कजोड़ीमलजी थे। आपका मूल निवास स्थान किशनगढ़का था। यहां आकर आपने जवाहरातका व्यापार शुरू किया था। आपके कोई पुत्र न होनेसे हीरालालजी दत्तक आये। आपने यहां आकर कपड़ेका व्यवसाय शुरू किया। और अपनी फर्मका नाम बदलकर हीरालाल चुन्नीलाल रखा। आपने अपने व्यापारमें अच्छी उन्नति की। आपके पश्चात् सेठ कन्हैयालालजी हुए। वर्तमानमें आप ही इस फर्मके मालिक हैं। आपने अपने व्यवसायको अच्छा बढ़ाया। गवालियरमें आपने एक गोटा फेक्टरी खोली है। यह सेंट्रल इंडियामें सबसे बड़ी गोटा फ़ेक्टरी है। यहां सब प्रकारका माल तैयार होता है। आपने चंदेरीमें भी अपनी एक शाखा कायम की। गवालियर दरबारने आपको कई बार सोनेके मेड़िल्स प्रदान किये हैं। बम्बईकी एक्झिबिशनसे भी आपको सार्टिफिकेट मिले हैं। आप यहांकी टाउन इम्प्रूवमेंट कमेटी और चेम्बर आफ कामर्सके मेम्बर हैं। आपका माल सरकार एवम् सरदारोंमें जाता है। आपके श्रीयुत प्रकाशचन्द्रजी नामक एक पुत्र हैं।

आप इस समय व्यापारमें अपने पिताका हाथ बंटाते हैं। गोटा फेक्टरी आपहीकी देख-रेखमें चलती है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

लश्कर—हीरालाल कन्हैयालाल, सराफा—इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी तथा चन्देरी, बनारसी आदि देशी कपड़ेका व्यापार होता है।

लश्कर—कन्हैयालाल प्रकाशचन्द्र—इस नामसे आपकी एक गोटा फेक्टरी है। इसमें गोटा, लेस, कलाबत्तू, गोखरु, सलमा, पत्री आदि बनते हैं।

चन्देरी—हीरालाल कन्हैयालाल—यहां चन्देरीके कपड़ेकी आढ़तका काम होता है।

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स किशनचन्द रामबक्ष

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ मनोहरलालजी हैं। आप अग्रवाल जातिके हैं। आपके पूर्वजोंका मूल निवास स्थान नारनोल था। इसफर्मको करीब ६५ वर्ष पूर्व सेठ रामबक्षजीने स्थापित किया। आपके हाथोंसे इसकी उन्नति भी हुई। सेठ रामबक्षजीके पश्चात् इनके पुत्र सेठ वंशीधरजी हुए। आपके हाथोंसे भी इसकी अच्छी उन्नति हुई। वंशीधरजी सेठ मनोहरलालजीके पिता थे। सेठ मनोहरलालजी स्थानीय चेम्बर आफ़ कामर्स, बोर्ड साहुकारान आदिके मेम्बर हैं। और जातीय पंचायतके सेक्रेटरी हैं। आपकी फर्मकी ओरसे एक शिवजीका मन्दिर बना हुआ है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

लश्कर हे० आ०—मे० किशनचन्द रामवक्ष दौलतगंज—यहां बैंकिङ्ग हुंडी चिट्ठी तथा गल्लेकी थोक खरीदी बिक्रीका काम होता है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

लश्कर—मे० किशनचन्द रामवक्ष इन्द्रगंज—यहां गल्ले तथा शक्करकी कमीशन एजंसीका काम होता हैं।

शिवपुरकलाँ (गवालियर) मेसर्स रामवक्ष वन्सीधर—यहां भी शक्कर और गल्लेकी आढ़तका व्यापार होता है।

बीनागंज (गवालियर) मेसर्स रामचन्द्र रामवक्ष—यहां आसामी लेन देन, तथा गल्लेकी आढ़त और वरू दोनों प्रकारका व्यापार होता है।

बीनागञ्ज—मेसर्स फूलचन्द वंशीधर—यहां कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स देवाराम सुण्डामल

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ सुण्डारामजी हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान नारनोल (पंजाब) का है। इस फ़र्मको आपके पितामहने स्थापित किया था। आपके पितामह और पिताजी दोनों ही व्यक्तियोंके हाथोंसे इस फर्मकी अच्छी उन्नति हुई।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

लश्कर—मेसर्स देवाराम सुण्डाराम, इन्द्रगञ्ज—यहां गल्ला, किराना तथा आढ़तका काम होता है।

लश्कर—सुण्डामल गोरधनदास इन्द्रगञ्ज—यहां आपकी दाल फैक्टरी है।

लश्कर—मेसर्स देवाराम सुण्डाराम इन्द्रगंज—यहां कच्ची आढ़त तथा घी और गल्लेका काम होता है।

मेसर्स बिहारीलाल जमनादास

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ नत्थूलालजी, गौरी सहायजी, महादेवप्रसादजी, सूरजमलजी एवं रामकरणजी हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ६० वर्ष हुए होंगे। इस फर्मके संस्थापक सेठ जमनादासजी थे। आपने इस फर्मकी बहुत उन्नति की थी।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

लश्कर—बिहारीलाल जमनालाल इन्द्रगंज—यहां गल्ला तथा घीका घरू और आढ़त दोनोंका व्यापार होता है।

मोरेना—बिहारीलाल जमनादास—यहां गल्ला और घीका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

डाबरा—(गवालियर) बिहारीलाल जमनालाल यहां भी गल्ला तथा घीका व्यापार होता है। आढ़तका काम भी इस फर्मपर होता है।

मेसर्स मित्रसेन रामचन्द्र

इस फर्मके मालिक नारनोलके निवासी हैं। आपको यहां आये करीब १२५ वर्ष हुए होंगे। आप अग्रवाल जातिके हैं। इस फर्मको सेठ चुन्नीलालजीने स्थापित किया। पहले यह फर्म मित्रसेन पोकरमलके नामसे व्यवसाय करती थी। इस फर्मके प्रथम पुरुष सेठ मित्रसेनजी महाराज सिंधियाके साथ लड़ाईमें भरती होकर नारनोलसे यहां आये थे।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ प्रहलाददासजी हैं। आपके पिता सेठ फूलचन्दजीने इस फर्मकी बहुत उन्नति की। आपने इसकी और भी स्थानोंपर ब्रांचेस खोलीं। सेठ प्रहलाददासजी बड़े मिलनसार सज्जन हैं। आपने गवालियर गवर्नमेन्टके साथ अच्छा ताल्लुक कर रखा है। सरकारने आपको गवालियर गिर्दका खजांची नियुक्त किया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

लश्कर हे० आ०—मे० मित्रसेन रामचन्द्र, दौलतगंज—यहां बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी तथा गल्लेका व्यापार होता है।

लश्कर—मेसर्स मित्रसेन रामचन्द्र, हुजुरातमंडी—यहां गल्ला और शक्करका घरू तथा आढ़त दोनोंका व्यापार होता है।

शिवपुरकलां (गवालियर) मित्रसेन रामचन्द्र—यहां गल्लेकी आढ़तका कार्य होता है।

भिंड (गवालियर) शिवप्रसाद रामजीवन—यहां गल्ला तथा घीकी आढ़तका व्यापार होता है। इसमें आपका साझा है। इस फर्मपर मुनीम ग्यारसीलालजी काम करते हैं।

मेसर्स लेखराज जमनादास

इस फर्मके मालिक गवालियरहीके रहनेवाले हैं। आप अग्रवाल जातिके हैं। लश्करमें आपकी फर्मको स्थापित हुए करीब ५० वर्ष हुए होंगे। इसके स्थापक सेठ लेखराजजी हैं। आपके पुत्र सेठ जमनादासजीने इस फर्मकी अच्छी उन्नति की। इसकी और स्थानोंमें भी शाखाएं खोलीं। आपके इस समय दो पुत्र हैं। सेठ सांवलदासजी और सेठ छोटेलालजी। आप दोनों ही वर्तमानमें इस फर्मके मालिक हैं। आप यहांकी म्युनिसिपेलिटी तथा चेम्बर आफ़ कामर्सके मेम्बर हैं।

श्री० सेठ मनोहरलालजी (किशनचंद रामवक्ष) लश्कर

श्री० सेठ प्रह्लाददासजी (मित्रसेन रामचंद्र) लश्कर

श्रीयुत रामप्रसादजी (मक्खनलाल गिरवरलाल) लश्कर
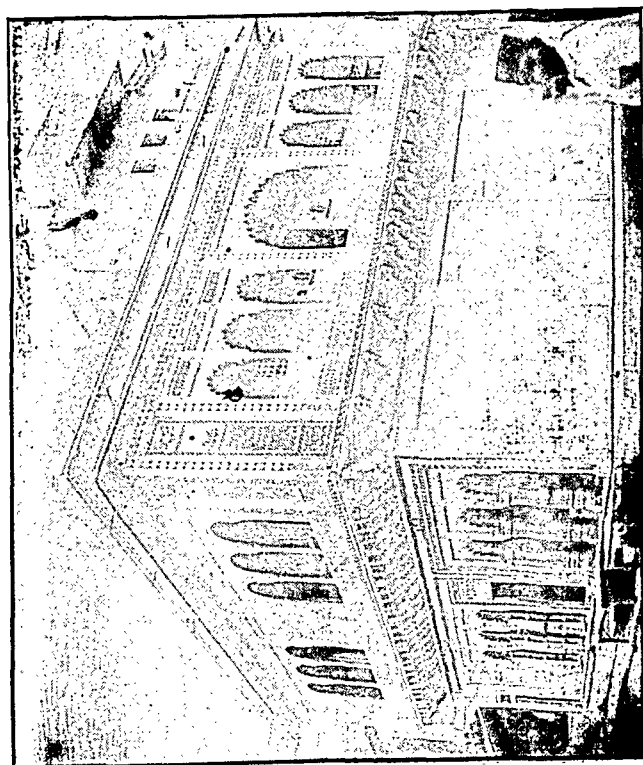
ऑफिस, मेसर्स मित्रसेन रामचन्द्र
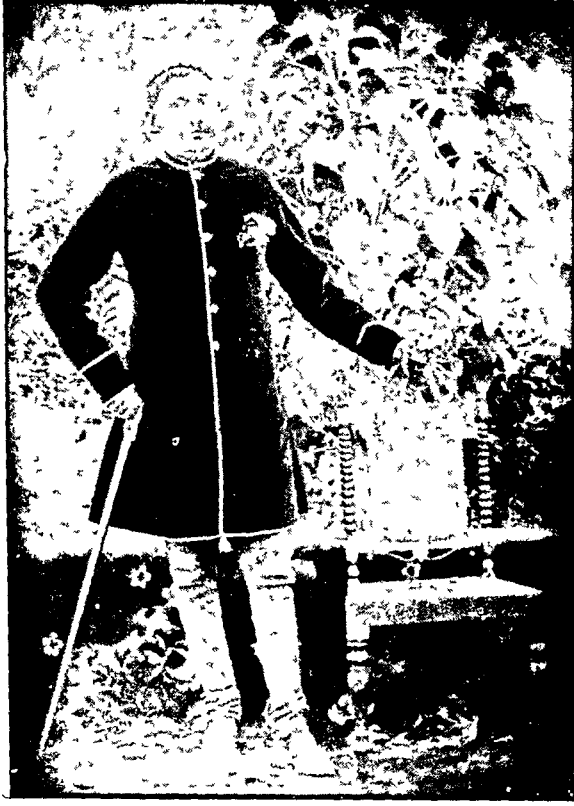
श्री गुलाबचन्दजी डोसो (रामलाल हजारीमल) मुरार

श्रीऔंकारलालजी (मोहनलाल शिवप्रताप) मुरार

श्री रामचन्द्रजी (रामदयाल रामचन्द्र) लश्कर

पं० रामचन्द्र लक्ष्मण देसाई (फोटोग्राफर) लश्कर

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

लश्कर—मेसर्स लेखराज जमनादास, इन्द्रगंज—इस फर्मपर शक्कर, गुड़, चांवल और गल्लेकी थोक खरीदी बिक्रीका काम होता है।

भिंड (गवालियर)—मेसर्स लेखराज जमनादास, यहां किरानेका तथा तिलहनकी खरीदी बिक्रीका काम होता है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

शिवपुरकलां (गवालियर)—मेसर्स लेखराज जमनादास, यहां भी तिलहनकी खरीदी और किराने का व्यापार होता है।

गवालियर—लेखराज जमनादास, यहां आसामी लेनदेन तथा सराफीका काम होता है।

मेसर्स रामदयाल रामचन्द्र पत्थरवाले

इस समय इस फर्मके मालिक सेठ रामचन्द्रजी हैं। आपका मूल निवास स्थान आगरेका है। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ४०, ४५ वर्ष हुए होंगे। इसके स्थापक सेठ रामदयालजी हैं। आपकी फर्मपर पहले पत्थरका बहुत बड़ा व्यापार होता था। कहा जाता है कि प्रायः सारे भारतवर्षमें गवालियरसे पत्थर सप्लाय होता है। पत्थरके लिये गवालियर बहुत मशहूर स्थान है। सेठ रामदयालजीने इस व्यवसायमें बहुत अच्छी सम्पत्ति पैदा की। आपके ६ पुत्र हैं, जिनमेंसे एक पुत्र अपना व्यवसाय अलाहदा करते हैं। शेष पांचों इसी फर्मके मालिक हैं। उन पांचोंमें सेठ रामचन्द्रजी भी हैं। आपके हाथोंसे इस फर्मकी अच्छी उन्नति हुई है। आप यहांकी कई संस्थाओंके मेम्बर हैं। सरकारमें भी आपका अच्छा सम्मान है। आपको गवालियर सरकारने सनद व पोशाक इनायत की है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

लश्कर—रामदयाल रामचन्द्र पत्थरवाले—इसफर्मपर सब प्रकारकी ठेकेदारी, सराफी और जमींदारीका काम होता है।

मेसर्स आर० एल० देसाई (फोटोग्राफर)

इस फर्मको स्थापित हुए करीब ३५ वर्ष हुए। इसके स्थापक श्री० रामचन्द्र लक्ष्मण देसाई हैं। आप दक्षिणी ब्राह्मण सज्जन हैं। शुरू२ में यहां सिर्फ फोटोग्राफीहीका काम होता था। सन् १९०८ तक आपने इस कार्यका संचालन किया। आपके विचार धार्मिकताकी ओर विशेष रूपसे झुके हुए थे। अतएव कहना न होगा कि आप संसारसे विरक्त हो गये। इस समय आप सारे भारत वर्षमें भ्रमण कर दिव्य उपदेश दे रहे हैं।

श्री० रामचन्द्र लक्ष्मण देसाईके संचालन छोड़नेके पश्चात् ही फोटोग्राफीके साथही साथ सन् १९०८ में ब्लाक बनानेका कारखाना एवम् सन् १७२३ में आर्ट प्रिंटिङ्ग प्रेसके नामसे एक प्रेस खोला गया। ये दोनों विभाग इस समयतक बराबर अपना कार्य कर रहे हैं। फोटोग्राफी और ब्लाकके विभागका संचालन श्री० माधव लक्ष्मण देसाई और प्रेस विभागका संचालन श्री नारायण लक्ष्मण देसाई कर रहे हैं। आप गवालियर दरबारके खास फोटोग्राफर हैं।

आपके कारखानेमें छपाई, ब्लाक बनवाई और फोटोग्राफ़ीका काम बहुत सुन्दर होता है। गवालियरमें इस व्यवसायमें यह फर्म सबसे बड़ी और सबसे पुरानी है।

बैंकर्स

उदयराम रामलाल
चिरञ्जीलाल रामरतन
छेदीलाल चतुरभुज
नरसिंहदास हरप्रसाद
नन्दराम नारायणदास
नारायणदास लक्ष्मणदास
पनराज अनराज
शाह बनारसीदास
विनोदीराम बालचंद
भूपतराम खाजूराम
मथुरादास जमनादास
मूलचन्द नेमीचन्द
रामसुख शालिगराम
रामरतन रामदेव
श्रीराम शुभकरण
सदासुख हीराचन्द
हरदत्त रामदत्त

चांदी सोनेके व्यापारी

कजोड़ीमल मूलचन्द
भीमराज महादेव
रामप्रसाद लालचन्द
रामचन्द्र फूलचन्द
सुगनचन्द कन्हैयालाल
सीताराम बलदेव
हीरालाल मोतीलाल
हजारीमल हुकुमचन्द
हमीरमल छगनमल

गल्लेके व्यापारी

किशनचन्द रामबक्ष
कन्हैयालाल हजारीलाल
गंगाराम शिवनाथ
गणेशराम हिम्मतराम
गोविन्दराम गणेशराम
गौरीमल रामचन्द्र
देवाराम सुण्डामल

बिहारीलाल जमनादास
माणिकचन्द तोताराम
मित्रसेन रामचन्द्र
यूसुफ मक्का
लेखराज जमनादास
हरनारायण हरबिलास
हाजीकासम रहमतुल्ला

कपड़ेके व्यापारी

खूबचन्द गंगाराम
गणेशीलाल फूलचंद
छिद्दीलाल रघुवरदयाल
देवकरण बलदेव
धन्नामल राजाराम
पन्नालाल जगन्नाथ
बद्रीदास रामप्रसाद
बिनोद मिल्स क्लाथ शाप
मोहनलाल नकसीराम
मक्खनलाल गिरवरलाल
रामगोपाल जानकीदास
रामबक्ष रामजीवन
लादूराम गियासीलाल
सिविल एण्ड मिलिटरी स्टोअर

चन्देरी मालके व्यापारी

हीरालाल कन्हैयालाल
दाऊलाल मूलचंद

घीके व्यापारी

जयनारायण इन्द्रजीत
दौलतराम कुन्दनमल

बालचंद प्रभुदयाल
बिहारीलाल जमनादास
भूरामल हरदास
मोतीराम रामचन्द्र

शक्कर व किरानेके व्यापारी

गोविन्दराम गणेशराम
चेतराम हरकरन
तोलाराम मानिकचंद
द्वारकादास गणेशराम
दीनानाथ ग्यारसीलाल
फकीरचन्द गणेशराम
मुरलीधर बिरदीचंद
रामचन्द्र फुन्दीलाल
लादूराम जगन्नाथ
लेखराज जमनादास
विक्रम नानकराम
शिवनारायण शंकरलाल
हरनारायण हरबिलास
हरसहायमल बहादुरमल

बर्तनोंके व्यापारी

गुलाबचंद द्वारकादास
दी गवालियर मेटल वर्क्स
गोर्धनदास राधाकिशन
चन्दनमल राधाकिशन
दी जार्ज जयाजीराव मेटल वर्क्स
मनीराम बद्रीदास
रामस्वरूप दाऊलाल
हीरालाल कस्तूरचन्द

जनरल मरचेंट्स

अल्लाबक्ष मूसाभाई
अलिमहमद करीमभाई
गप्पूलाल बाकलीवाल
गणेशराम सुखलाल
गुलाबचंद जैनी
श्रीगोपाल बछलाल
दिलसुखराय फूलचंद
दयाकिशन गणपतलाल
भगवानदास प्रभुदयाल
एम० बाहिद अली
युसुफअली अलिमहमद

अत्तार एण्ड ड्रगिस्ट

गुलाबचंद जैनी
गोरेलाल फूलचन्द
दीनदयाल राधाकिशन
पाप्युलर मेडिकल हाल
बद्रीप्रसाद श्यामलाल
श्रीलाल नारायणदास
एस० जी० रामानन्द
एस० एन० माथुर एण्ड को०
हरप्रसाद मदनमोहन

सूतके व्यापारी

तोताराम कन्हैयालाल
राधावल्लभ बद्रीनारायण
शिवनारायण रामचंद्र

फोटोग्राफर एण्ड आर्टिस्ट

आर० एल० देसाई, आर्ट प्रिंटिंग प्रेस

गोटेके व्यापारी

कन्हैयालाल प्रकाशचन्द
जवाहरमलजी सराफा
हीरालाल कन्हैयालाल

तिजोरी व ताले बनानेवाले

ग्वालियर इन्जिनियरिंग वर्क्स
ग्वालियर ट्रंक फेक्टरी   ताम्बेट ब्रदर्स

लोहेके व्यापारी

केसरीमल पहारी
गणपतलाल रामनाथ
गोपीलाल छोटेलाल
लालूमल कन्हैयालाल
लालूमल परमानन्द
हीरालाल मूलचन्द

स्टेशनरी मरचेंट्स

अमोलखचन्द जौहरी कागजी
बच्चूलाल कागजी
चिमनलाल फूलचन्द, कागजी

प्रिंटिंग प्रेस

अलिजा दरबार प्रेस,   देसाई आर्ट प्रेस

होटल और धर्मशालाएं

दी ग्रैंड होटल स्टेशनके पास
पार्क होटल "
श्रीकृष्ण धर्मशाला "
डफरिन सराय "
महावीर धर्मशाला चम्पाबाग
तमाखूवालेकी धर्मशाला माधोगंज

रतलाम, जावरा और महू-केम्प

RUTLAM, JAORA
&
MHOW CAMP

रतलाम

यह स्थान बी० बी० सी० आई० रेलवेकी छोटी और बड़ी लाइनका जंकशन है। यहां रेलवेका बहुत बड़ा लोको स्टाक है। रेलवे स्टाकके कारण एवं प्रतिदिन हजारों यात्रियोंके आमद रफ्तके कारण यह स्थान हमेशा बस्तीसे परिपूर्ण रहता है।

रतलाम स्टेशनसे करीब १॥ माइलकी दूरीपर रतलाम शहर है। इन्दौर, ग्वालियरकी तरह यह भी एक छोटा देशी राज्य है। इस राज्यकी नींव जोधपुर नरेश राठोड़वंशी राजा उदयसिंहजी (महाराजा) के पौत्र तथा महेश दासजीके पुत्र राजा रतनसिंहजीने डाली। कहते हैं कि इस शहरको राजा रतनसिंहजीने संवत् १७११में वसाया, परन्तु आईने अकबरीमें रतलामका नाम लिखा होनेसे प्रमाणित होता है, कि यह स्थान इसके भी पूर्व था। यह हो सकता है, कि महाराज रतनसिंहजीने इसकी विशेष तरक्की की हो। इस राज्यके वर्तमान अधिपति हिज हाईनेस महाराज सज्जनसिंह जी बहादुर जी० सी० एस० आई० हैं।आपको पोलो खेलनेका बहुत शौक है। योरोपीय महा-समरके समय आप दल बल सहित फ्रांसके रणक्षेत्रमें पधारे थे। इस राज्यको १५ तोपोंकी सलामी है।

फेक्ट्रीज़ एण्ड इण्डस्ट्रीज़

रतलामकी कारीगरी बहुत प्रसिद्ध है। यहांके तांबे और पीतलके बर्तन, लच्छे, रंगीन कपड़े आदि वस्तुएं विशेष उत्तम होती हैं। आसपासके शहरोंकी अपेक्षा यहां बर्तनोंका बहुत बड़ा व्यापार होता है। चांदी सोनेका व्यापार भी इस स्थानपर अच्छा होता है।
इस शहरमें नीचे लिखी कॉटन जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं।

रतलाम गुजरात जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी
वर्द्धमान केशरीमल जीनिंग फेक्टरी
श्रीसज्जन जीनिंग फेक्टरी
रामदेव बलदेव जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी
श्रीव्यापार उत्तेजक जीनिंग फेक्टरी

स्व० सेठ अमरचन्दजी पीतल्या रतलाम

सेठ वर्द्धमानजी पीतल्या (मे० बदीचन्द वर्द्धमान) रतलाम

श्री० चांदमलजी पीतल्या (मे०बदीचन्द बछराज) जावरा

श्री० नाथलालजी पीतल्या (मे०बदीचन्द सोभागमल)

रतलाममें सेठ वदीचंद वर्द्धमानके साझेमें एक लोहेका कारखाना 'दी जनरल इञ्जिनियरिंग एण्ड फाउंडरी' नामसे है।

मेसर्स वदीचंद वर्द्धमान

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान कुंभलगढ़ (मेवाड़) है। वहांसे यह खानदान ताल (जावरा-स्टेट) में आया। तालमें वीराजी सेठने संवत् १८००के पूर्व बहुत छोटे रूपमें दूकान की। सेठ बीराजीके बाद क्रमशः सेठ माणकचंदजी और वदीचंदजीने इस दूकानके कार्यको साम्हला। सेठ वदीचंदजीका जन्म संवत् १८७३ और देहावसान सम्वत् १९३५में हुआ। सेठ वदीचंदजी तालमें अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते थे। सेठ वदीचन्दजीके पश्चात् उनके ३ पुत्र सेठ अमर-चन्दजी, सेठ बच्छराजजी, और सेठ सोभागमलजीकी अलग २ तीन दूकानें कायम हो गईं। वर्तमानमें सेठ अमरचन्दजीकी दूकान वदीचन्द वर्द्धमानके नामसे (इसका पुराना नाम मानकचन्द अमरचन्द था) रतलाममें, बच्छराजजीकी दुकान वदीचन्द बच्छराजके नामसे जावरेमें, और सोभागमलजीकी दूकान वदीचन्द सोभागमलके नामसे तालमें व्यवसाय कर रही है।

रतलाममें यह दूकान सेठ अमरचंदजी पितलियाके द्वारा सम्वत् १९११में स्थापित की गई तथा इसके व्यवसायको विशेष तरक्की भी सेठ अमरचंदजीके ही हाथोंसे मिली। रतलाममें आपकी दूकान ताल वालोंके नामसे मशहूर है। इस कुलमें सेठ अमरचंदजी मशहूर व्यक्ति हो गये हैं। जनता और राजमें आपका अच्छा सम्मान था। रतलाम दरबारने आपको सेठकी पदवीसे सम्मानित किया था।

सेठ अमरचंदजी ओसवाल स्थानकवासी समाजमें बहुत प्रभावशाली पुरुष माने जाते थे। स्थानकवासी कान्फ्रेंसके स्थापन कालसे ही आप उसमें प्रधान भाग लेते रहे। आपहीके विशेष परिश्रमसे संवत् १९२४में रतलाममें स्थानकवासी कान्फ्रेंसका अधिवेशन हुआ था। आप उसमें जनरल सेक्रेटरी भी रहे थे।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ अमरचंदजीके पुत्र सेठ वर्द्धमानजी पितलिया हैं। आप भी बहुत उत्साहके साथ जातिसेवामें भाग लेते हैं। आप अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस-के जनरल सेक्रेटरी हैं। रतलामके जैन ट्रेनिंग कालेजके भी आप सेक्रेटरी थे। इन्दौरमें आपके भाई के साझेमें वर्द्धमान चांदमलके नामसे आपका तुकोगंजमें एक बंगला बना है। संवत् १९६६से ७८ तक आपकी एक दूकान अहमदाबादमें थी, वह उठा दी गई है।

वर्तमानमें आपकी व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) रतलाम—वदीचंद वर्द्धमान—यहां साहुकारी लेनदेन, हुंडी चिट्ठी तथा कमीशनका काम होता है।

(२) रतलाम—वर्द्धमान नथमल—इस फर्मके बने सोनेके दागीने बाजारमें बड़े प्रामाणिक माने जाते हैं
(३) इन्दौर—वर्द्धमान नथमल—यहां व्याज तथा हुंडी चिट्ठीका कारबार होता है।

वर्द्धमान नथमल नामकी दूकानोंमें आपके भाई तालवालोंका साझा है।

मेसर्स वदीचन्द सोभागमल

इस फर्मका पूर्व परिचय विस्तृत रूपसे सेठ वदीचन्द वर्द्धमान नामक फर्ममें दे दिया गया है। सेठ अमरचन्दजी पीतलियाके छोटे भाई सेठ सोभागमलजी पीतलियाकी दुकान यहां है। इस समय इस दुकानके मालिक सेठ सोभागमलजीके पुत्र श्रीनथमलजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

ताल—वदीचन्द सोभागमल—इस दुकानपर लेनदेन, हुंडी चिट्ठी रहन तथा रुई और कपासका व्यापार होता है।

रतलाम—सोभागमल नथमल—यहां व्याज तथा हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

इसके अतिरिक्त सेठ वदीचन्द वर्द्धमान और आपके साझेमें रतलाम और इन्दौरमें वर्द्धमान नथमलके नामसे दुकानें हैं। जिनका परिचय ऊपर दिया जा चुका है।

मेसर्स बीसाजी जवरचन्द

इस फर्मके मालिक बीसा पोरवाड़ जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं। यह दुकान यहां ५० वर्षोंसे स्थापित है। इस दुकानके व्यापारको सेठ प्यारचन्दजीने बहुत बढ़ाया तथा व्यापारमें उन्होंने अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की। वर्तमानमें इस दुकानके मालिक सेठ प्यारचन्दजीके पुत्र सेठ कन्हैयालालजी हैं।

इस दुकानपर आढ़त, हुण्डी चिट्ठी, रहन, साहुकारी लेनदेन तथा रुईका व्यापार होता है।

मेसर्स मुन्नालाल भागीरथदास एण्ड सन्स

इस फमके मालिक मूळ निवासी मालपुरा (जयपुर) के हैं। पहिले पहिल सेठ देवचन्दजीने उधरसे आकर मऊमें छोटे स्केलपर कपड़ेकी दुकान की। सेठ देवचन्दजीके चार पुत्रोंमेंसे सेठ मुन्नालालजीने रतलाममें इस दुकानकी स्थापना की। आपके बाद आपके पुत्र सेठ भागीरथजीने इस दुकानके व्यवसायको विशेष तरक्की दी। वर्तमानमें इस दुकानके मालिक सेठ भागीरथदासजी ही हैं। पहिले पहिल आप बम्बईमें सर सेठ हुकुमचन्दजी। रा० ब० सेठ कल्यानमलजी और गोकुलदास माधवदासकी दलालीका काम करते थे। आपकी ओरसे रतलालमें आपकी धर्मपत्नीके नामसे जड़ाव बाई कन्या पाठशाला चल रही है। जिसमें १०० कन्याएं पढ़ती हैं।

सेठ भागीरथदासजी (मन्नालाल भागीरथदास) रतलाम

सेठ छोटमलजी (मन्नालाल भागीरथदास) उज्जैन

कुंवर लक्ष्मीनारायणजी S/o सेठ भागीरथरामजी रतलाम

कुंवर तनसुखरायजी S/o सेठ भागीरथदासजी रतलाम

.ठ भागीरथजीके दो पुत्र हैं जिनके नाम श्रीलक्ष्मीनारायणजी एवं तनसुखरायजी हैं। दोनों वसायमें सहयोग लेते हैं।

आपकी फर्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

(१) रतलाम—मुन्नालाल भागीरथदास एण्ड सन्स, चांदनी चौक T. A. Jhalani—यहां रुई, आढ़त तथा हुंडी चिट्ठी और साहुकारी लेनदेनका काम होता है।

(२) बम्बई—मुन्नालाल भागीरथदास एण्ड सन्स, जोहरी बाजार T. A. Satsan—इस दुकानपर आढ़त, दलाली और हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

(३) बम्बई—लक्ष्मीनारायण तनसुखलाल मूलजी जेठा मारकीट T. A. Parbhamha—इस फर्मपर बम्बईके हिन्दुस्थान, सेंचुरी और डाइंग मिलकी एजंसी हैं। तथा इस दुकानपर कपड़ेका थोक व्यापार होता है। चरखा छापके लाल कपड़ेने विलायती कसूमके रंगके मालकी काम्पीटीशनमें अच्छी प्रतिष्ठा पाई है।

(४) बम्बई—भागीरथदास लक्ष्मीनारायण मारवाड़ी बाजार--यहां गल्लेका व्यापार होता है।

(५) उज्जैन—मुन्नालाल भागीरथदास—इस दुकानमें श्रीछोटमलजीका साझा है। इस दुकानक एवं इसकी तालुक दुकानोंका परिचय उज्जैनमें दिया गया है।

गल्लेके व्यापारी
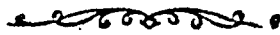
मेसर्स सीताराम गोधाजी

इस दुकानके मालिक नागोर (मारवाड़) के निवासी ओसवाल (राय गांधी) जातिके हैं इस दुकानके वर्तमान मालिक सेठ नेमीचन्दजी हैं। आपकी ६ पीढ़ी पूर्व सेठ हीराचन्दजी साधारण हालतमें सर्व प्रथम यहां आये थे। पश्चात् संवत् १९१४ में सेठ गोधाजीने इस दुकानकी स्थापनाकर व्यापारको तरक्की दी। सेठ गोधाजीके समयमें रतलाम स्टेटके बहुतसे गांव इस दुकानकी मनोतीमें (सरकारी मालगुजारीका भुगतान) रहे, जिससे इस दुकानकी तरक्कीमें विशेष मदद मिली सेठ गोधाजीका देहावसान सं० १९७९ में हुआ। इस दुकानका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

रतलाम—मेसर्स सीताराम गोधाजी धानमंडी—इस दुकान पर गल्लेकी आढ़तका बहुत अच्छा-- व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त इस दुकानपर हुंडी चिट्ठी तथा रुईकी आढ़तका भी व्यवसाय होता है।

सेठ नेमीचन्दजी स्थानकवासी जैनमतावलम्बी सज्जन हैं।

बैङ्कर्स और काटन मरचेंट्स

मेसर्स गनेशदास सोभागमल
,, जवरचन्द डूंगरसी
,, धनराज केशरीमल
,, पुरुषोत्तमदास हरीवल्लभ
,, फत्ताभाई खान
,, वदीचन्द वर्द्धमान
,, वर्द्धमान केशरीमल
,, बीसाजी जवरचन्द
,, मगनीराम भभूतसिंह
,, मुन्नालाल भागीरथदास
,, रूपचन्द रिखवदास
,, रामदेव नथमल
,, सोभागमल नथमल

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स करमचन्द भाईचन्द
,, गोपालजी फतहचन्द
,, जवरचन्द जोतीचन्द
,, रखवचन्द लक्ष्मीनारायण
,, रंगरेज़ गुलमहम्मद
,, सरूपचन्द नाथा

किरानेके व्यापारी

चतुर्भुज रूपचन्द चांदनी चौक
वीरचन्द कालूराम

गल्लेके व्यापारी

सीताराम गोधाजी धानमंडी
शिवनाथ गनेशी लाल ,,

तिजोरी बनानेवाले

परमानंद पूनमचंद

एजंसी

एस० जी० साकोटरीकर सिंगर कम्पनी एजंट, मानिक चौक
रुगनाथप्रसाद बालकिशनदास (केरोसिन आइल एजंट)

मिशनरी मरचेंट

मेसर्स ए० हुसेन एण्ड कम्पनी मानिक चौक

टोपीके व्यापारी

,, कपूरचन्द डूंगरसी माणकचौक
,, मूलचन्द चुन्नीलाल
,, दौलतराम मिश्रीमल मानिकचौक

जावरा

यह शहर आर० एम० आर लाइनपर रतलामके नजदीक है। इस स्थानपर मुसलमानी
राज्य है। यहांके अधिपति नवाव कहलाते हैं। इस स्टेटके आसपास रतलाम, ग्वालियर, इन्दौर
वांसबाड़ा उदयपुर तथा, प्रतापगढ़ आदि राज्य हैं। यहांकी पैदावारीमें कपास, जुवार, चना
गेहूं, जौ, मकई, दालकी किस्मके अनाज, तिलहन, गन्ना, और मिरची आदि हैं। विशेषकर यहां,
मिरचीकी पैदावार कसरतसे होती है। हजारों रुपयोंकी लालमिर्च प्रतिवर्ष यहांसे बाहर जाती
है। अधिक पैदावारीके समयमें १) से लगाकर २) मन तक मिर्चका भाव हो जाता है।
इस शहरमें कपासका व्यवसाय भी अच्छा होता है। इस स्थानपर निम्न लिखित जीनिङ्ग

क्टरियां हैं।

श्री वेङ्कटेश्वर स्टीम जीनिङ्ग प्रेसिङ्ग फेक्टरी

कालूराम गोविंदराम जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

गनेश जीनिंग फेक्टरी (लक्ष्मीनारायण बद्रीनारायण)

पुरुषोत्तम हरिवल्लभ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

सीताराम जीनिंग फेक्टरी

इस शहरकी सड़के गन्दी और सकड़ी है। म्युनिसिपैलेटीका प्रबन्ध यहां सन्तोष जनक
नहीं है। इस स्थानपर सालभरमें एक मासके लिये शहरसे बाहर मेला लगता है, उस जगह
शहरके व्यापारियोंको अपनी दुकानें लेही जाना पड़ती हैं। इस शहरके खास खास व्यवसाइयोंका
संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

बैंकर्स एण्ड काटन मरचैंट्स

मेसर्स कालूराम गोविंदराम

इस फर्मके मालिक सीकर (शेखावाटी) निवासी अग्रवाल जातिके हैं। इस दुकानको ६०
६२ वर्ष पहिले सेठ कालूरामजीने स्थापित किया। आरंभमें यह दुकान कपड़ेका व्यापार करती थी।
सेठ कालूरामजीका देहावसान संवत् १९६५ में हुआ।

वर्तमानमें इस दुकानके मालिक सेठ कालूरामजीके लड़के सेठ गोविंदरामजी हैं। आपने जावेरमें जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी स्थापित की हैं। आपके २ पुत्र हैं; जिनके नाम श्रीमदनलालजी तथा नंदलालजी हैं। इस दुकानका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) जावरा---मेसर्स कालूराम गोविंदराम—यहाँ आपकी एक जीनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी है। तथा हुंडी, चिट्ठी, रुई, कपास, और आढ़तका काम होता है।

(२) ताल—कालूराम गोविंदराम—यहां आपकी १ जीन फेक्टरी है। तथा रुई, कपास, गल्ला और हुंडी, चिट्ठीका काम होता है।

मेसर्स खेमराज श्रीकृष्णदास

इस फर्मके मालिक चूरू (बीकानेर) के निवासी अग्रवाल जातिके हैं। इस फर्मके व्यवसायका पूरा परिचय बम्बई विभागमें पृष्ट २१४ में दिया गया है। इस फर्मकी यहांपर श्रीवेंकटेश्वर स्टीम जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है। इसके अतिरिक्त रुई कपासका व्यापार और हुंडी चिट्ठीका काम होता है। यह दुकान जावरा स्टेटकी ट्रेझरर भी है।

मेसर्स गंगाराम केशरीमल

इस दुकानके मालिक १०० वर्ष पूर्व पुर (मांडल) उदयपुर स्टेटसे यहां आये थे। सर्व प्रथम सेठ मोतीजीने गीधाजी मोतीजीके नामसे व्यापार आरम्भ किया। पश्चात् क्रमशः रखबाजी और जवरचन्दजीके समयमें रखबाजी जवरचन्दके नामसे कामकाज होता रहा। सेठ जवरचन्दजीकी मौजूदगीमें ही उनके पुत्र केशरीमलजीने गङ्गाराम केशरीमलके नामसे यह दुकान खोली सेठ जवरचन्दजीका देहान्त संवत १९५४ में हुआ।

वर्तमानमें इस दुकानके मालिक सेठ केशरीमलजी हैं। आपके बड़े पुत्रकी भेरूलालजी समझदार एवं विद्याप्रेमी नवयुवक हैं। आप जैन धर्मावलम्बी ओसवाल जातिके सज्जन हैं। इस दुकानका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जावरा—मेसर्स गङ्गाराम केशरीमल—इस दुकानपर रुई, गल्ला, साहुकारी लेनदेन हुंडी चिट्ठी और आढ़तका काम होता हैं।

मेसर्स पूनमचन्द दीपचन्द

इस फर्मका विस्तृत परिचय कोटेमें दिया गया है। यह कोटावाले दीवान बहादुर सेठ केशरीसिंहजी की फर्म है। यहां हुंडी, चिट्ठी साहुकारी लेनदेनका काम होता है।

मेसर्स बद्रीचन्द बच्छराज

इस फर्मके मालिक आदि निवासी कुंभलगढ़ (मेवाड़) के हैं। इस फर्मकी स्थापना करीब संवत् १९२२ के आसपास जावरेमें हुई। इस फर्मके स्थापनकर्ता सेठ बच्छराजजी, सेठ अमरचंदजी पितलियाके सबसे छोटे पुत्र थे। आप जावरेके प्रतिष्ठित धनिकोंमें माने जाते थे। अफीमके व्यवसायमें आपने अच्छी सम्पति पैदा की थी। राज्यकी ओरसे भी आपको सम्मान प्राप्त था। सेठ बच्छराजजीके बाद इस दूकानके कार्यको उनके पुत्र सेठ चांदमलजीने सम्हाला। आपका देहावसान संवत् १९८३ में हो गया।

वर्तमानमें इस दुकानके मालिक सेठ चांदमलजीके पुत्र श्री बखतावरमलजी और सूरजमलजी हैं। आपकी दुकानका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जावरा-मेसर्स बद्रीचन्द बच्छराज—इस दुकानपर साहुकारी लेनदेन हुंडी, चिट्ठी, रहन तथा आढ़तका काम होता है।

मेसर्स लक्ष्मीनारायण बद्रीनारायण *

इस फर्मके मालिक अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ बद्रीनारायणजी हैं। आपकी जावरामें एक कॉटन जीनिंग फेक्टरी है। यह फर्म रूईका बहुत अच्छा व्यापार करती है। इसके अतिरिक्त हुंडी, चिट्ठी, तथा सराफी लेनदेनका काम भी होता है।

कमीशन एजेंट

मेसर्स भेराजी कालूराम नाहर

इस दुकानके वर्तमान मालिक श्री कालूरामजीके पूर्वज आदि निवासी जोधपुर स्टेटके हैं। पर अब आपका खानदान बहुत समयसे मालवेमें निवास करने लग गया है। करीब ८० वर्ष पहले सेठ नग्गाजीने इस दुकानका कारबार शुरू किया। इसके भी पहिले आप खाचरोदमें व्यापार करते थे। सेठ नग्गाजीके बाद भेराजी और उनके बाद श्रीकालूरामजीने इस दुकानके व्यापारको सम्हाला। श्री कालूरामजीको ओसवाल समाजकी उन्नतिकी अच्छी लगन है। समयकी गतिविधिके साथ आप उसमे भाग लेते रहते हैं। आपका व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

---

* श्री बद्रीनारायणजीने अपना परिचय बादमें भेजनेका हमसे वादा किया था, पर परिचय आया नहीं, इसलिये जितना हमें ज्ञात था, छापा जाता है। प्रकाशक

जावरा—भैराजी कालूराम नाहर—इस दुकानपर गल्ला मिरची और शीड्सकी आढ़तका काम होता है।

मेसर्स बालचन्द प्रेमचन्द

इस दुकानके वर्तमान मालिक श्रीप्रेमचन्दजी हैं। आप ओसवाल जातिके सहृदय नवयुवक हैं। आपकी दूकानपर देशी तथा विलायती सब प्रकारके कपड़ेका व्यवसाय होता है।

बैङ्कर्स एण्ड काटन मरचेंट्स

मेसर्स कालूराम गोविंदराम
„ खेमराज श्रीकृष्णदास (खजांची)
„ पूनमचन्द दीपचन्द
„ बदीचन्द बच्छराज
„ लक्ष्मीनारायण बद्रीनारायण
„ हरवखसदास नारायणदास

कमीशन एजण्ट

गंगाराम केशरीमल
गोविंदराम पूरनमल
दौलतराम रामलाल
रामनारायण वंशीधर
हरदेवदास रामेश्वरदास
अब्दुल हुसेन हफ्तुल्ला
ऊंकारमल छगनलाल
ईसुफअली अब्दुलहुसेन

चांदी सोनेके व्यापारी

हमीरजी नंदाजी
नाथूजी धनराज

चावल, शक्कर, किरानाके व्यापारी

नेमाजी सोभागमल
नन्दाजी मियाँचन्द
वदीचन्द कस्तूरमल
महम्मद हुसेन अब्दुल हुसेन
हेमराज केशरीमल

आइल एजंसी

स्टेंडर्ड आइल कं०---गंगाराम केशरीमल
वर्मा आइल कं०---औंकारलाल छगनलाल
एशियाटिक पेट्रोलियम कं०---रजबअली इस्माइलजी
इण्डो वरमा आइल कं०---दौलतराम रामलाल

कपड़ेके व्यापारी

आरबजी खमीसा (रंगीन कपड़ा)
चन्दाजी सुलेमान
तखतमल सोभागमल
नाथूजी हीराचन्द
पीराजी उसमान
बालचन्द प्रेमचन्द

गल्लेके व्यापारी

कालूराम भैराजी नाहर
कालूजी वलीमहम्मद
चन्दाजी सुलेमान
वीराजी उसमान

श्री० आसारामजी लालावत, मऊ

सेठ जवरचन्दजी शाह (मूलचन्द एण्ड सन्स) मऊ

सेठ बद्रीनारायणजी (लक्ष्मीनारायण बद्रीनारायण) जावरा

सेठ केशरीमलजी (गंगाराम केशरीमल) जावरा

मऊ-केम्प
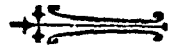
मऊ-केम्प बी० बी० सी० आईके आर० एम० आर० डिवीजन का बहुत बड़ा स्टेशन है। यह स्थान अंग्रेजोंकी छावनी है। यहांकी बस्ती बहुत साफ सुथरी एवं खुली हुई है। इस छावनीमें फेन्सी कपड़ेके व्यापारी, कंट्राक्टर्स, जनरल मरचेंट्स एवं अंग्रेजोंके उपयोगमें आनेवाले सामान रखनेवाले व्याबपारियोंकी हुतसी दुकानें हैं। यह शहर इन्दौरसे १४ मीलकी दूरीपर है। इन्दौर यहाँके लिये स्टेशनसे नियमित ट्रेनोके अतिरिक्त ६ लोकल ट्रेनें दौड़ती हैं। यहां कई डेरी फर्म्स हैं। इसलिये आसपासका दूध दही सब यहां खींचकर चला आता है। यह वृटिश छावनी चारों ओर होल्कर स्टेटसे घिरी हुई है। यहांके व्यवसायियोंका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

बैंकर्स

मेसर्स हरकिशन रामलाल

इस फर्मके मालिक डीडवाणा (जोधपुर) के निवासी माहेश्वरी (लालावत) जातिके हैं। इस दुकानको यहां आये करीब १०० वर्ष हुए। सर्व प्रथम सेठ हरकिशनजीने इस दुकानके कारोबारको शुरू किया था। आपके बाद क्रमशः सेठ रामलालजी, सेठ महाकिशनजी, सेठ हरसुखदासजी तथा सेठ आशारामजीने इस दुकानके कामको सम्हाला। वर्तमानमें इस दुकानके मालिक सेठ आशारामजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ मऊ--हरकिशन रामलाल--यहां आढ़त, हुंडी, चिट्ठी, कपड़ेका व्यापार और गवर्नमेंट कण्ट्राक्टर्सका काम होता है।

२ बम्बई---आशाराम लालवत कसाराचाल T. A. Frend यहां आढ़त और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

३ इन्दौर---हरसुखदास आशाराम, सियागंज T. A. Lalawat इस दुकानपर आढ़त तथा हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

क्लाथ मरचेण्ट्स

मेसर्स मूलचन्द एण्ड संस

इस फर्मके मालिक सेठ छोटूलालजी १०० वर्ष पूर्व टोंक राज्यसे यहां आये थे। आपके बाद सेठ मूलचन्दजीने इस फर्मके व्यापारको विशेष बढ़ाया। सेठ मूलचन्दजीके कोई संतान न होनेसे उनके यहां जवरचन्दजी, जयपुर स्टेटके जामडोजी नामक गांवसे संवत् १९३५ में गोद लाये गये। आप ही इस फर्मके वर्तमान संचालक हैं। श्रीजवरचंदजीके यहां गोद आनेके बाद इनके २ भाई और हुए थे जिनका देहावसान हो गया है। वर्तमानमें उन दोनों भाइयोंके पुत्र अपना स्वतंत्र व्यवसाय कर रहे हैं।

सेठ जवरचंदजीने कई देशी राज्योंसे अपना व्यवसायिक सम्बन्ध स्थापित किया है। इस समय राजपूताना, सेंट्रल इण्डिया, बुन्देल खण्ड, और बघेल खंडके कई रईसोंको आप बड़ी तादादमें कपड़ा सप्लाई करते हैं। आपकी ओरसे एक जैन चैत्यालय मऊ में बना हुआ है। आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

(१) महूकेम्प—मूलचन्द एण्ड सन्स, मेनस्ट्रीट—इस फर्मपर फेंसी कपड़ेका बहुत बड़ा व्यापार होता है, तथा साथमें टेलेरिंग डिपार्टमेंट भी है।

(२) मऊकेम्प—छोटूलाल मूलचन्द—मेनस्ट्रीट, यहां भी उपरोक्त व्यवसाय होता है।

कण्ट्राक्टर्स

मेसर्स मदनलाल शिवबख्श

इस फर्मके मालिक करीब १०० वर्ष पूर्व नागोर (मारवाड़) से आये थे। सेठ आसाराम-जीने इस दुकानके कारोबारको शुरू किया। आपके बाद क्रमशः लछमनदासजी, शिवबक्सजी और मदनलालजीने इस फर्मके कामको सम्हाला। वर्तमानमें सेठ शिवबख्शजीके पुत्र श्री मदन-

लालजी इस फर्मके सञ्चालक हैं। आपके बड़े भाई श्रीनाथूलालजी इन्दौर बैंकके डायरेक्टर हैं; तथा अपना स्वतन्त्र व्यवसाय करते हैं। सेठ मदनलालके छोटे भाई श्री रामकिशनजी इसी फ़र्मके साथ काम करते हैं।

इस समय आपकी दुकानोंका परिचय इस प्रकार है।

(१) मऊकेम्प—मदनलाल शिवबख्श एन्ड सन्स—इस फर्मपर वृटिश गवर्नमेंट तथा होल्कर स्टेटके कंण्ट्राक्ट लिये जाते हैं। इसके अतिरिक्त सराफी लेन देनका काम होता है।

(२) इन्दौर—मदनलाल शिवबख्श बड़ा सराफा—इस फर्मपर भी सराफी और कन्ट्राक्टका काम होता है।

बैंकर्स एन्ड ग्रेन मर्चेण्ट

गणेशराम भागचन्द सदर बाजार

महादेव शंकर

शिवदयाल रोशनलाल

हरसुखलाल आशाराम सदर बाजार

कन्ट्राक्टर्स

किशनलाल दीनदयाल एन्ड सन्स बैंकर

छज्जूलाल एण्ड सन्स बम्बई बाजार

मदनलाल शिवबख्श एण्ड सन्स भोईबाजार

शंकरलाल एन्ड संस बम्बई बाजार

क्लॉथ मरचेंट

किशनलाल तिवारी एण्ड सन्स (सिल्क मरचेंट)

मूलचंद एण्ड सन्स बम्बई बाजार

मनसुख नंदलाल बम्बई बाजार

मोतीलाल कँवरलाल बम्बई बाजार

आर० वालचंद एण्डको बम्बई बाजार

रतनलाल पाटोदी बम्बई बाजार

रामनारायण सोनी एण्ड सन्स

जनरल मरचेंट

अमरजी मुल्लां लुकमानजी

अलीभाई मुल्लां गुलामहुसैन (इम्पीरियल प्रिंटिंग प्रेस)

ईसुफ अली अब्दुल अली (वाच मरचेंट)

कमरुद्दीन मुल्ला महम्मदअली (ग्लॉस मरचेंट)

क्रेमन एण्ड को० (वृटिश इण्डिया स्टोर्स)

के० गुलाम हुसैन एण्ड सन्स

जी० कादर भाई एण्ड सन्स

महम्मदअली रसूलभाई

दि मऊ इम्पोरियम

हैदरअली एण्ड सन्स

एम० आर० सी० हुसैन एण्ड सन्स

महम्मद अली इब्राहिमजी कप्तान

रिचार्ड पेरिस एण्ड को० (ज्वेलर्स, वाचमेकर, इनग्रेवर्स)

शेख सन्दल एण्ड सन्स आर्मी कंट्राक्टर्स

दि सेंट्रल इण्डिया बूट एण्ड इक्विपमेंट डीपो

आर० जी धोतीवाला केरोसिन ऑइल एजंट

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

दि ब्रुटिश एम्पायर सर्जिकल एण्ड मेडिकल स्टोर्स

बिनसेन्ट एण्ड को० कन्टून्मेंट गार्डन

मोहन मेडिकल हॉल

मेन्यू फेक्चरर्स

कुकरेजा एण्ड को० इम्पोर्टर्स एण्ड स्पोर्ट्स, म्येनुफेक्चरर

वेस्ट एण्ड स्पोर्ट हाउस

मोटरकार डीलर्स

नोशेरवाँ एण्ड को० फोर्ड मोटर रिपेयर एण्ड सप्लायर

शापूरजी आर०मोटर साइकल एण्ड मोटर एजंट

आर्टिस्ट एण्ड फोटोग्राफर्स

हरजान हाइजिंग एण्ड को०

डलवी एण्ड को०

ग्बेरा एण्ड को०

भंडारे एण्ड को०

गवालियर-स्टेट

GWALIOR-STATE

मंदसोर

आर० एम० आर० लाइनके खंडवा अजमेर सेक्शनके मध्य नीमचके पास यह शहर बसा हुआ है। यह स्थान रतलामसे ५२ मील, सीतामऊसे २१ मील नीमचसे ३१ मील और प्रतापगढ़से २० मील है। मंदसोर, ग्वालियर स्टेटका एक अच्छा आबाद परगना है। इसके चारों ओर उदयपुर, इंदौर, झालावाड़, सीतामऊ, प्रतापगढ़, जावरा आदि स्टेटोंके आ जानेसे वहांके व्यापारियोंका संबंध इस शहरसे रहता है। मन्दसोर जिलेकी मनुष्य संख्या २०३७७४५ है। इस जिलेमें १८ जीनिंग और २ प्रेसिंग फेक्टरियां हैं। जिनमें सन् १९२१-२२में ६१४८११ मन कपास लोढ़ा गया था, जिससे १६६७१ गांठे बंधी थीं। मन्दसोर जिलेकी भूमि अफीमकी पैदावारके लिये बहुत अच्छी है।

मन्दसोर शहर—यह बहुत पुरानी वस्ती है। जब बी० बी० सी०आईकी [रतलाम मथुरा ब्रांच नहीं खुली थी उस समय करीब पचास पचास कोस तकके व्यापारी यहांसे गाड़ियों और ऊंटोंपर माल लादकर ले जाते थे। इस समय भी इस शहरमें किराना, कपड़ा, शक्कर, कैरोसिन तेल, तथा रंगीन मालका अच्छा व्यवसाय होता है। सन् १९२५में मन्दसोर शहरमें आने और जानेवाले मालका विवरण इस प्रकार है।

आनेवाला माल

चावल	६३४४ मन
गुड़	१२५२२ मन
शक्कर	२४६५७ मन
तेल घासलेट	३०००० पीपे
दाल	२०८० मन
खोपरा	३२१७ मन
तांबा	४३२०) रु०
पीतल	१६५२६) रु०
कांसा	१०४१) रु०
एल्यूमीनियम	२०९५) रु०
लोहा	८१४३६) रु०

जानेवाला माल

गेहूं	८१६ मन
जुवार	१६८३६ मन
चना	४४५६ मन
अलसी	१७८१ मन
कपासिया	२६१८४ मन
तिल्लीका तेल	६७४ मन
मेथीदाना	४३७२ मन
ऊलेन ब्लेंकेट	२२९१५) रु०
पक्की गांठे	४१२४२ मन
कच्ची गांठे	४८६ मन

जानेवाला माल

महीन सूत	११११६७)	रु०
मोटा सूत	१८५७	मन
कपड़ा	१०१८८०२)	रु०
तमाखू	१५१२	मन
इमारती लकड़ी	१६५१५	मन
माचिस	१०००६)	रु०
बीड़ी	६१७१)	रु०

मन्दसोर शहरमें ऊनके ब्लांकेट और रग्स अच्छे बनते हैं। सरकारकी ओरसे इनकी स्पीनिंग और वीविंगकी शिक्षा देनेका प्रबन्ध है। इसके अतिरिक्त यहां छपाई और रंगाईका स्पेशल काम होता है। पगड़ी, सूंसी, खादी, साटन, तथा स्त्रियोंके ओढ़नेके वस्त्रोंकी रंगाई तथा छपाईका बहुत अच्छा काम यहां होता है। यह रंगीन माल खानपुरी मालके नामसे प्रसिद्ध है। नारियलकी नलेटीकी चूड़ियां भी यहां कसरतसे बनती हैं। यहां व्यवसायिक जनताके सुभीतेके लिए "मण्डी कमेटी" नामक एक व्यापारिक एसोशियेशन स्थापित है। यहां प्रति सप्ताहमें १ बार हाट और प्रति वर्षमें एक बार चैत्र मासमें मेला लगता है।

इस शहरमें बोहरा व्यवसाइयोंकी दुकानें बहुत अधिक हैं, किराना, हार्डवेअर, तेल और कटलरी सामानका अधिकतर व्यापार इन्हीं लोगोंके हाथमें है। यहांकी सराफी वहिवट बहुत पुराने समयसे चली आती है। अफीमके समयमें लाखों रुपयोंका व्यापार यहांके सराफेमें होता था। वर्तमानमें अफीमका स्थान कपासने ले रक्खा है। इस शहरमें नीचे लिखी जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियां हैं।

न्यू काटन जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फेक्टरी

सोनी जीनप्रेस फेक्टरी (मालिक मूलचंद सुगनचन्द)

रामबक्ष खेतसीदास जीनिंग फेक्टरी

बैंकर्स एण्ड काटन मरचेंट्स

मेसर्स कुन्दनजी कालूराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री ओंकारलाल जीवापना हैं। आपके पूर्वज दो शताब्दी पूर्व पाली (मारवाड़)से इधर आए थे और करीब १५० वर्षोंसे यह कुटुम्ब यहीं बसा हुआ है। इस दुकानको संवत् १९०३-४में सेठ कुंदनजीने स्थापित किया। आपके बाद श्री कालूरामजीने इस

फर्मके कामको सम्भाला। वर्तमानमें सेठ कालूरामजीके पौत्र सेठ ओंकारलालजी इस फर्मके सञ्चालक हैं। आप उन्नत विचारोंके शिक्षित सज्जन हैं। आपने अपनी फर्मकी एक ब्रांच बम्बईमें भी स्थापित की है। आपके एक पुत्र हैं, जिनका नाम श्री मिश्रीलालजी हैं। वर्तमानमें आपकी दुकानोंका परिचय इस प्रकार है।

(१) मन्दसोर—कुन्दनजी कालूराम—T.A, Bafana—इस दुकानपर हुण्डी चिट्ठी, सराफी लेनदेन आढ़त और रुईका व्यवसाय होता है।

(२) बम्बई—ओंकारलाल मिश्रीलाल, बदामका झाड़, कालबादेवीरोड T.A. Selfness इस दुकान पर हुण्डी चिट्ठी तथा कमीशनका काम होता है।

मेसर्स गणेशदास पूनमचन्द

इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्रों सहित कोटेमें दिया गया है। यहां इस फर्मपर हुण्डी चिट्ठी और साहुकारी व्यवहार होता है।

मेसर्स नारायणदास कृष्णदत्त

इस फर्मके मालिक मूल निवासी लछमणगढ़ (जयपुर)के हैं। करीब १०० वर्ष पूर्व यह कुटुम्ब इधर आया था। सर्व प्रथम सेठ रुघनाथदास जी जावरेमें अफीमका व्यापार करते थे। आपके बाद क्रमशः सेठ हरवक्ससदास जी एवं नारायणदासजीने इस दुकानके कामको सम्भाला। तथा वर्तमानमें इस दुकानके मालिक रायसाहब सेठ नारायणदासजी हैं। आपका व्यापारिक साहस बहुत बढ़ा चढ़ा है। आपको बृटिश गवर्नमेण्टने "रायसाहब" तथा टोंक स्टेटने "रुकनुल तिजारत" का खिताब दिया है। श्री नारायणदासजी ग्वालियर स्टेटकी लेजिस्लेटिव्ह कौंसिल, एकानामिक डेवलपमेंट बोर्ड एवं मजलिसे आमके मेम्बर रह चुके हैं। आप इस समय ग्वालियर स्टेट कॉटन कमिटीके मेम्बर और "मशीर खास हाईकोर्ट ग्वालियर' है। आपकी दुकान मन्दसोर डिस्ट्रिक्टकी ट्रेझरर और ओपियम ट्रेझरर है। रायसाहब नारायणदास जी अग्रवाल जातिके हैं। ग्वालियर स्टेटमें आपकी जागीर के कई गांव हैं। वर्तमानमें आपके ३ पुत्र हैं, जिनके नाम श्री मुरलीधर जी, लक्ष्मीनारायण जी एवं वासुदेव जी हैं। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मन्दसोर—नारायणदास कृष्णदत्त T. A. Raisahib इस दुकानपर रुई आढ़त तथा हुण्डी चिट्ठीका काम होता हैं। यहां आपकी १ जीन और १ प्रेस फेक्टरी है।

इसके अतिरिक्त भिन्न २ नामोंसे नीचे लिखे स्थानोंपर जीनिंग और प्रेसिङ्ग फेक्टरियां आपके घरू तथा साझेकी हैं। इन स्थानोंपर रुईका व्यापार और आढ़तका काम भी होता है।

(१ मन्दसोर (२) जावरा (३) दलावदा (४) ढोढर (५) रिंगनोद (देवास) (६) पिपलोदा (पिपलोदास्टेट) (७) कानून (धारस्टेट) (८) बमनियां (इन्दौर) (९) अमरगढ़ (झाबुआ) (१०) उदयगढ़ (झाबुआ) (११) झाबुआ (१२) भैंसोदा मण्डी (गवालियर) (१३) टोंक (१४) मनासा (१५) पीपलिया (इंदौर) (१६) मल्हारगढ (जावरा) (१७) निम्बाहेड़ा (१८) रतनगढ (गवालियर) (१९) सिङ्गोली (गवालियर) (२०) टटनेरी (गवालियर) (२१) छबड़ा (टोंकस्टेट)

प्रेसिंग फेक्टरियां

१-मन्दसोर २ अमरगढ (झाबुआ) ३ उदयगढ़ (झाबुआ) ४ भैंसोदामण्डी (गवालियर) ५ टोंक ६ निम्बाहेड़ा

मेसर्स भोपजी शम्भूराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ देवीचंदजी बाकलीवाल हैं। आपके पूर्वज १५० वर्ष पूर्व वेगूं (उदयपुर) से मल्हार गढ़ और मल्हारगढ़से यहां आये। इस दूकानकी स्थापना संवत १८६५में सेठ शंभूरामजीने की। सेठ शंभूरामजीके बाद क्रमशः सेठ वर्द्धमानजी, सेठ जोधराजजी और सेठ देवीचंदजीने इस दूकानके कारोबारको सम्भाला। वर्तमानमें सेठ देवीचन्दजीके ३ पुत्र हैं जिनके नाम श्रीशंकरलालजी श्री फूलचन्दजी एवं श्री हजारीलालजी हैं।

इस दुकानपर पहिले अफीमका बहुत बड़ा व्यापार होता था। यह फर्म मन्दसोरके प्रतिष्ठित धनिकोंमेंसे है। सेठ देवीचन्दजी सरावगी जैन जातिके सज्जन हैं। इन्दौरके सर सेठ हुकुमचन्दजी से आपकी रिश्तेदारी है। ग्वालियरस्टेटमें ३ गाँव आपकी जमींदारीके हैं। स्टेटकी ओरसे इस कुटुम्बको हमेशा सम्मान मिलता रहा है। सेठ देवीचन्दजी २ वर्ष पूर्व यहाँपर ऑनरेरी मजिस्ट्रेट थे। इस पदपर आप करीब १५ वर्षोंतक रहे थे। जिस समय आपने ऑनरेरी मजिस्ट्रेट शिपसे इस्तीफा दिया था, उस समय ग्वालियर स्टेटकी ओरसे आपको पोशाक और सार्टिफिकेट मिला था। संवत् १९८०में दरबारकी सालगिरहके समय भी आपको स्टेटने पोशाक इनायत की थी।

इस दुकानकी ओरसे एक जैन चैत्यालय मन्दसोरमें बना हुआ है इसके अतिरिक्त आपकी ओर-से श्री मैना बाई जैन कन्यापाठशाला और देवीचन्द दिगम्बर जैन औषधालय भी चल रहा है। औष-धालयमें प्रतिवर्ष रोगियोंकी औसत १३ हजारके आती है। आपका एक मन्दिर मल्हारगढ़में भी बना हुआ है। इस दुकानका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मंदसोर—भोपजी शंभूराम—इस दुकानपर सराफी लेन देन हुंडी चिट्ठी तथा व्याज बदलाई और मिल शेअर्सका काम होता है। इसके अतिरिक्त क्यामपुर [ग्वालियर स्टेट] में अभी आपने एक जीनिंग फेक्टरी भी ली हैं।

श्री सेठ देवीचन्दजी (भोपजी शंभूराम) मंदसोर
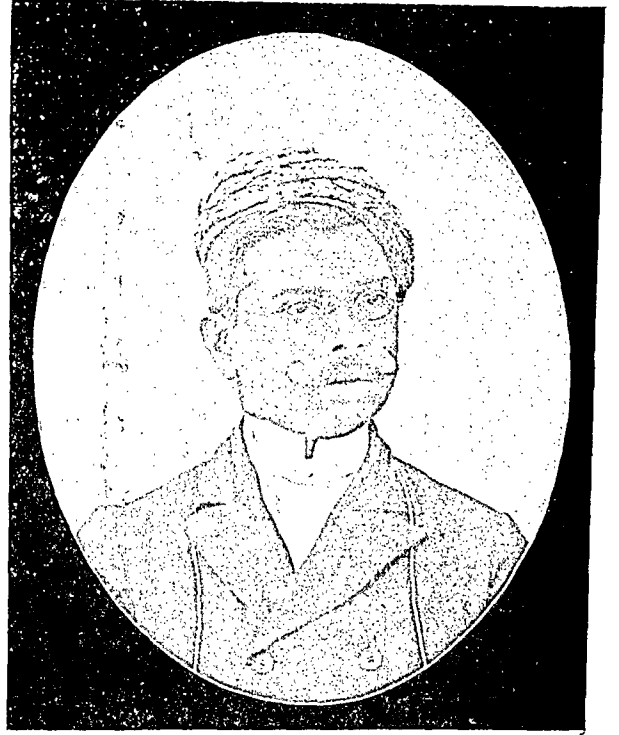
श्रीयुत नथमलजी चोरड़िया नीमच

श्री० सेठ ओंकारलालजी बापना (कुंदनजी कालूराम) मंदसोर

श्री० सेठ शिवनारायणजी (मनीराम गोवर्द्धन) मंदसोर

मेसर्स मनीराम गोवर्द्धनदास

इस दूकानके वर्तमान मालिक श्री शिवनारायणजी अग्रवाल जातिके (गोयल) सज्जन हैं। आपका मूल निवासस्थान नारनौल (पटियाला-स्टेट) में है। पहिले पहिल संवत् १९०२में सेठ मनीरामजीने यहांपर आकर कपड़ेकी दलालीका काम आरंभ किया। आपका दलालीका काम अच्छा चल निकला। संवत् १९२०में सेठ मनीरामजीका देहावसान हुआ इनके बाद इनके पौत्र सेठ गोवर्द्धनदासजीके समयमें इस दूकानकी विशेप तरक्की हुई। संवत् १९५०से ५४ तक मंदसोरकी कस्टमका ठेका आपके जिम्मे रहा। इसमें आपको खूब लाभ रहा। सेठ गोवर्द्धनदासजीके चार पुत्र थे, उनमें सबसे बड़े श्री शिवनारायणजी हैं। आप इस समय मंदसोरमें ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। सेठ शिवनारायणजीके पुत्र श्री जगन्नाथजी व्यापारिक कार्यों में भाग लेते हैं। इस दूकानकी ओरसे मंदसोरमें करीब १५ हजार रुपयोंकी लागतसे एवं नारनोलमें १० हजार रुपयोंकी लागतसे धर्मशालाएं बनी हुई हैं। वर्तमानमें इस फर्मके मैनेजमेण्टमें नीचे स्थानोंपर दूकाने हैं।

(१) मन्दसोर—मनीराम गोवर्द्धनदास—T. A. JAIN—यहां रुई, कपड़ा, अनाज, हुण्डी चिट्ठी सराफी लेनदेन तथा आढ़तका काम होता है।

(२) अहमदाबाद—मनीराम गोवर्द्धनदास, नया माधोपुरा—इस दूकानपर कपड़े और गल्लेका थोक व्यापार तथा कमीशनका काम होता हैं।

(३) सैलाना—मनीराम गोवर्द्धनदास—यहाँ रुई, गल्ला और कपड़ेका घरू व्यापार तथा आढ़तका काम होता है।

(४) वांसवाड़ा—मनीराम गोवर्द्धनदास—यहां भी उपरोक्त व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त पिपलियाके गणेशजीन और सैलानाकी ईश्वर कम्पनी नामक जीनिंगफेक्टरियों में आपका भाग है। उपरोक्त दूकानोंमें नं० २, ३, ४ आपके भाइयोंके बंटवारे की हैं। वर्तमानमें इनपर आपकी देखरेख है।

मेसर्स मूलचंद सुगनचंद

इस फर्मके मालिक रायबहादुर सेठ टीकमचंदजी सोनी अजमेरवाले हैं। अतएव आपका विशेष परिचय चित्रोंसहित वहां दिया गया है। मन्दसोर दूकानपर सराफी लेनदेन हुण्डी चिट्ठी तथा कॉटन व्यवसाय होता है। आपकी यहां एक जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी भी है।

मेसर्स रामलाल बख्शी

इस फर्मका हेडऑफ़िस मन्दसोर है। बम्बईमें इस फर्मकी ब्रांच और स्थाई सम्पत्ति है इस दूकानकी ओरसे बख्शी मित्र-मंडल नामक एक अच्छा औषधालय चल रहा है। *

मेसर्स समरथराय खेतसीदास

इस फर्मके मालिक रामगढ़ (सीकर) निवासी अग्रवाल जातिके हैं। इस फर्मके व्यवसायका विशेष परिचय बम्बईमें पृष्ठ १०१में दियागया है। मन्दसोरमें इस फर्मकी जीनिंग फेक्टरी है तथा रुई और आढ़तका काम होता है।

मेसर्स श्रीराम बलदेव

इस फर्मका विशेष परिचय जावदमें चित्र सहित दिया गया है। मन्दसोर दूकानपर आढ़त हुंडी चिट्ठी तथा आसामी लेनदेनका काम होता है।

बैंकर्स एण्ड कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स एकाजी मोतीजी
" कुन्दनजी कालूराम
" कुन्दनजी फूलचन्द
" गनेशदास पूनमचंद
" नारायणदास कृष्णदत्त
" परथीराज गंगाविष्णु
" बच्छराज कुन्दनजी
" फत्ताजी तिलोकचंद
" भोपजी शंभूराम
" मूलचन्द सुगनचन्द
" मनीराम गोवर्द्धन
" रामलाल बख्शी
" रामसुख सदासुख
" समरथराय खेतसीदास
" श्रीराम बलदेव

गल्लेके व्यापारी

कौशलजी किशोरदास
गुलामअली रसूलजी
चतुर्भुज डालूराम
जड़ावचन्द बरदीचन्द
फत्ताजी कचरमल
मोतीलाल कचरमल
मोतीलाल केशरीमल
मगनीराम छोगमल

---

* खेद है कि कोशिश करनेपर भी इसमें अपका परिचय नहीं मिल सका। प्रकाशक।

चांदी सोनेके व्यापारी

खेमजी जड़ावचन्द मरड़िया
उत्तमजी रखबदास नाहर
नवलजी छब्बालाल
नगजीराम केशरीमल
प्यारचन्द किशनलाल
मन्नालाल चुन्नीलाल
हीरालाल कचरमल

कपड़े के व्यापारी

इब्राहिम रसूल
इब्राहिम अब्दुल्लाजी
कुन्दनजी फूलचंद
छब्बालाल कस्तूरचन्द
जड़ावचन्द मूलचन्द
बालचन्द शिवलाल
मनीराम गोवर्द्धन
रामगोपाल पूसाराम
सफरअली कमरअली
हरीदास विट्ठलदास
हिफतुल्ला लुकमान

खानपुरी—रंगीनमाल

छींपा गोटूजी पन्नालाल
रंगारा तुलसीराम प्यारचन्द
रंगारा डूंगाजी लछमन
रंगारा श्यामाजी घासी

किरानाके व्यापारी

अब्दुल इस्माइल
अली महम्मद रजबअली
ईसुफअली रजबअली (सूत)
इस्माइल रजबअली
इस्माइल सुलतान, मंडी दरवाजा
गुलामअली रसूलजी
तैय्यबअली कादरअली
नजरअली गुलामहुसेन (सूत)
रजबअली महम्मदअली

लोहा

अब्दुल आदमजी लोहावाले
फिदाहुसेन रसूलजी

जनरल मरचेंट्स

अली महम्मद रजबअली (कटलरी)
इस्माइल मुल्ला कमरअली
रसूलजी कादरजी (कागदी)
हसन रजबअली (फेंसी माल)

नीमच

नीमच—चारों ओर होल्कर, सिंधिया; उदयपुर गवालियर आदि स्टेटोंसे घिरी हुई यह अंग्रेजी छावनी आर० एम० आर० के नीमच स्टेशनपर बसी हुई है। यहांकी वस्ती साफ एवं सुथरी है। इसके आस पास अजवाइन बहुत पैदा होता है तथा अच्छी तदादमें बाहर भेजा जाता है। यहां पासहीमें ग्वार और खोरी नामक स्थानोंपर पत्थरकी खदान है। उन स्थानोंपर गवालियर स्टेटकी दूकान है। जिसके द्वारा महसूल लेकर और कीमतन पत्थरकी बड़ी बड़ी पट्टियां और टुकड़े वेंचे जाते हैं। व्यापारियोंकी सुविधाके लिये आस पासकी स्टेशन जैसे नीमच; केसरपुरा, निम्बाहेड़ा आदि पर ठीक रेलकी पटरीसे लगी हुई दुकानें हैं। यह स्थान पत्थरकी बड़ी भारी मंडी है। इस छावनीके पास ही निमच गांव है वहांपर आनेवाली तथा जानेवाली वस्तुओंका सन् १९२५ का परिचय इस प्रकार है।

आनेवाली वस्तुएं		जानेवाला माल	
चावल	१५५२ मन	पत्थर	२२४०२) रु०
गुड़	७०५८ मन	रुईकी कच्चीगांठें	१५८६१ मन
शक्कर	१५१७ मन	पक्कीगांठे	५१२९५ मन
तेल	१२३३९ पीपे	चना	४२९ मन
नारियल	९१० मन	उड़द	१६८२ मन
लोहा	७२०६) रु०	जौ	१८५६ मन
कपड़ा	३०५६६) रु०	शकर	२१६ मन
फरनीचरत था लकड़ी	६६१८४) रु०	मेथी	३१०६ मन

यह छावनी अजमेरसे १५० मील इन्दौरसे १५७ मील और बम्बईसे ४५१ मील है।

मेसर्स दौलतराम गुलजारीलाल

इस फर्मका विशेष परिचय इन्दौरके पृष्ठ ३७ में दिया है। नीमच केम्पकी दूकानपर, अनाज व शीड्सका व्यापार तथा आड़तका काम होता है। इस फर्मकी इन्दौरमें पत्थर व फरसीकी भी दूकान है। नीमच आदिके पत्थर उस स्थानपर मिलते हैं।

स्व० सेठ मुरलीधरजी बांसल
(नेतराम शंकरदास) नीमच

श्री० नाथूरामजी बांसल (नेतराम शंकरदास) नीमच
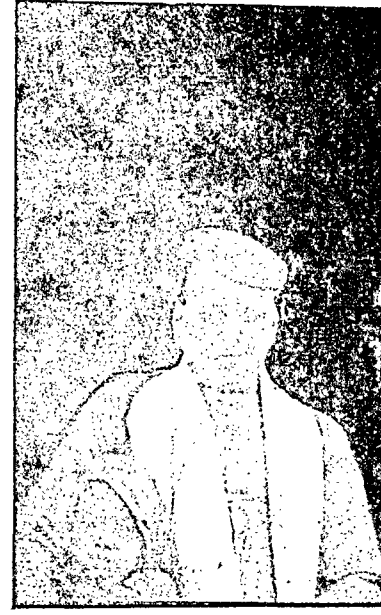
स्व० सेठ हीरालालजी बांसल
(नेतराम शंकरदास) नीमच

स्व०सेठ रामचन्द्रजी गगराणी (श्रीराम बलदेव) जावद

सेठ हरकिशनजी मुंछाल (हरकिशन किशनलाल) जा

श्रीयुत नथमलजी चोरड़िया

आप ओसवाल जातिके जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं। आप उन व्यक्तियोंमेंसे हैं, जिन्होंने अपने व्यापारके कौशलसे बहुतसी सम्पत्ति भी उपार्जित की और उसके साथ व्यापारी समाजमें अच्छा नाम भी कमाया। बम्बईमें "मारवाड़ी चेम्बर ऑफ कॉमर्स" नामक जो मशहूर चेम्बर है, वह एक प्रकारसे आपहीके द्वारा स्थापित की हुई है और भी कई सभा सोसायटियों, और संस्थाओंमें आपका बहुत अधिक हाथ रहा है। कई संस्थाओंसे आपको अच्छे २ मानपत्र भी प्राप्त हुए हैं। मतलब यह कि आप बड़े उत्साही, गम्भीर, और विचारक कार्यकर्त्ता हैं।

पहले आपने छोटी सादड़ीके मशहूर धनिक मेघजी गिरधरलाल के साझेमें बम्बईके अन्दर "माधोसिंह छगनलाल" नामसे फर्म स्थापित की थी। इस समय अब आप अधिकतर सार्वजनिक कार्य्योंमें ही अपना जीवन व्यतीत करते हैं। आप बड़े सुधरे हुए विचारोंके कार्य्यकर्त्ता हैं। परदेके समान गन्दी और वीभत्स प्रथाको उठानेके लिए आप बड़ा प्रयत्न कर रहे हैं। अपने घरमें आपने कुछ अंशोंमें इस प्रथाको उठा भी दिया है। इसी प्रकार आप अछूतोद्धारके भी बड़े पक्षपाती हैं। नीमचमें आपने चमारोंकी एक सभा खोल रक्खी हैं। उसके प्रेसिडेण्ड आप ही हैं। इसके अतिरिक्त स्थानकवासी कान्फ्रेन्स, और गांधीजीके खादी प्रचार आन्दोलनमें भी आप बहुत अधिक भाग लेते हैं। इन्दौरके भण्डारी मिलमें आपके करीब दो लाख रुपयेके शेअर हैं।

आपके इस समय तीन पुत्र हैं। (१) माधोसिंहजी (२) सौभागसिंहजी (३) फतेहसिंहजी आप तीनों बड़े बुद्धिमान और कुशल नवयुवक हैं।

मेसर्स नेतराम शंकरदास

इस दुकानके वर्त्तमान मालिक श्रीनाथूलालजी बांसल (अग्रवाल) हैं। आपके पूर्वजोंका निवास स्थान जयपुर राज्यके अंतर्गत निवाणा नामक गांव है। सौ वर्ष पूर्व यह कुटुम्ब यहाँ आया था। पहिले सेठ नेतरामजी ने इस दुकानकी स्थापना बहुत छोटे रूपमें की। सेठ नेतरामजीके दो पुत्र थे। श्रीशंकरदासजी और श्रीहणुतरामजी। श्रीहणुतरामजीने इस दुकानके कार बारको बढ़ाया। इनके चार पुत्र श्रीभगवानदासजी, हीरालालजी,मुरलीधरजी और शुकदेवजी थे। इनमें श्रीमुरलीधरजीने इस दुकानके व्यापारको बहुत तरक्की दी। आपके समयमें इस दुकानपर अफीम, गल्ला और आढ़तका अच्छा व्यवसाय होता था।

इस समय श्री हीरालालजीके पुत्र श्रीनाथूलालजी इस दुकानके कारोवारको सम्हालते हैं। और श्रीभगवानदासजीके पुत्र गोविंदरामजी अपना अलग व्यापार करते हैं। इस दुकानकी ओरसे सेठ

मुरलीधरजीने नीमचमें एक धर्मशाला बनवाई थी । तथा नाथूलालजीने स्मशान घाटके रास्तेमें पड़ने वाली नदीपर पुल बनवाया ।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

नीमच केम्प—नेतराम शंकरदास—इस दुकानपर साहुकारी लेनदेन और ब्याज बदलाईका काम होता है ।

मेसर्स पूनमचन्द दीपचन्द

इस फर्मका पूरा परिचय कोटामें दिया गया है । यहाँ यह फर्म ट्रेझरर है, तथा हुण्डी चिट्ठी और बैंङ्किग काम होता है ।

मेसर्स लूणकरण पन्नालाल

यह फर्म यहाँ सन् १७८० से स्थापित है । इस दुकानके वर्तमान मालिक सेठ पन्नालालजी हैं । आप अग्रवाल जातिके वांसल गोत्रीय सज्जन हैं । इस दुकानका पूरा परिचय भवानीगंज मंडीमें दिया गया है । इस दुकानप आढ़त, हुण्डी चिट्ठी तथा रुईका व्यापार होता है ।

बैंकर्स एण्ड काटन मरचेंट्स

किशनलाल छोगालाल
जवाहरमल भीखाराम
नेतराम शंकरदास
पूनमचन्द दीपचन्द (ट्रेझरर)
रामसुख सदासुख
लच्छीराम गोविंदराम
लालजी नानकराम (नीमच-सिटी)
रामेश्वरदास रामस्वरूप
लूणकरण पन्नालाल

कमीशन एजंट

दौलतराम गुलजारीलाल
फूलचन्द रामसहाय
बखतावरमल जानकीलाल
रामलाल शिवबक्स

क्लाथ शाप

गनेशदास मुरलीधर
मथुरादास मालू
रामनाथ रामगोपाल
राधेलाल चांदमल
श्रीराम राधालाल

जनरल मरचेंट्स

गंगादास मालू एण्ड कम्पनी
फिरोजशाह एण्ड सन्स
मानमल गट्टानी एण्ड को०

बम्बई—मेसर्स मेघजी गिरधरलाल—पारसी गली धनजी स्ट्रीट—T. A. Lantarn—इस फर्मपर बैङ्किग कॉटन, सराफी तथा आढ़तका काम अच्छे स्केलपर व्यापार होता है।

बघाना

यह नीमच केम्पसे लगा हुआ ग्वालियर स्टेटका एक छोटासा कसबा है। बस्तीके मानसे यहाँ रुईका अच्छा व्यवसाय होता है। यहाँ १ जीन और १ प्रेस फेक्टरी पहिलेहीसे है। और १ नया प्रेस और तैयार हो रहा है।

कॉटन जीनप्रेस बघाना

यह कम्पनी उज्जैनके सेठ किशनलाल अमृतलाल जहाजवाले, और तालिग्राम (फर्रुखाबाद) के मुंशी जीवालालजी इन दोनोंके साझेमें है। यह कम्पनी सन् १८९४ में यहांपर स्थापित हुई। इस फर्मके दोनों पार्टनरोंका संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

—:—

मेसर्स किशनलाल अमृतलाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत गोकुलदासजी, दाऊलालजी और जमनादासजी हैं। इस दुकानकी स्थापना सेठ नारायणदासजी और रणछोड़दासजीके हाथोंसे हुई और उन्हींके जमानेमें इसकी उन्नति भी हुई। आप नीमा जातिके सज्जन हैं।

श्रीयुत गोकुलदासजी और दाऊलालजी, सेठ नारायणदासजीके तथा जमनादासजी, सेठ रणछोड़दासजीके पुत्र हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) उज्जैन—किशनलाल अमृतलाल जहाजवाले—यहां हुण्डी, चिट्ठी और सराफी लेन देनका काम होता है।

(२) बघाना—रणछोड़दास जमनादास T. A. Jahajwala—यहाँ रुई कपास तथा हुण्डी चिट्ठी और आढ़तका व्यापार होता है।

—:o:—

मुंशी जीवालालजी

आपका मूल निवास तालिग्राम (फर्रुखाबाद) यू० पी०में है। सन् १८९४ में जब कारखाना स्थापित हुआ तब आप यहां आये। आपका देहावसान सन् १९२६ के मार्च मासमें हो गया है। आपके ६ पुत्र हैं जिनमें सबसे बड़ेका नाम मुंशी सुन्दरलालजी है। आप कायस्थ जातिके सज्जन हैं।

श्री सेठ छगनलालजी गोधावत (मेघजी गिरधरलाल) छोटी सादड़ी

श्री जमनादासजी नीमा (कॉटन जीन प्रेस) बघाना

स्व० सेठ दामोदरदासजी, नारायणदासजी, रणछोड़दासजी, बघाना
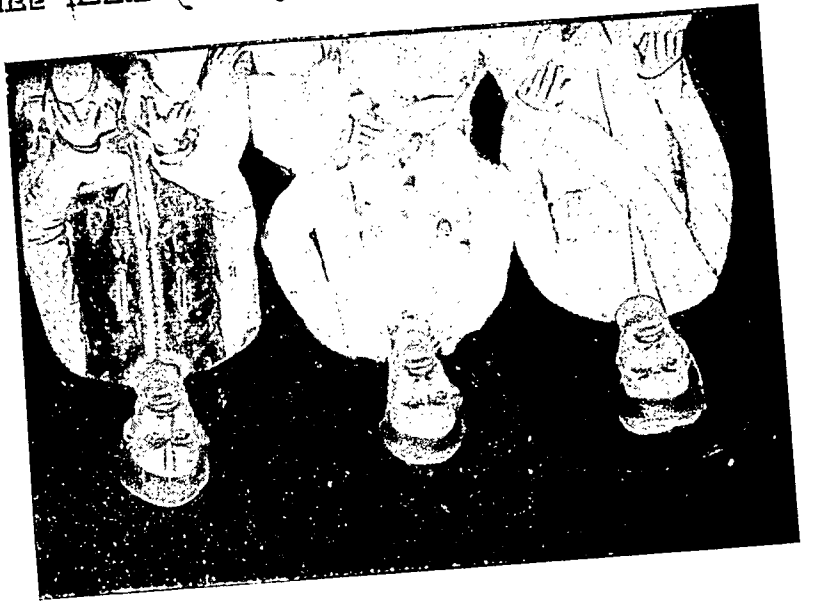
मुंशी जीवालालजी (कॉटन जीन प्रेस) बघाना
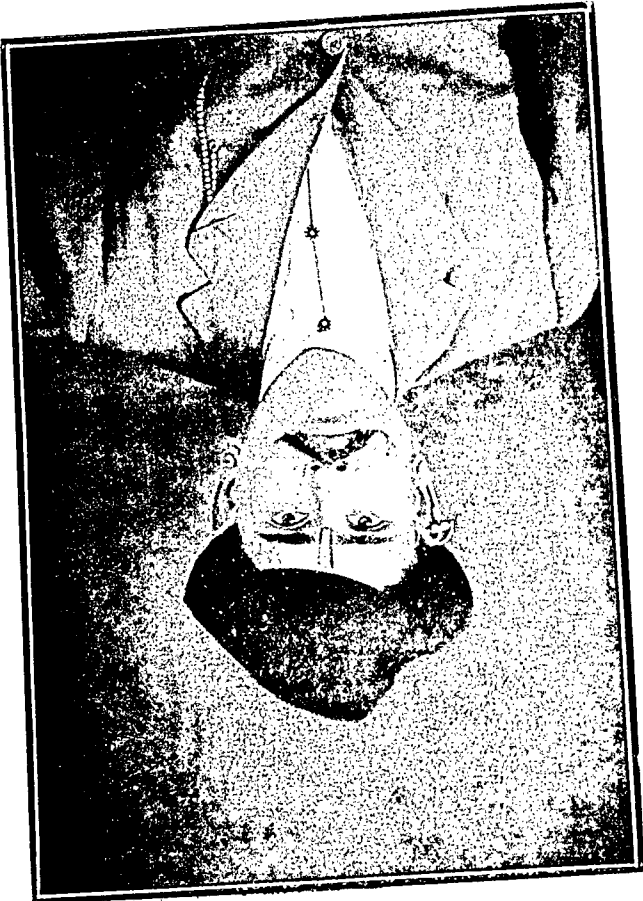
श्रीयुत मुन्शी सुन्दरलालजी और श्री जमनादासजी दोनों ही इस फर्मके प्रधान संचालक हैं। आपके पार्टनर शिपमें नीचे लिखी दुकानें हैं।

बघाना—कॉटन जीनप्रेस कम्पनी— यहाँ जीन प्रेसके साथमें ऑइल मिल भी है। तथा कॉटन विजिनेस हुण्डी चिट्ठी और आढ़तका काम होता है। T. A. Jeweshwar,

(२) नीकूम (गवालियर-स्टेट)—कॉटन जीन कम्पनी—जीनिंग फेक्टरी है तथा रुई कपासका व्यापार होता है।

(३) जावद (गवालियर-स्टेट) कॉटन जीन कम्पनी— उपरोक्त काम होता है।

मेसर्स नवलराम पोकरराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ फतेलालजी अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान थोई (जयपुर-राज्य) है। इस दूकानको पहिले सेठ नवलरामजीने स्थापित किया। आपके २ पुत्र थे, पोकररामजी और मोतीरामजी। श्रीमोतीरामजीने बघानामें सेठ उदयराम—धर्मशालाकी नीव डाली थी। इनके बाद सेठ पोकरदासजीके पुत्र उदयरामजीने इस फर्मके कामको सम्हाला। वर्तमानमें सेठ उदयरामजीके पुत्र सेठ फतेलालजी इस फर्मके मालिक हैं।

इस समय आपकी दुकानपर हुण्डी चिट्ठी, रुई कपासका व्यापार तथा आढ़तका काम होता है। मन्दसोरकी नारायणदास फतहलाल जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी तथा बघानाकी शारदा जीनिंग फेक्टरीमें आपका हिस्सा है

कॉटन मर्चेंट एण्ड कमीशनएजेंट

न्यू काटन जीन प्रेस

नवल राम पोकरराम

रणछोड़ दास जमनादास

सदासुख रुगनाथ

जीन प्रेस

कॉटन जीन प्रेस

न्यू कॉटन जीन प्रेस

लक्ष्मीविलास जीन फेक्टरी

—०—

जावद

आर० एम० आर० के केसरपुरा नामक स्टेशनसे ८ मीलकी दूरीपर पत्थरके परकोटेसे घिरा हुआ गवालियर स्टेटका यह छोटासा सुन्दर कसबा है। यहां ३ कॉटन जीनिंग फेक्टरी और १ ऑइल मिल है। यहां देशी मिलोंके बने कपड़ेपर नीलकी रंगाई और छपाईका काम अच्छा होता है। यहांका माल मालवा, बगड़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, मेवाड़, बांसवाड़ा एवं गुजरातमें जाता है। तथा स्त्रियोंके लहंगों और ओढ़नोंके काममें लाया जाता है। यहांसे कुछ ही दूरीपर पत्थरकी खान है। पत्थरकी विपुलताके कारण यहांके सभी कान पत्थरके ही बनते हैं।

यहांके आने जानेवाले मालका सन् १९२५ का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

आनेवाला माल	जानेवाला माल
गुड़—२२४० मन	चना—२२२ मन
शक्कर—१९३ मन	घी—४४ मन
३० नं० से नीचेका सूत—७२५ मन	अलसी—२७९ मन
कपड़ा—४६०४२४)	मेथीदाना—१८८३ मन
	अजवाइन—११९६ मन
	पत्थरकी शिलाएं—१६३२६)

यहांकी पैदावारमें कपास, मेथीदाना, अजवाइन, अलसी, जुवार, मक्की, तिल, चना, गल्ला आदि मुख्य हैं।

बैंकर्स एण्ड कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स श्रीराम बलदेव

इस दुकानके मालिक आदि निवासी डींकेड़के हैं। इस दुकानको ८० वर्ष पूर्व सेठ किशनरामजीने स्थापित किया। उस समय इस दुकानपर खास व्यापार अफीम जमीदारी और व्याजका होता था। सेठ किशनरामजीके बाद उनके २ पुत्र सेठ नगजी रामजी और बलदेवजीने इस दुकानके कामको सम्भाला। सेठ बलदेवजीके पुत्र रामनारायणजी और नगजीरामजीके रघुनाथजी हुए।

संवत् १९५३ में सेठ रघुनाथजीका और १९६६ में रामनारायणजीका देहावसान होगया। इनके बाद सेठ रघुनाथजीके पुत्र रामचन्द्रजीने इस दुकानके कारोबारको सम्हाला। आपका भी देहावसान १९८० में होगया है। वर्तमानमें इस दुकानका कारोवार सेठ रामनारायणजीकेपुत्र सेठ कन्हैयालालजी सम्हालते हैं। सेठ रामचन्द्रजीके २ पुत्र सेठ मदनलालजी और बंशीलालजी अभी छोटी वयके हैं।

सेठ कन्हैयालालजी जिलाबोर्ड मंदसोरके मेम्बर हैं। इस दुकानकी ओरसे ढींकेड़में धर्मशाला रंगनाथजीका मंदिर तथा तालाब बना हुआ है।

आपकी दुकानोंका परिचय इस प्रकार है।

१ जावद—श्रीराम बलदेव—यहां आसामी लेनदेन, रुई कपासका व्यापार और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

२ मंदसोर—श्रीराम बलदेव—यहां भी आसामी लेनदेन, रुई, कपास, गल्लेका व्यापार तथा आढ़त और हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

३ ढींकेड़—किशनराम नगजीराम, यह गांव तथा तीन गांव और स्टेट गवालियरने आपको जमींदारी हक्कसे दिये हैं। यहां आपका खास निवास है।

४ रतनगढ़ (गवालियर)—श्रीराम नगजीराम—आसामी लेनदेन,कपास तथा गल्लेका काम होता है।

५ सिंगोली – श्रीराम नगजीराम—ऊपर लिखे अनुसार काम होता है।

— —

मेसर्स हरकिशन किशनलाल जावद

इस दुकानके मालिकोंको डीडवाना (जोधपुर स्टेट) से नीमचमें आये १०० वर्ष हुए। नीमच से आकर ७० वर्ष पहिले सेठ रामलालजीने जावदमें व्यापार शुरू किया। आपके बाद क्रमशः रामचन्द्रजी तथा शुकदेवजीने इस दुकानका काम सम्हाला। आपके समयमें इस दुकानपर अफीम और तिलहनका काम होता था। सेठ शुकदेवजीने संवत् १९६७ में कृष्ण कॉटन जीनिंग फेक्टरी स्थापित की। आपके बाद आपके पुत्र सेठ हरकिशनजी इस समय इस दुकानका संचालन कर रहे हैं। आपकी यह दुकान इस नामसे संवत् १९५३ से जावदमें व्यापार कर रही है। सेठ हरकिशनजी माहेश्वरी सज्जन हैं। आप यहांके ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं।

इस समय आपके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

१ जावद—हरकिशन किशनलाल—इस दुकानपर रुई, कपास, हुंडी चिठ्ठी, गल्ला और आढ़तका काम होता है। यहां आपकी कृष्ण कॉटन जीन फेक्टरी है।

२ न्यू मालवा कॉटन प्रेस वघाना—इस प्रेसमें आपका साझा है।

३ न्यू कॉटन जीन प्रेस मंदसोर—इस जीन प्रेसके आप भागीदार हैं।

मेसस लक्ष्मीचंद शंकरलाल

इस फर्मको सेठ भगवानदासजीने संवत् १९३८ में स्थापित किया। यह दुकान प्रतापगढ़की मेसर्स कुंदनजी कपूरचंद नामक फर्मकी शाखा है। आरम्भमें इस दुकानपर अफीम तथा कपड़ेका व्यापार होता था। इस समय इस फर्मके मालिक श्री लक्ष्मीचंदजी, श्री शंकरलालजी, और श्री चन्दनलालजी हैं। वर्तमानमें इस दुकानपर जावदमें तयार होनेवाले साड़ी, नानगा, अंगोछा, पीलिया आदिका अच्छा व्यापार होता है। इस फर्मके द्वारा जावदकी देशी कपड़ेकी छपाई और रंगाईका माल गुजरात, बागड़, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, मेवाड़ आदि प्रांतोंमें अच्छी मात्रामें जाता हैं।

—०—

बैंकर्स एण्ड काटन मर्चेंट

मेसर्स जड़ावचंद प्यारेचंद
,, टोडूजी रिखबदास
,, पृथ्वीराज गंगाविशन
,, फूलचंद गौरेलाल
,, रामलाल गुलाबचन्द
,, श्रीराम बलदेव
,, लक्ष्मीचन्द शंकरलाल
,, सुखलाल मेघराज
,, शिवलाल रामलाल
,, हरकिशन किशनलाल

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स जड़ावचन्द प्यारचन्द
,, टोडूजी रिखबदास
,, धौंकलजी पन्नालाल
,, पीरचन्द नथमल
,, लक्ष्मीचन्द शङ्करलाल

किरानेके व्यापारी

मेसर्स अब्दुल आदम
,, कालूजी रामसुख
,, चौथमल नथमल
,, डामरसी रूपचन्द

रंगीन कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स फाजिलजी इब्राहीम
,, लक्ष्मीचन्द शङ्करलाल
,, हकीमजी महमूद

जीनिंग फेक्टरीज

,, कृष्ण कॉटन जीन फेक्टरी
,, कॉटन जीन कम्पनी
,, लक्ष्मीआइल एण्ड जीनिंग फेक्टरी

मोरेना

मोरेना गवालियर स्टेटकी एक बहुत अच्छी मंडी है। या यों कहना चाहिये कि गल्लेकी सबसे बड़ी मंडी है। यह जी० आय० पी० रेलवेकी बम्बई देहलीवाली मेन लाईनपर बसी हुई है। इसके लिये मोरेना नामक स्टेशन लगता है। इस मंडीकी बसावट साधारण है। यह आगरेसे ५० मील एवम् गवालियरसे २३ मीलकी दूरीके फासलेपर है।

यहांसे लाखों मन गल्ला दिसावरोंमें जाता है। यहांकी खास पैदावार मूंग, चना, मटर, अरहर, उर्द आदि हैं।

यहांसे १५ मीलकी दूरीपर जोरा नामक एक स्थान है। यहां शकरकन्द, गन्ना आदि बहुत पैदा होता है। जो गुड़ और शकरके लिये बहुत मशहूर है। यदि कोई शक्कर फेक्टरी खोलना चाहे तो उसके लिये यह स्थान बहुत उपयोगी है।

यहाँ एक मंडी कमेटी नामक संस्था खुली हुई है। इसका उद्देश व्यापारकी तरक्की करना है यहां कार्तिक मासमें हरसाल एक मेला लगता हैं। इसमें हजारों पशु विक्रयार्थ आते हैं। इस मंडीमें नीचे लिखे प्रमाणसे सन् १९२७ में माल आया तथा गया। ये नम्बर अन्दाजन लगाये गये हैं। पर बहुत अंशोंमें सत्य हैं।

जानेवाला माल

मूंग	३००००० मन	अरंडी	२०००० मन
चना	३००००० ,,	अलसी	१०००० ,,
अरहर	१७५६४० ,,	तिल्ली	२०००० ,,
सरसों	१२३७८ ,,	दाल चना	३०००० ,,
सोनहा	६८७० ,,	दाल अरहर	१०००० ,,
घी	१७८२५ ,,		

आनेवाला माल

चांवल	२६८६३ मन
गुड़	५०० वेगन
कांकड़ा, बिनोले	२०००० मन
तमाखू	२५०० मन
नमक	१५० वेगन

इस मंडीमें तोल बंगाली मन से है। यानी ४० सेरका मन, १२ मनकी मानी।

बैंकर्स

मेसर्स नेमीचन्द मूलचन्द

इस फर्मके मालिक अजमेर निवासी हैं। आपका हेड आफिस भी अजमेरही है। अतएव आपका पूरा परिचय अजमेरके पोर्शनमें दिया गया है।

आपका यहां व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

मोरेना—राय बहादुर नेमीचन्द मूलचन्द—यहां बैंकिंग हुंडी चिट्ठी, गल्ला, घी आदिका काम होता है। आढ़तका भी काम यहां होता है।

मेसर्स सदासुख नारायणदास

इस फर्मके स्थापक सेठ सदासुखजी थे। आपके हाथोंसे इस फर्मकी अच्छी उन्नति हुई। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ नारायणदासजी हुए। वर्तमानमें आपही इस फर्मके संचालक हैं। आप अग्रवाल जातिके हैं। आपके एक पुत्र तथा ३ पौत्र हैं। आप सब लोग फर्मके कार्यका संचालन करते हैं। आपकी फर्मका कई बड़ी २ व्यापारिक कम्पनियोंसे सम्बन्ध है।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

मोरेना—मेसर्स सदासुख नारायणदास-बैंकिंग हुंडीचिट्ठी गल्ला तथा कमीशन एजंसीका व्यापार होता है। जमीदारीका कार्य भी यह फर्म करती है।

मोरेना--मेसर्स सदासुख नारायणदास-यहां सराफीका काम होता है।

मेसर्स हरनारायण भवानीप्रसाद

इस फर्मके वर्तमान प्रोप्राईटर सेठ माधोप्रसादजी,सेठ गोविन्दप्रसादजी और सेठ हरविलासजी हैं। आप ग्वार जातिके वैश्य हैं। आपका मूल निवास स्थान जिंगनी (मुरेना) का है। जबसे मंडी कायम हुई है तभीसे आपकी फर्म यहां स्थापित है। इसे सेठ हरनारायणजीने स्थापित किया था। आपके हाथोंसे इसकी उन्नति भी हुई। वर्तमान संचालक आपके पौत्र हैं। आपकी ओरसे एक धर्मशाला तथा मार्कंडेश्वरका एक मन्दिर बना हुआ है।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है

मौरेना—हरनारायण भवानीप्रसाद-यहां किराने तथा गल्लेका व्यापार होता है। आढ़तका कामभी यह फर्म करती है।

मौरेना—हरप्रसाद फतेराम-यहां कपड़ा तथा चांदी सोनेका काम होता है।

लश्कर—हरनारायण हरविलास, इन्द्रगंज—यहां शक्करका काम होता है।

दतिया—हरनारायण भवानीप्रसाद—यहां गल्लेका व्यापार होता हैं।

बैंकर्स

मेसर्स अयोध्याप्रसाद संतोपीलाल
राय बहादुर नेमिचन्द मूलचन्द

ग्रेन मरचेंट्स एण्ड कमीशन एजेंट्स

मेसर्स छितरमल रामदयाल
,, विहारीलाल जमनादास
,, सदासुख नारायणदास
,, शान्तिलाल सकलचन्द
,, शोभाराम गुलाबचन्द
,, शकरचन्द भग्गूभाई
,, शिवप्रसाद लक्ष्मीनारायण
,, हरनारायण भवानी प्रसाद
,, हिम्मतराय घासीराम
,, हरनारायण मूलचन्द

दालके व्यापारी

मेसर्स जुहारमल भवानीराम
,, फूलचन्द रामदयाल
,, बन्सीधर भगवानदास
,, बिहारीलाल श्यामलाल

गुड़-शक्करके व्यापारी

मेसर्स रामसुन्दर बृजलाल (गुड़)
,, छितरमल रामदयाल (शक्कर)
,, चेतराम हरगोविन्द ,,
,, झंडूराम गुलाबचन्द गुड़
,, परमानन्द छेदालाल (शक्कर)
,, मूलचन्द अयोध्याप्रसाद ,,
,, मूलचन्द देवीराम ,,
,, हरनारायण भवानीप्रसाद ,,
,, हरप्रसाद नेतराम ,,
,, अगनाराम भोगीलाल ,,

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स गिरवरलाल मक्खनलाल
,, गंगाप्रसाद बिरदीचन्द
,, द्वारका केदार
,, देवीसहाय लल्लामल
,, मूलचन्द शालिग्राम
,, हरप्रसाद फतेराम
,, हरप्रसाद नेतराम

सूतके व्यापारी

मेसर्स छिद्दीलाल रामलाल
,, गंगाराम देवीराम

मेसर्स भागीरथ मथुराप्रसाद
,, शिवसहाय विश्वम्भरनाथ

घीके व्यापारी

मेसर्स छितरमल रामदयाल
,, बिरदीचन्द बालमुकुन्द
,, मूलचंद नेमीचन्द
,, शोभाराम गुलाबचन्द
,, सदासुख नारायणदास
,, शिवप्रसाद लक्ष्मीनारायण

मिट्टीके तेल बेचनेवाले

मेसर्स नाथूराम कुंवरपाल
,, फकीरचन्द हरनारायण

मेसर्स बिन्द्रावन शंकरलाल
,, हीरालाल मोतीलाल

लोहेके व्यापारी

मेसर्स जवाहरलाल नाथूराम
,, मोतीराम तेजसिंह
,, हरप्रसाद लादूराम

जनरल मरचेन्ट्स

मेसर्स केशीराम मनीराम
,, चन्दनलाल रामप्रसाद
,, प्यारेलाल रामस्वरूप
,, रामचन्द्र हरप्रसाद
,, शालिग्राम फतेचन्द
,, शालिग्राम दुरगाप्रसाद

भिण्ड

भिंड गवालियर स्टेटका एक जिला है। यह गवालियरके उत्तर पूर्वमें स्थित है। गवालियर लाईट रेल्वे यहीं तक जाती है। यह गवालियरसे ५३ मीलकी दूरीपर है। यहांसे इटावा २२ मीलके करीब रह जाता है। इसका इटावेके साथ गहरा व्यापारिक सम्बन्ध है। यहांसे इटावा तक मोटर सर्विस रन करती है। गवालियर स्टेटके उत्तरीय हिस्सेकी वस्तुओंका एक्सपोर्ट करनेके लिये एक मात्र यही मंडी है। यहांसे बहुत बड़ी तादादमें कपास बाहर जाता है। बाजरा, चना और दालका भी बम्बईकी ओर बहुत एक्सपोर्ट होता है। यहांका घी अपनी अच्छी क्वालिटी होनेकी वजहसे कलकत्तेके मार्केटमें पाया जाता है। अलसी और अरण्डीका एक्सपोर्ट भी यहांसे बहुत बड़ी तादादमें होता है।

यहां व्यापारियोंके सुभीते, व्यापारियोंके आपसमें होनेवाले व्यापारिक झगड़ोंको निपटाने और व्यापारिक उन्नतिके लिये एक मंडी कमेटी स्थापित है।

यहांसे पास ही मेघपुरा नामक स्थानमें चैत्र मासमें हर साल एक पशुओंका मेला लगता है।

जिनिंग फेक्टरियां

(१) जमनादास शिवप्रताप जिनिंग फेक्टरी
(२) नजरअली मूसाभाई ,, ,,
(३) प्यारेलाल अयोध्याप्रसाद ,, ,,
(४) श्रीराम सीताराम ,, ,,
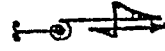
प्रेसिंग फेक्टरियां

(१) नजरअली मूसाभाई काटनप्रेस
(२) श्रीराम सीताराम काटनप्रेस

आइल मिल

जमनादास शिवप्रताप आईल मिल

सन् १९२५ में यहांसे एक्सपोर्ट तथा इम्पोर्ट होनेवाले मालकी सूची

आनेवाला माल

नाम	वजन मन	मूल्य रुपया
चावल	१७४६३	...
गुड़	२८४४०	...
पीतल	...	१२५२३
कपड़ा	...	२२५१६२
मरर्चेंडाईस	...	२१५२४

जानेवाला माल

नाम	वजन मन	मूल्य
मूङ्ग	३७६६०	...
अरहर	१४५८४०	...
चना	१५३२७	...
बाजरा	६६०७	...
सरसों	१३८७५	...
अलसी	१७०४२	...
घी	३६८३	...
रुई	८७५१	...

मेसर्स गोवर्धनदास श्रीराम

इस फर्मके संचालकोंका मूल निवास स्थान इटावा यू० पी० है। आप अग्रवाल जातिके हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब २० वर्ष हुए होंगे। इसके स्थापक सेठ गोवर्धनदासजी हैं। आपके पांच पुत्र हैं। जिनमेंसे सबसे बड़े पुत्र इटावा रहते हैं। शेष सब यहीं रहते हैं। वर्तमानमें आप सब लोग इस फर्मके मालिक हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

भिंड—मेसर्स गोवर्धनदास श्रीराम T. A. Babu यहां गल्ला, कपड़ा आदिका व्यापार होता है। आढ़तका काम भी यहां होता है।

मेसर्स जमनादास शिवप्रताप धूत

इस फर्मके मालिकका निवास स्थान कुचामनरोड है। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। आपकी कई स्थानोंपर फर्में हैं। जिनका विशेष विवरण कुचामन रोडके पोर्शनमें दिया गया है। यहां मुनीम जगन्नाथजी ब्राह्मण कार्य करते हैं।

यहां आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

भिंड—जमनादास शिवप्रताप—T. A Dhut—यहां पर बैंकिंग, हुण्डी चिट्ठी तथा रुईका व्यापार होता है। गल्लेका व्यापार तथा आढ़तका काम भी यह फर्म करती है। यहां इस फर्मकी ओरसे एक जिनिंग फ़ेक्टरी और आईल मिल चल रही है। इस आईल मिलका तेल झरिया लखनऊ आदि स्थानोंपर कुछ विशेष रेटपर बिकता है।

मेसर्स डाह्याभाई चुन्नीलाल

इस फर्मके मालिक बड़नगर (बड़ौदा) के रहनेवाले हैं। आपकी जाति पटेल है। इस फर्मका स्थापित हुए करीब दश वर्ष हुए होंगे। इसका हेड आफिस सीतापुर है। इसके स्थापक सेठ दामोदर दासजी थे। आपका देहावसान हो चुका है। आपके दो पुत्र हैं। सेठ डाह्यालाल भाई और सेठ चुन्नीलाल भाई। आप दोनों ही इस समय इस फर्ममें संचालक हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सीतापुर—हे० आ० मेसर्स डाह्याभाई चुन्नीलाल T. A Damodardass यहां गुड़, अरहर और गल्लेका व्यवसाय होता है। आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

भिंड—मेसर्स डाह्याभाई चुन्नीलाल—T. A. Damodardass—यहां गल्ले तथा तिलहनकी आढ़त का काम होता है।

बड़नगर (बड़ौदा) पटेल पुरुषोत्तमदास सांकलचन्द—इस स्थानपर गल्ला तेल और शीडकी आढ़तका काम होता है।

मेसर्स लेखराज जमनादास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान गवालियर है। अतएव आपका विशेष परिचय वहीं दिया गया है। यहां आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

भिंड—मेसर्स लेखराज जमनादास—यहां गल्ला, तिलहन और शक्करका व्यापार होता हैं। आढ़तका काम भी बहुत होता हैं।

मेसर्स हजारीलाल श्रीराम

इस फर्मके स्थापक सेठ हजारीलालजी हैं। यहां इस फर्मको स्थापित हुए २ वर्ष हुए। आप अग्रवाल जातिके हैं आपका निवास स्थान लश्कर है। आप करीब २ यहीं रहते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

भिंड—हजारीलाल श्रीराम T. A. lashakarwala यहां गल्ला तथा तिलहनका व्यापार और आढ़तका काम होता है। सरकारी मिलिटरीका काम भी यहां होता है। यहां आपको दालकी फेक्टरी हैं।

लश्कर—रामप्रसाद लालचन्द सराफा T. A. Ram यहां चांदी सोनेका काम होता है। जेवर भी तैय्यार मिलते हैं।

लश्कर—गौरीमल रामचन्द्र जनरलगंज—यहां गल्लेकी खरीदी बिक्री तथा आढ़तका काम होता है।

लश्कर—मुन्शी माधवप्रसाद अग्रवाल यहां गल्लेका व्यापार एवम् घी की खरीदीका काम होता है।

मेसर्स शिवप्रसाद रामजीवन

इस फर्मके दो साझीदार है। आप दोनोंहीका रहना गवालियर है। आप अग्रवाल जातिके हैं। आपका विशेष परिचय वहां अलग २ नामोंसे दिया गया है। यहां आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भिंड—मेसर्स शिवप्रसाद रामजीवन—यहां गल्ला तथा घीकी खरीदी बिक्री और आढ़तका काम होता है।

बैंकर्स

मेसर्स अयोध्याप्रसाद बांकेलाल
,, कुंवरपाल गुलजारीलाल
,, बिन्द्राबन लछमनदास

ग्रेन मरचेंट्स एण्ड, एजंट

मेसर्स गोर्धनदास श्रीराम
,, जमनादास शिवप्रताप
,, डाह्याभाई चुन्नीलाल
,, दुर्लभदास आनन्दजी
,, मनरखलाल छौंकोलाल
,, रामदयाल रघुलाल
,, लेखराज जमनादास
,, शिवप्रसाद रामजीवन
,, हजारीलाल श्रीराम

काटन मरचेन्ट्स

मेसर्स जमनादास शिवप्रताप
,, नज़र अली मूसाभाई
,, श्रीराम सीताराम

शक्करके व्यापारी

मेसर्स रामदयाल राधेलाल
,, राजाराम चम्पालाल
,, लेखराज जमनादास
,, शिवप्रसाद रामजीवन

क्लॉथ मरचेंट्स

मेसर्स गुलजारीलाल लखमीचन्द
,, पूरनमल रामचन्द्र
,, मनीराम उल्फतराय
,, माधोराम रघुनाथप्रसाद
,, रामजीवन ज्वालाप्रसाद
,, रघुनाथ प्रसाद लक्ष्मीचन्द
,, लक्ष्मीचन्द गणेशीलाल
,, सुन्दरलाल बद्रीप्रसाद
,, हूबलाल बिहारीलाल

घासलेट तेलके व्यापारी

मेसर्स कन्हैयालाल प्यारेलाल
,, दुर्गाप्रसाद गिरवरलाल

लोहा पीतलके व्यापारी

मेसर्स कन्हैयालाल प्यारेलाल (लोह)
,, गनपतलाल सिद्धगोपाल (पीतल)
,, नाथूराम नीनामल (लोह)
,, मिट्ठूलाल चन्द्रभान (पीतल)
,, रामलाल हीरालाल (पीतल)

सूतके व्यापारी

मेसर्स रामसहाय ज्वालाप्रसाद

शिवपुरी

शिवपुरी, गवालियर स्टेट रेलवेके शिवपुरी गवालियर ब्रेंचका अन्तिम स्टेशन है। यहांसे शिवपुरी गांव करीब आधा मील है। चारों ओर सुन्दर पहाड़ोंसे घिरा हुआ होनेकी वजहसे यहाँकी आवहवा बहुतही स्वास्थ्यप्रद और लाभकारी है। यही कारण है कि स्वर्गीय महाराजा माधवराव का यह स्थान बड़ा प्रियपात्र रहा। वे हमेशा एक सालमें करीब ६ माह यहीं रहते थे। इस शहरकी बसावट इतनी साफ सुथरी और सुन्दर है, कि देखते ही बनती है। महाराजाका प्रिय पात्र स्थान होनेसे उन्होंने यहां और गवालियरके बीच बेतारके तार लगवाये, इलेक्ट्रिक लाईटका प्रबंध करवाया तथा कई महल, बाग बगीचे और तालाबोंका निर्माण करवाया।

संध्याके समय यदि कोई व्यक्ति घूमनेके लिये तालाबकी ओर निकल जाय, तो उसे मालूम होगा कि वह एक इन्द्रपुरीमें प्रवेश कर रहा है। चारों ओर इलेक्ट्रिक लाईटकी रोशनी उसकी आंखोंमें चकाचौंधी पैदा करदेगी। बिजलीके उस प्रकाशमें उसे एक ओर महराजाके महल, दूसरी ओर तालाबोंका सुन्दर दृश्य और उनमें बिचरते हुए सुन्दर बजरे और तीसरी ओर गवालियरके रईसोंके बंगले बड़े ही भले मालूम होंगे कहनेका मतलब यह है कि यह शहर गवालियर स्टेटमें बहुत सुन्दर और नवीन ढंगका एक ही मालूम होता है।

व्यापारिक दृष्टिसे भी इस स्थानका अच्छा महत्त्व है। इसका कारण यह है कि इसके चारों ओर पहाड़ी स्थान आजानेसे और कोई दूसरा शहर पास न होनेसे आस पासके कई मील तकके देहातोंमें यहींसे माल जाता है और वहांकी पैदाईशका माल भी इसी स्थान द्वारा एक्सपोर्ट होता है। यहांसे एक्सपोर्ट होनेवाली वस्तुओंमें विशेषकर गोंद, शहद, मोम आदि जंगली पदार्थ हैं।

व्यापारियोंकी सुभीताके लिये यहांसे गुना और झांसी तक मोटरें रन करती हैं।

शिवपुरीके दर्शनीय स्थान—महाराजाकी छतरी, सख्यासागर, महाराजाके महल, माधवलेक भागोरा टैंक तथा जंगलके कई दृश्य आदि २।

———

शिवपुरी मंडीसे एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट होनेवाले मालका सन् १९२५ का विवरण इस, प्रकार है।

आनेवाला माल

नाम	वजन	मूल्य
चांवल	८३२ मन	...
गुड़	१६२०० ,,	...
तेल घासलेट	१०३१० पीपे	...
खोपरा	३०६६ मन	...
कम्बल	...	३५१७ रु०
तांबा पीतल टीन	...	६५४४ रु०
लोहेका सामान	...	२०६०४ रु०
कपड़ा	...	१९८१६६ रु०
सिल्की कपड़ा	...	२८१६ रु०
ऊनी कपड़ा	...	२८६६ रु०
सूत	६५६ मन	...
जूटके थेले	१०५५ ,,	...
लकड़ीका सामान	१०११ ,,	...
मरचेंडाईज़	...	२१२३८
माचिस	...	३६४६

जानेवाला माल

नाम	वजन मन	मूल्य
गेहूं	१२९२४	...
उर्द	२६७५	...
मूंग	१७०१२	...
तुवर	३३२८	...
घी	७२३५	...
सरसों	४८६	..
तिल	६७०	...
अलसी	४२७८	...
ग्राउंड नट	१४२३५	...
तिल्लीका तेल	१५४६	...
अजवान	६२२	...
जीरा सफेद	१३४१	...
गोंद	३१७२	...
कत्था	५१६८	...
लाख	१८६	...
मोम	१३६	...
शहद	२१२	...
कोयला	५२४६	...

मेसर्स गणेशराम गोपीराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ गोपीरामजी हैं। आप अग्रवाल जातिके हैं। आपका मूल निवास निवाणा (जयपुर) का है। आपको यहां आये करीब ६० वर्ष हुए होंगे। यह फर्म सेठ गणेश रामजी द्वारा स्थापित हुई थी। इसकी उन्नति भी उन्हींके हाथोंसे हुई। आपने यहां एक शिवजीका मन्दिर कुंआ और बगीचा बनवाया था। सेठ गोपीरामजीके तीन पुत्रोंमेंसे एक श्रीयुत बालकिशनजी आगरा दूकानका संचालन करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

शिवपुरी—गणेशराम गोपीराम---यहां हुंडी, चिट्ठी लेनदेन तथा आढ़तका काम होता है।

आगरा—गोपीलाल बालकिशन, बेलनगंज-- यहां हुंडी चिट्ठी और कमीशन एजंसीका काम होता है।

मेसर्स पीरचन्द फूलचन्द

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ टोडरमलजी एवम् सेठ सुपार्शमलजी हैं। आप ओसवाल श्वेताम्बर सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान मेड़ता (मारवाड़) का है। इस फर्मको यहां स्थापित हुए बहुत वर्ष होगये। इसके स्थापक सेठ फूलचन्दजी थे। आपके हाथोंसे इसकी अच्छी उन्नति हुई। आपके पश्चात् क्रमशः, जेठमलजी, सोनमलजी, और भीखमचन्दजी हुए। आप लोगोंने भी इस फर्मकी अच्छी प्रतिष्ठा बढ़ाई। वर्तमान मालिक सेठ टोडरमलजी स्टेटकी मजलिसे आमके मेम्बर हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

शिवपुरी--पीरचन्द फूलचन्द-यहां सराफी हुंडी, चिट्ठी और कमीशन एजंसीका काम होता है।

शिवपुरी---टोडरमल सुपार्शमल--इस नामसे स्टेटकी ठेकेदारीका काम होता है॥

लश्कर--पीरचन्द फूलचन्द सराफ़ा--यहां हुंडी, चिट्ठीका काम होता है।

भिंड--पीरचंद फूलचंद--यहां सराफी तथा हुंडी चिट्ठीका काम होता है यहां यह फर्म स्टेटकी खजांची है।

मेसर्स भगवानदास शिवदास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मेड़ताका है। आपको यहां आये करीब १५० वर्ष हुए। इस फर्मके स्थापक सेठ शिवदासजी थे। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ गुलाबचंदजी हुए। आपने इस फर्मकी अच्छी उन्नति की। आपने एक धर्मशाला बनवाई तथा एक जैन मन्दिरकी प्रतिष्ठा करवाई। इसके स्थाई प्रबन्धके हेतु आपने २ मकान भी अलग कर दिये हैं। आपके पुत्र सेठ-

कानमलजी हुए। वर्तमानमें आपही इस फर्मके मालिक हैं। आप ओसवाल सज्जन हैं। आपके इन्दमलजी नामक एक पुत्र हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

शिवपुरी---भगवानदास शिवदास----सराफ़ी, लेनदेन, कपड़ेका व्यापार और कमीशन एजंसीका काम होता है।

शिवपुरी--नथमल इन्द्रमल –यहां चांदी सोनेका काम होता है। जेवर भी तैय्यार मिलते हैं या आर्डरपर बनाए जाते हैं।

मेसर्स ज्ञानमल केसरीचन्द

इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ शिवचंदजी एवम् सेठ नेमीचंदजी हैं। आप ओसवाल सज्जन हैं। आपका आदि निवास स्थान मेड़तेका है। यहां इस फर्मको स्थापित हुए करीब ६० वर्ष हुए होंगे। इसके स्थापक सेठ ज्ञानमलजी हैं। आपके पश्चात इस फर्मकी उन्नति आपके पुत्र सेठ केशरीचन्दजीने की। आपके पश्चात आपके पुत्र सेठ लालचन्दजी हुए। आपके हाथोंसे भी इस फर्मकी बहुत उन्नति हुई। यह फर्म यहांके समाजमें अच्छी मानी जाती है। इसके वर्तमान मालिक सेठ लालचंदजीके पुत्र हैं।

सेठ नेमीचन्दजी स्थानीय ऑनरेरी मेजिस्ट्रेट हैं। तथा बोर्ड साहुकारान और कॉपरेटिव्ह बैंकके मेम्बर हैं। सेठ शिवचंदजी बड़े सरल और मितभाषी हैं। दरबारमें आपका अच्छा सम्मान है। आपको कई वार दरबारसे पोशाकें इनाम मिली हैं। आपका ध्यान दान-धर्मकी ओर भी है। आपने ब्रह्मचर्याश्रम उदयपुर और आगरा अनाथालयमें अच्छी सहायता प्रदान की है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

शिवपुरी – मेसर्स ज्ञानमल केशरीचन्द—इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी तथा सराफी और कमीशन एजंसीका काम होता है। आपकी बम्बई, कलकत्ता आगरा आदि स्थानोंपर एजंसियां हैं।

बैंकर्स

मेसर्स अगरचन्द फूलचन्द
„ अगरचन्द गुलाबचन्द
„ चतुरभुज रामचन्द्र
„ दौलतराम फकीरचन्द
„ पनराज अनराज
„ पीरचन्द फूलचन्द
„ रामचन्द फूलचन्द
„ रामलाल जौहरीलाल
„ स्वरूपचन्द मुरलीधर
„ ज्ञानमल केसरीचन्द

कमीशन एजंट्स

मेसर्स गणेशराम गोपीलाल
,, छितरमल नारायणदास
,, जीवनराम जगन्नाथ
,, जेतराम चोखाराम
,, टिपरचन्द हीरालाल
,, ठाकुरदास प्रहलाददास
,, मीरचन्द फूलचन्द
,, मांगीलाल रामदेव
,, रामप्रसाद छोटमल
,, हनुमंतराम रामनारायण
,, हरदेव शिवसहाय

घी मरचेंट्स

मेसर्स जीवनराम जगन्नाथ
,, छीतरमल नारायणदास
,, हनुमंतराम रामनारायण
,, ज्ञानमल केसरीचंद

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स अगरचन्द फूलचन्द
,, चतुर्भुज रामचन्द्र
,, जमनादास कन्हैयालाल
,, दौलतराम फकीरचन्द
,, पनराज अनराज
,, भीमराज रामचन्द्र
,, बिहारीलाल गोकुलचन्द
,, मन्नालाल छोटमल
,, रामचन्द्र फूलचन्द्र
,, रामकुँवार जेठामल
,, शालिगराम लालीराम
,, हरदेव शिवसहाय

शक्करके व्यापारी

मेसर्स गणेश गोपीलाल
,, गणेशराम कन्हैयालाल
,, चतुर्भुज रामचन्द
,, सरुपचन्द मुरलीधर

क्लाथ मरचेंट्स

मेसर्स औंकारदास मुरलीधर
,, गोरेलाल श्रीनारायण
,, जमनादास चुन्नीलाल
,, जीवनराम बन्शीधर
,, बलराम खूबचंद
,, वृषभान रामदयाल
,, भगवानदास शिवदास
,, मोतीलाल ज्वालासहाय
,, रतनलाल गनपतराम
,, सुजानमल सुभलाल
,, हजारीमल सोहनलाल

घासलेट-तेलके व्यापारी

मेसर्स चतुरभुज रामचन्द्र
,, लछमनदास भगवानदास

ताम्बा पीतल और लोहेके व्यापारी

मेसर्स गणेशराम शिवनारायण
सेठ श्यामलाल लोहिया
मेसर्स ज्ञानीराम मामराज

बड़नगर

बी० बी० सी० आई० रेलवेके खण्डवा रतलाम सेक्शनके बीच बड़नगर स्टेशनसे १मीलकी दूरी पर बसा हुआ गवालियर स्टेटका यह एक अच्छा कसबा है। यह स्थान बंबईसे ४३७ और इन्दौरसे ४५ मील दूर है। इस स्थानसे उज्जैन तथा बदनावर तक सड़कें गयी हैं। यह स्थान तमाखू और गेहूंके व्यापारके लिये बहुत मशहूर है। इस कस्बेके आसपास करीब २ लाख रुपये सालानाकी काली तमाखू होती है, जो निखालिस (कोरी) और गुड़ मिलाकर दोनों प्रकारसे बाहर भेजी जाती है। तमाखूके अतिरिक्त गेहूं भी यहांसे अच्छी तादादमें बाहर जाता है। यहांके कस्टम ऑफिसको सन् १९२६ में ५६६०८) रु० गेहूंकी निकासीसे आमदनी हुई थी। इस कस्बेमें १९२५ में आनेवाले तथा जानेवाले मालके आँकड़े इस प्रकार हैं:—

आनेवाला माल

केरोसिन तेल	२१४१९ पीपे
पीतल	८५८३)
एल्यूमीनियम	६६३)
लोहा	३१८५८)
वलायती कपड़ा	१४८६७४)
सिल्की माल	२७३०)
इन्दौरी कपड़ा	१९०८२)
इमारती लकड़ी	३०७८०)
माचिस	४५४२)
चमड़ा	१२११०)
तमाखू	२०२६)

जानेवाला माल

गेहूं	१५०९२०	मन
चना	६६६५	मन
कपासिया	२४५६	मन
तिलहन	१००२२	मन
मेथी	६४०	मन
काली तमाखू	६०६५	मन
जुवार	४७९५	मन

इस स्थानपर इम्पीरियल बैंककी सब ब्रांच ऑफिस भीहैं। इस कसबेमें मालवा प्रांतीय दिगम्बर जैन औषधालय नामक एक बहुत बड़ा औषधालय जैन समाजकी ओरसे धमार्थ चल

रहा है। इसकी शाखाएं सैकड़ों स्थानोंपर हैं। उपरोक्त औषधालयके द्वारा केवल पोस्टेज एवं पेकिंग चार्ज लेकर ही औषधियां भेजी जाती हैं। इस औषधालयसे जनताका बहुत उपकार हुआ है।

इस कस्बेमें रूईकी २ जीनिङ्ग फैक्टरियां हैं।

१—खान बहादुर नजरअली अलावक्श जीनिङ्ग फैक्टरी

२—गोविन्दराम नाथूराम जीनिंग फैक्टरी।

इस स्थानके व्यपारियोंका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है

बैंकर्स

मेसर्स श्रीचंद वापूलाल चौधरी

इस दूकानके प्रधान पुरुष सेठ भेरोंदासजी थे। पहिले इस दूकानका नाम भेरोंदास श्रीचन्द पड़ता था। सेठ श्रीचन्दजीके देहावसानके अनन्तर उनके तीन पुत्रोंकी अलग २ तीन शाखाएं हो गईं (१) श्रीचन्द वापूलाल (२) श्रीचन्द कस्तूरचन्द और (३) श्रीचन्द हजारीमल यहां यह फर्म बहुत प्रतिष्ठित तथा पुरानी मानी जाती हैं। यह फर्म यहां अनुमान २०० वर्षों से अधिक पुरानी है। इस समय इस फर्मका सञ्चालन श्री छगनलालजी करते हैं। आपके छोटे भाई श्रीकनकमलजी श्रीसोभागमलजी, श्रीचन्दनमलजी तथा श्रीलालचन्दजी हैं। इस समय श्री-कनकमलजी मेसर्स श्रीचन्द हजारीमलके यहां दत्तक चले गये है। इस दुकानकी ओरसे ५० हजारसे अधिक की लागत लगाकर एक धर्मादा दूकान खोली गई है। जिसकी आमदनीसे मन्दिर, कन्या पाठशाला, महिला पाठशाला आदि संस्थाएं चलतो हैं। श्रीयुत छगनलालजी गवालियर स्टेट की मजलिसे-आम तथा उज्जैनके डिस्ट्रिक्ट वोर्डके मेम्बर हैं। स्थानीय मंडी कमेटीके आप चौधरी हैं और सरकारी कन्याधर्मवर्द्धनी सभाके आप वाइस प्रेसिडेण्ट हैं। आपकी खास दुकान बड़नगर ही में है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बड़नगर—मेसर्स श्रीचन्द वापूलाल चौधरी-इस दुकान पर गल्ला, आढ़त, हुण्डी चिट्ठी तथा आसामी लेन देनका व्यापार होता है।

मेसर्स श्रीचंद हजारीमल

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ कनकमलजी ओसवाल जातिके सज्जन हैं। आप सेठ छगनलालजीके छोटे भाई हैं, तथा संवत् १९७२ में अपने काका सेठ हजारीमलजीके यहां गोदी लाये गये हैं। यह फर्म भी बड़नगरमें अच्छी मशहूर और पुरानी मानी जाती है।

सेठ कनकमलजी सुधरे हुए विचारोंके शिक्षित सज्जन हैं। आप संस्कृतके अच्छे ज्ञाता हैं। आपके प्राइवेट वाचनालयमें पुस्तकोंका अच्छा संग्रह है। आप स्थानीय कन्यापाठशाला तथा जैन पाठशालाके संचालक हैं। विद्यार्थियोंसे आपको विशेष स्नेह रहता है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स श्रीचन्द हजारीमल वड़नगर—इस दुकान पर हुंडी, चिट्ठी, बैंकिंग तथा असामी लेन-देन तथा गल्लेका काम होता है।

काटन मरचेंट्स

मेसर्स खानअली अलावक्स

इस फर्मकी यहां पर एक जीनिंग फैक्टरी है। उज्जैनकी नजर अली मिलके मालिक सेठ लुकमान भाई इस फर्मके मालिक हैं। आपका पूरा परिचय उज्जैनमें ८१ पृष्टमें दिया गया है।

मेसर्स गोविन्दराम नाथूराम

इस फर्मका हेड आफिस उज्जैनमें है। यहां आपकी एक जीनिंग फैक्टरी है तथा दुकान पर हुण्डी, चिट्ठी, आढ़त रूई और कमीशनका काम होता है। इस दुकानका पूरा परिचय उज्जैनमें पृष्ट ६४ में दिया गया है।

बैङ्कर्स

इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया (सबब्रांच ऑफिस)
मेसर्स गणेशदास किशनाजी
„ श्रीचन्द बाबूलाल
„ श्रीचन्द हजारीलाल

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स केशोराम शंकरलाल
„ गंगाराम वेनाराम
„ गोवाजी रूपचंद
„ ताराचद लालचंद
„ नारायण वालाराम
„ मगनीराम अबजी
„ श्रीराम भेरोंलाल

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स अम्बालाल महासुख
„ जयंतीलाल हिम्मतलाल
„ पुरुषोत्तम हरगोविंद
„ वरदीचंद चम्पालाल
„ रतनलाल चम्पालाल
„ हजारीलाल कनकमल

चांदी सोनेके व्यापारी

मेसर्स औंकारजी हरीभाई
„ रूपचंद अमरचन्द

किरानेके व्यापारी

मेसर्स ईसा भाई इस्माइलजी
„ गुलामहुसेन दाउदभाई
„ जसराज मूलचन्द
„ थावरजी भोलाराम
„ नजरअली महम्मदअली
„ पूनमचन्द बालमुकुन्द
„ रामदयाल पन्नालाल

बर्तनोंके व्यापारी

मेसर्स धूलजी बापूलाल
„ बरदीचन्द मिश्रीलाल

कमीशन एजंट

मेसर्स कल्याणमल छगनलाल
„ गोकुलचन्द मथुरालाल
„ बरदीचन्द गुलजारीलाल
„ रतनलाल अम्बालाल

काली तमाखूके व्यापारी

मेसर्स केशौराम कन्हैयालाल
„ बेनीराम रामनारायण

मुरार

मुरार, गवालियर और लश्करसे तीन मीलकी दूरीपर बसा हुआ है। यह एक छोटा सा और व्यापारिक स्थान है। यहांके व्यापारका सम्बन्ध गवालियर और लश्करसे इतना अधिक है, कि लश्कर गवालियर और मुरार मिलकर एक ही शहर मालूम होता है। सैकड़ों व्यापारी रोजाना व्यापार करनेके उद्देश्यसे गवालियर और लश्करसे यहां आते हैं तथा यहांके व्यापारी वहां जाते हैं। यहां आनेके सुभीतेके लिये जी० एल० आर० रेल्वेकी एक लाईन लश्करसे सीधी यहांतक आती है। तथा यहांसे वापस लौट जाती है। तीनों शहरोंमें बहुत कम अन्तर होनेसे यहां बने हुए हैं, कई कारखाने गवालियरके कारखानोंके नामसे मशहूर हैं।

यह मण्डी विशेषकर गल्ले तथा घीके व्यापार लिये मशहूर है। यहांसे हजारों मन गल्ला तथा घी दिसावरोंमें एक्सपोर्ट होता है। यहांके व्यापारी जी० एल० आरके मुरार स्टेशनसे कहीं भी माल भेज सकते हैं। पहले उन्हें जी० आई० पी० रेल्वेके गवालियर नामक स्टेशनसे माल भेजना पड़ता था।

यहां निवास करनेवाले व्यापारियोंका परिचय निम्न प्रकार है:—

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स रामलाल हजारीमल डोसा

इस फर्मके मालिक मूलनिवासी, जूनी केंकड़ी (जयपुर-स्टेट)के हैं। सेठ रामलालजीने यहां आकर गल्लेका व्यापार शुरू किया। इस दुकानको मुरारमें आए करीव ७२ वर्ष हुए। इसके पूर्व १० वर्ष तक यह दुकान शिवपुरीमें थी। सेठ रामलालजी के वाद सेठ हजारीलाल जीने इस दुकानके व्यापारको विशेष रूपसे बढ़ाया। आपके बाद वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ गुलाबचन्दजी हैं। आपने मुरारसे एक मील दूरीपर एक धर्मशाला बनवाई है, उसमें एक मंदिर भी है। इसके अतिरिक्त जैनियोंके तीर्थ-स्थान सोनागिरीजीमें भी एक धर्मशाला और मन्दिर आपकी ओरसे बनवाया गया है। उसके स्थायी प्रबन्धके लिऐ आपने तेरह मकान मुरारमें दिये हैं, जिनकी आयसे इनका खर्च चलता है।

सेठ गुलाबचन्द जी स्थानीय मण्डी कमेटीके चौधरी तथा पंचायत बोर्डके मेम्बर हैं। आपके पुत्र श्री गनेशीलालजी भी व्यापारमें सहयोग लेते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मुरार (गवालियर) रामलाल हजारीमल—लेन देन तथा स्थायी मिल्कियतका काम होता हैं।

(२) मुरार—रामजीदास गुलाबचन्द—इस दुकानपर घी और गल्लेकी आढतका तथा घरू व्यापार होता है। इस फर्ममें आपका साझा है।

(३) मुरार—रामजीदास गुलाबचन्द—यहां भी गल्ला और घीका व्यापार और आढतका काम होता है।

इसके अतिरिक्त शिवपुरके फ्लौवर मिल और आँइल मिलमें भी आपका साझा है।

कंट्राक्टर्स

मेसर्स प्रेमराज लच्मीचंद

इस फर्मके मालिक संवत् १९२० में हरसोला (जोधपुर) से यहां आये थे। इस दुकानको सेठ प्रेमराजजीने स्थापित किया। आप बाल्यावस्थामें ही केवल १२ वर्षकी वयमें यहां आगये थे। धीरे धीरे इस फर्मने अच्छी तरक्की की। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ

प्रेमराजजीके पुत्र सेठ लक्ष्मीचंदजी हैं। आपके पुत्र श्री संतोषचन्द्रजी पढ़ रहे हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुरार—प्रेमराज लक्ष्मीचंद—इस फर्मपर ठेकेदारी, तथा लेनदेनका काम होता है। आपका खास काम ठेकेदारी है।

मेसर्स विरदीचंद कन्हैयालाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीबिरदीचंदजी हैं। आपके ५ पुत्र हैं जिनमें बड़े जयपुरमें दलालीका काम करते हैं। एक पुत्र विलायतमें डाक्टरीकी शिक्षा पा रहे हैं और एक तहसीलदार हैं आपकी फर्मपर लेनदेन और ठेकेदारी काम होता है।

मेसर्स मथुरादास रघुनाथप्रसाद

इस फर्मके मालिक मूल निवासी सरहिन्द (पंजाब) के हैं। इनको यहां आये करीब १५० वर्ष हुए हैं। इस फर्मके पूर्वज इंगले साहबके साथ फौजमें भरती होकर आये थे। बहुत समय बाद लाला साधूरामजीने लश्करमें ठेकेदारीका काम शुरू किया। आप ब्रिटिश गव्हर्नमेंटके कमसेरियट गुमास्ते भी रहेते थे। आपके ६ पुत्र हैं जिनके नाम शिवबख्शरामजी, गोविंदनारायणजी वेनीप्रसादजी मथुराप्रसादजी, (ओवरसियर) रघुनाथप्रसादजी तथा विश्वम्भरनाथजी हैं। बाबू गोविंदनारायणजी कॉटन प्रेस मुरेनाके मैनेजर थे। बाबू वेनीप्रसादजी, रामबागमें हिज हाइनेसके प्राइवेट सेक्रेटरी रहे, पश्चात् आपने [सन्यास ग्रहण किया। श्रीविश्वम्भरलालजी भिंडमें तहसीलदार हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक श्रीमथुराप्रसादजी और रघुनाथप्रसादजी हैं। श्रीमथुराप्रसादजी मुरार म्युनिसिपैलेटीके सीनियर मेम्बर, और कोन्सोलेशन बोर्ड, मजलिसे आम तथा लश्कर और गवालियरकी म्युनिसिपैलेटीके मेम्बर हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

मुरार—मेसर्स मथुराप्रसाद रघुनाथप्रसाद—यहां लेनदेन, हुण्डी चिट्ठी कंट्राक्टरी और जमीदारीका काम होता है।

मिसर्स मोहनलाल शिवप्रसाद

इस फर्मके मालिक मथुराके निवासी अग्रवाल (गोयल) वैश्य सज्जन हैं। इस फर्मको यहां सेठ शिवप्रसादजीने ९० वर्ष पूर्व स्थापित किया था। आपका गवालियर स्टेटमें अच्छा सम्मान था। आप यहांके अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आप गवालियरकी मजलिसे आम मसालतीबोर्ड, डिस्ट्रिक्ट वोर्ड, साहुकारान बोर्ड, तथा म्युनिसिपल बोर्डके मेम्बर और कोऑपरेटिव्ह बैंकके मैनेजिंग डायरेक्टर थे। आपने स्थानीय कन्याशालाके लिये स्थाई रूपसे ५०) स्कालरशिपका भी प्रबंध किया है। आपने मुरारमें एक धर्मशाला बनवाई है। इस समय इस फर्मके संचालक सेठ शिवप्रसादजीके पुत्र बाबू उंकारनाथजी हैं। आप भी शिक्षित सज्जन हैं। एवं उपरोक्त संस्थाओंमें काम कर चुके हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मुरार—मोहनलाल शिवप्रताप—जमीदारी और ठेकेदारीका बहुत बड़ा काम होता है।

(२) मोरेना—शिवप्रसाद लक्ष्मीनारायण—यहां गल्ले और घीका व्यापार तथा आढतका काम होता है।

(३) भिंड—शिवप्रसाद रामजीवन—यहां गल्ला, घी तथा आढतका व्यापार होता है। इस दुनकामें आपका साझा है।

(४) सबलगढ़—शिवप्रसाद ओंकारनाथ—गल्ले तथा घीकी खरीदी बिक्री और आढ़तका व्यापार होता है।

(५) शिवपुरी—मोहनलाल शिवप्रसाद—यहांपर आपकी शिवप्रसाद ऑइल मिल, आयर्न फाउण्डरी तथा फ्लावर मिल है।

ग्रैन मर्चेंट एण्ड कमीशन एजण्ट

गनेशीलाल देवकरणदास
चिरंजीलाल लक्ष्मीचंद
जौहरीमल कन्हैयालाल
जयसुखराम दुर्गाप्रसाद
नंदराम फूलचंद
पन्नालाल हीरालाल
बलदेवदास मंगलचंद
मंगतूलाल फत्तालाल
मनसुखलाल छीतरमल
मुरलीधर पूरनमल

कन्ट्राक्टर्स

प्रेमराज लक्ष्मीचन्द
बरदीचन्द कन्हैयालाल
मथुराप्रसाद रघुनाथप्रसाद
मोहनलाल शिवप्रसाद

बैङ्कर्स

रामलाल हजारीमल
रामबख्श रामजीवन
हिम्मतराम घासीराम

रामजीदास गुलाबचंद
रामबख्श रामजीवन
राजाराम हरविलास
रामबख्श कन्हैयालाल
सुमाराम बाबूलाल

घीके व्यापारी

पन्नालाल हीरालाल
विर्द्धीचंद श्यामलाल
रतनलाल अनूपचंद
रामजीदास गुलाबचंद
लख्वीराम चिरोंजीलाल

कपड़ेके व्यापारी

खूबचन्द गंगाराम
छिद्दीलाल रघुवरदयाल
धन्नालाल राजाराम
पन्नालाल जगन्नाथ
मोहनलाल नकसीराम
रामबख्श रामजीवन
लादूराम गियासीराम

शक्करके व्यापारी

चुन्नीलाल श्रीलाल
प्रहलाददास मूलचन्द
पन्नालाल मगनलाल
मोतीलाल मुरलीधर
रामबख्श कन्हैयालाल
सीताराम रामचन्द्र

चांदी सोनेके व्यापारी

बिहारीलाल गंगाराम
मथुराप्रसाद गंगाप्रसाद
रामबख्श रामजीवन
श्यामलाल सुखीमल

लोहेके व्यापारी

कुंजीलाल प्यारेलाल
कन्नुमल फुद्दलमल

जनरल मरचेंट

हाजी वली मोहम्मद

स्टेशनर

रामलाल घासीलाल

अत्तार और दवाईवाले

प्रभूदयाल कालीचरण
भूरामल जगन्नाथ
भूरामल खत्री
रामलाल रामसहाय

गुनामंडी

यह स्थान जी० आई० पी० रेलवेके बीना कोटा सेक्शनमें गुना नामक स्टेशनके पास है यह स्थान बीनासे ७४ मील, कोटासे ११४ मील और ग्वालियरसे २३० मीलकी दूरीपर बसा हुआ है। गुना गेहूंका अच्छा बाजार है। यहांसे गेहूं बम्बई जाते हैं। यहांका घी कलकत्तेके बाजारोंमें भेजा जाता है। अलसी, धनिया तथा कत्था भी बहुत बड़ी तादादमें यहांसे बम्बईकी तरफ एक्सपोर्ट किया जाता है। यहां आनेवाले तथा जानेवाले मालका सन् १९२५ का विवरण इस प्रकार है।

आनेवाला माल

नामवस्तु	वजन मन	मूल्य रु०
चावल ...	८७०१	...
गुड़ ...	२२५५८	...
शक्कर ...	१२२७	...
घासलेट तेलके पीपे	२०७९७	...
चिलीज़	८८४	...
नारियल ...	३२५४	...
सुपारी	१४४२	...
पीतलका सामान	८९८०	...
कांसीका सामान	६४५१	...
३० नं०से नीचेकासूत	५०५	...
कपड़ा	...	२१२३१४)
सिल्की कपड़ा	...	१८१२६५)
बारदान (जूट)	४१५३	...
तमाखू	२४१३	...
मरचैंटाइज़ सामान	...	३४८८१)
माचिस	...	५७२९)
बीड़ी	...	२३५५०)

जानेवाला माल

नामवस्तु	वजन मन	मूल्य रु०
गेहूं	६०२५२	...
जुवार	७१७६	...
चना	१५१४८	...
सरसों	२८०४	...
अलसी	७५५२	...
रामतिल्ली	३७०८	...
सिसिमम आईल	२७४८	...
घी	६०९७	...
धनिया	३२७४५	...

बैंकर्स

छगनलाल जतनलाल (ग्रेन, कॉटन क्लॉथ मर्चेण्ट)
पन्नालाल गणेशदास (ग्रेन मर्चेंट)
भवानीराम चन्द्रभान (ग्रेनमर्चेंट)
मुरलीधर धोंकलराम (कॉटन ग्रेन मर्चेंट)
रतनलाल बखतावरमल (कॉटन और घी मरचेंट)
सेवाराम पन्नालाल (कॉटन ग्रेन मर्चेंट)
हिम्मतलाल किशनलाल (ग्रेन मर्चेण्ट)

गल्लेके व्यापारी

कुन्दनमल किशोरीलाल (घीके व्यापारी)
कन्हैयालाल हजारीमल
गंगाराम शिवनाथ (शक्करके व्यापारी)
भीखमचन्द रामप्रताप (कत्थे और घीके व्यापारी)
भगवानदास कस्तूरचन्द
मोनचन्द होतीलाल
मुकुन्दराम इन्दरमल (घीके व्यापारी)
मोहकमचन्द गोकुलचन्द
लछमनजी भगवानदास (घीके व्यापारी)

घीके व्यापारी

चुन्नीलाल छोटेलाल
जोधालाल झुनालाल
तोलाराम गिरिधारी
माणकचन्द हीरालाल

कत्थेके व्यापारी

अबदुलरज्जाक फैजअली
भीखमचन्द रामप्रताप
मुल्लां मुजफ्फरहुसेन (शक्कर, सूत)
वासुदेव मक्खनलाल

कपड़ेके व्यापारी

छोटेलाल गप्पूलाल
जोसेफ मक्का
दीपचन्द बरदीचन्द
भँवरलाल सुगनचन्द
रामानन्द शिवनारायण
सदाराम चुन्नीलाल
हरबखस चुन्नीलाल

शक्करके व्यापारी

खैरातमल भूरेलाल
नंदराम भागचन्द
परमानन्द चिरंजीलाल
मुरलीधर भोलादत्त

सूतके व्यापारी

रणधीरमल जगन्नाथ
लच्छीराम महादेव

केरोसिन आइल मरचेंण्ट

मुल्लां मुजफ्फर हुसेन
लछमनदास भगवानदास

जनरल मर्चेण्ट

ईसुफअली इस्माइलजी
ओंकारलाल जगन्नाथ
दुलीचन्द शंकरदास
देवीलाल कन्हैयालाल

पिछौर मंडी

यह गवालियर स्टेटकी मंडी है। जी० आई० पी० रेल्वेके कोटा बीना सेक्शन पर टकनेरी नामक स्टेशनके पास यह बसी हुई है। यह मंडी गुनासे २७ मील, बीनासे २९ मील और ईसागढ़से २२ मीलकी दूरी पर है।

यह स्थान खासकर गेहूं, मूंग, सरसों और दालके एक्सपोर्टके लिये मशहूर है। घी भी यहांसे कलकत्ता, सी० पी० और पंजाब डिस्ट्रक्टमें बहुत जाता है।

इम्पीरियलबैंकने यहांके व्यापारियोंके सुभीतेके लिये अपनी एक सब ब्रांच खोल रखी है। व्यापारकी तरक्कीके हेतु यहां एक व्यापारिक एसोशिएशन भी स्थापित है।

आनेवाला माल			जानेवाला माल		
नामवस्तु	वजनमन	मूल्य	नामवस्तु	वजन मन	मूल्य
चांवल	१०४०१	...	गेहूं	१००३७१	...
गुड़	१५७७१	...	चना	२०७५६	...
शक्कर	३००	...	जवार	१५१०	...
घास लेट-तेल पीपे	१५७१४	...	मूंग	४१२४	...
खोपरा	३८६५	...	अम्बेरी शीड्स	१६४०	...
पीतलका सामान	...	२६६५)	सरसों	५८२३	...
कांसाका सामान	...	१६००)	अलसी	२७११	...
लोहा	...	११३४६)	राम तिल्ली	१७४७१	...
चद्दरे	...	८१३६)	घी	१२१२६	...
कपड़ा	...	३८७२०३)	कपास	४१२५	...
ट्वीस्ट एण्ड यार्न	...	३१६४)			
मरचेंडाईससामान	...	२०५६९)			
इमारती पत्थर	...	६३५३)			
बारदान	२३५६	...			
तम्बाखू	५६३	...			
इमारती लकड़ी	२२०१	...			
सिमिट	८७२	...			
नागरवेलके पान	१७५	...			

उपरोक्त वर्णित एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट मालका ब्योरा सन् १९२५ का है।

बैंकर्स एण्ड एजण्ट्स

छोगालाल जतनलाल
धनपत चुन्नीलाल
धनपत बृजलाल
पतराम बन्शीधर
मोहनलाल गोकुलचन्द
मदन सराफ
मुंजामल छोगालाल
मूलचन्द पन्नालाल
मानिकचन्द लालाराम

ग्रेन मरचेंट्स

कालूराम हीरालाल
गोपालदास काशीराम
चन्दूलाल चिमनलाल
छोगालाल जतनलाल
धनपत बृजलाल
धन्नालाल चुन्नीलाल
नन्दकिशोर मोतीलाल
पतराम बंशीधर
मोहनलाल लालचन्द
माणिकचन्द हीरालाल
माणिकचन्द लालाराम
मोहनलाल गोकुलचन्द
मूलचन्द पन्नालाल
शिवलाल ताराचन्द

काटन मरचेंट्स

कालूराम हीरालाल
छोगालाल जतनलाल
पन्नाम बंशीधर
माधोप्रसाद
मूलचन्द पन्नालाल

कपड़ेके व्यापारी

आलमचन्द कन्हैयालाल
उदयचन्द पन्नालाल
गुमानचन्द लालचन्द
गौरीशंकर दिक्षित
छोगालाल केशरीचन्द
पन्नालाल धरमचन्द
भागचन्द लालचन्द
मोहनलाल लालचन्द
मोतीलाल गोपीलाल
बृजलाल कुंजलाल
हरचन्द जैन

सूतके व्यापारी

भागचन्द लालचन्द
मोहनलाल लालचन्द
मोतीलाल गोपीलाल

शक्करके व्यापारी

गनी आदमजी
जानकीदास दौलतराम
तुलसीराम गोहाई
देवीप्रसाद मौजीलाल
पन्नालाल धरमचन्द
लक्ष्मीनारायण भगवानदास

तांबा-पीतलके व्यापारी

देवीप्रसाद मौजीलाल
मोतीलाल थामेरा
हजारीलाल दोसर

तेलके व्यापारी

पन्नालाल धरमचन्द
राजाराम पन्नालाल

चंदेरी

चन्देरी ग्वालियर स्टेटकी एक बहुत मशहूर मंडी है। इसका नाम बहुत दूर २ तक फैला हुआ है। यहांसे एक्सपोर्ट होनेवाले मालमें चन्देरीका बना हुआ देशी कपड़ा प्रधान है। यह स्थान कपड़ेमें की जानेवाली कारीगरीके लिये मशहूर है। यहां सोने और चांदीकी पक्की कला-वत्तूके फेन्सी और चित्त आकर्षित करनेवाले सुन्दर बार्डरोंके सुसज्जित जरीन कपड़े बनते हैं। यहांसे इस प्रकारके सुन्दर कपड़ोंका एक्सपोर्ट सालाना करीब १०००००)के होता है। घी भी अच्छी मात्रामें यहांसे बाहर एक्सपोर्ट होता है।

चन्देरी जी० आई० पी० रेलवेकी मेन लाईनके ललितपुर नामक स्टेशनसे २० मीलकी दूरीपर स्थित है।

यहांके व्यापारी वर्गकी सूची इस प्रकार है:—

साहुकार

औंकारलाल काशीप्रसाद
छूकरलाल बालचन्द
पूनमचन्द रतनचन्द
भट्टलाल आलमचन्द
मंगली चतुर्भुज
लक्ष्मीनारायण गोविन्ददास
शिवप्रसाद घनश्यामदास
सुखसिंह परमानन्द
पन्नालाल सिंगजी

ग्रेन मरचेंट्स

चतुर्भुज शंकरलाल
नाथू गुलबोली
पन्नालाल सिंगजी
भगवानदास
रूपनारायण मिश्र
रसूलखां

चन्देरी कपड़े के व्यापारी

उदयचन्द चम्पालाल
गोपालदास वंशीधर
गोरी एण्ड सन्स
चिमनलाल विहारीलाल
चुखेरलाल बालचन्द
परमानन्द पन्नालाल
मन्नीलाल कन्हैयालाल
रामप्रसाद जगन्नाथ
रामवल्लभ लक्ष्मीनारायण

लक्ष्मीनारायण कन्हैयालाल
शिवप्रसाद घनश्यामदास
हीरालाल कन्हैयालाल
हीरालाल चुन्नीलाल

घीके व्यापारी

गोरेलाल
प्यारेलाल सुखसिंह
भगवानदास गोविन्ददास
धन्नालाल पन्नालाल
सुखसिंह परमानंद

सूत और कपड़े के व्यापारी

घनश्यामदास मुरलीधर
दयाचन्द
पूनमचन्द रतनचनद
पूनमचन्द रामनाथ
परमानन्द पन्नालाल
भट्टूलाल आलमचन्द
शंकरलाल गयाप्रसाद
सुखसिंह परमानंद

भेलसा

भेलसा मंडी जी० आई० पी० रेल्वेकी मेल लाईनके भेलसा नामक स्टेशनके पास बसी हुई है। यह ग्वालियरसे २०८ मील और बम्बईसे ५३५ मीलकी दूरी पर है। यहां गेहूं, चना, अलसी, तिल्ली, कपास आदि अधिक मात्रामें पैदा होते हैं। विशेषकर गेहूं और चनाकी पैदावार अधिक होती है।

व्यापारियोंके सुभीतेके लिये इम्पीरियल बैंककी यहां एक ब्रैंच सब आफिस है। यहां व्यापारिक एसोसिएशन और मंडी कमेटी नामक दो संस्थाएं स्थापित हैं। दोनोंका उद्देश्य यहांके व्यापारकी उन्नति करना है।

यहां पूस मासमें बेतवा नदीके तीर चरन तीर्थ नामक स्थानपर सालाना मेला लगता है। इस मेलेमें विशेषकर पशुओंहीकी खरीदी विक्री होती है। सन् १९२५में यहां आने तथा जानेवाले मालका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:—

आनेवाला माल

नाम वस्तु	वजन मन	कीमत
चावल	२०१७२	...
गुड़	२३०२०	...
तेल घास लेट	३०३६०	पीपे
नारियल	२९००	...
सुपारी	४७६६	...
पीतलका सामान	...	३७१२०)
लोहा	...	४६९८४)
कपड़ा	...	४१५३२८)
पेकिंग	८३९४	...
तमाखू	६०२	...
बीड़ी	...	२२६३२)
मरचेंडाईस	...	२२३२०)

जानेवाला माल

नामवस्तु	वजनमन
गेहूं	३८१०७४
चना	२७९८२
अलसी	५५५२
तिल	२९६०
रामतिल्ली	५१७२
बिनोले	६६३५
घी	१६८
अजवान	४७४
रुई	२६४८२
रा काटन	३३६०

चांदी सोनेके व्यपारी

कनकमल धनरूपमल
छोटेराम सिताबराय
धनरूपमल लक्ष्मीचन्द
पन्नालाल खेमचन्द

ग्रेन मरचैंट्स एण्ड कमीशन एजंट

कन्हैयालाल हजारीमल
कल्लूमल सांवलदास
किशनप्रसाद देवीप्रसाद
कन्हैयालाल बालमुकुन्द
कन्हैयालाल रामकिशन
गनीमहमद कच्छी
जमनादास धन्नामल
जगन्नाथ रामचन्द्र
दौलतराम रघुवरदयाल
पोखरदास माणिकचन्द
प्रेमसुख ज्वालादत्त
बिहारीलाल खुशालचन्द
बिरधीचन्द गंगाधर
भैय्यालाल सरदारमल
मालसी कानजी
रामचन्द्र परशुराम
सोमतराय गोपाजी
सोहनलाल मोतीलाल

शक्करके व्यापारी

कन्हैयालाल हजारीमल
गनी महम्मद कच्छी
पोकरदास मणिकचन्द
सोमतराय गोपाजी
सुलेमान इब्राहिम
हाजी युसुफ हाजी करीम

कपड़ेके व्यापारी

ईश्वरदास शङ्करलाल
अयोध्याप्रसाद प्रभुदयाल
कस्तूरचन्द राजमल
गोपालजी मन्नालाल
गनीमहम्मद कच्छी
द्वारकादास मुन्नालाल
नाथूभाई धनजी
रामगोपाल बलराम
लक्ष्मणदास लक्ष्मीचन्द

ताम्बा पीतलके व्यापारी

अमनलाल तुलसीराम
कनछेदी रामलाल
जवाहरलाल हीरालाल
परमानन्द जमनाप्रसाद
मूलचन्द मंगली

लोहेके व्यापारी

खुरशेदअली महम्मद बोहरा
हैदर अली फिदा हुसेन

घासलेट तेलके व्यापारी

अहमद शरीफ
हाजी युसुफ करीम कच्छी
हाजी हबीब हाजी ईसा

जनरल मरचेंटस

इस्माईलजी हसनजी
छक्कनलाल
धन्नालाल मुन्नालाल
जमीन हुसेन मेहरबान हुसेन

बांसोदा—मण्डी

बांसोदा—मण्डी जी० आई० पी० रेलवेकी मेन लाईनपर बांसोदा नामक स्टेशनके पास बसी हुई है। स्टेशनसे वांसोदातक सड़क गई है। यह स्थान कपड़ेकी छपाईके लिये मशहूर है। यहांसे एक्सपोर्ट होनेवाली वस्तुएं, गेहूं, अलसी, कपास और रामतिल्ली हैं। बाहरसे आनेवाली वस्तुएं कपड़ा, मिट्टिकातेल नारियल, पान, नमक, लोहा, पीतल, किराना आदि २ हैं।

यहां नीचे लिखे व्यापारी निवास करते हैं।

बैंकर्स

सेठ बालमुकुन्द गुलाबचन्द
" मालसी कानजी
" लक्ष्मीचन्द लालचन्द
" शंकरलाल तुलसीनारायण

गल्लेके व्यापारी

सेठ कोमलप्रसाद शिवचरण
" गुलाबचन्द रिखबदास
" गोविन्दजी आनन्दजी
" दीवानचन्द ज्ञानप्रकाश
" नथमल हजारीलाल
" नन्दलाल मिट्ठूलाल
" फूलचन्द गुलाबचन्द
" बलदेवसिंह हरनामसिंह
" भंवरलाल गोपूलाल
" बिहारीलाल सूरजमल
" मन्नालाल रामप्रताप
" मालसी कानजी
" रतनसी पालान
" शिवजी पूनशी
" शंकरलाल तुलसीनारायण

कपड़के व्यापारी

सेठ धन्नालाल दुलीचन्द
" मोतीलाल बट्टूलाल
" मूलचन्द खेमचन्द
" मांगीलाल हीरालाल
" हीराचन्द नाथूराम

लोहेके व्यापारी

" हाजी अलांवक्ष
" फकर हुसेन मुहम्मद अली

पीतलके व्यापार

" केशीराम जुगलकिशोर
" गोट्टूलाल मूलजी
" गुलाबचन्द शिखरचन्द
" भगवानदास उत्तमचन्द
" रतिचन्द रामलाल

खाचरोद

खाचरोद गवालियर स्टेटका एक व्यापारिक स्थान है। यह बी० बी० एण्ड० सी० आई० रेलवेकी बड़ी लाईनपर बसा हुआ है। खाचरोद नामक स्टेशनसे यह गांव करीब आधा मील की दूरीपर होगा। स्टेशनसे शहरमें जानेके लिये सवारीका काफी इन्तिजाम है। यह स्थान बम्बईसे ४२५ मील एवम् उज्जैनसे ४३ मीलकी दूरीपर है।

यहांसे कपास, गल्ला आदिका एक्सपोर्ट होता है। यहांकी बनी हुई लाखकी तथा नारियलकी चूड़ियां मशहूर हैं।

यहांसे पास ही करनाखेड़ी नामक स्थानमें हरसाल कार्तिक मासमें एक पशुओंका मेला लगता है।

खाचरोद मंड़ी द्वारा सन् १९२५ में जाने तथा आनेवाले मालका ब्यौरा इस प्रकार है—

आनेवाला माल

नाम वस्तु	वजन मन	मूल्य
चांवल	२३५६	...
गुड़	११२१	...
मिट्टीका तेल	६६८०	पीपे
नारियल	८६४	
ताम्बेका सामान	...	१८५६
पीतलका सामान	...	४६७३)
लोहा	...	५०८३३
कपड़ा	...	७१०६७)
सिलकी कपड़ा	...	३८७२)
तमाखू	१३४०)	...
इमारती लकड़ी	५७१२)	...

जानेवाला माल

नाम वस्तु	वजन मन	मूल्य
गेहूं	३३९७६४	...
ज्वार	१४०५२	...
चना	४२१०	...
अल्सी	८२१	...
बिनोले	१२०३	...
घी	३४१	...
मेथी दाना	२०१८	...
चिलीज़	७४२४	...

बैंकर्स

मेसर्स कालूजी भेराजी
,, घासीजी भैरोलाल
,, दौलतराम जोतिचन्द
,, भगवती पन्नालाल
,, लालचन्द सरूपचन्द
,, सेवाराम सांवतराम
,, सूरजमल प्रतापचन्द

गल्लेके व्यापारी और एजंट

मेसर्स ओंकारजी मायाचन्द
खूबचन्द चांदमल
गुलाबचन्द विलासीराम
देवजी जीतमल
चुन्नीलाल हरवल्लभ
जेटीमल हीरालाल
राजावली अली मोहम्मद
हीराजी रूपचन्द

कॉटन मरचेन्ट्स

घासीराम बद्रीलाल
नजरअली अलाबक्ष
सेवाराम सांवलराम

शक्करके व्यापारी

अलीभाई महम्मदअली
मायाचन्द चांदमल
रसूलजी कादरजी
हीराजी रूपचन्द

कपड़ेके व्यापारी

ओंकारजी रूपचन्द
कमरजी हरकचन्द
कचराजी सरूपचन्द
कुँवरजी हरकचन्द
गुमानजी लक्ष्मीचन्द
चम्पालाल मोतीलाल

लोहा, तांवा, पीतलके व्यापारी

मेसर्स फूलचन्द रूपचन्द
,, महम्मदअली ईसा भाई
लछमनजी गनपत

केरोसिन आइल मरचेन्ट

मेसर्स जोतिचन्द टेकजी
,, नेमजी केसरीमल
,, राजाबाई मुल्ला अब्दुल हुसेन

फरनीचरके व्यापारी

चतुर्भुज पूनाजी
भागीरथ मोती

ड्रगिस्ट

दयाराम सूरजमल
भाजनजी चुन्नीलाल
रूपचन्द बद्री

सोन कच्छ

यह मंडी काली सिंध नदीके तीरपर बसी हुई है। यह इन्दौरसे १४ मील देवाससे १६ मील अस्तासे ३० मील तथा उज्जैनसे ४२ मीलकी दूरीपर हैं। उज्जैनसे एक मोटर सर्विस व्हाया देवास होकर यहां आती है। यहां हर सप्ताह हाट लगता है।

यहांसे कपास, गल्ला, आदि वस्तुएं बाहर जाती है। इस स्थानपर नीचे लिखी जिनिंग फेक्टरियां हैं।

अमरचन्द पन्नालाल जीनिंग फेक्टरी
तिलोकचन्द मोतीलाल ,, ,,

काटन मरचेन्ट्स

अमरचन्द पन्नालाल
काल्रूराम हीरालाल
कपूरचन्द गनपतजी
गोवर्धन भागीरथ
जानकीलाल चतुरभुज
पन्नालाल धन्नालाल
लखमीचन्द हुकुमचन्द
सुखराम दौलतराम

क्लॉथ मरचेंट्स

उदयराम मनीराम
चुन्नीलाल छोगालाल
चतुरभुज जानकीलाल
नारायण जयराम
फूलजी राजाराम
भागीरथ गोवर्धन
मनीराम रिखबदास
सीताराम बागमल

बैंकर्स

मेसर्स काल्रूराम हीरालाल
,, कस्तूरचंद फूलचंद
,, खूबचंद गनपतजी
,, चुन्नीलाल छोगमल
,, जैराम नारायणजी
,, देवचंद हीरालाल
,, नबीखान वजीरखान
,, नाथूराम हीरालाल
,, मन्नालाल मोतीलाल
,, माधोराम लालजी
,, मथुरालाल गणपत
,, रामगोपाल खूबचंद
,, रामबक्ष मोतीलाल
,, लक्ष्मीचंद हुकुमचंद
,, शिवजीराम खूबचंद

बैंकर्स

सदाशिवराम गोविन्दराव
सिक्खराम दौलतराम
सीताराम नन्दलाल
हजारीलाल मन्नालाल
हीरालाल खूबचंद

ग्रेन मरचेण्ट

मेसर्स ओंकारजी काल्रूराम
काल्रूराम बिरदीचन्द
गनपत बाबूलाल
गेंदालाल रूपजी
चम्पाराम मगनीराम
जानकीलाल चतुरभुज
नाथूराम हीरालाल
पन्नालाल फौजमल
माखन मल्लाजी
सेवाराम सूरजमल
साखोराम भोलाजी

शाजापुर

शाजापुर गवालियर स्टेटका एक जिला और इसी नामकी एक मंडी है। यह जिलेका सदर स्थान है। जी आई० पी० रेलवेकी भोपाल-उज्जैनवाली ब्राञ्च लाईनके बेरछा नामक स्टेशनके पास यह बसा हुआ है। यहांकी पैदावार विशेषकर कपास, गेहूं, चना, ज्वार, अलसी आदि है। यहां कपड़ोंकी रंगाई तथा छपाईका काम बहुत होता है। यही यहांकी इण्डस्ट्री है। पगड़ी और डुपट्टा यहांका अच्छा होता है।

यहां मंडी कमेटीके नामसे एक व्यापारिक संस्था स्थापित है। चैत्र माससें हरसाल यहां पशुओंका मेला लगता है।

यहां नीचे लिखी जीनिंग फेक्टरियां हैं—

गंगाशंकर शालिगराम जीनिंग फेक्टरी
शोभाराम मूलचन्द ,,
नजरअली ,,

यहां नीचे लिखे व्यापारी निवास करते हैं—

बैंकर्स

चिन्ताराम आनन्दीलाल
दौलतसिंह बारधन
धर्मचन्द मंगलजी
मोतीचन्द पन्नालाल
मंगलजी लक्ष्मीचन्द
मोतीलाल माणिकलाल
शोभाचन्द कालूराम
विद्यालाल कन्हैयालाल

शक्करके व्यापारी

अलीभाई गुलाम हुसेन

ग्रेन मरचेंट

इब्राहिम भाई फजुल्ला भाई
तुलसीराम जानकीदास
मथुरालाल पूरनमल
सीताराम नथमल
हीरालाल दौलतराम

चांदी सोनेके व्यापारी

ओंकारशा छबीलाचन्द
धनसिंह पूरनमल
पदमसिंह हीरालाल
सूरजमल हंसराज

कपड़े के व्यापारी

छोटमल शिवकिशन
तुलसीराम जानकीदास
नाथूराम सरदारमल
फिदाहुसेन अब्दुला
मंगलजी लखमीचन्द
मूलचन्द हजारीमल
मेहताबसिंह अनंदीलाल
राजमल चम्पालाल
हीरालाल बारदान

कपासके व्यापारी

गंगा शालिगराम
चोथमल शिवकिशोर
जान महम्मद रुस्तमभाई
तुलसीराम जानकीदास
धरमचन्द मंगलजी
नज़रअली अलाबक्ष
मोतीलाल माहाकलान
सीताराम नथमल

जनरल मरचेंट्स

अब्दुलहुसेन गुलाम अली
छगनलाल
फिदाहुसेन करीमभाई
मौजीलाल
यूसुफअली बोहरा
रामलाल हीरालाल
सुलतान भाई

लोहेके व्यापारी

इब्राहिमजी फरजुल्लाभाई
सुलतानभाई
यूसुफ भाई

मिट्टीका तेल

अबुलहुसेन गुलामहुसेन
तैय्यब भाई
सुल्तान भाई

शुजालपूर

यह भी गवालियर स्टेटकी एक अच्छी मंडी है। यह मंडी जी० आई० पी रेल्वेकी भोपाल उज्जैन ब्रेंचपर शुजालपुर नामक स्टेशनसे करीब पौन मीलकी दूरीपर बसी हुई है। यहांसे उज्जैन ६४ मील, भोपाल ५० मील और नरसिंहगढ़ २४ मील है। यहांकी पैदावार गेहूं, कपास, जौ, मकई, जुवार महुआ, चना आदि हैं। इम्पीरियल बैंककी यहांपर एक सब ब्रेंच आफिस खुली हुई है। कपास लोढ़नेके लिये यहां एक नजर अली जीनिंग फेक्टरी भी बनी हुई है।

सन् १९२५ में यहां आने तथा जाने वाले मालका विवरण इस प्रकार है।

आनेवाला

नाम	वजन मन	मूल्य
चांवल	७२२८	...
गुड़	३४४१	...
शक्कर	६००	...
मिट्टीका तेल पीपे	४३९९०	...
सुपारी	१८९६	...
कत्था	२१५	...
पीतलका सामान	...	१६००)
लोहा	...	३६५९५)
कपड़ा	..	१०२५६२)
इन्दौरी कपड़ा	...	१३१९१)
सिरकी	...	२०१६)
बारदान	२५४६	...
तमाखू	१६८६	...
बांस	१४९०	...
मेचिस	...	३०८८)
बीड़ी	...	४५१४)
चाय	...	२१२४)

जानवाला

नाम	वजन मन	मूल्य
गेहूं	४६६४१	...
महुआ	७०४	...
बिनोले	५९५०४	...
धनियां	२५५	..
गोंद	२२८	...
अलसी	४०३	...
चना	१३९२	...
तुवर	१५४६	...
मेथी	१७४	...

साहुकार

आनन्दजी गेला
अब्दुला करीम
जवाहरमल लक्ष्मीनारायण
धनजी खेराज
मगनीराम रामकिशन
मथुरालाल रामकिशन
रामबक्ष कुंवरलाल

रुई और गल्लेके व्यापारी

आनन्दराव तुकाराम
करनसिंह गेला
चिमनलाल मनीलाल
चम्पालाल मनसुखलाल
ताराचन्द घेवरमल
नजरअली अल्लाबक्स
पुरुषोत्तमदास शिवलाल
मगनलाल नथमल
लक्ष्मीनारायण रामकुमार
लक्ष्मीनारायण जोरावरमल
रामसुख फूलचन्द

क्लाथ मरचेंट्स

गोपाल हीरालाल
गोविंदराव नारायण

ड्रगिस्ट

फून्दीलाल ब्रजलाल
मोतीलाल छीतरमल

इमारती लकड़ी

अब्दुल्ला करीम
लक्ष्मीनारायण गोरेमल

शक्करके व्यापारी

अब्दुल्ला करीम
गोविन्दश्यामजी
नूरमहमद दादा

आकोदिया

यह मंडी जी० आई० पी० रेलवेकी भोपाल उज्जैन ब्रेंचपर बसीहुई है। यहांका व्यापार विशेषकर कपास गल्ला आदिका है। यहां दो जिनिंग फेक्टरियां भी हैं। जिनके नाम घासीराम कुंवरजी जीनिंग फेक्टरी और रामलाल गोपाललाल जीनिंग फेक्टरी है। यहांसे सन् १९२५में जाने तथा यहां आनेवाले मालका विवरण निम्न प्रकार है।

आनेवाला माल

नाम	वजन मन	मूल्य रुपया
चांवल	६४३१	...
शक्कर	३५२ मन	...
गुड़	२७८७ मन	...
मिट्टीका तेल	२२५८८ पीपे	...
सुपारी	२८२ मन	...
लोहेका सामान		४५०५६)
जूटके थान	१८५२ मन	...
चूना	४२५२ मन	...
मेचिस	...	२२७२)
बिड़ी	...	२१६३)

जानेवाला माल

नाम	वजन मन
जवार	७६५
गेहूं	४००३
चना	११७८
बिनोले	४७१६२

बैंकर्स एण्ड कमीशन एजेंट्स

उदयराम रामलाल
गोविंदजी कुंवरजी
गणेशदास सूरजमल
चतुर्भुज केशवजी
चांदमल कस्तूरचंद
बद्रीनारायण श्रीनारायण
मगनीराम रामकिशन
हीरालाल किशोरदास
सररूपचंद गांधी

कमीशन एजंट

कानजी देवराज
गजाधर रंगलाल
चॉपसी किशनजी
छोगालाल लक्ष्मीनारायण
द्वारिकादास खेमराज
भूरालाल फूलचन्द
मेघजी डाह्या

ग्रेन मरचेंट्स

उदयराम रामलाल
कानजी देवराज
गजाधर रंगलाल
गोविंदजी कुंवरजी
चॉपसी विशनजी
चतुर्भुज केशवजी
छोगालाल लक्ष्मीनारायण
जगन्नाथ शालिगराम
द्वारिकादास खेमराज
बद्रीनारायण श्रीनारायण
मगनीराम रामकिशन
मोतीलाल फूलचन्द
सरूपचन्द गांधी
हीरालाल किशोरदास

काटन मरचेंट्स

उदयराम रामलाल
गणेशदास सूरजमल
गजाधर रंगलाल
गोविन्दजी कुंवरजी
चतुरभुज केशवजी
बिनोदीराम बालचंद
बद्रीनारायण श्रीनारायण
मगनीराम रामकिशन
शांतिलाल केशवजी
सेवाराम बादरसिंह

शक्करके व्यापारी

अब्दुलगनी अब्दुलकरीम
चांदमल कस्तूरचन्द]
मगनीराम रामकिशन
रसूलभाई हसनभाई
लालचन्द रघुनाथ
हीरालाल किशोरदास

क्लाथ मरचेंट्स

केसरीमल कस्तुरचन्द
गंगाधर गोरेलाल
छोगालाल कस्तूरचन्द
चुन्नीलाल भगत
बद्रीनारायण श्रीनारायण
शालिगराम जगन्नाथ
हाजी करमअली जीवाभाई

जनरल मरचेंट्स

अब्दुलहुसेन अब्दुलकरीम
तेजमल छोगमल
महमदहुसेन हसनअली
रसूलभाई हसनभाई
लालचन्द रघुनाथ
सिद्धनाथ दुर्गाप्रसाद

मिट्टका तेल

हाजी कमरअली जीवाभाई
रसूलभाई हसनभाई

नमकके व्यापारी

उदयराम रामलाल
चांदमल कस्तूरचंद
मगनीराम रामकिशन
रावजी देवजी
हीरालाल किशोरदास

तमाखूके व्यापारी

इसुबहसन
चांदमल कस्तूरचन्द
भोलाभाई मनोहरभाई
लालचन्द रघुनाथ
सिद्धनाथ दुर्गाप्रसाद
हीरालाल किशोरदास

नगर सेठ नन्दलालजी (रामनारायण भवानीराम) बड़वाहा

सेठ छज्जूलालजी (रामासा हीरालाल) सनावद

सेठ मांगीलालजी (मांगीलाल गोरेलाल) सनावद

सेठ हीरालालजी गंगराड़े (रामासा हीरालाल) सनावद

आगर

गवालियर स्टेटकी आगर एक प्रसिद्ध मण्डी है। यह बहुत ही सुन्दर स्थानपर बसी हुई है। इसके दोनों ओर दो सुन्दर और रमणीक तालाब बने हुए हैं, जो राधियाना और बड़ा तालाबके नामसे बोले जाते हैं। यह मण्डी उज्जैनसे ४२ मील, सुसनेरसे १८ मील, सोयतसे ३० मील और सारङ्गपुरसे ३१ मीलकी दूरीपर स्थित है। उज्जैनसे यहाँतक गवालियर मोटर सर्विस रन करती है। यहां जी० एल० आर०की एक लाईन उज्जैनसे यहांतक खुल रही है। यह मंडी खासकर कपास और घीके लिये मशहूर है। यहाँसे ये दोनों चीजें काफी संख्यामें एक्सपोर्ट होती हैं। इस मंडीके आसपास रेल्वे न होनेसे इसके आसपासका सब माल यहीं आकर बिकता है। इससे इस मण्डीकी तरक्की है।

यहां नीचे लिखी कॉटन जीनिंग फेक्टरियां हैं।

विनोदीराम बालचन्द कॉटन जीनिङ्ग फेक्टरी।

नजरअली कॉटन जीनिङ्ग फेक्टरी।

यहां सन् १९२५में जो माल बाहरसे आया तथा गया उसका संक्षिप्त विवरण।

आनेवाला माल			जानेवाला माल		
नाम	मूल्य	वजन	नाम	मूल्य	वजन
गुड़		७३७ मन	विनोले		११७९ मन
तेल		९९३ पीपे	घी		३३२४४ मन
लोहा	३०७३)				
कपड़ा	२९४९५)				
तमाखू		१९२ मन			

बैंकर्स और एजंट

किशनजी पूरनलाल

तनसुखदास अमीरचन्द

विनोदीराम बालचन्द

श्रीचन्द सूरजमल

शिवलाल बालकृष्ण

सदासुख धन्नालाल

कॉटन मरचेंट्स

नज़रअली अलाबक्स

विनोदीराम बालचंद

हंसराज मूलचन्द

गल्लेके व्यापारी

कुकनचंद गेंदालाल
चुन्नीलाल ब्रजलाल
चुन्नीलाल मथुरालाल
दौलतकुमार नत्थूकिशन
पूरनमल गलूसाजी
पूनमचन्द उम्मेदमल
भवानीराम किशनराम
मुन्नालाल नैनसुख
सुभो रमजानी

तांबा-पीतलके व्यापारी—

चिन्तामल पूनमचन्द
नानजी मुकुंदराम
बंशीराम प्यारेलाल
मूलचन्द परमानन्द

घीके व्यापारी

कालूराम चौधरी
नारायण रामसुख
पूराजी धूरामल

ब्रजलाल कन्हैयालाल
बालकृष्ण हजारी
मगनूराम रामकुमार

कपड़ेके व्यापारी

कालूराम इलाही
चिन्तामण घासीराम
धारालाल पूरालाल
पदमसिंह जीतमल
बद्रीदास गोकुलदास
बागमल पूरालाल
बागमल मोतीलाल
रामरतन रामकिशन
रामरतन जवाहरमल
हीरालाल जगन्नाथ
हंसराज बछराज

घासलेट-तेलके व्यापारी

फिदाहुसेन अलीभाई

इन्दौर–राज्य

INDORE-STATE

बड़वाह

इन्दौर राज्यके अन्दर यह स्थान बड़ा प्राकृतिक सौन्दर्य्ययुक्त और रमणीक है। इसके एक तरफ नर्मदाकी निर्मल सलिल धारा बह रही है, और दूसरी ओर चोरल नदी इसके सौन्दर्यको बढ़ा रही है। एक ओर ओंकारेश्वरका रमणीक तीर्थ-स्थान इसकी पवित्रताको बढ़ा रहा है, और दूसरी ओर कालाकुण्ड का रमणीक पहाड़ इसकी छविको दीप्तिमान कर रहा है। यहांपर नागेश्वरका कुण्ड नामक एक बड़ा ही सुन्दर कुण्ड बना हुआ है। इस कुण्डमेंसे हमेशा एक सोता निकलता रहता है। सर्दीके दिनोंमें इस सोतेमेंसे बड़ा गर्म और सुहावना जल प्रवाहित होता है। इस शहरमें चोरल और नर्मदाके किनारे महाराज शिवाजीरावके बनाये हुए महल देखने योग्य हैं।

व्यापारिक दृष्टिसे भी यह स्थान बड़ा महत्वपूर्ण है। रुई और गल्लेका व्यापार यहांपर खूब होता है। यहां करीब दस ग्यारह जीनिङ्ग फेक्टरियां बनी हुई हैं। जिनके नाम इस प्रकार हैं।

(१) जयकिशन गोपीकिशन कॉटनप्रेस बड़वाह
(२) जसरूप बैजनाथ काटनप्रेस बड़वाह
(३) जयकिशन गोपीकिशन जीन बड़वाह
(४) रामनारायण भवानीराम जीन बड़वाह
(५) रामनारायण भवानीराम कॉटनप्रेस बड़वाह
(६) जसरूप बैजनाथ जीन बड़वाह
(७) लछमनदास केशरीमल जीन बड़वाह
(८) लछमनदास केशरीमल प्रेस बड़वाह
(९) छगनलाल नानचन्द जीन बड़वाह
(१०) रामकिशन बलदेव जीन बड़वाह
(११) छगनलाल मथुरालाल जीन बड़वाह

मेसर्स रामनारायण भवानीराम बड़वाह

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान करनसर जयपुर स्टेटमें है। आप खण्डेलवाल जातिके हैं। इस फर्मकी स्थापना हुए करीब ६० वर्ष हुए। श्रीयुत सेठ रामनारायणजीने सर्व प्रथम इसकी स्थापना की। आप बड़े ही उद्योगी एवं परिश्रमी व्यक्ति थे। आपके हाथोंसे इस फर्मकी बहुत तरक्की हुई। संवत् १९३३में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके पश्चात आपके सुपुत्र श्री सेठ भवानीरामजीने इस फर्मके कार्यको और भी तरक्की दी। संवत् १९६९में आपका देहावसान हुआ। उनके पश्चात् उनके पुत्र व दूकानके वर्तमान मालिक श्रीयुत सेठ नन्दलालजीने इस दुकानके कामको सम्भाला। और आप ही इस समय इस फर्मके कामका संचालन कर रहे हैं, इस फर्मके मालिकोंका सार्वजनिक कार्यों में भी विशेष हाथ रहा है, बड़वाहमें आपकी ओरसे एक धर्मशाला तथा एक मन्दिर बना हुआ है। धर्मशालामें एक सुन्दर बगीचा भी लगा है। विमलेश्वरमें(बड़वाहमें) नर्मदा किनारे आपकी ओरसे एक धर्मशाला बनी हुई है यहांपर एक गौशाला बनी हुई है, उसके लिए आपने सारी जमीन मुफ्त दी हैं। आपकी ओरसे बड़वाहमें सदाव्रत भी बंटता हैं। इस समय आपकी नीचे लिखे स्थानोंपर दूकानें हैं।

१—बड़वाह—रामनारायण भवानीराम—इस दूकानपर कॉटन कमीशन एजंसी बेङ्किग तथा देनलेनक काम होता है। यहां आपकी एक जीनिंग फेक्टरी है।

२—बड़वाह—कन्हैयालाल नन्दलाल—इस दूकानपर गल्लेकी आढ़तका काम होता है।

३—सनावद—रामनारायण भवानीराम—बैङ्किग कमीशन एजंसी तथा गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स लछमनदास केशरीमल

इस फर्मके मालिक मूल निवासी पीपाड़ (मारवाड़) के हैं। आप ओसवाल जातिके जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं। श्रीयुत लछमनदासजीने बड़वाहामें अपनी दुकान स्थापित की। और अपनी चतुराई तथा अपने व्यापार कौशलसे लाखों रुपयेकी सम्पत्ति कमाई। इस समय बड़वाहाकी नामी फर्मोंमें आपकी फर्म भी एक समझी जाती है।

हालहीमें आपने एक सुन्दर जैन मन्दिर बनवाकर उसकी प्रतिष्ठा करवाई है। इस कार्य्यमें आपने हजारों रुपये खर्च किये हैं।

बड़वाहामें आपकी दुकानपर रुईका अच्छा बिजिनेस है। आपकी यहां एक जीनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी भी बनी हुई है। श्रीयुत लछमनदासजीके पुत्र श्रीयुत केशरीमलजी है। आप दुकानका काम सम्हालते हैं।

बैंकर्स एण्ड काटन मर्चेण्ट्स

मेसर्स छगनलाल नानचन्द
,, मन्नालाल ताराचन्द
,, मोहनलाल चुन्नीलाल
,, रामनारायण भवानीराम
,, लखमीचन्द फूलचन्द
मेसर्स महम्मदअली फीका भाई
,, राधाकिशन सुखलाल
,, राधाकिशन बृजलाल
,, रामसिंह जुझारसिंह
,, हसन भाई अब्दुलअली

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स अब्दुलअली जीवा भाई
,, अब्दुलकरीम हाजी मूसाखान

किरानेके व्यापारी

मेसर्स मूसाखान जीवाभाई
,, वलीमहम्मद ऊमर

सनावद

यह स्थान इन्दौर राज्यके प्रधान व्यापारिक केन्द्रोंमेंसे एक है। वैसे तो ७००० की वस्तीका यह एक छोटासा क़स्बा है मगर जब इसके आकारकी दृष्टिसे हम इसके व्यापारको देखते हैं तो बड़ा आश्चर्य्य होता है। जिस समय यहां कपासका मौसिम चलता है उस समय यहांकी चहल पहल देखने योग्य होती है। अच्छी मौसिम चलनेपर किसी २ दिन यहांपर डेढ़ २ हजार गाड़ियां प्रतिदिन आती हुई देखी जातीं हैं। सबेरे आठ बजेसे गाड़ियोंका तांता लगता है सो मुश्किलसे रातको आठ बजे खतम होता है। इस कस्बेकी बसावट बड़ी घिचपिच और अव्यवस्थित है। व्यापार-की दृष्टिसे यह जितना उन्नत है स्वास्थ्यकी दृष्टिसे उतना ही अवनत है। खासकर मौसिमके दिनोंमें दिनभर उड़नेवाली गर्दसे लोगोंके स्वास्थ्यपर बड़ा खराब धक्का पहुंचता है।

इस छोटेसे कस्बेमें करीब बारह तेरह जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरियां हैं। ऐसा अनुमान किया जाता है कि अच्छी मौसिम चलनेपर इन फ़ैक्टरियोंसे करीब चालीस हजार रुईकी पक्की गांठें तैय्यार होती हैं। इन फैक्टरियोंके नाम इस प्रकार हैं (१९२५)

(१) गोरेलाल मंगीलाल जीन सनावद
(२) मर्चेण्ट काटन प्रेस सनावद
(३) जसरूप बैजनाथ प्रेस सनावद
(४) जयकिशन गोपीकिशन जीन सनावद
(५) जयकिशन गोपीकिशन प्रेस सनावद
(६-७) जसरूप बैजनाथ जीन सनावद (२)

(८) हीरालाल सोहराबजी कॉटन प्रेस सनावद
(९) हीरालाल सोहराबजी कॉटन जीन सनावद
(१०) नर्मदा कॉटन प्रेस सनावद
(११) बिनोदीराम बालचंद जीन सनावद
(१२) नाथूलाल मथुरालाल जीन सनावद
(१३) मर्चेण्ट जीनिंग फैक्टरी सनावद
(१४) सरस्वती जीनिंग फैक्टरी सनावद

इस कस्बेमें अगहनके महीनेमें एक बहुत बड़ा मेला भी लगता है।
यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है: —

बैंकर्स एण्ड कॉटनमर्चेंट्स

मेसर्स जसरूप बैजनाथ

इस फर्मका हेड ऑफिस खण्डवामें है। यहांपर इसकी ब्रांच है। इसका संचालन श्री० सेठ अनन्तलालजी करते हैं। आप बड़े सज्जन, व्यापार कुशल और उदार व्यक्ति हैं। हालहीमें आपने महीदपुरमें एक नया बाजार (मण्डी) डालनेका उद्योग प्रारम्भ किया है। आपका पूरा परिचय चित्रों सहित खण्डवा पोर्शनमें दियागया है। इस दुकानपर रुईका बहुत बड़ा व्यापार होता है। यहां आपकी एक प्रेसिंग और दो जीनिंग फेक्टरियां हैं।

मेसर्स जयकिशन गोपीकिशन

इस फर्मका भी हेड ऑफिस खण्डवामें है। यहांकी दुकानका सञ्चालन श्रीयुत देवकिशनजी बाहिती करते हैं। आप बड़े विद्याव्यसनी, उदार, देशप्रेमी और शिक्षित सज्जन हैं। इतनी बड़ी सम्पत्तिके स्वामी होतेहुए भी आप बड़े निरभिमानी हैं। आपका परिचय चित्रोंसहित खण्डवेके पोर्शनमें दियागया है। सनावद दुकानपर रुईका बहुत बड़ा व्यापार होता है। यहां आपकी एक जीनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी है।

मे० बिनोदीराम बालचन्द

यह फर्म नीमाड़में सबसे बड़ी रुईकी व्यापारी मानी जाती है। इसका हेड ऑफिस झालरा पाटनमें है। यहांकी दुकानका सञ्चालन श्रीयुत रामगोपालजी मुनीम करते हैं। आप बड़े योग्य शिक्षित एवं वयोवृद्ध सज्जन हैं। इस फर्मपर रुई और बैंकिङ्गका बहुत बड़ा व्यापार होता है। इसका पूरा परिचय चित्रों सहित झालरापाटनके पोर्शनमें दिया गया है। इसी फर्मके अण्डरमें विमलचंद कैलाशचंद नामक एक फर्म और यहां पर है।

मेसर्स मांगीलाल गोरेलाल

इस फर्मके मालिक श्रीयुत मांगीलालजी सरावगी जैन जातिके हैं। इस दुकानपर बैंङ्किग, रुई और कमीशन एजन्सीका काम होता है। श्री० मांगीलालजीका व्यापारिक साहस बहुत बढ़ा हुआ है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स मांगीलाल गोरेलाल--इस दुकानपर बैङ्किग और रुईका काम होता है।

इसके अतिरिक्त सनावदकी विमलचन्द कैलाशचंद फर्ममें, खरगोनकी बिनोदीराम बालचंद फर्ममें, गोगांवकी बिमलचंद कैलासचंद फर्ममें और नीमार खेड़ीकी बिनोदीराम बालचंद फर्ममें भी आपका साझा था।

मेसर्स रामनारायण भवानीराम

इस फर्मका हेड आफिस बड़वाहमें है। इसके मालिक बड़वाहके नगरसेठ श्रीयुत नन्दलालजी हैं। आपका पूरा परिचय चित्र सहित बड़वाहमें दिया गया है। यहां इस फर्मपर बैङ्किग, गल्ला और रुईका व्यापार होता है।

मेसर्स रामासा हीरालाल गंगराड़े

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान गंगराड़ नामक ग्राम है। वहांसे आप सक्कर गांव नामक ग्राममें आये। आपकी दूकानको वहांपर आये करीब २०० वर्ष हो गये। वहाँसे १५ वर्ष पूर्व आप सनावदमें आये। इस समय इस दूकानके मालिक सेठ छज्जूलालजी तथा फत्तूसाजी हैं। सेठ छज्जलालजी साहबके पुत्र श्रीयुत हीरालालजी हैं। आपकी ज्ञाति गंगराड़े महाजन है।

आपकी निम्नलिखित स्थानोंपर दूकानें हैं।

(१) शक्करगांव—छुज्जुलालसा फत्तूसा—यहां रुई कपासकी आढ़त खरीद फरोख्त तथा लेन-देनका काम होता है।

(२) सनावद—रामासा हीरालाल—यहांपर बैंकिंग और कॉटन कमीशन एजंसीका काम होता है।

(३) खंडवा—छज्जूलालसा फत्तूसा—लेन देन एवं मनोतीका काम होता है।

(४) पंधाना—छज्जूलालसा फत्तूसा—पंधानाके आसपास आपके मालगुजारीके गांव हैं। यहां मनोतीका भी व्यवसाय होता है।

बैंकर्स कॉटन मरचेण्ट्स एण्ड ग्रेन मरचेण्ट्स

मेसर्स अमोलकचंदसा फत्तूसा
,, खेमजी श्यामजी
,, जसरूप बैजनाथ
,, जयकिशन गोपीकिशन
,, धन्नालाल केशवसा
,, पदमसा हीरालाल
,, बिनोदीराम बालचंद
,, मांगीलाल गोरेलाल
,, रामनारायण भवानीराम
,, रामासा हीरासा
,, रामधन उंकार
,, लखमीचंद केशरीमल
,, विमलचंद कैलासचंद
,, हुकुमचंद दशरथसा

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स घनश्यामसा ज्ञानचंदसा
,, चन्दूलाल हणुतराम
,, गोवर्द्धनदास जगन्नाथ
,, पन्नालाल विट्ठलदास
,, मांगीलाल कन्हैयालाल
,, मायाचन्दसा ज्ञानचन्दसा
,, लक्ष्मीचन्द घासीराम
,, हाजीअब्दुल गुलदिस्तेखां

चांदी सोनेके व्यापारी

अमोलकचन्दसा केशवसा
जड़ावचंद कुन्दनसा
बालमुकुन्द विट्ठलदास
रूपचंदसा प्यारचंदसा

लोहेके व्यापारी

वाबूलाल बुकनदास
महम्मदहुसेन अल्लाबक्ष

खरगोन*

सनावदसे ४२ माइलकी दूरीपर इन्दौरका यह सबसे बड़ा कसबा बसा हुआ है। इसकी जन संख्या ११००० है जो इन्दौर राज्यमें इन्दौर शहरको छोड़कर सब स्थानोंसे अधिक है। यह स्थान इन्दौरके नीमाड़ जिलेका एक प्रकारसे सेण्टर है। यहांपर कपासका व्यापार अच्छे परिमाणमें होता है। यहांपर रुईके व्यापारियोंकी अच्छी २ दुकानें हैं। जिनमें मेसर्स बिनोदीराम बालचन्द, मेसर्स जसरूप बैजनाथ, मेसर्स जयकिशन गोपीकिशन, मेसर्स कपूरचन्द हीरालाल, मेसर्स हाजी हबीब महम्मदके नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

यहांपर बहुतसी कॉटनकी जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियां बनी हुई हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है—

(१) गोपीकिशन सुन्दरलाल कॉटन प्रेस खरगोन
(२) बिनोदीराम बालचंद कॉटनप्रेस खरगोन
(३) हाजी हबीब महम्मद कॉटन प्रेस खरगोन
(४) बिनोदीराम बालचंद जीन खरगोन
(५) हीरालाल कपूरचंद जीन खरगोन
(६) लश्करसिंह मश्करसिंह जीन खरगोन
(७) गोपीलाल सुन्दरलाल जीन खरगोन
(८) हाजी हबीब जीन खरगोन
(९) वल्लभदास गोकुलदास जीन खरगोन

रुईके अतिरिक्त गल्लेका व्यवसाय भी इस स्थानपर अच्छा होता है।

---

* पुस्तक छपनेमें बहुत शीघ्रता होने, और खरगोन महेश्वर आदिके व्यापारियोंको दिये हुए पत्रोंका उत्तर न मिलनेसे हम खरगोनके व्यापारियोंका परिचय एकत्रित नहीं कर सके। इसका हमें खेद है।

—प्रकाशक

महेश्वर

आर० एम० आर के बड़वाहा स्टेशनसे २६ मीलपर बसा हुआ यह एक सुन्दर और रमणीक स्थान है। यह स्थान नर्मदा नदीके किनारेपर बसा हुआ होनेसे हिन्दुओंका तीर्थ स्थान है यहांपर देवी अहिल्या बाईके बनाए हुए घाट बहुत सुन्दर और दर्शनीय हैं।

यहांकी बनी हुई दक्षिणी ढंगकी साड़ियां सारे भारतवर्षमें महेश्वरी साड़ियोंके नामसे मशहूर हैं। यहांसे इस प्रकारकी बहुतसी साड़ियां बाहर जाती है।

रुई इत्यादिका व्यापार यहांपर साधारण है। यहांपर ईसाभाई एण्ड सन्सकी एक जीनिंग फैक्टरी बनी हुई हैं।

कन्नौद

नेमावर जिलेका खास सूबा है। यह स्थान नेमावर जिलेमें सबसे बड़ा है। यहांपर डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट, डिस्ट्रिक्ट जज वगैरह जिलेके आला अफसरोंकी ऑफिसें बनी हुई हैं। लड़कोंके यहां शिक्षाके लिये फाइनल स्कूल, और लड़कियोंकी शिक्षाके लिए कन्या पाठशाला चल रही है।

यह स्थान भी रुईका बहुत बड़ा केन्द्र है। यहांपर करीब दो लाख मन कपास प्रति वर्ष आता है। यहासे हरदा, और इंदौरके स्टेशनोंपर माल जाता है। कपासके अतिरिक्त अलसी, गेहूं जुवार इत्यादि भी यहां खूब पैदा होती है। यहांपर तीन जीनिंग फैक्टरियां बनी हुई हैं जिनके नाम इसप्रकार है

(१) मालवा मिल जीनिङ्ग फैक्टरी कन्नौद
(२) जसरूप श्रीनाथ जीन कन्नौद
(३) राधाकिशन नरसिंहदास जीन कन्नौद
(४) स्वरूपचंद हुकुमचन्द जीनिग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी

कॉटन मर्चेण्ट्स

सेठ भारमल डालूराम

इस फर्मके मालिक मूल निवासी गनेड़ी (डिडवाना) के हैं। आप माहेश्वरी जातिके हैं। इस फर्मको यहांपर स्थापित हुए करीब ८० वर्ष हुए होंगे। इसे सेठ भारमलजीने स्थापित किया,

और तरक्की भी दी। आपके पुत्र सेठ डालूरामजी थे, मगर उनका स्वर्गवास आपके पूर्व ही हो गया। इस समय सेठ भारमलके पौत्र सेठ राधाकिशनजी इस दुकानके मालिक हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

कन्नौद—भारमल डालूराम--इस दुकानपर कपास, अलसी, गल्ला इत्यादिका घरू और कमीशन एजन्सीका काम होता है।

कन्नौद---राधाकिशन नरसिंहदास—इस नामसे यहां आपकी एक जीनिंग फेक्टरी है।

बैंकर्स एण्ड कॉटन मर्चेण्ट्स

मेसर्स करीम भाई इब्राहिम एण्ड सन्स, (मालवा मिलशॉप)

मेसर्स चुन्नीलाल बद्रीनारायण
„ जसरूप बैजनाथ
„ भारमल डालूराम
„ स्वरूपचन्द हुकुमचंद
„ जयरामदास जयनारायण
„ भारमल डालूराम
„ शालिगराम जयराम

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स गंगाराम गजानन्द
„ गणेशराम नाथूराम

गल्लेके व्यापारी

„ जयरामदास जयनारायण
„ नानकराम भगवान
„ भारमल डालूराम
„ रामसुख रामनारायण
„ हीरालाल भागीरथ

खातेगांव

यह स्थान इन्दौर रियासतके नेमावर जिलेका सेण्टर है। यह इन्दौर शहरसे ७२ मील पर मोटर रोडपर है। इन्दौर राज्यके प्रधान २ रुईके केन्द्रोंमें यह स्थान भी अपना खास स्थान रखता है। यहांके व्यापारियोंसे पूछनेपर पता लगा कि यहांपर एक कणासा (एक लाख बीस हजार मन) कपास प्रतिवर्ष होता है। यहांका माल हरदा और इन्दौर इन दोनों स्थानोंके द्वारा एक्सपोर्ट होता है। कपास ही की तरह गेहूंकी पैदावारका भी यह बहुत बड़ा केन्द्र है। व्यापारियोंके कथनानुसार यहां करीब साढ़ तीन लाख मन गेहूं प्रतिवर्ष आता है। इस गेहूंमें अधिकतर गेहूं पिस्सी जातिका होता है। कपास और गेहूंके अतिरिक्त अलसी, जुवार, मकई इत्यादि भी यहां काफी तादादमें पैदा होती है।

कपाससे रुई तैयार करनेके लिए यहांपर निम्नाङ्कित फैक्टरियां हैं:--

(१) हंसराज हजारीमल जीन खातेगांव (२) जसरूप श्रीनाथ जीन खातेगांव

बैंकर्स एण्ड कॉटन मर्चेण्ट्स

धन्नाजी हंसराज

इस फर्मके मालिक मूल निवासी मारवाड़के हैं, पर करीब १०० वर्षोंसे यहीं पर रहते हैं। इस फर्मको पहले पहल सेठ धन्नाजीने स्थापित किया। उस समय यह दुकान बहुत साधारण स्थितिमें थी। धन्नाजीके पुत्र सेठ हंसराजजीने इसे विशेष तरक्की पर पहुंचाया। इस समय सेठ हंसराजजीके पुत्र सेठ हजारीमलजी इस फर्मके मालिक हैं। आपने अपने व्यापार और कृषिकी बहुत उन्नति की। आपके यहाँ इस समय करीब ४५०० एकड़ जमीनमें कृषि होती है। आपने यहां एक अपनी जीनिंग फैक्टरी भी स्थापित कर रक्खी है।

आपकी ओरसे खातेगांवमें एक जैन पाठशाला भी कुछ समय तक चली थी। इस समय आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम गुलाबचंदजी है। इस समय आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) खातेगांव---धन्नाजी हंसराज—इस दुकानपर कपास, गल्ला, आढ़त और बैङ्किगका काम होता है। इसके अतिरिक्त काश्तकारी और मनोतीका काम भी होता है।

(२) अन्तराल्या (भोपाल)---हंसराज हमीरमल,- इस दुकानपर लेन देनका काम होता है।

सेठ मनिराम चुन्नीलाल

इस फर्मके मालिक मूल निवासी खातेगांवहीके हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब १०० वर्ष हुए। इसकी स्थापना सेठ मनीरामजीने की। उस समय इस फर्मकी बहुत साधारण स्थिति थी। मनीरामजीके पश्चात् उनके पुत्र चुन्नीलालजीने इस फर्मके कार्य्य की उन्नति की। आपके पश्चात् इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ प्रेमराजजीने इस फर्मके कामको सह्मला। आपने भी इस दुकानके कामको अच्छा बढ़ाया।

सेठ प्रेमराजजीने एक अच्छी लागतका मकान धार्मिक संस्थाओंको दान कर दिया है। इस मकानमें :आपकी ओरसे एक औषधालय चल रहा है। पहले इसमें एक जैन पाठशाला भी चलती थी मगर आजकल वह बंद है। इसके अतिरिक्त आपकी ओरसे एक धर्मशाला भी बनी हुई है। आपके एक पुत्र है जिनका नाम चुन्नीलालजी है।

आपका व्यापारिका परिचय इस प्रकार है।

(१) खातेगांव---मनीराम चुन्नीलाल--इस फर्मपर कपास, रुई, गल्ला आदिका घरू और कमीशन एजन्सीका काम होता है।

(२) हरदा---चुन्नीलाल प्रेमराज--यहां भी उपरोक्त काम होता है।

कपास और गल्लेके व्यापारी

सेठ गेंदालाल कोदरमल
,, घासीलाल मांगीलाल
,, चम्पालाल पोकरमल
,, धन्नाजी हंसराज
,, प्रेमराज चुन्नीलाल
,, मूलचंद डालूराम
,, मलूकचंद हेमराज
,, रामरख धनसुख
,, हीरालाल काला

कपड़े के व्यापारी

,, गेंदालाल रतनलाल
,, चौथमल वाकलीवाल
,, मांगीलाल चंद्रलाल
,, लालजी घासीराम
,, हजारीमल घासीराम

महिदपुर

बी० बी० सी० आईकी बड़ी लाईनपर महिदपुर स्टेशनसे १२ मील दूर बसा हुआ यह एक रमणीय और आबाद कसबा है। यह स्थान इंदौर स्टेटके महिदपुर जिलेका प्रधान कसबा है। मुगलराज्यके समय इस स्थानका नाम महम्मदपुर था। सन् १८१७में द्वितीय मल्हारराव होल्कर और सरजान मालकमके दरमियान यहां युद्ध हुआ था। इस स्थानके आसपास जंगल विशेष है। जिसमें चंदन कसरतसे पैदा होता है। यहांका धरातल समुद्रकी सतहसे १७०० फीट ऊंचा है। यहांसे उज्जैन और इन्दौरतक सड़क गई है। यह स्थान क्षिप्राकिनारे बसी हुई पुरानी बस्ती है। यहांका किला प्रसिद्ध है।

इस स्थानके मानसे यहां कपासका व्यापार बहुत बढ़ा चढ़ा है। यहां कई जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियां हैं। मौसिमके समयमें यहांकी गति-विधि अच्छी रहती है। यहां रूईके कई अच्छे २ व्यापारी निवास करते हैं।

जीनिंग फेक्टरियां

महम्मदअली ईसाभाई जीनिंग फेक्टरी
रणछोड़दास लक्ष्मीचन्द जीन महिदपुर
वाघमल रावतमल जीन महिदपुर
जसरूप बैजनाथजीन

तराना

होल्कर स्टेटके महिदपुर परगनेका यह एक अच्छा आवाद कसबा है। यह स्थान उज्जैनसे ३४ मीलकी दूरीपर जी० आई० पी० लाइनके तरानारोड स्टेशनसे ५ मीलपर बसा है। इस स्टेशनसे गांव तक मोटरलारी जाती है। इस परगनेके आस पास जंगल बहुत हैं। यहांकी भूमि अच्छी उपजाऊ है। यहांकी पैदावारमें कपास, गेहूं, ज्वार, मक्का, घी आदि है। यहां स्वर्गीय महारानी अहिल्या बाईका बनवाया हुआ तिलकेश्वर महादेवका मन्दिर है। इस स्थानमें गर्मी की औसत १०२ और जाड़े की औसत ७२ रहती है। प्रति वर्ष सरासरी ३४ इंच वर्षा होती है।

इस स्थानके मानसे यहां जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियोंकी खासी संख्या है। मौसिमके समयमें इन फेक्टरियोंमें काफी चहल पहल रहती है। निम्न लिखित जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियां यहांपर चल रही हैं।

रायबहादुर हुकुमचन्द कस्तूरचन्द	जीनिंग फेक्टरी
गोपालजी नन्दराम	" "
मदनलाल नंदराम	जीनिंग प्रेसिंग
नारायणजी बद्रीनारायण	जीनिंग प्रेसिंग
ओंकार गणेशदत्त	जीनिंग फेक्टरी

कॉटन एण्ड ग्रेन मरचेंट्स

रा० ब० कस्तूरचंद काशलीवाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक रा० ब० सेठ कस्तूरचंदजी काशलीवाल हैं। आपका सुविस्तृत परिचय अनेक सुन्दर चित्रों सहित इन्दौरमें दिया गया है। आपकी यहांपर आपके बड़े भ्राता राय बहादुर सर सेठ हुकुमचन्दजी नाइटके साझेमें एक जीनिंग फेक्टरी है। इसके अतिरिक्त इस फर्ममें गल्ला और रुईका व्यवसाय तथा हुण्डी चिट्ठीका काम होता है। इस फर्मकी यहांपर बहुतसी काश्त है, जिसके द्वारा हजारों मन गल्ला प्रति वर्ष पैदा होता है।

मेसर्स गोपालजी नंदराम ❀

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ मदनलालजी हैं। आपकी फर्मपर रुई, कपास और गल्लेका बहुत अच्छा व्यापार होता है। इस फर्मकी यहांपर एक जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी भी है। सेठ मदनलालजी, तरानेके बहुत प्रतिष्ठा—सम्पन्न पुरुष हैं। आपकी फर्म यहां अच्छी मानी जाती है।

❀खेद है कि आपका विशेष परिचय हमें नहीं प्राप्त हो सका। —प्रकाशक

मेसर्स जगन्नाथ नारायण दीक्षित

इस फर्मके वर्तमान मालिक पं० शंकरप्रसादजी दीक्षित हैं। आपके पितामह ६० वर्ष पूर्व अपने मूल निवास स्थान मोहनगंज (जिला कानपुर) से धार आये थे। धारसे उज्जैन आकर कुछ समय तक आपने सर्विस की। आपके देहावसानके वाद आपके पुत्र श्री जगन्नाथजी दीक्षितने बहुत छोटी मात्रामें दूसरेके साझेमें कारबार करना आरम्भ किया। और दस वर्षके बाद अपनी स्वतन्त्र दूकान की। तबसे यह दूकान बराबर तरक्की करती जा रही है। पं० शंकरप्रसादजी दीक्षित सज्जन व्यक्ति हैं। वर्तमानमें इसके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

तराना—मेसर्स जगन्नाथ नारायण दीक्षित—इस दूकानपर आसामी लेन देन, रुई, गल्ला और हुंडी चिट्ठीका व्यवसाय होता है।

मेसर्स विहारीलाल मांगूलाल अग्रवाल

इस दूकानके वर्तमान मालिक श्रीयुत मांगूलालजी हैं। करीब १०० वर्ष पहिले आपके पितामह वखतरामजीने जयपुर स्टेटसे आकर यहांपर मिठाईकी दूकान की थी। आपके बाद क्रमश पन्नालालजी, विहारीलालजी और मांगूलालजीने इस दूकानके गल्लेके व्यापारको विशेष रूपसे बढ़ाया। श्रीयुत मांगूलालजी बहुत सरल तथा सीधे व्यक्ति हैं। आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

तराना—विहारीलाल मांगूलाल—इस दूकानपर गल्लेका बड़े प्रमाणमें व्यवसाय होता है।

काटन एण्ड ग्रेन मर्चेंट

राय बहादुर कस्तूरचन्द काशलीवाल
गोपालजी नंदराम
जगन्नाथ नारायण
जवरचंद बद्रीनारायण
झण्डूसिंह जुगुलकिशोर
प्रेमराज नाथूराम मंत्री
पन्नालाल मोतीलाल
विहारीलाल मांगूलाल
रघुनाथ घासीराम
रामधन रामगोपाल
लखराज भागीरथ

चांदी सोनेके व्यापारी

श्रीराम सारड़ा, पन्नालाल हीरालाल
लक्ष्मीनारायण बालमुकुन्द

किरानाके व्यापारी

घासीराम गोकुलदास
मदनलाल कन्हैयालाल
मीठा आर० बी०
रेवाराम हीरालाल

कपड़ेके व्यापारी

घूलजी हीरालाल
प्रहलाद चतुर्भुज
बलदेव कोदरमल
नाथूराम मोतीराम
प्रेमराज नाथूराम
राधाकिशन किशनलाल

चन्द्रावती गंज

इस बस्तीको सेठ दीपचन्दजीने बसाया है। जिनका परिचय नीचे दिया जाता है। यह स्थान फतेहाबाद स्टेशनके सामने करीब ४ फर्लांगकी दूरीपर बसा हुआ है।

मेसर्स धन्नालाल दीपचन्द

इस फर्मके मालिक दांता (रामगढ़) के निवासी हैं। इस दूकानको फतेहाबाद गवालियर स्टेटमें स्थापित हुए करीब ५० वर्ष हुए। इस दुकानके कामको सेठ मोहनलालजी और धन्नालालजी ने जमाया। इनके बाद सेठ दीपचन्दजीने इसके कारोबारको सह्माला। आपके जीवनमें एक बड़ी भारी बात यह हुई, कि फतेहाबादके जागीरदारसे आपसमें मनोमालिन्य होजानेके कारण आपने फतेहाबादके नजदीक होल्कर स्टेटमें महारानी चन्द्रावती बाईके नामसे, चन्द्रावतीगंज नामक मंडी, अपना निजका एक लाख रुपया खर्च करके बसाई।

होल्कर स्टेटमें बस जानेसे आप की मान वृद्धि खूब हुई। महाराजा होल्करने सन् १९२२ में आपको 'राय रतन' की उपाधि प्रदान की। सन१९२३ में आपके चिरञ्जीव कुँवर नेमीचन्द-जीके विवाहमें श्रीमंत होल्कर नरेश खुद आये थे। सेठ दीपचंदजीकी इन्दौरके बाजारमें अच्छी प्रतिष्ठा है। वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स धन्नालाल दीपचंद चंद्रावतीगंज (इन्दौर स्टेट)—इस दूकानपर आसामी लेन देन गल्ला व रुईका व्यापार होता है।

रामपुरा

चारों ओर टूटी फूटी चहारदीवारीसे घिरी हुई यह बस्ती प्राचीन समयमें चन्द्रावतोंकी राजधानी थी। इनके वंशज जागीरदारके हैसियतसे अब भी यहां रहते हैं। किम्बदन्ति है कि इस स्थानको रामा नामक भीलने बसाया था इसलिये यह रामपुरा कहलाया। यह बहुत पुरानी और ऐ-तिहासिक बस्ती है। इसके टूटे फूटे मकानोंके हजारों खंडहर आज भी प्राचीन गौरवकी स्मृति दिला

रहे हैं। एक समय ऐसा था जब यहांकी बनी तलवार, बंदूक और गुप्तियोंको प्रत्येक वीर युद्धमें साथ रखना बहुत आवश्यक समझता था। अस्त्र शस्त्रोंके जमानेमें इसने बहुत ख्याति पाई थी। आज भी यहाँ गुप्तियाँ, वंदूकें, तलवारें, व सरोते अच्छे बनते हैं।

यह स्थान अरावली पहाड़के ठीक नीचे बसा हुआ है। गर्मीके समय यहां तीव्र गर्मी होती है। शहरमें पानीके ५ तालाब हैं, पर गर्मीके दिनोंमें इनमें पानी नहीं रहता। यहां दूध कसरतसे होता है। इसके अतिरिक्त शहद, मोम, गोंद मेंहदी आदि भी यहांसे बाहर भेजी जाती है। यहांके व्यवसायियोंका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स शिवलाल चिमनलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास मारवाड़ है। इस फर्मकोयहां आये करीब १५० वर्ष हुए। इसे सेठ शिवलालजीने स्थापित किया। आपके कोई पुत्र न था। सेठ शिवलालजीके बाद आपके भाई सेठ चिमनलालजीने इस दूकानके व्यापारको वढ़ाया। सेठ चिमनलालजीके ३ पुत्र थे। सेठ मगनजी सेठ जड़ावचन्दजी और सेठ गुलाबचन्दजी। इनमेंसे सेठ गुलाबचन्दजीके वंशज इस फर्मके मालिक हैं।

सेठ गुलाबचन्दजीके पुत्र मन्नालालजी अच्छे सरदार आदमी थे। आपके हाथोंसे इस दूकानके व्यापारमें अच्छी तरक्की हुई। वर्तमानमें इस दुकानके मालिक सेठ छगनलालजी हैं। आपने यहां एक जीनिंग फेक्टरी खोली है। धार्मिक स्थानोंमें आपने कई जगहोंपर जीर्णोद्धार करवाये हैं। यह दुकान रामपुरेमें बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है। सेठ छगनलालजीके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्री मानसिंहजी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

१ रामपुरा—शिवलाल चिमनलाल—यहां मनोती, गल्ला, कपास, रुई, आढ़त और हुंडी, चिट्ठीका काम होता है।

२ रामपुरा—मगनीराम जड़ावचंद—इस नामसे कपड़ेकी दूकान है।

३ वर्द्धमान जीनिंग फेक्टरी रामपुरा—यहां इस नामकी आपकी एक जीनिंग फेक्टरी है।

कपड़ेके व्यापारी

किशनजी जीवराज नाहर
केसरीचंद रखबचंद भंडारी
छब्बाजी जड़ावचन्द
ख्यालीजी राजमल सुराना
पन्नालाल तेजमल मारू
पृथ्वीराज मन्नालाल कड़ावन
मगनीराम जड़ावचन्द

गल्लेके व्यापारी

गब्बाजी साकरचन्द
छिनीलाल मोतीलाल
बच्छराज मन्नालाल खाबिया

शिवलाल चिमनलाल
शिवचंद मन्नालाल धाकड़

किरानाके व्यापारी

कादरभाई खानभाई
महम्मदअली गुलामअली

लोहेके व्यापारी

अब्दुल हुसेन महम्मदअली

पीतलके बर्तन

कादरभाई खानभाई
महम्मदअली गुलामअली

भानपुरा

सुप्रसिद्ध अरवली पहाड़के रमणीय अंचलमें बसा हुआ यह एक छोटासा कसबा है। ऐसा कहा जाता है कि इस गांवको भाना नामक भीलने बसाया था। इसीसे इसका नाम भानपुरा पड़ा। करीब १००-१२५ वर्ष पूर्व यह गांव जयपुर राज्यके अंतर्गत था। जयपुरके तत्कालीन महाराजा माधौसिंहजीकी मदद करनेके बदलेमें महाराजा यशवंतरावको यह जिला मिला था। यह स्थान महाराजा यशवंतरावको बहुत पसंद था। आपका स्वर्गवास भी इसी स्थानपर हुआ है। आपकी स्मृतिमें यहांपर एक बड़ी रमणीक छत्री बनी हुई है। जो इन्दौर राज्यकी एक मशहूर वस्तु समझी जाती है।

कुछ समयके पूर्व यह कसबा व्यापारका एक अच्छा केन्द्र था जिन दिनों अफीमका व्यापार चलता था, उन दिनों यहांपर बहुतसे अच्छे २ व्यापारी व्यापार करते थे। मगर अफीमका व्यवसाय बंद होते ही और पासमें भवानीगंज मंडीके खुल जानेसे यहांका व्यापार नष्ट होगया और आज यह कसबा व्यापार शून्य होकर बरबाद होता जारहा है। फिर भी पानकी खेती होनेसे इसका व्यापार यहांपर अच्छा चल रहा है। यहांसे बहुत दूर दूरके प्रांतों तक पान एक्सपोर्ट होता है।

प्राकृतिक सौन्दर्य भी यहांका बड़ा रमणीक है इसके पासही एक नदी बह रही है, और उसके दूसरे किनारे अरवलीका रमणीक पहाड़ झुका हुआ है। इस पहाड़में कई सुन्दर प्राकृतिक कुण्ड, कल-

श्री विश्वनाथजी भंवर (पृथ्वीराज प्रभूलाल) मनासा
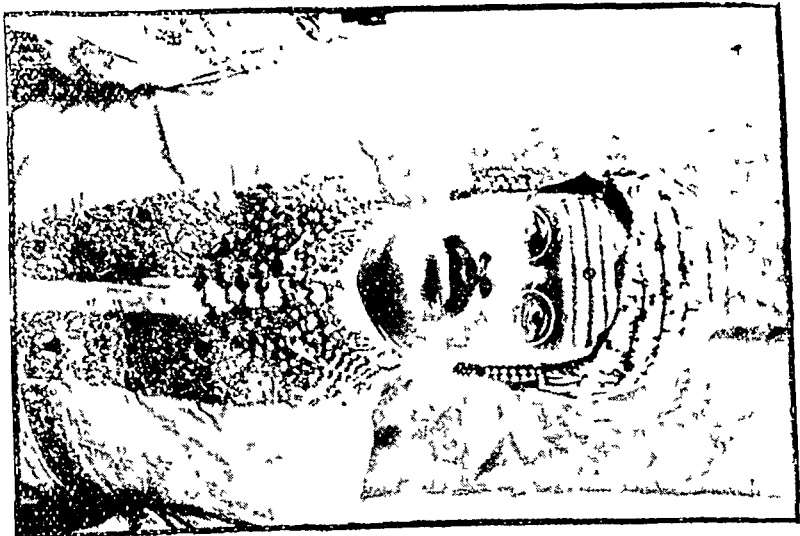
श्री मन्नालालजी चोरड़िया (गुलाबचन्द धनराज) भानपुरा

श्री शंकरप्रसादजी दीक्षित, तराना
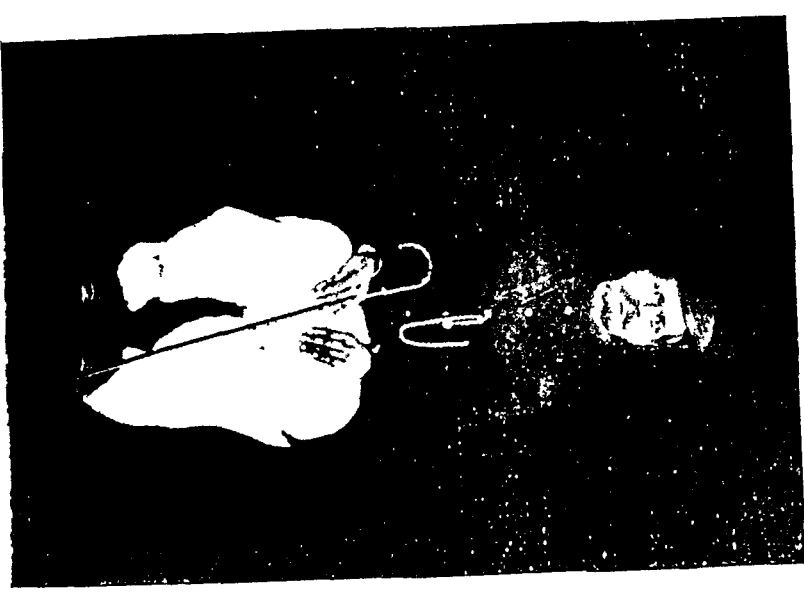
कलनाद करते हुए झरने, विस्तृत मैदानोंकी हरियाली आंखोंको तृप्त कर देती है। श्रावण मासमें तो
यह स्थान इन्दौर राज्यका काश्मीर होजाता है। इस जंगलमें खैर, धावड़ा, ढक, शतावरी, गोंद, सफेद
मुसली, मरोड़फली, बेलफल, कदम्ब और पारिजातके पुष्प इत्यादि कई प्रकारकी जड़ी बूटियां तथा कई
प्रकारके घास जिनका थोड़ासा वर्णन ग्वालियरमें दिया गया है। यहां भी प्रचुरतासे पाये जाते हैं।
इस जङ्गलमें हिंगलाज गढ़का एक बड़ा रमणीक किला बना है। इस किलेका इतिहास बड़ा पुराना है।
इस पर कई लोगोंका अधिकार रहा है, जिनके स्मृति चिन्ह वहां पर पाई जाने वाली तरह तरहकी
मूर्तियों तथा दूसरे निशानोंसे पाये जाते हैं। ताखाजीका रमणीय कुंड भी इसी जंगलमें है।
इसका वर्णन इन्दौरके पोर्शनमें कर दिया गया है।

यहांपर हिन्दू मित्र मंडल नामक सार्वजनिक संस्था स्थापित है, जिसके उत्साही कार्य कर्त्ता
और मंत्री पं० तुलसीरामजी शर्मा हैं।

इस स्थानसे बाहर जानेवाली वस्तुओंमें पान, घी और कपास प्रधान है। आनेवाली
वस्तुओंमें गुड़ शक्कर, किराना, कपड़ा तथा चद्दरें वगैरह हैं। इस स्थानसे ८ मीलकी दूरी पर
बी० बी० सी० आईका भवानीमंडी और १० मीलकी दूरी श्रीछत्रपुर स्टेशन है। इन्हीं स्टेशनों
से यहांके मालकी आमद रफ्त रहती है। छत्रपुरसे यहांतक पक्की सड़क भी है। एक सड़क यहांसे
रामपुरा, मनासा, नीमच और पीपल्या तक गई है। यहांपर नारायण जगन्नाथ नामक एक जीन
भारतके व्यापारियोंका परिचय नामक इस ग्रंथके प्रकाशनका श्रेय भी इसी छोटेसे ग्रामको है।
फेक्टरी है। इसके कार्यालयका ऑफिस तथा प्रकाशकोंका निवास भी यहीं है।

यहांके कुछ व्यवसाइयोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स गुलाबचंद धनराज

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री सेठ धनराजजी तथा इनके पुत्र मन्नालालजी चोरड़िया हैं।
आप ओसवाल श्वेताम्बर धर्मावलम्बी सज्जन हैं। श्रीयुत मन्नालालजी बड़े उत्साही युवक हैं।
आप हरएक सार्वजनिक कार्योंमें अच्छा सहयोग लेते रहते हैं। वर्तमानमें आपकी दूकानपर बैङ्किग
लेन देन कपड़ा और शक्करका व्यापार होता है। आढ़तका काम भी आप करते हैं।

मेसर्स फतेचंद गुलाबचंद

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ गुलाबचंदजी और सरदारमलजी हूमड़ हैं। आप दिगम्बर
जैन हूमड़ जातिके हैं। आपका निवास स्थान यहींका है। श्रीयुत सरदारमलजी बहुत उत्साही नव-
युवक हैं। आपकी दूकानपर कपड़ा और आढ़तका काम होता है।

बैंकर्स

अमोलकचन्द फूलचन्द
गुलाबचन्द धनराज
गुलाबचन्द प्रेमराज
फतेचन्द चुन्नीलाल
फत्ताजी छोटूराम
बालाबक्ष नानालाल
मुकनचन्दजी कोठारी
रामधन रतनचन्द

क्लाथ मरचेंट्स

अलिमहम्मद सांगोदिया
इसूबअली बोहरा
गेंदाजी कादरजी
गुलाबचन्द धनराज
छगनलालजी सांवला
फतेचन्द गुलाबचन्द

गल्लेके व्यापारी

फतेचन्द चुन्नीलाल
बालाबक्ष नानालाल
रामधन रतनचन्द
राजमल बरदीचन्द नाहटा

पानके व्यापारी

जीवनजी हीरालाल
मोहनलाल हेमराज
रोड़मल मन्नालाल

गरोठ

यह कसबा बी० बी० सी० आईके गरोठ स्टेशनसे ५ मीलकी दूरीपर बसा हुआ रामपुरा भानपुरा जिलेका प्रधान स्थान है। इस जिलेकी बड़ी २ कोर्ट्स और ऑफिसेस यहां पर होनेसे लोगोंकी आमद रफ्त विशेष रहती है। यही कारण है कि यहांका व्यापार विशेष उन्नति पर है। खासकर यहां कपड़ेका व्यापार अच्छा होता है। यहांकी मनुष्य संख्या करीब ३॥ हजार है। राज्यकी ट्रेझरीकी ओरसे यहां एक होल्कर स्टेट बैंक भी खुला हुआ है। यहां १ जीनिंग फेक्टरी है। गरोठ स्टेशनपर भी एक जीनिंग फेक्टरी है। यहांके समीप ८ मीलकी दूरीपर शामगढ़ मंडीमें भी २ जीनिंग फेक्टरियां हैं। यहाँ करीब ४० मनासा कपास प्रति वर्ष आजाता है। यहांके व्यवसाइयोंका संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स हरसामल गोवर्द्धनदास

इस फर्मके मालिक सेठ हरसामलजीके पुत्र श्रीगोवर्द्धनदासजी, मदनलालजी और गजाधरजी हैं। आप लछमनगढ़ (जयपुर) के निवासी अग्रवालजातिके हैं। यह दूकान करीब १८ वर्ष पूर्व यहां स्थापित हुई थी। आपकी दूकानोंका परिचय इस प्रकार है।

गरोठ हरसामल गोवर्द्धनदास—यहां रुई, कपास, गल्ला, आढ़तका काम होता है। आपने सन १९२७ से वेङ्कटेश्वर काटन जीन फेक्टरी चालू की है।

अहमदाबाद-हरसामल गोवर्द्धनदास—हट्टीभाईकी बाड़ी—यहां कपड़ा, सूत, आढ़त और खारा घोड़ाके नमकका व्यापार होता है।

मेसर्स मुल्लां हसनजी नाथूजी बोहरा

इस दुकानके वर्तमान मालिक सेठ हफ्तुल्लाजी हैं। आप खास निवासी रामपुरेके हैं। इस दुकानको ६२ वर्ष पहिले सेठ हसनजीने चालू किया था। उस समय इनके पास मेलखेड़में रंग व आलका अच्छा स्टाक रहता था। सेठ हफ्तुलाजीके हाथोंसे इसके व्यापारको तरक्की मिली। आपकी दूकान गरोठमें कपडेका अच्छा व्यापार करती है। आपकी दूकानोंका परिचय इस प्रकार है।

गरोठ—हसनजी नाथू—यहां कपड़ा, चांदी, सोना और तेलका व्यापार होता है।

शामगढ़—खानअली अब्दुल हुसैन—यहां किरानेका व्यापार होता है। तथा तेलकी एजंसी है। हसनजी नाथूजीके नामसे यहां पर कपडेका व्यापार भी होता है।

—oo—

मेसर्स रामलाल शालिगराम

यह गरोठकी बहुत पुरानी फर्म है। पहिले इसपर देवीचन्द बदीचन्दके नामसे अफीम और गल्लेका बहुत बड़ा व्यापार होता था। इस दूकानको सेठ बदीचन्दजीने स्थापित किया। तथा सेठ रामलालजीने इसके व्यपारको विशेष बढ़ाया। वर्तमानमें इस कुटुम्बमें सेठ हीरालालजी, सेठ सालिगरामजी तथा श्री मांगीलालजी विद्यमान हैं। श्रीयुत मांगीलालजी बड़े मिलनसार और सहृदय नवयुक हैं। उपरोक्त फर्मके मालिक सेठ शालिगरामजी हैं। आपकी दूकानपर कपड़ा, चांदी सोना व लेनदेनका व्यवसाय होता है।

बैंकर्स

होल्कर स्टेट बैंक
मोतीजी दयाराम

रुई और गल्लेके व्यापारी

ओंकार लाल सूरजमल
गोमाजी बालाराम
हरसामल गोबर्द्धनदास

क्लाथ मर्चेन्ट

वोहरा नाथूजी हुसेन
रामसुख हीरालाल
रामलाल शालिगराम

चांदी सोनेके व्यापारी

वोहरा नाथूजी हुसैन
तोलाराम पन्नालाल डबकरा

जनरल मर्चेन्ट

देवीलाल एण्ड कम्पनी
मूसेभाई हैदरभाई
रसूल भाई मूसभाई

किरानेके व्यापारी

ऊंकारजी फूलचन्द
कन्हैयालाल जगन्नाथ
चिरंजीलाल जड़ावचन्द

बाल संस्था

बॉय स्काउट गरोठ

मनासा

यह इन्दौर राज्यके रामपुरा भानपुरा जिलेका एक अच्छा स्थान है। यहां पहिले अफीमका बहुत अच्छा व्यापार होता था। इस स्थानसे नीमच और पीपलिया तक सड़कें गई हैं। इसके पास ही पड़दां नामक स्थानमें लोहेके ताले व कड़ाहीका बहुत काम होता है। अफीमके व्यापारके बन्द हो जानेसे यहांका व्यवसाय भी श्रीहीन हो गया है। इस स्थानके आसपास अजवाइनकी बहुत पैदावार होती है। जो नीमच स्टेशनके द्वारा बाहर भेजी जाती है। यहांके व्यवसाइयोंका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

मेसस पृथ्वीराज प्रभूलाल

इस फर्मके मालिक बहुत समय पूर्व मारवाड़में रहते थे। वहाँसे ये करेड़ा (मेवाड़)में रहे। मेवाड़से करीब १५० वर्ष पूर्व सेठ पृथ्वीराजजी यहां आए। और बहुत मामूली स्थितिसे आपने व्यापार आरम्भ किया। आपके बाद आपके पुत्र प्रभूदयालजी और हरकिशनजीने कारोबार संभाला। इनके बाद सेठ हरकिशनजीके पुत्र सीतारामजीने इस दूकानके कामको सम्भाला। सेठ-सीतारामजी के तीन पुत्र बालमुकुन्दजी, जगन्नाथ जी और सुन्दरलालजीमेंसे बालमुकुन्दजी, सेठ प्रभूलालजीके यहां गोदी रख दिए गए हैं।

वर्तमानमें इस दूकानके मालिक सेठ शिवनाथजी तथा इनके पुत्र विश्वनाथजी हैं। आपकी ओरसे मनासेमें अच्छी लागतसे एक मन्दिर बना हुआ है। आपका यहांपर एक बगीचा भी है। वर्तमानमें आपकी दुकानका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मनासा—पृथ्वीराज प्रभूलाल—यहां रूई, गल्ला,हुण्डी चिट्ठी आदिका घरू व आढ़तका काम होता है।

रूई और गल्लेके व्यापारी

(कमीशन एजंट)

किशोरदास जगन्नाथ
चतुर्भुज देवजी
नगजीराम श्रीनिवास
पृथ्वीराज प्रभूलाल
पृथ्वीराज हरकिशन
पृथ्वीराज सीताराम
रामबख्श रामलाल

कपड़ेके व्यापारी

घासीलाल फूलचन्द
सुखजी वोथलाल

चांदी सोनेके व्यापारी

किशोरदास जगन्नाथ
चतुभुज देवजी

असगन्ध-अजवायनके व्यापारी

श्रीलाल रत्तीचन्द

जयपुर और जयपुर राज्य

JAIPUR–CITY

&

JAIPUR–-STATE

जयपुर
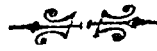
जयपुरका ऐतिहासिक परिचय

जयपुर राज्यका इतिहास बहुत प्राचीन है। वैदिक कालमें यह प्रान्त मत्स्य देश के नामसे प्रसिद्ध था। उस समय इस प्रांतकी राजधानी वैराट नामक स्थान पर थी जहांपर पांडवोंने अपने बनवासके दिन विताये थे। इस स्थान पर (बेरारमें) अशोक कालीन तथा उससे भी पहलेके सिक्के पाये गये हैं।

जिस प्रकार जयपुर प्रांतका इतिहास बहुत प्राचीन हैं उसी प्रकार जयपुर वंशका इतिहास भी बहुत पुराना है। इस वंश के वंशज सूर्य्यवंशी कछवाह वंशके हैं। इस वंशकी उत्पत्ति महाराज रामचन्द्र के कुशसे बतलायी जाती है। ईसा की दशवीं शताब्दिमें इस वंशमें राजा नल हुए, आपने नर वर शहर बसा कर वहां राज्य किया। इसके पश्चात् आपके वंशज गवालियर चले गये। गवालियरमें इस वंशने करीब सन् ११९६ तक राज्य किया।

इसी राजवंशमें मंगलराज नामक राजा हुए। इनके छोटे पुत्रका नाम सुमित्र था। जयपुर के वर्तमान कछवाहे इन्हीं सुमित्रके वंशज हैं। सुमित्रके वंशमें क्रमशः मधुब्रह्म, कहान देवानीक ईश्वरी सिंह और उनके पश्चात् सोढदेव हुए। इन सोढदेवके पुत्र दूलहरायका विवाह मोरनके चौहान राजाकी कन्याके साथ हुआ था। दूलहरायने अपने श्वसुरकी सहायतासे धौसा नामक प्रान्त बड़गूजरोंसे छीन लिया और वहां पर नवीन राज्यकी स्थापना की। इन्होंने मीना लोगोंसे आमेर जीत लिया और उसीको अपनी राजधानी बनाया। इनके पश्चात् इनके वंशमें पंजुन, उदय-करण, विहारीमलजी, भगवान दासजी और उनके पश्चात् इतिहास प्रसिद्ध राजा मानसिंहजी हुए। इन मानसिंहजीने अपने कई कार्य्योंसे इतिहासमें खूब नाम कमाया। आपके विषयमें कहावत है कि:—

बलि बोई कीरति लता, कर्ण किये द्वै पात।
सींच्यौ मान महीप ने जब देखी कुम्हलात॥

मानसिंहके पश्चात भावसिंहजी, जगसिंहजी और महाराजा जयसिंहजी इत्यादि प्रसिद्ध व्यक्ति हुए।

मगर जिस सुन्दर और रमणीक शहर जयपुरका हम वर्णन कर रहे हैं, उसका अभीतक अस्तित्व न था। कछवाहोंकी राजधानी सुप्रसिद्ध दुर्ग आमेरगढ़ में थी। जिस प्रकार जयपुर प्रान्त और कछवाहोंका इतिहास पुराना है उसी प्रकार जयपुर शहरका इतिहास बहुत नया है।

इस शहरकी बसावटका श्रेय राजा द्वितीय जयसिंहजीको है। आप केवल राजा ही नहीं थे, प्रत्युत् बड़े भारी विद्वान भी थे। ज्योतिष-विज्ञानमें तो आपकी बहुत तीव्र गति थी। इस विज्ञानके सम्बन्धमें आपने कई नये २ अविष्कार किये। आपने ग्रहका वेध लेनेके लिये दिल्ली, जयपुर उज्जैन बनारस मथुरा प्रभृति बड़े २ स्थानोंमें मान मन्दिर बनवाये।

सवाई जयसिंहजी कलाकौशलके भी बहुत प्रेमी थे। आपने दुनियाके भिन्न २ स्थानोंसे कई डिझाइन्स मंगवाकर उनके आधारपर सुप्रसिद्ध जयपुर शहरका निर्माण करवाया। इस नगरसे नगर निर्माणकलाका बहुत उच्च आदर्श प्रकट होता है। संसार प्रख्यात् नगर निर्माणकला विशारद प्रोफ़ेसर गीडिजने इस शहरको देखकर कहा था "जयपुर नगर न केवल नगर निर्माणकला-कलाके उच्च ध्येयको प्रकट करता है प्रत्युत नगर निर्माण-कलाकी दृष्टिसे भी वह अनुपम है"।

नगरसौंदर्य्य

जिन लोगोंने जयपुर शहरको देखा है उनको यह बतलानेकी आवश्यकता नहीं, कि नगर सौन्दर्य्यकी दृष्टिसे यह शहर भारतवर्षभरमें अपने ढङ्गका एक ही है। साधारण बोलचालकी भाषामें इसे "भारतवर्षका पेरिस" Paris of India कहते हैं। इसकी बसावटकी विशेषता यह है, कि इसकी सब सड़कें अत्यन्त चौड़ी और सीधी हैं। चांदपोल दरवाजेसे लेकर गलता दरवाजेतक बिलकुल सीधी सड़क है। यह सड़क बराबर २ तीन विभागोंमें विभक्त करदी गई है इन तीनों विभागोंपर बराबर लम्बाई चौड़ाईके एक सरीखे चौक बने हुए हैं। नये आदमीको तो एकाएक यह मार्क करना भी कठिन होजाता है कि कौनसा चौक कहां है। क्योंकि तीनोंही चौकोंसे एकसे चौराहे गये हैं। ये चौक बड़े सुन्दर, खुलेहुए और शुद्ध वायु-युक्त हैं। दूसरी विशेषता इस शहरकी यह है कि यदि सड़कके एक किनारे कोई गली गई होगी तो उसके सामने सामने दूसरे किनारेसे भी वैसीही गलीका जाना आवश्यक है। इस शहरकी तीसरी विशेषता इसके मकानोंकी कतार है। सड़कके दोनों तरफ मकानोंकी कतार है, सब एक रंगमें रंगे हुए और करीब २ एकही डिजाइनके बने हुए हैं। इन मकानोंमें सफाई, हवा और प्रकाशका भी काफी प्रबन्ध रक्खा गया है। इस शहरके मार्ग अत्यन्त चौड़े, विशाल और साफ हैं, आजकल अलकतरे की मरम्मत होजानेसे ये और भी सुन्दर होगये हैं। प्रधान मार्गोंपर धूलका एक कण भी मिलना कठिन है। इतने चौड़े मार्ग होनेपर भी मनुष्योंके चलने फिरनेके लिये दोनों ओर प्लेटफार्म

बने हुए, हैं रातको रोशनीके लिए बिजली और गैस लाइट दोनोंका प्रबन्ध है। साधारण दिनोंमें केवल बिजलीकी लाइट ही चलती है, मगर त्यौहारादिक विशेष अवसरोंपर दोनोंही लाइट जगमगा जाते हैं। उस समय जयपुर साक्षात् इन्द्रपुरीकी तरह भव्य और रमणीक दिखलाई देता है। उसके रास्ते कांचके रास्तोंकी तरह चमकते हैं, और उसके अन्दर विचरण करनेवाले नरनारी देव और अप्सराओंकी तरह दिखलाई देते हैं। मतलब यह कि स्वास्थ्य और बसावटकी दृष्टिसे जयपुर शहरकी बसावट अपने ढङ्गकी बहुत उत्तम और अनूठी है।

जयपुरका व्यापारिक परिचय

जयपुर शहरमें इन्दोर, उज्जैन, व्यावर आदि स्थानोंकी तरह रुईके व्यापारकी चहल पहल नहीं है। यहाके व्यापारमें जवाहिरात, क्यूरियो, ब्रास, मारबल वर्क्सका व्यापार प्रधान है।

जवाहिरातका व्यापार—जयपुरके बाजारमें जवाहिरातके बड़े २ व्यापारी निवास करते हैं। प्रति वर्ष यहांपर लाखों रुपयोंके जवाहिरातका व्यापार होता है। खासकर पन्ना और मोतीका व्यापार यहां खूब होता है। यहांके व्यापारी भारतके अतिरिक्त इङ्गलैण्ड, फ्रांस, अमेरिका आदि बाहरी देशोंको माल तैय्यार कर बाकर भिजवाते हैं और वहांसे माल मंगवाते भी हैं। सारे भारतवर्षमें जवाहिरातका यह दूसरे नम्बरका बाजार है।

क्यूरियो—भारतके जिन उद्योगोंकी इस दुर्दिनमें भी विदेशोंके अन्दर प्रतिष्ठा है, और जिन्हें आज भी विदेशी लोग बड़े आदर और चावसे लेते हैं उनमें जयपुरके क्यूरियोका सामान भी प्रधान है। इस विद्यामें जयपूर आज भी बहुत अग्रगण्य है। अमेरिका और इङ्गलैण्ड की कई प्रदर्शिनियोंमें यहांके मालको बहुत ऊंचा स्थान मिला है। श्रीयुत ईश्वरलालजी सोगानी जिस समय यहांके मालको लेकर अमेरिका पहुंचे थे उस समय अमेरिकाके कई अच्छे २ पत्रोंने इस सम्बन्धमें बड़े अच्छे नोट प्रकाशित किये थे। बम्बईकी पोहमल ब्रदर्स इत्यादि सिन्धी फर्म योरोपमें अपनी कई ब्रांचों द्वारा यहांके मालका प्रचार करती हैं। वास्तवमें यह कला आज भी भारतके लिये गौरवकी वस्तु है। पीतल और हाथी दांतपर जैसी खुदाई और पच्चीकारीका काम यहां होता है वैसा शायद ही कहीं होता हो।

मारबल वर्क्स—क्यूरियो ही की तरह यहांपर संगमरमरका काम और मूर्तियोंकी बनावट भी बहुत अच्छी होती है। यहांपर इस कामके बहुत अच्छे २ कारीगर रहते हैं। इन वस्तुओं-का भी यहां अच्छा व्यापार होता है।

गोटेका व्यवसाय—यहांपर गोटेका भी बहुत बिजिनेस होता है। यहांके गोटेमें प्रमाणिकता विशेष रहती है। राज्यकी ओरसे १०० तोला चांदीमें २॥=) भर तांबा मिलाकर, चांदीकी

सिल्लीपर राज्यकी मुहर लगादी जाती है। इसी मुहरवाली चांदीसे यहांपर गोटा बनता है।

सांगानेरी माल—यहांपर सांगानेरके बनेहुए दुपट्टे, रुमाल, साफ़े इत्यादिका व्यापार भी बहुत होता है। रङ्गाईका काम भी जयपुरका बहुत मशहूर है। यहांपर रंगाईका काम करनेवाले करीब १००० रंगरेज निवास करते हैं। यहांके लहरिये बहुत मशहूर हैं।

जीरेका व्यापार—इस स्टेटमें जीरा बहुत पैदा होता है। उसमें से बहुतसा माल यहांके द्वारा बाहर एक्सपोर्ट होता है। मौसिमके समय यहांपर यह व्यवसाय अच्छा चलता है।

साबुन—साबुन (कपड़ा धोनेका) यहांपर बहुत और अच्छा बनता है। इसकी यहांपर बहुतसी बड़ी २ दुकानें हैं। जिनसे बहुतसा माल बाहर जाता है।

इसके अतिरिक्त गल्लेका व्यवसाय भी बहुत होता है। गलीचेका व्यापार भी यहांका प्रसिद्ध है। जयपूरका आर्ट चित्रकारी भी भारतमें प्रसिद्ध है। यहां दीवालों पर पक्की चित्रकारीका काम बहुत बढ़िया होता है। रुईकी फैकटरियोंके नामपर यहां केवल स्टेटकी एक जीनिंग और एक प्रेसिंग फ़ेक्टरी है।

दर्शनीय-स्थान

गलता—यह स्थान जयपुरसे २ मीलकी दूरीपर पहाड़ोंमेंस्थित है। यहांके प्राकृतिक दृश्योंमें इसका पहला नम्बर है। इस स्थानपर जानेके लिये साफ़ और सुन्दर रास्ता बना हुआ है। यह हिन्दुओंका तीर्थ स्थान भी समझा जाता है। इसका सीन देखने योग्य है। इसके रास्तेके दोनों ओर कई फीट ऊंची पहाड़ी है। बीचमेंसे यात्रियोंको जाना पड़ता है। यहां एक ओर स्वच्छ जलका एक श्रोता गोमुखोसे एक कुण्डमें गिरता है। और उस कुण्डका निर्मल जल दूसरेमें दूसरेका तीसरेमें इस प्रकार बहा करता है, दूसरी ओर पहाड़की तलेटीमें कई सुन्दर मन्दिर और मकान अपनी कारीगरी एवम् पुरानी चित्रकारीके दृश्य बतला रहे हैं। यहांका सूर्य्यनारायणका मन्दिर बहुत अच्छा बना हुआ है।

नया घाट—यह स्थान जयपुरसे उत्तर पश्चिममें करीब २ मीलकी दूरीपर स्थित है। इसका दृश्य भी बड़ा ही सुन्दर है। एक बड़ीसी नदी दो मिट्टीके पहाड़ोंके बीच बहती हुई जा रही है। दोनों ओर कई फीट ऊंचे इसके किनारे बड़े भले मालूम होते हैं। इस नदीके किनारे कई सुन्दर झाड़, अपने फलों और फूलोंसे इसकी शोभाको अलग ही बढ़ा रहे हैं। इस नदीपर जयपुर आगरा रोडकी पुल नीचेसे देखनेमें बड़ी अच्छी
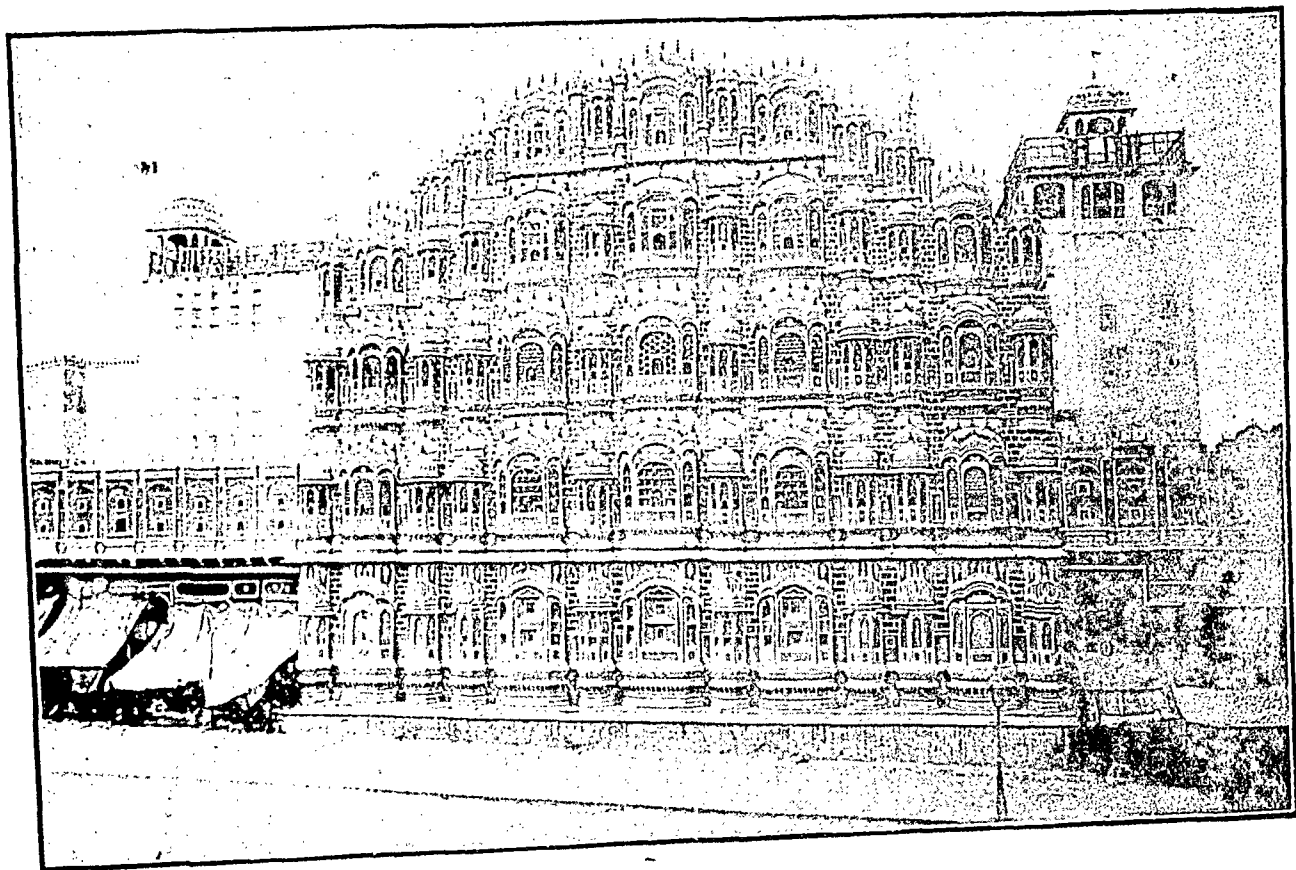
हवामहल, जैपुर
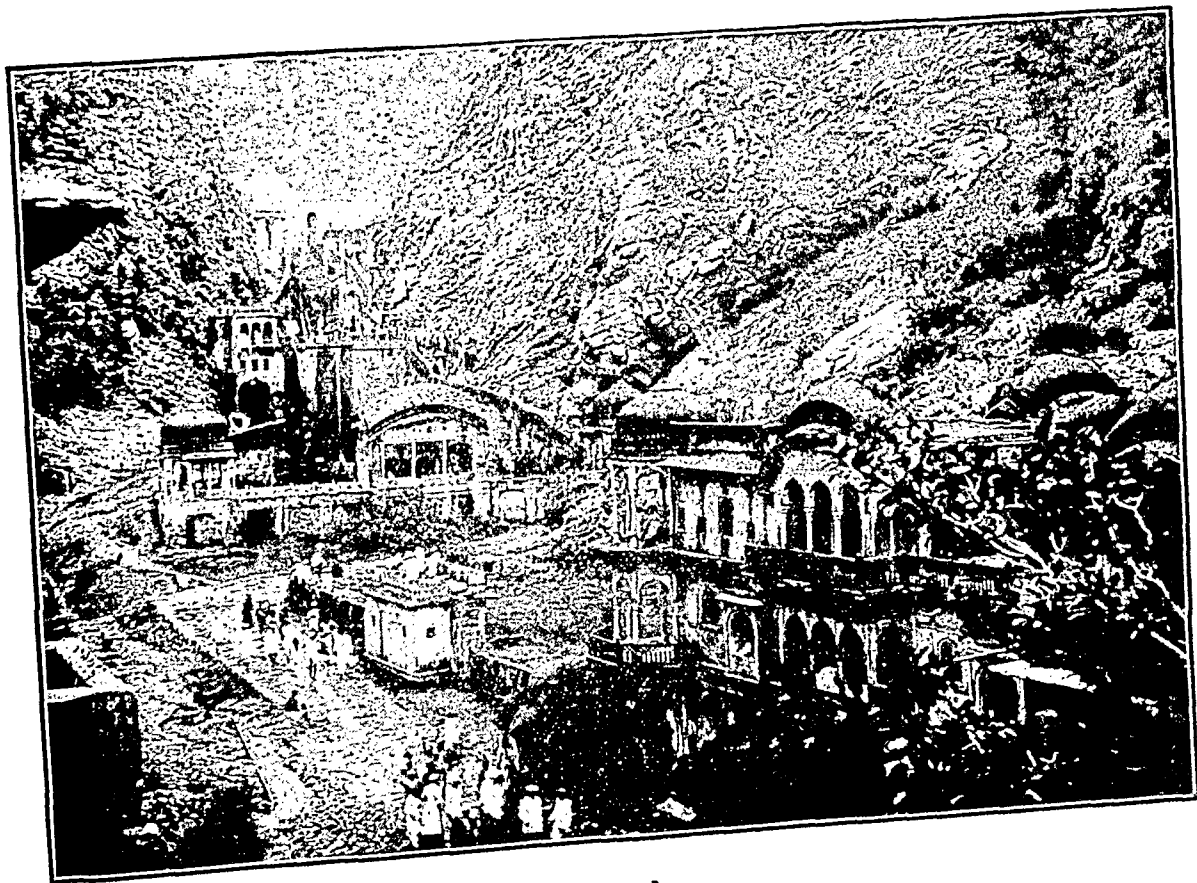
गलता, जैपुर

मालूम होती है। गर्मीके दिनोंमें इस स्थानकी बड़ी बहार रहती है। श्रावण मासमें तो यह स्थान जयपुरका काश्मीर हो जाता है। कई नर नारी इसके दृश्यका आनन्द लेने के लिये यहां आते हैं। यहां अम्बागढ़ नामक किला भी है।

हवा महल—यह महल सरकारी है। बड़ी चोपड़के पास यह बना हुआ है। इसे लोग जनाना महलके नामसे कहते हैं। इसका बाहरी दृश्य बहुत ही सुन्दर है। जयपुरकी अद्भुत कारीगरीका यह एक नमूना है।

चन्द्रमहल—यह भी जनाना महल है। इसकी बनावट नये ढंगकी है। इसके चारों ओर कई फर्लांग तक सुन्दर बगीचा लगा हुआ है। इसके ऊपरी मंजिलसे जयपुरका दृश्य बड़ा ही मनोहर मालूम होता है। त्रिपोलिया बाजारमें त्रिपोलिया गेटसे इसका रास्ता जाता है। सरकारकी ओरसे दिखानेके लिये आदमी नियुक्त हैं। इस महलके पास ही श्रावण भादों नामक एक कुञ्ज है। इसका दृश्य बहुत ही सुन्दर है। भयंकर गर्मीमें भी आपको वहां जानेसे श्रावण और भादोंका आनन्द आवेगा। आप निर्णय नही कर सकते कि श्रावण है या बैशाख। इसी महलके बगीचेमें कुछ दूर जाकर एक तालाब आता है। यहां गनगोरके बैठनेकी जगह है। इसका सीन भी देखने योग्य है। यहांसे नाहरगढ़ और आम्बेरका दृश्य बड़ा दर्शनीय मालूम होता है। यहांसे एक रास्ता गणेशजीकी छतरी पर भी जाता है। यह छत्री भी पहाड़ोंपर स्थित है। देखने योग्य स्थान है। चन्द्र महलके पूर्वमें कुछ आगे जानेपर आपको बडे २ चौड़े मैदान मिलेगें। इन मैदानोंमें हाथियोंकी लड़ाई होती है। सैकड़ों पुरुष देखनेके लिये यहां आते हैं। चन्द्रमहल के इस बगीचेमें खासकर लाईट और फव्वारेका दृश्य बहुत ही सुन्दर है।

रामनिवास बाग—यह पब्लिक पार्क है। इसका एरिया बहुत बड़ा है। राजपूताने भरमें यह बाग सबसे बड़ा और सुन्दर है। इसे स्वर्गीय महाराजा रामसिंहजीने अपने नामसे बनवाया है। इसकी लागतमें करीब ४०००००) लगे हैं। इस बागका सालाना खर्च २६०००) होता है। इस बागमें श्रावण भादों, टेनिस ग्राउंड, फूटबाल ग्राउंड, आदि बने हुए हैं। यह बगीचा इतना सुन्दर है कि देखते ही बनता है ठीक इस बागके मध्यमें एक अजाय घर बना हुआ है। इसको अलबर्टहाल भी बोलते हैं। इस अजायब घरमें कई अजब २ वस्तुएं हैं। कहा जाता है कि भारतवर्षका यह दूसरे नम्बरका अजायब घर है।

इसी बगीचेमें शेर, नाहर, रींछ, दूध देता हुआ बकरा आदि कई पशु, कई प्रकारके विदेशी और देशी बन्दर और कई प्रकारके पक्षी भी हैं। जहां शेर रखे गये हैं, उनके पास ही एक बिना

खम्भेका पुल बना हुआ है। इस पुलमें सिर्फ ४ खम्भे हैं, जो दोनों ओर किनारोंपर बने हुए हैं। बीचमें एक भी खम्भा नहीं है। पुल दर्शनीय है। रामनिवास बागके सामनेवाले चौकमें गमियोंके दिनोंमें सैकड़ों स्त्री पुरुष घूमनेके लिये यहां आते हैं। उस समय यहांकी गतिविधि देखने योग्य होती है। इसी चौकमें सूर्य्य घड़ी भी लगी हुई है। कहनेका मतलब यह कि यह बगीचा भारतके सुन्दर २ बगीचोंमेंसे एक है।

आंबेर—यह कछवाहोंकी पुरानी राजधानी थी। इसके पश्चात् ही जयपुर राजधानी बनी है। यहांका किला दर्शनीय है। महाराजके महलोंमें कांचका महल और दूसरे महल देखने योग्य हैं। यहां पुरानी कारीगरीका अद्भुत नज़ारा है। यहांपर और भी कई स्थान दर्शनीय हैं। प्राचीठ स्थान होनेसे यहां कई शिला-लेख वगैरह भी हैं। यहांपर अम्बिकेश्वरका प्राचीन मन्दिर बहुत अच्छा बना हैं।

आब्सर·वेटरी—यह ज्योतिष गणना सम्बन्धी वेधशाला है। पहले यह महलोंके अन्दर थी पर पर अब उठा दी गई है। अब यह रेसिडेन्सी के पास स्थित है। इसमें होनेवाले फला-फलका हाल प्रति दिन भारत सरकारके दफ्तरमें तार द्वारा भेजा जाता है। इसके पत्थरके बने हुए कई यंत्र दर्शनीय हैं।

नाहरगढ़—यह जयपुरसे पास ही ऊंची पहाड़ीपर बना हुआ है। यहां सरकारकी ओरसे इस किलेकी रक्षाके लिये नागालोगों की एक पल्टन हमेशा प्रस्तुत रहती है। यहां महा-राजाके महल देखने योग्य है। जानेके लिये साफ रास्ता बना हुआ है। किला दर्शनीय है।

ईसर लाट—यह लाट कीर्ति स्तम्भके रूपमें महाराजा ईश्वरीसिंहजी द्वारा बनवाई गई है। यह ६ मंजिल ऊंची है। यहांसे जयपुरका दृश्य हथेलीकी भांति मालूम होता है। यह महाराजाके महलोंके पास त्रिपोलिया बाजारमें बनी है।

कोर्टस्—जयपुरकी कचहरियें भी बहुत सुन्दर हैं। इनकी इमारतें देखने योग्य हैं। दिवालों पर किया गया काम बहुत ही सुन्दर है। इन कार्टोंके पास ही महाराजा साहबका दिवाने आम और दिवाने-खास बना हुआ है। दोनोंकी कारीगरी एवं भव्य इमारत देखने योग्य है।

आर्ट कालेज—यह कालेज राजपूताना एवम् सेंट्रल इंडियामें सबसे बड़ा है। यहां हर प्रकारकी आर्ट सम्वन्धी शिक्षा दी जाती है। यहांके विद्यार्थियोंके बनाए हुए काम दर्शनीय है। यहांका आर्ट बहुत मशहूर है। यहां वेंत, चित्रकारी, खुदाई, सुतारी, लोहारी आदि सभी कामकी शिक्षा दी जाती है।

पब्लिक लायब्रेरी—यह लायब्रेरी राजपूताना और सेंट्रल इंडियामें सबसे बड़ी है। यहांपर एक २

विषयपर कई २ पुस्तकें हैं। इसकी इमारत बड़ी विशाल और सुन्दर है। कई पत्र-पत्रिकाएं भी यहां आती हैं।

व्यापारिक स्थान

जौहरी बाजार---यह बाजार यहांका सबसे प्रसिद्ध व्यापारिक बाजार हैं। यहांपर जवाहिरातके व्यापारी, बैंकर्स और जनरल मर्चेण्ट्स तथा कपड़ेके बड़े २ व्यापारियोंकी दुकानें हैं। यहांका जौहरी बाजार भारतके जवाहरातके बाजारोंमें दूसरे नम्बरका माना जाता है। जयपुरका पुराना और ख्यातिप्राप्त मोहरोंका व्यापार भी इसी बाजारमें होता है। भारतके कई प्रसिद्ध २ मारवाड़ी धनिकोंकी दुकानें इस बाजारमें हैं।

चांदपोल बाजार—यों तो यहांके सभी बाजार बहुत सुन्दर हैं, पर इस बाजारसे जयपुर बहुत रमणीक शहर मालूम होता है। यहां विशेषकर गल्लेका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

त्रिपोलिया बाजार—यह भी यहांके सुन्दर बाजारोंमेंसे एक है। इसी बाजारमें महाराजाके महल, जयपुर पब्लिक लायब्रेरी आदि हैं। यहां सब प्रकारके व्यापार करनेवालोंकी दूकानें हैं।

पुरोहितजीकाखंदा—यह बाजार जौहरी बाजार और त्रिपोलिया बाजारके मोड़पर है। यहां कपड़े तथा गोटेके व्यापारियोंकी दुकानें हैं। यहां हजारों रुपयोंका माल रोजाना बिक्री होता है।

अजमेरीगेट—यह बाजार अजमेरी दरवाजेके बाहर है। यहां जयपुरकी प्रसिद्ध कारीगरीके समान बनानेवाले कारीगरोंकी दुकानें हैं। यहांके कारीगर पीतलपर की जानेवाली पच्चीकारीके लिये मशहूर हैं। यहां कुछ फेन्सी दुकानें भी हैं, जिनपर जवाहरात और क्यूरियोसिटीका व्यापार होता है।

किशनपोल बाजार—यह बाजार मामूली बाजारोंमेंसे है। इस बाजारमें गर्ल्स हाई स्कूल और राजपूतानेका प्रसिद्ध इण्डस्ट्रियल कालेज है। इस कॉलेजमें आर्ट सम्बन्धी प्रायः सभी प्रकारके काम सिखाए जाते हैं। इस कालेजके विद्यार्थी अपने काममें बड़े एक्सपर्ट निकलते हैं। इसी बाजारमें जयपुरकी प्रसिद्ध रंगाई होती है। यहां क्यूरियो सिटी बनानेवाले कारीगर भी रहते हैं।

खादीका हाट—प्रति रविवारको प्रातःकाल८-६ बजे यहां खादीका बड़ा भारी हाट पुरोहितजीके खन्देके सामने चौपड़के पास लगता है। इसमें जयपुरके आसपासके बीस बीस कोस तकके जुलाहे अपने सप्ताह भरके बुने हुए खादीके थान लाते हैं। प्रति सप्ताह हजारों रुपयोंका माल इस बाजारमें आता है। असहयोग आन्दोलनके समयसे यहांका माल बहुत दूर दूरतक जाने लगा है।

बैंकर्स

मेसर्स कमलनयन हमीरसिंह

इस फर्मका हेड आफिस अजमेर है। अजमेरका प्रसिद्ध लोढ़ा परिवार इस फर्मका मालिक है। यहां यह फर्म बैङ्किग व्यवसाय करती है। यह फर्म जौहरी बाजारमें है।

मेसर्स राजा गोकुलदास जीवनदास

इस फर्मका हेड आफिस जबलपुरमें है। जबलपुरके राजा गोकुलदासजीके वंशज इस फर्मके मालिक है। इस फर्मका सुविस्तृत परिचय कई चित्रों सहित बम्बई विभागमें पृष्ट १६१में दिया गया है। यहां यह फ़र्म बैङ्किग व्यवसाय करती है।

मेसर्स चन्द्रभान वंशीलाल राय बहादुर

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बीकानेर है। इसके वर्तमान मालिक सर विश्वेश्वर दासजी डागा राय बहादुर हैं। आपका सुविस्तृत परिचय चित्रों सहित बीकानेरमें दिया गया है। यह फर्म यहां जौहरी बाजारमें है इसपर बैंकिग व्यवसाय होता है।

मेसर्स जुहारमल सुगनचन्द

इस फर्मका हेड आफिस अजमेर है। इसके वर्तमान मालिक राय बहादुर सेठ टीकमचन्दजी सोनी हैं। आप की फर्मका पूरा परिचय चित्रों सहित अजमेरमें दिया गया है। जयपुरमें इस फर्मपर बैङ्किग विजिनेस होता है।

मेसर्स राजा बलदेवदास ब्रजमोहन विड़ला

इस फर्मका मालिक प्रसिद्ध विड़ला परिवार है। आपका मूल निवास पिलानी (जयपुर) है। आपका विस्तृत परिचय कई चित्रों सहित पिलानीमें दिया गया है। यहां इस फर्मपर बैङ्किग व्यवसाय होता है।

श्री० सेठ वन्शीधरजी खेतान, जैपुर

श्री० कुं० शिवप्रसादजी खेतान, जैपुर

श्री० कुं० गौरीशङ्करजी खेतान, जैपुर

मेसर्स बन्सीधर शिवप्रसाद खेतान

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मेहणसर (शेखावाटी) में है। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। जयपुरमें इस फर्मको खुले हुए करीब ३५ वर्ष हुए। इस दूकानका स्थापना श्रीयुत बन्सीधरजी खेतानने की। इसकी तरक्की भी आपहीके हाथोंसे हुई। इसके पहले यह फर्म बहुत छोटे रूपमें थी। श्रीयुत बन्सीधरजी खेतान बड़े योग्य सुधरे हुए विचारोंके सज्जन हैं। हिन्दू जातिके प्रति आपके हृदयमें अगाध स्नेह है।

अग्रवाल जातिके अन्दर जितने ऊंचे सुधरे हुए विचारोंके प्रतिष्ठित सज्जन हैं उनमें आपका भी एक स्थान है। करीब चार पांच वर्ष पूर्व जयपुरमें अग्रवाल महासभा हुई थी, उसकी स्वागत-कारिणी सभाके आप सभापति थे।

आपकी तरफसे श्री ऋृषीकेशमें एक धर्मशाला बनी हुई है उसमें करीब ३० विद्यार्थी रोजाना भोजन पाते हैं। इसके अतिरिक्त मेहणसर में भी आपकी तरफसे एक धर्मशाला और कुंवा बना हुआ है। और भी प्रायः प्रत्येक सभा सोसायटीमें आप बड़े उत्साहसे दान देते रहते हैं।

जयपुरकी म्युनिसिपैलिटी, स्काउट क्लब, गौशाला, अग्रवाल पाठशाला, धन्वन्तरि औषधालय बेबी वीक इत्यादि संस्थाओंके आप मेंबर हैं। आपके इस समय दो पुत्र हैं जिनके नाम श्रीयुत शिव-प्रसादजी और श्रीयुत गौरीशंकरजी है। श्रीयुत शिवप्रसादजीके भी एक पुत्र हैं जिनका नाम श्रीयुत गुलाबरायजी है।

आपकी इस समय नीचे लिखे स्थानोंपर दुकानें हैं।

(१) जयपुर (हेडआफिस)—मेसर्स बन्सीधर शिवप्रसाद (T A Star)—इस दूकानपर बैङ्किंग हुण्डीचिट्ठी, कमीशन एजेन्सी और सराफीका काम होता है।

(२) जयपुर—शिवप्रसाद गौरीशंकर जौहरी बाजार। इस दूकानपर बर्म्मा आइल कम्पनीकी एजेन्सी है।

(३) आगरा—बन्सीधर शिवप्रसाद बैलनगंज T. A Star इस दुकानपर बैंकिंग हुण्डी चिट्ठी और कमीशन एजेन्सीका काम होता है।

(४) इन्दौर— मेसर्स बन्सीधर खेतान, T. A Star इस दुकानपर बैंकिंग, हुण्डी, चिट्ठी और आढ़तका काम होता है।

(५) साम्भर—मेसर्स बन्सीधर राधाकिशन T. A Star इस दुकानपर नमकका बड़ा भारी व्यापार होता है।

(६) जाम नगर—मेसर्स गङ्गावख्श गुलाबराय, T. A Star इस दुकानपर चीनीका थोक व्यापार होता है।

सेठ विहारीलालजी वैराठी कोड़ीवाले

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान वैराठ (जिला जयपुर)में है। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको जयपुरमें स्थापित हुए करीब ३०-३५ वर्ष हुए। श्रीयुत विहारीलालजी ही के हाथोंसे इस फर्मकी स्थापना हुई और आपहीके हाथोंसे इस फर्मकी खूब उन्नति भी हुई। श्रीयुत विहारीलालजी धार्मिक और उदार विचारोंके सज्जन थे। जयपुरके व्यापारिक समाजमें आपका बहुत अच्छा प्रभाव था। आपका अभी कुछ मास पूर्व देहावसान हो गयाहै। जयपुरकी अग्रवाल पाठशाला गौशाला, हिन्दू अनाथालय, धन्वन्तरि औषधालय तथा अन्य सभी संस्थाओंमें आपके यहांसे सहायता पहुंचती रहती है।

इस समय इस फर्मके मालिक सेठ विहारीलालजीके पुत्र सेठ लक्ष्मीनारायणजी हैं। आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) जयपुर—मेसर्स बिहारीलाल वैराठी, जौहरी बाजार—यहां बैंङ्किग तथा हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

(२) जयपुर मेसर्स बिहारीलाल लक्ष्मीनारायण, काटन प्रेस—यहां रुईकी सीज़नमें कपास और रुईका व्यवसाय तथा इसकी आढ़तका काम होता है।

जौहरी

मेसर्स कान्तिलाल छगनलाल ज्वैलर्स

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मोरवी (काठियावाड़)में है। आप ओसवाल जातिके स्थानकवासी सम्प्रदायको माननेवाले हैं। यहां इस दुकानको खुले हुए करीब २५ वर्ष हुए। यह फर्म पहले मोनशी अमुलकके नामसे व्यवसाय करती थी। लेकिन जब सब भाइयोंका हिस्सा बँटा तब यह दुकान सेठ छगनलाल भाईके हिस्सेमें आगई। तभीसे इस दुकानपर मेसर्स कान्तिलाल छगनलालके नाम से व्यवसाय होता है।

इस समय इस दुकानका सञ्चालन सेठ छगनलाल भाई करते हैं आप बड़े सज्जन, शिक्षित और सुधरे हुए विचारोंके सभ्य पुरुष हैं। स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंसमें आप हमेशा भाग लेते रहते हैं। जिस समय महात्मा गांधीका खादी आन्दोलन चलता था उस समय आपने उसमें बड़े उत्साहसे

स्व० सेठ बिहारीलालजी बेराठी कोड़ीवाले जैपुर

सेठ धौंकलजी लड़ीवाले (नारायणजी महादेव) जैपुर

श्री० लक्ष्मीनारायणजी S/o बिहारीलालजी बैराठी जैपुर

सेठ छगनलाल भाई (मे० कान्तिलाल छगनलाल) जैपुर

श्रीयुत कान्तिलाल भाई S/o छगनलाल भाई जै[illegible]

श्रीयुत कुसुमचन्द्र S/o सेठ छगनलाल भाई जैपुर

भाग लिया था। आपने गुजरात काठियावाड़ और बाम्बे प्रेसिडेंसीमें हजारों रुपयेकी खादीका विना नफा लिए हुये प्रचार किया था। इस समय आपके दो पुत्र विद्यमान हैं जिनके नाम क्रमसे श्रीयुत कान्तिलाल भाई और श्रीयुत कृष्णचन्दजी हैं। श्रीयुत कान्तिलाल भाई आपको दुकानके काममें मदद देते हैं हैं और श्रीयुत कृष्णचन्द अभी विद्याध्ययन करते हैं।

जयपुर—मेसर्स कांतिलाल छगनलाल जौहरीबाजार—इस दुकानपर हीरा, पन्ना, माणिक, मोतीके खुले और वन्द जड़ाऊ जेवरोंका व्यवसाय होता है जवाहरातकी कमीशन एजंसीका काम भी यह फर्म करती है।

मोरवी, (जूनागढ़) यहां जौहरी मोनशी अमुलखके नामसे आपका वर्कशाप है।

मेसर्स कपूरचन्द कस्तूरचन्द जौहरी

(तारका पताः—(Meharnivas)

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान जयपुरमें ही है। आप श्रीमाल श्वेताम्बर जैनजातिके हैं। यह फर्म पुश्तैनी रूपसे यहांपर यही व्यवसाय करती आ रही है। जयपुरकी पुरानी फर्मोंमेंसे यह फर्म भी एक है। इस समय इस फर्मके मालिक श्रीयुत मेंहरचन्दजी हैं। आपके पिताजीका नाम श्रीयुत कस्तूरचन्दजी था। आप तत्कालीन कर्नाटक नवाबके खास जौहरी थे।

यह दुकान जयपुरकी अच्छी दुकानोंमेंसे एक है। यहां पर जवाहिरातका अच्छा व्यापार होता है। राजपूताना, सेण्ट्रल इण्डियाके बहुतसे राजा और रईसोंमें आपके यहांसे जवाहिरात जाता है। कई राजा रईसोने इस फर्मके कामसे प्रसन्न होकर अच्छे २ सर्टिफिकेट भी दिए हैं।

श्रीयुत मेंहरचंदजीके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्रीयुत दौलतचन्दजी हैं। आप बड़े सुयोग्य व्यक्ति हैं। इस समय आप ही दुकानके कारोबारको सम्हालते हैं।

इस फर्मकी लण्डन, पेरिस, न्यूयार्क आदि सभी विदेशों व हिन्दुस्तानके भी सभी बड़े शहरोंमें आढतें हैं। वहांसे आपके यहाँ बहुतसा माल जाता आता है।

गुलाबचंद बेद जौहरी

इस फर्मके वर्तमान संचालक श्रीयुत चम्पालालजी हैं। आपका मूल निवासस्थान जयपुर-ही है। इस फर्मको स्थापित हुए करीब १७५ वर्ष हुए। इस फर्मकी विशेष तरक्की श्री सेठ गुलाबचंद जीके हाथसे हुई थी। आपके पश्चात् क्रमशः श्री पूनमचन्द जी और मिलापचन्द जीने इसके कार्य को सम्हाला।

श्रीयुत चम्पालालजीकी उम्र इस समय २२ वर्षकी है पर आप दुकानका सञ्चालन बहुत अच्छी तरहसे कर रहे हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जयपुर-श्री गुलाबचन्द वेद जौहरी, वारहगणगोर—यहां सब प्रकारके जवाहिरातका व्यापार होता है।

कलकत्ता--श्री गुलाबचन्द वेद १७९ क्रास स्ट्रीट—इस फर्मपर सराफी तथा जवाहरातका व्यापार होता है। इस फर्मके द्वारा लंदन और पेरिसको बहुतसा एक्सपोर्ट इम्पोर्ट होता है। यहांपर आपकी दो कोठियां भी बनी हुई हैं।

मेसर्स चुन्नीलालमूलचंद कोठारी

इस दुकानके मालिकोंका मूल निवास स्थान जयपुरमें है। आप ओसवाल जातिके हैं। इस दुकानको स्थापित हुए करीब सौ बरसका अर्सा हो गया। सबसे पहले इस दुकानको श्रीयुत—हीरालाल जी कोठारीने स्थापित किया। उस समय इस दुकानका नाम मेसर्स "नथमल हीरालाल" लिखा जाता था। श्रीयुत हीरालाल जीके पश्चात् श्रीयुत चुन्नीलालजीने इस दुकानके कार्य्यको सम्भाला। सन् १९७७में आपका देहावसान हो गया। आपके पश्चात् आपके पुत्र श्रीयुत मूलचंदजी कोठारी इस दुकानके कामको सम्भाल रहे हैं। आपके हाथोंसे इस दुकानकी अच्छी तरक्की हुई।

आपकी निम्नांकित स्थानोंपर दुकाने हैं:—

(१) जयपुर—(हेड आफिस) मेसर्स चुन्नीलाल मूलचन्द कोठारी—इस दुकानपर जवाहिरात-के दागीनों और खुले जवाहिरातका व्यापार होता है। राजपूताने और सेण्ट्रल इण्डियाके कई राजवाड़ों-में भी आपके द्वारा जवाहिरात सप्लाय होते हैं। T. A. Pearl

(२) जयपुर—अपोजिट जयपुर होटल—मेसर्स सी० एम० कोठारी एण्ड संस—इस दुकानपर क्यूरियो और ज्वैलर्स दोनों प्रकारका व्यवसाय होता है।

(३) अजमेर—चुन्नीलाल मूलचन्द लाखन कोठरी—इस दुकानपर सलमा सितारा और कपड़ेका व्यवसाय होता है।

—०:०—

मेसर्स जौहरीमल दयाचंद जौहरी

इस फर्मके मालिक ओसवाल (सखलेचा) जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब १५० वर्ष हुए। इस दूकानकी स्थापना सर्वप्रथम सेठ दयाचंदजीने की सेठ दयाचंद

श्री मेहरचन्दजी जरगड़ (कपूरचन्द कस्तूरचन्द) जैपुर

श्री महादेवलालजी जौहरी (जौहरीमल दयाचन्द) जैपुर

श्री दौलतचन्दजी जरगड़ (कपूरचन्द, कस्तूरचन्द) जैपुर

श्री मूलचन्दजी कोठारी (चुन्नीलाल मूलचन्द) जैपुर

श्री० दुर्लभजी भाई जवेरी (मे० दुर्लभजी त्रिभुवनदास) जैपुर

श्री० विनयचन्दजी S/o दुर्लभजी भाई जवेरी, जैपुर

श्री० गिरधरलालजी S/o दुर्लभजी भाई जवेरी, जैपुर

श्री० ईश्वरलालजी S/o दर्लभजी ... जैपर
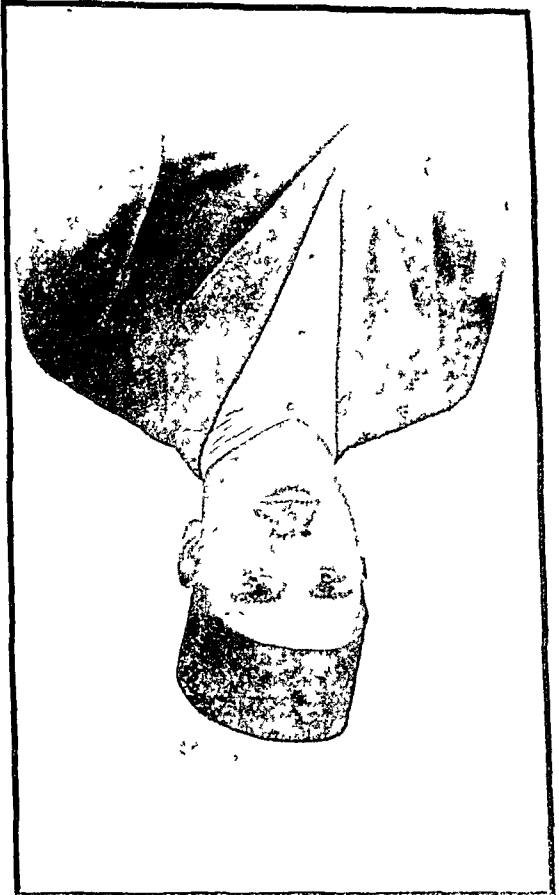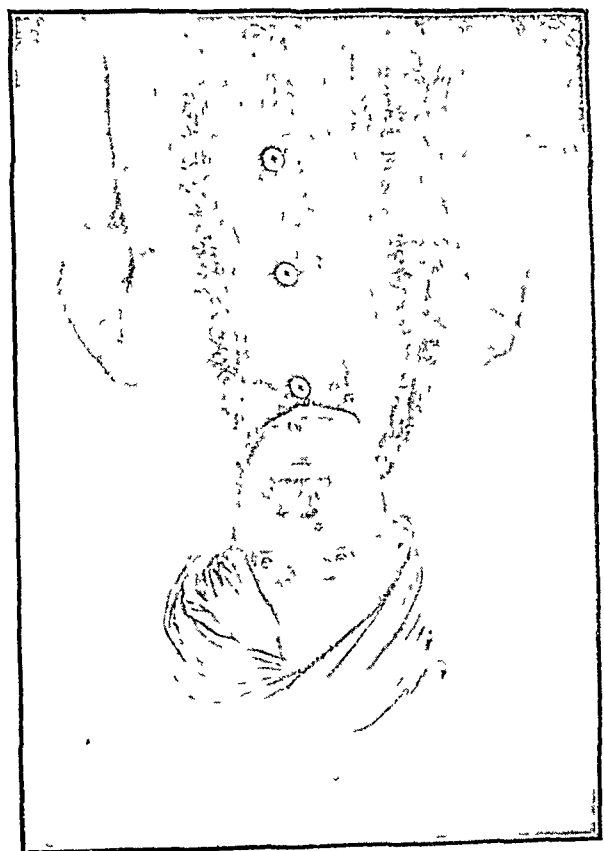
जीके चार पुत्र हुए, जिनके नाम श्री काशीनाथजी, श्री मूलचंदजी, श्रीजमनालालजी तथा श्री छोटी लालजी हैं। इस फर्मपर कई पीढ़ियोंसे बहुत बड़े रूपमें जवाहरातका व्यापार होता आ रहा है।

वर्तमानमें इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री १–मुन्नीलालजी (छोटीलालजीके पुत्र) २—महादेव लालजी ३—चम्पालालजी (जमनालालजीके पुत्र) ४—माणिकचंदजी (मूलचंदजीके पौत्र) तथा ५ – नवरतनमलजी (काशीनाथजीके पौत्र) हैं।

यह फर्म यहांकी स्टेट ज्वेलर है। जयपुर स्टेटका जवाहिरात सम्बन्धी सब कामकाज इसी फर्मके द्वारा होता है। इस फर्मको वायसराय आदि कई उच्च पदस्थ अंग्रेज आफिसरोंसे प्रशंसापत्र मिले हैं। इसके अलावा लंदन, कलकत्ता, तथा जयपुर एक्जीविशनसे इस फर्मको सार्टीफिकेट तथा मेडिल्स मिले हैं। यह फर्म पेरिस, लंदन, न्यूयार्क वगैरहसे जवाहरातका व्यवसाय करती है। कई भारतीय राजा रईसोंके यहां भी इस फर्मके द्वारा जवाहरात जाता है। इस फर्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

जयपुर—मेसर्स जौहरीमल दयाचंद जौहरी—इस फर्मपर सब प्रकारके जवाहरात और खासकर जड़ाऊ गहने का बहुत बड़ा व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त जयपुर स्टेटके जागीरदारोंसे नकद लेनदेनका भी यहां व्यापार होता है।

अजमेर—सेठ महादेवलाल जौहरी, कैसरगंज—इस दूकानपर भी सब तरहके जवाहरातका व्यापार होता है।

मेसर्स दुर्लभजी त्रिभुवनदास जौहरी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मोरवी (काठियावाड़) में है। आप ओसवाल जातिके स्थानकवासी जैन सम्प्रदायको माननेवाले सज्जन हैं। इस दूकानको जयपुरमें खुले हुए करीब २० वर्ष हुए। इस दुकानकी स्थापना सेठ दुर्लभजीभाईने अपने हाथोंसे की। आप बड़े ही सज्जन, समाजसेवी और धार्मिक कार्य्योंमें उत्साह रखनेवाले सज्जन हैं। आपके पिताजीका नाम सेठ त्रिभुवनदासभाई जौहरी था। आपके इस समय पांच पुत्र हैं, जिनके नाम क्रमसे १-विजयचन्दजी (२) गिरिधरलालजी (३) ईश्वरलालजी (४) शान्तिलालजी और (५) खेलशङ्करजी हैं। इनमेंसे पहले तीन आपको दुकानके कार्य्योंमें मदद देते हैं और शेष पढ़ते हैं।

श्रीयुत दुर्लभजी भाई अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्सके जनक हैं। आपने अपनेही हाथोंसे पहले पहल मोरवीमें इसकी स्थापनाकी थी। आप कई वर्षोंतक इसके चीफसेक्रेटरी रहे हैं और इस समय आप इसके ट्रस्टी हैं। कान्फ्रेन्सकी तरफसे दो तीन ट्रेनिंग कॉलेज चल रहे हैं उनके भी आप सदस्य हैं। समाज-सेवाकी भावनाएं आपके हृदयमें हमेशा काम करती रहती हैं।

इस समय आपकी दुकानें नीचे लिखे स्थानोंपर हैं।

(१) जयपुर—मेसर्स दुर्लभजी त्रिभुवनदास जौहरी बाजार T. A Nakada इस दूकानपर जवाहिरातका बहुत बड़ा व्यापार होता है। राजपूतानेके राजा महाराजोंमें आपके द्वारा बहुतसा जवाहिरात सप्लाय होता हैं।

(२) मोरवी—मेसर्स मोनशी अमुलक—यहांपर इस फर्मका वर्कशाप हैं।

(३) रंगून—मेसर्स दुर्लभजी भाई त्रिभुवनदास स्काटमार्केट--यहांपर भी जवाहिरातका काम होता है।

(४) रांची—मेसर्स दुर्लभजी त्रिभुवन एण्ड करीमजीवा मेनरोड—यहां पर भी जवाहरातका व्यापार होता है। इसके अलावा आपका मारवाड़के अन्दर सरदार शहरमें सेंटर है।

मेसर्स नारायणजी महादेव लड़ीवाले जौहरी

इस फर्मके मालिक अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना करीब पचास साठ वर्ष पहिले सेठ नारायणदासजीने की। उनके हाथोंसे इस फर्मकी विशेष तरक्की हुई। श्रीयुत नारायणजीके दो पुत्र थे। पहले श्रीयुत महादेवजी और उनसे छोटे श्रीयुत धौंकलजी। संवत् १९५२ श्रीयुत नारायणजीका स्वर्गवास होगया। उनके पश्चात् उनके बड़े पुत्र श्रीयुत महादेवजीने इसके कारबारको सम्हाला। उनके हाथोंसे भी इस दुकानकी तरक्की हुई। उनका स्वर्गवास संवत १९५८में हुआ। आपके पश्चात् आपके छोटे भ्राता श्रीयुत धौंकलजीने इस फर्मके कामको सम्हाला। इस समय श्रीयुत धौंकलजी और श्रीयुत प्रह्लादजी (श्रीयुत महादेवजीके पुत्र) दोनों इस दुकानके कार्य्यका संचालन करते हैं। श्रीयुत धौंकलजीके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्रीयुत वंशीधरजी है। श्रीयुत प्रह्लादजीके दो पुत्र हैं जिनके नाम क्रमसे श्रीयुत मुरलीधरजी और श्रीयुत मनोहरलालजी हैं। श्रीयुत वंशीधरजी और श्रीयुत मुरलीधरजी दुकानके संचालनमें भाग लेते हैं।

इस फर्मके संचालकोंने जयपुरकी स्थानीय अग्रवाल, पाठशाला और जयपूरकी गोशालाके मकान अपनी ओरसे प्रदान किये हैं। घाट दरवाजेके स्मशानमें और घाटकी सड़कपर दो बगीचियें आपने सर्वसाधारणके आरामके लिए बनवाई हैं।

जयपुरके जौहरी समाजमें आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। आपकी फ़र्मपर जवाहिरात और उसमें भी खासकर मोतीका अच्छा व्यवसाय होता है।

भण्डारी पूनमचंद जौहरी

इस फर्मका संचालन श्रीयुत पूनमचन्दजी करते हैं। आप ओसवाल जातिके भण्डारी गोत्रके सज्जन हैं। आप श्रीयुत सोभागसिंहजीके पुत्र हैं। संवत् १९४२में श्रीसोभागसिंहजीका
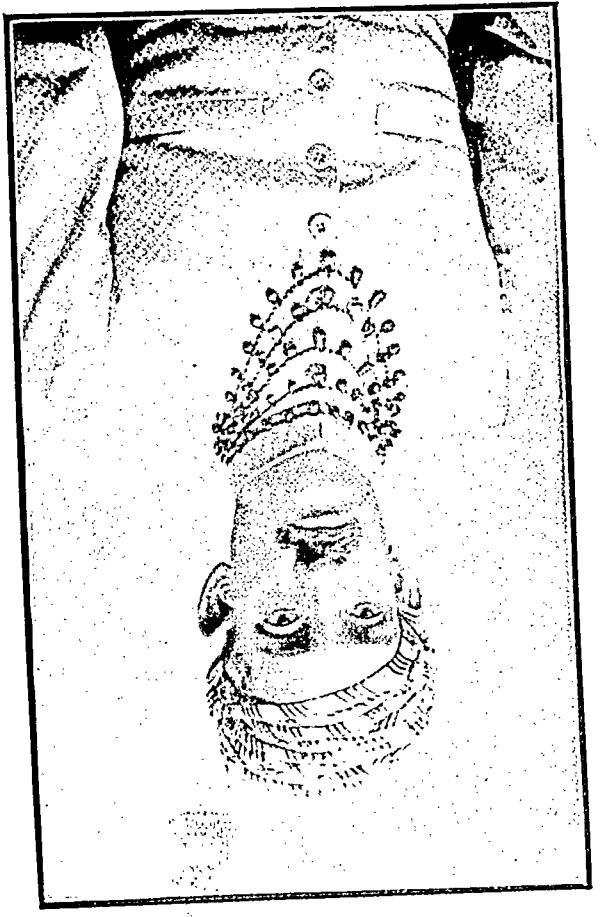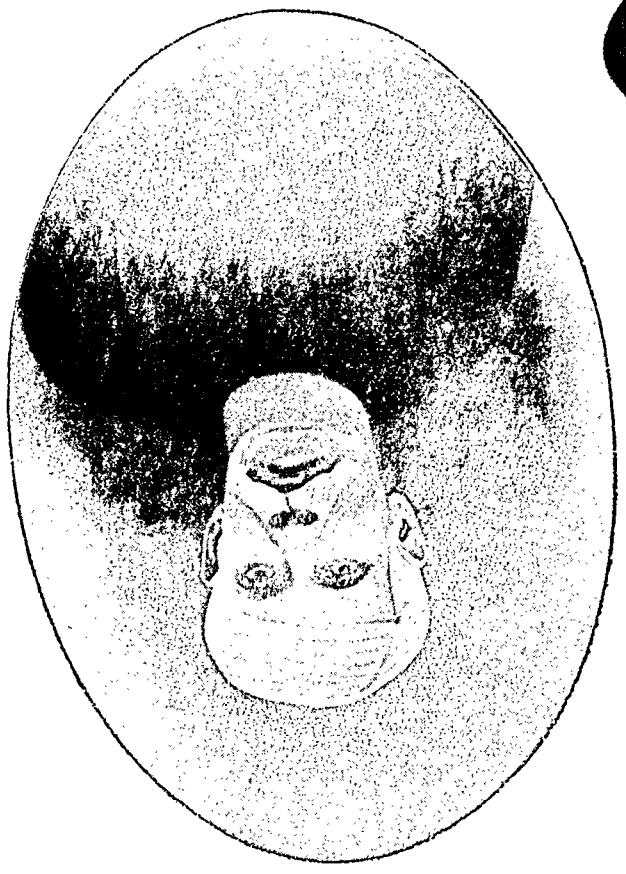
स्वर्गवास होगया। तभीसे आप इस दुकानका सञ्चालन करते हैं। आप इस समय पांच भाई हैं जिनके नाम श्रीपूनमचन्द्रजी, श्रीयुत गुलाबचन्दजी, सुलतानसिंहजी, श्री ताराचन्दजी तथा फ़तेसिंहजी है।

इनमेंसे श्री फ़तेसिंहजी के श्रीयुत सुखराजजी और श्रीयुत ताराचन्दजी के श्री खेमराजजी नामक पुत्र हैं। यह खानदान जयपुरके ओसवाल समाजमें अच्छा प्रतिष्ठित है, तथा व्यापारिक समाजमें भी इस फर्मकी अच्छी प्रतिष्ठा है।

इस फर्मकी दूकानें नीचे लिखे अनुसार हैं :—

(१) जयपुर—सेठ पूनमचंद भण्डारी जौहरी बाजार—इस दुकानपर जवाहिरात बैंकिंग और हुण्डी चिट्ठीका कारबार होता है।

(२) रंगून—मेसर्स पूनमचन्द फ़तेसिंह, T A Dipawat इस दुकानपर बैंकिंग हुण्डी, चिट्ठी, ज़वाहिरात और कमीशन एजन्सीका काम होता है।

(३) रंगून-मेसर्स पूनमचन्द मूलचन्द मुगलष्ट्रीट—इस दुकानपर जवाहिरात, बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी और कमीशन एजन्सीका काम होता है। (T. A Bhandaijee)

नं० ३ की रंगूनवाली दुकानकी निम्नाङ्कित स्थानोंमें ब्राञ्चेस हैं (१) माण्डले (Bhandarijee) (२) सञ्हाय (Bhandarijee) (३) मरगुई (Bhandarijee)

——

मेसर्स फूलचन्द मानिकचंद जौहरी

इस फर्मके सञ्चालकोंका मूल निवास स्थान पटियाला स्टेटके बरुई नामक नगरमें है। आप श्रीमाल जैन श्वेताम्बर जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको यहांपर स्थापित हुए करीब पचास वर्ष हुए। श्रीयुत फूलचन्दजी के पिता श्रीयुत नानकचन्दजी पटियाला स्टेटमें कानूगो और जमींदार थे। श्रीयुत फूलचन्दजीका जन्म बसईमें ही हुआ। आप जब बारह तेरह वर्षके थे तभी व्यापारके लिये जयपुर आये थे। यहां आकर इस छोटी उमरमें ही आपने जवाहिरातका काम प्रारम्भ किया और बहुतसा धन, पैदा किया। स्वर्गीय महाराज माधोसिंहजीके हाथसे संवत् १९७१ से लेकर उनके स्वर्गवास होने तक जो एक्सेंज बिजिनेस स्टेट ट्रेझररीमें होता था। वह आपके मार्फत ही होता था।

श्रीयुत फलचन्दजीके तीन पुत्र हैं जिनके नाम श्रीयुत मानिकचन्दजी श्रीयुत मेहताबचन्दजी और श्रीयुत मोतीचन्दजी हैं।

इस दुकानपर जवाहिरातका जिसमें खासकर पन्ना का बिजिनेस होता है। लण्डन, पेरिस, न्यूयार्क आदि बाहरी शहरोंमें आपके द्वारा बहुत जवाहरात एक्सपोर्ट होता है।

सेठ बनजीलालजी ठोलिया ज्वेलर्स

इस फर्मके मालिक सरावगी जैन जातिके वैश्य हैं। इस फर्मकी स्थापना सेठ बनजीलालजी ने की। आप उन व्यापारियोंमेंसे हैं। जिन्होंने अपने बाहुबल, अपने पराक्रम और अपनी चतुरतासे लाखों रुपयेकी दौलत पैदा की हैं, तथा व्यापारिक समाजमें अपनी प्रतिष्ठा कायमकी है। सेठ बनजीलालजीके पहले यह फर्म बहुत ही छोटे रूपमें थी। आपने आजसे करीब पचास पिचपन बर्ष पहले पन्द्रह सोलह बरसकी उमरमें इस फर्मका कार्य्य प्रारम्भ किया और इतने थोड़े समयमें ही इतनी प्रख्याति प्राप्त करली कि आज जयपुरके सारे जौहरी समाजमें यह फर्म पहले नम्बरकी मानी जाती है। आपके यहां तारका पता—Emarald हैं।

सेठ बनजीलालजीकी दान धर्म और सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर भी बहुत रुचि रही है आपकी ओरसे कई संस्थाओंमें दान दिया जाता है।

इस समय सेठ साहबके पांच पुत्र हैं जिनके नाम क्रमसे कुंवर गोपीचन्दजी, कुंवर हरकचन्दजी, कुंवर सुन्दरलालजी, कुंवर पूनमचन्दजी और कुंवर ताराचन्दजी हैं। आप पांचोंही बड़े सुयोग्य और सज्जन पुरुष हैं। कुंवर गोपीचन्दजीके एक पुत्र श्रीयुत ऋषभदासजी और कुंवर हरकचन्दके एक पुत्र श्रीयुत रूपचन्दजी है।

सेठ बनजीलालजीके एक भाई हैं जिनका नाम श्रीयुत जमनालालजी है। इनके एक पुत्र हैं। जिनका नाम अनूपचन्दजी है। इनके अलावा सेठ साहबके दो भाई और थे जो स्वर्गवासी हो चुके हैं। इनमेंसे बड़े भाईका नाम श्रीयुत जौहरीलालजी था, उनके एक पुत्र विद्यमान हैं, जिनका नाम घीसीलालजी हैं। दूसरेका नाम बहादुरलालजी था।

इस समय इस दुकानपर जवाहिरातका बहुत बड़ा व्यापार होता है। बम्बईमें खैरातीलाल सुन्दरलाल जौहरीके नामसे मोतीबाजारमें जो दुकान है उसमें आपका हिस्सा है। T. A. Manfool

मेसर्स बहादुरसिंह भूधरसिंह जौहरी

इस फर्मके मालिक ओसवाल जातिके स्थानकवासी सम्प्रदायको माननेवाले सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना हुए करीब सौ बरस हुए। श्रीयुत बहादुरसिंहजी और भूधरसिंहजी दोनों ही भाइयोंने इस फर्मको स्थापित किया था।

इस समय श्रीयुत बहादुरसिंहजी और श्रीयुत भूधरसिंहजी के वंशजोंकी फर्म अलग हो २ गई हैं। श्रीयुत सुगनचन्दजी श्रीयुत भूधरसिंहजीके पौत्र हैं। आपके पिताजीका नाम श्रीयुत

कुंवर पूनमचन्दजी ठोलिया, जैपुर

कुंवर ताराचन्दजी ठोलिया, जैपुर

कुंवर ऋषभदासजी ठोलिया, जैपुर

कुंवर रूपचन्दजी ठोलिया, जैपुर

स्व० सेठ भूरामलजी सुराना (भूरामल राजमल) जैपुर

श्री० पूनमचन्दजी भंडारी, जैपुर

श्री० राजमलजी सुराना जौहरी (भूरामल राजमल) जैपुर

श्री० सुगनचन्दजी चोरड़िया जौहरी, जैपुर
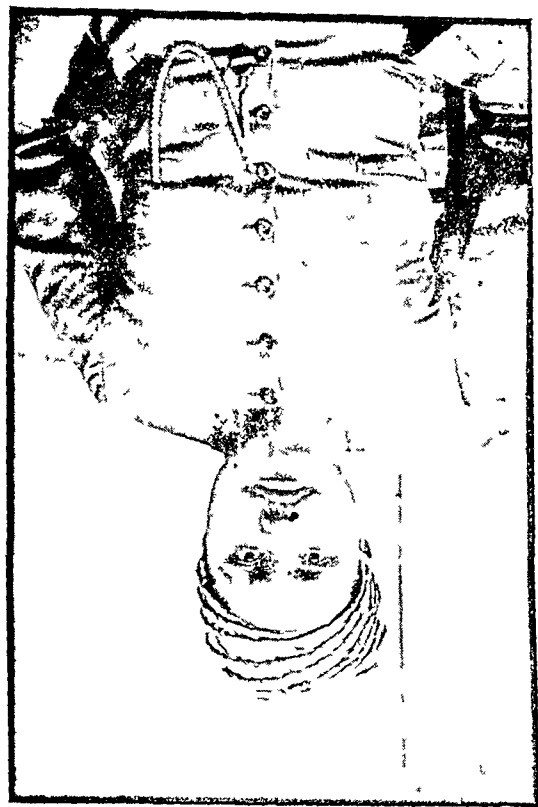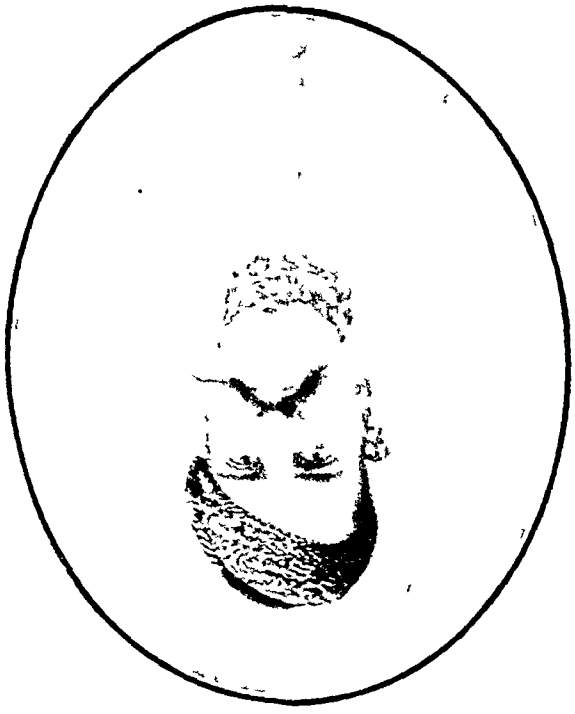
मोतीलालजी था, आपका स्वर्गवास संवत् १९३६ में हुआ। उनके पश्चात् श्रीयुत सुगनचन्द्जी ने इस फर्मके कामको सम्हाला।

आपकी दुकानपर जवाहिरातका और उसमें भी खासकर पन्नाका व्यवसाय होता है। इस दुकानसे इंगलैंडमें भी बहुतसा जवाहिरात जाता है (T. A. Panna)

मेसर्स भूरामल राजमल सुराना जौहरी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान देहलीमें है। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं। इस यहांपर आये करीब खानदानको १५० वर्ष हुए। तभीसे यह फर्म भी यहांपर स्थापित है। इस फर्मकी विशेष तरक्की श्री भूरामलजीके हाथोंसे हुई। आप बड़े ही उद्योगी, कर्मशील और सज्जन पुरुष थे। आपका देहावसान संवत् १९७६ में हो गया। इस समय आपके पुत्र श्रीयुत राजमलजी इस फर्मके कार्य्यका सञ्चालन करते हैं। संवत् १९६४ में आपका जन्म हुआ। इतनी छोटी उमरमें ही आपने जवाहिरातके सामान महत्वपूर्ण व्यवसायमें दक्षता प्राप्त करली है।

इस समय इस दुकानपर जवाहिरात, हीरा, मोती और जड़े हुए जेवरोंका अच्छा व्यवसाय होता है। यहांके देशी राजा रईसोंमें आपके द्वारा बहुतसा जवाहिरात सप्लाय होता है। इसके अतिरिक्त इंग्लैण्ड, अमेरिका आदि बाहरी देशोंमें भी आपके द्वारा बहुत सा एक्सपोर्ट इम्पोर्ट होता है।

मेसर्स मथुरादास सुखलाल राठी

इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब १०० वर्ष हो गये। यह फर्म पहले छोटे रूपमें थी। श्रीयुत सुखलालजी राठीके हाथोंसे इसकी विशेष उन्नति हुई। श्रीयुत सुखलालजी श्रीयुत मथुरादासजीके पुत्र हैं। यह फर्म जयपूरके जौहरी समाजमें अच्छी प्रतिष्ठित समझी जाती है। इस फर्मके मालिक माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं।

श्रीयुत सुखलालजी बड़े सज्जन पुरुष हैं। आपके तीन पुत्र हैं, जिनके नाम क्रमसे श्रीयुत सूरजमलजी, चांदमलजी, और केसरीमलजी हैं। आप तीनों ही दुकानके काममें भाग लेते हैं।

इस फर्मपर जवाहिरात, जड़ाऊ जेवर, और मीनाकारीका हरकिस्मका व्यापार होता है। राजपूतानेके राजा रईसों तथा और घरानोंमें भी आपके यहांसे माल सप्लाय होता है।

इस दुकानका हेड ऑफिस जौहरी बाजारमें है और कोठी अजमेरी गेट पर है।

मेसर्स रतनलाल छुट्टनलाल पोपलिया

इस फर्मके मालिक श्रीमाल (जैन) सज्जन हैं। इस खानदानमें जवाहरातका व्यवसाय कई पीढ़ियोंसे चला आया है तथा यहांके जौहरियोंमें यह दुकान पुरानी है। इस समय इस फर्मके मालिक सेठ रतनलालजी पोपलिया है। आपके पिताजी श्रीजवाहरलालजीके देहावसानके समय आपकी उम्र सिर्फ ८ वर्षकी थी। आपकी छोटी आयुमें दूकानके कारोवारको सह्यालने वाला कोई सुयोग्य व्यक्ति नहीं था इसलिये उस समय इस फर्मका व्यवसाय कुछ धीमी गतिसे चलता था। सेठ रतनलालजीने होशियार होकर दूकानको फिर व्यवस्थित ढंगसे चलाया। आपके १ एक पुत्र हैं। जिनका नाम श्रीयुत छुट्टनलालजी हैं आपकी दूकानपर जवाहरातके सब प्रकारके गहने तयार रहते हैं तथा वनवाये जाते हैं।

मेसर्स एस० फोरास्टर एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बीकानेर है। आप ओसवाल जातिके सज्जन है। इस फर्मकी स्थापना सन् १८८० में हुई। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन श्री राजमलजी गोलेछा करते हैं। जयपुरके ओसवाल समाजमें आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। श्री राजमलजी के पुत्र कुँवर सोहनमलजी गोलेछा भी व्यापारिक कार्योंमें भाग लेते हैं।

वर्तमानमें आपकी कम्पनीमें कार्पेट, ब्रास, ब्रास इनामिल, मेन्युफेक्चरर्स, वेङ्कर्स, मनी एक्सचेंजर्स गार्नेट् मर्चेन्ट आदिका काम होता है। इसके अतिरिक्त इस फर्मपर स्टेण्डर्ट ऑइल कम्पनीकी तैलकी एजंसी और नेशनल एनीनिल एण्ड केमिकल कं० की रंगकी एजंसी है। यह फर्म ऊलनफेल्ट मेन्युफेक्चरर भी है।

मेसर्स सुगनचन्द सोभागचन्द

इस फर्मके मालिक खास निवासी देहलीके हैं। इस फर्मकी स्थापना ६ वर्ष पूर्व श्री सुगनचन्दजीने की। आरम्भमें आपने बहुत छोटे रूपमें व्यापार शुरू किया था। श्रीसुगनचन्दजीके बाद इनके पुत्र सेठ सोभागचन्दजीने इस दूकानके व्यापारको बढ़ाया। आपको कई अंग्रेज ऑफिसरोंसे इनामिल गोल्डके बाबत सार्टिफिकेट प्राप्त हुए थे। संवत् १९६९ में आपका देहावसान हुआ।

वर्तमानमें इस दूकानके मालिक सेठ सोभागचन्दजीके पुत्र सेठ इन्द्रचन्दजी हैं। सन् १९२३ में लार्ड कर्जनके समयमें जो देहली दरबार हुआ था, उसमें देशी मालके लिये आपको सार्टिफिकेट मिला था। वर्तमानमें आपकी फर्म पर इनामिल गोल्ड, ज्वेलरी और प्रेशियस स्टोनका व्यापार होता है।

श्री सेठ सुखलालजी राठी (मथुरादास सुखलाल) जैपुर

श्री ईश्वरलालजी सोगानी (सपत्नीक) जैपुर

श्री सूरजमलजी राठी (मथुरादास सुखलाल) जैपुर
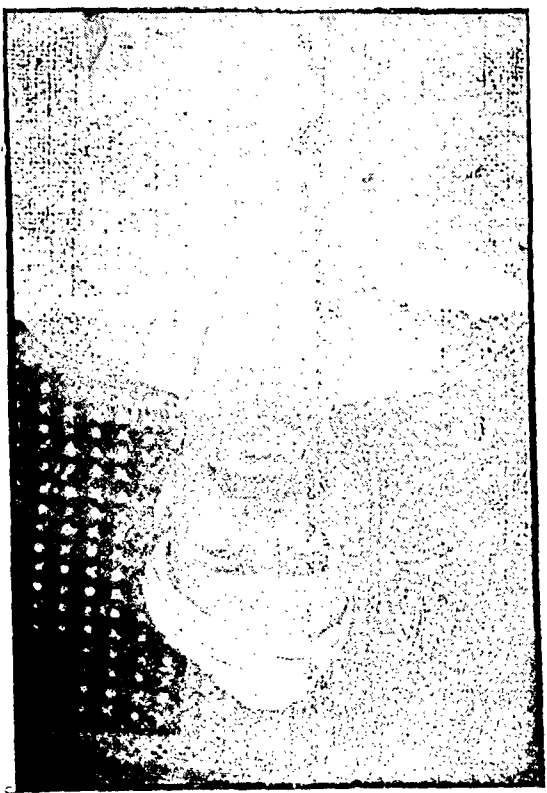
श्री इन्दरचन्दजी जरगड़ (सुगनचन्द साभागचन्द) जैपुर

मेसर्स सोगानी एण्ड जैनी ब्रदर्स

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री ईश्वरलालजी सोगानी हैं। आप खास निवासी जयपुरके ही हैं। इस फर्मकी स्थापना संवत १६७२ में श्रीयुत ईश्वरलालजीने की। आप सरावगी जैन जातिके सज्जन हैं।

श्री ईश्वरलालजी मारवाड़ी समाजके उन सभ्योंसे हैं, जिहोंने परदा सिस्टमके समान रेचड़ प्रथाको (जिसने मारवाड़ी समाजके नारी समुदायको नष्ट भ्रष्ट और अस्वस्थ बना रक्खा है।) प्रत्यक्षमें तोड़कर समाजके सामने एक नवीन आदर्श उपस्थित कर दिया है। आप अपनी धर्म-पत्नी श्रीलक्ष्मीदेवीको लेकर विलायत भ्रमण कर आये हैं।

श्रीईश्वरलालजीके पिता श्रीमंसुखलालजी बहुत मामूली परिस्थितिके व्यक्ति थे। श्री ईश्वर-लालजीका प्रथम विवाह छोटी वयमें ही होगया था। जब आपकी प्रथम विवाहकी पत्नीका देहावसान होगया तब आपने अपने अनुकूल विचारोंकी कन्यासे विवाह करनेका निश्चय कर श्री० लक्ष्मी बाई से विवाह किया। और उनको साबरमती आश्रम आदि उच्च स्थानोंमें रखकर शिक्षा दिलाई तथा बादमें परदा प्रणालीको तोड़कर सन् १६१६में आप विलायत यात्राके लिये चले गये। अमेरिकामें श्रीलक्ष्मीबाईके खादीके लिबासपर बहुत लोगोंने हँसी उड़ाई, पर आप अपनी प्रतिज्ञापर दृढ़ रहीं। फल यह हुआ कि इण्टर नेशनल एक्जीबीशनमें लक्ष्मीदेवी इण्डिया की ओरसे प्रतिनिधि रहीं।

श्रीईश्वरलालजीको पुस्तक पठनसे अच्छा प्रेम है। आपने जयपुरमें सन्मति पुस्तकालयकी स्थापना की। शिक्षाके साथ २ आपका व्यवसायिक चातुर्य्य भी बढ़ा चढ़ा है। आपने अपने ही हाथोंसे अपने जवाहरातके व्यापारको अच्छा जमा लिया है। आपको सन् १६२६ के अमेरिकाके इण्टर नेशनल एक्जीबीशनमें भारतीय मालकी अपूर्व सफलताके उपलक्षमें ३ गोल्ड मेडल और १ ग्रांड प्राइज़ प्राप्त हुआ था। भारतीयोंके लिये यह पहिली बात थी।

आपने उपवास चिकित्सा और जल चिकित्सा द्वारा रोगियोंको आराम पहुंचानेकी पद्धतिमें भी बहुत सफलता प्राप्त की है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१—जयपुर—मेसर्स सोगानी एण्ड जैनी ब्रदर्स जौहरी बाजार T. A. Ishwar यहाँ आपका हेड आँफिस है। तथा विलायतके लिये जवाहिरातका एक्सपोर्ट होता है।

२—लण्डन--मेसर्स सोगानी एण्ड को० लिमिटेड T.A Laxmidevi डीलर्स इण्डियन आर्ट एण्ड प्रेशियन स्टोन, हेण्डिक्राफ्ट आँफ इण्डिया (भारतीय कारीगरी और जवाहरातके व्यापारी)

३—न्यूयार्क सोगानी एण्डको इन्कारपोरेशन २२५ T. A Sogani---यहां भी उपरोक्त व्यापार होता है।

४—फिलाडेलफिया (अमेरिका)—सोगानी एण्ड को० इंकारपोरेशन १५०० स्टीमसन स्ट्रीट—उपरोक्त व्यापार होता है।

५—क्लीवलैंड—सोगानी एण्ड को० इन्कारपोरेशन--उपरोक्त व्यापार होता है।

मेसर्स सुन्दरलाल एण्ड संस

इस फर्मके मालिक खास निवासी आगराके हैं। इस फर्मको यहांपर खुले हुए २० साल हुए। इस फर्मकी स्थापना श्रीप्रभूलालजीने अपने बड़े भाई सुन्दरलालजीके नामसे की। तथा इसके व्यवसायको आपहीने उन्नतिपर पहुंचाया।

इस फर्मको बृटिश एम्पायर एक्जीवीशन बिम्बले (लंदन) से सार्टिफिकेट और मेडिल तथा आर भी कई प्रदर्शनियोंसे अच्छे २ सार्टिफिकेट और मेडिल्स मिले हैं। इस फर्मके व्यवसायका परिचय इस प्रकार है।

जयपुर—सुन्दरलाल एंड संस, यहां सब प्रकारका क्युरिओ सिटीका व्यापार होता है।

कमीशन एजेंट

मेसर्स रामचन्द्र मोतीलाल

इस फर्मके मालिक अग्रवाल वैष्णव सम्प्रदायके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना करीब ७० वर्ष पूर्व सेठ रामचन्द्रजीके हाथोंसे हुई। तथा इसकी विशेष तरक्की इस दूकानके वर्तमान मालिक श्रीयुत प्रल्हाददासजीके हाथोंसे हुई। आप सेठ मोतीलालजीके पुत्र हैं श्रीयुत मोतीलालजी-का स्वर्गवास हुए करीब ४० वर्ष होगये। तबसे आप ही इस कामको सम्हालते है

आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्रीयुत गुलाबचन्दजी है। आप बड़े सज्जन हैं।

इस फर्मकी नीचे लिखे स्थानोंपर दूकाने हैं

१ जयपुर—मेसर्स रामचन्द्र मोतीलाल, रामगंज बाजार—इस दूकानपर सूतका थोकबन्द व्यापार होता है। T. A. Rama

२ जयपुर—रामचन्द्र मोतीलाल—इस दूकानपर जयपुरके रंगे हुए पगड़ी पेचा, लहरिया आदि रंगीन कपड़ोंका थोक और फुटकर व्यापार होता है।

३ जयपुर—रामचन्द्र मोतीलाल—इस दूकानपर लट्ठा, धोती आदि देशी कपड़ोंका व्यापार होता है।

४ जयपुर—रामचन्द्र मोतीलाल इस दूकानपर Bayer Company की रंगकी एजंसी है।

५ जयपुर—रामचन्द्र मोतीलाल—इस दूकानपर बैंकिङ्ग और कमीशन एजन्सीका काम होता है।

श्री सेठ प्रहलाददासजी (रामचन्द्र मोतीलाल) जैपुर
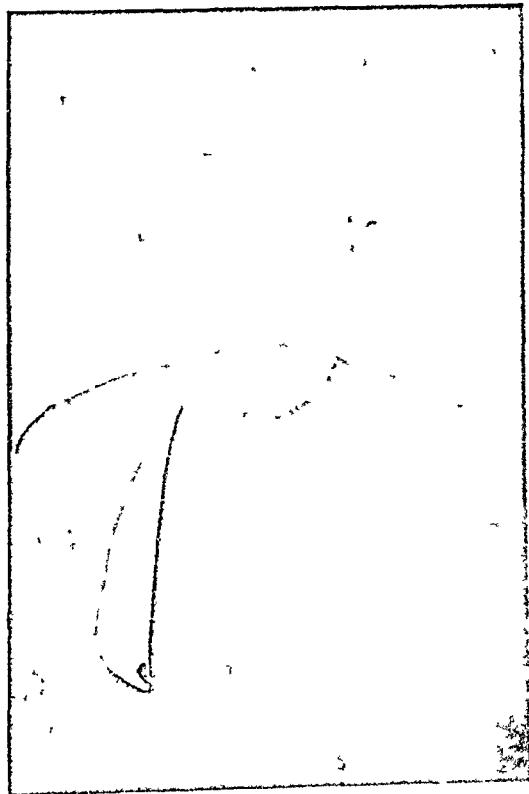
स्व० सेठ रामकुंवारजी घीया (रामकुंवार सूरजबख्श) जैपुर
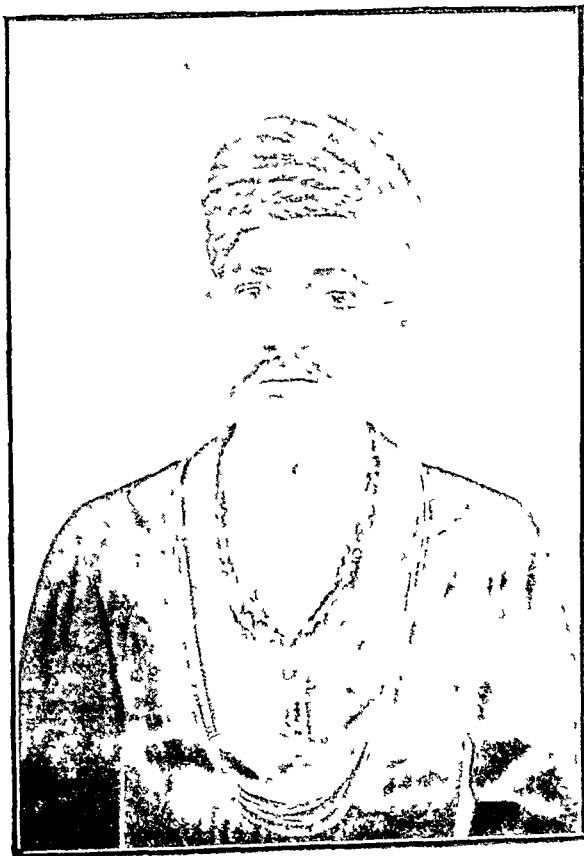
श्री [illegible] (रामचन्द्र मोतीलाल) जैपुर

मेसर्स रामकुंवार सूरजबक्स

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान चोमू (जयपुर राज्य) में है। आप खंडेलवाले (वैष्णव) जातिके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना संवत १९५० में श्रीयुत रामकुँवारजीके हाथोंसे हुई तथा इस फर्मकी विशेष तरक्की रामकुंवारजीके चचेरे भाई मांगीलालजीके हाथोंसे हुई। श्रीराम-कुंवारजीका स्वर्गवास ७० वर्षकी उम्रमें संवत १९८२ में हुआ। आप अन्त समयमें महाराज कॉलेज़में नौबल स्कूलके हेड मास्टर रहे थे। इस समय इस फर्मके संचालक: श्रीयुत सूरजबख्शजी हैं। आप सज्जन और शिक्षित हैं।

आपके इस समय चार पुत्र हैं चारो ही स्कूलमें विद्याध्ययन करते हैं। श्री मांगीलालजीके पुत्र कल्याणबक्शजी भी दूकानके कामोंमें भाग लेते हैं।

इस खानदानकी ओरसे चोमूमें घीयावालोंकी धर्मशालाके नामसे एक धर्मशाला बनी हुई है। जय-पुरकी खंडेलवाल पाठशालाके श्रीसूरज बक्शजी सेक्रेटरी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ जयपुर—हेड ऑफीस रामकुंवार सूरजबख्श चाँदपोल—यहां सब प्रकारकी आढ़त, गल्ला, तथा चीनीका थोक व्यापार और हुंडी चिठ्ठीका काम होता है। एशियाटिक पेट्रोलियम कम्पनीकी जयपुरके लिये सोल एजंसी है। T.A. Ghiya

२ जामनगर—मेसर्स रामकुंवार सूरजबख्श T.A. Jaipurwala—यहां चीनीका थोक व्यापार होता है।

३ भवानीगंज मंडी—रामकुंवारर सूरजबक्श—यहां आढ़त और हुंडी चिठ्ठीका काम होता है।

४—सवाई माधौपुर--रामकुवार सूरजबख्श " " "

५—श्रीमाधौपुर--रामकुँवार सूरजबख्श " " "

६—चौथका बरवाड़ा--रामकुँवार सूरजबख्श--यहां गुड़ और शकरका काम होता है।

७—दुर्गापुरा—रामकुँवार सूरजबख्श " " "

८—हिण्डोन सिटी--रामकुँवार सूरजबख्श-आढ़त और हुण्डी चिठ्ठीका काम होता है।

९—सांभरलेक—विजयलाल रामकुँवार—हुण्डीचिठ्ठी, आढ़त तथा नमकका व्यापार होता है।

मेसर्स हरबख्श सूरजमल

इस फर्मके मालिक मारोठ (मारवाड़) के निवासी हैं। इसे जयपुरमें स्थापित हुए करीब ६० वर्ष हुए। इस दुकानको सेठ हरबख्शजीने स्थापित किया। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ हरबख्शजीके पुत्र सेठ सूरजमलजी हैं। आप सरावगी (पाटनी-जैन) जातिके हैं। आपके पुत्र श्री मूलचन्दजी तथा मोतीलालजी व्यवसायमें भाग लेते हैं। आपकी ओरसे मारोठमें बोर्डिंग

हाउस, जैन पाठशाला और औषधालय बना हुआ है। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ जयपुर—हरबख्श सूरजमल जौहरी बाजार—यहां हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

२ जयपुर—हरबख्श सूरजमल धानमंडी—यहां गल्ले और जीरेका व्यवसाय होता है।

३ जयपुर—हरबख्श सूरजमल-कॉटन जीन प्रेस—यहां रुई। कपासका व्यापार होता है।

४ आगरा—हरबख्श सूरजमल बेलनगंज-यहां आढ़त तथा हुण्डीका काम होता है। यह फर्म ५० वर्षोंसे यहां स्थापित है।

५ बम्बई—चैनसुख चन्दनमल भोलेश्वर, T. A. Marothawala—यहां आढ़त तथा हुण्डी चिट्ठी का व्यापार होता है।

कपड़े और गोटेके व्यापारी

मेसर्स केशरलाल कस्तूरचन्द कपूर

इस फर्मके मालिक खण्डेलवाल श्रावक जातिके सज्जन (दिगम्बर-धर्मावलम्बी) हैं। इस फर्मकी स्थापना हुए करीब ३२ वर्ष हुए। इसके मूल संस्थापक श्रीयुत लाला चिमनलालजी हैं, जो कि जयपुर रियासतमें महकमा इमारतके अफसर थे। इसकी विशेष तरक्की उन्हींके हाथोंसे हुई। ला० चिमन लालजी बडे योग्य और सज्जन पुरुष थे। जयपुरकी जनतामें तथा राज्यमें आपका अच्छा सम्मान था। आपका स्वर्गवास सन् १९१९ में हुआ। इस समय इस फर्मका सञ्चालन सेठ चिमनलालजीके पुत्र श्रीयुत केशरलालजी करते हैं। आपके छोटे भाई श्रीयुत कस्तूरचन्दजी इस समय अपने पिताजीके स्थानपर महकमा इमारतके ऑफिसर हैं।

श्री केशरलालजीको शिक्षा और विद्याभ्याससे बडा प्रेम है। यहांपर आपका एक बगीचा और कोठी बनी हुई है। आपके इस समय पांच पुत्र हैं। जिनमेंसे सबसे बड़े श्रीयुत कस्तूरचन्दजी जिनकी उम्र अभी केवल २० वर्षकी है, बी० ए० में पढ़ रहे हैं। शेष चार भी विद्याध्ययन करते हैं।

आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

जयपुर—मेसर्स केशरलाल कस्तूरचन्द रामगंज बाजार—इस दूकानपर सूत, कपड़ा तथा आढ़तका व्यवसाय होता है।

स्व० लाला चिमनलालजी (केशरलाल कस्तूरचन्द) जेपुर

श्रीयुत सेठ केशरलालजी (केशरलाल कस्तूरचन्द) जैपुर

श्रीयुत कस्तूरचन्दजी (केशरलाल कस्तूरचन्द) जैपुर

श्रीयुत गोपलालजी गोधा (चिमनलाल [illegible]) जैपुर

मेसर्स गोपालजी मुरलीधर जयपुर

इस फर्मके मालिक अग्रवाल जैन [गोयल] जातिके हैं। इस दूकानको स्थापित हुए करीब १००बरस होगये। इसकी स्थापना श्रीयुत गोपालजीके पुत्र श्रीयुत मुरलीधरजीने की। उन्हींके हाथोंसे इस दूकानकी तरक्की भी हुई। मुरलीधरजीके पुत्र श्रीयुत ईश्वरलालजी जयपुरमें ईसरजी राणाके नामसे मशहूर थे और अब भी यह दूकान इसी नामसे बोली जाती है। आपके हाथोंसे इस दुकानकी खूब तरक्की हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९७० में हुआ। ईश्वरलालजीके इस समय तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमसे (१) श्रीयुत जौहरीलालजी, (२) श्रीयुत चौथमलजी, (३) श्रीयुत छोटमलजी हैं। श्रीयुत जौहरीलालजी और चौथमलजी अलग अपना व्यवसाय करते हैं।

इस दूकानका सञ्चालन इस समय श्रीयुत छोटमलजी करते हैं। आपकी ओरसे पुराने घाट-पर एक जैन मन्दिर और एक बगीचा बना हुआ है। सेठ छोटमलजीके ३ पुत्रोंमेंसे श्री कपूर-चन्दजी और भौंरीलालजी व्यवसायमें भाग लेते हैं।

आपकी दूकानोंका परिचय इस प्रकार है :-

१ जयपुर--पुरोहितजीका खंदा--मेसर्स गोपालजी मुरलीधर--इस दूकानपर देशी और विलायती दोनों प्रकारके कपड़ेका बड़े प्रमाणमें व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त जयपूरके गोटे किनारीका भी आपके यहां व्यवसायहोता है।

२ जयपुर--बन्सीधर कपूरचन्द-- इस दूकानपर सांगानेरी कपड़े और देशी कपड़ेका व्यवसाय होता है।

मेसर्स चिमनलाल रखीचन्द गोधा

इस फर्मके मालिक सरावगी जैन जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ७० वर्ष वर्ष होगये। पहले इस दूकानपर जौहरीलाल चिमनलाल नाम पड़ता था। इस दूकानकी विशेष तरक्की श्रीयुत सेठ जौहरीलालजी और उनके भाई श्रीयुत चिमनलालजीके हाथोंसे हुई। श्रीयुत जौहरीलालजीका स्वर्गवास हुए करीब चौबीस पच्चीस साल होगये। श्रीयुत चिमनलालजी अभी विद्यमान हैं। आप संस्कृतके अच्छे विद्वान, जैन धर्मके पण्डित और वक्ता हैं। जयपुरमें आप चिमनलालजी वक्ताके नामसे प्रसिद्ध हैं।

इस समय इस दूकानका सञ्चालन श्री चिमनलालजीके पुत्र श्रीयुत रखीचन्दजी और श्रीयुत गप्पूलालजी करते हैं। आप दोनों ही बड़े सज्जन व्यक्ति हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जयपुर—मेसर्स चिमनलाल रखीचन्द गोधा पुरोहितजीका खंदा—यहां जयपुरके बने हुए सब-प्रकारके गोटे तथा पट्टेका अच्छा व्यापार होता है।

खादीभंडार

यह अखिल भारतवर्षीय चरखा-संघका खादी भण्डार है। राजपूतानेका बना हुआ अधिकतर माल यहां आता है और यहांसे भारतके विभिन्न प्रान्तोंमें अच्छी मात्रामें भेजा जाता है। विशुद्ध खद्दर की कालिटी और सफाईमें इस संघने अच्छी तरक्की की है। यह फ़र्म जौहरी बाजारमें है। इसके व्यवस्थापक श्री केशरलालजी अजमेरा जैन हैं।

फोटोग्राफर एण्ड आर्टिस्ट

राजपूताना फोटो आर्ट स्टूडियो

इस स्टूडियोकी स्थापना सन् १६०७ में हुई है। इसे जयपुरके एक विद्वान और प्रतिष्ठित ताजिमी सरदार श्री रामप्रतापजी पुरोहितने आर्टकी उन्नति और अपने शौककी पूर्त्तिके लिए स्थापित किया है। पुरोहित रामप्रतापजी जयपुर स्टेटके अच्छे जागीरदार और ताजिमी सरदार हैं। आपको फोटोग्राफी और आर्टका बेहद शौक है। इस काममें आपने हजारों रुपये व्यय किये हैं। जब इस ओरसे आपका शौक हटने लगा तब आपने अपने कार्यको बंद करनेकी अपेक्षा उसे व्यवसायिक रूप देना ठीक समझा। कलाकौशलपूर्ण जयपुर शहरमें इस संस्थाके सञ्चालन करनेवाले योग्य कार्यकर्त्ताओंका मिलना कठिन नहीं था। अतएव यह स्टूडियो सन् १६०७ में स्थापित होगया और तबसे नवीन सजधज और सुधारके साथ अपनी उन्नति कर रहा है।

इस स्टूडियोंमें फोटोग्राफी, चित्रकारी और ऑइल पेंटका दर्शनीय काम होता है। यहांके फोटोमें एक खास विशेषता रहती है, जो ग्राहकोंका मन स्वाभाविक ही अपनी ओर आकर्षित करती है। यह स्टूडियो ३६ फीट लम्बा और २४ फीट चौड़ा है।

बैंकस

इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया (जयपुर ब्रांच)
मेसर्स कमलनयन हमीरसिंह
„ गोकुलदास जीवनदास
„ गनेशदास नरसिंहदास
„ चन्द्रभान बंशीलाल
„ जुहारमल सुगनचन्द
„ बलदेवदास बृजमोहन बिड़ला
„ बिहारीलाल बैराठी कोडीवाला
„ बंशीधर शिवप्रसादजी खेतान
„ सूरजबख्श निर्भयराम
„ हरबख्श सूरजमल
„ श्रीकृष्णदत्त रामविलास
„ श्रीराम नानकराय

जौहरी

इण्डियन आर्ट एण्ड ज्वेलरी स्टोर्स अजमेरी गेट
कपूरचन्द कस्तूरचंद जौहरी हनुमानका रस्ता
कांतिलाल छगनलाल जौहरी, बाजार
गुलाबचन्द लूणिया अजमेरी गेट
गोकुलदासजी पूङ्गलिया
गोवर्द्धनलाल बद्रीनारायण जौहरी बाजार
गुलाबचन्द वेद परतानियों का रास्ता
चुन्नीलाल मूलचन्द कोठारी जौहरी बाजार
जौहरीमल दयाचन्द, गोपालजीका रास्ता
ज्ञोरास्टर एण्ड कम्पनी-जौहरी बाजार
दुर्लभजी त्रिभुवनदास जौहरी बाजार
दुर्गालाल जौहरी हनुमानका रास्ता
नारायण महादेव लड़ीवाले, पीतलियोंका रास्ता
पी० एम० अलाबख्श अजमेरी गेट
पन्नालाल गनेशीलाल जौहरी बाजार
फतेलाल सुखलाल गोपालजीका रास्ता
पूनमचन्द फतेहचन्द भंडारी चौथमाताका रास्ता
फूलचन्द मानिकचन्द लाल कटलेके पास
बनजीलालजी ठोलिया घी वालोंका रास्ता
भूरामल राजमल सुराना लालकटला
मन्नालाल रामचन्द्र, जौहरी बाजार
रतनलाल पोपलिया हनुमानका रास्ता
शंकरलाल रूपनारायण हनुमानका रास्ता
रामजीमल विट्ठललाल पटनावाले गोपाल मन्दिर
सुगनचन्द सोभागमल जरगड़
सुखलालजी राठी जौहरी बाजार
सुगनचन्द चोरड़िया तेलीपाड़ा
सुन्दरलाल एण्ड सन्स
हाजी इज्जतबख्श मौलाबख्श अजमेरी गेट

कपड़े के व्यापारी

अखिल भारतवर्षीय चरखा संघ खादी भांडार जौहरी बाजार
केशरलाल कस्तूरचन्द रामगंज बाजार
गोपालजी मुरलीधर पुरोहितजीका खंदा
गोपीराम मीनालाल त्रिपोलिया बाजार
गोपीराम दामोदर जौहरी बाजार
गोपीराम देवीलाल जौहरी बाजार
गोपालदास रमणदास जौहरी बाजार
चिमनलाल रखीचन्द पुरोहितजीका खंदा
छोटीलाल नेमीचन्द हवामहल-खंदा
छोटेलाल सुंदरलाल नागावाले, कालेजके नीचे
छोटीलाल चुन्नीलाल जौहरी बाजार
जौहरीलालजी राणा पुरोहितजीका खंदा
बद्रीलाल रामनारायण जौहरी बाजार
बिहारीलाल वासुदेव गोपालजी का रास्ता
मगनलाल फूलचन्द हवा महलका खंदा
मलखीलाल स्वरूपनारायण जौहरी बाजार
रामचन्द्र मोतीलाल रामगंज बाजार
रामनारायण मालीराम पुलिसका खंदा

लखमीचन्द लादूलाल पुरोहितजीका खंदा
हरभगत मालीराम राणा जौहरी बाजार

चांदी सोनेके व्यापारी

कानजी भोलजी टकसाली जौहरी बाजार
किशनलाल सूरजमल ,,
छींगनलाल सोगानी ,,
भूमरलाल बंशीधर लौंड ,,
दुर्गालाल टकसाली ,,
नानकराम वज्ञीराम ,,
फतहलाल कटारिया ,,

सांगानेरी मालके व्यापारी

घीसीलाल स्वरूपनारायण जौहरी बाजार
जौहरीलाल गनेशीलाल अंगोछावाले
सागरमल सरदारमल त्रिपोलिया बाजार

गोटेके व्यापारी

गौरीशंकर काल्लूराम पुरोहितजीका खंदा
गंगाराम हीरालाल पुरोहितजीका कटला
चिमनलाल रखीचंद पुरोहितजीका खंदा
चैनसुख गुलाबचंद पुरोहितजीका खंदा
जौहरीलाल नंदलाल ,, ,,
फूलचंद गुलाबचंद ,, ,,
मालीराम ठोलिया जौहरी बाजार
रामदास लक्ष्मीनारायण लोंड जौहरी बाज़ार

किरानेके व्यापारी

ईसरलाल रामप्रताप पसारी मंडी
चिमनलाल ककनलाल त्रिपोलिया बाजार
चांदूलाल भूरामल सेठी ,, ,,
देवकीलाल पसारी चौपड़ आमेर
नरसिंहलाल पसारी, राजा उदयसिंहकी हवेली
वल्लभराम नारायणदास त्रिपोलिया बाजार
मलजी छोगालाल त्रिपोलिया बाजार
सूरजमल मेसरी रामगंज बाजार
सूरजमल केसरीलाल रामगंज बाजार

कमीशन एजंट और गल्लेके व्यापारी

अमृतलाल दुर्गाप्रसाद चांदपोल
जीवनराम बद्रीनारायण चांदपोल
बृजलाल मालीराम चांदपोल
विजयलाल पंचानन चांदपोल
रामकुँवार सूरजबख्श ,,
लच्छीराम रामनिवास जौहरी बाजार
विजयलाल मालीलाल ,,
लादूराम नायब चांदपोल
सदासुख चंदनमल लालकटला
शिवराज शिवनंदन चांदपोल
शिवप्रसाद गौरीशंकर जौहरी बाजार
सूरजबख्श निर्भयराम जौहरी बाजार
हीरानंद रामनिवास जौहरी बाजार
श्रीनारायण जगदीश चांदपोल

रंगके व्यापारी

जमनादास रामप्रताप त्रिपोलिया
भूमरलाल गोविंदनारायण चांदपोल
राधावल्लभ बद्रीनारायण त्रिपोलिया
एस० फोरास्टर एण्ड कम्पनी
रामचन्द्र मोतीलाल रामगंज बाजार

ब्रास एण्ड क्यूरियो मर्चेंट

चौथमल हलुका किशनपोल बाजार
चौथमल एण्ड ब्रदर्स
जसाराम थारियामल
नूरबख्श खुदाबख्श एण्ड कं० किशनपोल

मोटरकार डीलर्स

फोनसेका एण्ड को० अजमेरी गेट

हरिनारायण मोहरीलाल त्रिपोलिया

प्रिंटिंग प्रेस

प्रेमप्रकाश प्रेस पितलियोंका रास्ता

बालचन्द यन्त्रालय अजमेरीगेट

मनोरंजन प्रेस गोपालजीका रास्ता

फोटो ग्राफर्स एण्ड आर्टिस्ट

उदयराम बद्रीप्रसाद अजमेरीगेट

गोविंदराम एण्ड संस अजमेरीगेट

जी० एन० भँवरलाल त्रिपोलिया बाजार

जी० चन्दालाल चांदपोल बाजार

दी राजपूताना फोटो आर्ट स्टूडियो स्टेशनरोड

बुकसेलर्स एण्ड पब्लिशर्स

ईश्वरी प्रसाद बुकसेलर त्रिपोलिया

कन्हैयालाल बुकसेलर

स्टूडेण्टस कोआपरेटिव्ह सोसायटी महाराजा कॉलेज

स्टेशनर

व्ही० एस० सक्सेना त्रिपोलिया बाजार

शिवनारायण रामप्रताप कागजी

अत्तार

गोकुल अत्तार गोपालजीका रास्ता

चुन्नीलाल अत्तार सांगानेरी दरवाजा

झुमनजी अत्तार

वल्लभराम रामनारायण त्रिपोलिया

परफ्यूमर्स

जमनादास श्री नारायण त्रिपोलिया

राधावल्लभ चौड़ा रास्ता

बंदूक कारतूस आदिके व्यापारी

अबदुलरहीम अब्दुलकरीम जौहरी बाजार

नवरोजजी जमशेदजी जौहरी बाजार

होटलस एण्ड धर्मशालाज्

किंग एडवर्ड मेमोरियल होटल अजमेरीगेट

जयपुर होटल

न्यू होटल

राज पूताना होटल अजमेरीगेट

धर्मशाला चांदपोलगेट

माजी साहबकी धर्मशाला

पुंगलियोंकी धर्मशाला, (केवल श्वेताम्बर जैनियोंके वास्ते)

मलजी छोगालाल की धर्मशाला (केवल दिगम्बरियोंके लिये)

इसके अतिरिक्त ९-१० धर्मशाला और हैं।

लायब्रेरीज

दि महाराजा पब्लिक लायब्रेरी त्रिपोलिया

पदमावती पुस्तकालय जौहरी बाजार

शांति जैन पुस्तकालय बारहगणगोरका रास्ता

सन्मति पुस्तकालय

पिलानी (जैपुर) का दृश्य

बिड़ला हाई स्कूल पिलानी

पिलानी

जयपुर स्टेट रेलवेके झुंझनू स्टेशनसे ३५ मीलकी दूरीपर यह छोटी सी रमणीक बस्ती बसी हुई है। वैसे तो यह एक छोटा सा गांव है, मगर बिड़ला परिवारके यहां रहनेकी वजहसे बड़ा गुलचमन मालूम होता है। इस ग्राममें बिड़ला परिवारकी कई बड़ी २ इमारतें, हाई स्कूल और बोर्डिङ्ग हाउस बने हुए हैं, जिनका परिचय तथा फोटो आगे दिये जा रहे हैं। पाठकोंको पता चलेगा कि बिड़ला परिवारकी वजहसे यह छोटी सी बस्ती कितनी रमणीक और आबाद हो गई है।

बिड़ला परिवार

अब हम पाठकोंके सम्मुख एक ऐसे परिवारका परिचय रखना चाहते हैं जिसने अपने दिव्य गुणोंसे इतिहासके अमर पृष्ठोंमें अपना नाम अंकित कर दिया है, जिसने न केवल अपनी व्यापारिक प्रतिभासे करोड़ों रुपयोंकी सम्पत्ति ही कमाई है, प्रत्युत व्यापारके महान आदर्शको संसारके सम्मुख प्रत्यक्ष करके दिखला दिया है; जिसने अपने अनुभवोंसे दिखला दिया है कि गरीब मजदूरोंसे कमसे कम मजदूरीमें पशुओंकी तरह बारह २ घण्टे काम लेकर धन इकट्ठा करनेका नाम सफल व्यवसाय नहीं है—प्रत्युत पूर्ण मनुष्यत्वके साथ सबके हकोंपर खयाल रखकर व्यापारिक जगतमें सफल होना ही सफल व्यवसायीके लक्षण हैं।

जो सज्जन भारत प्रसिद्ध बिड़ला परिवारसे कुछ भी परिचित हैं,वे भली प्रकार इस बातको समझ सकते हैं कि हमारे उपरोक्त कथनमें अतिशयोक्ति की तनिक भी मात्रा नहीं है। ऐसे आदर्श परिवारका परिचय इस ग्रन्थके लिये बहुत बड़े गौरवका कारण है। यह जानकर हम बड़ी प्रसन्नताके साथ पाठकोंके सम्मुख इस परिवारका संक्षिप्त परिचय रखते हैं।

व्यापारके अन्दर कुशलता प्राप्त करके धनको प्राप्त करना बहुत कठिन है, उसमें भी बिना

किसीके उचित अधिकारों और मानवोचित स्वत्वोंको कुचलते हुए व्यवसायिक सफलता प्राप्त करना और भी अधिक कठिन है। फिर व्यवसायमें प्राप्त हुए धनको सद्व्ययमें सारासार विवेकके साथ व्यय करना और भी अधिक कठिन है और इन सबसे अधिक कठिन है इन सब सफलताओंके मिलनेके पश्चात् भी बिलकुल निरभिमान और उच्च सेवाकी भावनाओं युक्त निर्मल हृदयका रहना। ऐसे उदाहरण इतिहासमें बहुत ही कम पाये जाते हैं। बिड़ला परिवार इन्हीं दुर्लभ उदाहरणोंमेंसे एक है, यह बतलाते हुए हमारा मस्तक उन्नत हो जाता है।

प्रारम्भ और उन्नति

जयपुर राज्यके अन्तर्गत पिलानी नामक एक छोटा सा ग्राम है। यही स्थान बिड़ला परिवार का मूल निवास स्थान है। करीब ५० वर्ष पूर्व श्रीराजा बलदेवदासजीने बम्बईमें शिवनारायण बलदेवदासके नामसे दुकान स्थापित की। कुछ समय पश्चात् कलकत्तेमें मेसर्स बलदेवदास जुगलकिशोरके नामसे और जयपुरमें बलदेवदास व्रजमोहनके नामसे इस फर्मकी शाखाएं स्थापित हुईं। इन दुकानोंपर खास करके चांदी, अलसी, रूई, गल्ला, पाट आदिका व्यवसाय होता था।

युरोपीय महायुद्धके समय तक ये दुकानें साधारण गतिसे अपनी उन्नति करती रहीं। मगर युद्धके समयमें इस फर्मको बहुत जबरदस्त व्यवसायिक सफलता प्राप्त हुई। उन दिनों चांदी, हैशियन और अलसीका बाजार खूब चमका, जिससे आपकी व्यवसायिक उन्नतिको शीघ्रगामी गति प्राप्त हुई।

बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड

सन् १९२०में कलकत्तेमें ५० लाखकी पूंजीसे मेसर्स बिडला ब्रदर्स लिमिटेडकी स्थापना हुई। इसकी एक ब्राञ्च बम्बईमें भी खोली गई। यह फर्म नवीन पद्धतिसे व्यापार करनेवाली भारतीय फर्मोंमें शायद पहली ही है। इस फर्मकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि जहां और फर्मोंमें ऊपरके पदोंपर मैनेजमेंट करनेके लिए युरोपियन और अमेरिकन मैनेजर रक्खे जाते हैं, वहां इस फर्ममें ऊपरसे लेकर नीचे तकके सब कार्यकर्ता हिन्दुस्थानी तथा मारवाड़ी हैं। इस फर्मकी सफलताका सारा श्रेय बिड़ला परिवारकी नैतिकता और बाबू घनश्यामदासजीकी व्यापारिक संगठन शक्ति तथा व्यवस्थापिका बुद्धिको है। आपने इस फर्मसे सम्बन्ध रखनेवाले सब कार्योंको अलग २ विभागोंमें बांटकर उन सब विभागोंपर चतुर, व्यवसाय-कुशल और बुद्धिमान मारवाड़ियोंको मैनेजर बना रक्खे हैं। आप इस बातको भली प्रकार अनुभव करते हैं कि भारतीय व्यापारकी उन्नतिके लिये उसमें उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्तियोंका सम्मिलित होना अत्यन्त आवश्यक है। इसके अनुसार आपने अपनी आफिसोंमें करीब ७,८ मारवाड़ी ग्रेज्युएट्स और १०,१२ अन्य ग्रेज्युएटोंको रख रखा है। आपने जिस

बुद्धिमानीके साथ अपनी आफ़िसका संगठन किया है वह भी दर्शनीय है। मारवाड़ी व्यापारियोंमें भारत भरमें ऐसा व्यवस्थित आफिस दूसरा नहीं है। इस आफ़िसमें प्रत्येक डिपार्टमेंटके हक अलग २ निकाले हुए हैं और उस डिपार्टमेंटके पास ही उस आफ़िसके मैनेजरका एक स्वतन्त्र रूम रखा गया है। इस प्रकार पूर्ण व्यवस्थाके साथ शांतिपूर्वक आफिस चलता रहता है।

प्रायः देखा जाता है कि पूञ्जीपतियों और श्रमजीवियों, मालिकों और कार्य-कर्ताओंके हितोंमें अक्सर अनैक्य पाया जाता है। मालिक उनसे अधिकसे अधिक काम लेकर कमसे कम वेतन देना चाहते हैं। मगर बिड़ला परिवार इस अनिवार्य्य दोषसे भी मुक्त है। श्रीयुत घनश्यामदासजीका ध्यान अपने कार्यकर्ताओंके हितोंकी ओर हमेशा रहता है। आपने अपनी आफ़िसमें मिनिमम वेतन ४०) कर दिया है। इससे कम वेतन किसी कार्यकर्ताको नहीं दिया जाता। इसी प्रकार आफिसके टाईममें भी समयकी मर्यादा स्थापित कर दी है।

उपरोक्त बिड़ला ब्रदर्सके द्वारा होनेवाले मुख्य २ व्यापारोंका परिचय इस प्रकार है—

(१) जूटके मुकामोंसे जूट इकट्ठा करना और गांठें बांधकर उन्हें एक्सपोर्ट (निर्यात) करना। इस कार्यमें यह फर्म भारतवर्षमें राली ब्रदर्ससे दूसरे नम्बरकी है।

(२) हैशियन, गनी आदिका एक्सपोर्ट करना। इस व्यवसायमें यह फर्म मुख्य २ शिप-रोंमेंसे है।

(३) अलसी, गल्ला, तिलहन आदि द्रव्योंको एक्सपोर्ट करना।

(४) चांदीका इम्पोर्ट करना। इस व्यवसायमें भी यह फर्म भारतवर्षमें बहुत अग्रगण्य है।

(५) रुईका व्यापार।

(६) बीमेका काम।

इसके अतिरिक्त यह फर्म कई कम्पनियों और मिलोंकी मैनेजिङ्ग एजंट है:—जैसे (१) बिड़ला जूट मेन्यूफेक्चरिंग कम्पनी (२) केशोराम कॉटन मिल्स लिमिटेड कलकत्ता (३) जयाजीराव काटन मिल्स लि० ग्वालियर (४) बिड़ला काटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि० दिल्ली (५) जूट सप्लाय एजन्सी लि० (६) गोविन्द राईस मिल्स लिमिटेड (७) चितपुर जूट प्रेस लिमिटेड (८) बिड़ला कॉटन फेक्टरी लि० कलकत्ता (९) इंडियन शिपिङ्ग कम्पनी कलकत्ता (१०) कॉटन एजंट्स लिमिटेड बम्बई (११) जूट एण्ड गनी ब्रोकर्स लि० कलकत्ता (१२) मॉडल जूट प्रेस लिमिटेड कलकत्ता (१३) नेशनल एअरवेज लि० कलकत्ता।

उपरोक्त वर्णित कारखानोंमेंसे कुछका परिचय निम्न प्रकार है।

(१) बिड़ला जूट मेन्यूफेक्चरिंग कम्पनी—यह मिल सन् १९१९ में ५००००००) की पेड़ अप केपिटलसे शुरू हुई। इसमें ८०० लूम्स हैं।

(२) केशोराम काटन मिल्स लि०—यह मिल ६० लाखके आर्डिनेरी और २० लाखके प्रिफेरेन्स शेयरोंकी पूंजीसे सन् १९१९ में खोली गई। यह विड़ला ब्रदर्सके हाथमें १९२४ में आयी। इसमें १५०० लूम्स और ७८००० स्पेण्डिल्स हैं।

(३) जयाजीराव काटन मिल्स लि०—यह मिल ३५ लाखके आर्डिनेरी शेयरोंकी पूंजीसे सन् १९२१ में स्थापित हुई। इसमें ७६७ लूम्स और २९८७२ स्पेंडिल्स हैं।

(४) विड़ला काटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि०—यह मिल १०लाखकी पूंजीसे सन् १९२० में खोली गई। इसमें ४९३ लूम्स और १७९२० स्पेंडिल्स हैं।

(५) इंडियन शिपिङ्ग कम्पनी कलकत्ता—यह कम्पनी सन् १९२८में १० लाखकी पूंजीसे खोली गई।

(६) नेशनल एअरवेज लि० कलकत्ता—यह कम्पनी सन् १९२७ में १० लाखकी पूंजीसे खोली गई। इसका उद्देश हवाई जहाजकी सर्विसको शुरू करनेका है।

इसी प्रकार और भी कम्पनियोंका विवरण है।

इस फर्मके एजंट प्राय: संसारके सभी देशोंमें रहते हैं। लण्डनमें ईस्ट इंडियन प्रोड्यूज़ कम्पनीके नामसे विड़ला परिवारकी एक फर्म स्थापित है। इस फर्मके सेक्रेटरी एक मारवाड़ी ग्रेज्यूएट हैं। आपका नाम श्री० कस्तूरमलजी बांठिया है।

मुख्य २ कार्यकर्ता

विड़ला ब्रदर्स लि०के प्रधान २ कार्यकर्ताओंका परिचय इस प्रकार है।

(१) श्रीयुत गंगाबक्षजी कानोड़िया—प्रधान मुनीम
(२) श्रीयुत भागीरथजी कानोड़िया—प्रधान मैनेजर
(३) श्रीयुत देवीप्रसादजी खेतान—काटन मिल्सके मैनेजर
(४) श्रीयुत जुहारमलली जालान—जूट सप्लाय एजन्सीके मैनेजर
(५) श्रीयुत गोपीचन्दजी धाड़ीवाल—जूट एक्सपोर्ट डि० के अ० मैनेजर
(६) श्रीयुत विश्वेसरलालजी छावछरिया—सीड्स डि० के० मैनेजर
(७) श्रीयुत मदनलालजी डालमियां—जूट मिल्सके सेक्रेटरी
(८) श्रीयुत ज्वालाप्रसादजी मंडेलिया—जूट मिलके मैनेजर
(९) श्रीयुत घनश्यामदासजी कैंथोलिया—केशोराम काटन मिलके सेक्रेटरी
(१०) श्रीयुत सीतारामजी खेमका—दिल्ली और गवालियर मिलके सेक्रेटरी
(११) श्रीयुत हनुमानप्रसादजी बगड़िया—गनी एक्सपोर्ट डि० इंचार्ज
(१२) श्रीयुत विहारीलालजी खेतान—प्रोड्यूज डि० के० मैनेजर
(१३) श्रीयुत कस्तूरमलजी बांठिया—लंदन फर्म के सेक्रेटरी

श्री० राजा बलदेवदासजी बिड़ला

श्री० जुगलकिशोरजी बिड़ला

श्री० रामेश्वरदासजी बिड़ला

श्री० घनश्यामदासजी बिड़ला एम० एल० ए०

श्रीयुत व्रजमोहनजी बिड़ला

जयाजीराव कॉटन मिल्स लिमिटेड, ग्वालियर

बिड़ला कॉटन स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि०, दिल्ली

बिड़ला परिवारका परिचय

(१) श्रीमान् राजा बलदेवदासजी--आप श्री० शिवनारायणजी बिड़लाके सुपुत्र हैं। इस समय इस परिवारमें आपही सबसे बड़े हैं। आप बड़े शांत, उदार, और दयालु स्वभावके सज्जन हैं। धार्मिक कार्योंमें आप बड़ी उदारतासे खर्च करते हैं। इस समय आप तमाम सांसारिक कार्योंका भार अपने योग्य पुत्रोंके हाथमें देकर काशीवास कर रहे हैं। आपके पुत्रोंका परिचय इस प्रकार है।

श्री० जुगलकिशोरजी बिड़ला—आप राजासाहबके जेष्ठ पुत्र हैं। आप बड़े शांत आर सरल स्वभावके उदार तथा दानी सज्जन हैं। आपकी उदारतापर कई अच्छी २ संस्थाओंका जीवन निर्भर है। सामाजिक और राष्ट्रीय कार्योंमें आप अपना बहुतसा समय प्रदान करते हैं।

श्री० रामेश्वरदासजी बिड़ला—आप बड़े गंभीर स्वभावके सरल और उदार सज्जन हैं। आपकी व्यवसाय कुशलता भी बहुत बढ़ी चढ़ी है। बम्बईकी बुलियन मरचेंट्स एसोसियेशनके आप प्रेसिडेण्ट हैं।

श्री० घनश्यामदासजी बिड़ला—आप राजा साहबके तृतीय पुत्र हैं। आप अत्यन्त सज्जन व्यवहार कुशल और उदार व्यक्ति हैं। आपकी व्यापार संगठन शक्ति मारवाड़ियोंमें अभूतपूर्व है। बिड़ला परिवारकी व्यापार वृद्धिका बहुत बड़ा श्रेय आपकी व्यापार-संगठन शक्तिको है। आपने नवीन पद्धतिपर व्यापार करनेकी कलामें आशातीत सफलता प्राप्त की है। कुछ समय पूर्व आप बंगाल कौंसिलके नामीनेटेड मेम्बर थे। पश्चात् १९२७ में आप लेजिस्लेटिव्ह एसेम्बलीके मेम्बर निर्वाचित किये गये। इसके अतिरिक्त आप इंडियन फिस्कल कमीशनके भी मेम्बर थे। जिनोवामें अन्तर्राष्ट्रीय मज़दूर कान्फ्रेन्स हुई थी उसमें आप भारतीय एम्प्लायर्सकी तरफसे निर्वाचित होकर गये थे। इंडियन मरचेंट्स चेम्बर आफ़ कामर्सके स्थापक और प्रथम प्रेसिडेन्ट भी आप ही थे। गवालियर स्टेटकी ट्रस्ट कमेटीके ट्रस्टियोंमेंसे आप भी एक हैं।

कलकत्तेमें जिस समय हिन्दू मुसलिम दंगा हुआ था, उस समय आप ही एक ऐसे मारवाड़ी सज्जन थे जो उस भीषण और खतरनाक परिस्थितिमें अपनी जानको जोखिममें डाल अपने भाइयोंकी रक्षाके निमित्त प्रबल उत्साहसे निकले थे। उस भीषण परिस्थितिसे आपने कितनेही लोगोंकी रक्षा की थी। इतने धनाढ्य और युवक होनेपर भी आपने अपनी प्रथम पत्नीके देहावसानके पश्चात् दूसरा विवाह नहीं किया। इससे आपके मानवोपम चरित्रकी निर्मलता और उज्ज्वलताका पता चलता है।

श्री० ब्रजमोहनजी बिड़ला—आप राजासाहबके सबसे छोटे पुत्र हैं। आप बड़े तीक्ष्ण बुद्धि, गंभीर और व्यवसाय कुशल नवयुवक हैं।

श्रीयुत गजाननजी बिड़ला—आप श्रीयुत रामेश्वरदासजीके सुपुत्र हैं। आपकी शिक्षा बहुत अच्छे ढंगसे हुई है। बड़े योग्य नवयुवक हैं। इस समय ऑफिसमें काम देखते हैं।

श्रीयुत लक्ष्मीनिवाजी बिड़ला—आप श्रीयुत घनश्यामदासजीके सुपुत्र हैं। आपकी शिक्षा भी बहुत अच्छे ढंगसे हुई है।

बिड़ला परिवारमें बालकोंको शिक्षा देनेका बहुत अच्छा प्रबन्ध है। दूसरे धनवान परिवारोंकी तरह इस परिवारके नवयुवक आलसी और अकर्मण्य नहीं रहने पाते। उनकी मानसिक शक्तियोंका मनोवैज्ञानिक ढंगसे शुभ विकास किया जाता है।

बिड़ला परिवारके सार्वजनिक कार्य

बिड़ला हाईस्कूल, पिलानी—कराब १०, १५ वर्ष पूर्व यह स्कूल मिडिल स्कूलके रूपमें स्थापित हुआ था। अब चार वर्षोंसे यह हाईस्कूलके रूपमें परिवर्तित हो गया है। प्रायवेट रूपसे इसमें एफ़० ए० तककी पढ़ाई होती है। इस समय इसमें ४०० विद्यार्थी पढ़ते हैं, जिसमें आधेसे अधिक विद्यार्थी बाहरके हैं। यहांके प्रिन्सिपल श्री० चन्द्रकुमारजी एम० ए० हैं।

बिड़ला बोर्डिंग हाऊस, पिलानी—करीब ३ साल पूर्व यह संस्था स्थापित हुई। इसमें बाहरसे आनेवाले विद्यार्थियोंके लिये ठहरने और भोजनकी व्यवस्था है। इसमें करीब १०० विद्यार्थी रहते हैं, जिनमें बहुतसे फ्री भोजन पाते हैं।

बिड़ला संस्कृत पाठशाला—इसे शुरू हुए करीब २०,२५ वर्ष हुए। इसमें ३०,३५ विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं।

बिड़ला अछूत पाठशाला—यह पाठशाला करीब ५ सालसे स्थापित है। इसमें ५० विद्यार्थीके करीब शिक्षा पाते हैं।

इनके अतिरिक्त कई सार्वजनिक संस्थाएं आपकी सहायतासे चल रही हैं। और भी कई सार्वजनिक कार्योंमें आपकी ओरसे कुछ न कुछ दिया ही जाता है। आपकी दानवीरता प्रसिद्ध है। मतलब यह कि बिड़ला परिवार न केवल मारवाड़ी जगतहीके लिये प्रत्युत सारे भारतके लिये गौरवकी वस्तु है।

बिड़ला गेस्ट हाउस, पिलानी (जैपुर)

बिडला बोर्डिङ्ग हाउस, पिलानी (जैपुर)

फतेहपुर

यह सीकर रियासतका सबसे बड़ा शहर है। यह शहर बहुत पुराना है। इसका इतिहास भी प्राचीन है। इसकी बसावट बहुत बड़ी है। चारों ओर बालूके सुन्दर पहाड़ोंसे घिरा हुआ यह शहर बहुत ही सुन्दर मालूम होता है। जयपुर स्टेट रेलवेके डूंडलोद नामक स्टेशनसे यहांतक मोटर सर्विस रन करती है। रामगढ़ और फतहपुरके बीचमें १४ मीलका अन्तर है। यहांसे लक्ष्मण गढ़तक मोटर जाती है, पर स्थायी रूपसे नहीं चलती। लक्ष्मण गढ़ यहांसे १४ मील है। वहांसे सीकर तक मोटर सर्विस रन करती है। सीकर लक्ष्मण गढ़से १८ मीलके फासलेपर है। यहांकी पैदावार मूंग, मोठ और बाजरा है। यहां भी निकासी बन्द है। इस स्थानपर भी कई बड़े २ श्रीमन्तोंके मकानात आदि बने हुए हैं। उनका व्यापार बाहर होता है। अतएव उनका परिचय स्थान २ पर दिया जायगा। फतेहपुरमें सेठ रामगोपालजी गनेड़ीवालकी छत्री दर्शनीय वस्तु है। आपकी ओरसे शहरमें नलका भी प्रबंध है।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स कालूराम ब्रजमोहन

इस फर्मके मालिक यहींके निवासी हैं। आप अग्रवाल जातिके हैं। आपका नाम श्रीयुत ब्रजमोहनजी है। आपका विशेष परिचय बम्बई-विभागके पेज नं० १२३ में दिया गया है।

मेसर्स गुरुमुखराय सुखानन्द

इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ सुखानन्दजी हैं। आप अग्रवाल जातिके जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं। आपकी ओरसे यहां एक गुरुमुखराय जैन स्कूल स्थापित है। आपका विशेष परिचय बम्बई-विभागके पेज नं० ९६ में दिया गया है।

मेसर्स ब्रजमोहन सीताराम

इस फर्मके संचालक श्रीयुत सेठ ब्रजमोहनजी, हैं। आप अग्रवाल जातिके हैं। आपका विशेष परिचय बम्बई-विभागमें दिया गया है।

मेसर्स रामप्रताप हरविलास

इस फर्मके मालिक सेठ रामेश्वरदासजी हैं। आपका व्यापार आजकल इन्दौरमें होता है। अतएव आपका विशेष परिचय इन्दौर विभागके पेज नं० २६ में दिया गया है।

मेसर्स हीरालाल रामगोपाल

इस फर्मके निवासी यहींके निवासी हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मकी ओरसे यहां एक छत्री और मन्दिर बना हुआ है। छत्री देखने योग्य है। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ केशवदेवजी हैं। आपका विशेष परिचय बम्बई विभागके पेज नं० १२३ में दिया गया है।

यह शहर निम्नलिखित प्रतिष्ठित व्यापारियोंका मूल निवास स्थान है। जिनका विशेष परिचय इस पुस्तकके अलग पार्टमें स्थान २ पर दिया जायगा।

मेसर्स कन्हैयालाल बिरदीचन्द
,, खेतसीदास गोर्धनदास नेवटिया
,, गोरखराम रामप्रताप चमड़िया
,, गोगराज ज्वालादत्त भरतिया
,, गोरखराम मिर्जामल
,, गुलाबराय गोवर्धनदास
,, चतुरभुज जगन्नाथ
,, जानकीदास ब्रजमोहन
,, जगन्नाथ दुर्गादत्त खेमका
सेठ जयदयालजी कसेरा
मेसर्स द्वारकादास हनुमानबक्स
सेठ नागरमलजी गोयनका
मेसर्स बालूराम जयदेव
,, माधोप्रसाद नागरमल
,, रामवल्लभ फूलचन्द नेवटिया
,, रामचन्द्र ईसरदास पोद्दार
मेसर्स लूनकरणदास हनुमानप्रसाद
,, लूनकरणदास कुंजलाल पोद्दार
,, बिशनदयाल दयाराम पोद्दार
,, शिवभान गजानंद

रामगढ़

रामगढ़ सीकर रियासतका एक बड़ा कस्बा है। यह बीकानेर स्टेट रेल्वेकी देपालसर नामक स्टेशनसे ५ मीलकी दूरीपर स्थित है। स्टेशनसे शहरतक मोटर सर्विस शुरु है। चारों ओर बालूके होनेसे और पानीकी कमीके कारण यहां सिर्फ एक ही फसल होती है। यहांकी पैदावार मूंग, मोठ और बाजरी है। यहांसे निकासी बंद है। यहां कई व्यापारियोंका निवास स्थान है; जिनका व्यापार बम्बई कलकत्ता प्रभृति स्थानोंमें जोरोंसे चल रहा है। उनकी आलिशान इमारतें देखने योग्य हैं। यहां कई सार्वजनिक संस्थाएं भी हैं। यहांके व्यापापारियोंमेंसे कुछका परिचय यहां दिया जाता है। शेष स्थान २ पर दिया जायगा।

मेसर्स गोरखराम गणपतराय

इस फर्मके मालिक अग्रवाल जातिके है। आपका मूलनिवास स्थान यहींका है। वर्तमान मालिक श्रीयुत सेठ गणपतरायजी हैं। आपके रामगोपालजी नामक एक पुत्र हैं। विशेष परिचयके लिये बम्बई विभाग पेज नं० १२५ देखिये।

मेसर्स जौहरीमल रामलाल

इस फर्मके मालिक यहींके निवासी हैं। आप अग्रवाल जातिके पोद्दार सज्जन हैं। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन श्री सेठ नन्दकिशोरजी,सेठ जुग्गीलालजी, सेठ किशनलालजी और सेठ गोविन्द प्रसादजी करते हैं। आपका विशेष विवरण बम्बईके पोर्शनमें पेज नं० १२५ में दिया गया है।

मेसर्स घुरसामल घनश्यामदास

इस प्रसिद्ध और पुरानी फर्मके वर्तमान मालिक सेठ केशवदेवजी तथा आपके पुत्र श्री राम-निवासजी और श्री बालकृष्ण लालजी तथा स्व० सेठ राधा कृष्णजीके पुत्र श्री रघुनाथ प्रसादजी, श्रीजानकी प्रसादजी, श्री लक्ष्मणप्रसादजी और श्री हनुप्रसादजी हैं। आपकी फर्म पर तेलकी सोल एजंसीका काम होता है। इस फर्मकी ओरसे यहां कुछ मन्दिर वगैरह बहुत अच्छे बने हैं। विशेष परिचय बम्बई विभागके पेज नं० ४६ में देखिये।

मेसस रामबक्स खेतसीदास

इस फर्मके मालिक यहींके मूल निवासी हैं। आप अग्रवाल जातिके पोद्दार सज्जन हैं। वर्तमान मालिक श्री सेठ खेतसीदासजी हैं। आप वृद्ध और अनुभवी सज्जन हैं। आपके एक पुत्र श्रीयुत मोतीलालजी हैं। आपका विशेष परिचय बम्बईके विभागमें दिया गया है।

मेसस हरनन्दराय सूरजमल

इस फर्मके मालिक यहींके निवासी हैं। आप अग्रवाल रूईया सज्जन हैं। वर्तमान मालिक श्री सेठ सूरजमलजी हैं। आपका विशेष परिचय चित्रों सहित बम्बईके पोर्शनमें पेज नं० ६० में दिया गया है।

मेसर्स हरनन्दराय रामनारायण रुईया

इस फर्मके वर्तमान संचालक श्री सेठ रामनारायणजी रूईया हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपके बड़े पुत्रका नाम श्रीयुत रामनिवासजी है। यहां आपकी तथा आपके भाई सूरजमलजीकी ओरसे एक औषधालय चल रहा है। आपका विशेष परिचय बंबई-विभागके पेज नं० ६० में दिया गया है।

यहां निम्नलिखित और भी अच्छे २ व्यापारियोंका निवास स्थान है। स्थान २ उनका भी भी परिचय छापा जायगा—

सेठ केशवरामजी पोद्दार
मेसर्स गुरुदयाल बाबूलाल खेमका
,, गुरुदयाल गंगाबक्स
,, गोकुलचन्द हरिबगस
,, जोखीराम केदारनाथ
,, जयनारायण रामचन्द्र
सेठ जुगलकिशोरजी रुईया
मेसर्स डालनसीदास शिवप्रसाद पोद्दार
,, देवकरण रामविलास
मेसर्स दुर्गादत्त नथमल
सेठ देवीप्रसादजी खेतान
मेसर्स, फूलचन्द मोतीलाल सांवलका
मेसर्स महादयालजी कालूराम
,, लक्ष्मीनारायण जैदेव
,, शिवबक्षराय हरदत्तराय
,, हरदत्तराय मोतीलाल प्रह्लादका
,, हरमुखराय गोपीराम
,, हरनन्दराय घनश्यामदास
,, हरनन्दराम बैजनाथ

लक्ष्मणगढ़

यह जयपुर राज्यके अन्तर्गत सीकर नरेशके अण्डरमें है। इसके लिये जयपुर-स्टेट रेलवेके सीकर स्टेशनपर उतरना पड़ता है। यहांसे यह १८ मील दूर है। सवारीके लिए मोटर लारी रन करती है तथा ऊंटोंसे भी जाया जाता है। यहां व्यापार तो कुछ नहीं है पर कई धनी लोगोंके निवास स्थान यहाँ होनेसे काफी चहल पहल रहती है। यहांसे फतहपुर १४ मीलकी दूरी पर है। टेम्परेरी रूपमें यहांसे फतहपुर तक मोटर जाती है। यह सीकर राज्यका एक आबाद कस्बा समझा जाता है।

यहां निम्नलिखित व्यापारियोंका निवास स्थान है। समय २ पर पुस्तकके अलग २ भागमें यथा स्थान आपके विस्तृत परिचय दिये जायँगे।

मेसर्स चेतराम रामविलास
,, प्रेमसुखदास ब्रह्मदत्त
सेठ रामलाल जी गनेड़ीवाल
सेठ लक्ष्मीराम जी चूड़ीवाला
मेसर्स फूलचन्द केदारमल
मेसर्स बलदेवराम गोरखराम

नवलगढ़

यह कस्बा जयपुर राज्यके जागीरदारके अंडरमें है। जयपुर-स्टेट रेलवे जयपुर-झूंझनू लाईनपर अपने ही नामके स्टेशनके पास यह बसा हुआ है। नवलगढ़ स्टेशनसे फतहपुर तक मोटर जाती है। यह स्थान भी रेतीला है। यहांका प्रधान व्यापार तो कुछ नहीं है, हां, मूंग, मोठ, बाजरी, आदिका व्यापार अच्छा होता है। यहांके बड़े २ व्यापारी लोग बाहर अपना व्यापार करते हैं। उनका संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जाता है।

मेसर्स आनन्दीलाल पोद्दार एण्ड को०

इस फर्मके मालिक सेठ आनन्दीलालजी पोद्दार हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। यहां आपने एक ब्रह्मचर्याश्रम स्थापित कर रखा है इसमें करीब ६० विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। आपकी ओरसे और भी स्थानोंपर स्कूल चल रहे हैं। आपका पूरा परिचय बम्बई विभागके पेज नं० ६४ में देखिये।

मेसर्स आनन्दीलाल हेमराज एण्ड कम्पनी

इस फर्मके एक पार्टनर श्रीयुत हेमराजजीका निवास स्थान यहींका है। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपका पूरा परिचय बम्बईके पोर्शनमें पेज नम्बर ९५ में दिया गया है।

मेसर्स आनंदराम मंगतूराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री सेठ आनन्दरामजी तथा आपके पुत्र मंगतूराम जी और आपके भतीजे श्री गदाधरजी तथा पूर्णमलजी हैं। यहाँ आपकी ओरसे एक चतुरभुजजीका मन्दिर बना हुआ है। यहां २१ विद्यार्थी भोजन तथा विद्या पाते हैं। आपका विशेष परिचय बम्बईके विभागमें पेज नं० १२३में दिया गया है।

मेसर्स देवकरणदास रामकुमार

इस फर्मके मालिक कुंवर मोतीलालजी हैं। आप इस समय नाबालिग हैं। आपका निवास स्थान यहींका है। यहां आपकी ओरसे एक धर्मशाला तथा मन्दिर और व्यावरमें एक धर्मशाला बनी हुई है। आपका परिचय बम्बई विभाग के पेज नं० १२६ में दिया गया है।

मेसर्स रामगोपाल जगन्नाथ

इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ भूरामलजी हैं। आप खण्डेलवाल जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान यहींका है। आपकी ओरसे यहां करीब ६०,७० हजारकी लागतसे एक शाकम्भरी माताका मन्दिर बना हुआ है। आपका विशेष परिचय बम्बई विभागके पेज नं० ६६ में दिया गया है।

चिड़ावा

यह कस्बा जयपुर स्टेट रेलवेके झूंझनू नामक स्टेशनसे २४, २५ मील दूर है। इसके आस पास कोई रेलवे लाईन नहीं है। यहां भी व्यापारके नामसे कुछ नहीं है। हां, बड़े २ धनिकोंका निवास स्थान होनेसे यहां चहल पहल रहती है। यहां भी कई बड़े धनाढ्य सज्जन निवास करते हैं। जिनका संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जाता है।

मेसर्स नन्दराम बैजनाथ केड़िया

आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस समय इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत बैजनाथजी केडिया हैं। अग्रवाल समाजके सामाजिक क्षेत्रमें आपका अच्छा नाम है। कलकत्तेमें आपकी हिन्दी पुस्तक एजन्सी नामक एक बहुत विशाल पुस्तकोंकी दुकान है। शायद मारवाड़ी समाजमें हिन्दुस्तान भरकी हिन्दी पुस्तकोंको सप्लाय करनेवाली इतनी बड़ी दुकान दूसरी नहीं है। इस एजन्सीसे आपने कई अच्छे २ और महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित किये हैं। इस एजन्सीके अतिरिक्त आपका एक वणिक् प्रेस नामक प्रेस भी है। यह बृहत ग्रन्थ इसी प्रेसमें छपा है।

आपके परिवारकी ओरसे चिड़ावेमें एक धर्मशाला, एक कुंआ और एक शिवालय बना हुआ है।

कलकत्तेमें आपका हेड ऑफिस कैनिंग स्ट्रीटमें है। यहांपर हैशियन, बोरा और पाटका बिजिनेस होता हैं। आपका तारका पता प्रेमाश्रम है।

मेसर्स बसन्तलाल गोरखराम

इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ बसन्तलालजी, सेठ गोरखरामजी, सेठ द्वारकादासजी तथा सेठ बनारसीलालजी करते हैं। आपका खास निवास स्थान यहींका है। विशेष परिचयके लिये बम्बई विभागके पेज नं० ९८ को देखिये।

मेसर्स मामराज रामभगत

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ हरकिशनदासजी, सेठ मंगलचन्दजी, सेठ दुलिचन्दजी, सेठ वेणीप्रसादजी, सेठ जुहारमलजी, सेठ फूलचन्दजी और सेठ केशवदेवजी हैं। आप अग्रवाल जातिके डालमियां गोत्रके सज्जन हैं। आपका खास निवास स्थान यहींका है। आपका विशेष परिचय बम्बई विभागमें पेज नं० ५९ में दिया गया है।

मेसर्स रामप्रसाद महादेव

आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत महादेवजी सोमाणी और मुरलीधरजी सोमाणी हैं। आपकी तरफसे चिड़ावेमें एक फ्री हाई स्कूल चल रहा है। आपका हेड आफिस कलकत्ता चित्तरञ्जन एवेन्यूमें है। आपका प्रधान विजिनेस हैसियन, जूट, और चांवल का है। कपड़ेका इम्पोर्ट भी आपके यहां होता है। इसके सिवा शेयर विजिनेस भी होता है।

—०—

मेसर्स सनेहीराम जुहारमल

इस फर्मके मालिक अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान यहींका है इस समय इस फर्मके मालिक श्रीयुत सेठ रामकुँवारजी आदि हैं। आपका विशेष परिचय बम्बई विभागमें दिया गया है।

मेसर्स सूरजमल शिवप्रसाद तुलस्यान

आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत सेठ शिवप्रसादजी और गंगासहायजी हैं। इस फर्मके संस्थापक श्रीयुत सूरजमलजी बांसल है। आपने अपने जीवनमें बहुत साधारण स्थितिसे लेकर इतनी ऊँची स्थितिको बनाया है। आपकी दान धर्मकी ओर भी बहुत रुचि रही है। बद्रीनारायणका प्रसिद्ध लक्ष्मण झूला भी आपका बनाया हुआ है। इसके अतिरिक्त गयामें आपकी एक धर्मशाला तथा चिड़ावेमें एक धर्मशाला, एक संस्कृत पाठशाला और एक अंग्रेजी पाठशाला चल रही है। कई कुओंका आपने जीर्णोद्धार करवाया है। कलकत्तेमें भी आपकी धर्मशाला है। चिड़ावेकी गौशालामें भी आपका प्रधान हाथ रहा है।

आपका हेड ऑफिस बड़तल्ला स्ट्रीट कलकत्तामें है। आपके यहां कपड़ेकी कमीशन एजंसी और दलालीका बहुत बड़ा काम होता है। कलकत्तेके नामी व्यापारियोंमें आपकी गणना है।

आपका परिचय चित्रों सहित इस ग्रंथके दूसरे भागमें दिया जायगा।

—०—

सेठ हरिबगसजी (हरिबगस दुर्गाप्रसाद) मंडावा

बा० दुर्गाप्रसादजी सराफ (हरिबगस दुर्गाप्रसाद) मंडावा

बा०गोवर्द्धनदासजी सराफ (हरिबगस दुर्गाप्रसाद) मंडावा

बा०रामनिवासजी सराफ.(हरिबगस दुर्गाप्रसाद) म

मंडावा

मंडावा जयपुर राज्यान्तर्गत है। इसके आसपास कई मिलोंतक रेलवे नहीं है। यहां भी अच्छे २ व्यापारी निवास करते हैं। जिनका संक्षिप्त परिचय यहां दिया जाता है। विशेष परिचय स्थान २ पर दिया जायगा।

मेसर्स गुलाबराय केदारमल

इस फर्मके वर्तमान सञ्चालक श्री सेठ केदारमलजी हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपका खास निवास स्थान यहींका है। यहां आपकी ओरसे अंग्रेजी विद्यालय, संस्कृत पाठशाला तथा औषधालय चल रहा हैं। आपका विशेष परिचय बम्बई-विभागके पेज नं० ४३में दिया गया है।

मेसर्स हरिबक्ष दुर्गाप्रसाद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान यहींका है। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपकी फर्मको कलकत्तेमें स्थापित हुए करीब ६० वर्ष हुए। पहले इस फर्मपर मोहनलाल हीरानन्दके नामसे व्यापार होता था। करीब १५ वर्षोंसे यह फर्म इस नामसे व्यवसाय कर रही है। इसके स्थापक सेठ मोहनलालजी थे। आपके तथा आपके भतीजे सेठ हरिबक्षजीके हाथोंसे इस फर्मकी अच्छी तरक्की हुई।

इस समय इस फर्मके सञ्चालक सेठ हरिबक्षजी तथा आपके पुत्र श्री दुर्गाप्रसादजी, श्री गोवर्धनदासजी और श्री रामनिवासजी हैं। श्री गोवर्धनदासजी मारवाड़ी चेम्बर आफ़ कॉमर्स कलकत्ताके सेक्रेटरी हैं।

इस फर्मकी ओरसे बद्रीनारायणके रास्तेमें एक धर्मशाला बनी हुई है। यहां सदावर्तका भी प्रबंध है। मंडावामें भी आपकी धर्मशाला तथा मन्दिर बने हुए हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

कलकत्ता—मेसर्स हरिबक्ष दुर्गाप्रसाद—इस फर्मपर विलायती कपड़ेका मैनचेस्टरसे इम्पोर्ट होता है। जावासे शक्करका भी यहां इम्पोर्ट होता है। इसी फर्मके द्वारा लंदन, जर्मनी आदि स्थानोंपर जूट, हैसियन, चपड़ा आदि वस्तुओंका एक्सपोर्ट होता है। यहां आपकी स्थायी सम्पत्ति भी अच्छी है।

नीचे लिखी फर्म्स भी यहींकी हैं। जिनका परिचय दूसरे भागोंमें चित्रों सहित स्थान २ में दिया जायगा।

श्रीयुत देवी सहायजी सराफ़
मेसर्स वस्तीराम द्वारकादास
" भूधरमल चंडीप्रसाद
मेसर्स बन्सीधर सूरजमल
" शिवदयाल आनंदराम
सेठ सेवारामजी सराफ़

सांभर लेक

००००००

बी० बी० सी० आई० रेलवेके जयपुर और अजमेरके मध्यमें फुलेरा जंकशनसे १ स्टेशनपर यह स्थान है। खास इस स्थानपर तथा आसपास नमककी बहुत बड़ी बड़ी खाने हैं। यहांकी और आसपासकी खानोंकी भूमि कुछ जयपुर स्टेटकी है तथा कुछ जोधपुर स्टेटके अधिकारमें है। नमककी खाने गवर्नमेंटके आधीन हैं। इस हेतु गव्हर्नमेंटको जोधपुर और जयपुर स्टेटको कुछ कर देना पड़ता है। इस स्थानमें एकमात्र व्यवसाय नमकका ही होता है। नमकका वास्तविक भाव ।) मनका रहता है और उसपर गवर्नमेंटकी ड्यूटी १।) मन लगती है। इस प्रकार १ वैगन इस समय २६७॥ मन वजनकी ४१३।।।−) में पड़ती है। कभी २ मार्च अप्रैलके मासमें ड्यूटीकी घटा बढ़ी होनेसे भाव कम ज्यादा हो जाया करता है। इस समय बाजार प्रायः विशेष डल रहता है। कारण कि व्यापारियोंको ड्यूटी के कम ज्यादा होनेका डर रहता हैं। यूरोपियन युद्धके समयमें व्यापारियोंको ४००) की वैगनका करीब ११०० तक मूल्य प्राप्त हुआ था। जून मासमें वारिश के कारण बाजार डल रहता है। सेप्टेम्बरमें बाजार फिर चलता है । नमक सालभरमें २ बार निकलता है। पहिला अप्रेलमें तथा दूसरा अक्टोबरनवम्बर में ।

यहांसे पचभद्राका नमक विशेष अच्छा होता है। परंतु नमकके लिये यही स्थान विशेष प्रख्यात है। तीसरे नम्बरमें नामाका नमक होता है इस स्थानपर करीब ४०-५० लाख रुपये सालका नमक होता है।

नमकके खरीददार व्यापारियोंको वेगनकी पूरी कीमत पहिले गवर्नमेंट ट्रेझरीमें भरना पड़ती है। फिर जिस प्रकार उनका नम्बर होता है। उसी हिसाबसे उनके नम्बरके अनुसार उन्हें वेगन सप्लाई होती है। ।) मन नमकका भाव १।) मन कस्टम ड्यूटीके अतिरिक्त)॥ मन दूसरे खर्चका भी गवर्नमेंट लेती है। इस प्रकार कुल ४१३।।।−) एक वैगनके पीछे ट्रेझररीमें जमा करना पड़ता है। इस फिक्सरेट्सके अतिरिक्त फिर यहां व्यापारियोंमें सोदा होता है। जिससे पूरी वैगनपर कुछ रुपये ज्यादा और कभी २ कमपर भी नमककी वैगन सप्लाई होती है ।

डीडवाणा और पचभद्रा भी इसके अण्डरमें है।

मेसर्स गोविंदराम तनसुखराय

इस फर्मके मालिकोंका खास निवस स्थान सांभर है। आप अग्रवाल (गोयल गोत्र) जातिके
सज्जन हैं। यह फर्म यहाँपर करीब ५०।६० सालोंसे स्थापित है। इस फर्मकी स्थापना सेठ तनसुख
रायजीके हाथोंसे हुई और उन्हींने इसकी तरक्की भी की। इस समय इस फर्मके मालिक श्रीयुत
तनसुखरायजीके पुत्र राय साहब श्रीनारायणजी हैं। आपको गवर्नमेंटने सन् १९२७ की १ जनवरीको
राय साहबकी पदवीसे विभूषित किया है। आप बड़े ही योग्य सज्जन हैं। इस समय आपकी दूकानें
नीचे लिखे स्थानोंपर हैं।

सांभर—मेसर्स गोविंदराम तनसुखराय यहाँ नमकका व्यापार तथा कमीशन एजंसीका कामहोता है।
सांभर— „ रायसाहब श्रीनारायण हरविलास—यहां भी उपरोक्त व्यापार होता है।
उझियानी—(जिला बदायूं) मेसर्स गोविंदराम तनसुखराय,गल्ला तथा कमीशन एजंसी का काम होता है।
बदायूं (यू०पी०)—मेसर्स गोविन्दराम तनसुखराय, गल्ला तथा कमीशन एजंसीका काम होता है।
बांस बरेली—मेसर्स गोविन्दराम तनसुखराय, चीनी, गुड़,शक्कर गल्ला तथा आढ़तका व्यापार होता है।
सांभरकी दुकानपर रायसाहब श्रीनारायणजीके काकासाहब श्रीगणेशीलालजी काम करते हैं
राय साहबके इस समय ३ पुत्र हैं जिनके नाम क्रमसे हरविलासजी,हरिश्चन्द्रजी और श्रीकृष्णजी हैं।

मेसर्स जमनादास शिवप्रताप धूत

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान नामा (कुचामनरोड़) है। आप माहेश्वरी जातिके
सज्जन हैं। इस नामसे इस फर्मको स्थापित हुए करीब पचास वर्ष हुए। इस फर्मकी स्थापना
श्रीयुत सेठ तनसुखजी और श्रीयुत मन्नालालजी दोनों भाइयोंने मिलकर की। श्रीयुत जमनादासजी
श्रीयुत तनसुखजीके और श्रीयुत शिवप्रतापजी श्रीयुत मन्नालालजीके पुत्र हैं। इस फर्मकी विशेष
तरक्की सेठ शिवप्रतापजीके हाथोंसे हुई। आप ही इस समय इस दुकानके मालिक हैं। श्रीयुत जमना-
दासजीका स्वर्गवास सम्वत १९५८ में हुआ। श्रीयुत शिवप्रतापजीके इस समय दो भाई और हैं।
जिनके नाम श्रीयुत रघुनाथजी, और श्रीयुत कस्तूरचन्दजी हैं श्रीयुत रघुनाथजीके दो पुत्र हैं
जिनके नाम श्रीयुत नारायणजी और श्रीयुत छीतरमलजी है। श्रीयुत कस्तूरचन्दजीके एक पुत्र हैं
जिनका नाम श्रीयुत सीतारामजी है। श्रीयुत जमनादासजीके एक पौत्र हैं जिनका नाम श्रीयुत
गुलाबचन्दजी है। आप सब लोग व्यवसाय करते हैं।

इस फर्मके मालिकोंकी दान धर्म और सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर भी रुचि रही है।
मथुरामें जमना किनारे आपकी बनाई हुई एक धर्मशाला है। एक धर्मशाला आपकी ओरसे
कुचामन रोड स्टेशनपर बनी हुई है। विद्याप्रेम भी आपका बढ़ा चढ़ा है। आपकी ओरसे यहां

पर एक संस्कृत विद्यालय और बोर्डिंग हाउस बना हुआ है। जिसमें बाहरके २५ विद्यार्थी विद्याध्ययन करते हैं और भोजन वस्त्र भी यहां पाते हैं।

आपकी दुकानें नीचे स्थानोंपर है—

(१) हेड ऑफिस—कुचामन रोड—मेसर्स जमनादास शिवप्रताप—(T. A. Dhut) यहांपर इस फर्मका हेड ऑफिस है।

(२) साम्भरलेक—मेसर्स जमनादास शिवप्रताप, इस दुकानपर नमक और बारदानेका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

(३) देहली—नया बाजार, मेसर्स जमनादास शिवप्रताप—इस दुकानपर बैंकिंग, हुण्डी, चिट्ठी, गल्ला, कपड़ा और किरानेकी कमीशन एजन्सीका काम होता है।

(४) अभोर (फ़िरोजपुर) मेसर्स जमनादास शिवप्रताप—इस दुकानपर बैंकिंग और गल्लेका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

(५) बड़ोद—(मेरठ) मेसर्स जमनादास शिवप्रताप-इस दुकानपर गुड़, शक्कर और चीनीका बहुत बड़ा व्यापार होता है। क्योंकि यहांका गुड़ बहुत अच्छा होता है।

(६) शोहरतगञ्ज—(बस्ती) जमनादास शिवप्रताप-इस दुकानपर चांवलका बहुत बड़ा व्यापार होता है। यहांका चांवल बहुत मशहूर है।

(७) नौगढ़—(बस्ती) इस दुकानपर भी चांवलका व्यापार होता है।

(८) बरनी—(बस्ती) इस दुकानपर चांवल और सरसोंका बहुत बड़ा व्यापार होता है। यहांसे बंगाल और कलकत्तेमें बहुत सरसों जाती हैं।

(९) खाराघोड़ा—(वीरमगाम) इस दूकानपर नमकका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

(१०) भिण्ड—(रियासत गवालियर) T. A. Dhut यहांपर आपकी एक जीनिंग फेक्टरी और एक तेलका मिल है और रुईका व्यापार होता है। इस मिलका तेल झरिया, लखनऊ आदि स्थानोंमें ।।) मन ज्यादा रेटपर बिकता है। गल्लेका व्यापार भी यहां होता है। यहां श्रीयुत मुनीम जगनाथजी काम करते हैं। आप बहुत सज्जन हैं आप पर मालिकोंका बड़ा विश्वास है। आप मालिकोंकी हमेशा खैर ख्वाही चाहते हैं। आपका स्वभाव भला और मिलनसार है।

इसके अतिरिक्त खेवड़ा (पञ्जाब) बारला (पंजाब) पच भद्रा (जोधपुर) और डीडवाना आदि स्थानोंके नमकका भी आप यहांसे डायरेक्ट व्यापार करते हैं।

मतलब यह कि यह फर्म बहुत प्रतिष्ठित, इज्जतदार और आदरणीय समझी जाती हैं।

स्व० सेठ गणेशलालजी काला (तनसुखलाल गणेशीलाल) सांभर

श्री गुलाबचन्दजी काला (तनसुखलाल गणेशीलाल) सांभर

मन्दिर श्रीरामलक्ष्मणजीका (मगनीराम रामकिशन) कुचामन रोड
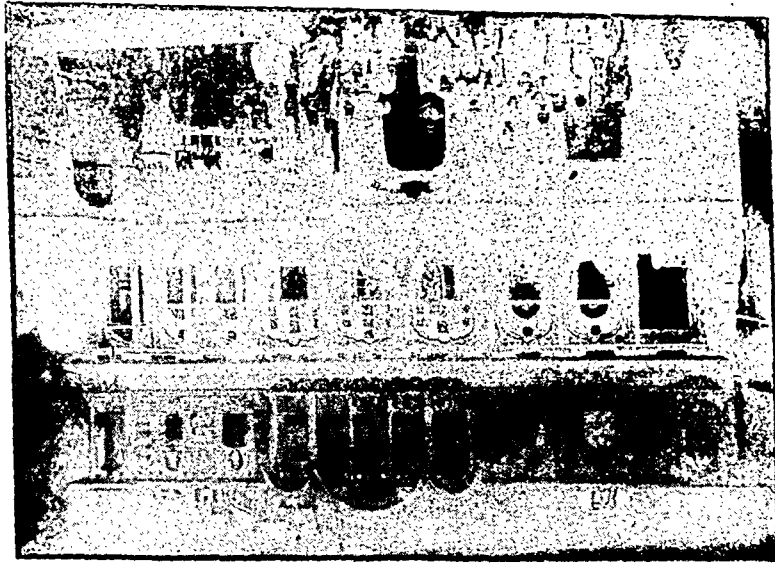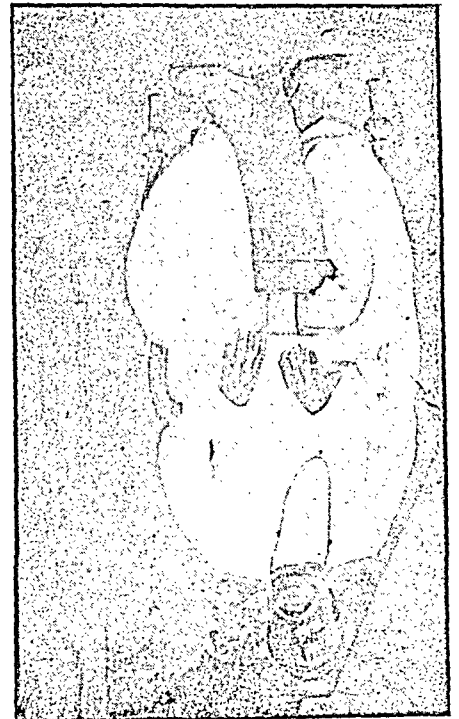
मेसर्स तनसुखराय गणेशीलाल

इस दुकानके वर्तमान मालिक श्रीयुत गुलाबचन्द जी काला है। आप श्रावक जैन खण्डेलवाल जातिके हैं। आपका मूल निवास स्थान सांभर हीमें हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब चालीस-पचास वर्ष हो गये। इसकी स्थापना श्रीयुत गणेशलालजीके हाथोंसे हुई—तथा इसकी विशेष तरक्की भी उन्हींके हाथोंसे हुई। श्रीयुत गणेशदास जीके पुत्र श्रीयुत गुलावचंद जी हैं। आप बड़ेही योग्य सज्जन और समझदार आदमी हैं। आपके हाथोंसे इस दुकानकी खूब तरक्की हुई।

श्रीयुत गुलाबचन्दजीका विद्या-प्रेम भी बहुत बढ़ा चढ़ा है। आपकी ओरसे साम्भरमें "सांभर पुस्तकालय" नामक एक सार्वजनिक पुस्तकालय खुला हुआ है। कुछ दिनों पूर्व आपकी ओरसे एक औषधालय खुला हुआ था। मगर किसी योग्य वैद्यके न मिलनेकी वजहसे वह आजकल वन्द है।

आपकी दुकानें निम्नांकित स्थानोंपर हैं।

(१) हेड आफिस--साम्भर--मेसर्स तनसुखराय गणेशीलाल—इस दुकानपर बैंकिंग हुंडी चिट्ठी, नमक और वारदानेका व्यवसाय होता है।

(२) साम्भर—मेसर्स गुलाबचन्द माणिकचन्द—इस दुकानपर नमक और गल्लेकी कमीशन एजंसीका वर्क होता है।

(३) मदनगंज-किशनगढ़—मेसर्स राधामोहन गुलाबचन्द—इस दुकानपर सूत, आढ़त और गल्लेका काम होता है।

आपके इस समय एक पुत्र हैं। जिनका नाम श्री माणिकचन्दजी हैं। ये इस समय विद्या-ध्ययन करते हैं।

—:०—

मेसर्स दीवानचंद एण्ड कम्पनी

इस कम्पनीका हेड ऑफिस देहलीमें है। इसके मालिक श्रीयुत लाला दीवानचन्दजी हैं। आप बड़े उत्साही, सज्जन और व्यवसायदक्ष पुरुष हैं। आप उन स्वावलम्बी व्यक्तियों मेंसे हैं जिन्होंने अपने निजके परिश्रमसे लाखों रुपयेकी दौलत कमाई है। आपका जन्म खत्री वंशमें हुआ है। आपके यहां गवर्नमेण्ट व मिलीटरीकी ठेकेदारीका बहुत बड़ी तादादमें काम होता है। आपकी महिठ्यरमें चूनेकी एक बड़ी फेक्टरी है। जिसकी निकासी १० वैगन डेली है। यह फेक्टरी इम्पीरियल स्टोर लाइम मैन्यूफेक्चरिंग कम्पनीके नामसे मशहूर है।

सन् १९२३में लालाजीका विचार साम्भरमें व्यापार करनेका हुआ और उन्होंने अपनी ब्राञ्च साम्भरमें उसी साल स्थापित कर दी। जोकि दो तीन वर्षतक अपनी बाल्यावस्थामें चलती रही। सन्-

१९२५में लालाजीने श्रीयुत विश्वनाथजीको जिनके यहाँ तीन पुश्तसे यह काम होता था इसमें सम्मिलित किया। तभीसे इस ब्रॉंचके कारोबारकी तरक्की जोरोंके साथ बढ़ती गई और आज इस फर्मके हाथमें साम्भरकी निकासीका दो तिहाई काम आगया है।

इस फर्मका सञ्चालन यहांपर श्रीयुत विश्वनाथजी कानोडिया करते हैं। आप बड़े उत्साही, परिश्रमी और मेधावी नवयुवक हैं। केवल २८ वर्षकी उम्रमें ही आपने अच्छी व्यापारदक्षता प्राप्त कर ली है। यहांके सफल व्यापारियोंमें आपकी गणना है। आप अग्रवाल कानोडिया वंशके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान कानपुरमें है। आपके खानदानको यहांपर आये करीब१०० वर्ष हो गये। तबसे आपके यहां नमकका ही व्यवसाय होता है। इस कम्पनीके पहले भी आपकी यहाँपर फर्म थी जिसपर नमकका व्यवसाय होता था। (T. A. Diwan)

मेसर्स बंशीधर राधाकिशन

इस फर्मका पूरा परिचय चित्रों सहित जयपुरमें दिया गया है। इस फर्मके वर्त्तमान मालिक सेठ बंशीधरजी हैं। आपकी फर्मपर यहां बैङ्किंग आढ़त तथा नमकका व्यवसाय होता है।

मेसर्स भागचन्द दुलीचन्द

इस फर्मका सुविस्तृत परिचय कई सुन्दर चित्रों सहित अजमेरमें दिया गया है। सांभरमें इस फर्मपर बैङ्किंग और हुंडी चिट्ठीका व्यवसाय होता है।

मेसर्स मगनीराम रामाकिशन धूत

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान नामामें है। ईस फर्मको इस नामसे स्थापित हुए करीब पचास साठ वर्ष हुए। इस फर्मकी स्थापना श्रीयुत बलदेवजीने की। इसकी विशेष तरक्की श्रीयुत सेठ रामाकिशनजीके हाथोंसे हुई। इस समय सेठ रामाकिशनजीके पुत्र श्रीयुत मोतीलालजी और श्रीयुत सूर्य्यमलजी इस फर्मके मालिक हैं। आप बड़े सज्जन पुरुष हैं।

इस फर्मके मालिकोंकी दान धर्म और सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर भी बहुत प्रवृत्ति रही है। आपकी ओरसे कुचामन रोडमें करीब पचास हजारकी लागतका राम लक्ष्मणका मन्दिर बना हुआ इसके अतिरिक्त और कार्योंमें भी आपकी ओरसे बहुतसा दान धर्म होता रहता है। कुचामनके गंगा मन्दिरके जीर्णोद्धारमें भी आपने सहायता की है।

इस समय नीचे लिखे स्थानोंपर आपकी दुकानें हैं।

श्रीरामधनजी (रामधन जौहरीमल) सांभर

श्री बखतावरलालजी (रामधन जौहरीमल) सांभर

फुलेरा बिल्डिंग (रामधन जौहरीमल) फुलेरा

(१) हेड ऑफिस—कुचामन रोड मगनीराम रामाकिशन—इसदूकानपर इस फर्मका हेड आफिस है।

(२) साम्भरलेक—मेसर्स मगनीराम रामाकिशन, इस दूकानपर नमक, वारदाना और हुण्डी चिट्ठीका अच्छा व्यापार होता है।

(३) आकोदिया—(उज्जैन) मेसर्स मगनीराम रामाकिशन, यहांपर रुई, हुण्डी चिट्ठी और गल्लेका व्यापार होता है। यहांपर आपकी एक जीनिंग फेक्टरी भी है।

(४) शुजालपुर—(उज्जैन) मेसर्स मगनीराम रामाकिशन, यहाँ रुई, गल्ला और हुंडी चिट्ठीका व्यापार होता है।

(५) बेरछा—(उज्जैन) मेसर्स मगनीराम रामाकिशन, यहां पर रुई, हुण्डी, चिट्ठी और मिरचीका व्यापार होता है। क्योंकि बेरछामें मिरचीकी आमद बहुत है। यहांपर आपकी एक जीनिंग फेक्टरी भी है।

(६) कालापीपल—(उज्जैन) इस दूकानपर रुई और गल्लेका व्यवसाय होता है।

(७) लखीमपुर खैरी—(U.P.) मेसर्स मगनीराम रामाकिशन—यहांपर गुड़, गल्ला और तिलहनका व्यवसाय होता है।

(८) सीतापुर सिटी—मेसर्स मगनीराम रामकिशन (T A Brajmohan) इस दूकानपर गुड़ और गल्लेका अच्छा व्यवसाय होता है। यहांका गुड़ मशहूर है।

(९) नगीना (विजनौर) मेसर्स मगनीराम रामाकिशन, यहाँपर गुड़, शक्कर और चीनी (बनारस) का व्यापार होता है।

(१०) धामपुर—(विजनौर) मेसर्स मगनीराम रामाकिशन, यहांपर गुड़ शक्कर और चीनीका तथा गल्लेका व्यवसाय होता है।

(११) कांठ—(मुरादाबाद) इस दुकानपर गुड़ शक्कर और गल्लेका व्यापार होता है।

(१२) कोटद्वारा—(गढ़वाल) यह दूकान बद्रीनाथके पहाड़के किनारेपर है। यहां आढ़तका काम होता है और कच्चा सुहागा चावल और कोटू [फलाहारी वस्तु विशेष) का व्यवसाय होता है।

श्रीयुत सूर्यमलजीके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्रीयुत ब्रजमोहनजी हैं ये विद्याध्ययन करते हैं।

मेसर्स रामधन जौहरीलाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ रामधनजी हैं। इस फर्मको स्थापित हुए बहुत वर्ष हुए। आपका खास निवास स्थान सांभरहीमें है। इस फर्मकी विशेष तरक्की श्रीयुत रामधनजीके पुत्र श्रीयुत बख्तावरलालजीके हाथोंसे हुई।

इस समय इस फर्मकी निम्नांकित स्थानोंपर दूकानें हैं—

(१) हेड आफिस—सांभर, मेसर्स रामधन जौहरीलाल—इस दूकानपर आबकारीका ठेका है। इसके अतिरिक्त इस दूकानपर नमककी बड़ी तिजारत होती है।

(२) सांभर—मेसर्स जगन्नाथ बख्तावरमल, इस दूकानपर नमककी कमीशन एजन्सीका काम होता है।

(३) फुलेरा—मेसर्स हमीरसिंह जगन्नाथ, इस दुकानपर आबकारीका ठेका है, और साहब लोगोंसे लेन देनका काम होता है।

(४) जयपुर—अजमेरी गेट—यहांपर भी आपका ठेका है।

सेठ रामधनजीके तीन पुत्र हैं जिनके नाम हमीरसिंहजी, जगन्नाथजी और बख्तावर मलजी हैं।

मेसर्स विजयलाल रामकुंवार

इस फर्मपर जयपुरमें रामकुंवार सूरजबख्शके नामसे व्यापार होता है। इसका परिचय जयपुरमें चित्रों सहित दिया गया है। यहां इस फर्मपर हुण्डी चिट्ठी आढ़त तथा नमकका व्यापार होता है।

मेसर्स रामप्रताप हरबखस

इस फर्मका विशेष परिचय भवानीगञ्ज मंडीमें दिया गया है। यहां इस फर्मपर आढ़त तथा नमकका व्यापार होता है।

मेसर्स सीताराम गोवर्द्धनदास गट्टानी

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत सीतारामजी हैं। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना यहांपर बहुत पुरानी है। पहले इस फर्मपर समीरमल राधामोहनका नाम पड़ता था। करीब तीन चार बरसोंसे यह दो भागोंमें विभक्त हो गई है। पहलीका नाम समीरमल सीताराम, और दूसरीका नाम सीताराम गोवर्द्धनदास पड़ता है।

इस फर्मकी विशेष तरक्की श्रीयुत सीतारामजीके हाथोंसे हुई। आप योग्य और परिश्रमी सज्जन हैं।

इस खानदानकी दान धर्मकी ओर भी रुचि रही है। देवयानीके तीर्थ स्थानपर आपकी ओरसे बनाया हुआ श्रीरघुनाथजीका एक सुन्दर मन्दिर है। इसके अतिरिक्त और भी सार्व-जनिक कार्योंमें आप भाग लेते रहते हैं। आपके मकानका नाम जनकपुर है, महल्लेका नाम भी यही है।

श्रीयुत सीतारामजीके राधामोहनजी नामक भाई हैं। आप भी सज्जन और योग्य पुरुष हैं। आपके श्रीयुत गोवर्द्धनदासजी नामक एक पुत्र हैं आप भी दूकानके कार्य्योंमें भाग लेते हैं।

इन दोनों दुकानोंपर नमकका घरू और कमीशन एजन्सीका व्यवसाय होता है।

मेसर्स हमीरमल रिखबदास

इस फर्मका हेड आफिस अजमेरमें है। अतः इसके व्यवसायका विस्तृत परिचय अजमेरमें दिया गया है। इसके वर्तमान मालिक सेठ नौरतनमलजी रीयां वाले हैं। आपकी फर्म यहां बैंकर्स और गव्हर्नमेंट ट्रेझरर है। नमकके रवन्ने सब इसी फर्मके मार्फत भरे जाते हैं।

मेसर्स हीरालाल चुन्नीलाल तोतला

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान साम्भर हीमें है। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए बहुत वर्ष हो गये। साम्भरमें यह फर्म बहुत पुरानी है।

इस समय इस फर्मके मालिक श्रीयुत रामविलासजी, श्रीयुत हेमराजजी, श्रीयुत गोपीकिशनजी और श्रीयुत श्रीनारायण जी हैं। आप सब सज्जन हैं। श्रीयुत रामविलासजीके बड़े भ्राता श्रीयुत रामवल्लभजी थे। आपका देहावसान सन् १६२७ में हो गया।

इस खानदानकी दान धर्म और सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर भी अच्छी रुचि रही है। मथुरामें जमना किनारे आपकी ओरसे बनाई हुई एक धर्मशाला है। तथा यहाँसे पासहीमें देवयानी नामक तीर्थ-स्थानमें आपका बनाया हुआ एक मंदिर है।

इस समय इस फर्मकी तरफसे नीचे लिखे स्थानोंपर दूकानें और फेक्टरियां हैं।

(१) साम्भर—मेसर्स हीरालाल चुन्नीलाल—इस दुकानपर बैंकिङ्ग, हुण्डी, चिट्ठी और नमकका बड़ा व्यापार होता है।

(२) आगरा—मेसर्स हिरालाल चुन्नीलाल यहांपर आपकी रामवल्लभ रामविलासके नामसे जीनकी मण्डीमें एक तेलका मिल हैं।

(३) नरेना (जयपुर)—मेसर्स हीरालाल चुन्नीलाल—इस स्थानपर शक्कर, गुड़, गल्ला और घीका व्यवसाय होता है।

(४) सतना-(रीवां) मेसर्स हीरालाल चुन्नीलाल—इस दुकानपर नमक, चीनी, और सुपारीका व्यवसाय होता है।

(५) पीलीभीत—मेसर्स रामबल्लभ रामविलास—इस दुकानपर चांवल, चीनी, गुड़ और नमकका घरू व्यवसाय और कमीशन एजंसीका काम होता है।

(६) सीतापुर—मेसर्स रामबल्लभ रामविलास—इस दुकानपर चांवल, नमक, गुड़ शक्कर और गल्लेका व्यवसाय होता हैं।

(७) वारां (कोटा)—मेसर्स हीरालाल चुन्नीलाल—इस दुकानपर नमक और गल्लेका व्यवसाय होता है।

इसके अतिरिक्त गोविन्दगढ़ (पंजाब)में एक जीनिङ्ग और प्रेसिङ्ग फेक्टरीमें आपका साझा है।

मेसर्स हीरालार रामकुंवार

यह फर्म पहले हीरालाल चुन्नीलालके शामिल ही में थी। संवत् १९७४में यह फर्म अलग हुई इसके वर्तमान मालिक श्रीयुत मदनलालजी हैं। आप श्रीयुत रामकुंवारजीके पुत्र हैं। आप सज्जन पुरुष हैं।

आपकी नीचे लिखे स्थानोंपर दूकानें हैं।

(१) साम्भर—मेसर्स हीरालाल रामकुंवार—इस दुकानपर बैंकिङ्ग हुंडी, चिट्ठी और नमकका व्यापार होता है।

(२) मौरेना (गवालियर-स्टेट)—मेसर्स हीरालाल रामकुंवार, इस दुकानपर नमक और गल्लेका घरू तथा कमीशनपर काम होता है।

मेसर्स हरनन्दराय रामानन्द मून्दड़ा

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान डीडवाना में है। इस स्थानपर आपके खानदानको आये करीब ८० वर्ष हुए। तभीसे यह दुकान यहांपर इस नामसे स्थापित है। इसकी स्थापना श्रीयुत सेठ हरनन्दरायजीने की। इसकी विशेष तरक्की श्रीयुत सेठ रामानन्दजीके पुत्र श्रीयुत लालचन्दजीके हाथोंसे हुई। आपही इस समय इस दूकानके मालिक हैं। आप सज्जन और समझदार पुरुष हैं। कुचामनरोडमें आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। श्रीयुत लालचन्दजीके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्रीयुत श्रीकिशन जी है। आप दुकानके व्यवसायमें भाग लेते हैं।

इस खानदानकी दान-धर्म और सार्व-जनिक कार्य्योंकी ओर भी रुचि रही है। आपने कूचामन रोडमें बांकेविहारी जीके मन्दिरका जीर्णोद्धार करवाया है। उसमें करीब दस हजार रुपया व्यय हुआ है। इसके अतिरिक्त यहांके अति प्राचीन गंगा मन्दिरमें भी आपने सहायता दी है।
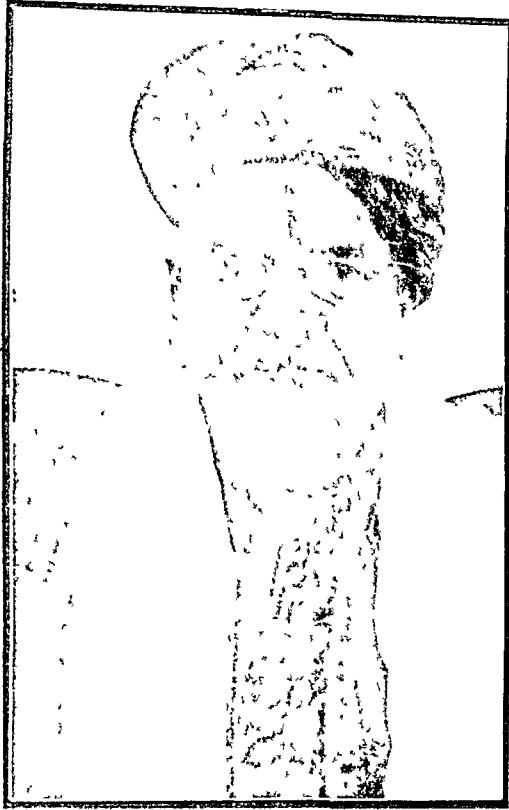
सेठ लालचन्दजी मूंदड़ा (हरनन्दराय रामानन्द) कुचामनरोड

सेठ मोतीलालजी धूत (मगनीराम रामाकिशन) कु०

कुंवर श्रीकिशनजी मूंदड़ा (हरनंदराय रामानंद) कुचामनरोड

श्रीसुगनचन्दजी पाटोदी (मांगीलाल चंपालाल) कु०

इस फर्मकी निम्नाङ्कित स्थानोंपर दुकानें हैं:—

(१) हेड आफिस—कुचामनरोड, मेसर्स हरनन्दराय रामानन्द—इस स्थानपर इस फर्मका हेड ऑफिस है और यहाँपर नमकका व्यापार होता है ।

(२) साम्भर—मेसर्स हरनन्दराय रामानंद; इस दुकानमें नमकका व्यापार होता है। यह दुकान साम्भरकी प्राचीन दूकानोंमेंसे है।

(३) डीडवाना—मेसर्स जयगोपाल हरनन्दराय—इस दुकानपर नमकका व्यापार होता है।

(४) देहली नया बाजार —मेसर्स हरनंदराय रामानंद, इस दूकानपर बैङ्किग, हुंडी, चिट्ठी और सब तरहकी कमीशन एजंसीका काम होता है।

इसके अतिरिक्त खाराघोड़ामें भी आपके द्वारा बहुत सा नमकका व्यवसाय होता है ।

नावा (कुचामन रोड़)

मेसर्स मांगीलाल चम्पालाल पाटोदी चौधरी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान कुचामनरोड हीमें है। इस फर्मको स्थापित हुए करीव पचास वर्ष हुए। आप श्रावक-जैन खण्डेलवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना श्रीयुत सेठ मॉंगीलाल जीने की। इसकी विशेष तरक्की भी उन्हींके हाथसे हुई। मॉंगीलालजीका स्वर्गवास संवत् १९७५में हुआ। उनके पश्चात् उनके भाई श्रीयुत चम्पालालजी इस समय दूकानका संचालन करते हैं। श्रीयुत मांगीलालजीके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्रीयुत सुगनचन्द जी है। चम्पालाल जीके भी एक पुत्र हैं जिनका नाम चिरञ्जीलाल जी हैं। श्रीयुत सुगनचंदजी दुकानका कारोबार करते हैं और श्रीयुत चिरञ्जीलाल पढ़ते हैं। यह खानदान यहांपर बहुत पुराना है। वादशाही जमानेसे इस खानदानको चौधरीकी उपाधि चली आती है।

आपकी दूकानें नीचे लिखे स्थानोंपर हैं:—

(१) हेड आफिस—कुचामनरोड —मेसर्स मांगीलाल चम्पालाल चौधरी —इस दुकानपर जमींदारी, लेनदेन, बैङ्किग, किराया और जायदादका काम होता है। इसके अतिरिक्त यहांपर नमकका व्यापार होता है।

(२ कुचामनरोड—मेसर्स सुगनचन्द चिरंजीलाल, इस दुकानपर गुड़, शक्कर, गल्ले वगैरहका घरू और कमीशन एजन्सीका काम होता है।

(३) बड़ौत —(मेरठ) मेसर्स सुगनचन्द चिरंजीलाल—इस दुकानमें सब प्रकारकी कमीशन एजंसीका काम होता है। चांवल बिनौला खली सरसोंकी, चूरा, मकई, जुवार आदि माल आढ़तियोंका आपके यहां बिकनेके लिए आता है और गुड़ शक्कर देशी और बनारस आदि कमीशनपर बाहर भेजी जाती है।

(४) सोनीपत—(रोहतक) मेसर्स सुगनचंद चिरंजीलाल—इस दुकानपर बडौतहीकी तरह काम होता है। यहांसे लाल मिरच भी कसरतसे जाती है।

(५) गुजरानवाला—मेसर्स मांगीलाल चम्पालाल लोहा बाजार (T. A. Sugan) इस दुकानसे चांवल लोहेकी तिजोरियां और सरसोंका तैल तथा गल्ला बाहर जाता है। इस खानदानकी सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर भी बहुत रुचि रहती है। यहांकी दिगम्बर-जैनपाठशाला कन्या पाठशाला, और औषधालयमें आप दान देते रहते हैं।

बैंकर्स

सैंट्रल बैंक ऑफ इण्डिया बम्बई (सांभरब्रांच)
पंजाब नेशनल बैंक लिमिटेड (ब्रांच सांभर)
मेसस भागचन्द दुलीचन्द
,, हमीरमल रिखबदास (गवर्नमेंट ट्रेझरर)

नमकके व्यापारी और कमीशन एजंट

मेसर्स चांदमल झूमरलाल
,, चांदमल शिववल्लभ
,, चुन्नीलाल रामनारायण
,, जमनादास शिवप्रताप
,, तेजकरण चांदकरण
,, तनसुखराय गनेशीलाल
,, दिवानचन्द एण्ड को०
,, वंशीधर राधाकिशन
,, विजयलाल रामकुंवार
,, भागचन्द दुलीचन्द
,, मन्नालाल केशरीमल
,, मगनीराम रामकिशन
,, रामप्रसाद गोविन्द राम
,, रामधन जौहरीमल
,, रामगोपाल बद्रीनारायण
,, रामचन्द्रजी सोनी
,, रामप्रताप हरबगस
,, समीरमल सीताराम
,, सीताराम गोवर्धनदास
,, शिवनारायण रामदेव
,, हीरालाल चुन्नीलाल
,, हीरालाल रामकुंवार
,, हरनन्दनराय रामानन्द
,, हमीरमल रिखबदास
,, श्रीनारायण हरविलास

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स बरदीचन्द शिवप्रसाद
,, रामकुवार हजारीमल

किरानाके व्यापारी

मेसर्स ओंकारजी मोतीलाल
,, जयनारायण मोतीलाल
,, बलदेव शिवनारायण

चांदी सोनेके व्यापारी

मेसर्स गंगाप्रसाद रामजीवन
,, समीरमल हरनारायण

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स गुलाबचन्द माणकचन्द
,, गोविन्दराम चुन्नीलाल

धर्मशाला

नमकके व्यापारियोंकी धर्मशाला स्टेशन

बीकानेर और बीकानेर राज्य

BIKANER

&

BIKANER-STATE

बीकानेर

बीकानेरका ऐतिहासिक परिचय

जो स्थान आजकल बीकानेरके नामसे मशहूर है सन् १४८९के पहले यह स्थान जांगल प्रांतक नामसे प्रसिद्ध था। उस समय इसपर सांकला जातिका अधिकार था। ई० सन् १४८८ की तेरहवीं अप्रैल (सं० १५४५ वैशाख सुदी २) को जोधपुर राज्यके संस्थापक प्रसिद्ध राठौड़वंशी राव जोधाजीके छठवें पुत्र राव बीकाजीने यह स्थान सांकलोंसे छीन लिया और वहांपर अपने नामसे बीकानेर नामक शहर बसाया। यहीं इन्होंने अपनी राजधानी स्थापितकी। मारवाड़ी भाषामें इस घटनाका सूचक एक पुराना दोहा इसप्रकार है :—

पनरसै पैंतालवे, सुद वैशाख सुमेर,
थावर बीज थरप्पियो, बीके बीकानेर।

राव बीकाजीका स्वर्गवास संवत् १५६१में होगया। आपके पश्चात् नराजी, लूणकरणजी, जैतसीजी, कल्याणसिंहजी, रायसिंहजी, दलपतसिंहजी, सूरसिंहजी, कर्णसिंहजी, अनूपसिंहजी स्वरूपसिंहजी, सुजानसिंहजी, जोरावरसिंहजी, गजसिंहजी, राजसिंहजी, प्रतापसिंहजी, सूरत सिंहजी, रतनसिंहजी, सरदारसिंहजी, और डूंगरसिंहजी क्रमशः सिंहासनासीन हुए।

इस समय महाराजा डूङ्गरसिंहजीके लघु भ्राता मेजर जनरल महाराजा गंगासिंहजी बीकानेरके राज सिंहासनपर विराजमान हैं। आप हिन्दू विश्वविद्यालयके प्रो० चान्सलर और नरेन्द्र मण्डल दिल्लीके प्रधान हैं। आपके समयमें राज्यके कई विभागोंमें बड़ी तरक्की हुई है। सबसे महत्वपूर्ण कार्य्य जो आपके समयमें हुआ है वह सतलज नदीसे लाई जानेवाली नहर है। इस नहरका नाम गंगा नहर है। गत वर्ष इसका स्थापन उत्सव होचुका है। यह नहर करीब ८० मील लम्बी है। इसके बनानेमें राज्यका बहुत अधिक रुपया खर्च हुआ है इस नहरके पानीसे रतनगढ़ और हनुमानगढ़ जिलेकी छ लाख बीस हजार बीघा रुखी सूखी रेतीली जमीन हरीभरी, सरसब्ज और शस्यश्यामला होजायागी। नहरसे जब पूर्ण सिंचाई होने लगेगी तब राज्यकी आमदनी ३४ लाखके करीब बढ़ जायगी। कंकर कूटकर तैयार की हुई यह नहर संसार भरमें एक बड़े

मार्कंकी नहर है। इस अभूतपूर्व कार्य्यसे महाराजा बीकानेरने न केवल इतिहासहीमें अपना नाम अमर करलिया है प्रत्युत राज्यकी आमदनी और प्रजाकी सुविधाओंको भी सब प्रकारसे बढ़ादिया है।

भौगोलिक पीरचय

यह प्रान्त "२७-१२" से "३०-१२" अक्षांस और "७२-१२" से "७५-४१" देशान्तरके बीचमें बसा हुआ है। इसका क्षेत्रफल २३३१५ वर्गमील है। इस राज्यके चारोंओर जैसलमेर, भावलपुर, जोधपुर जयपुर, लाहौर तथा हिसारके प्रान्त हैं। इस राज्यकी भूमि रुखी और अनुपजाऊ है। पानीकी बड़ी तंगी और बालू की प्रचुरता है, यहांके कुओंमें तीनसौ चारसौ फुट गहरी खुदाई होनेपर पानीके दर्शन होते हैं। यहांका जलवायु स्वास्थप्रद है। गर्मीमें प्रखर गर्मी और सर्दीमें कड़ाकेकी सर्दी पड़ती है। बरसातका मौसिम यहां अच्छा रहता है।

व्यवहारके साधनोंमें यहां पर ऊंटकी सवारीकी प्रधानता है। यहांपर पानी भरने, माल लादने, सवारी करने, हल जोतने इत्यादि सब काममें ऊंटकी आवश्यकता पड़ती है। इसीलिए शायद कवि-कान्हने कहा है:—

> ऊंट सवारी देय, ऊंट पानी भरलावे।
> लकड़ी ढोवे ऊंट, ऊंट गाड़ी लेधावे।
> खेती जोते ऊंट, ऊंट पत्थर भी ढोवे।
> जो न होय इक ऊंट, लोग कर्मोंको रोवे।
> कवि कान्ह धन्य तक साहिबी, जैसेको तैसे मिले।
> बिन जट्ट रु उट्ट भुरट्टमें, कहो काम कैसे चले?

पैदावार

यहांकी कृषिकी पैदावारमें बाजरा और मोठ तथा फलोंमें तरबूज प्रधान है। यहांके तरबूज बड़े बढ़िया, मीठे और जायकेदार होते हैं।

खनिज पदार्थोंमें खार, सज्जी, मुलतानी मिट्टी इत्यादि वस्तुएं प्रधान हैं। इसी राज्यमें पलानेके अन्तर्गत कोयलेकी भी खान है इस खानके कोयलेमें बंगालकी खानोंका कोयला मिलानेसे रेलवे और बिजली घरका काम भी चल जाता है। वहांसे ४२ मील दूरीपर दलमोरा नामक स्थानमें लाल पत्थरकी खदान भी है।

तीसरी पैदावार ऊन की है। यहांकी ऊन बड़ी मुलायम और बढ़िया होती है। यद्यपि उसकी पैदावार कम होती है पर उसकी क्वालिटी भारतमें कश्मीरसे दूसरे नम्बरकी मानी जाती है।

व्यापारिक स्थिति

यद्यपि बीकानेर बड़े २ मारवाड़ी धनकुबेरोंकी बस्ती है, कई करोड़पति और लक्षाधीश यहांके मूलनिवासी हैं। फिर भी यह कहना पड़ेगा कि यहांका व्यापार बहुत कमजोर हैं। यहांके सब व्यापारी कलकत्ता, बम्बई, करांची इत्यादि स्थानोंपर व्यापार करते हैं, और सालमें महीना दो महीना यहांपर आराम करनेके लिए आते हैं। बाकी यहांके स्थानीय व्यापारमें ऊनके व्यापारको छोड़कर और कोई व्यापार महत्वपूर्ण नहीं है। ऊनका व्यापार अलबत्तह यहांपर बहुत अच्छा है। यहांके बनेहुए कम्बल, लोई आदि ऊनी पदार्थ दूर २ तक एक्सपोर्ट होते हैं बड़े २ रईस इन वस्तुओंको बड़े चावसे खरीदते हैं। वास्तवमें ये वस्तुएं यहां होती भी बहुत अच्छी हैं।

इसके अतिरिक्त यहांपर चिक्कन सुपारीका भी व्यापार अच्छा है। यहांके लोगोंको इस सुपारीके खानेका विशेष अभ्यास है। इसलिए यहांपर सैकड़ों थैलियां इस सुपारीकी बाहरसे इम्पोर्ट होती हैं और यहां बिकती हैं, तथा यहांसे बाहर भी जाती हैं।

प्रसिद्ध वस्तुएं

बीकानेर शहर अपनी चित्रकारी, और मकान कोराईकी विद्याके लिए बड़ा प्रसिद्ध है यहांकी बड़ी २ आलीशान इमारतोंमें जो बारीक कोराईका काम होरहा है वह वास्तवमें देखने योग्य है। शायद ही भारतके अन्य स्थानोंमें इतनी बारीक कोराईका काम कहीं होता हो। कोराईके अतिरिक्त यहांकी चित्रकारी भी बड़ी सुन्दर होती है। बीकानेरके प्रसिद्ध सेठ भैरूंदानजी सेठिया ने हम लोगोंको अपने मकानकी दीवालोंपर की हुई चित्रकारीका कार्य्य बतलानेकी कृपाकी। उन दीवालोंपर चित्रकारने कुछ काश्मीरके दृश्य अङ्कित कर रक्खे थे। वो दृश्य इतने सुन्दर अङ्कित हुए हैं मानो मुंहसे बोल रहेहों। हम इस कारीगरीको देखकर आश्चर्यान्वित होगये। जयपूर भी इस कलामें बहुत प्रवीण है। पर दीवालोंकी चित्रकारीमें बीकानेर भी जयपुरसे किसी बातमें कम नहीं है।

खानेकी वस्तुओंमें इस शहरकी मिश्री और खटाई प्रसिद्ध है। खटाई तो वास्तवमें बहुत ही अच्छी होती है। ये दोनों वस्तुएं भी यहांसे बाहर जाती हैं।

शहरकी बसावट

इस शहरकी बसावट पुराने ढंगकी है। इसके बाजार चौड़े नहीं हैं। गलियां अधिक हैं। इस शहरमें बड़ी २ भव्य और विशाल इमारतें कितनी बनी हुई हैं इसकी तादाद बतलाना भी कठिन है। एकसे एक बढ़िया आलीशान और भव्य इमारतें खड़ी हुई हैं। जिनको देखकर तबियत प्रसन्न

हो जाती हैं। इस शहरकी बसावटमें एक बड़ी विशेषता यह है कि यहांपर प्रत्येक जातिके नामसे अलग २ चौक और सेरियां बनी हुई हैं। जैसे डागोंका चौक, मोहतोंका चौक, बागड़ियोंका चौक इत्यादि। बस जिस जातिके व्यक्तिसे आपको मिलना है उसी जातिके नामवाले चौकमें आप चले जाइए, आपको पता लग जायगा। सफ़ाईकी दृष्टिसे इस शहरकी स्थिति विशेष अभिनन्दनीय नहीं है। पर ऐसा सुननेमें आता है कि अब यहांकी म्युनिसिपैलिटी इसमें सुधार करनेवाली है।

समाजिक जीवन

यहांकी सामाजिक व्यवस्था बिलकुल मारवाड़ी है। बालविवाह, वृद्धविवाह, बेमेल विवाह इत्यादि कुप्रथाओंका यहांपर काफी जोर है। ऐसा सुननेमें आता है कि हालहीमें राज्यकी ओरसे बालविवाह प्रतिबन्धक कानून बननेकी घोषणा प्रकाशित हुई है। यह सन्तोषकी बात है।

कस्टम डिपार्टमेंट

बीकानेर राज्यके अन्तर्गत यदि कोई आश्चर्य योग्य बात है तो वह यहांका कस्टम डिपार्टमेंट है। इस रियासतमें तथा जोधपुर रियासतमें हमने जितनी कस्टम की सख्ती देखी उतनी शायदही भारत वर्षके किसी दूसरे स्थानमें हो। कस्टमके कर्मचारी मुसाफ़िरोंके सामानका एक २ कपड़ा बिखेर डालते हैं, उन्हें बेहद तंग करते हैं, इतनी सख्ती किसी भी राज्यके लिए अभिनन्दनीय नहीं कही जा सकती। राज्यको इस ओर अवश्य ध्यान देना चाहिए।

मिल ऑनर्स

मेसर्स बंशीलाल अबीरचंद रायबहादुर

इस प्रसिद्ध फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बीकानेरमें है। आप माहेश्वरी (डागा) जातिके सज्जन हैं। बीकानेरमें यह फर्म बहुत पुरानी है। इसकी स्थापना श्री सेठ बंशीलालजीने की। आपके ३ पुत्र थे, जिनके नाम क्रमसे रायबहादुर सेठ अबीरचंदजी, सेठ रामचन्द्रजी तथा रायबहादुर सेठ रामरतनदासजी। आप तीनों ही बड़े प्रतापी और प्रतिभाशाली पुरुष थे। इनमेंसे सर्व प्रथम सेठ अबीरचंदजी नागपुर गये। वहाँपर आपने अपने व्यवसायको खूब फैलाया, और कीर्तिसंपादित की। इधर सेठ रामरतनदासजी लाहौर गये, और आपने अपने व्यवसायको उधर बढ़ाया। आपने सन् १८५७ के गदरके समय बृटिश सरकारको अच्छी सहायता दी। इसके उपलक्षमें सरकारने आपको राय बहादुरकी पदवीसे सम्मानित किया, और कई सम्माननीय वस्तुएं दी। सेठ अबीरचंदजीका देहावसान संवत् १९३५ में और सेठ रामरतनदासजीका देहावसान संवत् १९५० में हुआ।

श्रीमान् रा०ब०स्व० सेठ अमीरचन्दजी डागा, बीकानेर

श्रीमान् रा० ब० स्व० सेठ रामरतनदासजी डागा बीकानेर

श्री रा० ब० सर कैसरेहिन्द कस्तूरचंदजी डागा, सी०आई० ई०

श्री रा० ब० सर विश्वेश्वरदासजी डागा के० टी०

आपके पश्चात् रा० ब० सेठ अबीरचंदजीके पुत्र श्री दीवान बहादुर सर कस्तूरचंदजी डागा, कैसरे हिन्द, के० सी० आई० ई० ने इस फर्मके कामको सम्हाला। आपने इस फर्मके व्यापारको इतना बढ़ाया, कि सी० पी० में आपकी फर्म अत्यन्त प्रतिष्ठित मानी जाने लगी। व्यवसायिक कुशलताके साथ २ अपने सामाजिक एवं राजकीय कार्योंमें भी ऊँचे दर्जेका सम्मान प्राप्त किया था। गवर्नमेंटसे आपको के० सी० एस० आई० के समान उच्च पदवी जो—अभीतक किसी मारवाड़ी समाजके व्यक्तिको नहीं प्राप्त हुई थी, मिली। आपको बीकानेर स्टेटने फर्स्ट क्लास ताजिम देकर सम्मान किया। आप बहुत अधिक समय तक सी०पी०कौंसिलके मेम्बर रहते थे। आपका देहावसान संवत १९७३ में हुआ।

वर्तमानमें सर कस्तूरचंदजी डागाके चार पुत्र हैं। जिनके नाम श्री रायबहादुर सर विश्वेसरदासजी डागा,के०टी०,श्री सेठ नरसिंहदासजी,श्री सेठ बद्रीदासजी और श्री सेठ रामनाथजी हैं। इन महानुभावोंमें से सर कस्तूरचंदजी डागा के० सी० आई० ई० के पश्चात् वर्तमानमें इस फर्मका सारा कारबार रा० ब० सर विश्वेसरदासजी डागा के० टी० संचालित करते हैं। आप नागपुर इलेक्ट्रिक एण्ड पॉवर कम्पनीके चेयरमैन, सेंट्रल बैंक ऑफ इण्डियाके डायरेक्टर, तथा मॉडल मिल नागपुर और बरार मेन्युफेक्चरिंग कम्पनी बड़नेराके एजंट और डायरेक्टर हैं। सी० पी० रेड क्रास सोसाइटीके आप वाइस प्रेसिडेंट हैं। इसके अतिरिक्त आप और भी कई मिलोंके डायरेक्टर हैं।

सर विश्वेसरदासजी डागा के० टी० ने अपने पिताश्री की यादगारमें सर कस्तूरचंद मेमोरियल हॉस्पिटल नामक एक अस्पताल स्त्रियोंके लिये करीब ३॥ लाख रुपयोंकी लागतसे बनवाया है। इसी प्रकार और भी कई सार्वजनिक कार्योंमें आप बहुत उदारता पूर्वक दान देते रहते हैं। सर विश्वेसरदासजी डागा बीकानेर असेम्बलीके मेम्बर हैं। आपको स्टेटसे सेकंड क्लास ताजमी प्राप्त है।

भारतके बैङ्किंग व्यवहारके इतिहाससे इस फर्मका बहुत सम्बन्ध है। भारतको प्रसिद्ध २ प्रतिभा सम्पन्न धनिक मारवाड़ी फर्मोंमें इस फर्मका स्थान बहुत ऊँचा है। माहेश्वरी समाजमें यह कुटुम्ब बहुत प्रतिष्ठा सम्पन्न और अग्रगण्य है। इस फर्मके व्यवसायका परिचय इस प्रकार है।

(१) नागपुर—कामठी—मेसर्स बंशीलाल अबीरचंद राय बहादुर (T, A, Lacky)—इस फर्म पर बैङ्किंग और हुण्डी चिट्ठीका बहुत बड़ा व्यापार होता है। यहाँपर आपकी ४ बड़ी बड़ी कोयलेकी खदाने हैं जिनके नाम बलहारशा, शास्ता, पिसगांव, राजुरा और गुगस हैं। इनके अतिरिक्त आपकी यहाँ मेगेनीज़ वगैराकी खदाने भी हैं। इस फर्मके तालुकमें आपकी करीब ३० कॉटन जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं।

२) हिंगन घाट—मेसर्स बंशीलाल अबीरचंद रायबहादुर—T, A Bansilal—यहाँपर आपकी

सूत और कपड़ेकी एक बहुत बड़ी प्राइ`ट मिल है। इसके मैनेजर मि० पी० वेलचम हैं। इसके अतिरिक्त इस फर्मपर बैङ्किग व्यवसाय होता है।

आपकी फर्मों पर विशेषकर बेङ्किग व्यवसाय होता है। सी० पी० के अतिरिक्त निजाम हैदराबाद साइडमें भी आपकी कई कॉटन जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरियां हैं। लाहोरमें आपकी फर्म गव्हर्नमेंट ट्रेझरर है। लाहोर, रायपुर, सागर वगैरा स्थानोंमें आपकी बहुतसी जमीदारी है। आपकी दूकानोंकी नामावली इस प्रकार है।

(३) बीकानेर - मेसर्स चन्द्रभान बंशीलाल अबीरचंद रायबहादुर T. A. Khajanchi—
(४) जयपुर—मेसर्स चन्द्रभान बंशीलाल रायबहादुर जौहरी
(५) कामठी - मेसर्स बंशीलाल अबीरचंद रायबहादुर (T. A. Bahadnr)
(६) नागपूर—मेसर्स चन्द्रभान बंशीलाल रा० ब० (T. A. Indra)
(७) जबलपुर— „ „ „ (T. A. Baldao)
(८) संभलपुर „ „ „
(९) सागर— „ „ „
(१०) बारा-शिवनी — „ „ „
(११) चांदूर (सी० पी) मेसर्स बंशीलाल अबीरचंद रा० ब०
(१३) रायपुर (सी० पी०) मेसर्स रामचन्द्र रामरतनदास रा० ब० (T. A. Khajanchi)
(१४) कलकत्ता—मेसर्स बंशीलाल अबीरचंद रा० ब० (T. A. Banskam)
(१५) बम्बई— „ „ रा० ब० T. A. Raidansi
(१६) मद्रास— „ „ रायबहादुर (T. A. Bellat)
(१७) रंगून— „ „ रायबहादुर (T. A. Banker)
(१८) बंगलोर (कन्टोन्मेन्ट) बंशीलाल रामरतनदास रा० ब० (T. A. Ratan)
(१९) लाहोर (कन्टोनमेन्ट) „ „ (T. A. Setha Ratan)
(२०) हैदराबाद (दक्षिण) बंशीलाल अबीरचंद रायबहादुर (T. A. Narsingh)
(२१) निजामाबाद (दक्षिण) „ „ (T A Raibabadur)
(२२) पुरना — „ „
(२३) परली — „ „
(२४) सेलू— „ „
(२५) लोहा— „ „
(२६) सिकंदराबाद (दक्षिण) „ „ (T. A Bahadur)
(२७) मुंदखेड़ — „ „
(२८) गंटूर—दीवान बहादुर सर कस्तूरचन्द हनुमान दास राय बहादुर (T. A Bahadur)
(२९) तेनाली— „ „ „ „
(३०) दायापल्ली „ „ „ „

मेसर्स भीखमचन्द रेखचन्द मोहता

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बीकानेर है। आप माहेश्वरी सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब सौ वर्ष हुए। इस फर्मकी स्थापना श्री सेठ भीखमचन्दजीने की। आपके बाद आपके पुत्र श्री रेखचन्दजीने इस फर्मके कामको सम्हाला। आप बड़े योग्य और प्रतिष्ठित पुरुष थे। गवर्नमेंटसे आपको राय साहबकी पदवी प्राप्त हुई थी। आपही के हाथोंसे इस फर्मके व्यापारको अधिक उत्तेजन मिला। सेठ रेखचन्दजीका स्वर्गवास सन १९०६ में हुआ। आपके दो पुत्र थे, जिनके नाम क्रमसे श्री बुलाकीदासजी और श्री नरसिंहदासजी थे। आप दोनों सज्जनोंका देहावसान हो गया है। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ बुलाकीदासके पुत्र सेठ मथुरादासजी और सेठ गोपालदासजी हैं। आप दोनों ही बड़े सुयोग्य और समाजसेवी महानुभाव हैं। श्रीमथुरादासजी नागपुर लेजिस्लेटिव्ह कौंसिलके मेम्बर हैं। आपकी इस समय नीचे लिखे स्थानोंपर दूकानें हैं।

हिंगनघाट—(सी० पी०)—मेसर्स भीखमचन्द रेखचन्द—(हेड ऑफिस) T. A. mohta
इस फर्मपर बैंकिंग, हुण्डी चिट्ठी और मिलके गुड्सकी सप्लाईका व्यापार होता है। आपकी यहांपर राय साहब रेखचन्द स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल नामक एक सूत और कपड़ेकी मिल है।

नागपूर—मेसर्स मथुरादास गोपालदास, दीतवारिया बाजार—यहाँ हुण्डी, चिट्ठी, मिल गुड्स सप्लाई, सराफी, और बैंकिंग बिजिनेस होता है।

वर्धा—मेसर्स मथूरादास गोपालदास—यहाँपर आपकी एक कॉटन जीनिंग और प्रेसिंगफेक्टरी है। तथा रूईका व्यवसाय होता है।

संभलपुर—मेसर्स मथुरादास मोहता—यहाँ सूत, बैंकिंग, हुण्डी चिट्ठीका व्यवसाय होता है।

बारा-सिवनी—मेसर्स मथुरादास गोपालदास—यहाँपर भी सूत बैंकिंग तथा हुण्डी चिट्ठीका व्यापार होता हैं।

उपरोक्त सब दूकानें सेठ बुलाकीदासजीके पुत्रोंकी हैं। सेठ नरसिंहदासजीके खानदानकी दूकानें अलग हैं। जिनके मालिक सेठ मथुरादासजीके पुत्र श्रीयुत जानकीदासजी हैं। श्रीजानकीदासजी सेठ नरसिंहदासजीके यहां दत्तक रख दिये गये हैं। आपकी वहाँपर सात दुकाने हैं। इसके अतिरिक्त करीब बीस बाईस गांव आपकी मालगुजारीमें हैं।

बैंकर्स

मेसर्स अगरचन्द भेरोंदान सेठिया

अब हम पाठकोंके सम्मुख एक ऐसे दिव्य व्यक्तिका चरित्र उपस्थित करते हैं, जिसने अपने जीवनके द्वारा व्यापारी सामाजके सम्मुख सफलता और सद्व्ययका एक बहुत बड़ा आदर्श उपस्थिता कर दिया है। जिसने व्यापारिक जगतमें अपने पैरोंपर खड़े होकर लाखों रुपयेकी सम्पतिका उपार्जन किया, व्यापारिक जगत्में चहल पहल मचा दी, और अन्तमें अब उन सब झगड़ोंसे निवृत्त होकर उस सम्पत्तिका सदुपयोग कर रहा है।

श्रीभैंरूदानजीका जन्म संवत् १६२३ की आश्विन सुदी अष्टमीको हुआ। जब आप केवल दो वर्षके थे तभी आपके पिताजी आपको छोड़कर स्वर्गवासी हो गये थे। आप संवत् १६३२ में कलकत्ते चले गये। वहां एक वष रहकर फिर बीकानेरके पास शिवबाड़ी नामक ग्राममें ३ वर्ष तक व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त की। संवत १६३६ में आप बम्बई गये और वहां ४ वर्ष तक साहूकारी जमा खरच की शिक्षा प्राप्तकी, एवं प्राइवेट अध्यापकों द्वारा बही खाता सम्बन्धी और गुजराती एवं अंग्रेज़ीका भी ज्ञान प्राप्त किया।

आपका विवाह संवत् १६४० में हुआ। आपके २ बड़े एवं १ छोटे भाई थे जिनके नाम क्रमशः श्री प्रतापमलजी श्री अगरचंदजी और हज़ारीलालजी था। संवत् १६४१ में जब आपकी वय सिर्फ १८ वर्षकी थी, आपके भाई श्री प्रतापमलजीने आपको जुदा कर दिया। यहांपर यह बतला देना आवश्यकीय है, कि आपको अपनी पैतृक सम्पति नहींके बराबर मिली थी, जितनी भी सम्पत्ति आपको अपने हिस्सेमें मिली थी, उतना ही आप पर कर्ज भी था।

ऐसी कठिन अवस्थाम आप फिर संवत् १६४१ में सकुटुम्ब बम्बई गये, और आपके भाईके साझेकी जगन्नाथजी मोहता नामकी फर्मपर सिर्फ ५००) साल पर करीब ७ वर्षतक मुनीमी की। आप इतने होशियार एवं कार्य दक्ष थे कि आपके द्वारा शिक्षा पाये हुए कई व्यक्तियोंकी दो हज़ार रु० वार्षिक पानेकी योग्यता हो गई। आपकी अत्यधिक योग्यता होते हुए भी कभी आपने वेतन वृद्धिके लिये प्रार्थना नहीं की। जिस मकानमें आप रहते थे उसके भाड़ेका कंट्राक्ट भी आप

स्व० सेठ अगरचन्दजी सेठिया (अगरचन्द भैरोंदान) बीकानेर

सेठ भैरोंदानजी सेठिया (अ० भै० सेठिया) बीकानेर
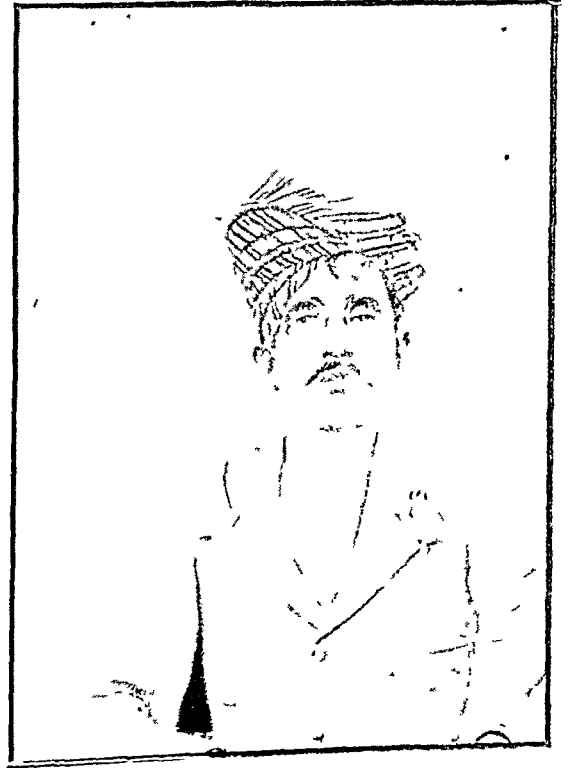
कुंवर जेठमलजी सेठिया (अगरचंद भैरोंदान सेठिया) बीकानेर,

कुंवर पानमलजी सेठिया (अगरचन्द भैरोंदान) बीकानेर

लिया करते थे। इस प्रकार सात वर्षके कठिन परिश्रमके पश्चात् आपने तीन हजार रुपयोंकी सम्पत्ति एकत्रित की। एवं उसे लेकर कलकत्ते गये और वहां संवत् १९४५ में हनुमानराम भैरोंदानके नामसे रंग और मनिहारीकी दूकान की। धीरे २ वेलजियम, स्वीट्जरलैंड और आस्ट्रियाके रंग तथा मनिहारीके प्रसिद्ध कारखानोंकी सोल एजंसियां भी आपने लेलीं। आपका व्यवसाय खूब चल निकला। विलायतसे जितना माल आपके यहाँ आता था उसपर आपहीका ट्रेडमार्क रहता था। कुछ समय बाद आपके ज्येष्ठ भ्राता श्री अगरचंदजी भी आपके साथ व्यवसायमें सम्मिलित हो गये और ए० सी० बी० सेठिया एण्ड को० के नामसे व्यवसाय चलने लगा।

वेलजियमके एक रंगके व्यवसायीके कपट पूर्ण व्यवहारके कारण आपकी उससे अनबन हो गई। उसी समय आपने दी सेठिया केमिकल वर्कस् लिमिटेड नामका एक रंगका कारखाना खोला जो भारतमें रंगका पहिला ही कारखाना था। यह कारखाना अब भी चल रहा है। इस कार्य पर अंग्रेज मैनेजर करीब २७ वर्षों तक रहा। इसके पश्चात् अपका व्यापार वायुवेगसे उन्नति पाने लगा। आपने बम्बई, मद्रास, कानपुर; देहली, अमृतसर, करांची और अहमदाबादमें नई दूकाने स्थापितकीं। तदनंतर जापानमें भी एक ऑफिस स्थापित किया और उक्त स्थानपर एक यूरोपियन, एक बंगाली और एक खत्रीको यहांसे भेजा। संवत् १९५८ में श्री प्रतापमलजी तथा १९६० में श्री हजारीमलजीका देहावसान हो गया।

संवत् १९७२ में आप भयंकर रोगग्रस्त हो गये। कलकत्तेके प्रसिद्ध २ डाक्टरोंकी एलोपैथिक चिकित्सा द्वारा भी आपको कोई लाभ नहीं हुआ। तब आपने होमियोपैथिक डाक्टर प्रतापचन्द मजूमदारसे चिकित्सा प्रारम्भ की और उसके द्वारा आपको स्वास्थ्य लाभ हुआ। तबसे आपका होमियोपैथिक औषधि पर विश्वास जमा और आपने उसमें विशेष योग्यता प्राप्त की। आप अब भी होमियोपैथिक औषधि वितरणकर सैकड़ों रोगियोंको आरोग्य करते हैं। इस बीमारीसे आपके मन पर संसार की क्षणभंगुरताका अत्यधिक असर पड़ा और आपने कलकत्ता तथा जापानके सिवा बाकी सब कार्य्यको समेट लिया।

संवत १९७० में आपने बीकानेरमें सर्व प्रथम एक स्कूल खोला। यहींसे आपका धार्मिक जीवन प्रारम्भ होता है। आपके भाई अगरचन्दजीका देहावसान संवत १९७८ में हुआ, आप बड़े धर्मनिष्ठ एवं कर्तव्य परायण व्यक्ति थे आपने अपनी बीमारीके समय तार द्वारा कलकत्तेसे श्री भैरोंदानजीको बुलाकर यह सम्मति दी थी, कि पाठशालाका काम साझेमें रक्खा जाय। एक कन्या पाठशाला और खोली जाय, तथा जैन शास्त्र भंडार जो छोटे रूपमें है उसे वृहद कर दिया जाय, आदि। आपके पुत्र उदयचन्दजीका देहावसान संवत १९७९में हुआ। उनकी बीमारीके समय आपने धार्मिक बोल थोकड़ा आदि संग्रह कर पुस्तक प्रकाशनका कार्य आरम्भ किया।

संवत् १९७६ में आपने सेठ अगरचन्दजीसे सामा अलग कर लिया। इस समय आपके ५ पुत्र हैं। जिनके नाम कुँवर जेठमलजी, कुँवर पानमलजी, कुंवर लहरचन्दजी, कुँवर जुगराजजी तथा कुंवर ज्ञानपालजी हैं। आपने अपने सब पुत्रोंको संवत् १९७९ से ही अलग कर उनका हिस्सा बांट दिया है। संवत् १९७९ से ही आप अपना पूरा समय धर्मध्यान एवं पारमार्थिक संस्थाओंके संचालनमें देने लगे हैं।

आपने कलकत्तेके चीना बाजारकी नं० १६०।१६१ की दुकानें स्कूलके लिये दे दी हैं,तथा दोनों भाइयोंकी ओरसे बीकानेरकी एक बिल्डिंग-स्कूल, कन्या पाठशाला, बोर्डिंग तथा लायब्रेरी आदिके लिये दी है। तथा दूसरी बिल्डिग सामायिक प्रतिक्रमण आदि धार्मिक कार्योंके लिये दो है। कलकत्तेकी क्रास स्ट्रीटके नं० ३, ५, ७, ९, १६, और मनोहरदास स्ट्रीटके १२३, १२५ नं० के मकान भी परमार्थिक संस्थाओंको दान दे दिये हैं तथा उक्त सब मकानोंकी रजिष्ट्री भी करवा दी है।

आपकी धर्मपत्नीने भी १०००० धार्मिक संस्थाओंको दान दिया है। फिलहाल आपकी ओरसे निम्नलिखित संस्थाएं चल रही हैं इन संस्थाओंका आप स्वयं संचालन करते हैं।

१ – सेठिया जैन स्कूल २-सेठिया जैन श्राविका पाठशाला ३—सेठिया जैन संस्कृत प्राकृत विद्यालय ४—सेठिया जैन बोर्डिंग हाउस ५—सेठिया जैन शास्त्र भण्डार ६—सेठिया जैन विद्यालय ७—सेठिया जैन श्राविकाश्रम ८—सेठिया जैन प्रिंटिंग प्रेस।

श्रीमान् भैरोंदानजी श्रीसप्तम अ० भा० व० श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स बंबई के सभापति थे। एवं जैन स्वे० स्थानकवासीके ट्रेनिंग कॉलेजके भी आप सभापति हैं। इसके अलावा श्वेताम्बरसाधुमार्गी जैन हितकारिणी सभाके भी आप प्रेसिडेण्ट है स्थानिक म्युनिसिपल बोर्डके भी आप मेम्बर है।

श्रीयुत जेठमलजी स्थानीय साधुमार्गी हितकारिणी सभाके सेक्रेटरी तथा जैन ट्रेनिंग कॉलेजके सेक्रेटरी हैं।

सेठ साहबके ज्येष्ठ पुत्र श्री जेठमलजी अपने योग्य पिताकी योग्य संतान है। आप भी अपने पिताजीकी तरह द्रव्य एवं समय द्वारा समाज एवं धर्म भी सेवा करनेवाले दृढ़ ब्रती एवं उत्साही युवक हैं। आप सेठजी की स्थापित की हुई उपरोक्त संस्थाओंका भली प्रकार संचालन करते हैं। आप स्वयं उनके ट्रस्टी भी हैं। इतना ही नहीं आपने अपने साझेकी रकम-मेंसे तीस हजार रुपये तथा केनिंग स्ट्रीट मुर्गिहट्टा कलकत्ता का.नं० १११, ११५ मकान और जंकशन लेन नं० ६ के मकान भी पारमार्थिक संस्थाओं को दान कर दिये है उक्त सब मकानोंकी किरायेकी एवं रकमोंके ब्याजकी आमदनी करीब २१ हजार रुपया सालाना सब पारमार्थिक कार्योंमें आपके द्वारा व्यय होती है।

कुंवर लहरचन्दजी सेठिया (अगरचन्द भैरोंदान) बीकानेर

श्री मिलापचन्दजी वेद (भीखमचंद रामचंद) बीकानेर

सेठिया बिल्डिंग, बीकानेर

कुंवर जुगराजजी सेठिया (अगरचन्द भैरोंदान) बीकानेर

सेठ साहबके २ पुत्र श्रीपानमलजी एवं लहरचन्दजी अपना स्वतन्त्र व्यवसाय करते हैं। श्री लहरचन्दजीने भी एक प्रिंटिंग प्रेस संस्थाओंको दान किया है। इसके अतिरिक्त जुगराजजी एवं ज्ञानपालजी अभी शिक्षा लाभ करते हैं। इनका कारोबार श्री जेठमलजी देखते हैं।

आपकी दूकानें फिलहाल निम्न लिखित स्थानोंपर है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स अगरचन्द भैरोंदान सेठिया ओल्ड चायना बाजार नं० १८ T A. Seethiya—इस फर्मपर जापानसे रंगका व्यवसाय होता है।

(२) मेसर्स अगरचन्द भैंरोदान सेठिया २ अर्मेनियनस्ट्रीट T. A. Sethiya—यहां आपकी रंगकी दुकान है।

(३) दि सेठिया कलर एण्ड केमिकल वर्क्स लिमिटेड १२७ कदमतुल्ला-नरसिंहदत्त रोड हवड़ा—इस कारखानेमें रंग तैयार किया जाता है। भारतमें यह सबसे पहिला रंगका कारखाना है।

हम ऊपर लिख आये हैं कि सेठ साहबने पहलेही अपने पुत्रोंका सब हिस्सा अलग २ करके अत्यन्त बुद्धिमानीका परिचय दिया है। अब आपके सब पुत्र अपना अलग २ व्यवसाय करते हैं उसका विवरण इस प्रकार है।

श्रीयुत जेठमलजी

कलकत्ता—मेसर्स अगरचन्द जेठमल सेठिया, क्लाइव स्ट्रीट १७—इस फर्मपर हाउस प्रापर्टीका काम होता है।

बीकानेर—मेसर्स अगरचन्द जेठमल —इस दूकानपर बैंकिंग बिजिनेस होता है।

श्रीयुत पानमलजी सेठिया

बीकानेर—मेसर्स बी० सेठिया एण्ड सन्स,—इस दुकानपर मिसिलिनियन्स मर्चेंटाइस सब प्रकारके फैन्सी मालका व्यापार होता है। बीकानेरके सब प्रतिष्ठित रईस तथा कुँवरसाहब इसी दूकानका सामान खरीदते हैं। इसके अतिरिक्त बीकानेर गवर्नमेन्ट की लावुक्सकी एजन्सीभी इसी दुकानपर है।

श्रीयुत लहरचन्दजी सेठिया

कलकत्ता—लहरचन्द खेमराज सेठिया १०८ ओल्ड चायना बाजार स्ट्रीट, इस दुकानपर मनिहारी सामानकी कमीशन एजन्सीका वर्क होता है।

श्रीयुत जुगराजजी सेठिया

कलकत्ता—मेसर्स रूपचन्द जुगराज,२९ आर्मेनियन स्ट्रीट, इस दुकानपर कपड़ेकी कमीशन एजन्सी, और जूटकी कमीशन एजन्सीका वर्क होता है। इसमें सरदार शहरके शिवजी राम खूबचन्दका साझा है।

श्रीयुतज्ञानपालजी सेठिया

कलकत्ता—मेसर्स ज्ञानपाल सेठिया, २ नम्बर आर्मेनियन स्ट्रीट, इस फर्मपर निजके कारखानेके रंगकी बिक्री और कमीशन एजन्सीका काम होता है।

इसके अतिरिक्त कद्मतुल्ला हवड़ में जो दी सेठिया केमिकल वर्कस लिमिटेड नामक कारखाना है इसके सोल मैनेजिंग डायरेक्टर श्रीयुत जुगराजजी और ज्ञानपालजी सेठिया हैं।

मेसर्स आनन्दरूप नैनसुखदास डागा

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बीकानेर में है। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए सौवर्ष से ऊपर हो गये। इस दुकानकी विशेष तरक्की सेठ नैनसुखदास जीके हाथोंसे हुई। आपका स्वर्गवास हुए पचास वर्ष से ऊपर हो गए। उनके पश्चात् उनके पुत्र सेठ बलदेवदास जीने इस फर्मके कामको सम्भाला। आप बीकानेरमें आनरेरी मजिस्ट्रेट थे। आपके हाथोंसे इस फर्मकी बहुत उन्नति हुई। बीकानेरमें आपने अच्छा नाम कमाया। सेठ बलदेवदासजी-का स्वर्गवास संवत् १९६६में हुआ। इस समय श्रीयुत बलदेवदासजीके पुत्र श्रीयुत जयनारायणजी इस फर्मके कामको सम्हालते हैं आपके इस समय एक पुत्र हैं जिनका नाम श्रीसूर्यनारायणजी है।

आपकी इस समय नीचे लिखे स्थानोंपर दुकानें हैं:—

(१) बीकानेर—मेसर्स आनन्दरूप नैनसुखदास—यहांपर इस फर्मका हेड ऑफिस है। यहांपर हुंडी, चिट्ठी और बैंकिंगका काम होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स नैनसुखदास जयनारायण वेहरापट्टी ६ नम्बर (T. A. Belachampa) इस फर्मपर बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी, सराफी और कमीशन एजंसीका काम होता है।

(३) बम्बई— नैनसुखदास शिवनारायण, कालबादेवीरोड (T. A. Nainsukh) यहां हुंडी, चिट्ठी, बैंकिंग और कमीशन एजन्सीका काम होता है।।

(४) मद्रास—मेसर्स नैनसुखदास बलदेवदास साहुकारपैठ,यहां हुंडी,चिट्ठी और बैंकिंग विजिनेस होता है

मेसर्स उम्मेदमल गंगाबिशनजी

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत गंगाविशन जी हैं। आप श्रीयुत उम्मेदमलजीके यहां दत्तक गये हैं। इस फर्मकी स्थापना श्रीयुत उम्मेदमलजीने की, और इसको विशेष तरक्की श्रीयुत—गंगाविशनजीने दी। आप बड़े सज्जन और मिलनसार पुरुष हैं। आपकी इस समय नान्दौरा (बरार) में दुकान है। जिस पर बैंङ्किग, हुंडी, चिट्ठी, गल्ला और कमीशन एजन्सीका काम होता है।
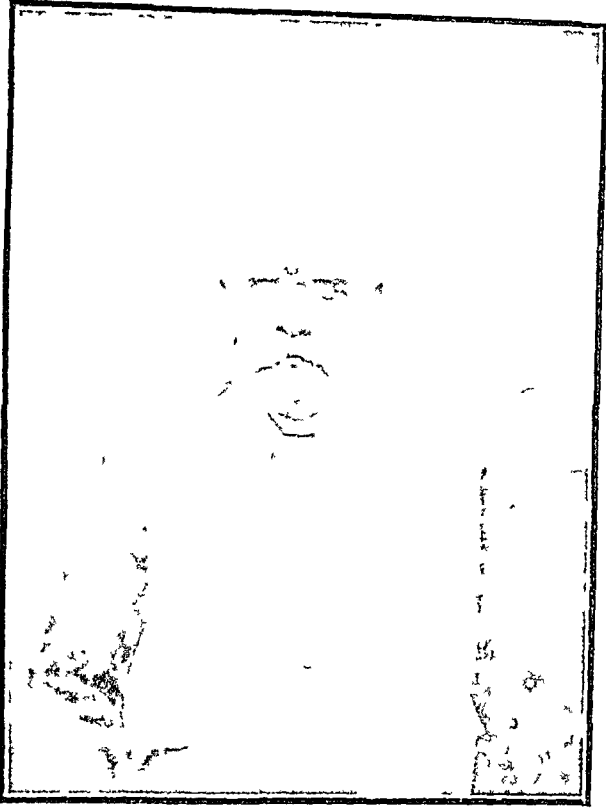
सेठ गंगाविशनजी नत्थानी (उम्मेदमल गंगाविशन)
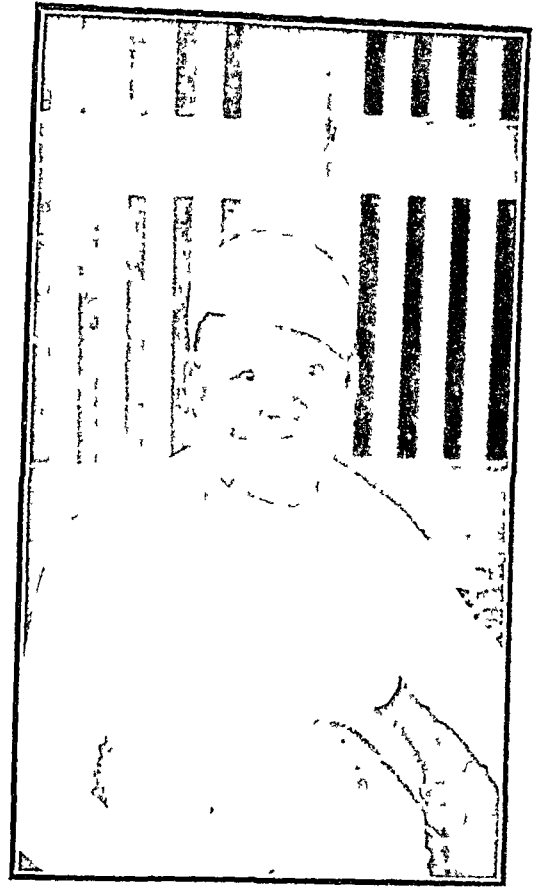
स्व०सेठ बलदेवदासजी डागा (आनंदरूप नैनसुखदास)

सेठ बालकिशनदासजी नत्थानी, बीकानेर

श्री गोवर्द्धनदासजी बागड़ी (हंसराज बालमुकुन्द) बीकानेर

मेसर्स गुनचन्द मंगलचन्द ढड्ढा

इस कुटुम्बके मालिक ओसवाल जातिके सज्जन हैं। यह फर्म यहां बहुत पुरानी हैं। बीकानेरके प्रतिष्ठित खानदानोंमें यह कुटुम्ब भी एक है। सर्व प्रथम सेठ तिलोकसीजीके समयमें इस फर्मके व्यापारको उत्साह मिला। आपके चार पुत्र थे। जिनमेंसे सेठ पदमसीजीका कुटुम्ब अजमेरमें, सेठ धरमसीजीका कुटुम्ब जयपुरमें और अमरसीजी तथा टीकमसीजीके पुत्र बीकानेरमें निवास कर रहे है। सेठ चाँदमलजी सी० आई० ई० ढड्ढा सेठ अमरसीजीके कुटुम्बमें हैं।

इस फर्मके मालिक सेठ टीकमसीजीके प्रपौत्र सेठ मंगलचंदजी हैं। आपकी ओरसे फलोदीमें एक बहुत बड़ा देवल बना हुआ है। इसके अतिरिक्त आपकी यहांपर एक धर्मशाला भी है। आपके छोटे भाई श्रीआनंदमलजीके पुत्र श्री प्रतापचंदजी आपके यहां गोदी लाये गये हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) बीकानेर—मेसर्स गुणचन्द मंगलचन्द ढड्डा—यहां हुंडी चिट्ठी तथा सराफी व्यवसाय होता है

(२) कलकत्ता—मंगलचन्द आनंदमल, ५० क्लाइव स्ट्रीट—इस दुकानपर इटलीसे मूंगा आता है। इटलीके ऑफिसके आप एजंट हैं। इसके अतिरिक्त हुंडी चिट्ठी और आढ़तका काम होता है।

मेसर्स जगन्नाथ मदनगोपाल मोहता

इस फर्मके मालिक मोहता खानदानके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना सेठ लक्ष्मीचन्द जी
मोहताके बड़े भ्राता सेठ जगन्नाथजी मोहताने की। आप बड़े सज्जन पुरुष थे। आपके हाथोंसे इस
फर्मकी विशेष उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९८३में हो गया है। वर्तमानमें इस फर्मके
मालिक सेठ जगन्नाथजीके ५ पुत्र हैं जिनके नाम श्री मदनगोपालजी, श्री राधाकृष्णजी, श्रीरामकृष्णजी,
श्री भागीरथजी और श्री श्रीगोपालजी हैं। आप सब सज्जन बड़े सम्माननीय उन्नतिशील
युगके सदस्य एवं शिक्षित पुरुष हैं। करीब ३ वर्ष पूर्व सेठ मदनगोपालजी को गवर्नमेंटने राय-
बहादुरकी पदवीसे सम्मानित किया है।

माहेश्वरी समाजमें यह कुटुम्ब बहुत अग्रगण्य और प्रतिष्ठित माना जाता है। इस कुटुम्बकी
सामाजिक एवं धार्मिक कार्योंकी ओर भी अच्छी रुचि रही है। श्रीरामकृष्णजी माहेश्वरी महासभाके
इन्दौर अधिवेशनके सभापति रहे थे। कलकत्तेमें जो माहेश्वरी भवन बना है उसमें आर्थिक सहायताके
अतिरिक्त और बहुतसा परिश्रम आपने किया है। एक तरहसे आपहीने उसमें अग्रगण्यरूपसे भाग
लिया था। वर्तमानमें आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स मदनगोपाल रामगोपाल, २८ स्ट्रांडरोड-T. A. Lal Kapra इस दुकान पर रंगीन कपड़ेका अच्छा व्यापार होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स मोहता ब्रदर्स २८स्ट्राण्डरोड T. A. Mohata यहां एक्सपार्ट और हैसियन का व्यापार होता है।

(३) कलकत्ता—आर० के० मोहता एण्ड कम्पनी, इस फर्मपर गनी ब्रोकर्स और डीलर्सका काम होता है।

(४) आशूगंज—मेसर्स जगन्नाथ मदनगोपाल—यहांपर आपकी जमीदारी हैं। इस फर्मकी ओरसे ब्राह्मण बड़िया (बङ्गाल)में एक औषधालय चल रहा है।

मेसर्स जसरूप बैजनाथ

इस फर्मके मालिकोंका पूरा परिचय कई चित्रों सहित खण्डवेमें दिया गया है। आपका खास निवास बीकानेर है। एवं यहाँ खण्डवे वाले वाहितीजीके नामसे बोले जाते हैं। सर्व प्रथम सेठ-जसरूप जी और हसरूपजी यहांसे व्यापारके निमित्त मालवेकी ओर गये थे।

मेसर्स जयकिशन गोपीकिशन

इस फर्मका विस्तृत परिचय भी कई सुन्दर चित्रों सहित खण्डवेमें दिया गया है। वहां यह फर्म बहुत बड़ी मात्रामें रूई और कपासका व्यापार करती है। आपका भी खास निवास बीकानेर है। खण्डवेमें आपकी और जसरूप बैजनाथकी मिलाकर करीब ३५-४० जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियां हैं। यह फर्म सेठ हसरूपजीके वंशजों की है।

मेसर्स नारायणदासजी मोहता

इस फर्मके मालिक खास निवासी बीकानेरके हैं। बम्बई में इस दुकानको २५ वर्ष पूर्व सेठ नारायणदासजीने तथा इनके पुत्र सेठ गिरधारीदासजीने स्थापित किया था। तथा इस दूकानके व्यापारको विशेष तरक्की सेठ गिरधारीदासजीके हाथोंसे मिली। आपका देहावसान ५ वर्ष पूर्व हो गया है। वर्तमानमें इस दूकानके सञ्चालक सेठ नारायणदासजीके शेष ३ पुत्र सेठ गोविन्द-दासजी, श्रीरिखबदासजी एवं श्रीगोपालदासजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

(१) बीकानेर—सेठ नारायणदासजी मोहता—यहां आपका हेड ऑफिस है।

श्री प्रेमचन्दजी खंजाची जौहरी, बीकानेर

श्री माणिकचन्दजी S/o प्रेमचन्दजी जौहरी, बीकानेर
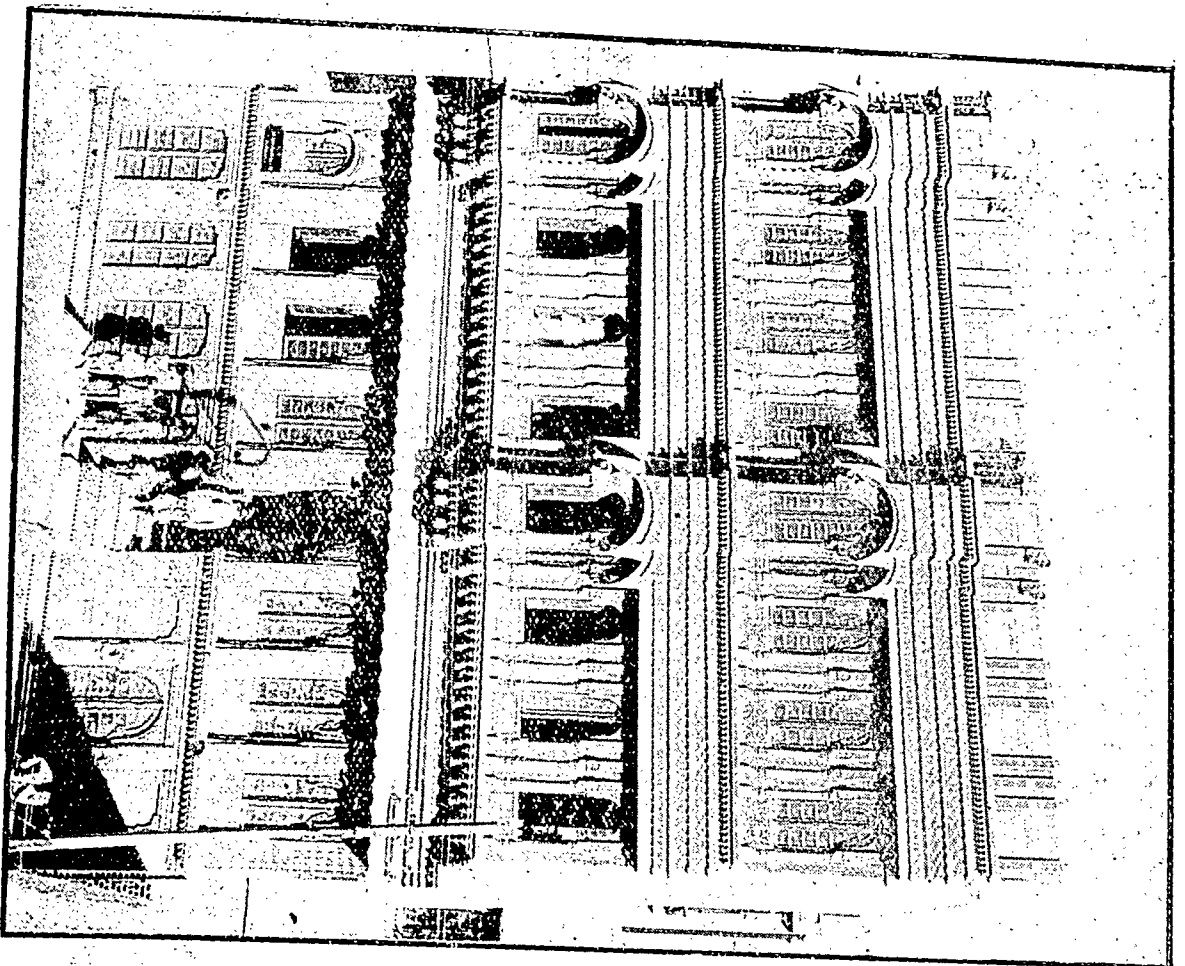
बिल्डिंग (सर बिशेसरदासजी डागा) बीकानेर

२) बम्बई—मेसर्स नारायणदास मोहता—शेखमेमनस्ट्रीट—इस फर्मपर हुंडी, चिट्ठी, आढ़त और चांदी सोनेका इम्पोर्ट बिजिनेस तथा रुई अलसी गेहूं व शेअर्स के हाजर व वायदेका काम होता है।

(३) कलकत्ता—मेसर्स नारायणदास गोविन्ददास ४०१ अपरचितपुर रोडः इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी तथा सराफी व्यापार होता है।

मेसर्स प्रेमचन्द माणिकचंद खजांची ज्वेलर्स

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत प्रेमचन्दजी खजाञ्ची हैं। आप ओसवाल श्वेताम्बर जैन जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब २५ बरस हुए। श्रीयुत प्रेमचन्दजीके पिता श्रीयुत तेजकरणजी का स्वर्गवास संवत् १९६३ में हुआ, आपके पश्चात् आपके पुत्र श्रीयुत प्रेमचन्दजी ने इस दुकानका काम सम्हाला। श्रीयुत प्रेमचन्दजीके तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमसे माणिकचन्दजी, मोतीचन्दजी और हीराचन्दजी हैं।

इस फर्मकी इस समय नीचे लिखे स्थानोंपर दुकानें हैं।

(१) बीकानेर—मेसर्स तेजकरण प्रेमचन्द जौहरी, इस दुकानपर सभी प्रकारके खुले और बन्द जवाहिरातके जेवरोंका व्यवसाय होता है।

(२) कलकत्ता ५२ गणेश भगतका कटला सूतापट्टी—मेसर्स अजितमल माणिकचन्दजी—इस दुकानपर कपड़ेका थोक व्यवसाय और कमीशन एजन्सीका काम होता है। इसमें श्रीयुत अजितमलजीका साझा है।

(३) कलकत्ता—मेसर्स प्रेमचन्द माणिकचन्द ४०१-१० बड़तल्ला स्ट्रीट—इस दुकानपर जवाहिरातका व्यवसाय होता है।

मेसर्स प्रागदास जमुनादास

आपके यहाँ सर्राफी और धातुके आयात और निर्यातका काम होता है। लगभग एक सौ वर्ष पुरानी बात है, जब आप अपने मूल निवास स्थान राजपूतानेके बीकानेर स्थानसे व्यापारोद्देश्य से युक्त प्रान्तके मिर्जापुर नगरमें आकर बसे थे। यहां आपने अल्प पूंजीसे पीतल, तांबा, कांसा आदि धातुओंका व्यापार प्रयागदास मथुरादासके नामसे करना शुरू किया था। थोड़ेही दिनोंमें आपका व्यापार यथेष्ट उन्नत हो गया और आप वहांके प्रतिष्ठित श्रीमन्तोंमें गिने जाने लगे। मिर्जापुरके बाद आजसे कोई ५४ वर्ष पूर्व आपने अपनी एक शाखा कलकत्तेमें स्थापित की, यहां भी उक्त धातुओंके क्रय-विक्रय हीका व्यापार आरम्भ किया गया।

श्रीयुत प्रागदासजी बिन्नानी के, जो इस फर्मके मूल संस्थापक थे, श्रीमथुरादासजी, श्रीगोविन्ददासजी और श्री पुरुषोत्तमदासजी इस प्रकार तीन पुत्र थे। इन्होंने योग्य होनेपर अपने यहांके उक्त व्यापारको बहुत व्यापक बनाया। सम्वत् १९६८ तक उक्त तीनों भ्राता सम्मिलित रूपमें ही अपने व्यापारका संचालन करते रहे। इसके बाद संवत् १९६९ में श्री गोविन्ददासजी बिन्नानीने कलकत्ता, बनारस और मिर्जापुरमें अपनी दुकानें स्थापित कीं। कलकत्तेमें धातु विक्रयके अलावा सर्राफीके कामका भी आरम्भ किया गया। श्रीयुक्त गोविन्ददासजी परम वैष्णव दूरदर्शी तथा एक कुशल व्यापारी थे, सर्राफीके काममें आप बहुत प्रतिष्ठित व्यापारी गिने जाने लगे थे। इसके बाद आपने गवर्नमेण्टके रेलवे बोर्डकी (धातु) मिएटल सेलिङ्गका काम बड़े जोर शोरसे किया, जो कि इस समय खूब उन्नत है। आपके दो पुत्र थे, बड़े श्रीजमुनादासजी बिन्नानी और छोटे जानकीदासजी बिन्नानी। जमुनादास निःसंतान थे और श्रीजानकीदासजीके श्रीजीवनदासजी और ग्वालदासजी बिन्नानी दो पुत्र हैं। श्रीजमुनादासजी और जानकी दासजी स्वर्गस्थ हो चुके हैं। एवं उनके पिता गोविन्ददासजीका भी गत सम्वत् १९८२ की चैत्र शुद्ध कृष्णा १० को स्वर्ग वास हो गया। अब कलकत्ता, मिर्जापुर तथा बनारसकी तीनों फर्मोंके स्वत्वाधिकारी श्रीजीवनदासजी बिन्नानी और श्रीग्वालदासजी बिन्नानी ही हैं। आपकी फ़र्म इस समय कलकत्तेके माहेश्वरी व्यपारियोंमें बड़ी प्रतिष्ठित मानी जाती है। श्रीग्वालदासजी बिन्नानी अपने पितामहके सामनेसे ही सारी फर्मोंका संचालन करते आ रहे हैं। आपने अपने कार्यमें बहुत शीघ्र तरक्की कर ली है। भारतवर्षीय डीडू माहेश्वरी महापंचायतके आप संयुक्त महामन्त्री हैं, तथा हिन्दू साहित्य प्रचारक समिति संरक्षक हैं। श्री डीडू माहेश्वरी सेवा समितिके भी आप उप प्रधान हैं। संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला और गुजरातीके आप ज्ञाता हैं। हिन्दीमें कई ग्रंथ भी आपने लिखे हैं। आपकी फर्मोंका परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स प्रयागदास जमुनादास बिन्नानी—६२ क्लाइव स्ट्रीट

(२) बनारस—मेसर्स प्रयागदास गोविन्ददास—सुडिया मोहल्ला।

मेसर्स प्रयागदास पुरुषोत्तदास बिन्नानी

इस फर्मके मालिक बीकानेरके निवासी माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। इसके वर्तमान मालिक सेठ पुरुषोत्तमदासजी तथा आपके पुत्र बाबू नरसिंहदासजी बिन्नानी हैं। आप दोनों सज्जनोंके हाथोंसे इस फर्मके व्यापारको अच्छा उत्तेजन मिला है। आपका कुटुम्ब बीकानेरके माहेश्वरी व्यापारिक समाजमें अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है। श्रीनरसिंहदासजी शिक्षित एवं समझदार सज्जन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

स्व० सेठ नारायणदासजी मोहता बीकानेर

स्व० सेठ गोविंददासजी बिन्नाणी बीकानेर

सेठ पुरुषोत्तमदासजी बिन्नाणी बीकानेर

श्रीयुत ग्वालदासजी बिन्नाणी बीकानेर

मिर्जापुर (हेड-ऑफिस) मेसर्स प्रयागदास पुरुषोत्तमदास, इस फर्मपरसोना चांदी तथा लोहा इन तीन
धातुओंको छोड़कर सब प्रकारकी धातुओंका व्यापार होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स पुरुषोत्तमदास नरसिंहदास, ४३ स्ट्रांडरोड—इस फर्मपर धातुके एक्सपोर्ट
इम्पोर्टका अच्छा व्यवसाय और आढ़तका काम होता है। इस फर्मपर गव्हर्नमेंटके तथा
रेलवेके बड़े २ आर्डर सप्लाई होते हैं। इसके अतिरिक्त आप उनकापुराना माल भी
खरीदते हैं।

मेसर्स बालकिशनदास रामकिशनदास

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ राधाकिशनजी दम्माणी और सेठ देवकिशनजी दम्माणी
हैं। आप खास निवासी बीकानेरके हैं। आप माहेश्वरी समाजके दम्माणी सज्जन हैं।

इस फर्मका पूरा परिचय चित्रों सहित बम्बईमें पेज़ २०० में दिया गया है। यह फर्म
बम्बईमें बहुत अच्छा चांदीका इम्पोर्ट बिजिनेस करती है।

मेसर्स भीखमचन्द रामचन्द्र वैद

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत मिलापचन्दजी वैद है। आप ओसवाल स्थानक वासी
सम्प्रदायके मानने वाले सज्जन हैं। आपकी फर्मका हेड ऑफिस झांसी है। वहां इस फर्मको
स्थापित हुए बहुत वर्ष व्यतीत हुए। इस फर्मकी स्थापना श्रीयुत रघुनाथदासजीने की थी।
आपके पश्चात् क्रमशः श्रीयुत भीखमचन्दजी, रामचन्द्रजी, विरदीचन्दजी और श्रीयुत गुलाबचन्दजी
हुए। आप लोगोंके हाथोंसे भी फर्मकी अच्छी उन्नति हुई। वर्तमानमें सेठ मिलापचन्दजी
इस फर्मका संचालन करते हैं। आप एक विद्याप्रेमी सज्जन हैं। सार्वजनिक कार्योंमें आप
अच्छा पार्ट लेते हैं। गत वर्ष बीकानेरमें होनेवाली स्थानकवासी कान्फ्रेन्सका सारा खर्च
आपने दिया था। झांसीमें आप ऑनरेरी मेजिस्ट्रेट हैं। पहले आप स्टेटमें आ० रिटिप्पूंग आफिसर
थे। युरोपीय महाभारतके समय आपने आपने व्ययसे ६२ सैनिकोंको रणस्थलमें भेजा था।

झांसीमें आपकी फर्मपर जमीदारी और बैंकिंग बिजिनेस होता है।

मेसर्स मूलचन्द जगन्नाथ सादानी

इस फर्मके मालिक बीकानेरके निवासी हैं। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। इस फर्मका हेड
आफिस कलकत्तेमें है। वहां इस फर्मकी स्थापना हुए करीब ६० वर्ष हुए। इस फर्मकी स्थापना सेठ

जगन्नाथजीके हाथोंसे हुई। इस समय इस फर्मका संचालन श्रीयुत आशारामजी सादानी करते हैं। आप सज्जन व्यक्ति हैं। आपके हरकचन्दजी नामक एक पुत्र हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

कलकत्ता—मेसर्स मूलचन्द जगन्नाथ खंगरापट्टी नं० १५ T. A. Harku—इस फर्मपर बैंकिंग हुंडी चिट्ठी और कपड़ेका व्यापार तथा कमीशन एजंसीका काम होता है।

कलकत्ता - मेसर्स मूलचन्द आशाराम, मनोहरदासका कटला—यहां हुंडी चिट्ठीका काम होता है। इस फर्मके जिम्मे गया जिला की तथा स्थानीय बहुतसी जमीदारीका काम भी है।

अलीगढ़—मेसर्स मूलचन्द जगन्नाथ, मदार दरवाजा T. A. sadani-यहां आपकी एक कॉटन जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है। कपास तथा आढ़तका काम भी इस फर्मपर होता है।

कलकत्ता—पाटी प्रेस-यहां आपका एक प्रिंटिंग प्रेस भी है।

मेसर्स मोतीलाल लखमीचन्द मोहता

इस फर्मके मालिक यहींके मूल निवासी हैं। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। यह फर्म बहुत पुरानी है। इसके स्थापक सेठ लखमीचंदजी थे। आपके द्वारा इस फर्मकी बहुत उन्नति हुई। आपके आठ पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः श्री० कन्हैयालालजी, श्री० मोहनलालजी, श्री० सोहनलालजी, श्री० मेघराजजी, श्री० रामचन्द्रजी (स्वर्गस्थ) श्री अगरचंदजी, श्री० गोकुलदासजी और श्री विठ्ठलदासजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स लक्ष्मीचन्द कन्हैयालाल, १६ पगिया पट्टी T. A. Durgamai-यह फर्म कई अंगरेज कम्पनियोंकी सोल एजंट है। इस फर्मपर कपड़ेके इम्पोर्टका व्यापार होता है।

बम्बई—मेसर्स लक्ष्मीचन्द कन्हैयालाल, कालबादेवी रोड T. A.-Mohata-इस फर्मपर बैंकिंग, हुण्डी-चिट्ठी तथा सराफीका काम होता है।

करांची--मेसर्स लक्ष्मीचन्द मोहनलाल, Overland यह फर्म रायली ब्रदर्सकी पीस गुडसकी ब्रोकर है। यहींपर ओव्हरलैंड मोटर कम्पनीकी सिंध, बलूची स्थान और राजपूतानाके लिये सोल एजंसी है।

करांची—मेसर्स लक्ष्मीचन्द मेघराज (T. A. Durgamai) इस फर्मपर कॉटन कमीशन एजंसीका काम होता है।

करांची---मेसर्स सोहनलाल गणेशीलाल -इस दुकानपर कपड़ेका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

स्वर्गीय सेठ लक्ष्मीचंदजी मोहता बीकानेर

श्रीयुत सेठ रामगोपालजी मोहता बीकानेर

श्रीयुत मथुरादासजी मोहता (भीखमचंद रेखचंद) हिंगनघाट
(पृ० नं० ११५)

श्री सेठ रामकृष्णजी मोहता बीकानेर

दिल्ली—मेसर्स लक्ष्मीचन्द मोहनलाल न्यू क्लाथ मार्केट (T. A. Labh)—इस फर्मपर कपड़ेका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त शादड़ामें आपकी मोहता फ़ेल्ट मेन्यूफेक्चरिंग कम्पनी हैं। इसमें टोपियोंका काम होता है।

अमृतसर—मेसर्स लक्ष्मीचन्द मोहनलाल, आलू कटरा—यहांपर बैंकिंग और कमीशन एजंसीका काम होता है।

कसूर—मेसर्स लक्ष्मीचन्द मेघराज (T. A. Mohata) इस फर्मपर कॉटन कमीशन एजंसी एवम बैंकिंग वर्क होता है।

रायविंड—(N.W.R.)-मेसर्स लक्ष्मीचन्द मेघराज इस स्थानपर आपकी एक जीनिंग फक्टरी है।

सेठ शालिगराम नत्थाणी

इस फर्मके संचालक यहींके मूल निवासी हैं। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। आपका हेड आफिस रायपुर (सी० पी०) में है। वहां इस फर्मकी स्थापना हुए करीब ६० वर्ष होगये। पहले यह फर्म शालिगराम गोपीकिशनके नामसे व्यवसाय करती थी। मगर सेठ गोपीकिशनजीके अलग होजानेसे उपरोक्त नामसे व्यवसाय होता है। वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ बालकिशनजी तथा सेठ रामकिशनजी हैं। आपके हाथोंसे इस फर्मकी अच्छी उन्नति हुई है। आप सज्जन और शिक्षित व्यक्ति हैं

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार हैं।

रायपुर—(सी० पी०) मेसर्स शालिगराम नत्थाणी (Natthani)—इस फर्मपर हुण्डी-चिट्ठी, और बैंकिंगका वर्क होता हैं। गल्ला तथा कपड़ेकी आढ़तका काम भी इस फर्मपर होता है।

रायपुर—मेसर्स रमणलाल शंकरदास—इस फर्मपर चांदी सोना सूत और व्याजका व्यापार होता हैं।

भाटापाड़ा (सी० पी०)—शालिगराम नत्थाणी (T. A. Natthani) यहां बैंकिंग तथा हुंडी चिट्ठी का बिजिनेस होता है।

नेवराबाजार (सी० पी०) शालिगराम नत्थाणी—इस फर्मपर बैंकिंग और हुंडी चिट्ठीका व्यापार होता है।

बालोदा बाजार (सी० पी०) शालिगराम नत्थाणी—यहांपर भी बैंकिंग, हुण्डी चिट्ठीका बिजिनेस होता हैं।

मेसर्स शालिगराम गोपीकिशन

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत सेठ गोपीकिशनजी हैं। आप सेठ शालिगरामजीके पुत्र हैं। आपका सक्षिप्त परिचय ऊपर दिया जाचुका है।

आपका व्यापारिक परिचय निम्न लिखित है।

रायपुर (सी० पी०) मेसर्स शालिगराम गोपीकिशन--इस दुकानपर बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी तथा कमीशन एजन्सीका काम होता हैं।

भाटापाड़ा (सी० पी०)—मेसर्स शालिगराम गोपीकिशन इस फर्मपर बैंकिंग, हुंडी चिट्ठीका व्यापार होता है।

बालोदा बाजार—मेसर्स शालिगराम--यहांगोपीकिशन जमींदारी तथा सराफीका काम होता है।

मेसर्स सदासुख गंभीरचन्द

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास बीकानेरमें है। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। कलकत्तेमें सर्व-प्रथम संवत् १८६५में सेठ सदासुख जी आए। आप यहां आरंभमें मूंगा, सोना तथा चांदीका व्यवसाय करते थे। इन व्यवसायमें सेठ सदासुखजीने बहुत अधिक सम्पत्ति मान एवं प्रतिष्टा प्राप्त की थी। आपने अपनी मौजूदगीमें ही सेठ रामचन्द्र जी तथा सेठ कस्तूरचन्दजी को गोद लिया। सेठ सदासुखजीकी व्यवसाइक चातुर्य्यके साथ २ धार्मिक कार्यों की ओर भी बहुत अधिक रुचि थी। आपने संवत् १९६१में बीकानेरमें एकसुन्दर दाऊजीका मंदिर बनवाया। कलकत्तेमें आपने बहुत अधिक स्थायी सम्पत्ति एकत्र की। कलकत्तेका मशहूर सदासुखका कटरा नामक इमारत जिसमें कपड़ेकी ४००-५०० दूकानें लगती हैं। आपही ने संवत् १९५८में बनवाया। आपने चौथे आश्रममें तीर्थ-यात्राएं इत्यादि भी खूब की। इस प्रकार पूर्ण गौरवमय जीवन विताते हुए आपका देहावसान संवत् १९६९में हुआ। आपके बड़े दत्तक पुत्र सेठ रामचन्द्रजी का भी देहावसान हो चुका है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीसेठ कस्तूरचन्दजी कोठारी एवं श्रीसेठ रामचन्द्रजीके पुत्र श्रीदाऊदयाल जी हैं। सेठ कस्तूरचन्दजी कोठारी माहेश्वरी समाजमें बहुत प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति हैं। आप वल्लभ सम्प्रदायके पक्के अनुयायी हैं। आपका कुटुम्ब हमेशा गौ और ब्राह्मणोंका पृष्ट-पोषक रहा है। आप हुकुमचन्द जूट मिल आदि कई कम्पनियोंके डायरेक्टर हैं। कलकत्तेमें आपकी स्थाई सम्पत्ति भी वहुत है। कलकत्ता और हवड़ामें आपकी करीब ५० बिल्डिंग्स और जमीन हैं। आपकी ओरसे बीकानेरमें एक दाऊदयाल औषधालय हरिद्वारमें एक धर्मशाला तथा अन्न चेत्र और मुंगेरमें

श्री० स्व० सेठ सदासुखजी कोठारी (सदासुख गम्भीरचन्द)

श्री०सेठ रामचन्द्रजी कोठारी (सदासुख गम्भीरचन्द)

श्री० सेठ कस्तूरचन्दजी कोठारी (सदासुख गम्भीरचन्द)

बाबू दाउदयालजी कोठारी (सदासुख गम्भीरचन्द)

एक अन्नक्षेत्र चल रहा है। आपने कलकत्तेके माहेश्वरी भवनमें ५००००)का दान दिया है। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम कुंवर भेरोंबक्ष जीहै। आप बड़े होनहार नवयुवक हैं।

वर्तमानमें आपके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—हेडआफिस मेसर्स सदासुख गंभीरचन्द क्रास स्ट्रीट (T. A Sadasukh jam) इस फर्म पर सोना,चांदी,लोहा कपड़ा बैंङ्किग और हुंडी चिट्ठीका बड़ा व्यापार होता है। कलकत्तेमें यह फर्म बहुत आदरणीय और प्रतिष्ठा सम्पन्न मानी जाती है।

(२) बम्बई—मेसर्स सदासुख गंभीरचंद कालबादेवी—यहांपर बैंङ्किग और हुंडी चिट्ठीका व्यापार होता है। T. A. Gambhir

(३) मद्रास—मेसर्स सदासुख गंभीरचन्द साहुकार पैठ—यहाँ भी बैंकिंग और हुण्डी चिट्ठीका व्यापार होता है।

(४) दिल्ली – मेसर्स कस्तुरचन्द दाऊदयाल T. A.Dayal—यहाँ पर बैंङ्किग और सोने चांदीका व्यवसाय होता है।

—:०:—

मेसर्स सदासुख मोतीलाल मोहता

इस फर्मके मालिक बीकानेरके प्रसिद्ध मोहता परिवारके वंशज हैं। इस फर्मके संस्थापक राव बहादुर सेठ गोवर्द्धनदासजी ओ० बी० ई० हैं। आपके पिताजीका नाम सेठ मोतीलालजी मोहता था। सेठ गोवर्द्धनदासजीके ३ बड़े भाई सेठ शिवदासजी, सेठ जगन्नाथजी, और सेठ लक्ष्मीचंदजी थे। इनमेंसे सेठ जगन्नाथजीके ५ पुत्रोंकी फर्म जगन्नाथ मदनगोपालके नामसे और लक्ष्मीचंदजीके ७ पुत्रोंकी फर्म मोतीलाल लक्ष्मीचन्दके नामसे व्यवसाय करती है। यह सारा कुटुम्ब शिक्षित है और माहेश्वरी-समाज-सुधारमें बहुत अग्रगण्य रूपसे भाग लेता है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक रायबहादुर सेठ गोवर्द्धनदासजी ओ० बी० ई०के पुत्र श्री० सेठ रामगोपालजी मोहता और रायबहादुर सेठ शिवरतनजी मोहता हैं। श्री मोहता रामगोपालजीसे हिन्दी संसार भलीप्रकार परिचित है। आप उन्नत विचारोंके दानवीर महानुभाव हैं। आपके हाथोंसे समाजकी जो दिव्य सेवाएं हुई हैं वे भारतभरमें प्रख्यात हैं।

आपने अपने छोटे भ्राता मूलचंदजीके नामसे मोहता मूलचन्द विद्यालय नामक एक विद्यालय और बोर्डिंग हाउस स्थापित कर रक्खा है। आपने अभी कुछही समय पूर्व श्री बिड़लाजी-के सहयोगसे इङ्गलैण्डमें १ मकान अच्छी लागतसे खरीदा है। जिसमें भारतीय लोगोंके ठहरनेके प्रबंधके साथ साथ आपकी उसमें एक शिव-मंदिर बनवानेकी भी स्कीम है।

मोहता मोतीलालजीके परिवारके कुछ सम्मिलित सार्वजनिक कार्योंका संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

(१) रेलवे स्टेशनपर इस परिवारकी ओरसे एक रमणीय विशाल धर्मशाला बनी है। बीकानेर जैसे शहरमें जहां पानी विकता मोल की कहावत है। कोई अजनबी आदमी पानीकी इफरातमें निवास करनेवाला यहां आवे तो उसे इस धर्मशालामें अपना घर छोड़ा हुआ नहीं दिखलाई देगा। इसके अन्दर एक औषधालय और आयुर्वेदिक पाठशाला भी है। स्टेशनपर भी आपकी ओरसे प्याऊका प्रबंध है।

(२) बीकानेर शहरमें आपका एक औषधालय स्थापित है। जिसमें आयुर्वेदिक और एलोपैथिक दोनोंप्रकारकी चिकित्साएं होती हैं।

(३) बीकानेरसे एक मीलकी दूरीपर संशोलाव तालाबपर एक विशाल मकान पब्लिकके लिए बना हुआ है।

(४) आपकी ओरसे एक अनाथालय खुला हुआ है। जिसमें बहुतसे अनाथोंको मासिक सहायता दी जाती है।

(५) श्री कोलायतजी नामक तीर्थ स्थानपर आपकी ओरसे श्री गंगामाईका मंदिर और धर्मशाला बनी हुई है।

इसीप्रकारके अनेक धार्मिक कार्योंमें इस कुटुम्बने बहुत उदारतापूर्वक दान दिये हैं।

व्यापारिक दृष्टिसे यह फर्म बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है। करांचीमें गोवर्द्धनदास मार्केट नामक आपका एक सबसे बड़ा कपड़ेका मार्केट बना हुआ है। आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) करांची—मेसर्स सदासुख मोतीलाल मोहता T. A. marketwala—इस फर्मपर कपड़का बहुत बड़ा व्यापार होता है। करांचीमें आपकी बहुतसी जमीदारी है। यहां आपका एक लोहेका कारखाना भी है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स मदनगोपाल रामगोपाल मोहता २८ स्ट्रांडरोड T. A. mohta—यहां आपके भाइयोंके साझेमें कपड़ेका व्यवसाय होता है।

(३) देहली—गोद्धर्वनदास रामगोपाल मोहता—यहां भी कपड़ेका व्यवसाय होता है।

इसके अतिरिक्त झरियामें आपकी कोयलेकी खान भी है।

मेसर्स हजारीमल हीरालाल रामपुरिया

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत हीरालालजी, श्रीयुत शिखरचंदजी, नथमलजी तथा श्रीयुत भंवरलालजी हैं। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं।

इस फर्मके पूर्व पुरुष सेठ जोरावरमलजी बहुतही साधारण स्थितिके पुरुष थे। आपके पुत्र श्रीयुत बहादुरमलजी केवल १३ वर्षकी अवस्थामें कलकत्ता गये और वहां चैनरूप सम्पतरामके

श्री० सेठ बहादरमलजी रामपुरिया, बीकानेर

स्व० सेठ जसकरणजी रामपुरिया, बीकानेर

श्रीयुत भंवरलालजी रामपुरिया, बीकानेर

यहां ८) मासिकपर गुमास्ता-गिरी की। ७वर्षके पश्चात् आप अपनी कार्य कुशलतासे इस फर्मके मुनीम होगये। सन् १८८३में आपने अपने भाइयोंको उपरोक्त नामसे कपड़ेकी दूकान करवादी एक सालके पश्चात् आप भी नौकरी छोड़कर इस फर्ममें शरीक होगये। धीरे २ इस दूकानकी उन्नति होती गई और संचालकोंकी बुद्धिमानी और कार्य-कुशलतासे यह फर्म दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति करने लगी। यहांतक कि यह खानदान आजकल बीकानेरके धनकुबेरोंमें गिना जाता है। कलकत्तेके कपड़ेके इम्पोर्टरोंमें भी इस फर्मका बहुत उँचा नम्बर है।

इस प्रकार इस फर्मका इतिहास एक स्वावलम्बनका इतिहास है। जिसमें संचालकोंकी बुद्धिमानी, कार्य-कुशलता और व्यापार निपुणताका पूरा २ परिचय मिलता है।

इस फर्मकी उन्नतिमें श्रीयुत जसकरणजीका सबसे बड़ा हाथ रहा है। उन्होंने इस फर्मकी लन्दन और मैनचेस्टरमें शाखाएं खोली थीं। इन शाखाओंपर आपने हिन्दुस्थानी कार्यकर्त्ता रक्खे थे। इन शाखाओंकी वजहसे इस फर्म की खूब तरक्की हुई। श्रीयुत जसकरणजीका देहावसान सन् १९२० में हो गया। चूंकि यही इन शाखाओंकी देखरेख रखते थे इसलिये इनके एक वर्ष पश्चात् ही ये शाखाएं टूट गई।

इस समय आपके पुत्र श्रीयुत भंवरलालजी हैं। आपका जन्म सं० १९६५ में हुआ। आप सज्जन, और उदार प्रकृतिके नवयुवक हैं।

श्रीयुत सेठ बहादुरमलजी तीव्र मेधावी सज्जन थे। आपकी ज्ञानशक्ति, बुद्धिमत्ता और निपुणताको देखकर कई अंग्रेज आश्चर्य चकित होगये। आपके विषयमें बंगाल, बिहार और उड़ीसाके इनसाईकलो पिडियामें लिखा है। He is one of the fine products of the business world having imbibed sound business instinsts compled with courtesy to strangers and religious faith in jainism.

श्रीयुत बहादुरमलजीकी दानधर्मकी ओर भी अच्छी रुची थी। आप विशेषकर गुप्त-दान किया करते थे। आपकी ओरसे बीकानेरमें अस्पतालके सामने एक धर्मशाला बनी हुई है। इसमें रोगियोंके ठहरनेका अच्छा इन्तिज़ाम है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स हजारीमल हीरालाल रामपुरिया १४८ क्रॉस स्ट्रीट—तारका पता Hazana इस फर्मपर धोती जोड़े और शर्टिंग विलायत और जापानसे इम्पोर्ट होता है। इसके अतिरिक्त आसाममें भी आपकी एक शाखा है। वहां जूट तथा हैसियनका काम होता है।

मेसर्स हंसराज बालमुकुन्द

इस फर्मके मालिक यहींके निवासी हैं। इस फर्मको सेठ हंसराजजीने स्थापित किया। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ बालमुकुन्दजीके हाथोंसे इसकी विशेष तरक्की हुई। वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ गोवर्धनदासजी एवं सेठ जानकीदासजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बीकानेर—मेसर्स हंसराज बालमुकुन्द—यहां हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

मद्रास—मेसर्स बालमुकुन्द जानकीदास, साहुकार पेठके पास—प्री नाई क्रीन स्ट्रीट नं० १४–यहां सराफी तथा हुंडी चिट्ठी और ब्याजका काम होता हैं।

मेसर्स श्रीकृष्णदास बालकिशनदास

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ मदनगोपालजी दम्माणी हैं। आप माहेश्वरी जातिके दम्माणी सज्जन हैं। इस फर्मका हेड ऑफिस बीकानेरमें है। यहां हुंडी चिट्ठी और सराफीका काम होता है। इस फर्मका पूरा परिचय बम्बई-विभागके पृष्ठ २०० में दिया गया है। बीकानेरका तारका पता—Dammani है।

मेसर्स श्रीराम प्रयागदास

इस फर्मके मालिक यहींके निवासी हैं। आप पुष्करना ब्राह्मण जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए ७५ वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ श्रीरामजी तथा प्रयागदासजी हैं। आपके पश्चात् सेठ मदनगोपालजी हुए। आपने इस फर्मको विशेष उत्तेजन दिया। वर्तमानमें आपके पुत्र श्रीयुत कृष्णगोपालजी, चम्पालालजी, शिवकिशनदासजी इस फर्मका संचालन करते हैं। आप सब सज्जन व्यक्ति हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बीकानेर मेसर्स श्रीराम प्रयागदास—इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी, चांदी सोना तथा कपड़ का व्यवसाय होता है।

कलकत्ता—सेठ मदनगोपाल आचार्य नं० ८५ मनोहरदास स्ट्रीट—इस फर्मपर कपड़े तथा चांदी सोनेका विलायतसे इम्पोर्ट होता हैं।

कलकत्ता—मेसर्स प्रयागदास मदनगोपाल, नं० ८५ मनोहरदास स्ट्रीट—इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी तथा कमीशन एजंसीका काम होता है। T. A. Pokharpotha. । इस फर्मकी ओरसे यहां "श्रीराम विद्यालय" नामक एक विद्यालय स्थापित है।

श्री० सेठ भैरोंदानजी चौपड़ा, गंगाशहर

हवेली, (भैरोंदानजी चौपड़ा), गंगाशहर

गंगाशहर

मेसर्स भैंरूदान ईसरचन्द चौपड़ा

इस फर्मके मालिक गंगाशहर (बीकानेर) के निवासी हैं। कलकत्तेकी मशहूर फर्म मेसर्स हरिसिंह निहालचन्द (मुर्शिदाबाद निवासी) जिसको स्थापित हुए करीब १०० वर्ष हुए, उसमें आपका करीब २२ वर्षसे साझा है। इस फर्मकी विशेष उन्नति श्री० सेठ भैंरुदानजीके हाथसे हुई। आप योग्य और व्यापार दक्ष पुरुष हैं।

आपने हालहीमें बनारसके हिन्दू विश्व विद्यालयको १०००० प्रदान किया है। सी० आर० दासके स्मारक फंडमें भी आपने महात्मा गांधीजीको १००००) दिये हैं। इसी प्रकार और भी दानधर्म आपकी ओरसे होता रहता है।

श्री० भैंरुदानजी उन व्यक्तियोंमेंसे हैं जिन्होंने अपने ही हाथोंसे लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति उपार्जन की है। केवल २२ वर्षमें ही आपने आशातीत उन्नति की है। आप तेरापंथी ओसवाल सज्जन हैं। आप छः भाई हैं। जिनके नाम क्रमशः श्री० सेठ भैंरुदानजी, सेठ ईसरचन्दजी, सेठ तेजमलजी, सेठ पूनमचन्दजी, सेठ हेमराजजी और सेठ चुन्नीलालजी हैं।

श्री० सेठ भैंरुदानजीके ४ पुत्र, सेठ ईसरचन्दजीके १ पुत्र, सेठ तेजमलजीके ५ पुत्र, सेठ पूनमचन्दजीके २ पुत्र, सेठ हेमराजजीके १ पुत्र और सेठ चुन्नीलालजीके २ पुत्र हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स हरिसिंह निहालचन्द नं० १ पोर्तगीज़ चर्च स्ट्रीट T. A. Singhi—इस फर्मपर जूट बेलसका बहुत बड़ा बिजिनेस होता है। इस फर्ममें आपका साझा है। इस फर्मकी सिराजगञ्ज, सिरसावाड़ी, अजीमगञ्ज, फारबसगञ्ज, कस्बा आदि स्थानोंपर शाखाएं हैं।

कलकत्ता—मेसर्स आसकरण लूणकरण नं० १६ सोनागोगा स्ट्रीट—इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी बैंकिंग तथा जूटकी कमीशन एजंसीका काम होता है।

शिवपोल (भागलपुर)—मेसर्स आसकरण लूणकरण—इस फर्मपर जूटकी खरीदी तथा कपड़ेकी बिक्रीका काम होता है।

कुकरन (पूर्णिया)—इस फर्मपर कपड़ा, जूट तथा गल्लेका व्यापार होता है ।

रंगून (पूर्णिया)—मेसर्स दीपचन्द धनराज—यहां कपड़ा, पाट और घृतका व्यापार होता है ।

भडंगामारी (रंगपुर)—मेसर्स भैंरुदान ईसरचन्द चौपड़ा—इस स्थानपर जूटका व्यापार होता है ।

भिनासर

मेसस मौजीराम पन्नालाल बांठिया

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान भिनासर (बीकानेर) में है । आप ओसवाल जातिके स्थानकवासी जैन सम्प्रदायके सज्जन हैं । कलकत्तेमें इस फर्मकी स्थापना हुए करीब ८० वर्ष हुए । इसकी स्थापना श्रीयुत सेठ मौजीरामजीने की । आपका स्वर्गवास संवत १९४१ में हुआ । आपके पश्चात् आपके पौत्र श्री हमीरमलजीने इस फर्मके कामको सम्हाला । आपके हाथोंसे इस फर्मकी अच्छी उन्नति हुई । आप बड़े बुद्धिमान, और व्यापार दक्ष पुरुष हैं । आपका जन्म सम्वत् १९१९ में हुआ ।

आपके इस समय तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमसे श्रीयुत कनीरामजी, श्रीयुत सोहनलालजी, और श्रीयुत चम्पालालजी हैं । इनमेंसे श्रीयुत कनीरामजी श्रीयुत हमीरमलजीके बड़े भाई श्रीयुत सालमचन्दजीको दत्तक दिये गये हैं, आप तीनों ही भाई बड़े उदार सज्जन और विशाल चित्तके पुरुष हैं । बीकानेरमें आपकी उदारता बड़ी प्रसिद्ध है ।

आपने साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्थामें १९१११) का दान दिया है । इसके अतिरिक्त मौजीराम पन्नालाल और प्रेमराज हजारीमल इन दोनों फर्मोंकी तरफसे व्यवहारिक स्कूलकी बिल्डिङ्ग प्रदान की गई है । इन्हीं दोनों फर्मोंकी विशेष सहायतासे श्रीगंगाशहरसे भिनासर तक पक्की सड़क बनी हुई है । इसके अतिरिक्त भिनासर पींजरापोलमें भी आपकी ओरसे अच्छी सहायता दी गई है ।

कलकत्ता—मेसर्स मौजीराम पन्नालाल, ४५ आर्मेनियन स्ट्रीट T. A. Rathayatra—इस फर्मपर छत्रियोंकी एक फैक्टरी है । तथा विलायतसे भी छत्रियोंका इम्पोर्ट होता है इसके अतिरिक्त बैंकिंग, हुण्डी चिट्ठी और कमीशन एजन्सीका काम होता है ।

इसके अतिरिक्त आपकी और भी कई स्थानोंपर ब्रान्चेस हैं ।

—०:०—

श्रीयुत कनीरामजी बांठिया (मौजीराम पन्नालाल)
भिनासर
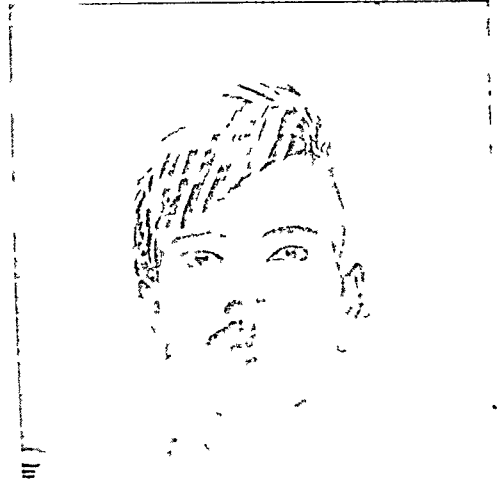
श्रीयुत बहादुरमलजी बांठिया (प्रेमराज हजारीमल)
भिनासर

श्रीयुत सोहनलालजी बांठिया (मौजीराम पन्नालाल)
भिनासर
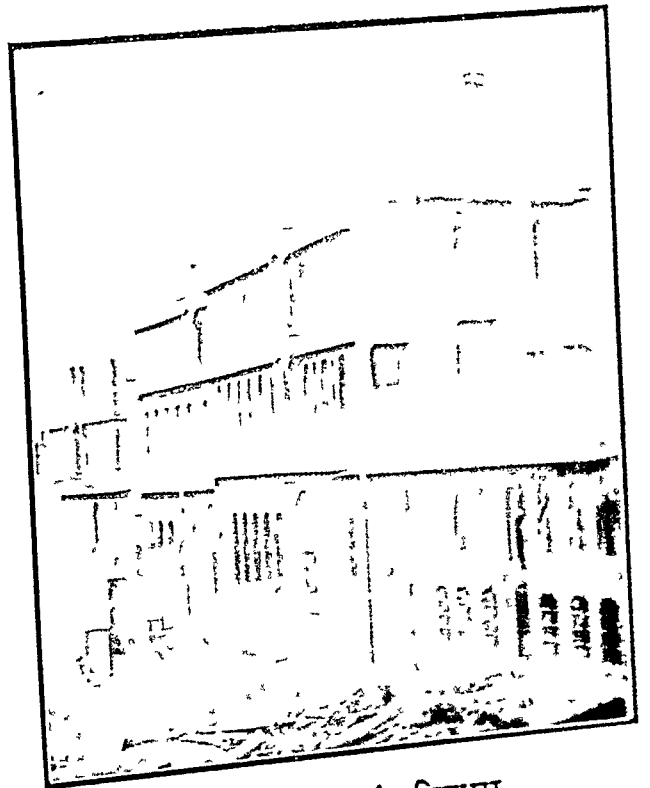
बाँठिया बिल्डिंग भिनासर

मेसर्स प्रेमराज हजारीमल

हम ऊपर जिन मौजीरामजीका परिचय दे आये हैं उनके एक छोटे भाई थे जिनका नाम श्री० प्रेमराजजी बांठिया था। आपहीने इस फर्मकी स्थापना की। आपके पश्चात् आपके पुत्र श्री हजारी मलजी हुए। आपके हाथोंसे इस दुकानकी अच्छी तरक्की हुई। हजारीमलजीका स्वर्गवास संवत् १९६९ में हुआ। इनके श्री रिखबचन्दजी दत्तक लिये गये थे। आपका स्वर्गवास आपके पहले संवत १९६३ में ही हो गया था।

इस समय श्री सेठ रिखबदासजीके पुत्र श्रीयुत बहादुरमलजी इस दूकानके कामका सञ्चालन करते हैं। आप बड़े योग्य विवेकशील और सज्जन पुरुष हैं।

इस खानदानकी दान-धर्म और सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर बड़ी रुचि रही है। श्रीहजारीमलजीने अपने जीवन कालहीमें एक लाख इकतालीस हजार रुपयेका दान किया था जिससे इस समय कई संस्थाओंको सहायता मिल रही है। आपकी तरफसे भिनासरमें एक जैन श्वेतांबर औषधालय भी चल रहा है। इसके अतिरिक्त यहांकी पिञ्जरापोलकी बिल्डिंग भी आपहीके द्वारा प्रदान की गई है। आपने १९१११) साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्थामें दिया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स प्रेमराज हजारीमल, आर्मेनियन स्ट्रीट नं० ४ तारका पता-Chatta stick इस दूकानपर छत्रियोंकी फेक्टरी है तथा छत्रियोंका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त बैंकिंग और हुण्डी, चिट्ठीका काम भी होता है।

बैंकर्स

मेसर्स अगरचन्द भैरोंदान सेठिया
„ अनंदरूप नैनसुखदास डागा
„ उदयमल चांदमल ढढ्ढा
„ गोवर्द्धनदास रामगोपाल मोहता
„ गुनचंद मंगलचन्द डड्ढा
„ जगन्नाथ मदनगोपाल मोहता
„ जगन्नाथ मूलचन्द सादानी
„ नारायणदास जी मोहता
मेसर्स प्रेमसुख पूनमचन्द कोठारी
„ प्रयागदास जमनादास बिन्नाणी
„ बंशीलाल अबीरचन्द रायबहादुर
„ बालकिशनदास श्रीकृष्णदास दम्माणी
„ बालकिशनदास रामकिशनदास दम्माणी
„ भीखमचंद रेखचंद मोहता
„ रामकिशनदास रामरतदास बागड़ी
„ राधावल्लभदासजी दम्मानी
„ रामरतन बृजरतन दम्माणी

नोट—उपरोक्त व्यापारियोंमेंसे सभी व्यापारियोंकी दूकानें भारतके बड़े २ शहरोंमें हैं। कई व्यापारियोंकी यहाँ फर्म भी नहीं हैं। केवल उनकी भव्य हवेलियाँ यहां बनी हैं। पर इस स्थानके प्रसिद्ध व्यवसायीके नाते उनके पते यहां दिए गये हैं।

मेसर्स लखमीचन्द कन्हैयालाल मोहता
„ लाभचन्द आनंदमल श्रीमाल
„ शिवदास गिरधरदास बिन्नाणी
„ सदासुख गंभीरचन्द
„ हजारीमल हीरालाल रामपुरिया
„ हरसुखदास बालकिशनदास डागा
„ हंसराज बालमुकुंद बागड़ी

चांदी सोनेके व्यापारी

ईसरदास रामचन्द्र
काशीराम गणेशदास तेलीवाड़ा
रामनारायण मथुरादास
सूरजमल खजांची कपड़ा बाजार
श्रीराम प्रयागदास कपड़ेका बाजार

ज्वेलर्स

प्रेमचंद माणिकचंद जौहरी

कपड़ेके व्यापारी

केवलचन्द मानमल सांड़
गंभीरचन्द भैय्या कपड़ा बाजार
गोकुलदास गोपालदास „
प्रसन्नकुमार कोचर कटला
फतेचन्द आसकरण „
मानमल केशरीचन्द
मुन्नीलाल सुरोहिया „
मंगलचन्द टीकमचन्द बादानी
शिवरतन शंकरलाल मूंज कटला
श्रीराम प्रयागदास

किरानेके व्यापारी

कोडूमल अमरचन्द कसारी बाजार
जमनादास जानकीदास
तेजकरण समीरमल
पन्नालाल हजारीमल
रामरतन गोपीकिशन
मोमन अब्दुल्ला यूसुफ
महेशदास रतनलाल
शिवदयाल मूलचन्द

गल्लेके व्यापारी और आढ़तिया

कृपाराम रामप्रताप मंडीके पास „
डूंगरदास आसाराम „
भैरोंदान अगरचंद सोनावत मंडीके पास
मिर्जामल राधाकिशन „
मिर्जामल हंसराज „
सुगनचंद हजारीमल „
हरदयालमल सोहनलाल „

सूखे सागके व्यापारी

विद्याधर मोदी
शिवदयाल मूलचंद

लोहेके व्यापारी

गंगादास कोठारी
बालूराम सुतार घी बाजार
मुन्नीलालवैद घी बाजार
रहींमबख्श गुलामरहीमबख्श

मारबल टाइल्स मर्चेण्ट्स

दी बीकानेर स्टोअर सप्लाई एण्ड को०

फोटोग्राफर्स एण्ड आर्टिस्ट

के० एल० एण्ड संस
आर० के० ब्रदर्स किंग एडवर्ड मेमोरियल रोड
सूरज बख्श फोटोग्राफर

ऊनके व्यापारी

गोवर्द्धन दास चुन्नीलाल वेदोंकाचौक
चतुर्भुज शिवरतन मोहतोंकाचौक
हरदास मानीदास दम्मानीकाचौक,
क्षेमचंद मानमल दम्मानीकाचौक

घीके व्यापारी

कपूरचंद मदनगोपाल घी बाजार
कुंदनमल सुगनचंद घी बाजार
मगनमल हरस घी बाजार
राधाकिशन कन्हैयालाल
रामरतनदास रामधनदास

जनरल मरचेंट्स

बी० सेठिया एण्डसन्स
दी जनरल इलैक्ट्रिक कम्पनी
हरकचंदएण्डसन्स

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

बी० सेठिया एण्डसन्स
हरकचन्द एण्डसंस

आर्म्स गुड्ससप्लायर

शेर महम्मद एण्ड ब्रदर्स

मिश्रीके व्यापारी

रामनारायण बालमुकुन्द (विदेशी)
सूरतमल लखमीचन्द (देशी)

खद्दा (बीकानेरी)

रावतमल बरड़िया

परफ्यूमस एण्ड अत्तार

बी० सेठिया एण्डसंस
बिहारीलाल गंधी
लक्ष्मीनारायण गंधी

डेण्टिस्ट एण्ड आप्टीकल्स

बी० सेठिया एण्ड संस किंग एडवर्ड-मेमोरियल रोड

हरस्वरूप एण्ड कम्पनी वेदोंका चौक

वैद्य डाक्टर एण्ड फार्मसी

पं० गोकुलचंदजी त्रिपाठी
पं० जीवनरामजी हरसा
स्वामीजी शिवजी पुरी
स्वामी श्री श्रीरामदासजी
भेरोंदानजी आसोपा
मेघराज शर्मा
रामलालजी जती

साइकल मर्चेंट्स

गेलौत ब्रदर्स स्टेशन रोड
बी० सेठिया एण्ड संस
बीकानेर साइकल कम्पनी कोटगेट

लायब्रेरीज्

गुणप्रकाशक सज्जनालय
श्री नागरी भण्डार
सेठिया जैन पुस्तकालय

पब्लिक संस्थाएं

दाऊदयाल औषधालय
श्वेताम्बर सा० मा० सभा
ओसवाल नवयुवक समिति
मोहता आयुर्वेदिक औषधालय
महावीर जैन मण्डल
स्कूल ऑफ आचार्य
सेठिया जैन विद्यालय
सेठिया जैन श्राविकाश्रम
सेठिया जैन बोर्डिंग हाउस
सेठिया जैन स्कूल

मेसर्स लखमीचन्द कन्हैयालाल मोहता
„ लाभचन्द आनंदमल श्रीमाल
„ शिवदास गिरधरदास बिन्नाणी
„ सदासुख गंभीरचन्द
„ हजारीमल हीरालाल रामपुरिया
„ हरसुखदास बालकिशनदास डागा
„ हंसराज बालमुकुंद बागड़ी

चांदी सोनेके व्यापारी

ईसरदास रामचन्द्र
काशीराम गणेशदास तेलीवाड़ा
रामनारायण मथुरादास
सूरजमल खजांची कपड़ा बाजार
श्रीराम प्रयागदास कपड़ेका बाजार

ज्वेलर्स

प्रेमचंद माणिकचंद जौहरी

कपड़ेके व्यापारी

केवलचन्द मानमल सांड
गंभीरचन्द भैय्या कपड़ा बाजार
गोकुलदास गोपालदास „
प्रसन्नकुमार कोचर कटला
फतेचन्द आसकरण „
मानमल केशरीचन्द
मुन्नीलाल सुरोहिया „
मंगलचन्द टीकमचन्द बादानी
शिवरतन शंकरलाल मूज कटला
श्रीराम प्रयागदास

किरानेके व्यापारी

कोडूमल अमरचन्द कसारी बाजार
जमनादास जानकीदास
तेजकरण समीरमल
पन्नालाल हजारीमल
रामरतन गोपीकिशन
मोमन अब्दुल्ला यूसुफ
महेशदास रतनलाल
शिवदयाल मूलचन्द

गल्लेके व्यापारी और आढ़तिया

कृपाराम रामप्रताप मंडीके पास „
डूंगरदास आसाराम „
भैरोंदान अगरचंद सोनावत मंडीके पास
मिर्जामल राधाकिशन „
मिर्जामल हंसराज „
सुगनचंद हजारीमल „
हरदयालमल सोहनलाल „

सूखे सागके व्यापारी

विद्याधर मोदी
शिवदयाल मूलचंद

लोहेके व्यापारी

गंगादास कोठारी
बालूराम सुतार घी बाजार
मुन्नीलालवेद घी बाजार
रहीमबख्श गुलामरहीमबख्श

मारबल टाइल्स मर्चेण्ट्स

दी बीकानेर स्टोअर सप्लाई एण्ड को०

फोटोग्राफर्स एण्ड आर्टिस्ट

के० एल० एण्ड संस
आर० के० ब्रदर्स किंग एडवर्ड मेमोरियल रोड
सूरज बख्श फोटोग्राफर

ऊनके व्यापारी

गोवर्द्धन दास चुन्नीलाल वेदोंकाचौक
चतुर्भुज शिवरतन मोहतोंकाचौक
हरदास मानीदास दम्मानीकाचौक,
क्षेमचंद मानमल दम्मानीकाचौक

घीके व्यापारी

कपूरचंद मदनगोपाल घी बाजार
कुंदनमल सुगनचंद घी बाजार
मगनमल हरस घी बाजार
राधाकिशन कन्हैयालाल
रामरतनदास रामधनदास

जनरल मरचेंट्स

वी० सेठिया एण्डसन्स
दी जनरल इलैक्ट्रिक कम्पनी
हरकचंदएण्डसन्स

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

वी० सेठिया एण्डसन्स
हरकचन्द एण्डसंस

आर्म्स गुड्ससप्लायर

शेर महम्मद एण्ड ब्रदर्स

मिश्रीके व्यापारी

रामनारायण बालमुकुन्द (विदेशी)
सूरतमल लखमीचन्द (देशी)

खद्दा (बीकानेरी)

रावतमल बरड़िया

परफ्यूमस एण्ड अत्तार

वी० सेठिया एण्डसंस
बिहारीलाल गंधी
लक्ष्मीनारायण गंधी

डेण्टिस्ट एण्ड आप्टीकल्स

बी० सेठिया एण्ड संस किंग एडवर्ड-मेमोरियल रोड
हरस्वरूप एण्ड कम्पनी वेदोंका चौक

वैद्य डाक्टर एण्ड फार्मसी

पं० गोकुलचंदजी त्रिपाठी
पं० जीवनरामजी हरसा
स्वामीजी शिवजी पुरी
स्वामी श्री श्रीरामदासजी
भेरोंदानजी आसोपा
मेघराज शर्मा
रामलालजी जती

साइकल मर्चेंट्स

गेलौत ब्रदर्स स्टेशन रोड
बी० सेठिया एण्ड संस
बीकानेर साइकल कम्पनी कोटगेट

लायब्रेरीज्

गुणप्रकाशक सज्जनालय
श्री नागरी भण्डार
सेठिया जैन पुस्तकालय

पब्लिक संस्थाएं

दाऊदयाल औषधालय
श्वेताम्बर सा० मा० सभा
ओसवाल नवयुवक समिति
मोहता आयुर्वेदिक औषधालय
महावीर जैन मण्डल
स्कूल ऑफ आचार्य
सेठिया जैन विद्यालय
सेठिया जैन श्राविकाश्रम
सेठिया जैन बोर्डिंग हाउस
सेठिया जैन स्कूल

सुजानगढ़

यह शहर बीकानेर स्टेटकी एक रमणीक बस्ती है। यहाँ कई श्रीमंतोंकी दर्शनीय हवेलियां बनी हैं। बीकानेर स्टेट रेलवेकी सुजानगढ़ स्टेशनसे करीब आधा मीलकी दूरीपर यह शहर बसा है। यहाँके कुए बीकानेरसे कम गहरे होते हैं। यहाँ चारों ओर निरा बालू ही बालूका मैदान दृष्टिगोचर होता है। सुजानगढ़ डिस्ट्रिक्टकी बड़ी २ कोर्टें वगैरह यहां होनेसे यहां लोगोंकी आमद रफ्त विशेष रहती है। यहांकी पैदावारीमें मोठ, बाजरी प्रधान है। दूसरा गल्ला तथा सभी प्रकारके आवश्यक समान यहां बाहरसे आते हैं। यहाँ ऊनका व्यापार भी साधारणतया ठीक होता है। यहाँ करीब १० हजार मन ऊन आ जाती है। यह ऊन बड़ी मुलायम और बढ़िया होती है।

सुजानगढ़ स्टेशनपर गाड़ोदियोंकी परम रमणीक धर्मशाला बनी हुई है। यहाँ मुसाफिरोंको सब प्रकारकी अच्छी सुविधाएं हैं। यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार हैं।

मेसर्स गेवरचंद दानचंद चोपड़ा

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास डीडवाणा है। आपको यहां आये करीब ८ वर्ष हुए। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ दानचन्दजी चोपड़ा हैं। इस फर्मकी विशेष तरक्की सेठ दानचन्दजीके पिता सेठ गेवरचन्दजीने की। सर्व प्रथम आप संवत १९३५ में ग्वालंदोंमें मामूली व्यापार करते थे। आपको सट्टे आदिसे सख्त घृणा थी। संवत १९६३ में आपने कलकत्तेमें एक दूकान की। तथा जूटके व्यवसायमें बहुत अच्छी सम्पत्ति मान और प्रतिष्ठा पैदा की। आपका देहावसान संवत १९८१ में हुआ है। वर्तमानमें सेठ दानचन्दजी ही सारे कारबारको सम्हालते हैं। आपके २ पुत्र हैं जिनके नाम श्रीविजयसिंहजी और श्रीफतेचन्दजी हैं। सुजानगढ़में करीब १॥ लाख रुपयोंकी लागतकी आपकी एक नई शानदार इमारत बनी है। सेठ दानचन्दजी ओसवाल समाजमें अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स गेवरचन्द दानचन्द चोपड़ा, नं० २ राजा उडमंड स्ट्रीट – इस फर्मपर बैङ्किंग, हुण्डी चिट्ठी तथा जूटका घरू और आढ़तका व्यापार होता है। T. A. Gentleman

स्व० सेठ गेवरचन्द जी चोपड़ा, सुजानगढ़

श्री सेठ बालचन्दजी वेगांणी (छोगमल वालचन्द) सुजानगढ़

[illegible] जी चोपड़ा (गेवरचन्द दानचंद) सुजानगढ़

श्रीसेठ रामचंद्रजी मालानी (रामचंद्र सुजानमल) सुजानगढ़

(२) ग्वालंदो (फरीदपुर) मेसर्स गेवरचन्द दानचन्द—इस फर्मपर भी जूट (कुष्टा) का घरू और आढ़तसे व्यवसाय होता है ।

(३) सैदपुर-(रंगपुर) मेसर्स गेवरचन्द दानचन्द चोपड़ा—इस फर्मपर बैङ्किग, हुण्डी चिट्ठी और जूटका घरू और आढ़तका कारबार होता है ।

(४) बोगड़ा (बंगाल) गेवरचन्द दानचन्द चोपड़ा—इस फर्मपर हुण्डी चिट्ठी तथा जूटकी आढ़तियोंके लिये और घरू खरीदीका काम होता है ।

सेठ दानचन्दजी थली धड़ेके ओसवाल समाजमें अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आप बड़े मिलनसार हैं। डीडवानामें भी आपके मकान वगैरा बने हुए हैं।

मेसर्स चुन्नीलाल हजारीमल रामपुरिया

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बीकानेर हैं। आपकी फर्मको यहाँ आये करीब १०० वर्ष हुए। सर्वप्रथम सेठ आलमचन्दजी यहाँ आये थे। आप बीकानेरमें राज्यकार्य करते थे। आपके चार पुत्र थे, जिनके नाम बरदीचन्दजी, गणेशदासजी चुन्नीलालजी और चौथमलजी था। चारों भाइयोंने मिलकर संवत १९१३ में कलकत्तेमें चुन्नीलाल चौथमलके नामसे व्यापार आरंभ किया, इन चारों भाइयोंमें सेठ चुन्नीलालजीके हाथोंसे इस फर्मके व्यापारको अच्छी तरक्की मिली। आप वहुत कर्मशील पुरुष थे। आपका देहावसान सं० १९५० में हुआ। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ हजारीमलजी वर्तमानमें इस फर्मके व्यवसायको संभाल रहे हैं। आपके समयसे ही इस फर्मपर चुन्नीलाल हजारीमलके नामसे व्यापार होता है। आपके छोटे भाई श्री हमीरमलजीका देहावसान संवत १९५७ में हो गया हैं।

सेठ हजारीमलजी यहांकी म्युनिसिपैलिटीके मेम्बर हैं। आप यहाँके अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते हैं। सुजानगढ़में आपने कई अच्छे सुन्दर मकानात बनवाये है। बीकानेरमें भी आपकी हवेली वनी हुई है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स चुन्नीलाल हजारीमल १९ पगियापट्टी—इस फर्मपर विलायती कपड़ेका व्यवसाय होता है। इसके अतिरिक्त हुण्डी चिट्ठी और सराफी लेनदेनका काम होता है। आपकी शिवतल्ला स्ट्रीटमें एक इमारत बनी हुई है।

(४७) सुजानगढ़—चुन्नीलाल हजारीलाल रामपुरिया—यहां हुण्डी चिट्ठीका काम होता है। तथा आपका खास निवास है।

मेसर्स चतुरभुज नवलचंद वेद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान गोपालपुरा (बीकानेर-स्टेट) में है। करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ हाथीमलजी यहाँ आये। आपके दो भाई और थे जिनके नाम जोधराजजी और शिवजी रामजी था। आप तीनों भाई शामिल व्यापार करते थे। सेठ हाथीमलजीके बाद उनके पुत्र सेठ चतुरभुजजीने और चतुरभुजजीके बाद नवलचन्दजीने इस फर्मके कामको सम्हाला। सेठ नवलचन्दजीके ३ पुत्र वर्तमानमें इस दुकानके कारबारको सम्हालते हैं। जिनके नाम इस प्रकार हैं—सेठ छगनमलजी, पूनमचन्दजी और गणेशमलजी। आपके एक भाई जैचन्दलालजीने ४ वर्ष पूर्व दीक्षा लेली हैं। और दूसरे धनराजजी, सेठ हाथीमलजीके कुटुम्बमें दत्तक गये हैं। आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मे० गनेशमल सिंचालाल ३७ आर्मेनियम स्ट्रीट—इस फर्मपर व्याज और कपड़ेका काम होता है।

सुजानगढ़—यहां आपका निवास है और दो तीन हवेलियां बनी हुई हैं।

मेसर्स छोगमल बालचंद बेंगाणी

इस फर्मके मालिक ओसवाल (तेरापंथी) जातिके सज्जन हैं। आपका निवास स्थान सुजानगढ़ही है। इस फर्मपर सेठ छोटमलजीके यहाँ, सेठ बालचन्दजी, लाडनूंसे गोद आये। इस दुकानपर पहिले गिरधारीलाल छोगमलके नामसे कारवार होता था। सेठ बालचन्दजीने इस फर्मपर छोगमल बालचन्दके नामसे व्यापार आरंभ किया। श्रीबालचन्दजी शिक्षित और समझदार सज्जन हैं। आप यहांकी म्युनिसिपैलेटीके मेम्बर हैं। आप ओसवाल पंच-पंचायतीमें अच्छा सहयोग लेते हैं। आपके एक पुत्र हैं, जिनका नाम श्रीआसकरणजी है। इस समय आपकी दुकानके व्यापारका परिचय इसप्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स सूरजमल आसकरण बेंगाणी ५७ रॉयल एक्सचेंज T. A. Jiwan—इस फर्मपर जूटका व्यापार होता है। इस फर्मका व्यवसायिक सम्बन्ध विलायतसे भी है। इसफर्ममें आपका साझा है।

सुजानगढ़—यहां आपका निवास और स्थाई मिल्कियत है।

मेसर्स जीवराज रामकिशनदास गाड़ोदिया

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास स्थान गाड़ोदा (सीकर) है। सेठ जीवराजजी सर्व-प्रथम करीब ७०-८० वर्ष पूर्व य ां आये थे। आपके कोई संतान नहीं थी, इसलिए आपने अपने बड़े भाईके

पुत्र श्री रामकिशनजीको दत्तक लिया। सेठ रामकिशनजीके हाथोंसे इस फर्मकी विशेष तरक्की हुई। इस समय आपके चार पुत्र हैं, जिनके नाम श्री हजारीमलजी, रामप्रतापजी, मोतीलालजी और अर्जुनलालजी हैं। आपकी ओरसे सुजानगढ़ स्टेशनपर बड़ी सुन्दर दर्शनीय धर्मशाला बनी है। कलकत्तेके विशुद्धानन्द औषधालयमें आपने ५१००) दिए हैं। इसी तरह गोशाला आदि शुभ कार्योंमें भी आप भाग लेते रहते हैं। अभी कुछ समय पूर्वसे आप सब भाइयोंका व्यापार अलग २ होने लगा है, जिसका परिचय इस प्रकार है।

(१) हजारीमलजीकी फर्म—

भयंदर—रामकिशनदास हजारीमल—यहां नमकका व्यापार होता है।

(२) रामप्रतापजीकी फर्म

कलकत्ता—जीवराज रामप्रताप, २६।१ आर्मेनियनस्ट्रीट T. A. Pratap इस फर्मपर सब प्रकारकी आढ़तका काम होता है।

बम्बई—रामप्रताप नंदलाल, लक्ष्मीदास मार्केट T. A. Prtapnand इस फ़र्मपर भी आढतका काम होता है।

भयंदर—रामप्रताप शिवचन्दराय, यहां नमकका व्यापार होता है।

(३) मोतीलालजी और अजुनलालजीकी फर्म

कलकत्ता—जीवराज रामकिशनदास २६—३ आर्मेनियन स्ट्रीट, T. A. Gadodiya यहां आढ़तका काम होता है।

बम्बई—मोतीलाल अजुनलाल, लक्ष्मीदास मार्केट—यहां आढ़तका काम होता है।

भयंदर—मोतीलाल अजुनलाल, यहां नमकका व्यापार होता है।

—:o:—

मेसस धर्मसीजी माणकचन्द बोरड़

इस फर्मके मालिकोंका निवास सुजानगढ़ है। इस दुकानको सेठ धर्मसीजीने १०० वर्ष पूर्व स्थापित किया था। आपके बाद सेठ माणकचन्दजीने इस फ़र्मके कामको सम्भाला। आपका सुजानगढ़के समाज एवं राज्यमें अच्छा सम्मान था। आपके बाद आपके छोटे भाई चुन्नीलालजी ने इसके व्यापारको चलाया। सेठ चुन्नीलालजीके २ पुत्र थे, मोतीलालजी और भूरामलजी। आप दोनोंका भी यहां अच्छा सम्मान था आप देशमें ही व्यापार करते थे। सेठ भूरामलजीके बाद वर्तमानमें इस दूकानका संचालन आपके पुत्र सेठ भूंथामल जी करते हैं। आप बहुत प्रतिष्ठित और सज्जन व्यक्ति हैं। आपके कुटुम्बकी हमेशा पंच-पंचायतियोंमें अच्छी प्रतिष्ठा रही है। आप

सेठ छगनमलजी वेदके सहयोगमें कलकत्तेमें कपड़ेका बहुत बड़ा रोजगार करते थे। सेठ झूथालालजी के एक पुत्र हैं, जिनका नाम श्री पन्नालाल जी है।

इस फर्मके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—रावतमल पन्नालाल, ३७,३८ आर्मेनियन स्ट्रीट—यहां जूट, सराफी और आढ़तका काम होता है।

सुजानगढ़—यहां हुण्डी चिट्ठी और सराफीका काम होता है यहीं आपका निवास है।

—:०:—

मेसर्स बिंजराज बालचन्द

इस फर्मका खास निवास लाडनूं (जोधपुर-स्टेट) है। सर्व प्रथम सेठ सेवारामजी १०६ वर्ष पूर्व यहां आए थे। सुजानगढ़ बसानेवाले ४ व्यक्तियोंमें एक आप भी थे। आपके बाद क्रमशः श्री सेठ पद्मचन्दजी, और श्री सेठ बीजराजजी हुए। आपने ५० वर्ष पूर्व कलकत्तेमें हीरालाल बीजराजके नामसे दूकान स्थापित की। आपके बाद आपके पुत्र सेठ बालचंदजीने इस दूकानके व्यापारको विशेष तरक्की दी और अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की।

वर्तमानमें इस फर्मके कारोबारको सेठ जेसराजजी सम्भालते हैं। आपको दरबारसे कैफियत छड़ी और चपड़ास बख्शी गई है। इस समय आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसस बीजराज बालचन्द,१०४ पुराना चीनाबाजार T.A.Newpat इस फर्मपर जूट बेलस, जूट एक्सपोर्टर्स, बैंकिंग और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

(२) डूमार (रंगपुर)—यहां जूटकी खरीदीका काम होता है।

(३) हल्दी बाड़ी—(कुचबिहार),, ,, ,,

(४) फारबिसगंज—(पूर्नियां) ,, ,, ,,

(५) सुजानगढ़—बीजराज पूसामल यहां आपका निवास स्थान और मकान है।

—०—

मेसर्स मोतीलाल आसकरण भूतोड़िया

इस फर्मको सेठ चौथमलजीने स्थापित किया तथा इसकी तरक्की भी आपहीने की। आप सुजानगढके निवासी हैं। आप ओसवाल (तेरापंथी) जातिके हैं। सेठ चौथमलजीके बाद क्रमशः सेठ मोतीलाल जी और सेठ आसकरणजीने इस फर्मके कामको सम्भाला। वर्त्तमानमें सेठ आसकरण जी ही इस फर्मके व्यापारका संचालन करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

कलकत्ता—आसकरन भूतोड़िया, २२४ हरिसनरोड T. A. Bhutodia यहां जूट, हुंडी चिट्ठी और सराफीका काम होता है।

बनकस—चौथमल आसकरण—यहां आढ़त और हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

सुजानगढ़—मोतीलाल आसकरण—यहां हुडी चिट्ठीका काम होता है। और आपका खास निवास है।

—:o:—

मेसर्स रामबख्श रामनारायण

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान कुचामन (मारवाड़) है। पहिले पहिल संवत् १९०५में सेठ संतोकीराम जी मामूली हालतमें यहां आए थे। आपके बाद आपके २ पुत्र रामबख्शजी और रामचन्द्रजीने उदयचंद पन्नालाल चूरूवालोंके साझेमें पन्नालाल हजारीमलके नामसे कलकत्तेमें व्यापार आरम्भ किया। इस व्यापारमें आपने अच्छी सम्पत्ति पैदा की। संवत् १९७५में आपने पन्नालाल हजारीमल नामक फर्मसे अपना काम अलग कर लिया। उस समयसे ही सेठ रामचन्द्रजी सुजानगढ़में रामचन्द्र सुजानमलके नामसे व्याज वगैराका धंधा करते हैं। आपकी यहां एक माहेश्वरी पाठशाला चलरही है। इसके लिये आपने एक मकान भी दिया है।

सेठ रामबख्श जीके पुत्र सेठ रामनारायण जी कलकत्तेमें अपना स्वतंत्र व्यापार करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स रामबख्श रामनारायण ४२।१ स्ट्रांडरोड (T A Kripasindhu)-यहां जूटका घरू और आढ़तका काम और हुण्डी चिट्ठीका व्यवसाय होता है।

(२) बेलाकोवा (जलपाई गोड़ी)—मेसर्स कन्हैयालाल खेमकरन—यहां जूटका व्यापार होता है।

(३) मेमनसिंह—रामबगस रामनारायण-यहां भी जूटका व्यापार होता है।

—:o—

मेसर्स रूपचंद तोलाराम सेठिया

इसफर्मके मालिक खास निवासी बीकानेरके हैं आप पहिले मूंडवा और फिर जीली (बीकानेर) होते हुए सुजानगढ़ आये। पहिले पहिल जीलीसे सेठ ज्ञानचंदजी केवल २५) लेकर सिराजगंज गये थे। वहां आपने अपना व्यापार जमालिया, और अच्छा पैसा पैदा किया। आपके बाद आपके पुत्र हणुतमलजी और रतनचंदजी हुए। सेठ हणुतमलजीने जोधपुरस्टेटमें जसवंतगढ़ नामक गांव बसाया। इस फर्मके मालिक आरम्भमें बीकानेरके मुत्सुद्दी थे।

सेठ हणुतमलजीके चुन्नीलालजी और तोलारामजी दो पुत्र थे। वर्तमानमें हणुतमल तोलाराम नामक फर्मके मालिक सेठ तोलारामजीके तीनपुत्र हैं जिनके नाम सेठ चांदमलजी, मूलचंदजी और खूबचंदजी, हैं। आपलोग अपना व्यवसायका भली प्रकार चला रहे हैं। आपके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

१ सिराजगंज—ज्ञानचंद हणुतमल रूपचन्द, बड़ापट्टी, यहां जूटका व्यापार होता है ।

२ कलकत्ता—चांदमल मूलचंद, १०५ पुराना चीना बाजार, यहां भी जूटका व्यापार होता है ।

३ सुजानगढ़—हणुतमल तोला राम—यहां आपका निवास और स्थाई सम्पत्ति है ।

कपड़े के व्यापारी

खींवराज धनराजडोसी
टोडरमल मांगीलाल मूंदड़ा
बूदरमल बालमुकुंद
रामरिख हजारीमल
हरसामल शिवबख्श
रामदयाल सदासुख
रामरिख हरिबख्श
राधाकृष्ण रामदयाल
लालचंद शिवनारायण (ऊन)
हुकुमचंद पोकरमल

गल्लेके व्यापारी और आढ़तिया

कनीराम वखतावरमल (ऊन)
कनीराम मोतीराम
चिमनीराम रामसुख
नंदराम हनुमानवख्श (ऊन)
पूरनमल तखतमल सरावगी (ऊन)
बद्रीनारायण गणपतलाल
बलदेवदास हरिवक्ष
बलदेवदास हरिनारायण (ऊन)

वैद्य और औषधालय

जाजोदिया औषधालय
वैद्यरामचन्द्र सूरजमल पारख
रामलालजी जती

स्कूल

ओसवाल विद्यालय
माहेश्वरी वाणिज्य पाठशाला
सरावगी स्कूल

ताल—छापर

छापर बीकानेर स्टेटका एक कस्बा है। यह बीकानेर स्टेट रेलवेकी सुजानगढ़—हिसार लाईन पर अपने ही नामके स्टेशनसे तीन मीलकी दूरी पर बसा हुआ है। स्टेशनसे शहर तक पक्का रोड बना हुआ है। इस स्थान पर एक तालाब है। कहाजाता है कि बीकानेर स्टेटमें यही एक ऐसा तालाब है जहां बारहों मास पानी रहता है। तालाबके किनारे ही महाराजा साहबकी कोठी बनी हुई है।

व्यापारके नामसे यहां कुछ भी नहीं है। सिर्फ बड़े २ धनिकोंका निवास स्थान होनेसे यहां चहल पहल रहती है। इन्हीं लोगोंकी आलीशान हवेलियोंसे यह गांव एक छोटासा शहर मालूम होता है। यहांके व्यापारियोंका संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जाता है।

मेसर्स छोगमल चौथमल दुधेड़िया

इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ चौथमलजी और सेठ छोगमलजीके पुत्र श्रीयुत मोहनलालजी, तिलोकचन्दजी तथा जसकरणजी हैं। आप दुधेड़िया गौत्रके सज्जन हैं। आपकी फर्म को स्थापित हुए करीब ८० वर्ष हुए। कुछ वर्षों से भाईयों भाईयोंमें हिस्सा रसी होजानेसे आजकल आप उपरोक्त नामसे व्यापार करते हैं। हिस्सेकी दो दुकानें भी आपहीके द्वारा संचालित होती हैं। सेठ चौथमलजी सज्जन व्यक्ति हैं। आपके विचार नये ढंगके हैं। दूसरे संचालक लोग भी सज्जन पुरुष हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

गोहाटी (आसाम)—मेसर्स छोगमल चोथमल; T. A Oswal—यहां गल्लेका व्यापार तथा सब प्रकारकी आढ़तका कार्य होता है।

शिलांग—मेसर्स मोहनलाल तिलोकचन्द, पुलिस बाजार, T. A. Dudheria—यहां कपड़ेका व्यवसाय होता है।

शिलांग—मेसर्स मोहनलाल तिलोकचन्द पल्टन बाजार—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स छोगमल चोथमल, १५ नारमल लोहिया स्ट्रीट—यहां सब प्रकारकी कमीशन एजंसीका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स मानमल पूनमचन्द, सूतापट्टी—इस स्थान पर छत्तेका कारखाना है। इसमें आपका साझा है।

भागलपुर—मेसर्स मोहनलाल चोथमल--यहां गल्ला तथा आढ़तका काम होता है।

छापर—(बीकानेर)—यहां आपकी स्थायी सम्पत्ति है।

मेसर्स मानमल रामरिख पोड़वाल

इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ मानमलजी तथा सेठ रामरिखजी हैं। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। पहले इस फर्मपर जगरूप मानमलके नामसे व्यापार होता था। सेठ मानमलजीके पुत्र श्रीयुत कुन्दनमलजी, मालचंदजी तथा सेठ रामरिखजीके पुत्र श्रीयुत हुलासचंदजी इस समय दुकानके कार्यका संचालन करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स कुन्दनमल हुलासचन्द, ४६ स्ट्राण्ड रोड-यहां कपड़ेकी आढ़तका काम होता है।

मोगलहाट—(बंगाल) मेसर्स जगरुप मानमल-यहां जूट, कपड़ा तमाखू तथा कमीशन एजंसीका काम होता है।

बालागांव (आसाम)—मेसर्स कुन्दनमल हुलासचन्द पो० कोकड़ा झाड़—यहां कपड़ा, जूट और गल्लेका व्यापार होता है।

छापरमें आपकी स्थायी सम्पत्ति है।

मेसर्स हुकुमचंद गोविन्दराम

नाहटा

इस फर्मके मालिकोंका निवास स्थान यहीं पर है। यह फर्म यहां बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है। इस फर्मके संचालक तेरापंथी ओसवाल सज्जन हैं। यह फर्म ७० वर्ष पहले सेठ हुकुमचन्दजीने स्थापितकी थी। आपके हाथोंसे इस फर्मकी अच्छी उन्नति हुई। आपके पश्चात आपके पुत्र सेठ गोविन्दरामजी हुए। आप ही इस समय इस फर्मके मालिक हैं। आपके एक भाई श्रीयुत सेठ तिलोकचन्दजी हैं। आप दोनोंही सज्जन मिलनसार व्यक्ति हैं। श्रीयुत तिलोकचन्दजीके सुपुत्र श्रीयुत रूपचन्दजी नाहटा हैं। आप शिक्षित और व्यापार कुशल एवं उदार सज्जन है। बीकानेर दरबारमें आपकी बहुत प्रतिष्ठा है। आप कई संस्थाओंके मेम्बर भी हैं।

इस फर्मकी ओरसे यहां एक सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है। जोधपुर ओसवाल हाई स्कूल तथा गोशालामें आपकी ओरसे अच्छी सहायता प्रदानकी गई थी। इसी साल आपके धर्मगुरु मुनिराज श्री कालूरामजी महाराजका चतुर्मास करवानेमें आपने करीब ५० हजार रुपया लगाया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

ग्वालपाड़ा (आसाम) मेसर्स हुकुमचन्द गोविन्दराम—यहां कपड़ा तथा प्रकारकी सब वस्तुओंका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स हुकुमचन्द हुलासचन्द, ४ दही हट्टा—T. A. Enout--यहां हुंडी, चिट्ठी, बैंकिंग, तथा जूटका व्यापार होता है। कमीशन एजंसीका काम भी इस फर्म पर होता है।

बिलासी पाड़ा (आसाम) मेसर्स तिलोकचन्द शोभाचन्द—यहां सब प्रकारकी आढ़तका काम होता है।

धूब्री (आसाम) मेसर्स मोहनलाल भोमसिंह--यहां भी सब प्रकारकी कमीशन एजंसीका काम होता है।

चापड़ (आसाम) मेसर्स सूरजमल रूपचन्द—यहां हुंडी चिट्ठी तथा आढ़तका व्यापार होता है।

सालगुजा (आसाम) मेसर्स गोविन्दराम तिलोकचन्द--यहां आढ़तका काम होता है।

साहबग्राम (आसाम) मेसर्स हुकुमचन्द हुलासचन्द--यहां जूट और सूतकी खरीदी बिक्रीका काम होता है।

छापर (बीकानेर) यहां आपका निवास स्थान है। इस गांवमें आपकी कई भव्य इमारतें बनी हुई हैं।

श्रीरूपचन्दजी नायटा (हुकुमचन्द गोविन्दराम) छापर
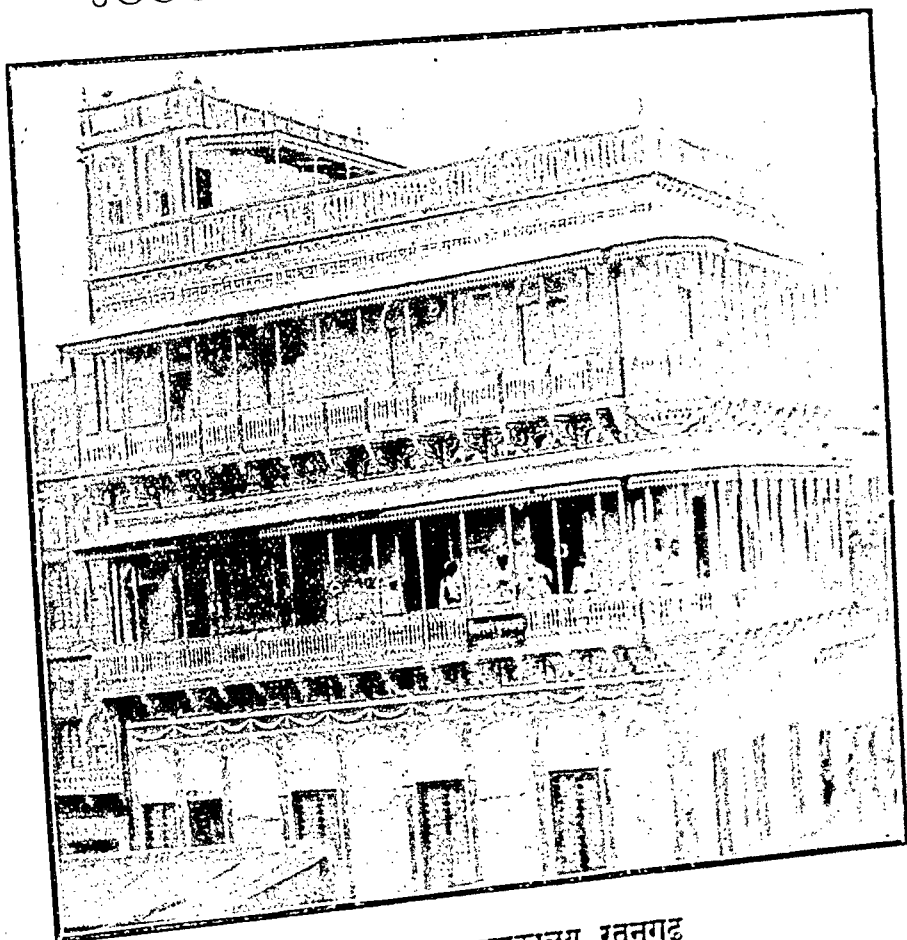
श्री हनुमान पुस्तकालय, रतनगढ़

रतनगढ़

बीकानेर स्टेट रेलवेकी रतनगढ़ जंक्शनके पास बसी हुई यह बस्ती है। चारोंओर दुर्गसे घिरी हुई यह सुन्दर एवं साफ बस्ती है। इसकी मनुष्य संख्या करीब १३-१४ हजारके हैं। एक शताब्दी पूर्व यहांपर कोलासर नामक एक छोटासा ग्राम था। बीकानेरके महाराज रतनसिंहजीने इसे अपने नामसे बसाया। इसकी बसावट बहुत अच्छे ढङ्गसे की गई है। यहांके कई धनिकोंकी भारतके विभिन्न स्थानोंमें दूकाने हैं। यहांके धनिक समाजकी दानधर्म एवं शिक्षा प्रचारकी ओर विशेष रुचि है। इतनेसे छोटे स्थानमें कई पाठशालाएं, एवं कई प्रकारकी पारमार्थिक संस्थाएं चल रहीं हैं। यहांकी हवेलियें बीकानेरसे कुछ विशेष प्रकारकी हैं। बीकानेरमें हवेलियोंके अग्रभागमें पत्थरपर खुदाईका काम अनुपम रहता है और यहाँकी हवेलियोंकी दीवालोंपर चारों ओर चित्रकारी और रंगाईकी विशेषता रहती है। जितना रुपया बिल्डिंग बनवानेमें लगता है, उसका एक अच्छा अंश उसको रंगवानेमें लगता है।

यहां पैदा होनेवाली वस्तुओंमें मूंग, बाजरा, मोठ,ज्वार और मूंज खास हैं। शेष सब वस्तुएं यहां बाहरसे आती हैं। बीकानेरकी अपेक्षा यहाँके कुए कम गहरे होते हैं।

व्यवसायके नामपर यहां कुछ भी नहीं है। यहांके सभी निवासी अधिकतर बाहरकी आमदनी पर ही निर्भर रहते है। व्यापारियोंकी यहां बड़ी २ हवेलियां बनी हैं जिनमें सालमें कुछ मासके लिये वायु सेवनके लिये सब लोग आते हैं।

यहांपर हनुमान पुस्तकालय नामक हिन्दीका एक अच्छा पुस्तकालय बना हुआ है। श्रीयुत सूरजमलजी जालानने इसकी एक सुन्दर इमारत भी बनवा दी है। इस पुस्तकालयमें भिन्न २ विषयोंकी ८५०० पुस्तके हैं। इसके अतिरिक्त ६४ पत्र पत्रिकाएं भी यहाँपर आती हैं। यहांका प्रबन्ध अच्छा है। इसकी इमारतका चित्र इस ग्रंथमें दिया गया है।

मेसर्स ताराचंद मेघराज

इस फर्मके वतमान मालिक श्रीयुत सूरजमलजी वेद हैं। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं। यह दुकान पहिले माणिकचन्द ताराचंद नामक फर्ममें सम्मिलित थी। इस नामसे इसे व्यवसाय करते हुए करीब ३० वर्ष हुए।

श्रीयुत सूरजमलजी बड़े योग्य और शिक्षित व्यक्ति हैं। आपके पिता सेठ मेघराजजीका देहावसान संवत १९८२ में होगया है। इस कुटुम्बमें श्रीयुत सूरजमलजीके दादा सेठ सोमचंदजी (आपका दूसरा नाम ताराचन्दजी था) वड़े प्रसिद्ध व्यक्ति हुए। आप राजपूतानेके ओसवाल समाजमें अच्छी प्रतिष्ठाकी निगाहोंसे देखे जाते थे।

सेठ सूरजमलजी अपने पिताजीकी यादगारमें एक परमार्थिक संस्था स्थापित करनेका विचार कर रहे हैं। आपकी दूकान कलकत्तेमें अफीम चौरास्तेपर है। इसपर बैङ्किंग और हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

मेसर्स बीजराज हुकुमचंद

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री सेठ जसकरणजी और सेठ मोहनलालजी वेद हैं। आप ओसवाल जातिके सजन हैं आपकी फर्म इस नामसे कलकत्तेमें करीब ५० वर्षोंसे व्यापार करती है।

इस फर्मकी स्थापना सेठ हुकुमचंदजीने की और आपहीके हाथोंसे इसके व्यापारकी उन्नति भी हुई। आप बड़े योग्य और प्रतिष्ठित पुरुष थे। आपका देहावसान संवत १९६८ की आश्विन सुदी ८ को हुआ। आपके बड़े पुत्र सेठ जसकरणजी वेद हैं, आपके दूसरे पुत्र सेठ मालचन्दजीका देहावसान संवत १९७९ में हो गया है। वर्तमानमें सेठ मालचन्दजीके पुत्र सेठ मोहनलालजी हैं।

श्री जसकरणजी शिक्षित एवं जैनधर्मके ज्ञाता हैं। आपने २ पुस्तकें भी लिखी हैं। रतनगढ़में आपकी ओरसे बीजराज हुकुमचन्द वणिक पाठशाला और बालसभा नामक वाचनालय चल रहा है। आपके ५ पुत्र हैं, जिनके नाम श्री डूंगरमलजी, श्री मोतीलालजी, श्री गुलाबचन्दजी, श्री सोहनलालजी और श्री लाभचन्दजी हैं। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स बीजराज हुकुमचन्द ३० तुलापट्टी (हेड आफिस) यहां बैङ्किग हुण्डी चिट्ठी और विलायती कपड़ेका इम्पोर्ट बिजिनेस होता है। यहां नं० २२ कालकर स्ट्रीटमें आपकी एक बिल्डिङ्ग बनी हुई है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स बीजराज हुकुमचन्द, सूतापट्टी (गनेशभगतका कटला) यहां धोतीजोड़का थोक व्यापार होता हैं।

(३) नाटोर (बंगाल) मेसर्स बीजराज हुकुमचन्द—यहां बैङ्किग और हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

सेठ हुकुमचन्दजी वेद (बीजराज हुकुमचन्द) रतनगढ़

स्व० सेठ ताराचन्दजी वेद (माणकचन्द ताराचन्द) रतनगढ़

श्री सेठ जसकरणजी वेद (बीजराज हुकुमचन्द) रतनगढ़

सेठ मंगतूलालजी तापड़िया (हणुतराम गोपीराम) रतनगढ़

(४) माथाभाङ्गा (कूच विहार) मेसर्स यशकरण मालचन्द, यहांपर जूट, तमाखू और हुण्डी चिट्ठीका व्यापार होता है। इस स्थानपर आपकी जमीदारी भी है।

(५) खानसामा (जलपाई गोड़ी) मेसर्स यशकरण मालचन्द—यहां भी बैङ्किग और जमीदारीका काम होता है।

—

मेसर्स माणिकचन्द ताराचंद

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास स्थान रतनगढ़ (बीकानेर) है इस फर्मको इस नामसे कलकत्तेमें व्यवसाय करते हुए करीब ५० वर्ष हुए। इसे सेठ ताराचन्दजीने स्थापित किया था। तथा इसके व्यापारको विशेष तरक्की भी आपहीके द्वारा मिली। आपका देहावसान संवत १९७१ में हुआ। आपके एक पुत्र सेठ जयचन्दलालजीका देहावसान संवत् १९६२ में और दूसरे सेठ मेघराजजीका देहावसान १९८२ में हुआ।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ जयचन्दलालजीके पुत्र सेठ पूनमचन्दजी, रिखवचन्दजी, दौलतरामजी और सं'चियालालजी हैं। आपकी ओरसे यहां एक गणित पाठशाला चल रही है आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स माणिकचन्द ताराचन्द नं० १६ केनिंगस्ट्रीट—यहां हुंडी, चिट्ठी और कपड़ेका इम्पोर्ट विजिनेस होता है।

—०:०:—

मेसर्स रामविलास सागरमल

इस फर्मके मालिक अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपका खास निवास रतनगढ़ है। इस फर्मकी स्थापना सेठ बलदेवदासजी और रामविलासजी दोनों भाइयोंने की। पहिले इस फर्मपर बलदेवदास रामविलासके नामसे व्यवसाय होता था। इन्हीं दोनों भाइयोंके हाथोंसे इस दुकानके व्यापारकी तरक्की भी हुई। संवत् १९४४में सेठ बलदेवदासजीका देहावसान होगया। तबसे इस दूकानका कार्य सेठ रामविलासजी ही सम्हालते हैं। आपके इस समय श्री सागरमलजी श्री नंदलालजी श्री बैजनाथजी और श्री बजरङ्गलालजी नामक ४ पुत्र हैं। आप चारों शिक्षित हैं। इस समय यहां आपकी एक धर्मशाला बनी हुई है। यहां आपका एक पक्का कुआं भी बना है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स रामविलास सागरमल १७८ हरिसनरोड, इस दूकानपर कपड़ेका व्यवसाय होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स दौलतराम रावतमल १७८ हरिसनरोड—इस फर्ममें आपका साझा है। इसपर गल्ला, तिलहन, और जूटका व्यापार होता है। इस फर्मकी एक चांवल साफ करनेकी मिल भी है।

मेसर्स रामरतनदास जोधराज धानुका

इस फर्मको सेठ जोधराजजीने ४० वर्ष पूर्व कलकत्तेमें स्थापित किया था। इसके पूर्व आप बीकानेरके मोहता परिवारके साथ शिवदास जगन्नाथके नामसे व्यापार करते थे। आपका खास निवास रतनगढ़ ही है।

रतनगढ़के ऋषिकुल ब्रह्मचर्य्याश्रममें आपकी ओरसे ५१ ब्रह्मचारियोंको रोज भोजन मिलता है। आपने यहांपर एक श्री गोविन्ददेवजीका मंदिर एक बगीची और एक कुआं भी बनवाया है। आपने रतनगढ़के सहायक समिति नामक औषधालयके लिये जमीन लेकर उसपर एक मकान भी बनवा दिया है। आपके पुत्र श्री मुरलीधरजीका देहावसान होगया है। वर्तमानमें सेठ मुरलीधरजीके माधौप्रसादजी नामक एक पुत्र हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स रामरतनदास जोधराज नं० १७८ हरिसनरोड, मलिककी कोठी—यहां बैंकिंग और हुंडी, चिट्ठीका काम होता है।

मेसर्स सूरजमल नागरमल जालान

इस फर्मका हेड ऑफिस कलकत्तेमें है। यह फर्म कलकत्तेमें हनुमान जूट मिलकी मैनेजिंग एजंट है। इस फर्मके मालिक अग्रवाल जातिके (जालान) सज्जन हैं। आपकी शिक्षाके कार्यों में बहुत अभिरुचि है। आपका खास निवास स्थान रतनगढ़ ही है। रतनगढ़में आपने हनुमान पुस्तकालय नामक एक आदर्श पुस्तकालय संचालित कर रक्खा है। आपने उक्त पुस्तकालयके लिए ३० हजारकी लागतसे एक भव्य इमारत भी रतनगढ़में बनवा दी है। तथा सम्वत् १९७६से अभीतक आप उसका अधिकांश व्यय उठा रहे हैं। भविष्यमें भी उक्त वाचनालयकी उन्नतिके लिए आपके हृदयमें अच्छे विचार हैं। आपका पूरा परिचय कलकत्तेके विभागमें दिया जायगा।

मेसर्स हणुतराम गोपीराम

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास रतनगढ़ है। आप माहेश्वरी समाजके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना करीब १२५ वर्ष पूर्व सेठ माणिकरामजीने की। आपके बाद क्रमशः सेठ गंगाविशनजी, सेठ हणुतरामजी, सेठ गोपीरामजीने इस फर्मके व्यवसायका सञ्चालन किया। सेठ

हणुतरामजी और गोपीरामजीके हाथोंसे इस फर्मके व्यवसायको विशेष उत्तेजन मिला। सेठ गोपी रामजीके ५ भाई और थे।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक श्री रामविलासजी, श्री बद्रीनारायणजी, श्री मंगतूलालजी, श्री गजानन्दजी, और श्री गोकुलचन्दजी हैं। आपका परिवार रतनगढ़में बहुत सम्माननीय और प्रतिष्ठित माना जाता है। इस कुटुम्बकी दान, धर्म और सार्वजनिक कार्योंकी ओर हमेशासे अच्छी रुचि रही है। आपकी ओरसे रतनगढ़में ३ धर्मशालाएं, २ पक्के कुए, एक श्री सीतारामजीका मंदिर और एक छतरी बनी हुई है। इसके अतिरिक्त रतनगढ़में तापड़िया पाठशालाके नामसे आपकी दो संस्कृत पाठशालाएं चल रही हैं, इनमें विद्यार्थियोंके लिए भोजन और वस्त्रका भी प्रवंध आपकी ओरसे है। रतनगढ़के आसपास भी आपने २ तालाब और २-३ कुए बनवाये हैं।

श्रीयुत मंगतूलालजी तापड़िया माहेश्वरी समाजमें प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। बिड़ला परिवारसे आपका निकट सम्बन्ध है। आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स गोपीराम गोविंदराम, ११३ मनोहरदासका कटला—इस फर्मपर कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स हरदेवदास रामविलास, मनोहरदासका कटला—इस दुकानपर भी कपड़ेका व्यापार होता है।

(३) कलकत्ता—मेसर्स बालाबक्ष बद्रीनारायण, मनोहरदासका कटला—इस फर्मपर भी कपड़ेका व्यापार होता है।

(४) रंगून—मेसर्स गोपीराम शिवबख्श, मार्चेन स्ट्रीट—इस फर्मपर बैंकिंग, हुण्डी, चिट्ठी और कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स हणुतराम सवसुखदास

इस फर्मके मालिक अग्रवाल जातिके खेमका सज्जन हैं। कलकत्तेमें इसे सेठ नाथूरामजी और उनके भतीजे सेठ रामकिशनजीने स्थापित किया था। तथा इसके व्यापारको विशेष तरक्की नाथूरामजीके पुत्र जवाहरमलजीने दी थी। सेठ जवाहरमलजी बीकानेर स्टेटकी कमेटीके ८ वर्षतक मेम्बर रहे। यहांके सरकारी औषधालयकी बिल्डिंग आपने अपने खर्चसे तैयार करवाई थी। सेठ जवाहरमलजीने कलकत्तेके अमहर्स्ट स्ट्रीट औषधालयमें ५१०००) तथा इसी नामके विद्यालयमें ४१०००) दान दिया था। इसी प्रकार हरिद्वार (कनखल), बनारस आदिमें धार्मिक कार्योंमें आपने बहुत अच्छी २ रकमें दान की थीं। कनखलमें आपकी धर्मशाला है वहां ब्राह्मणोंके लिए अन्न-वस्त्र और शिक्षाका भी प्रवंध है।

सम्वत् १९८१में नाथूराम रामकिशन फर्मकी ६ शाखाएं होगईं। जिनके नाम नाथूराम जवाहरमल, रामकिशनदास, शिवदयाल, घनश्यामदास ठाकुरसीदास, गंगाधर बजरंगलाल, सनेहीराम शिवचंदराम और गजानन्द रामकुमार हैं।

इनमेंसे घनश्यामदास ठाकुरसीदासके सञ्चालक श्री ठाकुरसीदासजी हैं। आप कलकत्तेके स्टॉक एक्सचेंजमें ठाकुरसीदास खेमकाके नामसे काम काज करते हैं।

यहांके कुछ खास खास व्यापारियोंके नाम जिनकी दूकाने बाहर हैं।

अमरचन्द रामप्रसाद
उमयचन्द चुन्नीलाल
चनीराम बलदेवदास
ताराचन्द मेघराज
नाथूराम हरदेवदास
बींजराज हुकुमचन्द
माणिकचन्द ताराचन्द
रामबिलास सागरमल
रामरतनदास जोधराज
सूरजमल नागरमल जालान (मिल मालिक)
सुखदेवदास राम बिलास
हणुतराम गोपीराम

गल्लेके व्यापारी

अमरचन्द मालीराम
अमरचन्द जानकीदास
अमरचन्द शिवदत्तराय
चनीराम बलदेवदास
बलदेवदास रामकुंवार
हरिबख्श कसेरा

आइल एजंट

नाहरमल शिवबख्श (स्टेंडर्ड आइल)
बिहारीलाल शादीराम (एशियाटिक पेट्रोलियम)
महादेव मुहालका (सब एजंट वर्मा आइल कम्पनी)

चांदी सोनेके व्यापारी

बलदेवदास रामकुँवार
शिवभगवान रामकुँवार

सार्वजनिक स्कूल और संस्थाएं

श्रीमारवाड़ी सहायक समिति
श्रीहनुमान पुस्तकालय
श्रीहनुमान भंडार
श्रीहनुमान उपदेश भवन
श्रीहनुमान बालिका विद्यालय
राज्यस्थान ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम
बाल सभा पुस्तकालय
रघुनाथ विद्यालय
श्रीखेमका धर्म सभा
खेमका संस्कृत पाठशाला
खेमका गणित पाठशाला
तापड़िया संस्कृत पाठशाला
चमड़िया संस्कृत पाठशाला
नुहाला संस्कृत पाठशाला
गडेरिया संस्कृत पाठशाला
भरतिया संस्कृत पाठशाला
हजारीमल संस्कृत पाठशाला
मंगलदत्त विद्यालय
बींजराज हुकुमचन्द वणिक पाठशाला
अछूत पाठशाला

राजगढ़

बीकानेर स्टेटकी यह बड़ी मंडी है। यह बीकानेर स्टेट रेल्वेकी सुजानगढ़-हिसार लाईन के सादुलपुर नामक स्टेशनके पास बसी हुई है। सादुलपुर स्टेशनसे पिलानी, बगड़, चिड़ावा आदि जयपुर स्टेटके गांवोंमें रास्ता जाता है। यहांकी पैदावार मूंग, मोठ, बाजरी, गवार आदि हैं। ये ही वस्तुएं यहांसे एक्सपोर्ट होती हैं। बाहरसे किराना, गल्ला कपड़ा आदि यहां आता है और यहांसे आसपासके देहातोंको सप्लाय होता है। यह स्थान जिलेका प्रधान स्थान है। यहां वड़ी २ कोर्टें भी हैं। महाराजा साहबका विचार इसके पास ही अपने राजकुमार श्री० सार्दु लसिंहजीके नामपर मण्डी बसानेका है। इसी ध्येयको लेकर राजगढ़के स्टेशनका नाम भी सार्दु लपुर ही रक्खा हैं। यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स गोपीराम वजरंगदास टीकमाणी

इस फर्मके संचालक सेठ बजरंगदासजी तथा सेठ गोपीरामजीके पुत्र श्री सेठ फूलचन्दजी हैं। आपका निवास स्थान यहींका है। आपकी तथा आपके भाईकी ओरसे यहां स्कूल, घण्टाघर धर्मशाला आदि बने हुए हैं। आपकी फर्मपर यहां हुंडी चिट्ठी तथा बैंकिंगका काम होता है। आपका पूरा परिचय बम्बई विभागमें पेज नं० ४४ में दिया गया है।

मेसर्स गणपतराय तनसुखराय राजगढ़िया

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ तनसुखरायजी, सेठ नागरमलजी, सेठ इन्द्रचन्दजी एवम् सेठ बाबूलालजी हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। यह फर्म यों तो बहुत पुरानी है पर उपरोक्त नामसे इसे तनसुखरायजीके पिता सेठ गणपतरायजीने स्थापित की। आप बड़े व्यापार कुशल व्यक्ति थे। शुरू २ में आपने तेल और कपड़ेका व्यापार किया। आपका देहावसान हो चुका है। वर्तमानमें इस फर्मपर अभ्रकका कारबार होता है।

इस फर्मकी ओरसे दान धर्म सम्बंधी भी कई कार्य हुए। आपकी ओरसे सादिलपुर (राजगढ़) नामक स्टेशनपर एक धर्मशाला तथा कुआ बनाया हुआ है। यहां एक मन्दिर तथा धर्मशाला और

पक्का तालाब भी बनवाया है। कुंए तो आपकी ओरसे कई स्थानोंपर बने हुए हैं। इनके अतिरिक्त एक देशी औषधालय तथा एक कन्या पाठशाला और एक बोर्डिंग हाऊस भी आपकी ओरसे चल रहा है।

वर्तमानमें सेठ तनसुखरायजीके २ पुत्र हैं। श्रीमथुराप्रसादजी तथा श्रीबनवारीलालजी। आप दोनों शिक्षित सज्जन है। बीकानेर दरबारने आपके सारे खानदानको सोना, छड़ी. चपरास आदि बक्षी है। आपको सेठकी उपाधि भी मिली हुई है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स गणपतराय कम्पनी, १२ १३ सैय्यदसाली लेन—यहांपर अभ्रकका बहुत बड़ा व्यापार होता है। यहांसे डायरेक्ट जर्मनी, जापान, इग्लैंड, अमेरिका इटली आदि स्थानोंपर अभ्रकका एक्सपोर्ट होता है। गया जिलेमें आपकी अभ्रककी खानें हैं। इनकी संख्या १७ हैं। भानाखाद नामक खदान आपकी मौरूसी जायजाद है। आपके यहांके तारका पता Maloti है।

मेसर्स शंकरदास भगतराम टिकमाणी

इस फर्मके मालिक अग्रवाल जातिके हैं। आपका मूल निवास स्थान यहींका है। वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ भगतरामजी तथा आपके पुत्र श्री० शिवप्रतापजी व रामनारायणजी हैं। आपकी फर्मका पूरा परिचय बम्बई-विभागके पेज नं० ५८ में दिया गया है। इस फर्मपर यहां सराफी तथा हुंडी चिट्ठी और गल्लेका व्यवसाय एवम् आढ़तका काम होता है।

बैंकर्स एण्ड कमीशन एजंट

मेसर्स कुन्दनमल नथमल
सेठ कन्हीरामजी घेवका
मेसर्स गोपीराम बजरंगदास
,, गणपतराय तनसुखराय राजगढ़िया
,, गंगाराम राधाकिशन मोहता
,, डालूराम महादेव सरावगी
,, तुगनराम रामजी दास घेवका
,, वसन्तराय गंगाराम
सेठ विरदीचन्द सतनालीवाला
मेसर्स मुरलीधर बसंतलाल
,, मुरलीधर नेतमल सुराना
,, लक्ष्मणदास तोलाराम सुराना
,, शिवजीराम पूरनमल
,, शंकरदास भगतराम
,, हरकचन्द जसकरण सुराना

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स कुन्दनमल तिलोकचन्द
,, गुलाबराय किशनलाल
,, चोखराज गोपीराम
,, जेठमल गणपतराय
,, जेठमल रामनारायण
,, बसंतराय गंगाराम
,, मौजीराम तनसुखदास

,, मुरलीधर बसंतलाल
,, शंकरदास भगतराम
,, शिवजीराम पूरणमल

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स चुन्नीलाल गोविन्दराम
,, चुन्नीलाल शिवदत्तराय
,, तुलसीराम जयनारायण
,, दुल्लुराम नानकराम
,, नैनसुखदास लखमीचन्द
,, नारायणदास लक्ष्मीचन्द
,, बख्तावरमल जुहारमल
,, शिवप्रसाद चंगाईवाला
,, सुगनचन्द श्रीलाल

चांदी-सोनेके व्यापारी

,, मेसर्स गंगाराम राधाकिशन
,, चुन्नीलालशिवदत्तराय
,, चुन्नीलाल गोविन्दराम
,, ईसरदास हीरालाल

तेलके व्यापारी

मेसर्स गुलाबराय किशनलाल
,, मुरलीधर बसंतलाल
,, शिवजीराम पूरनमल

लोहा-पीतलके व्यापारी

दुर्गादत्त जुगलकिशोर
बल्लूराम शिवनारायण
मुखरामदास बरासरवाला
सूरजमल रामेश्वर

चूरू

चूरू बीकानेर स्टेटका एक आबाद शहर है। यहांकी विशाल इमारतें यहांकी सम्पत्तिका गुणगान कर रही हैं। यह स्थान बीकानेर स्टेट रेल्वेकी रतनगढ़—हिसार लाईनपर अपने ही नामके स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर बसा हुआ है। यहांपर कई सार्वजनिक संस्थाएं हैं जिनका परिचय आगे दिया गया है।

स्थायी व्यापार तो यहां कम है पर सट्टा,—वायदेका व्यापार—यहां बहुत होता है। सट्टेके बाजारमें हमेशा बड़ी चहल पहल और धूमधाम रहती है। यहांके स्थायी व्यापारमें गल्ला तथा कपड़ा प्रधान है। ये दोनों ही पदार्थ बाहरसे इम्पोर्ट होते हैं। यहांसे एक्सपोर्ट होनेवाला कोई विशेष माल नहीं है।

दर्शनीय स्थानोंमें एक कीर्तिस्तम्भ नामक स्थान है। यह रेल्वेके स्टेशनसे चूरूतक आनेवाली सड़कपर बना हुआ है कई सुन्दर और भावपूर्ण श्लोक संगमरमरमें पच्चीकारी द्वारा काटकर इसकी चारों ओर दिवालोंमें लगाये गये हैं।

इसके अतिरिक्त ब्रह्मचर्याश्रम,सर्वहितकारी सभा पुस्तकालय आदि स्थानभी दर्शनीय है। सुराना

पुस्तकालयमें छपे हुए ग्रन्थोंके अतिरिक्त करीब २५०० हस्तलिखित प्राचीन ग्रन्थ भी हैं। इसके संचालक श्री तोलारामजी सुराना तथा श्रीशुभकरनजी सुराना हैं। इसमें एक चांवलपर एक श्लोक लिखा हुआ है, वह दर्शनीय है। इसी प्रकारकी और भी कई वस्तुएं दर्शनीय हैं। इसका प्रबंध श्रीयुत रामदेवजी करते हैं। आपका मैनेजमेंट बहुत सुन्दर है। इस पुस्तकालयके विषयमें इसके विजिटर बुकमें कई प्रसिद्ध विद्वानोंकी सम्मतियां संग्रहित हैं। सम्मतियां बड़ी अच्छी हैं। यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स उदयचन्द पन्नालाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ हजारीमलजी एवम् जंवरीमलजी वैद हैं। आपका निवास स्थान यहींका है। आप ओसवाल श्वेताम्बर जैन धर्मावलम्बीय सज्जन हैं। आपकी फर्म बहुत पुरानी है। इसके स्थापक सेठ पन्नालालजी हैं। आपने संवत् १९२४ में कलकत्तेमें इस फर्मकी स्थापना की। आपहीके हाथोंसे इस फर्मकी उन्नति हुई। आपके दो पुत्र हुए—सेठ सागरमलजी और सेठ जंवरीमलजी। इस समय सेठ सागरमलजी अपना अलाहदा व्यवसाय करते हैं।

सेठ जंवरीमलजी बड़े सादे एवम् मिलनसार व्यक्ति हैं। आपकी ओरसे यहां एक धर्मशाला बनी हुई है।

इस समय सेठ जंवरीमलजीके चार पुत्र हैं जिनके नाम श्रीगणेशमलजी, श्रीरावतमलजी, श्रीमोहनलालजी, तथा श्रीरायचन्दजी हैं। इनमेंसे श्रीयुत गणेशमलजी दुकानके कामका संचालन करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स उदयचन्द पन्नालाल, ४२ आर्मेनियन स्ट्रीट—यहां विलायती कपड़ा तथा जूटका व्यापार होता है। यहांपर डायरेक्ट विलायतसे कपड़ा आता है। तथा यहांसे जूटका एक्सपोर्ट होता है।

कलकत्ता—मेसर्स जवरीमल गनेशमल, ४२ आर्मेनियन स्ट्रीट—यहां जूटका व्यापार होता है। यहां आपकी स्थायी सम्पति भी बनी हुई है।

मेसर्स गणपतराय रुकमानंद बागला

इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ रुकमानन्दजी बागला और सेठ राधाकिशनजी बागला हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपका विशेष परिचय बम्बई विभागमें दिया गया है। यहां आपका मूल निवास स्थान है।

सेठ तनसुखरायजी राजगढ़िया, राजगढ़

सेठ पन्नालालजी वेद (उदयचंद पन्नालाल) चुरू

कुंवर बनवारीलालजी S/o सेठ तनसुखरायजी, राजगढ़

सेठ जवरीमलजी वेद (उदयचन्द पन्नालाल) चुरू

श्री० सेठ तोलारामजी सुराना (मे० तेजपाल बिरदीचन्द)

स्व० सेठ रिधकरणजी सुराना (मे० तेजपाल बिरदीचंद)

से० रायचन्दजी सुराना (तेजपाल बिरदीचन्द)

से० श्रीचन्दजी सुराना (तेजपाल बिरदीचन्द)

मेसर्स तेजपाल बिरदीचन्द

इस फर्मके मालिकोंका निवास स्थान यहींका है। आप ओसवाल तेरापंथी सम्प्रदायके मानने वाले सज्जन हैं। इस फर्मके पूर्व पुरुष बड़े बहादुर व्यक्ति हो गये हैं। उनमेंसे जीवनदास जीका नाम विशेष उल्लेखनीय है। लोग कहा करते हैं कि उन्होंने अपना सिर कट जानेके पश्चात् भी बहुत समयतक तलवार चलाई थी। जिसके लिये यहांकी औरतें अभीतक अपने गीतोंमें उनका नाम गाया करती हैं। इन्हीं जीवनदासजीके तीन पुत्रोंमेंसे सुखलालजीने नागोरसे यहां आकर वास किया। आपके भी तीन पुत्र थे जिनमेंसे वर्तमान फर्म सेठ बालचंदजीके वंशजोंकी है। आपके भी तीन ही पुत्र हुए। पहले श्रीयुत रुकमानन्दजी दूसरे श्रीयुत तेजपालजी और तीसरे श्रीयुत बिरदीचन्दजी थे।

सेठ रुकमानन्दजीने संवत् १८९१ में कलकत्ते जाकर कपड़ेका व्यवसाय शुरू किया। उस समय आपकी फर्मपर रुकमानन्द बिरदीचन्द नाम पड़ता था। संवत् १९६२ में सेठ रुकमानन्दजीके वंशज इस फर्मसे अलग हो गये। इस समय उनका व्यवसाय दूसरे नामसे होता है। जबसे सेठ रुकमानन्दजीके वंशज इस फर्मसे अलग हुए तभीसे इस फर्मपर तेजपाल बिरदीचन्द नाम पड़ता है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ तोलारामजी सेठ रायचन्दजी, सेठ श्रीचन्दजी, श्री० सोहनलालजी एवम् श्री शुभकरणजी हैं। आपका परिचय इस प्रकार है।

सेठ रुकमानन्दजी---आप बड़े होशियार व्यापार कुशल व्यक्ति थे। इस फर्मकी विशेष तरक्कीका श्रेय आपहीको है। आपके समयमें एकबार जगातका झगड़ा चला था। उसमें आप नाराज होकर बीकानेर स्टेटको छोड़कर जयपुर स्टेटमें चले गये थे, फिर महाराजा सरदारसिंह जीने आपको अपने खास व्यक्ति मेहता मानमलजी रावतमलजी कोचरके साथ जगात महसूलकी माफीका परवाना भेजकर सम्मान सहित वापस बुलवाया था। आपका देहावसान संवत १९४२ में हुआ।

सेठ तेजपालजी और बिरदीचन्दजी---आप दोनों सज्जनोंने भी इस फर्मकी अच्छी तरक्की की। आपका राजदारबारमें अच्छा सम्मान था। आपकी रुचि धार्मिक कार्योंकी ओर विशेष रही है। आपका देहावसान क्रमशः संवत् १९२४ और संवत् १९५९ में हो गया।

सेठ तोलामलजी—वर्तमानमें आप फर्मके मालिकोंमेंसे हैं। आप शिक्षित एवं उदार सज्जन हैं। आपका ध्यान पुरातत्व सम्बन्धी खोजोंकी ओर विशेष है। आपने यहां एक सुराना पुस्तकालय स्थापित कर रखा है। इसमें करीब २५०० प्राचीन हस्त लिखित ग्रन्थ मौजूद हैं। आपका दरबारमें भी अच्छा सम्मान है। आप बीकानेर स्टेटकी लेजिस्लेटिव्ह कौन्सिलके मेम्बर हैं। म्युनिसिपेलिटीके भी आप सदस्य हैं।

सेठ रिधकरणजी—इस वंशमें आप बड़े प्रतापी हुए हैं। आपका नाम कलकत्तेके मारवाड़ी समाजमें बहुत अग्रगण्य है। आपने ही अखिल भारतीय वर्षिय श्री जैन तेरापंथी सभा स्थापित की तथा इसके आप आजीवन सभापति रहे। हबड़ाके आप आजीवन ऑनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। आप कलकत्तेकी मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्सके भी आजीवन सभापति रहे। आपका देहावसान संवत् १९७५ में हुआ।

सेठ रायचन्दजी—आपभी इस फर्मके मालिकोंमेंसे हैं। आपका स्वभाव मिलनसार है। आपकी धार्मिक रुची अधिक है। आपहीके परिश्रमसे कलकत्तेमें जैन श्वेताम्बर तेरापंथी विद्यालय की स्थापना हुई। आप उसकी कार्यकारिणी समितिके सभापति भी रहे।

कुँवर शुभकरणजी—आप शिक्षित युवक हैं। आपका स्वभाव बड़ा सरल है। आजकल सुराना पुस्तकालयका संचालन आपही करते हैं। आपने इस पुस्तकालयकी और भी उन्नति की है। इस पुस्तकालयकी बिल्डिंग बहुत सुन्दर बनी हुई है। जिसका चित्र इस ग्रन्थमें दिया गया है। आपका यहांके समाजमें अच्छा सम्मान है। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम भंवर हरीसिंहजी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स—तेजपाल बिरदीचन्द ७।१ आर्मेनियन स्ट्रीट, T. A. Surana—इस फर्मपर बैंकिग हुंडी, चिट्ठी तथा विलायती कपड़े का इम्पोर्ट होता है। इसी फर्मपर इंगलैण्ड, जापान, जर्मनी आदि देशोंसे छाताका सामान, छड़ियें तथा फेन्सी उनी माल भी आता है।

कलकत्ता मेसर्स तेजपाल बिरदीचन्द २ आर्मेनियन स्ट्रीट यहां छाताकी बिक्री होती है। नं० नं० ४३ आर्मेनियन स्ट्रीटमें आपका छाताका कारखाना है। यह कारखाना बहुत बड़ा है। यहाँ मौसिममें करीब ३०० दर्जन छाते रोजाना तैयार होते हैं।

कलकत्ता—मेसर्स श्रीचन्द सोहनलाल नं० २ रघुनन्दनलेन—इस स्थानपर आपका एक और छातेका कारखाना है।

कलकत्ता—मेसर्स तेजपाल बिरदीचन्द १२८ क्रास स्ट्रीट—यहां कपड़े का खुदरा व्यापार होता है। खासकर नैनसुखकी बिक्री बहुत होती है।

मेसर्स पन्नालाल सागरमल

इस समय इस फर्मके संचालन सेठ सागरमलजी तथा आपके पुत्र सेठ धनराजजी और सेठ हनुतमलजी हैं। आप ओसवाल तेरापंथी सज्जन हैं। आपका निवास स्थान यहींका है। आपकी फर्मको स्थापित हुए बहुत समय हो गया। पहले यह फर्म उदयचन्द पन्नालालके

श्रीयुत कुंवर शुभकरणजी सुराना
(तेजपाल बिरदीचन्द) चूरू
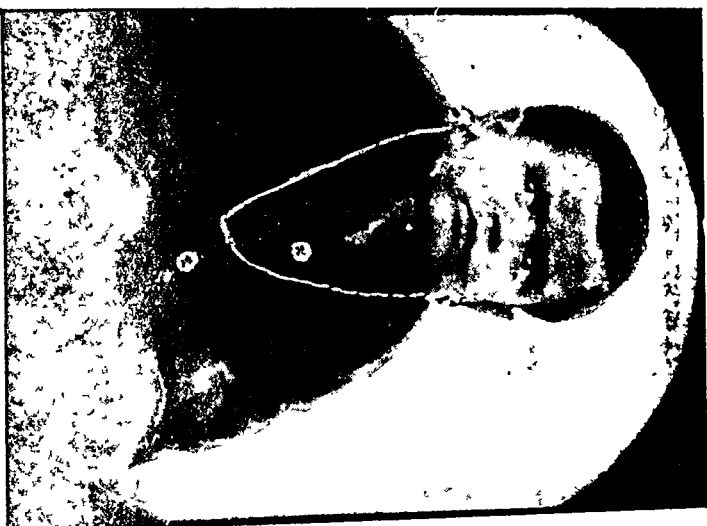
भंवर हरिसिंहजी सुराना
(तेजपाल बिरदीचन्द) चूरू

सेठ सागरमलजी वेद (पन्नालाल सागरमल) चरू

श्री धनराजजी वेद (पन्नालाल सागरमल) चूरू

फर्मके नामसे व्यवसाय करती थी। पर भाइयोंमें बटवारा होजानेसे आप इस समय उपरोक्त नामसे व्यवसाय करते हैं। इस नामसे फर्मको स्थापित हुए करीब १६ वर्ष होगये।

आपको बीकानेर दरबारने खानदानी सोना, तथा खास रुक्के बख्शा हैं। आपकी ओरसे यहां एक धर्मशाला बनी हुई है। आपका यहां अच्छा सम्मान है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स पन्नालाल सागरमल, ११३ क्रासस्ट्रीट—यहां विलायती कपड़ेका इम्पोर्ट होता है। नं० १० कैनिंगस्ट्रीटमें आपकी गद्दी है।

कलकत्ता—मेसर्स धनराज हनुतमल, ११२ क्रासस्ट्रीट—यहां खुला माल थोक विकता है।

चूरू—यहां आपके मकानात आदि बने हैं।

मेसर्स जेतरुप भगवानदास रायबहादुर

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत मदनगोपालजी बागला हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान यहींका है। यहाँ आपकी ओरसे धर्मशाला, मन्दिर और कुएं आदि बने हुए हैं। संस्कृत पाठशाला तथा अन्नक्षेत्र भी आपकी ओर चल रहा है। यहां हुंडी-चिट्ठीका काम होता है। आपका विशेष परिचय बम्बई विभागमें दिया गया है।

मेसर्स मन्नालाल शोभाचन्द

इस फर्मके मालिक यहींके निवासी हैं। आप ओसवाल सुराना गोत्रके सज्जन हैं। इसफर्म को स्थापित हुए करीब ५० हुए। इसके स्थापक सेठ मन्नालालजी थे। आपके हाथोंसे इस फर्म की बहुत उन्नति हुई। श्री शोभाचन्दजी आपके भाई थे।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ मन्नालालजी तथा शोभाचन्दजीके पुत्र सेठ तिलोकचन्द जी हैं। आजकल आपही दुकानका संचालन करते हैं। आपके इस समय चारपुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः हनुतमलजी, हिम्मतमलजी, बछराजजी तथा हंसराजजी हैं। इनमेंसे प्रथम दो दुकानके काममें सहयोग देते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

कलकत्ता—मेसर्स मन्नालाल शोभाचन्द १५६ हरिसन रोड—यहां बैंकिंग हुंडी चिट्ठी तथा सराफीका काम होता है। यहां आपकी निजी कोठी है।

चूरू—यहां आपके मकानात आदिबने हैं।

मेसर्स हजारीमल सरदारमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास यहींका है। आप ओसवाल कोठारी सज्जन हैं। इस फर्मके स्थापक सेठ हजारीमलजी हैं। आपने अपनी व्यापार कुशलतासे लाखों रुपैया पैदा किया आपके तीन पुत्र हुए। जिनकी अलग २ फर्म चल रही हैं। वर्तमान फर्म सेठ सरदारमलजीके वंशजोंकी है। सेठ सरदारमलजी भी बड़े नामी व्यक्ति हो गये हैं। आपने स्टेशनके पास एक धर्मशाला बनवाई। वर्तमानमें आपके २ पुत्र हैं। श्रीयुत सेठ मूलचन्दजी तथा श्री० सेठ मदन चन्दजी। आप दोनों ही सज्जन व्यक्ति हैं। आपने अपने पिताजीके स्मारक स्वरूप यहां एक सरदार विद्यालय स्थापित कर रखा है। बीकानेर दरबारसे आपको छड़ी, चपरास व खास रुक्के बख्शे हुए है। यहां आपकी फर्म बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है।

सेठ मूलचन्दजीके पुत्र चम्पालालजी हैं। सेठ मदन चंदजीके तीन पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः धनपतसिंहजी, गुनचन्दलालजी, और भंवरलालजी हैं। इनमेसे चम्पालालजी, धनपतसिंहजी तथा गुनचन्दलालजी दुकानके काममें भागलेते है। आप सब सज्जन व्यक्ति हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है--

कलकत्ता---मेसर्स हजारीमल सरदारमल, १३ नारमल लोहिया लेन, T. A. Hasir--यहां बैंकिंग, हुंडी-चिट्ठी और विलायती कपड़े के इम्पोर्टका व्यापार होता है। यहां थोक कपड़ा गांठेकी गांठ बिकता है। गल्लेकी आढ़तका काम भी यह फर्म करती है।

कलकत्ता---मेसर्स चम्पालाल कोठारी, १३ नारमल लोहिया लेन--यहां जूटका व्यापार होता है। इस फर्मके द्वारा डायरेक्ट जूट विलायत एक्सपोर्ट होता है।

मेमनसिंह---चम्पालाल कोठारी, जूट आफिस, तारका पता (Kothari) यहां जूटकी खरीदी एवम् गल्लेकी बिक्रीका काम होता है।

बेगुनबाड़ी (मेमनसिंह)---चम्पालाल कोठारी, तारका पता Kothari--यहां जूटकी खरीदीका काम होता है।

वोगरा (बंगाल)---चम्पालाल कोठारी--जूटकी खरीदी काम होता है।

सुकानपोकर (बोगड़ा)--चम्पालाल कोठारी--जूटकी खरीदीका काम होता है।

विलासी पाड़ा (आसाम)--चम्पालाल कोठारी--यहां जूटकी खरीदीका काम होता है।

कसवा (पूर्णियां)--चम्पालाल कोठारी--जूटकी खरीदीका काम होता है।

सिरसा (पंजाब) गुनचन्दलाल कोठारी—यहां गल्लेकी खरीदी बिक्री तथा आढ़तका काम होता है।

श्रीगंगानगर (बीकानेर)--गुनचन्दलाल कोठारी--यहां भी गल्लेकी खरीदी-बिक्री और आढ़तका काम होता है।

स्व०से०सरदारमलजी कोठारी (मे० हजारीमल सरदारमल)

से० मूलचन्दजी कोठारी (मे० हजारीमल सरदारमल)

से० मदनचन्दजी कोठारी (मे० हजारीमल सरदारमल)

कुं० चम्पालालजी कोठारी (मे० हजारीमल सरदारमल

श्री०सेठ मालचन्दजी कोठारी (हजारीमल सागरमल)

श्री०सेठ फतेचन्दजी कोठारी (हजारीमल सरदारमल)

कमरा (श्रीयुत मालचन्दजी) चूरू
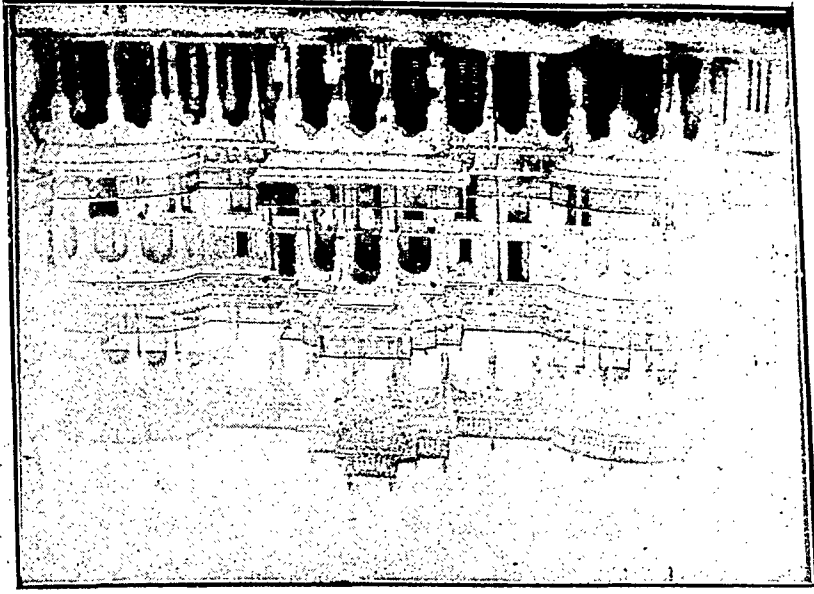
रंगून—कोठारी कम्पनी पो० बा० ५०३—यहां बैंकिंग तथा हुंडी चिट्ठीका काम होता है।
चूरु—यहां आपकी शानदार हवेलियां बनी हुई हैं।

—०—

मेसर्स हजारीमल सागरमल

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ मालचन्दजी हैं। आप ओसवाल कोठारी सज्जन हैं। इस फर्मके स्थापक सेठ हजारीमलजी थे। आप व्यापार कुशल सज्जन थे। आपहीके हाथोंसे इस फर्मकी तरक्की हुई। आपका व्यापार अफीम और गल्लेका था। आपके तीन पुत्र हुए सेठ गुरुमुखरायजी, सेठ सागरमलजी एवं सेठ सरदारमलजी। इस समय आप तीनोंकी फर्मे अलग २ चल रही हैं। उपरोक्त फर्म सेठ सागरमलजीके वंशजोंकी है। आपकी ओरसे यहां एक औषधालय स्थापित है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है---

कलकत्ता---मेसर्स हजारीमल सागरमल, ६ आर्मोनियम स्ट्रीट---यहां हुंडी चिट्ठी,सराफी,चांदी सोना और शेयरोंका व्यापार होता है। T. A. Jineshwar

चूरु—यहां आपकी कई अच्छी २ ईमारतें बनी हुई हैं।

मेसर्स हजारीमल गुरुमुखराय

यह फर्म भी उपरोक्त वर्णित फर्मसे सम्बन्ध रखती है। इसके वर्तमान मालिक सेठ गुरुमुखरायजीके पुत्र तोलारामलजी हैं। आपका धार्मिक कार्योंकी ओर विशेष ध्यान रहता है। आपके पांच पुत्र हैं। सब सज्जन हैं। आपके यहां जमीदारीका काम होता है। बैंकिंग और हुंडी-चिट्ठीका काम भी यह फर्म करती हैं।

कपड़ेके व्यापारी

खेतसीदास लूनकरण
गणेशदास जुगलकिशोर
दामोदर दुर्गादास
भगतराम मन्नालाल
रामलाल गंगाराम

गल्ले तथा किरानेके व्यापारी

गोविन्दराम कुन्दनलाल
दामोदरदास दुर्गादास

बालचन्द भानीराम
भानीराम घासीराम
मगराज जोखीराम
शिवनारायण सूरजमल
हणुतराम नौरंगराय

चांदी-सोनाके व्यापारी

गोविन्दराम गंगाधर
गोविन्दराम कुंजलाल
शिवदत्तराय लक्ष्मीचन्द

लोहा-चद्दरोंके व्यापारी

गोविन्दराम कुंजलाल
नवलीराम मालचन्द
भानीराम घांसीराम
शिवनारायण सूरजमल

पब्लिक संस्थाएं

श्री ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम
कन्या पाठशाला (सनातन धर्म)
कबीर पाठशाला (अछूतोंकी)
श्रीजनार्दन पुस्तकालय (संस्कृत)
पुत्री पाठशाला (सर्व हि० स०)
भगवती विद्यालय
महावीर स्कूल
राजस्थान छात्रावास (पूर्णानन्दजी)
सुराना पुस्तकालय
सनातन धर्मसभा (पुस्तकालय)
सर्वहित कारिणी सभा पुस्तकालय
सरदार विद्यालय
सेवा समिति

सरदार-शहर

सरदार शहर यथा नाम तथा गुण है। यहां कई बड़े २ श्रीमंत लोग निवास करते हैं। यह स्थान बीकानेर स्टेटका एक अच्छा शहर है। रतनगढ़ जंकशनसे बीकानेर स्टेट रेलवेका एक टुकड़ा यहांतक जाता है। यह स्थान थली प्रान्तके सुन्दर, सुहावने और मनोहर बालूके पहाड़ोंमें बसा है। इसकी बसावट साफ और सुथरी है। बड़े २ श्रीमंतोंकी गगन चुम्बी हवेलियाँ इस शहरकी सुन्दरताको बहुत बढ़ा रही हैं।

व्यापारके नामसे यहां कोई विशेष गति-विधी नहीं है। हां श्रीमंतोंका निवास स्थान होनेसे चहल पहल रहती है। यहांकी पैदवार मोठ, तिल, बाजरी एवम् ग्वार विशेष है। यहां सिर्फ़ एकही फसल होती है।

इस छोटे और सुन्दर शहरमें धनिकोंका अधिक वास होनेसे कई पब्लिक संस्थाएं चल रही हैं। उनमेंसे यहांकी पब्लिक-लायब्रेरी बहुत अच्छी है।

संवत् १९८५में यहांसे मोठ २५००० मन, तिल ६0000 मन, बाजरी १००००० और ग्वारा भी १००००० मनके करीब एक्सपोर्ट हुआ है। यहांके व्यापारियोंका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

—:०—

मेसर्स आसकरण पांचीराम पींचा

इस फर्मके मालिक यहींके रहनेवाले हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ८० वर्ष हुए। इसे सेठ आसकरण जीने स्थापित किया। आपका व्यापारिक सम्बन्ध आसामसे था। आपकी पहली फर्म जोड़ाहाटमें खुली। उस समय प्रतापमल आसकरणके नामसे व्यापार होता था। अब वह नाम बदलकर आसकरण पांचीराम हो गया। सेठ आसकरण जीके पश्चात् इस फर्मके कार्यका संचालन सेठ पांचीराम जीने किया। वर्तमानमें आपके पुत्र सेठ रावतमल जी इसका सञ्चालन करते हैं। आप वृद्ध

और अनुभवी सज्जन हैं। आपने अपने हाथोंसे बहुत सम्पत्ति उपार्जन की है। आपने करीब२५०००) की लागतसे एक शनीश्चरजी का मंदिर बनवाया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

कलकत्ता—मेसर्स चांदमल चम्पालाल, नं० २ राजा उडमण्डस्ट्रीट-इस फर्मपर जूट और बैङ्किगका काम होता है। कमीशन एजंसीका काम भी यह फ़र्म करती है।

जोड़ाहाट (आसाम)--मेसर्स आसकरण पांचीराम, रावतमल-यहां आपकी ८, १० और शाखाएं हैं। जहांपर परचूरन दुकानदारीका सामान बिकता हैं।

सरदार शहर—यहां आपका निवास स्थान है।

—:०:—

मेसर्स चैनरूप सम्पतराम दुगड़

इस फर्मके मालिक यहींके मूल निवासी हैं। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं। आपकी फर्म बीकानेर स्टेटकी प्रसिद्ध धनिक फर्मोंमेंसे हैं। सरदार शहरमें आपका ड्राईंग रूम दर्शनीय है। आपकी फर्मकी और भी कलकत्ता आदि स्थानोंमें शाखाएं हैं। यहां इस फर्मपर बैंकिग हुडी-चिट्ठीका काम होता है।

इस फर्मके मालिकोंके हम कई बार गये मगर हमें परिचय प्राप्त न हो सका।अतएव हम यहां इतनाही परिचय दे रहे हैं। खेद है कि सेठ सम्पतरामजीका हालहीमें स्वर्गवास हो गया है।

मेसर्स चुन्नीलाल रावतमल सेठिया

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान तोल्यासर (बीकानेर) का है। आपको यहां आये करीब ८० वर्ष हुए। यहां पहले पहल सेठ ताराचन्दजी आये। जिस समय आप यहां आये थे उस समय आपकी मामूली स्थिति थी। पर समाजमें आपका विशेष सम्मान था। आप गरीबोंके बड़े पृष्ठपोषक रहे हैं। यहांतक कि अपना तन-मन पूर्ण रीतिसे उसमें लगा देते थे। यही कारण है कि आप यहांकी जनतामें माननीय समझे जाते थे। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ चुन्नीलालजी हुए। आप बड़े बुद्धिमान और समझदार व्यक्ति थे। आपके चार पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः श्री पूर्णचन्द्रजी, श्री रावतमलजी, श्री कालूरामजी, और श्री चौथमलजी हैं। इनमेंसे सेठ रावतमलजीका जन्म सावण सुदी ६ सम्वत् १९४० का है। अपने इसफर्मकी अच्छी उन्नतिकी। आप सम्वत् १९५३ में जब कि आपकी आयु सिर्फ १३ वर्ष की थी, कलकत्ता व्यवसायके हेतुसे गये थे। वहां जाकर आपने अपनी चतुरतासे कारवार शुरू किया और अपने

हाथोंसे बहुतो पैसा पैदा किया। आपका धर्मपर बड़ा स्नेह है। आप जैन-श्वेताम्बर तेरापंथी सम्प्रदायके माननेवाले सज्जन हैं। कलकत्तेमें नं० ३६ आर्मेनियन स्ट्रीटमें आपकी गद्दी है। आपके भाई कपड़ेका व्यवसाय करते हैं। सरदार शहरमें आपकी इमारतें अच्छी बनी हुई हैं।

मेसर्स जेठमल श्रीचन्द गधैया

इस फर्मके मालिक सरदार शहरके ही निवासी हैं। इस फर्मको स्थापित हुए ८६ वर्ष हुए। इसकी स्थापना सेठ जेठमल जीने की। आपके पश्चात् इस फर्मके कामको आपके पुत्र श्री० सेठ श्रीचन्दजीने सञ्चालित किया। आपने अपने हाथोंसे कपड़ेके व्यवसायमें लाखों रुपया पैदा किया। इस समय सेठ श्रीचन्दजी अपना जीवन धार्मिकतामें व्यतीत करते हैं। आप ओसवाल श्वेताम्बर जैन जातिके सज्जन हैं। इस समय आपके दो पुत्र हैं। पहले श्रीगणेशदासजी और दूसरे श्रीविरदीचन्दजी। गणेशदास जीका जन्म संवत् १९३६ में और बिरदीचन्द जीका जन्म संवत् १९३०में हुआ। आप दोनों हीं सज्जन पुरुष हैं।

श्री गणेशदास जी स्थानीय म्युनिसिपेलिटीके मेम्बर हैं। आप बीकानेर स्टेटकी लेजिस्लेटिव्ह-कौंसिलके मेम्बर भी रह चुके हैं। कलकत्तेमें बंगाल गवर्नमेंटकी ओरसे आपको दरबारमें आसन प्राप्त है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स श्रीचन्द गणेशदास, मनोहरदासका कटरा ११३ क्रासस्ट्रीट यहां बैंङ्किग तथा कपड़ेका व्यापार होता हैं।

कलकत्ता—मेसर्स गणेशदास उदयचन्द, ५८ क्रासस्ट्रीट-इस फर्मपर कपड़ेका तथा हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

सरदार शहर—मेसर्स जेठमल श्रीचन्द—यहां हुण्डी चिट्ठीका काम होता है। यहां आपकी स्थाई सम्पत्ति भी बहुत है।

मेसस जीवनदास चुन्नीलाल दूगड़

इस फर्मके वर्तमान सञ्चालक यहींके निवासी हैं। आप ओसवाल श्वेताम्बर जातिके सज्जन हैं। आपकी फर्मको स्थापित हुए ८० वर्ष हुए। इस फर्मको सेठ टीकमचंद जीके पुत्र सेठ मूलचन्द जी सेठ जीवनदास जी, सेठ शिवजी रामजी तथा सेठ दानसिंह जीने मिलकर स्थापित की सेठ दानसिंहजी

श्री०रावतमलजी पींचा (आसकरण पांचीराम) सरदारशहर

स्व०सेठ चुन्नीलालजी दूगड़ (जी० चु०) सरदारशहर

सेठ भानीरामजी दूगड़ (बींजराज भेरोंदान) सरदारशहर

सेठ चन्दनमलजी, दूगड़ (जीवनदास चुन्नीलाल) सरदारशहर

बड़े प्रतिभा सम्पन्न एवं व्यापार कुशल थे। आपहीकी वजहसे इस फर्मकी तरक्की हुई। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ चुन्नीलालजी हुए। आपने भी अपने व्यवसायको उन्नतिपर पहुंचाया। वर्तमानमें आपके दो पुत्र इस फर्मका सञ्चालन कर रहे हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

कलकत्ता—मेसर्स कुशलचन्द चुन्नीलाल ३६ आर्मेनियन स्ट्रीट T.A.Mahajan---इस फर्मपर बैङ्किग हुंडी चिट्ठी तथा जूटका व्यापार होता है।

सिराजगंज—टीकमचन्द दानसिंह—-इस स्थानपर आपकी जमींदारीका काम होता है।

इसके अतिरिक्त भड़ंगामारी (रंगपुर), मीरगंज (रंगपुर), सोना टोला, (बोगड़ा), जवाहर वाड़ी (रंगपुर)आदि स्थानोंपर भी आपकी शाखाएं हैं। सरदार शहरमें भी आपकी स्थाई सम्पत्ति बनी हुई है।

मेसर्स पूसराज रुघलाल आँचलिया

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ पूसराजजीके पुत्र श्री सेठ रुघलालजी, सेठ सुजानमलजी, सेठ हजारीमलजी और सेठ मिलापचन्दजी हैं। आप ओसवाल तेरापंथी सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ८० वर्ष हुए। विशेष तरक्की सेठ पूसराजजीके हाथोंसे हुई। वर्तमानमें आपके चारों पुत्र ही दुकानका सञ्चालन करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

कलकत्ता—मेसर्स चोथमल गुलाबचन्द, मनोहरदास कटला ११३ क्रास स्ट्रीट—इस फर्मपर कपड़ेका तथा हुंडी चिट्ठी और बैंकिंगका काम होता है। इस फर्मपर डायरेक्ट माल विलायतसे आता है।

सरदार शहर—यहां आपके मकानात आदि बने हैं।

मेसर्स बींजराज तनसुखदास दूगड़

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ बींजराजजीके पुत्र सेठ तनसुखरायजी और सेठ पूसराजजी हैं। आप ओसवाल जातिके सज्जन है। इस फर्मका स्थापन आपके पिता सेठ बींजराजजीने किया। सेठ बींजराजजी बड़े होशियार और व्यापार दक्ष पुरुष थे। आपहीके हाथोंसे इस फर्मकी तरक्की हुई। बीकानेर दरबारने आपको खास रुक्के तथा छड़ी इनामतकी हैं। आपका देहावसान हो चुका है। कहते हैं आपके मोसरमें सारे सरदार शहर और आसपासके गांववाले निमंत्रित किये गये थे। सेठ पूसराजजी बीकानेर स्टेटकी लेजिस्लेटिव्ह कौंसिलके ६सालसे मेम्बर हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स बींजराज तनसुखदास, मनोहरदास कटला ११३ क्रास स्ट्रीट—यहां कपड़ा तथा हुंडी चिट्ठीका काम होता है। सरदार शहरमें आपकी अच्छी इमारतें बनी हुई हैं।

मेसर्स बींजराज भैरु दान

इस फर्मके मालिक सेठ भैरु दानजीके पुत्र सेठ भानुरामजी हैं। आप ओसवाल सज्जन हैं। सेठ भैरू दानजी सेठ बींजराजजीके तीन पुत्रोंमेंसे बड़े पुत्र थे। दो छोटे पुत्रोंकी फर्मका परिचय पिछे दिया जा चुका है। सेठ भानुरामजी बड़े सज्जन व्यक्ति हैं। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम कुंवर रामलालजी हैं। आप शिक्षित और विद्या-प्रेमी नवयुवक हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स बींजराज भैरू दान मनोहरदास कटला ११३ कास स्ट्रीट—इस फर्मपर कपड़े का थोक तथा फुटकर व्यापार होता है। आपके यहां डायरेक्ट विलायतसे माल आता है।

बैंकर्स

डेढ़राज गौरीदत्त
मक्खनराम रामलाल
शिवनारायण डूंगरमल
हरद्वारीमल डेढ़राज

कपकड़ेके व्यापारी

खेतसीदास शिवनारायण
जेठमल पूसराज
तनसुखदास कालूराम
नेमचन्द भंवरीलाल

चांदी-सोनेके व्यवसायी

मेघराज रतनलाल

गल्लेके व्यापारी

खेतसीदास शिवनारायण
गोविन्दराम रावतमल

ऊनके व्यापारी

कासम दीना बोपारी

श्री डूंगरगढ़

मेसर्स हनुतराम ताराचन्द सदाराम झंवर

इस फर्मका हेड ऑफ़िस महिमागंज़ (रंगपुर) में है। इसकी स्थापना हुए करीब ५० वर्ष हुए। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ आशारामजी झंवर हैं। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना आपके पिता सेठ ताराचन्दजीने की। ताराचन्दजीके दो पुत्र हैं, पहले सेठ आशारामजी और दूसरे सेठ रुघलालजी हैं। आप दोनोंही सज्जन व्यक्ति हैं। सन् १९२५में सेठ आशारामजीको रायसाहबकी पदवी प्राप्त हुई है। आपके चचा श्री० सेठ सदारामजी अभी विद्यमान हैं।

इस खानदानकी ओरसे कई कुएं, धर्मशाला, तालाव, मन्दिर आदि, भिन्न २ स्थानोंपर बने हुए हैं। सार्वजनिक कार्योंमें भी आप उदारतापूर्वक दान देते हैं। माहेश्वरी पंचायतमें यह खानदान बहुत उत्साहसे भाग लेता है। इस खानदानकी ओरसे यहां एक स्कूल और औषधालय तथा महिमागंजमें एक मिडिल स्कूल चल रहा है।

आपका हेड ऑफीस महिमा गंज में है इसके अतिरिक्त गुनारपाड़ा, नलड़ांगा, कलकत्ता और अबोहर मण्डी (पञ्जाब) में शाखाएं हैं। जिनपर, जूट, गल्ला और वैङ्किंग व्यापार होता है।

० सदारामजी झंवर (हणुतराम ताराचन्द) डूंगरगढ़

से० आसारामजी झंवर (हणुतराम ताराचन्द) डूंगरगढ़

सेठ रुघलालजी झंवर (हणुतराम ताराचन्द) डूंगरगढ़

सेठ कन्हैयालालजी झंवर (हणुतराम ताराचन्द) डूंगरगढ़

कोटा, बून्दी और झालरापाटन

KOTAH BUNDI

&

JHALRAPATAN

कोटा

-:o:-

बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवेके ब्राडगेज सेक्शनमें रतलाम और मथुराके बीच कोटा जंक्शनका सुन्दर और रमणीक स्टेशन बना हुआ है। इस स्टेशनसे पांच मील दूरीपर कोटा शहर बसा हुआ है। यहाँके वर्तमान महाराजा श्रीमान् उम्मेदसिंहजी सुप्रसिद्ध हाड़ा वंशके वंशज हैं। जिस प्रकार हाड़ा वंशका प्राचीन इतिहास उज्वल और गौरवपूर्ण है, उसीप्रकार महाराज उम्मेदसिंहजीका वर्तमान जीवन भी अत्यन्त उज्वल और गौरवपूर्ण है। आप उन चुने हुए देशी राजाओंमें हैं, जिन्होंने अपनी प्रजाके लिये, अपने किसानोंके लिए, राज्यमें सब प्रकार की सुविधाएं कर रक्खी हैं। तथा जिन्होंने समाजसुधारके पवित्र क्षेत्रमें बहुत अग्रगण्य और उत्साह पूर्वक भाग लिया है। जिन्होंने जनताकी शिक्षाके लिए भी सब प्रकारके द्वार खोल रक्खे हैं। जो प्रजाकी गाढ़ी कमाईके पैसेको विलासकी नदीमें न बहाकर उसका सदुपयोग कर रहे हैं और जिन्होंने बेगारके समान भयङ्कर प्रथाको अपने राज्यमें बन्द कर दिया है। इन सब दृष्टियोंसे महाराजा कोटाने जो व्यवहारिक कार्य्य कर दिखलाये हैं, वे प्रत्येक देशी राज्यके लिए अनुकरणीय है।

किसानोंकी सुविधाके लिए कोटा राज्यकी ओरसे कई स्थानोंपर कोआपरेटिङ्ग बैंक खुले हुए हैं, जहांसे किसानोंको उत्तम और पुष्ट बीज सप्लाय किया जाता है तथा कम व्याजपर रुपया कर्ज दिया जाता है। इसके अतिरिक्त इस राज्यने कृषिके लिए आवपाशीका भी बहुत अच्छा प्रवंध कर रक्खा है और भी सब प्रकारके सुभीते कोटा-स्टेटके किसानोंको प्राप्त हैं। हाड़ौतीका प्रान्त वैसेही बहुत उपजाऊ प्रान्त है। उसपर कोटा नरेशके समान उदार नरेशोंकी छत्रछाया होनेके कारण तो वह बिलकुल हरा भरा, और सुजलां, सुफलां होरहा है।

व्यापारिक स्थिति

जिन दिनों अफीमका मार्केट खुला हुआ था उन दिनों कोटा भी अफीमके व्यापारिक केन्द्रोंमें एक प्रधान था। अफीमका यहाँपर बहुत अच्छा व्यापार होता था, यद्यपि अब भी इस व्यापारके बचे खुचे खण्डहर यहांपर नजर आते हैं, मगर अब उसकी प्रधानता नहीं हैं। इस समय कोटेमें

गल्लेका व्यापार प्रधान है। उसमें भी खासकर गेहूं और अलसीका व्यापार यहां बहुत होता है। हाड़ोतीके उपजाऊ प्रान्तका लाखों मन गल्ला यहांके बाजारोंमें आता है और बिकता है। जिन दिनों स्टेटसे गल्लेकी निकासी खुली रहती है उन दिनों यहांसे बहुतसा गल्ला एक्सपोर्ट होता है।

गल्लेके सिवाय यहांपर हाथकी बनी हुई खादीका व्यवसाय भी अच्छा होता है। यहांके आसपासके देहातोंमें कई प्रकारकी बढ़िया नमूनोंकी खादियां तैय्यार होती हैं। ये सब कोटेमें आकर बिकती है और यहांसे बाहर एक्सपोर्ट होती हैं। यहांकी पगड़ियां, डोरिया मजलिन चोखाने, पेचे आदि मशहूर हैं। पेचे यहांसे एक्सपोर्ट भी होते हैं।

दर्शनीय स्थान

यादगार—यह यहांका सबसे बड़ा बगीचा है। इसकी बनावट बड़ी सुन्दर है। इसमें महाराजाके महल, आदि दर्शनीय हैं। छत्रियाँ भी बहुत सुन्दर बनी हुई हैं। इसी बागमें टेनिस ग्राऊण्ड, फुटबाल ग्राउण्ड आदि बने हैं। कोटा नरेश यहां टेनिस खेलनेके लिएआते हैं।

जल महल—यह कोटा शहरके पासही एक तालाबके मध्यमें बना हुआ है। तालाबके किनारेकी छतरियां बहुत सुन्दर बनी हुई हैं। इन छतरियोंसे इस महलका दृश्य बहुत सुन्दर मालूम होता है। दर्शनीय वस्तु है।

महाराजाका गढ़—यहां महलको गढ़ कहते हैं। यह महाराजाके निवासका महल है। प्रसिद्ध चम्बल नदीके किनारे बना हुआ है। नदीसे इसका दृश्य बहुतही सुन्दर मालूम होता है। कभी २ बरसातमें नदीका पानी इस महलकी खिड़कीके किनारे तक पहुंच जाता है। उस समयका दृश्य अपूर्व होजाता है।

अधर शिला—यह पहाड़ी स्थान है। यहां एक पत्थर ऐसा आगया है मानों अभी गिरनेवाला है। पर नहीं गिरता, कई बरसोंसे ऐसाही अधर रूपमें पड़ा है। यह स्थान भी चम्बलके किनारे है। यहांसे चम्बलका टेढ़ा मेढ़ापन बहुत सुन्दर मालूम होता है।

गेपरनाथ—यह भी एक पहाड़ी स्थान है। यह कोटासे करीब पांच छः मीलकी दूरीपर बना हुआ है। यहांका सीन अपूर्व है। यहां प्रकृतिकी कृपासे एक चौरस कुण्ड बना हुआ है। इसमें सर्वत्र २ हाथ पानी रहता है। इसमें तैरनेवाली रंगबिरंगी मछलियां बड़ी भली मालूम होती हैं। वाटरफाल का सीन मनको मोह लेता है। स्थान दर्शनीय है।

इनके अतिरिक्त गोपालमन्दिर, मथुरादीशका मन्दिर, गर्ल्स स्कूल, कर्जन मेमोरियलहाल आदि स्थान भी देखनेयोग्य हैं। मथुरादीशका मन्दिर यहां तीर्थ समझा जाता है। बाहरके यात्रियोंकी भी यहां काफी भीड़ रहती है।

सामाजिक जीवन

कोटेका सामाजिक जीवन दूसरे देशीराज्योंकी अपेक्षा आगे बढ़ा हुआ है। इसका कारण यह है कि कोटा राज्य स्वयं इन बातोंमें दिलचस्पी रखता है। इस राज्यमें बाल विवाह, वृद्ध विवाह आदि सब प्रकारकी कुरीतियोंको दूर करनेवाले बहुत सुन्दर और बढ़िया कानून बने हुए हैं, इस क्षेत्रमें राजपूताने और सेंट्रल इण्डियाकी तमाम रियासतोंमें शायद यही राज्य पहला है। जिसने इतना अग्र पार्ट लिया है।

यहां एक वैश्य सुधारक मण्डल भी स्थित है। यह मण्डल भी समाज सुधारके कार्य्योंमें प्रेक्टिकल रूपसे भाग लेता है। इसकी वजहसे कोटामें कई समाज सुधारके कार्य्य हुए हैं। इस मण्डलने केवल कोटेहीमें नहीं प्रत्युत सारे राजपूतानेकी सार्वजनिकसंस्थाओंमें अच्छा स्थान प्राप्त कर लिया है। इसके मुख्य कार्य्यकर्ता श्रीयुत मोतीलालजी पहाड्या हैं। आप बड़े उत्साही और व्यवहारिक कार्य्यकर्ता हैं।

शिक्षाके सम्बन्धमें भी यहां राज्यकी ओरसे अच्छा प्रबन्ध है यहांपर एक बहुत बड़ी कन्याओंकी पाठशाला बनी हुई है। इसके अतिरिक्त हर्बर्ट कॉलेज, नार्मलस्कूल, नोबेलस्कूल इत्यादि और भी बहुतसी शिक्षा-संस्थाएं चल रही हैं।

मण्डियां

कोटा स्टेटमें बारां, रामगंज, मनोहरथाना और मण्डाना ये मण्डियां बहुत अच्छी हैं। बारां जी० आई० पी० के कोटा बीना सेंक्शनके बीचमें बसी हुई है। इस मण्डीमें गल्लेका बहुत बड़ा व्यापार होता है। यहांपर लाखों मन गल्ला आमदरफ्त होता है। गल्लेके अच्छे २ व्यापारी यहांपर निवास करते हैं। दूसरी रामगञ्ज मंडी बी० बी० सी० आई०के ब्राडगेज सेक्शनके सुकेतरोड नामक स्टेशनपर बसी हुई हैं। यहांपर गल्ले और रुईका अच्छा व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त यहांपर पत्थरकी खदानें होनेसे पत्थरका व्यवसाय भी यहाँ खूब होता है। यहांसे पत्थर निकास भी बहुत होता है। इसके अतिरिक्त, चेचत, मण्डाना, पनवाड़ मनोहरथाना आदि स्थानोंपर भी गल्लेका तथा कपास और अलसीका बहुत व्यापार होता है *।

——

* इन सब मन्डियोंके व्यापारियोंका परिचय हमें प्राप्त न हो सका इसका हमें अत्यन्त खेद है। हो सका तो अगले संस्करणमें सब सम्मिलित कर दिया जायगा।

बैंकर्स

मेसर्स गनेशदास हमीरमल

इस प्रतिष्ठित फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान जैसलमेर है। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं। सन् १७६३ में सर्व प्रथम सेठ बहादुरमलजी यहां आये थे और कुछ समय बाद आपने अपना स्वतन्त्र व्यवसाय आरम्भ किया जब आपका व्यवसाय जम गया तो आपने अपने चार भाइयोंको भी यहां बुला लिया। और सब साथमें व्यवसाय करने लगे। धीरे २ इस कुटुम्बके व्यापार की इतनी तरक्की हुई, कि उस समय भारतके विभिन्न प्रान्तोंमें इस फर्मकी ३५० दूकाने थीं। सुदूर चीन और शंघाईमें भी आपकी दूकानें थी। पश्चात् कुछ समयके सब भाइयोंके जिम्मे सेठ बहादुरमलजीने अपनी मौजूदगीमें ही अलग २ दूकानोंका कारोबार कर दिया। आपके भाई सेठ जोरावर मलजी उदयपुर गये, जिनके वंशजोंमें वर्तमानमें रा० ब० श्री सिरेमलजी बापना प्राइम मिनिस्टर इन्दौर हैं। दूसरे सेठ मगनीरामजी रतलाम और तीसरे सेठ हिम्मतरामजी इन्दौर तथा चौथे श्री सवाईरामजीने पाटनमें अपना व्यवसाय जमाया। सेठ बहादुरमलजीका विचार एक बहुत बड़ा संघ निकालनेको था पर आप ऐसा न कर सके। इसप्रकार गौरवमय जीवन बिताते हुए आपका देहावसान सम्वत १८९२ में हुआ।

सेठ बहादरमलजीके कोई संतान न थी, इसलिये उनके छोटे भाई सेठ मगनीरामजीके द्वितीय पुत्र सेठ दानमलजी यहां गोदी लाये गये। सेठ दानमलजीने अपने पिताजीकी आज्ञानुसार संवत् १९८२ में एक विशाल संघ निकाला। इस संघमें सैकड़ों साधु साध्वियां। श्रावक और करीब १५०० पूज्य आचार्य आदि थे। इस संघमें करीब ८० हजार आदमी ४ तोपें और कई राज्योंके लवाजमें थे। इस प्रकार दलबलके साथ यह संघ जैन मन्दिर और धर्मशालाओंका जीर्णोद्धार करवाता हुआ तीन मासमें सिद्धाचल पहुँचा। इस संघमें इस कुटुम्बकी ओरसे करीब २०—२५ लाख रुपया व्यय हुआ था। यह कुटुम्ब उस समय राजा महाराजाओंमें व गव्वर्नमेंटमें बहुत सम्मानित था। सेठ दानमलजीने वृटिश गव्वर्नमेंटकी गदरके समय बहुत सहायताकी थी। आप देवलीके गव्वर्नमेंट खजानेके ऑनरेरी ट्रेझरर थे और तबसे सेठ दानमलजी खजाञ्चीके नामसे आपहीके पास खजाना चला आता है। सेठ दानमलजीके भी कोई सन्तान नहीं थी। इसलिये रतलामसे आपके बड़े भाई सेठ भभूतसिंहजीके तृतीय पुत्र श्रीहमीर मलजी यहां गोदी लाये गये।

दिवान बहादुर सेठ केशरीसिंहजी कोटा

बिल्डिंग (सेठ केशरीसिंहजी) कोटा
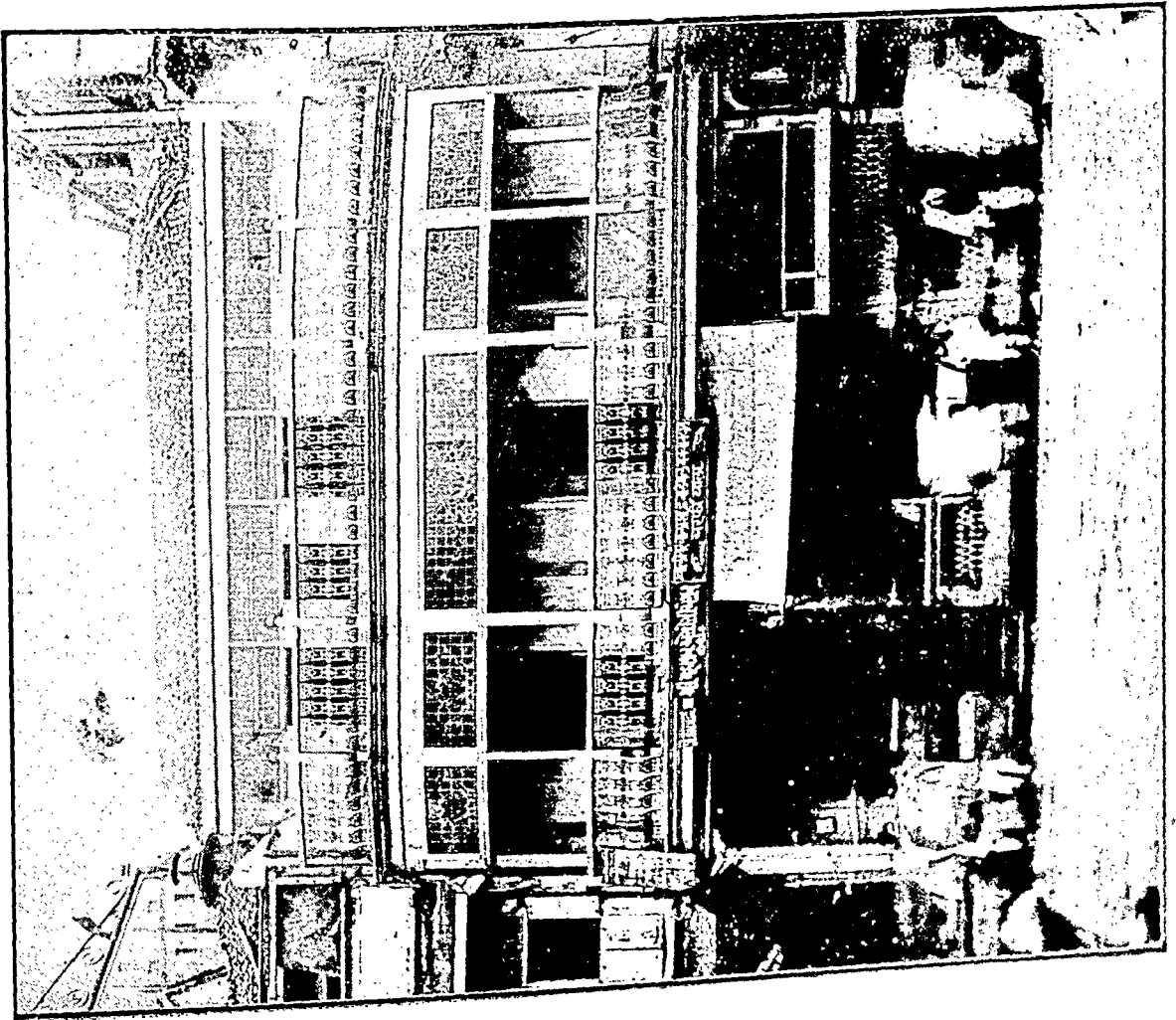
बिल्डिंग (सेठ केशरीसिंहजी) बम्बई

सेठ हमीरमलजीके समयमें इस फर्मकी कीर्ति और व्यापारमें बहुत वृद्धि हुई। सवत १९२० में आपके पुत्र श्री कुंवर राजमलजीका जन्म हुआ। कुंवर राजमलजीके सम्वत १९५४ में ३४ वर्षकी अवस्थामें देहावसान होजानेसे सेठ दानमलजीके चित्तको भारी धक्का पहचा। कुंवर राजमलजीके देहावसानके समय १ पुत्र और ४ पुत्रियां मौजूद थीं।

वर्तमानमें इस प्रतापी फर्मके मालिक श्री राजमलजीके पुत्र दीवान बहादुर सेठ केसरीसिंहजी हैं। आपके काका साहब, रतलामके प्रसिद्ध सेठ श्रीचाँदमलजी बापनाके कोई सन्तान न होनेसे उन्होंने अपनी सारी सम्पत्तिका मालिक आपको बना दिया।

सेठ केशरीसिंहजीको गवर्नमेन्टने सन १९११ई० में रायसाहबको सन १९१९ ई०में "राय-बहादुर"की और सन १९२५ई०में दीवान बहादुरकी पदवीसे सम्मानित किया है। आपको, जेसलमेर, कोटा, और बून्दीके दरबारोंने पुश्त दर पुश्तके लिये पैरोंमें सोना बख्शा है तथा जोधपुर, बूंदी, कोटा और रतलामके दरबारोंसे आपको ताजिम भी प्राप्त है। हालहीमें टोंककी बेगम साहिबाने सेठ-केशरीसिंहजीके घरमें स्त्रियोंको पैरमें जवाहरात और जोधपुर महारानी साहिबाने ताजीम बख्शी है।

दीवानबहादुर सेठ केशरी सिंहजीका देशी राज्योंमें बहुत सम्मान हैं। आपके यहाँ होने वाले शुभ कार्योंमें समय समयपर महाराजा उदयपुर, महाराज जोधपूर, महारावजीकोटा, महाराजा रतलाम, नवाब साहिब टोंक नवाब साहिब जावरा, रीवां दरबार आदि नरेशोंने पधारकर आपकी शोभा बढ़ाई थी अभी ४ वर्ष पूर्व राजपूतानेके एजंट सर० आर० ई० हालेंड के० सी० एस० आई आपके यहां आपके भानजेके विवाहके समय पधारे थे एवं २ घन्टे ठहरकर मजलिसमें सम्मिलित होकर भोजन किया था।

आपकी फर्म राजपूताने और सेंट्रलइन्डियामें प्रसिद्ध बैंकर और गव्हर्नमेन्ट ट्रेभरर है। देशी रियासतमें रहते हुए भी गव्हर्नमेन्टने खास तौरपर इस फर्मको ब्रिटिश प्रजा मानी हैं। आप देशी रियासतोंकी कोर्टोंमें जानेसे मुस्तसना हैं। हरेक मामलेमें मुनीमके नामसे केवल कैफियत भेज दीजाती है। कई रियासतोंमें आपके बही खाते भी मुस्तसना हैं। यदि किसी आवश्यकता विशेषपर आपके वहीखाते देखना पड़ें तो जजको आपकी फर्मपर आना पड़ता है उसके लिये उन्हें किसी प्रकारकी फीस नहीं दीजाती। इसफर्मके तीन चार मुनीमोंको टोंक स्टेटने मय जनानेके पेरोंमें सोना बख्शा है।

इस कुटुम्बकी ओरसे स्थान २ पर करीब १२ मन्दिर बने हुए हैं पालीतानामें १०० वर्षोंसे आपका एक अन्नक्षेत्र चलरहा है। आपने कई जैन मन्दिरों और धर्मशालाओंका जीर्णोद्धार करवाया है। रतलाममें आपकी एक जिनदत्त सूरिजैन पाठशाला चल रही है अभी हालहीमें बनारस हिन्दू युनिवर्सिटीके कम्पाउण्डमें एक जैन मन्दिर और जैन होस्टल बनानेके लिये आपने माल-वीयजीको ५१०००) दिये हैं।

इस फर्मकी अजमेर, कोटा, बूंदी जेसलमेर, बम्बई, रतलाम आदि स्थानोंपर कई बिल्डिंगे बनी हुई हैं। जैसलमेरकी आपकी बिल्डिंग बड़ी भव्य है। इस फर्मकी बूंदी और टोंक रियासतमें १० हजार रुपयोंकी जागीर है। जब दि० बा० सेठ केशरीसिंहजी बूंदी जाते हैं तो आपकी ३ मीलतक पेशवाई होती है। सेठ साहबके १ पुत्र हैं जिनका नाम कुँवर बुद्धसेनजी हैं। इनका जन्म संवत् १६७७ में हुआ।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कोटा—मेसर्स गनेशदास हमीरमल (T. A Bahadur) यह इस फर्मका हेड ऑफिस है। यहां बैङ्किग, हुण्डी चिट्ठी, अफीम और आढ़तका व्यापार होता है।

(२) जेसलमेर—मेसर्स मगनीराम भभूतसिंह यहां अफीमका काम होता है तथा आपकी कई अच्छी हवेलियां बनी हुई हैं।

(३) रतलाम—मेसर्स मगनीराम भभूतसिंह-हुण्डी, चिट्ठी बैङ्किग तथा आढ़तका काम होता है। यह फर्म रतलाम इलैट्रिक सप्लाई कम्पनी की मैनेजिंग एजंट है।

(४) बम्बई—मेसर्स गनेशदास सोभागमल, बम्बादेवी-T. A. Bahana यहां इस बैङ्किग तथा चीन जापान और जर्मनीसे कपड़े और ऊनका एक्सपोर्ट इम्पोर्ट होता है। यह फर्म बम्बईकी कई जैन संस्थाओंकी ट्रस्ट है।

(५) कलकत्ता—मेसर्स गनेशदास दीवानबहादुर केशरीसिंह नं १४२ कॉटन स्ट्रीट T.A.Modesty यहां हुण्डी चिट्ठी और आढ़तका काम होता है।

(६) इन्दौर—सेठ चांदमलजीकी कोठी—यहाँ ओपियम सप्लाईका काम होता है।

(७) उदयपुर—दि० ब० केशरीसिहजी खजांची—रेसिडेन्सी ट्रेझरर

(८) हैदराबाद (दक्षिण) दि० ब० केशरीसिंहजी खजांची—यहाँ निजामस्टेटको अफीम सप्लाईका काम और बैङ्किग व्यवहार होता है।

(९) आबू—दीवान बहादुर केशरीसिहजी खजांची—एजेन्सी ट्रेझरर

(१०) नीमच—पूनमचंद दीपचन्द—यहां गवर्नमेंट तथा देशी राज्योंको अफीम सप्लाई और बैङ्किग काम होता है। बांसवाड़ा और प्रतापगढ़की एजंसीका खजाना भी इस फर्मके ताल्लुक है।

(११) निम्बाहेड़ा—पूनमचन्द दीपचन्द, टोंक स्टेटकी निजामतका खजाना इसके जिम्मे है।

(१२) जावरा—मेसर्स पूनमचन्द दीपचन्द—हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

(१३) मन्दसोर—मेसर्स पूनमचंद दीपचंद " "

(१४) नांदवेल—(गवालियर स्टेट) मेसर्स गनेशदास लखमीचन्द—किसानी, लेन देन होता है।

स्व० सेठ करमचन्दजी कोटावाला
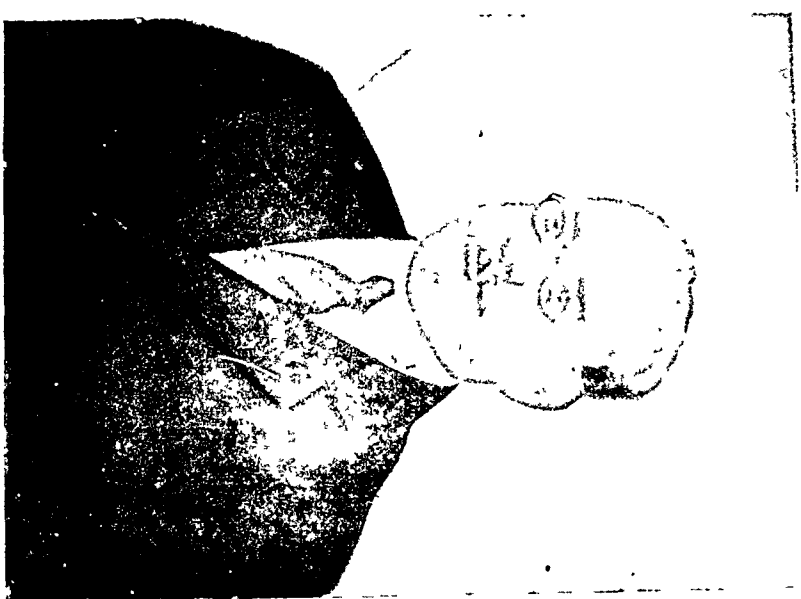
राव बहादुर सेठ पूनमचन्द करमचन्द, कोटावाला

(१५) खारवा—(नीयर महत्पुर) – चांदमल केशरीसिंह—यहां सुपरिन्टेन्डेसीके खजाञ्ची हैं

(१६) टोंक—मेसर्स मगनीराम भभूतसिंह—यहां पर टोंक स्टेटका खजाना है ।

(१७) छबड़ा—(टोंक)—पूनमचन्द दीपचन्द—यहां निजामतका खजाना है तथा मनोतीका काम होता है ।

(१८) सिरोंज (टोंक)—भभूतसिंह पूनमचन्द—यहां निजामतका खजाना है। तथा आसामी लेन देन होता है ।

(१९) पड़ावा (टोंक)—मेसर्स चांदमल केशरीसिंह—यहां निजामतका खज़ाना है। आपकी यहाँ एक जीन फेक्टरी है, तथा हुंडी, चिट्ठी और रुईका व्यापार होता है ।

(२०) झालरा पाटन—मेसर्स हमीरमल केसरीसिंह—हुण्डी, चिट्ठी और रुईका व्यापार होता है ।

(२१) बूंदी—मेसर्स गनेशदास दानमल—यहां रायमल नामक एक जागीरीका गांव हैं। इसके अतिरिक्त स्टेटसे नकद लेन देन और हुण्डी चिट्ठीका काम होता है ।

(२२) साँगोद—(कोटा स्टेट) मनोतीका काम होता है।

(२३) बारां (कोटा स्टेट) हमीरमल राजमल—आढ़त और मनोतीका काम होता है।

(२४) केसोराय पाटन (बूंदी) गनेशदास दानमल—मनोतीका काम होता है ।

राय बहादुर सेठ पूनमचन्द करमचन्द कोटावाला

इस फर्मके वर्तमान मालिक रा० ब० सेठ पूनमचन्दजी हैं। आपका मूल निवास स्थान पाटन (गुजरात) है। परन्तु बहुत समयसे कोटेमें रहनेके कारण आप कोटेवालेके नामसे मशहूर हैं। आप श्री श्रीमाल जैन जातिके सज्जन हैं ।

आपके पिता श्री सेठ करमचन्दजी बड़े धार्मिक एवं उदार व्यक्ति थे। आपने ७ संघ निकाले, एवं कोटेमें अष्टान्हिका महोत्सव, अञ्जनशलाका वगैरः कामोंमें करीब २ लाख रुपया व्यय किया। तथा आपने श्री शत्रुञ्जय पर्वतपर श्री पार्श्वनाथ स्वामीका एक भव्य मन्दिर बनवाया उसमें भी करीब ४० हजार खर्च हुआ ।

सेठ पूनमचन्दजी साहबने भी अपने पिताश्रीकी तरह धार्मिक एवं सामाजिक कार्योंमें लाखों रुपया दान किया। आप अभी तक करीब ५ लाखसे अधिकका दान कर चुके हैं जिसकी खास खास दो चार बड़ी २ रकमोंका विवरण नीचे दिया जाता है।

१—पाटनमें श्री स्तम्भन पार्श्वनाथ स्वामीकी धर्मशाला व उसके समारम्भमें ५० हजार रुपया।

२—पालीतानाकी धर्मशाला तथा उसके समारम्भमें करीब ४५ हजार रुपया ।

३—१९५६ के भयंकर दुष्कालमें अन्न गृह खोलकर अपंग मनुष्योंकी सहायतामें २५ हजार दिया।

४—१९६२ में पाटनकी श्वेतांबर जैन कान्फरेन्समें स्वागत कारिणी समितिके सभापति थे उसमें आपने करीब २० हजार रू० खर्च किया था।

५—संवत १९६७ में पाटनमें अन्न गृह खोलकर तथा डाक्टर कोठारीको नियत कर अपंग लोगोंको बहुत लाभ पहुंचाया, तथा कई तरहका गुप्त दान दिया, उसमें करीब बीस हजार रुपया।

६—बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयमें श्रीमदनमोहन मालवीयजीको १५००१)

जिसमें श्वेतांबर जैन बोर्डिंग हाऊसके लिये		५०००)
,, ,,	लॉजिंग	५०००)
,, ,,	स्थाई फंडमें	५००१)

७—हालहीमें कोटेमें आपने धर्मशाला व उपाश्रयका मकान तैयार करवाया जिसमें जैन साधु साधियोंके ठहरनेका अच्छा प्रबन्ध है। उसमें १००००) व्यय हुआ।

इसी प्रकार और भी कई धार्मिक कार्योंमें जिन सबका वर्णन देना यहां असम्भव है। आपने मुक्त हस्तसे दान दिया है।

यह तो हुई आपके धार्मिक जीवनकी बात। आपका सार्वजनिकजीवन भी बहुत मशहूररहाहै। आपको श्री पाटन बीशा श्रीमाली न्यात, श्री पाटन हेमचन्द्राचार्य जैन सभा, पाटनके (शहर-जीमणके समय) तमाम शहर निवासियोंकी ओरसे, आदि कई स्थानोंसे मानपत्र प्राप्त हुए हैं। इसके अतिरिक्त कड़ी प्रान्तकी रैयतके सभासदके नातेसे आप बड़ोदेकी पहिली धारा सभामें नियुक्त हुए थे। उस समय पाटनके समस्त महाजनोंकी तरफसे आपको मानपत्र दिया गया था। कड़ी प्रांतमें महाजन सभाके आप प्रेसिडेंट भी थे।

आपकी प्रतिष्ठाका सबसे बड़ा प्रमाण पत्र यह है कि संवत् १९७३ में शामला पार्श्वनाथजी-के प्राचीन तीर्थमें जैनियों और स्मार्तोंमें महादेवजीके लिये झगड़ा हुआ था उसमें आप दोनों पार्टि-योंकी ओरसे झगड़ा निपटानेके लिये प्रतिनिधि चुने गये थे। उस झगड़ेको आपने बड़ी चतुराईसे निप-टाया इस खुशीके उपलक्षमें बड़ोदेके दीवान मनू भाईने आपको अपने हाथोंसे मानपत्र दिया था।

धार्मिक व सामाजिक जीवनके अतिरिक्त आपका राजघरानोंमें भी सम्मान हैं। बड़ोदेके महाराज सयाजी राव गायकवाड़ स्वयं आपके यहां पधारे थे। कोटेके महाराजने आपको अपने भायातोंकी बैठकमें खास स्थान प्रदान किया हैं। इसके अतिरिक्त राधनपुर, पालनपुर, भावनगर, कच्छ मोरवी, गोंडल, धरमपुर, बीकानेर, झालरापाटन, आदि कई राजाओंके साथ आपका अच्छा सम्बन्ध है।
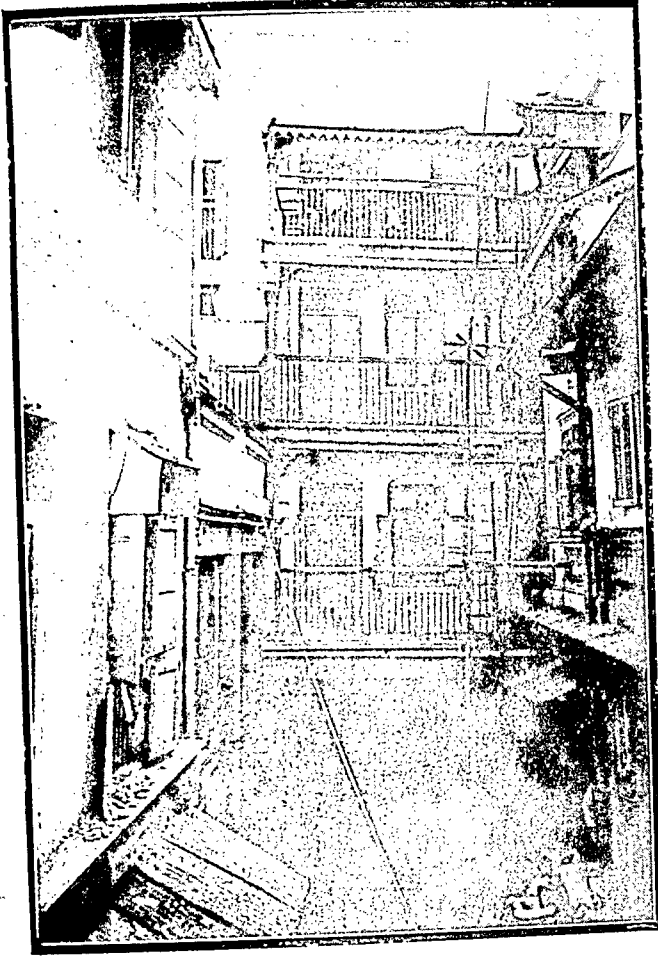
बम्बई बिल्डिंग, दिवान बहादुर केशरीसिंहजी कोटा

पाटनका बंगला, सेठ पूनमचन्द करमचन्द कोटा
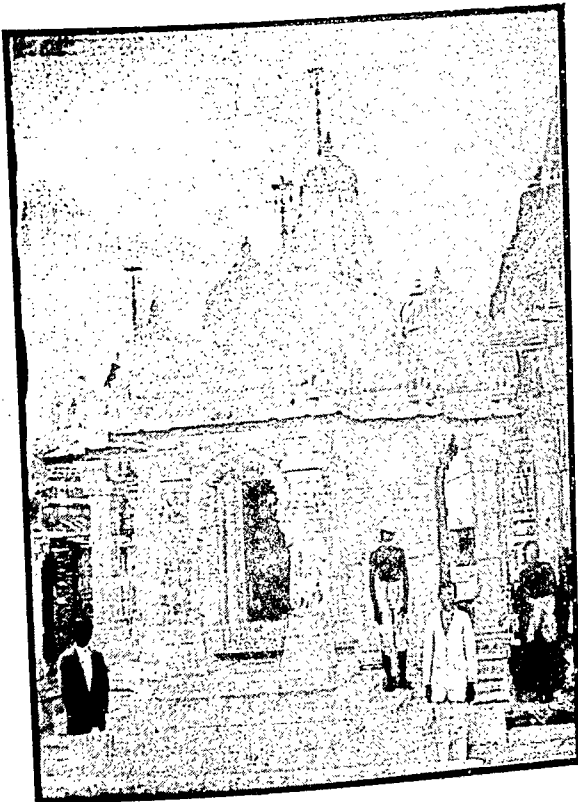
पालीताना आदीश्वरजी (पूनमचन्दकरमचन्द कोटा)
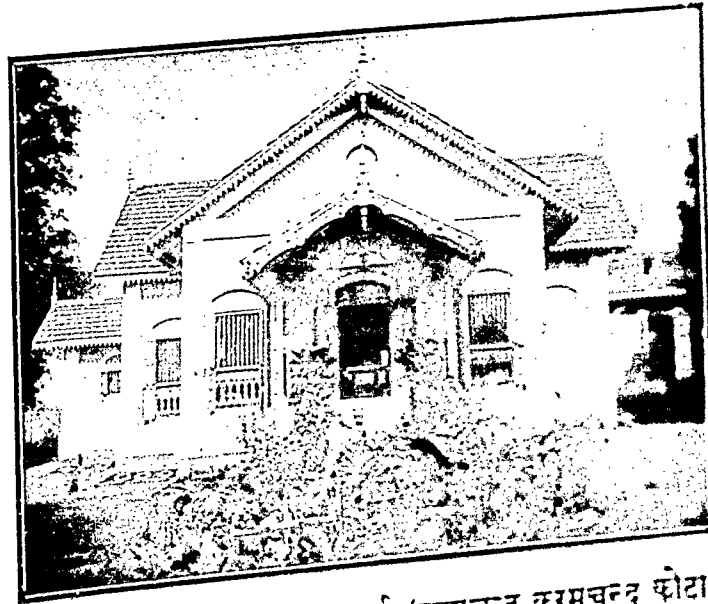
अन्धेरीका बंगला, बम्बई (पूनमचन्द करमचन्द कोटा)
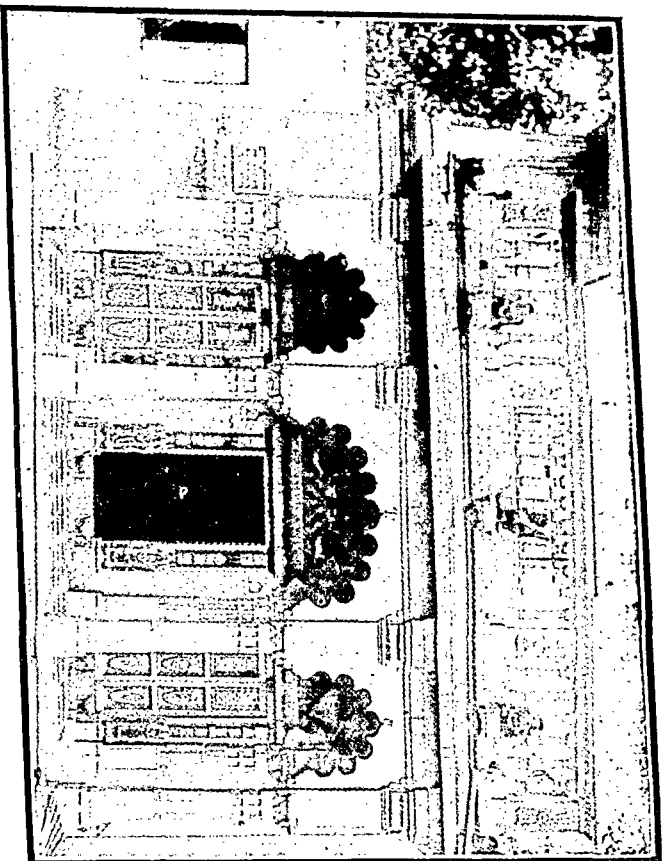
जैन मन्दिर पाटन धर्मशाला
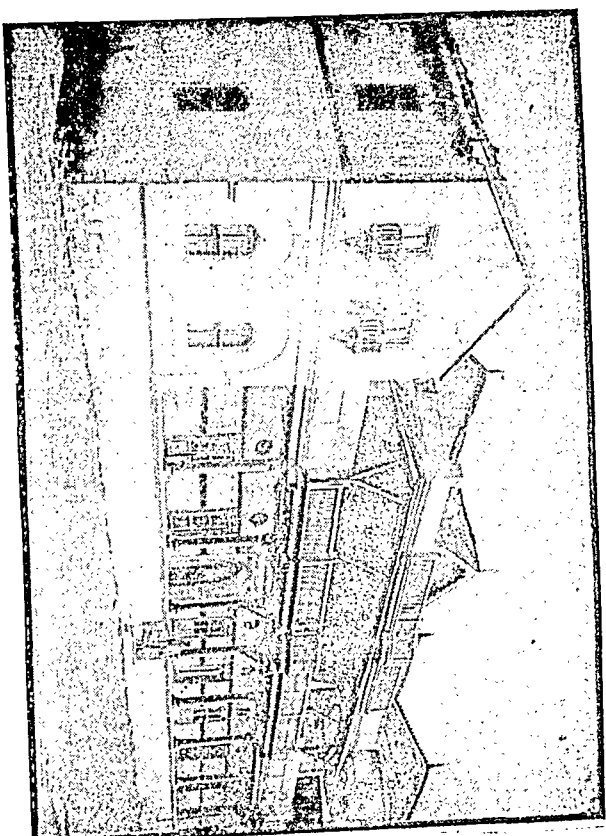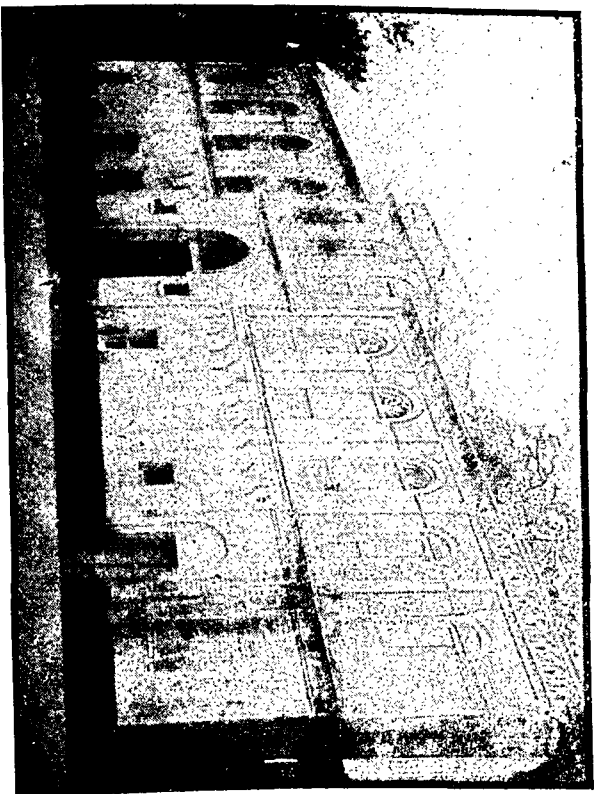
पालीताना धर्मशाला (पूनमचन्द करमचन्द, कोटा)
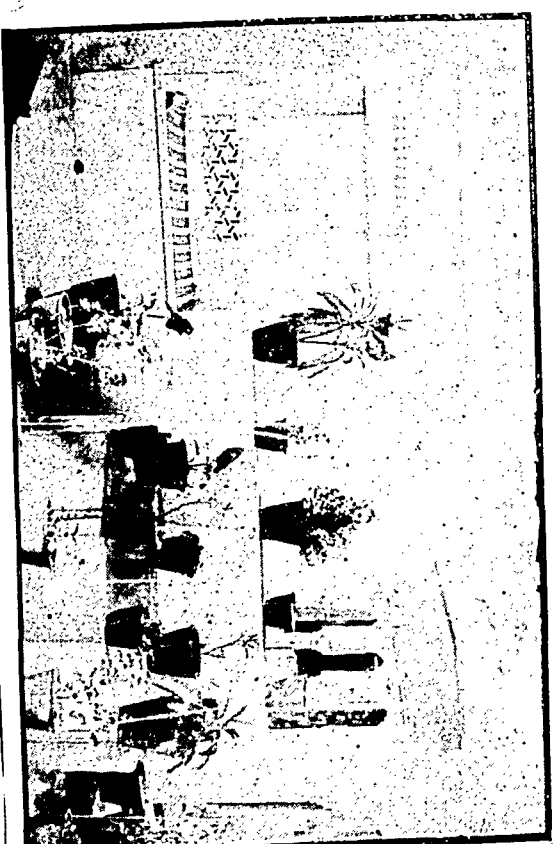
आपने अपने पिताजीकी स्मृतिमें सारे पाटनशहरको भोज दिया था, इसमें करीब एक लाख आदमी सम्मिलित हुए थे। इस अवसरपर आपने धार्मिक कार्योंके लिये भी करीब बीस हजार रुपये दान दिये थे। इस स्मृतिके उपलक्षमें जेठ वदी ११ को पाटनशहरमें अब भी अखता पाली जाती है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कोटा—हेड आफिस—मेसर्स पानाचन्द उत्तमचन्द—इस फर्मपर बैंकिंग ओपियम अनाज वगैरहका बिजिनेस होता है।

(२) बम्बई—मेसर्स पूनमचन्द करमचन्द कोटावाला, पुरुषोत्तम बिल्डिंग न्यू क्विन्स रोड। यहां शेयर्स, काटन, और बैंकिंगका वर्क होता है।

बैंकर्स

कोटा स्टेट कोआपरेटिव्ह बैंक
मेसर्स गनेशदास हमीरमल
,, जुहारमल गंभीरमल
,, पानाचन्द उत्तमचंद
,, मगनमल बच्छराज
,, मंगलजी छोटेलाल
,, राजरूप रामकिशनदास
,, लूनकरण शंकरलाल
,, रा० ब० समीरमलजी लोढ़ा ट्रेझरर
,, सर्वसुखदास मोतीलाल
,, हरलाल गंगाविशन

कपड़े के व्यापारी

गोवर्द्धन भंवरलाल
गोविंदराम भूरामल
चुन्नीलाल मोतीलाल छामुनियां
महावीर ट्रेडिङ्ग कम्पनी
मथुरालाल भूरालाल

चांदी सोनेके व्यापारी

गजानन्द नारायण
नंदराम किशोरीदास

गल्लेके व्यापारी

जमनादास दामोदरदास
फतेहराज गजराज
शांतिलाल साकलचन्द
सर्वसुख राजमल

जनरल मर्चेण्ट्स

बोहरा कमरुद्दीन रामपुरा
बिसाती करीमबख्श

किरानेके व्यापारी

कालूराम रामनारायण
जीवनराम पन्नालाल
शकूर अब्दुल्ला
संतू जी पन्नालाल
लक्ष्मीचंद लक्ष्मणलाल

—:०:—

डेंटिस्ट
रामचन्द्र गोपाल डेंटिस्ट

आइल एजण्ट
राजाराम पन्नालाल (एशियाटिक)

रिखमचंद केशरीमल (मोटर आइल)

लछमनप्रसाद हनुमानप्रसाद (वर्मा आइल)

साइकल गुड्स डीलर्स
राजपूताना साइकल स्टोर्स

वैद्य और डाक्टर
डाक्टर गुरुदत्तामलजी

वैद्य मुकुटविहारी लाल आयुर्वेदाचार्य

सांभर सींग और सांभर चर्मके—व्यापारी
एम० एस० वर्म्मा एण्ड संस रामपुरा

लायब्रेरीज
पब्लिक लायब्रेरी

महाबीर जैन लायब्रेरी

फोटोग्राफर्स एण्ड आर्टिस्ट
विशनजी फोटोग्राफर

रुपराय फोटोग्राफर

कारखाने
कोटा स्टेट ऑइल फेक्टरी

वाटर वर्कस कोटा

सार्वजनिक संस्थाएं
गोपाल मंदिर कन्याशाला

राजस्थान सेवा संघ अजमेर (कोटा ब्रान्च)

वैश्य सुधारक मंडल कोटा

विधवा-विवाह सहायक सभा

होटल और धर्मशाला
महारानीजी की धर्मशाला

हिन्दू धर्मशाला

बूंदी
कोटा शहरसे २० मीलकी दूरीपर यह शहर बसा हुआ है। यहांके महाराज भी सुप्रसिद्ध हाडा वंशके वंशज हैं। यह स्थान पहाडोंके बीचमें बडे रमणीक स्थानपर बसा हुआ हैं। यहांपर कई पहाड़ी स्थान बड़े दर्शनीय हैं। इस राज्यमें लाखेरी नामक स्थानपर सीमेंटका एक बहुत बड़ा कारखाना है। इस कारखानेका सीमेंट बूंदी सीमेंटके नामसे बिकता है। यहांकी आबादी करीब १४-१५ हजारके है। यहां कई प्राकृतिक दृश्य देखने योग्य हैं।

मेसर्स दौलतराम कुन्दनमल
इस फर्मके मालिक बूंदीकेही निवासी हैं। आप सरावगी वैश्य जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब १ शताब्दिसे अधिक हुआ, इसे सेठ दौलतरामजी और उनके पुत्र कुन्दनमलजी

ने स्थापित किया। इसके व्यापारको सेठ कुन्दनमलने विशेष तरक्की पर पहुंचाया। आपका देहाव-
सान संवत १९७१ में हुआ। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ कुन्दमलजीके पुत्र सेठ राजमलजी
और सेठ मदनमोहनजी हैं। आपके दो भाई गाढ़मलजी और नेमीचन्दजीका देहावसान हो गया
है। आपको बूंदी दरबारकी ओरसे सेठकी पदवी प्राप्त है। इस कुटुम्बकी ओरसे एक बाल सुबोधिनी
पाठशाला चल रही है। यहांपर आपका एक जैन मन्दिर है और एक धर्मशाला भी बनी हुई है।
इन्दौरके प्रसिद्ध जौहरी सेठ फतेलालजीके पुत्र आपके यहां व्याहे हैं।

इस समय सेठ राजमलजीके ३ पुत्र और गाढ़मलजीके ३ पुत्र हैं। सेठ राजमलजीके दो पुत्र
लालचन्दजी और कस्तूरचन्दजी व्यवसायमें भाग लेते हैं। आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस
प्रकार है।

(१) बूंदी—मेसर्स दौलतराम कुन्दनमल T. A. Daulat. यहां इस फर्मका हेड आफिस
है। तथा बैंकिंग, हुण्डी, चिट्ठी, और रुईका व्यापार होता है।

---

(२) बम्बई—मेसर्स दौलतराम कुंदनमल, कालबादेवी—T. A. Kashaliwal.—यहां रुई, जीरा,
ऊनका व्यापार तथा बैंङ्किग हुंडी चिट्ठी और कमीशन एजंसीका काम होता है।

इसके अतिरिक्त, केंकड़ी, सरवाड़, खादेड़ा, देवली, गुलाब .पुरा, बघेरा, नसीराबाद,
सादड़ीमें भी आपकी दूकाने हैं जिनपर रुई, हुण्डी चिट्ठी तथा आढ़तका काम होता है। केंकड़ी,
सरवाड़ देवली आदिसे ऊन खरीद कर यह फम विलायत भी भेजती हैं।

जीनिंग फेक्टरियां—सरवाड़, खादेड़ा, सादड़ी, केकड़ी। प्रेसिंग फेक्टरी—केंकड़ी।

बैंकर्स

मेसर्स उदयचंद कजोड़ीमल
„ गनेशदास दानमल
„ दौलतराम कुंदनमल
„ भवानीराम रतनलाल
सेठ रामसुख अगरवाला

कपड़े के व्यापारी

छोटीलाल गनेशलाल
पन्नालाल छुरीलाल

जगन्नाथ मन्नालाल (चांदी सोनेके व्यापारी)
नाथूलाल भूरालाल (किरानाके व्यापारी)
अब्दुल हुसैन हैदरभाई (जनरल मरचेंन्ट)
बोहरा कुतुबअली (जनरल मरचेंन्ट)

झालरापाटन

बी० बी० सी० आई ब्राडगेज सेक्शनके श्रीछत्रपुर स्टेशनसे १९ मीलकी दूरी पर यह शहर स्थित है। इसके वर्तमान महाराजा हिज हाईनेस महाराज राना सर भवानीसिंहजी बहादुर हैं। आप सुप्रसिद्ध झालावंशके वंशज हैं। आप बड़े विद्वान, विद्या-व्यसनी, उन्नत विचारोंके नरेश हैं। आपने अपनी रियासतमें शिक्षा देनेकी बहुत अच्छी व्यवस्था कर रक्खी है। इस रियासतमें ४१ शिक्षा सम्बन्धी संस्थाएं हैं। जिनमें मुफ्त शिक्षा दी जाती है। झालरापाटनमें एक हाईस्कूल भी है जिसका सम्बन्ध प्रयाग विश्वविद्यालयसे है। स्त्री शिक्षाका भी यहांपर बहुत अच्छा प्रबन्ध है। कहा जाता है कि राजपूतानेमें सबसे अधिक पढ़ी लिखी स्त्रियोंकी औसत यहीं पर है। झालरापाटन शहरमें आपने कुछ संस्थाएं ऐसी खोल रक्खी हैं जहां आप विद्वानोंके साथ कई विषयोंका वार्तालापकर आनन्द अनुभव करते हैं।

इस शहरमें कई तालाब बड़े रमणीक और दर्शनीय बने हुए हैं। ठण्डी झरी नामक स्थान भी यहां पर देखने योग्य है। कार्त्तिक और बैशाख मासमें यहां पर दो बहुत बड़े मेले लगते हैं। जिनमें हजारों पशु बिकनेके लिए आते हैं।

मिल आनर्स

मेसर्स बिनोदीराम बालचन्द

इस फर्मके मूल संस्थापक श्रीमान् सेठ बिनोदीरामजी हैं। आपका खानदान पहले नागौरमें रहता था। संवत् १८८१ में आप सबसे पहले नागौरसे झालरापाटन आये। संवत् १८६६ में आपके पुत्र श्रीमान् सेठ बालचन्दजीका जन्म हुआ। और संवत् १६२० में आपने बिनोदीराम बालचन्दके नामसे दुकान स्थापित की। उस समय झालरापाटनमें १०० बड़ी २ दुकानें अफीमका व्यवसाय करतीं थीं। श्री सेठ बिनोदीरामजी भी यही काम करते रहे। संवत् १९२३ में आपको इस व्यापारमें बहुत लाभ हुआ और इन्दौर आदि स्थानोंमें इस दुकानकी शाखाएं खोली गईं।

स्व० सेठ बालचन्दजी (विनोदीराम बालचन्द) झालरापाटन

स्व० सेठ दीपचंदजी S/o बालचंदजी, झालरापाटन

श्री० सेठ माणिकचंदजी सेठी, झालरापाटन

श्री० सेठ लालचंदजी सेठी, झालरापाटन

सेठ बालचन्दजी बड़े धर्मात्मा और सचाईके साथ रोजगार करने वाले व्यक्ति थे। इसीसे उनकी साख दूर २ तक जम गई थी। संवत् १९३९ में अफीमका भाव अधिक गिर जानेसे आपके कारोबारको बहुत धक्का पहुंचा। और कुछ लोगोंने इस नाजुक स्थितिसे नाजायज लाभ उठाना चाहा, लेकिन ऐसे नाजुक अवसर पर इन्दौरके तत्कालीन महाराजा तुकोजीराव (द्वितीय) ने आपकी बहुत सहायता पहुंचाई, जिससे आपकी साख कायम रह गई।

संवत् १९५६ में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके देहान्तके पश्चात् आपकी धर्मात्मा धर्मपत्नी श्रीमती पांची बाईने बड़े धीरजके साथ अपना वैधव्य जीवन बिताया। आपने अपने पतिदेवके पश्चात् मुनीम लूणकरनजी की सहायतासे दुकानके कारबारको भली प्रकार चलाया, और बालकोंकी शिक्षाका अच्छा प्रबन्ध कर दिया। श्रीमतीजीने एक लाख रुपया लगाकर अपने पतिदेवका औसर किया। संवत् १९८० में आप एक लाख रुपयेका दानकर स्वर्गस्थ हो गईं। इस दानकी व्यवस्थाके लिए विचार किया जा रहा है।

सेठ बालचन्दजीके चार पुत्र हुए, जिनके नाम क्रमसे श्रीयुत दीपचन्दजी, श्रीयुत माणिकचंद जी, श्रीयुत लालचन्दजी और श्रीयुत नेमिचन्दजी हैं।

श्री० दीपचन्दजी—आप बड़े धर्मात्मा, सरल प्रकृति और सादगी प्रिय व्यक्ति थे। आपने अपना सारा जीवन अत्यन्त सादगीसे बिताया। साधुसेवाका आपको बेहद् शौक था। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्रीयुत भंवरलालजी हैं।

श्री० माणिकचन्दजी—श्रीयुत माणिकचन्दजी बड़े विद्या प्रेमी और सामाजिक कार्योंमें उत्साह रखने वाले व्यक्ति हैं। आप खण्डेलवाल जैनजातिमें सबसे पहले विलायत यात्री हैं। विलायतमें आपके लिए भोजन सामग्री यहींसे जाती थी। आपको गवर्नमेन्टसे राय बहादुरका खिताब है। आप गवालियर नरेशके ए० डी० सी० हैं और वहांसे आपको ताजी रुल्मुकका खिताव प्राप्त है। झालावाड़ नरेशने भी आपको पांवमें सोना, वाणिज्य भूषणका खिताब और ताजीम बख्शी है। आप एजीलिंग क्लब गवालियर, वेलडिंगक्लब बम्बई, बाम्बे रेडियोक्लब बम्बई, राजेन्द्र इन्स्टीट्यूट झालावाड़, लेजिस्लेटिव्ह कौन्सिल गवालियर, एकानमिक डेव्हलेप मेंट बोर्ड गवालियर, मजलिसे आम गवालियर इत्यादि कई संस्थाओंके मेम्बर हैं। श्री गोपाल विद्यालय मुरैना तथा संख्याराजा धर्मशालाके आप ट्रस्टी हैं। लण्डनकी रॉयल एशियाटिक सोसायटीके भी आप मेम्बर हैं।

श्रीयुत लालचन्दजी सेठी—श्रीयुत लालचन्दजी बड़े विद्याव्यसनी और पुस्तक प्रेमी सज्जन हैं। आप कई सभा सोसायटियोंके मेम्बर हैं। जबसे आप स्थानीय म्युनिसिपल कमेटीके वाइस प्रेसिडेण्ट चुने गये हैं तबसे नगरमें बहुत सुधार हुए हैं। आपको श्री झालावाड़ सरकारसे ताजीम, वाणिज्य भूषणका खिताब और पांवमें सोना बख्शा हुआ है। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम कुं० विमल-

चन्द्रजी हैं। आपने हाल हीमें मैट्रिककी परीक्षा पास की है। आपको भी झालावाड़ राज्यसे पांवमें सोना और दरीखानेमें बैठक दी हुई है। सेठ लालचन्दजीका "सर भवानीसिंह पुस्तकालय" नामक घरू पुस्तकालय है इसमें सब भाषाओंकी करीब दस हजार पुस्तकें हैं।

श्रीयुत नेमीचन्दजी सेठी—श्रीयुत नेमीचन्दजी भी योग्य और सज्जन व्यक्ति हैं। आपको भी झालावाड़ दरबारसे पांवमें सोना बक्षा हुआ है। आपके भी कैलास पुस्तकालय नामक एक निजी पुस्तकालय है।

श्रीयुत भंवरलालजी सेठी—आप श्रीयुत दीपचन्दजी साहबके पुत्र हैं। आप बड़े योग्य, और स्पष्टवक्ता सज्जन हैं। आपके तीन पुत्र हैं जिनकी शिक्षा बहुत अच्छे ढङ्गसे हो रही है। आपको भी पठन, पाठन और पुस्तकोंसे बहुत प्रेम है। आपके पुस्तकालयमें बहुतसी हिन्दी पुस्तकोंका संग्रह है।

इस फ़र्मकी १६ दुकानें भारतके भिन्न २ शहरोंमें हैं। हेड ऑफिस झालरापाटन शहरमें है। सब दुकानों पर प्रधान मुनीम वाणिज्य रत्न लूणकरणजी पांडिया हैं। आप संवत् १९४५ से इस दुकान पर मुनीमीका काम करते हैं। सेठ बालचन्दजी अपनी मृत्युके समय सारा कारबार आपहीके जिम्मे कर गये थे, आपने उस कारबारको खूब उन्नति प्रदानकी। आप झालावाड़ केबिनेटके कामर्शियल मेम्बर हैं। आपको भी पांवमें सोनेका कड़ा बख्शा हुआ है।

इस फर्मकी उज्जैनमें विनोद मिल्स लिमिटेड नामक एक कपड़ेकी मिल बनी हुई है। यह मिल सन् १९१२-१३ में स्थापित हुई और सन् १९१४ में चालू हुई। इस मिलका केपिटल २१ लाख रुपया है। इसमें ७५० लूम्स और २३००० स्पेण्डिल्स हैं। तथा १५०० मनुष्य काम करते हैं। इस मिलमें एक बहुत बड़ा अस्पताल भी खुला हुआ है। इस औषधालयके द्वारा मिल मजदूरों और सर्व साधारणका औषधि दी जाती है। यहांके डाक्टर मिल मजदूरों और मिलके दूसरे कार्य्य कर्त्ताओंके घर रोगियोंको देखनेके लिये बिना फीस जाते हैं।

आपकी तरफसे श्री छत्रपुर स्टेशनके पास पन्द्रह हजारकी लागतसे अच्छी धर्मशाला बनाई गई है। इसके अतिरिक्त राजगृही, आबू, सोनागिरि, सिद्धवरका कूट, पांवापुर इत्यादि तीर्थस्थानोंमें भी आपकी ओरसे धर्मशालाएं बनी हुई हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

झालरापाटन—मेसर्स विनोदीराम बालचन्द, T. A. Binod—इस फर्म पर पहले अफीम का बहुत बड़ा व्यापार होता था। इस समय इस दुकानपर बैंकिंग और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

इन्दौर—मेसर्स बिनोदीराम बालचन्द बड़ा सराफा T. A Binod—इस फर्मपर बैंकिंग, और

श्री० सेठ नेमीचन्दजी सेठी, झालरापाटन

श्री० सेठ भंवरलालजी सेठी (अपने पुत्रों सहित) झालरापाटन

कॉटन, शेयर्स और कमीशन एजन्सीका काम होता है। यहांपर आपकी माणिकभवन नामक एक भव्य कोठी बनी हुई है। इसका फोटो इन्दौर पोर्शनमें दिया गया है।

बम्बई—मेसर्स विनोदीराम बालचन्द मुम्बादेवी— T. A Binod यहांपर बैंकिंग और कॉटन कमीशन एजन्सीका काम होता है। यह फर्म यहां साठ वर्षोंसे स्थापित है।

उज्जैन—मेसर्स विनोदीराम बालचन्द T. A Manik—इस दुकानपर रुईका बहुत बड़ा व्यापार होता है। रुई भरनेके लिए यहाँ आपके तीन बड़े २ नोहरे बने हुए हैं। गवालियर रियासतके मालवा प्रान्तका सदर खजाना भी इस फर्मके जिम्मे है।

सनावद - मेसर्स विनोदीराम बालचन्द T. A. Binod—यहांपर काटन कमीशन एजन्सी और बैंकिंगका व्यापार होता है। इस प्रान्तमें आप रुईके सबसे बड़े व्यापारी माने जाते हैं। यहांपर आपकी दो जीनिंग और एक प्रेसिंग फैक्टरी बनी हुई है। इसी फर्मके अण्डरमें विमलचन्द कैलाशचन्द नामक एक फर्म और यहांपर है।

खरगोन—मेसर्स विनोदीराम बालचन्द T. A Binod—यहांपर बैंकिङ्ग और रुईका व्यापार होता है। यहां आपकी एक जीनिंग और एक प्रेसिंग फैक्टरी बनी हुई है।

इसके अतिरिक्त निमाड़खेड़ी, आगर, गवालियर, कोटा, भवानीगंज, ऊमरी (निजाम हैदराबाद) मोहणा इत्यादि स्थानोंमें भी आपकी दुकानें तथा कॉटन फैक्टरियां बनी हुई हैं। कुल मिलाकर आपकी १९ दुकानें और १५ जीन-प्रेस फैक्टरीयां हैं। गवालियरमें माणिक विलासके नामसे आपकी एक सुन्दर कोठी बनी हुई है।

बैंकर्स

मेसर्स औंकारजी कस्तूरचंद

इस फर्मके मालिक रा०ब० सेठ कस्तूरचंदजी काशलीवाल हैं। आपका पूरा परिचय कई सुन्दर चित्रों सहित इन्दौरमें दिया गया है।

—०:—

मेसर्स छप्पनजी रोड़जी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बारां (कोटा-राज्य)में है। इस फर्मकी स्थापना संवत् १९२५ में सेठ छप्पनजीने की। शुरू २ में आपकी दूकान पर जरदा तमाखूका व्यापार होता था। सेठ छप्पनजी तथा उनके भाई रोड़जीने इसके कारबारको बढ़ाया। सेठ छप्पनजीका देहावसान संवत् १९५५ में और सेठ रोड़जीका संवत् १९५९ में हुआ। इस समय इस दुकानका संचालन

सेठ छप्पनजीके पुत्र श्रीयुत गौरीलालजी और श्रीयुत रोड़जीके पुत्र श्रीयुत चांदमलजी करते हैं। आपकी झालरापाटन, भवानीगंज और सुकेतरोड में दुकानें हैं । सब जगह बैंकिंग, हुण्डी चिट्ठी और विशेषकर कमीशन एजन्सीका काम होता है ।

—:o:—

मेसर्स तनसुख मनसुख

इस फर्मके स्थापन कर्त्ता सेठ तनसुखजी संवत् १९४२ में नागौरसे यहां आये। तथा सन् १९५५ में आपने अपना घरु व्यवसाय प्रारम्भ किया। आपका देहान्त संवत् १९७२ में हुआ। इस समय इस फर्मके मालिक आपके तीन पुत्र श्रीयुत मनसुखजी, जीतमलजी और मुकुन्दलालजी हैं। आपकी दुकानें झालरापाटन, श्रीछत्रपुर, रामगंज, ऊखली, कोटा ज़ंक्शन इत्यादि स्थानोंपर हैं। इन सब दुकानोंपर गल्ला और रुईका व्यापार तथा कमीशन एजन्सीका काम होता है। पाटनमें आपका एक ट्रंकों और बालटियोंका कारखाना भी है।

मेसर्स नाथूराम जोरजी

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्रीयुत कस्तूरचन्दजी हैं आप सरावगी जातिके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना हुए करीब १०० वर्ष हो गये। इसकी विशेष तरक्की स्व० सेठ कल्याणमलजीके हाथोंसे हुई। इस वंशमें आप बहुत प्रतापी पुरुष हुए। आपने झालरापाटनमें बहुत कीर्त्ति और नाम कमाया। श्रीयुत कस्तूरचंदजी श्रीयुत कल्याणमलजीले यहां गूढा (मारवाड़) से दत्तक लाये गये। इस खानदानकी तरफसे मण्डी रामगंजमें एक मन्दिर बना हुआ है। जिसमें कुल मिलाकर करीब ७००००) व्यय हुआ है। इसके अतिरिक्त झालरापाटनमें भी आपकी ओरसे एक पार्श्वनाथजीका मन्दिर बनाया हुआ है। इसकी लागतमें तथा इसकी बिम्ब प्रतिष्ठामें एक लाखसे ऊपर रुपया खर्च हुआ है। खैराबाद मन्दिरके स्थायी प्रबन्धके लिए इस फर्मने १२ दुकानें तथा ४ गोदाम बनवादिये हैं। इसी प्रकार झालरापाटनके मन्दिरको भी चार मकान प्रदान कर दिये हैं।

श्री सेठ कल्याणमलजी साहिबकी धर्मपत्नीके पैरोंमें बून्दी राज्यने सोना बख्शा है।

इस समय इस फर्मकी झालरापाटन, मण्डी रामगंज, खैराबाद इत्यादि स्थानोंपर दुकानें चल रही हैं। इन सब दुकानोंपर हुण्डी, चिट्ठी, रुई, गल्ला और मनौतीका व्यापार होता है।

मेसर्स लक्ष्मणलाल कस्तूरचंद

इस फर्मकी स्थापना करीब २० वर्ष पूर्व सेठ लक्ष्मणलालजीने की थी। आपके हाथोंसे इसकी अच्छी उन्नति हुई। आपका देहावसान संवत् १९७४ में हो गया। आपके बाद आपके पुत्र कस्तूरचंदजीने इस फर्मके काम को सम्हाला। आप ही इस समय इसके मालिक हैं। आपकी ओरसे पाटनमें लक्ष्मण धर्मशाला नामक एक धर्मशाला बनी हुई है। आपकी दुकानें झालरापाटन, मण्डी रामगंज और मण्डी भवानीगंजमें हैं। इन सब दुकानोंपर हुंडी, चिट्ठी और गल्ले, कपासकी कमीशन एजन्सीका काम होता है।

मेसर्स हमीरमल केशरीसिंह

इस फर्मका हेड आफिस कोटामें है। इसके मालिक दीवान बहादुर सेठ केशरीसिंहजी हैं। आपका पूरा परिचय चित्रों सहित कोटा विभागमें दिया गया है।

बैंकर्स

मेसर्स औंकारजी कस्तूरचंद
,, छप्पनजी रोड़जी
,, नाथूराम जोरजी
,, विनोदीराम बालचंद
,, बिहारीदास हेमराज
,, लक्ष्मणलाल कस्तूरचन्द
,, हंसराज हमीरमल
,, हमीरमल केशरीसिंह

चांदी सोनेकी व्यापारी

मन्नाजी मोतीजी
मीणाजी बरदाजी
सीताराम रामदयाल

कपड़ेके व्यापारी

कुन्दनमल मुकुन्दमल
दुलीचंद पन्नालाल
देवीलाल अमरलाल
रामलाल सूरजमल
रंगलाल सरदारमल

बर्तनोंके व्यापारी

पन्नालाल नन्दलाल
बालमुकुन्द मोतीलाल

जनरल मरचेंट्स

अब्दुलजी कादरजी
खानअली अब्दुलजी
फजलअली कादरजी

किरानेके व्यापारी

इब्राहिम लुकमान
चम्पालाल पूनमचन्द
जगदीशराम रामचन्द्र

पब्लिक संस्थाएं

राजपूताना हिन्दी साहित्य सभा
बालचन्द हास्पिटल
लूनकरण गर्ल्स स्कूल

गुलकन्दके व्यापारी

मोतीलाल अगरवाल
रामनारायण मांगीलाल

भवानीगंज मंडी

यह मंडी बी० बी० सी० आई० के नागदा मथुरा सेक्शनमें भवानी मण्डी नामक स्टेशनसे ठीक लगी हुई बसी है। झालावाड़ महाराज भवानीसिंहजीने संवत् १९६६ में इसे बसाया था। इस मंडीमें किराना गल्ला तथा रुईका बहुत बड़ा व्यवसाय होता है। रुई, आढ़त, तथा किरानेका व्यापार करनेवाले कई अच्छे २ व्यापारी यहां निवास करते हैं। दिसावरोंमें इस मंडीका अच्छी साख है। हजारों रुपयोंकी हुंडियाँ यहां आसानीसे ली बेंची जा सकती हैं। यहांकी व्यापारिक वस्तुओंमें रुई, जीरा, गेहूं, चना, कपासिया, तिल, धना, किराना, शक्कर, गुड़, तेल व हार्डवेअर का सामान प्रधान हैं। सब प्रकारके मालका व्यापारियोंके पास अच्छा स्टाक रहता है। इस मंडीमें देशी व्यवसाइयोंकी अपेक्षा गुजराती व्यापारियोंकी अधिकता है।

इस मंडीकी खास उन्नतिका कारण यहांकी जलकी विपुलता है। यहांकी आबहवा स्वास्थ्य प्रद है। इतनीसी छोटी बस्तीमें यहाँ कई बगीचे हैं। इस मंडीके चारोंओर इन्दौर, सिंधिया, कोटा, बूंदी, टोंक, उदयपुरकी स्टेटें आ गई हैं, इसलिये उनसब जगहोंका माल यहां आता है। इस मंडीमें आनेवाले और जानेवाले मालपर किसी प्रकारका टैक्स नहीं है। इस मंडीमें १ कॉटन जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है। जिसकी मालिक मेसर्स अनन्दीलाल पोद्दार नामकफर्म है। इस प्रेसके कारण मंडीकी तरक्कीमें अच्छी मदद मिली है। अहमदाबाद, बम्बईके व्यापारियोंकी रुईकी खरीदी यहां हमेशा रहा करती है।

इस मंडीसे लगी हुई गवालियर स्टेटकी भैसोंदा मंडीमें भी एक काटन जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है

रुईके व्यापारी और कमीशन एजेंट

मेसर्स अनंदीलाल पोद्दार

इस फर्मका हेड आफिस बम्बई है। अतएव इस फर्मके व्यापारका पूरा परिचय चित्र सहित बम्बईमें पृष्ट ९४ में दिया गया हैं। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ अनन्दीलालजी पोद्दार हैं। आप अग्रवाल समाजमें बहुत प्रतिष्ठित एवं समझदार पुरुष हैं। मंडी भवानीगञ्जमें आपकी एक काटन जीनिंग और प्रेसिङ्ग फैक्टरी है, जो अच्छी सफलताके साथ चल रही है। आपकी ओरसे शीघ्र ही यहां एक अनन्दीलाल पोद्दार विद्यालय स्थापित हो रहा है।

मेसर्स छप्पनजी रोड़जी

इस फर्मका विशेष परिचय पाटनमें दिया गया है। यहां यह फर्म गल्ला आदि सब प्रकारकी आढ़तका व्यापार करती है। तथा कमीशनका काम करनेवाले व्यापारियोंमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

मेसर्स नेमीचन्द भँवरलाल

यह फर्म मालवेके प्रसिद्ध व्यापारी मेसर्स विनोदीराम बालचन्दके मालिकोंकी है। इस फर्मका सुविस्तृत परिचय कई चित्रों सहित पाटनसे दिया गया हैं। यहां यह फर्म बैंङ्किग, गल्ला कमीशन एवं काटनका व्यवसाय करती है।

मेसर्स रंगलाल बृजमोहन

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास लक्ष्मणगढ़ (सीकर) है। आप अग्रवाल जातिके गोयल गोत्रीय सज्जन हैं। यह फ़र्म संवत् १९६६ में सेठ रंगलालजीके द्वारा स्थापित हुई। वर्तमानमें इस फर्मका सञ्चालन श्रीरंगलालजी और श्रीबृजमोहनजी करते हैं। सेठ रंगलालजी भवानीगञ्ज मंडी का और बृजमोहनजी आलोट दूकानका कार्य्य सञ्चालन करते हैं। श्रीरंगलालजीके पुत्र चिरंजीलालजी भी व्यवसायमें भाग लेते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकात है।

भवानीगंज—यहां रुई,हुण्डी,चिट्ठी और आढ़तका अच्छा काम होता है तथा बर्मा आइल कम्पनीकी एजंसी है।

आलोट—यहां आपकी एक महालक्ष्मी काँटन जीनिंग फैक्टरी है तथा हुंडी चिट्ठी और रुईका व्यापार होता है।

मेसर्स रामकुंवार सूरजबख्श

इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्रों सहित जयपुरमें दिया गया है। यहां इस फर्मपर हुण्डी चिट्ठीका आढ़तका व्यापार होता है।

मेसर्स रामप्रताप हरबखस

इस फर्मके संचालक खास निवासी सांभरके हैं। यहां यह फर्म सम्वत् १९७८ में स्थापित हुई। इसका हेड आफिस सांभर है। मंडी भवानीगंजमें इस दूकानको सेठ सुगनचन्दजीने स्थापित किया। आपका देहावसान १९८३ में हो गया है। वर्तमानमें आपके पुत्र श्रीदामोदरदासजी एवं रुपचन्दजी इसके मालिक हैं। आप माहेश्वरी जातिके (मानधना) सज्जन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

(१) सांभर—रामप्रताप हरबख्श—इस दूकान पर नमकका घरू और आढ़तका व्यापार होता है।

(२) सांभर–श्रीनारायण रामदेव—इस दूकानपर नमककी क्रेडिड भरी जाती है तथा आढ़तका काम होता है।

(३) भवानीगंज–रामप्रताप हरवखस – यहां नमकका व्यापार और रुई गल्लेकी आढ़तका काम होता है।

—०:०—

मेसर्स लूणकरण पन्नालाल

इस फर्मके मालिक नीमचके निवासी हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन है। इसे यहां स्थापित हुए १८ वर्ष हुए। नीमचमें यह दूकान सन् १७८० से स्थापित है। इस फर्मको सेठ पन्नालालजीने स्थापित किया, आपके २ पुत्र है जिनका नाम चौथमलजी और रिखवदासजी है। आप दोनों व्यापारमें भाग लेते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

नीमच–लूणकरण पन्नालाल—यहां रुई कपास गल्लाकी आढ़त तथा हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

भवानीगंज--लूणकरण पन्नालाल—यहां गल्ला आदिकी आढ़त तथा हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

इसके अतिरिक्त इस फर्मपर एशियाटिक पेट्रोलियम कम्पनीकी तेलकी एजंसी है।

रुई गल्लेके व्यापारी और कमीशन एजण्ट

आनन्दीलालजी पोद्दार
गुलाबचन्द गजाधर
छप्पन्नजी रोड़जी
जमनादास दामोदर दास
नेमीचन्द भँवरलाल
भगवानदास मथुरादास
मांगीलाल धूरीलाल
मणीलाल भाईलाल
मनसुखलाल पाथूलाल
मोतीभाई रेवन दास
रंगलाल वृजमोहन
रामप्रताप हरवखस
राम कुंवार सूरजवख्श
लूणकरण पन्नालाल
शिव किशन शिवनारायण
सोनालाल मोतीलाल

किरानेके व्यापारी

अब्दुल गनी तारमहम्मद
इस्माइल याकूब
ईसा हासम
गनी उमर
गोपालदास बल्लभदास

कपड़ेके व्यापारी

कस्तूरचन्द प्रतापचन्द
चौथमल मन्नालाल
मानमल सुजानमल

चांदी सोनेके व्यापारी

मणीलाल भाईलाल

औषधालय

सेठ कमरुद्दीन हास्पीटल

सार्वजनिक संस्था

सेठ आनंदीलाल पोदार विद्यालय

जोधपुर-राज्य, उदयपुर और किशनगढ़

JODHPUR STATE, UDAIPUR

&

KISHANGARH

जोधपुर

यह नगर मारवाड़ राज्यकी राजधानी है। राठौर वंशीय प्रसिद्ध राव जोधाजीने अपने नामपर सन् १४५९ ई० में इसे बसाया है। यह शहर सुन्दर और मजबूत चहार दिवारियोंसे घिरा हुआ है। यहांकी इमारतें बड़ी आलीशान भव्य और सुन्दर पत्थरोंकी बनी हुई हैं। इनपर कोराईका काम दर्शनीय हैं। सुन्दर इमारतोंके होते हुए भी यहां की बसावट बड़ी घिचपिच है। यहांके रास्ते बड़े संकीर्ण और तंग हैं। ये रास्ते पत्थरोंसे पाटे हुए हैं इस वजहसे यहां ज्यादा गंदगी नहीं फैलती। सोजतिया गेटसे स्टेशन तक की बसावट बड़ी सुन्दर है। रास्ते चौड़े और साफ हैं। मकान भी करीब २ एकसे बने हुए हैं।

लोग कहा करते हैं कि मारवाड़में जलकी भयंकर कमी है पर जोधपुरमें ऐसा मालूम नहीं होता। यहां सरकार द्वारा जनताकी सुविधाके लिये नलोंका प्रबंध है। इसके अतिरिक्त कई बड़े बड़े आलीशान कूए और तालाव भी इस शहरकी पानीकी कमीको पूरी करते हैं। यहां बिजलीका प्रबंध भी अच्छा है। आजकल यहां राठौर वंशीय महाराजा उम्मेदसिंहजी शासन करते हैं। आपके वंशका परिचय नीचे दिया जाता है।

ऐतिहासिक परिचय

जोधपुरके महाराजा राठौर वंशके हैं। राठौड़ोंको पहले राष्ट्रकूट कहते थे। इतिहाससे विदित होता है कि ई० सन् ३०० वर्ष पूर्व के लगभग अशोकके धार्मिक शिलालेखोंके अन्दर राष्ट्रीय शब्दका उपयोग मिलता है। कई जगह रट, राहट, राष्ट्र आदि नाम भी मिलते हैं। इसीसे इतिहासकार मानते हैं कि यही नाम कालान्तरसे बदलते २ आज राठौड़ हो गया है। कुछ भी हो यह मानना ही पड़ेगा कि यह वंश बहुत प्राचीन है। इसमें पहले बहुतसे प्रतापशाली नृपति हो गये हैं, जिन्होंने तत्कालीन समयमें भारतमें यश प्राप्त किया था। यश ही नहीं वरन् वे उस समयके एकही राजा समझे जाते थे। सन् ९१२ में "इब्नि खुर्दादने किताबुल्म सालिक वुल ममालिक" और सन् ९४४ में अल्मस उद्दीनने मुरुजुल जहब ग्रन्थ लिखें हैं। इनमें इस वंशके राजाओंके लिये लिखा है कि येही भारतके तत्कालीन राज्यवंशोंमें सबसे बड़े थे।

प्रसिद्ध ऐलोराकी गुफाका कैलास मन्दिर इसी राजवंशने बनाया था।

इन राष्ट्र कूटोंके वंशज यहांसे कन्नौज चले गये। वहां भी इन्होंने अपनी अपूर्व प्रतिभाके बलपर अपना नाम अमर कर दिया। इनमेंसे यशोविग्रह, चन्द्रदेव,गोविंदचन्द्र, विजयचन्द, जयचन्द आदि प्रसिद्ध हुए। महाराजा जयचन्दने कई यज्ञ किये। उनके समयके शिलालेखोंसे मालूम होता है कि कन्नौजका राजवंश तत्कालीन समयमें बड़ा प्रतापी रहा है।

वर्तमान जोधपुरके नरेश इन्हीं कन्नौजके महाराजा जयचंदजीके वंशज हैं। कन्नौजसे पहले पहल राव सिहाजी सन् १२४३के करीब इधर आये। ये ही इस राजवंशके मूल पुरुष हैं।

इनके पश्चात् कई पीढ़िएं और हुईं। इनमें राव जोधाजी, महाराज जसवंतसिंहजी, महाराजा अजीतसिंहजी, महाराजा मानसिंहजी, आदि बड़े प्रतिष्ठित हुए। वर्तमानमें महाराजा उम्मेद सिंहजी सिंहासन पर विराजमान हैं। आपने राज्यमें कई सुधार किये हैं। आपको पोलो खेलनेका बड़ा शौक है। मारवाड़की पोलो टीम बहुत प्रसिद्ध है। इसीने सन् १९२४ में कलकत्तेमें भारतके प्रसिद्ध वाईसराय-कपको जीता था।

दर्शनीय स्थान

यहांपर बहुतसे दर्शनीय स्थान हैं जिनमेंसे कुछके नाम यहां दिये जाते हैं। कुञ्जविहारी जीका मन्दिर, रणछोड़जीका मन्दिर, तलहटीका महल, किला, सरदार म्युजियम, महामन्दिर, राधावल्लभजी का मंदिर, जसवंत स्मृति भवन, ज्युबिली कोर्ट्स, गुलाबसागर, सरदार मार्केट, मंडोर, बालसमंद झील। बिजलीघर, रेल्वे वर्कशाप, श्रृङ्गार चौकी, वीर भवन आदि २ प्रसिद्ध हैं।

व्यापारिक परिचय

इस राज्यकी पैदावार बाजरी, ज्वार, जौ, गेहूं, मक्का, मूंग, मोठ, चना, गंवार, तिल, सरसों, जीरा, धनियां रुई और तमाखू है। इनमेंसे गल्ला और जीरा विशेष तादादमें बाहर जाता है। कपड़ा किराना आदि बाहरसे आता है। कभी २ गल्ला भी यहां बाहरसे आता है।

यहां कोई फैक्टरीज नहीं हैं। सिर्फ रेल्वे वर्कशापके होनेसे यहां अच्छी गतिविधी है। यहां कपड़ेकी रंगाई तथा लहरिया, मोटड़ा, चूंदड़ी आदिकी वधाई बहुत होती है। इस कामके लिये जोधपुर भारत भरमें प्रसिद्ध है। इसका काम करनेवालोंके यहां बहुत घर हैं। तमाखू भी यहांकी अच्छी होती है। यह तमाखू यहांसे दिसावरोंमें भी एक्सपोर्ट होती है। इसके अतिरिक्त यहांसे एक्सपोर्ट होनेवाली वस्तुओंमें हाथी दांतकी चूड़ियां हैं। ये भी यहां बहुत अच्छी बनती हैं।

श्रीयुत कानमलजी मुनोम, जोधपुर
(पृ० नं० १६३)

सेठ रामरतनदासजी मोदाणी, मूंडवा (मारवाड़)
(पृ० नं० २०३)

सेठ जसकरणजी कोठारी, किशनगढ़
(पृ० नं० २१८)

मेसर्स केशरीमल गणेशमल

इस फर्मके सञ्चालकोंका निवास स्थान जेतारण (मारवाड़) है। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं। आपकी फर्मको स्थापित हुए ६५ वर्षका अरसा हुआ। जैतारणमें यह फर्म बहुत पुरानी है। जोधपुरमें इसे स्थापित करनेवाले सेठ केशरीमल जी थे। आप बड़े व्यापार-कुशल सज्जन थे। आप हीके द्वारा इस फर्मकी विशेष तरक्की हुई। आपका यहांकी सरकारमें अच्छा सम्मान था। आपका देहावसान संवत् १९६६ में हुआ।

आपके पश्चात् इस समय इस फर्मके सञ्चालक श्रीयुत गणेशमल जी हैं। आप समझदार और सज्जन पुरुष हैं। आप यहांके ताज़िमी सरदार हैं। आपकी ओरसे स्टेशनपर एक धर्मशाला बनी हुई है।

आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्री० दौलतमल जी हैं। आप इस समय महकमा खासमें कार्य करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

जोधपुर—मेसर्स केशरीमल गणेशमल—यहां बैंकिंग, हुंडी चिठ्ठी तथा बोहरगत का काम होता है।

जेतारण—मेसर्स बस्तीमल अगरचन्द—यहां भी बैंकिंग, सराफी तथा लेन देनका व्यवसाय होता है।

मेसर्स मूलचन्द नेमीचन्द

इस फर्मके मालिक अजमेरके निवासी हैं। आप सरावगी जातिके हैं। आपका हेड आफिस
अजमेरमें दिया गया है।
अजमेर है। अतएव आपका विशेष परिचय
सरावगी जातिके हैं। आप·
इस दुकानपर मुनीम कानमल जी चौधरी काम करते हैं। आप
यहां नहीं दे सके। आपके वंशकी
का इतिहास संवत् १०१से शुरू होता है। पर स्थानाभावसे हम
मुनीमातका कार्य करते हैं। आपने इस
हिस्ट्री बड़ी गौरवपूर्ण रही है। आजकल आप उपरोक्त फर्मपर
यहां एक दि० जैन मंदिरकी स्थापना
फर्मकी यहा एक और शाखा स्थापित की है। आपके परिश्रमसे
सभाके प्रेसिडेण्ट हैं। आपका व्यापारिक-
हुई है। आप गोड़ावाटी- राजावाटी खण्डेलवाल जैनियोंकी
क्रमशः उम्मेदमल जी सुमेरमल जी,
दिमाग भी बहुत अच्छा है। आपके चार पुत्र हैं जिनके नाम
फर्मपर कार्य करते हैं। सुमेरमल
वंशीलाल जी, तथा अभयकुमार जी हैं। श्री० उम्मेदमल जी इसी
एफ० ए० में विद्याध्ययन कर रहे हैं।

इस फर्मपर यहाँ बैङ्किग हुंडी चिट्ठी तथा सराफीका काम और रेल्वे खजानेका काम होता है। इसकी शाखापर गल्लेका अच्छा व्यापार होता है। यह फर्म यहां सम्माननीय समझी जाती है। इस फर्मके मालिकको जोधपुर दरबार ने सोना तथा ताजीम बक्षी है।

बैंकर्स

दी० इम्पीरियल बैंक आफ् इण्डिया
मेसर्स केशरीमल गणेशमल
,, कानमल सूरजमल
,, गुलाबदास गोपीनाथ
,, बुद्धकरण गोपीकिशन
,, मूलचन्द नेमीचन्द
,, रामदयाल श्रीकृष्ण
,, सुमेरमल उम्मेदमल
,, हाथीराम रामरख

—:०—

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स गंभीरमल उदयराज धानमण्डी
,, गंगाराम मेघराज ,,
,, चुन्नीलाल रामदयाल
,, जेठमल दानमल
,, नरसिंहदास रामकिशन
,, पीरदान प्रेमचन्द
,, प्रतापमल राजमल
,, बालमुकुन्द सीताराम
,, मगनीराम हरनाथ
,, रावतमल अचलदास
,, लछमनदास जयरामदास
,, श्यामदास बद्रीदास
,, शिवदास सिरेमल
,, सुगनचन्द जी सोनी
,, हजारीमल प्रतापमल

-:०:-

कपड़े के व्यापारी

किशनगोपाल वल्लभदास
गिरधरदास सुखराज
चौथमल सरदारमल लूंकड़
सुराना चम्पालाल
तेजराज टांटियां
नारायणदास रामगोपाल
मूलचन्द तिलोकचन्द
मेघराज मोतीलाल
मदनलाल कन्हैयालाल
मिलापचंद लालचंद
मुकुन्दचंद गुलाबचन्द भंडारी
लखमीचन्द तपसीलाल
लालचन्द सोनी
सिमरथमल जवन्तराज
सौभाग्य ट्रेडिंग कंपनी
हीराचन्द भीखमचन्द
हीरालाल शिवनारायण

रंगीन कपड़े के व्यापारी

जवानमल पोपलिया
मेड़तिया जवन्तराज
धूलचंद रेद
लूंकड़ दीपचन्द
लखमीचन्द तपसीलाल
सिमरथमल जवन्तराज

—:०:—

स्व० सेठ जीवनमलजी बेगाणी लाडनूं

सेठ चंदनमलजी बेगाणी लाडनूं

सेठ हाथीमलजी बेगाणी लाडनूं

स्व० सेठ मोतीलालजी बेगाणी लाडनूं

जौहरी

कालूराम हरिराम सुनार
मुन्नीलाल इशकलाल सराफ़
विशनलाल कूमठ

चांदी-सोनेके व्यापारी

कानमल सूरजमल सराफ़ा
कालूराम शंकरराम ,,
गुलाबदास गोपीनाथ ,,
चतुरभुज शिवचन्द्र ,,
छोटमल मनसाराम ,,
भँवरलाल सराफ़ ,,
रामदास डूंगरदास ,,
रामदयाल श्रीकृष्ण ,,

किरानेके व्यापारी

गोकुलचन्द पूनमचन्द चूड़ीबाजार
चतुरभुज कालूराम गुलखंडिया
प्रतापचन्द भागचन्द कटला
लछमनदास अजबनाथ चूड़ीबाजार
लछमनदास रुघनाथदास कटलाबाजार
सेवाराम पोपलियां गुलखंडिया
सुखदेव रामकिशन घासमंडी

टोपियोंके व्यापारी

अलफ मियां कादरबक्ष कटला
अमरुदान रुघनाथदास ,,
गंगाराम शिवप्रताप ,,
रामनारायण शंकरलाल ,,

केरोसिन तेल

शिवजीराम देवकिशन
हरलाल मगनीराम

जनरल मरचेंट्स

अलफू मियां कादरबक्ष कटला
एदुलजी नौरोजी सोजतियागेट
गणेशलाल एण्ड संस ,,
पूरी ब्रदर्स ,,
यूनियन ट्रेडिंग कम्पनी ,,
दी लंदन स्पोर्ट्स कम्पनी ,,
सांगी ब्रदर्स ,,

पेट्रोल एण्ड मोटरकार डीलर्स

पूरी ब्रदर्स सोजतिया गेट
सांगी ब्रदर्स

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

गांधी गणेश कटला
गोकुलचन्द पूनमचन्द राखी हवेली
चतुरभुज कालूराम राखी हवेली
गंधी जमनादास अचलनाथ मन्दिर
जगन्नाथ रामनाथ कटला
रामनाथ मांगीलाल कटला
रामगोपाल रामराज राखी हवेली
गंधी रामसहाय मिरचा बाजार

रंगके व्यापारी

गोकुलचन्द पूनमचन्द राखी हवेली
चतुरभुज कालूराम ,,
भजनदास काशीराम खांडापलसा
माणकलाल रामनाथ घासमंडी
रामजीवन रामदयाल कटला
लछमनदास जयरामदास घासमंडी

तमाखूके व्यापारी

नथमल नारायणदास घासमंडी
बिरदीचन्द राधाकिशन तमाखू बाजार

शम्भूराम भैरोंदास ,,
सुखदेव गोपीनाथ छपरा कन्दोई

महमदअली अब्दुलहुसेन
रामनारायण लक्ष्मीनारायण लोहा, पीतल

स्नफ मरचेंट्स

वैद्य चुन्नीलाल कटला
पृथ्वीराज शिवराज तमाखू बाजार
बसंतीलाल अचलदास खांडा पलसा
बेगराज मोतीलाल तमाखू बाजार
मनछाराम मेघराज कटला
शिवबगस गणेशीलाल खांडापलसा

लोहा-पीतलके व्यापारी

फिदाहुसेन हसनअली लोहा

परफ्यूमस

आशाराम गंधी ब्रह्मपुरी
उत्तमचन्द गणेशीलाल काला
चतुर्भुज तुलसीराम धानमंडी
जमनालाल बद्रीलाल कटला
फतेराज गुलाबचंद कटला
रामनाथ मांगीलाल कटला
रामनाथ जगन्नाथ कटला
विजयकिशन गट्टानी तमाखू बाजार
सी० ए० मौलाबक्ष चूड़ीबाजार

लाडनूं

जोधपुर स्टेट रेलवेकी एक ब्रांच सुजानगढ़से लाडनूं जाती है। यह शहर जोधपुर स्टेट का है। इस शहरके सेंकड़ों व्यापारी कलकत्ता, बंगाल आसाम आदि प्रांतोंमें व्यापार करते हैं। इस शहरके निवासियोंको हवेलियां बनवानेका बड़ा शौक है। यहां सैंकड़ों सुन्दर आलीशान बिल्डंगें बनी हुई हैं। तथा बहुतसे मजदूर हमेशा नवीन हवेलियोंके बनानेका कार्य करते हैं। इन हवेलियोंमें रंगाईका कार्य विशेष रहता है। व्यवसायके नामपर यहां कुछ भी नहीं है। व्यवसायी लोग बाहर से सम्पति कमाकर वायु सेवनार्थ अपनी जन्म भूमिमें दो चारमास के लिये आते हैं। यहां ओसवाल वैश्योंकी बस्ती विशेष है।

मारवाड़के सभी शहरोंमें धर्मशालाओंकी बहुत अधिकता है। हरएक स्थानपर धनी मानी सज्जनोंने धर्मशालाएं बनवा रक्खी हैं। यहाँ भी दो तीन धर्मशालाएं हैं। एक धर्मशालामें सगमरमरकी सुन्दर छत्री बनी हुई है।

लाडनूं, सुजानगढ़, बीकानेर आदि इसप्रान्तमें बरसातके पानी का विशेष रूपसे व्यवहार किया जाता है। हरएक स्थानपर मकानोंमें सात आठ हाथ गहरे पक्के कुए बने रहते हैं इन कुओंमें बरसातका जल गच्चियोंसे नालियों द्वारा इकट्ठा किया जाता है। जब कुंआ सारा भरजाता है। तो

बड़ी हिफाजतके साथ सालभर तक कामसें लाते हैं। यह पालर पानी बरसाती पानी के नामसे कहा जाता है। यह पानी मीठा तथा कुछ तीखा होता है। लेकिन मारवाड़की जमीनमें यह गुण रहता है कि इतने दिनतक एक स्थानमें भरे रहनेपर भी पानीमें कोई दुर्गुण नहीं पैदा होता। इसके अतिमें रिक्त नहाने धोने पीने आदिके काममें चर्म जलका भी बहुत उपयोग किया जाता है। जो ऊटोंपर बड़ी २ पखालोंमें भरकर लाया जाता है।

मेसर्स आसकरण मुलतानमल

इस फर्मके मालिक यहींके मूल निवासी हैं। आप ओसवाल श्वेताम्बर तेरापन्थी सज्जन हैं। पहले आपकी फर्मपर अमरचन्द, आसकरण, मूलतानमल नाम पड़ता था अब सन् १९६१ से कलकत्तेमें उपरोक्त नामसे यह फर्म काम कर रही है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ आसकरणजीके पुत्र हैं। आप चार भाई हैं। जिनके नाम क्रमशः मुलतानमलजी, तनसुखलालजी, जोधराजजी तथा चौथमलजी हैं। इनमेंसे संवत् १९७५ सेठ मुलतानमलजीका देहावसान हो चुका है। सेठ मुलतानमलजीके इस समय ५ पुत्र, सेठ तनसुखरायजी के ३ पुत्र सेठ जोधराजजीके ३ पुत्र, और सेठ चौथमलजीके १ पुत्र हैं। इनमेंसे बहुतसे सज्जन दुकानके कामका संचालन करते हैं। लाडनूमें आपकी ओरसे एक पाठशाला चल रही है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स आसकरण चौथमल ४२ आर्मेनियन स्ट्रीट T. A. mulchoth - यहां जूट तथा आढ़तका काम होता है।

इसके अतिरिक्त चरमूखरिया (बंगाल) में भी आपका जूटका व्यापार होता है।

मेसर्स जीवनमल चन्दनमल बेंगानी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान लाडनूं है। आप ओसवाल बेंगाणी जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको सेठ जीवनमलजीने संवत १९५७में स्थापित किया। आरंभमें आपकी परिस्थिति बहुत साधारण थी। आपने जूटके व्यापारमें लाखों रुपयोंकी सम्पति पैदा की। जूटके व्यवसायमें आपकी बहुत तेज़ नजर थी, जिस समय सेठ जीवनमलजीका देहावसान हुआ। उस समय जूट बाजारमें आपके शोकमें हड़ताल मनाई गई थी।

सेठ जीवनमलजीको भूतपूर्व जोधपुर नरेश महाराज सुमेरसिंहजीने प्रसन्न होकर आल औलाद समेत पैरोंमें सोना बख्शा था। इसके अतिरिक्त आपको जोधपुर स्टेटसे कस्टम भी माफ की और आपके बाद आपके पुत्रोंको भी माफ कीगई। जोधपुर स्टेटमें आपके कुटम्बियोंको कोर्टमें उपस्थित नहीं होना पड़ता है। इसके अतिरिक्त जोधपुर स्टेटने आपको पालकी और छड़ी बख्शी है। इस प्रकार सेठ जीवनमलजीका देहावसान ६३ वर्षकी आयुमें सवत १९७४ की चैत्र वदी ११को जयपुरमें हुआ।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ जीवनमलजीके चार पुत्र सेठ चन्दनमलजी, सेठ जंवरीमलजी सेठ हाथीमलजी और सेठ सूरजमलजी हैं। सेठ हाथीमलजीसे छोटेभाई सेठ मोतीलालजीका देहावसान होगया है। आप चारों व्यक्ति बड़े सज्जन हैं। थोड़े वर्ष पूर्व वर्तमान जोधपुर नरेश श्री उम्मेदसिंहजी जब कलकत्ता पधारे थे उस समय उन्होंने सेठ जीवनमलजीका आतिथ्य स्वीकार किया था और उसके उपलक्षमें महारानी साहिबाने आपके कुटुम्बमें स्त्रियोंको पैरोंमें सोना बख्शा था।

यह कुटुम्ब ओसवाल समाजमें अच्छा प्रतिष्ठित मानाजाता है। आपने लाडनूमें श्री दरबार जीवन मिडिल स्कूलके लिये बिल्डिंग दी है। तथा पूर्ण तौरसे उस स्कूलको सरकारके अधीन कर दिया है।

इसफर्मकी कलकत्ता और लाडनूमें बहुतसी स्थाई सम्मति हैं लाडनूंमें आपने अभी एक बहुत सुन्दर नयी बिल्डिंग बनवाई है। इसके अतिरिक्त आपकी एक विशाल हवेली और है।

कलकत्तेमें मोतीबजार और संजीवन जूट बजार नामक दो जूटके बजार आपहीके हैं। इन बाजारोंमें जूटका बहुत बड़ा खरीद फरोख्त होता है। इसके अतिरिक्त पारख स्ट्रीट मिडिलटन रो में आपकी प्रिंस मेंनशन और जीवन मेंशन नामक २ सुन्दर इमारतें बनी हुई हैं।

इसफर्मका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स जीवनमल चन्दमल बैंगानी ⅛ गंडफड़ीरोड यहां शेयर्स, बैंङ्किग व्यवसाय और बिल्डिंगस्, जुटप्रेस और जूट मार्केटके किरायेका काम होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स सूरजमल आसकरण ⅛ गंडफड़ी रोड-यहां जूट और बेलर्सका काम होता है।

(३) कलकत्ता—चन्दनमल चम्पालाल ⅛ गंडफड़ी रोड-यहां जूट विक्रीका काम होता है।

(४) कलकत्ता—काशीपुर, विक्टोरिया जूटप्रेस—यहां आपका जूटप्रेस है।

(५) कलकत्ता गंडफड़ीरोड—सूरज जूट प्रेस—यहां भी आपका जूट प्रेस है।

(६) कृष्णगंज (पूर्णिया) छगनमल मोतीलाल—जूटका व्यापार होता है।

(७) बारसोइ घाट—जौहरीमल सुरजमल-यहां भी जूटका व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त जूट सीजनमें बंगालमें बहुतसे स्थानोंमें आपकी जुटकी खरीदी होती है

इस फर्ममें बाबू फुलचन्दजी निगोतिया जयपुरवाले सेठ जीवनमलजीके समयसे ही प्रधान मेनेजरीका काम करते हैं। आपका सूरजमल आसकरण नामक फर्ममें साझा भी है।

मगनमल नेमचन्द

इसफ़र्म केमालिकोंका मूल निवास स्थान लाडनू ही है। आप ओसवाल श्वेताम्बर मार्गीय जैन सज्जन हैं। इस फर्मको कलकत्ते में करीब ६० । ७० वर्ष पूर्व सेठ शम्भूरामजीने स्थापित किया।
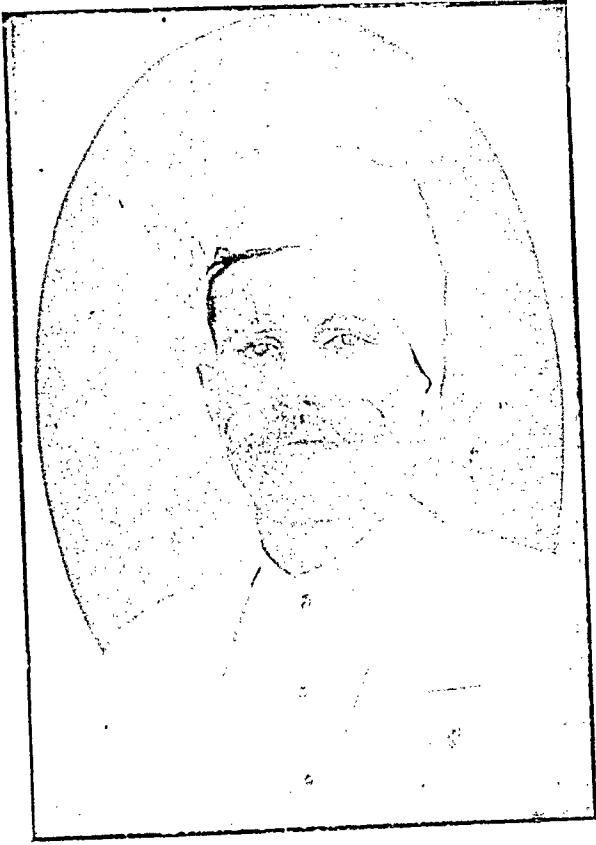
सेठ सूरजमलजी चोरड़ (मालमचंद सूरजमल) लाडनूं

सेठ सूरजमलजी बेगाणी (जीवनमल चंदनमल) लाडनूं

सेठ नेमीचंदजी वैद (मगनीराम नेमीचंद) लाडनूं

श्री फूलचंदजी निगोतिया (हेड मैं० जीवनमल चंदनमल)

श्रीयुत श्रीचन्दजी बैद (आसकरण मुलतानमल) लाडनूं.

श्रीयुत मालचन्दजी काठोदिया, लाडनूं.

श्रीयुत चान्दमलजी काठोदिया, लाडनूं

बिल्डिंग (मगनीराम नेमचन्द) लाडनूं
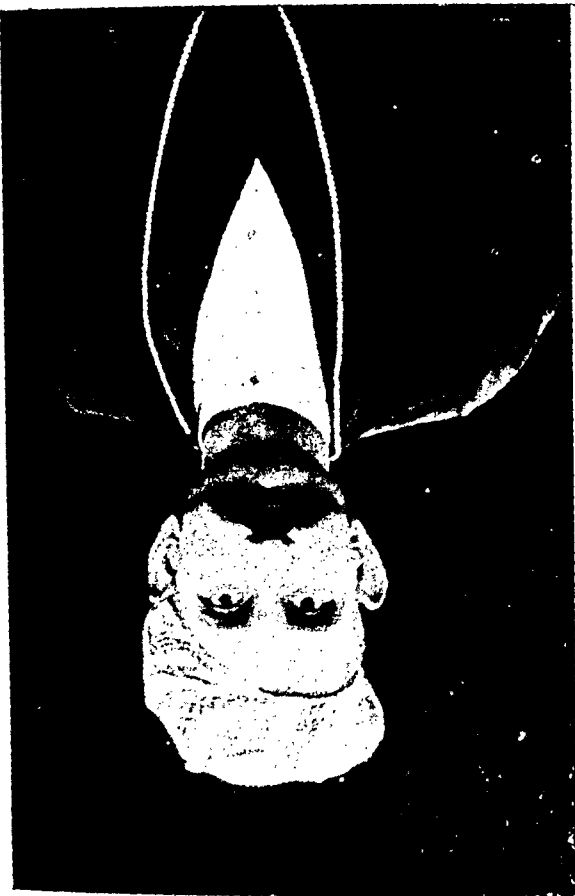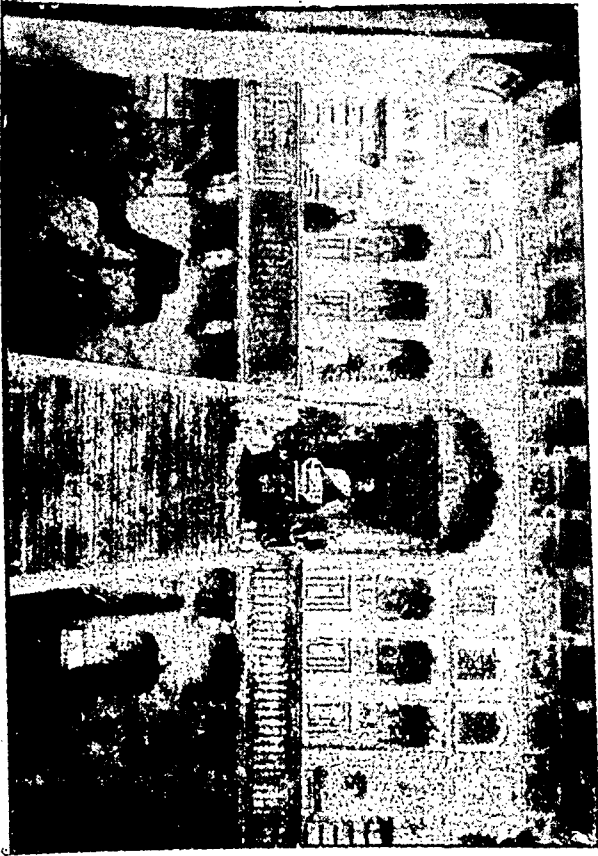
आपके बाद आपके पुत्र सेठ प्रतापमलजीने इसफर्मके कार्यका संचालन किया। सेठ प्रतापमलजीके २ पुत्र थे; सेठ मगनमलजी और सेठ छगनमलजी। सेठ मगनमलजीका देहावसान होचुका है। तथा सेठ छगनमलजीने करीब ३० वर्षकी आयुसे ब्रह्मचर्य्य वृत धारणकर रक्खा है। आपके २ पुत्र सेठ सोहनलालजी और सेठ नेमीचन्दजी हुए। इनमें सोहनलालजीका देहावसान होचुका है। सेठ नेमीचन्दजी वेद, सेठ मगनमलजीके यहां दत्तक गये हैं। इस समय सेठ नेमीचन्दजीके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्री भंवरलालजी हैं। सेठ नेमीचंद समझदार सज्जन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स शम्भूराम प्रतापमल, ७ बाबूलाल लेन—यहां व्याज, हुण्डी चिट्ठी और आढ़तका काम होता है। इस फर्मपर सट्टा कतई नहीं होता।

(२) बोगरा—मेसर्स प्रतापमल मगनीराम-यहां हुण्डी चिट्ठी व्याज तथा जूट खरींदीका काम होता है।

(३) गायबन्दा (रंगपुर) मेसर्स छगनमल नेमचन्द-यहांपर गल्ले और किरानेका व्यापार होता है।

मेसर्स मालमचन्द सूरजमल बोरड़

इस फर्मके मालिक यहींके मूल निवासी हैं। आप ओसवाल श्वेताम्बर तेरापंथी सम्प्रदायके माननेवाले सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना कलकत्तेमें सेठ मालमचन्दजीने करीब संवत् १९६९ में की। वर्तमानमें सेठ मालमचन्दजी तथा सूरजमलजी इस फर्मके मालिक हैं। सेठ मालमचन्दजी लाडनूंमें ही रहते हैं। और आपके पुत्र श्री सूरजमलजी व्यापारके कामका संचालन करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स मालमचन्द सूरजमल, सूरज—निवास, २५१ अपरचितपुररोड T. A. malam surju यहां हुंडी चिट्ठी तथा जूटका व्यापार होता है।

ग्वालन्दो—मेसर्स मालमचन्द सूरजमल—यहां हुण्डी चिट्ठी तथा आढ़तका व्यवसाय होता है।

नलचट्टी (आसाम) मेसर्स मालमचन्द सूरजमल—यहां आढ़त तथा हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

पांचूडिया (ग्वालन्दो) यहां जूटका व्यापार होता है।

मेसर्स हीरालाल चान्दमल

इसफर्मके मालिक ओसवाल तेरापंथी सज्जन हैं। इसके वर्तमान मालिक सेठ मालचन्दजी तथा सेठ चांदमलजी हैं। इसफर्मके स्थापक आप दोनों भाई हैं। आपके पिता हीरालालजीका देहा-

वसान संवत १९५८ में होगया। पहले यह फर्म हीरालाल बींजराजके नामसे व्यापार करती थी। उस समय इसमें सेठ हीरालालजी, सेठ बींजराजजी तथा सेठ पूसामलजी तीन साझेदार थे। संवत १९६४ से हीरालालजीका साझा अलग होगया और अब आप इस नामसे कार्य करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय—

कलकत्ता—मेसर्स हीरालाल चांदमल, २ राजाऊडमंड स्ट्रीट—इस फर्मपर व्याज तथा हुंडी चिट्ठीका व्यापार होता है।

डीडवाना

जोधपुर स्टेट रेलवेकी डीडवाना नामक स्टेशनसे १ मीलकी दूरीपर यह एक बहुत सुन्दर बड़ा कसबा बसा हुआ है इस स्थानपर भी नमक तैयार किया जाता हैं। सांभरकी तरह इस स्थानसे भी बहुतसा नमक बाहर जाता है। नमककी ही खास पैदावार यहां है। इसके अतिरिक्त मूंग, मोठ, बाजर, गवांर आदि भी पैदा होते हैं।

इस स्थानपर माहेश्वरी श्रीमन्तोंका विशेष निवास है। कलकत्ता इन्दौर, उज्जैन प्रभृति स्थानोंमें यहांके व्यापारियोंकी फर्में हैं। यहांके प्रतिष्ठित धनिक मेसर्स मगनीराम रामकुंवार बांगड़की ओरसे स्टेशनसे डीडवाना स्थानतक पक्की सड़क बनी हुई है। इनकी ओरसे यहां डीडवाना इंडस्ट्रियल बैंक नामक एक बैंक भी खुला हुआ है। इस स्थानके व्यापारियोंका संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स शालिगराम शिवकरण

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान डीडवानाही है। आप माहेश्वरी समाजके बांगड़ गौत्रीय सज्जन हैं।

मेसर्स शालिगराम शिवकरणके नामसे यह फर्म यहां बहुत समयसे व्यवसाय कर रही है। वर्त-मानमें इस फर्मपर मगनीराम रामकुंवार बांगड़के नामसे कलकत्तेमें बहुत बड़ा व्यवसाय होता है।

इस फर्मके वर्तमान प्रधान संचालक सेठ मगनीरामजी बांगड़ हैं। इस फर्मके व्यवसायको विशेष तरक्की सेठ मगनीरामजी और सेठ रामकुमारजीके हाथोंसे मिली। इस कुटुम्बकी दान धर्म और सार्वजनिक कार्योंकी ओर भी अच्छी रुचि रही है। आपकी ओरसे डीडवानामें संस्कृत पाठशाला चल रही है। इस पाठशालामें शिक्षा लाभ करनेवाले छात्र भोजन एवं वस्त्र भी यहीं पर पाते हैं। पुष्कर नामक तीर्थमें दिव्य देश श्री रमाबैकुंठ नामक एक मंदिर भी आपकी ओरसे बना हुआ है। डीडवाणा स्टेशनसे शहरतक आपकी ओरसे मगनीराम रामकुंवार रोड नामक एक पक्की सड़क बनी हुई है। डीडवाणाके सांगाकुआं नामक स्थानमें आपकी ओरसे एक अच्छा अन्नक्षेत्र चलता है। इसके अतिरिक्त डीडवानेमें आपका एक औषधालय भी स्थापित है।

श्रीयुत सेठ मगनीरामजी बांगड़

श्रीयुत सेठ रामकुमारजी बांगड़

श्रीयुत नारायणदासजी बांगड़

इस फर्मका हेड आफिस डीडवाणामें है। यहां आपकी ओरसे डीडवाणा इंडस्ट्रियल नामक एक बैंक खुला हुआ है। इस फर्मकी कलकत्ता और डीडवाणामें बहुत स्थाई सम्पत्ति है। आपकी कलकत्तेकी बिल्डिंगजका लाखों रुपया प्रतिवर्ष किराया आता है।

इस समय सेठ मगनीरामजीके ३ पुत्र हैं, जिनके नाम श्रीनारायणदासजी, श्रीगोविंदलालजी और श्री गोकुलचंदजी हैं। आप सब बड़े शांत स्वभावके सज्जन हैं। श्रीगोकुलचंदजी, सेठ रामकुंवारजीके यहां दत्तक गये हैं। वर्तमानमें इस फर्मके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

डीडवाणा—मेसर्स शालिगराम शिवकरण—यहां इस फर्मका हेड ऑफीस है। इस फर्मका यहां डीडवाणा इंडस्ट्रियल बैंक नामक एक बैंक खुला हुआ है।

कलकत्ता—मेसर्स मगनीराम रामकुंवार बांसतल्ला स्ट्रीट—इस फर्मपर बैङ्किग हुण्डी चिट्ठी और शेयर्सका बहुत बड़ा व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त यहां आपकी केनिल प्रेस नामक जूट प्रेसिंग फक्टरी भी है।

नरवाणा (पटियाला)—इस स्थानपर आपकी एक कॉटन जिनिंग फेक्टरी बनी हुई है।

मेसर्स शिवजीराम हरनाथ

इस फर्मका हेड ऑफिस इन्दौरमें है। अतः इसका पूरा परिचय चित्रों सहित इन्दौरमें पृष्ठ ३०में दिया गया है। इन्दौरमें यह फर्म हुंडी, चिट्ठी बैङ्किग, रुई और शेयर्सका अच्छा व्यवसाय करती है। पहिले इस फर्मपर अफीमका व्यापार होता था। इसके मालिकोंका खास निवास डीडवाणा है। इसके प्रधान संचालक श्री दाऊलालजी शिक्षित एवं समझदार नवयुवक हैं।

मेसर्स शिवजीराम रामनाथ

इस फर्मके मालिक भी डीडवाणके ही निवासी हैं। आपका विस्तृत परिचय चित्रों सहि इन्दौरमें ३१में दिया गया है। यह फर्म इन्दौर सराफेमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। आप माहेश्वरी समाजके सज्जन हैं। मेसर्स शिवजी राम हरनाथ और यह फर्म एक ही कुटुम्बकी है।

—०—

इसके अतिरिक्त यहांकी मेसर्स रामरतन टीकमदास और सेठ रामगोपाल मुंछाल नामक फर्मस् इन्दौरमें कपड़ा चांदी सोना और आढ़तका अच्छा व्यापार करती है। यह दोनों फर्म इन्दौर क्लाथ मार्केटमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती हैं। इनका परिचय इन्दौरके पृष्ठ ४२-४३ में चित्रों सहित दिया गया है।

——

बैंकस

डीडवाणा इंडस्ट्रियल बैंक

मेसर्स गंगाधर रामकुंवार

„ जयकिशनदास कन्हैयालाल गट्टानी

„ नैनसुखदासराधाकिशनदास

„ शालिग राम शिवकरण

नमकके व्यापारी

मेसर्स रामभगत रामचन्द्र

„ शिवजीराम सदासुख

क्लाथ मरचेंट

रामानन्द लालचन्द

किरानेके व्यापारी

वृन्दावन चुन्नीलाल

चांदी-सोनेके व्यापारी

रामप्रताप शिवनाथ

लायब्रेरी

डीडवाणा हिन्दी पुस्तकालय

मूण्डवा मारवाड़

यह कस्बा जोधपुर राज्यके नागोर परगनेमें है। यह जे० आर० लाईन पर अपनेही नामके स्टेशन से करीब ३ फर्लाङ्गकी दूरीपर बसा हुआ है। इसकी बसावट पुराने ढंगकी है। यह स्थान प्राचीन ऐतिहासिक स्थान हैं। कई वर्ष पूर्व जब कि नागोरके व्यापारका सितारा जोरोंसे चमक रहा था तब यहांका व्यापार भी उन्नतिपर था। पर ज्यों २ नागोरके व्यापारकी अवनत दशा होती गई त्यों २ यहांका व्यापार भी मरता गया और आज यह दशा हो गई कि व्यापारके नामसे यहां कुछ भी नहीं है। यहांके कतिपय व्यापारी भी जो यहांके अच्छे व्यवसायी हैं, बाहरी शहरोंमें व्यापार करते हैं। उनका परिचय आगे दिया जायगा।

आजकल यहांके व्यापारमें यहांकी पैदाइश मूंग,मोठ, जौ, बाजरी, तिलहन और जवार है। येही वस्तुएं कभी २ बाहर एक्सपोर्ट होती हैं। यहां मिगसर मासमें गिरधारीलालजीका मेला भरता है। इसमें करीब ३०-४० हजार मनुष्य आते हैं। इसमें पशुओंका व्यापार विशेष होता है। चूना यहां बहुत होता है। यहांसे आगरा, बम्बई, करांची आदि स्थानोंमें बेगनेंकी बेगने जाती है। ३७) में २७२ मनकी बेगन मिलता है

मेसर्स जवाहरमल रामकरण

इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ जवाहरमलजी तथा रामकरणजी हैं। आप माहेश्वरी चंडक जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवास स्थान यहींका है। इस फर्मको स्थापित हुए कुछ ही वर्ष हुए। सेठ जवाहरमलजी व्यापारिक अनुभवी सज्जन हैं। सेठ रामकरणजी भी योग्य व्यक्ति हैं। आप दोनोंका इस फर्ममें साझा है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बम्बई—मेसर्स जवाहरमल रामकरण कालबादेवी रोड T. A. Gangalahari इस फर्मपर हुंडी चिट्ठी तथा सब प्रकारकी आढ़तका काम होता है।

बारसी—(शोलापुर)—जवाहरमल रामकरण—यहां रुई, गल्ला, और हुण्डी-चिट्ठीका काम होता है।

लातूर—(निजाम-स्टेट)—मेसर्स राधाकिशन रामचन्द्र—इस फर्मपर रुई और गल्लेकी आढ़तका काम होता है।

मूण्डवा—(मारवाड़)—रामप्रताप राधाकिशन—यहां हेड आफिस है।

मेसर्स नन्दराम मूलचन्द

इस फर्मके मालिक यहींके मूल निवासी हैं। आप माहेश्वरी जातिके मोदानी सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब १०० वर्ष हुए हैं। इसके स्थापक सेठ मायारामजी तथा मूलचन्दजी थे। आपने इस फर्मकी अच्छी उन्नति की। आपके पश्चात् क्रमशः सेठ चतुरभुजजी सेठ शालिगरामजी ने इस फर्मका संचालन किया। सेठ चतुरभुजजीके रघुनाथदासजी और सेठ शालिगरामजीके राम-नाथजी तथा जेठमलजी नामक पुत्र हुए। आप तीनों ही दुकानका संचालन करते थे। विशेष भाग सेठ रामनाथजीका रहा है। आपकी ओरसे यहां सांवलियाजीका मन्दिर तथा तालाबके किनारे एक सुन्दर बगीचे सहित शिवालय (गुमटी) बना हुआ है। इस समय सेठ रघुनाथदासजीके वंशज अपना अलाहदा व्यवसाय करते हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ रामनाथजीके पुत्र सेठ रामरतनजी तथा रामनिवासजी और सेठ जेठमलजी हैं। सेठ रामरतनजी शिक्षित युवक हैं। आपने सारे गांववालोंकी प्रतिद्वन्दता होते हुए भी एक कन्या पाठशाला स्थापित की है। यह ७ सालसे चल रही है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मदनूर—(मद्रास) स्टे० धरमाबाद—मेसर्स मायाराम मूलचन्द—यहां सराफी तथा गल्लेका व्यव-साय होता है। यहां आपके द्वारा खेती भी होती है।

बम्बई—मेसर्स नन्दराम मूलचन्द कालवा देवी—इस स्थानपर सब प्रकारकी आढ़तका काम होता है।

बम्बई—मेसर्स बद्रीनाथ रामरतन, दाना बन्दर—यहां गल्लेका व्यापार तथा आढ़तका काम होता है

हैद्राबाद—(दक्षिण)—यहां बैंकिंग, हुण्डी चिट्ठी तथा गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स रामनाथ जयनारायण

इस फर्मके मालिक मूल निवासी यहींके हैं। आप माहेश्वरी जातिके हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ७०-८० वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ रामनाथजी थे। आपके हाथोंसे इसकी अच्छी उन्नति हुई। आपके पांच पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमशः जयनारायणजी, शिवप्रतापजी, रामकिशन-जी, रामचन्द्रजी, और रामसुखजी हैं। इनमेंसे सेठ जयनारायणजी तथा रामचन्द्रजी विद्यमान हैं। आप दोनों ही इस समय इस फर्मके मालिक हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मूण्डावा—मारवाड़—मेसर्स रामनाथ जयनारायण—यहां हुण्डी-चिट्ठी तथा कमीशन एजन्सीका काम होता है।

अजमेर—मेसर्स रामनाथ शिवप्रताप, नया बाजार—यहां हुंडी-चिट्ठी, सराफी, रंगीन कपड़े और कमीशन एजन्सीका काम होता है।

अजमेर—शिवप्रताप गोपी किशन, नया बाजार—इस स्थानपर गोटेका व्यापार होता है। यहां गोटेका निजका कारखाना है। इस फर्मको अजमेर मेरवाड़ा एक्सीबिशन में फर्स्ट क्लास प्राईज मिला था।

अजमेर—मेसर्स राधाकिशन बद्रीनारायण, नया बाजार—यहां भी गोटेका व्यापार होता है।

बम्बई—मेसर्स रामचन्द्र रामसुख, कालवादेवी T. A. King moto—यहां सब तरहकी कमीशन एजन्सीका काम होता है।

सिकन्दराबाद—(दक्षिण) मेसर्स रामचन्द्र रामसुख—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स रामबगस जैगोपाल भट्टड़

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ जैगोपालजी हैं। आप माहेश्वरी भट्टड़ जातिके हैं। आपका निवास स्थान यहींका है। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ५० वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ राम-बगसजीके पिता बद्रीनाथजी थे। जैगोपालजी सेठ रामबगसजीके पुत्र हैं। आपके हाथोंसे इस फर्म-की बहुत उन्नति हुई। यह फर्म यहांके स्थायी व्यवसाईयोंमें अच्छी प्रतिष्ठा सम्पन्न मानी जाती है। सेठ जैगोपालजीके २ पुत्र हैं। जिनके नाम श्री रामनिवासजी तथा श्री रामकिशनजी हैं। आप दोनों भी दुकानका कार्य करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मूण्डावा—मारवाड़—मेसर्स रामबगस जैगोपाल भट्टड़—यह फर्म गुड़, अनाज, किरानाका हाजिर व्यवसाय करती है। यहां आढ़तका काम भी होता है।

बैंकर्स

किशनलाल रामचन्द्र
छोटूराम शिवराज
जवाहरमल रामकरन
रामरतन रामबगस
रामनाथ जयनारायण

गल्लेके व्यापारी

जयनारायण भागीरथ
रामनाथ चतुरभुज
रामबगस जैगोपाल
रामनाथ नथमल

कपड़े के व्यापारी

चोथमल मूलचन्द
चुन्नीलाल मोहनलाल
बद्रीनाथ मूलचन्द
रामरतन रुघनाथ
लक्ष्मीनारायण बालाराम

किरानेके व्यापारी

प्रसादीराम सीताराम
हीरालाल चतुर्भुज

पाली

पाली जोधपुर राज्यका एक अच्छा और आबाद कस्वा है। यह जे० आर० की पाली नामक स्टेशनसे करीब आधे मीलकी दूरीपर बसा हुआ है। इसके तीन ओर सुन्दर तालाव अपनी शोभा बढ़ा रहा है। यह स्थान मुगल जमानेमें व्यापारका बहुत बड़ा केन्द्रस्थल था। उस समय उत्तरीय हिन्दुस्थान काबुल वगैरह और दक्षिणी हिन्दुस्तानके व्यापारियोंके व्यापार करनेका यही एक मार्ग था, यहींसे होकर माल जाता था। अतएव कहना न होगा, कि मुगल-साम्राज्यके समय इसका व्यापार अच्छी दशामें था।

पाली बहुत प्राचीन नगर है। पहले यह पँवारोंके हाथमें था। उन्होंने इसे पल्लीवाल ब्राह्मणों-को दान कर दिया। पश्चात् इसपर मुसलमानोंका अधिकार रहा। मंडोरके पड़िहारोंने फिर मुसलमानोंसे इसे जीतकर अपने राज्यमें मिला लिया। और फिर इसे पल्लीवालोंको ही दानमें दे दिया। संवत १२०५ में यह शहर राव सिहाजीके हाथ आया। बहुत समयतक यह नगर जागीरी-

का ठिकाना रहा। महाराजा विजयसिंहजीने इसे अपने अधिकारमें कर इसके एवज़में वहांके जागीरदारको दूसरी जमीन जागीरमें दे दी। तभीसे यह मारवाड़ राज्यमें है।

पहले यहां जो जागीरदार रहते थे उनकी बहुतसी छत्रियां बनी हुई हैं। यहां २ तालाब दर्शनीय है। एक तालाबपर बहुत दूरतक घाट बने हुए हैं। यहांसे करीब ६ मीलकी दूरीपर पूनागिरी (पूनागढ़) नामक एक प्राकृतिक पहाड़ी स्थान है। यहां पूना माताका एक मन्दिर भी बना हुआ है। कहते हैं पहले यहांसे सोना निकलता था। इसके अतिरिक्त जैन-मन्दिर नोलाबाद ओमनाथका मन्दिर, नातोलेश्वर आदि देखने योग्य हैं।

आजकल यहांका प्रधान व्यापार ऊनका है। ऊनके लिये यह मंडी मशहूर है। करीब ४००० गांठे यहांसे प्रतिवर्ष एक्सपार्ट होती हैं। कपासकी भी करीब ३००० गांठे जाती हैं। गल्लेमें गेहूं चना, जौ, मोठ, बाजरी आदिका व्यापार होता है। यहांके पीतलके वर्तन व हाथी दांतकी वस्तुएं भी मशहूर हैं। रंगीन छपाईका काम भी यहां अच्छा होता है। यहां एदलजी दीनशा करांचीवालों की एक जीनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी है।

बैंकर्स एण्ड कमीशन एजन्ट

केशवदास पंचोली
किशनदास बापना
जुहारमल मोतीलाल
जुगराजजी बालिया
निहालचन्द गिरधारीलाल
पूनमचन्द राजाराम
मगजी लछमनदास
मोतीलाल चंडक
रूपराम मगनीराम
रामधनजी शाह अग्रवाल
सिरेमलजी कांटेड़
सेसमलजी बालिया

—o—

ऊनके व्यापारी

केशवदास पंचोली
गुलाबचन्द गणेशमल
देवीचन्द बालचन्द
संसमल सुल्तानमल
सेंसमल बालचन्द
सिरेमलजी कांटेड़

कपासके व्यापारी

जुहारमल मोतीलाल

गल्लेके व्यापारी

किशनदास बापना
केसरीमल मुकुन्दचन्द
कुन्दनमल बस्तीमल
गुलाबचन्द गणेशमल
सुकनचंद भेरुलाल
लालचंद माणकचंद
रूपचंद चुन्नीलाल
हीरालाल चम्पालाल

चांदी-सोनाके व्यापारी

नथमल रामप्रताप खेतावत
रूपचन्द केसरीमल लूंकड़
रामस्वरूपजी अग्रवाला

कपड़ेके व्यापारी

अलफूजी बापना
कानमल घींसूलाल
केसरीमल माणकचन्द
काशीराम नारायणदास
गुलाबचन्द गणेशमल
चतुरभुज गंगादास
तखतमल लालचंद
नयनचन्द जोरावरमल
फतेचन्द मूलचन्द
मगजी लक्ष्मणदास
माणकचन्द जुगराज
मुकुन्ददास मेघराज
रूपराम मगनीराम
सागरमल बलदेव
हीराचन्द हरकचन्द

—०—

गोटेके व्यापारी

करणीदान चांदमल
जसराज मुन्नालाल
हीराचन्द हरकचन्द

रंगीन देशी कपड़े वाले

अहमद करीम छींपा
अहमद सुलतान मुट्ठीवाला
फत्ता माना छींपा

—०—

किरानेके व्यापारी

जसराज धालोलिया
जीवराज फूलचन्द
टीकमदास शारदा

बारदान

जमनादास बारदानवाला
मुरलीधर बारदानवाला

कुचामन

साम्भर लेकके पास जोधपुर रेलवेके नरायणपुरा नामक स्टेशनसे ७ मीलकी दूरीपर सुन्दर शहर पनाहसे घिरा हुआ यह कस्वा स्थित है। यह जोधपुर राज्यका एक ठिकाना है। यहांकी आबादी करीब ४,५ हजारकी है। इस कस्वेसे ठीक लगी हुई एक टेकरीपर एक सुन्दर और मज़बूत गढ़ बना हुआ है। इसमें कई अच्छे २ मकानात हैं।

इस कस्वेके व्यापारियोंकी दुकानें बंगाल, कलकत्ता, आराकान (ब्रह्मा) आदि सुदूर देशोंमें हैं। स्टेशनसे कुचामन जानेके लिये मोटर सर्विसका प्रबंध हैं। इस स्थानपर लकड़ीकी चीजें अच्छी बनती हैं। यहांकी पैदावारमें मूंग, मोठ, चना, बाजरी, जौ आदि हैं। फ़सलके दिनोंमें यहां धानकी अच्छी मंडी लगती है। यहांका बाजार अच्छा बना हुआ है। इसी बाजारमें विशाल विशाल वैष्णव और जैन मन्दिर शहरकी सुन्दरताको बढ़ा रहे हैं।

मेसर्स चैनसुख गंभीरमल

इस फर्मके मालिक श्री सेठ चैनसुखजी और श्री सेठ गंभीरमलजी यहींके मूल निवासी हैं। आप सरावगी खण्डेलवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मकी तरक्की आप दोनोंहीसज्जनके हाथोंसे हुई और आप दोनों ही इसके स्थापक हैं। आपका हेड आफिस कलकत्ता है।

आपकी ओरसे संवत १९६० से यहां एक जैन पाठशाला तथा बोर्डिंग हाउस चल रहा है। इसके अतिरिक्त एक पाठशाला और एक और औषधालय भी आपकी ओरसे यहां है। पाठशालाके मकानके लिये आपने २० हजार रुपया प्रदान किया है। आपकी ओरसे पांवागढमें एक मन्दिर बनवाया जारहा है। कलकत्तेमें भी एक जैन मन्दिरके बनवानेमें आपने अच्छी सहायता दी है।

सेठ गम्भीरमलजी सन् १९२७ में अखिल भारतवर्षिय दि० जैन महासभाके सभापति रह चुके हैं। इस समय आपके दो पुत्र हैं। जिनके नाम श्रीनेमीचन्दजी और महावीर प्रसादजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स चैनसुख गंभीरमल, ४६ स्ट्रेंड रोड T. A. Tripendiam—इस फर्मपर बिलायती कपड़ेका इम्पोर्ट और देशी कपड़ेकी आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स गम्भीरमल महावीर प्रसाद २०३, हरिसन रोड—यहां गंजी, फराक तथा हौंयजरी का थोक व्यापार होता है।

अहमदाबाद—मेसर्स चैनसुख गंभीरमल, साखर बाजार T. A. Gambhir—इस दुकान पर यहांकी मिलोंके कपड़ेकी कमीशन एजंसीका काम होता है।

कुचामन—मेसर्स चैनसुख गम्भीर मल—इस फर्म पर कलकत्तेसे कपड़ेकी गांठे आतीं, और बिक्री होती हैं।

मेसर्स मोहनलाल टीकमचन्द बड़जात्या

आपका निवास स्थान कुचामन है। आप दिगम्बर जैन खंडेलवाल जातिके सज्जन हैं। आपके पिता मुंशी गोविन्दरामजी योग्य और धर्मात्मा सज्जन थे। आप कुचामन ठाकुर साहबके प्रायव्हेट सेक्रेटरीका कार्य करते थे। आपका वहां अच्छा सम्मान था। आपके इस समय तीन पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः श्री० मोहनलालजी, श्री० टीकमचन्दजी, और श्री दुलिचन्दजी हैं। श्रीयुत मोहनलालजी और टीकमचन्दजी व्यापारमें निपुण और इम्पोर्ट व्यवसायमें सिद्धहस्त हैं। मेसर्स चैनसुख गंभीरमलजी फर्मके इम्पोर्ट विजिनेस का कार्य आप दोनों ही देखते हैं। श्री० दुलीचन्दजी भी मिलनसार तथा व्यापार-कुशल हैं।

सेठ चैनसुखजी पांडया (चैनसुख गंभीरमल)

सेठ गंभीरमलजी पांडया (चैनसुख गंभीरमल)
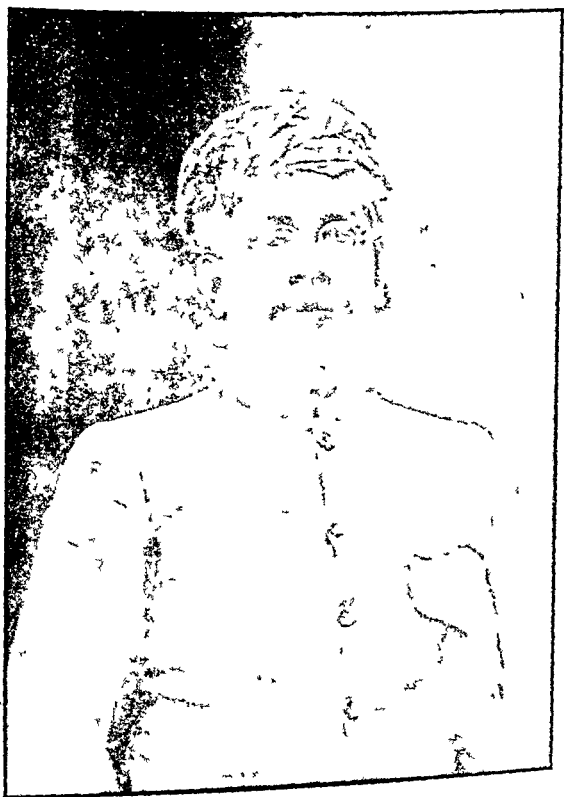
श्रीयुत टीकमचन्दजी बड़जात्या

श्रीयुत दुलीचन्दजी [illegible]

श्रीयुत कानमलजी मुनोम, जोधपुर
(पृ० नं० १६३)

सेठ रामरतनदासजी मोदाणी, मूंडवा (मारवाड़)
(पृ० नं० २०३)

सेठ जसकरणजी कोठारी, किशनगढ़
(पृ० नं० २१८)

इस ग्रन्थके आदिमें जो भारतके व्यापारका इतिहास नामक लेख लिखा हुआ है, उसके लेखक श्रीयुत मोहन लालजी बडेजातिया ही हैं । आपका हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी, बंगला आदि भाषाओंमें अच्छा ज्ञान है। अंग्रेजी तथा हिन्दी पत्रोंमें भी आप लेख लिखते रहते हैं ।

मकराणा

सांभर झीलके पास बसा हुआ यह जोधपुर स्टेटका बहुत प्रसिद्ध स्थान है । इस स्थान पर
संगमरमर पत्थरकी खाने हैं । लाखों रुपयोंका संगमरमर प्रतिवर्ष यहांसे दूर दूर शहरोंमें जाता है।
यह पत्थर तमाम जातिके पत्थरोंसे कीमती एवं सुन्दर होता है । इस पत्थरकी कई जातियां होती
हैं जैसे सफेद, शाही, गुलाबी मिलावट, नीला मिलावट आदि । खदानसे बड़े २ पत्थर खोद खोद
कर लाये जाते हैं, और फिर उसे व्यापारी लोग तराश कर उसकी कालिटीके मुताबिक अपनी
दूकानोंमें सजा कर रखते हैं। खदानसे खोदे हुए बड़े ढोकोंके ऊपर ऊपरके टुकड़े कलईके काममें
आते हैं। बीचका जो बढ़िया पत्थर निकलता है, वह मूर्तियोंके काममें आता है । शेष पत्थर फ़र्श
पर जड़नेके लिये तराश लिया जाता है ।

साधारण तया यहां फर्शके कामका पत्थर १ इंची मोटा १) वर्गफुट बिकता है । दूसरे पत्थर ६)
घन फुट बिकते हैं । मूर्तियोंके कामके बढ़िया स्टोनका १० रु० फुट तक दाम आता है । जोधपुर स्टेट
यहांसे जाने वाले पत्थरके स्टोन पर ॥≈) मन और गढ़े हुए माल पर १) मन टैक्स लेती है । इसके
अतिरिक्त छोटे मालपर मुख्तलिफ महसूल है ।

जे० बी० आर० की मकराणा स्टेशनसे ठीक लगी हुई, यहां पत्थरके व्यापारियोंकी कई
दुकाने हैं । इन व्यापारियोंके यहां फर्श, स्टोनके अतिरिक्त कई प्रकारका सुन्दर गढ़ा हुआ माल तयार
रहता है । यहांके व्यापारियोंका संक्षेप परिचय इस प्रकार है ।

मेसर्स बी० एल० वैश्य एण्ड संस

इस फर्मके मालिक आगरा निवासी सेठ बाबूलालजी हैं । आपकी फर्म २० वर्षोंसे यहां
व्यापार कर रही है। इसका हेड ऑफिस आगरा है। इस फर्मके आगरेका पता बी० एल० वैश्य

एण्ड संस, मारबल मर्चेंट, कसेरठ बाजार है। मकराणाकी इसफर्म पर संगमरमरकी, स्लेफ, टेबिल, फर्श, फव्वारा, वेदी, चौकी, गिलास, रकाबी, प्याला, तशतरी आदि सामान अच्छी तादादमें तयार मिलते हैं।

—:o:—

मेसर्स एस० हुसैन फाजिलजी

इस फर्मको ५२ वर्ष पूर्व सेठ फाजिलजीने स्थापित किया। तथा इसके वर्तमान मालिक शेख हुसैन बख्शजी हैं। आपके हाथोंसे इस दूकानकी तरक्की हुई है। यह फर्म संगमरमरकी खानोंकी कन्ट्राक्टर है। खानोंसे अपनी इच्छानुसार माल खुदवा सकती है। इस फर्म पर स्टोनकी बड़ी २ शिलाएं, चौकी, फरश, मूर्तियां आदि तयार मिलते हैं। यहां इसकी एक मशीन भी है, जिससे एक इंची पाटिये करते है।

मेसर्स हाजी शेखनाथू

इसफर्मको ६० वर्ष पूर्व सेठ रहीम बख्शजीने स्थापित किया था। वर्तमानमें इसके मालिक शेख रहीमबख्शजीके पुत्र सेठ हाजी नाथू हैं। इसके व्यापारकी तरक्की आपहीके हाथोंसे हुई है। इस फर्मपर संगमरमरके पाटिये, फरश, जाली, रफ स्टोन, शिवाले, समाधि, फव्वारा, गमला, बखत, सुराही, मुर्गी आदि कई प्रकारके बने बनाये मालका अच्छा व्यापार होता है।

यह फर्म गवर्नमेंट कंट्राक्टर भी है। देहलीकी कौंसिल चेम्बरकी पूरी बिल्डिंगका ३८ लाख का कंट्राक्ट इसी फर्मने लेकर ३ सालमें पूरा किया था। इसके अतिरिक्त महाराजा दरभंगाका राजनगरमें बनाया हुआ मंदिर, विक्टोरिया मेमोरियल अयोध्या, लखनऊ मेडिकल कालेज आदि कई मकानोंके बनानेमें इस फर्मने काम किया है। इस फर्मको कई स्थानोंसे अच्छे सार्टिफिकेट भी मिले हैं। देहली स्टोन यार्डमें कई सौ आदमी इस फर्म पर काम करते हैं इस फर्मका हेड ऑफिस मकरानामें है। तथा इसकी एक ब्रांच न्यू देहलीमें हाजी शेख नाथूके नामसे नं० १६ हनुमानरोड पर है।

संग मरमर व्यापारी

चैना मलकूद्दीन
बी० एल० वैश्य एण्ड संस
मोहनलाल गुजराती
आर० जी० बांसल एण्ड को०
शेख हाजीनाथू
सरदार धर्मसिंह
हुसैन फाजिलजी

पत्थर तराशनेकी फेक्टरियां

बी० एल० वैश्यकी फेक्टरी
शेख हाजीनाथूकी फेक्टरी
सरदार धर्मसिंहकी फेक्टरी
हुसैन फाजिलजी और चैना मलकूदीन आदिकी फेक्टरी

श्री० भंवरलालजी तायलीय (अग्रवाल ब्रादर्स) उदयपुर

डा० जे० एल० गर्ग अजमेर

शेख हाजी नाथू संगमरमरके व्यापारी, मकराना

दुकान के० जे० मेहता अजमेर

उदयपूर

जा स्थान यूरोपके अन्तर्गत "थरमापॉली" के रणक्षेत्रको प्राप्त है वही स्थान—वही गौरव—
भारतवर्षके अन्दर पुण्यभूमि मेवाड़को प्राप्त है। इस भूमिकी रजका एक २ कण स्वाधीनताके
रंगमें मतवाले वीरोंके रक्तसे सींचा हुआ है। यह वह भूमि है जहांके वीरोंने अपनी प्यारी स्वाधी-
नताके लिए, धन, धान्य ऐश्वर्य और राज्यके सुखोंको लात मारकर बन २ की खाक छानी थी,
जहांके वीरोंने, अपने जीवनकी अन्तिम निश्वास, अपने रक्तकी अन्तिम बिन्दु भी प्यारी स्वाधी-
नताके लिये हंसते २ अर्पण की थी इस भूमि का इतिहास वीर शिरोमणि बापारावल, राणा
संग्रामसिंह, राणा कुम्भ, रानी पद्मिनी, महाराणा प्रताप, महाराणा राजसिंह आदि२ महान् व्यक्तियोंके
दिव्य प्रकाशसे प्रकाशित है जिन्होंने अपने उज्वल कार्य्योंसे संसारके इतिहासमें आपना नाम अमर
कर लिया है।

इस समय इस राज्यके सिंहासनपर महाराणा प्रतापके वंशज महाराणा फतहसिंहजी विराज
मान है। आपके अन्दर भी अपने पूर्वजोंका क्षात्रतेज भली भांति विद्यमान है। अत्यन्त वृद्धा
वस्था हो जानेपर भी आपका शौर्य्य और आपका तेज पूर्ण प्रकाशित है। दूसरे देशी राजओंकी
तरह विलास तरिङ्गिणी आपको अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकी है। आपका चरित्र, आपका
वीरत्व और आपका साहस आज भी प्राचीनकालकी स्मृति दिला रहा है।

दर्शनीय स्थान

जिस समय चित्तौड़का किला मुसलमानोंके आक्रमणोंसे विपद्ग्रस्त होगया था उस समय
महाराणा उदयसिंहने अरबली पहाड़के रमणीक अञ्चलमें इस सुन्दर शहरको बसाया था। यह स्थान
बड़ा रमणीक और सुन्दर है। इसके अन्दर जुगमन्दिर जुगविलास, फतेह सागर, सहिलियोंकी
बाड़ी, देवीर, आदि २ स्थान बड़े सुन्दर हैं। ये स्थान इतने सुन्दर है कि इनका वर्णन करनेके लिये
कई पृष्ठोंकी आवश्यकता है मगर स्थानाभावसे हम ऐसा करनेमें असमर्थ हैं।

व्यापारिक परिचय

व्यापारकी दृष्टिसे इस शहरका कुछ भी महत्व नहीं है यहांसे पासही कपासन नामक स्थानमें
रुईका अच्छा व्यापार होता है। इस शहरके खिलौने बहुत मशहूर हैं।

बैंकर्स

मेसर्स उम्मेदमल धर्मचंद "चतुर"

इस फर्मके मालिक ओसवाल समाजके सांभर गौत्रीय सज्जन हैं। आपका खास निवास स्थान मेड़ता (जोधपुर) है। संवत् १२०० के करीब आपके पूर्वज संघ निकालकर पालीताणा गये, उसमय इनके कार्योंसे प्रसन्न होकर वहांके सारे श्वेताम्बर संघने इस कुटुम्बको " चतुर " का खिताब दिया था। उस समयसे आपके आगे चतुर शब्द लिखा जाता है।

उन्नीसवीं शताब्दीमें मेड़ता बस्ती पर तत्कालीन नरेशका कोप हो गया, जिससे बहुतसे निवासी मेड़ता खाली करके बाहर चले गये,उसी सिलसिलेमें सवत् १८७६में सेठ उम्मेदमलजी चतुर तत्कालीन उदयपुर महाराणा श्रीभीमसिंहजीके विश्वास दिलाने पर यहां आकर बस गये। यहां आकर आपने जागीरदारोंके साथ सूदपर रुपया देनेका व्यवसाय आरंभ किया, जो अभी तक भली प्रकार चल रहा है। उदयपुरके वर्तमान और स्वर्गस्थ सभी महाराणाओंकी इस फर्मके मालिकों पर अच्छी कृपा रही है।

श्री सेठ उम्मेदमलजीके श्री सेठ धर्मचन्दजी, श्री सेठ छोगमलजी और श्री सेठ चन्दन मलजी नामक ३ पुत्र थे इनमें से श्री छोगमलजीने और श्री चन्दनमलजीने उदयपुरमें अच्छी ख्याति प्राप्तकी। श्रीचन्दनमलजीको उदयपुर दरबारमें सम्माननीय कुरसी मिली थी, तथा आप श्री केशरियाजीकी प्रबन्ध कारिणी कमेटीके मेम्बर थे।

श्री धर्मचन्दजीके श्री श्रीपालजी, श्री छोगमलजीके श्री केशरीचन्दजी और श्री चन्दनमलजी के लक्ष्मीलालजी नामक पुत्र हुए। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक श्री लक्ष्मीलालजी, श्री केशरीचंदजी के पुत्र सेठ रोशनलालजी और श्री श्रीपालजीके पौत्र फतेलालजी हैं। इस कुटुम्बमें एक बहुत बड़ी विशेषता यह है कि यह बिना किसी विरोधके पांच पीढ़ियोंसे शामिल व्यवसाय कर रहा है। इस कुटुम्बकी उदयपुरमें अच्छी प्रतिष्ठा है।

सेठ रोशनलालजी यहांके म्युनिसिपल बोर्डके व्हाइस प्रेसिडेंट और ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। इसके अतिरिक्त करेड़ा तीर्थ, जैन श्वेतांवर बोर्डिंगहाउस, जैन धर्मशाला, तथा विजयधर्म हॉल लायब्रेरीके प्रबन्धक भी आपही हैं। आप श्वेताम्बर समाज और उदयपुरशहरमें बहुत प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं आपके ३ पुत्र हैं जिनमें सबसे बड़े फर्स्ट ईयरमें पढ़ते हैं।

स्व० सेठ केशरीचन्दजी (उम्मेदमल धरमचन्द) उदयपुर स्व० सेठ श्रीपालजी चतुर (उम्मेदमल धरमचन्द) उदयपुर

सेठ रोशनलालजी चतुर (उम्मेदमल धरमचन्द) उदयपुर

श्री० नगर सेठ नन्दलालजी उदयपुर

बर्तमानमें इस फर्मपर बेङ्किंग, हुंडी चिठ्ठी तथा जागीरदारोंके साथ लेनदेनका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

मेसर्स किशनजी केशरीचंद

इस फर्मके मालिक श्री पन्नालाल जी हैं। आप पोरवाड़ (पुञ्जावत) जातिके हैं। इस नामसे यह फर्म ७५ वर्षोंसे व्यापार कर रही है। इसके पूर्व लालजी, जवेर जी और किशनजी तीन भाइयोंके साझेमें कारवार होता था। इस दूकानको किशनजी के पुत्र केशरीचन्द जीने स्थापित किया। आपके बाद आपके पुत्र पन्नालाल जी इस दुकानके मालिक हैं। यह दूकान उदयपुरमें हुण्डीवाली दूकानके नामसे प्रसिद्ध है। इस फर्मपर हुण्डी चिट्ठी, बैंङ्किग तथा सराफीका व्यापार होता है। आपकी एक दूसरी दुकान और है, उसपर गोटेका व्यापार होता है।

दीवान बहादुर सेठ केशरीसिंहजी

इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्रों सहित कोटेमें दिया गया है। यहां यह फर्म रेसिडेंसी ट्रेझरर है। इसके अतिरिक्त हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

मेसर्स प्रेमचंद चम्पालाल बापना "नगर सेठ"

इस फर्मके मालिकोंका पुश्तैनी निवास उदयपुर ही है। आप ओसवाल जातिके बापना गौत्रीय स्थानक वासी जैन सज्जन हैं। इस कुटुम्बमें श्री प्रेमचंदजी बड़े विख्यात और नामी व्यक्ति हुए। आपको संवत् १९०८में तत्कालीन महाराणा श्री स्वरूपसिंह जीने नगरसेठ का सम्माननीय खिताब दिया था। उस समय नगर सेठका जब तिलक किया गया था, तब अक्षत के स्थानपर मोती चढ़ाये गये थे; इतना बड़ा सम्मान रियासतमें केवल दीवान को ही मिलता है। साथ ही आपको हाथी और लवाजमा भी बख्शा गया था।

श्री प्रेमचन्द जीका देहावसान माघ सुदी ४ संवत् १९१७में हुआ। आपके बाद आपके पुत्र चम्पालाल जी हुए। आपने भी अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की। एकबार विक्रमी संवत् १९२०में यहांकी प्रजा रेजिडेंटकी कोठीपर गोगुन्दामें आपके साथ पुकार करनेके लिए गई, सारे शहरमें हड़ताल थी। उस समय महाराणा जी ने गोकुलचंद जी मेहता और अपने दीवान पं० लक्ष्मणरावजी को वापस बुलानेके लिये भेजा। और स्वयं महाराणा जीने सब लोगोंसे सहेलियोंकी बाड़ीमें भेंट की। तब शहरकी हड़ताल बंद हुई। आपके बाद आपके ज्येष्ठ पुत्र कन्हैयालाल जीने कारोबार सम्भाला। श्री चम्पालालजी का देहावसान माह बदी ६ संवत् १९४७में और कन्हैयालालजी का देहांत जेठ वदी-१ संवत् १९६१में हुआ।

इस समय श्री कन्हैयालाल जीके पुत्र श्री नंदलाल जी वापना, "नगर सेठ" इस फर्मके काम को सम्भाल रहे हैं। आपका जन्म संवत १९३०के आषाढ़ मासमें हुआ। उदयपुरकी पञ्चायतमें आपका पहिला स्थान है। महाराणा जीकी ओरसे आपको पूर्ववत् सम्मान प्राप्त है। आपको शिक्षा-से बड़ा प्रेम है। वर्तमानके आपके ५ पुत्र हैं, जिनमें सबसे बड़े कुंवर गनेशीलाल जी बी० ए० एल० एल० बी० हैं। आप होशियार और बुद्धिमान व्यक्ति हैं। इस समय आप उदयपुर स्टेटके सहाड़ा (गंगापुरके पास) जिलेके हाकिम हैं। इनके अतिरिक्त दूसरे कुंवर मनोहरलाल जी एफ० ए०में और छोटे बसंतीलाल जी मैट्रिकमें पढ़ रहे हैं।

इस समय आपकी दूकानपर जमीदारी, गहनावट और जागीरदारोंसे लेन देनका काम होता है।

मेसर्स मूलचन्द सुगनचन्द

इस फर्मका विस्तृत परिचय कई सुन्दर चित्रों सहित अजमेरमें दिया गया है। उदयपुरमें इस फर्मपर बैंकिंग और हुण्डी चिट्ठीका व्यापार होता है।

क्लाथमरचेण्ट्स

मेसर्स इस्माइलजी इब्राहिमजी उदयपुर

इस दूकानके मालिकोंका खास वतन यहींपर है। यह दूकान यहाँपर सैकड़ों वर्षों की पुरानी है। इस खानदानके अंदर इस्माइलजी मालजी बहुत मशहूर पुरुष थे। वे मालजी कुरवारवालेके नामसे राज दरबार एव देश विदेशोंमें मशहूर थे। इस खानदानको उदयपुर राज्यसे हमेशासे सम्मान मिलता रहा है। यहांके प्रतिष्ठित व्यापारियोंमें इस फर्मकी गिनती है। आपकी दूकानें नीचे लिखे स्थानोंपर हैं।

(१) इस्माइल जी इब्राहिम जी उदयपुर-इस दूकानपर बम्बईकी आढ़तका काम होता है और स्टेटकी वर्दियोंके कंट्राक्टका काम भी यहींसे होता है।

(२) इस्माइलजी इब्राहिम जी घण्टाघर उदयपुर-इस दूकानपर सब प्रकारके कपड़ेका व्यापार होता है

(३) इस्माइल जी इब्राहिम जी सुतार चाल जरीवाला बिल्डिंग-इस दूकानपर खाकी क्लाथ तथा पीस गुड्स (ई स्पीनर्स एण्ड को० की फेंसीकी) की एजंसी है। तथा आढ़तका काम होता है। इस दूकानको स्थापित हुए ४० वर्ष हुए।

इस दूकानके वर्तमान मालिक सेठ अलीमहम्मद जी हैं। आप उदयपुरके मशहूर इस्माइल जी मालजी कुरवार वालेके पुत्र हैं।

मेसर्स अब्दुलअली ताजखानजी

इस दूकानकी स्थापना हुए करीब १०० वर्ष हुए। सेठ ताजखानजी इस फर्मके बहुत मशहूर पुरुष हुए। उन्होंने इस दूकानको बहुत तरक्की दी। इस दूकानका लेनदेन राज-दरबार भाई बेटों एवं जमीदारोंसे हमेशासे रहा है। राज दरबार एवं बाजारमें भी इस दूकानकी अच्छी प्रतिष्ठा है। ताजखानजीके बाद उनके पुत्र अब्दुलअलीजीने इसके कारोबारको सह्माला। अब्दुलअलीजीके ३ पुत्र हैं। जिनका नाम गुलामअलीजी, वलीमहम्मदजी, और फिदाहुसेनजी। ये तीनोंही इस समय दूकानका काम सह्मालते हैं।

इस दूकानपर जरी, सलमा, सिताराका काम होता है। इसके अतिरिक्त इस दूकानपर नीचे लिखी कम्पनियोंकी भी एजंसियां हैं।

(१) ए० हाइलेंड लिमिटेड बम्बई (मोटरकार)

(२) ओव्हरलैंड और विलीजनाइट मोटरकी एजंसी हैं।

करीब २० वर्षोंसे इस दूकानकी एक ब्रांच दिल्ली-घंटा घरके पास इसी नामसे खुली है। इस दूकानपर जनरल मरचेंट्स व कमीशन एजंसीका काम होता है। इसके अतिरिक्त गोटा, पगड़ी, दुशाले, दुपट्टे और जवाहरातका भी व्यापार होता है।

राज घरानेका दिल्लीके मुतल्लिक जितना काम होता है वह सब इसी फर्मके मार्फत होता है।

सन् १९२७ के नवम्बरमें जब बड़े मुल्लांजी साहब यहाँ पधारे थे तब उन्होंने सेठ गुलाम अलीजीको "शेख" का खिताब दिया था।

बैंकर्स, गोल्ड एण्ड सिलवर मरचेंट्स

मेसर्स अनोपचन्द गंभीरमल
" उम्मेदमल धरमचन्द
" किशनजी केशरीचन्द
" बा० केशरी सिंहजी (रेसिडेंसी ट्रेझरर)
" गोरधनदास विट्ठलदास
" जवरजी नाथूलाल
" नेतचन्द प्यारचन्द
" पन्नालाल दुलीचन्द
" बदीचन्द नथमल

मेसर्स भीमराज थावरचन्द
" मूलचन्द सुगनचन्द
" मथुरादास यमुनादास
" मीनचन्द टोडरमल
" विट्ठलदास किशनदास

कपड़ेके व्यापारी

कुतुबअली अमरजी वहलमवाला
इस्माइलजी इब्राहिमजी घंटाघर
अब्दुलअली अमरजी वहलम वाला
अमरजी नाथजी

अब्दुलअली ताजखानजी
इब्राहिमजी दाऊजी
कादरजी अलीजी
महम्मदअली बागरूजी
मुल्ला अमर हफ्तुल्ला

कमीशन एजंट

इस्माइलजी इब्राहिमजी मोती चोहट्टा
अब्दुलअली ताजखानजी मोती चोहट्टा
कोठावाला पारखजी
गुलाबचन्द हरीराम
चतुर्भुज कपूरचन्द
रामचन्द्र चम्पालाल

गल्ले के व्यापारी

गुलाबचन्द लक्ष्मीलाल मंडी
जीतमल भट्टामण्डी
जवानमल पूनमचन्द मण्डी
थावरचन्द भीमराज मण्डी

जनरल मरचेण्ट

अग्रवाल ब्रादर्स एण्ड को० सूरजपोल (हार्डवेर-टिम्बर)
अब्दुलअली ताजखानजी (आयरलैंड मोटर एजंसी)
अब्दुलहुसेन शेख लाड़जी (मिशनरी, लकड़ी, ऑइल)
आई० एस० मोहासर्सन, हाथीपोल (टिम्बर लोहा)
कादरजी शेख हैदरजी (फोर्ड मोटर एजंसी)
चतुर्भुज हरकिशनदास (स्टेशनर)
जर्मन स्वीविंग मशीन कं० (साइकल और मशीन)
मेवाड़ साइकल कम्पनी
दी हैदरी स्टोर कम्पनी हाथीपोल

वैद्य

वैद्य भवानीशंकर आयुर्वेद भूषण घंटाघर

होटल्स

नेशनल होटल घंटाघर
स्टेट होटल उदयपुर

आर्टिस्ट

नवलराम फोटोग्राफ़र एंड आर्टिस्ट
पन्नालाल चित्रकार
लीलाधर गोवर्द्धनलाल

शिल्पी

रघुनाथ मिस्त्री कांटा

लायब्रेरीज

अग्रवाल लायब्रेरी सूरजपोल
एकलिंगदासजी यतीका पुस्तकालय
प्रताप पुस्तकालय, प्रताप सभा
विजय धर्म हाल श्वेतांबर पुस्तकालय हाथीपोल
मेहता जीतसिंहजीका पुस्तकालय

बोर्डिंग हाउस

गौतम ब्रह्मचर्य्याश्रम देहली दरवाजा
दिगम्बर जैन बोर्डिंग हाउस
श्वेताम्बर जैन बोर्डिंग हाउस

अग्रवाल ब्रदर्स एण्ड को०

इस फर्मके वर्तमान मैनेजर श्रीयुत भँवरलालजी तायलीय हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मपर जनरल मरचेंट्सका व्यवसाय होता है। श्रीयुत भँवरलालजी तायलीय शिक्षित और सज्जन व्यक्ति हैं। आपका विशेष परिचय आया था लेकिन उसके खोजानेसे हम न छाप सके इसका हमें दुःख है।

किशनगढ़

बी० बी० सी० आई की अजमेर जयपुर ब्रांचके मध्यमें किशनगढ़ स्टेशनसे ४ मीलकी दूरीपर यह शहर बसा है। अस्त व्यस्त चहार दीवारीसे घिरे हुए इस शहरकी व्यवसायिक हालत बड़ी शोचनीय है। यह शहर महाराजा किशनगढ़की राजधानी हैं। यह स्थान चारोंओर पहाड़ियोंसे घिरा हुआ है। शहरके किनारे एक बड़ा तालाब है। इस शहरकी आबादी करीब १० हजारके है।

मदनगंज़-इस मंडीको किशनगढ़ नरेश महाराज मदनसिंहजीने अपने नामसे संवत् १९५५में बसाया था। इसके स्थापित होनेके पूर्व पासही बृटिश राज्यमें हरमाहेड़ा नामक स्थानपर १ मंडी थी, पर इस मंडीके आबाद होनेसे उसका व्यापार बिल्कुल नष्ट प्राय होगया है। इस मंड़ीका खास व्यापार जीरा घी, सूत और रुईका है। यहांसे दस पन्द्रह हजार बोरी जीरा प्रतिवर्ष बाहर जाता है। घी की भी यह अच्छी मण्डी है कभी २ अच्छी मौसिममें पांच पांच सौ कनस्टर घीके प्रतिदिन यहां आ जाते हैं।

इस स्थानपर गुड़, शक्कर किराना आदि बाहरसे आता है। जीरा घी, सूत और रुईके अतिरिक्त यहांकी पैदावारमें जौ, गेहूं चना, जवार मकई आदि हैं। इस मंड़ीमें आनेवाले और जानेवाले मालपर किसी प्रकारका टैक्स नहीं लिया जाता है। यहां यदि कोई रुईकी कच्ची गांठ बाहर ले- चाहे तो उसे ।।) मन महसूल देना पड़ता है।

इसस्थानपर सूत कातनेकी एक लिमिटेड मिल और एक कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फ़ेक्टरी है। जिनके नाम इसप्रकार हैं।

दि महाराज सोमयांग मिल ट्रान्स पोर्ट क० लि०
दि महाराज सोमयांग मिल्स क० लि० जीनिंग फेक्टरी
दि काटन प्रेस कम्पनी (सरकारी)
उपरोक्त कारखानोंमें हिज हाईनेस किशनगढ़के भी बड़े हिस्से हैं।

मेसर्स कल्यानजी दामोदर कम्पनी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास बम्बई है। यह कम्पनी दि महाराज सोमियाग मिल्स-कम्पनी ट्रांसफोर्ट लिमिटेडकी मैनेजिंग एजंट है। यह मिल पोने सात लाखके केपिटलसे सन् १९८० में स्थापित हुई। इस मिलमें केवल सूत तैयार होता है। इसमें १६००० स्पिंडलस हैं। इस मिलका सूत बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, यू०पी० और ईस्ट आफ्रिका तक जाता है। इस मिलमें एक जीनिंग और एक प्रेसिंग फेक्टरी भी है।

इस समय इस कम्पनीके संचालक सेठ कल्यानजी दामोदरके पौत्र सेठ चरणदास विट्ठलदास हैं। आपकी फर्म इस मिलकी सेक्रेटरी, ट्रेभरर और मैनेजिंग एजंट हैं। इस मिलके मैनेजर मि०—देवचन्द पुरुषोत्तम सराफ बड़े योग्य व्यक्ति हैं।

मेसर्स चम्पालाल रामस्वरूप

इस फर्मके व्यवसायका पूरा परिचय ब्यावरमें चित्रों सहित दिया गया है। यहां इस फर्मपर रुई तथा आढ़तका व्यापार होता है।

मेसर्स सिद्धकरण जसकरण

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास किशनगढ़ है। आप ओसवाल कोठारी जातिके हैं। यह दुकान यहां बहुत वर्षोंसे सराफीका धंधा करती आ रही है। इस फर्मपर पहिले शेषकरन सिद्धकरण नाम पड़ता था। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ सिद्धकरण जी और आपके पुत्र जसकरणजी हैं। आपकी फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। श्री जसकरणजी सज्जन व्यक्ति हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

किशनगढ़—मेसर्स सिद्धकरण जसकरण-यहां चांदी, सोना, जवाहरात तथा रहनका काम होता है।

किशनगढ़—किशनलाल जसकरण-यहां चांदी सोनेका व्यापार और आसामी लेन देनका काम होता है।

...गंज—किशनलाल जसकरण-यहां चांदी सोनेका व्यापार होता है।

थाव...गंज—घेवरचन्द जसकरण-यहां गोटा किनारीका व्यापार होता है।

रुई और जीरेके व्यापारी तथा कमीशन एजण्ट

कस्तूरमल गुलाबचन्द
गनेशलाल घीसालाल
गुलराज पूनमचंद
गोपीलाल कस्तूरमल
चम्पालाल रामस्वरूप
छोगालाल मोतीलाल
नारायण मांगीलाल
बरदीचन्द मेघराज
बालूराम मुरलीधर
बुधसिंह उदयसिंह
रामधन केदारमल
रतनचंद जतनचन्द
राधामोहन गुलाबचन्द
रुपचन्दलाल
सूरजमल कनकमल